बे वुज़ू (या जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उस)
के लिये क़ुरआने मजीद या इस की किसी आयत का छूना ह़राम है।
बे वुज़ू (जब कि गुस्ल फ़र्ज़ न हो) बे छूए ज़बानी या देख कर तिलावत कर सकता है।
(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 326, मकतबतुल मदीना)
القرآن الكريم
Kanzul Iman
Khazaainul Irfan (Hindi)
तरजमा
मअ़
कन्ज़ुल ईमान तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
तरजमा : आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए रिसालत शाह
इमाम अह़मद रज़ा ख़ान
तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना
सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी
नाशिर : मकतबतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

तरजमा : तफ़्सीर :

कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

कुरआने करीम के इस तरजमे (**कन्ज़ुल ईमान**) को

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

और इस की तफ़्सीर (**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**) को

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने इस मुबारक तरजमे और तफ़्सीर पर जदीद अन्दाज़ में काम करने की सआ़दत ह़ासिल की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस तरजमे और तफ़्सीर को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस (हिन्दी एडीशन) में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स़ = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = ـَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
Mobile: 9898732611 E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"कन्ज़ुल ईमान शरीफ़" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस "कन्ज़ुल ईमान" के बारे में 14 वज़ाहती मदनी फूल

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत, परवानए शम्ए रिसालत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तरजमए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" को जुम्ला उर्दू तराजिमे क़ुरआन में जो बुलन्द मक़ाम और ख़ुसूसी इम्तियाज़ ह़ासिल है वोह अज़्हर मिनश्शम्स है, नीज़ इस पर सदरुल अफ़ाज़िल, मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى की मुख़्तलिफ़ अ़रबी तफ़ासीर की जामेअ़ निहायत ही इल्मी व तह़क़ीक़ी तफ़्सीर "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" ने "**कन्ज़ुल ईमान**" की अहम्मिय्यत व इफ़ादियत को मज़ीद बारह चांद लगा दिये हैं, इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना "**कन्ज़ुल ईमान**" की तिलावत की सआ़दत ह़ासिल करते होंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़ैज़ान से "**दा'वते इस्लामी**" ने सारे जहान में "**कन्ज़ुल ईमान**" की धूम मचा दी है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ...! इस ग़ैर मा'मूली अहम्मिय्यत व इफ़ादियत और आ़लमगीर मक़्बूलिय्यत के पेशे नज़र "**दा'वते इस्लामी**" के इल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" पर जदीद अन्दाज़ में काम करने की सई की है और कमो बेश छ[6] माह के क़लील अ़र्से में इस तारीख़ी व अ़ज़ीमुश्शान काम की तक्मील हुई। इन मदनी फूलों के तह़्त इस पर काम किया गया :

﴾1﴿....मत्न, तरजमा और तफ़्सीर तीनों पर आ़लमी मे'यार के मुत़ाबिक़ जदीद फ़ोर्मेशन / फ़ोर्मेटिंग की गई है और ह़त्तल मक़्दूर हर ए'तिबार से इन्तिहाई एह़तियात़ के साथ इस के हुस्ने सुवरी (या'नी ज़ाहिरी हुस्नो जमाल) का एहतिमाम किया गया है।

﴾2﴿....मतने क़ुरआन का बिल इस्तीआ़ब तक़ाबुल कमो बेश आठ बार करवाया गया है। तक़ाबुल में नफ़्से मतन, रुमूज़े अवक़ाफ़, अत़राफ़ की अ़लामात व इबारात, अ़रबी रस्मुल ख़त़ का ख़ुसूसी इल्तिज़ाम और कमो बेश चार बार तक़ाबुल बिल किताब भी शामिल है।

﴾3﴿....मत्न के तक़ाबुल के लिये पाक व हिन्द के मुख़्तलिफ़ इदारों के कई नुस्ख़े पेशे नज़र रखे गए।

﴾4﴿....रस्मुल ख़त़ के ह़वाले से रहनुमाई और अग़लात़ की दुरुस्ती के लिये "**अल इत्क़ान**", "**फ़तावा रज़विय्या**" और दीगर कुतुबे उ़लमाए अहले सुन्नत से इस्तिफ़ादा और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के जय्यिद मुफ़्तियाने इज़ाम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से शरई रहनुमाई भी ली गई है।

﴾5﴿....मत्न के तक़ाबुल के दौरान अ़रब शरीफ़ के मत़्बूआ़ मुतअ़द्दिद नुस्ख़ों को भी पेशे नज़र रखा गया है और उन नुस्ख़ों के इलावा "**المكتبة الشاملة**", "**المصحف الرقمى**", "**مصحف المدينة النبوية**", "Quran Searcher", "**خزائن الهدايت**", "**القرآن الكريم بالرسم العثمانى**" और इस जैसे दीगर क़ुरआनी सोफ़्टवेर्ज़ को भी पेशे नज़र रखा गया है।

﴾6﴿....मत्न के तक़ाबुल के लिये अल मदीनतुल इल्मिय्या के माहिर हुफ़्फ़ाज़ व ग़ैर हुफ़्फ़ाज़ मदनी इस्लामी भाइयों كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की ख़िदमात ली गई हैं, नीज़ जय्यिद क़ुर्रा व हुफ़्फ़ाज़ زِيْدَ مَجْدُهُمْ से मुशावरत की तरकीब भी बनाई गई है।

﴾7﴿....तरजमा व तफ़्सीर के तक़ाबुल के लिये रज़ा एकेडमी बम्बई (हिन्द) के मत़्बूआ़ तस्ह़ीह़ शुदा नुस्ख़े को मे'यार बनाया गया है, और पाको हिन्द के क़दीम व जदीद कई नुस्ख़ों को भी पेशे नज़र रखा गया है।

﴾8﴿....तरजमा व तफ़्सीर के तक़ाबुल के दौरान पाक व हिन्द के मत़्बूआ़ कमो बेश बारह नुस्ख़ों की तक़रीबन 500 से ज़ाइद लफ़्ज़ी, किताबत, त़बाअ़त, क़दीम रस्मुल ख़त़ और नज़रे सानी में रह जाने वाली अग़लात़ की तस्ह़ीह़ भी की गई है।

﴾9﴿....तफ़्सीर के तक़ाबुल के बा'द नज़रे सानी, अ़लामाते तरक़ीम, तस्हील और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब की तरकीब भी बनाई गई है, नीज़ ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की हैअत ए'राब की वज्ह से बदल जाती है उन के रस्मुल ख़त़ को तब्दील कर के उन पर भी ए'राब लगा दिये गए हैं।

﴾10﴿....اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** के इस नुस्ख़े में कमो बेश 2000 मुश्किल व ह़ल त़लब मक़ामात की तस्हील भी की गई है।

﴾11﴿....क़ारी की सहूलत के लिये तरजमे के मुश्किल अल्फ़ाज़ की तस्हील तरजमे ही में कर दी गई है और मुश्किल लफ़्ज़ को बर क़रार रखते हुए इस की तस्हील को हिलालैन "()" में वाज़ेह़ कर दिया गया है ताकि आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के अल्फ़ाज़े मुबारका बिऐनिही तरजमे में मौजूद रहें और क़ारी को भी तरजमा समझने में कोई दुश्वारी मह़सूस न हो, नीज़ तरजमे की तस्हील करते वक़्त ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, अदीबे शहीर ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ब्दुल ह़कीम ख़ान अख़्तर शाह जहानपूरी** رَحِمَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی की किताब "तस्हीले कन्ज़ुल ईमान" से भी मदद ली गई है।

﴾12﴿....तरजमा व तफ़्सीर की तस्हील करते हुए अ़रबी व उर्दू लुग़ात, लुग़ातुल क़ुरआन, मो'जमुल क़ुरआन, मुफ़्रदातुल क़ुरआन, अ़रबी तफ़ासीर, मा'रूफ़ सुन्नी तराजिम व तफ़ासीर को पेशे नज़र रखते हुए इबारात के रब्त़ पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी गई है।

﴾13﴿....तस्हील करते वक़्त मुतवस्सित़ त़बक़े को सामने रखा गया है, चूंकि तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान एक मुख़्तसर, जामेअ़, इल्मी व तह़क़ीक़ी तफ़्सीर है और सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस तफ़्सीर में इल्मी इस्तिलाहात का ब कसरत इस्ति'माल फ़रमाया है जिसे अ़वामुन्नास का समझना निहायत ही दुश्वार है, लिहाज़ा ह़त्तल मक़्दूर उन्ही मक़ामात की तस्हील की गई है जिन का तअ़ल्लुक़ अ़वाम से है, और ऐसी दक़ीक़, ख़ालिस इल्मी अब्ह़ास जिन का तअ़ल्लुक़ उ़लमा से है उन की तस्हील नहीं की गई।

﴾14﴿....ह़त्तल मक़्दूर क़ारी की आसानी के लिये फ़ोर्मेशन / फ़ोर्मेटिंग इस अन्दाज़ पर की गई है कि तरजमे में जो तफ़्सीरी ह़ाशिया नम्बर है उस की तफ़्सीर उसी सफ़ह़े से शुरूअ़ हो, दीगर नुस्ख़ों की त़रह़ आख़िरी सफ़ह़ात पर तफ़्सीर की तरकीब नहीं बनाई गई, इसी वज्ह से हर सफ़ह़े पर मतने क़ुरआन की लाइनों को मख़्सूस नहीं किया गया बल्कि तफ़्सीर व तरजमे की मुनासबत से जितने मतन की ह़ाजत थी उतना ही लाया गया है। इसी त़रह़ हर पारह नए सफ़ह़े से शुरूअ़ किया गया है।

मदनी इल्तिजा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी इस काविश में जो ह़ुस्नो ख़ूबी नज़र आए वोह **क़ुरआने पाक** का ख़ास ए'जाज़ और **आ'ला ह़ज़रत** व **सदरुल अफ़ाज़िल** رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی और अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का ख़ुसूसी फ़ैज़ान है और जहां कोई ख़ामी हो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही को दख़्ल है। क़ारिईन व अहले इल्म ह़ज़रात से मदनी इल्तिजा है कि जहां कहीं किताबत, त़बाअ़त या कोई और ग़लत़ी देखें तो ब ज़रीअ़ए **ईमेल** या **मक्तूब** हमारी रहनुमाई फ़रमाएं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आयिन्दा एडीशन में उस की तस्ह़ीह़ कर दी जाएगी।

"कन्ज़ुल ईमान और दा'वते इस्लामी", **"तिलावत के ख़ुश्बूदार मदनी फूल"** और **"मत़ालिबुल क़ुरआन"** आख़िर में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। या रब्बे मुस्त़फ़ा ! **दा'वते इस्लामी** के इल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** की इस अ़ज़ीम काविश को क़बूल फ़रमा, और इस कारे ख़ैर में ह़िस्सा लेने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को दो जहां की भलाइयां अ़त़ा फ़रमा और **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को दिन पच्चीसवीं, रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
Email : ilmia@dawateislami.net
तारीख़ : 29 रजबुल मुरज्जब 1432 हि.

القرآن الكريم
तरजमा
कन्ज़ुल ईमान
मअ़
तफ़्सीर
ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
तरजमा : आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
परवानए शम्ए रिसालत शाह
इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن
तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद
मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی
त़बाअ़ते अव्वल : 25, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, 1440 सि.हि.
ता'दाद : 3100

सूरए फ़ातिहा मक्किय्या है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह्मत वाला

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوۡمِ

सब खूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेह्रबान रह्मत वाला रोज़े जज़ा

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی حَبِيۡبِهِ الۡكَرِيۡمِ

सूरए फ़ातिहा के अस्मा : इस सूरह के मुतअ़द्दद नाम हैं : फ़ातिहा, फ़ातिहतुल किताब, उम्मुल कुरआन, सूरतुल कन्ज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सब्अ़ मसानी, नूर, रुक्या, सूरतुल ह्म्द, सूरतुदुआ, ता'लीमुल मस्अला, सूरतुल मुनाजात, सूरतुत्तफ़्वीज़, सूरतुस्सुआल, उम्मुल किताब, फ़ातिहतुल कुरआन, सूरतुस्सलाह। इस सूरह में सात आयतें, सत्ताईस कलिमे, एक सो चालीस हर्फ़ हैं, कोई आयत नासिख़ या मन्सूख़ नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह सूरह मक्कए मुकर्रमा या मदीनए मुनव्वरह, या दोनों में नाज़िल हुई। अ़म्र बिन शुरह़बील से मन्कूल है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : "मैं एक निदा सुना करता हूं जिस में "اِقۡرَاۡ" कहा जाता है।" वरक़ा बिन नौफ़ल को ख़बर दी गई, अ़र्ज़ किया : जब येह निदा आए आप ब इत्मीनान सुनें। इस के बा'द हज़रते जिब्रील ने हाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : फ़रमाइये "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ط اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ"। इस से मा'लूम होता है कि नुज़ूल में येह पहली सूरत है मगर दूसरी रिवायात से मा'लूम होता है कि पहले "सूरए इक़्रअ" नाज़िल हुई। इस सूरत में ता'लीमन बन्दों की ज़बान में कलाम फ़रमाया गया है। **अह़काम :- मस्अला :** नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब है इमाम व मुन्फ़रिद के लिये तो ह़क़ीक़तन अपनी ज़बान से और मुक़्तदी के लिये ब क़िराअते हुक्मिया या'नी इमाम की ज़बान से। सहीह़ ह़दीस में है : "قِرَاءَةُ الۡاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ" इमाम का पढ़ना ही मुक़्तदी का पढ़ना है। कुरआने पाक में मुक़्तदी को ख़ामोश रहने और इमाम की क़िराअत सुनने का हुक्म दिया है : "اِذَا قُرِئَ الۡقُرۡاٰنُ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ وَاَنۡصِتُوۡا" (जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश हो जाओ)। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : "اِذَا قَرَاَ فَاَنۡصِتُوۡا" जब इमाम क़िराअत करे तुम ख़ामोश रहो। और बहुत अह़ादीस में येही मज़मून है। **मस्अला :** नमाज़े जनाज़ा में दुआ़ याद न हो तो सूरए फ़ातिहा ब निय्यते दुआ़ पढ़ना जाइज़ है, ब निय्यते क़िराअत जाइज़ नहीं। (عالمگیری) **सूरए फ़ातिहा के फ़ज़ाइल :** अह़ादीस में इस सूरह की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया : तौरैत व इन्जील व ज़बूर में इस की मिस्ल सूरत न नाज़िल हुई। (ترمذی) एक फ़िरिश्ते ने आस्मान से नाज़िल हो कर हुज़ूर पर सलाम अ़र्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की बिशारत दी जो हुज़ूर से पहले किसी नबी को अ़ता न हुए : एक सूरए फ़ातिहा, दूसरे सूरए बक़र की आख़िरी आयतें। (مسلم شریف) "सूरए फ़ातिहा" हर मरज़ के लिये शिफ़ा है। (دارمی) "सूरए फ़ातिहा" सो मरतबा पढ़ कर जो दुआ़ मांगे **अल्लाह** तआ़ला क़बूल फ़रमाता है। (دارمی) **इस्तिआ़ज़ा :- मस्अला :** तिलावत से पहले "اَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ" पढ़ना सुन्नत है। (خازن) लेकिन शागिर्द उस्ताद से पढ़ता हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं। (شامی) **मस्अला :** नमाज़ में इमाम व मुन्फ़रिद के लिये "सुब्ह़ान" (सना) से फ़ारिग़ हो कर आहिस्ता "اَعُوۡذُ...الخ" पढ़ना सुन्नत है। (شامی) **तस्मिया :- मस्अला :** "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" कुरआने पाक की आयत है मगर सूरए फ़ातिहा या और किसी सूरह का जुज़ नहीं इसी लिये नमाज़ में जह्र (बुलन्द आवाज़) के साथ न पढ़ी जाए, बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا नमाज़ "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ" से शुरूअ़ फ़रमाते थे। **मस्अला :** तरावीह़ में जो ख़त्म किया जाता है उस में कहीं एक मरतबा "بِسۡمِ اللّٰهِ" जह्र के साथ ज़रूर पढ़ी जाए ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाए। **मस्अला :** कुरआने पाक की हर सूरत "بِسۡمِ اللّٰهِ" से शुरूअ़ की जाए सिवाए सूरए बराअत के। **मस्अला :** सूरए नम्ल में आयते सज्दा के बा'द जो "بِسۡمِ اللّٰهِ" आई है वोह मुस्तक़िल आयत नहीं बल्कि जुज़्वे आयत है बिला ख़िलाफ़ इस आयत के साथ ज़रूर पढ़ी जाएगी ! नमाज़े जहरी में जहरन, सिर्री में सिर्रन। **मस्अला :** हर मुबाह़ काम "بِسۡمِ اللّٰهِ" से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है, ना जाइज़ काम पर "بِسۡمِ اللّٰهِ" पढ़ना मम्नूअ़ है। **सूरए फ़ातिहा के मज़ामीन :** इस सूरत में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना, रबूबिय्यत, रह़मत, मालिकिय्यत, इस्तिह़क़ाक़े इबादत, तौफ़ीक़े ख़ैर, बन्दों की हिदायत, तवज्जोह इलल्लाह, इख़्तिसासे इबादत, इस्तिआ़नत, तलबे रुश्द, आदाबे दुआ़, सालिह़ीन के ह़ाल से मुवाफ़क़त, गुमराहों से इज्तिनाब व नफ़रत, दुन्या की ज़िन्दगानी का ख़ातिमा, जज़ा और रोज़े जज़ा का मुसर्रह़ व मुफ़स्सल बयान है और जुम्ला मसाइल का इज्मालन। **ह़म्द :- मस्अला :** हर काम की

الدِّيۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ

का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें हम को सीधा

الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ۬ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ

रास्ता चला रास्ता उन का जिन पर तूने एहसान किया न उन का जिन पर ग़ज़ब

عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷﴾

हुवा और न बहके हुओं का

इब्तिदा में तस्मिया की तरह हम्दे इलाही बजा लाना चाहिये। **मस्अला :** कभी हम्द वाजिब होती है जैसे खुत्बए जुमुआ में, कभी मुस्तहब जैसे खुत्बए निकाह व दुआ व हर अम्रे ज़ीशान में और हर खाने पीने के बा'द, कभी सुन्नते मुअक्कदा जैसे छींक आने के बा'द। (طحطاوی) ''رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ'' में तमाम काएनात के हादिस, मुम्किन, मोहताज होने और **अल्लाह** तआला के वाजिब, क़दीम, अज़ली, अबदी, हय्य, क़य्यूम, क़ादिर, अलीम होने की तरफ़ इशारा है जिन को ''رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ'' मुस्तल्ज़िम है, दो लफ़्ज़ों में इल्मे इलाहिय्यात के अहम मबाहिस तै हो गए। ''مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ'' मिल्क के ज़ुहूरे ताम का बयान और येह दलील है कि **अल्लाह** के सिवा कोई मुस्तहिक़्क़े इबादत नहीं क्यूं कि सब उस के मम्लूक हैं और मम्लूक मुस्तहिक़्क़े इबादत नहीं हो सकता। इसी से मा'लूम हुवा कि दुन्या दारुल अमल है और इस के लिये एक आख़िर है, जहान के सिल्सिले को अज़ली व क़दीम कहना बातिल है। इख़्तितामे दुन्या के बा'द एक जज़ा का दिन है, इस से तनासुख़ बातिल हो गया। ''اِيَّاكَ نَعۡبُدُ'' ज़िक्रे ज़ातो सिफ़ात के बा'द येह फ़रमाना इशारा करता है कि ए'तिक़ाद अमल पर मुक़द्दम है और इबादत की मक़्बूलिय्यत अक़ीदे की सिहहत पर मौक़ूफ़ है। **मस्अला :** ''نَعۡبُدُ'' के सीग़ए जम्अ से अदा ब जमाअत भी मुस्तफ़ाद होती है और येह भी कि अवाम की इबादतें महबूबों और मक़्बूलों की इबादतों के साथ दरजए क़बूल पाती हैं। **मस्अला :** इस में रद्दे शिर्क भी है कि **अल्लाह** तआला के सिवा इबादत किसी के लिये नहीं हो सकती। ''وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ'' में येह ता'लीम फ़रमाई कि इस्तिआनत ख़्वाह ब वासिता हो या बे वासिता हर तरह **अल्लाह** तआला के साथ ख़ास है हक़ीक़ी मुस्तआन (मददगार) वोही है, बाक़ी आलात व ख़ुद्दाम व अहबाब वग़ैरा सब औने इलाही के मज़्हर हैं, बन्दे को चाहिये कि इस पर नज़र रखे और हर चीज़ में दस्ते क़ुदरत को कारकुन देखे। इस से येह समझना कि औलिया व अम्बिया से मदद चाहना शिर्क है अक़ीदए बातिला है क्यूं कि मुक़र्रबाने हक़ की इमदाद, इमदादे इलाही है इस्तिआनत बिलग़ैर नहीं। अगर इस आयत के वोह मा'ना होते जो वहाबिया ने समझे तो क़ुरआने पाक में ''اَعِيۡنُوۡنِيۡ بِقُوَّةٍ'' (मेरी मदद ताक़त से करो) और ''اِسۡتَعِيۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوةِ'' (सब्र और नमाज़ से मदद चाहो) क्यूं वारिद होता, और अहादीस में अहलुल्लाह से इस्तिआनत की ता'लीम क्यूं दी जाती। ''اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ'' मा'रिफ़ते ज़ातो सिफ़ात के बा'द इबादत, इस के बा'द दुआ ता'लीम फ़रमाई, इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि बन्दे को इबादत के बा'द मश्ग़ूले दुआ होना चाहिये, हदीस शरीफ़ में भी नमाज़ के बा'द दुआ की ता'लीम फ़रमाई गई है। (الطبرانی فی الکبیر والبیہقی فی السنن) ''सिराते मुस्तक़ीम'' से मुराद इस्लाम या क़ुरआन, या ख़ुल्क़े नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم या हुज़ूर, या हुज़ूर के आल व अस्हाब हैं। इस से साबित होता है कि सिराते मुस्तक़ीम तरीक़े अहले सुन्नत है जो अहले बैत व अस्हाब और सुन्नत व क़ुरआन व सवादे आ'ज़म सब को मानते हैं। ''صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ'' जुम्लए ऊला की तफ़्सीर है कि सिराते मुस्तक़ीम से तरीक़े मुस्लिमीन मुराद है। इस से बहुत से मसाइल हल होते हैं कि जिन उमूर पर बुज़ुर्गाने दीन का अमल रहा हो वोह सिराते मुस्तक़ीम में दाख़िल है। ''غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ'' इस में हिदायत है कि **मस्अला :** तालिबे हक़ को दुश्मनाने ख़ुदा से इज्तिनाब और उन के राहो रस्म वज़्अ व अत्वार से परहेज़ लाज़िम है। तिरमिज़ी की रिवायत है कि مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ से यहूद, और ضَآلِّيۡنَ से नसारा मुराद हैं। **मस्अला :** ''ضاد'' और ''ظاء'' में मुबाइनते ज़ाती है बा'ज़ सिफ़ात का इश्तिराक इन्हें मुत्तहिद नहीं कर सकता लिहाज़ा غَيۡرِ الۡمَغۡظُوۡبِ ''ब ظا'' पढ़ना अगर ब क़स्द हो तो तहरीफ़े क़ुरआन व कुफ़्र हैं, वरना ना जाइज़। **मस्अला :** जो शख़्स ''ضاد'' की जगह ''ظا'' पढ़े उस की इमामत जाइज़ नहीं। (محیط برہانی) ''اٰمِيۡن'' इस के मा'ना हैं : ऐसा ही कर, या क़बूल फ़रमा। **मस्अला :** येह कलिमए क़ुरआन नहीं। **मस्अला :** सूरए फ़ातिहा के ख़त्म पर ''आमीन कहना'' सुन्नत है नमाज़ के अन्दर भी और नमाज़ के बाहर भी। **मस्अला :** हज़रत इमामे आ'ज़म का मज़्हब येह है कि नमाज़ में ''आमीन'' इख़्फ़ा के साथ या'नी आहिस्ता कही जाए। तमाम अहादीस पर नज़र और तन्क़ीद से येही नतीजा निकलता है कि जह्र की रिवायतों में सिर्फ़ वाइल की रिवायत सहीह है उस में ''مَدَّ بِهَا'' का लफ़्ज़ है जिस की दलालत जह्र पर क़त्ई नहीं, जैसा जह्र का एहतिमाल है वैसा ही बल्कि इस से क़वी मद्दे हम्ज़ह का एहतिमाल है, इस लिये येह रिवायत जह्र के लिये हुज्जत नहीं हो सकती। दूसरी रिवायतें जिन में जह्र व रफ़्अ के अल्फ़ाज़ हैं उन की इस्नाद में कलाम है, इलावा बरीं वोह रिवायत बिलमा'ना हैं और फ़ह्मे रावी, हदीस नहीं लिहाज़ा ''आमीन'' का आहिस्ता ही पढ़ना सहीह तर है।

सूरए बक़रह मदनिय्या है, इस में दो सो छियासी आयतें और चालीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह्मत वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ

[2] वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं[3] इस में हिदायत है डर वालों को[4] वोह जो

1 : सूरए बक़रह : येह सूरत मदनी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मदीनए त़य्यिबा में सब से पहले येही सूरत नाज़िल हुई सिवाए आयत "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ" के कि ह़ज्जे विदाअ़ में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई। (خازن) इस सूरत में दो सो छियासी आयतें, चालीस रुकूअ़, छ[6] हज़ार एक सो इक्कीस कलिमे, पच्चीस हज़ार पांच सो ह़र्फ़ हैं। (خازن) पहले क़ुरआने पाक में सूरतों के नाम न लिखे जाते थे येह त़रीक़ा ह़ज्जाज ने निकाला। इब्ने अ़रबी का क़ौल है कि सूरए बक़र में हज़ार अम्र, हज़ार नह्य, हज़ार हुक्म, हज़ार ख़बरें हैं, इस के अख़्ज़ में बरकत, तर्क में ह़सरत है, अहले बात़िल जादूगर इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते, जिस घर में येह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैत़ान उस में दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि शैत़ान उस घर से भागता है जिस में येह सूरत पढ़ी जाए। (جمل) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने ह़ज़रते मुग़ीरा से रिवायत की, कि जो शख़्स सोते वक़्त सूरए बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा क़ुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वोह आयतें येह हैं : चार आयतें अव्वल की और आयतुल कुर्सी और दो इस के बा'द की, और तीन आख़िरे सूरत की। **मस्अला :** त़बरानी व बैहक़ी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما से रिवायत की, कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मय्यित को दफ़्न कर के क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़र के अव्वल की आयतें और पाउं की त़रफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो। **शाने नुज़ूल :** अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से एक ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाने का वा'दा फ़रमाया था जो न पानी से धो कर मिटाई जा सके न पुरानी हो, जब क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा तो फ़रमाया : "ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" कि वोह किताबे मौऊ़द (जिस का वा'दा किया गया था) येह है। एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल से एक किताब नाज़िल फ़रमाने और बनी इस्माईल में से एक रसूल भेजने का वा'दा फ़रमाया था जब हुज़ूर ने मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई जहां यहूद ब कसरत थे तो "الٓمّٓ ○ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" नाज़िल फ़रमा कर उस वा'दे के पूरे होने की ख़बर दी। (خازن) **2 :** "الٓمّٓ" सूरतों के अव्वल जो हुरूफ़े मुक़त्तआ़ आते हैं उन की निस्बत क़ौले राजेह़ येही है कि वोह असरारे इलाही और मुतशाबिहात से हैं, इन की मुराद अल्लाह और रसूल जानें हम इस के ह़क़ होने पर ईमान लाते हैं। **3 :** इस लिये कि शक उस में होता है जिस पर दलील न हो, क़ुरआने पाक ऐसी वाज़ेह़ और क़वी दलीलें रखता है जो आ़क़िल, मुन्सिफ़ को इस के किताबे इलाही और ह़क़ होने के यक़ीन पर मजबूर करती हैं तो येह किताब किसी त़रह़ क़ाबिले शक नहीं, जिस त़रह़ अन्धे के इन्कार से आफ़्ताब का वुजूद मुश्तबह नहीं होता ऐसे ही मुआ़निद सियाह दिल के शक व इन्कार से येह किताब मश्कूक नहीं हो सकती। **4 :** "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" (इस में हिदायत है डर वालों को) अगर्चे क़ुरआने करीम की हिदायत हर नाज़िर के लिये आ़म है मोमिन हो या काफ़िर जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : "هُدًى لِّلنَّاسِ" (लोगों के लिये हिदायत) लेकिन चूंकि इन्तिफ़ाअ़ इस से अहले तक़्वा को होता है इस लिये "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" इर्शाद हुवा, जैसे कहते हैं बारिश सब्ज़े के लिये है या'नी मुन्तफ़ेअ़ इस से सब्ज़ा होता है अगर्चे बरस्ती कल्लर ज़मीने बे गियाह (बेकार व बन्जर) पर भी है। तक़्वा के कई मा'ना आते हैं : नफ़्स को ख़ौफ़ की चीज़ से बचाना, और उ़र्फ़े शरअ़ में मम्नूआ़त छोड़ कर नफ़्स को गुनाह से बचाना, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मुत्तक़ी वोह है जो शिर्क व कबाइर व फ़वाह़िश से बचे। बा'ज़ों ने कहा : मुत्तक़ी वोह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे। बा'ज़ का क़ौल है : तक़्वा ह़राम चीज़ों का तर्क और फ़राइज़ का अदा करना है। बा'ज़ के नज़्दीक मा'सियत पर इसरार और त़ाअ़त पर ग़ुरूर का तर्क तक़्वा है। बा'ज़ ने कहा : तक़्वा येह है कि तेरा मौला तुझे वहां न पाए जहां उस ने मन्अ़ फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि तक़्वा हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सह़ाबा رضی اللہ تعالٰی عنہم की पैरवी का नाम है। (خازن) येह तमाम मा'ना बाहम मुनासबत रखते हैं और मआल (या'नी अस्ल) के ए'तिबार से इन में कुछ मुख़ालफ़त नहीं। तक़्वा के मरातिब बहुत हैं : अ़वाम का तक़्वा ईमान ला कर कुफ़्र से बचना, मुतवस्सित़ीन का अवामिर व नवाही की इत़ाअ़त, ख़वास का हर ऐसी चीज़ को छोड़ना जो अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल करे। (جمل) ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया : **तक़्वा सात क़िस्म है :** (1) कुफ़्र से बचना, येह बि फ़ज़्लिही तआ़ला हर मुसल्मान को ह़ासिल है (2) बद मज़्हबी से बचना, येह हर सुन्नी को नसीब है (3) हर कबीरा से बचना (4) सग़ाइर से भी बचना (5) शुबुहात से एह़तिराज़ (6) शहवात से बचना (7) ग़ैर की त़रफ़ इल्तिफ़ात से बचना, येह अख़स्सुल ख़वास का मन्सब है। और क़ुरआने अ़ज़ीम सातों मर्तबों का हादी है।

يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

बे देखे ईमान लाएं[5] और नमाज़ क़ाइम रखें[6] और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं[7]

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ

और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा[8]

5 : ''اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ'' यहां से ''مُفْلِحُوْنَ'' तक आयतें मोमिनीने बा इख़्लास के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन ईमानदार हैं, इस के बा'द दो आयतें खुले काफ़िरों के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन काफ़िर हैं। इस के बा'द ''وَمِنَ النَّاسِ'' से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन के हक़ में हैं जो बातिन में काफ़िर हैं और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। (جمل) ''ग़ैब'' मस्दर, या इस्मे फ़ाइल के मा'ना में है इस तक़्दीर पर ''ग़ैब'' वोह है जो हवास व अ़क़्ल से बदीही तौर पर मा'लूम न हो सके, इस की दो क़िस्में हैं : एक वोह जिस पर कोई दलील न हो, येह इल्मे ग़ैब ज़ाती है, और येही मुराद है आयए ''عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ'' (और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वोही जानता है) में और उन तमाम आयात में जिन में इल्मे ग़ैब की ग़ैरे ख़ुदा से नफ़ी की गई है, इस क़िस्म का इल्मे ग़ैब या'नी ज़ाती जिस पर कोई दलील न हो **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है। ''ग़ैब'' की दूसरी क़िस्म वोह है जिस पर दलील हो जैसे सानेए़ आ़लम और उस की सिफ़ात, नुबुव्वात और उन के मुतअ़ल्लिक़ात, अह़काम व शराएअ़ व रोज़े आख़िर और उस के अह़्वाल, बा'स, नश्र, हिसाब, जज़ा वग़ैरा का इल्म जिस पर दलीलें क़ाइम हैं, और जो ता'लीमे इलाही से हासिल होता है यहां येही मुराद है। इस दूसरे क़िस्म के ग़ुयूब जो ईमान से अ़लाक़ा रखते हैं उन का इल्म व यक़ीन हर मोमिन को हासिल है, अगर न हो आदमी मोमिन न हो सके, और **अल्लाह** तआ़ला अपने मुक़र्रब बन्दों अम्बिया व औलिया पर जो ग़ुयूब के दरवाज़े खोलता है वोह इसी क़िस्म का ग़ैब है। या ''ग़ैब'' मा'निये मस्दरी में रखा जाए और ग़ैब का सिला ''مُؤْمَنٌ بِهٖ'' क़रार दिया जाए, या ''بَاء'' को मुतलब्बिसीन मह़ज़ूफ़ के मुतअ़ल्लिक़ कर के हाल क़रार दिया जाए। **पहली** सूरत में आयत के मा'ना येह होंगे जो बे देखे ईमान लाएं जैसा कि ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने तरजमा किया है। **दूसरी** सूरत में मा'ना येह होंगे जो मोमिनीन के पसे ग़ैबत ईमान लाएं या'नी उन का ईमान मुनाफ़िक़ों की तरह़ मोमिनीन के दिखाने के लिये न हो बल्कि वोह मुख़्लिस हों, ग़ाइब, ह़ाज़िर हर ह़ाल में मोमिन रहें। ''ग़ैब'' की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि ग़ैब से क़ल्ब या'नी दिल मुराद है, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि वोह दिल से ईमान लाएं। (جمل) ''ईमान'' जिन चीज़ों की निस्बत हिदायत व यक़ीन से मा'लूम है कि येह दीने मुह़म्मदी से हैं इन सब को मानने और दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़्रार करने का नाम ईमाने सहीह़ है, अ़मल ईमान में दाख़िल नहीं इसी लिये ''يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ'' के बा'द ''يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ'' फ़रमाया। **6 :** नमाज़ के क़ाइम रखने से येह मुराद है कि इस पर मुदावमत करते हैं और ठीक वक़्तों पर पाबन्दी के साथ इस के अरकान पूरे पूरे अदा करते, और फ़राइज़, सुनन, मुस्तह़ब्बात की हिफ़ाज़त करते हैं किसी में ख़लल नहीं आने देते, मुफ़्सिदात व मक्रूहात से इस को बचाते हैं और इस के ह़ुक़ूक़ अच्छी तरह़ अदा करते हैं। नमाज़ के ह़ुक़ूक़ दो तरह़ के हैं : एक ज़ाहिरी वोह तो येही हैं जो ज़िक्र हुए, दूसरे बातिनी वोह ख़ुशूअ़ और ह़ुज़ूर या'नी दिल को फ़ारिग़ कर के हमा तन बारगाहे ह़क़ में मुतवज्जेह हो जाना और अ़र्ज़ो नियाज़ व मुनाजात में मह़विय्यत पाना। **7 :** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है जैसा दूसरी जगह फ़रमाया : ''يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ'' या मुत्लक़ इन्फ़ाक़ ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात, नज़्र, अपना और अपने अह्ल का नफ़क़ा वग़ैरा, ख़्वाह मुस्तह़ब जैसे सदक़ाते नाफ़िला, अम्वात का ईसाले सवाब। **मस्अला :** ग्यारहवीं, फ़ातिह़ा, तीजा, चालीसवां वग़ैरा भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब सदक़ाते नाफ़िला हैं और क़ुरआने पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना नेकी के साथ और नेकी मिला कर अज्रो सवाब बढ़ाता है। **मस्अला :** ''مِمَّا'' में ''مِنْ'' तब्ईज़िया इस तरफ़ इशारा करता है कि इन्फ़ाक़ में इसराफ़ मम्नूअ़ है या'नी इन्फ़ाक़ ख़्वाह अपने नफ़्स पर हो, या अपने अह्ल पर, या किसी और पर ए'तिदाल के साथ हो इसराफ़ न होने पाए। ''رَزَقْنٰهُمْ'' की तक़्दीम और रिज़्क़ को अपनी तरफ़ निस्बत फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमाया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुवा नहीं हमारा अ़ता फ़रमाया हुवा है, इस को अगर हमारे ह़ुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो, और येह बुख़्ल निहायत क़बीह़ है। **8 :** इस आयत में अहले किताब से वोह मोमिनीन मुराद हैं जो अपनी किताब और तमाम पिछली आस्मानी किताबों और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की वह़्यों पर भी ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी, और ''مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ'' से तमाम क़ुरआने पाक और पूरी शरीअ़त मुराद है। (جمل) **मस्अला :** जिस तरह़ क़ुरआने पाक पर ईमान लाना हर मुकल्लफ़ पर फ़र्ज़ है इसी तरह़ कुतुबे साबिक़ा पर ईमान लाना भी ज़रूरी है जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से क़ब्ल अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाईं, अलबत्ता उन के जो अह़काम हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ हो गए उन पर अ़मल दुरुस्त नहीं मगर ईमान ज़रूरी है मसलन पिछली शरीअ़तों में बैतुल मक़्दिस क़िब्ला था इस पर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अ़मल या'नी नमाज़ में बैतुल मक़्दिस की तरफ़ मुंह करना जाइज़ नहीं मन्सूख़ हो चुका। **मस्अला :** क़ुरआने करीम से पहले जो कुछ **अल्लाह** तआ़ला की तरफ़ से उस के अम्बिया पर नाज़िल हुवा उन सब पर इज्मालन ईमान लाना फ़र्ज़े ऐन है और क़ुरआन शरीफ़ पर तफ़्सीलन फ़र्ज़े किफ़ाया है लिहाज़ा अ़वाम पर इस की तफ़्सीलात के इल्म की तह़सील फ़र्ज़ नहीं जब कि उ़लमा मौजूद हों जिन्हों ने इस की तह़सीले इल्म में पूरी जोहद सर्फ़ की हो।

وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓىِٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓىِٕكَ

और आख़िरत पर यक़ीन रखें[9] वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही

هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ

मुराद को पहुंचने वाले बेशक वोह जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है[10] उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ

اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۶﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ

या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं **अल्लाह** ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी

وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۷﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ

और उन की आंखों पर घटाटोप है[11] और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब और कुछ लोग कहते हैं[12]

يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸﴾ يُخٰدِعُوْنَ

कि हम **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाए और वोह ईमान वाले नहीं फ़रेब दिया चाहते हैं

اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ؕ﴿۹﴾

अल्लाह और ईमान वालों को[13] और ह़क़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुऊ़र नहीं

ع ۱ وقف لازم

9 : या'नी दारे आख़िरत और जो कुछ उस में है जज़ा व ह़िसाब वग़ैरा सब पर ऐसा यक़ीन व इत़्मीनान रखते हैं कि ज़रा शको शुबा नहीं। इस में अहले किताब वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जिन के ए'तिक़ाद आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ फ़ासिद हैं। 10 : औलिया के बा'द आ'दा का ज़िक्र फ़रमाना ह़िक्मते हिदायत है कि इस मुक़ाबले से हर एक को अपने किरदार की ह़क़ीक़त और उस के नताइज पर नज़र हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल, अबू लहब वग़ैरा कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं इसी लिये इन के ह़क़ में **अल्लाह** तआ़ला की मुख़ालफ़त से डराना न डराना दोनों बराबर हैं इन्हें नफ़्अ़ न होगा मगर हुज़ूर की सअ़्य बेकार नहीं क्यूं कि मन्सबे रिसालते आ़म्मा का फ़र्ज़ रहनुमाई व इक़ामते हुज्जत व तब्लीग़ अ़ला वज्हिल कमाल है। **मस्अला :** अगर क़ौम पन्द पज़ीर न हो (या'नी नसीहत क़बूल न करे) तब भी हादी को हिदायत का सवाब मिलेगा। इस आयत में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर (तसल्ली और दिलजोई) है कि कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से आप मग़्मूम न हों आप की सअ़्ये तब्लीग़ कामिल है इस का अज्र मिलेगा, मह़रूम तो येह बद नसीब हैं जिन्हों ने आप की इत़ाअ़त न की। ''कुफ़्र'' के मा'ना **अल्लाह** तआ़ला के वुजूद या उस की वह़्दानिय्यत, या किसी नबी की नुबुव्वत, या ज़रूरिय्याते दीन से किसी अम्र का इन्कार, या कोई ऐसा फ़े'ल जो इन्दश्शरअ़ इन्कार की दलील हो कुफ़्र है। 11 : ख़ुलासए मत़लब येह है कि कुफ़्फ़ार ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि ह़क़ के देखने, सुनने, समझने से इस त़रह़ मह़रूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मोहर लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बन्दों के अफ़्आ़ल भी तह़्ते क़ुदरते इलाही हैं। 12 : इस से मा'लूम हुवा कि हिदायत की राहें उन के लिये अव्वल ही से बन्द न थीं कि जाए उ़ज़्र होती बल्कि उन के कुफ़्रो इनाद और सरकशी व बे दीनी और मुख़ालफ़ते ह़क़ व अ़दावते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का येह अन्जाम है जैसे कोई शख़्स त़बीब की मुख़ालफ़त करे और ज़हरे क़ातिल खा ले और उस के लिये दवा से इन्तिफ़ाअ़ की सूरत न रहे तो ख़ुद वोही मुस्तह़िक़्के मलामत है। 13 : **शाने नुज़ूल :** यहां से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुईं जो बात़िन में काफ़िर थे और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते थे, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ''مَاهُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ'' वोह ईमान वाले नहीं या'नी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का मुद्दई होना, नमाज़ रोज़ा अदा करना मोमिन होने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दिल में तस्दीक़ न हो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जितने फ़िर्क़े ईमान का दा'वा करते हैं और कुफ़्र का ए'तिक़ाद रखते हैं सब का येही हुक्म है कि काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम हैं, शरअ़ में ऐसों को मुनाफ़िक़ कहते हैं इन का ज़रर खुले काफ़िरों से ज़ियादा है। ''مِنَ النَّاسِ'' फ़रमाने में लत़ीफ़ रम्ज़ येह है कि येह गुरौह बेहतर सिफ़ात व इन्सानी कमालात से ऐसा आ़री है कि इस का ज़िक्र किसी वस्फ़ व ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूं कहा जाता है कि वोह भी आदमी हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी को बशर कहने में उस के फ़ज़ाइलो कमालात के इन्कार का पहलू निकलता है। इस लिये

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۢ ۙ بِمَا

उन के दिलों में बीमारी है[14] तो अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ाई और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है बदला

كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ ۙ قَالُوْۤا

उन के झूट का[15] और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो[16] तो कहते हैं

اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَ لٰكِنْ لَّا

हम तो संवारने वाले हैं सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें

یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ

शुऊर नहीं और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं[17] तो कहें क्या हम

كَمَاۤ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَ لٰكِنْ لَّا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾

अह़मक़ों की त़रह़ ईमान ले आएं[18] सुनता है वोही अह़मक़ हैं मगर जानते नहीं[19]

क़ुरआने पाक में जा बजा अम्बियाए किराम के बशर कहने वालों को काफ़िर फ़रमाया गया, और दर ह़क़ीक़त अम्बिया की शान में ऐसा लफ़्ज़ अदब से दूर और कुफ़्फ़ार का दस्तूर है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : ''مِنَ النَّاسِ'' सामिईन को तअ़ज्जुब दिलाने के लिये फ़रमाया गया कि ऐसे फ़रेबी मक्कार और ऐसे अह़मक़ भी आदमियों में हैं। **14 :** अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उस को कोई धोका दे सके वोह असरार व मख़्फ़िय्यात का जानने वाला है। मुराद येह है कि मुनाफ़िक़ अपने गुमान में ख़ुदा को फ़रेब देना चाहते हैं, या येह कि ख़ुदा को फ़रेब देना येही है कि रसूल عَلَیْهِ السَّلَام को धोका देना चाहें क्यूं कि वोह उस के ख़लीफ़ा हैं और अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब को असरार का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया है वोह उन मुनाफ़िक़ीन के छुपे कुफ़्र पर मुत्तलअ़ हैं और मुसल्मान उन के इत्तिलाअ़ देने से बा ख़बर, तो उन बे दीनों का फ़रेब न ख़ुदा पर चले न रसूल पर न मोमिनीन पर बल्कि दर ह़क़ीक़त वोह अपनी जानों को फ़रेब दे रहे हैं। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि तक़िय्या बड़ा ऐब है जिस मज़हब की बिना तक़िय्ये पर हो वोह बात़िल है, तक़िय्ये वाले का ह़ाल क़ाबिले ए'तिमाद नहीं होता, तौबा ना क़ाबिले इत़्मीनान होती है इस लिये उ़लमा ने फ़रमाया : ''لَا تُقْبَلُ تَوْبَةُ الزِّنْدِیْقِ'' (ज़िन्दीक़ की तौबा क़बूल नहीं होती)। **15 :** बद अ़क़ीदगी को क़ल्बी मरज़ फ़रमाया गया। इस से मा'लूम हुवा कि बद अ़क़ीदगी रूह़ानी ज़िन्दगी के लिये तबाह कुन है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि झूट ह़राम है इस पर अ़ज़ाबे अलीम मुरत्तब होता है। **16 : मस्अला :** कुफ़्फ़ार से मेलजोल, उन की ख़ात़िर दीन में मुदाहनत (बा वुजूदे क़ुदरत उन्हें बात़िल से न रोकना) और अहले बात़िल के साथ तमल्लुक़ व चापलूसी और उन की ख़ुशी के लिये सुल्ह़े कुल बन जाना और इज़्हारे ह़क़ से बाज़ रहना शाने मुनाफ़िक़ और ह़राम है, इसी को मुनाफ़िक़ीन का फ़साद फ़रमाया गया। आज कल बहुत लोगों ने येह शेवा कर लिया है कि जिस जल्से में गए वैसे ही हो गए इस्लाम में इस की मुमानअ़त है, ज़ाहिरो बात़िन का यक्सां न होना बड़ा ऐब है। **17 :** यहां ''اَلنَّاسُ'' से या सह़ाबए किराम मुराद हैं या मोमिनीन क्यूं कि ख़ुदा शनासी, फ़रमां बरदारी व आ़क़िबत अन्देशी की बदौलत वोही इन्सान कहलाने के मुस्तह़िक़ हैं। **मस्अला :** ''اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ'' (ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं) से साबित हुवा कि सालिह़ीन का इत्तिबाअ़ मह़मूद व मत़लूब है। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि मज़्हबे अहले सुन्नत ह़क़ है क्यूं कि इस में सालिह़ीन का इत्तिबाअ़ है। **मस्अला :** बाक़ी तमाम फ़िर्क़े सालिह़ीन से मुन्ह़रिफ़ हैं लिहाज़ा गुमराह हैं। **मस्अला :** बा'ज़ उ़लमा ने इस आयत को ''ज़िन्दीक़'' की तौबा मक़्बूल होने की दलील क़रार दिया है। (بیضاوی) ''ज़िन्दीक़'' वोह है जो नुबुव्वत का मुक़िर (इक़्रार करता) हो, शआइरे इस्लाम का इज़्हार करे और बात़िन में ऐसे अ़क़ीदे रखे जो बिल इत्तिफ़ाक़ कुफ़्र हों येह भी मुनाफ़िक़ों में दाख़िल है। **18 :** इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन को बुरा कहना अहले बात़िल का क़दीम त़रीक़ा है, आज कल के बात़िल फ़िर्क़े भी पिछले बुज़ुर्गों को बुरा कहते हैं रवाफ़िज़ ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बहुत से सह़ाबा को, ख़वारिज ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और इन के रुफ़क़ा को, ग़ैर मुक़ल्लिद अइम्मए मुज्तहिदीन बिल ख़ुसूस इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को, वहाबिया ब कसरत औलिया व मक़्बूलाने बारगाह को, मिरज़ाई अम्बियाए साबिक़ीन तक को, क़ुरआनी (चकड़ाली) सह़ाबा व मुह़द्दिसीन को, नेचरी तमाम अकाबिरे दीन को बुरा कहते और ज़बाने त़ा'न दराज़ करते हैं, इस आयत से मा'लूम हुवा कि येह सब गुमराही में हैं। इस में दीनदार आ़लिमों के लिये तसल्ली है कि वोह गुमराहों की बद ज़बानियों से बहुत रन्जीदा न हों समझ लें कि येह अहले बात़िल का क़दीम दस्तूर है। (مدارک) **19 :** मुनाफ़िक़ीन की येह बद ज़बानी मुसल्मानों के सामने न थी इन से तो वोह येही कहते थे कि हम ब इख़्लास मोमिन हैं जैसा कि अगली आयत में है

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ

और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों[20]

قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ﴿١٤﴾ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ

तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं हम तो यूंही हंसी करते हैं[21] **अल्लाह** उन से इस्तिह्ज़ा फ़रमाता है[22] (जैसा उस

وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ

की शान के लाइक़ है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटक्ते रहें येह वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही

بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ

ख़रीदी[23] तो उन का सौदा कुछ नफ़्अ़ न लाया और वोह सौदे की राह जानते ही न थे[24] उन की कहावत

كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ

उस की त़रह़ है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा **अल्लाह** उन का

اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا येह तबर्रा बाज़ियां अपनी ख़ास मजलिसों में करते थे **अल्लाह** तआ़ला ने उन का पर्दा फ़ाश कर दिया। (خازن) इसी त़रह़ आज कल के गुमराह फ़िर्क़े मुसल्मानों से अपने ख़यालाते फ़ासिदा को छुपाते हैं मगर **अल्लाह** तआ़ला उन की किताबों और तह़रीरों से उन के राज़ फ़ाश कर देता है। इस आयत से मुसल्मानों को ख़बरदार किया जाता है कि बे दीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहें धोका न खाएं। **20 :** यहां "शयात़ीन" से कुफ़्फ़ार के वोह सरदार मुराद हैं जो इग़्वा (वरग़लाने) में मसरूफ़ रहते हैं। (خازن وبیضاوی) येह मुनाफ़िक़ जब उन से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और मुसल्मानों से मिलना मह़ज़ बराहे फ़रेब व इस्तिह्ज़ा, इस लिये है कि उन के राज़ मा'लूम हों और उन में फ़साद अंगेज़ी के मवाक़ेअ़ मिलें। (خازن) **21 :** या'नी इज़्हारे ईमान तमस्ख़ुर के त़ौर पर किया। येह इस्लाम का इन्कार हुवा। **मस्अला :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और दीन के साथ इस्तिह्ज़ा व तमस्ख़ुर कुफ़्र है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई एक रोज़ उन्हों ने सहाबए किराम की एक जमाअ़त को आते देखा तो इब्ने उबय ने अपने यारों से कहा देखो तो मैं इन्हें कैसा बनाता हूं? जब वोह ह़ज़रात क़रीब पहुंचे तो इब्ने उबय ने पहले ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर का दस्ते मुबारक अपने हाथ में ले कर आप की ता'रीफ़ की फिर इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़मर और ह़ज़रते अ़ली की ता'रीफ़ की (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ)। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ इब्ने उबय ख़ुदा से डर निफ़ाक़ से बाज़ आ क्यूं कि मुनाफ़िक़ीन बद तरीन ख़ल्क़ हैं, इस पर वोह कहने लगा कि येह बातें निफ़ाक़ से नहीं की गईं बख़ुदा हम आप की त़रह़ मोमिने सादिक़ हैं, जब येह ह़ज़रात तशरीफ़ ले गए तो आप अपने यारों में अपनी चालबाज़ी पर फ़ख़्र करने लगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि मुनाफ़िक़ीन मोमिनीन से मिलते वक़्त इज़्हारे ईमान व इख़्लास करते हैं और उन से अ़लाह़दा हो कर अपनी ख़ास मजलिसों में उन की हंसी उड़ाते और इस्तिह्ज़ा करते हैं। (اخرجه الثعلبی والواحدی و ضعفه ابن حجروالسيوطی فی لباب النقول) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम व पेश्वायाने दीन का तमस्ख़ुर उड़ाना कुफ़्र है। **22 : अल्लाह** तआ़ला इस्तिह्ज़ा और तमाम नक़ाइस व उ़यूब से मुनज़्ज़ह व पाक है, यहां "जज़ाए इस्तिह्ज़ा" को इस्तिह्ज़ा फ़रमाया गया ताकि ख़ूब दिल नशीन हो जाए कि येह सज़ा उस ना कर्दनी फ़े'ल की है। ऐसे मौक़अ़ पर जज़ा को उसी फ़े'ल से ता'बीर करना आईने फ़साहत है जैसे "جَزَآءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ" में। कमाले हुस्ने बयान येह है कि इस जुम्ले को जुम्लए साबिक़ा पर मा'तूफ़ न फ़रमाया क्यूं कि वहां इस्तिह्ज़ा ह़क़ीक़ी मा'नी में था। **23 :** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना या'नी बजाए ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करना निहायत ख़सारे और टोटे की बात है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत या उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए, या यहूद के ह़क़ में जो पहले से तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे मगर जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो मुन्किर हो गए, या तमाम कुफ़्फ़ार के ह़क़ में कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फ़ित़्रते सलीमा अ़त़ा फ़रमाई, ह़क़ के दलाइल वाज़ेह़ किये, हिदायत की राहें खोलीं लेकिन उन्हों ने अ़क़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया और गुमराही इख़्तियार की। **मस्अला :** इस आयत से बैए़ तआ़ती़ का जवाज़ साबित हुवा या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त के अल्फ़ाज़ कहे बिग़ैर मह़ज़ रिज़ामन्दी से एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ लेना जाइज़ है। **24 :** क्यूं कि अगर तिजारत का त़रीक़ा जानते तो अस्ल पूंजी (हिदायत) न खो बैठते।

بِنُوۡرِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِىۡ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۷﴾ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡىٌ فَهُمۡ

नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता[25] बहरे गूंगे अन्धे तो वोह

لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۱۸﴾ اَوۡ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيۡهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعۡدٌ وَّبَرۡقٌ ۚ

फिर आने वाले नहीं या जैसे आस्मान से उतरता पानी कि उस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक[26]

يَجۡعَلُوۡنَ اَصَابِعَهُمۡ فِىۡۤ اٰذَانِهِمۡ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الۡمَوۡتِ ؕ وَاللّٰهُ

अपने कानों में उंग्लियां ठोंस रहे हैं कड़क के सबब मौत के डर से[27] और **अल्लाह**

مُحِيۡطٌۢ بِالۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۱۹﴾ يَكَادُ الۡبَرۡقُ يَخۡطَفُ اَبۡصَارَهُمۡ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمۡ

काफ़िरों को घेरे हुए है[28] बिजली यूं मा'लूम होती है कि उन की निगाहें उचक ले जाएगी[29] जब कुछ चमक हुई

مَّشَوۡا فِيۡهِ ۙ وَاِذَآ اَظۡلَمَ عَلَيۡهِمۡ قَامُوۡا ؕ وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

उस में चलने लगे[30] और जब अंधेरा हुवा खड़े रह गए और अगर **अल्लाह** चाहता तो उन के

25 : येह उन की मिसाल है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ हिदायत दी या इस पर क़ुदरत बख़्शी फिर उन्हों ने इस को ज़ाएअ़ कर दिया और अबदी दौलत को ह़ासिल न किया, उन का मआल (अन्जाम) ह़स्रतो अफ़्सोस, ह़ैरतो ख़ौफ़ है। इस में वोह मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं जिन्हों ने इज़्हारे ईमान किया और दिल में कुफ़्र रख कर इक़रार की रोशनी को ज़ाएअ़ कर दिया, और वोह भी जो मोमिन होने के बा'द मुरतद हो गए, और वोह भी जिन्हें फ़ित़्रते सलीमा अ़ता़ हुई और दलाइल की रोशनी ने ह़क़ को वाज़ेह़ किया मगर उन्हों ने इस से फ़ाएदा न उठाया और गुमराही इख़्तियार की और जब ह़क़ सुनने मानने कहने, राहे ह़क़ देखने से मह़रूम हुए तो कान, ज़बान, आंख सब बेकार हैं। **26 :** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की येह दूसरी तम्सील है कि जैसे बारिश ज़मीन की ह़यात का सबब होती है और उस के साथ ख़ौफ़नाक तारीकियां और मुहीब गरज और चमक होती है इसी त़रह़ ''क़ुरआन व इस्लाम'' क़ुलूब की ह़यात का सबब हैं, और ज़िक्रे ''कुफ़्र व शिर्क व निफ़ाक़'' ज़ुल्मत के मुशाबेह जैसे तारीकी रह रव (राह चलने वाले) को मन्ज़िल तक पहुंचने से मानेअ़ होती है ऐसे ही कुफ़्र व निफ़ाक़ राहयाबी (राह पाने) से मानेअ़ हैं, और ''वईदात'' गरज के, और ''हुजजे बय्यिना'' चमक के मुशाबेह हैं। **शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ों में से दो आदमी ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास से मुश्रिकीन की त़रफ़ भागे राह में येही बारिश आई जिस का आयत में ज़िक्र है उस में शिद्दत की गरज, कड़क और चमक थी, जब गरज होती तो कानों में उंग्लियां ठोंस लेते कि कहीं येह कानों को फाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते, जब अंधेरी होती अन्धे रह जाते, आपस में कहने लगे : ख़ुदा ख़ैर से सुब्ह़ करे तो ह़ुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपने हाथ ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में दें, चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित क़दम रहे। उन के ह़ाल को **अल्लाह** तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन के लिये मसल (कहावत) बनाया जो मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो कानों में उंग्लियां ठोंस लेते कि कहीं ह़ुज़ूर का कलाम उन में असर न कर जाए जिस से मर ही जाएं, और जब उन के माल व औलाद ज़ियादा होते और फ़ुतूह़ व ग़नीमत मिलती तो बिजली की चमक वालों की त़रह़ चलते और कहते कि अब तो दीने मुह़म्मदी सच्चा है, और जब माल व औलाद हलाक होते और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में ठिटक रहने वालों की त़रह़ कहते कि येह मुसीबतें इसी दीन की वज्ह से हैं और इस्लाम से पलट जाते। (لباب النقول للسیوطی) **27 :** जैसे अंधेरी रात में काली घटा छाई हो और बिजली की गरज व चमक जंगल में मुसाफ़िर को ह़ैरान करती हो, और वोह कड़क की वह़शत नाक आवाज़ से ब अन्देशए हलाक कानों में उंग्लियां ठोंसता हो। ऐसे ही कुफ़्फ़ार क़ुरआने पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें येह अन्देशा होता है कि कहीं इस के दिल नशीन मज़ामीन इस्लाम व ईमान की त़रफ़ माइल कर के बाप दादा का कुफ़्री दीन तर्क न करा दें जो उन के नज़्दीक मौत के बराबर है। **28 :** लिहाज़ा येह गुरेज़ उन्हें कुछ फ़ाएदा नहीं दे सकती क्यूं कि वोह कानों में उंग्लियां ठोंस कर क़हरे इलाही से ख़लास (छुटकारा) नहीं पा सकते। **29 :** जैसे बिजली की चमक मा'लूम होता है कि बीनाई को ज़ाइल कर देगी ऐसे ही दलाइले बाहिरा के अन्वार उन की बसर व बसीरत को ख़ीरा (तारीक) करते हैं। **30 :** जिस त़रह़ अंधेरी रात और अब्र व बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर मुतह़य्यिर होता है जब बिजली चमक्ती है तो कुछ चल लेता है जब अंधेरा होता है खड़ा रह जाता है इसी त़रह़ इस्लाम के ग़लबे और मो'जिज़ात की रोशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की त़रफ़ राग़िब होते हैं और जब कोई मशक़्क़त पेश आती

بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿٢٠﴾ یٰۤاَیُّهَا

कान और आंखें ले जाता[31] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है[32] ऐ

النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ

लोगो[33] अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मीद करते हुए

تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪

कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले[34] जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को इमारत बनाया

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا

और आस्मान से पानी उतारा[35] तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो

تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا

अल्लाह के लिये जान बूझ कर बराबर वाले न ठहराओ[36] और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो

نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ

हम ने अपने इन ख़ास बन्दे[37] पर उतारा तो उस जैसी एक सूरत तो ले आओ[38] और अल्लाह के सिवा अपने सब

है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं, इसी मज़्मून को दूसरी आयत में इस तरह इर्शाद फ़रमाया : (خازن صاوی وغیرہ) اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ اِذَا فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ٥ وَاِنْ یَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ یَاْتُوْۤا اِلَیْهِ مُذْعِنِیْنَ٥ **31 :** या'नी अगर्चे मुनाफ़िक़ीन का तर्ज़े अमल इस का मुक़्तज़ी था मगर अल्लाह तआ़ला ने उन के सम्अ़ व बसर को बातिल न किया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अस्बाब की तासीर मशिय्यते इलाहिय्यह के साथ मशरूत है, बिग़ैर मशिय्यत तन्हा अस्बाब कुछ नहीं कर सकते। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मशिय्यत अस्बाब की मोहताज नहीं वोह बे सबब जो चाहे कर सकता है। **32 :** "शै" उसी को कहते हैं जिसे अल्लाह चाहे और जो तहते मशिय्यत आ सके, तमाम मुम्किनात "शै" में दाख़िल हैं इस लिये वोह तहते क़ुदरत हैं, और जो मुम्किन नहीं वाजिब या मम्तनेअ़ है उस से क़ुदरत व इरादा मुतअ़ल्लिक़ नहीं होता जैसे अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात वाजिब हैं इस लिये मक़्दूर नहीं। **मस्अला :** बारी तआ़ला के लिये झूट और तमाम उ़यूब मुहाल हैं इसी लिये क़ुदरत को इन से कुछ वासिता नहीं। **33 :** अव्वले सूरत में कुछ बताया गया कि येह किताब मुत्तक़ीन की हिदायत के लिये नाज़िल हुई, फिर मुत्तक़ीन के औसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया, इस के बा'द इस से मुन्हरिफ़ होने वाले फ़िर्क़ों का और उन के अह़वाल का ज़िक्र फ़रमाया कि सआ़दत मन्द इन्सान हिदायत व तक़्वा की तरफ़ राग़िब हो और ना फ़रमानी व बग़ावत से बचे, अब तरीक़े तहसीले तक़्वा ता'लीम फ़रमाया जाता है। "یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ" (ऐ लोगो) का ख़िताब अक्सर अहले मक्का को और "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا" (ऐ ईमान वालो) का अहले मदीना को होता है मगर यहां येह ख़िताब मोमिन, काफ़िर सब को आ़म है, इस में इशारा है कि इन्सानी शराफ़त इसी में है कि आदमी तक़्वा हासिल करे और मसरूफ़े इबादत रहे। "इबादत" वोह ग़ायते ता'ज़ीम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दिय्यत और मा'बूद की उलूहिय्यत के ए'तिक़ाद व ए'तिराफ़ के साथ बजा लाए, यहां इबादत आ़म है, अपने तमाम अन्वाओ़ अक़्साम व उसूलो फ़ुरूअ़ को शामिल है। **मस्अला :** कुफ़्फ़ार इबादत के मामूर हैं जिस तरह बे वुज़ू होना नमाज़ के फ़र्ज़ होने का मानेअ़ नहीं इसी तरह काफ़िर होना वुजूबे इबादत को मन्अ़ नहीं करता, और जैसे बे वुज़ू शख़्स पर नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत रफ़्ए़ हदस लाज़िम करती है ऐसे ही काफ़िर पर वुजूबे इबादत से तर्के कुफ़्र लाज़िम आता है। **34 :** इस से मा'लूम हुवा कि इबादत का फ़ाएदा आ़बिद ही को मिलता है, अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उस को इबादत या और किसी चीज़ से नफ़्अ़ हासिल हो। **35 :** पहली आयत में ने'मते ईजाद का बयान फ़रमाया कि तुम्हें और तुम्हारे आबा को मा'दूम से मौजूद किया और दूसरी आयत में अस्बाबे मईशत व आसाइश व आबो ग़िज़ा का बयान फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि वोही वलिय्ये ने'मत है तो ग़ैर की परस्तिश महज़ बातिल है। **36 :** तौह़ीदे इलाही के बा'द हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के किताबे इलाही व मो'जिज़ (आ़जिज़ कर देने वाली किताब) होने की वोह क़ाहिर दलील बयान फ़रमाई जाती है जो तालिबे सादिक़ को इत्मीनान बख़्शे और मुन्किरों को आ़जिज़ कर दे। **37 :** बन्दए ख़ास से हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم मुराद हैं। **38 :** या'नी ऐसी सूरत बना कर

دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا

हिमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो

النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ

उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं[39] तय्यार रखी है काफ़िरों के लिये[40] और ख़ुश ख़बरी दे

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ

नहरें रवां[41] जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा सूरत देख कर कहेंगे येह तो वोही

رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ

रिज़्क़ है जो हमें पहले मिला था[42] और वोह सूरत में मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उन के लिये उन बाग़ों में सुथरी बीबियां हैं[43]

وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا

और वोह उन में हमेशा रहेंगे[44] बेशक **अल्लाह** इस से ह़या नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए

بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

मच्छर हो या उस से बढ़ कर[45] तो वोह जो ईमान लाए वोह तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़

رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ

وقف لازم

से ह़क़ है[46] रहे काफ़िर वोह कहते हैं ऐसी कहावत में **अल्लाह** का क्या मक़्सूद है

लाओ जो फ़साह़तो बलाग़त और ह़ुस्ने नज़्म व तरतीब और ग़ैब की ख़बरें देने में क़ुरआने पाक की मिस्ल हो। **39 :** पथ्थर से वोह बुत मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार पूजते हैं और उन की मह़ब्बत में क़ुरआने पाक और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इनादन इन्कार करते हैं। **40 : मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है। **मस्अला :** येह भी इशारा है कि मोमिनीन के लिये बि करमिही तआला ख़ुलूदे नार या'नी हमेशा जहन्नम में रहना नहीं। **41 :** सुन्नते इलाही है कि किताब में तरहीब के साथ तरग़ीब ज़िक्र फ़रमाता है इसी लिये कुफ़्फ़ार और उन के आ'माल व अ़ज़ाब के ज़िक्र के बा'द मोमिनीन और उन के आ'माल का ज़िक्र फ़रमाया और उन्हें जन्नत की बिशारत दी। ''صٰلِحٰتٌ'' या'नी नेकियां वोह अ़मल हैं जो शरअ़न अच्छे हों, इन में फ़राइज़ व नवाफ़िल सब दाख़िल हैं। (جلالين) **मस्अला :** अ़मले सालेह़ का ईमान पर अ़त्फ़ दलील है इस की, कि अ़मल जुज़्वे ईमान नहीं। **मस्अला :** येह बिशारत मोमिनीने सालिह़ीन के लिये बिला क़ैद है और गुनहगारों को जो बिशारत दी गई है वोह मुक़य्यद ब मशिय्यते इलाही है कि चाहे अज़ राहे करम मुआफ़ फ़रमाए, चाहे गुनाहों की सज़ा दे कर जन्नत अ़ता करे। (مدارك) **42 :** जन्नत के फल बाहम मुशाबेह होंगे और ज़ाएक़े उन के जुदा जुदा, इस लिये जन्नती कहेंगे कि येही फल तो हमें पहले मिल चुका है, मगर खाने से नई लज़्ज़त पाएंगे तो उन का लुत़्फ़ बहुत ज़ियादा हो जाएगा। **43 :** जन्नती बीबियां, ख़्वाह ह़ूरें हों या और, सब ज़नाने अ़वारिज़ और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से मुबर्रा होंगी, न जिस्म पर मैल होगा न बौलो बराज़, इस के साथ ही वोह बद मिज़ाजी व बद ख़ुल्क़ी से भी पाक होंगी। (مدارك وخازن) **44 :** या'नी अहले जन्नत न कभी फ़ना होंगे न जन्नत से निकाले जाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जन्नत व अहले जन्नत के लिये फ़ना नहीं। **45 : शाने नुज़ूल :** जब **अल्लाह** तआ़ला ने आयए ''مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ'' और आयए ''اَوْ كَصَيِّبٍ'' में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें बयान फ़रमाईं तो मुनाफ़िक़ों ने येह ए'तिराज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला इस से बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाए, इस के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **46 :** चूंकि मिसालों का बयान

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّ يَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَ مَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ۙ﴿۲۶﴾

अल्लाह बहुतेरों को इस से गुमराह करता है[47] और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और इस से उन्हें गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं[48]

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَ يَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ

वोह जो **अल्लाह** के अ़हद को तोड़ देते हैं[49] पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के

اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۷﴾

जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[50](الف) वोही नुक़्सान में हैं

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ

भला तुम क्यूंकर ख़ुदा के मुन्किर होगे हा़लां कि तुम मुर्दा थे उस ने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर

يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۸﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ

तुम्हें जिलाएगा फिर उसी की त़रफ़ पलट कर जाओगे[50](ب) वोही है जिस ने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन

मुक़्तज़ाए हिक्मत और मज़्मून को दिल नशीन करने वाला होता है और फ़ुसहाए अ़रब का दस्तूर है इस लिये इस पर ए'तिराज़ ग़लत़ व बे जा है और बयाने अम्सिला हक़ है। **47 :** ''يُضِلُّ بِهٖ'' कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का जवाब है कि **अल्लाह** तआ़ला का इस मसल से क्या मक़्सूद है और ''اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا'' और ''اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا'' जो दो जुम्ले ऊपर इर्शाद हुए उन की तफ़्सीर है कि इस मसल से बहुतों को गुमराह करता है जिन की अ़क़्लों पर जह्ल ने ग़लबा किया है और जिन की आ़दत मुक़ाबरा व इनाद (तकब्बुर व सरकशी) है और जो अम्रे हक़ और खुली हिक्मत के इन्कार व मुख़ालफ़त के ख़ूगर हैं, और बा वुजूदे कि येह मसल निहायत ही बर मह़ल है फिर भी इन्कार करते हैं। और इस से **अल्लाह** तआ़ला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर व तह़क़ीक़ के आ़दी हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते वोह जानते हैं कि हिक्मत येही है कि अ़ज़ीमुल मर्तबा चीज़ की तम्सील किसी क़द्र वाली चीज़ से और ह़क़ीर चीज़ की अदना शै से दी जाए जैसा कि ऊपर की आयत में ह़क़ की नूर से और बात़िल की ज़ुल्मत से तम्सील दी गई। **48 :** शरअ़ में फ़ासिक़ उस ना फ़रमान को कहते हैं जो कबीरा का मुरतकिब हो, **फ़िस्क़ के तीन दरजे हैं :** एक **''तग़ाबी''** वोह येह कि आदमी इत्तिफ़ाक़िया किसी कबीरा गुनाह का मुरतकिब हुवा और उस को बुरा ही जानता रहा। दूसरा **''इन्हिमाक''** कि कबीरा का आ़दी हो गया और उस से बचने की परवाह न रही। तीसरा **''जुहूद''** कि ह़राम को अच्छा जान कर इरतिकाब करे, इस दरजे वाला ईमान से मह़रूम हो जाता है, पहले दो दरजों में जब तक अक्बरे कबाइर (कुफ़्र व शिर्क) का इरतिकाब न करे उस पर मोमिन का इत़्लाक़ होता है। यहां ''फ़ासिक़ीन'' से वोही ना फ़रमान मुराद हैं जो ईमान से ख़ारिज हो गए, क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार पर भी फ़ासिक़ का इत़्लाक़ हुवा है : ''اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ''। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां फ़ासिक़ से काफ़िर मुराद लिये, बा'ज़ ने मुनाफ़िक़, बा'ज़ ने यहूद। **49 :** इस से वोह अ़हद मुराद है जो **अल्लाह** तआ़ला ने कुतुबे साबिक़ा में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने की निस्बत फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि अ़हद तीन हैं : **पहला अ़हद** वोह जो **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उस की रुबूबिय्यत का इक़्रार करें, इस का बयान इस आयत में है ''وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْۤ اٰدَمَ ...الاية''। **दूसरा अ़हद** अम्बिया के साथ मख़्सूस है कि रिसालत की तब्लीग़ फ़रमाएं और दीन की इक़ामत करें, इस का बयान आयए ''وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ'' में है। **तीसरा अ़हद** उ़लमा के साथ ख़ास है कि ह़क़ को न छुपाएं, इस का बयान ''وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ'' में है। **50 (الف) :** रिश्ता व क़राबत के तअ़ल्लुक़ात, मुसलमानों की दोस्ती व मह़ब्बत, तमाम अम्बिया का मानना, कुतुबे इलाही की तस्दीक़, ह़क़ पर जम्अ़ होना येह वोह चीज़ें हैं जिन के मिलाने का हुक्म फ़रमाया गया इन में क़त़्अ़ करना, बा'ज़ को बा'ज़ से नाह़क़ जुदा करना, तफ़र्रुक़ों की बिना डालना मम्नूअ़ फ़रमाया गया। **50 (ب) :** दलाइले तौह़ीदो नुबुव्वत और जज़ाए कुफ़्रो ईमान के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी आ़म व ख़ास ने'मतों का और आसारे क़ुदरत व अ़जाइबो हिक्मत का ज़िक्र फ़रमाया और क़बाह़ते कुफ़्र दिल नशीं करने के लिये कुफ़्फ़ार को ख़ित़ाब फ़रमाया कि तुम किस त़रह़ ख़ुदा के मुन्किर होते हो बा वुजूदे कि तुम्हारा अपना ह़ाल उस पर ईमान लाने का मुक़्तज़ी है कि तुम मुर्दा थे। मुर्दा से जिस्मे बेजान मुराद है, हमारे उ़र्फ़ में भी बोलते हैं ज़मीन मुर्दा हो गई, अ़रबी में भी मौत इस मा'नी में आई, ख़ुद क़ुरआने पाक में इर्शाद हुवा : ''يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا''

جَمِيۡعًا ۗ ثُمَّ اسۡتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰٮهُنَّ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ

में है[51] फिर आस्मान की त़रफ़ इस्तवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह सब

شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ‏﴿۲۹﴾‏ وَاِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓٮِٕكَةِ اِنِّىۡ جَاعِلٌ فِى الۡاَرۡضِ

कुछ जानता है[52] और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने

خَلِيۡفَةً ؕ قَالُوۡۤا اَتَجۡعَلُ فِيۡهَا مَنۡ يُّفۡسِدُ فِيۡهَا وَيَسۡفِكُ الدِّمَآءَ ۚ

वाला हूं[53] बोले क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे[54]

وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ بِحَمۡدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىۡۤ اَعۡلَمُ مَا لَا

और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मा'लूम है जो तुम

تَعۡلَمُوۡنَ ‏﴿۳۰﴾‏ وَعَلَّمَ اٰدَمَ الۡاَسۡمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمۡ عَلَى الۡمَلٰٓٮِٕكَةِ ۙ

नहीं जानते[55] और **अल्लाह** तआ़ला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए[56] फिर सब अश्या मलाएका पर पेश कर के

तो मत़लब येह है कि तुम बेजान जिस्म थे उ़न्सुर की सूरत में, फिर ग़िज़ा की शक्ल में, फिर अख़्लात़ की शान में, फिर नुत़्फ़े की ह़ालत में, उस ने तुम को जान दी, ज़िन्दा फ़रमाया, फिर उ़म्र की मीआ़द पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा इस से या क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सुवाल के लिये होगी या ह़श्र की, फिर तुम ह़िसाब व जज़ा के लिये उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे, अपने इस ह़ाल को जान कर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अ़जीब है। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि كَيۡفَ تَكۡفُرُوۡنَ का ख़ित़ाब मोमिनीन से है और मत़लब येह है कि तुम किस त़रह़ काफ़िर हो सकते हो दरआं ह़ाले कि तुम जह्ल की मौत से मुर्दा थे **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें इ़ल्म व ईमान की ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाई, इस के बा'द तुम्हारे लिये वोही मौत है जो उ़म्र गुज़रने के बा'द सब को आया करती है, इस के बा'द वोह तुम्हें ह़क़ीक़ी दाइमी ह़यात अ़त़ा फ़रमाएगा फिर तुम उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे और वोह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी दिल पर उस का ख़त़रा गुज़रा। **51 :** या'नी कानें, सब्ज़े, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में हैं सब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे दीनी व दुन्यवी नफ़्अ़ के लिये बनाए, दीनी नफ़्अ़ इस त़रह़ कि ज़मीन के अ़जाइबात देख कर तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मतो क़ुदरत की मा'रिफ़त हो, और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ येह कि खाओ पियो आराम करो अपने कामों में लाओ, तो इन ने'मतों के बा वुजूद तुम किस त़रह कुफ़्र करोगे। **मस्अला :** कर्ख़ी व अबू बक्र राज़ी वग़ैरा ने "خَلَقَ لَكُمۡ" को क़ाबिले इन्तिफ़ाअ़ अश्या के मुबाहुल अस्ल होने की दलील क़रार दिया है। **52 :** या'नी येह ख़िल्क़त व ईजाद **अल्लाह** तआ़ला के आ़लिमे जमीअ़ अश्या होने की दलील है क्यूं कि ऐसी पुर ह़िक्मत मख़्लूक़ का पैदा करना बिग़ैर इ़ल्मे मुह़ीत़ के मुम्किन व मुतसव्वर नहीं। मरने के बा'द ज़िन्दा होना काफ़िर मुह़ाल जानते थे इन आयतों में उन के बुत़लान पर क़वी बुरहान क़ाइम फ़रमा दी कि जब **अल्लाह** तआ़ला क़ादिर है, अ़लीम है और अबदान के माद्दे जम्अ़ व ह़यात की सलाहिय्यत भी रखते हैं तो मौत के बा'द ह़यात कैसे मुह़ाल हो सकती है? पैदाइशे आस्मानो ज़मीन के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान में फ़िरिश्तों को और ज़मीन में जिन्नात को सुकूनत दी, जिन्नात ने फ़साद अंगेज़ी की तो मलाएका की एक जमाअ़त भेजी जिस ने इन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया। **53 :** "ख़लीफ़ा" अह़काम व अवामिर के इजरा व दीगर तसर्रुफ़ात में अस्ल का नाइब होता है, यहां ख़लीफ़ा से ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام मुराद हैं अगर्चे और तमाम अम्बिया भी **अल्लाह** तआ़ला के ख़लीफ़ा हैं, ह़ज़रते दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام के ह़क़ में फ़रमाया : "يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلۡنٰكَ خَلِيۡفَةً فِى الۡاَرۡضِ"। फ़िरिश्तों को ख़िलाफ़ते आदम की ख़बर इस लिये दी गई कि वोह इन के ख़लीफ़ा बनाए जाने की ह़िक्मत दरयाफ़्त कर के मा'लूम कर लें और उन पर ख़लीफ़ा की अ़ज़मतो शान ज़ाहिर हो कि इन को पैदाइश से क़ब्ल ही ख़लीफ़ा का लक़ब अ़त़ा हुवा और आस्मान वालों को इन की पैदाइश की बिशारत दी गई। **मस्अला :** इस में बन्दों को ता'लीम है कि वोह काम से पहले मश्वरा किया करें और **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस को मश्वरे की ह़ाजत हो। **54 :** मलाएका का मक़्सद ए'तिराज़ या ह़ज़रते आदम पर त़ा'न नहीं बल्कि ह़िक्मते ख़िलाफ़त दरयाफ़्त करना है और इन्सानों की त़रफ़ फ़साद अंगेज़ी की निस्बत करना इस का इ़ल्म या उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से दिया गया हो, या लौह़े मह़फ़ूज़ से ह़ासिल हुवा हो, और या ख़ुद उन्हों ने जिन्नात पर क़ियास किया हो। **55 :** या'नी मेरी ह़िक्मतें तुम पर ज़ाहिर नहीं। बात येह है कि इन्सानों में अम्बिया भी होंगे, औलिया भी, उ़लमा भी और वोह इ़ल्मी व अ़मली दोनों फ़ज़ीलतों के जामेअ़ होंगे। **56 :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام पर तमाम अश्या व जुम्ला मुसम्मयात पेश फ़रमा

فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا

बोले बताओ[57] तो नाम के इन तो हो सच्चे फ़रमाया

سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾

पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इल्म व हिक्मत वाला है[58]

قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ ۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ ۙ قَالَ

फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये[59] फ़रमाया

اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۙ وَ اَعْلَمُ مَا

मैं न कहता था कि मैं जानता हूं आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूं जो कुछ

تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो[60] और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ٚ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾ وَ قُلْنَا

तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और गुरूर किया और काफ़िर हो गया[61] और हम ने फ़रमाया

कर आप को उन के अस्मा व सिफ़ात व अफ़्आल व ख़्वास व उसूले उ़लूम व सनाआत सब का इ़ल्म ब त़रीक़े इल्हाम अ़त़ा फ़रमाया। **57 :** या'नी अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़्लूक़ तुम से ज़ियादा आ़लिम पैदा न करूंगा और ख़िलाफ़त के तुम ही मुस्तह़िक़ हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्यूं कि ख़लीफ़ा का काम तसर्रुफ़ व तदबीर और अ़दलो इन्साफ़ है और येह बिग़ैर इस के मुम्किन नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों का इ़ल्म हो जिन पर उस को मुतसर्रिफ़ फ़रमाया गया और जिन का उस को फ़ैसला करना है। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मलाएका पर अफ़्ज़ल होने का सबब इ़ल्म ज़ाहिर फ़रमाया, इस से साबित हुवा कि इ़ल्मे अस्मा ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इ़बादत से अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मलाएका से अफ़्ज़ल हैं। **58 :** इस में मलाएका की त़रफ़ से अपने इ़ज्ज़ व क़ुसूर का ए'तिराफ़ इस अम्र का इज़्हार है कि उन का सुवाल इस्तिफ़्सारन था न कि ए'तिराज़न। और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत और इस की पैदाइश की ह़िक्मत मा'लूम हो गई जिस को वोह पहले न जानते थे। **59 :** या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने हर चीज़ का नाम और उस की पैदाइश की ह़िक्मत बता दी। **60 :** मलाएका ने जो बात ज़ाहिर की थी वोह येह थी कि इन्सान फ़साद अंगेज़ी व ख़ूनरेज़ी करेगा और जो बात छुपाई थी वोह येह थी कि मुस्तह़िक़्क़े ख़िलाफ़त वोह ख़ुद हैं और **अल्लाह** तआ़ला उन से अफ़्ज़लो आ'लम कोई मख़्लूक़ पैदा न फ़रमाएगा। **मस्अला :** इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इ़ल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और येह भी कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ ता'लीम की निस्बत करना सह़ीह़ है अगर्चे उस को मुअ़ल्लिम न कहा जाएगा क्यूं कि मुअ़ल्लिम पेशावर ता'लीम देने वाले को कहते हैं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि जुम्ला लुग़ात और कुल ज़बानें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हैं। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि मलाएका के उ़लूम व कमालात में ज़ियादती होती है। **61 :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम मौजूदात का नमूना और आ़लमे रूह़ानी व जिस्मानी का मज्मूआ़ बनाया और मलाएका के लिये हुसूले कमालात का वसीला किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते आदम को सज्दा करें क्यूं कि इस में शुक्र गुज़ारी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की फ़ज़ीलत के ए'तिराफ़ और अपने मक़ूले की मा'ज़िरत की शान पाई जाती है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा करने से पहले ही मलाएका को सज्दे का हुक्म दिया था, उन की सनद येह आयत है : ''فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ط'' । (بیضاوی) सज्दे का हुक्म तमाम मलाएका को दिया गया था येही असह़ह़ है। (خازن) **मस्अला :** सज्दा दो त़रह़ का होता है एक सज्दए इ़बादत जो ब क़स्दे परस्तिश किया जाता है, दूसरा सज्दए तह़िय्यत जिस से मस्जूद की ता'ज़ीम मन्ज़ूर होती है न कि इ़बादत। **मस्अला :** सज्दए इ़बादत **अल्लाह** तआ़ला के लिये ख़ास है किसी और के लिये नहीं हो सकता, न किसी शरीअ़त में कभी जाइज़ हुवा। यहां जो मुफ़स्सिरीन सज्दए इ़बादत मुराद लेते हैं वोह फ़रमाते हैं कि सज्दा ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये था और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام क़िब्ला बनाए गए थे तो वोह मस्जूद इलैह थे न कि मस्जूद लहू,

يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَ كُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ شِئْتُمَا۪

ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे

وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۵﴾ فَاَزَلَّهُمَا

मगर उस पेड़ के पास न जाना[62] कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे[63] तो शैतान ने

الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

जन्नत से उन्हें लग़्ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया[64] और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो[65] आपस में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ﴿۳۶﴾ فَتَلَقّٰۤى

तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरत्ना है[66] फिर सीख लिये

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿۳۷﴾ قُلْنَا

आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की[67] बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान हम ने फ़रमाया

मगर येह क़ौल ज़ईफ़ है क्यूं कि इस सज्दे से हज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का फ़ज़्लो शरफ़ ज़ाहिर फ़रमाना मक़्सूद था और मस्जूद इलैह का साजिद से अफ़्ज़ल होना कुछ ज़रूर नहीं। जैसा कि का'बए मुअज़्ज़मा हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का क़िब्ला व मस्जूद इलैह है बा वुजूदे कि हुज़ूर उस से अफ़्ज़ल हैं। दूसरा क़ौल येह है कि यहां सज्दए इबादत न था सज्दए तहिय्यत था और ख़ास हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये था, ज़मीन पर पेशानी रख कर था न कि सिर्फ़ झुकना, येही क़ौल सहीह है और इसी पर जम्हूर हैं। (مدارک) **मस्अला :** सज्दए तहिय्यत पहली शरीअ़तों में जाइज़ था, हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ किया गया अब किसी के लिये जाइज़ नहीं है क्यूं कि जब हज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सज्दा करने का इरादा किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मख़्लूक़ को न चाहिये कि **अल्लाह** तआला के सिवा किसी को सज्दा करे। (مدارک) मलाएका में सब से पहले सज्दा करने वाले हज़रते जिब्रील हैं फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर इज़राईल फिर और मलाइकए मुक़र्रबीन, येह सज्दा जुमुआ़ के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया गया। एक क़ौल येह भी है कि मलाइकए मुक़र्रबीन सो बरस और एक क़ौल में पांच सो बरस सज्दे में रहे, शैतान ने सज्दा न किया और बराहे तकब्बुर येह ए'तिक़ाद करता रहा कि वोह हज़रते आदम से अफ़्ज़ल है, उस के लिये सज्दे का हुक्म مَعَاذَاللّٰہ تَعَالٰی तआला ख़िलाफ़े हिक्मत है, इस ए'तिक़ादे बातिल से वोह काफ़िर हो गया। **मस्अला :** आयत में दलालत है कि हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं कि उन से इन्हें सज्दा कराया गया। **मस्अला :** तकब्बुर निहायत क़बीह है इस से कभी मुतकब्बिर की नौबत कुफ़्र तक पहुंचती है। (بیضاوی و جمل) **62 :** इस से गन्दुम या अंगूर वग़ैरा मुराद है। (جلالین) **63 :** ज़ुल्म के मा'ना हैं : किसी शै को बे महल वज़्अ़ करना, येह मम्नूअ़ है और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह सरज़द नहीं होता, यहां ज़ुल्म ख़िलाफ़े औला के मा'नी में है। **मस्अला :** अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को ज़ालिम कहना इहानत व कुफ़्र है जो कहे वोह काफ़िर हो जाएगा, **अल्लाह** तआला मालिको मौला है जो चाहे फ़रमाए इस में उन की इ़ज़्ज़त है, दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कलिमा ज़बान पर लाए और ख़िताबे हज़रते हक़ को अपनी जुरअत के लिये सनद बनाए, हमें ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदब व ताअ़त का हुक्म फ़रमाया हम पर येही लाज़िम है। **64 :** शैतान ने किसी तरह हज़रते आदम व हव्वा (عَلَیْہِمَا السَّلَام) के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें शजरे ख़ुल्द बता दूं ! हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने इन्कार फ़रमाया, उस ने क़सम खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं, उन्हें ख़याल हुवा कि **अल्लाह** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है ? बईं ख़याल हज़रते हव्वा ने उस में से कुछ खाया फिर हज़रते आदम को दिया उन्हों ने भी तनावुल किया, हज़रते आदम को ख़याल हुवा कि لَا تَقْرَبَا की नह्य तन्ज़ीही है तह़रीमी नहीं क्यूं कि अगर वोह तह़रीमी समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अम्बिया मा'सूम होते हैं, यहां हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से इज्तिहाद में ख़ता हुई और ख़ताए इज्तिहादी मा'सियत नहीं होती। **65 :** हज़रते आदम व हव्वा और उन की ज़ुर्रिय्यत को जो उन के सुल्ब में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुवा, हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ज़मीने हिन्द में "सरान्दीप" के पहाड़ों पर और हज़रते हव्वा "जद्दे" में उतारे गए। (خازن) हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की बरकत से ज़मीन के अश्जार में पाकीज़ा ख़ुश्बू पैदा हुई। (روح البیان) **66 :** इस से इख़्तितामे उ़म्र या'नी मौत का वक़्त मुराद है और हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये बिशारत है कि वोह दुन्या में सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये हैं इस के बा'द फिर उन्हें जन्नत की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाना है और आप की औलाद के लिये मआ़द पर दलालत है कि दुन्या की ज़िन्दगी मुअ़य्यन वक़्त तक है उ़म्र तमाम होने के बा'द उन्हें आख़िरत की त़रफ़ रुजूअ़ करना है। **67 :** आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़मीन पर आने

اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا

तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा उसे

خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ

न कोई अन्देशा न कुछ ग़म[68] और वोह जो कुफ़्र करें और मेरी आयतें झुटलाएंगे

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۹﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

वोह दोज़ख़ वाले हैं उन को हमेशा उस में रहना ऐ या'क़ूब की औलाद[69] याद करो

نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ

मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया[70] और मेरा अ़ह्द पूरा करो मैं तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा[71] और ख़ास मेरा

के बा'द तीन सो बरस तक ह़या से आस्मान की त़रफ़ सर न उठाया अगर्चे ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام "कसीरुल बुका" (या'नी बहुत ज़ियादा रोने वाले) थे, आप के आंसू तमाम ज़मीन वालों के आंसूओं से ज़ियादा हैं मगर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام इस क़दर रोए कि आप के आंसू ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम अहले ज़मीन के आंसूओं के मज्मूए से बढ़ गए। (خازن) त़बरानी व ह़ाकिम व अबू नुऐम व बैहक़ी ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप फ़िक्रे तौबा में ह़ैरान थे, इस परेशानी के आ़लम में याद आया कि वक़्ते पैदाइश मैं ने सर उठा कर देखा था कि अ़र्श पर लिखा है : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" मैं समझा था कि बारगाहे इलाही में वोह रुत्बा किसी को मुयस्सर नहीं जो ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़ासिल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन का नाम अपने नामे अक़्दस के साथ अ़र्श पर मक्तूब फ़रमाया, लिहाज़ा आप ने अपनी दुआ़ में "رَبَّنَا ظَلَمْنَا...الآيه" के साथ येह अ़र्ज़ किया : "اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اَنْ تَغْفِرَلِیْ" इब्ने मुन्ज़िर की रिवायत में येह कलिमे हैं : "اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِجَاهِ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَكَرَامَتِهٖ عَلَيْكَ اَنْ تَغْفِرَلِیْ خَطِيْئَتِیْ" या'नी या रब ! मैं तुझ से तेरे बन्दए ख़ास मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के जाहो मर्तबत के तुफ़ैल में और उस करामत के सदक़े में जो उन्हें तेरे दरबार में ह़ासिल है मग़्फ़िरत चाहता हूं। येह दुआ़ करनी थी कि ह़क़ तआ़ला ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमाई। **मस्अला :** इस रिवायत से साबित है कि मक़्बूलाने बारगाह के वसीले से दुआ़ ब ह़क़्क़े फुलां और ब जाहे फुलां कह कर मांगना जाइज़ और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला पर किसी का ह़क़ वाजिब नहीं होता लेकिन वोह अपने मक़्बूलों को अपने फ़ज़्लो करम से ह़क़ देता है इसी तफ़ज़्ज़ुलिये ह़क़ के वसीले से दुआ़ की जाती है, सह़ीह़ अह़ादीस से येह ह़क़ साबित है जैसे वारिद हुवा : "مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُّدْخِلَهُ الْجَنَّةَ" (जो ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के रसूल पर और नमाज़ क़ाइम की और रमज़ान के रोज़े रखे, **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल करे)। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा दसवीं मुह़र्रम को क़बूल हुई। जन्नत से इख़्राज के वक़्त और ने'मतों के साथ अ़रबी ज़बान भी आप से सल्ब कर ली गई थी बजाए इस के ज़बान मुबारक पर सुरयानी जारी कर दी गई थी क़बूले तौबा के बा'द फिर ज़बाने अ़रबी अ़त़ा हुई। (فتح العزيز) **मस्अला :** तौबा की अस्ल "रुजूअ़ इलल्लाह" है, इस के तीन रुक्न हैं : **एक** ए'तिराफ़े जुर्म, **दूसरे** नदामत, **तीसरे** अ़ज़्मे तर्क। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम है मसलन तारिके सलात की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है। तौबा के बा'द ह़ज़रते जिब्रईल ने ज़मीन के तमाम जानवरों में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िलाफ़त का ए'लान किया और सब पर उन की फ़रमां बरदारी लाज़िम होने का हुक्म सुनाया, सब ने क़बूले त़ाअ़त का इज़्हार किया। (فتح العزيز) **68 :** येह मोमिनीने सालिह़ीन के लिये बिशारत है कि न उन्हें फ़ज़्ए अक्बर (सब से बड़ी घबराहट) के वक़्त ख़ौफ़ हो न आख़िरत में ग़म, वोह बे ग़म जन्नत में दाख़िल होंगे। **69 :** इसराईल ब मा'ना अ़ब्दुल्लाह अ़बरी ज़बान का लफ़्ज़ है, येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब है। (مدارك) कल्बी मुफ़स्सिर ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला ने "يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا" (ऐ लोगो ! अपने रब को पूजो) फ़रमा कर पहले तमाम इन्सानों को उ़मूमन दा'वत दी, फिर "اِذْ قَالَ رَبُّكَ" फ़रमा कर उन के मब्दअ (पैदाइश) का ज़िक्र किया, इस के बा'द ख़ुसूसिय्यत के साथ बनी इसराईल को दा'वत दी, येह लोग यहूदी हैं और यहां से "سَيَقُوْلُ" तक इन से कलाम जारी है। कभी ब मुलात़फ़त (इनायत व मेहरबानी करते हुए) इन्आ़म याद दिला कर दा'वत दी जाती है कभी ख़ौफ़ दिलाया जाता है, कभी हुज्जत क़ाइम की जाती है कभी उन की बद अ़मली पर तौबीख़ होती है, कभी गुज़श्ता उ़क़ूबात का ज़िक्र किया जाता है। **70 :** येह एह़सान कि तुम्हारे आबा को फ़िरऔ़न से नजात दिलाई, दरिया को फाड़ा, अब्र को साएबान बनाया, इन के इ़लावा और एह़सानात जो आगे आते हैं उन सब को याद करो, और याद करना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त व बन्दगी कर के शुक्र बजा लाओ क्यूं कि किसी ने'मत का शुक्र न करना ही उस का भुलाना है। **71 :** या'नी तुम ईमान व त़ाअ़त बजा ला कर मेरा अ़ह्द पूरा करो, मैं जज़ा व सवाब दे कर तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा, इस अ़ह्द का बयान आयए "وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ" में है।

فَارْهَبُوْنِ ﴿۴۰﴾ وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا

ही डर रखो[72] और ईमान लाओ उस पर जो मैं ने उतारा उस की तस्दीक़ करता हुवा जो तुम्हारे साथ है और सब से

اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۪ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۫ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿۴۱﴾

पहले उस के मुन्किर न बनो[73] और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो[74] और मुझी से डरो

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۲﴾

और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾ اَتَاْمُرُوْنَ

और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो[75] क्या लोगों को

النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا

भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें

تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى

अ़क़्ल नहीं[76] और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर

الْخٰشِعِيْنَ ﴿۴۵﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ

जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं[77] जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की

72 : मस्अला : इस आयत में शुक्रे ने'मत व वफ़ाए अ़हद के वाजिब होने का बयान है और येह भी कि मोमिन को चाहिये कि अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। **73 :** या'नी कुरआने पाक और तौरैत व इन्जील पर जो तुम्हारे साथ हैं ईमान लाओ और अहले किताब में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इत्तिबाअ़ में कुफ़्र इख़्तियार करे उस का वबाल भी तुम पर हो। **74 :** इन आयात से तौरैत व इन्जील की वोह आयात मुराद हैं जिन में हुज़ूर صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है, मक़्सद येह है कि हुज़ूर की ना'त दौलते दुन्या के लिये मत छुपाओ कि मताए दुन्या समने क़लील और ने'मते आख़िरत के मुक़ाबिल बे हक़ीक़त है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत का'ब बिन अशरफ़ और दूसरे रुअसा व उ़लमाए यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी क़ौम के जाहिलों और कमीनों से टके वुसूल कर लेते और उन पर सालाने मुक़र्रर करते थे और उन्हों ने फलों और नक़्द मालों में अपने हक़ मुअ़य्यन कर लिये थे उन्हें अन्देशा हुवा कि तौरैत में जो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है अगर उस को ज़ाहिर करें तो क़ौम हुज़ूर पर ईमान ले आएगी और उन की कुछ पुरसिश न रहेगी, येह तमाम मनाफ़ेअ़ जाते रहेंगे, इस लिये उन्हों ने अपनी किताबों में तग़्यीर की और हुज़ूर की ना'त को बदल डाला, जब उन से लोग दरयाफ़्त करते कि तौरैत में हुज़ूर के क्या औसाफ़ मज़्कूर हैं? तो वोह छुपा लेते और हरगिज़ न बताते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن وغیرہ) **75 :** इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत और अरकान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो। **मस्अला :** जमाअ़त की तरग़ीब भी है, हदीस शरीफ़ में है जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है। **76 : शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद से उन के मुसल्मान रिश्तेदारों ने दीने इस्लाम की निस्बत दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने कहा कि तुम इस दीन पर क़ाइम रहो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दीन हक़ और कलाम सच्चा है! इस पर येह आयत नाज़िल हुई, एक क़ौल येह है कि आयत उन यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुश्रिकीने अ़रब को हुज़ूर के मबऊ़स होने की ख़बर दी थी और हुज़ूर की इत्तिबाअ़ करने की हिदायत की थी फिर जब हुज़ूर मब्ऊ़स हुए तो येह हिदायत करने वाले हसद से ख़ुद काफ़िर हो गए और इस पर इन्हें तौबीख़ की गई। (خازن ومدارک) **77 :** या'नी अपनी हाजतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। سُبْحٰنَ اللہ क्या पाकीज़ा ता'लीम है! सब्र मुसीबतों का अख़्लाक़ी

رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ

तरफ़ फिरना[78] ऐ औलादे या'कूब याद करो मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया

وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ

और येह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी[79] और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला

نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ

न हो सकेगी[80] और न काफ़िर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ ले कर उस की जान छोड़ी जाए और न उन की

يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

मदद हो[81] और याद करो जब हम ने तुम को फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी[82] कि तुम पर बुरा अ़ज़ाब करते थे[83]

يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते[84] और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से

मुक़ाबला है इन्सान अ़द्लो अ़ज़्म, हक़ परस्ती पर बिग़ैर इस के क़ाइम नहीं रह सकता। सब्र की तीन क़िस्में हैं (1) शिद्दत व मुसीबत पर नफ़्स को रोकना। (2) ताअ़त व इबादत की मशक़्क़तों में मुस्तक़िल रहना। (3) मा'सियत की तरफ़ माइल होने से तबीअ़त को बाज़ रखना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां सब्र से रोज़ा मुराद लिया है, वोह भी सब्र का एक फ़र्द है। इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ इस्तिआ़नत की ता'लीम भी फ़रमाई क्यूं कि वोह इबादते बदनिय्या व नफ़्सानिय्या की जामेअ़ है और इस में क़ुर्बे इलाही हासिल होता है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अहम उमूर के पेश आने पर मश्ग़ूले नमाज़ हो जाते थे, इस आयत में येह भी बताया गया कि मोमिनीने सादिक़ीन के सिवा औरों पर नमाज़ गिरां है। **78 :** इस में बिशारत है कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही की ने'मत मिलेगी। **79 :** ''اَلْعٰلَمِيْنَ'' का इस्तिग़राक़ हक़ीक़ी नहीं, मुराद येह है कि मैं ने तुम्हारे आबा को उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी या फ़ज़्ले जुज़्ई मुराद है जो और किसी उम्मत की फ़ज़ीलत का नाफ़ी नहीं हो सकता, इसी लिये उम्मते मुहम्मदिय्यह के हक़ में इर्शाद हुवा : ''كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ''। (روح البیان جمل وغیرہ) **80 :** वोह रोज़े क़ियामत है। आयत में नफ़्स दो मरतबा आया है पहले से नफ़्से मोमिन दूसरे से नफ़्से काफ़िर मुराद है। (مدارک) **81 :** यहां से रुकूअ़ के आख़िर तक दस ने'मतों का बयान है जो उन बनी इसराईल के आबा को मिलीं। **82 :** क़ौमे क़िब्त़ व अ़मालीक़ से जो मिस्र का बादशाह हुवा उस को फ़िरऔन कहते हैं। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने के फ़िरऔन का नाम वलीद बिन मुस्अ़ब बिन रय्यान है, यहां इसी का ज़िक्र है, इस की उम्र चार सो बरस से ज़ियादा हुई, आले फ़िरऔन से इस के मुत्तबिईन मुराद हैं। (جمل وغیرہ) **83 :** अ़ज़ाब सब बुरे होते हैं ''سُوْٓءَ الْعَذَابِ'' वोह कहलाएगा जो और अ़ज़ाबों से शदीद हो, इस लिये हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ''बुरा अ़ज़ाब'' तरजमा किया। (کمافی الجلالین وغیرہ) फ़िरऔन ने बनी इसराईल पर निहायत बे दर्दी से मेहनतो मशक़्क़त के दुश्वार काम लाज़िम किये थे, पथ्थरों की चटानें काट कर ढोते ढोते उन की कमरें गरदनें ज़ख़्मी हो गई थीं, ग़रीबों पर टेक्स मुक़र्रर किये थे जो ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल ब जब्र (ज़बर दस्ती) वुसूल किये जाते थे, जो नादार किसी दिन टेक्स अदा न कर सका उस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाते थे और महीने भर तक इसी मुसीबत में रखा जाता था और तरह तरह की बे रह्माना सख़्तियां थीं। (خازن وغیرہ) **84 :** फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक़्दिस की तरफ़ से आग आई उस ने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्त़ियों को जला डाला बनी इसराईल को कुछ ज़रर न पहुंचाया इस से उस को बहुत वह्शत हुई, काहिनों ने ता'बीर दी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरे हलाक और ज़वाले सल्तनत का बाइस होगा, येह सुन कर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो लड़का पैदा हो क़त्ल कर दिया जाए, दाइयां तफ़्तीश के लिये मुक़र्रर हुईं, बारह हज़ार व ब रिवायते (और एक रिवायत के मुताबिक़) सत्तर हज़ार लड़के क़त्ल कर डाले गए और नव्वे हज़ार हम्ल गिरा दिये गए, और मशिय्यते इलाही से उस क़ौम के बूढ़े जल्द जल्द मरने लगे, क़ौमे क़िब्त़ के रुअसा ने घबरा कर फ़िरऔन से शिकायत की, कि बनी इसराईल में मौत की गर्म बाज़ारी है, इस पर उन के बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं तो हमें ख़िदमत गार कहां से मुयस्सर आएंगे ? फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़े जाएं तो जो साल छोड़ने का था उस में हज़रते हारून पैदा हुए और क़त्ल के साल हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई।

رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَاۤ اٰلَ

बड़ी बला थी या बड़ा इन्आम[85] और जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन

فِرْعَوْنَ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِیْنَ لَیْلَةً ثُمَّ

वालों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया[86] और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वा'दा फ़रमाया फिर

اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ

उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरूअ़ कर दी और तुम ज़ालिम थे[87] फिर इस के बा'द हम ने

بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذْ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ

तुम्हें मुआ़फ़ी दी[88] कि कहीं तुम एह़सान मानो[89] और जब हम ने मूसा को किताब अ़ता की और ह़क़ व बातिल में तमीज़ कर देना

85 : "बला" इम्तिहान व आज़्माइश को कहते हैं, आज़्माइश ने'मत से भी होती है और शिद्दतो मेह़नत से भी, ने'मत से बन्दे की शुक्र गुज़ारी और मेह़नत से उस के सब्र का ह़ाल ज़ाहिर होता है। अगर "ذٰلِكُمْ" का इशारा फ़िरऔन के मज़ालिम की त़रफ़ हो तो "बला" से मेह़नतो मुसीबत मुराद होगी और अगर उन मज़ालिम से नजात देने की त़रफ़ हो तो ने'मत। **86 :** येह दूसरी ने'मत का बयान है जो बनी इसराईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔ़नियों के ज़ुल्मो सितम से नजात दी और फ़िरऔ़न को मअ़ उस की क़ौम के उन के सामने ग़र्क़ किया, यहां "आले फ़िरऔ़न" से फ़िरऔ़न मअ़ अपनी क़ौम के मुराद है जैसे कि "كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ" में ह़ज़रते आदम व औलादे आदम दोनों दाख़िल हैं। (جمل) मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब हुक्मे इलाही शब में बनी इसराईल को मिस्र से ले कर रवाना हुए, सुब्ह़ को फ़िरऔ़न उन की जुस्तजू में लश्करे गिरां ले कर चला और उन्हें दरिया के किनारे जा पाया, बनी इसराईल ने लश्करे फ़िरऔ़न देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रियाद की, आप ने ब हुक्मे इलाही दरिया में अपना अ़सा मारा, इस की बरकत से ऐ़न दरिया में बारह ख़ुश्क रस्ते पैदा हो गए, पानी दीवारों की त़रह़ खड़ा हो गया, उन आबी दीवारों में जाली की मिस्ल रोशन दान बन गए, बनी इसराईल की हर जमाअ़त उन रस्तों में एक दूसरे को देखती और बाहम बातें करती गुज़र गई। फ़िरऔ़न दरियाई रस्ते देख कर उन में चल पड़ा जब इस का तमाम लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया ह़ालते अस्ली पर आया और तमाम फ़िरऔ़नी उस में ग़र्क़ हो गए। दरिया का अ़र्ज़ चार फ़रसंग (बारह मील से ज़ाइद फ़ासिला) था येह वाक़िआ़ बह़रे क़ुल्ज़ुम का है जो बह़रे फ़ार्स के किनारे पर है, या बह़र मा वराए मिस्र का जिस को इसाफ़ कहते हैं। बनी इसराईल लबे दरिया फ़िरऔ़नियों के ग़र्क़ का मन्ज़र देख रहे थे। येह ग़र्क़ मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ हुवा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस दिन शुक्र का रोज़ा रखा, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक भी यहूद इस दिन का रोज़ा रखते थे, हुज़ूर ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की फ़त्ह़ की ख़ुशी मनाने और इस की शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूद से ज़ियादा ह़क़दार हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आ़शूरे का रोज़ा सुन्नत है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बिया पर जो इन्आ़मे इलाही हो उस की यादगार क़ाइम करना और शुक्र बजा लाना मस्नून है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि ऐसे उमूर में दिन का तअ़य्युन सुन्नते रसूलुल्लाह है صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बिया की यादगार अगर कुफ़्फ़ार भी क़ाइम करते हों जब भी इस को छोड़ा न जाएगा। **87 :** फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के हलाक के बा'द जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बनी इसराईल को ले कर मिस्र की त़रफ़ लौटे और इन की दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने अ़त़ाए तौरैत का वा'दा फ़रमाया और इस के लिये मीक़ात मुअ़य्यन किया जिस की मुद्दत मअ़ इज़ाफ़ा एक माह दस रोज़ थी, महीना ज़ुल क़ा'दा और दस दिन ज़ुल ह़िज्जा के, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ौम में अपने भाई हारून عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लीफ़ा व जा नशीन बना कर तौरैत ह़ासिल करने के लिये कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए, चालीस शब वहां ठहरे इस अ़र्से में किसी से बात न की, **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बर जदी अल्वाह़ में तौरैत आप पर नाज़िल फ़रमाई। यहां सामरी ने सोने का जवाहिरात से मुरस्सअ़ बछड़ा बना कर क़ौम से कहा कि येह तुम्हारा मा'बूद है। वोह लोग एक माह ह़ज़रत का इन्तिज़ार कर के सामरी के बहकाने से बछड़ा पूजने लगे सिवाए ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام और आप के बारह हज़ार हम राहियों के, तमाम बनी इसराईल ने गौसाला (बछड़े) को पूजा। (خازن) **88 :** "अ़फ़्व" की कैफ़िय्यत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तौबा की सूरत येह है कि जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वोह परस्तिश करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम ब रिज़ा व तस्लीम सुकून के साथ क़त्ल हो जाएं, वोह इस पर राज़ी हो गए, सुब्ह़ से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए, तब ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام ब तज़र्रोअ़ व ज़ारी (रोते गिड़गिड़ाते) बारगाहे ह़क़ की त़रफ़ मुल्तजी हुए, वह़्य आई कि जो क़त्ल हो चुके शहीद हुए, बाक़ी मग़्फ़ूर फ़रमाए गए, इन में के क़ातिल व मक़्तूल सब जन्नती हैं। **मस्अला :** शिर्क

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ

कि कहीं तुम राह पर आओ और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़ा बना

اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْۤا اِلٰى بَارِىٕكُمْ فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ

कर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो[90]

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىٕكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ

येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً

मेहरबान[91] और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक अ़लानिया ख़ुदा को न देख लें

فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे फिर मरे पीछे हम ने तुम्हें

مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ

ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एह़सान मानो और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया[92] और तुम पर

से मुसल्मान मुरतद हो जाता है। **मस्अला :** मुरतद की सज़ा क़त्ल है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला से बग़ावत क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से सख़्त तर जुर्म है। **फ़ाएदा :** गौसाला बना कर पूजने में बनी इसराईल के कई जुर्म थे **एक** तस्वीर साज़ी जो ह़राम है, **दूसरे** ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام की ना फ़रमानी, **तीसरे** गौसाला पूज कर मुश्रिक हो जाना, येह ज़ुल्म आले फ़िरऔन के मज़ालिम से भी ज़ियादा शदीद हैं क्यूं कि येह अफ़्आ़ल उन से बा'दे ईमान सरज़द हुए इस लिये मुस्तह़िक़ तो इस के थे कि अ़ज़ाबे इलाही उन्हें मोहलत न दे और फ़िलफ़ौर हलाकत से कुफ़्र पर उन का ख़ातिमा हो जाए लेकिन ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَیْہِمَا السَّلَام की बदौलत उन्हें तौबा का मौक़अ़ दिया गया, येह **अल्लाह** तआ़ला का बड़ा फ़ज़्ल है। **89 :** इस में इशारा है कि बनी इसराईल की इस्ति'दाद फ़िरऔनियों की त़रह़ बात़िल न हुई थी और इन की नस्ल से सालिह़ीन पैदा होने वाले थे चुनान्चे इन में हज़ारहा नबी व सालेह़ पैदा हुए। **90 :** येह क़त्ल उन के लिये कफ़्फ़ारा था। **91 :** जब बनी इसराईल ने तौबा की और कफ़्फ़ारे में अपनी जानें दे दीं तो **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام इन्हें गौसाला परस्ती की उ़ज़्र ख़्वाही के लिये ह़ाज़िर लाएं, ह़ज़रत उन में से सत्तर आदमी मुन्तख़ब कर के तूर पर ले गए वहां वोह कहने लगे : ऐ मूसा ! हम आप का यक़ीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को अ़लानिया न देख लें, इस पर आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस की हैबत से वोह मर गए। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने ब तज़र्रोअ़ (आ़जिज़ी के साथ) अ़र्ज़ की, कि मैं बनी इसराईल को क्या जवाब दूंगा ? इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें यके बा'द दीगरे ज़िन्दा फ़रमा दिया। **मस्अला :** इस से शाने अम्बिया मा'लूम होती है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से "لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ" (हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे) कहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किये गए। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अ़ह्द वालों को आगाह किया जाता है कि अम्बिया की जनाब में तर्के अदब ग़ज़बे इलाही का बाइ़स होता है इस से डरते रहें। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला अपने मक़्बूलाने बारगाह की दुआ़ से मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाता है। **92 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام फ़ारिग़ हो कर लश्करे बनी इसराईल में पहुंचे और आप ने उन्हें हुक्मे इलाही सुनाया कि मुल्के शाम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और उन की औलाद का मदफ़न है, उसी में बैतुल मक़्दिस है, उस को अ़मालक़ा से आज़ाद कराने के लिये जिहाद करो और मिस्र छोड़ कर वहीं वत़न बनाओ, मिस्र का छोड़ना बनी इसराईल पर निहायत शाक़ था अव्वल तो उन्हों ने इसी में पसो पेश किया और जब ब जब्रो इक्राह ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते हारून عَلَیْہِمَا السَّلَام की रिकाबे सआ़दत में रवाना हुए तो राह में जो कोई सख़्ती व दुश्वारी पेश आती ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से शिकायतें करते, जब उस सह़रा में पहुंचे जहां न सब्ज़ा था न साया न ग़ल्ला हमराह था वहां धूप की गरमी और भूक की शिकायत की, **अल्लाह** तआ़ला ने ब दुआ़ए ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام अब्रे सफ़ेद को उन का साएबान बनाया जो रात दिन उन के साथ चलता, शब को उन के लिये नूरी सुतून उतरता जिस की रोशनी में काम करते, उन के कपड़े मैले और पुराने

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ

मन्न और सल्वा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजे़ं[93] और उन्हों ने कुछ हमारा न बिगाड़ा हां

كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا

अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे और जब हम ने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ[94] फिर उस में

مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ

जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो[95] और कहो हमारे गुनाह मुआ़फ़ हों

نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दें[96] तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी

قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ

जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा[97] तो हम ने आस्मान से उन पर अ़ज़ाब

السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا

उतारा[98] बदला उन की बे हुक्मी का और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया

न होते, नाखु़न और बाल न बढ़ते, उस सफ़र में जो लड़का पैदा होता उस का लिबास उस के साथ पैदा होता जितना वोह बढ़ता लिबास भी बढ़ता। **93 :** "मन्न" तुरन्जबीन की त़रह़ एक शीरीं चीज़ थी रोज़ाना सुब्ह़े सादिक़ से तुलूए आफ़्ताब तक हर शख़्स के लिये एक साअ़ की क़दर आस्मान से नाज़िल होती, लोग उस को चादरों में ले कर दिन भर खाते रहते। "सल्वा" एक छोटा परिन्द होता है उस को "हवा" लाती, येह शिकार कर के खाते, दोनों चीजे़ं शम्बा को तो मुत्लक़ न आतीं, बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं जुमुआ़ को और दिनों से दूनी आतीं। हुक्म येह था कि जुमुआ़ को शम्बा के लिये भी ह़स्बे ज़रूरत जम्अ़ कर लो मगर एक दिन से ज़ियादा का जम्अ़ न करो, बनी इसराईल ने इन ने'मतों की नाशुक्री की, ज़ख़ीरे जम्अ़ किये, वोह सड़ गए और उन की आमद बन्द कर दी गई, येह उन्हों ने अपना ही नुक़्सान किया कि दुन्या में ने'मत से महरूम और आख़िरत में सज़ावार अ़ज़ाब के हुए। **94 :** उस बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है या अरीह़ा जो बैतुल मक़्दिस के क़रीब है जिस में अ़मालक़ा आबाद थे और उस को ख़ाली कर गए, वहां ग़ल्ले मेवे ब कसरत थे। **95 :** येह दरवाज़ा उन के लिये ब मन्ज़िला का'बा के था कि इस में दाख़िल होना और इस की त़रफ़ सज्दा करना सबबे कफ़्फ़ारए जुनूब क़रार दिया गया। **96 : मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़बान से इस्तिग़्फ़ार करना और बदनी इ़बादत सज्दा वग़ैरा बजा लाना तौबा का मुतम्मिम (कामिल व पूरा करने वाला) है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मश्हूर गुनाह की तौबा ब ए'लान होनी चाहिये। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मक़ामाते मुतबर्रका जो रह़मते इलाही के मौरिद हों वहां तौबा करना और त़ाअ़त बजा लाना समराते नेक और सुरअ़ते क़बूल का सबब होता है। (فتح العزيز) इसी लिये सालिह़ीन का दस्तूर रहा है कि अम्बिया व औलिया के मवालिद (पैदाइश गाह) व मज़ारात पर ह़ाज़िर हो कर इस्तिग़्फ़ार व त़ाअ़त बजा लाते हैं। उ़र्स व ज़ियारत में भी येह फ़ाएदा मुतसव्वर है। **97 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बनी इसराईल को हुक्म हुवा था कि दरवाजे़ में सज्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से "حِطَّةٌ" कलिमए तौबा व इस्तिग़्फ़ार कहते जाएं, उन्हों ने दोनों हुक्मों की मुख़ालफ़त की, दाख़िल तो हुए सुरीनों के बल घिसटते और बजाए कलिमए तौबा के तमस्ख़ुर से "حَبَّةٌ فِىْ شَعْرَةٍ" कहा जिस के मा'ना हैं बाल में दाना। **98 :** येह अ़ज़ाब त़ाऊ़न था जिस से एक साअ़त में चौबीस हज़ार हलाक हो गए। **मस्अला :** सिह़ाह़ की ह़दीस में है कि त़ाऊ़न पिछली उम्मतों के अ़ज़ाब का बक़िय्या है, जब तुम्हारे शह्‌र में वाक़ेअ़ हो वहां से न भागो, दूसरे शह्‌र में हो तो वहां न जाओ। **मस्अला :** सह़ीह़ ह़दीस में है कि जो लोग मक़ामे वबा में रिज़ाए इलाही पर साबिर रहें अगर वोह वबा से मह़फ़ूज़ रहें जब भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।

اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ

इस पथ्थर पर अपना असा मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले[99] हर

عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا

गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो ख़ुदा का दिया[100] और

تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ﴿٦٠﴾ وَ اِذْ قُلْتُمْ یٰمُوْسٰی لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰی

ज़मीन में फ़साद उठाते न फिरो[101] और जब तुम ने कहा ऐ मूसा[102] हम से तो एक खाने पर[103]

طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ یُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ

हरगिज़ सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले

بَقْلِهَا وَ قِثَّآئِهَا وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ بَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ

कुछ साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़

الَّذِیْ هُوَ اَدْنٰی بِالَّذِیْ هُوَ خَیْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا

को बेहतर के बदले मांगते हो[104] अच्छा मिस्र[105] या किसी शहर में उतरो वहां तुम्हें मिलेगा

سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ وَ الْمَسْكَنَةُ ۗ وَ بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ

जो तुम ने मांगा[106] और उन पर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी और नादारी[107] और ख़ुदा के ग़ज़ब में

99 : जब बनी इसराईल ने सफ़र में पानी न पाया शिद्दते प्यास की शिकायत की तो हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म हुवा कि अपना असा पथ्थर पर मारो आप के पास एक मुरब्बअ़ पथ्थर था जब पानी की ज़रूरत होती आप उस पर असा मारते उस से बारह चश्मे जारी हो जाते और सब सैराब होते। येह बड़ा मो'जिज़ा है लेकिन सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के अंगुश्ते मुबारक से चश्मे जारी फ़रमा कर जमाअ़ते कसीरा को सैराब फ़रमाना इस से बहुत आ'ज़म व आ'ला है क्यूं कि उ़ज़्वे इन्सानी से चश्मे जारी होना पथ्थर की निस्बत ज़ियादा आ'जब (तअ़ज्जुब ख़ैज़) है। (خازن ومدارک) **100 :** या'नी आस्मानी तआ़म "मन्न व सल्वा" खाओ और इस पथ्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें फ़ज़्ले इलाही से बे मेहनत मुयस्सर है। **101 :** ने'मतों के ज़िक्र के बा'द बनी इसराईल की ना लियाक़ती (ना अहली), दूं हिम्मती (बुज़दिली) और ना फ़रमानी के चन्द वाक़िआ़त बयान फ़रमाए जाते हैं। **102 :** बनी इसराईल की येह अदा भी निहायत बे अदबाना थी कि पैग़म्बरे ऊलुल अ़ज़्म को नाम ले कर पुकारा, या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह ! या और कोई ता'ज़ीम का कलिमा न कहा। (فتح العزیز) जब अम्बिया का ख़ाली नाम लेना बे अदबी है तो इन को बशर और एलची कहना किस त़रह़ गुस्ताख़ी न होगा ! ग़रज़ अम्बिया के ज़िक्र में बे ता'ज़ीमी का शाएबा भी ना जाइज़ है। **103 :** "एक खाने" से एक क़िस्म का खाना मुराद है। **104 :** जब वोह इस पर भी न माने तो हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की इर्शाद हुवा "اِهْبِطُوْا"। **105 :** "मिस्र" अ़रबी में शहर को भी कहते हैं कोई शहर हो, और ख़ास शहर या'नी मिस्रे मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का नाम भी है, यहां दोनों में से हर एक मुराद हो सकता है। बा'ज़ का ख़याल है कि यहां ख़ास शहरे मिस्र मुराद नहीं हो सकता क्यूं कि इस के लिये येह लफ़्ज़ ग़ैर मुन्सरिफ़ हो कर मुस्ता'मल होता है और इस पर तन्वीन नहीं आती जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है : "اَلَیْسَ لِیْ مُلْکُ مِصْرَ" और "اُدْخُلُوْا مِصْرَ" मगर येह ख़याल सह़ीह़ नहीं क्यूं कि सुकूने औसत़ की वज्ह से लफ़्ज़े हिन्द की त़रह़ इस को मुन्सरिफ़ पढ़ना दुरुस्त है नह़्व में इस की तसरीह़ मौजूद है। इलावा बरीं ह़सन वग़ैरा की क़िराअत में मिस्र बिला तन्वीन आया है और बा'ज़ मसाहिफ़ हज़रते उ़स्मान और मुस्ह़फ़े उबय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में भी ऐसा ही है इसी लिये हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने तरजमे में दोनों एह़तिमालों को अख़्ज़ फ़रमाया है और शहरे मुअ़य्यन के एह़तिमाल को मुक़द्दम किया। **106 :** या'नी साग, ककड़ी वग़ैरा गो इन चीज़ों की त़लब गुनाह

اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

लौटे[108] येह बदला था इस का कि वोह **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते और अम्बिया को नाहक़ शहीद

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

करते[109] येह बदला था उन की ना फ़रमानियों और ह़द से बढ़ने का बेशक ईमान वाले

وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

नीज़ यहूदियों और नसरानियों और सितारा परस्तों में से वोह कि सच्चे दिल से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और नेक काम करें उन का सवाब उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न

يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا

कुछ ग़म[110] और जब हम ने तुम से अ़ह्द लिया[111] और तुम पर तूर को ऊंचा किया[112] लो जो कुछ

مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

हम तुम को देते हैं ज़ोर से[113] और उस के मज़्मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर इस के

न थी लेकिन ''मन्न व सल्वा'' जैसी ने'मते बे मेह़नत छोड़ कर इन की त़रफ़ माइल होना पस्त ख़याली है, हमेशा इन लोगों का मैलाने त़ब्अ़ पस्ती ही की त़रफ़ रहा, और ह़ज़रते मूसा व हारून वग़ैरा जलीलुल क़द्र बुलन्द हिम्मत अम्बिया (عَلَيۡهِمُ السَّلَام) के बा'द बनी इसराईल की लईमी (कमीनगी) व कम हौसलगी का पूरा ज़ुहूर हुवा, और तसल्लुत़े जालूत व ह़ादिसए बुख़्ते नस्सर के बा'द तो वोह बहुत ही ज़लीलो ख़्वार हो गए, इस का बयान ''ضُرِبَتۡ عَلَيۡهِمُ الذِّلَّةُ'' में है। **107 :** यहूद की ज़िल्लत तो येह कि दुन्या में कहीं नाम को इन की सल्त़नत नहीं और नादारी येह कि माल मौजूद होते हुए भी ह़िर्स से मोह़ताज ही रहते हैं। **108 :** अम्बिया व सुलह़ा की बदौलत जो रुत्बे इन्हें ह़ासिल हुए थे उन से मह़रूम हो गए, इस ग़ज़ब का बाइस सिर्फ़ येही नहीं कि इन्हों ने आस्मानी ग़िज़ाओं के बदले अर्ज़ी पैदावार की ख़्वाहिश की या इसी त़रह़ की और ख़त़ाएं जो ज़मानए ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام में सादिर हुईं बल्कि अ़ह्दे नुबुव्वत से दूर होने और ज़मानए दराज़ गुज़रने से इन की इस्ति'दादें बात़िल हुईं और निहायत क़बीह़ अफ़्आ़ल और अ़ज़ीम जुर्म इन से सरज़द हुए, येह इन की इस ज़िल्लतो ख़्वारी का बाइस हुए। **109 :** जैसा कि इन्हों ने ह़ज़रते ज़करिय्या व यह़्या व शा'या عَلَيۡهِمُ السَّلَام को शहीद किया और येह क़त्ल ऐसे नाह़क़ थे जिन की वज्ह ख़ुद येह क़ातिल भी नहीं बता सकते। **110 : शाने नुज़ूल :** इब्ने जरीर व इब्ने अबी ह़ातिम ने सुद्दी से रिवायत की, कि येह आयत सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ के अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई। (لباب النقول) **111 :** कि तुम तौरैत मानोगे और उस पर अ़मल करोगे। फिर तुम ने उस के अह़काम को शाक़ व गिरां जान कर क़बूल से इन्कार कर दिया या बा वुजूदे कि तुम ने ख़ुद ब इल्ह़ाह़ (गिड़गिड़ा कर) ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام से ऐसी आस्मानी किताब की इस्तिदआ़ की थी जिस में क़वानीने शरीअ़त व आईने इबादत मुफ़स्सल मज़्कूर हों और ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने तुम से बार बार उस के क़बूल करने और उस पर अ़मल करने का अ़ह्द लिया था, जब वोह किताब अ़त़ा हुई तुम ने उस के क़बूल करने से इन्कार कर दिया और अ़ह्द पूरा न किया। **112 :** बनी इसराईल की अ़ह्द शिकनी के बा'द ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही तूर पहाड़ को उठा कर उन के सरों पर क़दरे क़ामत फ़ासिले पर मुअ़ल्लक़ कर दिया और ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने फ़रमाया : या तो तुम अ़ह्द क़बूल करो, वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा और तुम कुचल डाले जाओगे, इस में सूरतन वफ़ाए अ़ह्द पर इक्राह था और दर ह़क़ीक़त पहाड़ का सरों पर मुअ़ल्लक़ कर देना आयते इलाही और क़ुदरते ह़क़ की बुरहाने क़वी है, इस से दिलों को इत़्मीनान ह़ासिल होता है कि बेशक येह रसूल मज़्हरे क़ुदरते इलाही हैं। येह इत़्मीनान इन को मानने और अ़ह्द पूरा करने का अस्ल सबब है। **113 :** या'नी ब कोशिश तमाम।

مِّنۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ لَكُنۡتُمۡ مِّنَ

बा'द तुम फिर गए तो अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे (नुक़्सान)

الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدۡ عَلِمۡتُمُ الَّذِيۡنَ اعۡتَدَوۡا مِنۡكُمۡ فِى السَّبۡتِ فَقُلۡنَا

वालों में हो जाते[114] और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ़्ते में सरकशी की[115] तो हम ने उन

لَهُمۡ كُوۡنُوۡا قِرَدَةً خٰسِـِٕيۡنَ ﴿٦٥﴾ ۚ فَجَعَلۡنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهَا وَمَا

से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए तो हम ने उस बस्ती का येह वाक़िआ़ उस के आगे और

خَلۡفَهَا وَمَوۡعِظَةً لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ

पीछे वालों के लिये इ़ब्रत कर दिया और परहेज़ गारों के लिये नसीह़त और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें

يَاۡمُرُكُمۡ اَنۡ تَذۡبَحُوۡا بَقَرَةً ؕ قَالُوۡۤا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوۡذُ

हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह़ करो[116] बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं[117] फ़रमाया ख़ुदा की

بِاللّٰهِ اَنۡ اَكُوۡنَ مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنۡ لَّنَا مَا

पनाह कि मैं जाहिलों से होउं[118] बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाय

114 : यहां फ़ज़्लो रह़मत से या तौफ़ीक़े तौबा मुराद है या ताख़ीरे अ़ज़ाब। (مدارک وغیرہ) एक क़ौल येह है कि फ़ज़्ले इलाही व रह़मते ह़क़ से ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम ﷺ की ज़ाते पाक मुराद है, मा'ना येह हैं कि अगर तुम्हें ख़ातमुल मुरसलीन ﷺ के वुजूद की दौलत न मिलती और आप की हिदायत नसीब न होती तो तुम्हारा अन्जाम हलाक व ख़ुसरान होता। **115 :** शह्‌रे "ऐला" में बनी इसराईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि शम्बा का दिन इ़बादत के लिये ख़ास कर दें, इस रोज़ शिकार न करें और दुन्यावी मशाग़िल तर्क कर दें, उन के एक गुरौह ने येह चाल की, कि जुमुआ़ को दरिया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदते और शम्बा की सुब्ह़ को दरिया से उन गढ़ों तक नालियां बनाते जिन के ज़रीए पानी के साथ आ कर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो जातीं, यकशम्बा (इतवार) को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से शम्बा (हफ़्ते) के रोज़ नहीं निकालते, चालीस या सत्तर साल तक येही अ़मल रहा, जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत का अ़ह्‌द आया आप ने उन्हें इस से मन्अ़ किया और फ़रमाया क़ैद करना ही शिकार है जो शम्बा को करते हो इस से बाज़ आओ वरना अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाओगे, वोह बाज़ न आए, आप ने दुआ़ फ़रमाई **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया, अ़क़्लो ह़वास तो उन के बाक़ी रहे मगर क़ुव्वते गोयाई ज़ाइल हो गई, बदनों से बदबू निकलने लगी, अपने इस ह़ाल पर रोते रोते तीन रोज़ में सब हलाक हो गए उन की नस्ल बाक़ी न रही, येह सत्तर हज़ार के क़रीब थे। बनी इसराईल का दूसरा गुरौह जो बारह हज़ार के क़रीब था उन्हें इस अ़मल से मन्अ़ करता रहा जब येह न माने तो उन्हों ने उन के और अपने मह़ल्लों के दरमियान दीवार बना कर अ़लाह़दगी कर ली उन सब ने नजात पाई। बनी इसराईल का तीसरा गुरौह साकित (ख़ामोश) रहा। उस के ह़क़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास के सामने इ़क्रिमा ने कहा कि वोह मग़फ़ूर हैं क्यूं कि अम्रुन बिल मा'रूफ़ फ़र्ज़े किफ़ाया है बा'ज़ का अदा करना कुल का हुक्म रखता है, उन के सुकूत की वज्ह येह थी कि येह उन के पन्द पज़ीर होने (नसीह़त क़बूल करने) से मायूस थे, इ़क्रिमा की येह तक़रीर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास को बहुत पसन्द आई और आप ने सुरूर से उठ कर उन से मुआ़नक़ा किया और उन की पेशानी को बोसा दिया। (فتح العزیز) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सुरूर का मुआ़नक़ा सुन्नते सह़ाबा है इस के लिये सफ़र से आना और ग़ैबत के बा'द मिलना शर्त नहीं। **116 :** बनी इसराईल में आ़मील नामी एक मालदार था उस के चचाज़ाद भाई ने ब तमए विरासत उस को क़त्ल कर के दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और ख़ुद सुब्ह़ को उस के ख़ून का मुद्दई बना, वहां के लोगों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दरख़्वास्त की, कि आप दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** तआ़ला ह़क़ीक़ते ह़ाल ज़ाहिर फ़रमाए, इस पर हुक्म सादिर हुवा कि एक गाय ज़ब्ह़ कर के उस का कोई ह़िस्सा मक़्तूल के मारें वोह ज़िन्दा हो कर क़ातिल को बता देगा। **117 :** क्यूं कि मक़्तूल का ह़ाल मा'लूम होने और गाय के ज़ब्ह़ में कोई मुनासबत मा'लूम नहीं होती। **118 :** ऐसा जवाब जो सुवाल से रब्त़ न रखे जाहिलों का काम है या येह मा'ना हैं कि मुह़ाकमा

هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ

कैसी है कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है न बूढ़ी और न औसर (बछिया) बल्कि इन दोनों के

ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۸﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا

बीच में तो करो जिस का तुम्हें हुक्म होता है बोले अपने रब से दुआ कीजिये हमें बता दे उस

لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ

का रंग क्या है कहा वोह फ़रमाता है वोह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती (गहरी चमकदार)

النّٰظِرِيْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ

देखने वालों को ख़ुशी देती बोले अपने रब से दुआ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाय कैसी है बेशक गायों में हम को

عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

शुबा पड़ गया और **अल्लाह** चाहे तो हम राह पा जाएंगे[119] कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ

जिस से ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे बे ऐब है जिस में कोई दाग़ नहीं

قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۱﴾ وَاِذْ

बोले अब आप ठीक बात लाए[120] तो उसे ज़ब्ह किया और ज़ब्ह करते मा'लूम न होते थे[121] और जब

(इन्साफ़ तलबी) के मौक़अ़ पर इस्तिह्ज़ा जाहिलों का काम है अम्बिया की शान इस से बरतर है। अल क़िस्सा जब बनी इसराईल ने समझ लिया कि गाय का ज़ब्ह करना लाज़िम है तो उन्हों ने आप से उस के औसाफ़ दरयाफ़्त किये। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इसराईल बह्स न निकालते तो जो गाय ज़ब्ह कर देते काफ़ी हो जाती। **119 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया अगर वोह اِنْ شَآءَ اللّٰہ न कहते तो कभी वोह गाय न पाते। **मस्अला :** हर नेक काम में اِنْ شَآءَ اللّٰہ कहना मुस्तह़ब व बाइसे बरकत है। **120 :** या'नी अब तशफ़्फ़ी हुई और पूरी शान व सिफ़त मा'लूम हुई। फिर उन्हों ने गाय की तलाश शुरूअ़ की, उन अत़राफ़ में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी, उस का ह़ाल येह है कि बनी इसराईल में एक सालेह़ शख़्स थे उन का एक सग़ीरुस्सिन बच्चा था और उन के पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था, उन्हों ने उस की गरदन पर मोहर लगा कर **अल्लाह** के नाम पर छोड़ दिया और बारगाहे ह़क़ में अ़र्ज़ किया : या रब ! मैं इस बछिया को इस फ़रज़न्द के लिये तेरे पास वदीअ़त (अमानत) रखता हूं जब येह फ़रज़न्द बड़ा हो येह इस के काम आए, उन का तो इन्तिक़ाल हो गया, बछिया जंगल में ब हिफ़्ज़े इलाही परवरिश पाती रही। येह लड़का बड़ा हुवा और बि फ़ज़्लिही सालेह़ व मुत्तक़ी हुवा, मां का फ़रमां बरदार था, एक रोज़ इस की वालिदा ने कहा : ऐ नूरे नज़र ! तेरे बाप ने तेरे लिये फ़ुलां जंगल में ख़ुदा के नाम एक बछिया छोड़ दी है, वोह अब जवान हो गई उस को जंगल से ला और **अल्लाह** से दुआ कर कि वोह तुझे अ़ता फ़रमाए, लड़के ने गाय को जंगल में देखा और वालिदा की बताई हुई अ़लामतें उस में पाईं और उस को **अल्लाह** की क़सम दे कर बुलाया वोह ह़ाज़िर हुई, जवान उस को वालिदा की ख़िदमत में लाया, वालिदा ने बाज़ार में ले जा कर तीन दीनार पर फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया और येह शर्त़ की, कि सौदा होने पर फिर इस की इजाज़त ह़ासिल की जाए, उस ज़माने में गाय की क़ीमत उन अत़राफ़ में तीन दीनार ही थी, जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़िरिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और उस ने गाय की क़ीमत छ[6] दीनार लगा दी मगर इस शर्त़ से कि जवान वालिदा की इजाज़त का पाबन्द न हो, जवान ने येह मन्ज़ूर न किया और वालिदा से तमाम क़िस्सा कहा, उस की वालिदा ने छ[6] दीनार क़ीमत मन्ज़ूर करने की तो इजाज़त दी मगर बैअ़ में फिर दोबारा अपनी मरज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त़ की। जवान फिर बाज़ार में आया इस मरतबा फ़िरिश्ते ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि वालिदा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ न

قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۷۲﴾ ۚ

तुम ने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर उस की तोहमत डालने लगे और **अल्लाह** को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ

तो हम ने फ़रमाया उस मक़्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो[122] **अल्लाह** यूंही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۳﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ

कि कहीं तुम्हें अ़क़्ल हो[123] फिर इस के बा'द तुम्हारे दिल सख़्त हो गए[124] तो वोह

كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ

पथ्थरों की मिस्ल हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा करें (सख़्त) और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह

الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا

निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो

يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ

अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं[125] और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं तो ऐ मुसल्मानो ! क्या तुम्हें येह तमअ़ है

रखो, जवान ने न माना और वालिदा को इत्तिलाअ़ दी वोह साहिबे फ़िरासत समझ गई कि येह ख़रीदार नहीं कोई फ़िरिश्ता है जो आज़्माइश के लिये आता है, बेटे से कहा कि अब की मरतबा उस ख़रीदार से येह कहना कि आप हमें इस गाय के फ़रोख़्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं ? लड़के ने येही कहा, फ़िरिश्ते ने जवाब दिया कि अभी इस को रोके रहो, जब बनी इसराईल ख़रीदने आएं तो इस की क़ीमत येह मुक़र्रर करना कि इस की खाल में सोना भर दिया जाए, जवान गाय को घर लाया और जब बनी इसराईल जुस्तजू करते हुए उस के मकान पर पहुंचे तो येही क़ीमत तै की और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़मानत पर वोह गाय बनी इसराईल के सिपुर्द की। **मसाइल :** इस वाक़िए से कई मस्अले मा'लूम हुए (1) जो अपने इयाल को **अल्लाह** के सिपुर्द करे **अल्लाह** तआ़ला उस की ऐसी उ़म्दा परवरिश फ़रमाता है। (2) जो अपना माल **अल्लाह** के भरोसे पर उस की अमानत में दे **अल्लाह** उस में बरकत देता है। (3) वालिदैन की फ़रमां बरदारी **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है। (4) ग़ैबी फ़ैज़ क़ुरबानी व ख़ैरात करने से हासिल होता है। (5) राहे ख़ुदा में नफ़ीस माल देना चाहिये। (6) गाय की क़ुरबानी अफ़्ज़ल है। **121 :** बनी इसराईल के मुसल्सल सुवालात और अपनी रुस्वाई के अन्देशे और गाय की गिरानिये क़ीमत से येह ज़ाहिर होता था कि वोह ज़ब्ह का क़स्द नहीं रखते मगर जब उन के सुवालात शाफ़ी जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़ब्ह करना ही पड़ा। **122 :** बनी इसराईल ने गाय ज़ब्ह कर के उस के किसी उ़ज़्व से मुर्दा को मारा वोह ब हुक्मे इलाही ज़िन्दा हुवा उस के हल्क़ से ख़ून के फ़व्वारे जारी थे उस ने अपने चचाज़ाद भाई का बताया कि इस ने मुझे क़त्ल किया, अब उस को भी इक़रार करना पड़ा और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर क़िसास का हुक्म फ़रमाया, इस के बा'द शरअ़ का हुक्म हुवा कि **मस्अला :** क़ातिल मक़्तूल की मीरास से महरूम रहेगा। **मस्अला :** लेकिन अगर आ़दिल ने बाग़ी को क़त्ल किया या किसी हम्ला आवर से जान बचाने के लिये मुदाफ़अ़त की उस में वोह क़त्ल हो गया तो मक़्तूल की मीरास से महरूम न होगा। **123 :** और तुम समझो कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुर्दे ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और रोज़े जज़ा मुर्दों को ज़िन्दा करना और हिसाब लेना हक़ है। **124 :** और ऐसे बड़े निशानहाए क़ुदरत से तुम ने इ़ब्रत हासिल न की। **125 :** ब ई हमा तुम्हारे दिल असर पज़ीर नहीं, पथ्थरों में भी **अल्लाह** ने इदराक व शुऊ़र दिया है उन्हें ख़ौफ़े इलाही होता है वोह तस्बीह़ करते हैं ''اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ'' मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मैं उस पथ्थर को पहचानता हूं जो बि'सत से पहले मुझे सलाम किया करता था।'' तिरमिज़ी में हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है : मैं सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के साथ अतराफ़े मक्का में गया जो दरख़्त या पहाड़ सामने आता था ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ'' (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) अ़र्ज़ करता था।

اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ

कि येह यहूदी तुम्हारा यक़ीन लाएंगे और इन में का तो एक गुरौह वोह था कि **अल्लाह** का कलाम सुनते फिर

يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ

समझने के बा'द उसे दानिस्ता बदल देते[126] और जब मुसल्मानों से

اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْۤا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ

मिलें तो कहें हम ईमान लाए[127] और जब आपस में अकेले हों तो कहें वोह इल्म जो **अल्लाह** ने तुम पर खोला मुसल्मानों

بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۶﴾

से बयान किये देते हो कि उस से तुम्हारे रब के यहां तुम्हीं पर हुज्जत लाएं क्या तुम्हें अक़्ल नहीं

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَمِنْهُمْ

क्या नहीं जानते कि **अल्लाह** जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं और उन में कुछ

اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾

النصف

अनपढ़ हैं जो किताब[128] को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना[129] या कुछ अपनी मन घड़त और वोह निरे गुमान में हैं

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا

तो ख़राबी है उन के लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें येह

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ

ख़ुदा के पास से है कि इस के इवज़ थोड़े दाम हासिल करें[130] तो ख़राबी है उन के लिये उन के

---

126 : जैसे उन्हों ने तौरैत में तहरीफ़ की और सय्यिदे आ़लम ﷺ की ना'त बदल डाली। 127 : **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन यहूदियों की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम ﷺ के ज़माने में थे। इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया : यहूदी मुनाफ़िक़ जब सहाबए किराम से मिलते तो कहते कि जिस पर तुम ईमान लाए उस पर हम भी ईमान लाए, तुम हक़ पर हो और तुम्हारे आक़ा मुहम्मद मुस्त़फ़ा ﷺ सच्चे हैं उन का क़ौल हक़ है, हम उन की ना'त व सिफ़त अपनी किताब तौरैत में पाते हैं उन लोगों पर रुअसाए यहूद मलामत करते थे, इस का बयान "وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ" में है। (خازن) **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि हक़पोशी और सय्यिदे आ़लम ﷺ के औसाफ़ का छुपाना और कमालात का इन्कार करना यहूद का त़रीक़ा है आज कल के बहुत से गुमराहों की येही आ़दत है। 128 : किताब से तौरैत मुराद है। 129 : "اَمانی" (अमानी) اُمْنِیَّہ (उम्निय्या) की जम्अ़ है और इस के मा'नी ज़बानी पढ़ने के हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि आयत के मा'ना येह हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना बिग़ैर मा'ना समझे। (خازن) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना भी बयान किये हैं कि اَمانی से वोह झूटी घड़ी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने उ़लमा से सुन कर बे तह़क़ीक़ मान ली थीं। 130 : **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे अम्बिया ﷺ मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उ़लमाए तौरैत व रुअसाए यहूद को क़वी अन्देशा हो गया कि उन की रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्यूं कि तौरैत में हुज़ूर का हुल्या और औसाफ़ मज़्कूर हैं जब लोग हुज़ूर को इस के मुबातिक़ पाएंगे फ़ौरन ईमान ले आएंगे और अपने उ़लमा व रुअसा को छोड़ देंगे, इस अन्देशे से उन्हों ने तौरैत में

اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّا

हाथों के लिखे से और ख़राबी उन के लिये उस कमाई से और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर

اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ

गिनती के दिन[131] तुम फ़रमा दो क्या ख़ुदा से तुम ने कोई अ़हद ले रखा है जब तो **अल्लाह** हरगिज़ अपना अ़हद ख़िलाफ़ न

عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً

करेगा[132] या ख़ुदा पर वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं हां क्यूं नहीं जो गुनाह कमाए

وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

और उस की ख़ता उसे घेर ले[133] वोह दोज़ख़ वालों में है उन्हें हमेशा उस में रहना

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा

خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا

उस में रहना और जब हम ने बनी इसराईल से अ़हद लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न

اللّٰهَ قف وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ ذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो[134] और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से

तहरीफ़ व तग़्यीर कर डाली और हुल्या शरीफ़ बदल दिया, मसलन तौरैत में आप के औसाफ़ येह लिखे थे कि आप ख़ूबरू हैं, बाल ख़ूब सूरत, आंखें सुर्मगीं, क़द मियाना है, इस को मिटा कर उन्हों ने येह बनाया कि वोह बहुत दराज़ क़ामत हैं, आंखें कन्जी नीली, बाल उलझे हैं येही अ़वाम को सुनाते येही किताबे इलाही का मज़मून बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इस के ख़िलाफ़ पाएंगे तो आप पर ईमान न लाएंगे हमारे गिरवीदा रहेंगे और हमारी कमाई में फ़र्क़ न आएगा। **131 : शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہ से मरवी है कि यहूद कहते थे कि वोह दोज़ख़ में हरगिज़ दाख़िल न होंगे मगर सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये जितने अ़र्से उन के आबाओ अज्दाद ने गौसाला (बछड़ा) पूजा था और वोह चालीस रोज़ हैं इस के बा'द वोह अ़ज़ाब से छूट जाएंगे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **132 :** क्यूं कि किज़्ब बड़ा ऐब है और ऐब **अल्लाह** तआ़ला पर मुहाल, लिहाज़ा उस का किज़्ब तो मुम्किन नहीं लेकिन जब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम से सिर्फ़ चालीस रोज़ के अ़ज़ाब के बा'द छोड़ देने का वा'दा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा क़ौल बातिल हुवा। **133 :** इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है और इहाता करने से येह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जाएं और कुफ़्र व शिर्क ही पर उस को मौत आए क्यूं कि मोमिन ख़्वाह कैसा भी गुनाहगार हो गुनाहों से घिरा नहीं होता इस लिये कि ईमान जो आ'ज़म ताअ़त है वोह इस के साथ है। **134 : अल्लाह** तआ़ला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बा'द वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इस से मा'लूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। वालिदैन के साथ भलाई के येह मा'ना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से इन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से इन की ख़िदमत में दरेग़ न करे जब इन्हें ज़रूरत हो इन के पास हाज़िर रहे। **मस्अला :** अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे इन की ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है। **मस्अला :** वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते। वालिदैन के साथ एहसान के तरीक़े जो अहादीस से साबित हैं येह हैं कि तहे दिल से उन के साथ महब्बत रखे रफ़्तारो गुफ़्तार, निशस्तो बरख़ास्त में अदब लाज़िम जाने, उन की शान में ता'ज़ीम के लफ़्ज़ कहे, उन को राज़ी करने की सई करता रहे, अपने नफ़ीस माल को उन से न बचाए, उन के मरने के बा'द उन की वसिय्यतें जारी करे, उन के लिये फ़ातिहा, सदक़ात, तिलावते क़ुरआन से ईसाले सवाब करे, **अल्लाह** तआ़ला

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

और लोगों से अच्छी बात कहो[135] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए[136]

اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ

मगर तुम में के थोड़े[137] और तुम रू गर्दां हो[138] और जब हम ने तुम से अ़हद लिया

لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ

कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर

اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ

तुम ने इस का इक़्रार किया और तुम गवाह हो फिर येह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे

وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ؗ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ

और अपने में एक गुरौह को उन के वत़न से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उन के मुख़ालिफ़ को) गुनाह

وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ

और ज़ियादती में और अगर वोह क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो बदला दे कर छुड़ा लेते हो और उन का निकालना तुम पर

اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا

ह़राम है[139] तो क्या ख़ुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते और कुछ से इन्कार करते हो तो जो

से उन की मग़्फ़िरत की दुआ़ करे, हफ़्तावार उन की क़ब्र की ज़ियारत करे। (فتح العزيز) वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाख़िल है कि अगर वोह गुनाहों के आ़दी हों या किसी बद मज़्हबी में गिरिफ़्तार हों तो उन को ब नरमी इस्लाह़ व तक़्वा और अ़क़ीदए ह़क़्क़ा की त़रफ़ लाने की कोशिश करता रहे। (خازن) **135 :** अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरग़ीब और बदियों से रोकना है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की शान में ह़क़ और सच बात कहो, अगर कोई दरयाफ़्त करे तो हुज़ूर के कमालात व औसाफ़ सच्चाई के साथ बयान कर दो, आप की ख़ूबियां न छुपाओ। **136 :** अ़हद के बा'द **137 :** जो ईमान ले आए मिस्ल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब के इन्हों ने तो अ़हद पूरा किया। **138 :** और तुम्हारी क़ौम की आ़दत ही ए'राज़ करना और अ़हद से फिर जाना है। **139 : शाने नुज़ूल :** तौरैत में बनी इसराईल से अ़हद लिया गया था कि वोह आपस में एक दूसरे को क़त्ल न करें, वत़न से न निकालें और जो बनी इसराईल किसी की क़ैद में हो उस को माल दे कर छुड़ा लें, इस अ़हद पर उन्हों ने इक़रार भी किया, अपने नफ़्स पर शाहिद भी हुए लेकिन क़ाइम न रहे और इस से फिर गए। सूरते वाक़िआ़ येह है कि नवाहे़ मदीना में यहूद के दो फ़िर्क़े ''बनी क़ुरैज़ा'' और ''बनी नज़ीर'' सुकूनत रखते थे और मदीना शरीफ़ में दो फ़िर्क़े ''औस व ख़ज़रज'' रहते थे, बनी क़ुरैज़ा औस के ह़लीफ़ थे और बनी नज़ीर ख़ज़रज के या'नी हर एक क़बीले ने अपने ह़लीफ़ के साथ क़समा क़समी की थी (यक़ीन दिहानी कराई थी) कि अगर हम में से किसी पर कोई ह़म्ला आवर हो तो दूसरा उस की मदद करेगा। औस और ख़ज़रज बाहम जंग करते थे, बनी क़ुरैज़ा औस की और बनी नज़ीर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे और ह़लीफ़ के साथ हो कर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे, बनी क़ुरैज़ा बनी नज़ीर को और वोह बनी क़ुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उन के घर वीरान कर देते थे, उन्हें उन के मसाकिन से निकाल देते थे लेकिन जब उन की क़ौम के लोगों को उन के ह़लीफ़ क़ैद करते थे तो वोह उन को माल दे कर छुड़ा लेते थे। मसलन अगर बनी नज़ीर का कोई शख़्स औस के हाथ में गिरिफ़्तार होता तो बनी क़ुरैज़ा औस को माली मुआ़वज़ा दे कर उस को छुड़ा लेते बा वुजूदे कि अगर वोही शख़्स लड़ाई के वक़्त उन के मौक़अ़ पर आ जाता तो उस के क़त्ल

جَزَآءُ مَنۡ يَّفۡعَلُ ذٰلِكَ مِنۡكُمۡ اِلَّا خِزۡىٌ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ

तुम में ऐसा करे उस का बदला क्या है मगर येह कि दुन्या में रुस्वा हो[140]

وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ يُرَدُّوۡنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الۡعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

और क़ियामत में सख़्त तर अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से

تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۸۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ اشۡتَرَوُا الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا بِالۡاٰخِرَةِ ۫

बे ख़बर नहीं[141] येह हैं वोह लोग जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी मोल ली

فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ الۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى

तो न उन पर से अ़ज़ाब हलका और न उन की मदद की जाए और बेशक हम ने मूसा को

الۡكِتٰبَ وَقَفَّيۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ بِالرُّسُلِ ۫ وَاٰتَيۡنَا عِيۡسَى ابۡنَ مَرۡيَمَ

किताब अ़त़ा की[142] और इस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे[143] और हम ने ईसा बिन मरयम को

الۡبَيِّنٰتِ وَاَيَّدۡنٰهُ بِرُوۡحِ الۡقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌۢ بِمَا لَا تَهۡوٰٓى

खुली निशानियां अ़त़ा फ़रमाईं[144] और पाक रूह़ से[145] उस की मदद की[146] तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वोह ले कर आए जो तुम्हारे

में हरगिज़ दरेग़ न करते। इस फ़े'ल पर मलामत की जाती है कि जब तुम ने अपनों की ख़ूनरेज़ी न करने, उन को बस्तियों से न निकालने, उन के असीरों को छुड़ाने का अ़हद किया था तो इस के क्या मा'ना कि क़त्ल व इख़्राज में तो दर गुज़र न करो और गिरिफ़्तार हो जाएं तो छुटाते फिरो, अ़हद में से कुछ मानना और कुछ न मानना क्या मा'ना रखता है? जब तुम क़त्ल व इख़्राज से बाज़ न रहे तो तुम ने अ़हद शिकनी की और ह़राम के मुरतकिब हुए और इस को ह़लाल जान कर काफ़िर हो गए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़ुल्म व ह़राम पर इमदाद करना भी ह़राम है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि ह़रामे क़त्ई को ह़लाल जानना कुफ़्र है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि किताबे इलाही के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का न मानना और कुफ़्र है। **फ़ाएदा :** इस में येह तम्बीह भी है कि जब अह़कामे इलाही में से बा'ज़ का मानना बा'ज़ का न मानना कुफ़्र हुवा तो यहूद का ह़ज़रत सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم का इन्कार करने के साथ ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की नुबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता। **140 :** दुन्या में तो येह रुस्वाई हुई कि बनी क़ुरैज़ा 3 हिजरी में मारे गए, एक रोज़ में इन के सात सो आदमी क़त्ल किये गए थे और बनी नज़ीर इस से पहले ही जला वत़न कर दिये गए, ह़लीफ़ों की ख़ात़िर अ़हदे इलाही की मुख़ालफ़त का येह वबाल था। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी की त़रफ़ दारी में दीन की मुख़ालफ़त करना इलावा उख़्रवी अ़ज़ाब के दुन्या में भी ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइस होता है। **141 :** इस में जैसी ना फ़रमानों के लिये वईदे शदीद है कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे अफ़्आ़ल से बे ख़बर नहीं है तुम्हारी ना फ़रमानियों पर अ़ज़ाबे शदीद फ़रमाएगा ऐसे ही इस आयत में मोमिनीन व सालिह़ीन के लिये मुज़्दा है कि उन्हें आ'माले ह़सना की बेहतरीन जज़ा मिलेगी। (تفسیر کبیر) **142 :** इस किताब से तौरैत मुराद है जिस में **अल्लाह** तआ़ला के तमाम अ़हद मज़्कूर थे सब से अहम अ़हद येह थे कि हर ज़माने के पैग़म्बरों की इत़ाअ़त करना, उन पर ईमान लाना और उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना। **143 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام के ज़माने से ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام तक मुतवातिर अम्बिया आते रहे, उन की ता'दाद चार हज़ार बयान की गई है, येह सब ह़ज़रात शरीअ़ते मूसवी के मुह़ाफ़िज़ और उस के अह़काम जारी करने वाले थे, चूंकि ख़ातमुल अम्बिया के बा'द नुबुव्वत किसी को नहीं मिल सकती इस लिये शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह की ह़िफ़ाज़त व इशाअ़त की ख़िदमत रब्बानी उ़लमा और मुजद्दिदीने मिल्लत को अ़त़ा हुई। **144 :** इन निशानियों से ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के मो'जिज़ात मुराद हैं जैसे मुर्दे ज़िन्दा करना, अन्धे और बरस वाले को अच्छा करना, परिन्द पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरा। **145 :** "रूह़े क़ुदुस" से ह़ज़रते जिब्रील मुराद हैं कि रूह़ानी हैं वह़्य लाते हैं जिस से क़ुलूब की ह़यात है, वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के साथ रहने पर मामूर थे, आप 33 साल की उ़म्र शरीफ़ में आस्मान पर उठा लिये गए उस वक़्त तक ह़ज़रते जिब्रील सफ़र, ह़ज़र में कभी आप से जुदा न हुए, ताईदे रूहुल क़ुदुस ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام की जलील फ़ज़ीलत है। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم के सदक़े में हुज़ूर के बा'ज़ उम्मतियों को भी ताईदे रूहुल क़ुदुस मुयस्सर हुई। सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में है कि ह़ज़रते ह़स्सान رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُ के लिये मिम्बर बिछाया जाता

اَنۡفُسُكُمُ اسۡتَكۡبَرۡتُمۡ ۚ فَفَرِيۡقًا كَذَّبۡتُمۡ ۫ وَفَرِيۡقًا تَقۡتُلُوۡنَ ﴿۸۷﴾ وَقَالُوۡا

नफ़्स की ख़्वाहिश नहीं तकब्बुर करते हो तो उन (अम्बिया) में एक गुरौह को तुम झुटलाते और एक गुरौह को शहीद करते हो[147] और यहूदी बोले हमारे

قُلُوۡبُنَا غُلۡفٌ ؕ بَلۡ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفۡرِهِمۡ فَقَلِيۡلًا مَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۸۸﴾ وَ

दिलों पर पर्दे पड़े हैं[148] बल्कि **अल्लाह** ने उन पर ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो उन में थोड़े ईमान लाते हैं[149] और

لَمَّا جَآءَهُمۡ كِتٰبٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمۡ ۙ وَكَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ

जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब (कुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है[150] और इस से पहले उसी नबी

يَسۡتَفۡتِحُوۡنَ عَلَى الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ مَّا عَرَفُوۡا كَفَرُوۡا

के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे[151] तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो

بِهٖ ۫ فَلَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۸۹﴾ بِئۡسَمَا اشۡتَرَوۡا بِهٖۤ اَنۡفُسَهُمۡ اَنۡ

बैठे[152] तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर किस बुरे मोलों उन्हों ने अपनी जानों को ख़रीदा कि

يَّكۡفُرُوۡا بِمَآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ بَغۡيًا اَنۡ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ

अल्लाह के उतारे से मुन्किर हों[153] इस की जलन से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे

مِنۡ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوۡ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ

वह्य उतारे[154] तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए[155] और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का

वोह ना'त शरीफ़ पढ़ते, हुज़ूर उन के लिये फ़रमाते : "اَللّٰهُمَّ اَيِّدْهُ بِرُوْحِ الْقُدُس-" (ऐ **अल्लाह** ! हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए इन की मदद फ़रमा) 146 : फिर भी ऐ यहूद ! तुम्हारी सरकशी में फ़र्क़ न आया। 147 : यहूद पैग़म्बरों के अह़काम अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पा कर उन्हें झुटलाते और मौक़अ़ पाते तो क़त्ल कर डालते थे जैसे कि उन्हों ने ह़ज़रते शा'या व ज़करिय्या (عَلَيْهِمَا السَّلَام) और बहुत से अम्बिया को शहीद किया, सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के भी दर पै रहे, कभी आप पर जादू किया, कभी ज़हर दिया, त़रह़ त़रह़ के फ़रेब ब इरादए क़त्ल किये। 148 : यहूद ने येह इस्तिहज़ाअन कहा था उन की मुराद येह थी कि हुज़ूर की हिदायत को इन के दिलों तक राह नहीं है, **अल्लाह** तआला ने इस का रद फ़रमाया कि बे दीन झूटे हैं, क़ुलूब **अल्लाह** तआला ने फ़ित़रत पर पैदा फ़रमाए इन में क़बूले ह़क़ की लियाक़त रखी, इन के कुफ़्र की शामत है कि इन्हों ने सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का ए'तिराफ़ करने के बा'द इन्कार किया, **अल्लाह** तआला ने इन पर ला'नत फ़रमाई इस का असर है कि क़बूले ह़क़ की ने'मत से महरूम हो गए। 149 : येही मज़मून दूसरी जगह इर्शाद हुवा : "بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا-" (बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े) 150 : सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के औसाफ़ के बयान में। (کبیر وخازن) 151 : **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत और क़ुरआने करीम के नुज़ूल से क़ब्ल यहूद अपने ह़ाजात के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ़ करते और काम्याब होते थे और इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे : "اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا وَانْصُرْنَا بِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ" या रब ! हमें नबिय्ये उम्मी के सदक़े में फ़त्ह़ो नुसरत अ़त़ा फ़रमा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मक़्बूलाने ह़क़ के वसीले से दुआ़ क़बूल होती है। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर से क़ब्ल जहान में हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी का शोहरा था उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से ख़ल्क़ की ह़ाजत रवाई होती थी। 152 : येह इन्कार इनाद व ह़सद और हुब्बे रियासत की वज्ह से था। 153 : या'नी आदमी को अपनी जान की ख़लासी के लिये वोही करना चाहिये जिस से रिहाई की उम्मीद हो। यहूद ने येह बुरा सौदा किया कि **अल्लाह** के नबी और उस की किताब के मुन्किर हो गए। 154 : यहूद की ख़्वाहिश थी कि ख़त्मे नुबुव्वत का मन्सब बनी इसराईल में से किसी को मिलता जब देखा कि वोह महरूम रहे, बनी इस्माईल नवाज़े गए तो ह़सद से मुन्किर हो गए। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ह़सद ह़राम और महरूमियों का बाइस है। 155 : या'नी अन्वाओ़ अक़्साम के ग़ज़ब के

مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ

अ़ज़ाब है[156] और जब उन से कहा जाए कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ[157] तो कहते हैं वोह जो हम पर उतरा

بِمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ يَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا

उस पर ईमान लाते हैं[158] और बाक़ी से मुन्किर होते हैं हालां कि वोह ह़क़ है उन के पास वाले की तस्दीक़

مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ

फ़रमाता हुवा[159] तुम फ़रमाओ कि फिर अगले अम्बिया को क्यूं शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَ لَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ

पर ईमान था[160] और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियां ले कर तशरीफ़ लाया फिर तुम ने इस के बा'द[161] बछड़े

مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

को मा'बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे[162] और याद करो जब हम ने तुम से पैमान लिया[163] और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर

الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا ۗ

बुलन्द किया लो जो हम तुम्हें देते हैं ज़ोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना

وَ اُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ

और उन के दिलों में बछड़ा रच रहा था उन के कुफ़्र के सबब तुम फ़रमा दो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को

اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ

तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो[164] तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर

عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

अल्लाह के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर

सज़ावार हुए। **156 :** इस से मा'लूम हुवा कि ज़िल्लतो इहानत वाला अ़ज़ाब कुफ़्फ़ार के साथ ख़ास है, मोमिनीन को गुनाहों की वज्ह से अ़ज़ाब हुवा भी तो ज़िल्लतो इहानत के साथ न होगा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : ''وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ'' (और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है) **157 :** इस से कु़रआने पाक और तमाम वोह किताबें और सह़ाइफ़ मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाए या'नी सब पर ईमान लाओ। **158 :** इस से उन की मुराद तौरैत है। **159 :** या'नी तौरैत पर ईमान लाने का दा'वा ग़लत़ है चूंकि कु़रआने पाक जो तौरैत का मुसद्दिक़ (तस्दीक़ करने वाला) है इस का इन्कार तौरैत का इन्कार हो गया। **160 :** इस में भी उन की तक्ज़ीब है कि अगर तौरैत पर ईमान रखते तो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को हरगिज़ शहीद न करते। **161 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बा'द। **162 :** इस में भी उन की तक्ज़ीब है कि शरीअ़ते मूसवी के मानने का दा'वा झूटा है अगर तुम मानते तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा और यदे बैज़ा वग़ैरा खुली निशानियों के देखने के बा'द गौसाला परस्ती (बछड़े की पूजा) न करते। **163 :** तौरैत के अह़काम पर अ़मल करने का। **164 :** इस में भी उन के दा'वाए ईमान की तक्ज़ीब है।

صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

सच्चे हो[165] और हरगिज़ कभी इस की आरज़ू न करेंगे[166] उन बद आ'मालियों के सबब जो आगे कर चुके[167] और **अल्लाह** खूब जानता है

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ

ज़ालिमों को और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों से

اَشْرَكُوْا ۛۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ

एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये[168] और वोह उसे अज़ाब

مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلْ مَنْ كَانَ

से दूर न करेगा इतनी उ़म्र दिया जाना और **अल्लाह** उन के कौतक (बुरे अ़मल) देख रहा है तुम फ़रमा दो जो कोई

عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ

जिब्रील का दुश्मन हो[169] तो उस (जिब्रील) ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से येह क़ुरआन उतारा अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और बिशारत मुसल्मानों को[170] जो कोई दुश्मन हो **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों

165 : यहूद के बातिल दआवी (झूटे दा'वों) में से एक येह दा'वा था कि जन्नत ख़ास उन्हीं के लिये है इस का रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे ज़ो'म में जन्नत तुम्हारे लिये ख़ास है और आख़िरत की त़रफ़ से तुम्हें इत़्मीनान है, आ'माल की ह़ाजत नहीं तो जन्नती ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्यवी मसाइब क्यूं बरदाश्त करते हो ? मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दा'वे की बिना पर तुम्हारे लिये बाइ़से राह़त है, अगर तुम ने मौत की तमन्ना न की तो येह तुम्हारे किज़्ब की दलील होगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर वोह मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और रूए ज़मीन पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता। **166 :** येह ग़ैब की ख़बर और मो'जिज़ा है कि यहूद बा वुजूद निहायत ज़िद और शिद्दते मुख़ालफ़त के भी तमन्नाए मौत का लफ़्ज़ ज़बान पर न ला सके। **167 :** जैसे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान और क़ुरआन के साथ कुफ़्र और तौरैत की तह़रीफ़ वग़ैरा। **मस्अला :** मौत की मह़ब्बत और लिक़ाए परवर दगार का शौक़ **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हर नमाज़ के बा'द दुआ़ फ़रमाते : "اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ شَھَادَۃً فِیْ سَبِیْلِکَ وَوَفَاۃً بِبَلَدِ رَسُوْلِکَ" या रब ! मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल के शहर में वफ़ात नसीब फ़रमा। बिल उ़मूम तमाम सह़ाबए किबार और बिल ख़ुसूस शुहदाए बद्रो उह़ुद अस्ह़ाबे बैअ़ते रिज़्वान मौत फ़ी सबीलिल्लाह की मह़ब्बत रखते थे, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार रुस्तम बिन फ़र्रुख़ ज़ाद के पास जो ख़त़ भेजा उस में तह़रीर फ़रमाया था : "اِنَّ مَعِیَ قَوْمًا یُّحِبُّوْنَ الْمَوْتَ کَمَا یُحِبُّ الْاَعَاجِمُ الْخَمْرَ" या'नी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना मह़बूब रखती है जितना अ़जमी शराब को। इस में लत़ीफ़ इशारा था कि शराब की नाक़िस मस्ती को मह़ब्बते दुन्या के दीवाने पसन्द करते हैं और अहलुल्लाह मौत को मह़बूबे ह़क़ीक़ी के विसाल का ज़रीआ़ समझ कर मह़बूब जानते हैं। फ़िल जुम्ला अहले ईमान आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर तूले ह़यात की तमन्ना भी करें तो वोह इस लिये होती है कि नेकियां करने के लिये कुछ और अ़र्सा मिल जाए जिस से आख़िरत के लिये ज़ख़ीरए सआ़दत ज़ियादा कर सकें अगर गुज़श्ता अय्याम में गुनाह हुए हैं तो उन से तौबा व इस्तिग़्फ़ार कर लें। **मस्अला :** सिह़ाह़ की ह़दीस में है कोई दुन्यवी मुसीबत से परेशान हो कर मौत की तमन्ना न करे। और दर ह़क़ीक़त ह़वादिसे दुन्या से तंग आ कर मौत की दुआ़ करना सब्रो रिज़ा व तस्लीमो तवक्कुल के ख़िलाफ़ व ना जाइज़ है। **168 :** मुश्रिकीन का एक गुरोह मजूसी है आपस में तह़िय्यत व सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं : "ज़िह हज़ार साल" या'नी हज़ार बरस जियो, मत़लब येह है कि मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं, यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें ह़िर्से ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है। **169 : शाने नुज़ूल :** यहूद के आ़लिम अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिय्या ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा : आप के पास आस्मान से कौन फ़िरिश्ता आता है ? फ़रमाया : जिब्रील। इब्ने सूरिय्या ने कहा : वोह हमारा दुश्मन है, अ़ज़ाबे शिद्दत और ख़सफ़ उतारता है, कई मरतबा हम से अ़दावत कर चुका है, अगर आप के पास मीकाईल आते तो हम आप पर ईमान ले आते। **170 :** तो यहूद की अ़दावत जिब्रील के साथ बे मा'ना है बल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वोह जिब्रीले अमीन से मह़ब्बत करते और उन के शुक्र गुज़ार होते कि वोह ऐसी किताब लाए जिस से उन की किताबों की तस्दीक़ होती है। और "بُشْرٰی لِلْمُؤْمِنِیْنَ" (बिशारत मुसल्मानों को)

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدْ

और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का[171] और बेशक

اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَاۤ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَكُلَّمَا

हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें उतारीं[172] और इन के मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग और क्या जब कभी

عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

कोई अ़ह्द करते हैं उन में एक फ़रीक़ इसे फेंक देता है बल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नहीं[173]

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ

और जब उन के पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहां से एक रसूल[174] उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता[175] तो किताब

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ

वालों से एक गुरौह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी[176] गोया वोह

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ

कुछ इल्म ही नहीं रखते[177] और उस के पैरव हुए जो शैत़ान पढ़ा करते थे सल्त़नते सुलैमान के ज़माने में[178] और

फ़रमाने में यहूद का रद है कि अब तो जिब्रील हिदायत व बिशारत ला रहे हैं फिर भी तुम अ़दावत से बाज़ नहीं आते। **171 :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया व मलाएका की अ़दावत कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और मह़बूबाने ह़क़ से दुश्मनी ख़ुदा से दुश्मनी करना है। **172 : शाने नुज़ूल :** येह आयत इब्ने सूरिय्या यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि ऐ मुह़म्मद ! आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाए जिसे हम पहचानते और न आप पर कोई वाज़ेह़ आयत नाज़िल हुई जिस का हम इत्तिबाअ़ करते। **173 : शाने नुज़ूल :** येह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूद को अल्लाह तआ़ला के वोह अ़ह्द याद दिलाए जो हुज़ूर पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ किये थे तो इब्ने सैफ़ ने अ़ह्द ही का इन्कार कर दिया। **174 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। **175 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तौरैत व ज़बूर वग़ैरा की तस्दीक़ फ़रमाते थे और ख़ुद इन किताबों में भी हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी की बिशारत और आप के औसाफ़ व अह़्वाल का बयान था इस लिये हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी और आप का वुजूदे मुबारक ही इन किताबों की तस्दीक़ है तो ह़ाल इस का मुक़्तज़ी था कि हुज़ूर की आमद पर अहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़ियादा पुख़्ता होता मगर इस के बर अ़क्स उन्हों ने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया। सुद्दी का क़ौल है कि जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो यहूद ने तौरैत से मुक़ाबला कर के तौरैत व क़ुरआन को मुत़ाबिक़ पाया तो तौरैत को भी छोड़ दिया। **176 :** या'नी उस किताब की त़रफ़ बे इल्तिफ़ाती की। सुफ़्यान बिन उ़यैना का क़ौल है कि यहूद ने तौरैत को ह़रीर व दीबा के रेशमी ग़िलाफ़ों में ज़र व सीम के साथ मुत़ल्ला व मुज़य्यन कर के रख लिया और उस के अह़्काम को न माना। **177 :** इन आयात से मा'लूम होता है कि यहूद के चार फ़िर्क़े थे : **एक** तौरैत पर ईमान लाया और उस ने उस के हुक़ूक़ को भी अदा किया, येह मोमिनीने अहले किताब हैं इन की ता'दाद थोड़ी है और ''اَكْثَرُهُمْ'' से इन का पता चलता है। **दूसरा** फ़िर्क़ा जिस ने बिल ए'लान तौरैत के अ़ह्द तोड़े उस की ह़ुदूद से बाहर हुए, सरकशी इख़्तियार की ''نَبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ'' (एक गुरौह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी) में उन का बयान है। **तीसरा** फ़िर्क़ा वोह जिस ने अ़ह्द शिकनी का ए'लान तो न किया लेकिन अपनी जहालत से अ़ह्द शिकनी करते रहे उन का ज़िक्र ''بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ'' (बल्कि उन में से बहुतेरों को ईमान नहीं) में है। **चौथे** फ़िर्क़े ने ज़ाहिरी त़ौर पर तो अ़ह्द माने और बात़िन में बग़ावत व इनाद से मुख़ालफ़त करते रहे येह तसन्नोअ़ से जाहिल बनते थे ''كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ'' (गोया वोह कुछ इल्म ही नहीं रखते) में इन पर दलालत है। **178 : शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में बनी इसराईल जादू सीखने में मश्ग़ूल हुए तो आप ने उन को इस से रोका और उन की किताबें ले कर अपनी कुरसी के नीचे दफ़्न कर दीं, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के बा'द शयात़ीन ने वोह किताबें निकलवा कर लोगों से कहा कि सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام इसी

مَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ

सुलैमान ने कुफ़्र न किया[179] हां शैतान काफ़िर हुए[180] लोगों को जादू सिखाते हैं

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ

और वोह (जादू) जो बाबिल में दो फ़िरिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वोह दोनों किसी को कुछ

مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ

न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़्माइश हैं तो अपना ईमान न खो[181] तो उन से

مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ

सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औरत में और इस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते

مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَ

किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से[182] और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़्सान देगा नफ़्अ़ न देगा और

لَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ؕ قف وَلَبِئْسَ مَا

बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वोह

شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا

जिस के बदले उन्हों ने अपनी जानें बेचीं किसी तरह उन्हें इल्म होता[183] और अगर वोह ईमान लाते[184] और परहेज़ गारी करते

لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

तो **अल्लाह** के यहां का सवाब बहुत अच्छा है किसी तरह उन्हें इल्म होता ऐ ईमान वालो[185]

ع ١٢

के ज़ोर से सल्तनत करते थे, बनी इसराईल के सुलहा व उ़लमा ने तो इस का इन्कार किया, लेकिन उन के जुहहाल जादू को हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का इल्म बता कर इस के सीखने पर टूट पड़े अम्बिया की किताबें छोड़ दीं और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर मलामत शुरूअ़ की, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक इसी हाल पर रहे **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर पर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की बराअत में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **179 :** क्यूं कि वोह नबी हैं और अम्बिया कुफ़्र से क़त्अ़न मा'सूम होते हैं उन की तरफ़ सेहूर की निस्बत बातिल व ग़लत है क्यूं कि सेहूर का कुफ़्रिय्यात से ख़ाली होना नादिर है। **180 :** जिन्हों ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर जादूगरी की झूटी तोहमत लगाई। **181 :** या'नी जादू सीख कर और इस पर अ़मल व ए'तिक़ाद कर के और इस को मुबाह जान कर काफ़िर न बन। येह जादू फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के दरमियान इम्तियाज़ व आज़्माइश के लिये नाज़िल हुवा, जो इस को सीख कर इस पर अ़मल करे काफ़िर हो जाएगा, बशर्ते कि इस जादू में मुनाफ़िये ईमान कलिमात व अफ़्आ़ल हों और जो इस से बचे न सीखे, या सीखे और इस पर अ़मल न करे और इस के कुफ़्रिय्यात का मो'तक़िद न हो वोह मोमिन रहेगा, येही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का क़ौल है। **मस्अला :** जो सेहूर कुफ़्र है उस का आ़मिल अगर मर्द हो क़त्ल कर दिया जाएगा। **मस्अला :** जो सेहूर कुफ़्र नहीं मगर उस से जानें हलाक की जाती हैं उस का आ़मिल कुत्ताए तरीक़ (डाकू, राहज़नों) के हुक्म में है मर्द हो या औरत। **मस्अला :** जादूगर की तौबा क़बूल है। (مدارک) **182 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा मुअस्सिरे हक़ीक़ी **अल्लाह** तआ़ला है और तासीरे अस्बाब तहते मशिय्यत है। **183 :** अपने अन्जामे कार व शिद्दते अ़ज़ाब का। **184 :** हज़रत सय्यिदे काएनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और कुरआने पाक पर **185 : शाने नुज़ूल :** जब हुज़ूरे

لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾

राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो[186] और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[187]

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ

वोह जो काफ़िर हैं किताबी या मुश्रिक[188] वोह नहीं चाहते

عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से[189] और **अल्लाह** अपनी रह़मत से ख़ास करता है जिसे चाहे

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ

और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है जब कोई आयत हम मन्सूख़ फ़रमाएं या भुला दें[190] तो उस से

مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ

बेहतर या उस जैसी ले आएंगे क्या तुझे ख़बर नहीं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है क्या तुझे ख़बर नहीं

اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कि **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा

अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم सहाबा को कुछ ता'लीम व तल्क़ीन फ़रमाते तो वोह कभी कभी दरमियान में अ़र्ज़ किया करते : "رَاعِنَا يَارَسُوْلَ اللّٰه" इस के येह मा'ना थे कि या रसूलल्लाह ! हमारे ह़ाल की रिआ़यत फ़रमाइये या'नी कलामे अक़्दस को अच्छी त़रह़ समझ लेने का मौक़अ़ दीजिये, यहूद की लुग़त में येह कलिमा सूए अदब के मा'ना रखता था उन्हों ने इस निय्यत से कहना शुरूअ़ किया। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ यहूद की इस्तिलाह़ से वाक़िफ़ थे, आप ने एक रोज़ येह कलिमा उन की ज़बान से सुन कर फ़रमाया : ऐ दुश्मनाने ख़ुदा ! तुम पर **अल्लाह** की ला'नत, अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से येह कलिमा सुना उस की गरदन मार दूंगा, यहूद ने कहा : हम पर तो आप बरहम होते हैं मुसल्मान भी तो येही कहते हैं, इस पर आप रन्जीदा हो कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए ही थे कि येह आयत नाज़िल हुई जिस में "رَاعِنَا" कहने की मुमानअ़त फ़रमा दी गई और इस मा'नी का दूसरा लफ़्ज़ "اُنْظُرْنَا" (हुज़ूर हम पर नज़र रखें) कहने का हुक्म हुवा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की ता'ज़ीमो तौक़ीर और इन की जनाब में कलिमाते अदब अ़र्ज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमे में तर्के अदब का शाएबा भी हो वोह ज़बान पर लाना मम्नूअ़। **186 :** और हमा तन गोश हो जाओ (इन्तिहाई तवज्जोह के साथ सुनो) ताकि येह अ़र्ज़ करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुज़ूर ! तवज्जोह फ़रमाएं, क्यूं कि दरबारे नुबुव्वत का येही अदब है। **मस्अला :** दरबारे अम्बिया में आदमी को अदब के आ'ला मरातिब का लिहाज़ लाज़िम है। **187 : मस्अला :** "لِلْكٰفِرِيْنَ" (और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है) में इशारा है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है। **188 : शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त मुसल्मानों से दोस्ती व ख़ैर ख़्वाही का इज़्हार करती थी उन की तक्ज़ीब में येह आयत नाज़िल हुई, मुसल्मानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार ख़ैर ख़्वाही के दा'वे में झूटे हैं। (جمل) **189 :** या'नी कुफ़्फ़ार अहले किताब और मुश्रिकीन दोनों मुसल्मानों से बुग़्ज़ रखते हैं और इस रन्ज में हैं कि इन के नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत व वह्य अ़त़ा हुई और मुसल्मानों को येह ने'मते उ़ज़्मा मिली। (خازن وغیرہ) **190 : शाने नुज़ूल :** क़ुरआने करीम ने शराइए साबिक़ा (पहली शरीअ़तों) व कुतुबे क़दीमा को मन्सूख़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़ार को बहुत तवह़्ह़ुश (दुख) हुवा और उन्हों ने इस पर त़ा'न किये, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मन्सूख़ भी **अल्लाह** की त़रफ़ से है और नासिख़ भी दोनों ऐन ह़िक्मत हैं। और नासिख़ कभी मन्सूख़ से ज़ियादा सह्ल व अन्फ़अ़ (आसान और फ़ाएदे मन्द) होता है क़ुदरते इलाही पर यक़ीन रखने वाले को इस में जाए तरद्दुद नहीं, काएनात में मुशाहदा किया जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला दिन से रात को, गरमा से सरमा को, जवानी से बचपन को, बीमारी से तन्दुरुस्ती को, बहार से ख़ज़ां को मन्सूख़ फ़रमाता है, येह तमाम नस्ख़ व तब्दील उस की क़ुदरत के दलाइल हैं तो एक आयत और एक हुक्म के मन्सूख़ होने में क्या तअ़ज्जुब ? नस्ख़ दर ह़क़ीक़त हुक्मे साबिक़ की मुद्दत का बयान होता है कि वोह हुक्म उस मुद्दत के लिये था और ऐन ह़िक्मत था, कुफ़्फ़ार की ना फ़हमी कि नस्ख़ पर ए'तिराज़ करते

وَّلِیٍّ وَّ لَا نَصِیْرٍ ﴿۱۰۷﴾ اَمْ تُرِیْدُوْنَ اَنْ تَسْــٴَـلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىٕلَ

न कोई हिमायती न मददगार क्या येह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सुवाल करो जो पहले

مُوْسٰى مِنْ قَبْلُؕ وَ مَنْ یَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ

मूसा से हुवा था[191] और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले[192] वोह ठीक रास्ते (से)

السَّبِیْلِ ﴿۱۰۸﴾ وَدَّ كَثِیْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ یَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बहक गया बहुत किताबियों ने चाहा[193] काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की

اِیْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُمُ

तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से[194] बा'द इस के कि हक़ उन पर ख़ूब ज़ाहिर हो

الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَ اصْفَحُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

चुका है तो तुम छोड़ो और दर गुज़र करो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए बेशक **अल्लाह** हर

हैं। और अहले किताब का ए'तिराज़ उन के मो'तक़िदात के लिहाज़ से भी ग़लत़ है, उन्हें ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की शरीअ़त के अह़काम की मन्सूख़िय्यत तस्लीम करना पड़ेगी, येह मानना ही पड़ेगा कि शम्बा के रोज़ दुन्यवी काम इन से पहले ह़राम न थे इन पर ह़राम हुए, येह भी इक़रार ना गुज़ीर होगा कि तौरैत में ह़ज़रते नूह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की उम्मत के लिये तमाम चौपाए ह़लाल होना बयान किया गया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर बहुत से ह़राम कर दिये गए, इन उमूर के होते हुए नस्ख़ का इन्कार किस त़रह़ मुम्किन है। **मस्अला :** जिस त़रह़ आयत दूसरी आयत से मन्सूख़ होती है इसी त़रह़ ह़दीसे मुतवातिर से भी होती है। **मस्अला :** नस्ख़ कभी सिर्फ़ तिलावत का होता है कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत व हुक्म दोनों का। बैहक़ी ने अबू उमामा से रिवायत की, कि एक अन्सारी सह़ाबी शब को तहज्जुद के लिये उठे और सूरए फ़ातिह़ा के बा'द जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उस को पढ़ना चाहा लेकिन वोह बिल्कुल याद न आई और सिवाए "بِسْمِ الله" के कुछ न पढ़ सके, सुब्ह़ को दूसरे अस्ह़ाब से इस का ज़िक्र किया उन ह़ज़रात ने फ़रमाया हमारा भी येही ह़ाल है वोह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारे ह़ाफ़िज़े में भी न रही, सब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, हुज़ूरे अकरम ने फ़रमाया : आज शब वोह सूरत उठा ली गई उस के हुक्म व तिलावत दोनों मन्सूख़ हुए, जिन काग़ज़ों पर वोह लिखी गई थी उन पर नक़्श तक बाक़ी न रहे। **191** **शाने नुज़ूल :** यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमारे पास आप ऐसी किताब लाइये जो आस्मान से एक बारगी नाज़िल हो, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **192 :** या'नी जो आयतें नाज़िल हो चुकी हैं उन के क़बूल करने में बे जा बह़्स करे और दूसरी आयतें त़लब करे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस सुवाल में मफ़्सदा (फ़साद) हो वोह बुज़ुर्गों के सामने पेश करना जाइज़ नहीं और सब से बड़ा मफ़्सदा येह है कि उस से ना फ़रमानी ज़ाहिर होती हो। **193 :** **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद के बा'द यहूद की जमाअ़त ने ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से कहा कि अगर तुम ह़क़ पर होते तो तुम्हें शिकस्त न होती, तुम हमारे दीन की त़रफ़ वापस आ जाओ, ह़ज़रते अ़म्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़्दीक अ़ह्द शिकनी कैसी है? उन्हों ने कहा निहायत बुरी। आप ने फ़रमाया मैं ने अ़ह्द किया है कि ज़िन्दगी के आख़िर लम्ह़े तक सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से न फिरूंगा और कुफ़्र न इख़्तियार करूंगा और ह़ज़रते हुज़ैफ़ा ने फ़रमाया मैं राज़ी हुवा **अल्लाह** के रब होने, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के रसूल होने, इस्लाम के दीन होने, क़ुरआन के इमाम होने, का'बे के क़िब्ला होने, मोमिनीन के भाई होने से, फिर येह दोनों साह़िब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप को वाक़िफ़ की ख़बर दी, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बेहतर किया और फ़लाह़ पाई। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **194 :** इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत जानने के बा'द यहूद का मुसल्मानों के कुफ़्र व इरतिदाद की तमन्ना करना और येह चाहना कि वोह ईमान से मह़रूम हो जाएं ह़सदन था, ह़सद बड़ा ही ऐ़ब है। **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ह़सद से बचो वोह नेकियों को इस त़रह़ खाता है जैसे आग ख़ुश्क लकड़ी को।" **मस्अला :** ह़सद ह़राम है। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स अपने मालो दौलत या असरो वजाहत से गुमराही व बे दीनी फैलाता हो तो उस के फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रहने के लिये उस के ज़वाले ने'मत की तमन्ना ह़सद में दाख़िल नहीं और ह़राम भी नहीं।

شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتُوا الزَّکٰوۃَ ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوۡا

चीज़ पर क़ादिर है और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो[195] और अपनी जानों के लिये

لِاَنۡفُسِکُمۡ مِّنۡ خَیۡرٍ تَجِدُوۡہُ عِنۡدَ اللّٰہِ ؕ اِنَّ اللّٰہَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे काम

بَصِیۡرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَ قَالُوۡا لَنۡ یَّدۡخُلَ الۡجَنَّۃَ اِلَّا مَنۡ کَانَ ہُوۡدًا اَوۡ نَصٰرٰی ؕ

देख रहा है और अहले किताब बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वोह जो यहूदी या नसरानी हो[196]

تِلۡکَ اَمَانِیُّہُمۡ ؕ قُلۡ ہَاتُوۡا بُرۡہَانَکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰی ٭ مَنۡ

येह उन की ख़याल बन्दियां हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील[197] अगर सच्चे हो हां क्यूं नहीं जिस ने

اَسۡلَمَ وَجۡہَہٗ لِلّٰہِ وَ ہُوَ مُحۡسِنٌ فَلَہٗۤ اَجۡرُہٗ عِنۡدَ رَبِّہٖ ۪ وَ لَا خَوۡفٌ

अपना मुंह झुकाया अल्लाह के लिये और वोह नेकोकार है[198] तो उस का नेग (बदला) उस के रब के पास है और उन्हें

عَلَیۡہِمۡ وَ لَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ قَالَتِ الۡیَہُوۡدُ لَیۡسَتِ النَّصٰرٰی عَلٰی

न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म[199] और यहूदी बोले नसरानी कुछ

شَیۡءٍ ۪ وَّ قَالَتِ النَّصٰرٰی لَیۡسَتِ الۡیَہُوۡدُ عَلٰی شَیۡءٍ ۙ وَّ ہُمۡ یَتۡلُوۡنَ

नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं[200] हालां कि वोह किताब

الۡکِتٰبَ ؕ کَذٰلِکَ قَالَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ مِثۡلَ قَوۡلِہِمۡ ۚ فَاللّٰہُ یَحۡکُمُ

पढ़ते हैं[201] इसी तरह जाहिलों ने उन की सी बात कही[202] तो अल्लाह क़ियामत

195 : मोमिनीन को यहूद से दर गुज़र का हुक्म देने के बा'द उन्हें अपने इस्लाहे नफ़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह फ़रमाता है। **196 :** या'नी यहूद कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ यहूदी दाख़िल होंगे और नसरानी कहते हैं कि फ़क़त़ नसरानी और येह मुसल्मानों को दीन से मुन्ह़रिफ़ करने के लिये कहते हैं, जैसे नस्ख़ वग़ैरा के लचर (बेहूदा) शुबुहात उन्हों ने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसल्मानों को अपने दीन में कुछ तरद्दुद हो जाए, इसी त़रह़ इन को जन्नत से मायूस कर के इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं, चुनान्चे आख़िरे पारह में उन का येह मक़ूला मज़्कूर है : "وَقَالُوۡا کُوۡنُوۡا ہُوۡدًا اَوۡ نَصٰرٰی تَہۡتَدُوۡا" (और किताबी बोले यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे) अल्लाह तआला उन के इस ख़याल का रद फ़रमाता है। **197 : मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि नफ़ी के मुद्दई को भी दलील लाना ज़रूर है बिग़ैर इस के दा'वा बातिल व ना मस्मूअ़ (ना मक़्बूल) होगा। **198 :** ख़्वाह वोह किसी ज़माने, किसी नस्ल, किसी क़ौम का हो। **199 :** इस में इशारा है कि यहूदो नसारा का येह दा'वा कि जन्नत के फ़क़त़ वोही मालिक हैं बिल्कुल ग़लत़ है क्यूं कि दुख़ूले जन्नत मुरत्तब है अ़क़ीदए सह़ीह़ा व अ़मले सालेह़ पर और येह उन्हें मुयस्सर नहीं। **200 शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा का वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया तो उ़लमाए यहूद आए और दोनों में मुनाज़रा शुरूअ़ हो गया, आवाज़ें बुलन्द हुईं शोर मचा, यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया, इसी त़रह़ नसारा ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। **201 :** या'नी बा वुजूद इ़ल्म के उन्हों ने ऐसी जाहिलाना गुफ़्तगू की। ह़ालां कि इन्जील शरीफ़ जिस को नसारा मानते हैं उस में तौरैत शरीफ़ व ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत की तस्दीक़ है, इसी त़रह़ तौरैत जिस

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन[203] जो

مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَ سَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا

अल्लाह की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से[204] और उन की वीरानी में कोशिश करे[205] उन को न

كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّ لَهُمْ

पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है[206] और उन के लिये

فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ۗ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا

आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब[207] और पूरब व पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब अल्लाह ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह

فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ

(ख़ुदा की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह) है बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है और बोले ख़ुदा ने अपने लिये औलाद रखी

को यहूदी मानते हैं उस में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत और उन तमाम अह़काम की तस्दीक़ है जो आप को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अ़त़ा हुए। **202 :** उ़लमाए अहले किताब की त़रह़। उन जाहिलों ने जो न इ़ल्म रखते थे न किताब जैसा कि बुत परस्त, आतश परस्त वग़ैरा उन्हों ने हर एक दीन वाले की तक्ज़ीब शुरूअ़ की और कहा कि वोह कुछ नहीं, उन्हीं जाहिलों में से मुश्रिकीने अ़रब भी हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के दीन की शान में ऐसे ही कलिमात कहे। **203 : शाने नुज़ूल :** येह आयत बैतुल मक़्दिस की बे ह़ुरमती के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि रूम के नसरानियों ने बनी इसराईल पर फ़ौज कशी की उन के मर्दाने कार आज़्मा को क़त्ल किया, ज़ुर्रिय्यत को क़ैद किया, तौरैत शरीफ़ को जलाया, बैतुल मक़्दिस को वीरान किया उस में नजासतें डालीं, ख़िन्ज़ीर ज़ब्ह़ किये مَعَاذَ اللّٰه, बैतुल मक़्दिस ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी तक इसी वीरानी में रहा, आप के अ़ह्दे मुबारक में मुसल्मान ने इस को बिना (आबाद) किया। एक क़ौल येह भी है कि येह आयत मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम में ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को का'बे में नमाज़ पढ़ने से रोका था और जंगे ह़ुदैबिया के वक़्त इस में नमाज़ व ह़ज से मन्अ़ किया था। **204 :** ''ज़िक्र'' नमाज़, ख़ुत़्बा, तस्बीह़, वा'ज़, ना'त शरीफ़ सब को शामिल है और ''ज़िक्रुल्लाह'' को मन्अ़ करना हर जगह बुरा है ख़ास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं। **मस्अला :** जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र व नमाज़ से मुअ़त्त़ल कर दे वोह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है। **205 : मस्अला :** मस्जिद की वीरानी जैसे ज़िक्र व नमाज़ के रोकने से होती है ऐसे ही इस की इ़मारत के नुक़्सान पहुंचाने और बे ह़ुरमती करने से भी। **206 :** दुन्या में उन्हें येह रुस्वाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरिफ़्तार हुए, जला वत़न किये गए, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी व उ़स्मानी में मुल्के शाम उन के क़ब्ज़े से निकल गया, बैतुल मक़्दिस से ज़िल्लत के साथ निकाले गए। **207 : शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ एक अंधेरी रात सफ़र में थे, जिहते क़िब्ला मा'लूम न हो सकी, हर एक शख़्स ने जिस त़रफ़ उस का दिल जमा नमाज़ पढ़ी, सुब्ह़ को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाल अ़र्ज़ किया तो येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिहते क़िब्ला मा'लूम न हो सके तो जिस त़रफ़ दिल जमे कि येह क़िब्ला है उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़े। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल येह है कि येह उस मुसाफ़िर के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सुवारी पर नफ़्ल अदा करे उस की सुवारी जिस त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए उसी त़रफ़ उस की नमाज़ दुरुस्त है, बुख़ारी व मुस्लिम की अह़ादीस से येह साबित है। एक क़ौल येह है कि जब तह़्वीले क़िब्ला का ह़ुक्म दिया गया तो यहूद ने मुसल्मानों पर त़ा'ना ज़नी की उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई बताया गया कि मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह का है, जिस त़रफ़ चाहे क़िब्ला मुअ़य्यन फ़रमाए किसी को ए'तिराज़ का क्या ह़क़। (خازن) एक क़ौल येह है कि येह आयत दुआ़ के ह़क़ में वारिद हुई, ह़ुज़ूर से दरयाफ़्त किया गया कि किस त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ की जाए? उस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़क़ से गुरेज़ व फ़िरार में है और ''اَيْنَمَا تُوَلُّوْا'' (तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह है) का ख़िता़ब उन लोगों को है जो ज़िक्रे इलाही से रोकते और मस्जिदों की वीरानी में सई करते हैं वोह दुन्या की रुस्वाई और अ़ज़ाबे आख़िरत से कहीं भाग नहीं सकते क्यूं कि मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह का है जहां भागेंगे वोह गिरिफ़्त फ़रमाएगा। इस तक़्दीर पर ''वज्हुल्लाह'' के मा'ना ख़ुदा का क़ुर्ब

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

पाकी है उसे[208] बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[209] सब उस के हुज़ूर गरदन डाले हैं

بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ

नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का[210] और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा

فَیَكُوْنُ ﴿۱۱۷﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ لَوْ لَا یُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِیْنَاۤ

वोह फ़ौरन हो जाती है[211] और जाहिल बोले[212] अल्लाह हम से क्यूं नहीं कलाम करता[213] या हमें कोई

اٰیَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ

निशानी मिले[214] इन से अगलों ने भी ऐसी ही कही इन की सी बात इन के उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَیَّنَّا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

एक से हैं[215] बेशक हम ने निशानियां खोल दीं यक़ीन वालों के लिये[216] बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा

بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا ۙ وَّ لَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِیْمِ ﴿۱۱۹﴾ وَ لَنْ تَرْضٰی

खुश ख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोज़ख़ वालों का सुवाल न होगा[217] और हरगिज़ तुम से

عَنْكَ الْیَهُوْدُ وَ لَا النَّصٰرٰی حَتّٰی تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَی اللّٰهِ

यहूद और नसारा राज़ी न होंगे जब तक तुम उन के दीन की पैरवी न करो[218] तुम फ़रमा दो कि अल्लाह ही की हिदायत

व हुज़ूर है। (ع) एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि अगर कुफ़्फ़ार ख़ानए का'बा में नमाज़ से मन्अ करें तो तुम्हारे लिये तमाम ज़मीन मस्जिद बना दी गई है जहां से चाहो क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ो। **208 : शाने नुज़ूल :** यहूद ने ह़ज़रते उ़ज़ैर (عَلَیْهِ السَّلام) को और नसारा ने ह़ज़रते मसीह़ (عَلَیْهِ السَّلام) को ख़ुदा का बेटा कहा, मुश्रिकीने अ़रब ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताया उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई फ़रमाया : "سُبْحٰنَهٗ" वोह पाक है इस से कि उस के औलाद हो, उस की त़रफ़ औलाद की निस्बत करना उस को ऐ़ब लगाना और बे अदबी है, ह़दीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : इब्ने आदम ने मुझे गाली दी, मेरे लिये औलाद बताई, मैं औलाद और बीवी से पाक हूं। **209 :** और मम्लूक होना औलाद होने के मुनाफ़ी है, जब तमाम जहान उस का मम्लूक है तो कोई औलाद कैसे हो सकता है। **मस्अला :** अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाए वोह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगी। **210 :** जिस ने बिग़ैर किसी मिसाले साबिक़ के अश्या को अ़दम से वुजूद अ़ता फ़रमाया। **211 :** या'नी काएनात उस के इरादा फ़रमाते ही वुजूद में आ जाती है। **212 :** या'नी अहले किताब या मुश्रिकीन। **213 :** या'नी बे वासित़ा ख़ुद क्यूं नहीं फ़रमाता जैसा कि मलाएका व अम्बिया से कलाम फ़रमाता है। येह उन का कमाले तकब्बुर और निहायत सरकशी थी, उन्हों ने अपने आप को अम्बिया व मलाएका के बराबर समझा। **शाने नुज़ूल :** राफ़ेअ़ बिन ख़ुज़ैमा ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो अल्लाह से फ़रमाइये वोह हम से कलाम करे हम ख़ुद सुनें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **214 :** येह उन आयात का इ़नादन इन्कार है जो अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाईं। **215 :** कोरी व नाबीनाई और कुफ़्र व क़सावत में। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर फ़रमाई गई कि आप उन की सरकशी और मुआ़निदाना (दुश्मनाना) इन्कार से रन्जीदा न हों पिछले कुफ़्फ़ार भी अम्बिया के साथ ऐसा ही करते थे। **216 :** या'नी आयाते क़ुरआनी व मो'जिज़ाते बाहिरात इन्साफ़ वाले को सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं मगर जो त़ालिबे यक़ीन न हो वोह दलाइल से फ़ाएदा नहीं उठा सकता। **217 :** कि वोह क्यूं ईमान न लाए ? इस लिये कि आप ने अपना फ़र्ज़े तब्लीग़ पूरे त़ौर पर अदा फ़रमा दिया। **218 :** और येह

هُوَ الْهُدٰى ؕ وَ لَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِیْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

हिदायत है[219] और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख़्वाहिशों का पैरव हुवा बा'द इस के कि तुझे इल्म आ चुका

مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّ لَا نَصِیْرٍ ﴿۱۲۰﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

तो अल्लाह से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार[220] जिन्हें हम ने किताब दी है

یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓىٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ

वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं वोही इस पर ईमान रखते हैं और जो इस के मुन्किर हों तो वोही

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتُ

ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाले) हैं[221] ऐ औलादे या'क़ूब याद करो मेरा एहसान जो मैं ने

عَلَیْكُمْ وَ اَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ اتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ

तुम पर किया और वोह जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी और डरो उस दिन से कि कोई

نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْــٴًـا وَّ لَا یُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّ لَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ

जान दूसरे का बदला न होगी और न उस को कुछ ले कर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़्अ़ दे[222]

وَّ لَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَ اِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ

और न उन की मदद हो और जब[223] इब्राहीम को उस के रब ने कुछ बातों से आज़्माया[224] तो उस ने वोह पूरी कर दिखाईं[225] फ़रमाया

اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ؕ قَالَ لَا یَنَالُ

मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाने वाला हूं अ़र्ज़ की और मेरी औलाद से फ़रमाया मेरा अ़हद

ना मुम्किन क्यूं कि वोह बातिल पर हैं। **219 :** वोही क़ाबिले इत्तिबाअ़ है और उस के सिवा हर एक राह बातिल व ज़लालत। **220 :** येह ख़िताब उम्मते मुहम्मदिय्यह को है कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम्हारे पास हक़ व हिदायत लाए तो तुम हरगिज़ कुफ़्फ़ार की ख़्वाहिशों का इत्तिबाअ़ न करना, अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। (خازن) **221 : शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अहले सफ़ीना के बाब में नाज़िल हुई जो जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हाज़िरे बारगाहे रिसालत हुए थे, उन की ता'दाद चालीस थी, बत्तीस अहले हबशा और आठ शामी राहिब, उन में बहीरा राहिब भी थे। मा'ना येह हैं कि दर हक़ीक़त तौरैत शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वोही हैं जो इस की तिलावत का हक़ अदा करते हैं और बिग़ैर तहरीफ़ व तब्दील पढ़ते हैं और इस के मा'ना समझते और मानते हैं और इस में हुज़ूर सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख कर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के मुन्किर होते हैं वोह तौरैत शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते। **222 :** इस में यहूद का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हमें शफ़ाअ़त कर के छुड़ा लेंगे, उन्हें मायूस किया जाता है कि शफ़ाअ़त काफ़िर के लिये नहीं। **223 :** हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत सर ज़मीने अहवाज़ में ब मक़ामे सूस हुई, फिर आप के वालिद आप को बाबिल मुल्के नमरूद में ले आए, यहूदो नसारा व मुश्रिकीने अ़रब सब आप के फ़ज़्लो शरफ़ के मो'तरिफ़ और आप की नस्ल में होने पर फ़ख़्र करते हैं, अल्लाह तआला ने आप के वोह हालात बयान फ़रमाए जिन से सब पर इस्लाम का क़बूल करना लाज़िम हो जाता है क्यूं कि जो चीज़ें अल्लाह तआला ने आप पर वाजिब कीं वोह इस्लाम के ख़साइस में से हैं। **224 :** ख़ुदाई आज़्माइश येह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमा कर दूसरों पर उस के खरे खोटे होने का इज़्हार कर दे। **225 :** जो बातें अल्लाह तआला

عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ

ज़ालिमों को नहीं पहुंचता[226] और याद करो जब हम ने इस घर को[227] लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया[228] और

اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ

इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ[229] और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि

طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَ اِذْ قَالَ

मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये और जब अ़र्ज़ की

اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ

इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को त़रह़ त़रह़ के फलों से रोज़ी दे जो

اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَ مَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ

इन में से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं[230] फ़रमाया और जो काफ़िर हुवा थोड़ा बरत्ने को उसे भी दूंगा फिर

اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ

उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ मजबूर करूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है पलटने की और जब उठाता था इब्राहीम

الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَ اِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ

इस घर की नीवें (बुन्यादें) और इस्माईल येह कहते हुए कि ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा[231] बेशक तू ही है

ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर आज़्माइश के लिये वाजिब की थीं उन में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं, क़तादा का क़ौल है कि वोह मनासिके ह़ज हैं। मुजाहिद ने कहा इस से वोह दस चीज़ें मुराद हैं जो अगली आयात में मज़्कूर हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास का एक क़ौल येह है कि वोह दस चीज़ें येह हैं : (1) मूंछें कतरवाना (2) कुल्ली करना (3) नाक में सफ़ाई के लिये पानी इस्ति'माल करना (4) मिस्वाक करना (5) सर में मांग निकालना (6) नाख़ुन तरशवाना (7) बग़ल के बाल दूर करना (8) मूए ज़ेरे नाफ़ की सफ़ाई (9) ख़तना (10) पानी से इस्तिन्जा करना। येह सब चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर वाजिब थीं और हम पर इन में से बा'ज़ वाजिब हैं बा'ज़ सुन्नत। **226 मस्अला :** या'नी आप की औलाद में जो ज़ालिम (काफ़िर) हैं वोह इमामत का मन्सब न पाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर मुसल्मानों का पेश्वा नहीं हो सकता और मुसल्मानों को उस का इत्तिबाअ़ जाइज़ नहीं। **227 :** "बैत" से का'बा शरीफ़ मुराद है और इस में तमाम ह़रम शरीफ़ दाख़िल है। **228 :** अम्न बनाने से येह मुराद है कि ह़रमे का'बा में क़त्लो ग़ारत ह़राम है या येह कि वहां शिकार तक को अम्न है यहां तक कि ह़रम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल येह है कि मोमिन इस में दाख़िल हो कर अ़ज़ाब से मामून हो जाता है। "ह़रम" को ह़रम इस लिये कहा जाता है कि इस में क़त्ल, ज़ुल्म, शिकार ह़राम व मम्नूअ़ है। (احمدی) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहां उस से तअ़र्रुज़ न किया जाएगा। (مدارک) **229 :** मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर खड़े हो कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बिना (ता'मीर) फ़रमाई और उस में आप के क़दम मुबारक का निशान था, उस को नमाज़ का मक़ाम बनाने का अम्र इस्तिह़बाब के लिये है। एक क़ौल येह भी है कि इस नमाज़ से त़वाफ़ की दो रक्अ़तें मुराद हैं। (احمدی وغیرہ) **230 :** चूंकि इमामत के बाब में "لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ" (मेरा अ़ह्द ज़ालिमों को नहीं पहुंचता) इर्शाद हो चुका था इस लिये ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस दुआ़ में मोमिनीन को ख़ास फ़रमाया और येही शाने अदब थी, अल्लाह तआ़ला ने करम किया दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि रिज़्क़ सब को दिया जाएगा मोमिन को भी काफ़िर को भी लेकिन काफ़िर का रिज़्क़ थोड़ा है या'नी सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी में वोह बहरा मन्द हो सकता है। **231 :** पहली मरतबा का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बुन्याद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने रखी और बा'दे तूफ़ाने नूह़ फिर

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَ اجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ

सुनता जानता ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गरदन रखने वाले[232] और हमारी औलाद में से

اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

एक उम्मत तेरी फ़रमां बरदार और हमें इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रह्मत के साथ रुजूअ़ फ़रमा[233] बेशक तू ही है

التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ

बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान ऐ रब हमारे और भेज इन में[234] एक रसूल इन्हीं में से कि इन पर तेरी आयतें तिलावत

اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब[235] और पुख़्ता इल्म सिखाए[236] और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे[237] बेशक तू ही है ग़ालिब

الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ ع وَ مَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَ لَقَدِ

हिक्मत वाला और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे[238] सिवा उस के जो दिल का अह्मक़ है और बेशक ज़रूर

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उसी बुन्याद पर ता'मीर फ़रमाई, येह ता'मीर ख़ास आप के दस्ते मुबारक से हुई, इस के लिये पथ्थर उठा कर लाने की ख़िदमत व सआ़दत हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को मुयस्सर हुई, दोनों हज़रात ने उस वक़्त येह दुआ़ की, कि या रब हमारी येह ताअ़त व ख़िदमत क़बूल फ़रमा। **232 :** वोह हज़रात **अल्लाह** तआ़ला के मुतीओ मुख़्लिस बन्दे थे फिर भी येह दुआ़ इस लिये है कि ताअ़त व इख़्लास में और ज़ियादा कमाल की तलब रखते हैं, ज़ौक़े ताअ़त सैर नहीं होता। سُبْحٰنَ الله : فِكرِ ہر کس بقدرِ ہمّتِ اُوست (हर कोई अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ ही ग़ौरो फ़िक्र करता है)। **233 :** हज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام मा'सूम हैं आप की तरफ़ से तो येह तवाज़ोअ़ है और **अल्लाह** वालों के लिये ता'लीम है। **मस्अला :** कि येह मक़ाम क़बूले दुआ़ का है और यहां दुआ़ व तौबा सुन्नते इब्राहीमी है। **234 :** या'नी हज़रते इब्राहीम व हज़रते इस्माईल की ज़ुर्रिय्यत में। येह दुआ़ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये थी, या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ता'मीर की अ़ज़ीम ख़िदमत बजा लाने और तौबा व इस्तिग़्फ़ार करने के बा'द हज़रते इब्राहीम व इस्माईल ने येह दुआ़ की, कि या रब ! अपने मह्बूब नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हमारी नस्ल में ज़ाहिर फ़रमा और येह शरफ़ हमें इनायत कर, येह दुआ़ क़बूल हुई और इन दोनों साहिबों की नस्ल में हुज़ूर के सिवा कोई नबी नहीं हुवा, औलादे हज़रते इब्राहीम में बाक़ी अम्बिया हज़रते इस्हाक़ की नस्ल से हैं। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपना मीलाद शरीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाया, इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की, कि हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक "ख़ातमुन्नबिय्यीन" लिखा हुवा था ब हाले कि हज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) के पुतला का ख़मीर हो रहा था, मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए हाल की ख़बर दूं, मैं दुआ़ए इब्राहीम हूं, बिशारते ईसा हूं, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब की ता'बीर हूं जो उन्हों ने मेरी विलादत के वक़्त देखा और उन के लिये एक नूरे सातेअ़ (फैलता हुवा नूर) ज़ाहिर हुवा जिस से मुल्के शाम के ऐवान व क़ुसूर उन के लिये रोशन हो गए। इस हदीस में दुआ़ए इब्राहीम से येही दुआ़ मुराद है जो इस आयत में मज़्कूर है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और आख़िर ज़माने में हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाया اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ (جمل وخازن) **235 :** इस किताब से क़ुरआने पाक और इस की ता'लीम से इस के हक़ाइक़ व मआ़नी का सिखाना मुराद है। **236 :** हिक्मत के मा'ना में बहुत अक़्वाल हैं बा'ज़ के नज़्दीक हिक्मत से फ़िक़्ह मुराद है, क़तादा का क़ौल है कि हिक्मत सुन्नत का नाम है, बा'ज़ कहते हैं कि हिक्मत इल्मे अह्काम को कहते हैं, ख़ुलासा येह कि हिक्मत इल्मे असरार है। **237 :** सुथरा करने के येह मा'ना हैं कि लौहे नुफ़ूस व अरवाह को कदूरात (आलूदगियों) से पाक कर के हिजाब उठा दें और आईनए इस्ति'दाद की जिला फ़रमा कर इन्हें इस क़ाबिल कर दें कि इन में हक़ाइक़ की जल्वा गरी हो सके। **238 शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद में से हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बा'द अपने दो भतीजों मुहाजिर व सलमा को इस्लाम की दा'वत दी और उन से फ़रमाया कि तुम को मा'लूम है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तौरैत में फ़रमाया है कि मैं औलादे इस्माईल से एक नबी पैदा करूंगा जिन का नाम अह्मद होगा जो उन पर ईमान लाएगा राहयाब (रास्ता पाने वाला) होगा, जो उन पर ईमान न लाएगा मल्ऊ़न है, येह सुन कर सलमा ईमान ले आए और मुहाजिर ने इस्लाम से इन्कार कर दिया, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ुद उस रसूले मुअ़ज़्ज़म के मब्ऊ़स होने की दुआ़ फ़रमाई तो जो उन के दीन

اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِذْ قَالَ

हम ने दुन्या में उसे चुन लिया[239] और बेशक वोह आख़िरत में हमारे ख़ास कुर्ब की क़ाबिलिय्यत वालों में है[240] जब कि उस से

لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ وَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ

उस के रब ने फ़रमाया गरदन रख अ़र्ज़ की मैं ने गरदन रखी उस के लिये जो रब है सारे जहान का और इसी दीन की वसिय्यत की इब्राहीम ने

بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

अपने बेटों को और या'क़ूब ने कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक **अल्लाह** ने येह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना

وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ

मगर मुसल्मान बल्कि तुम में के ख़ुद मौजूद थे[241] जब या'क़ूब को मौत आई जब कि

قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ

उस ने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बा'द किस की पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आप का और आप के

اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّ نَحْنُ لَهٗ

वालिदों इब्राहीम व इस्माईल[242] व इस्हाक़ का एक ख़ुदा और हम उस के

مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا

हुज़ूर गरदन रखे हैं येह[243] एक उम्मत है कि गुज़र चुकी[244] उन के लिये है जो उन्हों ने कमाया और तुम्हारे लिये है जो

كَسَبْتُمْ ۚ وَ لَا تُسْــٴَـلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا

तुम कमाओ और उन के कामों की तुम से पुरसिश न होगी और किताबी बोले[245] यहूदी

से फिरे वोह ह़ज़रते इब्राहीम के दीन से फिरा। इस में यहूदो नसारा व मुश्रिकीने अ़रब पर ता'रीज़ है जो अपने आप को इफ़्तिख़ारन (फ़ख़्र करते हुए) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ मन्सूब करते थे, जब उन के दीन से फिर गए तो शराफ़त कहां रही ? **239 :** रिसालत व ख़ुल्लत के साथ रसूल व ख़लील बनाया। **240 :** जिन के लिये बुलन्द दरजे हैं। तो जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام करामते दारैन के जामेअ़ हैं तो उन की त़रीक़त व मिल्लत से फिरने वाला ज़रूर नादान व अह़मक़ है। **241 : शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने कहा था कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसिय्यत की थी, **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इस बोहतान के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। (خازن) मा'ना येह हैं कि ऐ बनी इसराईल ! तुम्हारे पहले लोग ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के आख़िर वक़्त उन के पास मौजूद थे जिस वक़्त उन्हों ने अपने बेटों को बुला कर उन से इस्लाम व तौह़ीद का इक़रार लिया था और येह इक़रार लिया था जो आयत में मज़्कूर है। **242 :** ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के आबा में दाख़िल करना तो इस लिये है कि आप उन के चचा हैं और चचा ब मन्ज़िला बाप के होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। और आप का नाम ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام से पहले ज़िक्र फ़रमाना दो वज्ह से है **एक** तो येह कि आप ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام से चौदह साल बड़े हैं, **दूसरे** इस लिये कि आप सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के जद हैं **243 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम व या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام और इन की मुसल्मान औलाद। **244 :** ऐ यहूद ! तुम इन पर बोहतान मत उठाओ। **245 : शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत रुअसाए यहूद और नजरान

أَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ

या नसरानी हो जाओ राह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिकों

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى

से न थे[246] यूं कहो कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया

اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'क़ूब और इन की औलाद पर और जो अता किये गए मूसा

وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

व ईसा और जो अता किये गए बाक़ी अम्बिया अपने रब के पास से हम इन में किसी पर ईमान में फ़र्क़

مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ

नहीं करते और हम **अल्लाह** के हुज़ूर गरदन रखे हैं फिर अगर वोह भी यूंही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो

اهْتَدَوْا ۚ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ

वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह निरी ज़िद में हैं[247] तो ऐ महबूब अन्क़रीब **अल्लाह** उन की तरफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾ صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫

सुनता जानता[248] हम ने **अल्लाह** की रैनी (रंगाई) ली[249] और **अल्लाह** से बेहतर किस की रैनी (रंगाई)

के नसरानियों के जवाब में नाज़िल हुई, यहूदियों ने तो मुसल्मानों से येह कहा था कि हज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) तमाम अम्बिया में सब से अफ़्ज़ल हैं और तौरैत तमाम किताबों से अफ़्ज़ल है और यहूदी दीन तमाम अद्यान से आ'ला है, इस के साथ उन्हों ने हज़रत सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन्जील शरीफ़ व क़ुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र कर के मुसल्मानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ, इसी तरह नसरानियों ने भी अपने ही दीन को हक़ बता कर मुसल्मानों से नसरानी होने को कहा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **246 :** इस में यहूदो नसारा वग़ैरा पर ता'रीज़ है कि तुम मुश्रिक हो इस लिये मिल्लते इब्राहीम पर होने का दा'वा जो तुम करते हो वोह बातिल है। इस के बा'द मुसल्मानों को ख़िताब फ़रमाया जाता है कि वोह उन यहूदो नसारा से येह कह दें "قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا...الْاٰيَةَ" **247 :** और उन में तलबे हक़ का शाएबा भी नहीं। **248 :** येह **अल्लाह** की तरफ़ से ज़िम्मा है कि वोह अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़लबा अता फ़रमाएगा और इस में ग़ैब की ख़बर है कि आयिन्दा हासिल होने वाली फ़त्हो ज़फ़र का पहले से इज़्हार फ़रमाया, इस में नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है कि **अल्लाह** तआ़ला का येह ज़िम्मा पूरा हुवा और येह ग़ैबी ख़बर सादिक़ हो कर रही, कुफ़्फ़ार के हसद व इनाद और उन के मकाइद (मक्रो फ़रेब) से हुज़ूर को ज़रर न पहुंचा, हुज़ूर की फ़त्ह हुई, बनी क़ुरैज़ा क़त्ल हुए, बनी नज़ीर जला वतन किये गए, यहूदो नसारा पर जिज़्या मुक़र्रर हुवा। **249 :** या'नी जिस तरह रंग कपड़े के ज़ाहिरो बातिन में नुफ़ूज़ (सरायत) करता है इसी तरह दीने इलाही के ए'तिक़ादाते हक़्क़ा हमारे रगो पै में समा गए, हमारा ज़ाहिरो बातिन क़ल्बो क़ालिब उस के रंग में रंग गया, हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ाएदा न दे बल्कि येह नुफ़ूस को पाक करता है, ज़ाहिर में उस के आसार औज़ाअ व अफ़आल से नुमूदार होते हैं। नसारा जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उन के यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उस में उस शख़्स या बच्चे को ग़ोता देते और कहते कि अब येह सच्चा नसरानी हुवा, इस का इस आयत में रद फ़रमाया कि येह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं।

وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِی اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ

और हम उसी को पूजते हैं तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के बारे में हम से झगड़ते हो[250] हालां कि वोह हमारा भी मालिक और तुम्हारा भी[251]

وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ اَمْ

और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं[252] बल्कि

تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ

तुम यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'कूब और इन के बेटे

كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰی ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ

यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़ियादा है या अल्लाह को[253] और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾

जिस के पास अल्लाह की त़रफ़ की गवाही हो और वोह उसे छुपाए[254] और ख़ुदा तुम्हारे कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ

वोह एक गुरौह है कि गुज़र गया उन के लिये उन की कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उन के कामों की

عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

तुम से पुरसिश न होगी

250 : शाने नुज़ूल : यहूद ने मुसल्मानों से कहा हम पहली किताब वाले हैं, हमारा क़िब्ला पुराना है, हमारा दीन क़दीम है, अम्बिया हम में से हुए हैं, अगर सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم नबी होते तो हम में से ही होते, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **251 :** उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अ़रब में से हो या दूसरों में से। **252 :** किसी दूसरे को अल्लाह के साथ शरीक नहीं करते और इबादतो त़ाअ़त ख़ालिस उसी के लिये करते हैं तो हम मुस्तह़िक़्क़े इक्राम हैं। **253 :** इस का क़त़्ई जवाब येह है कि अल्लाह ही आ'लम (ज़ियादा इल्म वाला) है तो जब उस ने फ़रमाया : "مَاكَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا وَّلَا نَصْرَانِیًّا" (इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी) तो तुम्हारा येह क़ौल बात़िल हुवा। **254 :** येह यहूद का ह़ाल है, जिन्हों ने अल्लाह तआ़ला की शहादतें छुपाईं जो तौरैत शरीफ़ में मज़्कूर थीं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم उस के नबी हैं और उन की येह ना'त व सिफ़ात हैं और ह़ज़रते इब्राहीम मुसल्मान हैं और दीने मक़्बूल इस्लाम है न यहूदिय्यत व नसरानिय्यत।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا

अब कहेंगे[255] बे वुक़ूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसलमानों को उन के उस क़िब्ले से जिस पर

عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ

थे[256] तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब अल्लाह ही का है[257] जिसे चाहे सीधी राह

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَی

चलाता है और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर

النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ

गवाह हो[258] और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह[259] और ऐ महबूब तुम पहले जिस

255 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जब बजाए बैतुल मक़्दिस के का'बए मुअ़ज़्ज़मा को क़िब्ला बनाया गया इस पर उन्हों ने ता'न किये क्यूं कि येह उन्हें ना गवार था और वोह नस्ख़ के क़ाइल न थे। एक क़ौल पर येह आयत मुश्रिकीने मक्का के और एक क़ौल पर मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई और येह भी हो सकता है कि इस से कुफ़्फ़ार के येह सब गुरौह मुराद हों क्यूं कि ता'नो तश्नीअ़ में सब शरीक थे और कुफ़्फ़ार के ता'न करने से क़ब्ल क़ुरआने पाक में इस की ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है। ता'न करने वालों को बे वुक़ूफ़ इस लिये कहा गया कि वोह निहायत वाज़ेह बात पर मो'तरिज़ हुए बा वुजूदे कि अम्बियाए साबिक़ीन ने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के ख़साइस में आप का लक़ब ज़ुल क़िब्लतैन (दो क़िब्लों वाला) ज़िक्र फ़रमाया और तह़वीले क़िब्ला (क़िब्ले का तब्दील होना) उस की दलील है कि येही वोह नबी हैं जिन की पहले अम्बिया ख़बर देते आए ! ऐसे रोशन निशान से फ़ाएदा न उठाना और मो'तरिज़ होना कमाले ह़माक़त है। **256 :** क़िब्ला उस जिहत को कहते हैं जिस की त़रफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है, यहां क़िब्ला से बैतुल मक़्दिस मुराद है। **257 :** उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िब्ला बनाए किसी को क्या जाए ए'तिराज़ ! बन्दे का काम फ़रमां बरदारी है। **258 :** दुन्या व आख़िरत में। **मस्अला :** दुन्या में तो येह कि मुसल्मान की शहादत मोमिन काफ़िर सब के हक़ में शरअ़न मो'तबर है और काफ़िर की शहादत मुसल्मान पर मो'तबर नहीं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इस उम्मत का इज्माअ़ हुज्जते लाज़िमुल क़बूल है। **मस्अला :** अम्वात के हक़ में भी इस उम्मत की शहादत मो'तबर है रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते इस के मुताबिक़ अ़मल करते हैं। सिहा़ह की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम ﷺ के सामने एक जनाज़ा गुज़रा सह़ाबा ने उस की ता'रीफ़ की हु़ज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई, फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा सह़ाबा ने उस की बुराई की हु़ज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई। ह़ज़रते उ़मर ने दरयाफ़्त किया कि हु़ज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई ? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुम ने ता'रीफ़ की उस के लिये जन्नत वाजिब हुई, दूसरे की तुम ने बुराई बयान की उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हुई, तुम ज़मीन में अल्लाह के शुहदा (गवाह) हो, फिर हु़ज़ूर ने येह आयत तिलावत फ़रमाई। **मस्अला :** येह तमाम शहादतें सुलह़ाए उम्मत और अहले सिद्क़ के साथ ख़ास हैं और इन के मो'तबर होने के लिये ज़बान की निगह दाश्त शर्त़ है। जो लोग ज़बान की एह़तियात़ नहीं करते और बे जा ख़िलाफ़े शरअ़ कलिमात उन की ज़बान से निकलते हैं और नाह़क़ ला'नत करते हैं सिहा़ह की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत न वोह शाफ़ेअ़ होंगे न शाहिद। इस उम्मत की एक शहादत येह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन जम्अ़ होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा : क्या तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से डराने और अह़काम पहुंचाने वाले नहीं आए ? तो वोह इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया। ह़ज़राते अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेंगे कि येह झूटे हैं हम ने इन्हें तब्लीग़ की, इस पर उन से اِقَامَةً لِّلْحُجَّةِ दलील त़लब की जाएगी ! वोह अ़र्ज़ करेंगे कि उम्मते मुह़म्मदिय्यह हमारी शाहिद है, येह उम्मत पैग़म्बरों की शहादत देगी कि इन ह़ज़रात ने तब्लीग़ फ़रमाई, इस पर गुज़श्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे इन्हें क्या मा'लूम येह हम से बा'द हुए थे, दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा : तुम कैसे जानते हो ? येह अ़र्ज़ करेंगे या रब ! तूने हमारी त़रफ़ अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ को भेजा, क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया, उन के ज़रीए से हम क़त़ई व यक़ीनी त़ौर पर जानते हैं कि ह़ज़राते अम्बिया ने फ़र्ज़े तब्लीग़ अ़ला वज्हिल कमाल अदा किया। फिर सय्यिदे अम्बिया ﷺ से आप की उम्मत की निस्बत दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा, हु़ज़ूर उन की तस्दीक़ फ़रमाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अश्याए मा'रूफ़ा में शहादत तसामोअ़ (सुनने) के साथ भी मो'तबर है या'नी जिन चीज़ों का इल्मे यक़ीनी सुनने से ह़ासिल हो उस पर भी शहादत दी जा सकती है। **259 :** उम्मत को तो रसूलुल्लाह ﷺ की इत्तिलाअ़ के ज़रीए से अह़वाले उमम व तब्लीग़े अम्बिया का इल्मे क़त़ई व यक़ीनी ह़ासिल है और रसूले करीम ﷺ ब करमे इलाही नूरे नुबुव्वत से हर शख़्स के ह़ाल और उस

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ

क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है[260]

وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

और बेशक येह भारी थी मगर उन पर जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की और **अल्लाह** की शान नहीं

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرٰى

कि तुम्हारा ईमान अकारत (ज़ाएअ) करे[261] बेशक **अल्लाह** आदमियों पर बहुत मेह्‌रबान मेह्‌र (रह्‌म) वाला है हम देख रहे हैं

تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ

बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना[262] तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ

मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ करो[263]

وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ

और वोह जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है[264] और **अल्लाह** उन के

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ

कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले कर

की ह़क़ीक़ते ईमान और आ'माले नेको बद और इख़्लासो निफ़ाक़ सब पर मुत्तलअ़ हैं। **मस्अला :** इसी लिये हुज़ूर की शहादत दुन्या में ब हुक्मे शरअ़ उम्मत के ह़क़ में मक़्बूल है। येही वज्ह है कि हुज़ूर ने अपने ज़माने के ह़ाज़िरीन के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ फ़रमाया मसलन सह़ाबा व अज़्वाज व अहले बैत के फ़ज़ाइलो मनाक़िब या ग़ाइबों और बा'द वालों के लिये मिस्ल ह़ज़रते उवैस व इमाम महदी वग़ैरा के, उस पर ए'तिक़ाद वाजिब है। **मस्अला :** हर नबी को उन की उम्मत के आ'माल पर मुत्तलअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़ियामत शहादत दे सकें चूंकि हमारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शहादत आ़म होगी इस लिये हुज़ूर तमाम उम्मतों के अह़वाल पर मुत्तलअ़ हैं। **फ़ाएदा :** यहां शहीद ब मा'ना मुत्तलअ़ भी हो सकता है क्यूं कि शहादत का लफ़्ज़ इल्म व इत्तिलाअ़ के मा'ना में भी आया है قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْد (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : और **अल्लाह** हर चीज़ पर गवाह है)। **260 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पहले का'बे की त़रफ़ (मुंह कर के) नमाज़ पढ़ते थे, बा'दे हिजरत बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुवा, सतरह महीने के क़रीब इस त़रफ़ नमाज़ पढ़ी, फिर का'बे शरीफ़ की त़रफ़ मुंह करने का हुक्म हुवा। इस तह़वील (क़िब्ला तब्दील करने) की एक येह ह़िक्मत इर्शाद हुई कि इस से मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाएगा, चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **261 शाने नुज़ूल :** बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माने में जिन सह़ाबा ने वफ़ात पाई उन के रिश्तेदारों ने तह़वीले क़िब्ला के बा'द उन की नमाज़ों का हुक्म दरयाफ़्त किया ! इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इत़्मीनान दिलाया गया कि उन की नमाज़ें ज़ाएअ़ नहीं, उन पर सवाब मिलेगा। **फ़ाएदा :** नमाज़ को ईमान से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि इस की अदा और ब जमाअ़त पढ़ना दलीले ईमान है। **262 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को का'बे का क़िब्ला बनाया जाना पसन्दे ख़ात़िर (मह़बूब) था और हुज़ूर इस उम्मीद में आस्मान की त़रफ़ नज़र फ़रमाते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई, आप नमाज़ ही में का'बे की त़रफ़ फिर गए मुसल्मानों ने भी आप के साथ इसी त़रफ़ रुख़ किया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला को आप की रिज़ा मन्ज़ूर है और आप ही की ख़ात़िर का'बे को क़िब्ला बनाया गया। **263 :** इस से साबित हुवा कि नमाज़ में रू ब क़िब्ला होना फ़र्ज़ है। **264 :** क्यूं कि उन की किताबों में हुज़ूर के औसाफ़ के सिल्सिले में येह भी मज़्कूर था कि आप बैतुल मक़्दिस से का'बे की त़रफ़ फिरेंगे और उन

اٰیَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَ مَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ

आओ वोह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करेंगे[265] और न तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो[266] और वोह आपस में भी एक दूसरे

قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَ لَىٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं[267] और [ऐ सुनने वाले कसे बाशद] अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चला बा'द इस के कि तुझे इल्म मिल चुका

اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۘ(۱۴۵) اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا

वक़्फ़ लाज़िम

तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार (ज़ालिम) होगा जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई[268] वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे

یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنْهُمْ لَیَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ هُمْ

आदमी अपने बेटों को पहचानता है[269] और बेशक उन में एक गुरौह जान बूझ कर हक़ छुपाते

یَعْلَمُوْنَ (۱۴۶) اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِیْنَ ۠(۱۴۷) وَ لِكُلٍّ

الربع ۔ وقف منزل

हैं[270] (ऐ सुनने वाले) येह हक़ है तेरे रब की तरफ़ से (या हक़ वोही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना और हर एक के लिये तवज्जोह की

وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّیْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَیْرٰتِ ؕ۟ اَیْنَ مَا تَكُوْنُوْا یَاْتِ بِكُمُ

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

एक सम्त है कि वोह उसी की तरफ़ मुंह करता है तो येह चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो **अल्लाह** तुम सब को

اللّٰهُ جَمِیْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (۱۴۸) وَ مِنْ حَیْثُ خَرَجْتَ

इकठ्ठा ले आएगा[271] बेशक **अल्लाह** जो चाहे करे और जहां से आओ[272]

अम्बिया ने बिशारतों के साथ हुज़ूर का येह निशान बताया था कि आप बैतुल मक़्दिस और का'बा दोनों क़िब्लों की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। **265 :** क्यूं कि निशानी उस को नाफ़ेअ़ हो सकती है जो किसी शुबे की वज्ह से मुन्किर हो, येह तो ह़सद व इनाद से इन्कार करते हैं इन्हें इस से क्या नफ़्अ़ होगा। **266 :** मा'ना येह हैं कि येह क़िब्ला मन्सूख़ न होगा तो अब अहले किताब को येह तमअ़ न रखना चाहिये कि आप इन में से किसी के क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करेंगे। **267 :** हर एक का क़िब्ला जुदा है। यहूद तो सख़्रए बैतुल मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस में रखी एक चटान) को अपना क़िब्ला क़रार देते हैं और नसारा बैतुल मक़्दिस के उस मकाने शर्क़ी को जहां नफ़्ख़े रूहे ह़ज़रत मसीह (ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام की रूह मुबारक फूंकना) वाक़ेअ़ हुवा। (ع) **268 :** या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा। **269 :** मत़लब येह है कि कुतुबे साबिक़ा में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के औसाफ़ ऐसे वाज़ेह़ और साफ़ बयान किये गए हैं जिन से उ़लमाए अहले किताब को हुज़ूर के ख़ातमुल अम्बिया होने में कुछ शक बाक़ी नहीं रह सकता और वोह हुज़ूर के इस मन्सबे आ़ली को अतम (पूरे) यक़ीन के साथ जानते हैं। अह़बारे यहूद (यहूदियों के उ़लमा) में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उन से दरयाफ़्त किया कि आयए "یَعْرِفُوْنَهٗ" (या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है) में जो मा'रिफ़त बयान की गई है उस की क्या शान है? उन्हों ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर! मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को देखा तो बे इश्तिबाह (बिग़ैर किसी शको शुबा के) पहचान लिया और मेरा हुज़ूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से ब दरजहा ज़ियादा अतम व अक्मल है! ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया : येह कैसे? उन्हों ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि हुज़ूर **अल्लाह** की तरफ़ से उस के भेजे रसूल हैं, इन के औसाफ़ **अल्लाह** तआ़ला ने हमारी किताब तौरैत में बयान फ़रमाए हैं, बेटे की तरफ़ से ऐसा यक़ीन किस तरह हो! औरतों का ह़ाल ऐसा क़त्ई किस तरह मा'लूम हो सकता है! ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उन का सर चूम लिया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ग़ैर मह़ल्ले शह्वत में दीनी मह़ब्बत से पेशानी चूमना जाइज़ है। **270 :** या'नी तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूर की ना'त व सिफ़त है उ़लमाए अहले किताब का एक गुरौह उस को ह़सदन व इनादन दीदा व दानिस्ता छुपाता है। **मस्अला :** हक़ का छुपाना मा'सियत व गुनाह है। **271 :** रोज़े क़ियामत सब को जम्अ़ फ़रमाएगा और आ'माल की जज़ा देगा। **272 :** या'नी

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَ مَا

अपना मुंह मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ करो और वोह ज़रूर तुम्हारे रब की त़रफ़ से ह़क़ है और

اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۹﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं और ऐ महबूब तुम जहां से आओ अपना मुंह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ

मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ करो और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ करो

لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا

कि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे[273] मगर जो उन में ना इन्साफ़ी करें[274] तो उन से न

تَخْشَوْهُمْ وَ اخْشَوْنِيْ ۗ وَ لِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ ۛۙ

डरो और मुझ से डरो और येह इस लिये है कि मैं अपनी ने'मत तुम पर पूरी करूं और किसी त़रह़ तुम हिदायत पाओ

كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ

जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से[275] कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता[276]

وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ ؕ

और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है[277] और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था

فَاذْكُرُوْنِيْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِيْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा[278] और मेरा ह़क़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो ऐ ईमान

ख़्वाह किसी शहर से सफ़र के लिये निकलो नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे ह़राम (का'बे) की त़रफ़ करो। **273 :** और कुफ़्फ़ार को येह ता'न करने का मौक़अ़ न मिले कि इन्हों ने क़ुरैश की मुख़ालफ़त में ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام का क़िब्ला भी छोड़ दिया बा वुजूदे कि नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उन की औलाद में हैं और उन की अ़ज़्मतो बुज़ुर्गी मानते भी हैं। **274 :** और बराहे इ़नाद बे जा ए'तिराज़ करें। **275 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **276 :** नजासते शिर्क व जुनूब से। **277 :** ह़िक्मत से मुफ़स्सिरीन ने फ़िक़्ह मुराद ली है। **278 :** ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है : (1) लिसानी (2) क़ल्बी (3) बिल जवारेह़। **ज़िक्रे लिसानी :** तस्बीह़, तक़्दीस, सना वग़ैरा बयान करना है, ख़ुत़्बा, तौबा, इस्तिग़्फ़ार, दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं। **ज़िक्रे क़ल्बी :** अल्लाह तआ़ला की ने'मतों का याद करना, उस की अ़ज़्मतो किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना, उ़लमा का इस्तिम्बात़, मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल है। **ज़िक्र बिल जवारेह़ :** येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना, येह ज़िक्र बिल जवारेह़ में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है तस्बीह़ व तक्बीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है, और ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ व इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी, और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारेह़ है। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : तुम त़ाअ़त बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा। सह़ीह़ैन की ह़दीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूं और अगर वोह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उस को उस से बेहतर जमाअ़त में याद करता हूं। क़ुरआनो ह़दीस में ज़िक्र के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हैं और येह हर त़रह़ के ज़िक्र को शामिल हैं, ज़िक्र बिल जहर (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने) को भी और

اٰمَنُوا اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَا

वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो[279] बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है और जो

تَقُوْلُوْا لِمَنْ یُّقْتَلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا

ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो[280] बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें

تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ

ख़बर नहीं[281] और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूक से[282] और कुछ

الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِیْنَ اِذَاۤ

मालों और जानों और फलों की कमी से[283] और ख़ुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर

اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓىٕكَ

कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना[284] येह लोग हैं

बिल इख़्फ़ा को भी। **279 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم को जब कोई सख़्त मुहिम पेश आती तो नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते, और नमाज़ से मदद चाहने में नमाज़े इस्तिस्क़ा व सलाते ह़ाजत दाख़िल है। **280 शाने नुज़ूल :** येह आयत शुहदाए बद्र के ह़क़ में नाज़िल हुई। लोग शुहदा के ह़क़ में कहते थे कि फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया वोह दुन्यवी आसाइश से मह़रूम हो गया ! उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **281 :** मौत के बा'द ही **अल्लाह** तआ़ला शुहदा को ह़यात अ़त़ा फ़रमाता है, उन की अरवाह़ पर रिज़्क़ पेश किये जाते हैं, उन्हें राह़तें दी जाती हैं, उन के अ़मल जारी रहते हैं, अज्रो सवाब बढ़ता रहता है, ह़दीस शरीफ़ में है कि शुहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब (रूप) में जन्नत की सैर करती और वहां के मेवे और ने'मतें खाती हैं। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दों को क़ब्र में जन्नती ने'मतें मिलती हैं। शहीद वोह मुसल्मान मुकल्लफ़ त़ाहिर है जो तेज़ हथियार से ज़ुल्मन मारा गया हो और उस के क़त्ल से माल भी वाजिब न हुवा हो, या मा'रिकए जंग में मुर्दा या ज़ख़्मी पाया गया और उस ने कुछ आसाइश न पाई। उस पर दुन्या में येह अह़काम हैं कि न उस को ग़ुस्ल दिया जाए न कफ़न, अपने कपड़ों में ही रखा जाए, इसी त़रह़ उस पर नमाज़ पढ़ी जाए, इसी ह़ालत में दफ़्न किया जाए। आख़िरत में शहीद का बड़ा रुत्बा है। बा'ज़ शुहदा वोह हैं कि उन पर दुन्या के येह अह़काम तो जारी नहीं होते लेकिन आख़िरत में उन के लिये शहादत का दरजा है जैसे डूब कर या जल कर, या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, त़लबे इल्म, सफ़रे ह़ज, ग़रज़ राहे ख़ुदा में मरने वाला, और निफ़ास में मरने वाली औ़रत, और पेट के मरज़ और त़ाऊन और ज़ातुल जम्ब और सिल (पस्ली के दर्द और फेफड़ों की बीमारी व पुराने बुख़ार) में, और जुमुआ़ के रोज़ मरने वाले वग़ैरा। **282 :** आज़्माइश से फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के ह़ाल का ज़ाहिर करना मुराद है। **283 :** इमाम शाफ़ेई علیہ الرحمہ ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से **अल्लाह** का डर, भूक से रमज़ान के रोज़े, मालों की कमी से ज़कात व सदक़ात देना, जानों की कमी से अमराज़ के ज़रीए मौतें होना, फलों की कमी से औलाद की मौत मुराद है इस लिये कि औलाद दिल का फल होती है ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है **अल्लाह** तआ़ला मलाएका से फ़रमाता है तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह़ क़ब्ज़ की ? वोह अ़र्ज़ करते हैं कि हां या रब ! फिर फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फल ले लिया ? अ़र्ज़ करते हैं हां या रब ! फ़रमाता है : इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा ? अ़र्ज़ करते हैं उस ने तेरी ह़म्द की और "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा ! फ़रमाता है : उस के लिये जन्नत में मकान बनाओ और उस का नाम "बैतुल ह़म्द" रखो। **ह़िक्मत :** मुसीबत के पेश आने से क़ब्ल ख़बर देने में कई ह़िक्मतें हैं एक तो येह कि इस से आदमी को वक़्ते मुसीबत सब्र आसान हो जाता है। एक येह कि जब काफ़िर देखें कि मुसल्मान बला व मुसीबत के वक़्त साबिरो शाकिर और इस्तिक़्लाल के साथ अपने दीन पर क़ाइम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मा'लूम और इस की त़रफ़ रग़बत हो। एक येह कि आने वाली मुसीबत की क़ब्ले वुक़ूअ़ इत्तिलाअ़ ग़ैबी ख़बर और नबी صلی اللہ علیہ وسلم का मो'जिज़ा है। एक ह़िक्मत येह कि मुनाफ़िक़ीन के क़दम इब्तिला (मुसीबत में मुब्तला होने) की ख़बर से उखड़ जाएं और मोमिन व मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ हो जाए। **284 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि वक़्त मुसीबत के "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ"

عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ اِنَّ

जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं बेशक

الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا

सफ़ा और मर्वह[285] **अल्लाह** के निशानों से हैं[286] तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ

جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ

गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे[287] और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला

عَلِيْمٌ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ

ख़बरदार है बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं[288]

بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ

बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर **अल्लाह** की ला'नत है और ला'नत करने वालों

पढ़ना रह़मते इलाही का सबब होता है, येह भी ह़दीस में है कि मोमिन की तक्लीफ़ को **अल्लाह** तआ़ला कफ़्फ़ारए गुनाह बनाता है। **285 :** सफ़ा व मर्वह मक्कए मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के मुक़ाबिल जानिबे शर्क़ वाक़ेअ़ हैं, मर्वह शिमाल की त़रफ़ माइल, और सफ़ा जुनूब की त़रफ़ जबले अबी क़ुबैस के दामन में है ह़ज़रते हाजिरा और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इन दोनों पहाड़ों के क़रीब इस मक़ाम पर जहां चाहे ज़मज़म है ब हुक्मे इलाही सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई, उस वक़्त येह मक़ाम संगलाख़ बयाबान था, न यहां सब्ज़ा था न पानी न ख़ुर्दो नोश का कोई सामान, रिज़ाए इलाही के लिये इन मक़्बूल बन्दों ने सब्र किया। ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ख़ुर्द साल (कम उ़म्र) थे तिश्नगी से जब उन की जां बलबी की ह़ालत हुई तो ह़ज़रते हाजिरा बेताब हो कर कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गईं वहां भी पानी न पाया तो उतर कर नशेब के मैदान में दौड़ती हुई मर्वह तक पहुंचीं इस त़रह़ सात मरतबा गर्दिश हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने "اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ" का जल्वा इस त़रह़ ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा ''ज़मज़म'' नुमूदार किया और इन के सब्रो इख़्लास की बरकत से इन के इत्तिबाअ़ में इन दोनों पहाड़ों के दरमियान दौड़ने वालों को मक़्बूले बारगाह किया और इन दोनों को मह़ल्ले इजाबते दुआ़ बनाया। **286 :** "شَعَآئِرِ اللّٰه" से दीन के आ'लाम या'नी निशानियां मुराद हैं ख़्वाह वोह मकानात हों जैसे का'बा, अ़रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, जिमारे सलासा, सफ़ा, मर्वह, मिना, मसाजिद। या अज़्मिनह जैसे रमज़ान, अश्हुरे ह़राम, ईदे फ़ित्र व अज़्ह़ा, जुमुआ़, अय्यामे तशरीक़। या दूसरे अ़लामात जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े बा जमाअ़त, नमाज़े जुमुआ़, नमाज़े ईदैन, ख़तना येह सब शआइरे दीन हैं। **287 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में सफ़ा व मर्वह पर दो बुत रखे थे, सफ़ा पर जो बुत था उस का नाम असाफ़ और जो मर्वह पर था उस का नाम नाइला था, कुफ़्फ़ार जब सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करते तो इन बुतों पर ता'ज़ीमन हाथ फेरते, अ़हदे इस्लाम में बुत तो तोड़ दिये गए लेकिन चूंकि कुफ़्फ़ार यहां मुश्रिकाना फ़े'ल करते थे इस लिये मुसल्मानों को सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करना गिरां हुवा कि इस में कुफ़्फ़ार के मुश्रिकाना फ़े'ल के साथ कुछ मुशाबहत है। इस आयत में उन का इत़्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूंकि तुम्हारी निय्यत ख़ालिस इबादते इलाही की है तुम्हें अन्देशए मुशाबहत नहीं ! और जिस त़रह़ का'बे के अन्दर ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार ने बुत रखे थे, अब अ़हदे इस्लाम में बुत उठा दिये गए और का'बा शरीफ़ का त़वाफ़ दुरुस्त रहा और वोह शआइरे दीन में से रहा इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार की बुत परस्ती से सफ़ा व मर्वह के शआइरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। **मस्अला :** सई (या'नी सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ना) वाजिब है ह़दीस से साबित है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस पर मुदावमत फ़रमाई है, इस के तर्क से दम देना या'नी क़ुरबानी वाजिब होती है। **मस्अला :** सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई ह़ज व उ़मरह दोनों में लाज़िम है। फ़र्क़ येह है कि ह़ज के अन्दर अ़रफ़ात में जाना और वहां से त़वाफ़े का'बा के लिये आना शर्त़ है, और उ़मरह के लिये अ़रफ़ात में जाना शर्त़ नहीं। **मस्अला :** उ़मरह करने वाला अगर बैरूने मक्का से आए उस को बराहे रास्त मक्कए मुकर्रमा में आ कर त़वाफ़ करना चाहिये और अगर मक्के का साकिन (रहने वाला) हो तो उस को चाहिये कि ह़रम से बाहर जाए वहां से त़वाफ़े का'बा का एह़राम बांध कर आए। ह़ज व उ़मरह में एक फ़र्क़ येह भी है कि ह़ज साल में एक ही मरतबा हो सकता है क्यूं कि अ़रफ़ात में अ़रफ़ा के दिन या'नी नवीं ज़िल ह़िज्जा को जाना जो ह़ज में शर्त़ है साल में एक ही मरतबा मुम्किन है और उ़मरह हर दिन हो सकता है इस के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं। **288 :** येह आयत उन उ़लमाए यहूद की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त शरीफ़ और आयते रज्म और तौरैत के दूसरे अह़काम को छुपाया

اللّٰعِنُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ بَیَّنُوْا فَاُولٰٓىٕكَ اَتُوْبُ

की ला'नत[289] मगर वोह जो तौबा करें और संवारें (इस्लाह करें) और ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल

عَلَیْهِمْ وَ اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۶۰﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَ هُمْ

फ़रमाऊंगा और मैं ही हूं बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर

كُفَّارٌ اُولٰٓىٕكَ عَلَیْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۶۱﴾

ही मरे उन पर ला'नत है **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और आदमियों सब की[290]

خٰلِدِیْنَ فِیْهَا لَا یُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ یُنْظَرُوْنَ ﴿۱۶۲﴾

हमेशा रहेंगे उस में न उन पर से अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۶۳﴾ اِنَّ فِیْ خَلْقِ

और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[291] उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रहमत वाला मेहरबान बेशक

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِیْ تَجْرِیْ

आस्मानों[292] और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि

करते थे। **मस्अला :** उ़लूमे दीन का इज़्हार फ़र्ज़ है। **289 :** ला'नत करने वालों से मलाएका व मोमिनीन मुराद हैं, एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** के तमाम बन्दे मुराद हैं। **290 :** मोमिन तो काफ़िरों पर ला'नत करेंगे ही, काफ़िर भी रोज़े क़ियामत बाहम एक दूसरे पर ला'नत करेंगे। **मस्अला :** इस आयत में उन पर ला'नत फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे। इस से मा'लूम हुवा कि जिस की मौत कुफ़्र पर मा'लूम हो उस पर ला'नत करनी जाइज़ है। **मस्अला :** गुनहगार मुसल्मान पर बित्ता'यीन (उस का नाम ले कर) ला'नत करना जाइज़ नहीं लेकिन अ़लल इत्लाक़ जाइज़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़्वार वग़ैरा पर ला'नत आई है। **291 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : आप अपने रब की शान व सिफ़त बयान फ़रमाइये ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बता दिया कि मा'बूद सिर्फ़ एक है, न वोह मुतजज़्ज़ी होता है न मुन्क़सिम, न उस के लिये मिस्ल न नज़ीर, उलूहिय्यत व रबूबिय्यत में कोई उस का शरीक नहीं, वोह यक्ता है अपने अफ़्आ़ल में, मस्नूआ़त को तन्हा उसी ने बनाया, वोह अपनी ज़ात में अकेला है कोई उस का क़सीम (शरीक) नहीं, अपने सिफ़ात में यगाना है कोई उस का शबीह नहीं। अबू दावूद व तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला का इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है एक येही आयत "وَاِلٰـهُكُمْ" दूसरी "الٓمّٓ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ"...الآيه **292 :** का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द मुश्रिकीन के तीन सो साठ बुत थे जिन्हें वोह मा'बूद ए'तिक़ाद करते थे, उन्हें येह सुन कर बड़ी ह़ैरत हुई कि मा'बूद सिर्फ़ एक ही है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! इस लिये उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ऐसी आयत त़लब की जिस से वह़दानिय्यत पर इस्तिद्लाल सह़ीह़ हो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें येह बताया गया कि आस्मान और उस की बुलन्दी और उस का बिग़ैर किसी सुतून और अ़लाक़े के क़ाइम रहना और जो कुछ उस में नज़र आता है आफ़्ताब महताब सितारे वग़ैरा येह तमाम, और ज़मीन और इस की दराज़ी और पानी पर मफ़्रूश (बिछा हुवा) होना, और पहाड़ दरिया चश्मे, मआ़दिन जवाहिर दरख़्त सब्ज़ा फल, और शबो रोज़ का आना जाना घटना बढ़ना, कश्तियां और उन का मुसख़्ख़र होना बा वुजूद बहुत से वज़्न और बोझ के रूए आब (पानी की सत़ह़) पर रहना और आदमियों का उन में सुवार हो कर दरिया के अ़जाइब देखना और तिजारतों में उन से बार बरदारी (वज़्न उठाने) का काम लेना, और बारिश और उस से ख़ुश्क व मुर्दा हो जाने के बा'द ज़मीन का सर सब्ज़ो शादाब करना और ताज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाना, और ज़मीन को अन्वाओ़ अक़्साम के जानवरों से भर देना जिन में बे शुमार अ़जाइबे ह़िक्मत वदीअ़त (रखे हुए) हैं, इसी त़रह़ हवाओं की गर्दिश और इन के ख़वास और हवा के अ़जाइबात, और अब्र (बादल) और उस का इतने कसीर पानी के साथ आस्मान व ज़मीन के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहना, येह आठ अन्वाअ़ हैं जो ह़ज़रते क़ादिर मुख़्तार के इ़ल्मो ह़िक्मत और उस की वह़दानिय्यत पर बुरहाने क़वी (मज़बूत़ दलाइल) हैं और इन की दलालत वह़दानिय्यत पर बे शुमार वुजूह से है। इज्माली बयान येह है कि येह सब उमूरे मुम्किना हैं और इन का वुजूद बहुत से मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से मुम्किन था मगर वोह मख़्सूस शान से वुजूद में

فِی الْبَحْرِ بِمَا یَنْفَعُ النَّاسَ وَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ

दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और वोह जो अल्लाह ने आस्मान से पानी उतार कर

فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ بَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ

मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और

تَصْرِیْفِ الرِّیٰحِ وَ السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَیْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ

हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है

لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

इन सब में अक़्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और मा'बूद बना

اَنْدَادًا یُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَ لَوْ

लेते हैं कि उन्हें अल्लाह की तरह महबूब रखते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं और कैसी हो अगर

یَرَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اِذْ یَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِیْعًا ۙ وَّ اَنَّ

देखें ज़ालिम वोह वक़्त जब कि अ़ज़ाब उन की आंखों के सामने आएगा इस लिये कि सारा ज़ोर ख़ुदा को है और इस लिये कि

اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِیْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْا

अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है जब बेज़ार होंगे पेशवा अपने पैरवों से[293]

आए, येह दलालत करता है कि ज़रूर इन के लिये मूजिद है क़ादिर व ह़कीम जो ब मुक़्तज़ाए हिक्मतो मशिय्यत जैसा चाहता है बनाता है, किसी को दख़्ल व ए'तिराज़ की मजाल नहीं। वोह मा'बूद बिल यक़ीन वाहिदो यक्ता है क्यूं कि अगर उस के साथ कोई दूसरा मा'बूद भी फ़र्ज़ किया जाए तो उस को भी इन मक्दूरात पर क़ादिर मानना पड़ेगा ! अब दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या तो ईजाद व तासीर में दोनों मुत्तफ़िक़ुल इरादा होंगे, या न होंगे अगर हों तो एक ही शै के वुजूद में दो मुअस्सिरों का तासीर करना लाज़िम आएगा और येह मुह़ाल है क्यूं कि येह मुस्तल्ज़िम है मा'लूल के दोनों से मुस्तग़्नी होने को और दोनों की त़रफ़ मुफ़्तक़िर होने को। क्यूं कि इ़ल्लत जब मुस्तक़िल्ला हो तो मा'लूल सिर्फ़ उसी की त़रफ़ मोह़ताज होता है दूसरे की त़रफ़ मोह़ताज नहीं होता, और दोनों को इ़ल्लते मुस्तक़िल्ला फ़र्ज़ किया गया है तो लाज़िम आएगा कि मा'लूल दोनों में से हर एक की त़रफ़ मोह़ताज हो और हर एक से ग़नी हो, तो नक़ीज़ैन मुज्तमअ़ हो गईं और येह मुह़ाल है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि तासीर उन में से एक की है तो तरजीह़ बिला मुरज्जिह़ लाज़िम आएगी और दूसरे का इ़ज्ज़ लाज़िम आएगा जो इलाह होने के मुनाफ़ी है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि दोनों के इरादे मुख़्तलिफ़ होते हैं तो तमानोअ़ व तत़ारुद लाज़िम आएगा कि एक किसी शै के वुजूद का इरादा करे और दूसरा उसी ह़ाल में उस के अ़दम का, तो वोह शै एक ही ह़ाल में मौजूद व मा'दूम दोनों होगी या दोनों न होगी, येह दोनों तक्दीरें बात़िल हैं तो ज़रूर है कि या मौजूद होगी या मा'दूम एक ही बात होगी, अगर मौजूद हुई तो अ़दम का चाहने वाला आ़जिज़ हुवा इलाह न रहा और अगर मा'दूम हुई तो वुजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा इलाह न रहा ! साबित हो गया कि इलाह एक ही हो सकता है और येह तमाम अन्वाअ़ बे निहायत वुजूह से उस की तौह़ीद पर दलालत करते हैं **293 :** येह रोज़े क़ियामत का बयान है जब मुश्रिकीन और उन के पेशवा जिन्हों ने उन्हें कुफ़्र की तरग़ीब दी थी एक जगह जम्अ़ होंगे और अ़ज़ाब नाज़िल होता हुवा देख कर एक दूसरे से बेज़ार हो जाएंगे।

وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا

और देखेंगे अ़ज़ाब और कट जाएंगी उन की सब डोरें[294] और कहेंगे पैरव

لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ

काश हमें लौट कर जाना होता (दुन्या में) तो हम उन से तोड़ देते (जुदा हो जाते) जैसे उन्हों ने हम से तोड़ दी यूंही अल्लाह उन्हें दिखाएगा

اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰۤاَيُّهَا

उन के काम उन पर ह़स्रतें हो कर[295] और वोह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं ऐ

النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ٘ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में[296] ह़लाल पाकीज़ा है और शैत़ान के क़दम पर क़दम न रखो

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَ اَنْ

बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है वोह तो तुम्हें येही हुक्म देगा बदी और बे ह़याई का और येह कि

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ

अल्लाह पर वोह बात जोड़ो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं और जब उन से कहा जाए अल्लाह के उतारे पर

اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا

चलो[297] तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगर्चे उन के बाप दादा न

يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ

कुछ अ़क़्ल रखते हों न हिदायत[298] और काफ़िरों की कहावत उस की सी है जो

294 : या'नी वोह तमाम तअ़ल्लुक़ात जो दुन्या में उन के माबैन थे ख़्वाह वोह दोस्तियां हों या रिश्तेदारियां, या बाहमी मुवाफ़क़त के अ़हद। **295 :** या'नी अल्लाह तआ़ला उन के बुरे आ'माल उन के सामने करेगा तो उन्हें निहायत ह़सरत होगी कि उन्हों ने येह काम क्यूं किये थे, एक क़ौल येह है कि जन्नत के मक़ामात दिखा कर उन से कहा जाएगा कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला की फ़रमां बरदारी करते तो येह तुम्हारे लिये थे, फिर वोह मसाकिन व मनाज़िल मोमिनीन को दिये जाएंगे इस पर उन्हें ह़स्रतो नदामत होगी। **296 :** येह आयत उन अश्ख़ास के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने बिजार (ज़मानए जाहिलिय्यत के नामज़द मख़्सूस जानवरों) वग़ैरा को ह़राम क़रार दिया था। इस से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआ़ला की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम क़रार देना उस की रज़्ज़ाक़ियत से बग़ावत है, मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : जो माल मैं अपने बन्दों को अ़त़ा फ़रमाता हूं वोह उन के लिये ह़लाल है, और इसी में है कि मैं ने अपने बन्दों को बात़िल से बे तअ़ल्लुक़ पैदा किया, फिर उन के पास शयात़ीन आए और उन्हों ने दीन से बहकाया और जो मैं ने उन के लिये ह़लाल किया था उस को ह़राम ठहराया। एक और ह़दीस में है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया : मैं ने येह आयत सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के सामने तिलावत की तो ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! दुआ़ फ़रमाइये कि अल्लाह तआ़ला मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात कर दे ! हु़ज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'द अपनी ख़ूराक पाक करो मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे ! उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم की जान है आदमी अपने पेट में ह़राम का लुक़्मा डालता है तो चालीस रोज़ तक क़बूलिय्यत से मह़रूमी रहती है। (تفسیر ابن کثیر) **297 :** तौह़ीद व क़ुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को ह़लाल जानो जिन्हें अल्लाह ने ह़लाल किया। **298 :** जब बाप दादा दीन के उमूर को

يَنۡعِقُ بِمَا لَا يَسۡمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡىٌ فَهُمۡ لَا

पुकारे ऐसे को कि ख़ाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने[299] बहरे गूंगे अन्धे तो उन्हें

يَعۡقِلُوۡنَ ﴿١٧١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ وَ

समझ नहीं[300] ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और

اشۡكُرُوۡا لِلّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ ﴿١٧٢﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةَ

अल्लाह का एह़सान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो[301] उस ने येही तुम पर ह़राम किये हैं मुर्दार[302]

وَالدَّمَ وَلَحۡمَ الۡخِنۡزِيۡرِ وَمَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيۡرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ

और ख़ून[303] और सुअर का गोश्त[304] और वोह जानवर जो ग़ैरे ख़ुदा का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया गया[305] तो जो नाचार हो[306] न यूं कि

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَاۤ اِثۡمَ عَلَيۡهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ

ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है वोह जो

يَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ الۡكِتٰبِ وَيَشۡتَرُوۡنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ۙ

छुपाते हैं[307] **अल्लाह** की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं[308]

न समझते हों और राहे रास्त पर न हों तो उन की पैरवी करना ह़माक़त व गुमराही है। **299 :** या'नी जिस त़रह़ चौपाए चराने वाले की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं कलाम के मा'ना नहीं समझते येही ह़ाल इन कुफ़्फ़ार का है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सदाए मुबारक को सुनते हैं लेकिन उस के मा'ना दिल नशीन कर के इर्शादे फ़ैज़ बुन्याद से फ़ाएदा नहीं उठाते। **300 :** येह इस लिये कि वोह ह़क़ बात सुन कर मुन्तफ़ेअ़ न हुए, कलामे ह़क़ उन की ज़बान पर जारी न हुवा, नसीह़तों से उन्हों ने फ़ाएदा न उठाया। **301 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों पर शुक्र वाजिब है। **302 :** जो ह़लाल जानवर बिग़ैर ज़ब्ह़ किये मर जाए या उस को त़रीक़े शरअ़ के ख़िलाफ़ मारा गया हो मसलन गला घोंट कर, या लाठी पथ्थर ढेले ग़ुल्ले गोली से मार कर हलाक किया गया हो, या वोह गिर कर मर गया हो, या किसी जानवर ने सींग से मारा हो, या किसी दरिन्दे ने हलाक किया हो उस को मुर्दार कहते हैं, और इसी के ह़ुक्म में दाख़िल है ज़िन्दा जानवर का वोह उ़ज़्व जो काट लिया गया हो। **मस्अला :** मुर्दार जानवर का खाना ह़राम है मगर उस का पका हुवा चमड़ा काम में लाना और उस के बाल, सींग, हड्डी, पठ्ठे, सुम (खुर) से फ़ाएदा उठाना जाइज़ है। (تفسیر احمدی) **303 मस्अला :** ख़ून हर जानवर का ह़राम है अगर बहने वाला हो, दूसरी आयत में फ़रमाया : "اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا"। **304 मस्अला :** ख़िन्ज़ीर नजिसुल ऐ़न (बिल्कुल नापाक) है इस का गोश्त, पोस्त, बाल, नाख़ुन वग़ैरा तमाम अज्ज़ा नजिस व ह़राम हैं किसी को काम में लाना जाइज़ नहीं। चूंकि ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इस लिये यहां गोश्त के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा फ़रमाया गया। **305 मस्अला :** जिस जानवर पर वक़्ते ज़ब्ह़ ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाए ख़्वाह तन्हा या ख़ुदा के नाम के साथ अ़त़्फ़ से मिला कर (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ وَمُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ) वोह ह़राम है। **मस्अला :** और अगर नामे ख़ुदा के साथ ग़ैर का नाम बिग़ैर अ़त़्फ़ मिलाया (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) तो मकरूह है। **मस्अला :** अगर ज़ब्ह़ फ़क़त़ **अल्लाह** के नाम पर किया और इस से क़ब्ल या बा'द ग़ैर का नाम लिया मसलन येह कहा कि अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का दुम्बा, या जिस की त़रफ़ से वोह ज़बीह़ा है उसी का नाम लिया, या जिन औलिया के लिये ईसाले सवाब मन्ज़ूर है उन का नाम लिया तो येह जाइज़ है इस में कुछ ह़रज नहीं। (تفسیر احمدی) **306 :** "मुज़्त़र" (नाचार) वोह है जो ह़राम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उस को न खाने से ख़ौफ़े जान हो ख़्वाह शिद्दत की भूक या नादारी की वज्ह से जान पर बन जाए और कोई ह़लाल चीज़ हाथ न आए, या कोई शख़्स ह़राम खाने पर जब्र करता हो और उस से जान का अन्देशा हो ऐसी ह़ालत में जान बचाने के लिये ह़राम चीज़ का क़दरे ज़रूरत या'नी इतना खा लेना जाइज़ है कि ख़ौफ़े हलाकत न रहे। **307 शाने नुज़ूल :** यहूद के उ़लमा व रुअसा जो उम्मीद रखते थे कि नबिय्ये आख़िरु ज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इन में से मब्ऊ़स होंगे जब उन्हों ने देखा कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم दूसरी क़ौम में से मब्ऊ़स फ़रमाए गए तो उन्हें येह अन्देशा हुवा कि लोग तौरैत व इन्जील में ह़ुज़ूर के

اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं[309] और अल्लाह क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा

وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

और न उन्हें सुथरा करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले

بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ

गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब तो किस दरजे उन्हें आग की सहार (बरदाश्त) है येह

بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ

इस लिये कि अल्लाह ने किताब ह़क़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़्तिलाफ़ डालने लगे[310] वोह ज़रूर

شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿۱۷۶﴾ ع لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

परले सिरे के झगड़ालू हैं कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

करो[311] हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए अल्लाह और क़ियामत और फ़िरिश्तों

وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ

और किताब और पैग़म्बरों पर[312] और अल्लाह की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और

औसाफ़ देख कर आप की फ़रमां बरदारी की त़रफ़ झुक पड़ेंगे और इन के नज़राने हदिये तोहफ़े तहाइफ़ सब बन्द हो जाएंगे हुकूमत जाती रहेगी ! इस ख़याल से उन्हें ह़सद पैदा हुवा और तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूर की ना'त व सिफ़त और आप के वक़्ते नुबुव्वत का बयान था उन्हों ने उस को छुपाया इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **मस्अला :** छुपाना येह भी है कि किताब के मज़्मून पर किसी को मुत्तलअ़ न होने दिया जाए न वोह किसी को पढ़ कर सुनाया जाए न दिखाया जाए, और येह भी छुपाना है कि ग़लत़ तावीलें कर के मा'ना बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मा'ना पर पर्दा डाला जाए। **308 :** या'नी दुन्या के ह़क़ीर नफ़्अ़ के लिये इख़्फ़ाए ह़क़ करते हैं। **309 :** क्यूं कि येह रिश्वतें और येह माले ह़राम जो ह़क़पोशी के इवज़ उन्हों ने लिया है उन्हें आतशे जहन्नम में पहुंचाएगा। **310 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उन्हों ने तौरैत में इख़्तिलाफ़ किया बा'ज़ ने इस को ह़क़ कहा, बा'ज़ ने बात़िल, बा'ज़ ने ग़लत़ तावीलें कीं, बा'ज़ ने तह़रीफ़ें। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई ! इस सूरत में किताब से क़ुरआन मुराद है, और उन का इख़्तिलाफ़ येह है कि बा'ज़ उन में से इस को शे'र कहते थे, बा'ज़ सेह़र, बा'ज़ कहानत। **311 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूं कि यहूद ने बैतुल मक़्दिस के मशरिक़ को और नसारा ने उस के मग़रिब को क़िब्ला बना रखा था, और हर फ़रीक़ का गुमान था कि सिर्फ़ इस क़िब्ले ही की त़रफ़ मुंह करना काफ़ी है, इस आयत में इन का रद फ़रमा दिया गया कि बैतुल मक़्दिस का क़िब्ला होना मन्सूख़ हो गया। (مدارک) मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि येह ख़ित़ाब अहले किताब और मोमिनीन सब को आ़म है और मा'ना येह हैं कि सिर्फ़ रू ब क़िब्ला होना अस्ल नेकी नहीं जब तक अ़क़ाइद दुरुस्त न हों और दिल इख़्लास के साथ रब्बे क़िब्ला की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो। **312 :** इस आयत में नेकी के छ[6] त़रीक़े इर्शाद फ़रमाए (1) ईमान लाना (2) माल देना (3) नमाज़ क़ाइम करना (4) ज़कात देना (5) अ़ह्द पूरा करना (6) सब्र करना। ईमान की तफ़्सील येह है कि **एक** तो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए कि वोह ह़य्यो क़य्यूम, अ़लीम, ह़कीम, समीअ़, बसीर, ग़नी, क़दीर, अज़ली, अबदी, वाहिद, لَاشَرِيْكَ لَهٗ है। **दूसरे** क़ियामत पर ईमान लाए कि वोह ह़क़ है उस में बन्दों का ह़िसाब होगा, आ'माल की जज़ा दी जाएगी, मक़्बूलाने ह़क़ शफ़ाअ़त करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم सआ़दत मन्दों को ह़ौज़े कौसर पर सैराब फ़रमाएंगे, पुल सिरात़ पर गुज़र होगा, और उस रोज़ के तमाम अह़वाल जो क़ुरआन में आए या सय्यिदे अम्बिया ने बयान फ़रमाए सब ह़क़ हैं। **तीसरे**

الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में[313] और नमाज़ क़ाइम रखे

وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي

और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़ह्द करें और सब्र वाले

الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ

मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ

येही परहेज़ गार हैं ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है[314] कि जो नाहक़ मारे जाएं

الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى

उन के ख़ून का बदला लो[315] आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के

بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ

बदले औ़रत[316] तो जिस के लिये उस के भाई की त़रफ़ से कुछ मुआ़फ़ी हुई[317] तो भलाई से तक़ाज़ा हो और

फ़िरिश्तों पर ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** की मख़्लूक़ और फ़रमां बरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं न औ़रत, उन की ता'दाद **अल्लाह** जानता है, चार उन में से बहुत मुक़र्रब हैं जिब्रईल, मीकाईल, इसराफ़ील, इ़ज़राईल عَلَيْهِمُ السَّلَام । **चौथे** कुतुबे इलाहिय्यह पर ईमान लाना कि जो किताब **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई ह़क़ है, उन में चार बड़ी किताबें हैं (1) तौरैत जो ह़ज़रते मूसा पर (2) इन्जील जो ह़ज़रते ई़सा पर (3) ज़बूर ह़ज़रते दावूद पर (4) क़ुरआन ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा पर नाज़िल हुईं, और पचास सह़ीफ़े ह़ज़रते शीस पर, तीस ह़ज़रते इदरीस पर, दस ह़ज़रते आदम पर, दस ह़ज़रते इब्राहीम पर नाज़िल हुए। عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام । **पांचवें** तमाम अम्बिया पर ईमान लाना कि वोह सब **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और मा'सूम या'नी गुनाहों से पाक हैं, उन की सह़ीह़ ता'दाद **अल्लाह** जानता है, उन में से तीन सो तेरह रसूल हैं। "نَبِيّٖنَ" ब सीग़ए जम्अ़ मुज़क्कर सालिम ज़िक्र फ़रमाना इशारा करता है कि अम्बिया मर्द होते हैं कोई औ़रत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا...الآيه से साबित है। ईमाने मुज्मल येह है اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَبِجَمِيْعِ مَاجَآءَ بِهِ النَّبِيُّ (صلى الله عليه وسلم) या'नी मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और उन तमाम उमूर पर जो सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** के पास से लाए। (تفسیر احمدی)
313 : ईमान के बा'द आ'माल का और इस सिल्सिले में माल देने का बयान फ़रमाया, इस के छ[6] मसरफ़ ज़िक्र किये। गरदनें छुड़ाने से गुलामों का आज़ाद करना मुराद है, येह सब मुस्तह़ब त़ौर पर माल देने का बयान था। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम होता है कि सदक़ा देना ब ह़ालते तन्दुरुस्ती ज़ियादा अज्र रखता है ब निस्बत इस के कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर दे। (كَذَا فِىْ حَدِيْثٍ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَة) **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदार को सदक़ा देने में दो सवाब हैं : एक सदक़े का, एक सिलए रेह़्म का। (نسائی شریف) **314 शाने नुज़ूल :** येह आयत औस व ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई, इन में से एक क़बीला दूसरे से क़ुव्वते ता'दाद, माल व शरफ़ में ज़ियादा था उस ने क़सम खाई थी कि वोह अपने गुलाम के बदले दूसरे क़बीले के आज़ाद को और औ़रत के बदले मर्द को, और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा ! ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग इस क़िस्म की तअ़द्दी (ज़ियादती) के आ़दी थे, अ़ह्दे इस्लाम में येह मुआ़मला ह़ुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई और अ़द्ल व मुसावात का हुक्म दिया गया और इस पर वोह लोग राज़ी हुए। क़ुरआने करीम में क़िसास (ख़ून का बदला लेने) का मस्अला कई आयतों में बयान हुवा है, इस आयत में क़िसास व अ़फ़्व दोनों के मस्अले हैं और **अल्लाह** तआ़ला के इस एह़सान का बयान है कि उस ने अपने बन्दों को क़िसास व अ़फ़्व में मुख़्तार किया चाहें क़िसास लें या अ़फ़्व करें। आयत के अव्वल में क़िसास के वुजूब का बयान है। **315 :** इस से हर क़ातिल बिल अ़मद (जान बूझ कर क़त्ल करने वाले) पर क़िसास का वुजूब साबित होता है ख़्वाह उस ने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को, मुसल्मान को या काफ़िर को, मर्द को या औ़रत को क्यूं कि قَتْلٰى जो قَتِيْل की जम्अ़ है वोह सब को शामिल है, हां जिस को दलीले शरई ख़ास करे वोह मख़्सूस हो जाएगा। (احکام القرآن) **316 :** इस आयत में बताया गया जो क़त्ल

اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

अच्छी त़रह़ अदा   येह तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रह़मत   तो इस के बा'द जो ज़ियादती

بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰۤاُولِى

करे[318] उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है   और खून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ

الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ

अ़क़्ल मन्दो[319] कि तुम कहीं बचो   तुम पर फ़र्ज़ हुवा कि जब तुम में किसी को मौत आए

اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ اۨلْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا

अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये मुवाफ़िक़े दस्तूर[320] येह वाजिब है

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾ ؕ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

परहेज़ गारों पर   तो जो वसिय्यत को सुन सुना कर बदल दे[321] उस का गुनाह उन्हीं बदलने

يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۱﴾ ؕ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ

वालों पर है[322]   बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है   फिर जिसे अन्देशा हुवा कि वसिय्यत करने वाले ने कुछ बे इन्साफ़ी या

اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع يٰۤاَيُّهَا

गुनाह किया तो उस ने उन में सुल्ह़ करा दी उस पर कुछ गुनाह नहीं[323]   बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है   ऐ

ع ۲۲

करेगा वोही क़त्ल किया जाएगा ख़्वाह आज़ाद हो या ग़ुलाम, मर्द हो या औ़रत, और अहले जाहिलिय्यत का येह त़रीक़ा ज़ुल्म है जो उन में राइज था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वोह एक के बदले दो को क़त्ल करते, ग़ुलामों में होती तो बजाए ग़ुलाम के आज़ाद को मारते, औ़रतों में होती तो औ़रत के बदले मर्द को क़त्ल करते और मह़्ज़ क़ातिल के क़त्ल पर इक्तिफ़ा न करते, इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। **317 :** मा'ना येह हैं कि जिस क़ातिल को वलिये मक़्तूल कुछ मुआ़फ़ करें और उस के ज़िम्मे माल लाज़िम किया जाए उस पर औलियाए मक़्तूल तक़ाज़ा करने में नेक रविश इख़्तियार करें और क़ातिल ख़ूंबहा ख़ुश मुआ़मलगी के साथ अदा करे इस में सुल्ह़ बर माल (माल पर सुल्ह़ करने) का बयान है। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** वलिये मक़्तूल को इख़्तियार है कि ख़्वाह क़ातिल को बे इ़वज़ मुआ़फ़ करे या माल पर सुल्ह़ करे, अगर वोह इस पर राज़ी न हो और क़िसास चाहे तो क़िसास ही फ़र्ज़ रहेगा। (جمل) **मस्अला :** अगर मक़्तूल के तमाम औलिया क़िसास मुआ़फ़ कर दें तो क़ातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता। **मस्अला :** अगर माल पर सुल्ह़ करें तो क़िसास साक़ित़ हो जाता है और माल वाजिब होता है। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** वलिये मक़्तूल को क़ातिल का भाई फ़रमाने में दलालत है इस पर कि क़त्ल अगर्चे बड़ा गुनाह है मगर इस से अख़ुव्वते ईमानी क़त्अ़ नहीं होती, इस में ख़वारिज का इब्त़ाल है जो मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर कहते हैं। **318 :** या'नी ब दस्तूरे जाहिलिय्यत ग़ैर क़ातिल को क़त्ल करे, या दियत क़बूल करने और मुआ़फ़ करने के बा'द क़त्ल करे **319 :** क्यूं कि क़िसास मुक़र्रर होने से लोग क़त्ल से बाज़ रहेंगे और जानें बचेंगी। **320 :** या'नी मुवाफ़िक़ दस्तूरे शरीअ़त के अ़द्ल करे और एक तिहाई माल से ज़ियादा की वसिय्यत न करे, और मोह़ताजों पर मालदारों को तरजीह़ न दे। **मस्अला :** इब्तिदाए इस्लाम में येह वसिय्यत फ़र्ज़ थी, जब मीरास के अह़काम नाज़िल हुए मन्सूख़ की गई, अब ग़ैर वारिस के लिये तिहाई से कम में वसिय्यत करना मुस्तह़ब है बशर्ते कि वारिस मोह़ताज न हों या तर्का मिलने पर मोह़ताज न रहें, वरना तर्का वसिय्यत से अफ़्ज़ल है। (تفسیر احمدی) **321 :** ख़्वाह वसी हो या वली या शाहिद। और वोह तब्दील किताबत में करे या तक़्सीम में या अदाए शहादत में, अगर वोह वसिय्यत मुवाफ़िक़े शरअ़ है तो बदलने वाला गुनहगार है। **322 :** और दूसरे ख़्वाह वोह मूसी हों या मूसालहू बरी हैं। **323 :** मा'ना येह हैं कि वारिस, या वसी, या इमाम, या क़ाज़ी जिस को भी मूसी की त़रफ़ से ना इन्साफ़ी या नाह़क़ कारवाई का अन्देशा हो वोह अगर

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ

ईमान वालो[324] तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए

قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَیَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ

थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले[325] गिनती के दिन हैं[326] तो तुम में जो कोई

مَّرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ وَ عَلَى الَّذِیْنَ یُطِیْقُوْنَهٗ

बीमार या सफ़र में हो[327] तो इतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की त़ाक़त न हो

فِدْیَةٌ طَعَامُ مِسْكِیْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا فَهُوَ خَیْرٌ لَّهٗ ؕ وَ اَنْ

वोह बदला दें एक मिस्कीन का खाना[328] फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे[329] तो वोह उस के लिये बेहतर है और

تَصُوْمُوْا خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ

रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो[330] रमज़ान का महीना जिस में

فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ

क़ुरआन उतरा[331] लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें तो तुम में जो कोई

मूसालहू या वारिसों में शरअ़ के मुवाफ़िक़ सुल्ह़ करा दे तो गुनहगार नहीं क्यूं कि उस ने ह़क़ की ह़िमायत के लिये बात़िल को बदला। एक क़ौल येह भी है कि मुराद वोह शख़्स है जो वक़्ते वसिय्यत देखे कि मूसी ह़क़ से तजावुज़ करता और ख़िलाफ़े शरअ़ त़रीक़ा इख़्तियार करता है तो उस को रोक दे और ह़क़ व इन्साफ़ का हुक्म करे। **324 :** इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है। रोज़ा शरअ़ में इस का नाम है कि मुसल्मान ख़्वाह मर्द हो या ह़ैज़ व निफ़ास से ख़ाली औ़रत सुब्ह़े सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक ब निय्यते इ़बादत ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त (खाना पीना और जिमाअ़ करना) तर्क करे। (عالمگیری وغیرہ) रमज़ान के रोज़े 10 शा'बान 2 हि. को फ़र्ज़ किये गए। (درمختار وخازن) इस आयत से साबित होता है कि रोज़े इ़बादते क़दीमा हैं ज़मानए आदम عَلَیْہِ السَّلَام से तमाम शरीअ़तों में फ़र्ज़ होते चले आए अगर्चे अय्याम व अह़काम मुख़्तलिफ़ थे मगर अस्ल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे। **325 :** और तुम गुनाहों से बचो। क्यूं कि येह कस्रे नफ़्स का सबब और मुत्तक़ीन का शिआ़र है। **326 :** या'नी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना। **327 :** सफ़र से वोह मुराद है जिस की मसाफ़त तीन दिन से कम न हो। इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़्सत दी कि अगर उस को रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक का अन्देशा हो, या सफ़र में शिद्दतो तक्लीफ़ का तो वोह मरज़ व सफ़र के अय्याम में इफ़्त़ार करे और बजाए इस के अय्यामे मन्हिय्या के सिवा और दिनों में इस की क़ज़ा करे, अय्यामे मन्हिय्या पांच दिन हैं जिन में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं दोनों ई़दें और ज़िल ह़िज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तारीख़ें। **मस्अला :** मरीज़ को महूज़ वहम पर रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं जब तक दलील या तजरिबे या ग़ैर ज़ाहिरुल फ़िस्क़ त़बीब की ख़बर से इस का ग़लबए ज़न न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या ज़ियादती का सबब होगा। **मस्अला :** जो बिलफ़े'ल बीमार न हो लेकिन मुसल्मान त़बीब येह कहे कि वोह रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा वोह भी मरीज़ के हुक्म में है। **मस्अला :** ह़ामिला या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उस को भी इफ़्त़ार जाइज़ है : **मस्अला :** जिस मुसाफ़िर ने त़ुलूए फ़ज्र से क़ब्ल सफ़र शुरूअ़ किया उस को तो रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ है लेकिन जिस ने बा'दे त़ुलूअ़ सफ़र किया उस को उस दिन का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं। **328 मस्अला :** जिस बूढ़े मर्द या औ़रत को पीरानासाली (बुढ़ापे) के ज़ो'फ़ से रोज़ा रखने की क़ुदरत न रहे और आयिन्दा क़ुव्वत ह़ासिल होने की उम्मीद भी न हो उस को शैख़े फ़ानी कहते हैं, उस के लिये जाइज़ है कि इफ़्त़ार करे और हर रोज़े के बदले निस्फ़ साअ़ या'नी एक सो पछत्तर रुपिया और एक अठन्नी भर गेहूं या गेहूं का आटा या इस से दूने जव या इस की क़ीमत बत़ौरे फ़िदया दे। **मस्अला :** अगर फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की क़ुव्वत आ गई तो रोज़ा वाजिब होगा। **मस्अला :** अगर शैख़े फ़ानी नादार हो और फ़िदया देने की क़ुदरत न रखे तो **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार करे और अपने अ़फ़्वे तक़्सीर (कोताही की बख़्शिश) की दुआ़ करता रहे। **329 :** या'नी फ़िदये की मिक़्दार से ज़ियादा दे **330 :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर्चे मुसाफ़िर व मरीज़ को इफ़्त़ार

شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ

येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो

فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ

तो इतने रोज़े और दिनों में अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी

الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ

नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो[332] और अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ

हक़ गुज़ार हो और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं[333] दुआ क़बूल करता हूं

دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ

पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे[334] तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं कि कहीं

يَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ

राह पाएं रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल हुवा[335] वोह

की इजाज़त है लेकिन ज़ियादा बेहतर व अफ़्ज़ल रोज़ा रखना ही है। **331 :** इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : (1) येह कि रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त में कुरआने पाक नाज़िल हुवा (2) येह कि कुरआने करीम के नुज़ूल की इब्तिदा रमज़ान में हुई (3) येह कि कुरआने करीम बि तमामिही रमज़ान मुबारक की शबे क़द्र में लौहे महफ़ूज़ से आस्माने दुन्या की तरफ़ उतारा गया और बैतुल इज़्ज़त में रहा, येह इसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़ वक़्तन हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत जितना जितना मन्ज़ूरे इलाही हुवा जिब्रीले अमीन लाते रहे, येह नुज़ूल तेईस साल के अ़र्से में पूरा हुवा। **332 :** हदीस में है हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है तो चांद देख कर रोज़े शुरूअ़ करो और चांद देख कर इफ़्तार करो, अगर 29 रमज़ान को चांद की रूयत न हो तो तीस दिन की गिनती पूरी करो। **333 :** इस में तालिबाने हक़ की तलबे मौला का बयान है जिन्हों ने इश्क़े इलाही पर अपने हवाइज को कुरबान कर दिया, वोह उसी के तलब गार हैं उन्हें कुर्बो विसाल के मुज़्दे से शादकाम फ़रमाया। **शाने नुज़ूल :** एक जमाअ़त सहाबा ने जज़्बए इश्क़े इलाही में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब कहां है ? इस पर नवीदे कुर्ब से सरफ़राज़ कर के बताया गया कि अल्लाह तआ़ला मकान से पाक है जो चीज़ किसी से मकानी कुर्ब रखती हो वोह उस के दूर वाले से ज़रूर बो'द रखती है और अल्लाह तआ़ला सब बन्दों से क़रीब है मकानी की येह शान नहीं। मनाज़िले कुर्ब में रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़्लत दूर करने से मुयस्सर आती है। دوست نزدیک تر از من بمن است- ویں عجب تر که من از وے دورم (दोस्त तो मुझ से भी ज़ियादा मेरे क़रीब है। और येह अ़जब तर है कि मैं उस से दूर हूं)। **334 :** "दुआ़" अ़र्ज़े हाजत है, और इजाबत येह है कि परवर दगार अपने बन्दे की दुआ़ पर "لَبَّيْكَ عَبْدِيْ" फ़रमाता है। मुराद अ़ता फ़रमाना दूसरी चीज़ है वोह भी कभी उस के करम से फ़िलफ़ौर होती है कभी ब मुक़्तज़ाए हिक्मत किसी ताख़ीर से, कभी बन्दे की हाजत दुन्या में रवा फ़रमाई जाती है कभी आख़िरत में, कभी बन्दे का नफ़्अ़ दूसरी चीज़ में होता है वोह अ़ता की जाती है कभी बन्दा महबूब होता है उस की हाजत रवाई में इस लिये देर की जाती है कि वोह अ़र्से तक दुआ़ में मश्गूल रहे, कभी दुआ़ करने वाले में सिद्क़ो इख़्लास वग़ैरा शराइते क़बूल नहीं होते इसी लिये अल्लाह के नेक और मक़्बूल बन्दों से दुआ़ कराई जाती है। **मस्अला :** ना जाइज़ अम्र की दुआ़ करना जाइज़ नहीं। दुआ़ के आदाब में से है कि हुज़ूरे क़ल्ब के साथ क़बूल का यक़ीन रखते हुए दुआ़ करे और शिकायत न करे कि मेरी दुआ़ क़बूल न हुई, तिरमिज़ी की हदीस में है कि नमाज़ के बा'द हम्दो सना और दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ़ करे। **335 शाने नुज़ूल :** शराइए साबिक़ा में इफ़्तार के बा'द खाना पीना मुजामअ़त करना नमाज़े इशा तक हलाल था बा'द नमाज़े इशा येह सब चीज़ें शब में भी हराम हो जाती थीं, येह हुक्म ज़मानए अक़्दस तक बाक़ी था, बा'ज़ सहाबा से रमज़ान की रातों में बा'दे इशा मुबाशरत वुक़ूअ़ में आई उन में हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ भी थे इस पर वोह हज़रात नादिम

لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ

तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में

اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا

डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआफ़ फ़रमाया[336] तो अब उन से सोहबत करो[337] और त़लब करो जो अल्लाह ने

كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ

तुम्हारे नसीब में लिखा हो[338] और खाओ और पियो[339] यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा

مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۠ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا

सियाही के डोरे से पौ फट कर[340] फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो[341] और

تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِى الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا

औ़रतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो[342] येह अल्लाह की ह़दें हैं उन के

تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ وَلَا

पास न जाओ अल्लाह यूं ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़ गारी मिले और

हुए और दरगाहे रिसालत में अ़र्ज़े ह़ाल किया अल्लाह तआ़ला ने मुआ़फ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल हुई, और बयान कर दिया गया कि आयिन्दा के लिये रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्ह़े सादिक़ तक मुजामअ़त करना ह़लाल किया गया। **336 :** इस ख़ियानत से वोह मुजामअ़त मुराद है जो क़ब्ले इबाह़त रमज़ान की रातों में मुसल्मानों से सरज़द हुई थी, उस की मुआ़फ़ी का बयान फ़रमा कर उन की तस्कीन फ़रमा दी गई। **337 :** येह अम्र इबाह़त के लिये है कि अब वोह मुमानअ़त उठा दी गई और लयालिये रमज़ान (रमज़ान की रातों) में मुबाशरत मुबाह़ कर दी गई। **338 :** इस में हिदायत है कि मुबाशरत नस्ल व औलाद ह़ासिल करने की निय्यत से होनी चाहिये जिस से मुसल्मान बढ़ें और दीन क़वी हो। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि मुबाशरत मुवाफ़िक़े हुक्मे शरअ़ हो जिस मह़ल में जिस त़रीक़े से मुबाह़ फ़रमाई उस से तजावुज़ न हो। (تفسیر احمدی) एक क़ौल येह भी है जो अल्लाह ने लिखा उस को त़लब करने के मा'ना हैं रमज़ान की रातों में कस्रते इबादत और बेदार रह कर शबे क़द्र की जुस्तुजू करना। **339 :** येह आयत सिरमा बिन क़ैस के ह़क़ में नाज़िल हुई, आप मेह़नती आदमी थे एक दिन ब ह़ालते रोज़ा दिन भर अपनी ज़मीन में काम कर के शाम को घर आए बीवी से खाना मांगा वोह पकाने में मसरूफ़ हुईं येह थके थे आंख लग गई जब खाना तय्यार कर के इन्हें बेदार किया इन्हों ने खाने से इन्कार कर दिया क्यूं कि उस ज़माने में सो जाने के बा'द रोज़ादार पर खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था और इसी ह़ालत में दूसरा रोज़ा रख लिया, ज़ो'फ़ इन्तिहा को पहुंच गया था दोपहर को ग़शी आ गई, इन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और रमज़ान की रातों में इन के सबब से खाना पीना मुबाह़ फ़रमाया गया जैसे कि ह़ज़रते उमर رضی اللہ عنہ की इनाबत व रुजूअ़ के बाइस क़ुरबत ह़लाल हुई। **340 :** रात को सियाह डोरे से और सुब्ह़े सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई, मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये खाना पीना रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्ह़े सादिक़ तक मुबाह़ फ़रमाया गया। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** सुब्ह़े सादिक़ तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनाबत रोज़े के मुनाफ़ी नहीं, जिस शख़्स को ब ह़ालते जनाबत सुब्ह़ हुई वोह ग़ुस्ल कर ले उस का रोज़ा जाइज़ है (تفسیر احمدی) **मस्अला :** इसी से उ़लमा ने येह मस्अला निकाला कि रमज़ान के रोज़े की निय्यत दिन में जाइज़ है। **341 :** इस से रोज़े की आख़िर ह़द मा'लूम होती है और येह मस्अला साबित होता है कि ब ह़ालते रोज़ा ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त में से हर एक के इरतिकाब से कफ़्फ़ारा लाज़िम हो जाता है। (مدارک) **मस्अला :** उ़लमा ने इस आयत को सौमे विसाल या'नी तह के रोज़े के मम्नूअ़ होने की दलील क़रार दिया है। **342 :** इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ादार के लिये जिमाअ़ ह़लाल है जब कि वोह मो'तकिफ़ न हो। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ में औ़रतों से क़ुरबत और बोसो किनार ह़राम है। **मस्अला :** मर्दों के ए'तिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है। **मस्अला :** मो'तकिफ़ को मस्जिद

تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا

आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का

فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ

कुछ माल ना जाइज़ तौर पर खा लो[343] जान बूझ कर तुम से नए चांद

الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا

को पूछते हैं[344] तुम फ़रमा दो वोह वक़्त की अ़लामतें हैं लोगों और हज के लिये[345] और येह कुछ भलाई नहीं कि[346] घरों में

الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ

पच्छीत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़ गारी है और घरों में दरवाज़ों

اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۸۹﴾ وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

से आओ[347] और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ और **अल्लाह** की राह में लड़ो[348]

में खाना पीना सोना जाइज़ है। **मस्अला :** औ़रतों का ए'तिकाफ़ उन के घरों में जाइज़ है। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जाइज़ है जिस में जमाअ़त क़ाइम हो। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ में रोज़ा शर्त़ है। **343 :** इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से, या जूए से या ह़राम तमाशों या ह़राम कामों या ह़राम चीज़ों के बदले, या रिश्वत या झूटी गवाही या चुग़ल ख़ोरी से येह सब मम्नूअ़ व ह़राम है। **मस्अला** इस से मा'लूम हुवा कि ना जाइज़ फ़ाएदे के लिये किसी पर मुक़द्दमा बनाना और उस को हुक्काम तक ले जाना ना जाइज़ व ह़राम है, इसी त़रह़ अपने फ़ाएदे की ग़रज़ से दूसरे को ज़रर पहुंचाने के लिये हुक्काम पर असर डालना रिश्वतें देना ह़राम है। जो हुक्काम रस लोग हैं (या'नी जिन की पहुंच हुक्मरानों तक है) वोह इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें, ह़दीस शरीफ़ में मुसल्मानों के ज़रर पहुंचाने वाले पर ला'नत आई है। **344 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल और सा'लबा बिन ग़न्म अन्सारी के जवाब में नाज़िल हुई, इन दोनों ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह ﷺ! चांद का क्या ह़ाल है? इब्तिदा में बहुत बारीक निकलता है फिर रोज़ बरोज़ बढ़ता है यहां तक कि पूरा रोशन हो जाता है, फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की त़रह़ बारीक हो जाता है एक ह़ाल पर नहीं रहता। इस सुवाल से मक़्सद चांद के घटने बढ़ने की ह़िक्मतें दरयाफ़्त करना था। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि सुवाल का मक़्सूद चांद के इख़्तिलाफ़ात का सबब दरयाफ़्त करना था। **345 :** चांद के घटने बढ़ने के फ़वाइद बयान फ़रमाए कि वोह वक़्त की अ़लामतें हैं और आदमियों के हज़ारहा दीनी व दुन्यावी काम इस से मुतअ़ल्लिक़ हैं ज़राअ़त, तिजारत लैन दैन के मुआ़मलात, रोज़े और ईद के अवक़ात, औ़रतों की इ़द्दतें, ह़ैज़ के अय्याम, ह़म्ल और दूध पिलाने की मुद्दतें और दूध छुड़ाने के वक़्त, और ह़ज के अवक़ात इस से मा'लूम होते हैं क्यूं कि अव्वल में जब चांद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि येह इब्तिदाई तारीख़ें हैं और जब चांद पूरा रोशन होता है तो मा'लूम हो जाता है कि येह महीने की दरमियानी तारीख़ है और जब चांद छुप जाता है तो मा'लूम होता है कि महीना ख़त्म पर है इसी त़रह़ इन के माबैन अय्याम में चांद की ह़ालतें दलालत किया करती हैं, फिर महीनों से साल का ह़िसाब होता है। येह वोह क़ुदरती जन्तरी है जो आस्मान के सफ़्ह़े पर हमेशा खुली रहती है और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग पढ़े भी और बे पढ़े भी सब इस से अपना ह़िसाब मा'लूम करते हैं। **346 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों की येह आ़दत थी कि जब वोह ह़ज के लिये एह़राम बांधते तो किसी मकान में उस के दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पच्छीत (मकान की पिछली दीवार) तोड़ कर आते और इस को नेकी जानते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **347 :** ख़्वाह ह़ालते एह़राम हो या ग़ैर एह़राम। **348 :** 6 सि.हि. में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया उस साल सय्यिदे आलम ﷺ मदीनए त़य्यिबा से ब क़स्दे उ़मरह मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए मुश्रिकीन ने हुज़ूर ﷺ को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इस पर सुल्ह़ हुई कि आप साले आयिन्दा तशरीफ़ लाएं तो आप के लिये तीन रोज़ मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा। चुनान्चे अगले साल 7 सि.हि. में हुज़ूर ﷺ उ़म्रए क़ज़ा के लिये तशरीफ़ लाए अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सो की जमाअ़त थी मुसल्मानों को येह अन्देशा हुवा कि कुफ़्फ़ार वफ़ाए अ़ह्द न करेंगे और ह़रमे मक्का में शह्रे ह़राम या'नी माहे ज़िल क़ा'दा में जंग करेंगे और मुसल्मान ब ह़ालते एह़राम हैं, इस

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

उन से जो तुम से लड़ते हैं[349] और ह़द से न बढ़ो[350] अल्लाह पसन्द नहीं रखता ह़द से बढ़ने वालों को

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

और काफ़िरों को जहां पाओ मारो[351] और उन्हें निकाल दो[352] जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था[353]

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और उन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है[354] और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो

حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

जब तक वोह तुम से वहां न लड़ें[355] और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो[356] काफ़िरों की येही

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹۱﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۲﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى

सज़ा है फिर अगर वोह बाज़ रहें[357] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और उन से लड़ो यहां तक कि

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى

कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो फिर अगर वोह बाज़ आएं[358] तो ज़ियादती नहीं मगर

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ

ज़ालिमों पर माहे ह़राम के बदले माहे ह़राम और अदब के बदले अदब है[359]

ह़ालत में जंग करना गिरां है क्यूं कि ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए इस्लाम तक न ह़रम में जंग जाइज़ थी न माहे ह़राम में न ह़ालते एह़राम में तो इन्हें तरद्दुद हुवा कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **349 :** इस के मा'ना या तो येह हैं कि जो कुफ़्फ़ार तुम से लड़ें या जंग की इब्तिदा करें तुम उन से दीन की ह़िमायत और ए'ज़ाज़ के लिये लड़ो ! येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ किया गया और कुफ़्फ़ार से क़िताल करना वाजिब हुवा ख़्वाह वोह इब्तिदा करें या न करें, या येह मा'ना हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं। येह बात सारे ही कुफ़्फ़ार में है क्यूं कि वोह सब दीन के मुख़ालिफ़ और मुसल्मानों के दुश्मन हैं, ख़्वाह उन्हों ने किसी वज्ह से जंग न की हो लेकिन मौक़अ़ पाने पर चूकने वाले नहीं। येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदान में तुम्हारे मुक़ाबिल आएं और तुम से लड़ने वाले हों उन से लड़ो ! इस सूरत में ज़ईफ़, बूढ़े, बच्चे मजनून, अन्धे, बीमार, औरतें वग़ैरा जो जंग की क़ुदरत नहीं रखते इस हुक्म में दाख़िल न होंगे उन को क़त्ल करना जाइज़ नहीं। **350 :** जो जंग के क़ाबिल नहीं उन से न लड़ो, या जिन से तुम ने अ़ह्द किया हो, या बिग़ैर दा'वत के जंग न करो क्यूं कि त़रीक़ए शरअ़ येह है कि पहले कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत दी जाए अगर इन्कार करें तो जिज़्या त़लब किया जाए, इस से भी मुन्किर हों तब जंग की जाए ! इस मा'ना पर आयत का हुक्म बाक़ी है मन्सूख़ नहीं। (تفسیر احمدی) **351 :** ख़्वाह ह़रम हो या ग़ैरे ह़रम **352 :** मक्कए मुकर्रमा से **353 :** साले गुज़श्ता। चुनान्चे रोज़े फ़त्ह़े मक्का जिन लोगों ने इस्लाम क़बूल न किया उन के साथ येही किया गया। **354 :** फ़साद से शिर्क मुराद है या मुसल्मानों को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोकना। **355 :** क्यूं कि येह हुरमते ह़रम (ह़रम की ता'ज़ीम) के ख़िलाफ़ है। **356 :** कि उन्हों ने ह़रम शरीफ़ की बे हुरमती की। **357 :** क़त्ल व शिर्क से **358 :** कुफ़्र व बात़िल परस्ती से **359 :** जब गुज़श्ता साल ज़िल क़ा'दा 6 सि.हि. में मुशरिकीने अ़रब ने माहे ह़राम की हुरमत व अदब का लिह़ाज़ न रखा और तुम्हें अदाए उ़मरह से रोका तो येह बे हुरमती उन से वाक़ेअ़ हुई और उस के बदले ब तौफ़ीक़े इलाही 7 सि.हि. के ज़िल क़ा'दा में तुम्हें मौक़अ़ मिला कि तुम उ़मरए क़ज़ा को अदा करो।

فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ

तो जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर ज़ियादती करो उतनी ही जितनी उस ने की

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِيْلِ

और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** डर वालों के साथ है और **अल्लाह** की राह में ख़र्च

اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚۛ وَاَحْسِنُوْا ۚۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

करो[360] और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो[361] और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ

अल्लाह के महबूब हैं और हज और उमरह **अल्लाह** के लिये पूरा करो[362] फिर अगर तुम रोके जाओ[363] तो क़ुरबानी भेजो

مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ

जो मुयस्सर आए[364] और अपने सर न मुंडाओ जब तक क़ुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाए[365]

360 : इस से तमाम दीनी उमूर में ताअ़त व रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करना मुराद है ख़्वाह जिहाद हो या और नेकियां। **361 :** राहे ख़ुदा में इन्फ़ाक़ का तर्क भी सबबे हलाक है और इसराफ़े बे जा भी, और इस तरह और चीज़ भी जो ख़तरा व हलाक का बाइस हो उन सब से बाज़ रहने का हुक्म है हत्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह ख़ुदकुशी करना। **मस्अला :** उलमा ने इस से येह मस्अला अख़्ज़ किया है कि जिस शहर में ताऊ़न हो वहां न जाएं अगर्चे वहां के लोगों को वहां से भागना मम्नूअ़ है। **362 :** और इन दोनों को इन के फ़राइज़ व शराइत़ के साथ ख़ास **अल्लाह** के लिये बे सुस्ती व नुक़्सान कामिल करो। हज नाम है एहराम बांध कर नवीं ज़िल हिज्जा को अ़रफ़ात में ठहरने और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के त़वाफ़ का। इस के लिये ख़ास वक़्त मुक़र्रर है जिस में येह अफ़्आ़ल किये जाएं तो हज है। **मस्अला :** हज बक़ौले राजेह 9 हि. में फ़र्ज़ हुवा इस की फ़र्ज़िय्यत क़त़ई है। **हज** के फ़राइज़ येह हैं (1) एहराम (2) अ़रफ़ा में वुक़ूफ़ (3) त़वाफ़े ज़ियारत। **हज** के वाजिबात (1) मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ (2) सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई (3) रम्ये जिमार (शयातीन को कंकरियां मारना) और (4) आफ़ाक़ी (मक्का के बाहर रहने वाले) के लिये त़वाफ़े रुजूअ़ और (5) हल्क़ या तक़्सीर (सर के बाल मूंडना या छोटे करवाना)। **उमरह** के रुक्न त़वाफ़ व सई हैं, और इस की शर्त़ एहराम व हल्क़ है। **हज व उमरह** के चार त़रीक़े हैं (1) इफ़्राद बिल हज : वोह येह है कि हज के महीनों में या इन से क़ब्ल, मीक़ात से या इस से पहले हज का एहराम बांधे और दिल से इस की निय्यत करे ख़्वाह ज़बान से तल्बिया के वक़्त इस का नाम ले या न ले। (2) इफ़्राद बिल उमरह : वोह येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इन से क़ब्ल, उमरह का एहराम बांधे और दिल से इस का क़स्द करे ख़्वाह वक़्ते तल्बिया ज़बान से इस का ज़िक्र करे या न करे, और इस के लिये अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल त़वाफ़ करे ख़्वाह इस साल में हज करे या न करे मगर हज व उमरह के दरमियान इलमामे सहीह करे इस तरह कि अपने अहल की त़रफ़ हलाल हो कर वापस हो। (इलमामे सहीह येह है कि उमरह के बा'द एहराम खोल कर अपने वत़न को वापस जाए।) (3) क़िरान : येह है कि हज व उमरह दोनों को एक एहराम में जम्अ़ करे वोह एहराम मीक़ात से बांधा हो या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल, अव्वल से हज व उमरह दोनों की निय्यत हो ख़्वाह वक़्ते तल्बिया, ज़बान से दोनों का ज़िक्र करे या न करे, पहले उमरह के अफ़्आ़ल अदा करे फिर हज के। (4) तमत्तोअ़ : येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल, उमरह का एहराम बांधे और अश्हुरे हज में उमरह करे या अक्सर त़वाफ़ इस के अश्हुरे हज में हों ! और हलाल हो कर हज के लिये एहराम बांधे और इसी साल हज करे, और हज व उमरह के दरमियान अपने अहल के साथ इलमामे सहीह न करे। (مسکین وفتح) **मस्अला :** इस आयत से उलमा ने क़िरान साबित किया है। **363 :** हज या उमरह से। बा'द शुरूअ़ करने और घर से निकलने और मोहरिम हो जाने के या'नी तुम्हें कोई मानेअ़ अदाए हज या उमरह से पेश आए ख़्वाह वोह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या मरज़ वग़ैरा, ऐसी हालत में तुम एहराम से बाहर आ जाओ। **364 :** ऊंट या गाय या बकरी और येह क़ुरबानी भेजना वाजिब है। **365 :** या'नी हरम में जहां इस के ज़ब्ह का हुक्म है। **मस्अला :** येह क़ुरबानी बैरूने हरम नहीं हो सकती।

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ

फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ है[366] तो बदला दे रोज़े[367]

اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۗ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ

या ख़ैरात[368] या कुरबानी फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उमरह मिलाने का फ़ाएदा उठाए[369]

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي

उस पर कुरबानी है जैसी मुयस्सर आए[370] फिर जिसे मक्दूर न हो तो तीन रोज़े हज के दिनों में

الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ

रखे[371] और सात जब अपने घर पलट कर जाओ येह पूरे दस हुए येह हुक्म उस

يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ

के लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो[372] और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۶﴾ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ

अल्लाह का अज़ाब सख़्त है हज के कई महीने हैं जाने हुए[373] तो जो उन में हज की निय्यत

الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ

करे[374] तो न औरतों के सामने सोहबत का तज़्किरा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा[375] हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई

366 : जिस से वोह सर मुंडाने के लिये मजबूर हो और सर मुंडा ले **367 :** तीन दिन के **368 :** छ[6] मिस्कीनों का खाना हर मिस्कीन के लिये पौने दो सेर गेहूं। (दो किलो में अस्सी (80) ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत्बूआ बाबुल मदीना कराची") **369 :** या'नी तमत्तोअ़ करे **370 :** येह कुरबानी तमत्तोअ़ की है हज के शुक्र में वाजिब हुई ख़्वाह तमत्तोअ़ करने वाला फ़क़ीर हो, ईदे अज़्हा की कुरबानी नहीं जो फ़क़ीर व मुसाफ़िर पर वाजिब नहीं होती। **371 :** या'नी यकुम शव्वाल से नवीं ज़िल हिज्जा तक एहराम बांधने के बा'द इस दरमियान में जब चाहे रख ले ख़्वाह एक साथ या मुतफ़र्रिक़ कर के, बेहतर येह है कि 7, 8, 9 ज़िल हिज्जा को रखे। **372 मस्अला :** अहले मक्का के लिये न तमत्तोअ़ है न क़िरान, और हुदूदे मवाक़ीत के अन्दर के रहने वाले अहले मक्का में दाख़िल हैं। **मवाक़ीत :** पांच हैं (1) ज़ुल हुलैफ़ा (2) ज़ाते इर्क़ (3) जुह़फ़ा (4) क़र्न (5) यलम्लम। "ज़ुल हुलैफ़ा" अहले मदीना के लिये, "ज़ाते इर्क़" अहले इराक़ के लिये, "जुह़फ़ा" अहले शाम के लिये, "क़र्न" अहले नज्द के लिये, "यलम्लम" अहले यमन के लिये। **373 :** शव्वाल, ज़ुल क़ा'दा और दस तारीख़ें ज़िल हिज्जा की। हज के अफ़्आल इन्ही अय्याम में दुरुस्त हैं। **मस्अला :** अगर किसी ने इन अय्याम से पहले हज का एहराम बांधा तो जाइज़ है लेकिन ब कराहत। **374 :** या'नी हज को अपने ऊपर लाज़िम व वाजिब करे एहराम बांध कर या तल्बिया कह कर या हदी (कुरबानी का जानवर) चला कर। उस पर येह चीज़ें लाज़िम हैं जिन का आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **375 :** "رَفَث" जिमाअ़ या औरतों के सामने ज़िक्रे जिमाअ़ या कलामे फ़ोह़्श करना है, निकाह़ इस में दाख़िल नहीं। **मस्अला :** मोह़रिम व मोह़रिमा (एह़राम वाले अजनबी मर्द व औरत) का निकाह़ जाइज़ है मुजामअ़त जाइज़ नहीं। "فُسُوق" से मआ़सी व सय्यिआत, और "جِدَال" से झगड़ा मुराद है ख़्वाह वोह अपने रफ़ीक़ों या ख़ादिमों के साथ हो या ग़ैरों के साथ।

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ

करो **अल्लाह** उसे जानता है[376] और तोशा (सफ़र का ख़र्च) साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है[377] और मुझ से डरते रहो

يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

ऐ अ़क़्ल वालो[378] तुम पर कुछ गुनाह नहीं[379] कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो

فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَ

तो जब अ़रफ़ात से पलटो[380] तो **अल्लाह** की याद करो[381] मश्अ़रे ह़राम के पास[382] और

اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ

उस का ज़िक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक तुम इस से पहले बहके हुए थे[383] फिर बात

اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

येह है कि ऐ क़ुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहां से लोग पलटते हैं[384] और **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ

मेह्रबान है फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर चुको[385] तो **अल्लाह** का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे[386] बल्कि

376 : बदियों की मुमानअ़त के बा'द नेकियों की तरग़ीब फ़रमाई कि बजाए फ़िस्क़ के तक़्वा और बजाए जिदाल के अख़्लाक़े ह़मीदा इख़्तियार करो। **377 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ यमनी ह़ज के लिये बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मुतवक्किल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर सुवाल शुरूअ़ करते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के मुरतकिब होते उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा ले कर चलो ! औरों पर बार न डालो, सुवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज़ गारी है। एक क़ौल येह है कि तक़्वा का तोशा साथ लो जिस त़रह़ दुन्यवी सफ़र के लिये तोशा ज़रूरी है ऐसे ही सफ़रे आख़िरत के लिये परहेज़ गारी का तोशा लाज़िम है। **378 :** या'नी अ़क़्ल का मुक़्तज़ा ख़ौफ़े इलाही है जो **अल्लाह** से न डरे वोह बे अ़क़्लों की त़रह़ है। **379 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मानों ने ख़याल किया कि राहे ह़ज में जिस ने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उस का ह़ज ही क्या ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** जब तक तिजारत से अफ़्आ़ले ह़ज की अदा में फ़र्क़ न आए उस वक़्त तक तिजारत मुबाह़ है। **380 :** "अ़रफ़ात" एक मक़ाम का नाम है जो मौक़िफ़ (ह़ाजियों के ठहरने की जगह) है। ज़ह्ह़ाक का क़ौल है कि ह़ज़रते आदम और ह़ज़रते ह़व्वा जुदाई के बा'द 9 ज़िल ह़िज्जा को अ़रफ़ात के मक़ाम पर जम्अ़ हुए और दोनों में तआ़रुफ़ हुवा, इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा और मक़ाम का नाम अ़रफ़ात हुवा। एक क़ौल येह है कि चूंकि इस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हैं इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा है। **मस्अला :** अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ फ़र्ज़ है क्यूं कि इफ़ाज़ा (मश्अ़रे ह़राम की त़रफ़ जाना) बिला वुक़ूफ़ मुतसव्वर नहीं। **381 :** तल्बिया व तहलील ("لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ" और "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना) व तक्बीर व सना व दुआ़ के साथ या नमाज़े मग़रिब व इ़शा के साथ **382 :** मश्अ़रे ह़राम जबले क़ुज़ह़ है जिस पर इमाम वुक़ूफ़ करता है। **मस्अला :** वादिये मुह़स्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा मौक़िफ़ है इस में वुक़ूफ़ वाजिब है बे उ़ज़्र तर्क करने से दम लाज़िम आता है, और मश्अ़रे ह़राम के पास वुक़ूफ़ अफ़्ज़ल है। **383 :** त़रीक़े ज़िक्र व इ़बादत कुछ न जानते थे। **384 :** क़ुरैश मुज़्दलिफ़ा में ठहरे रहते थे और सब लोगों के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ न करते, जब लोग अ़रफ़ात से पलटते तो येह मुज़्दलिफ़ा से पलटते और इस में अपनी बड़ाई समझते, इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करें और एक साथ पलटें येही ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام की सुन्नत है। **385 :** त़रीक़े ह़ज का मुख़्तसर बयान येह है कि ह़ाजी 8 ज़िल ह़िज्जा की सुब्ह़ को मक्कए मुकर्रमा से मिना की त़रफ़ रवाना हो वहां अ़रफ़ा या'नी 9 ज़िल ह़िज्जा की फ़ज्र तक ठहरे, उसी रोज़ मिना से अ़रफ़ात आए। बा'दे ज़वाल इमाम दो ख़ुत़्बे पढ़े यहां ह़ाजी ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ इमाम के साथ ज़ोहर के वक़्त में जम्अ़ कर के पढ़े, इन दोनों नमाज़ों के लिये अज़ान एक होगी और तक्बीरें दो और दोनों नमाज़ों के दरमियान सुन्नते ज़ोहर के सिवा कोई नफ़्ल न पढ़ा जाए, इस जम्अ़ के लिये इमामे आ'ज़म ज़रूरी है अगर इमामे

اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى

इस से ज़ियादा और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में दे और

الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا

आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में

حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ

भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा[387] ऐसों को उन की कमाई से

النصف

مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْۤ اَيَّامٍ

भाग है[388] और **अल्लाह** जल्द ह़िसाब करने वाला है[389] और **अल्लाह** की याद करो गिने हुए

مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَاۤ

दिनों में[390] तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस

اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

पर गुनाह नहीं परहेज़ गार के लिये[391] और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है

आ'ज़म न हो, या गुमराह बद मज़्हब हो तो हर एक नमाज़ अ़लाह़दा अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए। और अ़रफ़ात में ग़ुरूब तक ठहरे फिर मुज़्दलिफ़ा की त़रफ़ लौटे और जबले क़ुज़ह के क़रीब उतरे, मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इ़शा की नमाज़ें जम्अ़ कर के इ़शा के वक़्त पढ़े और फ़ज्र की नमाज़ ख़ूब अव्वल वक़्त अंधेरे में पढ़े। वादिये मुह़स्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा और बत़्ने उ़रना के सिवा तमाम अ़रफ़ात मौक़िफ़ है। जब सुब्ह़ ख़ूब रोशन हो तो रोज़े नह़्र या'नी 10 ज़िल ह़िज्जा को मिना की त़रफ़ आए और बत़्ने वादी से जमरए अ़क़बा की 7 मर्तबा रमी करे। फिर अगर चाहे क़ुरबानी करे फिर बाल मुंडाए या कतराए, फिर अय्यामे नह़्र में से किसी दिन त़वाफ़े ज़ियारत करे। फिर मिना आ कर तीन रोज़ इक़ामत करे और ग्यारहवीं के ज़वाल के बा'द तीनों जमरों की रमी करे उस जमरे से शुरूअ़ करे जो मस्जिद के क़रीब है फिर जो उस के बा'द है फिर जमरए अ़क़बा, हर एक की सात सात मरतबा, फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही, फिर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ चला आए। (तफ़्सील कुतुबे फ़िक़्ह में मज़्कूर है)। **386 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब ह़ज के बा'द का'बे के क़रीब अपने बाप दादा के फ़ज़ाइल बयान किया करते थे, इस्लाम में बताया गया कि येह शोहरत व ख़ुदनुमाई की बेकार बातें हैं, बजाए इस के ज़ौक़ो शौक़ के साथ ज़िक्रे इलाही करो। **मस्अला :** इस आयत से ज़िक्रे जह्र व ज़िक्रे जमाअ़त साबित होता है। **387 :** दुआ़ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाईं **: एक** वोह काफ़िर जिन की दुआ़ में सिर्फ़ त़लबे दुन्या होती थी आख़िरत पर उन का ए'तिक़ाद न था, उन के ह़क़ में इर्शाद हुवा कि आख़िरत में उन का कुछ ह़िस्सा नहीं। **दूसरे** वोह ईमानदार जो दुन्या व आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ़ करते हैं। **मस्अला :** मोमिन दुन्या की बेहतरी जो त़लब करता है वोह भी अम्रे जाइज़ और दीन की ताईद व तक़्वियत के लिये, इस लिये इस की येह दुआ़ भी उमूरे दीन से है। **388 : मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि दुआ़ कस्ब व आ'माल में दाख़िल है। ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अक्सर येही दुआ़ फ़रमाते थे ''اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ''। **389 :** अ़न्क़रीब क़ियामत क़ाइम कर के बन्दों का ह़िसाब फ़रमाएगा। तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्रो दुआ़ व त़ाअ़त में जल्दी करें। (مدارک وخازن) **390 :** उन दिनों से अय्यामे तशरीक़ (ज़िल ह़िज्जा के तीन दिन 11, 12, 13), और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बा'द और रम्ये जिमार के वक़्त तक्बीर कहना मुराद है। **391 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग दो फ़रीक़ थे बा'ज़ जल्दी करने वालों को गुनहगार बताते थे, बा'ज़ रह जाने वालों को। क़ुरआने पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनहगार नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا

और बा'ज़ आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे[392] और अपने दिल की बात पर **अल्लाह** को

فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ

गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता

فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿۲۰۵﴾ وَاِذَا قِيْلَ

फिरे और खेती और जानें तबाह करे और **अल्लाह** फ़साद से राज़ी नहीं और जब उस से कहा

لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

जाए कि **अल्लाह** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की[393] ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ

और कोई आदमी अपनी जान बेचता है[394] **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर

بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا

मेहरबान है ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो[395] और शैतान

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

के क़दमों पर न चलो[396] बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और अगर इस के बा'द भी बिचलो (बहको) कि

392 शाने नुज़ूल : येह और इस से अगली आयत अख़्नस बिन शुरैक़ मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत लजाजत (ख़ुशामद) से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और आप की महब्बत का दा'वा करता और इस पर क़समें खाता, और दरपर्दा फ़साद अंगेज़ी में मसरूफ़ रहता था, मुसल्मानों के मवेशी को इस ने हलाक किया और उन की खेती को आग लगा दी। **393 :** गुनाह से ज़ुल्म व सरकशी (करना) और नसीहत की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करना मुराद है। (خازن) **394 शाने नुज़ूल :** हज़रते सुहैब इब्ने सिनान रूमी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत कर के हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ रवाना हुए, मुश्रिकीने क़ुरैश की एक जमाअ़त ने आप का तआ़क़ुब किया तो आप सुवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ क़ुरैश ! तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न कर दूं, और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उस से मारूं ! उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअ़त का खेत (ख़ातिमा) हो जाएगा ! अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में मदफ़ून है तो मैं तुम्हें उस का पता बता दूं तुम मुझ से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करो ! वोह इस पर राज़ी हो गए और आप ने अपने तमाम माल का पता बता दिया, जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो येह आयत नाज़िल हुई, हुज़ूर ने तिलावत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारी येह जान फ़रोशी बड़ी नाफ़ेअ़ तिजारत है। **395 शाने नुज़ूल :** अहले किताब में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने के बा'द शरीअ़ते मूसवी के बा'ज़ अह़काम पर क़ाइम रहे, शम्बा (हफ़्ते के दिन) की ता'ज़ीम करते इस रोज़ शिकार से इज्तिनाब लाज़िम जानते, और ऊंट के दूध और गोश्त से परहेज़ करते, और येह ख़याल करते कि येह चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह़ हैं इन का करना ज़रूरी नहीं और तौरैत में इन से इज्तिनाब लाज़िम किया गया है तो इन के तर्क करने में इस्लाम की मुख़ालफ़त भी नहीं है और शरीअ़ते मूसवी पर अ़मल भी होता है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के अह़काम का पूरा इत्तिबाअ़ करो या'नी तौरैत के अह़काम मन्सूख़ हो गए अब उन से तमस्सुक (या'नी उन पर अ़मल) न करो। (خازن) **396 :** उस के वसाविस व शुबुहात में न आओ।

جَآءَتۡكُمُ الۡبَيِّنٰتُ فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿۲۰۹﴾ هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ

तुम्हारे पास रोशन हुक्म आ चुके[397] तो जान लो कि अल्लाह ज़बर दस्त हिक्मत वाला है काहे के इन्तिज़ार में हैं[398]

اِلَّاۤ اَنۡ يَّاۡتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىۡ ظُلَلٍ مِّنَ الۡغَمَامِ وَالۡمَلٰٓـئِكَةُ وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ ؕ

मगर येही कि अल्लाह का अज़ाब आए छाए हुए बादलों में और फ़िरिश्ते उतरें[399] और काम हो चुके

وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۲۱۰﴾ ع سَلۡ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ كَمۡ اٰتَيۡنٰهُمۡ مِّنۡ اٰيَةٍ

और सब कामों की रुजूअ़ अल्लाह ही की त़रफ़ है बनी इसराईल से पूछो हम ने कितनी रोशन निशानियां उन्हें

بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنۡ يُّبَدِّلۡ نِعۡمَةَ اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ

दीं[400] और जो अल्लाह की आई हुई ने'मत को बदल दे[401] तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब

الۡعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾ زُيِّنَ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوا الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا وَيَسۡخَرُوۡنَ مِنَ الَّذِيۡنَ

सख़्त है काफ़िरों की निगाह में दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता की गई[402] और मुसल्मानों से हंसते

اٰمَنُوۡا ۘ وَالَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا فَوۡقَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرۡزُقُ مَنۡ

हैं[403] और डर वाले उन से ऊपर होंगे क़ियामत के दिन[404] और ख़ुदा जिसे

يَّشَآءُ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۚ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ

चाहे बे गिनती दे लोग एक दीन पर थे[405] फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِيۡنَ وَمُنۡذِرِيۡنَ ۖ وَاَنۡزَلَ مَعَهُمُ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَ

ख़ुश ख़बरी देते[406] और डर सुनाते[407] और उन के साथ सच्ची किताब उतारी[408] कि वोह लोगों में

397 : और बा वुजूद वाज़ेह़ दलीलों के इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करो 398 : मिल्लते इस्लाम के छोड़ने और शैत़ान की फ़रमां बरदारी करने वाले 399 : जो अ़ज़ाब पर मामूर हैं। 400 : कि उन के अम्बिया के मो'जिज़ात को उन के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील बनाया, उन के इर्शाद और उन की किताबों को दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का शाहिद किया। 401 : अल्लाह की ने'मत से आयाते इलाहिय्यह मुराद हैं जो सबबे रुश्दो हिदायत हैं और इन की बदौलत गुमराही से नजात ह़ासिल होती है, इन्हीं में से वोह आयात हैं जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और हुज़ूर की नुबुव्वत व रिसालत का बयान है। यहूदो नसारा की तह़रीफ़ें उस ने'मत की तब्दील है। 402 : वोह इसी की क़द्र करते और इसी पर मरते हैं 403 : और सामाने दुन्यवी से इन की बे रग़्बती देख कर इन की तह़क़ीर करते हैं, जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द और अ़म्मार बिन यासिर और सुहैब व बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को देख कर कुफ़्फ़ार तमस्ख़ुर (मज़ाक़) करते थे और दौलते दुन्या के ग़ुरूर में अपने आप को ऊंचा समझते थे। 404 : या'नी ईमानदार रोज़े क़ियामत जन्नाते आ़लिया में होंगे और मग़रूर कुफ़्फ़ार जहन्नम में ज़लीलो ख़्वार। 405 : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने से अ़हदे नूह़ तक सब लोग एक दीन और एक शरीअ़त पर थे, फिर इन में इख़्तिलाफ़ हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया, येह बि'सत में पहले रसूल हैं। (خازن) 406 : ईमानदारों और फ़रमां बरदारों को सवाब की। (مدارک وخازن) 407 : काफ़िरों और ना फ़रमानों को अ़ज़ाब का। (خازن) 408 : जैसा कि ह़ज़रते आदम व शीस व इदरीस पर सह़ाइफ़ और ह़ज़रते मूसा पर तौरैत, ह़ज़रते दावूद पर ज़बूर, ह़ज़रते ईसा पर इन्जील और ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ुरआन।

النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ

उन के इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला कर दे और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी[409] बा'द इस के कि

بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا

उन के पास रोशन हुक्म आ चुके[410] आपस की सरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वोह हक़ बात सुझा दी

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى

जिस में झगड़ रहे थे अपने हुक्म से और अल्लाह जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ

सीधी राह दिखाए क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर

مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا

अगलों की सी रूदाद न आई[411] पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत और हिला हिला डाले गए

حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ

यहां तक कि कह उठा रसूल[412] और उस के साथ के ईमान वाले कब आएगी अल्लाह की मदद[413] सुन लो बेशक

نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

अल्लाह की मदद क़रीब है तुम से पूछते हैं[414] क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ

करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिये है

409 : येह इख़्तिलाफ़ तब्दील व तह्रीफ़ और ईमान व कुफ़्र के साथ था जैसा कि यहूदो नसारा से वाक़ेअ हुवा। (خازن) **410 :** या'नी येह इख़्तिलाफ़ नादानी से न था बल्कि **411 :** और जैसी सख़्तियां उन पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ग़ज़्वए अहज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसल्मानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं, इस में इन्हें सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से ख़ासाने ख़ुदा का मा'मूल रहा है, अभी तो तुम्हें पहलों की सी तक्लीफ़ें पहुंची भी नहीं हैं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم सायए का'बा में अपनी चादर मुबारक से तक्या किये हुए तशरीफ़ फ़रमा थे हम ने हुज़ूर से अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर हमारे लिये क्यूं दुआ़ नहीं फ़रमाते, हमारी क्यूं मदद नहीं करते? फ़रमाया : तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबाए जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंघियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे, और इन में की कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी। **412 :** या'नी शिद्दत इस निहायत (हद) को पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उन के फ़रमां बरदार मोमिन भी तलबे मदद में जल्दी करने लगे बा वुजूदे कि रसूल बड़े साबिर होते हैं और उन के अस्हाब भी। लेकिन बा वुजूद इन इन्तिहाई मुसीबतों के वोह लोग अपने दीन पर क़ाइम रहे और कोई मुसीबत व बला उन के हाल को मुतग़य्यर न कर सकी। **413 :** इस के जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और येह इर्शाद हुवा **414 शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़म्र बिन जमूह़ के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे, इन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم से सुवाल किया था

وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ

और जो भलाई करो[415] बेशक अल्लाह उसे जानता है[416] तुम पर फ़र्ज़ हुवा खुदा की राह में लड़ना

وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ

और वोह तुम्हें ना गवार है[417] और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि

تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾

कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[418]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ

तुम से पूछते हैं माहे ह़राम में लड़ने का हुक्म[419] तुम फ़रमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है[420]

وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ

और अल्लाह की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे ह़राम से रोकना और उस के बसने

اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا

वालों को निकाल देना[421] अल्लाह के नज़्दीक येह गुनाह इस से भी बड़े हैं और इन का फ़साद[422] क़त्ल से सख़्त तर है[423] और

يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ

हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े[424] और तुम में

कि क्या ख़र्च करें और किस पर ख़र्च करें ? इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माल क़लील या कसीर ख़र्च करो उस में सवाब है और मसारिफ़ उस के येह हैं। **मस्अला :** आयत में सदक़ए नाफ़िला का बयान है, मां बाप को ज़कात और सदक़ाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं (جمل وغیرہ) **415 :** येह हर नेकी को आम है इन्फ़ाक़ हो या और कुछ, और बाक़ी मसारिफ़ भी इस में आ गए। **416 :** उस की जज़ा अ़ता फ़रमाएगा। **417 मस्अला :** जिहाद फ़र्ज़ है जब इस की शराइत़ पाई जाएं, अगर काफ़िर मुसल्मानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद फ़र्ज़े ऐन होता है वरना फ़र्ज़े किफ़ाया। **418 :** कि तुम्हारे हक़ में क्या बेहतर है। तो तुम पर लाज़िम है हुक्मे इलाही की इत़ाअ़त करो और उसी को बेहतर समझो चाहे वोह तुम्हारे नफ़्स पर गिरां हो। **419 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन जहूश की सरकर्दगी में मुजाहिदीन की एक जमाअ़त रवाना फ़रमाई थी उस ने मुश्रिकीन से क़िताल किया, उन का ख़याल था कि वोह रोज़ जुमादल उख़्रा का आख़िर दिन है मगर दर हक़ीक़त चांद 29 को हो गया था और वोह रजब की पहली तारीख़ थी, इस पर कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को आ़र दिलाई कि तुम ने माहे ह़राम में जंग की और हुज़ूर से इस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होने लगे इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **420 :** मगर सह़ाबा से येह गुनाह वाक़ेअ़ नहीं हुवा क्यूं कि उन्हें चांद होने की ख़बर ही न थी उन के नज़्दीक वोह दिन माहे ह़राम रजब का न था। **मस्अला :** माह हाए ह़राम में जंग की हुरमत का हुक्म आयए "فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ" (तो मुश्रिकों को मारो जहां पाओ) से मन्सूख़ हो गया। **421 :** जो मुश्रिकीन से वाक़ेअ़ हुवा कि उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को साले हुदैबिया का'बए मुअ़ज़्ज़मा से रोका और आप के ज़मानए क़ियामे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आप को और आप के अस्ह़ाब को इतनी ईज़ाएं दीं कि वहां से हिजरत करना पड़ी **422 :** या'नी मुश्रिकीन का। कि वोह शिर्क करते हैं और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और मोमिनीन को मस्जिदे ह़राम से रोकते और त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देते हैं **423 :** क्यूं कि क़त्ल तो बा'ज़ ह़ालात में मुबाह़ होता है और कुफ़्र किसी ह़ाल में मुबाह़ नहीं, और यहां तारीख़ का मश्कूक होना उ़ज़्रे मा'क़ूल है और कुफ़्फ़ार के कुफ़्र के लिये तो कोई उ़ज़्र ही नहीं। **424 :** इस में ख़बर दी गई है कि कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से हमेशा अ़दावत रखेंगे कभी इस के ख़िलाफ़ न होगा और जहां तक उन से मुम्किन होगा वोह मुसल्मानों को दीन से मुन्ह़रिफ़ करने की सई करते

يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ

जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

दुन्या में और आख़िरत में[425] (الف) और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने अल्लाह के लिये अपने घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े

اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ

वोह रह़मते इलाही के उम्मीद वार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[425] (ب) तुम से शराब

عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَ

और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और

اِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है[426] और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें[427] तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे[428]

रहेंगे। "اِنِ اسْتَطَاعُوْا" से मुस्तफ़ाद होता है कि बि करमिही तआ़ला वोह अपनी इस मुराद में नाकाम रहेंगे। **425 (الف) मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम आ'माल बातिल हो जाते हैं। आख़िरत में तो इस त़रह़ कि उन पर कोई अज्रो सवाब नहीं, और दुन्या में इस त़रह़ कि शरीअ़त मुरतद के क़त्ल का हुक्म देती है, उस की औरत उस पर ह़लाल नहीं रहती, वोह अपने अक़ारिब का वरसा पाने का मुस्तह़िक़ नहीं रहता, उस का माल मा'सूम नहीं रहता, उस की मद्ह़ो सना व इमदाद जाइज़ नहीं। (روح البیان وغیرہ) **425 (ب) शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श की सरकर्दगी में जो मुजाहिदीन भेजे गए थे उन की निस्बत बा'ज़ लोगों ने कहा कि चूंकि उन्हें ख़बर न थी कि येह दिन रजब का है इस लिये उस रोज़ क़िताल करना गुनाह तो न हुवा लेकिन इस का कुछ सवाब भी न मिलेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि उन का येह अ़मले जिहाद मक़्बूल है और इस पर उन्हें उम्मीद वारे रह़मते इलाही रहना चाहिये और येह उम्मीद क़त्अ़न पूरी होगी। (خازن) **मस्अला :** "يَرْجُوْنَ" से ज़ाहिर हुवा कि अ़मल से अज्र वाजिब नहीं होता बल्कि सवाब देना मह़्ज़ फ़ज़्ले इलाही है। **426 :** ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक क़त़रा कूंएं में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूं, और अगर दरिया में शराब का क़त़रा पड़े फिर दरिया ख़ुश्क हो और वहां घास पैदा हो उस में अपने जानवरों को न चराऊं। سُبحٰنَ اللہ ! गुनाह से किस क़दर नफ़रत है। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى اِتِّبَاعَهُمْ (अल्लाह तआ़ला हमें इन की इत्तिबाअ़ नसीब फ़रमाए)। शराब 3 सि.हि. में ग़ज़्वए अह़ज़ाब से चन्द रोज़ बा'द ह़राम की गई इस से क़ब्ल येह बताया गया था कि जूए और शराब का गुनाह इन के नफ़्अ़ से ज़ियादा है। नफ़्अ़ तो येही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या इस की ख़रीदो फ़रोख़्त से तिजारती फ़ाएदा होता है, और जूए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है। और गुनाहों और मफ़्सदों का क्या शुमार ! अ़क़्ल का ज़वाल, ग़ैरत व ह़मिय्यत का ज़वाल, इबादात से मह़रूमी, लोगों से अ़दावतें, सब की नज़र में ख़्वार होना, दौलतो माल की इज़ाअ़त। **एक रिवायत** में है कि जिब्रीले अमीन ने ह़ुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم के ह़ुज़ूर में अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला को जा'फ़रे तय्यार की चार ख़स्लतें पसन्द हैं ह़ुज़ूर ने ह़ज़रते जा'फ़र رضی اللہ عنہ से दरयाफ़्त फ़रमाया : उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि **एक** तो येह है कि मैं ने शराब कभी नहीं पी या'नी ह़ुक्मे ह़ुरमत से पहले भी और इस की वज्ह येह थी कि मैं जानता था कि इस से अ़क़्ल ज़ाइल होती है और मैं चाहता था कि अ़क़्ल और भी तेज़ हो, **दूसरी ख़स्लत** येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मैं ने कभी बुत की पूजा नहीं की क्यूं कि मैं जानता था कि येह पथ्थर है न नफ़्अ़ दे सके न ज़रर, **तीसरी** ख़स्लत येह है कि कभी मैं ज़िना में मुब्तला न हुवा कि इस को बे ग़ैरती समझता था, **चौथी** ख़स्लत येह कि मैं ने कभी झूट नहीं बोला क्यूं कि मैं इस को कमीना पन ख़याल करता था। **मस्अला :** शत़रन्ज, ताश वग़ैरा हार जीत के खेल और जिन पर बाज़ी लगाई जाए सब जूए में दाख़िल और ह़राम हैं। (روح البیان) **427 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने मुसल्मानों को सदक़ा देने की रग़बत दिलाई तो आप से दरयाफ़्त किया गया कि मिक़्दार इर्शाद फ़रमाएं कितना माल राहे ख़ुदा में दिया जाए ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **428 :** या'नी जितना

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱۹﴾ فِى الدُّنْيَا وَ

इसी तरह **अल्लाह** तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम दुन्या और आख़िरत के काम सोच

الْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ

कर करो[429] और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं[430] तुम फ़रमाओ उन का भला करना बेहतर है और अगर

تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ

अपना उन का ख़र्च मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से और **अल्लाह** चाहता

اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ

तो तुम्हें मशक़्क़त में डालता बेशक **अल्लाह** ज़बर दस्त हिक्मत वाला है और शिर्क वाली औ़रतों से निकाह़ न करो

حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا

जब तक मुसल्मान न हो जाएं[431] और बेशक मुसल्मान लौंडी मुश्रिका से अच्छी[432] अगर्चे वोह तुम्हें भाती हो और

تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ

मुश्रिकों के निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न लाएं[433] और बेशक मुसल्मान ग़ुलाम मुश्रिक से अच्छा

तुम्हारी ह़ाजत से ज़ाइद हो। इब्तिदाए इस्लाम में ह़ाजत से ज़ाइद माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ था, सह़ाबए किराम अपने माल में से अपनी ज़रूरत की क़द्र ले कर बाक़ी सब राहे ख़ुदा में तसद्दुक़ कर देते थे! येह हुक्म आयते ज़कात से मन्सूख़ हो गया। **429 :** कि जितना तुम्हारी दुन्यवी ज़रूरत के लिये काफ़ी हो वोह ले कर बाक़ी सब अपने नफ़्अ़ आख़िरत के लिये ख़ैरात कर दो। (خازن) **430 :** कि इन के अम्वाल को अपने माल से मिलाने का क्या हुक्म है। **शाने नुज़ूल :** आयत "اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا" के नुज़ूल के बा'द लोगों ने यतीमों के माल जुदा कर दिये और उन का खाना पीना अ़लाह़दा कर दिया, इस में येह सूरतें भी पेश आईं कि जो खाना यतीम के लिये पकाया और उस में से कुछ बच रहा वोह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया उस में यतीमों का नुक़्सान हुवा, येह सूरतें देख कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि अगर यतीम के माल की ह़िफ़ाज़त की नज़र से उस का खाना, उस के औलिया अपने खाने के साथ मिला लें तो इस का क्या हुक्म है? इस पर येह आयत नाज़िल हुई और यतीमों के फ़ाएदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई। **431 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते मरसद ग़नवी एक बहादुर शख़्स थे सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा रवाना फ़रमाया ताकि वहां से तदबीर के साथ मुसल्मानों को निकाल लाएं! वहां अ़नाक़ नामी एक मुश्रिका औ़रत थी ज़मानए जाहिलिय्यत में इन के साथ मह़ब्बत रखती थी ह़सीन और मालदार थी, जब उस को इन की आमद की ख़बर हुई तो वोह आप के पास आई और त़ालिबे विसाल हुई, आप ने बख़ौफ़े इलाही उस से ए'राज़ किया और फ़रमाया कि इस्लाम इस की इजाज़त नहीं देता! तब उस ने निकाह़ की दरख़्वास्त की, आप ने फ़रमाया कि येह भी रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है, अपने काम से फ़ारिग़ हो कर जब आप ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो ह़ाल अ़र्ज़ कर के निकाह़ की बाबत दरयाफ़्त किया! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر احمدی) बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : जो कोई नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र करे वोह मुश्रिक है ख़्वाह **अल्लाह** को वाह़िद ही कहता हो और तौह़ीद का मुद्दई हो। (خازن) **432 शाने नुज़ूल :** एक रोज़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने किसी ख़त़ा पर अपनी बांदी के त़मांचा मारा फिर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर इस का ज़िक्र किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस का ह़ाल दरयाफ़्त किया। अ़र्ज़ किया कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और हुज़ूर की रिसालत की गवाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, ख़ूब वुज़ू करती और नमाज़ पढ़ती है! हुज़ूर ने फ़रमाया : वोह मोमिना है। आप ने अ़र्ज़ किया तो उस की क़सम! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर मब्ऊ़स फ़रमाया मैं उस को आज़ाद कर के उस के साथ निकाह़ करूंगा! और आप ने ऐसा ही किया, इस पर लोगों ने ता'ना ज़नी की, कि तुम ने एक सियाह फ़ाम बांदी के साथ निकाह़ किया बा वुजूदे कि फ़ुलां मुश्रिका हुर्रा (आज़ाद) औ़रत तुम्हारे लिये ह़ाज़िर है वोह ह़सीन भी है मालदार भी है, इस पर नाज़िल हुवा "وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ" या'नी मुसल्मान बांदी मुश्रिका से बेहतर है ख़्वाह मुश्रिका आज़ाद हो और हुस्न व माल की वज्ह से अच्छी मा'लूम होती हो। **433 :** येह औ़रत के

وَلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ

अगर्चे वोह तुम्हें भाता हो वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं[434] और अल्लाह जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़

وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾

बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वोह नसीह़त मानें

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي

और तुम से पूछते हैं ह़ैज़ का हुक्म[435] तुम फ़रमाओ वोह नापाकी है तो औ़रतों से अलग रहो

الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ

ह़ैज़ के दिनों और उन से नज़्दीकी न करो जब तक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ

حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

जहां से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया बेशक अल्लाह पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ

तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेती में जिस त़रह़ चाहो[436] और अपने भले का काम पहले करो[437]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَلَا

और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है और ऐ मह़बूब बिशारत दो ईमान वालों को और

تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ

अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बना लो[438] कि एह़सान और परहेज़ गारी और लोगों में सुल्ह़ करने

औलिया को ख़िताब है। **मस्अला :** मुसल्मान औ़रत का निकाह़ मुश्रिक व काफ़िर के साथ बाति़ल व ह़राम है। **434 :** तो उन से इज्तिनाब ज़रूरी और उन के साथ दोस्ती व क़राबत ना रवा। **435 शाने नुज़ूल :** अ़रब के लोग यहूद व मजूस की त़रह़ हाइज़ा औ़रतों से कमाले नफ़रत करते थे, साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था, बल्कि शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि उन की त़रफ़ देखना और उन से कलाम भी ह़राम समझते थे, और नसारा इस के बर अ़क्स ह़ैज़ के अय्याम में औ़रतों के साथ बड़ी मह़ब्बत से मश्ग़ूल होते थे और इख़्तिलात़ (मेलजोल) में बहुत मुबालग़ा करते थे। मुसल्मानों ने हु़ज़ूर से ह़ैज़ का हुक्म दरयाफ़्त किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ की राहें छोड़ कर ए'तिदाल की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि ह़ालते ह़ैज़ में औ़रतों से मुजामअ़त मम्नूअ़ है। **436 :** या'नी औ़रतों की क़ुरबत से नस्ल का क़स्द करो, न क़ज़ाए शह्वत का। **437 :** या'नी आ'माले सालिह़ा या जिमाअ़ से पहले "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ना। **438 :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने अपने बहनोई नो'मान बिन बशीर के घर जाने और उन से कलाम करने और उन के ख़ुसूम (दुश्मनों) के साथ उन की सुल्ह़ कराने से क़सम खा ली थी, जब इस के मुतअ़ल्लिक़ उन से कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं क़सम खा चुका हूं इस लिये येह काम कर ही नहीं सकता ! इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से क़सम खा लेने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स नेकी से बाज़ रहने की क़सम खा ले तो उस को चाहिये कि क़सम को पूरा न करे बल्कि वोह नेक काम करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी अम्र पर क़सम खा ली फिर मा'लूम हुवा कि ख़ैर और बेहतरी इस के ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अम्रे ख़ैर को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह भी कहा है

النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ

की क़सम कर लो और **अल्लाह** सुनता जानता है **अल्लाह** तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए

وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾

हां इस पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिल ने किये[439] और **अल्लाह** बख़्शने वाला हिल्म वाला है

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ

वोह जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औ़रतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत है पस अगर इस मुद्दत में फिर आए

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

तो **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो **अल्लाह** सुनता

عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا

जानता है[440] और त़लाक़ वालियां अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ तक[441] और

يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ

उन्हें ह़लाल नहीं कि छुपाएं वोह जो **अल्लाह** ने उन के पेट में पैदा किया[442] अगर **अल्लाह** और

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ

क़ियामत पर ईमान रखती हैं[443] और उन के शोहरों को इस मुद्दत के अन्दर उन के फेर लेने का ह़क़ पहुंचता है अगर

कि इस आयत से ब कसरत क़सम खाने की मुमानअ़त साबित होती है। **439 मस्अला :** क़सम तीन त़रह़ की होती है। (1) लग़्व (2) ग़मूस (3) मुन्अ़क़िदा। **लग़्व :** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खाए और दर ह़क़ीक़त वोह इस के ख़िलाफ़ हो ! येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं। **ग़मूस :** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर दानिस्ता झूटी क़सम खाए ! इस में गुनहगार होगा। **मुन्अ़क़िदा :** येह है कि किसी आयिन्दा अम्र पर क़स्द कर के क़सम खाए ! इस क़सम को अगर तोड़े तो गुनहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम। **440 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का येह मा'मूल था कि अपनी औ़रतों से माल त़लब करते अगर वोह देने से इन्कार करतीं तो एक साल दो साल तीन साल या इस से ज़ियादा अ़र्सा उन के पास न जाने और सोह़बत तर्क करने की क़सम खा लेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे, न वोह बेवा ही थीं कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं न शोहर दार कि शोहर से आराम पातीं, इस्लाम ने इस ज़ुल्म को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत मुअ़य्यन फ़रमा दी कि अगर औ़रत से चार महीने या इस से ज़ाइद अ़र्से के लिये या ग़ैर मुअ़य्यन मुद्दत के लिये तर्के सोह़बत की क़सम खा ले जिस को ''ईला'' कहते हैं तो इस के लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है, इस अ़र्से में ख़ूब सोच समझ ले कि औ़रत को छोड़ना इस के लिये बेहतर है या रखना, अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रुजूअ़ करे तो निकाह़ बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा, और अगर इस मुद्दत में रुजूअ़ न किया और क़सम न तोड़ी तो औ़रत निकाह़ से बाहर हो गई और उस पर त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो गई। **मस्अला :** अगर मर्द सोह़बत पर क़ादिर हो तो रुजूअ़ सोह़बत ही से होगा और अगर किसी वज्ह से क़ुदरत न हो तो बा'दे क़ुदरत सोह़बत का वा'दा रुजूअ़ है। (تفسیر احمدی) **441 :** इस आयत में मुत़ल्लक़ा औ़रतों की इ़द्दत का बयान है जिन औ़रतों को उन के शोहरों ने त़लाक़ दी, अगर वोह शोहर के पास न गई थीं और उन से ख़ल्वते सह़ीह़ा न हुई थी जब तो उन पर त़लाक़ की इ़द्दत ही नहीं है जैसा कि आयए "مَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ" में इर्शाद है। और जिन औ़रतों को ख़ुर्द साली (कम उ़म्री) या किब्र सिनी (बुढ़ापे) की वज्ह से हैज़ न आता हो या जो ह़ामिला हो उन की इ़द्दत का बयान सूरए त़लाक़ में आएगा, बाक़ी जो आज़ाद औ़रतें हैं यहां उन की इ़द्दत व त़लाक़ का बयान है कि उन की इ़द्दत तीन हैज़ है। **442 :** वोह ह़म्ल हो या ख़ूने हैज़। क्यूं कि उस के छुपाने से रज्अ़त और वलद में जो शोहर का ह़क़ है वोह ज़ाएअ़ होगा। **443 :** या'नी येही मुक़्तज़ाए ईमानदारी है।

اَرَادُوۡۤا اِصۡلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثۡلُ الَّذِىۡ عَلَيۡهِنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ۚ وَ

मिलाप चाहें[444] और औरतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शरअ़ के मुवाफ़िक़[445] और

لِلرِّجَالِ عَلَيۡهِنَّ دَرَجَةٌ ‌ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿۲۲۸﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۖ

मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत है और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है येह त़लाक़[446] दो बार तक है

فَاِمۡسَاكٌ ۢ بِمَعۡرُوۡفٍ اَوۡ تَسۡرِيۡحٌ ۢ بِاِحۡسَانٍ ‌ؕ وَلَا يَحِلُّ لَـكُمۡ اَنۡ

फिर भलाई के साथ रोक लेना है[447] या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना है[448] और तुम्हें रवा नहीं कि

تَاۡخُذُوۡا مِمَّاۤ اٰتَيۡتُمُوۡهُنَّ شَيۡـئًا اِلَّاۤ اَنۡ يَّخَافَاۤ اَلَّا يُقِيۡمَا حُدُوۡدَ

जो कुछ औरतों को दिया[449] उस में से कुछ वापस लो[450] मगर जब दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह की ह़दें क़ाइम न

اللّٰهِ ‌ؕ فَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا يُقِيۡمَا حُدُوۡدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَا فِيۡمَا

करेंगे[451] फिर अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि वोह दोनों ठीक इन्ही ह़दों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नहीं उस में जो बदला

افۡتَدَتۡ بِهٖ ‌ؕ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ فَلَا تَعۡتَدُوۡهَا ۚ وَمَنۡ يَّتَعَدَّ حُدُوۡدَ

दे कर औरत छुट्टी ले[452] येह अल्लाह की ह़दें हैं इन से आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की ह़दों से आगे

اللّٰهِ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۲۹﴾ فَاِنۡ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدُ حَتّٰى

बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं फिर अगर तीसरी त़लाक़ उसे दी तो अब वोह औ़रत इसे ह़लाल न होगी जब तक

444 : या'नी त़लाक़े रज्ई में इ़द्दत के अन्दर शोहर औ़रत से रुजूअ़ कर सकता है ख़्वाह औ़रत राज़ी हो या न हो लेकिन अगर शोहर को मिलाप मन्ज़ूर हो तो ऐसा करे, ज़रर रसानी का क़स्द न करे जैसा कि अहले जाहिलिय्यत औ़रत को परेशान करने के लिये करते थे। **445 :** या'नी जिस त़रह़ औ़रतों पर शोहरों के हुक़ूक़ की अदा वाजिब है इसी त़रह़ शोहरों पर औ़रतों के हुक़ूक़ की रिआ़यत लाज़िम है। **446 :** या'नी त़लाक़े रज्ई। **शाने नुज़ूल :** एक औ़रत ने सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि उस के शोहर ने कहा है कि वोह इस को त़लाक़ देता और रज्अ़त करता रहेगा हर मरतबा जब त़लाक़ की इ़द्दत गुज़रने के क़रीब होगी रज्अ़त कर लेगा फिर त़लाक़ दे देगा इसी त़रह़ उ़म्र भर इस को क़ैद रखेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमा दिया कि त़लाक़े रज्ई दो बार तक है इस के बा'द फिर त़लाक़ देने पर रज्अ़त का ह़क़ नहीं। **447 :** रज्अ़त कर के **448 :** इस त़रह़ कि रज्अ़त न करे और इ़द्दत गुज़र कर औ़रत बाइना हो जाए। **449 :** या'नी महर **450 :** त़लाक़ देते वक़्त **451 :** जो हुक़ूक़े ज़ौजैन के मुतअ़ल्लिक़ हैं। **452 :** या'नी त़लाक़ ह़ासिल करे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह के बाब में नाज़िल हुई, येह जमीला साबित इब्ने क़ैस इब्ने शम्मास के निकाह़ में थीं और शोहर से कमाले नफ़रत रखती थीं, रसूले ख़ुदा ﷺ के ह़ुज़ूर में अपने शोहर की शिकायत लाईं और किसी त़रह़ उन के पास रहने पर राज़ी न हुईं, तब साबित ने कहा कि मैं ने इन को एक बाग़ दिया है अगर येह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझ से अ़लाह़दगी चाहती हैं तो वोह बाग़ मुझे वापस करें मैं इन को आज़ाद कर दूं ! जमीला ने इस को मन्ज़ूर किया ! साबित ने बाग़ ले लिया और त़लाक़ दे दी। इस त़रह़ की त़लाक़ को ख़ुलअ़ कहते हैं। **मस्अला :** ख़ुलअ़ त़लाक़े बाइन होता है। **मस्अला :** ख़ुलअ़ में लफ़्ज़े "ख़ुलअ़" का ज़िक्र ज़रूरी है। **मस्अला :** अगर जुदाई की त़लब गार औ़रत हो तो ख़ुलअ़ में मिक़्दारे महर से ज़ाइद लेना मकरूह है, और अगर औ़रत की त़रफ़ से नुशूज़ (ना इत्तिफ़ाक़ी) न हो मर्द ही अ़लाह़दगी चाहे तो मर्द को त़लाक़ के इ़वज़ माल लेना मुत़्लक़न मकरूह है।

تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ

दूसरे ख़ावन्द के पास न रहे[453] फिर वोह दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो इन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जाएं[454] अगर

ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ

समझते हों कि **अल्लाह** की हदें निबाहेंगे और येह **अल्लाह** की हदें हैं जिन्हें बयान करता है

يَّعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۰﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ

दानिश मन्दों के लिये और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन की मीआद आ लगे[455] तो उस वक़्त तक या भलाई के

بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ

साथ रोक लो[456] या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ दो[457] और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना न हो कि हद से बढ़ो

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫

और जो ऐसा करे वोह अपना ही नुक़्सान करता है[458] और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठा न बना लो[459]

وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ

और याद करो **अल्लाह** का एहसान जो तुम पर है[460] और वोह जो तुम पर किताब

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

व हिक्मत[461] उतारी तुम्हें नसीहत देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿۲۳۱﴾ ع وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ

जानता है[462] और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन की मीआद पूरी हो जाए[463] तो ऐ औरतों के वालियो उन्हें न रोको इस से कि

يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ

अपने शोहरों से निकाह कर लें[464] जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रिज़ा मन्द हो जाएं[465] येह नसीहत उसे दी जाती है

453 मस्अला : तीन तलाक़ों के बा'द औरत शोहर पर ब हुर्मते मुग़ल्लज़ा हराम हो जाती है अब न उस से रुजूअ़ हो सकता है न दोबारा निकाह जब तक कि हलाला न हो या'नी बा'दे इद्दत दूसरे से निकाह करे और वोह बा'दे सोहबत तलाक़ दे फिर इद्दत गुज़रे। **454 :** दोबारा निकाह कर लें। **455 :** या'नी इद्दत तमाम होने के क़रीब हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत साबित बिन यसार अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई, इन्हों ने अपनी औरत को तलाक़ दी थी और जब इद्दत क़रीबे ख़त्म होती थी रज्अ़त कर लिया करते थे ताकि औरत क़ैद में पड़ी रहे। **456 :** या'नी निबाहने और अच्छा मुआमला करने की निय्यत से रज्अ़त करो **457 :** और इद्दत गुज़र जाने दो ताकि बा'दे इद्दत वोह आज़ाद हो जाएं। **458 :** कि हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त कर के गुनहगार होता है। **459 :** कि इन की परवाह न करो और इन के ख़िलाफ़ अ़मल करो। **460 :** कि तुम्हें मुसल्मान किया और सय्यिदे अम्बिया ﷺ का उम्मती बनाया। **461 :** किताब से कुरआन और हिक्मत से अहकामे कुरआन व सुन्नते रसूल ﷺ मुराद है। **462 :** उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं। **463 :** या'नी उन की इद्दत गुज़र चुके **464 :** जिन को उन्हों ने अपने निकाह के लिये तजवीज़ किया हो ख़्वाह वोह नए हों या येही तलाक़ देने वाले, या इन से पहले जो तलाक़ दे चुके थे। **465 :** अपने कुफ़ू में महरे मिस्ल पर। क्यूं कि इस के ख़िलाफ़ की सूरत में औलिया ए'तिराज़ व

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ

जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता हो येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और

اَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ

पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते और माएं दूध पिलाएं अपने

اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى

बच्चों को[466] पूरे दो बरस उस के लिये जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे[467] और जिस का

الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا

बच्चा है[468] उस पर औ़रतों का खाना पहनना है ह़स्बे दस्तूर[469] किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उस के

وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى

मक़्दूर भर मां को ज़रर न दिया जाए उस के बच्चे से[470] और न औलाद वाले को उस की औलाद से[471] या मां ज़रर न दे अपने बच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को[472] और जो

الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ा

तअ़र्रुज़ का ह़क़ रखते हैं। **शाने नुज़ूल :** मा'क़िल बिन यसार मुज़नी की बहन का निकाह़ आ़सिम बिन अ़दी के साथ हुवा था, उन्हों ने त़लाक़ दी और इ़द्दत गुज़रने के बा'द फिर आ़सिम ने दरख़्वास्त की तो मा'क़िल बिन यसार मानेअ़ हुए ! उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (بخاری شریف) **466 :** बयाने त़लाक़ के बा'द येह सुवाल तब्अ़न सामने आता है कि अगर त़लाक़ वाली औ़रत की गोद में शीर ख़्वार बच्चा हो तो इस जुदाई के बा'द उस की परवरिश का क्या त़रीक़ा होगा ? इस लिये येह क़रीने ह़िक्मत है कि बच्चे की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ मां बाप पर जो अह़काम हैं वोह इस मौक़अ़ पर बयान फ़रमा दिये जाएं ! लिहाज़ा यहां उन मसाइल का बयान हुवा। **मस्अला :** मां ख़्वाह मुत़ल्लक़ा हो या न हो उस पर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है बशर्ते कि बाप को उजरत पर दूध पिलवाने की क़ुदरत व इस्तित़ाअ़त न हो या कोई दूध पिलाने वाली मुयस्सर न आए या बच्चा मां के सिवा और किसी का दूध क़ुबूल न करे, अगर येह बातें न हों या'नी बच्चे की परवरिश ख़ास मां के दूध पर मौक़ूफ़ न हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब नहीं मुस्तह़ब है। (تفسیر احمدی و جمل وغیرہ) **467 :** या'नी इस मुद्दत का पूरा करना लाज़िम नहीं। अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उस के लिये ख़त़रा न हो तो इस से कम मुद्दत में भी छुड़ाना जाइज़ है। (تفسیر احمدی خازن وغیرہ) **468 :** या'नी वालिद। इस अन्दाज़े बयान से मा'लूम हुवा कि नसब बाप की त़रफ़ रुजूअ़ करता है। **469 मस्अला :** बच्चे की परवरिश और उस को दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मे वाजिब है इस के लिये वोह दूध पिलाने वाली मुक़र्रर करे लेकिन अगर मां अपनी रग़बत से बच्चे को दूध पिलाए तो मुस्तह़ब है। **मस्अला :** शोहर अपनी ज़ौजा पर बच्चे के दूध पिलाने के लिये जब्र नहीं कर सकता और न औ़रत शोहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत त़लब कर सकती है जब तक कि उस के निकाह़ या इ़द्दत में रहे। **मस्अला :** अगर किसी शख़्स ने अपनी ज़ौजा को त़लाक़ दी और इ़द्दत गुज़र चुकी तो वोह उस से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है। **मस्अला :** अगर बाप ने किसी औ़रत को अपने बच्चे के दूध पिलाने पर ब उजरत मुक़र्रर किया और उस की मां उसी उजरत पर या बे मुआ़वज़ा दूध पिलाने पर राज़ी हुई तो मां ही दूध पिलाने की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है, और अगर मां ने ज़ियादा उजरत त़लब की तो बाप को उस से दूध पिलवाने पर मजबूर न किया जाएगा। (تفسیر احمدی و مدارک) "اَلْمَعْرُوْف" से मुराद येह है कि ह़स्बे हैसिय्यत हो बिग़ैर तंगी और फ़ुज़ूल ख़र्ची के। **470 :** या'नी उस को उस के ख़िलाफ़े मरज़ी दूध पिलाने पर मजबूर न किया जाए। **471 :** ज़ियादा उजरत त़लब करे **472 :** मां का बच्चे को ज़रर देना येह है कि उस को वक़्त पर दूध न दे और उस की निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बा'द छोड़ दे, और बाप का बच्चे को ज़रर देना येह है कि मानूस बच्चे को मां से छीन ले या मां के ह़क़ में कोताही करे जिस से बच्चे को नुक़्सान पहुंचे।

وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا

और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को

اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَ

दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो और

اتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۳﴾ وَالَّذِيْنَ

अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है और तुम में जो

يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ

मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को

اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا

रोके रहें[473] तो जब उन की इद्दत पूरी हो जाए तो ऐ वालियो तुम पर मुआख़ज़ा नहीं उस काम में

فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾ وَلَا

जो औ़रतें अपने मुआ़मले में मुवाफ़िक़े शरअ़ करें और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ

तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा रख कर तुम औ़रतों के निकाह़ का पयाम दो या अपने दिल में

اَنْفُسِكُمْ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

छुपा रखो[474] अल्लाह जानता है कि अब तुम उन की याद करोगे[475] हां उन से ख़ुफ़्या वा'दा न

سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى

कर रखो मगर येह कि इतनी ही बात कहो जो शरअ़ में मा'रूफ़ है और निकाह़ की गिरह पक्की न करो जब तक

473 : ह़ामिला की इ़द्दत तो वज़्ए़ ह़म्ल है जैसा कि सूरए त़लाक़ में मज़्कूर है। यहां ग़ैरे ह़ामिला का बयान है जिस का शोहर मर जाए उस की इ़द्दत चार माह दस रोज़ है इस मुद्दत में न वोह निकाह़ करे न अपना मस्कन छोड़े न बे उ़ज़्र तेल लगाए न ख़ुश्बू लगाए न सिंगार करे न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने न मेहंदी लगाए न जदीद निकाह़ की बातचीत खुल कर करे, और जो त़लाक़े बाइन की इ़द्दत में हो उस का भी येही हुक्म है। अलबत्ता जो औ़रत त़लाक़े रज्ई की इ़द्दत में हो उस को ज़ीनत और सिंगार करना मुस्तह़ब है। **474 :** या'नी इ़द्दत में निकाह़ और निकाह़ का खुला हुवा पयाम तो मम्नूअ़ है लेकिन पर्दे के साथ ख़्वाहिशे निकाह़ का इज़्हार गुनाह नहीं मसलन येह कहे कि तुम बहुत नेक औ़रत हो, या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी त़रह़ न कहे। **475 :** और तुम्हारे दिलों में ख़्वाहिश होगी इसी लिये तुम्हारे वासित़े ता'रीज़ मुबाह़ की गई।

يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ

लिखा हुवा हुक्म अपनी मीआ़द को न पहुंच ले[476] और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है

فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ

तो उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला हि़ल्म वाला है तुम पर कुछ मुता़लबा नहीं[477] अगर

طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ

तुम औ़रतों को त़लाक़ दो जब तक तुम ने उन को हाथ न लगाया हो या कोई महर मुक़र्रर न कर लिया हो[478]

وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَ عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا

और उन को कुछ बरत्ने को दो[479] मक्दूर वाले पर उस के लाइक़ और तंगदस्त पर उस के लाइक़ ह़स्बे दस्तूर

بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۶﴾ وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कुछ बरत्ने की चीज़ येह वाजिब है भलाई वालों पर[480] और अगर तुम ने औ़रतों को बे छूए

تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّاۤ اَنْ

त़लाक़ दे दी और उन के लिये कुछ महर मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना ठहरा था उस का आधा वाजिब है मगर येह कि औ़रतें

يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَ اَنْ تَعْفُوْۤا اَقْرَبُ

कुछ छोड़ दें[481] या वोह ज़ियादा दे[482] जिस के हाथ में निकाह़ की गिरह है[483] और ऐ मर्दो तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़ गारी से

لِلتَّقْوٰى ؕ وَ لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۷﴾

नज़्दीक तर है और आपस में एक दूसरे पर एह़सान को भुला न दो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[484]

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾ فَاِنْ

निगहबानी करो सब नमाज़ों[485] और बीच की नमाज़ की[486] और खड़े हो अल्लाह के हु़ज़ूर अदब से[487] फिर अगर

476 : या'नी इ़द्दत गुज़र चुके। 477 : महर का 478 **शाने नुज़ूल :** येह आयत एक अन्सारी के बाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने क़बीलए बनी ह़नीफ़ा की एक औ़रत से निकाह़ किया और कोई महर मुअ़य्यन न किया फिर हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दे दी। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो अगर उस को हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दी तो महर लाज़िम नहीं। हाथ लगाने से मुजामअ़त मुराद है, और ख़ल्वते सह़ीह़ा इसी के हुक्म में है। येह भी मा'लूम हुवा कि बे ज़िक्रे महर भी निकाह़ दुरुस्त है मगर इस सूरत में बा'दे निकाह़ महर मुअ़य्यन करना होगा अगर न किया तो बा'दे दुख़ूल महरे मिस्ल लाज़िम हो जाएगा। 479 : तीन कपड़ों का एक जोड़ा। 480 : जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो और उस को क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दी हो उस को तो जोड़ा देना वाजिब है, और इस के सिवा हर मुत़ल्लक़ा के लिये मुस्तह़ब है। (مدارک) 481 : अपने उस निस्फ़ में से 482 : निस्फ़ से। जो इस सूरत में वाजिब है। 483 : या'नी शोहर। 484 : इस में हुस्ने सुलूक व मकारिमे अख़्लाक़ (अच्छे अख़्लाक़) की तरग़ीब है। 485 : या'नी पन्जगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के अवक़ात पर अरकान व शराइत़ के साथ अदा करते रहो। इस में पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और औलाद व अज़्वाज के मसाइल व अह़काम के दरमियान में नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाना इस नतीजे पर पहुंचाता है कि इन को अदाए

خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا

ख़ौफ़ में हो तो पियादा या सुवार जैसे बन पड़े फिर जब इत्मीनान से हो तो अल्लाह की याद करो जैसा उस ने सिखाया जो

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ

तुम न जानते थे और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़

اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ

जाएं वोह अपनी औ़रतों के लिये वसिय्यत कर जाएं[488] साल भर तक नान व नफ़क़ा देने की बे निकाले[489] फिर अगर

خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ

वोह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर उस का मुआख़ज़ा नहीं जो उन्हों ने अपने मुआ़मले में मुनासिब तौ़र पर किया

وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى

और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है और त़लाक़ वालियों के लिये भी मुनासिब तौ़र पर नान व नफ़क़ा है येह वाजिब है

الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع اَلَمْ

परहेज़ गारों पर अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो ऐ मह़बूब क्या

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪

तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

तो अल्लाह ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

मगर अक्सर लोग नाशुक्रे हैं[490] और लड़ो अल्लाह की राह में[491] और जान लो

नमाज़ से ग़ाफ़िल न होने दो, और नमाज़ की पाबन्दी से क़ल्ब की इस्लाह़ होती है जिस के बिग़ैर मुआ़मलात का दुरुस्त होना मुतसव्वर नहीं। **486 :** ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा और जम्हूर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُم का मज़हब येह है कि इस से नमाज़े अ़स्र मुराद है और अह़ादीस भी इस पर दलालत करती हैं। **487 :** इस से नमाज़ के अन्दर क़ियाम का फ़र्ज़ होना साबित हुवा। **488 :** अपने अक़ारिब को **489 :** इब्तिदाए इस्लाम में बेवा की इ़द्दत एक साल की थी और एक साल कामिल वोह शोहर के यहां रह कर नान व नफ़क़ा पाने की मुस्तह़िक़ होती थी फिर एक साल की इ़द्दत तो "يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا" से मन्सूख़ हुई जिस में बेवा की इ़द्दत चार माह दस दिन मुक़र्रर फ़रमाई गई, और साल भर का नफ़क़ा आयते मीरास से मन्सूख़ हुवा जिस में औ़रत का ह़िस्सा शोहर के तर्के से मुक़र्रर किया गया ! लिहाज़ा अब इस वसिय्यत का हुक्म बाक़ी न रहा। ह़िक्मत इस की येह है कि अ़रब के लोग अपने मूरिस (या'नी मरने वाले) की बेवा का निकलना या ग़ैर से निकाह़ करना बिल्कुल गवारा ही न करते थे और इस को आ़र समझते थे इस लिये अगर एक दम चार माह दस रोज़ की इ़द्दत मुक़र्रर की जाती तो येह उन पर बहुत शाक़ होती ! लिहाज़ा ब तदरीज उन्हें राह पर लाया गया। **490 :** बनी

اَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۴۴﴾ مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا

कि अल्लाह सुनता जानता है   है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसन दे[492]

فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةًؕ وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ وَ اِلَیْهِ

तो अल्लाह उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे   और अल्लाह तंगी और कशाइश करता है[493]   और तुम्हें उसी की त़रफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۴۵﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰىۘ

फिर जाना   ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा बनी इसराईल के एक गुरोह को जो मूसा के बा'द हुवा[494]

اِذْ قَالُوْا لِنَبِیٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ قَالَ هَلْ

जब अपने एक पैग़म्बर से बोले हमारे लिये खड़ा कर दो एक बादशाह कि हम ख़ुदा की राह में लड़ें   नबी ने फ़रमाया क्या

عَسَیْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَیْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْاؕ قَالُوْا وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا

तुम्हारे अन्दाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर न करो   बोले हमें क्या हुवा कि

نُقَاتِلَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ قَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِیَارِنَا وَ اَبْنَآىٕنَاؕ فَلَمَّا

हम अल्लाह की राह में न लड़ें ह़ालां कि हम निकाले गए हैं अपने वत़न और अपनी औलाद से[495]   तो फिर जब

وقف لازم

इसराईल की एक जमाअ़त थी जिस के बिलाद (शहरों) में त़ाऊन हुवा तो वोह मौत के डर से अपनी बस्तियां छोड़ कर भागे और जंगल में जा पड़े, ब हुक्मे इलाही सब वहीं मर गए ! कुछ अ़र्से के बा'द ह़ज़रते ह़िज़्क़ील عَلَیْهِ السَّلَام की दुआ़ से उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया और वोह मुद्दतों ज़िन्दा रहे। इस वाक़िए से मा'लूम होता है कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है जो मौत मुक़द्दर है वोह ज़रूर पहुंचेगी बन्दे को चाहिये कि रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहे, मुजाहिदीन को भी समझना चाहिये कि जिहाद से बैठ रहना मौत को दफ़्अ़ नहीं कर सकता लिहाज़ा दिल मज़बूत़ रखना चाहिये। **491 :** और मौत से न भागो जैसा बनी इसराईल भागे थे क्यूं कि मौत से भागना काम नहीं आता। **492 :** या'नी राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करे। राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया येह कमाले लुत़्फ़ो करम है, बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा, ह़क़ीक़ी मालिक वोह और बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क रखता है, मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़्मीनान रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा वोह उस की वापसी का मुस्तह़िक़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत़्मीनान रखना चाहिये कि वोह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल यक़ीन पाएगा और बहुत ज़ियादा पाएगा। **493 :** जिस के लिये चाहे रोज़ी तंग करे जिस के लिये चाहे वसीअ़ फ़रमाए तंगी व फ़राख़ी उस के क़ब्ज़े में है और वोह अपनी राह में ख़र्च करने वाले से वुस्अ़त का वा'दा करता है। **494 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के बा'द जब बनी इसराईल की ह़ालत ख़राब हुई और उन्हों ने अ़हदे इलाही को फ़रामोश किया बुत परस्ती में मुब्तला हुए सरकशी और बद अफ़्आ़ली इन्तिहा को पहुंची, उन पर क़ौमे जालूत मुसल्लत़ हुई जिस को अ़मालिक़ा कहते हैं क्यूं कि जालूत इमलीक़ बिन आ़द की औलाद से एक निहायत जाबिर बादशाह था उस की क़ौम के लोग मिस्र व फ़िलिस्त़ीन के दरमियान बह़्रे रूम के साह़िल पर रहते थे। उन्हों ने बनी इसराईल के शह्र छीन लिये आदमी गिरिफ़्तार किये त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां कीं, उस ज़माने में कोई नबी क़ौमे बनी इसराईल में मौजूद न थे, ख़ानदाने नुबुव्वत से सिर्फ़ एक बीबी बाक़ी रही थीं जो ह़ामिला थीं उन के फ़रज़न्द तवल्लुद (पैदा) हुए उन का नाम इश्मवील रखा, जब वोह बड़े हुए तो उन्हें इल्मे तौरैत ह़ासिल करने के लिये बैतुल मक़्दिस में एक कबीरुस्सिन (बुज़ुर्ग) आ़लिम के सिपुर्द किया वोह आप के साथ कमाले शफ़्क़त करते और आप को फ़रज़न्द कहते, जब आप सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे तो एक शब आप उस आ़लिम के क़रीब आराम फ़रमा रहे थे कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام ने उसी आ़लिम की आवाज़ में या इश्मवील कह कर पुकारा, आप आ़लिम के पास गए और फ़रमाया कि आप ने मुझे पुकारा है ? आ़लिम ने ब ईं ख़याल कि इन्कार करने से कहीं आप डर न जाएं येह कह दिया कि फ़रज़न्द तुम सो जाओ ! फिर दोबारा ह़ज़रते जिब्रील ने इसी त़रह़ पुकारा और ह़ज़रते इश्मवील عَلَیْهِ السَّلَام आ़लिम के पास गए आ़लिम ने कहा ऐ फ़रज़न्द अब अगर मैं तुम्हें

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया मुंह फेर गए मगर उन में के थोड़े[496] और अल्लाह ख़ूब जानता है

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۴۶﴾ وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

ज़ालिमों को और उन से उन के नबी ने फ़रमाया बेशक अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर

مَلِكًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ

भेजा है[497] बोले उसे हम पर बादशाही क्यूंकर होगी[498] और हम उस से ज़ियादा सल्तनत के मुस्तहिक़

مِنْهُ وَ لَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَ

हैं और उसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई[499] फ़रमाया उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया[500] और

زَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَ الْجِسْمِ ؕ وَ اللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ

उसे इ़ल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी[501] और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहे दे[502] और

اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۴۷﴾ وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ

अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है[503] और उन से उन के नबी ने फ़रमाया उस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास

التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ اٰلُ

ताबूत[504] जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़

फिर पुकारूं तो तुम जवाब न देना, तीसरी मरतबा में ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ज़ाहिर हो गए और उन्हों ने बिशारत दी कि अल्लाह तआ़ला ने आप को नुबुव्वत का मन्सब अ़ता फ़रमाया आप अपनी क़ौम की त़रफ़ जाइये और अपने रब के अह़काम पहुंचाइये जब आप क़ौम की त़रफ़ तशरीफ़ लाए उन्हों ने तक्ज़ीब की और कहा कि आप इतनी जल्दी नबी बन गए ! अच्छा अगर आप नबी हैं तो हमारे लिये एक बादशाह क़ाइम कीजिये । (خازن وغیرہ) **495 :** कि क़ौमे जालूत ने हमारी क़ौम के लोगों को उन के वत़न से निकाला उन की औलाद को क़त्लो ग़ारत किया चार सो चालीस शाही ख़ानदान के फ़रज़न्दों को गिरिफ़्तार किया जब ह़ालत यहां तक पहुंच चुकी तो अब हमें जिहाद से क्या चीज़ मानेअ़ हो सकती है ? तब नबिय्युल्लाह की दुआ़ से अल्लाह तआ़ला ने उन की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाई और उन के लिये एक बादशाह मुक़र्रर किया और जिहाद फ़र्ज़ फ़रमाया (خازن) **496 :** जिन की ता'दाद अहले बद्र के बराबर तीन सो तेरह थी । **497 :** ''त़ालूत'' बिन्यामीन बिन ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से हैं आप का नाम तूले क़ामत की वज्ह से त़ालूत है, ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से एक अ़सा मिला था और बताया गया था कि जो शख़्स तुम्हारी क़ौम का बादशाह होगा उस का क़द इस अ़सा के बराबर होगा ! आप ने उस अ़सा से त़ालूत का क़द नाप कर फ़रमाया कि मैं तुम को ब हुक्मे इलाही बनी इसराईल का बादशाह मुक़र्रर करता हूं ! और बनी इसराईल से फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है । (خازن وجمل) **498 :** बनी इसराईल के सरदारों ने अपने नबी ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि नुबुव्वत तो लावा बिन या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में चली आती है और सल्त़नत यहूद बिन या'क़ूब की औलाद में, और त़ालूत इन दोनों ख़ानदानों में से नहीं हैं तो बादशाह कैसे हो सकते हैं । **499 :** वोह ग़रीब शख़्स हैं बादशाह को साह़िबे माल होना चाहिये **500 :** या'नी सल्त़नत वरसा नहीं कि किसी नस्ल व ख़ानदान के साथ ख़ास हो येह मह़ज़ फ़ज़्ले इलाही पर है । इस में शीआ़ का रद है जिन का ए'तिक़ाद येह है कि इमामत विरासत है । **501 :** या'नी ''नस्ल व दौलत'' पर सल्त़नत का इस्तिह़्क़ाक़ नहीं ''इ़ल्म व क़ुव्वत'' सल्त़नत के लिये बड़े मुईन हैं । और त़ालूत उस ज़माने में तमाम बनी इसराईल से ज़ियादा इ़ल्म रखते थे और सब से जसीम और तुवाना थे । **502 :** इस में विरासत को कुछ दख़्ल नहीं । **503 :** जिसे चाहे ग़नी कर दे और वुस्अ़ते माल अ़ता फ़रमा दे । इस के बा'द बनी इसराईल ने ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि अगर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सल्त़नत के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है तो इस की

هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

हारून के तर्के की उठाते लाएंगे उसे फ़िरिश्ते बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर

مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۴۸﴾ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِیْكُمْ

ईमान रखते हो फिर जब ताूलूत लश्करों को ले कर शहर से जुदा हुवा[505] बोला बेशक **अल्लाह** तुम्हें एक नहर से

بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَیْسَ مِنِّیْ ۚ وَمَنْ لَّمْ یَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّیْۤ

आज़माने वाला है तो जो उस का पानी पिये वोह मेरा नहीं और जो न पिये वोह मेरा है

اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِیَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا

मगर वोह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले[506] तो सब ने उस से पिया मगर थोड़ों ने[507] फिर जब

جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْیَوْمَ بِجَالُوْتَ

ताूलूत और उस के साथ के मुसल्मान नहर के पार गए बोले हम में आज ताक़त नहीं जालूत

निशानी क्या है ? (خازن ومدارک) **504 :** येह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक ज़र अन्दूद (सोने का काम किया हुवा) सन्दूक़ था जिस का तूल तीन हाथ का और अर्ज़ दो हाथ का था, इस को **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया था, इस में तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्वीरें थीं इन के मसाकिन व मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की, और हुज़ूर की दौलत सराए अक़्दस की तस्वीर एक याक़ूते सुर्ख़ में थी कि हुज़ूर ब हालते नमाज़ क़ियाम में हैं और गिर्द आप के आप के अस्हाब। हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इन तमाम तस्वीरों को देखा, येह सन्दूक़ विरासतन मुन्तक़िल होता हुवा हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तक पहुंचा, आप इस में तौरैत भी रखते थे और अपना मख़्सूस सामान भी चुनान्चे इस ताबूत में अल्वाहे तौरैत के टुकड़े भी थे और हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का असा और आप के कपड़े और आप की ना'लैने शरीफ़ैन और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का इमामा और उन का असा और थोड़ा सा "मन्न" जो बनी इसराईल पर नाज़िल होता था। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जंग के मौक़ओं पर इस सन्दूक़ को आगे रखते थे इस से बनी इसराईल के दिलों को तस्कीन रहती थी। आप के बा'द येह ताबूत बनी इसराईल में मुतवारिस (बतौरे विरासत मुन्तक़िल) होता चला आया जब उन्हें कोई मुश्किल दरपेश होती वोह इस ताबूत को सामने रख कर दुआएं करते और काम्याब होते, दुश्मनों के मुक़ाबले में इस की बरकत से फ़त्ह पाते, जब बनी इसराईल की हालत ख़राब हुई और उन की बद अमली बहुत बढ़ गई और **अल्लाह** तआला ने उन पर अमालिक़ा को मुसल्लत किया तो वोह उन से ताबूत छीन कर ले गए और इस को नजिस और गन्दे मक़ामात में रखा और इस की बे हुरमती की और इन गुस्ताख़ियों की वज्ह से वोह तरह तरह के अमराज़ व मसाइब में मुब्तला हुए उन की पांच बस्तियां हलाक हुईं और उन्हें यक़ीन हुवा कि ताबूत की इहानत उन की बरबादी का बाइस है तो उन्हों ने ताबूत एक बेलगाड़ी पर रख कर बेलों को छोड़ दिया और फ़िरिश्ते इस को बनी इसराईल के सामने ताूलूत के पास लाए और इस ताबूत का आना बनी इसराईल के लिये ताूलूत की बादशाही की निशानी क़रार दिया गया था, बनी इसराईल येह देख कर उस की बादशाही के मुक़िर हुए और बे दरंग जिहाद के लिये आमादा हो गए क्यूं कि ताबूत पा कर उन्हें अपनी फ़त्ह का यक़ीन हो गया, ताूलूत ने बनी इसराईल में से सत्तर हज़ार जवान मुन्तख़ब किये जिन में हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام भी थे। (جلالین وجمل وخازن ومدارک وغیرہ) **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात का ए'ज़ाज़ो एहतिराम लाज़िम है इन की बरकत से दुआएं क़ुबूल होती और हाजतें रवा होती हैं और तबर्रुकात की बे हुरमती गुमराहों का तरीक़ा और बरबादी का सबब है। **फ़ाएदा :** ताबूत में अम्बिया की जो तस्वीरें थीं वोह किसी आदमी की बनाई हुई न थीं **अल्लाह** की तरफ़ से आई थीं। **505 :** या'नी बैतुल मक़्दिस से दुश्मन की तरफ़ रवाना हुवा वोह वक़्त निहायत शिद्दत की गरमी का था, लश्करियों ने ताूलूत से इस की शिकायत की और पानी के तलब गार हुए **506 :** येह इम्तिहान मुक़र्रर फ़रमाया गया था कि शिद्दते तिश्नगी के वक़्त जो इताअ़ते हुक्म पर मुस्तक़िल रहा वोह आयिन्दा भी मुस्तक़िल रहेगा और सख़्तियों का मुक़ाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी ख़्वाहिश से मग़्लूब हो और ना फ़रमानी करे वोह आयिन्दा सख़्तियों को क्या बरदाश्त करेगा। **507 :** जिन की ता'दाद तीन सो तेरह थी उन्हों ने सब्र किया और एक चुल्लू उन के और उन के जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और उन के क़ल्बो ईमान को क़ुव्वत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए, और जिन्हों ने ख़ूब पिया था उन के होंट सियाह हो गए तिश्नगी और बढ़ गई और हिम्मत हार गए।

وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ

और उस के लश्करों की बोले वोह जिन्हें अल्लाह से मिलने का यक़ीन था कि बारहा कम

قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا

जमाअ़त ग़ालिब आई है ज़ियादा गुरौह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है[508] फिर जब

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

सामने आए जालूत और उस के लश्करों के अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ

पाउं जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर तो इन्हों ने उन को भगा दिया अल्लाह के

اللّٰهِ ۙ۫ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

हुक्म से और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को[509] और अल्लाह ने उसे सल्त़नत और हिक्मत[510] अ़त़ा फ़रमाई और उसे जो

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ

चाहा सिखाया[511] और अगर अल्लाह लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे[512] तो ज़रूर ज़मीन

الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

तबाह हो जाए मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है येह अल्लाह की आयतें हैं कि हम ऐ महबूब

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

तुम पर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम बेशक रसूलों में हो

508 : उन की मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है। **509 :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद "ईशा" त़ालूत के लश्कर में थे और उन के साथ उन के तमाम फ़रज़न्द भी, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام उन सब में छोटे थे बीमार थे रंग ज़र्द था बकरियां चराते थे, जब जालूत ने बनी इसराईल से मुक़ाबिल त़लब किया वोह उस की क़ुव्वते जसामत देख कर घबराए क्यूं कि वोह बड़ा जाबिर क़वी शहज़ोर अ़ज़ीमुल जुस्सा (बड़े और मोटे जिस्म वाला) क़दआवर था, त़ालूत ने अपने लश्कर में ए'लान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उस के निकाह़ में दूंगा और निस्फ़ मुल्क उस को दूंगा मगर किसी ने इस का जवाब न दिया तो त़ालूत ने अपने नबी ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि बारगाहे इलाही में दुआ़ करें, आप ने दुआ़ की तो बताया गया कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام जालूत को क़त्ल करेंगे, त़ालूत ने आप से अ़र्ज़ किया कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आप के निकाह़ में दूं और निस्फ़ मुल्क पेश करूं ! आप ने क़बूल फ़रमाया और जालूत की त़रफ़ रवाना हो गए, सफ़े क़िताल क़ाइम हुई और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام दस्ते मुबारक में फ़लाख़न (पथ्थर फेंकने का आला) ले कर मुक़ाबिल हुए, जालूत के दिल में आप को देख कर दहशत पैदा हुई मगर उस ने बातें बहुत मुतकब्बिराना कीं और आप को अपनी क़ुव्वत से मरऊ़ब करना चाहा आप ने फ़लाख़न में पथ्थर रख कर मारा वोह उस की पेशानी को तोड़ कर पीछे से निकल गया और जालूत मर कर गिर गया ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को ला कर त़ालूत के सामने डाल दिया, तमाम बनी इसराईल ख़ुश हुए और त़ालूत ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को ह़स्बे वा'दा निस्फ़ मुल्क दिया और अपनी बेटी का आप के साथ निकाह़ कर दिया, एक मुद्दत के बा'द त़ालूत ने वफ़ात पाई तमाम मुल्क पर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सल्त़नत हुई। (جمل وغیرہ) **510 :** हिक्मत से नुबुव्वत मुराद है। **511 :** जैसे कि ज़िरह बनाना और जानवरों का कलाम समझना। **512 :** या'नी अल्लाह तआ़ला

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ

येह[513] रसूल हैं कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया[514] इन में किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया[515] और कोई वोह है

بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ

जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया[516] और हम ने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं[517] और पाकीज़ा रूह़ से

الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

उस की मदद की[518] और अल्लाह चाहता तो उन के बा'द वाले आपस में न लड़ते बा'द इस के कि

جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ

उन के पास खुली निशानियां आ चुकीं[519] लेकिन वोह तो मुख़्तलिफ़ हो गए उन में कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर हो गया[520]

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۲۵۳﴾ يٰۤاَيُّهَا

और अल्लाह चाहता तो वोह न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहे करे[521] ऐ

नेकों के सदक़े में दूसरों की बलाएं भी दफ़्अ़ फ़रमाता है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि रसूले ख़ुदा صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला एक सालेह़ मुसल्मान की बरकत से उस के पड़ोस के सो घर वालों की बला दफ़्अ़ फ़रमाता है। سبحٰن اللہ नेकों का कुर्ब भी फ़ाएदा पहुंचाता है। (خازن) **513 :** येह ह़ज़रात जिन का ज़िक्र मा सबक़ (गुज़श्ता आयात) में और ख़ास आयए ''اِنَّکَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ'' में फ़रमाया गया। **514 :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया علیہم السلام के मरातिब जुदागाना हैं, बा'ज़ ह़ज़रात से बा'ज़ अफ़्ज़ल हैं अगर्चे नुबुव्वत में कोई तफ़्रिक़ा नहीं, वस्फ़े नुबुव्वत में सब शरीके यक दिगर (बराबर के शरीक) हैं मगर ख़साइस व कमालात में दरजे मुतफ़ावित (अलग अलग) हैं, येही आयत का मज़्मून है और इसी पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है। (خازن و مدارک) **515 :** या'नी बे वासिता जैसे कि ह़ज़रते मूसा علیہ السلام को तूर पर कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सय्यिदे अम्बिया صلی اللہ علیہ وسلم को मे'राज में। (جمل) **516 :** वोह हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ وسلم हैं कि आप को ब दरजाते कसीरा तमाम अम्बिया علیہم السلام पर अफ़्ज़ल किया। इस पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है और ब कसरत अह़ादीस से साबित है। आयत में हुज़ूर की इस रिफ़्अ़ते मर्तबत का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह़ (वज़ाह़त) न की गई। इस से भी हुज़ूरे अक़्दस علیہ الصلٰوۃ والسلام के उ़लुव्वे शान (मरातिब की बुलन्दी) का इज़्हार मक़्सूद है कि ज़ाते वाला की येह शान है कि जब तमाम अम्बिया पर फ़ज़ीलत का बयान किया जाए तो सिवाए ज़ाते अक़्दस के येह वस्फ़ किसी पर सादिक़ ही न आए और कोई इश्तिबाह राह न पा सके। हुज़ूर علیہ الصلٰوۃ والسلام के वोह ख़साइस व कमालात जिन में आप तमाम अम्बिया पर फ़ाइक़ व अफ़्ज़ल हैं और आप का कोई शरीक नहीं, बे शुमार हैं कि क़ुरआने करीम में येह इर्शाद हुवा : ''दरजों बुलन्द किया।'' इन दरजों की कोई शुमार क़ुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाई, तो अब कौन ह़द लगा सकता है। इन बे शुमार ख़साइस में से बा'ज़ का इज्माली व मुख़्तसर बयान येह है कि आप की रिसालत आ़म्मा है, तमाम काएनात आप की उम्मत है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : ''وَمَاۤ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا کَآفَّۃً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا''، दूसरी आयत में फ़रमाया : ''لِیَکُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا''، मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में इर्शाद हुवा : ''اُرْسِلْتُ اِلَی الْخَلَائِقِ کَافَّۃً'' और आप पर नुबुव्वत ख़त्म की गई। क़ुरआने पाक में आप को ख़ातमुन्नबिय्यीन फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा ''خُتِمَ بِیَ النَّبِیُّوْنَ'' आयाते बय्यिनात व मो'जिज़ाते बाहिरात में आप को तमाम अम्बिया पर अफ़्ज़ल फ़रमाया गया, आप की उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़्ज़ल किया गया, शफ़ाअ़ते कुब्रा आप को मर्ह़मत हुई, कुर्बे ख़ास मे'राज आप को मिला, इल्मी व अ़मली कमालात में आप को सब से आ'ला किया और इस के इलावा बे इन्तिहा ख़साइस आप को अ़त़ा हुए। (مدارک، جمل، خازن، بیضاوی وغیرہ) **517 :** जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना, बीमारों को तन्दुरुस्त करना, मिट्टी से परिन्द बनाना, ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरा। **518 :** या'नी जिब्रील علیہ السلام से जो हमेशा आप के साथ रहते थे। **519 :** या'नी अम्बिया علیہم السلام के मो'जिज़ात। **520 :** या'नी अम्बियाए साबिक़ीन की उम्मतें भी ईमान व कुफ़्र में मुख़्तलिफ़ रहीं, येह न हुवा कि तमाम उम्मत मुत़ीअ़ हो जाती। **521 :** उस के मुल्क में उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता और येही ख़ुदा की शान है।

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ

ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वोह दिन आने से पहले जिस में न ख़रीदो फ़रोख़्त

فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۵۴﴾ اَللّٰهُ لَاۤ

है न काफ़िरों के लिये दोस्ती न शफ़ाअ़त और काफ़िर ख़ुद ही ज़ालिम हैं[522] अल्लाह है जिस

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۬ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي

के सिवा कोई मा'बूद नहीं[523] वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला[524] उसे न ऊंघ आए न नींद[525] उसी का है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[526] वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के[527]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ

जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे[528] और वोह नहीं पाते उस के इ़ल्म में से

اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ

मगर जितना वोह चाहे[529] उस की कुरसी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन[530] और उसे भारी नहीं

حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۲۵۵﴾ لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ۫ قَدْ تَّبَيَّنَ

इन की निगहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला[531] कुछ ज़बर दस्ती नहीं दीन में[532] बेशक ख़ूब जुदा हो गई है

522 : कि उन्हों ने ज़िन्दगानिये दुन्या में रोज़े हाजत या'नी क़ियामत के लिये कुछ न किया। 523 : इस में अल्लाह तआला की उलूहिय्यत और उस की तौहीद का बयान है। इस आयत को आयतुल कुरसी कहते हैं, अहादीस में इस की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं। 524 : या'नी वाजिबुल वुजूद और आ़लम का ईजाद करने और तदबीर फ़रमाने वाला। 525 : क्यूं कि येह नक़्स है और वोह नक़्स व ऐ़ब से पाक। 526 : इस में उस की मालिकिय्यत और नफ़ाज़े अम्र व तसर्रुफ़ का बयान है और निहायत लतीफ़ पैराए में रद्दे शिर्क है कि जब सारा जहान उस की मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है! मुश्रिकीन या तो कवाकिब को पूजते हैं जो आस्मानों में हैं या दरियाओं, पहाड़ों, पथ्थरों, दरख़्तों, जानवरों, आग वग़ैरा को जो ज़मीन में हैं। जब आस्मान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की मिल्क है तो येह कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकते हैं। 527 : इस में मुश्रिकीन का रद है जिन का गुमान था कि बुत शफ़ाअ़त करेंगे, उन्हें बता दिया गया कि कुफ़्फ़ार के लिये शफ़ाअ़त नहीं। अल्लाह के हुज़ूर माज़ूनीन (इजाज़त याफ़्ता लोगों) के सिवा कोई शफ़ाअ़त नहीं कर सकता और इज़्न वाले अम्बिया व मलाएका व मोमिनीन हैं। 528 : या'नी मा क़ब्ल व मा बा'द या उमूरे दुन्या व आख़िरत। 529 : और जिन को वोह मुत्तलअ़ फ़रमाए वोह अम्बिया व रुसुल हैं जिन को ग़ैब पर मुत्तलअ़ फ़रमाना उन की नुबुव्वत की दलील है। दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : ''فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ'' (خازن) 530 : इस में उस की अ़ज़मते शान का इज़्हार है और कुरसी से या इ़ल्मो क़ुदरत मुराद है या अ़र्श या वोह जो अ़र्श के नीचे और सातों आस्मानों के ऊपर है और मुम्किन है कि येह वोही हो जो ''फ़लकुल बुरूज'' के नाम से मश्हूर है। 531 : इस आयत में इलाहिय्यात के आ'ला मसाइल का बयान है और इस से साबित है कि अल्लाह तआला मौजूद है, इलाहिय्यत में वाहिद है, हयात के साथ मुत्तसिफ़ है, वाजिबुल वुजूद अपने मा सिवा का मूजिद है, तहय्युज़ व हुलूल से मुनज़्ज़ा और तग़य्युर और फ़ुतूर से मुबर्रा है, न किसी को उस से मुशाबहत, न अ़वारिज़े मख़्लूक़ को उस तक रसाई, मुल्क व मलकूत का मालिक, उसूल व फ़ुरूअ़ का मुब्दिअ़, क़वी गिरिफ़्त वाला, जिस के हुज़ूर सिवाए माज़ून (इजाज़त याफ़्ता) के कोई शफ़ाअ़त के लिये लब न हिला सके, तमाम अश्या का जानने वाला, जली (ज़ाहिर) का भी और ख़फ़ी का भी, कुल्ली का भी और जुज़्ई का भी, وَاسِعُ الْمُلْكِ وَالْقُدْرَةِ, इदराक व वहमो फ़हम से बर तरो बाला। 532 : सिफ़ाते इलाहिय्यह के बा'द ''لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ'' फ़रमाने में येह इश्आ़र (बता देना) है कि अब आ़क़िल के लिये क़बूले हक़ में तअम्मुल की कोई वज्ह बाक़ी न रही।

الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ

नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए[533] उस ने

اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۵۶﴾

बड़ी मोहूकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ

अल्लाह वाली है मुसल्मानों का इन्हें अंधेरियों से[534] नूर की तरफ़ निकालता है

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى

और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़

الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى

निकालते हैं ▌ येही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा उस में रहना ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था

الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में इस पर[535] कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी[536] जब कि इब्राहीम ने कहा कि

رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۗ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है[537] बोला मैं जिलाता और मारता हूं[538] इब्राहीम ने फ़रमाया

533 : इस में इशारा है कि काफ़िर के लिये अव्वल अपने कुफ़्र से तौबा व बेज़ारी ज़रूर है, इस के बा'द ईमान लाना सहीह होता है। **534 :** कुफ़्रो ज़लालत की, ईमान व हिदायत की रोशनी और **535 :** ग़ुरूरो तकब्बुर पर। **536 :** और तमाम ज़मीन की सल्तनत अ़ता फ़रमाई, इस पर उस ने बजाए शुक्र व ताअ़त के तकब्बुर व तजब्बुर किया और रबूबिय्यत का दा'वा करने लगा। इस का नाम नमरूद बिन किन्आ़न था। सब से पहले सर पर ताज रखने वाला येही है। जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस को ख़ुदा परस्ती की दा'वत दी, ख़्वाह आग में डाले जाने से क़ब्ल या इस के बा'द तो वोह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो? **537 :** या'नी अज्साम में मौत व ह़यात पैदा करता है। एक ख़ुदा ना शनास के लिये येह बेहतरीन हिदायत थी और इस में बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उस के वुजूद की शाहिद है कि तू एक बेजान नुत़्फ़ा था, जिस (ज़ात) ने इस को इन्सानी सूरत दी और ह़यात अ़ता फ़रमाई वोह रब है और ज़िन्दगी के बा'द फिर ज़िन्दा अज्साम को जो मौत देता है वोह परवर दगार है, उस की क़ुदरत की शहादत ख़ुद तेरी अपनी मौत व ह़यात में मौजूद है, उस के वुजूद से बे ख़बर रहना कमाले जहालत व सफ़ाहत (बे वुक़ूफ़ी) और इन्तिहाई बद नसीबी है। येह दलील ऐसी ज़बर दस्त थी कि इस का जवाब नमरूद से बन न पड़ा और इस ख़याल से कि मज्मअ़ के सामने उस को ला जवाब और शरमिन्दा होना पड़ता है उस ने कज बहूसी (फ़ुज़ूल तकरार) इख़्तियार की। **538 :** नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया, उन में से एक को क़त्ल किया, एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी जिलाता मारता हूं, या'नी किसी को गिरिफ़्तार कर के छोड़ देना उस को जिलाना है, येह उस की निहायत अहमक़ाना बात थी, कहां क़त्ल करना और छोड़ना और कहां मौत व ह़यात पैदा करना! क़त्ल किये हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आ़जिज़ रहना, और बजाए इस के ज़िन्दा के छोड़ने को जिलाना कहना ही उस की ज़िल्लत के लिये काफ़ी था। उ़क़ला पर इसी से ज़ाहिर हो गया कि जो हुज्जत हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ाइम फ़रमाई वोह क़ातेअ़ है और उस का जवाब मुम्किन नहीं, लेकिन चूंकि नमरूद के जवाब में शाने दा'वा पैदा हो गई तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर मुनाज़राना गिरिफ़्त फ़रमाई कि मौत व ह़यात का पैदा करना तो तेरे मक़्दूर (इख़्तियार) में नहीं, ऐ रबूबिय्यत के झूटे मुद्दई! तू इस से सहल (आसान) काम ही कर दिखा जो एक मुतहर्रिक जिस्म की ह़रकत का बदलना है।

فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ

तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ[539] तो होश उड़ गए

الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵۸﴾ ۚ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى

काफ़िर के और **अल्लाह** राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को या उस की तरह जो गुज़रा

قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

एक बस्ती पर[540] और वोह ढई (गिरी) पड़ी थी अपनी छतों पर[541] बोला इसे क्यूंकर जिलाएगा **अल्लाह** इस की

539 : येह भी न कर सके तो रबूबिय्यत का दा'वा किस मुंह से करता है ! **मस्अला :** इस आयत से इल्मे कलाम में मुनाज़रा करने का सुबूत होता है। **540 :** बक़ौले अक्सर येह वाक़िआ़ हज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का है और बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है। जब बख़्ते नस्र बादशाह ने बैतुल मक़्दिस को वीरान किया और बनी इसराईल को क़त्ल किया, गिरिफ़्तार किया, तबाह कर डाला, फिर हज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام वहां गुज़रे, आप के साथ एक बरतन, खजूर और एक पियाला अंगूर का रस था और आप एक दराज़ गोश पर सुवार थे तमाम बस्ती में फिरे किसी शख़्स को वहां न पाया। बस्ती की इमारतों को मुन्हदिम देखा तो आप ने बराहे तअ़ज्जुब कहा : ''اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا'' (इसे क्यूंकर जिलाएगा **अल्लाह** इस की मौत के बा'द !) और आप ने अपनी सुवारी के हिमार को वहां बांध दिया और आप ने आराम फ़रमाया, इसी हालत में आप की रूह क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया। येह सुब्ह के वक़्त का वाक़िआ़ है, इस से सत्तर बरस बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने शाहाने फ़ार्स में से एक बादशाह को मुसल्लत़ किया और वोह अपनी फ़ौजें ले कर बैतुल मक़्दिस पहुंचा और उस को पहले से भी बेहतर त़रीक़े पर आबाद किया और बनी इसराईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे **अल्लाह** तआ़ला उन्हें फिर यहां लाया और वोह बैतुल मक़्दिस और उस के नवाह़ में आबाद हुए और उन की ता'दाद बढ़ती रही, उस ज़माने में **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को दुन्या की आंखों से पोशीदा रखा और कोई आप को न देख सका। जब आप की वफ़ात को सो बरस गुज़र गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ज़िन्दा किया, पहले आंखों में जान आई, अभी तक तमाम जिस्म मुर्दा था, वोह आप के देखते देखते ज़िन्दा किया गया। येह वाक़िआ़ शाम के वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब के क़रीब हुवा। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : तुम यहां कितने दिन ठहरे ? आप ने अन्दाज़े से अ़र्ज़ किया कि एक दिन या कुछ कम। आप का ख़याल येह हुवा कि येह उसी दिन की शाम है जिस की सुब्ह को सोए थे। फ़रमाया : नहीं बल्कि तुम सो बरस ठहरे, अपने खाने और पानी या'नी खजूर और अंगूर के रस को देखिये कि वैसा ही है उस में बू तक न आई और अपने गधे को देखिये। देखा तो वोह मर गया था, गल गया, आ'ज़ा बिखर गए थे, हड्डियां सफ़ेद चमक रही थीं, आप की निगाह के सामने उस के आ'ज़ा जम्अ़ हुए, आ'ज़ा अपने अपने मवाक़ेअ़ पर आए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले, फिर उस में रूह फूंकी, वोह उठ खड़ा हुवा और आवाज़ करने लगा। आप ने **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत का मुशाहदा किया और फ़रमाया : मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला हर शै पर क़ादिर है, फिर आप अपनी उस सुवारी पर सुवार हो कर अपने मह़ल्ले में तशरीफ़ लाए, सरे अक़्दस और रीश मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उ़म्र वोही चालीस साल की थी, कोई आप को न पहचानता था। अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे एक ज़ईफ़ बुढ़िया मिली जिस के पाउं रह गए थे, वोह नाबीना हो गई थी, वोह आप के घर की बांदी थी और उस ने आप को देखा था। आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह उ़ज़ैर का मकान है ? उस ने कहा : हां, और उ़ज़ैर कहां ! उन्हें मफ़्क़ूद (गुम) हुए सो बरस गुज़र गए येह कह कर ख़ूब रोई। आप ने फ़रमाया : मैं उ़ज़ैर हूं। उस ने कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه येह कैसे हो सकता है ? आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे सो बरस मुर्दा रखा, फिर ज़िन्दा किया। उस ने कहा : हज़रते उ़ज़ैर ''मुस्तजाबुद्दा'वात'' थे, जो दुआ़ करते क़बूल होती, आप दुआ़ कीजिये कि मैं बीना हो जाऊं ताकि मैं अपनी आंखों से आप को देखूं। आप ने दुआ़ फ़रमाई, वोह बीना हुई, आप ने उस का हाथ पकड़ कर फ़रमाया ? उठ ख़ुदा के हुक्म से। येह फ़रमाते ही उस के मारे हुए पाउं दुरुस्त हो गए। उस ने आप को देख कर पहचाना और कहा मैं गवाही देती हूं कि आप बेशक हज़रते उ़ज़ैर हैं। वोह आप को बनी इसराईल के मह़ल्ले में ले गई वहां एक मजलिस में आप के फ़रज़न्द थे जिन की उ़म्र एक सो अठ्ठारह साल की हो चुकी थी और आप के पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे, बुढ़िया ने मजलिस में पुकारा कि येह हज़रते उ़ज़ैर तशरीफ़ ले आए, अहले मजलिस ने उस को झुटलाया, उस ने कहा : मुझे देखो ! आप की दुआ़ से मेरी येह हालत हो गई। लोग उठे और आप के पास आए आप के फ़रज़न्द ने कहा कि मेरे वालिद साहिब के शानों के दरमियान सियाह बालों का एक हिलाल था। जिस्मे मुबारक खोल कर दिखाया गया तो वोह मौजूद था। उस ज़माने में तौरैत का कोई नुस्ख़ा न रहा था, कोई उस का जानने वाला मौजूद न था, आप ने तमाम तौरैत हिफ़्ज़ पढ़ दी। एक शख़्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मा'लूम हुवा कि बख़्ते नस्र की सितम अंगेज़ियों के बा'द गिरिफ़्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरैत एक जगह दफ़्न कर दी थी उस का पता मुझे मा'लूम है, उस पते पर जुस्तजू कर के तौरैत का वोह मदफ़ून नुस्ख़ा निकाला गया और हज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी याद से जो तौरैत लिखाई थी उस से मुक़ाबला किया गया तो एक ह़र्फ़ का फ़र्क़ न था। (جمل) **541 :** कि पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें आ पड़ीं।

مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ

मौत के बा'द तो अल्लाह ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा अ़र्ज़ की

لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى

दिन भर ठहरा होउंगा या कुछ कम फ़रमाया नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने

طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ

खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह इस लिये कि तुझे हम लोगों

اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ

के वासिते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۵۹﴾ وَاِذْ قَالَ

जब येह मुआमला उस पर ज़ाहिर हो गया बोला मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है और जब अ़र्ज़ की

اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی

इब्राहीम ने[542] ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं[543] अ़र्ज़ की यक़ीन क्यूं नहीं

وَلٰكِنْ لِّیَطْمَىٕنَّ قَلْبِیْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ

मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए[544] फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले कर अपने साथ

اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰی كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ؕ

हिला ले[545] फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते[546]

542 : मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि समुन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था। जुवार भाटे में समुन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता है, जब पानी चढ़ता तो मछलियां उस लाश को खातीं, जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते, जब दरिन्दे जाते तो परिन्द खाते, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने येह मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो आप को शौक़ हुवा कि आप मुलाह़ज़ा फ़रमाएं कि मुर्दे किस त़रह़ ज़िन्दा किये जाएंगे। आप ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया : या रब ! मुझे यक़ीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उन के अज्ज़ा दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पोटों से जम्अ़ फ़रमाएगा, लेकिन मैं येह अ़जीब मन्ज़र देखने की आरज़ू रखता हूं। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लील किया, मलकुल मौत ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त से इज़्न ले कर आप को येह बिशारत सुनाने आए, आप ने बिशारत सुन कर अल्लाह की ह़म्द की और मलकुल मौत से फ़रमाया कि इस ख़ुल्लत की अ़लामत क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : येह कि अल्लाह तआ़ला आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाए और आप के सुवाल पर मुर्दे ज़िन्दा करे। तब आप ने येह दुआ़ की। (خازن) 543 : अल्लाह तआ़ला आ़लिमे ग़ैब व शहादत है उस को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के कमाले ईमानो यक़ीन का इ़ल्म है बा वुजूद इस के येह सुवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यक़ीन नहीं ? इस लिये है कि सामिईन को सुवाल का मक़्सद मा'लूम हो जाए और वोह जान लें कि येह सुवाल किसी शको शुबे की बिना पर न था। (بیضاوی و جمل وغیرہ) 544 : और इन्तिज़ार की बेचैनी रफ़्अ़ हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि इस अ़लामत से मेरे दिल को तस्कीन हो जाए कि तूने मुझे अपना ख़लील बनाया। 545 : ताकि अच्छी त़रह़ शनाख़्त हो जाए। 546 : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने चार परिन्द लिये : मोर, मुर्ग़, कबूतर, कव्वा। उन्हें ब हुक्मे इलाही ज़ब्ह़

وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ

और जान रख कि **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की राह में

سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ

ख़र्च करते हैं[547] उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें[548] हर बाल में सो

حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ

दाने[549] और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है वोह जो

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَا

अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं[550] फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न

اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

तक्लीफ़ दें[551] उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न

يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ

कुछ ग़म अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना[552] उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द

किया, उन के पर उखाड़े और क़ीमा कर के उन के अज्ज़ा बाहम ख़ल्त़ कर दिये और उस मज्मूए़ के कई ह़िस्से किये। एक एक ह़िस्सा एक एक पहाड़ पर रखा और सर सब के अपने पास मह़फ़ूज़ रखे फिर फ़रमाया : चले आओ ! हुक्मे इलाही से। येह फ़रमाते ही वोह अज्ज़ा उड़े और हर हर जानवर के अज्ज़ा अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो कर अपनी तरतीब से जम्अ़ हुए और परिन्दों की शक्लें बन कर अपने पाउं से दौड़ते ह़ाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिल कर बिऐनिही पहले की त़रह़ मुकम्मल हो कर उड़ गए। سُبْحٰنَ الله **547 :** ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल, तमाम अब्वाबे ख़ैर को आ़म है ख़्वाह किसी त़ालिबे इ़ल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या अम्वात के ईसाले सवाब के लिये तीजे, दसवें, बीसवें, चालीसवें के त़रीक़े पर मसाकीन को खाना खिलाया जाए। **548 :** उगाने वाला ह़क़ीक़त में **अल्लाह** ही है दाने की त़रफ़ निस्बत मजाज़ी है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इस्नादे मजाज़ी जाइज़ है जब कि इस्नाद करने वाला ग़ैरे ख़ुदा को ''मुस्तक़िल फ़ित्तसर्रुफ़'' ए'तिक़ाद न करता हो। इसी लिये येह कहना जाइज़ है कि येह दवा नाफ़ेअ़ है, येह मुज़िर है, येह दर्द की दाफ़ेअ़ है, मां बाप ने पाला, आ़लिम ने गुमराही से बचाया, बुज़ुर्गों ने ह़ाजत रवाई की वग़ैरा, सब में इस्नादे मजाज़ी है और मुसल्मान के ए'तिक़ाद में फ़ाइले ह़क़ीक़ी सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला है बाक़ी सब वसाइल। **549 :** तो एक दाने के सात सो दाने हो गए, इसी त़रह़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से सात सो गुना अज्र हो जाता है। **550 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ़ सामान पेश किये और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चार हज़ार दिरहम सदक़े के बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, निस्फ़ मैं ने अपने अहलो इ़याल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर हैं, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे **अल्लाह** तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए। **551 :** एह़सान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर (रन्जीदा व ग़मगीन) करें और तक्लीफ़ देना येह कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था, हम ने तेरी ख़बरगीरी की या और त़रह़ दबाव दें, येह मम्नूअ़ फ़रमाया गया। **552 :** या'नी अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कहना और ख़ुश ख़ुल्क़ी के साथ जवाब देना जो उस को ना गवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दर गुज़र करना।

اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ﴿۲۶۳﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

सताना हो[553] और अल्लाह बे परवा हिल्म वाला है ऐ ईमान वालो अपने सदक़े

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰىۙ كَالَّذِیْ یُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا

बातिल न कर दो एह्सान रख कर और ईज़ा दे कर[554] उस की तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और

یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَیْهِ تُرَابٌ

अल्लाह और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है

فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا یَقْدِرُوْنَ عَلٰی شَیْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा[555] अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे

وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۶۴﴾ وَمَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ

और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता और उन की कहावत जो अपने माल

اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِیْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ

अल्लाह की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को[556] उस बाग़ की सी है

بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَیْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ یُصِبْهَا وَابِلٌ

जो भूड़ (रेतली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे

فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۲۶۵﴾ اَیَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ

तो ओस काफ़ी है[557] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[558] क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा[559] कि उस के पास

جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۙ لَهٗ فِیْهَا مِنْ كُلِّ

एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का[560] जिस के नीचे नदियां बहतीं उस के लिये उस में हर क़िस्म के

553 : आर दिला कर या एह्सान जता कर या और कोई तक्लीफ़ पहुंचा कर। 554 : या'नी जिस त़रह मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती, वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस त़रह तुम एह्सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो। 555 : येह मुनाफ़िक़ रियाकार के अ़मल की मिसाल है कि जिस त़रह पथ्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है ख़ाली पथ्थर रह जाता है, येही ह़ाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है और रोज़े क़ियामत वोह तमाम अ़मल बात़िल होंगे क्यूं कि रिज़ाए इलाही के लिये न थे। 556 : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने पर। 557 : येह मोमिने मुख़्लिस के आ'माल की एक मिसाल है कि जिस त़रह बुलन्द ख़ित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा, ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा हो, अल्लाह तआ़ला उस को बढ़ाता है। 558 : और तुम्हारी निय्यत व इख़्लास को जानता है। 559 : या'नी कोई पसन्द न करेगा क्यूं कि येह बात किसी आ़क़िल के गवारा करने के क़ाबिल नहीं है। 560 : गर्चे उस बाग़ में भी क़िस्म क़िस्म के दरख़्त होंगे मगर खजूर और अंगूर का ज़िक्र इस लिये किया कि येह नफ़ीस मेवे हैं।

الثَّمَرٰتِ ۙ وَ اَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ

फलों से है[561] और उसे बुढ़ापा आया[562] और उस के नातुवां बच्चे हैं[563] तो आया उस पर एक बगूला (इन्तिहाई तेज़ हवा का चक्कर)

فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

जिस में आग थी तो जल गया[564] ऐसा ही बयान करता है **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम

تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ

ध्यान लगाओ[565] ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो[566]

وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ

और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला[567] और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि

تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

दो तो उस में से[568] और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उस में चश्म पोशी न करो और जान रखो कि **अल्लाह**

غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾ اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ

बे परवा सराहा गया है शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है[569] मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का[570]

وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾ ۙ يُّؤْتِى

और **अल्लाह** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का[571] और **अल्लाह** वुस्अत वाला इल्म वाला है **अल्लाह**

561 : या'नी वोह बाग़ फ़रहत अंगेज़ व दिलकुशा भी है और नाफ़ेअ़ और उ़म्दा जाएदाद भी। **562 :** जो हाजत का वक़्त होता है और आदमी कस्बो मआ़श के क़ाबिल नहीं रहता। **563 :** जो कमाने के क़ाबिल नहीं और उन की परवरिश की हाजत है। ग़रज़ वक़्त निहायत शिद्दते हाजत का है और दारो मदार सिर्फ़ बाग़ पर और बाग़ भी निहायत उ़म्दा है। **564 :** वोह बाग़। तो उस वक़्त उस के रन्जो ग़म और हस्रतो यास की क्या इन्तिहा है, येही हाल उस का है जिस ने आ'माले हसना तो किये हों मगर रिज़ाए इलाही के लिये नहीं बल्कि रिया की ग़रज़ से, और वोह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते हाजत का वक़्त या'नी क़ियामत का दिन आए तो **अल्लाह** तआ़ला उन आ'माल को ना मक़्बूल कर दे, उस वक़्त उस को कितना रन्ज और कितनी हसरत होगी। एक रोज़ हज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने सहाबए किराम से फ़रमाया कि आप के इल्म में येह आयत किस बाब में नाज़िल हुई ? हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह मिसाल है एक दौलत मन्द शख़्स के लिये जो नेक अ़मल करता हो फिर शैतान के इग़वा से गुमराह हो कर अपनी तमाम नेकियों को ज़ाएअ़ कर दे। (مدارک وخازن) **565 :** और समझो कि दुन्या फ़ानी और आख़िबत आनी है। **566 मस्अला :** इस से कस्ब की इबाहत और अम्वाले तिजारत में ज़कात साबित होती है। (خازن ومدارک) येह भी हो सकता है कि आयत सदक़ए नाफ़िला व फ़र्ज़िया दोनों को आ़म हो। (تفسیر احمدی) **567 :** ख़्वाह वोह ग़ल्ले हों या फल या मआ़दिन वग़ैरा। **568 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोग ख़राब माल सदक़े में देते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** मुसद्दिक़ या'नी सदक़ा वुसूल करने वाले को चाहिये कि वोह मुतवस्सित् माल ले, न बिल्कुल ख़राब न सब से आ'ला। **569 :** कि अगर ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो नादार हो जाओगे। **570 :** या'नी बुख़्ल का और ज़कात व सदक़ा न देने का। इस आयत में येह लतीफ़ा है कि शैतान किसी तरह बुख़्ल की ख़ूबी ज़ेहन नशीन नहीं कर सकता इस लिये वोह येही करता है कि ख़र्च करने से नादारी का अन्देशा दिला कर रोके। आज कल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर मुसिर (डटे हुए) हैं वोह भी इसी हीले से काम लेते हैं। **571 :** सदक़ा देने पर और ख़र्च करने पर।

الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ

हिक्मत देता है[572] जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले और तुम जो ख़र्च करो[573] या मन्नत

مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ اِنْ تُبْدُوا

मानो[574] अल्लाह को उस की ख़बर है[575] और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं अगर ख़ैरात

الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ

अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है[576]

وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है उन्हें राह

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ

देना तुम्हारे ज़िम्मे लाज़िम नहीं[577] हां अल्लाह राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो

خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

तो तुम्हारा ही भला है[578] और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मरज़ी चाहने के लिये और जो माल दो

مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ

तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिये जाओगे उन फ़क़ीरों के लिये जो

572 : हिक्मत से या कुरआनो ह़दीस व फ़िक़्ह का इल्म मुराद है या तक़्वा या नुबुव्वत। (مدارک وخازن) 573 : नेकी में ख़्वाह बदी में। 574 : ताअ़त की या गुनाह की। "नज़्र" उ़र्फ़ में हदिय्या और पेशकश को कहते हैं और शरअ़ में नज़्र इबादत और क़ुर्बते मक़्सूदा है, इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वोह सह़ीह़ नहीं हुई। नज़्र ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिये होती है और येह जाइज़ है कि अल्लाह के लिये नज़्र करे और किसी वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को नज़्र के सर्फ़ का महल (ख़र्च करने की जगह) मुक़र्रर करे, मसलन किसी ने येह कहा : या रब ! मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा फ़ुलां मक़्सद पूरा कर दे कि फ़ुलां बीमार को तन्दुरुस्त कर दे तो मैं फ़ुलां वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को खाना खिलाऊं या वहां के ख़ुद्दाम को रुपिया पैसा दूं या उन की मस्जिद के लिये तेल या बोरिया ह़ाज़िर करूं तो येह नज़्र जाइज़ है। (ردالمحتار) 575 : वोह तुम्हें उस का बदला देगा। 576 : सदक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास से अल्लाह के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं। **मस्अला :** लेकिन सदक़ा फ़र्ज़ का ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल है और नफ़्ल का छुपा कर। **मस्अला :** और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इज़्हार भी अफ़्ज़ल है। (مدارک) 577 : आप बशीरो नज़ीर व दाई बना कर भेजे गए हैं, आप का फ़र्ज़ दा'वत पर तमाम हो जाता है, इस से ज़ियादा जोहद (कोशिश करना) आप पर लाज़िम नहीं। **शाने नुज़ूल :** क़ब्ले इस्लाम मुसल्मानों की यहूद से रिश्तेदारियां थीं इस वज्ह से वोह उन के साथ सुलूक किया करते थे, मुसल्मान होने के बा'द उन्हें यहूद के साथ सुलूक करना ना गवार होने लगा और उन्हों ने इस लिये हाथ रोकना चाहा कि उन के इस तर्ज़े अ़मल से यहूद इस्लाम की त़रफ़ माइल हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 578 : तो दूसरों पर इस का एहसान न जताओ।

أُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ

राहे खुदा में रोके गए[579] ज़मीन में चल नहीं सकते[580] नादान उन्हें

الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْــَٔلُوْنَ

तवंगर समझे बचने के सबब[581] तू उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा[582] लोगों से सुवाल

النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۷۳﴾ اَلَّذِيْنَ

नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है वोह जो

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर[583] उन के लिये उन का नेग (अज्र) है

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾ اَلَّذِيْنَ

उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म वोह जो

يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ

सूद खाते हैं[584] क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने

579 : या'नी सदक़ाते मज़्कूरा जो आयए "وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ" में ज़िक्र हुए उन का बेहतरीन मसरफ़ वोह फ़ुक़रा हैं जिन्हों ने अपने नुफ़ूस को जिहाद व ता़अते इलाही पर रोका। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले सुफ़्फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई। इन ह़ज़रात की ता'दाद चार सो के क़रीब थी, येह हिजरत कर के मदीनए तृय्यिबा हाज़िर हुए थे, न यहां इन का मकान था, न क़बीला कुम्बा, न इन ह़ज़रात ने शादी की थी, इन के तमाम अवक़ात इ़बादत में सर्फ़ होते थे, रात में क़ुरआने करीम सीखना, दिन में जिहाद के काम में रहना। आयत में इन के बा'ज़ औसाफ़ का बयान है। **580 :** क्यूं कि उन्हें दीनी कामों से इतनी फ़ुरसत नहीं कि वोह चल फिर कर कस्बे मआ़श कर सकें। **581 :** या'नी चूंकि वोह किसी से सुवाल नहीं करते इस लिये ना वाक़िफ़ लोग उन्हें मालदार ख़याल करते हैं। **582 :** कि मिज़ाज में तवाज़ोअ़ व इन्किसारी है, चेहरों पर ज़ो'फ़ के आसार हैं, भूक से रंग ज़र्द पड़ गए हैं। **583 :** या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर ह़ाल में ख़र्च करते रहते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के हक़ में नाज़िल हुई जब कि आप ने राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे, दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर। एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہٗ के हक़ में नाज़िल हुई, जब कि आप के पास फ़क़त् चार दिरहम थे और कुछ न था। आप ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया, एक रात में, एक दिन में, एक को पोशीदा, एक को ज़ाहिर। **फ़ाएदा :** आयते करीमा में नफ़्क़ए लैल को नफ़्क़ए नहार (रात के ख़र्च करने को दिन के ख़र्च करने) पर और नफ़्क़ए सिर को नफ़्क़ए अ़लानिया (छुपा कर ख़र्च करने को दिखा कर ख़र्च करने) पर मुक़द्दम फ़रमाया गया। इस में इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर कर के देने से अफ़्ज़ल है। **584 :** इस आयत में सूद की ह़ुरमत और सूद ख़्वारों की शामत का बयान है। सूद को ह़राम फ़रमाने में बहुत ह़िक्मतें हैं, बा'ज़ उन में से येह हैं कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह मुआ़वज़ए मालिया में **एक** मिक़्दारे माल का बिग़ैर बदल व इ़वज़ के लेना है येह सरीह़ ना इन्साफ़ी है। **दुवुम** सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूद ख़्वार को बे मेहनत माल का ह़ासिल होना तिजारत की मशक़्क़तों और ख़त्रों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआ़शरत को ज़रर पहुंचाती है। **सिवुम** सूद के रवाज से बाहमी मुवद्दत के सुलूक को नुक़्सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आ़दी हुवा तो वोह किसी को क़र्ज़े ह़सन से इमदाद पहुंचाना गवारा नहीं करता। **चहारुम** सूद से इन्सान की त़बीअ़त में दरिन्दों से ज़ियादा बे रह़मी पैदा होती है और सूद ख़्वार अपने मदयून (मक़्रूज़ों) की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है। इस के इ़लावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़्सान हैं और शरीअ़त की मुमानअ़त ऐन ह़िक्मत है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सूद

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ

छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो[585] येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है

وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ

और अल्लाह ने ह़लाल किया बैअ़ और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई

فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका[586] और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है[587] और जो अब ऐसी ह़रकत करेगा तो वोह

النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ

दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे[588] अल्लाह हलाक करता है सूद को[589] और बढ़ाता है ख़ैरात को[590]

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्रा बड़ा गुनहगार बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا

और न उन्हें कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ऐ ईमान वालो अल्लाह से

اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾ فَاِنْ لَّمْ

डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो[591] फिर अगर ऐसा

ख़्वार और इस के कार परदाज़ और सूदी दस्तावेज़ के कातिब और इस के गवाहों पर ला'नत की और फ़रमाया : वोह सब गुनाह में बराबर हैं। **585 :** मा'ना येह हैं कि जिस त़रह़ आसेब ज़दा सीधा खड़ा नहीं हो सकता गिरता पड़ता चलता है क़ियामत के रोज़ सूद ख़्वार का ऐसा ही ह़ाल होगा कि सूद से उस का पेट बहुत भारी और बोझल हो जाएगा और वोह उस के बोझ से गिर गिर पड़ेगा। सईद बिन जुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि येह अ़लामत उस सूद ख़्वार की है जो सूद को ह़लाल जाने। **586 :** या'नी ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल जो लिया उस पर मुआख़ज़ा नहीं। **587 :** जो चाहे अम्र फ़रमाए, जो चाहे मम्नूअ़ व ह़राम करे, बन्दे पर उस की इत़ाअ़त लाज़िम है। **588 मस्अला :** जो सूद को ह़लाल जाने वोह काफ़िर है हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि हर एक ह़रामे क़त़्ई का ह़लाल जानने वाला काफ़िर है। **589 :** और उस को बरकत से मह़रूम करता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस से न सदक़ा क़बूल करे, न ह़ज, न जिहाद, न सिला (रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक करना)। **590 :** उस को ज़ियादा करता है और उस में बरकत फ़रमाता है दुन्या में और आख़िरत में उस का अज्रो सवाब बढ़ाता है। **591 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी लैन दैन करते थे और उन की गिरां क़द्र सूदी रक़में दूसरों के ज़िम्मे बाक़ी थीं। इस में ह़ुक्म दिया गया कि सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने के बा'द साबिक़ के मुत़ालबे भी वाजिबुत्तर्क हैं और पहला मुक़र्रर किया हुवा सूद भी अब लेना जाइज़ नहीं।

تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ

न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का[592] और अगर तुम तौबा करो तो अपना

رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ[593] न तुम्हें नुक़्सान हो[594] और अगर क़र्ज़दार

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर

تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ

जानो[595] और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा[596] ऐ ईमान वालो जब

تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ

तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो[597] तो उसे लिख लो[598] और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला

بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ

ठीक ठीक लिखे[599] और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे **अल्लाह** ने सिखाया है[600] तो उसे लिख देना चाहिये

592 : येह वईदो तहदीद में मुबालग़ा व तश्दीद है, किस की मजाल कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई का तसव्वुर भी करे, चुनान्चे उन अस्हाब ने अपने सूदी मुत़ालबे छोड़े और येह अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई की हमें क्या ताब ! और ताइब हुए। **593 :** ज़ियादा ले कर। **594 :** रासुल माल घटा कर। **595 :** क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत देना या क़र्ज़ का जुज़्व या कुल मुआ़फ़ कर देना सबबे अज्रे अ़ज़ीम है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का क़र्ज़ा मुआ़फ़ किया **अल्लाह** तआ़ला उस को अपना सायए रह़मत अ़ता फ़रमाएगा जिस रोज़ उस के साए के सिवा कोई साया न होगा। **596 :** या'नी न उन की नेकियां घटाई जाएं न बदियां बढ़ाई जाएं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि येह सब से आख़िरी आयत है जो हुज़ूर पर नाज़िल हुई। इस के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इक्कीस रोज़ दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा रहे और एक क़ौल में नव शब और एक में सात, लेकिन शअ़बी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه से येह रिवायत की है कि सब से आख़िर आयते ربوا नाज़िल हुई। **597 :** ख़्वाह वोह दैन मबीअ़ हो या समन, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि इस से बैए सलम मुराद है। बैए सलम येह है कि किसी चीज़ को पेशगी क़ीमत ले कर फ़रोख़्त किया जाए और मबीअ़ मुश्तरी (ख़रीदार) को सिपुर्द करने के लिये एक मुद्दत मुअ़य्यन कर ली जाए। इस बैअ़ के जवाज़ के लिये जिन्स, नौअ़, सिफ़त, मिक़्दार, मुद्दत और मकाने अदा और मिक़्दारे रासुल माल इन चीज़ों का मा'लूम होना शर्त़ है। **598 :** येह लिखना मुस्तह़ब है। **फ़ाएदा** इस का येह है कि भूलचूक और मदयून के इन्कार का अन्देशा नहीं रहता। **599 :** अपनी त़रफ़ से कोई कमी बेशी न करे, न फ़रीक़ैन में से किसी की रू व रिआ़यत। **600 :** ह़ासिल मा'ना येह कि कोई कातिब लिखने से मन्अ़ न करे, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस को वसीक़ा नवीसी (अ़ह्दो पैमान लिखने) का इ़ल्म दिया, बे तग़य्युरो तब्दील दियानत व अमानत के साथ लिखे। येह किताबत एक क़ौल पर फ़र्ज़े किफ़ाया है, और एक क़ौल पर फ़र्ज़े ऐन बशर्त़ फ़राग़े कातिब जिस सूरत में इस के सिवा और न पाया जाए, और एक क़ौल पर मुस्तह़ब, क्यूं कि इस में मुसल्मान की ह़ाजत बरआरी (ह़ाजत पूरी करने) और ने'मते इ़ल्म का शुक्र है, और एक क़ौल येह है कि पहले येह किताबत फ़र्ज़ थी फिर "لَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ" से मन्सूख़ हुई।

وَلْيُمْلِلِ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ

और जिस पर हक़ आता है वोह लिखाता जाए और **अल्लाह** से डरे जो उस का रब है और हक़ में से कुछ रख न

شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ

छोड़े फिर जिस पर हक़ आता है अगर बे अक़्ल या नातुवां हो या लिखा न

اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ

सके[601] तो उस का वली इन्साफ़ से लिखाए और दो गवाह कर लो अपने

رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

मर्दों में से[602] फिर अगर दो मर्द न हों[603] तो एक मर्द और दो औ़रतें ऐसे गवाह जिन को

مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ

पसन्द करो[604] कि कहीं उन में एक औ़रत भूले तो उस एक को दूसरी याद दिलावे

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا

और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें[605] और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा हो

اَوْ كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ

या बड़ा उस की मीआ़द तक लिखत कर लो येह **अल्लाह** के नज़्दीक ज़ियादा इन्साफ़ की बात है और इस में गवाही ख़ूब ठीक रहेगी

وَاَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا

और येह इस से क़रीब है कि तुम्हें शुबा न पड़े मगर येह कि कोई सरे दस्त का सौदा दस्त ब दस्त

601 : या'नी अगर मदयून मज्नून या नाक़िसुल अ़क़्ल या बच्चा या शैख़े फ़ानी हो या गूंगा होने या ज़बान न जानने की वज्ह से अपने मुद्दआ़ का बयान न कर सकता हो। **602 :** गवाह के लिये हुर्रिय्यत व बुलूग़ मअ़ इस्लाम शर्त है। कुफ़्फ़ार की गवाही सिर्फ़ कुफ़्फ़ार पर मक़्बूल है। **603 मस्अला :** तन्हा औ़रतों की शहादत जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह चार क्यूं न हों मगर जिन उमूर पर मर्द मुत्तलअ़ नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना, बाकिरा होना और निसाई उ़यूब उन में एक औ़रत की शहादत भी मक़्बूल है। **मस्अला :** हुदूद व क़िसास में औ़रतों की शहादत बिल्कुल मो'तबर नहीं, सिर्फ़ मर्दों की शहादत ज़रूरी है। इस के सिवा और मुआ़मलात में एक मर्द और दो औ़रतों की शहादत भी मक़्बूल है। (مدارک واحمدی) **604 :** जिन का आ़दिल होना तुम्हें मा'लूम हो और जिन के सालेह़ होने पर तुम ए'तिमाद रखते हो। **605 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अदाए शहादत फ़र्ज़ है। जब मुद्दई गवाहों को त़लब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जाइज़ नहीं। येह हुक्म हुदूद के सिवा और उमूर में है, लेकिन हुदूद में गवाह को इज़्हार व इख़्फ़ा का इख़्तियार है बल्कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : जो मुसल्मान की पर्दापोशी करे **अल्लाह** तबारक व तआ़ला दुन्या व आख़िरत में उस की सत्तारी करेगा, लेकिन चोरी में माल लेने की शहादत देना वाजिब है ताकि जिस का माल चोरी किया गया है उस का हक़ तलफ़ न हो। गवाह इतनी एह़तियात़ कर सकता है कि चोरी का लफ़्ज़ न कहे, गवाही में येह कहने पर इक्तिफ़ा करे कि येह माल फ़ुलां शख़्स ने लिया है।

بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا

(हाथों हाथ) हो तो उस के न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं[606] और जब ख़रीदो फ़रोख़्त

تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ

करो तो गवाह कर लो[607] और न किसी लिखने वाले को ज़रर दिया जाए न गवाह को (या न लिखने वाला ज़रर दे न गवाह)[608] और जो ऐसा करो तो येह

فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿۲۸۲﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

जानता है और अगर तुम सफ़र में हो[609] और लिखने वाला न पाओ[610] तो गिरव हो क़ब्ज़े में दिया हुवा[611]

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ

और अगर तुम में एक दूसरे पर इत्मीनान हो तो वोह जिसे इस ने अमीन समझा था[612] अपनी अमानत अदा करे[613] और अल्लाह से डरे जो

رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ

उस का रब है और गवाही न छुपाओ[614] और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है[615] और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸۳﴾ ع لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ

तुम्हारे कामों को जानता है अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर

606 : चूंकि इस सूरत में लेन देन हो कर मुआमला ख़त्म हो गया और कोई अन्देशा बाक़ी न रहा नीज़ ऐसी तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त ब कसरत जारी रहती है, इस में किताबत व अश्हाद (लिखत पढ़त और गवाह बनाने) की पाबन्दी शाक़ व गिरां होगी। **607 :** येह मुस्तहब है, क्यूं कि इस में एहतियात है। **608 :** "يُضَآرَّ" में दो एहतिमाल हैं मज्हूल व मा'रूफ़ होने के, क़िराअते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما अव्वल की और क़िराअते उमर رضی اللہ عنہ सानी की मुअय्यिद है। **पहली** तक्दीर पर मा'ना येह हैं कि अहले मुआमला कातिबों और गवाहों को ज़रर न पहुंचाएं, इस तरह कि वोह अगर अपनी ज़रूरतों में मश्गूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उन के काम छुड़ाएं या हक़्क़े किताबत न दें या गवाह को सफ़र ख़र्च न दें अगर वोह दूसरे शहर से आया हो। **दूसरी** तक्दीर पर मा'ना येह हैं कि कातिब व शाहिद अहले मुआमला को ज़रर न पहुंचाएं इस तरह कि बा वुजूद फ़ुरसत व फ़राग़त के न आएं या किताबत में तहरीफ़ व तब्दील, ज़ियादती व कमी करें। **609 :** और क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आए **610 :** और वसीक़ा व दस्तावेज़ की तहरीर का मौक़अ़ न मिले तो इत्मीनान के लिये। **611 :** या'नी कोई चीज़ दाइन (क़र्ज़ देने वाले) के क़ब्ज़े में गिरवी के तौर पर दे दो। **मस्अला :** येह मुस्तहब है और हालते सफ़र में रहन आयत से साबित हुवा और ग़ैरे सफ़र की हालत में हदीस से साबित है, चुनान्चे रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने मदीनए तय्यिबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रख कर बीस साअ़ जव लिये। **मस्अला :** इस आयत से रहन का जवाज़ और क़ब्ज़े का शर्त होना साबित होता है। **612 :** या'नी मदयून जिस को दाइन ने अमीन समझा था। **613 :** इस अमानत से दैन मुराद है। **614 :** क्यूं कि इस में साहिबे हक़ के हक़ का इब्ताल है। येह ख़िताब गवाहों को है कि वोह जब शहादत की इक़ामत व अदा के लिये तलब किये जाएं तो हक़ को न छुपाएं और एक क़ौल येह है कि येह ख़िताब मदयूनों को है कि वोह अपने नफ़्स पर शहादत देने में तअम्मुल न करें। **615 :** हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से एक हदीस मरवी है कि कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक करना और झूटी गवाही देना और गवाही को छुपाना है।

تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ

तुम ज़ाहिर करो जो कुछ[616] तुम्हारे जी में है या छुपाओ अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा[617] तो जिसे चाहेगा

يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۸۴﴾ اٰمَنَ

बख़्शेगा[618] और जिसे चाहेगा सज़ा देगा[619] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है रसूल

الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना[620] अल्लाह और उस के

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫

फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को[621] येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते[622]

وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا يُكَلِّفُ

और अर्ज़ की, कि हम ने सुना और माना[623] तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है अल्लाह किसी

616 : बदी **617 :** इन्सान के दिल में दो त़रह़ के ख़याल़ात आते हैं : **एक** बत़ौर वस्वसा के, इन से दिल का ख़ाली करना इन्सान की मक़्दिरत (त़ाक़त व इख़्तियार) में नहीं, लेकिन वोह इन को बुरा जानता है और अ़मल में लाने का इरादा नहीं करता इन को ह़दीसे नफ़्स और वस्वसा कहते हैं, इस पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वस्वसे गुज़रते हैं अल्लाह तआ़ला इन से तजावुज़ फ़रमाता है जब तक कि वोह इन्हें अ़मल में न लाएं या उन के साथ कलाम न करें, येह वस्वसे इस आयत में दाख़िल नहीं। **दूसरे** वोह ख़याल़ात जिन को इन्सान अपने दिल में जगह देता है और उन को अ़मल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुआख़ज़ा होगा, और उन्हीं का बयान इस आयत में है। **मस्अला :** कुफ़्र का अ़ज़्म करना कुफ़्र है और गुनाह का अ़ज़्म कर के अगर आदमी उस पर साबित रहे और उस का क़स्द व इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अ़मल में लाने के अस्बाब उस को बहम न पहुंचें और मजबूरन वोह उस को कर न सके तो जम्हूर के नज़्दीक उस से मुआख़ज़ा किया जाएगा। शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी और शम्सुल अइम्मा ह़लवानी इसी त़रफ़ गए हैं और उन की दलील आयए ''اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ'' और ह़दीसे ह़ज़रते आ़इशा है जिस का मज़्मून येह है कि बन्दा जिस गुनाह का क़स्द करता है अगर वोह अ़मल में न आए जब भी उस पर इ़क़ाब किया जाता है। **मस्अला :** अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया, फिर उस पर नादिम हुवा, इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह उस को मुआ़फ़ फ़रमाएगा। **618 :** अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को। **619 :** अपने अ़द्ल से। **620 :** ज़ुज्जाज ने कहा कि जब अल्लाह तआ़ला ने इस सूरत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, ह़ज की फ़र्ज़िय्यत और त़लाक़, ईला, ह़ैज़ व जिहाद के अह़काम और अम्बिया के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए तो सूरत के आख़िर में येह ज़िक्र फ़रमाया कि नबिय्ये करीम ﷺ और मोमिनीन ने उस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और क़ुरआन और इस के जुम्ला शराएअ़ व अह़काम के मुनज़्ज़ल मिनल्लाह (अल्लाह की त़रफ़ से नाज़िल) होने की तस्दीक़ की। **621 :** येह उसूल व ज़रूरिय्याते ईमान के चार मर्तबे हैं : (1) **''अल्लाह पर ईमान लाना''** येह इस त़रह़ कि ए'तिक़ाद व तस्दीक़ करे कि अल्लाह वाह़िद, अह़द है, उस का कोई शरीक व नज़ीर नहीं, उस के तमाम अस्माए ह़ुस्ना व सिफ़ाते उ़ल्या पर ईमान लाए और यक़ीन करे और माने कि वोह अ़लीम और हर शै पर क़दीर है और उस के इ़ल्मो क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं। (2) **''मलाएका पर ईमान लाना''** येह इस त़रह़ पर है कि यक़ीन करे और माने कि वोह मौजूद हैं, मा'सूम हैं, पाक हैं, अल्लाह के और उस के रसूलों के दरमियान अह़काम व पयाम के वसाइत़ (वासित़े) हैं। (3) **''अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना''** इस त़रह़ कि जो किताबें अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाईं और अपने रसूलों के पास ब त़रीक़े वह़्य भेजीं बे शको शुबा सब ह़क़ व सिद्क़ और अल्लाह की त़रफ़ से हैं और क़ुरआने करीम तग़यीर, तब्दील, तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ है और मोह़कम और मुतशाबह पर मुश्तमिल है। (4) **''रसूलों पर ईमान लाना''** इस त़रह़ पर कि ईमान लाए कि वोह अल्लाह के रसूल हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों की त़रफ़ भेजा, उस की वह़्य के अमीन हैं, गुनाहों से पाक मा'सूम हैं, सारी ख़ल्क़ से अफ़्ज़ल हैं, उन में बा'ज़ ह़ज़रात बा'ज़ से अफ़्ज़ल हैं। **622 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा'ज़ पर ईमान लाए, बा'ज़ का इन्कार किया। **623 :** तेरे ह़ुक्म व इर्शाद को।

اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا

जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई[624] ऐ रब हमारे

تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا

हमें न पकड़ अगर हम भूलें[625] या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा

حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (ताक़त)

بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا

न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मेहर (रहम) कर तू हमारा मौला है तो

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

काफ़िरों पर हमें मदद दे

सूरए आले इमरान मदनिय्या है[1], इस में दो सो आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं[2] आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला उस ने तुम पर येह सच्ची किताब

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾ مِنْ

उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरैत और इन्जील

624 : या'नी हर जान को अ़मले नेक का अज्रो सवाब और अ़मले बद का अ़ज़ाब व इक़ाब होगा। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को तरीक़े दुआ़ की तल्क़ीन फ़रमाई कि वोह इस तरह अपने परवर दगार से अ़र्ज़ करें। **625 :** और सहव से तेरे किसी हुक्म की ता'मील में क़ासिर रहें। **1 :** सूरए आले इमरान मदीनए तय्यिबा में नाज़िल हुई, इस में दो सो आयतें, तीन हज़ार चार सो अस्सी कलिमे, चौदह हज़ार पांच सो बीस हुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वफ़्दे नजरान के हक़ में नाज़िल हुई जो साठ सुवारों पर मुश्तमिल था, उस में चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बड़े अकाबिर व मुक़्तदा, **एक आ़क़िब** जिस का नाम अ़ब्दुल मसीह था, येह शख़्स अमीरे क़ौम था और बिग़ैर इस की राय के नसारा कोई काम नहीं करते थे। **दूसरा सय्यिद** जिस का नाम ऐहम था, येह शख़्स अपनी क़ौम का मो'तमदे आ'ज़म और मालियात का अफ़्सरे आ'ला था। ख़ुर्दो नोश और रसदों (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) के तमाम इन्तिज़ामात इसी के हुक्म से होते थे। **तीसरा अबू हारिसा** इब्ने अ़ल्क़मा था, येह शख़्स नसारा के तमाम उ़लमा और पादरियों का पेश्वाए आ'ज़म था। सलातीने रूम इस के इ़ल्म और इस की दीनी अ़ज़मत के लिहाज़ से इस का इक्राम व अदब करते थे। येह तमाम लोग उ़म्दा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शानो शकोह से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ से मुनाज़रा करने के क़स्द से आए और मस्जिदे अक़्दस में दाख़िल हुए, हुज़ूरे

قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

उतारी लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा बेशक वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर हुए[3]

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُوانْتِقَامٍ ﴿۴﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और **अल्लाह** ग़ालिब बदला लेने वाला है **अल्लाह** पर कुछ छुपा

عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿۵﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي

नहीं ज़मीन में न आस्मान में वोही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है

الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶﴾ هُوَ الَّذِيْۤ

माओं के पेट में जैसी चाहे[4] उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला हि़क्मत वाला[5] वोही है जिस ने

اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ

तुम पर येह किताब उतारी इस की कुछ आयतें साफ़ मा'ना रखती हैं[6] वोह किताब की अस्ल हैं[7] और दूसरी वोह हैं जिन के

अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات उस वक़्त नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा रहे थे, इन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आ गया और इन्हों ने भी मस्जिद शरीफ़ ही में जानिबे शर्क़ मुतवज्जेह हो कर नमाज़ शुरूअ़ कर दी। फ़राग़ के बा'द हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات से गुफ़्तगू शुरूअ़ की। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : तुम इस्लाम लाओ ! कहने लगे : हम आप से पहले इस्लाम ला चुके। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : येह ग़लत़ है, येह दा'वा झूटा है, तुम्हें इस्लाम से तुम्हारा येह दा'वा रोकता है कि **अल्लाह** की औलाद है, और तुम्हारी सलीब परस्ती रोकती है और तुम्हारा ख़िन्ज़ीर खाना रोकता है। उन्हों ने कहा कि अगर ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा के बेटे न हों तो बताइये उन का बाप कौन है ? और सब के सब बोलने लगे। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशाबेह होता है ! उन्हों ने इक़्रार किया। फिर फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब ह़य्युन ला यमूत है, उस के लिये मौत मुह़ाल है और ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات पर मौत आने वाली है ! उन्हों ने इस का भी इक़्रार किया। फिर फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब बन्दों का कारसाज़ और उन का हाफ़िज़े ह़क़ीक़ी और रोज़ी देने वाला है ! उन्हों ने कहा : हां। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या ह़ज़रते ई़सा भी ऐसे ही हैं ? कहने लगे : नहीं। फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि **अल्लाह** तआ़ला पर आस्मान व ज़मीन की कोई चीज़ पोशीदा नहीं ! उन्हों ने इक़्रार किया। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ई़सा बिग़ैर ता'लीमे इलाही इस में से कुछ जानते हैं ? उन्हों ने कहा : नहीं। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि ह़ज़रते ई़सा ह़म्ल में रहे, पैदा होने वालों की त़रह़ पैदा हुए, बच्चों की त़रह़ ग़िज़ा दिये गए, खाते, पीते थे, अ़वारिज़े बशरी रखते थे, उन्हों ने इस का इक़्रार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर वोह कैसे इलाह हो सकते हैं ! जैसा कि तुम्हारा गुमान है। इस पर वोह सब साकित रह गए और उन से कोई जवाब बन न आया। इस पर सूरए आले इमरान की अव्वल से कुछ ऊपर अस्सी आयतें नाज़िल हुईं। **फ़ाएदा :** सिफ़ाते इलाहिय्यह में "ह़य्युन" ब मा'ना दाइम बाक़ी के है या'नी ऐसा हमेशगी रखने वाला जिस की मौत मुम्किन न हो। क़य्यूम वोह है जो क़ाइम बिज़्ज़ात हो और ख़ल्क़ अपनी दुन्यवी और उख़्रवी ज़िन्दगी में जो ह़ाजतें रखती है उस की तदबीर फ़रमाए। **3 :** इस में वफ़्दे नजरान के नसरानी भी दाख़िल हैं **4 :** मर्द, औ़रत, गोरा, काला, ख़ूब सूरत, बद शक्ल वग़ैरा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा माद्दए पैदाइश मां के पेट में चालीस रोज़ जम्अ़ होता है, फिर इतने ही दिन अ़लक़ह या'नी ख़ून बस्ता (जमे हुए ख़ून) की शक्ल में होता है, फिर इतने ही दिन पारए गोश्त की सूरत में रहता है, फिर **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़, उस की उ़म्र, उस के अ़मल, उस का अन्जामे कार या'नी उस की सआ़दत व शक़ावत लिखता है, फिर उस में रूह़ डालता है। तो उस की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं आदमी जन्नतियों के से अ़मल करता रहता है, यहां तक कि उस में और जन्नत में हाथ भर का या'नी बहुत ही कम फ़र्क़ रह जाता है तो किताब सब्क़त करती है और वोह दोज़ख़ियों के से अ़मल करता है, उसी पर उस का ख़ातिमा हो जाता है और दाख़िले जहन्नम होता है, और कोई ऐसा होता है कि दोज़ख़ियों के से अ़मल करता रहता है यहां तक कि उस में और दोज़ख़ में एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है फिर किताब सब्क़त करती है और उस की ज़िन्दगी का नक़्शा बदलता है और वोह जन्नतियों के से अ़मल करने लगता है, इसी पर उस का ख़ातिमा होता है और दाख़िले जन्नत हो जाता है। **5 :** इस में भी नसारा का रद है जो ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को ख़ुदा का बेटा कहते और उन की इबादत करते थे। **6 :** जिस में कोई एह़तिमाल व इश्तिबाह नहीं। **7 :** कि अह़काम में

مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ

मा'ना में इश्तिबाह है[8] वोह जिन के दिलों में कजी है[9] वोह इश्तिबाह वाली के पीछे पड़ते

مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ؗۚ وَ مَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا

हैं[10] गुमराही चाहने[11] और उस का पहलू ढूंढने को[12] और उस का ठीक पहलू **अल्लाह** ही को मा'लूम

اللّٰهُ ؔۘ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ

है[13] और पुख़्ता इल्म वाले[14] कहते हैं हम उस पर ईमान लाए[15] सब हमारे रब के पास से है[16]

وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۷ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले[17] ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तूने

هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝۸ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ

हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला ऐ रब हमारे बेशक तू

جَامِعُ النَّاسِ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ۝۹ ع

सब लोगों को जम्अ़ करने वाला है[18] उस दिन के लिये जिस में कोई शुब्हा नहीं[19] बेशक **अल्लाह** का वा'दा नहीं बदलता[20]

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِیَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ

बेशक वोह जो काफ़िर हुए[21] उन के माल और उन की औलाद **अल्लाह** से उन्हें कुछ

اللّٰهِ شَیْـًٔا ؕ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝۱۰ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

न बचा सकेंगे और वोही दोज़ख़ के ईंधन हैं जैसे फ़िरऔ़न वालों

उन की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता है, और ह़लाल व ह़राम में उन्हीं पर अ़मल । **8 :** वोह चन्द वुजूह का एह़तिमाल रखती हैं । उन में से कौन सी वज्ह मुराद है येह **अल्लाह** ही जानता है, या जिस को **अल्लाह** तआ़ला इस का इल्म दे । **9 :** या'नी गुमराह और बद मज़हब लोग जो हवाए नफ़्सानी के पाबन्द हैं । **10 :** और उस के ज़ाहिर पर हुक्म करते हैं या तावीले बात़िल करते हैं और येह नेक निय्यती से नहीं बल्कि (جمل) **11 :** और शको शुबा में डालने (جمل) **12 :** अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ बा वुजूदे कि वोह तावील के अह्ल नहीं । (جمل وخازن) **13 :** ह़क़ीक़त में (جمل) और अपने करम व अ़त़ा से जिस को वोह नवाज़े । **14 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : आप फ़रमाते थे कि मैं "रासिख़ीन फ़िल इल्म" से हूं, और मुजाहिद से मरवी है कि मैं उन में से हूं जो मुतशाबह की तावील जानते हैं । ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ से मरवी है कि "रासिख़ फ़िल इल्म" वोह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इल्म का मुत्तबेअ़ हो, और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह है कि "रासिख़ फ़िल इल्म" वोह हैं जिन में चार सिफ़तें हों : तक़्वा **अल्लाह** का, तवाज़ोअ़ लोगों से, ज़ोह्द दुन्या से, मुजाहदा नफ़्स के साथ । (خازن) **15 :** कि वोह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और जो मा'ना उस की मुराद हैं ह़क़ हैं और उस का नाज़िल फ़रमाना ह़िक्मत है । **16 :** मोह़कम हो या मुतशाबह । **17 :** और रासिख़ इल्म वाले कहते हैं **18 :** ह़िसाब या जज़ा के वासिते । **19 :** वोह रोज़े क़ियामत है । **20 :** तो जिस के दिल में कजी हो वोह हलाक होगा और जो तेरे मिन्नतो एह़सान से हिदायत पाए वोह सईद होगा, नजात पाएगा । **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि किज़्ब "मुनाफ़िये उलूहिय्यत" है, लिहाज़ा ह़ज़रते क़ुद्दूस क़दीर का किज़्ब मुह़ाल और उस की त़रफ़ इस की निस्बत सख़्त बे अदबी । (مدارک وابوسعود وغیرہ) **21 :** रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुन्ह़रिफ़ हो कर ।

وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ

और उन से अगलों का त़रीक़ा उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो अल्लाह ने उन के गुनाहों पर उन को पकड़ा

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ

और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त फ़रमा दो काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़्लूब होगे

وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ

और दोज़ख़ की त़रफ़ हांके जाओगे[22] और वोह बहुत ही बुरा बिछोना बेशक तुम्हारे लिये निशानी थी[23]

فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۭ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ

दो गुरौहों में जो आपस में भिड़ पड़े[24] एक जथ्था (गुरौह) अल्लाह की राह में लड़ता[25] और दूसरा काफ़िर[26]

يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۭ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ

कि उन्हें आंखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है[27]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ

बेशक इस में अ़क़्ल मन्दों के लिये ज़रूर देख कर सीखना है लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की मह़ब्बत[28]

مِنَ النِّسَاۗءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّھَبِ وَالْفِضَّةِ

औरतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर

وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۭ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती येह जीती दुन्या की पूंजी

22 **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि जब बद्र में कुफ़्फ़ार को रसूले अकरम صلی اللہ علیہ وسلم शिकस्त दे कर मदीनए त़य्यिबा वापस हुए तो हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने यहूद को जम्अ़ कर के फ़रमाया कि तुम अल्लाह से डरो और इस से पहले इस्लाम लाओ कि तुम पर ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जैसी बद्र में क़ुरैश पर हुई, तुम जान चुके हो मैं नबिय्ये मुरसल हूं, तुम अपनी किताब में येह लिखा पाते हो। इस पर उन्हों ने कहा कि क़ुरैश तो फ़ुनूने ह़र्ब (जंगी हुनर व महारत) से ना आशना हैं, अगर हम से मुक़ाबला हुवा तो आप को मा'लूम हो जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें ख़बर दी गई कि वोह मग़्लूब होंगे और क़त्ल किये जाएंगे, गिरिफ़्तार किये जाएंगे, उन पर जिज़्या मुक़र्रर होगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने एक रोज़ में छ[6] सो की ता'दाद को क़त्ल फ़रमाया और बहुतों को गिरिफ़्तार किया और अहले ख़ैबर पर जिज़्या मुक़र्रर फ़रमाया। **23 :** इस के मुख़ात़ब यहूद हैं और बा'ज़ के नज़्दीक तमाम कुफ़्फ़ार और बा'ज़ के नज़्दीक मोमिनीन (جمل) **24 :** जंगे बद्र में। **25 :** या'नी नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم और आप के अस्ह़ाब इन की कुल ता'दाद तीन सो तेरह थी, सतत्तर मुहाजिर और दो सो छत्तीस अन्सार, मुहाजिरीन के साह़िबे रायत (जिन के हाथ में परचम था वोह) ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा थे और अन्सार के ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رضی اللہ عنہما। इस कुल लश्कर में दो घोड़े सत्तर ऊंट और छ[6] ज़िरह, आठ तलवारें थीं और इस वाक़िए में चौदह सह़ाबा शहीद हुए छ[6] मुहाजिर और आठ अन्सार। **26 :** कुफ़्फ़ार की ता'दाद नव सो पचास थी उन का सरदार उ़त्बा बिन रबीआ़ था और उन के पास सो घोड़े थे और सात सो ऊंट और ब कसरत ज़िरह और हथियार थे। (جمل) **27 :** ख़्वाह उस की ता'दाद क़लील ही हो और सरो सामान की कितनी ही कमी हो। **28 :** ताकि शह्वत परस्तों और ख़ुदा परस्तों के

الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ

है[29] और अल्लाह है जिस के पास अच्छा ठिकाना[30] तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इस से[31] बेहतर चीज़

ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

बता दूं परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ

हमेशा उन में रहेंगे और सुथरी बीबियां[32] और अल्लाह की ख़ुशनूदी[33] और अल्लाह बन्दों को

بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا

देखता है[34] वोह जो कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआफ़ कर

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले सब्र वाले[35] और सच्चे[36] और अदब वाले और राहे ख़ुदा में ख़र्चने वाले

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ

और पिछले पहर से मुआ़फ़ी मांगने वाले[37] अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं[38]

وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ

और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने[39] इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला

दरमियान फ़र्क़ व इम्तियाज़ ज़ाहिर हो, जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : "اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا" । **29 :** इस से कुछ अ़र्से नफ़्अ़ पहुंचता है फिर फ़ना हो जाती है। इन्सान को चाहिये कि मताए दुन्या को ऐसे काम में ख़र्च करे जिस में उस की आ़क़िबत की दुरुस्ती और सआ़दते आख़िरत हो। **30 :** जन्नत। तो चाहिये कि इस की रग़बत की जाए और दुन्याए ना पाएदार की फ़ानी मरग़ूबात से दिल न लगाया जाए। **31 :** मताए दुन्या से। **32 :** जो ज़नाना अ़वारिज़ और हर ना पसन्द व क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक। **33 :** और येह सब से आ'ला ने'मत है। **34 :** और उन के आ'माल व अह़वाल जानता और उन की जज़ा देता है। **35 :** जो त़ाअ़तों और मुसीबतों पर सब्र करें और गुनाहों से बाज़ रहें। **36 :** जिन के क़ौल और इरादे और निय्यतें सब सच्ची हों। **37 :** इस में आख़िर शब में नमाज़ पढ़ने वाले भी दाख़िल हैं और वक़्ते सह़र के दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करने वाले भी, येह वक़्त ख़ल्वत व इजाबते दुआ़ का है। ह़ज़रते लुक़्मान عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया कि मुर्ग़ से कम न रहना कि वोह तो सह़र से निदा करे और तुम सोते रहो। **38 शाने नुज़ूल :** अह़बारे शाम में से दो शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। जब उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा देखा तो एक दूसरे से कहने लगा कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा के शहर की येही सिफ़त है जो इस शहर में पाई जाती है। जब आस्तानए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने हुज़ूर के शक्लो शमाइल तौरैत के मुत़ाबिक़ देख कर हुज़ूर को पहचान लिया और अ़र्ज़ किया : आप मुह़म्मद हैं? हुज़ूर ने फ़रमाया : हां। फिर अ़र्ज़ किया कि आप अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं? फ़रमाया : हां। अ़र्ज़ किया : हम एक सुवाल करते हैं अगर आप ने ठीक जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आएंगे। फ़रमाया : सुवाल करो! उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि किताबुल्लाह में सब से बड़ी शहादत कौन सी है? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस को सुन कर वोह दोनों ह़ब्र (यहूदी आ़लिम) मुसल्मान हो गए। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा में तीन सो साठ बुत थे, जब मदीनए त़य्यिबा में येह आयत नाज़िल हुई तो का'बे के अन्दर वोह सब सज्दे में गिर गए। **39 :** या'नी अम्बिया व औलिया ने।

الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۟ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ

हिक्मत वाला बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है[40] और फूट में न पड़े

اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

किताबी[41] मगर बा'द इस के कि उन्हें इल्म आ चुका[42] अपने दिलों की जलन से[43] और जो **अल्लाह** की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ

आयतों का मुन्किर हो तो बेशक **अल्लाह** जल्द हिसाब लेने वाला है फिर ऐ महबूब अगर वोह तुम से हुज्जत करें तो फ़रमा दो मैं अपना मुंह **अल्लाह**

وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ

के हुज़ूर झुकाए हूं और जो मेरे पैरव हुए[44] और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ[45]

ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ

क्या तुम ने गरदन रखी[46] पस अगर वोह गरदन रखें जब तो राह पा गए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो येही हुक्म पहुंचा

الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

देना है[47] और **अल्लाह** बन्दों को देख रहा है वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर होते

وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ

और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते[48] और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को

بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

क़त्ल करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी दो दर्दनाक अ़ज़ाब की येह हैं वोह जिन के

40 : इस के सिवा कोई और दीन मक़्बूल नहीं। यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार जो अपने दीन को अफ़्ज़ल व मक़्बूल कहते हैं इस आयत में उन के दा'वे को बातिल कर दिया। **41 :** येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में वारिद हुई, जिन्हों ने इस्लाम को छोड़ा और उन्हों ने सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ किया। **42 :** वोह अपनी किताबों में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख चुके और उन्हों ने पहचान लिया कि येही वोह नबी हैं जिन की कुतुबे इलाहिय्यह में ख़बरें दी गई हैं। **43 :** या'नी उन के इख़्तिलाफ़ का सबब उन का हसद और मनाफ़ेए दुन्यविया की तमअ़ है। **44 :** या'नी मैं और मेरे मुत्तबिईन हमातन (यक्सूई से पूरे तौर पर) **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार और मुतीअ़ हैं, "हमारा दीन" दीने तौहीद है, जिस की सिह्हत तुम्हें ख़ुद अपनी किताबों से भी साबित हो चुकी है तो इस में तुम्हारा हम से झगड़ा करना बिल्कुल बातिल है। **45 :** जितने काफ़िर ग़ैर किताबी हैं वोह उम्मिय्यीन में दाख़िल हैं, इन्हीं में से अ़रब के मुश्रिकीन भी हैं। **46 :** और दीने इस्लाम के हुज़ूर सरे नियाज़ ख़म किया या बा वुजूद बराहीने बय्यिना क़ाइम होने के तुम अभी तक अपने कुफ़्र पर हो। येह दा'वते इस्लाम का एक पैराया है, और इस तरह उन्हें दीने हक़ की तरफ़ बुलाया जाता है। **47 :** वोह तुम ने पूरा कर ही दिया इस से उन्हों ने नफ़्अ़ न उठाया तो नुक़्सान में वोह रहे। इस में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर है कि आप उन के ईमान न लाने से रन्जीदा न हों। **48 :** जैसा कि बनी इसराईल ने सुब्ह को एक साअ़त के अन्दर तेंतालीस नबियों को क़त्ल किया, फिर जब उन में से एक सो बारह आ़बिदों ने उठ कर उन्हें नेकियों का हुक्म दिया और बदियों से मन्अ़ किया तो उसी रोज़ शाम को उन्हें भी क़त्ल कर दिया। इस आयत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने के यहूद को तौबीख़ है क्यूं कि वोह अपने आबाओ अज्दाद के ऐसे बद तरीन फ़े'ल से राज़ी हैं।

حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ٘ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۲۲﴾ اَلَمْ

अ़मल अकारत गए दुन्या व आख़िरत में[49] और उन का कोई मददगार नहीं[50] क्या तुम ने

تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ یُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ

उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला[51] किताबुल्लाह की त़रफ़ बुलाए जाते हैं

لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ ثُمَّ یَتَوَلّٰى فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ وَ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾ ذٰلِكَ

कि वोह उन का फ़ैसला करे फिर उन में का एक गुरोह इस से रूगर्दां हो कर फिर जाता है[52] येह जुर्अत[53]

بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَیَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ۪ وَّ غَرَّهُمْ فِیْ

उन्हें इस लिये हुई कि वोह कहते हैं हरगिज़ हमें आग न छूएगी मगर गिनती के दिनों[54] और उन के

دِیْنِهِمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَكَیْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ

दीन में उन्हें फ़रेब दिया उस झूट ने जो बांधते थे[55] तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकठ्ठा करेंगे उस दिन के लिये जिस में शक

فِیْهِ٘ وَ وُفِّیَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ

नहीं[56] और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा यूं अ़र्ज़ कर

49 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है और येह भी कि कुफ़्र से तमाम आ'माल अकारत हो जाते हैं। **50 :** कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचाए। **51 :** या'नी यहूद को कि उन्हें तौरैत शरीफ़ के उ़लूम व अह़काम सिखाए गए थे जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ व अह़वाल और दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का बयान है। इस से लाज़िम आता था कि जब ह़ुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों और उन्हें क़ुरआने करीम की त़रफ़ दा'वत दें तो वोह ह़ुज़ूर पर और क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएं और इस के अह़काम की ता'मील करें लेकिन उन में से बहुतों ने ऐसा नहीं किया। इस तक़्दीर पर आयत में ''مِنَ الْكِتَابِ'' से तौरैत और ''كِتَابُ اللّٰهِ'' से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है। **52 शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से एक रिवायत येह आई है कि एक मरतबा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم बैतुल मदरास में तशरीफ़ ले गए और वहां यहूद को इस्लाम की दा'वत दी। नुऐ़म इब्ने अ़म्र और ह़ारिस इब्ने ज़ैद ने कहा कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप किस दीन पर हैं ? फ़रमाया : मिल्लते इब्राहीमी पर। वोह कहने लगे : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام तो यहूदी थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तौरैत लाओ ! अभी हमारे तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो जाएगा। इस पर न जमे और मुन्किर हो गए, इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। इस तक़्दीर पर आयत में ''كِتَابُ اللّٰهِ'' से तौरैत मुराद है। इन्हीं ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से एक रिवायत येह भी मरवी है कि यहूदे ख़ैबर में से एक मर्द ने एक औ़रत के साथ ज़िना किया था और तौरैत में ऐसे गुनाह की सज़ा पथ्थर मार मार कर हलाक कर देना है लेकिन चूंकि येह लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ानदान के थे इस लिये उन्हों ने उन का संगसार करना गवारा न किया और इस मुआ़मले को ब ई उम्मीद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास लाए कि शायद आप संगसार करने का हुक्म न दें मगर ह़ुज़ूर ने उन दोनों के संगसार करने का हुक्म दिया, इस पर यहूद त़ैश में आए और कहने लगे कि इस गुनाह की येह सज़ा नहीं आप ने ज़ुल्म किया। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि फ़ैसला तौरैत पर रखो। कहने लगे : येह इन्साफ़ की बात है। तौरैत मंगाई गई और अ़ब्दुल्लाह बिन सौर या यहूद के बड़े आ़लिम ने उस को पढ़ा, उस में आयते रज्म आई, जिस में संगसार करने का हुक्म था, अ़ब्दुल्लाह ने उस पर हाथ रख लिया और उस को छोड़ गया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने उस का हाथ हटा कर आयत पढ़ दी यहूदी ज़लील हुए और वोह यहूदी मर्द व औ़रत जिन्हों ने ज़िना किया था ह़ुज़ूर के हुक्म से संगसार किये गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **53 :** किताबे इलाही से रू गर्दानी करने की। **54 :** या'नी चालीस दिन या एक हफ़्ता फिर कुछ ग़म नहीं। **55 :** और उन का येह क़ौल था कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, वोह हमें गुनाहों पर अ़ज़ाब न करेगा मगर बहुत थोड़ी मुद्दत **56 :** और वोह रोज़े क़ियामत है।

اَللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ

ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिस से चाहे सल्तनत

تَشَآءُ٘ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُؕ بِیَدِكَ الْخَیْرُؕ اِنَّكَ

छीन ले और जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू

عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی

सब कुछ कर सकता है[57] तू रात का ह़िस्सा दिन में डाले और दिन का ह़िस्सा रात में

الَّیْلِ٘ وَ تُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ٘

डाले[58] और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले[59]

وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾ لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ

और जिसे चाहे बे गिनती दे मुसल्मान काफ़िरों को अपना दोस्त

اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ

न बना लें मुसल्मानों के सिवा[60] और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़)

فِیْ شَیْءٍ اِلَّاۤ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةًؕ وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗؕ وَ اِلَی

न रहा मगर येह कि तुम उन से कुछ डरो[61] और अल्लाह तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह

اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸﴾ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ یَعْلَمْهُ

ही की त़रफ़ फिरना है तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह को सब

57 **शाने नुज़ूल :** फ़त्ह़े मक्का के वक़्त सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को मुल्के फ़ार्स व रूम की सल्त़नत का वा'दा दिया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने इस को बहुत बई़द समझा और कहने लगे : कहां मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) और कहां फ़ार्स व रूम के मुल्क ! वोह बड़े ज़बर दस्त और निहायत मह़फ़ूज़ हैं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और आख़िर कार हुज़ूर का वोह वा'दा पूरा हो कर रहा। 58 : या'नी कभी रात को बढ़ाए दिन को घटाए और कभी दिन को बढ़ा कर रात को घटाए येह तेरी क़ुदरत है, तो फ़ार्स व रूम से मुल्क ले कर ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को अ़त़ा करना उस की क़ुदरत से क्या बई़द है ! 59 : ''मुर्दा से ज़िन्दा का निकालना'' इस त़रह़ है जैसे कि ज़िन्दा इन्सान को नुत़्फ़ए बेजान से, और परिन्दे के ज़िन्दा बच्चे को बे रूह़ अन्डे से, और ज़िन्दा दिल मोमिन को मुर्दा दिल काफ़िर से, और ''ज़िन्दा से मुर्दा निकालना'' इस त़रह़ जैसे कि ज़िन्दा इन्सान से नुत़्फ़ए बेजान, और ज़िन्दा परिन्दे से बेजान अन्डा, और ज़िन्दा दिल ईमानदार से मुर्दा दिल काफ़िर। 60 **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ عَنْه ने जंगे अह़ज़ाब के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरे साथ पांच सो यहूदी हैं जो मेरे ह़लीफ़ हैं, मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुक़ाबिल उन से मदद ह़ासिल करूं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। 61 : कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मह़ब्बत मम्नूअ़ व ह़राम है, इन्हें राज़दार बनाना, इन से मुवालात करना ना जाइज़ है, अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जाइज़ है।

اللّٰهُ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

मा'लूम है और जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर **अल्लाह** का

قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ یَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَیْرٍ مُّحْضَرًا ۛۚ وَّ مَا

क़ाबू है जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी[62] और जो

عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۛۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَیْنَهَا وَ بَیْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِیْدًا ؕ

बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझ में और इस में दूर का फ़ासिला होता[63]

وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ

और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम

تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा[64] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۱﴾ قُلْ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

बख़्शने वाला मेहरबान है तुम फ़रमा दो कि हुक्म मानो **अल्लाह** और रसूल का[65] फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह**

لَا یُحِبُّ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤی اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِیْمَ

को ख़ुश नहीं आते काफ़िर बेशक **अल्लाह** ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की आल

وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۳﴾ۙ ذُرِّیَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَ اللّٰهُ

और इमरान की आल को सारे जहान से[66] येह एक नस्ल है एक दूसरे से[67] और **अल्लाह**

62 : या'नी रोज़े क़ियामत हर नफ़्स को आ'माल की जज़ा मिलेगी और इस में कुछ कमी व कोताही न होगी। **63 :** या'नी मैं ने येह बुरा काम न किया होता। **64 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** की महब्बत का दा'वा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم का मुत्तबेअ़ हो और हुज़ूर की इताअ़त इख़्तियार करे। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم क़ुरैश के पास ठहरे, जिन्हों ने ख़ानए का'बा में बुत नस्ब किये थे और उन्हें सजा सजा कर उन को सज्दा कर रहे थे। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ गुरोहे क़ुरैश ! ख़ुदा की क़सम ! तुम अपने आबा हज़रते इब्राहीम और हज़रते इस्माईल عَلَیْهِمَا السَّلَام के दीन के ख़िलाफ़ हो गए। क़ुरैश ने कहा कि हम इन बुतों को **अल्लाह** की महब्बत में पूजते हैं ताकि येह हमें **अल्लाह** से क़रीब करें। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि महब्बते इलाही का दा'वा सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ व फ़रमां बरदारी के बिग़ैर क़ाबिले क़बूल नहीं, जो इस दा'वे का सुबूत देना चाहे हुज़ूर की ग़ुलामी करे। और हुज़ूर ने बुत परस्ती को मन्अ़ फ़रमाया तो बुत परस्ती करने वाला हुज़ूर का ना फ़रमान और महब्बते इलाही के दा'वे में झूटा है। **65 :** येही **अल्लाह** की महब्बत की निशानी है और **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त बिग़ैर इताअ़ते रसूल नहीं हो सकती। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। **66 :** यहूद ने कहा था कि हम हज़रते इब्राहीम व इस्हाक़ व या'क़ूब عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बता दिया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन हज़रात को इस्लाम के साथ बरगुज़ीदा किया था और तुम ऐ यहूद ! इस्लाम पर नहीं हो तो तुम्हारा येह दा'वा ग़लत़ है। **67 :** इन में बाहम नस्ली तअ़ल्लुक़ात भी हैं और आपस में येह हज़रात एक दूसरे के मुआ़विनो मददगार भी।

سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۳۴﴾ اِذۡ قَالَتِ امۡرَاَتُ عِمۡرٰنَ رَبِّ اِنِّىۡ نَذَرۡتُ لَكَ مَا فِىۡ

सुनता जानता है जब इमरान की बीबी ने अर्ज़ की[68] ऐ रब मेरे मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूं जो मेरे पेट

بَطۡنِىۡ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلۡ مِنِّىۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا

में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे[69] तो तू मुझ से क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनता जानता फिर जब

وَضَعَتۡهَا قَالَتۡ رَبِّ اِنِّىۡ وَضَعۡتُهَاۤ اُنۡثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا وَضَعَتۡ ؕ

उसे जना बोली ऐ रब मेरे येह तो मैं ने लड़की जनी[70] और **अल्लाह** को ख़ूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी

وَلَيۡسَ الذَّكَرُ كَالۡاُنۡثٰى ۚ وَاِنِّىۡ سَمَّيۡتُهَا مَرۡيَمَ وَاِنِّىۡۤ اُعِيۡذُهَا بِكَ

और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं[71] और मैं ने इस का नाम मरयम रखा[72] और मैं इसे और इस की औलाद को तेरी

وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ﴿۳۶﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوۡلٍ حَسَنٍ

पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से तो उसे उस के रब ने अच्छी तरह क़बूल किया[73]

وَّاَنۡۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيۡهَا زَكَرِيَّا

और उसे अच्छा परवान चढ़ाया[74] और उसे ज़करिय्या की निगहबानी में दिया जब ज़करिय्या उस के पास उस की

68 : इमरान दो हैं : **एक** इमरान बिन यस्हुर बिन फ़ाहस बिन लावा बिन या'क़ूब येह तो हज़रते मूसा व हारून के वालिद हैं, **दूसरे** इमरान बिन मासान येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा मरयम के वालिद हैं। दोनों इमरानों के दरमियान एक हज़ार आठ सो बरस का फ़र्क़ है। यहां दूसरे इमरान मुराद हैं, इन की बीबी साहिबा का नाम हन्ना बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है, येह मरयम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की वालिदा हैं। 69 : और तेरी इबादत के सिवा दुन्या का कोई काम उस के मुतअ़ल्लिक़ न हो, बैतुल मक़्दिस की ख़िदमत उस के ज़िम्मे हो। उ़लमा ने वाक़िआ़ इस त़रह ज़िक्र किया है कि हज़रते ज़करिय्या व इमरान दोनों हम ज़ुल्फ़ थे। फ़ाक़ूज़ा की दुख़्तर ईशाअ़ जो हज़रते यह़्या की वालिदा हैं और इन की बहन हन्ना जो फ़ाक़ूज़ा की दूसरी दुख़्तर और हज़रते मरयम की वालिदा हैं, वोह इमरान की बीबी थीं। एक ज़माने तक हन्ना के औलाद नहीं हुई यहां तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई। येह सालिह़ीन का ख़ानदान था और येह सब लोग **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दे थे। एक रोज़ हन्ना ने एक दरख़्त के साए में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चे को भरा (खिला) रही थी। येह देख कर आप के दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुवा और बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि या रब ! अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उस को बैतुल मक़्दिस का ख़ादिम बनाऊं और उस की ख़िदमत के लिये हाज़िर कर दूं। जब वोह ह़ामिला हुईं और उन्हों ने येह नज़्र मान ली तो उन के शोहर ने फ़रमाया कि येह तुम ने क्या किया ? अगर लड़की हो गई तो ! वोह इस क़ाबिल कहां है ? उस ज़माने में लड़कों को ख़िदमते बैतुल मक़्दिस के लिये दिया जाता था और लड़कियां अ़वारिज़े निसाई और ज़नाना कमज़ोरियों और मर्दों के साथ न रह सकने की वज्ह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं, इस लिये इन साहिबों को शदीद फ़िक्र लाह़िक़ हुई और हन्ना के वज़्ए ह़म्ल से क़ब्ल इमरान का इन्तिक़ाल हो गया। 70 : हन्ना ने येह कलिमा ए'तिज़ार के त़ौर पर (या'नी उ़ज़्र बयान करते हुए) कहा और उन को ह़स्रतो ग़म हुवा कि लड़की हुई तो नज़्र किस त़रह पूरी हो सकेगी ? 71 : क्यूं कि येह लड़की **अल्लाह** की अ़त़ा है और उस के फ़ज़्ल से फ़रज़न्द से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखने वाली है। येह साहिब ज़ादी हज़रते मरयम थीं और अपने ज़माने की औ़रतों में सब से अज्मल व अफ़्ज़ल थीं। 72 : मरयम के मा'ना आ़बिदा हैं। 73 : और नज़्र में लड़के की जगह हज़रते मरयम को क़बूल फ़रमाया। हन्ना ने विलादत के बा'द हज़रते मरयम को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मक़्दिस में अह़बार के सामने रख दिया। येह अह़बार हज़रते हारून की औलाद में थे और बैतुल मक़्दिस में इन का मन्सब ऐसा था जैसा कि का'बा शरीफ़ में ह़जबा का, चूंकि हज़रते मरयम इन के इमाम और इन के साहिबे क़ुरबान की दुख़्तर थीं और इन का ख़ानदान बनी इसराईल में बहुत आ'ला और अहले इ़ल्म का ख़ानदान था, इस लिये इन सब ने जिन की ता'दाद सत्ताईस थी, हज़रते मरयम को लेने और और इन का तकफ़्फ़ुल (देखभाल) करने की रग़बत की। हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इन का सब से ज़ियादा ह़क़दार हूं क्यूं कि मेरे घर में इन की ख़ाला हैं। मुआ़मला इस पर ख़त्म हुवा कि क़ुरआ़ डाला जाए, क़ुरआ़ हज़रते ज़करिय्या ही के नाम पर निकला। 74 : हज़रते मरयम एक दिन में इतना बढ़ती थीं

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ

नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते[75] कहा ऐ मरयम येह तेरे पास कहां से आया बोलीं

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

वोह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे[76]

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

यहां[77] पुकारा ज़करिय्या अपने रब को बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّىْ فِى

औलाद बेशक तू ही है दुआ़ सुनने वाला तो फ़िरिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़

الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ

पढ़ रहा था[78] बेशक अल्लाह आप को मुज़्दा देता है यह़्या का जो अल्लाह की त़रफ़ के एक कलिमे की[79] तस्दीक़ करेगा

وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ

और सरदार[80] और हमेशा के लिये औ़रतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ास़ों में से[81] बोला ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां

غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِىَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِىْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا

से होगा मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा[82] और मेरी औ़रत बांझ[83] फ़रमाया अल्लाह यूं ही करता है जो

जितना और बच्चे एक साल में। **75 :** बे फ़स्ल मेवे जो जन्नत से उतरते और ह़ज़रते मरयम ने किसी औ़रत का दूध न पिया। **76 :** ह़ज़रते मरयम ने सिग़र सिनी में कलाम किया जब कि वोह पालने (झूले) में परवरिश पा रही थीं, जैसा कि इन के फ़रज़न्द ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इसी ह़ाल में कलाम फ़रमाया। **मस्अला :** येह आयत करामाते औलिया के सुबूत की दलील है कि अल्लाह तआ़ला इन के हाथों पर ख़वारिक़ (करामात) ज़ाहिर फ़रमाता है। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने जब येह देखा तो फ़रमाया : जो ज़ाते पाक मरयम को बे वक़्त, बे फ़स्ल और बिग़ैर सबब के मेवा अ़ता फ़रमाने पर क़ादिर है, वोह बेशक इस पर क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई तन्दुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उ़म्र में उम्मीद मुन्क़त़अ़ हो जाने के बा'द फ़रज़न्द अ़ता करे। ब ईं ख़याल आप ने दुआ़ की जिस का अगली आयत में बयान है। **77 :** या'नी मेह़राबे बैतुल मक़्दिस में दरवाज़े बन्द कर के दुआ़ की। **78 :** ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام आ़लिमे कबीर थे। क़ुरबानियां बारगाहे इलाही में आप ही पेश किया करते थे और मस्जिद शरीफ़ में बिग़ैर आप के इज़्न के कोई दाख़िल नहीं हो सकता था। जिस वक़्त मेह़राब में आप नमाज़ में मश्ग़ूल थे और बाहर आदमी दुख़ूल की इजाज़त का इन्तिज़ार कर रहे थे, दरवाज़ा बन्द था, अचानक आप ने एक सफ़ेद पोश जवान देखा, वोह ह़ज़रते जिब्रील थे, उन्हों ने आप को फ़रज़न्द की बिशारत दी, जो "اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ" में बयान फ़रमाई गई। **79 :** कलिमे से मुराद ह़ज़रते ईसा इब्ने मरयम हैं कि इन्हें अल्लाह तआ़ला ने "कुन" फ़रमा कर बिग़ैर बाप के पैदा किया, और इन पर सब से पहले ईमान लाने वाले और इन की तस्दीक़ करने वाले ह़ज़रते यह़्या हैं, जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से उ़म्र में छ6 माह बड़े थे। येह दोनों ह़ज़रात ख़ालाज़ाद भाई थे। ह़ज़रते यह़्या की वालिदा अपनी बहन ह़ज़रते मरयम से मिलीं तो उन्हें अपने ह़ामिला होने पर मुत्त़लअ़ किया। ह़ज़रते मरयम ने फ़रमाया : मैं भी ह़ामिला हूं। ह़ज़रते यह़्या की वालिदा ने कहा : ऐ मरयम ! मुझे मा'लूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज्दा करता है। **80 :** "सय्यिद" उस रईस को कहते हैं जो मख़्दूम व मुत़ाअ़ हो। ह़ज़रते यह़्या मोमिनीन के सरदार और इल्मो ह़िल्म व दीन में उन के रईस थे। **81 :** ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने बराहे तअ़ज्जुब अ़र्ज़ किया : **82 :** और उ़म्र एक सो बीस साल की हो चुकी। **83 :** उन की उ़म्र अठानवे साल की। मक़्सूद सुवाल से येह है कि बेटा किस त़रह़ अ़त़ा होगा ? आया मेरी जवानी लौटाई जाएगी और बीबी का

يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

चाहे[84] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये कोई निशानी कर दे[85] फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तीन दिन तू लोगों

ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ

से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर[86] और कुछ दिन रहे (शाम) और तड़के (सुब्ह़)

وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ؑ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ

उस की पाकी बोल और जब फ़िरिश्तों ने कहा ऐ मरयम बेशक **अल्लाह** ने तुझे चुन लिया[87] और ख़ूब सुथरा किया[88]

وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ

और आज सारे जहां की औ़रतों से तुझे पसन्द किया[89] ऐ मरयम अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो[90] और उस के लिये सज्दा कर

وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ

और रुकूअ़ वालों के साथ रुकूअ़ कर येह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम ख़ुफ़्या त़ौर पर तुम्हें बताते हैं[91]

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا

और तुम उन के पास न थे जब वोह अपनी क़लमों से क़ुरआ़ डालते थे कि मरयम किस की परवरिश में रहें और तुम

كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ

उन के पास न थे जब वोह झगड़ रहे थे[92] और याद करो जब फ़िरिश्तों ने मरयम से कहा ऐ मरयम **अल्लाह**

يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۙ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى

तुझे बिशारत देता है अपने पास से एक कलिमे की[93] जिस का नाम है मसीह़ ईसा मरयम का बेटा रूदार होगा[94]

बांझ होना दूर किया जाएगा या हम दोनों अपने ह़ाल पर रहेंगे। **84 :** बुढ़ापे में फ़रज़न्द अ़त़ा करना उस की क़ुदरत से कुछ बईद नहीं। **85 :** जिस से मुझे अपनी बीबी के ह़म्ल का वक़्त मा'लूम हो ताकि मैं और ज़ियादा शुक्र व इबादत में मसरूफ़ होउं। **86 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि आदमियों के साथ गुफ़्तगू करने से ज़बाने मुबारक तीन रोज़ तक बन्द रही और तस्बीह़ व ज़िक्र पर आप क़ादिर रहे और येह एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा है कि जिस में जवारेह़ (आ'ज़ा) सह़ीह़ो सालिम हों और ज़बान से तस्बीह़ो तक़्दीस के कलिमात अदा होते रहें मगर लोगों के साथ गुफ़्तगू न हो सके और येह अ़लामत इस लिये मुक़र्रर की गई कि इस ने'मते अ़ज़ीमा के अदाए ह़क़ में ज़बान ज़िक्रो शुक्र के सिवा और किसी बात में मश्ग़ूल न हो। **87 :** कि बा वुजूद औ़रत होने के बैतुल मक़्दिस की ख़िदमत के लिये नज़्र में क़बूल फ़रमाया और येह बात इन के सिवा किसी औ़रत को मुयस्सर न आई। इसी त़रह़ इन के लिये जन्नती रिज़्क़ भेजना, ह़ज़रते ज़करिय्या को इन का कफ़ील बनाना, येह ह़ज़रते मरयम की बरगुज़ीदगी है। **88 :** मर्द रसीदगी से और गुनाहों से और बक़ौल बा'ज़े ज़नाने अ़वारिज़ से। **89 :** कि बिग़ैर बाप के बेटा दिया और मलाएका का कलाम सुनवाया। **90 :** जब फ़िरिश्तों ने येह कहा तो ह़ज़रते मरयम ने इतना त़वील क़ियाम किया कि आप के क़दमे मुबारक पर वरम आ गया और पाउं फट कर ख़ून जारी हो गया। **91 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صلی اللہ علیہ وسلم को ग़ैब के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए। **92 :** बा वुजूद इस के आप का इन वाक़िआ़त की इत्तिलाअ़ देना दलीले क़वी है इस की, कि आप को ग़ैबी उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए गए। **93 :** या'नी एक फ़रज़न्द की। **94 :** साहि़बे जाहो मन्ज़िलत।

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ

दुन्या और आख़िरत में और क़ुर्ब वाला[95] और लोगों से बात करेगा पालने (झूले) में[96]

وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ

और पक्की उम्र में[97] और ख़ासों में होगा बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो

يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا

किसी शख़्स ने हाथ न लगाया[98] फ़रमाया **अल्लाह** यूं ही पैदा करता है जो चाहे जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए

فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۷﴾ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

तो उस से येही कहता है कि हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और **अल्लाह** उसे सिखाएगा किताब और हिक्मत

وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿۴۸﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ اَنِّيْ قَدْ

और तौरैत और इन्जील और रसूल होगा बनी इसराईल की तरफ़ येह फ़रमाता हुवा कि

جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ

मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं[99] तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूं

فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ

फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह फ़ौरन परिन्द हो जाती है **अल्लाह** के हुक्म से[100] और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को[101]

وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ

और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं **अल्लाह** के हुक्म से[102] और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़

95 : बारगाहे इलाही में। **96 :** बात करने की उम्र से क़ब्ल **97 :** आस्मान से नुज़ूल के बा'द। इस आयत से साबित होता है कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से ज़मीन की तरफ़ उतरेंगे, जैसा कि अहादीस में वारिद हुवा है और दज्जाल को क़त्ल करेंगे। **98 :** और दस्तूर येह है कि बच्चा औरत व मर्द के इख़्तिलात् (मिलाप) से होता है, तो मुझे बच्चा किस तरह अ़ता होगा निकाह से या यूंही बिग़ैर मर्द के? **99 :** जो मेरे दा'वाए नुबुव्वत के सिद्क़ की दलील है। **100 :** जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने नुबुव्वत का दा'वा किया और मो'जिज़ात दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की, कि आप एक चमगादड़ पैदा करें। आप ने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई, फिर उस में फूंक मारी, तो वोह उड़ने लगी। चमगादड़ की ख़ुसूसिय्यत येह है कि वोह उड़ने वाले जानवरों में बहुत अक्मल और अ़जीब तर है और क़ुदरत पर दलालत करने में औरों से अब्लग़ (ज़ियादा क़वी है) क्यूं कि वोह बिग़ैर परों के तो उड़ती है और दांत रखती है और हंसती है और उस की मादा के छाती होती है और बच्चा जनती है बा वुजूदे कि उड़ने वाले जानवरों में येह बातें नहीं हैं। **101 :** जिस का बरस आ़म हो गया हो और अतिब्बा उस के इलाज से आ़जिज़ हों, चूंकि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में तिब इन्तिहाए उ़रूज पर थी और इस के माहिरीन अम्रे इलाज में यदे तूला (बड़ी महारत) रखते थे, इस लिये उन को इसी क़िस्म के मो'जिज़े दिखाए गए ताकि मा'लूम हो कि तिब के तरीक़े से जिस का इलाज मुम्किन नहीं है उस को तन्दुरुस्त कर देना यक़ीनन मो'जिज़ा और नबी के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील है। वहब का क़ौल है कि अक्सर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक एक दिन में पचास पचास हज़ार मरीज़ों का इज्तिमाअ़ हो जाता था, उन में जो चल सकता था वोह हाज़िरे ख़िदमत होता था और जिसे चलने की ताक़त न होती उस के पास ख़ुद हज़रत तशरीफ़ ले जाते और दुआ़ फ़रमा कर उस को तन्दुरुस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त कर लेते। **102 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चार शख़्सों को ज़िन्दा किया :

بُیُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ﴿۴۹﴾ وَ مُصَدِّقًا

कर रखते हो[103] बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो और तस्दीक़ करता

لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ لِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِیْ حُرِّمَ عَلَیْكُمْ

आया हूं अपने से पहली किताब तौरैत की और इस लिये कि हलाल करूं तुम्हारे लिये कुछ वोह चीजें जो तुम पर हराम थीं[104]

وَ جِئْتُكُمْ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ

और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूं तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो बेशक मेरा तुम्हारा

وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۵۱﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى

सब का रब **अल्लाह** है तो उसी को पूजो[105] येह है सीधा रास्ता फिर जब ईसा ने

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ

उन से कुफ़्र पाया[106] बोला कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** की तरफ़ हवारियों ने कहा[107] हम

एक आज़र जिस को आप के साथ इख़्लास था, जब उस की हालत नाज़ुक हुई तो उस की बहन ने आप को इत्तिलाअ़ दी मगर वोह आप से तीन रोज़ की मसाफ़त के फ़ासिले पर था, जब आप तीन रोज़ में वहां पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि उस के इन्तिक़ाल को तीन रोज़ हो चुके, आप ने उस की बहन से फ़रमाया : हमें उस की क़ब्र पर ले चल वोह ले गई। आप ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ फ़रमाई आज़र बि इज़्ने इलाही ज़िन्दा हो कर क़ब्र से बाहर आया और मुद्दत तक ज़िन्दा रहा और उस के औलाद हुई। एक बुढ़िया का लड़का जिस का जनाज़ा हज़रत के सामने जा रहा था, आप ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई, वोह ज़िन्दा हो कर ना'श बरदारों के कन्धों से उतर पड़ा कपड़े पहने घर आया ज़िन्दा रहा, औलाद हुई। एक आ़शिर की लड़की शाम को मरी **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उस को ज़िन्दा किया। एक साम बिन नूह जिन की वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे, लोगों ने ख़्वाहिश की, कि आप उन को ज़िन्दा करें। आप उन की निशान देही से क़ब्र पर पहुंचे और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ की साम ने सुना कोई कहने वाला कहता है : "اَجِبْ رُوْحَ اللّٰهِ" (या'नी ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को जवाब दें) येह सुनते ही वोह मरऊ़ब और ख़ौफ़ज़दा उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुवा कि क़ियामत क़ाइम हो गई, इस होल (ख़ौफ़) से उन का निस्फ़ सर सफ़ेद हो गया, फिर वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए और उन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से दरख़्वास्त की, कि दोबारा उन्हें सकराते मौत की तक्लीफ़ न हो बिग़ैर इस के वापस किया जाए चुनान्चे उसी वक़्त उन का इन्तिक़ाल हो गया, और बि इज़्निल्लाह फ़रमाने में रद है नसारा का जो हज़रते मसीह की उलूहिय्यत के क़ाइल थे। **103 :** जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो बा'ज़ लोगों ने कहा कि येह तो जादू है और कोई मो'जिज़ा दिखाइये ! तो आप ने फ़रमाया कि जो तुम खाते हो और जो जम्अ़ कर रखते हो, मैं उस की तुम्हें ख़बर देता हूं। इसी से साबित हुवा कि ग़ैब के उ़लूम अम्बिया का मो'जिज़ा हैं, और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते मुबारक पर येह मो'जिज़ा भी ज़ाहिर हुवा, आप आदमी को बता देते थे जो वोह कल खा चुका और आज खाएगा और जो अगले वक़्त के लिये तय्यार कर रखा। आप के पास बच्चे बहुत से जम्अ़ हो जाते थे, आप उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर फ़ुलां चीज़ तय्यार हुई है, तुम्हारे घर वालों ने फ़ुलां फ़ुलां चीज़ खाई है, फ़ुलां चीज़ तुम्हारे लिये उठा रखी है, बच्चे घर जाते रोते घर वालों से वोह चीज़ मांगते घर वाले वोह चीज़ देते और उन से कहते कि तुम्हें किस ने बताया ? बच्चे कहते : हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने, तो लोगों ने अपने बच्चों को आप के पास आने से रोका और कहा : वोह जादूगर हैं, उन के पास न बैठो और एक मकान में सब बच्चों को जम्अ़ कर दिया। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा : वोह यहां नहीं हैं। आप ने फ़रमाया कि फिर इस मकान में कौन है ? उन्हों ने कहा : सुअर हैं। फ़रमाया : ऐसा ही होगा। अब जो दरवाज़ा खोलते हैं तो सब सुअर ही सुअर थे। अल हासिल ग़ैब की ख़बरें देना अम्बिया का मो'जिज़ा है और बे वसातते अम्बिया कोई बशर उमूरे ग़ैब पर मुत्तलअ़ नहीं हो सकता। **104 :** जो शरीअ़ते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में हराम थीं जैसे कि ऊंट के गोश्त, मछली, कुछ परिन्द। **105 :** येह अपनी अ़ब्दिय्यत का इक़रार और अपनी रबूबिय्यत की नफ़ी है। इस में नसारा का रद है। **106 :** या'नी जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि यहूद अपने कुफ़्र पर क़ाइम हैं और आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी आयाते बाहिरात और मो'जिज़ात से असर पज़ीर नहीं हुए और इस का सबब येह था कि उन्हों ने पहचान लिया था कि आप ही वोह मसीह हैं जिन

اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ

दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम **अल्लाह** पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसल्मान हैं[108] ऐ रब हमारे हम उस पर ईमान लाए जो

اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ

तूने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें ह़क़ पर गवाही देने वालों में लिख ले और काफ़िरों ने मक्र किया[109] और **अल्लाह** ने उन के हलाक की

اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ ع اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰۤى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ

ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई और **अल्लाह** सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है[110] याद करो जब **अल्लाह** ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा[111]

وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ

और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा[112] और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे

اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

पैरवों को[113] क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर[114] ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी त़रफ़ पलट कर आओगे

فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो तो वोह जो काफ़िर हुए

की तौरैत में बिशारत दी गई है और आप उन के दीन को मन्सूख़ करेंगे तो जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दा'वत का इज़्हार फ़रमाया तो येह उन पर बहुत शाक़ गुज़रा और वोह आप के ईज़ा व क़त्ल के दरपै हुए और आप के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया। **107 :** ह़वारी वोह मुख़्लिसीन हैं जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दीन के मददगार थे और आप पर अव्वल ईमान लाए येह बारह अश्ख़ास थे। **108 मस्अला :** इस आयत से ईमान व इस्लाम के एक होने पर इस्तिद्लाल किया जाता है और येह भी मा'लूम होता है कि पहले अम्बिया का दीन इस्लाम था न कि यहूदिय्यत व नसरानिय्यत। **109 :** या'नी कुफ़्फ़ारे बनी इसराईल ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ मक्र किया कि धोके के साथ आप के क़त्ल का इन्तिज़ाम किया और अपने एक शख़्स को इस काम पर मुक़र्रर कर दिया। **110 : अल्लाह** तआ़ला ने उन के मक्र का येह बदला दिया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठा लिया, और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शबाहत (शक्लो सूरत) उस शख़्स पर डाल दी जो उन के क़त्ल के लिये आमादा हुवा था चुनान्चे यहूद ने उस को इसी शुबे पर क़त्ल कर दिया। **मस्अला :** लफ़्ज़ "मक्र" लुग़ते अ़रब में "सित्र" या'नी पोशीदगी के मा'ना में है। इसी लिये ख़ुफ़्या तदबीर को भी मक्र कहते हैं और वोह तदबीर अगर अच्छे मक़्सद के लिये हो तो महमूद और किसी क़बीह़ ग़रज़ के लिये हो तो मज़्मूम होती है, मगर उर्दू ज़बान में येह लफ़्ज़ फ़रेब के मा'ना में मुस्ता'मल होता है, इस लिये हरगिज़ शाने इलाही में न कहा जाएगा, और अब चूंकि अ़रबी में भी ब मा'ना ख़द्अ़ के मा'रूफ़ हो गया है, इस लिये अ़रबी में भी शाने इलाही में इस का इत़्लाक़ जाइज़ नहीं, आयत में जहां कहीं वारिद हुवा वोह ख़ुफ़्या तदबीर के मा'ना में है। **111 :** या'नी तुम्हें कुफ़्फ़ार क़त्ल न कर सकेंगे। (مدارک وغیرہ) **112 :** आस्मान पर मह़ल्ले करामत और मक़र्रे मलाएका में बिग़ैर मौत के। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ज़रते ईसा मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा हो कर नाज़िल होंगे, सलीब तोड़ेंगे, ख़नाज़ीर को क़त्ल करेंगे, चालीस साल रहेंगे, निकाह़ फ़रमाएंगे, औलाद होगी, फिर आप का विसाल होगा, वोह उम्मत कैसे हलाक हो जिस के अव्वल मैं हूं और आख़िर ईसा और वस्त़ में मेरे अहले बैत में से महदी। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मनारए शर्क़ी दिमश्क़ पर नाज़िल होंगे। येह भी वारिद हुवा कि हुज्रए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में मदफ़ून होंगे। **113 :** या'नी मुसल्मानों को जो आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने वाले हैं। **114 :** जो यहूद हैं।

فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ

मैं उन्हें दुन्या व आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब करूंगा और उन का कोई

نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ

मददगार न होगा और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अल्लाह उन का नेग (अज्र)

اُجُوْرَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ

उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते येह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ

الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ

आयतें और हिक्मत वाली नसीहत ईसा की कहावत अल्लाह के नज़्दीक आदम की त़रह है[115]

خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है ऐ सुनने वाले येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तो

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ

शक वालों में न होना फिर ऐ मह़बूब जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म

الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ

आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें

وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ قف ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى

और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

ला'नत डालें[116] येही बेशक सच्चा बयान है[117] और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं[118]

115 शाने नुज़ूल : नसाराए नजरान का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और वोह लोग हुज़ूर से कहने लगे : आप गुमान करते हैं कि ईसा अल्लाह के बन्दे हैं ? फ़रमाया : हां, उस के बन्दे और उस के रसूल और उस के कलिमे जो कुंवारी बतूल अ़ज़्रा की त़रफ़ इल्क़ा किये गए। नसारा येह सुन कर बहुत गुस्से में आए और कहने लगे या मुहम्मद ! क्या तुम ने कभी बे बाप का इन्सान देखा है ? इस से उन का मत़लब येह था कि वोह ख़ुदा के बेटे हैं। (مَعَاذَ اللّٰه) इस पर येह आयत नाज़िल हुई और येह बताया गया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام सिर्फ़ बिग़ैर बाप ही के हुए और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तो मां और बाप दोनों के बिग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए। तो जब उन्हें अल्लाह की मख़्लूक़ और बन्दा मानते हो तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह की मख़्लूक़ व बन्दा मानने में क्या तअ़ज्जुब है। **116 :** जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने नसाराए नजरान को येह आयत पढ़ कर सुनाई और मुबाहले की दा'वत दी (या'नी फ़रीक़ैन का एक दूसरे के लिये इस त़रह बद दुआ़ करना कि जो झूटा हो वोह हलाक हो जाए मुबाहला कहलाता है।) तो कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें कल आप को जवाब देंगे। जब वोह जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सब से बड़े आ़लिम और साहि़बे राय शख़्स आ़क़िब से कहा कि ऐ अ़ब्दुल

وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ

और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब है हिक्मत वाला फिर अगर वोह मुंह फेरें तो अल्लाह फ़सादियों को

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا

जानता है तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो ऐसे कलिमे की त़रफ़ आओ जो हम में तुम में

وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا

यक्सां है[119] येह कि इ़बादत न करें मगर ख़ुदा की और उस का शरीक किसी को न करें[120] और हम में कोई एक दूसरे

بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا

को रब न बना ले अल्लाह के सिवा[121] फिर अगर वोह न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम

مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ

मुसल्मान हैं ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यूं झगड़ते हो तौरैत व

التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ

इन्जील तो न उतरी मगर उन के बा'द तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[122] सुनते हो येह जो

मसीह़ आप की क्या राय है ? उस ने कहा कि ऐ जमाअ़ते नसारा तुम पहचान चुके कि मुह़म्मद नबिय्ये मुरसल तो ज़रूर हैं, अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे। अब अगर नसरानिय्यत पर क़ाइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर को लौट चलो। येह मश्वरा होने के बा'द वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि हुज़ूर की गोद में तो इमामे हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में ह़सन का हाथ और फ़ाति़मा और अ़ली हुज़ूर के पीछे हैं (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) और हुज़ूर उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सब से बड़े नसरानी आ़लिम (पादरी) ने जब इन ह़ज़रात को देखा तो कहने लगा : ऐ जमाअ़ते नसारा ! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर येह लोग अल्लाह से पहाड़ को हटा देने की दुआ़ करें तो अल्लाह तआ़ला पहाड़ को जगह से हटा दे। इन से मुबाहला न करना हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी न रहेगा। येह सुन कर नसारा ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मुबाहले की तो हमारी राय नहीं है। आख़िर कार उन्हों ने जिज़्या देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहले के लिये तय्यार न हुए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! नजरान वालों पर अ़ज़ाब क़रीब आ ही चुका था अगर वोह मुबाहला करते तो बन्दरों और सुअरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता, और नजरान और वहां के रहने वाले परिन्द तक नेस्तो नाबूद हो जाते और एक साल के अ़र्से में तमाम नसारा हलाक हो जाते। **117 :** कि ह़ज़रते ईसा अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं और इन का वोह ह़ाल है जो ऊपर मज़्कूर हो चुका। **118 :** इस में नसारा का भी रद है और तमाम मुश्रिकीन का भी। **119 :** और क़ुरआन और तौरैत और इन्जील इस में मुख़्तलिफ़ नहीं। **120 :** न ह़ज़रते ईसा को न ह़ज़रते उ़ज़ैर को न और किसी को। **121 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने अह़बार व रहबान (यहूदी उ़लमा व ईसाई राहिबों) को बनाया कि उन्हें सज्दे करते और उन की इ़बादतें करते। (جمل) **122 शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा और यहूद के अह़बार में मुबाह़सा हुवा यहूदियों का दा'वा था कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام यहूदी थे और नसरानियों का येह दा'वा था कि आप नसरानी थे। येह निज़ाअ़ बहुत बढ़ा तो फ़रीक़ैन ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़कम माना और आप से फ़ैसला चाहा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उ़लमाए तौरैत व इन्जील पर उन का कमाले जह्ल ज़ाहिर कर दिया गया कि इन में से हर एक का दा'वा इन के कमाले जह्ल की दलील है। यहूदिय्यत व नसरानिय्यत तौरैत व इन्जील के नुज़ूल के बा'द पैदा हुईं और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़माना जिन पर तौरैत नाज़िल हुई ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से सदहा बरस बा'द है और ह़ज़रते ईसा जिन पर इन्जील नाज़िल हुई, इन का ज़माना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द दो हज़ार बरस के क़रीब हुवा है और तौरैत व इन्जील किसी में आप को यहूदी या नसरानी नहीं फ़रमाया गया बा वुजूद इस के आप की निस्बत येह दा'वा जह्ल व ह़माक़त की इन्तिहा है।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ

तुम हो[123] उस में झगड़े जिस का तुम्हें इल्म था[124] तो उस में[125] मुझ से क्यूं झगड़ते हो जिस का

لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ

तुम्हें इल्म ही नहीं और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[126] इब्राहीम न

يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًاؕ وَمَا كَانَ مِنَ

यहूदी थे न नसरानी बल्कि हर बातिल से जुदा मुसलमान थे और मुश्रिकों से

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۶۷﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا

न थे[127] बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़ियादा ह़क़दार वोह थे जो उन के पैरव हुए[128] और येह

النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْاؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ

नबी[129] और ईमान वाले[130] और ईमान वालों का वाली अल्लाह है किताबियों का एक गुरौह

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا

दिल से चाहता है कि किसी त़रह़ तुम्हें गुमराह कर दें और वोह अपने ही आप को गुमराह करते हैं और

يَشْعُرُوْنَ ﴿۶۹﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ

उन्हें शुऊ़र नहीं[131] ऐ किताबियो अल्लाह की आयतों से क्यूं कुफ़्र करते हो हा़लां कि तुम ख़ुद

تَشْهَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ

गवाह हो[132] ऐ किताबियो ह़क़ में बात़िल क्यूं मिलाते हो[133] और ह़क़ क्यूं

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۱﴾ ع وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا

छुपाते हो हा़लां कि तुम्हें ख़बर है और किताबियों का एक गुरौह बोला[134] वोह जो

123 : ऐ अहले किताब ! तुम **124 :** और तुम्हारी किताबों में इस की ख़बर दी गई थी या'नी नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ के ज़ुहूर और आप की ना'त व सिफ़त की, जब येह सब कुछ जान पहचान कर भी तुम ह़ुज़ूर पर ईमान न लाए और तुम ने इस में झगड़ा किया। **125 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को यहूदी या नसरानी कहते हैं। **126 :** ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि **127 :** तो न किसी यहूदी या नसरानी का अपने आप को दीन में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ मन्सूब करना सह़ीह़ हो सकता है न किसी मुश्रिक का। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में यहूदो नसारा पर ता'रीज़ है कि वोह मुश्रिक हैं। **128 :** और उन के अ़ह्दे नुबुव्वत में उन पर ईमान लाए और उन की शरीअ़त पर आ़मिल रहे। **129 :** सय्यिदे आ़लम ﷺ **130 :** और आप के उम्मती। **131 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल व ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन को यहूद अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदिय्यत की दा'वत देते थे। इस में बताया गया कि येह उन की हवस ख़ाम (फ़ुज़ूल ख़्वाहिश) है, वोह इन को गुमराह न कर सकेंगे। **132 :** और तुम्हारी किताबों में सय्यिदे आ़लम ﷺ की ना'त व सिफ़त मौजूद है और तुम जानते हो कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं और उन का दीन सच्चा दीन। **133 :** अपनी किताबों में तह़रीफ़ व तब्दील कर के। **134 :** और उन्हों ने बाहम मश्वरा कर के येह मक्र सोचा

بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ

ईमान वालों पर उतरा[135] सुब्ह़ को उस पर ईमान लाओ और शाम को मुन्किर हो जाओ

لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿ۚۖ۷۲﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْؕ قُلْ اِنَّ

शायद वोह फिर जाएं[136] और यक़ीन न लाओ मगर उस का जो तुम्हारे दीन का पैरव है तुम फ़रमा दो कि

الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِۙ اَنْ یُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[137] (यक़ीन काहे का न लाओ) उस का कि किसी को मिले[138] जैसा तुम्हें मिला या कोई तुम पर हुज्जत ला सके

عِنْدَ رَبِّكُمْؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِۚ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ

तुम्हारे रब के पास[139] तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो **अल्लाह** ही के हाथ है जिसे चाहे दे और **अल्लाह**

وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿ۚۙ۷۳﴾ یَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ

वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है अपनी रह़मत से[140] ख़ास करता है जिसे चाहे[141] और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल

الْعَظِیْمِ ﴿۷۴﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ یُّؤَدِّهٖۤ

वाला है और किताबियों में कोई वोह है कि अगर तू उस के पास एक ढेर अमानत रखे तो वोह तुझे अदा

اِلَیْكَۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِیْنَارٍ لَّا یُؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ اِلَّا مَادُمْتَ

कर देगा[142] और उन में कोई वोह है कि अगर एक अशरफ़ी उस के पास अमानत रखे तो वोह तुझे फेर कर न देगा मगर जब तक तू उस के

عَلَیْهِ قَآىٕمًاؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَیْسَ عَلَیْنَا فِی الْاُمِّیّٖنَ سَبِیْلٌۚ

सर पर खड़ा रहे[143] येह इस लिये कि वोह कहते हैं कि अनपढ़ों[144] के मुआ़मले में हम पर कोई मुआख़ज़ा नहीं

135 : या'नी क़ुरआन शरीफ़। 136 **शाने नुज़ूल :** यहूद इस्लाम की मुख़ालफ़त में रात दिन नए नए मक्र किया करते थे। ख़ैबर के उ़लमाए यहूद के बारह शख़्सों ने बाहमी मश्वरे से एक येह मक्र सोचा कि इन की एक जमाअ़त सुब्ह़ को इस्लाम ले आए और शाम को मुरतद हो जाए और लोगों से कहे कि हम ने अपनी किताबों में जो देखा तो साबित हुवा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ وسلم वोह नबिय्ये मौऊ़द नहीं हैं जिन की हमारी किताबों में ख़बर है ताकि इस ह़रकत से मुसल्मानों को दीन में शुबा पैदा हो, लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन का येह राज़ फ़ाश कर दिया और उन का येह मक्र न चल सका और मुसल्मान पहले से ख़बरदार हो गए। 137 : और जो इस के सिवा है वोह बात़िल व गुमराही है। 138 : दीन व हिदायत और किताब व ह़िक्मत और शरफ़े फ़ज़ीलत। 139 : रोज़े क़ियामत। 140 : या'नी नुबुव्वत व रिसालत से। 141 **: मस्अला :** इस से साबित होता है कि नुबुव्वत जिस किसी को मिलती है **अल्लाह** के फ़ज़्ल से मिलती है, इस में इस्तिह़्क़ाक़ का दख़्ल नहीं। (خازن) 142 **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले किताब के ह़क़ में नाज़िल हुई और इस में ज़ाहिर फ़रमाया गया कि इन में दो क़िस्म के लोग हैं : अमीन व ख़ाइन। बा'ज़ तो ऐसे हैं कि कसीर माल उन के पास अमानत रखा जाए तो बे कमो कास्त वक़्त पर अदा कर दें जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जिन के पास एक क़ुरैशी ने बारह सो ऊक़िया (तक़रीबन 2 मन 12 किलो) सोना अमानत रखा था आप ने उस को वैसा ही अदा किया और बा'ज़ अहले किताब में इतने बद दियानत हैं कि थोड़े पर भी उन की निय्यत बिगड़ जाती है जैसे कि फ़िन्ह़ास बिन आ़ज़ूरा जिस के पास किसी ने एक अशरफ़ी अमानत रखी थी, मांगते वक़्त इस से मुकर गया। 143 : और जब ही देने वाला उस के पास से हटे वोह माले अमानत हज़्म कर जाता है। 144 : या'नी ग़ैर किताबियों।

وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ

और अल्लाह पर जान बूझ कर झूट बांधते हैं[145] हां क्यूं नहीं जिस ने अपना अ़हद पूरा किया

وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

और परहेज़ गारी की और बेशक परहेज़ गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं वोह जो अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों के

وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓىِٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ

बदले ज़लील दाम लेते हैं[146] आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं और अल्लाह न उन से बात

اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ

करे न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक

اَلِيْمٌ ﴿۷۷﴾ وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

अ़ज़ाब है[147] और उन में कुछ वोह हैं जो ज़बान फेर कर किताब में मेल (मिलावट) करते हैं कि तुम समझो

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا

येह भी किताब में है और वोह किताब में नहीं और कहते हैं येह अल्लाह के पास से है और

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۸﴾ مَا

वोह अल्लाह के पास से नहीं और अल्लाह पर दीदा व दानिस्ता झूट बांधते हैं[148] किसी

كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ

आदमी का येह ह़क़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे[149] फिर वोह लोगों

145 : कि उस ने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल हज़्म कर जाने का हुक्म दिया है, बा वुजूदे कि वोह ख़ूब जानते हैं कि उन की किताबों में कोई ऐसा हुक्म नहीं। **146 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के अह़बार और उन के रुअसा अबू राफ़ेअ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ और का'ब बिन अशरफ़ व ह़य्य बिन अख़्त़ब के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिन्हों ने अल्लाह तआ़ला का वोह अ़हद छुपाया था जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ उन से तौरैत में लिया गया। उन्हों ने उस को बदल दिया और बजाए इस के अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूटी क़सम खाई कि येह अल्लाह की त़रफ़ से है और येह सब कुछ उन्हों ने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और ज़र ह़ासिल करने के लिये किया। **147 :** मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन लोग ऐसे हैं कि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला न उन से कलाम फ़रमाए और न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करे, न उन्हें गुनाहों से पाक करे और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस आयत को तीन मरतबा पढ़ा। ह़ज़रते अबू ज़र रावी ने कहा कि वोह लोग टोटे और नुक़्सान में रहे, **या रसूलल्लाह!** वोह कौन लोग हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया : इज़ार को टख़्नों से नीचे लटकाने वाला और एह़सान जताने वाला और अपने तिजारती माल को झूटी क़सम से रवाज देने वाला। ह़ज़रते अबू उमामा की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान का ह़क़ मारने के लिये क़सम खाए, अल्लाह उस पर जन्नत ह़राम करता है और दोज़ख़ लाज़िम करता है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** अगर्चे थोड़ी ही चीज़ हो। फ़रमाया : अगर्चे बबूल की शाख़ ही क्यूं न हो। **148 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उन्हों ने तौरैत व इन्जील की तह़रीफ़ की और किताबुल्लाह में अपनी त़रफ़ से जो चाहा मिलाया। **149 :** और कमाले इल्मो अ़मल अ़त़ा फ़रमाए और गुनाहों से मा'सूम करे।

لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا

से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ[150] हां येह कहेगा कि अल्लाह वाले[151] हो जाओ इस सबब से कि

كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ

तुम किताब सिखाते हो और इस से कि तुम दर्स करते हो[152] और न तुम्हें येह हुक्म देगा[153] कि

تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ

फ़िरिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा ठहरा लो क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बा'द इस के कि

اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ

तुम मुसल्मान हो लिये[154] और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उन का अ़हद लिया[155] जो मैं तुम को

كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ

किताब और हिक्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वोह रसूल[156] कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए[157] तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना

وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا

और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना फ़रमाया क्यूं तुम ने इक़रार किया और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सब ने अ़र्ज़ की

اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۱﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى

हम ने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं तो जो कोई

بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ

इस[158] के बा'द फिरे[159] तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं[160] तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं[161] और उसी के हुज़ूर

---

150 : येह अम्बिया से ना मुम्किन है और इन की त़रफ़ ऐसी निस्बत बोहतान है। **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा ने कहा कि हमें ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें रब मानें। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन के इस क़ौल की तक्ज़ीब की और बताया कि अम्बिया की शान से ऐसा कहना मुम्किन ही नहीं। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल येह है कि अबू राफ़ेअ़ यहूदी और सय्यिद नसरानी ने सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : या मुह़म्मद ! आप चाहते हैं कि हम आप की इ़बादत करें और आप को रब मानें ? हुज़ूर ने फ़रमाया : अल्लाह की पनाह कि मैं ग़ैरुल्लाह की इ़बादत का हुक्म करूं, न मुझे अल्लाह ने इस का हुक्म दिया, न मुझे इस लिये भेजा। **151 :** रब्बानी के मा'ना आ़लिम फ़क़ीह और आ़लिमे बा अ़मल और निहायत दीनदार के हैं। **152 :** इस से साबित हुवा कि इ़ल्म व ता'लीम का समरा येह होना चाहिये कि आदमी अल्लाह वाला हो जाए जिसे इ़ल्म से येह फ़ाएदा न हुवा उस का इ़ल्म ज़ाएअ़ और बेकार है। **153 :** अल्लाह तआ़ला या उस का कोई नबी। **154 :** ऐसा किसी त़रह़ नहीं हो सकता। **155 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهٗ) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) और इन के बा'द जिस किसी को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई उन से सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत अ़हद लिया और उन अम्बिया ने अपनी क़ौमों से अ़हद लिया कि अगर उन की ह़यात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हों तो आप पर ईमान लाएं और आप की नुसरत करें। इस से साबित हुवा कि हुज़ूर तमाम अम्बिया में सब से अफ़्ज़ल हैं। **156 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **157 :** इस त़रह़ कि उन के सिफ़ात व अह़वाल उस के मुत़ाबिक़ हों जो कुतुबे अम्बिया में बयान फ़रमाए गए हैं। **158 :** अ़हद **159 :** और आने वाले नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से ए'राज़ करे **160 :** ख़ारिज अज़ ईमान **161 :** बा'द अ़हद लिये जाने के और दलाइल वाज़ेह होने

اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّاِلَيْهِ

गरदन रखे हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं[162] ख़ुशी से[163] और मजबूरी से[164] और उसी की तरफ़

يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

फिरेंगे यूं कहो कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى

और इस्माईल और इस्हाक़ और या'क़ूब और उन के बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा

وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ

और अम्बिया को उन के रब से हम उन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते[165] और हम उसी के हुज़ूर

مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ

गरदन झुकाए हैं और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा

وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا

और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों (नुक़्सान उठाने वालों में) से है क्यूंकर **अल्लाह** ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान

بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ

ला कर काफ़िर हो गए[166] और गवाही दे चुके थे कि रसूल[167] सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आ चुकी थीं[168]

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ

और **अल्लाह** ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता उन का बदला येह है कि उन पर

لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ

ला'नत है **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और आदमियों की सब की हमेशा इस में रहें न उन पर से

के बा वुजूद। **162 :** मलाएका और इन्सान व जिन्नात। **163 :** दलाइल में नज़र कर के और इन्साफ़ इख़्तियार कर के और येह इताअ़त उन को फ़ाएदा देती और नफ़्अ़ पहुंचाती है। **164 :** किसी ख़ौफ़ से या अ़ज़ाब के देख लेने से, जैसा कि काफ़िर इन्दल मौत वक़्ते यास (मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर) ईमान लाता है, येह ईमान उस को क़ियामत में नफ़्अ़ न देगा। **165 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा'ज़ पर ईमान लाए बा'ज़ के मुन्किर हो गए। **166 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई कि यहूद हुज़ूर की बि'सत से क़ब्ल आप के वसीले से दुआएं करते थे और आप की नुबुव्वत के मुक़िर (मानने और तस्लीम करने वाले) थे, और आप की तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार करते थे। जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो हसदन आप का इन्कार करने लगे और काफ़िर हो गए। मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ऐसी क़ौम को कैसे तौफ़ीक़े ईमान दे कि जो जान पहचान कर और मान कर मुन्किर हो गई। **167 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **168 :** और वोह रोशन मो'जिज़ात देख चुके थे।

عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए मगर जिन्हों ने इस के बा'द तौबा की[169]

وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ

और आपा (खुद को) संभाला तो ज़रूर **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक वोह जो ईमान ला कर

اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े[170] उन की तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी[171] और वोही हैं

الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ

बहके हुए वोह जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे उन में किसी से

اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

ज़मीन भर सोना हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा अगर्चे अपनी ख़लासी को दे उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾

दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन का कोई यार नहीं

169 : और कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूल :** हारिस इब्ने सुवैद अन्सारी को कुफ़्फ़ार के साथ जा मिलने के बा'द नदामत हुई तो उन्हों ने अपनी क़ौम के पास पयाम भेजा कि रसूले करीम صلى الله عليه وسلم से दरयाफ़्त करें कि क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ? उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। तब वोह मदीनए मुनव्वरह में ताइब हो कर हाज़िर हुए और सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई। **170 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई, जिन्हों ने हज़रते मूसा عليه السلام पर ईमान लाने के बा'द हज़रते ईसा عليه السلام और इन्जील के साथ कुफ़्र किया, फिर कुफ़्र में और बढ़े, और सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صلى الله عليه وسلم और क़ुरआन के साथ कुफ़्र किया, और एक क़ौल येह है कि येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم की बि'सत से क़ब्ल तो अपनी किताबों में आप की ना'त व सिफ़त देख कर आप पर ईमान रखते थे और आप के ज़ुहूर के बा'द काफ़िर हो गए और फिर कुफ़्र में और शदीद हो गए। **171 :** इस हाल में या वक़्ते मौत या अगर वोह कुफ़्र पर मरे।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ

तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो[172] और तुम जो कुछ ख़र्च करो

فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا

अल्लाह को मा'लूम है सब खाने बनी इसराईल को ह़लाल थे मगर वोह जो

حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا

या'क़ूब ने अपने ऊपर ह़राम कर लिया था तौरैत उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरैत

بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

ला कर पढ़ो अगर सच्चे हो[173] तो इस के बा'द जो

الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ قف

अल्लाह पर झूट बांधे[174] तो वोही ज़ालिम हैं तुम फ़रमाओ **अल्लाह** सच्चा है

فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ اَوَّلَ

तो इब्राहीम के दीन पर चलो[175] जो हर बातिल से जुदा थे और शिर्क वालों में न थे बेशक सब में पहला

वक़्फ़ जिब्रील عليه السلام

172 : "بِرّ" से तक़्वा व ताअ़त मुराद है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि यहां ख़र्च करना आ़म है तमाम सदक़ात का या'नी वाजिबा हों या नाफ़िला सब इस में दाख़िल हैं। ह़सन का क़ौल है कि जो माल मुसल्मानों को मह़बूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक खजूर ही हो। (خازن) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ शकर की बोरियां ख़रीद कर सदक़ा करते थे, उन से कहा गया : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं सदक़ा कर देते ? फ़रमाया : शकर मुझे मह़बूब व मरग़ूब है येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं। (مدارک) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है कि ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी मदीने में बड़े मालदार थे उन्हें अपने अम्वाल में बैरुहा (बाग़) बहुत प्यारा था, जब येह आयत नाज़िल हुई तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत में खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : मुझे अपने अम्वाल में बैरुहा सब से प्यारा है मैं उस को राहे ख़ुदा में सदक़ा करता हूं, हुज़ूर ने इस पर मसर्रत का इज़्हार फ़रमाया और ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा ने ब ईमाए हुज़ूर (आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم के कहने पर) अपने अक़ारिब और बनी अ़म (चचा की औलाद) में उस को तक़्सीम कर दिया। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने अबू मूसा अश्अ़री को लिखा कि मेरे लिये एक बांदी ख़रीद कर भेज दो ! जब वोह आई तो आप को बहुत पसन्द आई, आप ने येह आयत पढ़ कर **अल्लाह** के लिये उस को आज़ाद कर दिया। 173 **शाने नुज़ूल :** यहूद ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से कहा कि हुज़ूर अपने आप को मिल्लते इब्राहीमी पर ख़याल करते हैं बा वुजूदे कि ह़ज़रते इब्राहीम علیہ السلام ऊंट का गोश्त और दूध नहीं खाते थे, आप खाते हैं ! तो आप मिल्लते इब्राहीमी पर कैसे हुए ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम पर ह़लाल थीं, यहूद कहने लगे कि येह ह़ज़रते नूह़ पर भी ह़राम थीं, ह़ज़रते इब्राहीम पर भी ह़राम थीं और हम तक ह़राम ही चली आईं, इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया गया कि यहूद का येह दा'वा ग़लत़ है बल्कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब पर ह़लाल थीं, ह़ज़रते या'क़ूब ने किसी सबब से इन को अपने ऊपर ह़राम फ़रमाया और येह ह़ुरमत उन की औलाद में बाक़ी रही, यहूद ने इस का इन्कार किया तो हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि तौरैत इस मज़्मून पर नात़िक़ है अगर तुम्हें इन्कार है तो तौरैत लाओ इस पर यहूद को अपनी फ़ज़ीह़त व रुस्वाई का ख़ौफ़ हुवा और वोह तौरैत न ला सके, उन का किज़्ब ज़ाहिर हो गया और उन्हें शरमिन्दगी उठानी पड़ी। **फ़ाएदा :** इस से साबित हुवा कि पिछली शरीअ़तों में अह़काम मन्सूख़ होते थे, इस में यहूद का रद है जो नस्ख़ के क़ाइल न थे। **फ़ाएदा :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم उम्मी थे बा वुजूद इस के यहूद को तौरैत से इल्ज़ाम देना और तौरैत के मज़ामीन से इस्तिद्लाल फ़रमाना आप का मो'जिज़ा और नुबुव्वत की दलील है और इस से आप के वह्बी और ग़ैबी उ़लूम का पता चलता है। 174 : और कहे कि मिल्लते इब्राहीमी में ऊंटों के गोश्त और दूध **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम किये थे 175 : कि वोही इस्लाम और दीने मुह़म्मदी है।

بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾

घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्के में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा[176]

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَ لِلّٰهِ عَلَى

इस में खुली निशानियां हैं[177] इब्राहीम के खड़े होने की जगह[178] और जो इस में आए अमान में हो[179] और अल्लाह के लिये

النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ

लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके[180] और जो मुन्किर हो तो अल्लाह

غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

सारे जहान से बे परवाह है[181] तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो अल्लाह की आयतें क्यूं नहीं मानते[182]

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ

और तुम्हारे काम अल्लाह के सामने हैं तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यूं अल्लाह की राह

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ

से रोकते हो[183] उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम खुद इस पर गवाह हो[184] और अल्लाह

176 **शाने नुज़ूल :** यहूद ने मुसल्मानों से कहा था कि बैतुल मक़्दिस हमारा क़िब्ला है का'बे से अफ़्ज़ल और इस से पहला है, अम्बिया का मक़ामे हिजरत व क़िब्लए इबादत है, मुसल्मानों ने कहा कि का'बा अफ़्ज़ल है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि सब से पहला मकान जिस को अल्लाह तआ़ला ने ताअ़त व इबादत के लिये मुक़र्रर किया नमाज़ का क़िब्ला हज और तवाफ़ का मौज़अ़ बनाया जिस में नेकियों के सवाब ज़ियादा होते हैं वोह का'बए मुअ़ज़्ज़मा है जो शह्र मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वाक़ेअ़ है। ह़दीस शरीफ़ में है कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा बैतुल मक़्दिस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया। 177 : जो इस की हुरमत व फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं उन निशानियों में से बा'ज़ येह हैं कि परिन्द का'बे शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और इस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परिन्द बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज येही करते हैं कि हवाए का'बा में हो कर गुज़र जाएं इसी से उन्हें शिफ़ा होती है और वुहूश (जंगली जानवर) एक दूसरे को ह़रम में ईज़ा नहीं देते ह़त्ता कि कुत्ते इस सर ज़मीन में हिरन पर नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल का'बए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ खिचते हैं और इस की त़रफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमुआ़ को अरवाहे औलिया इस के गिर्द ह़ाज़िर होती हैं और जो कोई इस की बे हुरमती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है। उन्हीं आयात (निशानियों) में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन का आयत में बयान फ़रमाया गया। (مدارک وخازن واحمدی) 178 : मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का'बे शरीफ़ की ता'मीर के वक़्त खड़े होते थे और उस में आप के क़दम मुबारक के निशान थे जो बा वुजूद त़वील ज़माना गुज़रने और ब कसरत हाथों से मस होने के अभी तक कुछ बाक़ी हैं। 179 : यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्ल व जिनायत कर के ह़रम में दाख़िल हो तो वहां न उस को क़त्ल किया जाए न उस पर ह़द क़ाइम की जाए। ह़ज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के क़ातिल को भी ह़रम शरीफ़ में पाऊं तो उस को हाथ न लगाऊं यहां तक कि वोह वहां से बाहर आए। 180 **मस्अला :** इस आयत में हज की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस का कि इस्तित़ाअ़त शर्त़ है। ह़दीस शरीफ़ में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर ज़ाद व राह़िला से फ़रमाई। ज़ाद या'नी तोशा खाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जा कर वापस आने तक के लिये काफ़ी हो और येह वापसी के वक़्त तक अहलो इ़याल के नफ़क़े के इ़लावा होना चाहिये, राह का अम्न भी ज़रूरी है क्यूं कि बिग़ैर इस के इस्तित़ाअ़त साबित नहीं होती। 181 : इस से अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी ज़ाहिर होती है और येह मस्अला भी साबित होता है कि फ़र्ज़े क़त़्ई का मुन्किर काफ़िर है। 182 : जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सिद्क़े नुबुव्वत पर दलालत करती हैं। 183 : नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब कर के और आप की ना'त व सिफ़त छुपा कर जो तौरैत में मज़्कूर है। 184 : कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا

तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ

किताबियों के कहे पर चले तो वोह तुम्हारे ईमान के बा'द तुम्हें काफ़िर कर छोड़ेंगे[185] और तुम क्यूंकर

تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ

कुफ़्र करोगे तुम पर तो **अल्लाह** की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उस का रसूल तशरीफ़ फ़रमा है और जिस ने

يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

अल्लाह का सहारा लिया तो ज़रूर वोह सीधी राह दिखाया गया ऐ ईमान

اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

वालो **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का हक़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसल्मान

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

और **अल्लाह** की रस्सी मज़बूत थाम लो[186] सब मिल कर और आपस में फट न जाना (फ़िर्क़ों में बट न जाना)[187] और **अल्लाह** का एहसान

عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ

अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था (दुश्मनी थी) उस ने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में

ना'त तौरैत में मक्तूब है और **अल्लाह** को जो दीन मक़्बूल है वोह सिर्फ़ दीने इस्लाम ही है। **185 शाने नुज़ूल :** औस व ख़ज़रज के क़बीलों में पहले बड़ी अ़दावत थी और मुद्दतों इन के दरमियान जंग जारी रही, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सदक़े में इन क़बीलों के लोग इस्लाम ला कर बाहम शीरो शकर हुए। एक रोज़ वोह एक मजलिस में बैठे हुए उन्सो महब्बत की बातें कर रहे थे, शास बिन क़ैस यहूदी जो बड़ा दुश्मने इस्लाम था इस त़रफ़ गुज़रा और इन के बाहमी रवाबित़ देख कर जल गया और कहने लगा कि जब येह लोग आपस में मिल गए तो हमारा क्या ठिकाना है, एक जवान को मुक़र्रर किया कि इन की मजलिस में बैठ कर इन की पिछली लड़ाइयों का ज़िक्र छेड़े और उस ज़माने में हर एक क़बीला जो अपनी मद्ह और दूसरों की ह़क़ारत के अश्आ़र लिखता था, पढ़े। चुनान्चे उस यहूदी ने ऐसा ही किया और उस की शर अंगेज़ी से दोनों क़बीलों के लोग तैश में आ गए और हथियार उठा लिये क़रीब था कि ख़ूनरेज़ी हो जाए सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم येह ख़बर पा कर मुहाजिरीन के साथ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ जमाअ़ते अहले इस्लाम येह क्या जाहिलिय्यत की ह़रकात हैं, मैं तुम्हारे दरमियान हूं **अल्लाह** तआ़ला ने तुम को इस्लाम की इ़ज़्ज़त दी, जाहिलिय्यत की बला से नजात दी, तुम्हारे दरमियान उल्फ़तो महब्बत डाली, तुम फिर ज़मानए कुफ़्र की ह़ालत की त़रफ़ लौटते हो, ह़ुज़ूर के इर्शाद ने उन के दिलों पर असर किया और उन्हों ने समझा कि येह शैत़ान का फ़रेब और दुश्मन का मक्र था, उन्हों ने हाथों से हथियार फेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए और ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ फ़रमां बरदाराना चले आए, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **186 :** حَبْلِ اللّٰهِ की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं बा'ज़ कहते हैं इस से क़ुरआन मुराद है। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि क़ुरआने पाक "حَبْلُ اللّٰه" (**अल्लाह** की रस्सी) है जिस ने इस का इत्तिबाअ़ किया वोह हिदायत पर है जिस ने इस को छोड़ा वोह गुमराही पर। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि حَبْلُ اللّٰه से जमाअ़त मुराद है और फ़रमाया कि तुम जमाअ़त को लाज़िम कर लो कि वोह حَبْلُ اللّٰه है जिस को मज़बूत़ थामने का हुक्म दिया गया है। **187 :** जैसे कि यहूदो नसारा मुतफ़र्रिक़ हो गए, इस आयत में उन अफ़्आ़ल व ह़रकात की मुमानअ़त की गई जो मुसल्मानों के दरमियान तफ़र्रुक़ का सबब हों। त़रीक़ए मुस्लिमीन मज़्हबे अहले सुन्नत है इस के सिवा कोई राह इख़्तियार करना दीन में तफ़्रीक़ और मम्नूअ़ है।

اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ

भाई हो गए[188] और तुम एक ग़ारे दोज़ख़ के किनारे पर थे[189] तो उस ने तुम्हें उस से बचा दिया[190] **अल्लाह** तुम

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ

से यूं ही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ और तुम में एक गुरोह ऐसा होना चाहिये कि

يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ

भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें[191]

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا

और येही लोग मुराद को पहुंचे[192] और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उन में फूट पड़ गई[193]

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ يَّوْمَ

बा'द इस के कि रोशन निशानियां उन्हें आ चुकी थीं[194] और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है जिस दिन

تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ

कुछ मुंह उन्जाले (चमकते) होंगे और कुछ मुंह काले तो वोह जिन के मुंह काले हुए[195]

اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾

क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हुए[196] तो अब अ़ज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला

188 : और इस्लाम की बदौलत अ़दावत दूर हो कर आपस में दीनी मह़ब्बत पैदा हुई, ह़त्ता कि औस और ख़ज़रज की वोह मश्हूर लड़ाई जो एक सो बीस साल से जारी थी और इस के सबब रात दिन क़त्लो ग़ारत की गर्म बाज़ारी रहती थी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला ने मिटा दी और जंग की आग ठन्डी कर दी और जंगजू क़बीलों में उल्फ़तो मह़ब्बत के जज़्बात पैदा कर दिये। **189 :** या'नी ह़ालते कुफ़्र में कि अगर इसी ह़ाल पर मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते। **190 :** दौलते ईमान अ़ता कर के। **191 :** इस आयत से अम्रे मा'रूफ़ व नह्ये मुन्कर की फ़र्ज़िय्यत और इज्माअ़ के ह़ुज्जत होने पर इस्तिद्लाल किया गया है। **192 :** ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म करना और बदियों से रोकना बेहतरीन जिहाद है। **193 :** जैसा कि यहूदो नसारा आपस में मुख़्तलिफ़ हुए और उन में एक दूसरे के साथ इनाद व दुश्मनी रासिख़ हो गई या जैसा कि ख़ुद तुम ज़मानए इस्लाम से पहले जाहिलिय्यत के वक़्त में मुतफ़र्रिक़ थे तुम्हारे दरमियान बुग़्ज़ो इनाद था। **मस्अला :** इस आयत में मुसल्मानों को आपस में इत्तिफ़ाक़ व इज्तिमाअ़ का हुक्म दिया गया और इख़्तिलाफ़ और इस के अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। अह़ादीस में भी इस की बहुत ताकीदें वारिद हैं और जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा होने की सख़्ती से मुमानअ़त फ़रमाई गई है जो फ़िर्क़ा पैदा होता है इस हुक्म की मुख़ालफ़त कर के ही पैदा होता है और जमाअ़ते मुस्लिमीन में तफ़्रिक़ा अन्दाज़ी के जुर्म का मुरतकिब होता है और ह़स्बे इर्शादे ह़दीस वोह शैत़ान का शिकार है। اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْهُ **194 :** और ह़क़ वाज़ेह़ हो चुका था। **195 :** या'नी कुफ़्फ़ार। उन से तौबीख़न (झिड़क्ते हुए) कहा जाएगा **: 196 :** इस के मुख़ात़ब या तो तमाम कुफ़्फ़ार हैं इस सूरत में ईमान से रोज़े मीसाक़ का ईमान मुराद है जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन से फ़रमाया था क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब ने بَلٰى कहा था और ईमान लाए थे अब जो दुन्या में काफ़िर हुए तो उन से फ़रमाया जाता है कि रोज़े मीसाक़ ईमान लाने के बा'द तुम काफ़िर हो गए। ह़सन का क़ौल है कि इस से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जिन्हों ने ज़बान से इज़्हारे ईमान किया था और उन के दिल मुन्किर थे। इक्रिमा ने कहा कि वोह अहले किताब हैं जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से क़ब्ल तो ह़ुज़ूर पर ईमान लाए और ह़ुज़ूर के ज़ुहूर के बा'द आप का इन्कार कर के काफ़िर हो गए, एक क़ौल येह है कि इस के मुख़ात़ब मुरतद्दीन हैं जो इस्लाम ला कर फिर गए और काफ़िर हो गए।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا

और वोह जिन के मुंह उन्जाले (रोशन) हुए[197] वोह **अल्लाह** की रहमत में हैं वोह हमेशा उस में

خٰلِدُوْنَ ۝١٠٧ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ

रहेंगे येह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुम पर पढ़ते हैं और **अल्लाह** जहान वालों पर

ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٨ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

ज़ुल्म नहीं चाहता[198] और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** ही की

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝١٠٩ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ

तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तुम बेहतर हो[199] उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई

بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ

भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान

الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝١١٠

लाते[200] तो उन का भला था उन में कुछ मुसल्मान हैं[201] और ज़ियादा काफ़िर

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ

वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर येही सताना[202] और अगर तुम से लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे[203] फिर

لَا يُنْصَرُوْنَ ۝١١١ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ

उन की मदद न होगी उन पर जमा दी गई ख़्वारी (ज़िल्लत) जहां हों अमान न पाएं[204] मगर **अल्लाह** की डोर[205]

197 : या'नी अहले ईमान, कि उस रोज़ बि करमिही तआ़ला वोह फ़रहानो शादां होंगे और उन के चेहरे चमकते दमकते होंगे, दाहने बाएं और सामने नूर होगा। **198 :** और किसी को बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं देता और किसी की नेकी का सवाब कम नहीं करता। **199 :** ऐ उम्मते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **शाने नुज़ूल :** यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वहब बिन यहूदा ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द वग़ैरा अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : हम तुम से अफ़्ज़ल हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है जिस की तुम हमें दा'वत देते हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। तिरमिज़ी की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला मेरी उम्मत को गुमराही पर जम्अ़ न करेगा और **अल्लाह** तआ़ला का दस्ते रहमत जमाअ़त पर है जो जमाअ़त से जुदा हुवा दोज़ख़ में गया। **200 :** सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर **201 :** जैसे कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्हाब यहूद में से और नज्जाशी और इन के अस्हाब नसारा में से। **202 :** ज़बानी ता'नो तश्नीअ़ और धमकी वग़ैरा से। **शाने नुज़ूल :** यहूद में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के हमराही, रुअसाए यहूद उन के दुश्मन हो गए और उन्हें ईज़ा देने की फ़िक्र में रहने लगे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान लाने वालों को मुत्मइन कर दिया कि ज़बानी क़ीलो क़ाल के सिवा वोह मुसल्मानों को कोई आज़ार न पहुंचा सकेंगे, ग़लबा मुसल्मानों ही को रहेगा और यहूद का अन्जाम ज़िल्लतो रुस्वाई है। **203 :** और तुम्हारे मुक़ाबले की ताब न ला सकेंगे, येह ग़ैबी ख़बरें ऐसी ही वाक़ेअ़ हुईं। **204 :** हमेशा ज़लील ही रहेंगे इ़ज़्ज़त कभी न पाएंगे इसी का असर है कि आज तक यहूद को कहीं की सल्तनत मुयस्सर न आई जहां रहे रिआ़या व ग़ुलाम ही बन कर रहे। **205 :** थाम कर या'नी ईमान ला कर।

اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ

और आदमियों की डोर से[206] और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुए और उन पर जमा दी गई

الْمَسْكَنَةُ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ

मोह्ताजी[207] येह इस लिये कि वोह **अल्लाह** की आयतों से कुफ़्र करते और पैग़म्बरों

الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ لَيْسُوْا

को नाहक़ शहीद करते येह इस लिये कि ना फ़रमां बरदार और सरकश थे सब एक

سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

से नहीं किताबियों में कुछ वोह हैं कि हक़ पर क़ाइम हैं[208] **अल्लाह** की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ

और सज्दा करते हैं[209] **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई

بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ

का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते हैं[210] और नेक कामों पर दौड़ते हैं

وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ

और येह लोग लाइक़ हैं और वोह जो भलाई करें उन का हक़ न मारा जाएगा

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

और **अल्लाह** को मा'लूम हैं डर वाले[211] वोह जो काफ़िर हुए उन के माल और औलाद[212]

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ

उन को **अल्लाह** से कुछ न बचाएंगे और वोह जहन्नमी हैं उन को

206 : या'नी मुसल्मानों की पनाह ले कर और इन्हें जिज़्या दे कर। **207 :** चुनान्चे यहूदी को मालदार हो कर भी ग़नाए क़ल्बी मुयस्सर नहीं होता। **208 शाने नुज़ूल :** जब हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब ईमान लाए तो अह़बारे यहूद ने जल कर कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ पर हम में से जो ईमान लाए हैं वोह बुरे लोग हैं अगर बुरे न होते तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते, इस पर येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई। अ़ता का क़ौल है कि مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ (किताबियों में कुछ वोह हैं कि हक़ पर क़ाइम हैं) से चालीस मर्द अहले नजरान के, बत्तीस ह़बशा के, आठ रूम के मुराद हैं, जो दीने ईसवी पर थे फिर सय्यिदे आ़लम ﷺ पर ईमान लाए। **209 :** या'नी नमाज़ पढ़ते हैं, इस से या तो नमाज़े इशा मुराद है जो अहले किताब नहीं पढ़ते या नमाज़े तहज्जुद। **210 :** और दीन में मुदाहनत (हक़ बात कहने में किसी की परवाह) नहीं करते। **211 :** यहूद ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब से कहा था कि तुम दीने इस्लाम क़बूल कर के टोटे (नुक़्सान) में पड़े, तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ख़बर दी कि वोह दरजाते आ़लिया के मुस्तह़िक़ हुए और अपनी नेकियों की जज़ा पाएंगे, यहूद की बक्वास बेहूदा है। **212 :** जिन पर उन्हें बहुत नाज़ है।

فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ

हमेशा उस में रहना[213] कहावत उस की जो इस दुन्या की ज़िन्दगी में[214] ख़र्च करते हैं उस हवा

رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا

की सी है जिस में पाला (सख़्त ठन्डक) हो वोह एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई[215] और

ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا

अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद अपनी जान पर ज़ुल्म करते हैं ऐ ईमान वालो ग़ैरों को

تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۖ وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ

अपना राज़दार न बनाओ[216] वोह तुम्हारी बुराई में गई (कमी) नहीं करते उन की आरज़ू है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुंचे

بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۖ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ

बैर (बुग़्ज़) उन की बातों से झलक उठा और वोह[217] जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है

بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا

हम ने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अ़क़्ल हो[218] सुनते हो येह जो तुम हो तुम तो उन्हें चाहते हो[219] और

يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ۚ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا

वोह तुम्हें नहीं चाहते[220] और हाल येह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो[221] और वोह जब तुम से मिलते हैं कहते हैं हम ईमान लाए[222] और

213 **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर के हक़ में नाज़िल हुई, यहूद के रुअसा ने तहसीले रियासत व माल की ग़रज़ से रसूले करीम ﷺ के साथ दुश्मनी की थी अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि उन के माल व औलाद कुछ काम न आएंगे, वोह रसूल की दुश्मनी में नाहक़ अपनी आ़क़िबत बरबाद कर रहे हैं। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीने क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई क्यूं कि अबू जहल को अपनी दौलत व माल पर बड़ा फ़ख़्र था और अबू सुफ़्यान ने बद्र व उहुद में मुश्रिकीन पर बहुत कसीर माल ख़र्च किया था। एक क़ौल येह है कि येह आयत तमाम कुफ़्फ़ार के हक़ में आ़म है इन सब को बताया गया कि माल व औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। 214 : मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से यहूद का वोह ख़र्च मुराद है जो अपने उ़लमा और रुअसा पर करते थे। एक क़ौल येह है कि कुफ़्फ़ार के तमाम नफ़क़ात व सदक़ात मुराद हैं। एक क़ौल येह है कि रियाकार का ख़र्च करना मुराद है क्यूं कि इन सब लोगों का ख़र्च करना या नफ़्ए दुन्यवी के लिये होगा या नफ़्ए उख़रवी के लिये, अगर महूज़ नफ़्ए दुन्यवी के लिये हो तो आख़िरत में इस से क्या फ़ाएदा और रियाकार को तो आख़िरत और रिज़ाए इलाही मक़्सूद ही नहीं होती इस का अ़मल दिखावे और नुमूद के लिये होता है ऐसे अ़मल का आख़िरत में क्या नफ़्अ़ और काफ़िर के तमाम अ़मल अकारत हैं वोह अगर आख़िरत की निय्यत से भी ख़र्च करे तो नफ़्अ़ नहीं पा सकता, इन लोगों के लिये वोह मिसाल बिल्कुल मुताबिक़ है जो आयत में ज़िक्र फ़रमाई जाती है। 215 : या'नी जिस त़रह कि बर्फ़ानी हवा खेती को बरबाद कर देती है इसी त़रह कुफ़्र इन्फ़ाक़ को बातिल कर देता है। 216 : उन से दोस्ती न करो, महब्बत के तअ़ल्लुक़ात न रखो, वोह क़ाबिले ए'तिमाद नहीं हैं। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मान यहूद से क़राबत और दोस्ती और पड़ोस वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर मेलजोल रखते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** कुफ़्फ़ार से दोस्ती व महब्बत करना और उन्हें अपना राज़दार बनाना ना जाइज़ व मम्नूअ़ है। 217 : ग़ैज़ो इनाद 218 : तो उन से दोस्ती न करो। 219 : रिश्तेदारी और दोस्ती वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर 220 : और दीनी मुख़ालफ़त की बिना पर तुम से दुश्मनी रखते हैं। 221 : और वोह तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते। 222 : येह मुनाफ़िक़ीन का हाल है।

خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ

अकेले हों तो तुम पर उंगिलयां चबाएं गुस्से से तुम फ़रमा दो कि मर जाओ अपनी घुटन (क़ल्बी जलन) में[223]

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ز

अल्लाह ख़ूब जानता है दिलों की बात तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे[224]

وَ اِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ

और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़ गारी किये रहो[225] तो उन का

كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ ع وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ

दाउं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उन के सब काम ख़ुदा के घेरे में हैं और याद करो ऐ महबूब जब तुम सुब्ह को[226]

اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ لا

अपने दौलत ख़ाने से बरआमद हुए मुसल्मानों को लड़ाई के मोरचों पर क़ाइम करते[227] और अल्लाह सुनता जानता है

223 : بمیر تا برہی اے حسود کیں رنجیست ۔ کہ از مشقت او جز بمرگ نتواں رست (ऐ हासिद ! हसद की बीमारी से नजात हासिल करने के लिये मर जा क्यूं कि मौत के सिवा इस से छुटकारा पाना बहुत मुश्किल है)। 224 : और इस पर वोह रन्जीदा हों। 225 : और उन से दोस्ती व महब्बत न करो। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि दुश्मन के मुक़ाबले में सब्रो तक़्वा काम आता है। 226 : ब मक़ामे मदीनए तृय्यिबा ब क़स्दे उहुद 227 : जम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह बयान जंगे उहुद का है जिस का इज्माली वाक़िआ येह है कि जंगे बद्र में शिकस्त खाने से कुफ़्फ़ार को बड़ा रन्ज था इस लिये उन्हों ने ब क़स्दे इन्तिक़ाम लश्करे गिरां मुरत्तब कर के फ़ौज कशी की, जब रसूले करीम ﷺ को ख़बर मिली कि लश्करे कुफ़्फ़ार उहुद में उतरा है तो आप ने अस्हाब से मश्वरा फ़रमाया, इस मश्वरत में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इस से क़ब्ल कभी किसी मश्वरत के लिये बुलाया न गया था, अक्सर अन्सार की और इस अ़ब्दुल्लाह की येह राय हुई कि हुज़ूर मदीनए तृय्यिबा में ही क़ाइम रहें और जब कुफ़्फ़ार यहां आएं तब उन से मुक़ाबला किया जाए, येही सय्यिदे आ़लम ﷺ की मरज़ी थी, लेकिन बा'ज़ अस्हाब की राय येह हुई कि मदीनए तृय्यिबा से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्हों ने इसरार किया, सय्यिदे आ़लम ﷺ दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए और अस्लहा ज़ैबे तन फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाए, अब हुज़ूर को देख कर उन अस्हाब को नदामत हुई और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर को राय देना और इस पर इसरार करना हमारी ग़लती थी इस को मुआ़फ़ फ़रमाइये और जो मरज़िये मुबारक हो वोही कीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया कि नबी के लिये सज़ावार नहीं कि हथियार पहन कर क़ब्ले जंग उतार दे। मुश्रिकीन उहुद में चहार शम्बा (बुध) पन्जशम्बा (जुमा'रात) को पहुंचे थे और रसूले करीम ﷺ जुमुआ़ के रोज़ बा'द नमाज़े जुमुआ़ एक अन्सारी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर रवाना हुए और पन्दरह शव्वाल 3 सि.हि. रोज़ यकशम्बा (इतवार के दिन) उहुद में पहुंचे, यहां नुज़ूल फ़रमाया और पहाड़ का एक दर्रा जो लश्करे इस्लाम के पीछे था उस तृरफ़ से अन्देशा था कि किसी वक़्त दुश्मन पुश्त पर से आ कर हम्ला करे इस लिये हुज़ूर ने अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहां मामूर फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस तृरफ़ से हम्ला आवर हो तो तीर बारी कर के उस को दफ़्अ़ कर दिया जाए और हुक्म दिया कि किसी हाल में यहां से न हटना और इस जगह को न छोड़ना ख़्वाह फ़त्ह हो या शिकस्त हो। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ जिस ने मदीनए तृय्यिबा में रह कर जंग करने की राय दी थी अपनी राय के ख़िलाफ़ किये जाने की वज्ह से बरहम हुवा और कहने लगा कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ ने नौ उम्र लड़कों का कहना तो माना और मेरी बात की परवा न की इस अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के साथ तीन सो मुनाफ़िक़ थे उन से इस ने कहा कि जब दुश्मन लश्करे इस्लाम के मुक़ाबिल आ जाए उस वक़्त भाग पड़ो ताकि लश्करे इस्लाम में अब्तरी (इन्तिशार व गड़बड़) हो जाए और तुम्हें देख कर और लोग भी भाग निकलें, मुसल्मानों के लश्कर की कुल ता'दाद मअ़ इन मुनाफ़िक़ीन के हज़ार थी और मुश्रिकीन तीन हज़ार, मुक़ाबला होते ही अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सो मुनाफ़िक़ों को ले कर भाग निकला और हुज़ूर के सात सो अस्हाब हुज़ूर के साथ रह गए, अल्लाह तआ़ला ने इन को साबित रखा यहां तक कि मुश्रिकीन को हज़ीमत हुई, अब सहाबा भागते हुए मुश्रिकीन के पीछे पड़ गए और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ ने जहां क़ाइम रहने के लिये फ़रमाया था वहां क़ाइम न रहे तो अल्लाह तआ़ला ने इन्हें दिखा दिया कि बद्र में अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी की बरकत से फ़त्ह हुई थी यहां हुज़ूर के हुक्म की मुख़ालफ़त का नतीजा येह

إِذْ هَمَّت طَّآئِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ

जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं[228] और अल्लाह उन का संभालने वाला है और मुसल्मानों को

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ

अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे[229]

فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ

तो अल्लाह से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो जब ऐ महबूब तुम मुसल्मानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं

أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ﴿١٢٤﴾ بَلَىٰ ۚ إِن

कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर हां क्यूं नहीं अगर

تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم

तुम सब्र व तक़्वा करो और काफ़िर उसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को

بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ

पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा[230] और येह फ़त्ह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी खुशी

لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ

के लिये और इसी लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले[231] और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिक्मत

الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا

वाले के पास से[232] इस लिये कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे[233] या उन्हें ज़लील करे कि ना मुराद

خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ

फिर (लौट) जाएं येह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या

हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन के दिलों से रो'बो हैबत दूर फ़रमाई और वोह पलट पड़े और मुसल्मानों को हज़ीमत हुई। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ एक जमाअ़त रही जिस में ह़ज़रते अबू बक्र व अ़ली व अ़ब्बास व त़ल्हा व सा'द थे, इसी जंग में दन्दाने अक़्दस शहीद हुवा और चेहरए अक़्दस पर ज़ख़्म आया, इसी के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **228 :** येह दोनों गुरौह अन्सार में से थे, एक बनी सलमा ख़ज़रज में से और एक बनी हारिसा औस में से येह दोनों लश्कर के बाज़ू थे, जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ भागा तो उन्हों ने भी वापस जाने का क़स्द किया अल्लाह तआ़ला ने करम किया और उन्हें इस से महफ़ूज़ रखा और वोह हुज़ूर के साथ साबित रहे यहां इस ने'मतो एहसान का ज़िक्र फ़रमाया है। **229 :** तुम्हारी ता'दाद भी कम थी तुम्हारे पास हथियारों और सुवारों की भी कमी थी। **230 :** चुनान्चे मोमिनीन ने रोज़े बद्र सब्रो तक़्वा से काम लिया अल्लाह तआ़ला ने ह़स्बे वा'दा पांच हज़ार फ़िरिश्तों की मदद भेजी और मुसल्मानों की फ़त्ह और काफ़िरों की शिकस्त हुई। **231 :** और दुश्मन की कसरत और अपनी क़िल्लत से परेशानी और इज़्तिराब न हो। **232 :** तो चाहिये कि बन्दा मुसब्बिबुल अस्बाब (रब عَزَّوَجَلَّ) पर नज़र रखे और उसी पर तवक्कुल रखे। **233 :** इस त़रह़ कि इन के बड़े बड़े सरदार मक़्तूल हों और गिरिफ़्तार किये जाएं जैसा कि बद्र में पेश आया।

يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ط

उन पर अ़ज़ाब करे कि वोह ज़ालिम हैं   और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है

یَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ط وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲۹﴾ ع

जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे   और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ص وَّ اتَّقُوا

ऐ ईमान वालो सूद दूना दून न खाओ[234] और **अल्लाह** से

اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ج وَ اتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ج

डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले   और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार रखी है[235]

وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ج وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

और **अल्लाह** व रसूल के फ़रमां बरदार रहो[236] इस उम्मीद पर कि तुम रह़्म किये जाओ   और दौड़ो[237] अपने रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ لا اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۳۳﴾لا

बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं[238]   परहेज़ गारों के लिये तय्यार रखी है[239]

الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَ الْعَافِیْنَ

वोह जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रन्ज में[240] और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों

234 **मस्अला :** इस आयत में सूद की मुमानअ़त फ़रमाई गई मअ़ तौबीख़ के उस ज़ियादती पर जो उस ज़माने में मा'मूल थी कि जब मीआ़द आ जाती थी और क़र्ज़दार के पास अदा की कोई शक्ल न होती तो क़र्ज़ ख़्वाह माल ज़ियादा कर के मुद्दत बढ़ा देता और ऐसा बार बार करते जैसा कि इस मुल्क के सूद ख़्वार करते हैं और इस को सूद दर सूद कहते **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा गुनाहे कबीरा से आदमी ईमान से ख़ारिज नहीं होता। 235 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : इस में ईमानदारों को तहदीद (ख़बरदार करना) है कि सूद वग़ैरा जो चीज़ें **अल्लाह** ने ह़राम फ़रमाईं उन को ह़लाल न जानें क्यूं कि ह़रामे क़त़ई को ह़लाल जानना कुफ़्र है। 236 : कि रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़ाअ़त त़ाअ़ते इलाही है और रसूल की ना फ़रमानी करने वाला **अल्लाह** का फ़रमां बरदार नहीं हो सकता। 237 : तौबा व अदाए फ़राइज़ व त़ाआ़त व इख़्लासे अ़मल इख़्तियार कर के 238 : येह जन्नत की वुस्अ़त का बयान है इस त़रह़ कि लोग समझ सकें क्यूं कि इन्हों ने सब से वसीअ़ चीज़ जो देखी है वोह आस्मान व ज़मीन ही है इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आस्मान व ज़मीन के त़बक़े त़बक़े और परत परत बना कर जोड़ दिये जाएं और सब का एक परत कर दिया जाए इस से जन्नत के अ़र्ज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी वसीअ़ है। हरक़ुल बादशाह ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की येह वुस्अ़त है कि आस्मान व ज़मीन इस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहां है? ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जवाब में फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! जब दिन आता है तो रात कहां होती है, इस कलामे बलाग़त निज़ाम के मा'ना निहायत दक़ीक़ हैं, ज़ाहिर पहलू येह है कि दौरए फ़लकी से एक जानिब में दिन ह़ासिल होता है तो इस के जानिबे मुक़ाबिल में शब होती है इसी त़रह़ जन्नत जानिबे बाला में है और दोज़ख़ जिहते पस्ती में, यहूद ने येही सुवाल ह़ज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से किया था तो आप ने भी येही जवाब दिया था, इस पर उन्हों ने कहा कि तौरैत में भी इसी त़रह़ समझाया गया है, मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** की क़ुदरत व इख़्तियार से कुछ बईद नहीं जिस शै को जहां चाहे रखे येह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ की वुस्अ़त से हैरान होता है तो पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से दरयाफ़्त किया गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में? फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान है जिस में जन्नत समा सके। अ़र्ज़ किया गया : फिर कहां है? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर ज़ेरे अ़र्श। 239 : इस आयत और इस से ऊपर की आयत "وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ" से साबित हुवा कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकीं मौजूद हैं। 240 : या'नी हर ह़ाल में ख़र्च करते

عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ ۚ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا

से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं और वोह कि जब कोई

فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۖ

बे हयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें[241] अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें[242]

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ

और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न

يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ

जाएं ऐसों का बदला उन के रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं[243] जिन के

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ ؕ قَدْ خَلَتْ

नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (बदला) है[244] तुम से

مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

पहले कुछ त़रीक़े बरताव में आ चुके हैं[245] तो ज़मीन में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

झुटलाने वालों का[246] येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़ गारों को नसीहत है

हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा, या'नी ख़ुदा की राह में दो तुम्हें अल्लाह की रह़मत से मिलेगा। **241 :** या'नी उन से कोई कबीरा या सग़ीरा गुनाह सरज़द हो। **242 :** और तौबा करें और गुनाह से बाज़ आएं और आयिन्दा के लिये उस से बाज़ रहने का अ़ज़्म पुख़्ता करें कि येह तौबए मक़्बूला के शराइत़ में से है। **243 शाने नुज़ूल :** तैहान ख़ुरमा फ़रोश (खजूर बेचने वाले) के पास एक ह़सीन औ़रत ख़ुरमे ख़रीदने आई, इस ने कहा : येह ख़ुरमे तो अच्छे नहीं हैं उ़म्दा ख़ुरमे मकान के अन्दर हैं, इस ह़ीले से उस को मकान में ले गया और पकड़ कर लिपटा लिया और मुंह चूम लिया, औ़रत ने कहा : ख़ुदा से डर ! येह सुनते ही उस को छोड़ दिया और शरमिन्दा हुवा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयत "وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا" नाज़िल हुई, एक क़ौल येह है कि एक अन्सारी और एक सक़फ़ी दोनों में मह़ब्बत थी और हर एक ने एक दूसरे को भाई बनाया था, सक़फ़ी जिहाद में गया था और अपने मकान की निगरानी अपने भाई अन्सारी के सिपुर्द कर गया था, एक रोज़ अन्सारी गोश्त लाया जब सक़फ़ी की औ़रत ने गोश्त लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो अन्सारी ने उस का हाथ चूम लिया और चूमते ही उस को सख़्त नदामत व शरमिन्दगी हुई और वोह जंगल में निकल गया, अपने सर पर ख़ाक डाली और मुंह पर त़मांचे मारे जब सक़फ़ी जिहाद से वापस आया तो उस ने अपनी बीबी से अन्सारी का ह़ाल दरयाफ़्त किया : उस ने कहा : ख़ुदा ऐसे भाई न बढ़ाए और वाक़िआ़ बयान किया, अन्सारी पहाड़ों में रोता व इस्तिग़्फ़ार व तौबा करता फिरता था सक़फ़ी उस को तलाश कर के सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया उस के ह़क़ में येह आयतें नाज़िल हुईं। **244 :** या'नी इत़ाअ़त शिआ़रों के लिये बेहतर जज़ा है। **245 :** पिछली उम्मतों के साथ जिन्हों ने ह़िर्से दुन्या और इस की लज़्ज़ात की त़लब में अम्बिया व मुरसलीन की मुख़ालफ़त की अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मोहलतें दीं फिर भी वोह राहे रास्त पर न आए तो उन्हें हलाको बरबाद कर दिया। **246 :** ताकि तुम्हें इ़ब्रत हो।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِنْ

और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ[247] तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो अगर

يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

तुम्हें[248] कोई तक्लीफ़ पहुंची तो वोह लोग भी वैसी ही तक्लीफ़ पा चुके हैं[249] और येह दिन हैं

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ

जिन में हम ने लोगों के लिये बारियां रखी हैं[250] और इस लिये कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की[251] और तुम में से कुछ लोगों

شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

को शहादत का मर्तबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को और इस लिये कि अल्लाह मुसल्मानों का निखार कर दे[252]

وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ

और काफ़िरों को मिटा दे[253] क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने

الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ

तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़्माइश की[254] और तुम तो मौत की तमन्ना किया

الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمَا

करते थे उस के मिलने से पहले[255] तो अब वोह तुम्हें नज़र आई आंखों के सामने और

مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ

मुहम्मद तो एक रसूल हैं[256] इन से पहले और रसूल हो चुके[257] तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या

247 : उस का जो जंगे उहुद में पेश आया। **248 :** जंगे उहुद में **249 :** जंगे बद्र में, बा वुजूद इस के उन्हों ने पस्त हिम्मती न की और तुम से मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती व कम हिम्मती न चाहिये। **250 :** कभी किसी की बारी है कभी किसी की। **251 :** सब्रो इख़्लास के साथ कि इन को मशक़्क़त व नाकामी जगह से नहीं हटा सकती और इन के पाए सबात में लग़्ज़िश नहीं आ सकती। **252 :** और इन्हें गुनाहों से पाक कर दे। **253 :** या'नी काफ़िरों से जो मुसल्मानों को तक्लीफ़ें पहुंचती हैं वोह तो मुसल्मानों के लिये शहादत व तत्हीर (गुनाहों से पाकी) हैं और मुसल्मान जो कुफ़्फ़ार को क़त्ल करें तो येह कुफ़्फ़ार की बरबादी और उन का इस्तीसाल (ख़ातिमा करना) है। **254 :** कि अल्लाह की रिज़ा के लिये कैसे ज़ख़्म खाते और तक्लीफ़ उठाते हैं इस में उन पर इताब है जो रोज़े उहुद कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागे। **255 शाने नुज़ूल :** जब शुहदाए बद्र के दरजे और मर्तबे और उन पर अल्लाह तआला के इन्आमो एहसान बयान फ़रमाए गए तो जो मुसल्मान वहां हाज़िर न थे उन्हें हसरत हुई और उन्हों ने आरज़ू की, कि काश किसी जिहाद में उन्हें हाज़िरी मुयस्सर आए और शहादत के दरजात मिलें, उन्हीं लोगों ने हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ से उहुद पर जाने के लिये इसरार किया था उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **256 :** और रसूलों की बि'सत का मक़्सूद रिसालत की तब्लीग़ और हुज्जत का लाज़िम कर देना है न कि अपनी क़ौम के दरमियान हमेशा मौजूद रहना। **257 :** और उन के मुत्तबिईन उन के बा'द उन के दीन पर बाक़ी रहे। **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में जब काफ़िरों ने पुकारा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ शहीद हो गए और शैतान ने येह झूटी अफ़्वाह मश्हूर की तो सहाबा को बहुत इज़्तिराब हुवा और उन में से कुछ लोग भाग निकले फिर जब निदा की गई कि रसूले करीम ﷺ तशरीफ़ रखते हैं तो सहाबए किराम की एक जमाअत

قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ

शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़्सान न

شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ

करेगा और अन्क़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा[258] और कोई जान बे हुक्मे ख़ुदा मर

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

नहीं सकती[259] सब का वक़्त लिखा रखा है[260] और जो दुन्या का इन्आ़म चाहे[261] हम उस में से उसे दें

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾ وَ

और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहे हम उस में से उसे दें[262] और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अ़ता करें और

كَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ

कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया उन के साथ बहुत ख़ुदा वाले थे तो न सुस्त पड़े उन मुसीबतों से जो

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾

अल्लाह की राह में उन्हें पहुंचीं और न कमज़ोर हुए और न दबे[263] और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْۤ

वोह कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ़ के[264] कि ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने

اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰتٰىهُمُ

काम में कीं[265] और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे[266] तो अल्लाह ने उन्हें

वापस आई हुज़ूर ने उन्हें हज़ीमत पर मलामत की, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हमारे मां और बाप आप पर फ़िदा हों आप की शहादत की ख़बर सुन कर हमारे दिल टूट गए और हम से ठहरा न गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अम्बिया के बा'द भी उम्मतों पर उन के दीन का इत्तिबाअ़ लाज़िम रहता है तो अगर ऐसा होता भी तो हुज़ूर के दीन का इत्तिबाअ़ और इस की हिमायत लाज़िम रहती। **258 :** जो न फिरे और अपने दीन पर साबित रहे उन को शाकिरीन फ़रमाया क्यूं कि उन्हों ने अपने सबात से ने'मते इस्लाम का शुक्र अदा किया। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ फ़रमाते थे कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ अमीनुश्शाकिरीन हैं। **259 :** इस में जिहाद की तरग़ीब है और मुसल्मानों को दुश्मन के मुक़ाबले पर जरी (बहादुर) बनाया जाता है कि कोई शख़्स बिग़ैर हुक्मे इलाही के मर नहीं सकता चाहे वोह महालिक व मआ़रिक (ख़ौफ़नाक जगहों और जंगों) में घुस जाए, और जब मौत का वक़्त आता है तो कोई तदबीर नहीं बचा सकती। **260 :** उस से आगे पीछे नहीं हो सकता। **261 :** और उस को अपने अ़मल व ताअ़त से हुसूले दुन्या मक़्सूद हो। **262 :** इस से साबित हुवा कि मदार निय्यत पर है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में आया है। **263 :** ऐसा ही हर ईमानदार को चाहिये। **264 :** या'नी हिमायते दीन व मक़ामाते हर्ब (जंग के मैदानों) में उन की ज़बान पर कोई ऐसा कलिमा न आता जिस में घबराहट परेशानी और तज़ल्ज़ुल का शाएबा भी होता, बल्कि वोह इस्तिक़्लाल (मज़बूती) के साथ साबित क़दम रहते और दुआ़ करते **265 :** या'नी तमाम सग़ाइर व कबाइर बा वुजूदे कि वोह लोग रब्बानी या'नी अत्क़िया थे फिर भी गुनाहों का अपनी तरफ़ निस्बत करना शाने तवाज़ोअ़ व इन्किसार और आदाबे अ़ब्दिय्यत में से है। **266 :** इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि तलबे हाजत से क़ब्ल तौबा व इस्तिग़फ़ार आदाबे दुआ़ में से है।

اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ

दुन्या का इन्आ़म दिया[267] और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी[268] और नेकी वाले अल्लाह को

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

प्यारे हैं ऐ ईमान वालो अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले[269]

يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ

तो वोह तुम्हें उलटे पाउं लौटा देंगे[270] फिर टोटा खा के (नुक़्सान उठा के) पलट जाओगे[271] बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है

وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ

और वोह सब से बेहतर मददगार कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डालेंगे[272]

بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَبِئْسَ

कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक ठहराया जिस पर उस ने कोई समझ न उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा

مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ

ठिकाना ना इन्साफ़ों का और बेशक अल्लाह ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वा'दा जब कि तुम उस के हुक्म से काफ़िरों को

بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

क़त्ल करते थे[273] यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा डाला[274] और ना फ़रमानी की[275] बा'द इस के

مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ

कि अल्लाह तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात[276] तुम में कोई दुन्या चाहता था[277] और तुम में कोई आख़िरत

267 : या'नी फ़त्हो ज़फ़र और दुश्मनों पर ग़लबा **268 :** मग़्फ़िरत व जन्नत और इस्तिह़्क़ाक़ से ज़ियादा इन्आ़मो इक्राम **269 :** ख़्वाह वोह यहूदो नसारा हों या मुनाफ़िक़ व मुश्रिक **270 :** कुफ़्र व बे दीनी की त़रफ़ **271 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों पर लाज़िम है कि वोह कुफ़्फ़ार से अ़लाहृदगी इख़्तियार करें और हरगिज़ उन की राय व मश्वरे पर अ़मल न करें और उन के कहे पर न चलें। **272 :** जंगे उहुद से वापस हो कर जब अबू सुफ़्यान वग़ैरा अपने लश्करियों के साथ मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुए तो उन्हें इस पर अफ़्सोस हुवा कि हम ने मुसल्मानों को बिल्कुल ख़त्म क्यूं न कर डाला, आपस में मश्वरा कर के इस पर आमादा हुए कि चल कर उन्हें ख़त्म कर दें, जब येह क़स्द पुख़्ता हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला और उन्हें ख़ौफ़े शदीद पैदा हुवा और वोह मक्कए मुकर्रमा ही की त़रफ़ वापस हो गए, अगर्चे सबब तो ख़ास था लेकिन रो'ब तमाम कुफ़्फ़ार के दिलों में डाल दिया गया कि दुन्या के सारे कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से डरते हैं और بِفَضْلِهٖ تَعَالٰى दीने इस्लाम तमाम अदयान पर ग़ालिब है। **273 :** जंगे उहुद में **274 :** कुफ़्फ़ार की हज़ीमत के बा'द। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ जो तीर अन्दाज़ थे वोह आपस में कहने लगे कि मुश्रिकीन को हज़ीमत हो चुकी अब यहां ठहर कर क्या करें चलो कुछ माले ग़नीमत हासिल करने की कोशिश करें, बा'ज़ ने कहा : मर्कज़ मत छोड़ो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ब ताकीद हुक्म फ़रमाया है कि तुम अपनी जगह क़ाइम रहना किसी हाल में मर्कज़ न छोड़ना जब तक मेरा हुक्म न आए, मगर लोग ग़नीमत के लिये चल पड़े और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ दस से कम अस्हाब रह गए। **275 :** कि मर्कज़ छोड़ दिया और ग़नीमत हासिल करने में मश्ग़ूल हो गए। **276 :** या'नी कुफ़्फ़ार की हज़ीमत। **277 :** जो मर्कज़ छोड़ कर ग़नीमत के लिये चला गया।

الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

चाहता था[278] फिर तुम्हारा मुंह उन से फेर दिया कि तुम्हें आज़्माए[279] और बेशक उस ने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया और **अल्लाह**

ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۲﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّ

मुसल्मानों पर फ़ज़्ल करता है जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और

الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى

दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे[280] तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया[281] और मुआ़फ़ी इस लिये सुनाई कि जो हाथ

مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ

से गया और जो उफ़्ताद (मुसीबत) पड़ी उस का रन्ज न करो और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है फिर ग़म के बा'द

عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَ

तुम पर चैन की नींद उतारी[282] कि तुम्हारी एक जमाअ़त को घेरे थी[283] और

طَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ

एक गुरोह को[284] अपनी जान की पड़ी थी[285] **अल्लाह** पर बे जा गुमान करते थे[286] जाहिलिय्यत के

الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

से गुमान कहते क्या इस काम में कुछ हमारा भी इख़्तियार है तुम फ़रमा दो कि इख़्तियार तो

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

सारा **अल्लाह** का है[287] अपने दिलों में छुपाते हैं[288] जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं

278 : जो अपने अमीर अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ अपनी जगह पर क़ाइम रह कर शहीद हो गया। **279 :** और मुसीबतों पर तुम्हारे साबिर व साबित रहने का इम्तिहान हो। **280 :** कि ख़ुदा के बन्दो मेरी त़रफ़ आओ। **281 :** या'नी तुम ने जो रसूले करीम ﷺ के हुक्म की मुख़ालफ़त कर के आप को ग़म पहुंचाया था उस के बदले तुम को हज़ीमत के ग़म में मुब्तला किया। **282 :** जो रो'ब व ख़ौफ़ दिलों में था उस को **अल्लाह** तआ़ला ने दूर किया और अम्नो राह़त के साथ उन पर नींद उतारी यहां तक कि मुसल्मानों को ग़ुनूदगी आ गई और नींद ने उन पर ग़लबा किया। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा फ़रमाते हैं कि रोज़े उहुद नींद हम पर छा गई हम मैदान में थे तलवार हमारे हाथ से छूट जाती थी फिर उठाते थे फिर छूट जाती थी। **283 :** और वोह जमाअ़त मोमिनीने सादिक़ुल ईमान की थी। **284 :** जो मुनाफ़िक़ थे। **285 :** और वोह ख़ौफ़ से परेशान थे। **अल्लाह** तआ़ला ने वहां मोमिनीन को मुनाफ़िक़ीन से इस त़रह मुमताज़ किया था कि मोमिनीन पर तो अम्नो इत़्मीनान की नींद का ग़लबा था और मुनाफ़िक़ीन ख़ौफ़ो हिरास में अपने जानों के ख़ौफ़ से परेशान थे और येह आयते अ़ज़ीमा और मो'जिज़ए बाहिरा था। **286 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को येह गुमान हो रहा था कि **अल्लाह** तआ़ला सय्यिदे आ़लम ﷺ की मदद न फ़रमाएगा या येह कि हुज़ूर शहीद हो गए अब आप का दीन बाक़ी न रहेगा। **287 :** फ़त्ह़ो ज़फ़र क़ज़ा व क़दर सब उस के हाथ है। **288 :** मुनाफ़िक़ीन अपना कुफ़्र और वा'दए इलाही में अपना मुतरद्दिद होना और जिहाद में मुसल्मानों के साथ चले आने पर मुतअस्सिफ़ (अफ़्सुर्दा) होना।

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِیْ بُیُوْتِكُمْ لَبَرَزَ

हमारा कुछ बस होता[289] तो हम यहां न मारे जाते तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी

الَّذِیْنَ كُتِبَ عَلَیْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰی مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَ لِیَبْتَلِیَ اللّٰهُ مَا فِیْ

जिन का मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्ल गाहों तक निकल कर आते[290] और इस लिये कि अल्लाह तुम्हारे

صُدُوْرِكُمْ وَ لِیُمَحِّصَ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ

सीनों की बात आज़्माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है[291] उसे खोल दे और अल्लाह दिलों की बात

الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا

जानता है[292] बेशक वोह जो तुम में से फिर गए[293] जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं

اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ

उन्हें शैतान ही ने लग़्ज़िश दी उन के बा'ज़ आ'माल के बाइस[294] और बेशक अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया बेशक

اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۵۵﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ

अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है ऐ ईमान वालो उन काफ़िरों[295] की तरह

كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِی الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّی

न होना जिन्हों ने अपने भाइयों की निस्बत कहा जब वोह सफ़र या जिहाद को गए[296]

لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا قُتِلُوْا ۚ لِیَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِیْ

कि हमारे पास होते तो न मरते न मारे जाते इस लिये कि अल्लाह उन के दिलों में इस का

قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۱۵۶﴾ وَ

अफ़्सोस रखे और अल्लाह जिलाता और मारता है[297] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है और

289 : और हमें समझ होती तो हम घर से न निकलते, मुसल्मानों के साथ अहले मक्का से लड़ाई के लिये न आते और हमारे सरदार न मारे जाते। पहले मक़ूले का क़ाइल अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ है और इस मक़ूले का क़ाइल मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर। 290 : और घरों में बैठ रहना कुछ काम न आता क्यूं कि क़ज़ा व क़दर के सामने तदबीर व ह़ीला बेकार है। 291 : इख़्लास या निफ़ाक़ 292 : उस से कुछ छुपा नहीं और येह आज़्माइश दूसरों को ख़बरदार करने के लिये है। 293 : और जंगे उहुद में भाग गए और नबिय्ये करीम के साथ तेरह या चौदह अस्ह़ाब के सिवा कोई बाक़ी न रहा। 294 : कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम ﷺ के हुक्म के बर ख़िलाफ़ मर्कज़ छोड़ा। 295 : या'नी इब्ने उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन 296 : और उस सफ़र में मर गए या जिहाद में शहीद हो गए। 297 : मौत व ह़यात उसी के इख़्तियार में है, वोह चाहे तो मुसाफ़िर व ग़ाज़ी को सलामत लाए और मह़फ़ूज़ घर में बैठे हुए को मौत दे, इन मुनाफ़िक़ीन के पास बैठ रहना क्या किसी को मौत से बचा सकता है, और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वोह मौत घर की मौत से बदरजहा बेहतर, लिहाज़ा मुनाफ़िक़ीन का येह क़ौल बातिल और फ़रेब देही है और इन का मक़्सद मुसल्मानों को जिहाद से नफ़रत दिलाना

لَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ

बेशक अगर तुम **अल्लाह** की राह में मारे जाओ या मर जाओ[298] तो **अल्लाह** की बख़्शिश और रहमत[299] उन के

مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا

सारे धन दौलत से बेहतर है और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो **अल्लाह** ही की त़रफ़ उठना है[300] तो कैसी कुछ

رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا

अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए[301] और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते[302] तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द

مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ

से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआफ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअ़त करो[303] और कामों में उन से मश्वरा लो[304]

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾ اِنْ

और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो[305] बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं अगर

يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ

अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता[306] और अगर वोह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर

مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ

तुम्हारी मदद करे और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये और किसी नबी पर येह गुमान नहीं हो सकता कि

يَّغُلَّ ۭ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا

वोह कुछ छुपा रखे[307] और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा फिर हर जान को उन की

है, जैसा कि अगली आयत में इर्शाद होता है। **298 :** और बिलफ़र्ज़ वोह सूरत पेश ही आ जाए जिस का तुम्हें अन्देशा दिलाया जाता है **299 :** जो राहे ख़ुदा में मरने पर हासिल होती है। **300 :** यहां मक़ामाते अ़ब्दिय्यत के तीनों मक़ामों का बयान फ़रमाया गया। **पहला मक़ाम** तो येह है कि बन्दा ब ख़ौफ़े दोज़ख़ **अल्लाह** की इ़बादत करे तो उस को अ़ज़ाबे नार से अम्न दी जाती है इस की त़रफ़ "لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ" में इशारा है। **दूसरी क़िस्म** वोह बन्दे हैं जो जन्नत के शौक़ में **अल्लाह** की इ़बादत करते हैं इस की त़रफ़ "وَرَحْمَةٌ" में इशारा है क्यूं कि रह़मत भी जन्नत का एक नाम है। **तीसरी क़िस्म** वोह मुख़्लिस बन्दे हैं जो इ़श्क़े इलाही और उस की ज़ाते पाक की मह़ब्बत में उस की इ़बादत करते हैं और उन का मक़्सूद उस की ज़ात के सिवा और कुछ नहीं है, उन्हें ह़क़ سُبْحَانَهٗ تَعَالٰى अपने दाइरए करामत में अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा इस की त़रफ़ "لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ" में इशारा है। **301 :** और आप के मिज़ाज में इस दरजे लुत़्फ़ो करम और राफ़्तो रह़मत हुई कि रोज़े उह़ुद ग़ज़ब न फ़रमाया। **302 :** और शिद्दतो ग़िल्ज़त से काम लेते **303 :** ताकि **अल्लाह** तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमाए। **304 :** कि इस में उन की दिलदारी भी है और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई भी और येह फ़ाएदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आयिन्दा उम्मत इस से नफ़्अ़ उठाती रहेगी। मश्वरे के मा'ना हैं किसी अम्र में राय दरयाफ़्त करना। **मस्अला :** इस से इज्तिहाद का जवाज़ और क़ियास का हुज्जत होना साबित हुवा। (مدارک وخازن) **305 :** तवक्कुल के मा'ना हैं **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना। मक़्सूद येह है कि बन्दे का ए'तिमाद तमाम कामों में **अल्लाह** पर होना चाहिये। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मश्वरा तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है। **306 :** और मददे इलाही वोही पाता है जो अपनी क़ुव्वतो त़ाक़त पर भरोसा नहीं करता **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व रह़मत का उम्मीद वार रहता है। **307 :** क्यूं कि येह शाने नुबुव्वत के ख़िलाफ़ है और अम्बिया सब मा'सूम हैं इन से ऐसा मुम्किन नहीं न वह़्य में न ग़ैर वह़्य में और जो कोई

كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ

कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा तो क्या जो अल्लाह की मरज़ी पर चला[308] वोह उस जैसा होगा जिस ने

بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ

अल्लाह का ग़ज़ब ओढ़ा (हक़दार बना)[309] और उस का ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की वोह अल्लाह के यहां

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

दरजा दरजा हैं[310] और अल्लाह उन के काम देखता है बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुवा[311] मुसल्मानों पर

اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

कि उन में उन्हीं में से[312] एक रसूल[313] भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है[314] और उन्हें पाक करता[315]

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है[316] और वोह ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى

النصف

में थे[317] क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[318] कि इस से दूनी तुम पहुंचा चुके हो[319] तो कहने लगो कि येह कहां

هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

से आई[320] तुम फ़रमा दो कि वोह तुम्हारी ही त़रफ़ से आई[321] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है

शख़्स कुछ छुपा रखे उस का हुक्म इसी आयत में आगे बयान फ़रमाया जाता है। **308 :** और उस की इत़ाअ़त की, ना फ़रमानी से बचा जैसे कि मुहाजिरीन व अन्सार व सालिहीने उम्मत **309 :** या'नी अल्लाह का ना फ़रमान हुवा जैसे मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार **310 :** हर एक की मन्ज़िलत और उस का मक़ाम जुदा, नेक का अलग, बद का अलग **311 :** मिन्नत ने'मते अ़ज़ीमा को कहते हैं और बेशक सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत ने'मते अ़ज़ीमा है क्यूं कि ख़ल्क़ की पैदाइश जह्ल व अ़दमे दिरायत व क़िल्लते फ़ह्म व नुक़्साने अ़क़्ल पर है तो अल्लाह तआ़ला ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन में मबऊ़स फ़रमा कर उन्हें गुमराही से रिहाई दी और हु़ज़ूर की बदौलत उन्हें बीनाई अ़त़ा फ़रमा कर जह्ल से निकाला और आप के सदक़े में राहे रास्त की हिदायत फ़रमाई और आप के त़ुफ़ैल में बे शुमार ने'मतें अ़त़ा कीं। **312 :** या'नी उन के ह़ाल पर शफ़्क़तो करम फ़रमाने वाला और उन के लिये बाइ़से फ़ख़्रो शरफ़ जिस के अह़वाल, ज़ोह्द, वरअ़, रास्त बाज़ी, दियानत दारी, ख़साइले जमीला, अख़्लाक़े ह़मीदा से वोह वाक़िफ़ हैं। **313 :** सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **314 :** और उस की किताबे मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद उन को सुनाता है बा वुजूदे कि उन के कान पहले कभी कलामे ह़क़ व वह़्ये समावी से आशना न हुए थे। **315 :** कुफ़्रो ज़लालत और इरतिकाबे मुहर्रमात व मआ़सी और ख़साइले ना पसन्दीदा व मलकाते रज़ीला (बुरी आ़दतों) व ज़ुल्माते नफ़्सानिया (गुमराहियों) से **316 :** और नफ़्स की क़ुव्वते अ़मलिय्या और इ़ल्मिय्या दोनों की तक्मील फ़रमाता है। **317 :** कि ह़क़ व बात़िल व नेक व बद में इम्तियाज़ न रखते थे और जह्ल व नाबीनाई में मुब्तला थे। **318 :** जैसी कि जंगे उह़ुद में पहुंची कि तुम में से सत्तर क़त्ल हुए। **319 :** बद्र में कि तुम ने सत्तर को क़त्ल किया सत्तर को गिरिफ़्तार किया। **320 :** और क्यूं पहुंची जब कि हम मुसल्मान हैं और हम में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। **321 :** कि तुम ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मरज़ी के ख़िलाफ़ मदीनए त़य्यिबा से बाहर निकल कर जंग करने पर इसरार किया फिर वहां पहुंचने के बा'द बा वुजूद हु़ज़ूर की शदीद मुमानअ़त के ग़नीमत के लिये मर्कज़ छोड़ा येह सबब तुम्हारे क़त्लो हज़ीमत का हुवा।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

और वोह मुसीबत जो तुम पर आई[322] जिस दिन दोनों फ़ौजें[323] मिली थीं वोह **अल्लाह** के हुक्म से थी और इस लिये कि पहचान करा दे ईमान वालों की

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۖۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

और इस लिये कि पहचान करा दे उन की जो मुनाफ़िक़ हुए[324] और उन से[325] कहा गया कि आओ[326] **अल्लाह** की राह में लड़ो

اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ

या दुश्मन को हटाओ[327] बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और उस दिन ज़ाहिरी ईमान की ब निस्बत

اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

खुले कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब हैं अपने मुंह से कहते हैं जो उन के दिल में नहीं

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ

और **अल्लाह** को मा'लूम है जो छुपा रहे हैं[328] वोह जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में[329] कहा और आप बैठ रहे कि

اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

वोह हमारा कहना मानते[330] तो न मारे जाते तुम फ़रमा दो तो अपनी ही मौत टाल दो अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ

सच्चे हो[331] और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए[332] हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि

اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ۙ فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ

वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं[333] शाद हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया[334]

322 : उहुद में **323 :** मोमिनीन व मुश्रिकीन की **324 :** या'नी मोमिन व मुनाफ़िक़ मुमताज़ हो गए **325 :** या'नी अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन से **326 :** मुसल्मानों की ता'दाद बढ़ाओ और हिफ़ाज़ते दीन के लिये **327 :** अपने अहलो माल को बचाने के लिये **328 :** या'नी निफ़ाक़। **329 :** या'नी शुहदाए उहुद, जो नसबी तौर पर उन के भाई थे उन के हक़ में अब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन ने **330 :** और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में न जाते या वहां से फिर आते **331 :** मरवी है कि जिस रोज़ मुनाफ़िक़ीन ने येह बात कही उसी दिन सत्तर मुनाफ़िक़ मर गए। **332 शाने नुज़ूल :** अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत शुहदाए उहुद के हक़ में नाज़िल हुई। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम्हारे भाई उहुद में शहीद हुए **अल्लाह** तआला ने उन की अरवाह को सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब (जिस्म) अ़ता फ़रमाए वोह जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं जन्नती मेवे खाते हैं तिलाई क़नादील जो ज़ेरे अ़र्श मुअ़ल्लक़ हैं उन में रहते हैं जब उन्हों ने खाने पीने रहने के पाकीज़ा ऐश पाए तो कहा कि हमारे भाइयों को कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वोह जन्नत से बे रग़बती न करें और जंग से बैठ न रहें **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया : मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा, पस येह आयत नाज़िल फ़रमाई। (ابوداؤد) इस से साबित हुवा कि अरवाह बाक़ी हैं जिस्म के फ़ना के साथ फ़ना नहीं होतीं। **333 :** और ज़िन्दों की त़रह़ खाते पीते ऐश करते हैं। सियाक़े आयत इस पर दलालत करता है कि हयात रूह व जिस्म दोनों के लिये है। उ़लमा ने फ़रमाया कि शुहदा के जिस्म क़ब्रों में मह़फ़ूज़ रहते हैं मिट्टी उन को नुक़्सान नहीं पहुंचाती और ज़मानए सहाबा में और इस के बा'द ब कसरत मुआयना हुवा है कि अगर कभी शुहदा की क़ब्रें खुल गईं तो उन के जिस्म तरो ताज़ा पाए गए। (خازن وغیرہ) **334 :** फ़ज़्लो

وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ

और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उन से न मिले[335] कि उन पर न कुछ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ

अन्देशा है और न कुछ ग़म ख़ुशियां मनाते हैं **अल्लाह** की ने'मत और फ़ज़्ल की

وَّ اَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ

और येह कि **अल्लाह** ज़ाएअ़ नहीं करता अज्र मुसल्मानों का[336] वोह जो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर

وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ

हाज़िर हुए बा'द इस के कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था[337] उन के निकोकारों

وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ

और परहेज़ गारों के लिये बड़ा सवाब है वोह जिन से लोगों ने कहा[338] कि लोगों ने[339]

جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ

तुम्हारे लिये जथ्था जोड़ा तो उन से डरो तो उन का ईमान और ज़ाइद हुवा और बोले **अल्लाह** हम को बस है और क्या अच्छा

الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّ

कारसाज़[340] तो पलटे **अल्लाह** के एह़सान और फ़ज़्ल से[341] कि उन्हें कोई बुराई न पहुंची और

करामत और इन्आमो एह़सान, मौत के बा'द ह़यात दी, अपना मुक़र्रब किया, जन्नत का रिज़्क़ और उस की ने'मतें अ़ता फ़रमाईं और इन मनाज़िल के ह़ासिल करने के लिये तौफ़ीक़े शहादत दी। **335 :** और दुन्या में वोह ईमान व तक़्वा पर हैं जब शहीद होंगे उन के साथ मिलेंगे और रोज़े क़ियामत अम्न और चैन के साथ उठाए जाएंगे। **336 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : हुज़ूर ने फ़रमाया : जिस किसी के राहे ख़ुदा में ज़ख़्म लगा वोह रोज़े क़ियामत वैसा ही आएगा जैसा ज़ख़्म लगने के वक़्त था उस के ख़ून में ख़ुश्बू मुश्क की होगी और रंग ख़ून का। तिरमिज़ी व नसाई की ह़दीस में है कि शहीद को क़त्ल से तक्लीफ़ नहीं होती मगर ऐसी जैसी किसी को एक ख़राश लगे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है शहीद के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं सिवाए क़र्ज़ के। **337 शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से फ़ारिग़ होने के बा'द जब अबू सुफ़्यान मअ़ अपने हमराहियों के मक़ामे रौह़ा में पहुंचे तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि वोह वापस क्यूं आ गए मुसल्मानों का बिल्कुल ख़ातिमा ही क्यूं न कर दिया येह ख़याल कर के उन्हों ने फिर वापस होने का इरादा किया सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब के लिये अपनी रवानगी का ए'लान फ़रमा दिया सह़ाबा की एक जमाअ़त जिन की ता'दाद सत्तर थी और जो जंगे उहुद के ज़ख़्मों से चूर हो रहे थे हुज़ूर के ए'लान पर ह़ाज़िर हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस जमाअ़त को ले कर अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब में रवाना हो गए जब हुज़ूर मक़ामे ह़मरा अल असद पर पहुंचे जो मदीने से आठ मील है तो वहां मा'लूम हुवा कि मुश्रिकीन मरऊ़ब व ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग गए इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **338 :** या'नी नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई ने। **339 :** या'नी अबू सुफ़्यान वग़ैरा मुश्रिकीन ने **340 शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से वापस होते हुए अबू सुफ़्यान ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आप की मक़ामे बद्र में जंग होगी हुज़ूर ने उन के जवाब में फ़रमाया : اِنْ شَاءَ اللّٰه, जब वोह वक़्त आया और अबू सुफ़्यान अहले मक्का को ले कर जंग के लिये रवाना हुए तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिल में ख़ौफ़ डाला और उन्हों ने वापस हो जाने का इरादा किया इस मौक़अ़ पर अबू सुफ़्यान की नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई से मुलाक़ात हुई जो उ़मरह करने आया था अबू सुफ़्यान ने उस से कहा कि ऐ नुऐ़म ! इस ज़माने में मेरी लड़ाई मक़ामे बद्र में मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ तै हो चुकी है और इस वक़्त मुझे मुनासिब येह मा'लूम होता है कि मैं जंग

اتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۷۴﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّیْطٰنُ

अल्लाह की ख़ुशी पर चले[342] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है[343] वोह तो शैत़ान ही है कि

یُخَوِّفُ اَوْلِیَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَ خَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۷۵﴾

अपने दोस्तों से धमकाता है[344] तो उन से न डरो[345] और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो[346]

وَ لَا یَحْزُنْكَ الَّذِیْنَ یُسَارِعُوْنَ فِی الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ یَّضُرُّوا اللّٰهَ

और ऐ मह़बूब तुम उन का कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[347] वोह अल्लाह का कुछ न

شَیْــٴًـا ؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ اَلَّا یَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِی الْاٰخِرَةِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

बिगाड़ेंगे अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उन का कोई ह़िस्सा न रखे[348] और उन के लिये बड़ा

عَظِیْمٌ ﴿۱۷۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ لَنْ یَّضُرُّوا اللّٰهَ شَیْــٴًـا ۚ

अज़ाब है वोह जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया[349] अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे

وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۷﴾ وَ لَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ

और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं

خَیْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ لِیَزْدَادُوْۤا اِثْمًا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

कुछ उन के लिये भला है हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें[350] और उन के लिये ज़िल्लत का

में न जाऊं वापस जाऊं तू मदीने जा और तदबीर के साथ मुसल्मानों को मैदाने जंग में जाने से रोक दे इस के इवज़ में तुझ को दस ऊंट दूंगा, नुऐ़म ने मदीने पहुंच कर देखा कि मुसल्मान जंग की तय्यारी कर रहे हैं उन से कहने लगा कि तुम जंग के लिये जाना चाहते हो अहले मक्का ने तुम्हारे लिये बड़े लश्कर जम्अ़ किये हैं, ख़ुदा की क़सम ! तुम में से एक भी फिर कर न आएगा। सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ज़रूर जाऊंगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो। पस हुज़ूर सत्तर सुवारों को हमराह ले कर "حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِیْلُ" पढ़ते हुए रवाना हुए बद्र में पहुंचे वहां आठ शब क़ियाम किया माले तिजारत साथ था उस को फ़रोख़्त किया ख़ूब नफ़्अ़ हुवा और सालिम ग़ानिम मदीनए त़य्यिबा वापस हुए जंग नहीं हुई चूंकि अबू सुफ़्यान और अहले मक्का ख़ौफ़ज़दा हो कर मक्का शरीफ़ को वापस हो गए थे इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **341 :** ब अम्नो आ़फ़िय्यत मनाफ़ेए़ तिजारत ह़ासिल कर के **342 :** और दुश्मन के मुक़ाबले के लिये जुरअत से निकले और जिहाद का सवाब पाया। **343 :** कि उस ने इत़ाअ़ते रसूल ﷺ और आमादगिये जिहाद की तौफ़ीक़ दी और मुश्रिकीन के दिलों को ख़ौफ़ज़दा कर दिया कि वोह मुक़ाबले की हिम्मत न कर सके और राह में से वापस हो गए। **344 :** और मुसल्मानों को मुश्रिकीन की कसरत से डराता है जैसा कि नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई ने किया। **345 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व मुश्रिकीन जो शैत़ान के दोस्त हैं उन का ख़ौफ़ न करो। **346 :** क्यूं कि ईमान का मुक़्तज़ा ही येह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो। **347 :** ख़्वाह वोह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हों या मुनाफ़िक़ीन या रुअसाए यहूद या मुरतद्दीन वोह आप के मुक़ाबले के लिये कितने ही लश्कर जम्अ़ करें काम्याब न होंगे। **348 :** इस में क़दरिय्या व मो'तज़िला का रद है और आयत दलील है इस पर कि ख़ैर व शर ब इरादए इलाही है। **349 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन जो कलिमए ईमान पढ़ने के बा'द काफ़िर हुए या वोह लोग जो बा वुजूद ईमान पर क़ादिर होने के काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए। **350 :** ह़क़ से इनाद और रसूल ﷺ से ख़िलाफ़ कर के। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम ﷺ से दरयाफ़्त किया गया कौन शख़्स अच्छा है ? फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल अच्छे हों, अ़र्ज़ किया गया और बदतर कौन है ? फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल ख़राब।

مُّهِينٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

अ़ज़ाब है अल्लाह मुसल्मानों को इस ह़ाल पर छोड़ने का नहीं जिस पर तुम हो[351] जब तक

يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

जुदा न कर दे गन्दे को[352] सुथरे से[353] और अल्लाह की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे दे

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِي مِنْ رُّسُلِهِ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ ۚ

हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे[354] तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूलों पर

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

और अगर ईमान लाओ[355] और परहेज़ गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा सवाब है और जो बुख़्ल करते हैं[356] उस चीज़ में

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ

जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है

سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा[357] और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों

351 : ऐ कलिमा गोयाने इस्लाम ! 352 : या'नी मुनाफ़िक़ को 353 : मोमिने मुख़्लिस से यहां तक कि अपने नबी ﷺ को तुम्हारे अह़वाल पर मुत्तलअ़ कर के मोमिन व मुनाफ़िक़ हर एक को मुमताज़ फ़रमा दे। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया कि ख़िल्क़त व आफ़रीनिश (पैदाइश) से क़ब्ल जब कि मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उसी वक़्त वोह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई जैसा कि ह़ज़रते आदम पर पेश की गई और मुझे इ़ल्म दिया गया, कौन मुझ पर ईमान लाएगा कौन कुफ़्र करेगा। येह ख़बर जब मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो उन्हों ने बराहे इस्तिहज़ा कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ का गुमान है कि वोह येह जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुए उन में से कौन उन पर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा बा वुजूदे कि हम उन के साथ हैं वोह हमें नहीं पहचानते। इस पर सय्यिदे आ़लम ﷺ ने मिम्बर पर क़ियाम फ़रमा कर अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है जो मेरे इ़ल्म में त़ा'न करते हैं ! आज से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उस में से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझ से सुवाल करो और मैं तुम्हें उस की ख़बर न दे दूं। अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े हो कर कहा : मेरा बाप कौन है ? **या रसूलल्लाह** ! फ़रमाया : ह़ुज़ाफ़ा, फिर ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ खड़े हुए उन्हों ने कहा : **या रसूलल्लाह** ! हम अल्लाह की रबूबिय्यत पर राज़ी हुए, इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए, क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी हुए, आप के नबी होने पर राज़ी हुए, हम आप से मुआ़फ़ी चाहते हैं। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम बाज़ आओगे क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिम्बर से उतर आए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस ह़दीस से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम ﷺ को क़ियामत तक की तमाम चीज़ों का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया है और ह़ुज़ूर के इ़ल्मे ग़ैब में त़ा'न करना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। 354 : तो उन बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब का इ़ल्म देता है और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा ﷺ रसूलों में सब से अफ़्ज़ल और आ'ला हैं इस आयत से और इस के सिवा ब कसरत आयात व ह़दीस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام को ग़ुयूब के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए और ग़ुयूब के इ़ल्म आप का मो'जिज़ा हैं। 355 : और तस्दीक़ करो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब पर मुत्तलअ़ किया है। 356 : बुख़्ल के मा'ना में अक्सर उ़लमा इस त़रफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़्ल है इसी लिये बुख़्ल पर शदीद वई़दें आई हैं। चुनान्चे इस आयत में भी एक वई़द आ रही है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : बुख़्ल और बद ख़ुल्क़ी येह दो ख़स्लतें ईमानदार में जम्अ़ नहीं होतीं, अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां बुख़्ल से ज़कात का न देना मुराद है। 357 : बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि जिस को अल्लाह ने माल दिया और उस ने ज़कात अदा न की रोज़े क़ियामत वोह माल सांप बन कर उस को तौक़ की त़रह़ लिपटेगा और येह कह कर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूं मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।

وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ

और ज़मीन का[358] और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है बेशक अल्लाह ने सुना

الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا

जिन्हों ने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी[359] अब हम लिख रखेंगे उन का कहा[360]

وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾

और अम्बिया को उन का नाहक़ शहीद करना[361] और फ़रमाएंगे कि चखो आग का अ़ज़ाब

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ۚ

येह बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता

اَلَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَاۤ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

वोह जो कहते हैं अल्लाह ने हम से क़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं जब तक ऐसी

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

क़ुरबानी का हुक्म न लाए जिसे आग खाए[362] तुम फ़रमा दो मुझ से पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ

और येह हुक्म ले कर आए जो तुम कहते हो फिर तुम ने उन्हें क्यूं शहीद किया अगर सच्चे हो[363] तो ऐ महबूब अगर वोह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं

فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ

तो तुम से अगले रसूलों की भी तक्ज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां[364] और सहीफ़े और चमकती किताब[365]

358 : वोही दाइम बाक़ी है और सब मख़्लूक़ फ़ानी, इन सब की मिल्क बातिल होने वाली है तो निहायत नादानी है कि इस माले ना पाएदार पर बुख़्ल किया जाए और राहे ख़ुदा में न दिया जाए। 359 : यहूद ने येह आयत "مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" सुन कर कहा था कि मुहम्मद ﷺ का मा'बूद हम से क़र्ज़ मांगता है तो हम ग़नी हुए वोह फ़क़ीर हुवा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 360 : आ'माल नामों में 361 : क़त्ले अम्बिया को इस मक़ूले पर मा'तूफ़ करने से मा'लूम होता है कि येह दोनों जुर्म बहुत अ़ज़ीम तरीन हैं और क़बाहत में बराबर हैं और शाने अम्बिया में गुस्ताख़ी करने वाला शाने इलाही में बे अदब हो जाता है। 362 **शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम ﷺ से कहा था कि हम से तौरैत में अ़हद लिया गया है कि जो मुद्दइये रिसालत ऐसी क़ुरबानी न लाए जिस को आस्मान से सफ़ेद आग उतर कर खाए उस पर हम हरगिज़ ईमान न लाएं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस किज़्बे महज़ और इफ़्तिराए ख़ालिस का इब्ताल किया गया क्यूं कि इस शर्त़ का तौरैत में नामो निशान भी नहीं है और ज़ाहिर है कि नबी की तस्दीक़ के लिये मो'जिज़ा काफ़ी है कोई मो'जिज़ा हो, जब नबी ने कोई मो'जिज़ा दिखाया उस के सिद्क़ पर दलील क़ाइम हो गई और उस की तस्दीक़ करना और उस की नुबुव्वत को मानना लाज़िम हो गया अब किसी ख़ास मो'जिज़े का इसरार हुज्जत क़ाइम होने के बा'द नबी की तस्दीक़ का इन्कार है। 363 : जब तुम ने येह निशानी लाने वाले अम्बिया को क़त्ल किया और उन पर ईमान न लाए तो साबित हो गया कि तुम्हारा येह दा'वा झूटा है। 364 : या'नी मो'जिज़ाते बाहिरा (रोशन और ला जवाब कर देने वाले मो'जिज़ात) 365 : तौरैत व इन्जील।

الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ

ले कर आए थे हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे

الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا

मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ قف

दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है[366] बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़्माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में[367]

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ

और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों[368] और मुश्रिकों से

اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ

बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो[369] तो येह बड़ी हिम्मत का

الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

काम है और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे

لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۡ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا

लोगों से बयान कर देना और न छुपाना[370] तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले ज़लील दाम

قَلِيْلًا ۭ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ

ह़ासिल किये[371] तो कितनी बुरी ख़रीदारी है[372] हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने

366 : दुन्या की ह़क़ीक़त इस मुबारक जुम्ले ने बे ह़िजाब कर दी, आदमी ज़िन्दगानी पर मफ़्तून (शैदाई व दीवाना) होता है इसी को सरमाया समझता है और इस फ़ुरसत को बेकार ज़ाएअ़ कर देता है, वक़्ते अख़ीर उसे मा'लूम होता है कि इस में बक़ा न थी और इस के साथ दिल लगाना ह़याते बाक़ी और उख़्रवी ज़िन्दगी के लिये सख़्त मज़र्रत रसां (नुक़्सान देह साबित) हुवा। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि दुन्या त़ालिबे दुन्या के लिये मताए ग़ुरूर और धोके का सरमाया है लेकिन आख़िरत के त़लब गार के लिये दौलते बाक़ी के ह़ुसूल का ज़रीआ़ और नफ़्अ़ देने वाला सरमाया है, येह मज़्मून इस आयत के ऊपर के जुम्लों से मुस्तफ़ाद होता है। **367 :** ह़ुक़ूक़ व फ़राइज़ और नुक़्सान और मसाइब और अमराज़ व ख़त़रात व क़त्ल व रन्जो ग़म वग़ैरा से ताकि मोमिन व ग़ैर मोमिन में इम्तियाज़ हो जाए, मुसल्मानों को येह ख़ित़ाब इस लिये फ़रमाया गया कि आने वाले मसाइब व शदाइद पर इन्हें सब्र आसान हो जाए। **368 :** यहूदो नसारा **369 :** मा'सियत से **370 :** **अल्लाह** तआ़ला ने उ़लमाए तौरैत व इन्जील पर वाजिब किया था कि इन दोनों किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की नुबुव्वत पर दलालत करने वाले जो दलाइल हैं वोह लोगों को ख़ूब अच्छी त़रह़ मुशर्रह़ (वाज़ेह़ तशरीह़) कर के समझा दें और हरगिज़ न छुपाएं। **371 :** और रिश्वतें ले कर ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के औसाफ़ को छुपाया जो तौरैत व इन्जील में मज़्कूर थे। **372 :** इ़ल्मे दीन का छुपाना मम्नूअ़ है। ह़दीस शरीफ़ में आया कि जिस शख़्स से कुछ दरयाफ़्त किया गया जिस को वोह जानता है और उस ने उस को छुपाया रोज़े क़ियामत उस के आग की लगाम लगाई जाएगी। **मस्अला :** उ़लमा पर वाजिब है कि अपने इ़ल्म से फ़ाएदा पहुंचाएं और ह़क़ ज़ाहिर करें और किसी ग़रज़े फ़ासिद के लिये उस में से कुछ न छुपाएं।

اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ

किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो[373] ऐसों को हरगिज़ अज़ाब से

مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है और **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों

وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ

और ज़मीन की बादशाही[374] और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है बेशक आस्मानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ الَّذِیْنَ

की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं[375] अक़्ल मन्दों के लिये[376] जो

یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ

अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे[377] और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا

में ग़ौर करते हैं[378] ऐ रब हमारे तूने येह बेकार न बनाया[379] पाकी है तुझे तो हमें

عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَمَا

दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तूने रुस्वाई दी और

لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ

ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं ऐ रब हमारे हम ने एक मुनादी को सुना[380] कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है

اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا

कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए ऐ रब हमारे तो हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां महूव फ़रमा (मिटा) दे

373 **शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो लोगों को धोका देने और गुमराह करने पर खुश होते और बा वुजूद नादान होने के येह पसन्द करते कि उन्हें आ़लिम कहा जाए। **मस्अला :** इस आयत में वई़द है खुद पसन्दी करने वाले के लिये और उस के लिये जो लोगों से अपनी झूटी ता'रीफ़ चाहे। जो लोग बिग़ैर इ़ल्म अपने आप को आ़लिम कहलवाते हैं या इसी त़रह और कोई ग़लत़ वस्फ़ अपने लिये पसन्द करते हैं उन्हें इस से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये। 374 : इस में उन गुस्ताख़ों का रद है जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** फ़क़ीर है। 375 : सानेअ़, क़दीम, अ़लीम, ह़कीम, क़ादिर के वुजूद पर दलालत करने वाली 376 : जिन की अ़क़्ल कदूरत से पाक हो और मख़्लूक़ात के अ़जाइबो ग़राइब को ए'तिबार व इस्तिद्लाल की नज़र से देखते हों। 377 : या'नी तमाम अह़वाल में। मुस्लिम शरीफ़ में मरवी है कि सय्यिदे आ़लम ﷺ तमाम अह़यान (अवक़ात) में **अल्लाह** का ज़िक्र फ़रमाते थे। बन्दे का कोई ह़ाल यादे इलाही से ख़ाली न होना चाहिये। ह़दीस शरीफ़ में है : जो बिहिश्ती बाग़ों की ख़ोशाचीनी पसन्द करे उसे चाहिये कि ज़िक्रे इलाही की कसरत करे। 378 : और इस से इन के सानेअ़ की क़ुदरत व ह़िक्मत पर इस्तिद्लाल करते हैं येह कहते हुए कि 379 : बल्कि अपनी मा'रिफ़त की दलील बनाया। 380 : इस मुनादी से मुराद

وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا

और हमारी मौत अच्छों के साथ कर[381] ऐ रब हमारे और हमें दे वोह[382] जिस का तूने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ

क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता तो उन की दुआ़ सुन ली उन के रब ने कि

لَاۤ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰی ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

मैं तुम में काम वाले की मेहनत अकारत नहीं करता मर्द हो या औ़रत तुम आपस में एक हो[383]

فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَقٰتَلُوْا

तो वोह जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े

وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا

और मारे गए मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا

नहरें रवां[384] अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास अच्छा सवाब है ऐ सुनने

یَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِی الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِیْلٌ ۟ قف ثُمَّ

वाले काफ़िरों का शहरों में अहले गहले (इतराते) फिरना हरगिज़ तुझे धोका न दे[385] थोड़ा बरत्ना है फिर

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ

उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछोना लेकिन वोह जो अपने रब से डरते हैं उन के लिये

جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में रहें अल्लाह की त़रफ़ की मेहमानी

या सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं जिन की शान में "دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ" वारिद है या क़ुरआने करीम **381 :** अम्बिया व सालिह़ीन के, कि हम इन के फ़रमां बरदारों में दाख़िल किये जाएं। **382 :** वोह फ़ज़्लो रह़मत **383 :** और जज़ाए आ'माल में औ़रत व मर्द के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं। **शाने नुज़ूल :** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! मैं हिजरत में औ़रतों का कुछ ज़िक्र ही नहीं सुनती या'नी मर्दों के फ़ज़ाइल तो मा'लूम हुए लेकिन येह भी मा'लूम हो कि औ़रतों को भी हिजरत का कुछ सवाब मिलेगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन की तस्कीन फ़रमा दी गई कि सवाब अ़मल पर मुरत्तब है औ़रत का हो या मर्द का। **384 :** येह सब अल्लाह का फ़ज़्लो करम है। **385 शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों की एक जमाअ़त ने कहा कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन अल्लाह के दुश्मन तो ऐ़शो आराम में हैं और हम तंगी व मशक़्क़त में, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि कुफ़्फ़ार का येह ऐ़श मताए क़लील है और अन्जाम ख़राब।

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ

और जो अल्लाह के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला[386] और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि अल्लाह पर

بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ

ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो उन की त़रफ़ उतरा[387] उन के दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए[388] अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते[389] येह वोह हैं जिन का सवाब उन के रब के पास है और अल्लाह जल्द

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا قف

हि़साब करने वाला है ऐ ईमान वालो सब्र करो[390] और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगह्बानी करो

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो

सूरए निसाअ मदनिय्या है, इस में एक सो छिहत्तर आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़म वाला[1]

386 : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की दौलत सराए अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि सुल्ताने कौनैन एक बोरिये पर आराम फ़रमा हैं, चमड़े का तक्या जिस में नारियल के रेशे भरे हुए हैं ज़ेरे सरे मुबारक है, जिस्मे अक़्दस में बोरिये के नक़्श हो गए हैं, येह ह़ाल देख कर ह़ज़रते फ़ारूक़ रो पड़े, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! क़ैसरो किस्रा तो ऐ़शो राह़त में हों और आप रसूले ख़ुदा हो कर इस ह़ालत में, फ़रमाया : क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उन के लिये दुन्या हो और हमारे लिये आख़िरत। 387 **शाने नुज़ूल** : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत नज्जाशी बादशाहे ह़बशा के बाब में नाज़िल हुई, उन की वफ़ात के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : चलो और अपने भाई की नमाज़ पढ़ो जिस ने दूसरे मुल्क में वफ़ात पाई है, ह़ुज़ूर बक़ीअ़ शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए और ज़मीने ह़बशा आप के सामने की गई और नज्जाशी बादशाह का जनाज़ा पेशे नज़र हुवा उस पर आप ने चार तक्बीरों के साथ नमाज़ पढ़ी और उस के लिये इस्तिग़्फ़ार फ़रमाया। سبحان اللہ ! क्या नज़र है क्या शान है सर ज़मीने ह़बशा ह़िजाज़ में सामने पेश कर दी जाती है। मुनाफ़िक़ीन ने इस पर त़ा'न किया और कहा देखो ह़बशा के नसरानी पर नमाज़ पढ़ते हैं जिस को आप ने कभी देखा भी नहीं और वोह आप के दीन पर भी न था, इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। 388 : इ़ज्ज़ो इन्किसार और तवाज़ोअ़ व इख़्लास के साथ। 389 : जैसा कि यहूद के रुअसा लेते हैं। 390 : अपने दीन पर और इस को किसी शिद्दत व तक्लीफ़ वग़ैरा की वज्ह से न छोड़ो। सब्र के मा'ना में ह़ज़रते जुनैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि सब्र नफ़्स को ना गवार अम्र पर रोकना है बिग़ैर जज़अ़ के। बा'ज़ ह़ुकमा ने कहा सब्र की तीन क़िस्में हैं : (1) तर्के शिकायत (2) क़बूले क़ज़ा (3) सिद्क़े रिज़ा। 1 : सूरए निसाअ मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई, इस में एक सो छिहत्तर आयतें हैं और तीन हज़ार पेंतालीस कलिमे और सोलह हज़ार तीस ह़र्फ़ हैं।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ

ऐ लोगो[2] अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया[3] और उसी में

مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ

से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औ़रत फैला दिये और अल्लाह से डरो जिस के

تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿۱﴾ وَاٰتُوا

नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहा़ज़ रखो[4] बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है और

الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا

यतीमों को उन के माल दो[5] और सुथरे[6] के बदले गन्दा न लो[7] और उन के

اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿۲﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا

माल अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक येह बड़ा गुनाह है और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि

2 : येह ख़िता़ब आ़म है तमाम बनी आदम को। 3 : अबुल बशर ह़ज़रते आदम से जिन को बिग़ैर मां बाप के मिट्टी से पैदा किया था। इन्सान की इब्तिदाए पैदाइश का बयान कर के क़ुदरते इलाहिय्यह की अ़ज़मत का बयान फ़रमाया गया, अगर्चे दुन्या के बे दीन बद अ़क़्ली व ना फ़हमी से इस का मज़्हका उड़ाते हैं लेकिन अस्हा़बे फ़हमो ख़िरद जानते हैं कि येह मज़्मून ऐसी ज़बर दस्त बुरहान से साबित है जिस का इन्कार मुहा़ल है। मर्दम शुमारी का हिसाब पता देता है कि आज से सो बरस क़ब्ल दुन्या में इन्सानों की ता'दाद आज से बहुत कम थी और इस से सो बरस पहले और भी कम तो इस त़रह़ जानिबे माज़ी में चलते चलते इस कमी की ह़द एक ज़ात क़रार पाएगी, या यूं कहिये कि क़बाइल की कसीर ता'दादें एक शख़्स की त़रफ़ मुन्तहा हो जाती हैं मसलन सय्यिद दुन्या में करोड़ों पाए जाएंगे मगर जानिबे माज़ी में इन की निहायत सय्यिदे आ़लम ﷺ की एक ज़ात पर होगी और बनी इसराईल कितने भी कसीर हों मगर इस तमाम कसरत का मरजअ़ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की एक ज़ात होगी, इसी त़रह़ और ऊपर को चलना शुरूअ़ करें तो इन्सान के तमाम शुऊ़ब व क़बाइल की इन्तिहा एक ज़ात पर होगी, उस का नाम कुतुबे इलाहिय्यह में आदम عَلَيْهِ السَّلَام है और मुम्किन नहीं कि वोह एक शख़्स तवालुदो तनासुल के मा'मूली त़रीक़े से पैदा हो सके, अगर उस के लिये बाप फ़र्ज़ भी किया जाए तो मां कहां से आए लिहाज़ा ज़रूरी है कि उस की पैदाइश बिग़ैर मां बाप के हो और जब बिग़ैर मां बाप के पैदा हुवा तो बिल यक़ीन उन्हीं अ़नासिर से पैदा होगा जो उस के वुजूद में पाए जाते हैं, फिर अ़नासिर में से जो उ़न्सर उस का मस्कन हो और जिस के सिवा दूसरे में वोह न रह सके लाज़िम है कि वोही उस के वुजूद में ग़ालिब हो इस लिये पैदाइश की निस्बत उसी उ़न्सर की त़रफ़ की जाएगी, येह भी ज़ाहिर है कि तवालुदो तनासुल का मा'मूली त़रीक़ा एक शख़्स से जारी नहीं हो सकता इस लिये उस के साथ एक और भी हो कि जोड़ा हो जाए और वोह दूसरा शख़्से इन्सानी जो उस के बा'द पैदा हो मुक़्तज़ाए ह़िक्मत येही है कि उसी के जिस्म से पैदा किया जाए क्यूं कि एक शख़्स के पैदा होने से नौअ़ मौजूद हो चुकी, मगर येह भी लाज़िम है (कि) उस की ख़िल्क़त पहले इन्सान से तवालुदे मा'मूली के सिवा किसी और त़रीक़े से हो क्यूं कि तवालुदे मा'मूली बिग़ैर दो के मुम्किन ही नहीं और यहां एक ही है, लिहाज़ा ह़िक्मते इलाहिय्यह ने ह़ज़रते आदम की एक बाईं पस्ली उन के ख़्वाब के वक़्त निकाली और उन से उन की बीबी ह़ज़रते ह़व्वा को पैदा किया, चूंकि ह़ज़रते ह़व्वा ब त़रीक़े तवालुदे मा'मूली (आ़म बच्चों की त़रह़) पैदा नहीं हुईं इस लिये वोह औलाद नहीं हो सकतीं जिस त़रह़ कि इस त़रीक़े के ख़िलाफ़ जिस्मे इन्सानी से बहुत से कीड़े पैदा हुवा करते हैं वोह उस की औलाद नहीं हो सकते हैं, ख़्वाब से बेदार हो कर ह़ज़रते आदम ने अपने पास ह़ज़रते ह़व्वा को देखा तो मह़ब्बते जिन्सिय्यत दिल में मोजज़न हुई उन से फ़रमाया : तुम कौन हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : औ़रत। फ़रमाया : किस लिये पैदा की गई हो ? अ़र्ज़ किया : आप की तस्कीने ख़ातिर के लिये तो आप उन से मानूस हुए। 4 : इन्हें क़त्अ़ न करो। ह़दीस शरीफ़ में है : जो रिज़्क़ की कशाइश चाहे उस को चाहिये कि सिलए रेह़्मी करे और रिश्तेदारों के हु़क़ूक़ की रिआ़यत रखे। **5 शाने नुज़ूल :** एक शख़्स की निगरानी में उस के यतीम भतीजे का कसीर माल था जब वोह यतीम बालिग़ हुवा और उस ने अपना माल त़लब किया तो चचा ने देने से इन्कार कर दिया। इस पर येह आयत नाज़िल हुई, इस को सुन कर उस शख़्स ने यतीम का माल उस के ह़वाले किया और कहा कि हम अल्लाह और उस के रसूल की इता़अ़त करते हैं। 6 : या'नी अपने ह़लाल माल 7 : यतीम का माल जो तुम्हारे लिये

تُقۡسِطُوۡا فِی الۡیَتٰمٰی فَانۡکِحُوۡا مَا طَابَ لَکُمۡ مِّنَ النِّسَآءِ مَثۡنٰی وَ ثُلٰثَ

यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे[8] तो निकाह़ में लाओ जो औ़रतें तुम्हें ख़ुश आएं दो दो और तीन तीन

وَ رُبٰعَ ۚ فَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا تَعۡدِلُوۡا فَوَاحِدَۃً اَوۡ مَا مَلَکَتۡ اَیۡمَانُکُمۡ ؕ

और चार चार[9] फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें जिन के तुम मालिक हो

ذٰلِکَ اَدۡنٰۤی اَلَّا تَعُوۡلُوۡا ؕ﴿۳﴾ وَ اٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِہِنَّ نِحۡلَۃً ؕ فَاِنۡ

येह इस से ज़ियादा क़रीब है कि तुम से ज़ुल्म न हो[10] और औ़रतों को उन के महर ख़ुशी से दो[11] फिर अगर

طِبۡنَ لَکُمۡ عَنۡ شَیۡءٍ مِّنۡہُ نَفۡسًا فَکُلُوۡہُ ہَنِیۡٓـًٔا مَّرِیۡٓـًٔا ﴿۴﴾ وَ لَا تُؤۡتُوا

वोह अपने दिल की ख़ुशी से महर में से तुम्हें कुछ दे दें तो उसे खाओ रचता पचता (ख़ुश गवार और मज़े से)[12] और बे अ़क़्लों

السُّفَہَآءَ اَمۡوَالَکُمُ الَّتِیۡ جَعَلَ اللّٰہُ لَکُمۡ قِیٰمًا وَّ ارۡزُقُوۡہُمۡ فِیۡہَا وَ اکۡسُوۡہُمۡ

को[13] उन के माल न दो जो तुम्हारे पास हैं जिन को **अल्लाह** ने तुम्हारी बसरे अवक़ात किया है और उन्हें उस में से खिलाओ और पहनाओ

ह़राम है उस को अच्छा समझ कर अपने रद्दी माल से न बदलो क्यूं कि वोह रद्दी तुम्हारे लिये ह़लाल व त़य्यिब है और येह ह़राम व ख़बीस। **8 :** और उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत न रख सकोगे **9 :** आयत के मा'ना में चन्द क़ौल हैं। ह़सन का क़ौल है कि पहले ज़माने में मदीने के लोग अपनी ज़ेरे विलायत यतीम लड़की से उस के माल की वज्ह से निकाह़ कर लेते बा वुजूदे कि उस की त़रफ़ रग़बत न होती फिर उस के साथ सोह़बत व मुआ़शरत में अच्छा सुलूक न करते और उस के माल के वारिस बनने के लिये उस की मौत के मुन्तज़िर रहते, इस आयत में उन्हें इस से रोका गया। एक क़ौल येह है कि लोग यतीमों की विलायत से तो बे इन्साफ़ी हो जाने के अन्देशे से घबराते थे और ज़िना की परवा न करते थे। उन्हें बताया गया कि अगर तुम ना इन्साफ़ी के अन्देशे से यतीमों की विलायत से गुरेज़ करते हो तो ज़िना से भी ख़ौफ़ करो और इस से बचने के लिये जो औ़रतें तुम्हारे लिये ह़लाल हैं उन से निकाह़ करो और ह़राम के क़रीब मत जाओ। एक क़ौल येह है कि लोग यतीमों की विलायत व सर परस्ती में तो ना इन्साफ़ी का अन्देशा करते थे और बहुत से निकाह़ करने में कुछ बाक (ख़ौफ़) नहीं रखते थे, उन्हें बताया गया कि जब ज़ियादा औ़रतें निकाह़ में हों तो उन के ह़क़ में ना इन्साफ़ी से भी डरो, उतनी ही औ़रतों से निकाह़ करो जिन के हुक़ूक़ अदा कर सको। इ़क्रिमा ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास से रिवायत की, कि क़ुरैश दस दस बल्कि इस से ज़ियादा औ़रतें करते थे और जब उन का बार न उठ सकता तो जो यतीम लड़कियां उन की सर परस्ती में होतीं उन के माल ख़र्च कर डालते। इस आयत में फ़रमाया गया कि अपनी इस्तित़ाअ़त देख लो और चार से ज़ियादा न करो ताकि तुम्हें यतीमों का माल ख़र्च करने की ह़ाजत पेश न आए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि आज़ाद मर्द के लिये एक वक़्त में चार औ़रतों तक से निकाह़ जाइज़ है ख़्वाह वोह हुर्रा (आज़ाद) हों या अमह या'नी बांदी। **मस्अला :** तमाम उम्मत का इज्माअ़ है कि एक वक़्त में चार औ़रतों से ज़ियादा निकाह़ में रखना किसी के लिये जाइज़ नहीं सिवाए रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के, येह आप के ख़साइस में से है। अबू दावूद की ह़दीस में है कि एक शख़्स इस्लाम लाए उन की आठ बीबियां थीं ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : उन में से चार रखना। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि ग़ैलान बिन सलमा सक़फ़ी इस्लाम लाए उन के दस बीबियां थीं वोह साथ मुसल्मान हुईं, ह़ुज़ूर ने हुक्म दिया कि इन में से चार रखो। **10 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बीबियों के दरमियान अ़द्ल फ़र्ज़ है। नई, पुरानी, बाकिरा (कुंवारी), सय्यिबा (शादी शुदा) सब इस इस्तिह़्क़ाक़ (ह़क़दारी) में बराबर हैं। येह अ़द्ल लिबास में, खाने पीने में, सक्ना या'नी रहने की जगह में और रात को रहने में लाज़िम है, इन उमूर में सब के साथ यक्सां सुलूक हो। **11 :** इस से मा'लूम हुवा कि महर की मुस्तह़िक़ औ़रतें हैं न कि इन के औलिया, अगर औलिया ने महर वुसूल कर लिया हो तो उन्हें लाज़िम है कि वोह महर उस की मुस्तह़िक़ औ़रत को पहुंचा दें। **12 मस्अला :** औ़रतों को इख़्तियार है कि वोह अपने शोहरों को महर का कोई जुज़्व हिबा करें या कुल महर मगर महर बख़्शवाने के लिये उन्हें मजबूर करना उन के साथ बद ख़ुल्क़ी करना न चाहिये क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने طِبۡنَ لَکُمۡ फ़रमाया जिस के मा'ना हैं दिल की ख़ुशी से मुआ़फ़ करना। **13 :** जो इतनी समझ नहीं रखते कि माल का मसरफ़ पहचानें, इस को बे मह़ल ख़र्च करते हैं और अगर उन पर छोड़ दिया जाए तो वोह जल्द ज़ाएअ़ कर देंगे।

وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٥﴾ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ

और उन से अच्छी बात कहो[14] और यतीमों को आज़्माते रहो[15] यहां तक कि जब वोह निकाह़ के क़ाबिल हों

فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ

तो अगर तुम उन की समझ ठीक देखो तो उन के माल उन्हें सिपुर्द कर दो और उन्हें न खाओ

اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ

ह़द से बढ़ कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जाएं और जिसे ह़ाजत न हो वोह बचता रहे[16] और जो

كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ

ह़ाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खाए फिर जब तुम उन के माल उन्हें सिपुर्द करो

فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٦﴾ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

तो उन पर गवाह कर लो और अल्लाह काफ़ी है ह़िसाब लेने को मर्दों के लिये ह़िस्सा है

تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ

उस में से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले और औ़रतों के लिये ह़िस्सा है उस में से जो छोड़ गए मां बाप

وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿٧﴾ وَاِذَا حَضَرَ

और क़राबत वाले तर्का थोड़ा हो या बहुत ह़िस्सा है अन्दाज़ा बांधा हुवा[17] फिर बांटते वक़्त

الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا

अगर रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन[18] आ जाएं तो उस में से उन्हें भी कुछ दो[19] और उन से

لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٨﴾ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً

अच्छी बात कहो[20] और डरें[21] वोह लोग कि अगर अपने बा'द नातुवान औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें

14 : जिस से उन के दिल को तसल्ली हो और वोह परेशान न हों, मसलन येह कि माल तुम्हारा है और तुम होशियार हो जाओगे तो तुम्हें सिपुर्द किया जाएगा। **15 :** कि उन में होशियारी और मुआ़मला फ़हमी पैदा हुई या नहीं **16 :** यतीम का माल खाने से **17 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में औ़रतों और बच्चों को विरसा न देते थे इस आयत में इस रस्म को बातिल किया गया। **18 :** अजनबी जिन में से कोई मय्यित का वारिस न हो **19 :** क़ब्ले तक़्सीम और येह देना मुस्तह़ब है। **20 :** इस में उ़ज़्रे जमील, वा'दए ह़सना और दुआ़ए ख़ैर सब दाख़िल हैं। इस आयत में मय्यित के तर्के से ग़ैर वारिस रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों को कुछ बतौ़रे सदक़ा देने और क़ौले मा'रूफ़ (अच्छी बात) कहने का हुक्म दिया, ज़मानए सह़ाबा में इस पर अ़मल था। मुह़म्मद बिन सीरीन से मरवी है कि इन के वालिद ने तक़्सीमे मीरास के वक़्त एक बकरी ज़ब्ह़ करा के खाना पकाया और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों को खिलाया और येह आयत पढ़ी, इब्ने सीरीन ने इसी मज़्मून की उ़बैदा सलमानी से भी रिवायत की है उस में येह भी है कि कहा कि अगर येह आयत न आई होती तो येह सदक़ा मैं अपने माल से करता। तीजा जिस को सिवुम कहते हैं और मुसल्मानों में मा'मूल है वोह भी इसी आयत का इत्तिबाअ़ है कि इस में रिश्तेदारों, यतीमों व मिस्कीनों पर तसद्दुक़

ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۪ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿۹﴾ اِنَّ

ख़त्रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें[22] और सीधी बात करें[23] वोह

الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ

जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं[24]

وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۰﴾ ع يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْۤ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़क्ती आग) में जाएंगे अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है[25] तुम्हारी औलाद के बारे में[26] बेटे का हिस्सा

الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ

दो[2] बेटियों बराबर[27] फिर अगर निरी लड़कियां हों अगर्चे दो से ऊपर[28] तो उन को तर्के की दो तिहाई

وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

और अगर एक लड़की तो उस का आधा[29] और मय्यित के मां बाप को हर एक को

السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗۤ

उस के तर्के से छटा अगर मय्यित के औलाद हो[30] फिर अगर उस की औलाद न हो और मां बाप

اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗۤ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ

छोड़े[31] तो मां का तिहाई फिर अगर उस के कई बहन भाई (हों)[32] तो मां का छटा[33] बा'द उस

होता है और कलिमे का ख़त्म और कुरआने पाक की तिलावत और दुआ क़ौले मा'रूफ़ है, इस में बा'ज़ लोगों को बे जा इसरार हो गया है जो बुज़ुर्गों के इस अ़मल का माख़ज़ तो तलाश न कर सके बा वुजूदे कि इतना साफ़ कुरआने पाक में मौजूद था लेकिन उन्हों ने अपनी राय को दीन में दख़्ल दिया और अ़मले ख़ैर को रोकने पर मुसिर हो गए। अल्लाह हिदायत करे। **21 :** वसी और यतीमों के वली और वोह लोग जो क़रीबे मौत मरने वाले के पास मौजूद हों। **22 :** और मरने वाले की ज़ुर्रिय्यत के साथ ख़िलाफ़े शफ़्क़त कोई कारवाई न करें जिस से उस की औलाद परेशान हो। **23 :** मरीज़ के पास उस की मौत के क़रीब मौजूद होने वालों की सीधी बात तो येह है कि उसे सदक़ा व वसिय्यत में येह राय दें कि वोह इतने माल से करे जिस से उस की औलाद तंगदस्त नादार न रह जाए और वसी व वली की सीधी बात येह है कि वोह मरने वाले की ज़ुर्रिय्यत से हुस्ने ख़ुल्क़ के साथ कलाम करें जैसा अपनी औलाद के साथ करते हैं। **24 :** या'नी यतीमों का माल नाहक़ खाना गोया आग खाना है क्यूं कि वोह सबब है अ़ज़ाब का। ह़दीस शरीफ़ में है : रोज़े क़ियामत यतीमों का माल खाने वाले इस त़रह़ उठाए जाएंगे कि उन की क़ब्रों से और उन के मुंह से और उन के कानों से धूआं निकलता होगा तो लोग पहचानेंगे कि येह यतीम का माल खाने वाला है। **25 :** विरसे के मुतअ़ल्लिक़ **26 :** अगर मय्यित ने बेटे बेटियां दोनों छोड़ी हों तो **27 :** या'नी दुख़्तर का हिस्सा पिसर से आधा है और अगर मरने वाले ने सिर्फ़ लड़के छोड़े हों तो कुल माल उन का। **28 :** या दो **29 :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर अकेला लड़का वारिस रहा हो तो कुल माल उस का होगा क्यूं कि ऊपर बेटे का हिस्सा बेटियों से दूना बताया गया है तो जब अकेली लड़की का निस्फ़ हुवा तो अकेले लड़के का इस से दूना हुवा और वोह कुल है। **30 :** ख़्वाह लड़का हो या लड़की कि इन में से हर एक को औलाद कहा जाता है। **31 :** या'नी सिर्फ़ मां बाप छोड़े और अगर मां बाप के साथ ज़ौज या ज़ौजा में से किसी को छोड़ा तो मां का हिस्सा ज़ौज का हिस्सा निकालने के बा'द जो बाक़ी बचे उस का तिहाई होगा न कि कुल का तिहाई। **32 :** सगे ख़्वाह सोतेले **33 :** और एक ही भाई हो तो वोह मां का हिस्सा नहीं घटा सकता।

وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ

वसिय्यत के जो कर गया और दैन के[34] तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि इन में कौन

اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱﴾

तुम्हारे ज़ियादा काम आएगा[35] येह हिस्सा बांधा हुवा है **अल्लाह** की त़रफ़ से बेशक **अल्लाह** इल्म वाला हिक्मत वाला है

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ

और तुम्हारी बीबियां जो छोड़ जाएं उस में से तुम्हें आधा है अगर उन की औलाद न हो फिर अगर

لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

उन की औलाद हो तो उन के तर्के में से तुम्हें चौथाई है जो वसिय्यत वोह कर गईं और दैन

اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ

निकाल कर और तुम्हारे तर्के में औ़रतों का चौथाई है[36] अगर तुम्हारे औलाद न हो फिर अगर

كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ

तुम्हारे औलाद हो तो उन का तुम्हारे तर्के में से आठवां[37] जो वसिय्यत तुम कर जाओ

بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ اَوْ

और दैन निकाल कर और अगर किसी ऐसे मर्द या औ़रत का तर्का बटता हो जिस ने मां बाप औलाद कुछ न छोड़े और मां की त़रफ़ से उस का भाई या

اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ

बहन है तो उन में से हर एक को छटा फिर अगर वोह बहन भाई एक से ज़ियादा हों

فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ

तो सब तिहाई में शरीक हैं[38] मय्यित की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिस में उस ने नुक़्सान न

مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ

पहुंचाया हो[39] येह **अल्लाह** का इर्शाद है और **अल्लाह** इल्म वाला हिल्म वाला है येह **अल्लाह** की ह़दें हैं

34 : क्यूं कि वसिय्यत और दैन या'नी क़र्ज़ विरसे की तक़्सीम से मुक़द्दम है और दैन वसिय्यत पर भी मुक़द्दम है। ह़दीस शरीफ़ में है "اِنَّ الدَّيْنَ قَبْلَ الْوَصِيَّة"। 35 : इस लिये हिस्सों की ता'यीन तुम्हारी राय पर नहीं छोड़ी। 36 : ख़्वाह एक बीबी हो या कई, एक होगी तो वोह अकेली चौथाई पाएगी, कई होंगी तो सब उस चौथाई में बराबर शरीक होंगी ख़्वाह बीबी एक हो या कई हों हिस्सा येही रहेगा। 37 : ख़्वाह बीबी एक हो या ज़ियादा। 38 : क्यूं कि वोह मां के रिश्ते की बदौलत मुस्तह़िक़ हुए और मां तिहाई से ज़ियादा नहीं पाती और इसी लिये इन में मर्द का हिस्सा औ़रत से ज़ियादा नहीं है। 39 : अपने वारिसों को तिहाई से ज़ियादा वसिय्यत कर के या किसी वारिस के ह़क़ में वसिय्यत

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ

और जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां

خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ

हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी काम्याबी और जो अल्लाह और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे

وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَٰلِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٤﴾

और उस की कुल हृदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है[40]

وَالَّٰتِي يَأْتِينَ الْفَٰحِشَةَ مِن نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً

और तुम्हारी औ़रतों में जो बदकारी करें उन पर ख़ास अपने में के[41] चार मर्दों की

مِّنكُمْ ۖ فَإِن شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّىٰهُنَّ الْمَوْتُ

गवाही लो फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औ़रतों को घर में बन्द रखो[42] यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले

कर के। **मसाइले फ़राइज़ :**– वारिस कई क़िस्म हैं, **अस्हाबे फ़राइज़ :** येह वोह लोग हैं जिन के लिये हिस्से मुक़र्रर हैं मसलन बेटी एक हो तो आधे माल की मालिक, ज़ियादा हों तो सब के लिये दो तिहाई, पोती और परपोती और इस से नीचे की हर पोती अगर मय्यित के औलाद न हो तो बेटी के हुक्म में है और अगर मय्यित ने एक बेटी छोड़ी हो तो येह उस के साथ छटा पाएगी और अगर मय्यित ने बेटा छोड़ा तो साक़ित हो जाएगी कुछ न पाएगी और अगर मय्यित ने दो बेटियां छोड़ीं तो भी पोती साक़ित होगी लेकिन अगर उस के साथ या उस के नीचे दरजे में कोई लड़का होगा तो वोह उस को अ़सबा बना देगा। सगी बहन मय्यित के बेटा या पोता न छोड़ने की सूरत में बेटियों के हुक्म में है। अ़ल्लाती बहनें जो बाप में शरीक हों और उन की माएं अ़लाहृदा अ़लाहृदा हों वोह हक़ीक़ी बहनों के न होने की सूरत में उन की मिस्ल हैं और दोनों क़िस्म की बहनें या'नी अ़ल्लाती व हक़ीक़ी मय्यित की बेटी या पोती के साथ अ़सबा हो जाती हैं और बेटे और पोते और इस के मा तहत के पोते और बाप के साथ साक़ित और इमाम साहिब के नज़्दीक दादा के साथ भी महरूम हैं। सोतेले भाई बहन जो फ़क़त मां में शरीक हों उन में से एक हो तो छटा और ज़ियादा हों तो तिहाई और उन में मर्द व औ़रत बराबर हिस्सा पाएंगे और बेटे पोते और उस के मा तहत के पोते और बाप दादा के होते साक़ित हो जाएंगे। बाप छटा हिस्सा पाएगा अगर मय्यित ने बेटा या पोता या इस से नीचे के पोते छोड़े हों और अगर मय्यित ने बेटी या पोती, या और नीचे की कोई पोती छोड़ी हो तो बाप छटा और वोह बाक़ी भी पाएगा जो अस्हाबे फ़र्ज़ को दे कर बचे। दादा या'नी बाप का बाप बाप के न होने की सूरत में मिस्ल बाप के है सिवाए इस के कि मां को सुल्स मा बक़ा की त़रफ़ रद न कर सकेगा। मां का छटा हिस्सा है अगर मय्यित ने अपनी औलाद या अपने बेटे या पोते या परपोते की औलाद या बहन भाई में से दो छोड़े हों ख़्वाह वोह भाई सगे हों या सोतेले और अगर इन में से कोई न छोड़ा हो तो मां कुल माल का तिहाई पाएगी और अगर मय्यित ने ज़ौज या ज़ौजा और मां बाप छोड़े हों तो मां को ज़ौज या ज़ौजा का हिस्सा देने के बा'द जो बाक़ी रहे उस का तिहाई मिलेगा और जद्दा का छटा हिस्सा है ख़्वाह वोह मां की त़रफ़ से हो या'नी नानी या बाप की त़रफ़ से हो या'नी दादी एक हो या ज़ियादा हों और क़रीब वाली दूर वाली के लिये हाजिब हो जाती है और मां हर एक जद्दा को महजूब करती है और बाप की त़रफ़ की जद्दात बाप के होने से महजूब होती हैं इस सूरत में कुछ न मिलेगा। ज़ौज चहारुम पाएगा अगर मय्यित ने अपनी या अपने बेटे पोते परपोते वग़ैरा की औलाद छोड़ी हो और अगर इस क़िस्म की औलाद न छोड़ी हो तो शोहर निस्फ़ पाएगा। ज़ौजा मय्यित की और उस के बेटे पोते वग़ैरा की औलाद होने की सूरत में आठवां हिस्सा पाएगी और न होने की सूरत में चौथाई। **अ़सबात :** वोह वारिस हैं जिन के लिये कोई हिस्सा मुअ़य्यन नहीं अस्हाबे फ़र्ज़ से जो बाक़ी बचता है वोह पाते हैं, इन में सब से औला बेटा है फिर उस का बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर दादा फिर आबाई सिल्सिले में जहां तक कोई पाया जाए, फिर हक़ीक़ी भाई, फिर सोतेला या'नी बाप शरीक भाई फिर सगे भाई का बेटा फिर बाप शरीक भाई का बेटा, फिर चचा फिर बाप के चचा फिर दादा के चचा फिर आज़ाद करने वाला फिर उस के अ़सबात तरतीब वार और जिन औ़रतों का हिस्सा निस्फ़ या दो तिहाई है वोह अपने भाइयों के साथ अ़सबा हो जाती हैं और जो ऐसी न हों वोह नहीं। **ज़विल अरहाम :** अस्हाबे फ़र्ज़ और अ़सबात के सिवा जो अक़ारिब हैं वोह ज़विल अरहाम में दाख़िल हैं और इन की तरतीब अ़सबात की मिस्ल है। **40 :** क्यूं कि कुल हृदों से तजावुज़ करने वाला काफ़िर है इस लिये कि मोमिन कैसा भी गुनहगार हो ईमान की हृद से तो न गुज़रेगा। **41 :** या'नी मुसल्मानों में के **42 :** कि वोह बदकारी न

اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿۱۵﴾ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ

या **अल्लाह** उन की कुछ राह निकाले[43] और तुम में जो मर्द औ़रत ऐसा काम करें उन को ईज़ा दो[44]

فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾

फिर अगर वोह तौबा कर लें और नेक हो जाएं तो उन का पीछा छोड़ दो बेशक **अल्लाह** बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान है[45]

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ

वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में

مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾

तौबा कर लें[46] ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ

और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं[47] यहां तक कि जब उन में किसी को

الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ

मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की[48] और न उन की जो काफ़िर मरें उन के लिये

اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ

हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[49] ऐ ईमान वालो तुम्हें ह़लाल नहीं कि

تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ

औ़रतों के वारिस बन जाओ ज़बर दस्ती[50] और औ़रतों को रोको नहीं इस निय्यत से कि जो महर उन को दिया था उस में से कुछ ले लो[51]

करने पाएं **43 :** या'नी ह़द मुक़र्रर फ़रमाए या तौबा और निकाह़ की तौफ़ीक़ दे। जो मुफ़स्सिरीन इस आयत में "اَلْفَاحِشَةَ" (बदकारी) से ज़िना मुराद लेते हैं वोह कहते हैं कि ह़ब्स (औ़रतों को घर में क़ैद रखने) का हुक्म हुदूद नाज़िल होने से क़ब्ल था, हुदूद के साथ मन्सूख़ किया गया। (خازن وجلالین واحمدی) **44 :** झिड़को घुड़को बुरा कहो शर्म दिलाओ जूतियां मारो। (جلالین ومدارک وخازن وغیرہ) **45 :** ह़सन का क़ौल है कि ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा मुक़र्रर की गई फिर ह़ब्स फिर कोड़े मारना या संगसार करना। इब्ने बह़्र का क़ौल है कि पहली आयत "وَالّٰتِیْ یَاْتِیْنَ" उन औ़रतों के बाब में है जो औ़रतों के साथ (ब त़रीक़े मुसाह़क़त) बदकारी करती हैं और दूसरी आयत "وَالَّذٰنِ" लिवात़त करने वालों के ह़क़ में है और ज़ानी और ज़ानिया का हुक्म सूरए नूर में बयान फ़रमाया गया, इस तक़्दीर पर येह आयतें ग़ैर मन्सूख़ हैं और इन में इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْه के लिये दलील ज़ाहिर है इस पर जो वोह फ़रमाते हैं कि लिवात़त में ता'ज़ीर है ह़द नहीं। **46 :** ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि जो तौबा मौत से पहले हो वोह क़रीब है। **47 :** और तौबा में ताख़ीर करते जाते हैं। **48 :** क़बूले तौबा का वा'दा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वोह ऐसे लोगों के लिये नहीं है। **अल्लाह** मालिक है जो चाहे करे उन की तौबा क़बूल करे या न करे बख़्शे या अ़ज़ाब फ़रमाए उस की मरज़ी। (احمدی) **49 :** इस से मा'लूम हुवा कि वक़्ते मौत काफ़िर की तौबा और उस का ईमान मक़्बूल नहीं। **50 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग माल की त़रह़ अपने अक़ारिब की बीबियों के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो बे महर उन्हें अपनी ज़ौजिय्यत में रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और ख़ुद महर ले लेते या उन्हें क़ैद कर रखते कि जो विरसा उन्हों ने पाया है वोह दे कर रिहाई ह़ासिल करें या मर जाएं तो येह उन के वारिस हो जाएं, ग़रज़ वोह औ़रतें बिल्कुल उन के हाथ में मजबूर होती थीं और अपने इख़्तियार से कुछ भी

اِلَّآ اَنۡ يَّاۡتِيۡنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوۡهُنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ۚ فَاِنۡ

मगर इस सूरत में कि सरीह़ बे ह़याई का काम करें[52] और उन से अच्छा बरताव करो[53] फिर अगर

كَرِهۡتُمُوۡهُنَّ فَعَسٰٓى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـًٔـا وَّيَجۡعَلَ اللّٰهُ فِيۡهِ خَيۡرًا

वोह तुम्हें पसन्द न आएं[54] तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द हो और अल्लाह उस में बहुत भलाई

كَثِيۡرًا ﴿۱۹﴾ وَاِنۡ اَرَدۡتُّمُ اسۡتِبۡدَالَ زَوۡجٍ مَّكَانَ زَوۡجٍ ۙ وَّاٰتَيۡتُمۡ

रखे[55] और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो[56] और उसे ढेरों

اِحۡدٰٮهُنَّ قِنۡطَارًا فَلَا تَاۡخُذُوۡا مِنۡهُ شَيۡـًٔـا ؕ اَتَاۡخُذُوۡنَهٗ بُهۡتَانًا وَّاِثۡمًا

माल दे चुके हो[57] तो उस में से कुछ वापस न लो[58] क्या उसे वापस लोगे झूट बांध कर और खुले

مُّبِيۡنًا ﴿۲۰﴾ وَكَيۡفَ تَاۡخُذُوۡنَهٗ وَقَدۡ اَفۡضٰى بَعۡضُكُمۡ اِلٰى بَعۡضٍ وَّاَخَذۡنَ

गुनाह से[59] और क्यूंकर उसे वापस लोगे ह़ालां कि तुम में एक दूसरे के सामने बे पर्दा हो लिया और वोह तुम

مِنۡكُمۡ مِّيۡثَاقًا غَلِيۡظًا ﴿۲۱﴾ وَلَا تَنۡكِحُوۡا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمۡ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا

से गाढ़ा अ़ह्द ले चुकीं[60] और बाप दादा की मन्कूह़ा से निकाह़ न करो[61] मगर जो

قَدۡ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقۡتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيۡلًا ﴿۲۲﴾ ع حُرِّمَتۡ

हो गुज़रा वोह बेशक बे ह़याई[62] और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह[63] ह़राम हुईं

न कर सकती थीं इस रस्म को मिटाने के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई। **51 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : येह उस के मुतअ़ल्लिक़ है जो अपनी बीबी से नफ़रत रखता हो और इस लिये बद सुलूकी करता हो कि औ़रत परेशान हो कर महर वापस कर दे या छोड़ दे इस की अल्लाह तआ़ला ने मुमानअ़त फ़रमाई। एक क़ौल येह है कि लोग औ़रत को त़लाक़ देते फिर रज्अ़त करते फिर त़लाक़ देते इस त़रह़ उस को मुअ़ल्लक़ रखते थे कि न वोह उन के पास आराम पा सकती न दूसरी जगह ठिकाना कर सकती इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। एक क़ौल येह है कि मय्यित के औलिया को ख़ित़ाब है कि वोह अपने मूरिस की बीबी को न रोकें। **52 :** शोहर की ना फ़रमानी या उस की या उस के घर वालों की ईज़ा व बद ज़बानी या ह़राम कारी ऐसी कोई ह़ालत हो तो ख़ुलअ़ चाहने में मुज़ायक़ा नहीं। **53 :** खिलाने पहनाने में बातचीत में और ज़ौजिय्यत के उमूर में **54 :** बद ख़ुल्क़ी या सूरत ना पसन्द होने की वज्ह से तो सब्र करो और जुदाई मत चाहो। **55 :** वलदे सालेह़ वग़ैरा। **56 :** या'नी एक को त़लाक़ दे कर दूसरी से निकाह़ करना। **57 :** इस आयत से गिरां महर मुक़र्रर करने के जवाज़ पर दलील लाई गई है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया कि औ़रतों के महर गिरां न करो। एक औ़रत ने येह आयत पढ़ कर कहा कि ऐ इब्ने ख़त़्ताब ! अल्लाह हमें देता है और तुम मन्अ़ करते हो, इस पर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुझ से हर शख़्स ज़ियादा समझदार है जो चाहो मुक़र्रर करो, سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! ख़लीफ़ए रसूल की शाने इन्साफ़ और नफ़्स शरीफ़ की पाकी رَزَقَنَا اللّٰہُ تَعَالٰی اِتِّبَاعَہٗ۔ اٰمین। **58 :** क्यूं कि जुदाई तुम्हारी त़रफ़ से है। **59 :** येह अहले जाहिलिय्यत के उस फ़े'ल का रद है जब उन्हें कोई दूसरी औ़रत पसन्द आती तो वोह अपनी बीबी पर तोहमत लगाते ताकि वोह इस से परेशान हो कर जो कुछ ले चुकी है वापस दे दे, इस त़रीक़े को इस आयत में मन्अ़ फ़रमाया और झूट और गुनाह बताया। **60 :** वोह अ़ह्द अल्लाह तआ़ला का येह इर्शाद है "فَاِمۡسَاكٌۢ بِمَعۡرُوۡفٍ اَوۡ تَسۡرِيۡحٌۢ بِاِحۡسَانٍ"। **मस्अला :** येह आयत दलील है इस पर कि ख़ल्वते सह़ीह़ा से महर मुअक्कद हो जाता है। **61 :** जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में रवाज था कि अपनी मां के सिवा बाप के बा'द उस की दूसरी औ़रत को बेटा बियाह लेता था। **62 :** क्यूं कि बाप की बीबी ब मन्ज़िलए मां के है, कहा गया है निकाह़ से वत़ी मुराद है। इस से साबित होता है कि बाप की मौत़ूअह या'नी जिस से उस ने सोह़बत की हो ख़्वाह निकाह़ कर के या ब त़रीक़े ज़िना या वोह बांदी हो उस का वोह मालिक हो कर इन में से हर सूरत में बेटे का उस से निकाह़ ह़राम है। **63 :** अब इस के बा'द जिस क़दर औ़रतें

عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ

तुम पर तुम्हारी माएं[64] और बेटियां[65] और बहनें और फूफियां और ख़ालाएं और भतीजियां

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِیْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

और भान्जियां[66] और तुम्हारी माएं जिन्हों ने दूध पिलाया[67] और दूध की बहनें

وَاُمَّهٰتُ نِسَآىٕكُمْ وَرَبَآىٕبُكُمُ الّٰتِیْ فِیْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕكُمُ الّٰتِیْ

और औ़रतों की माएं[68] और उन की बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं[69] उन बीबियों से जिन से

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ٘ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ٘

तुम सोहबत कर चुके हो तो फिर अगर तुम ने उन से सोहबत न की हो तो उन की बेटियों में हरज नहीं[70]

وَحَلَآىٕلُ اَبْنَآىٕكُمُ الَّذِیْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ

और तुम्हारी नस्ली बेटों की बीबियें[71] और दो बहनें इकठ्ठी

الْاُخْتَیْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۙ﴿۲۳﴾

करना[72] मगर जो हो गुज़रा बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

हराम हैं उन का बयान फ़रमाया जाता है इन में सात तो नसब से हराम हैं। **64 :** और हर औ़रत जिस की त़रफ़ बाप या मां के ज़रीए़ से नसब रुजूअ़ करता हो या'नी दादियां व नानियां ख़्वाह क़रीब की हों या दूर की सब माएं हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं। **65 :** पोतियां और नवासियां किसी दरजे की हों बेटियों में दाख़िल हैं। **66 :** येह सब सगी हों या सोतेली। इन के बा'द उन औ़रतों का बयान किया जाता है जो सबब से ह़राम हैं। **67 : दूध के रिश्ते :** शीर ख़्वारी की मुद्दत में क़लील दूध पिया जाए या कसीर इस के साथ हुरमत मुतअ़ल्लिक़ होती है। शीर ख़्वारी की मुद्दत ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ عنہ के नज़्दीक तीस माह और साहिबैन के नज़्दीक दो साल हैं। शीर ख़्वारी की मुद्दत के बा'द जो दूध पिया जाए उस से हुरमत मुतअ़ल्लिक़ नहीं होती। **अल्लाह** तआ़ला ने रज़ाअ़त (दूध पिलाने) को नसब के क़ाइम मक़ाम किया है और दूध पिलाने वाली को शीर ख़्वार की मां और उस की लड़की को शीर ख़्वार की बहन फ़रमाया, इसी त़रह़ दूध पिलाई का शोहर शीर ख़्वार का बाप और उस का बाप शीर ख़्वार का दादा और उस की बहन उस की फूफी और उस का हर बच्चा जो दूध पिलाई के सिवा और किसी औ़रत से भी हो ख़्वाह वोह क़ब्ल शीर ख़्वारी के पैदा हुवा या इस के बा'द वोह सब इस के सोतेले भाई बहन हैं और दूध पिलाई की मां शीर ख़्वार की नानी और उस की बहन इस की ख़ाला और उस शोहर से उस के जो बच्चे पैदा हों वोह शीर ख़्वार के रज़ाई भाई बहन और उस शोहर के इ़लावा दूसरे शोहर से जो हों वोह इस के सोतेले भाई बहन। इस में अस्ल येह ह़दीस है कि रज़ाअ़ से वोह रिश्ते ह़राम हो जाते हैं, जो नसब से ह़राम हैं इस लिये शीर ख़्वार पर उस के रज़ाई मां बाप और उन के नसबी व रज़ाई उसूल व फ़ुरूअ़ सब ह़राम हैं। **68 :** यहां से मुहर्रमात बिस्सेहरिय्यह (सुसराली रिश्तेदारी की वज्ह से जो औ़रतें ह़राम हैं उन) का बयान है वोह तीन ज़िक्र फ़रमाई गईं बीबियों की माएं बीबियों की बेटियां और बेटों की बीबियां, बीबियों की माएं सिर्फ़ अ़क्दे निकाह़ से ह़राम हो जाती हैं ख़्वाह वोह बीबियां मदख़ूला हों या ग़ैर मदख़ूला (या'नी उन से हम बिस्तरी हुई हो या न हुई हो)। **69 :** गोद में होना ग़ालिब ह़ाल का बयान है हुरमत के लिये शर्त़ नहीं। **70 :** उन की मांओं से त़लाक़ या मौत वग़ैरा के ज़रीए़ से क़ब्ले सोह़बत जुदाई होने की सूरत में उन के साथ निकाह़ जाइज़ है। **71 :** इस से मुतबन्ना (मुंहबोले बेटे) निकल गए। इन की औ़रतों के साथ निकाह़ जाइज़ है और रज़ाई बेटे की बीबी भी ह़राम है क्यूं कि वोह नसबी के हुक्म में है और पोते परपोते बेटों में दाख़िल हैं। **72 :** येह भी ह़राम है ख़्वाह दोनों बहनों को निकाह़ में जम्अ़ किया जाए या मिल्के यमीन के ज़रीए़ से वत़ी में, और ह़दीस शरीफ़ में फूफी भतीजी और ख़ाला भान्जी का निकाह़ में

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ

और ह़राम हैं शोहर दार औ़रतें मगर काफ़िरों की औ़रतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं[73] येह **अल्लाह** का नविश्ता (मुक़र्रर कर्दा) है तुम पर

وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ

और उन[74] के सिवा जो रहीं वोह तुम्हें ह़लाल हैं कि अपने मालों के इ़वज़ तलाश करो क़ैद लाते[75] न

مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ

पानी गिराते[76] तो जिन औ़रतों को निकाह़ में लाना चाहो उन के बंधे हुए महर उन्हें दो

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और क़रार दाद (तै शुदा) के बा'द अगर तुम्हारे आपस में कुछ रिज़ा मन्दी हो जाए तो इस में गुनाह नहीं[77] बेशक **अल्लाह**

كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝۲۴ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ

इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और तुम में बे मक़्दूरी के बाइ़स जिन के निकाह़ में

الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

आज़ाद औ़रतें ईमान वालियां न हों तो उन से निकाह़ करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क हैं ईमान वाली

जम्अ़ करना भी ह़राम फ़रमाया गया और ज़ाबित़ा येह है कि निकाह़ में हर ऐसी दो औ़रतों का जम्अ़ करना ह़राम है जिन में से हर एक को मर्द फ़र्ज़ करने से दूसरी उस के लिये ह़लाल न हो, जैसे कि फूफी भतीजी, कि अगर फूफी को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो चचा हुवा भतीजी उस पर ह़राम है और अगर भतीजी को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो भतीजा हुवा फूफी इस पर ह़राम है, ह़ुरमत दोनों त़रफ़ है और अगर सिर्फ़ एक त़रफ़ से हो तो जम्अ़ ह़राम न होगी, जैसे कि औ़रत और उस के शोहर की लड़की इन दोनों को जम्अ़ करना ह़लाल है क्यूं कि शोहर की लड़की को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो इस के लिये बाप की बीबी तो ह़राम रहती है। मगर दूसरी त़रफ़ से येह बात नहीं है या'नी शोहर की बीबी को अगर मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो येह अजनबी होगा और कोई रिश्ता ही न रहेगा। **73 :** गिरिफ़्तार हो कर बिग़ैर अपने शोहरों के वोह तुम्हारे लिये बा'दे इस्तिब्रा (या'नी ह़ैज़ आ जाने और बच्चा जनने के बा'द) ह़लाल हैं अगर्चे दारुल ह़र्ब में उन के शोहर मौजूद हों क्यूं कि तबायुने दारैन (मुल्क बदल जाने) की वज्ह से उन की शोहरों से फ़ुरक़त हो चुकी। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया हम ने एक रोज़ बहुत सी क़ैदी औ़रतें पाईं जिन के शोहर दारुल ह़र्ब में मौजूद थे तो हम ने उन से क़ुरबत में तअम्मुल किया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से मस्अला दरयाफ़्त किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **74 :** मुह़र्रमाते मज़्कूरा **75 :** निकाह़ से या मिल्के यमीन से। इस आयत से कई मस्अले साबित हुए। **मस्अला :** निकाह़ में महर ज़रूरी है। **मस्अला :** अगर महर मुअ़य्यन न किया हो जब भी वाजिब होता है। **मस्अला :** महर माल ही होता है न कि ख़िदमत व ता'लीम वग़ैरा जो चीजें माल नहीं हैं। **मस्अला :** इतना क़लील जिस को माल न कहा जाए महर होने की सलाहि़य्यत नहीं रखता। ह़ज़रते जाबिर और ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि महर की अदना मिक़्दार दस दिरहम हैं इस से कम नहीं हो सकता। **76 :** इस से ह़राम कारी मुराद है और इस ता'बीर (मा'ना बयान करने) में तम्बीह है कि ज़ानी मह़ज़ शह्वत रानी करता और मस्ती निकालता है और उस का फ़े'ल ग़रज़े सह़ीह़ और मक़्सदे ह़सन से ख़ाली होता है न औलाद ह़ासिल करना न नस्ल व नसब मह़फ़ूज़ रखना न अपने नफ़्स को ह़राम से बचाना इन में से कोई बात उस को मद्दे नज़र नहीं होती, वोह अपने नुत़्फ़े व माल को ज़ाएअ़ कर के दीनो दुन्या के ख़सारे में गिरिफ़्तार होता है। **77 :** ख़्वाह औ़रत महर मुक़र्रर शुदा से कम कर दे या बिल्कुल बख़्श दे या मर्द मिक़्दार महर की और ज़ियादा कर दे।

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِیْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ

कनीज़ें[78] और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है तुम में एक दूसरे से है तो उन से निकाह़ करो[79]

بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَیْرَ

उन के मालिकों की इजाज़त से[80] और ह़स्बे दस्तूर उन के महर उन्हें दो[81] क़ैद में आतियां न

مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَیْنَ بِفَاحِشَةٍ

मस्ती निकालती और न यार बनाती[82] जब वोह क़ैद में आ जाएं[83] फिर बुरा काम करें

فَعَلَیْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ

तो उन पर उस सज़ा की आधी है जो आज़ाद औ़रतों पर है[84] येह[85] उस के लिये जिसे तुम में से ज़िना का

الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۵﴾ یُرِیْدُ

अन्देशा है और सब्र करना तुम्हारे लिये बेहतर है[86] और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لِیُبَیِّنَ لَكُمْ وَیَهْدِیَكُمْ سُنَنَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَیَتُوْبَ

है कि अपने अह़काम तुम्हारे लिये साफ़ बयान कर दे और तुम्हें अगलों की रविशें (त़ौर त़रीक़े) बतावे[87] और तुम पर अपनी रह़मत से

عَلَیْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۲۶﴾ وَاللّٰهُ یُرِیْدُ اَنْ یَّتُوْبَ عَلَیْكُمْ ۫ وَ

रुजूअ़ फ़रमाए और अल्लाह इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और अल्लाह तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाना चाहता है और

یُرِیْدُ الَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِیْلُوْا مَیْلًا عَظِیْمًا ﴿۲۷﴾ یُرِیْدُ

जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वोह चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ[88] अल्लाह चाहता

78 : या'नी मुसल्मानों की ईमानदार कनीज़ें, क्यूं कि निकाह़ अपनी कनीज़ से नहीं होता वोह बिग़ैर निकाह़ ही मौला के लिये ह़लाल है, मा'ना येह हैं कि जो शख़्स ह़ुर्रए मोमिना से निकाह़ की मक़्दिरत (त़ाक़त) व वुस्अ़त न रखता हो वोह ईमानदार कनीज़ से निकाह़ करे येह बात आ़र की नहीं है। **मस्अला :** जो शख़्स ह़ुर्रा से निकाह़ की वुस्अ़त रखता हो उस को भी मुसल्मान बांदी से निकाह़ करना जाइज़ है, येह मस्अला इस आयत में तो नहीं है मगर ऊपर की आयत "وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ" (और इन ह़राम की गई औ़रतों के सिवा जो रहीं वोह तुम्हें ह़लाल हैं) से साबित है। **मस्अला :** ऐसे ही किताबिया बांदी से भी निकाह़ जाइज़ है और मोमिना के साथ अफ़्ज़ल व मुस्तह़ब है जैसा कि इस आयत से साबित हुवा। **79 :** येह कोई आ़र की बात नहीं, फ़ज़ीलत ईमान से है इसी को काफ़ी समझो। **80** **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बांदी को अपने मौला की इजाज़त के बिग़ैर निकाह़ का ह़क़ नहीं, इसी त़रह़ ग़ुलाम को **81 :** अगर्चे मालिक उन के महर के मौला हैं लेकिन बांदियों को देना मौला ही को देना है क्यूं कि ख़ुद वोह और जो कुछ उन के क़ब्ज़े में हो सब मौला की मिल्क है, या येह मा'ना हैं कि उन के मालिकों की इजाज़त से महर उन्हें दो। **82 :** या'नी अ़लानिया व ख़ुफ़्या किसी त़रह़ बदकारी नहीं करतीं **83 :** और शोहर दार हो जाएं **84 :** जो शोहर दार न हों या'नी पचास ताज़ियाने (कोड़े) क्यूं कि ह़ुर्रा के लिये सो ताज़ियाने हैं और बांदियों को रज्म नहीं किया जाता क्यूं कि "रज्म" क़ाबिले तन्सीफ़ (दो ह़िस्सों में तक़्सीम के क़ाबिल) नहीं है। **85 :** बांदी से निकाह़ करना **86 :** बांदी के साथ निकाह़ करने से क्यूं कि उस से औलाद मम्लूक (ग़ुलाम) पैदा होगी। **87 :** अम्बिया व सालिह़ीन की **88 :** और ह़राम में मुब्तला हो कर उन्हीं की त़रह़ हो जाओ।

اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

है कि तुम पर तख़्फ़ीफ़ (आसानी) करे[89] और आदमी कमज़ोर बनाया गया[90] ऐ ईमान वालो

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً

आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ[91] मगर येह कि कोई सौदा

عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾

तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी का हो[92] और अपनी जानें क़त्ल न करो[93] बेशक **अल्लाह** तुम पर मेह्रबान है

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ

और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अन्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ

अल्लाह को आसान है अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमानअ़त है[94] तो तुम्हारे

عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ

और गुनाह[95] हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह**

اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَ

ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी[96] मर्दों के लिये उन की कमाई से हिस्सा है और

89 : और अपने फ़ज़्ल से अह्काम सह्ल (आसान) करे। **90 :** इस को औ़रतों से और शहवात से सब्र दुश्वार है। ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औ़रतों में भलाई नहीं और उन की त़रफ़ से सब्र भी नहीं हो सकता, नेकों पर वोह ग़ालिब आती हैं, बद उन पर ग़ालिब आ जाते हैं। **91 :** चोरी, ख़ियानत, ग़स्ब, जुवा, सूद जितने ह़राम त़रीक़े हैं सब नाहक़ हैं सब की मुमानअ़त है **92 :** वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है **93 :** ऐसे अफ़्आ़ल इख़्तियार कर के जो दुन्या या आख़िरत में हलाकत का बाइ़स हों, इस में मुसल्मानों को क़त्ल करना भी आ गया और मोमिन का क़त्ल ख़ुद अपना ही क़त्ल है क्यूं कि तमाम मोमिन नफ़्से वाह़िद की त़रह़ हैं। **मस्अला :** इस आयत से ख़ुदकुशी की हुरमत भी साबित हुई और नफ़्स का इत्तिबाअ़ कर के ह़राम में मुब्तला होना भी अपने आप को हलाक करना है। **94 :** और जिन पर वई़द आई या'नी वा'दए अ़ज़ाब दिया गया मिस्ले क़त्ल, ज़िना, चोरी वग़ैरा के। **95 :** सग़ाइर। **मस्अला :** कुफ़्रो शिर्क तो न बख़्शा जाएगा अगर आदमी इसी पर मरा (**अल्लाह** की पनाह) बाक़ी तमाम गुनाह सग़ीरा हों या कबीरा **अल्लाह** की मशिय्यत में हैं चाहे उन पर अ़ज़ाब करे चाहे मुआ़फ़ फ़रमाए। **96 :** ख़्वाह दुन्या की जिहत से या दीन की, कि आपस में ह़सद व बुग़्ज़ न पैदा हो। ह़सद निहायत बुरी सिफ़त है ह़सद वाला दूसरे को अच्छे ह़ाल में देखता है तो अपने लिये उस की ख़्वाहिश करता है और साथ में येह भी चाहता है कि उस का भाई इस ने'मत से मह़रूम हो जाए येह मम्नूअ़ है, बन्दे को चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला की तक़्दीर पर राज़ी रहे, उस ने जिस बन्दे को जो फ़ज़ीलत दी ख़्वाह दौलत व ग़ना की या दीनी मनासिब व मदारिज की, येह उस की ह़िक्मत है। **शाने नुज़ूल :** जब आयते मीरास में "لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ" (बेटों का ह़िस्सा दो बेटियों बराबर है) नाज़िल हुवा और मय्यित के तर्के में मर्द का ह़िस्सा औ़रत से दूना मुक़र्रर किया गया तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आख़िरत में नेकियों का सवाब भी हमें औ़रतों से दूना मिलेगा और औ़रतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अ़ज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने जिस को जो फ़ज़्ल दिया वोह ऐ़न ह़िक्मत है, बन्दे को चाहिये कि वोह उस की क़ज़ा पर राज़ी रहे।

لِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

औरतों के लिये उन की कमाई से हिस्सा[97] और **अल्लाह** से उस का फ़ज़्ल मांगो बेशक **अल्लाह**

بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۳۲﴾ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ

सब कुछ जानता है और हम ने सब के लिये माल के मुस्तहिक़ बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जाएं मां बाप

وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ

और क़राबत वाले और वोह जिन से तुम्हारा हल्फ़ बंध चुका[98] उन्हें उन का हिस्सा दो बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿۳۳﴾ اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا

हर चीज़ **अल्लाह** के सामने है मर्द अफ़्सर हैं औरतों पर[99] इस लिये कि

فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ

अल्लाह ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी[100] और इस लिये कि मर्दों ने उन पर अपने माल ख़र्च किये[101] तो नेक बख़्त औरतें

قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ

अदब वालियां हैं ख़ावन्द के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं[102] जिस त़रह़ **अल्लाह** ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औरतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो

فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ

तो उन्हें समझाओ[103] और उन से अलग सोओ और उन्हें मारो[104] फिर अगर वोह तुम्हारे हुक्म में आ जाएं

97 : हर एक को उस के आ'माल की जज़ा। **शाने नुज़ूल :** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि हम भी अगर मर्द होते तो जिहाद करते और मर्दों की त़रह़ जान फ़िदा करने का सवाबे अ़ज़ीम पाते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तस्कीन दी गई कि मर्द जिहाद से सवाब ह़ासिल कर सकते हैं तो औरतें शोहरों की इत़ाअ़त और पाक दामनी से सवाब ह़ासिल कर सकती हैं। **98 :** इस से अ़क़्दे मुवालात मुराद है, इस की सूरत येह है कि कोई मज्हूलुन्नसब शख़्स (जिस के नसब का कुछ पता न हो वोह) दूसरे से येह कहे कि तू मेरा मौला है मैं मर जाऊं तो तू मेरा वारिस होगा और मैं कोई जिनायत करूं तो तुझे दियत देनी होगी, दूसरा कहे मैं ने क़बूल किया इस सूरत में येह अ़क़्द सह़ीह़ हो जाता है और क़बूल करने वाला वारिस बन जाता है और दियत भी उस पर आ जाती है और दूसरा भी उसी की त़रह़ से मज्हूलुन्नसब हो और ऐसा ही कहे और येह भी क़बूल कर ले तो इन में से हर एक दूसरे का वारिस और उस की दियत का ज़िम्मादार होगा, येह अ़क़्द साबित है, सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم इस के क़ाइल हैं। **99 :** तो औरतों को उन की इत़ाअ़त लाज़िम और मर्दों को ह़क़ है कि वोह औरतों पर रिआ़या की त़रह़ हुक्मरानी करें और उन के मसालेह़ और तदाबीर और तादीब व हिफ़ाज़त की सर अन्जाम देही करें। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ ने अपनी बीबी ह़बीबा को किसी ख़त़ा पर एक त़मांचा मारा, उन के वालिद उन्हें सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए और उन के शोहर की शिकायत की, इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। **100 :** या'नी मर्दों को औरतों पर अ़क़्लो दानाई और जिहाद और नुबुव्वत व ख़िलाफ़त व इमामत व अज़ान व ख़ुत़्बा व जमाअ़त व जुमुआ़ व तक्बीर व तशरीक़ और ह़द व क़िसास की शहादत के और विरसे में दूने हिस्से और ता'सीब और निकाह़ व त़लाक़ के मालिक होने और नसबों के इन की त़रफ़ निस्बत किये जाने और नमाज़ व रोज़े के कामिल त़ौर पर क़ाबिल होने के साथ कि इन के लिये कोई ज़माना ऐसा नहीं है कि नमाज़ व रोज़े के क़ाबिल न हों और दाढ़ियों और इमामों के साथ फ़ज़ीलत दी। **101 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि औरतों के नफ़क़े मर्दों पर वाजिब हैं। **102 :** अपनी इफ़्फ़त और शोहरों के घर, माल और उन के राज़ की **103 :** उन्हें शोहर की ना फ़रमानी और उस के इत़ाअ़त न करने और उस के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ न रखने के नताइज समझाओ जो दुन्या व आख़िरत में पेश आते हैं और **अल्लाह** के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाओ और बताओ कि हमारा तुम पर शरअ़न ह़क़ है और हमारी इत़ाअ़त तुम पर फ़र्ज़ है अगर इस पर भी न मानें **104 :** ज़र्बे ग़ैर शदीद

فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿۳۴﴾ وَ اِنْ خِفْتُمْ

तो उन पर ज़ियादती की कोई राह न चाहो बेशक **अल्लाह** बुलन्द बड़ा है[105] और अगर तुम को मियां बीबी के

شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ

झगड़े का ख़ौफ़ हो[106] तो एक पन्च मर्द वालों की त़रफ़ से भेजो और एक पन्च औ़रत वालों की त़रफ़ से[107] येह दोनों

يُّرِيْدَاۤ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾

अगर सुल्ह़ कराना चाहेंगे तो **अल्लाह** उन में मेल (मुवाफ़क़त पैदा) कर देगा बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है[108]

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَ لَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِي

और **अल्लाह** की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ[109] और मां बाप से भलाई करो[110] और

الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ الْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَ الْجَارِ الْجُنُبِ

रिश्तेदारों[111] और यतीमों और मोह़ताजों[112] और पास के हमसाए और दूर के हमसाए[113]

وَ الصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और करवट के साथी[114] और राहगीर[115] और अपनी बांदी ग़ुलाम से[116] बेशक **अल्लाह**

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ﴿۳۶﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ

को ख़ुश (पसन्द) नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला[117] जो आप बुख़्ल करें और औरों

105 : और तुम गुनाह करते हो फिर भी वोह तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाता है तो तुम्हारी ज़ेरे दस्त औ़रतें अगर क़ुसूर करने के बा'द मुआ़फ़ी चाहें तो तुम्हें ब त़रीक़े औला मुआ़फ़ करना चाहिये और **अल्लाह** की क़ुदरत व बरतरी का लिह़ाज़ रख कर ज़ुल्म से मुज्तनिब (बचते) रहना चाहिये। **106 :** और तुम देखो कि समझाना, अ़लाह़दा सोना, मारना कुछ भी कारआमद न हुवा और दोनों की ना इत्तिफ़ाक़ी रफ़्अ़ न हुई। **107 :** क्यूं कि अक़ारिब अपने रिश्तेदारों के ख़ानगी ह़ालात से वाक़िफ़ होते हैं और ज़ौजैन के दरमियान मुवाफ़क़त की ख़्वाहिश भी रखते हैं और फ़रीक़ैन को उन पर इत्मीनान भी होता है और उन से अपने दिल की बात कहने में तअम्मुल भी नहीं होता है। **108 :** जानता है कि ज़ौजैन में ज़ालिम कौन है। **मस्अला :** पन्चों (किसी भी बिरादरी में फ़ैसले के लिये मुक़र्रर कर्दा अफ़राद) को ज़ौजैन में तफ़रीक़ कर देने का इख़्तियार नहीं। **109 :** न जानदार को न बेजान को न उस की रबूबिय्यत में न उस की इ़बादत में। **110 :** अदबो ता'ज़ीम के साथ और उन की ख़िदमत में मुस्तइ़द रहना और उन पर ख़र्च करने में कमी न करो। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तीन मरतबा फ़रमाया : उस की नाक ख़ाक आलूद हो। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : किस की **या रसूलल्लाह**? फ़रमाया : जिस ने बूढ़े मां बाप पाए या उन में से एक को पाया और जन्नती न हो गया। **111 :** ह़दीस शरीफ़ में है : रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक करने वालों की उ़म्र दराज़ और रिज़्क़ वसीअ़ होता है। (بخاری و مسلم) **112 ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं और यतीम की सर परस्ती करने वाला ऐसे क़रीब होंगे जैसे अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली। (بخاری شریف) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेवा और मिस्कीन की इमदाद व ख़बर गीरी करने वाला मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के मिस्ल है। **113 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिब्रील मुझे हमेशा हमसायों के साथ एह़सान करने की ताकीद करते रहे इस ह़द तक कि गुमान होता था कि इन को वारिस क़रार दें। (بخاری و مسلم) **114 :** या'नी बीबी या जो सोह़बत में रहे या रफ़ीक़े सफ़र हो या साथ पढ़े या मजलिस व मस्जिद में बराबर बैठे **115 :** और मुसाफ़िर व मेहमान। **ह़दीस :** जो **अल्लाह** और रोज़े क़ियामत पर ईमान रखे उसे चाहिये कि मेहमान का इकराम करे। (بخاری و مسلم) **116 :** कि उन्हें त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ न दो और सख़्त कलामी न करो और खाना कपड़ा ब क़दरे ज़रूरत दो। **ह़दीस :** रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नत में बद ख़ुल्क़ दाख़िल न होगा। (ترمذی) **117 :** मुतकब्बिर ख़ुदबीं जो रिश्तेदारों और हमसायों को ज़लील समझे।

اَلنَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا

से बुख़्ल के लिये कहें[118] और अल्लाह ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं[119] और काफ़िरों के लिये

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ﴿۳۷﴾ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ

हम ने ज़िल्लत का अज़ाब तय्यार कर रखा है और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं[120]

وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ

और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न क़ियामत पर और जिस का मुसाहिब (साथी व मुशीर) शैतान हुवा[121]

قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

तो कितना बुरा मुसाहिब है और उन का क्या नुक़्सान था अगर ईमान लाते अल्लाह और क़ियामत पर

وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ

और अल्लाह के दिये में से उस की राह में ख़र्च करते[122] और अल्लाह उन को जानता है अल्लाह एक ज़र्रा भर

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا

ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब

عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ

देता है तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं[123] और ऐ महबूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान

شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾ؕ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى

बना कर लाएं[124] उस दिन तमन्ना करेंगे वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की ना फ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में

وقف النبي عليه السلام

118 : बुख़्ल येह है कि खुद खाए दूसरे को न दे। "शुह" येह है कि न खाए न खिलाए, **सख़ा** येह है कि खुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए, **जूद** येह है कि आप न खाए दूसरे को खिलाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आलम صلى الله عليه وسلم की सिफ़त बयान करने में बुख़्ल करते और छुपाते थे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इल्म को छुपाना मज़्मूम है। **119 :** हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह को पसन्द है कि बन्दे पर उस की ने'मत ज़ाहिर हो। **मस्अला : अल्लाह** की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी हैसिय्यत के लाइक़ जाइज़ लिबासों में बेहतर पहनना मुस्तहब है। **120 :** बुख़्ल के बा'द सर्फ़े बे जा की बुराई बयान फ़रमाई कि जो लोग महूज़ नुमूदो नुमाइश और नाम आवरी के लिये ख़र्च करते हैं और रिज़ाए इलाही उन्हें मक़्सूद नहीं होती जैसे कि मुशिरकीन व मुनाफ़िक़ीन, येह भी उन्हीं के हुक्म में हैं जिन का हुक्म ऊपर गुज़र गया। **121 :** दुन्या व आख़िरत में। दुन्या में तो इस तरह कि वोह शैतानी काम कर के उस को खुश करता रहा और आख़िरत में इस तरह कि हर काफ़िर एक शैतान के साथ आतिशी ज़न्जीर में जकड़ा हुवा होगा (خازن) **122 :** इस में सरासर उन का नफ़्अ ही था। **123 :** उस नबी को और वोह अपनी उम्मत के ईमान व कुफ़्र व निफ़ाक़ और तमाम अफ़्आल पर गवाही दें क्यूं कि अम्बिया अपनी उम्मतों के अफ़्आल से बा ख़बर होते हैं। **124 :** कि तुम नबिय्युल अम्बिया और सारा आलम तुम्हारी उम्मत।

بِهِمُ الْاَرْضُ ۭ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाए और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे[125] ऐ ईमान वालो

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا

नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ[126] जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और न नापाकी की

اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ

हालत में बे नहाए मगर मुसाफ़िरी में[127] और अगर तुम बीमार हो[128] या सफ़र में या तुम में

اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا

से कोई क़ज़ाए हाजत से आया[129] या तुम ने औरतों को छुवा[130] और पानी न पाया[131] तो पाक मिट्टी

صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا

से तयम्मुम करो[132] तो अपने मुंह और हाथों का मस्ह करो[133] बेशक अल्लाह मुआफ़ फ़रमाने वाला

125 : क्यूं कि जब वोह अपनी ख़ता से मुकरेंगे और क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे और हम ने ख़ता न की थी तो उन के मूंहों पर मोहर लगा दी जाएगी और उन के आ'ज़ा व जवारेह को गोयाई दी जाएगी, वोह उन के ख़िलाफ़ शहादत देंगे। **126 शाने नुज़ूल :** हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने एक जमाअ़ते सहाबा की दा'वत की, उस में खाने के बा'द शराब पेश की गई, बा'ज़ों ने पी क्यूं कि उस वक़्त तक शराब हराम न हुई थी, फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, इमाम नशे में "قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ وَاَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ" पढ़ गए और दोनों जगह "لَا" तर्क कर दिया और नशे में ख़बर न हुई और मा'ना फ़ासिद हो गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें नशे की हालत में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया तो मुसल्मानों ने नमाज़ के अवक़ात में शराब तर्क कर दी इस के बा'द शराब बिल्कुल हराम कर दी गई। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि आदमी नशे की हालत में कलिमए कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर नहीं होता इस लिये कि "قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" में दोनों जगह "لَا" का तर्क कुफ़्र है, लेकिन इस हालत में हुज़ूर ने इस पर कुफ़्र का हुक्म न फ़रमाया बल्कि क़ुरआने पाक में उन को "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" से ख़िताब फ़रमाया गया। **127 :** जब कि पानी न पाओ तयम्मुम कर लो **128 :** और पानी का इस्ति'माल ज़रर करता हो **129 :** येह किनाया है बे वुज़ू होने से **130 :** या'नी जिमाअ़ किया **131 :** उस के इस्ति'माल पर क़ादिर न होने, ख़्वाह पानी मौजूद न होने के बाइस या दूर होने के सबब या उस के हासिल करने का आला न होने के सबब या सांप, दरिन्दा, दुश्मन वग़ैरा कोई मानेअ़ होने के बाइस **132 :** येह हुक्म मरीज़ों, मुसाफ़िरों, जनाबत और हदस वालों को शामिल है जो पानी न पाएं या उस के इस्ति'माल से आ़जिज़ हों। (مدارک) **मस्अला :** हैज़ो निफ़ास से तहारत के लिये भी पानी से आ़जिज़ होने की सूरत में तयम्मुम जाइज़ है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है। **133 तरीक़ए तयम्मुम :** तयम्मुम करने वाला दिल से पाकी हासिल करने की निय्यत करे, तयम्मुम में निय्यत बिल इज्माअ़ शर्त है क्यूं कि वोह नस्स से साबित है। जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे गर्द, रेता, पथ्थर इन सब पर तयम्मुम जाइज़ है ख़्वाह पथ्थर पर ग़ुबार भी न हो लेकिन पाक होना इन चीज़ों का शर्त है। तयम्मुम में दो ज़र्बें हैं : एक मरतबा हाथ मार कर चेहरे पर फेर लें दूसरी मरतबा हाथों पर। **मस्अला :** पानी के साथ तहारत अस्ल है और तयम्मुम पानी से आ़जिज़ होने की हालत में इस का पूरा पूरा क़ाइम मक़ाम है, जिस तरह हदस पानी से ज़ाइल होता है इसी तरह तयम्मुम से, हत्ता कि एक तयम्मुम से बहुत से फ़राइज़ो नवाफ़िल पढ़े जा सकते हैं। **मस्अला :** तयम्मुम करने वाले के पीछे ग़ुस्ल और वुज़ू करने वाले की इक़्तिदा सहीह है। **शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए बनी अल मुस्तलिक़ में जब लश्करे इस्लाम शब को एक बयाबान में उतरा जहां पानी न था और सुब्ह वहां से कूच करने का इरादा था वहां उम्मुल मुअमिनीन हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا का हार गुम हो गया, उस की तलाश के लिये सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने वहां इक़ामत फ़रमाई, सुब्ह हुई तो पानी न था, अल्लाह तआला ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई। उसैद बिन हुज़ैर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कहा कि ऐ आले अबू बक्र ! येह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है या'नी तुम्हारी बरकत से मुसल्मानों को बहुत आसानियां हुईं और बहुत फ़वाइद पहुंचे, फिर ऊंट उठाया गया तो उस के नीचे हार मिला। हार गुम होने और सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के न बताने में बहुत हिक्मतें हैं, हज़रते सिद्दीक़ा के हार की वज्ह से क़ियाम इन की फ़ज़ीलतो मन्ज़िलत का मुश्इर (ज़ाहिर करने वाला) है, सहाबा का जुस्तजू फ़रमाना, इस में हिदायत है कि हुज़ूर की अज़्वाज की ख़िदमत मोमिनीन की सआदत है और फिर हुक्मे तयम्मुम होना मा'लूम होता है कि हुज़ूर की अज़्वाज की ख़िदमत का ऐसा सिला है जिस से क़ियामत तक मुसल्मान मुन्तफ़ेअ़ होते रहेंगे, سُبْحٰنَ اللّٰه।

غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ یَشْتَرُوْنَ

बख़्शने वाला है क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन को किताब से एक हिस्सा मिला[134] गुमराही मोल

الضَّلٰلَةَ وَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِیْلَ ﴿٤٤﴾ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآىٕكُمْ

लेते हैं[135] और चाहते हैं[136] कि तुम भी राह से बहक जाओ और अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को[137]

وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَلِیًّا ٘ۗ وَّ كَفٰى بِاللّٰهِ نَصِیْرًا ﴿٤٥﴾ مِنَ الَّذِیْنَ هَادُوْا

और अल्लाह काफ़ी है वाली[138] और अल्लाह काफ़ी है मददगार कुछ यहूदी कलामों (इर्शादाते ख़ुदावन्दी)

یُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ یَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَ عَصَیْنَا وَ اسْمَعْ

को उन की जगह से फेरते हैं[139] और[140] कहते हैं हम ने सुना और न माना और[141] सुनिये

غَیْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَیًّۢا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَ طَعْنًا فِی الدِّیْنِ ؕ وَ لَوْ اَنَّهُمْ

आप सुनाए न जाएं[142] और राइना कहते हैं[143] ज़बानें फेर कर[144] और दीन में ता'ने के लिये[145] और अगर वोह[146]

قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا وَ اسْمَعْ وَ انْظُرْنَا لَكَانَ خَیْرًا لَّهُمْ وَ اَقْوَمَ ۙ

कहते कि हम ने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हम पर नज़र फ़रमाएं तो उन के लिये भलाई और रास्ती में ज़ियादा होता

وَ لٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا یُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿٤٦﴾ یٰۤاَیُّهَا

लेकिन उन पर तो अल्लाह ने ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो यक़ीन नहीं रखते मगर थोड़ा[147] ऐ

الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ

किताब वालो ईमान लाओ उस पर जो हम ने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब[148] की तस्दीक़ फ़रमाता क़ब्ल इस के

134 : वोह येह कि तौरैत से उन्हों ने सिर्फ़ हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत को पहचाना और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का जो उस में बयान था उस हिस्से से वोह महरूम रहे और आप की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत रिफ़ाआ बिन ज़ैद और मालिक बिन दुख़्शुम यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई, येह दोनों जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बात करते तो ज़बान टेढ़ी कर के बोलते **135 :** हुज़ूर की नुबुव्वत का इन्कार कर के। **136 :** ऐ मुसल्मानो ! **137 :** और उस ने तुम्हें भी उन की अदावत पर ख़बरदार कर दिया तो चाहिये कि उन से बचते रहो। **138 :** और जिस का कारसाज़ अल्लाह हो उसे क्या अन्देशा। **139 :** जो तौरैत शरीफ़ में अल्लाह तआला ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त में फ़रमाए **140 :** जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उन्हें कुछ हुक्म फ़रमाते हैं तो **141 :** कहते हैं : **142 :** येह कलिमा ज़ू जिहतैन है (या'नी) मद्ह व ज़म के दोनों पहलू रखता है। **मद्ह** का पहलू तो येह है कि कोई ना गवार बात आप के सुनने में न आए और **ज़म** का पहलू येह कि आप को सुनना नसीब न हो। **143 :** बा वुजूदे कि इस कलिमे के साथ ख़िताब की मुमानअत की गई है, क्यूं कि येह उन की ज़बान में ख़राब मा'ना रखता है। **144 :** हक़ से बातिल की तरफ़। **145 :** कि वोह अपने रफ़ीक़ों से कहते थे कि हम हुज़ूर की बदगोई करते हैं अगर आप नबी होते तो आप इस को जान लेते अल्लाह तआला ने उन के ख़ुब्से ज़माइर को ज़ाहिर फ़रमा दिया। **146 :** बजाए इन कलिमात के अहले अदब के तरीक़े पर **147 :** इतना कि अल्लाह ने उन्हें पैदा किया और रोज़ी दी और इस क़दर काफ़ी नहीं जब तक कि तमाम ईमानिय्यात को न मानें और सब की तस्दीक़ न करें। **148 :** तौरैत।

اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ

कि हम बिगाड़ दें कुछ मूंहों को[149] तो उन्हें फेर दें उन की पीठ की त़रफ़ या उन्हें ला'नत करें जैसी ला'नत की

اَصْحٰبَ السَّبْتِؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۴۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ

हफ़्ते वालों पर[150] और ख़ुदा का हुक्म हो कर रहे बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि

يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है[151] और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया

فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿۴۸﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْؕ

उस ने बड़े गुनाह का तूफ़ान बांधा क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ख़ुद अपनी सुथराई बयान करते हैं[152]

بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۴۹﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ

बल्कि अल्लाह जिसे चाहे सुथरा करे और उन पर ज़ुल्म न होगा दानए ख़ुरमा के डोरे बराबर[153] देखो कैसा

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۰﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى

अल्लाह पर झूट बांध रहे हैं[154] और येह काफ़ी है सरीह़ (खुला) गुनाह क्या तुम ने वोह न देखे

الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला ईमान लाते हैं बुत और शैतान पर

149 : आंख, नाक, अब्रू वग़ैरा नक़्शा मिटा कर **150 :** इन दोनों बातों में से एक ज़रूर लाज़िम है और ला'नत तो उन पर ऐसी पड़ी कि दुन्या उन्हें मल्ऊ़न कहती है, यहां मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : बा'ज़ इस वईद का वुक़ूअ़ दुन्या में बताते हैं, बा'ज़ आख़िरत में, बा'ज़ कहते हैं कि ला'नत हो चुकी और वईद वाक़ेअ़ हो गई, बा'ज़ कहते हैं : अभी इन्तिज़ार है, बा'ज़ का क़ौल है कि येह वईद उस सूरत में थी जब कि यहूद में से कोई ईमान न लाता और चूंकि बहुत से यहूद ईमान ले आए इस लिये शर्त़ नहीं पाई गई और वईद उठ गई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जो आ'ज़म उ़लमाए यहूद से हैं उन्हों ने मुल्के शाम से वापस आते हुए राह में येह आयत सुनी और अपने घर पहुंचने से पहले इस्लाम ला कर सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** मैं नहीं ख़याल करता था कि मैं अपना मुंह पीठ की त़रफ़ फिर जाने से पहले और चेहरे का नक़्शा मिट जाने से क़ब्ल आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो सकूंगा या'नी इस ख़ौफ़ से ईमान लाने में जल्दी की क्यूं कि तौरैत शरीफ़ से उन्हें आप के रसूले बरह़क़ होने का यक़ीनी इ़ल्म था, इसी ख़ौफ़ से ह़ज़रते का'ब अह़बार जो उ़लमाए यहूद में बड़ी मन्ज़िलत रखते थे ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ से येह आयत सुन कर मुसल्मान हो गए। **151 :** मा'ना येह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उस की बख़्शिश नहीं इस के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है और जिस ने कुफ़्र न किया हो वोह ख़्वाह कितना ही गुनाहगार, मुरतकिबे कबाइर हो और बे तौबा भी मर जाए तो उस के लिये ख़ुलूद नहीं उस की मग़्फ़िरत अल्लाह की मशिय्यत में है चाहे मुआ़फ़ फ़रमाए या उस के गुनाहों पर अ़ज़ाब करे फिर अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। इस आयत में यहूद को ईमान की तरग़ीब है और इस पर भी दलालत है कि यहूद पर उ़र्फ़े शरअ़ में मुश्रिक का इत़्लाक़ दुरुस्त है। **152 :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपने आप को अल्लाह का बेटा और उस का प्यारा बताते थे और कहते थे कि यहूदो नसारा के सिवा कोई जन्नत में न दाख़िल होगा। इस आयत में बताया गया कि इन्सान का दीनदारी और सलाह़ व तक़्वा और क़ुर्ब व मक़्बूलिय्यत का मुद्दई होना और अपने मुंह से अपनी ता'रीफ़ करना काम नहीं आता। **153 :** या'नी बिल्कुल ज़ुल्म न होगा वोही सज़ा दी जाएगी जिस के वोह मुस्तह़िक़ हैं। **154 :** अपने आप को बे गुनाह और मक़्बूले बारगाह बता कर।

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और काफ़िरों को कहते हैं कि येह मुसल्मानों से ज़ियादा राह

سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ

पर हैं येह हैं जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और जिसे ख़ुदा ला'नत करे तो हरगिज़

تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ

उस का कोई यार न पाएगा[155] क्या मुल्क में उन का कुछ हिस्सा है[156] ऐसा हो तो लोगों

النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

को तिल भर न दें या लोगों से ह़सद करते हैं[157] उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया[158]

فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

तो हम ने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिक्मत अ़त़ा फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया[159]

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾

तो उन में कोई उस पर ईमान लाया[160] और किसी ने उस से मुंह फेरा[161] और दोज़ख़ काफ़ी है भड़क्ती आग[162]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ

जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया अ़न्क़रीब हम उन को आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उन की खालें

جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें बेशक **अल्लाह**

155 शाने नुज़ूल : येह आयत का'ब बिन अशरफ़ वग़ैरा उ़लमाए यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सत्तर सुवारों की जम्इय्यत ले कर क़ुरैश से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जंग करने पर ह़ल्फ़ लेने पहुंचे, क़ुरैश ने इन से कहा चूंकि तुम किताबी हो इस लिये तुम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ ज़ियादा क़ुर्ब रखते हो हम कैसे इत़्मीनान करें कि तुम हम से फ़रेब के साथ नहीं मिल रहे हो अगर इत़्मीनान दिलाना हो तो हमारे बुतों को सज्दा करो तो उन्हों ने शैत़ान की इत़ाअ़त कर के बुतों को सज्दा किया, फिर अबू सुफ़्यान ने कहा कि हम ठीक राह पर हैं या मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ? का'ब बिन अशरफ़ ने कहा : तुम ही ठीक राह पर हो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर ला'नत फ़रमाई कि उन्हों ने ह़ुज़ूर की अ़दावत में मुश्रिकीन के बुतों तक को पूजा। **156 :** यहूद कहते थे कि हम मुल्क व नुबुव्वत के ज़ियादा ह़क़दार हैं तो हम कैसे अ़रबों का इत्तिबाअ़ करें ! **अल्लाह** तआ़ला ने इन के इस दा'वे को झुटला दिया कि इन का मुल्क में ह़िस्सा ही क्या है और अगर बिलफ़र्ज़ कुछ होता तो इन का बुख़्ल इस दरजे का है कि **157 :** नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और अहले ईमान से **158 :** नुबुव्वत व नुसरत व ग़लबा व इ़ज़्ज़त वग़ैरा ने'मतें। **159 :** जैसा कि ह़ज़रते यूसुफ़ और ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِمُ السَّلَام को, तो फिर अगर अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर करम किया तो इस से क्यूं जलते और ह़सद करते हो। **160 :** जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के साथ वाले सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **161 :** और ईमान से मह़रूम रहा **162 :** उस के लिये जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान न लाए।

عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ

ग़ालिब हिक्मत वाला है और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये अन्क़रीब हम उन्हें

جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِیْهَاۤ

बाग़ों में ले जाएंगे जिन के नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे उन के लिये वहां

اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ

सुथरी बीबियां हैं[163] और हम उन्हें वहां दाख़िल करेंगे जहां साया ही साया होगा[164] बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि

تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا

अमानतें जिन की हैं उन्हीं के सिपुर्द करो[165] और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के

بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾

साथ फ़ैसला करो[166] बेशक **अल्लाह** तुम्हें क्या ही ख़ूब नसीहत फ़रमाता है बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِی الْاَمْرِ

ऐ ईमान वालो हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का[167] और उन का जो तुम में हुकूमत

مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ

वाले हैं[168] फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे **अल्लाह** व रसूल के हुज़ूर रुजूअ़ करो अगर

163 : जो हर नजासत व गन्दगी और क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक हैं। **164 :** या'नी सायए जन्नत जिस की राहत व आसाइश, रसाइये फ़हम व इहातए बयान से बाला तर है। **165 :** अस्हाबे अमानात और हुक्काम को अमानतें दियानत दारी के साथ हक़दार को अदा करने और फ़ैसलों में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि फ़राइज़ भी **अल्लाह** तआ़ला की अमानतें हैं इन की अदा भी इस हुक्म में दाख़िल है। **166 :** फ़रीक़ैन में से अस्लन किसी की रिआ़यत न हो। उ़लमा ने फ़रमाया कि हाकिम को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे (1) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़अ़ दे दूसरे को भी दे। (2) निशस्त दोनों को एक सी दे (3) दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे (5) फ़ैसला देने में हक़ की रिआ़यत करे जिस का दूसरे पर हक़ हो पूरा पूरा दिलाए। ह़दीस शरीफ़ में है : इन्साफ़ करने वालों को क़ुर्बे इलाही में नूरी मिम्बर अ़ता होंगे। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के शाने नुज़ूल में इस वाक़िए का ज़िक्र किया है कि फ़त्हे़ मक्का के वक़्त सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा ख़ादिमे का'बा से का'बए मुअ़ज़्ज़मा की कलीद (चाबी) ले ली, फिर जब येह आयत नाज़िल हुई तो आप ने वोह कलीद उन्हें वापस दी और फ़रमाया कि अब येह कलीद हमेशा तुम्हारी नस्ल में रहेगी, इस पर उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा ह़जबी इस्लाम लाए। अगर्चे येह वाक़िआ़ थोड़े थोड़े तग़य्युरात के साथ बहुत से मुह़द्दिसीन ने ज़िक्र किया है मगर अह़ादीस पर नज़र करने से येह क़ाबिले वुसूक़ (क़ाबिले यक़ीन) नहीं मा'लूम होता क्यूं कि इब्ने अ़ब्दुल्लाह और इब्ने मन्दा और इब्ने असीर की रिवायतों से मा'लूम होता है कि उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा 8 हि. में मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुके थे और इन्हों ने फ़त्हे़ मक्का के रोज़ कुन्जी ख़ुद अपनी ख़ुशी से पेश की थी, बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीसों से येही मुस्तफ़ाद होता है। **167 :** कि रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** ही की इत़ाअ़त है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मेरी इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। **168 :** इसी ह़दीस में हुज़ूर फ़रमाते हैं : जिस ने अमीर की इत़ाअ़त की उस ने मेरी इत़ाअ़त की और जिस ने अमीर की ना फ़रमानी की उस ने मेरी ना फ़रमानी की, इस आयत से साबित हुवा कि मुस्लिम उमरा व हुक्काम की इत़ाअ़त वाजिब है जब तक

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِیْلًا ﴿۵۹﴾ اَلَمْ

अल्लाह व क़ियामत पर ईमान रखते हो[169] येह बेहतर है और इस का अन्जाम सब से अच्छा क्या तुम ने

تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ

उन्हें न देखा जिन का दा'वा है कि वोह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो तुम

مِنْ قَبْلِكَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَ قَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ

से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैत़ान को अपना पन्च बनाएं और उन को तो हुक्म येह था कि

یَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَ یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِیْدًا ﴿۶۰﴾ وَ اِذَا

उसे अस्लन न मानें और इब्लीस येह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे[170] और जब

قِیْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ اِلَى الرَّسُوْلِ رَاَیْتَ الْمُنٰفِقِیْنَ

उन से कहा जाए कि अल्लाह की उतारी किताब और रसूल की त़रफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़

یَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿۶۱﴾ فَكَیْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌۢ بِمَا

तुम से मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं कैसी होगी जब उन पर कोई उफ़्ताद (मुसीबत) पड़े[171] बदला उस का

قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ یَحْلِفُوْنَ ۖۗ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ اِحْسَانًا

जो उन के हाथों ने आगे भेजा[172] फिर ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों अल्लाह की क़सम खाते कि हमारा मक़्सूद तो भलाई

वोह ह़क़ के मुवाफ़िक़ रहें और अगर ह़क़ के ख़िलाफ़ हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त नहीं। **169 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अह़काम तीन क़िस्म के हैं : **एक** वोह जो ज़ाहिर किताब या'नी क़ुरआन से साबित हों, **एक** वोह जो ज़ाहिर ह़दीस से, **एक** वोह जो क़ुरआन व ह़दीस की त़रफ़ ब त़रीक़े क़ियास रुजूअ़ करने से। "اُولی الامر" में इमाम, अमीर, बादशाह, ह़ाकिम, क़ाज़ी सब दाख़िल हैं। ख़िलाफ़ते कामिला तो ज़मानए रिसालत के बा'द तीस साल रही मगर ख़िलाफ़ते नाक़िसा ख़ुलफ़ाए अ़ब्बासिया में भी थी और अब तो इमामत भी नहीं पाई जाती क्यूं कि इमाम के लिये क़ुरैश में से होना शर्त़ है और येह बात अक्सर मक़ामात में मा'दूम है, लेकिन सल्त़नत व इमारत बाक़ी है और चूंकि सुल्त़ान व अमीर भी اولی الامر में दाख़िल हैं इस लिये हम पर इन की इत़ाअ़त भी लाज़िम है। **170 शाने नुज़ूल :** बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा था यहूदी ने कहा : चलो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से तै करा लें, मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि हुज़ूर तो बे रिआ़यत मह़्ज़ ह़क़ फ़ैसला देंगे उस का मत़लब ह़ासिल न होगा इस लिये उस ने बा वुजूद मुद्दइये ईमान होने के येह कहा कि का'ब बिन अशरफ़ यहूदी को पन्च बनाओ (क़ुरआने करीम में त़ाग़ूत से इस का'ब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि का'ब रिश्वत ख़ोर है इस लिये उस ने बा वुजूद हम मज़्हब होने के उस को पन्च (फ़ैसला करने वाला) तस्लीम न किया, नाचार (मजबूरन) मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के हुज़ूर आना पड़ा। हुज़ूर ने जो फ़ैसला दिया वोह यहूदी के मुवाफ़िक़ हुवा, यहां से फ़ैसला सुनने के बा'द फिर मुनाफ़िक़ यहूदी के दरपै हुवा और उसे मजबूर कर के ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ के पास लाया, यहूदी ने आप से अ़र्ज़ किया कि मेरा इस का मुआ़मला सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم तै फ़रमा चुके लेकिन येह हुज़ूर के फ़ैसले से राज़ी नहीं आप से फ़ैसला चाहता है, फ़रमाया कि हां मैं अभी आ कर इस का फ़ैसला करता हूं, येह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गए और तलवार ला कर उस को क़त्ल कर दिया और फ़रमाया : जो अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसले से राज़ी न हो उस का मेरे पास येह फ़ैसला है। **171 :** जिस से भागने बचने की कोई राह न हो, जैसी कि बिश्र मुनाफ़िक़ पर पड़ी कि उस को ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने क़त्ल कर दिया। **172 :** कुफ़्र व निफ़ाक़ और मआ़सी, जैसा कि बिश्र मुनाफ़िक़ ने रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم के फ़ैसले से ए'राज़ कर के किया।

وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ فَاَعْرِضْ

और मेल ही था[173] उन के दिलों की तो बात **अल्लाह** जानता है तो तुम उन से चश्म पोशी

عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا

करो और उन्हें समझाओ और उन के मुआमले में उन से रसा (असर करने वाली) बात कहो[174] और हम ने कोई

مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

रसूल न भेजा मगर इस लिये कि **अल्लाह** के हुक्म से उस की इताअ़त की जाए[175] और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें[176]

جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ

तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत

تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ

तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं[177] तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसल्मान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें

بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا

हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से

تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ

मान लें[178] और अगर हम उन पर फ़र्ज़ करते कि अपने आप को क़त्ल कर दो या अपने घरबार छोड़ कर

173 : और वोह उ़ज़्र व नदामत कुछ काम न दे जैसा कि बिश्र मुनाफ़िक़ के मारे जाने के बा'द उस के औलिया उस के ख़ून का बदला त़लब करने आए और बे जा मा'ज़िरतें करने और बातें बनाने लगे। **अल्लाह** तआ़ला ने उस के ख़ून का कोई बदला नहीं दिलाया क्यूं कि वोह कुश्तनी ही (क़त्ल ही के लाइक़) था। **174 :** जो उन के दिल में असर कर जाए। **175 :** जब कि रसूल का भेजना ही इस लिये है कि वोह मुत़ाअ़ (लाइक़े इत़ाअ़त) बनाए जाएं और उन की इत़ाअ़त फ़र्ज़ हो तो जो उन के हुक्म से राज़ी न हो उस ने रिसालत को तस्लीम न किया वोह काफ़िर वाजिबुल क़त्ल है। **176 :** मा'सियत व ना फ़रमानी कर के **177 :** इस से मा'लूम हुवा कि बारगाहे इलाही में रसूलुल्लाह ﷺ का वसीला और आप की शफ़ाअ़त कार बरआरी (ह़ाजत रवाई) का ज़रीआ़ है। सय्यिदे आ़लम ﷺ की वफ़ात शरीफ़ के बा'द एक आ'राबी रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और रौज़ए शरीफ़ा की ख़ाक पाक अपने सर पर डाली और अ़र्ज़ करने लगा : **या रसूलल्लाह!** जो आप ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप पर नाज़िल हुवा उस में येह आयत भी है "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا" मैं ने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं आप के हुज़ूर में **अल्लाह** से अपने गुनाह की बख़्शिश चाहने ह़ाज़िर हुवा तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराइये, इस पर क़ब्र शरीफ़ से निदा आई कि तेरी बख़्शिश की गई। इस से चन्द मसाइल मा'लूम हुए। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़े ह़ाजत के लिये उस के मक़्बूलों को वसीला बनाना ज़रीअ़ए काम्याबी है। **मस्अला :** क़ब्र पर ह़ाजत के लिये जाना भी "جَآءُوْكَ" में दाख़िल और "ख़ैरुल क़ुरून" का मा'मूल है। **मस्अला :** बा'दे वफ़ात मक़्बूलाने ह़क़ को "**या**" के साथ निदा करना जाइज़ है। **मस्अला :** मक़्बूलाने ह़क़ मदद फ़रमाते हैं और इन की दुआ़ से ह़ाजत रवाई होती है। **178 :** मा'ना येह हैं कि जब तक आप के फ़ैसले और हुक्म को सिद्क़े दिल से न मान लें मुसल्मान नहीं हो सकते। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! इस से रसूले अकरम ﷺ की शान मा'लूम होती है। **शाने नुज़ूल :** पहाड़ से आने वाला पानी जिस से बाग़ों में आब रसानी करते हैं उस में एक अन्सारी का ह़ज़रते ज़ुबैर رضی اللہ عنہ से झगड़ा हुवा, मुआ़मला सय्यिदे आ़लम ﷺ के हुज़ूर पेश किया गया, हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ ज़ुबैर ! तुम अपने बाग़ को पानी दे कर अपने पड़ोसी की त़रफ़ पानी छोड़ दो, येह अन्सारी को गिरां गुज़रा और उस की ज़बान से येह कलिमा निकला कि ज़ुबैर आप के फूफीज़ाद भाई हैं, बा वुजूदे

دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ

निकल जाओ[179] तो उन में थोड़े ही ऐसा करते और अगर वोह करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती

بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿۶۶﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّاۤ اَجْرًا

है[180] तो उस में उन का भला था और ईमान पर खूब जमना और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पास से बड़ा

عَظِيْمًا ﴿۶۷﴾ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۶۸﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

सवाब देते और ज़रूर उन को सीधी राह की हिदायत करते और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने

فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ

तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया[181] और सिद्दीक़[182]

وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿۶۹﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ

और शहीद[183] और नेक लोग[184] और येह क्या ही अच्छे साथी हैं येह **अल्लाह** का

مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿۷۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ

फ़ज़्ल है और **अल्लाह** काफ़ी है जानने वाला ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो[185]

فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿۷۱﴾ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ

फिर दुश्मन की त़रफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकठ्ठे चलो और तुम में कोई वोह है कि ज़रूर देर लगाएगा[186]

कि फ़ैसले में ह़ज़रते ज़ुबैर को अन्सारी के साथ एह़सान की हिदायत फ़रमाई गई थी लेकिन अन्सारी ने इस की क़द्र न की तो हुज़ूर ﷺ ने ह़ज़रते ज़ुबैर को हुक्म दिया कि अपने बाग़ को सैराब कर के पानी रोक लो इन्साफ़न क़रीब वाला ही पानी का मुस्तह़िक़ है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **179 :** जैसा कि बनी इसराईल को मिस्र से निकल जाने और तौबा के लिये अपने आप को क़त्ल का हुक्म दिया था। **शाने नुज़ूल :** साबित बिन क़ैस बिन शम्मास से एक यहूदी ने कहा कि **अल्लाह** ने हम पर अपना क़त्ल और घरबार छोड़ना फ़र्ज़ किया था हम उस को बजा लाए, साबित ने फ़रमाया कि अगर **अल्लाह** हम पर फ़र्ज़ करता तो हम भी ज़रूर बजा लाते इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **180 :** या'नी रसूले करीम ﷺ की इत़ाअ़त और आप की फ़रमां बरदारी की। **181 :** तो अम्बिया के मुख़्लिस फ़रमां बरदार जन्नत में उन की सोह़बत व दीदार से मह़रूम न होंगे। **182 :** "सिद्दीक़" अम्बिया के सच्चे मुत्तबिईन को कहते हैं जो इख़्लास के साथ उन की राह पर क़ाइम रहें, मगर इस आयत में नबिय्ये करीम ﷺ के अफ़ाज़िल अस्ह़ाब मुराद हैं जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़। **183 :** जिन्हों ने राहे ख़ुदा में जानें दीं। **184 :** वोह दीनदार जो ह़क़्क़ुल इबाद और ह़क़्क़ुल्लाह दोनों अदा करें और उन के अह़वाल व आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन अच्छे और पाक हों। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सौबान सय्यिदे आलम ﷺ के साथ कमाले मह़ब्बत रखते थे जुदाई की ताब न थी, एक रोज़ इस क़दर ग़मगीन और रन्जीदा ह़ाज़िर हुए कि चेहरे का रंग बदल गया था, हुज़ूर ने फ़रमाया : आज रंग क्यूं बदला हुवा है ? अ़र्ज़ किया : न मुझे कोई बीमारी है न दर्द, बजुज़ इस के कि जब हुज़ूर सामने नहीं होते तो इन्तिहा दरजे की वह़शत व परेशानी हो जाती है, जब आख़िरत को याद करता हूं तो येह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस त़रह़ दीदार पा सकूंगा, आप आ'ला तरीन मक़ाम में होंगे मुझे **अल्लाह** तआला ने अपने करम से जन्नत भी दी तो उस मक़ामे आली तक रसाई कहां, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तस्कीन दी गई कि बा वुजूद फ़र्क़े मनाज़िल के फ़रमां बरदारों को बारयाबी और मइय्यत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। **185 :** दुश्मन के घात से बचो और उसे अपने ऊपर मौक़अ़ न दो, एक क़ौल येह भी है कि हथियार साथ रखो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दुश्मन के मुक़ाबले में अपनी ह़िफ़ाज़त की तदबीरें जाइज़ हैं। **186 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन।

فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِیْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ

फिर अगर तुम पर कोई उफ़्ताद (मुसीबत) पड़े तो कहे ख़ुदा का मुझ पर एह्सान था कि मैं उन के साथ

شَهِیْدًا ﴿۷۲﴾ وَ لَىٕنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَیَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ

हाज़िर न था और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल मिले[187] तो ज़रूर कहे[188] गोया

بَیْنَكُمْ وَ بَیْنَهٗ مَوَدَّةٌ یّٰلَیْتَنِیْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِیْمًا ﴿۷۳﴾

तुम में उस में कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता

فَلْیُقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ الَّذِیْنَ یَشْرُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ

तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिये जो दुन्या की ज़िन्दगी बेच कर आख़िरत लेते हैं

وَ مَنْ یُّقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَیُقْتَلْ اَوْ یَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِیْهِ اَجْرًا

और जो अल्लाह की राह में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए तो अन्क़रीब हम उसे बड़ा

عَظِیْمًا ﴿۷۴﴾ وَ مَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ الْمُسْتَضْعَفِیْنَ مِنَ

सवाब देंगे और तुम्हें क्या हुवा कि न लड़ो अल्लाह की राह में[189] और कमज़ोर

الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ الَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا مِنْ

मर्दों और औरतों और बच्चों के वासिते जो येह दुआ कर रहे हैं कि ऐ रब हमारे हमें इस बस्ती

هٰذِهِ الْقَرْیَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَ اجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ۙۚ وَّ اجْعَلْ

से निकाल जिस के लोग ज़ालिम हैं और हमें अपने पास से कोई हिमायती दे दे और हमें

لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِیْرًا ﴿ؕ۷۵﴾ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۚ

अपने पास से कोई मददगार दे दे ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं[190]

وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْۤا اَوْلِیَآءَ

और कुफ़्फ़ार शैतान की राह में लड़ते हैं तो शैतान के दोस्तों

187 : तुम्हारी फ़त्ह हो और ग़नीमत हाथ आए 188 : वोही जिस के मक़ूले से येह साबित होता है कि 189 : या'नी जिहाद फ़र्ज़ है और इस के तर्क का तुम्हारे पास कोई उज़्र नहीं 190 : इस आयत में मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दी गई ताकि वोह उन कमज़ोर मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार के पन्जए ज़ुल्म से छुड़ाएं जिन्हें मक्कए मुकर्रमा में मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया था और त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं दे रहे थे और उन की औरतों और बच्चों तक पर बे रह्माना मज़ालिम करते थे और वोह लोग उन के हाथों में मजबूर थे, इस ह़ालत में वोह अल्लाह तआ़ला से अपनी ख़लासी और मददे इलाही की दुआएं करते थे। येह दुआ क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन का

الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿۷۶﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ

से[191] लड़ो बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है[192] क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन से कहा गया

كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ

अपने हाथ रोक लो[193] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़

الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ

किया गया[194] तो उन में बा'ज़े लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह से डरे या इस से भी ज़ाइद[195]

وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ

और बोले ऐ रब हमारे तूने हम पर जिहाद क्यूं फ़र्ज़ कर दिया[196] थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने

قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَلَا

दिया होता तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरत्ना थोड़ा है[197] और डर वालों के लिये आख़िरत अच्छी और तुम

تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۷۷﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ

पर तागे बराबर ज़ुल्म न होगा[198] तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी[199] अगर्चे

فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ

मज़बूत क़ल्ओं में हो और उन्हें कोई भलाई पहुंचे[200] तो कहें येह अल्लाह की तरफ़ से

اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ

है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे[201] तो कहें येह हुज़ूर की तरफ़ से आई[202] तुम फ़रमा दो सब अल्लाह की

वली व नासिर किया और उन्हें मुश्रिकीन के हाथों से छुड़ाया और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह कर के उन की ज़बर दस्त मदद फ़रमाई। **191 :** ए'लाए दीन और रिज़ाए इलाही के लिये **192 :** या'नी काफ़िरों का, और वोह अल्लाह की मदद के मुक़ाबले में क्या चीज़ है। **193 :** क़िताल से। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा में मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं देते थे, हिजरत से क़ब्ल अस्हाबे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की एक जमाअ़त ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप हमें काफ़िरों से लड़ने की इजाज़त दीजिये उन्हों ने हमें बहुत सताया है और बहुत ईज़ाएं देते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि उन के साथ जंग करने से हाथ रोको, नमाज़ और ज़कात जो तुम पर फ़र्ज़ है वोह अदा करते रहो। **फ़ाएदा :** इस से साबित हुवा कि नमाज़ व ज़कात जिहाद से पहले फ़र्ज़ हुई। **194 :** मदीनए तृय्यिबा में और बद्र की हाज़िरी का हुक्म दिया गया। **195 :** येह ख़ौफ़ तब्ई था कि इन्सान की जिबिल्लत (फ़ित्रत) है कि मौत व हलाकत से घबराता और डरता है। **196 :** इस की हिक्मत क्या है ? येह सुवाल वज्हे हिक्मत दरयाफ़्त करने के लिये था न ब तरीक़े ए'तिराज़, इसी लिये उन को इस सुवाल पर तौबीख़ व ज़ज्र न फ़रमाया गया बल्कि जवाब तस्कीन बख़्श अ़ता फ़रमा दिया गया। **197 :** ज़ाइल व फ़ानी है। **198 :** और तुम्हारे अज्र कम न किये जाएंगे तो जिहाद में अन्देशा व तअम्मुल न करो। **199 :** और इस से रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत ना गुज़ीर है तो बिस्तर पर मर जाने से राहे ख़ुदा में जान देना बेहतर है कि येह सआ़दते आख़िरत का सबब है। **200 :** अरज़ानी व कस्रते पैदावार वग़ैरा की **201 :** गिरानी क़ह़्त़-साली वग़ैरा **202 :** येह हाल मुनाफ़िक़ीन का है कि जब उन्हें कोई सख़्ती पेश आती तो उस को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तरफ़ निस्बत करते और कहते जब से येह आए हैं ऐसी ही सख़्तियां पेश आया करती हैं।

عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿۷۸﴾ مَاۤ

तरफ़ से है[203] तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते ऐ सुनने वाले

اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ٝ وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ

तुझे जो भलाई पहुंचे वोह **अल्लाह** की तरफ़ से है[204] और जो बुराई पहुंचे वोह तेरी अपनी तरफ़ से है[205]

وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿۷۹﴾ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल भेजा[206] और **अल्लाह** काफ़ी है गवाह[207] जिस ने रसूल का हुक्म माना

فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿۸۰﴾ؕ وَ

बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना[208] और जिस ने मुंह फेरा[209] तो हम ने तुम्हें उन के बचाने को न भेजा और

يَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ٝ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ

कहते हैं हम ने हुक्म माना[210] फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उन में एक गुरौह जो कह गया था

الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ

उस के ख़िलाफ़ रात को मन्सूबे गांठता है और **अल्लाह** लिख रखता है उन के रात के मन्सूबे[211] तो ऐ महबूब तुम उन से चश्म पोशी करो और **अल्लाह**

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۸۱﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ

पर भरोसा रखो और **अल्लाह** काफ़ी है काम बनाने को तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में[212] और अगर वोह

203 : गिरानी हो या अरज़ानी, क़हत़ हो या फ़राख़ ह़ाली, रन्ज हो या राह़त, आराम हो या तक्लीफ़, फ़त्ह़ हो या शिकस्त, ह़क़ीक़त में सब **अल्लाह** की त़रफ़ से है। **204 :** उस का फ़ज़्लो रह़मत है **205 :** कि तूने ऐसे गुनाहों का इरतिकाब किया कि तू इस का मुस्तह़िक़ हुवा। **मस्अला :** यहां बुराई की निस्बत बन्दे की त़रफ़ मजाज़ है और ऊपर जो मज़्कूर हुवा वोह ह़क़ीक़त थी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि बदी की निस्बत बन्दे की त़रफ़ बर सबीले अदब है। ख़ुलासा येह कि बन्दा जब फ़ाइले ह़क़ीक़ी की त़रफ़ नज़र करे तो हर चीज़ को उसी की त़रफ़ से जाने और जब अस्बाब पर नज़र करे तो बुराइयों को अपनी शामते नफ़्स के सबब से समझे। **206 :** अ़रब हों या अ़जम आप तमाम ख़ल्क़ के लिये रसूल बनाए गए और कुल जहान आप का उम्मती किया गया, येह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जलालते मन्सब और रिफ़्अ़ते मन्ज़िलत का बयान है **207 :** आप की रिसालते आ़म्मा पर, तो सब पर आप की इत़ाअ़त और आप का इत्तिबाअ़ फ़र्ज़ है। **208 शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मेरी इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की उस ने **अल्लाह** से मह़ब्बत की। इस पर आज कल के गुस्ताख़ बद दीनों की त़रह़ उस ज़माने के बा'ज़ मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم येह चाहते हैं कि हम इन्हें रब मान लें जैसा नसारा ने ईसा बिन मरयम को रब माना, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कलाम की तस्दीक़ फ़रमा दी कि बेशक रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** की इत़ाअ़त है। **209 :** और आप की इत़ाअ़त से ए'राज़ किया। **210 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में ईमान व इत़ाअ़त शिआ़री का इज़्हार करते थे और कहते थे : हम ह़ुज़ूर पर ईमान लाए हैं, हम ने ह़ुज़ूर की तस्दीक़ की है, ह़ुज़ूर जो हमें हुक्म फ़रमाएं उस की इत़ाअ़त हम पर लाज़िम है। **211 :** उन के आ'माल नामों में और इस का उन्हें बदला देगा। **212 :** और इस के उ़लूम व ह़िकम को नहीं देखते कि इस ने अपनी फ़साह़त से तमाम ख़ल्क़ को आ़जिज़ कर दिया है और ग़ैबी ख़बरों से मुनाफ़िक़ीन के अह़वाल और उन के मक्रो कैद का इफ़्शाए राज़ कर दिया है और अव्वलीनो आख़िरीन की ख़बरें दी हैं।

مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ

ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते[213] और जब उन के पास

اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ

कोई बात इत्मीनान[214] या डर[215] की आती है उस का चरचा कर बैठते हैं[216] और अगर उस में रसूल

وَاِلٰۤى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا

और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों[217] की तरफ़ रुजूअ़ लाते[218] तो ज़रूर उन से उस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बात में काविश करते हैं[219] और अगर

فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ

तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल[220] और उस की रह़मत[221] न होती तो ज़रूर तुम शैत़ान के पीछे लग जाते[222] मगर थोड़े[223] तो ऐ मह़बूब

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى

अल्लाह की राह में लड़ो[224] तुम तक्लीफ़ न दिये जाओगे मगर अपने दम की[225] और मुसल्मानों को आमादा करो[226] क़रीब है

اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ

कि अल्लाह काफ़िरों की सख़्ती रोक दे[227] और अल्लाह की आंच (गिरिफ़्त) सब से सख़्त तर है और उस का अ़ज़ाब सब

213 : और ज़मानए आयिन्दा के मुतअ़ल्लिक़ ग़ैबी ख़बरें मुत़ाबिक़ न होतीं और जब ऐसा न हुवा और क़ुरआने पाक की ग़ैबी ख़बरों से आयिन्दा पेश आने वाले वाक़िआत मुत़ाबक़त करते चले गए तो साबित हुवा कि यक़ीनन वोह किताब अल्लाह की तरफ़ से है। नीज़ उस के मज़ामीन में भी बाहम इख़्तिलाफ़ नहीं इसी त़रह़ फ़साह़तो बलाग़त में भी क्यूं कि मख़्लूक़ का कलाम फ़सीह़ भी हो तो सब यक्सां नहीं होता कुछ बलीग़ होता है तो कुछ रकीक होता है जैसा कि शुअ़रा और ज़बान दानों के कलाम में देखा जाता है कि कोई बहुत मलीह़ (दिलचस्प) और कोई निहायत फीका। येह अल्लाह तआ़ला ही के कलाम की शान है कि इस का तमाम कलाम फ़साह़तो बलाग़त की आ'ला मर्तबत पर है। 214 : या'नी फ़त्ह़े इस्लाम 215 : या'नी मुसल्मानों की हज़ीमत की ख़बर 216 : जो मफ़्सदे (फ़ितने फ़साद) का मूजिब होता है कि मुसल्मानों की फ़त्ह़ की शोहरत से तो कुफ़्फ़ार में जोश पैदा होता है और शिकस्त की ख़बर से मुसल्मानों की ह़ौसला शिकनी होती है। 217 : अकाबिर सह़ाबा जो साह़िबे राय और साह़िबे बसीरत हैं 218 : और ख़ुद कुछ दख़्ल न देते 219 **मस्अला :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस आयत में दलील है जवाज़े क़ियास पर और येह भी मा'लूम होता है कि एक इल्म तो वोह है जो ब नस्से क़ुरआनो ह़दीस ह़ासिल हो, और एक इल्म वोह है जो क़ुरआनो ह़दीस से इस्तिम्बात़ व क़ियास के ज़रीए ह़ासिल होता है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि उमूरे दीनिया में हर शख़्स को दख़्ल देना जाइज़ नहीं, जो अहल हो उस को तफ़्वीज़ (सिपुर्द) करना चाहिये। 220 : रसूले करीम ﷺ की बि'सत 221 : नुज़ूले क़ुरआन 222 : और कुफ़्रो ज़लाल में गिरिफ़्तार रहते 223 : वोह लोग जो सय्यिदे आ़लम ﷺ की बि'सत और क़ुरआने पाक के नुज़ूल से पहले आप पर ईमान लाए जैसे ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और वरक़ा बिन नौफ़ल और क़ैस बिन साइदा 224 : ख़्वाह कोई तुम्हारा साथ दे या न दे और तुम अकेले रह जाओ 225 **शाने नुज़ूल :** बद्रे सुग़रा की जंग जो अबू सुफ़्यान से ठहर चुकी थी जब उस का वक़्त आ पहुंचा तो रसूले करीम ﷺ ने वहां जाने के लिये लोगों को दा'वत दी, बा'ज़ों पर येह गिरां हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और अपने ह़बीब ﷺ को हुक्म दिया कि वोह जिहाद न छोड़ें अगर्चे तन्हा हों अल्लाह आप का नासिर है अल्लाह का वा'दा सच्चा है येह हुक्म पा कर रसूले करीम ﷺ बद्रे सुग़रा की जंग के लिये रवाना हुए सिर्फ़ सत्तर सुवार हमराह थे। 226 : उन्हें जिहाद की तरग़ीब दो और बस। 227 : चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि मुसल्मानों का येह छोटा सा लश्कर काम्याब आया और कुफ़्फ़ार ऐसे मरऊ़ब हुए कि वोह मुसल्मानों के मुक़ाबिल मैदान में न आ सके। **फ़ाएदा :** इस आयत से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम ﷺ शुजाअ़त में सब से आ'ला हैं कि आप को तन्हा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल तशरीफ़ ले जाने का हुक्म हुवा और आप आमादा हो गए।

تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ

से कर्रा (ज़बर दस्त सख़्त) जो अच्छी सिफ़ारिश करे[228] उस के लिये उस में से हिस्सा है[229] और

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

जो बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस में से हिस्सा है[230] और **अल्लाह** हर चीज़ पर

شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ

क़ादिर है और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या

رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

वोही कह दो बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है[231] **अल्लाह** है कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं

لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ

और वोह ज़रूर तुम्हें इकठ्ठा करेगा क़ियामत के दिन जिस में कुछ शक नहीं और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात

حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾ فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا

सच्ची[232] तो तुम्हें क्या हुवा कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए[233] और **अल्लाह** ने उन्हें औंधा कर दिया[234] उन के

كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

कौतकों (बुरे आ'माल) के सबब[235] क्या येह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ जिसे **अल्लाह** ने गुमराह किया और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे

228 : किसी से किसी की, कि उस को नफ़अ़ पहुंचाए या किसी मुसीबत व बला से ख़लास कराए और हो वोह मुवाफ़िक़े शरअ़ तो **229 :** अज्र व जज़ा **230 :** अ़ज़ाब व सज़ा **231 मसाइले सलाम :** सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना फ़र्ज़ और जवाब में अफ़्ज़ल येह है कि सलाम करने वाले के सलाम पर कुछ बढ़ाए मसलन पहला शख़्स اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहे तो दूसरा शख़्स وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहे और अगर पहले ने وَرَحْمَةُ اللّٰهِ भी कहा था तो येह وَبَرَكَاتُهٗ और बढ़ाए, पस इस से ज़ियादा सलाम व जवाब में और कोई इज़ाफ़ा नहीं है। काफ़िर, गुमराह, फ़ासिक़ और इस्तिन्जा करते मुसल्मानों को सलाम न करें। जो शख़्स ख़ुत्बा या तिलावते क़ुरआन या ह़दीस या मुज़ाकरए इल्म या अज़ान या तक्बीर में मश्ग़ूल हो, इस ह़ाल में उन को सलाम न किया जाए और अगर कोई सलाम करे तो उन पर जवाब देना लाज़िम नहीं और जो शख़्स शत़रन्ज, चोसर, ताश, गन्जिफ़ा वग़ैरा कोई ना जाइज़ खेल खेल रहा हो या गाने बजाने में मश्ग़ूल हो या पाख़ाने या ग़ुस्ल ख़ाने में हो या बे उ़ज़्र बरहना हो उस को सलाम न किया जाए। **मस्अला :** आदमी जब अपने घर में दाख़िल हो तो बीबी को सलाम करे। हिन्दूस्तान में येह बड़ी ग़लत़ रस्म है कि ज़न व शो के इतने गहरे तअ़ल्लुक़ात होते हुए भी एक दूसरे को सलाम से मह़रूम करते हैं बा वुजूदे कि सलाम जिस को किया जाता है उस के लिये सलामती की दुआ़ है। **मस्अला :** बेहतर सुवारी वाला कमतर सुवारी वाले को और कमतर सुवारी वाला पैदल चलने वाले को और पैदल बैठे हुए को और छोटे बड़े को और थोड़े ज़ियादा को सलाम करें। **232 :** या'नी उस से ज़ियादा सच्चा कोई नहीं, इस लिये कि उस का किज़्ब ना मुम्किन व मुह़ाल है क्यूं कि किज़्ब ऐब है और हर ऐब **अल्लाह** पर मुह़ाल है वोह जुम्ला उ़यूब से पाक है। **233 शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन की एक जमाअ़त सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में जाने से रुक गई थी उन के बाब में अस्ह़ाबे किराम के दो फ़िर्क़े हो गए, एक फ़िर्क़ा क़त्ल पर मुसिर था और एक उन के क़त्ल से इन्कार करता था, इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई। **234 :** कि वोह हुज़ूर के साथ जिहाद में जाने से मह़रूम रहे। **235 :** उन के कुफ़्रो इरतिदाद और मुश्रिकीन के साथ मिलने के बाइ़स तो चाहिये कि मुसल्मान भी उन के कुफ़्र में इख़्तिलाफ़ न करें।

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ

तो हरगिज़ तू उस के लिये कोई राह न पाएगा वोह तो येह चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वोह काफ़िर हुए तो तुम सब

سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

एक से हो जाओ तो उन में किसी को अपना दोस्त न बनाओ[236] जब तक **अल्लाह** की राह में घरबार न छोड़ें[237]

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا

फिर अगर वोह मुंह फेरें[238] तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और उन में किसी को

مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ

न दोस्त ठहराओ न मददगार[239] मगर वोह जो ऐसी क़ौम से अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) रखते हैं कि तुम में

وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ

उन में मुआ़हदा है[240] या तुम्हारे पास यूं आए कि उन के दिलों में सकत (त़ाक़त) न रही कि तुम से लड़ें[241] या

يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ

अपनी क़ौम से लड़ें[242] और **अल्लाह** चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर क़ाबू देता तो वोह बेशक तुम से लड़ते[243] फिर अगर

اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ

वोह तुम से किनारा करें और न लड़ें और सुल्ह़ का पयाम डालें तो **अल्लाह** ने तुम्हें उन पर कोई

عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ

राह न रखी[244] अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो येह चाहते हैं कि तुम से भी अमान में रहें

وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ

और अपनी क़ौम से भी अमान में रहें[245] जब कभी उन की क़ौम उन्हें फ़साद[246] की त़रफ़ फेरे तो उस पर औंधे गिरते हैं फिर अगर

---

236 : इस आयत में कुफ़्फ़ार के साथ मुवालात मम्नूअ़ की गई ख़्वाह वोह ईमान का इज़्हार ही करते हों **237 :** और इस से उन के ईमान की तह़क़ीक़ न हो ले। **238 :** ईमान व हिजरत से और अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहें। **239 :** और अगर तुम्हारी दोस्ती का दा'वा करें और मदद के लिये तय्यार हों तो उन की मदद न क़बूल करो। **240 :** येह इस्तिस्ना क़त्ल की त़रफ़ राजेअ़ है क्यूं कि कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के साथ मुवालात किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और अ़हद से येह अ़हद मुराद है कि उस क़ौम को और जो उस क़ौम से जा मिले उस को अम्न है जैसा कि सय्यिदे आ़लम ﷺ ने मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले जाते वक़्त हिलाल बिन उ़वैमिर अस्लमी से मुआ़मला किया था। **241 :** अपनी क़ौम के साथ हो कर **242 :** तुम्हारे साथ हो कर **243 :** लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाल दिया और मुसलमानों को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा। **244 :** कि तुम उन से जंग करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह हुक्म आयत ''اُقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ'' (उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो) से मन्सूख़ हो गया। **245 शाने नुज़ूल :** मदीनए त़य्यिबा में क़बीलए असद व ग़त़फ़ान के लोग रियाअन कलिमए इस्लाम पढ़ते और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते और जब उन में से कोई अपनी क़ौम से मिलता और वोह लोग उन से कहते कि तुम किस चीज़ पर ईमान लाए तो वोह लोग कहते कि बन्दरों बिच्छूओं वग़ैरा पर, इस अन्दाज़ से उन का मत़लब येह था कि

يَعْتَزِلُوْكُمْ وَ يُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَ يَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَ

वोह तुम से किनारा न करें और[247] सुल्ह की गरदन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और

اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَ اُولٰٓىٕكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

जहां पाओ क़त्ल करो और येह हैं जिन पर हम ने तुम्हें सरीह़ (खुला)

مُّبِيْنًا (۹۱) وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـٴًـا ۚ وَ مَنْ قَتَلَ

इख़्तियार दिया[248] और मुसल्मानों को नहीं पहुंचता कि मुसल्मान का ख़ून करे मगर हाथ बहक कर[249] और जो किसी मुसल्मान को

مُؤْمِنًا خَطَـٴًـا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّ دِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ

ना दानिस्ता क़त्ल करे तो उस पर एक मम्लूक मुसल्मान (मुस्लिम ग़ुलाम) का आज़ाद करना है और ख़ूंबहा कि मक़्तूल के लोगों को सिपुर्द की जाए[250] मगर

اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ

येह कि वोह मुआ़फ़ कर दें फिर अगर वोह[251] उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है[252] और ख़ुद मुसल्मान है तो सिर्फ़ एक

رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَ اِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ

मम्लूक मुसल्मान का आज़ाद करना[253] और अगर वोह उस क़ौम में हो कि तुम में उन में मुआ़हदा है तो उस के लोगों को

مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖ وَ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

ख़ूं-बहा सिपुर्द की जाए और एक मुसल्मान मम्लूक आज़ाद करना[254] तो जिस का हाथ न पहुंचे[255] वोह लगातार

شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (۹۲)

दो महीने के रोज़े रखे[256] येह **अल्लाह** के यहां उस की तौबा है और **अल्लाह** जानने वाला हिक्मत वाला है

दोनों त़रफ़ से रस्मो राह रखें और किसी जानिब से उन्हें नुक़्सान न पहुंचे, येह लोग मुनाफ़िक़ीन थे इन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **246 :** शिर्क या मुसल्मानों से जंग **247 :** जंग से बाज़ आ कर **248 :** उन के कुफ़्र, ग़द्र और मुसल्मानों की ज़रर रसानी के सबब **249 :** या'नी मोमिन काफ़िर की मिस्ल मुबाहुद्दम नहीं है जिस का हुक्म ऊपर की आयत में मज़्कूर हो चुका तो मुसल्मान का क़त्ल करना बिग़ैर ह़क़ के रवा नहीं और मुसल्मान की शान नहीं कि उस से किसी मुसल्मान का क़त्ल सरज़द हो बजुज़ इस के कि ख़त़ाअन हो इस त़रह़ कि मारता था शिकार को या काफ़िरे ह़र्बी को और हाथ बहक कर ज़द पड़ी मुसल्मान पर या येह कि किसी शख़्स को काफ़िरे ह़र्बी जान कर मारा और था वोह मुसल्मान। **250 :** या'नी उस के वारिसों को दी जाए वोह उसे मिस्ल मीरास के तक़्सीम कर लें। दियत मक़्तूल के तर्के के हुक्म में है इस से मक़्तूल का दैन भी अदा किया जाएगा, वसिय्यत भी जारी की जाएगी। **251 :** जो ख़त़ाअन क़त्ल किया गया **252 :** या'नी काफ़िर **253 :** लाज़िम है और दियत नहीं **254 :** या'नी अगर मक़्तूल ज़िम्मी हो तो इस का वोही हुक्म है जो मुसल्मान का। **255 :** या'नी वोह किसी ग़ुलाम का मालिक न हो **256 :** लगातार रोज़ा रखना येह है कि इन रोज़ों के दरमियान रमज़ान और अय्यामे तशरीक़ न हों और दरमियान में रोज़ों का सिल्सिला ब उज़्र या बिला उज़्र किसी त़रह़ तोड़ा न जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़य्याश बिन रबीआ़ मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह क़ब्ले हिजरत मक्कए मुकर्रमा में इस्लाम लाए और घर वालों के ख़ौफ़ से मदीनए त़य्यिबा जा कर पनाह गुज़ीं हुए, उन की मां को इस से बहुत बे क़रारी हुई और उस ने ह़ारिस और अबू जहल अपने दोनों बेटों से जो अ़य्याश के सोतेले भाई थे येह कहा कि ख़ुदा की क़सम न मैं साए में बैठूं न खाना चखूं न पानी पियूं जब तक तुम अ़य्याश को मेरे पास न ले आओ। वोह दोनों ह़ारिस बिन ज़ैद बिन अबी उनैसा को साथ ले कर तलाश के लिये निकले और मदीनए त़य्यिबा पहुंच कर अ़य्याश को पा लिया और उन को मां की जज़अ़ फ़ज़अ़ बे क़रारी और

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ

और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे[257] और **अल्लाह** ने

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब ऐ ईमान वालो जब

ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ

तुम जिहाद को चलो तो तह्क़ीक़ कर लो और जो तुम्हें सलाम करे उस से येह न

السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ فَعِنْدَ اللّٰهِ

कहो कि तू मुसलमान नहीं[258] तुम जीती दुन्या का अस्बाब चाहते हो तो **अल्लाह** के पास

مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ

बहुतेरी ग़नीमतें हैं पहले तुम भी ऐसे ही थे[259] फिर **अल्लाह** ने तुम पर एह्सान किया[260] तो तुम पर तह्क़ीक़ करना लाज़िम है[261]

खाना पीना छोड़ने की ख़बर सुनाई और **अल्लाह** को दरमियान दे कर येह अ़ह्द किया कि हम दीन के बाब में तुझ से कुछ न कहेंगे, इस त़रह़ वोह अय्याश को मदीने से निकाल लाए और मदीने से बाहर आ कर उस को बांधा और हर एक ने सो सो कोड़े मारे फिर मां के पास लाए तो मां ने कहा कि मैं तेरी मुश्कें न खोलूंगी जब तक तू अपना दीन तर्क न करे, फिर अय्याश को धूप में बंधा हुवा डाल दिया और इन मुसीबतों में मुब्तला हो कर अय्याश ने उन का कहा मान लिया और अपना दीन तर्क कर दिया तो ह़ारिस बिन ज़ैद ने अय्याश को मलामत की और कहा तू इसी दीन पर था अगर येह ह़क़ था तो तूने ह़क़ को छोड़ दिया और अगर बातिल था तो तू बातिल दीन पर रहा, येह बात अय्याश को बड़ी ना गवार गुज़री और अय्याश ने कहा कि मैं तुझ को अकेला पाऊंगा तो ख़ुदा की क़सम ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। इस के बा'द अय्याश इस्लाम लाए और उन्हों ने मदीने हिजरत की और इन के बा'द ह़ारिस भी इस्लाम लाए और हिजरत कर के रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत में पहुंचे लेकिन उस रोज़ अय्याश मौजूद न थे न उन्हें ह़ारिस के इस्लाम की इत्तिलाअ़ हुई। क़ुबा के क़रीब अय्याश ने ह़ारिस को देख लिया और क़त्ल कर दिया तो लोगों ने कहा कि ऐ अय्याश ! तुम ने बहुत बुरा किया ह़ारिस इस्लाम ला चुके थे, इस पर अय्याश को बहुत अफ़्सोस हुवा और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया और कहा कि मुझे ता वक़्ते क़त्ल उन के इस्लाम लाने की ख़बर ही न हुई, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **257 :** मुसल्मान को अ़मदन क़त्ल करना सख़्त गुनाह और अशद कबीरा है। ह़दीस शरीफ़ में है कि दुन्या का हलाक होना **अल्लाह** के नज़्दीक एक मुसल्मान के क़त्ल होने से हलका है। फिर येह क़त्ल अगर ईमान की अ़दावत से हो या क़ातिल उस क़त्ल को ह़लाल जानता हो तो येह कुफ़्र भी है। **फ़ाएदा :** **خُلُود** मुद्दते दराज़ के मा'ना में भी मुस्ता'मल है और क़ातिल अगर सिर्फ़ दुन्यवी अ़दावत से मुसल्मान को क़त्ल करे और उस के क़त्ल को मुबाह़ न जाने जब भी इस की जज़ा मुद्दते दराज़ के लिये जहन्नम है। **फ़ाएदा :** **خُلُود** का लफ़्ज़ मुद्दते त़वीला के मा'ना में होता है तो क़ुरआने करीम में इस के साथ लफ़्ज़े **اَبَد** मज़्कूर नहीं होता और कुफ़्फ़ार के ह़क़ में **خُلُود** ब मा'ना दवाम (हमेशगी) आया है तो इस के साथ **اَبَد** भी ज़िक्र फ़रमाया गया है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मक़ीस बिन सुबाबा के ह़क़ में नाज़िल हुई, इस के भाई क़बीलए बनी नज्जार में मक़्तूल पाए गए थे और क़ातिल मा'लूम न था, बनी नज्जार ने ब हुक्मे रसूलुल्लाह ﷺ दियत अदा कर दी, इस के बा'द मक़ीस ने ब इग़वाए शैत़ान एक मुसल्मान को बे ख़बरी में क़त्ल कर दिया और दियत के ऊंट ले कर मक्का को चलता हो गया और मुरतद हो गया येह इस्लाम में पहला शख़्स है जो मुरतद हुवा। **258 :** या जिस में इस्लाम की अ़लामत व निशानी पाओ उस से हाथ रोको और जब तक उस का कुफ़्र साबित न हो जाए उस पर हाथ न डालो। अबू दावूद व तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम ﷺ जब कोई लश्कर रवाना फ़रमाते हुक्म देते कि अगर तुम मस्जिद देखो या अज़ान सुनो तो क़त्ल न करना। **मस्अला :** अक्सर फ़ुक़हा ने फ़रमाया कि अगर यहूदी या नसरानी येह कहे कि मैं मोमिन हूं तो उस को मोमिन न माना जाएगा क्यूं कि वोह अपने अ़क़ीदे ही को ईमान कहता है और अगर "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" कहे जब भी उस के मुसल्मान होने का हुक्म न किया जाएगा जब तक कि वोह अपने दीन से बेज़ारी का इज़्हार और उस के बातिल होने का ए'तिराफ़ न करे। इस से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी कुफ़्र में मुब्तला हो उस के लिये उस कुफ़्र से बेज़ारी और उस को कुफ़्र जानना ज़रूरी है। **259 :** या'नी जब तुम इस्लाम में दाख़िल हुए थे तो तुम्हारी ज़बान से कलिमए शहादत सुन कर तुम्हारे जानो माल मह़फ़ूज़ कर दिये गए थे और तुम्हारा इज़्हार बे ए'तिबार न क़रार दिया गया था, ऐसा ही इस्लाम में दाख़िल होने वालों के साथ तुम्हें भी सुलूक करना चाहिये। **शाने नुज़ूल :** येह आयत

إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾ لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ

बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है बराबर नहीं वोह मुसल्मान कि

الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ

बे उज़्र जिहाद से बैठ रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों

وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ

से जिहाद करते हैं[262] अल्लाह ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद वालों का दरजा बैठने वालों

دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى

से बड़ा किया[263] और अल्लाह ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया[264] और अल्लाह ने जिहाद वालों को[265] बैठने वालों पर

الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ

बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है उस की तरफ़ से दरजे और बख़्शिश और रहमत[266] और

اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है वोह लोग जिन की जान फ़िरिश्ते निकालते हैं इस हाल में कि वोह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे

قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ

उन से फ़िरिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते हैं हम ज़मीन में कमज़ोर थे[267] कहते हैं क्या

मिरदास बिन नहीक के हक़ में नाज़िल हुई जो अहले फ़िदक में से थे और इन के सिवा इन की क़ौम का कोई शख़्स इस्लाम न लाया था, उस क़ौम को ख़बर मिली कि लश्करे इस्लाम उन की तरफ़ आ रहा है तो क़ौम के सब लोग भाग गए मगर मिरदास ठहरे रहे, जब उन्हों ने दूर से लश्कर को देखा तो ब ई ख़याल कि मबादा (ऐसा न हो कि) कोई ग़ैर मुस्लिम जमाअ़त हो येह पहाड़ की चोटी पर अपनी बकरियां ले कर चढ़ गए, जब लश्कर आया और इन्हों ने अल्लाहु अक्बर के ना'रों की आवाज़ें सुनीं तो ख़ुद भी तक्बीर पढ़ते हुए उतर आए और कहने लगे "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ, اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" मुसल्मानों ने ख़याल किया कि अहले फ़िदक तो सब काफ़िर हैं येह शख़्स मुग़ालता देने के लिये इज़्हारे ईमान करता है, ब ई ख़याल उसामा बिन ज़ैद ने इन को क़त्ल कर दिया और बकरियां ले आए, जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में हाज़िर हुए तो तमाम माजरा अ़र्ज़ किया, हुज़ूर को निहायत रन्ज हुवा और फ़रमाया : तुम ने उस के सामान के सबब उस को क़त्ल कर दिया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उसामा को हुक्म दिया कि मक़्तूल की बकरियां उस के अहल को वापस करें। **260 :** कि तुम को इस्लाम पर इस्तिक़ामत बख़्शी और तुम्हारा मोमिन होना मश्हूर किया। **261 :** ताकि तुम्हारे हाथ से कोई ईमानदार क़त्ल न हो। **262 :** इस आयत में जिहाद की तरग़ीब है कि बैठ रहने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं, मुजाहिदीन के लिये बड़े दरजात व सवाब हैं और येह मस्अला भी साबित होता है कि जो लोग बीमारी या पीरी व ना ताक़ती या नाबीनाई या हाथ पाउं के नाकारा होने और उ़ज़्र की वज्ह से जिहाद में हाज़िर न हों वोह फ़ज़ीलत से महरूम न किये जाएंगे अगर निय्यते सालेह़ रखते हों। ह़दीसे बुख़ारी में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक से वापसी के वक़्त फ़रमाया : कुछ लोग मदीने में रह गए हैं, हम किसी घाटी या आबादी में नहीं चलते मगर वोह हमारे साथ होते हैं, उन्हें उ़ज़्र ने रोक लिया है। **263 :** जो उ़ज़्र की वज्ह से जिहाद में हाज़िर न हो सके अगर्चे वोह निय्यत का सवाब पाएंगे लेकिन जिहाद करने वालों को अ़मल की फ़ज़ीलत इस से ज़ियादा हासिल है। **264 :** जिहाद करने वाले हों या उ़ज़्र से रह जाने वाले। **265 :** बिग़ैर उ़ज़्र के **266 :** ह़दीस शरीफ़ में है अल्लाह तआ़ला ने मुजाहिदीन के लिये जन्नत में सो दरजे मुहय्या फ़रमाए, हर दो दरजों में इतना फ़ासिला है जैसे आस्मान व ज़मीन में। **267 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने कलिमए

تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते तो ऐसों का ठिकाना जहन्नम है

وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ

और बहुत बुरी जगह पलटने की[268] मगर वोह जो दबा लिये गए मर्द और औ़रतें

وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾ فَاُولٰٓئِكَ

और बच्चे जिन्हें न कोई तदबीर बन पड़े[269] न रास्ता जानें तो

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ

क़रीब है कि अल्लाह ऐसों को मुआ़फ़ फ़रमाए[270] और अल्लाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है और जो

يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ

अल्लाह की राह में घरबार छोड़ कर निकलेगा वोह ज़मीन में बहुत जगह और गुन्जाइश पाएगा

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ

और जो अपने घर से निकला[271] अल्लाह व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत

الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ ع وَ

ने आ लिया तो उस का सवाब अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया[272] और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है और

इस्लाम तो ज़बान से अदा किया मगर जिस ज़माने में हिजरत फ़र्ज़ थी उस वक़्त हिजरत न की और जब मुश्रिकीन जंगे बद्र में मुसल्मानों के मुक़ाबले के लिये गए तो येह लोग उन के साथ हुए और कुफ़्फ़ार के साथ ही मारे भी गए उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार के साथ होना और फ़र्ज़ हिजरत तर्क करना अपनी जान पर ज़ुल्म करना है। **268 मस्अला :** येह आयत दलालत करती है कि जो शख़्स किसी शहर में अपने दीन पर क़ाइम न रह सकता हो और येह जाने कि दूसरी जगह जाने से अपने फ़राइज़े दीनी अदा कर सकेगा उस पर हिजरत वाजिब हो जाती है। ह़दीस में है : जो शख़्स अपने दीन की हि़फ़ाज़त के लिये एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल हो अगर्चे एक बालिश्त ही क्यूं न हो उस के लिये जन्नत वाजिब हुई और उस को ह़ज़रते इब्राहीम और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रफ़ाक़त मुयस्सर होगी। **269 :** ज़मीने कुफ़्र से निकलने और हिजरत करने की। **270 :** कि वोह करीम है और करीम जो उम्मीद दिलाता है पूरी करता है और यक़ीनन मुआ़फ़ फ़रमाएगा। **271 शाने नुज़ूल :** इस से पहली आयत जब नाज़िल हुई तो जुन्दअ़ बिन ज़म्रतुल्लैसी ने इस को सुना येह बहुत बूढ़े शख़्स थे, कहने लगे कि मैं मुस्तस्ना लोगों में तो हूं नहीं क्यूं कि मेरे पास इतना माल है कि जिस से मदीनए त़य्यिबा हिजरत कर के पहुंच सकता हूं, ख़ुदा की क़सम ! मक्कए मुकर्रमा में अब एक रात न ठहरूंगा मुझे ले चलो। चुनान्चे, उन को चारपाई पर ले कर चले, मक़ामे तन्ईम में आ कर उन का इन्तिक़ाल हो गया, आख़िर वक़्त उन्हों ने अपना दाहना हाथ बाएं हाथ पर रखा और कहा : या रब ! येह तेरा और येह तेरे रसूल का, मैं उस पर बैअ़त करता हूं जिस पर तेरे रसूल ने बैअ़त की, येह ख़बर पा कर सह़ाबए किराम ने फ़रमाया : काश ! वोह मदीने पहुंचते तो उन का अज्र कितना बड़ा होता और मुश्रिक हंसे और कहने लगे कि जिस मत़लब के लिये निकले थे वोह न मिला, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **272 :** उस के वा'दे और उस के फ़ज़्लो करम से, क्यूं कि ब त़रीक़े इस्तिह़क़ाक़ कोई चीज़ उस पर वाजिब नहीं, उस की शान इस से आ़ली है। **मस्अला :** जो कोई नेकी का इरादा करे और उस को पूरा करने से आ़जिज़ हो जाए वोह उस त़ाअ़त का सवाब पाएगा। **मस्अला :** त़लबे इ़ल्म, जिहाद, ह़ज, ज़ियारत, त़ाअ़त, ज़ोहदो क़नाअ़त और रिज़्क़े ह़लाल की त़लब के लिये तर्के वत़न करना

اِذَا ضَرَبْتُمْ فِی الْاَرْضِ فَلَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ

जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बा'ज़ नमाज़ें क़स्र

الصَّلٰوةِ ۖۗ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ یَّفْتِنَكُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِیْنَ كَانُوْا

से पढ़ो[273] अगर तुम्हें अन्देशा हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा देंगे[274] बेशक कुफ़्फ़ार

لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِیْنًا ۝۱۰۱ وَ اِذَا كُنْتَ فِیْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ

तुम्हारे खुले दुश्मन हैं और ऐ महबूब जब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो[275] फिर नमाज़ में उन की इमामत करो[276] तो चाहिये कि

طَآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَ لْیَاْخُذُوْۤا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْیَكُوْنُوْا

उन में एक जमाअ़त तुम्हारे साथ हो[277] और वोह अपने हथियार लिये रहें[278] फिर जब वोह सज्दा कर लें[279] तो हट कर

مِنْ وَّرَآىِٕكُمْ ۪ وَ لْتَاْتِ طَآىِٕفَةٌ اُخْرٰى لَمْ یُصَلُّوْا فَلْیُصَلُّوْا مَعَكَ

तुम से पीछे हो जाएं[280] और अब दूसरी जमाअ़त आए जो उस वक़्त नमाज़ में शरीक न थी[281] अब वोह तुम्हारे मुक़्तदी हों

खुदा व रसूल की त़रफ़ हिजरत है, इस राह में मर जाने वाला अज्र पाएगा। **273 :** या'नी चार रक्अ़त वाली दो रक्अ़त। **274 मस्अला :** ख़ौफ़े कुफ़्फ़ार क़स्र के लिये शर्त़ नहीं। **ह़दीस :** या'ला बिन उमय्या ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से कहा कि हम तो अम्न में हैं, फिर हम क्यूं क़स्र करते हैं ? फ़रमाया : इस का मुझे भी तअ़ज्जुब हुवा था तो मैं ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : हुज़ूर ने फ़रमाया : कि तुम्हारे लिये येह **अल्लाह** की त़रफ़ से सदक़ा है तुम उस का सदक़ा क़बूल करो, इस से येह मस्अला मा'लूम होता है कि सफ़र में चार रक्अ़त वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जाइज़ नहीं है, क्यूं कि जो चीज़ें क़ाबिले तम्लीक नहीं हैं उन का सदक़ा इस्क़ाते मह़ज़ है, रद का एह़्तिमाल नहीं रखता, आयत के नुज़ूल के वक़्त सफ़र अन्देशे से ख़ाली न होते थे इस लिये आयत में इस का ज़िक्र बयाने ह़ाल है शर्ते क़स्र नहीं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की क़िराअत भी इस की दलील है जिस में "اَنْ یَّفْتِنَكُمْ" बिग़ैर "اِنْ خِفْتُمْ" के है, सह़ाबा का भी येही अ़मल था कि अम्न के सफ़रों में भी क़स्र फ़रमाते, जैसा कि ऊपर की ह़दीस से साबित होता है और अह़ादीस से भी येह साबित है और पूरी चार पढ़ने में **अल्लाह** तआ़ला के सदक़े का रद करना लाज़िम आता है लिहाज़ा क़स्र ज़रूरी है। **मुद्दते सफ़र :- मस्अला :** जिस सफ़र में क़स्र किया जाता है उस की अदना मुद्दत तीन रात दिन की मसाफ़त है जो ऊंट या पैदल की मुतवस्सित़ रफ़्तार से तै की जाती हो और इस की मिक़्दारें ख़ुश्की और दरिया और पहाड़ों में मुख़्तलिफ़ हो जाती हैं, जो मसाफ़त मुतवस्सित़ रफ़्तार से चलने वाले तीन रोज़ में तै करते हों उस के सफ़र में क़स्र होगा। **मस्अला :** मुसाफ़िर की जल्दी और देर का ए'तिबार नहीं ख़्वाह वोह तीन रोज़ की मसाफ़त तीन घन्टे में तै करे जब भी क़स्र होगा और अगर एक रोज़ की मसाफ़त तीन रोज़ से ज़ियादा में तै करे तो क़स्र न होगा, ग़रज़ ए'तिबार मसाफ़त का है। **275 :** या'नी अपने अस्ह़ाब में **276 :** इस में बा जमाअ़त नमाज़े ख़ौफ़ का बयान है। **शाने नुज़ूल :** जिहाद में जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم को मुशरिकीन ने देखा कि आप ने मअ़ तमाम अस्ह़ाब के नमाज़े ज़ोहर ब जमाअ़त अदा फ़रमाई तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि उन्हों ने इस वक़्त में क्यूं न ह़म्ला किया और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ही अच्छा मौक़अ़ था, बा'ज़ों ने उन में से कहा : इस के बा'द एक और नमाज़ है जो मुसल्मानों को अपने मां बाप से ज़ियादा प्यारी है या'नी नमाज़े अ़स्र। जब मुसल्मान उस नमाज़ के लिये खड़े हों तो पूरी क़ुव्वत से ह़म्ला कर के उन्हें क़त्ल कर दो, उस वक़्त ह़ज़रते जिब्रील नाज़िल हुए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! येह नमाज़े ख़ौफ़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "وَاِذَا كُنْتَ فِیْهِمْ" الآیه **277 :** या'नी ह़ाज़िरीन को दो जमाअ़तों में तक़्सीम कर दिया जाए, एक उन में से आप के साथ रहे आप उन्हें नमाज़ पढ़ाएं और एक जमाअ़त दुश्मन के मुक़ाबले में क़ाइम रहे। **278 :** या'नी जो लोग दुश्मन के मुक़ाबिल हों, और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि अगर जमाअ़त के नमाज़ी मुराद हों तो वोह लोग ऐसे हथियार लगाए रहें जिन से नमाज़ में कोई ख़लल न हो जैसे तलवार ख़न्जर वग़ैरा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि हथियार साथ रखने का हुक्म दोनों फ़रीक़ों के लिये है और येह एह़तियात के क़रीब है। **279 :** या'नी दोनों सज्दे कर के रक्अ़त पूरी कर लें। **280 :** ताकि दुश्मन के मुक़ाबले में खड़े हो सकें। **281 :** और अब तक दुश्मन के मुक़ाबिल थी।

وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ

और चाहिये कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिये रहें[282] काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने

عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ

हथियारों और अपने अस्बाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक दफ़्आ तुम पर झुक पड़ें[283]

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى

और तुम पर मुज़ायक़ा नहीं अगर तुम्हें मींह (बारिश) के सबब तक्लीफ़ हो या बीमार हो

اَنْ تَضَعُوْۤا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

कि अपने हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिये रहो[284] बेशक **अल्लाह** ने काफ़िरों के लिये ख़्वारी (ज़िल्लत)

عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝١٠٢ فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا

का अज़ाब तय्यार कर रखा है फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो **अल्लाह** की याद करो खड़े और बैठे

وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ

और करवटों पर लैटे[285] फिर जब मुत्मइन हो जाओ तो हस्बे दस्तूर नमाज़ क़ाइम करो बेशक नमाज़

282 : पनाह से ज़िरह वग़ैरा ऐसी चीज़ें मुराद हैं जिन से दुश्मन के हम्ले से बचा जा सके, इन का साथ रखना बहर हाल वाजिब है, जैसा कि क़रीब ही इर्शाद होगा "وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ" और हथियार साथ रखना मुस्तहब है। **नमाज़े ख़ौफ़ का मुख़्तसर तरीक़ा** येह है कि पहली जमाअ़त इमाम के साथ एक रक्अ़त पूरी कर के दुश्मन के मुक़ाबिल जाए और दूसरी जमाअ़त जो दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ी थी वोह आ कर इमाम के साथ दूसरी रक्अ़त पढ़े फिर फ़क़त इमाम सलाम फेरे और पहली जमाअ़त आ कर दूसरी रक्अ़त बिग़ैर क़िराअत के पढ़े और सलाम फेर दे और दुश्मन के मुक़ाबिल चली जाए फिर दूसरी जमाअ़त अपनी जगह आ कर एक रक्अ़त जो बाक़ी रही थी उस को क़िराअत के साथ पूरा कर के सलाम फेरे क्यूं कि येह लोग मस्बूक़ हैं और पहले लाहिक़। हज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का इसी तरह नमाज़े ख़ौफ़ अदा फ़रमाना मरवी है। हुज़ूर के बा'द भी नमाज़े ख़ौफ़ सहाबा पढ़ते रहे हैं। हालते ख़ौफ़ में दुश्मन के मुक़ाबिल इस एहतिमाम के साथ नमाज़ अदा करने से मा'लूम होता है कि जमाअ़त किस क़दर ज़रूरी है। **मसाइल :** हालते सफ़र में अगर सूरते ख़ौफ़ पेश आए तो इस का येह बयान हुवा लेकिन अगर मुक़ीम को ऐसी हालत पेश आए तो वोह चार रक्अ़त वाली नमाज़ों में हर हर जमाअ़त को दो दो रक्अ़त पढ़ाए और तीन रक्अ़त वाली नमाज़ में पहली जमाअ़त को दो रक्अ़त और दूसरी को एक। **283 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ से जब फ़ारिग़ हुए और दुश्मन के बहुत आदमियों को गिरिफ़्तार किया और अम्वाले ग़नीमत हाथ आए और कोई दुश्मन मुक़ाबिल बाक़ी न रहा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم क़ज़ाए हाजत के लिये जंगल में तन्हा तशरीफ़ ले गए तो दुश्मन की जमाअ़त में से ग़ुवैरिस बिन हर्स मुहारिबी येह ख़बर पा कर तलवार लिये हुए छुपा छुपा पहाड़ से उतरा और अचानक हज़रत के पास पहुंचा और तलवार खींच कर कहने लगा : या मुहम्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) अब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? हुज़ूर ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला, और दुआ़ फ़रमाई, जब ही उस ने हुज़ूर पर तलवार चलाने का इरादा किया औंधे मुंह गिर पड़ा और तलवार हाथ से छूट गई। हुज़ूर ने वोह तलवार ले कर फ़रमाया कि तुझ को मुझ से कौन बचाएगा ? कहने लगा : मेरा बचाने वाला कोई नहीं है। फ़रमाया : "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ तो तेरी तलवार तुझे दे दूंगा, उस ने इस से इन्कार किया और कहा कि इस की शहादत देता हूं कि मैं कभी आप से न लड़ूंगा और ज़िन्दगी भर आप के किसी दुश्मन की मदद न करूंगा, आप ने उस की तलवार उस को दे दी, कहने लगा : या मुहम्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) आप मुझ से बहुत बेहतर हैं। फ़रमाया : हां हमारे लिये येही सज़ावार है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हथियार और बचाव साथ रखने का हुक्म दिया गया (احمدی) **284 :** कि इस का साथ रखना हमेशा ज़रूरी है। **शाने नुज़ूल :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ज़ख़्मी थे और उस वक़्त हथियार रखना उन के लिये बहुत तक्लीफ़ और बार था, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और हालते उ़ज़्र में हथियार खोल रखने की इजाज़त दी गई। **285 :** या'नी ज़िक्रे इलाही की हर हाल में

كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾ وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ

मुसल्मानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है[286] और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो

اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ

अगर तुम्हें दुख पहुंचता है तो उन्हें भी दुख पहुंचता है जैसा तुम्हें पहुंचता है और तुम अल्लाह से

اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۰۴﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ

वोह उम्मीद रखते हो जो वोह नहीं रखते और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है[287] ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ

सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फ़ैसला करो[288] जिस तरह तुम्हें अल्लाह दिखाए[289] और दग़ा वालों

لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

की तरफ़ से न झगड़ो और अल्लाह से मुआफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

मेहरबान है और उन की तरफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को ख़ियानत में डालते हैं[290] बेशक अल्लाह

मुदावमत करो और किसी हाल में अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने हर फ़र्ज़ की एक हद मुअ़य्यन फ़रमाई सिवाए ज़िक्र के, इस की कोई हद न रखी। फ़रमाया : ज़िक्र करो खड़े, बैठे, करवटों पर लैटे, रात में हो या दिन में, ख़ुश्की हो या तरी में, सफ़र में और हज़र में, ग़ना में और फ़क़्र में, तन्दुरुस्ती और बीमारी में, पोशीदा और ज़ाहिर। **मस्अला :** इस से नमाज़ों के बा'द बिग़ैर फ़स्ल के कलिमए तौहीद पढ़ने पर इस्तिद्लाल किया जा सकता है जैसा कि मशाइख़ की आदत है और अहादीसे सहीहा से साबित है। **मस्अला :** ज़िक्र में तस्बीह, तहमीद, तह्लील, तक्बीर, सना, दुआ सब दाख़िल हैं। **286 :** तो लाज़िम है कि इस के अवक़ात की रिआयत की जाए। **287 शाने नुज़ूल :** उहुद की जंग से जब अबू सुफ़्यान और उन के साथी वापस हुए तो रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने जो सहाबा उहुद में हाज़िर हुए थे उन्हें मुश्रिकीन के तआ़क़ुब में जाने का हुक्म दिया। अस्हाब ज़ख़्मी थे उन्हों ने अपने ज़ख़्मों की शिकायत की, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **288 शाने नुज़ूल :** अन्सार के क़बीले बनी ज़फ़र के एक शख़्स तु'मह बिन उबैरिक़ ने अपने हमसाए क़तादा बिन नो'मान की ज़िरह चुरा कर आटे की बोरी में ज़ैद बिन समीन यहूदी के यहां छुपाई, जब ज़िरह की तलाश हुई और तु'मह पर शुबा किया गया तो वोह इन्कार कर गया और क़सम खा गया। बोरी फटी हुई थी और आटा उस में से गिरता जाता था, उस के निशान से लोग यहूदी के मकान तक पहुंचे और बोरी वहां पाई गई, यहूदी ने कहा कि तु'मह उस के पास रख गया है और यहूद की एक जमाअ़त ने इस की गवाही दी और तु'मह की क़ौम बनी ज़फ़र ने येह अ़ज़्म कर लिया कि यहूदी को चोर बताएंगे और इस पर क़सम खा लेंगे ताकि क़ौम रुस्वा न हो और उन की ख़्वाहिश थी कि रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم तु'मह को बरी कर दें और यहूदी को सज़ा दें, इसी लिये उन्हों ने हुज़ूर के सामने तु'मह के मुवाफ़िक़ और यहूदी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दी और इस गवाही पर कोई जर्ह व क़द्ह न हुई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। (इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ मुतअ़द्द रिवायात आई हैं और उन में बाहम इख़्तिलाफ़ात भी हैं) **289 :** और इल्म अ़ता फ़रमाए। इल्मे यक़ीनी को क़ुव्वते ज़ुहूर की वज्ह से रूयत से ता'बीर फ़रमाया। हज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हरगिज़ कोई न कहे जो अल्लाह ने मुझे दिखाया उस पर मैं ने फ़ैसला किया, क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने येह मन्सब ख़ास अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم को अ़ता फ़रमाया, आप की राय हमेशा सवाब होती है क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने हक़ाइक़ व हवादिस आप के पेशे नज़र कर दिये हैं और दूसरे लोगों की राय ज़न का मर्तबा रखती है। **290 :** मा'सियत का इरतिकाब कर के।

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝١٠٧ ۚ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا

नहीं चाहता किसी बड़े दग़ाबाज़ गुनहगार को आदमियों से छुपते हैं और **अल्लाह**

يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ

से नहीं छुपते[291] और **अल्लाह** उन के पास है[292] जब दिल में वोह बात तज्वीज़ करते हैं जो **अल्लाह**

الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝١٠٨ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ

को ना पसन्द है[293] और **अल्लाह** उन के कामों को घेरे हुए है सुनते हो येह जो तुम हो[294]

عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ

दुन्या की ज़िन्दगी में तो उन की त़रफ़ से झगड़े तो उन की त़रफ़ से कौन झगड़ेगा **अल्लाह** से क़ियामत के दिन या कौन

يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝١٠٩ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ

उन का वकील होगा और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर

يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١١٠ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا

अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो **अल्लाह** को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा और जो गुनाह कमाए तो

يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١١١ وَمَنْ يَّكْسِبْ

उस की कमाई उसी की जान पर पड़े और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है[295] और जो कोई

خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا

ख़ता या गुनाह कमाए[296] फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उस ने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह

مُّبِيْنًا ۝١١٢ ع وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ

उठाया और ऐ मह़बूब अगर **अल्लाह** का फ़ज़्लो रह़मत तुम पर न होता[297] तो उन में के कुछ लोग येह चाहते

اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ

कि तुम्हें धोका दे दें और वोह अपने ही आप को बहका रहे हैं[298] और तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे[299]

291 : ह़या नहीं करते 292 : उन का ह़ाल जानता है उस पर उन का कोई राज़ छुप नहीं सकता 293 : जैसे तु'मह की त़रफ़दारी में झूटी क़सम और झूटी शहादत। 294 : ऐ क़ौमे तु'मह ! 295 : किसी को दूसरे के गुनाह पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता। 296 : सग़ीरा या कबीरा 297 : तुम्हें नबी व मा'सूम कर के और राज़ों पर मुत्तलअ़ फ़रमा के 298 : क्यूं कि इस का वबाल उन्हीं पर है 299 : क्यूं कि **अल्लाह** ने आप को हमेशा के लिये मा'सूम किया है।

وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ

और अल्लाह ने तुम पर किताब[300] और हिक्मत उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे[301]

وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾ لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا

और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है[302] उन के अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं[303] मगर

مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ

जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुल्ह करने का और जो अल्लाह की रिज़ा

ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾ وَمَنْ

चाहने को ऐसा करे उसे अन्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे और जो

يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ

रसूल का ख़िलाफ़ करे बा'द इस के कि हक़ रास्ता उस पर खुल चुका और मुसल्मानों की राह से

الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ

जुदा राह चले हम उसे उस के हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की[304]

اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ

अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उस का कोई शरीक ठहराया जाए और इस से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है[305]

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ

और जो अल्लाह का शरीक ठहराए वोह दूर की गुमराही में पड़ा येह शिर्क वाले अल्लाह के

300 : या'नी क़ुरआने करीम **301 :** उमूरे दीन व अह़कामे शरअ़ व उ़लूमे ग़ैब। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को तमाम काएनात के उ़लूम अ़ता फ़रमाए और किताबो हिक्मत के असरारो ह़क़ाइक़ पर मुत्तलअ़ किया। येह मस्अला क़ुरआने करीम की बहुत आयात और अह़ादीसे कसीरा से साबित है। **302 :** कि तुम्हें इन ने'मतों के साथ मुमताज़ किया। **303 :** येह सब लोगों के ह़क़ में आ़म है। **304 :** येह आयत दलील है इस की, कि इज्माअ़ ह़ुज्जत है इस की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं जैसे कि किताब व सुन्नत की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं। (مدارک) और इस से साबित हुवा कि त़रीक़े मुस्लिमीन ही सिराते़ मुस्तक़ीम है। ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि जमाअ़त पर अल्लाह का हाथ है। एक और ह़दीस में है कि सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअ़त का इत्तिबाअ़ करो जो जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा हुवा वोह दोज़ख़ी है। इस से वाज़ेह़ है कि ह़क़ मज़्हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त है। **305 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا का क़ौल है कि येह आयत एक कुहन साल (उ़म्र रसीदा) आ'राबी के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या नबिय्यल्लाह!** मैं बूढ़ा हूं, गुनाहों में ग़र्क़ हूं, बजुज़ इस के कि जब से मैं ने अल्लाह को पहचाना और उस पर ईमान लाया उस वक़्त से कभी मैं ने उस के साथ शिर्क न किया और उस के सिवा किसी और को वली न बनाया और जुर्अत के साथ गुनाहों में मुब्तला न हुवा और एक पल भी मैं ने येह गुमान न किया कि मैं अल्लाह से भाग सकता हूं। शरमिन्दा हूं, ताइब हूं, मग़्फ़िरत चाहता हूं, अल्लाह के यहां मेरा क्या ह़ाल होगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, येह आयत नस्से सरीह़ है इस पर कि शिर्क से बख़्शा न जाएगा अगर मुश्रिक अपने शिर्क पर मरे, क्यूं कि येह साबित हो चुका है कि मुश्रिक जो अपने शिर्क से तौबा करे और ईमान लाए तो उस की तौबा व ईमान मक़्बूल है।

دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَ اِنْ یَّدْعُوْنَ اِلَّا شَیْطٰنًا مَّرِیْدًا ﴿۱۱۷﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ

सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औ़रतों को[306] और नहीं पूजते मगर सरकश शैत़ान को[307] जिस पर अल्लाह ने ला'नत की

وَ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِیْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۱۱۸﴾ وَّ لَاُضِلَّنَّهُمْ

और बोला[308] क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुवा ह़िस्सा लूंगा[309] क़सम है मैं ज़रूर उन्हें बहका दूंगा

وَ لَاُمَنِّیَنَّهُمْ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَیُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ

और ज़रूर उन्हें आरज़ूएं दिलाऊंगा[310] और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह चौपायों के कान चीरेंगे[311] और ज़रूर उन्हें कहूंगा

فَلَیُغَیِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ یَّتَّخِذِ الشَّیْطٰنَ وَلِیًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

कि वोह अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ बदल देंगे[312] और जो अल्लाह को छोड़ कर शैत़ान को दोस्त बनाए

فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِیْنًا ﴿۱۱۹﴾ؕ یَعِدُهُمْ وَ یُمَنِّیْهِمْ ؕ وَ مَا یَعِدُهُمُ

वोह सरीह़ टोटे (खुले नुक़्सान) में पड़ा शैत़ान उन्हें वा'दे देता है और आरज़ूएं दिलाता है[313] और शैत़ान उन्हें

الشَّیْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲۰﴾ اُولٰٓىٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۫ وَ لَا یَجِدُوْنَ عَنْهَا

वा'दे नहीं देता मगर फ़रेब के[314] उन का ठिकाना दोज़ख़ है और उस से बचने की

مَحِیْصًا ﴿۱۲۱﴾ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ

जगह न पाएंगे और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَ مَنْ

जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें अल्लाह का सच्चा वा'दा और

306 : या'नी मुअन्नस बुतों को जैसे लात, उ़ज़्ज़ा, मनात वग़ैरा, येह सब मुअन्नस हैं और अ़रब के हर क़बीले का बुत था जिस की वोह इबादत करते थे और उस को उस क़बीले की उन्सा (औ़रत) कहते थे, ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की क़िराअत में اِلَّا اَوْثَانًا और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) की क़िराअत में ''اِلَّا اُنُثًا'' आया है, इस से भी साबित होता है कि ''اُنَاث'' से मुराद बुत हैं। एक क़ौल येह भी है कि मुश्रिकीने अ़रब अपने बाति़ल मा'बूदों को ख़ुदा की बेटियां कहते थे और एक क़ौल येह है कि मुश्रिकीन बुतों को ज़ेवर वग़ैरा पहना कर औ़रतों की त़रह़ सजाते थे 307 : क्यूं कि उसी के इग़्वा (बहकाने) से बुत परस्ती करते हैं 308 : शैत़ान 309 : उन्हें अपना मुती़अ़ बनाऊंगा 310 : त़रह़ त़रह़ की, कभी उ़म्रे त़वील की, कभी लज़्ज़ाते दुन्या की, कभी ख़्वाहिशाते बाति़ला की, कभी और कभी और 311 : चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया कि ऊंटनी जब पांच मरतबा बियाह लेती तो वोह उस को छोड़ देते और उस से नफ़्अ़ उठाना अपने ऊपर ह़राम कर लेते और उस का दूध बुतों के लिये कर लेते और उस को बह़ीरा कहते थे, शैत़ान ने उन के दिल में येह डाल दिया था कि ऐसा करना इबादत है। 312 : मर्दों का औ़रतों की शक्ल में ज़नाना लिबास पहनना, औ़रतों की त़रह़ बातचीत और ह़रकात करना, जिस्म को गोद कर सुरमा या सिन्दूर (सुर्ख़ रंग का एक पाउडर जिसे हिन्दू औ़रतें मांग में लगाती हैं) वग़ैरा जिल्द में पैवस्त कर के नक़्शो निगार बनाना, बालों में बाल जोड़ कर बड़ी बड़ी जटें बनाना भी इस में दाख़िल है। 313 : और दिल में त़रह़ त़रह़ की उम्मीदें और वस्वसे डालता है ताकि इन्सान गुमराही में पड़े 314 : कि जिस चीज़ के नफ़्ए़ और फ़ाएदे की तवक़्क़ोअ़ दिलाता है दर ह़क़ीक़त उस में सख़्त ज़रर और नुक़्सान होता है।

اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِؕ

अल्लाह से ज़ियादा किस की बात सच्ची काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है[315] और न किताब वालों की हवस पर[316]

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا

जो बुराई करेगा[317] उस का बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न

نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

मददगार[318] और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औरत और हो मुसल्मान[319]

فَاُولٰٓىٕكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ

तो वोह जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जाएगा और उस से बेहतर

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

किस का दीन जिस ने अपना मुंह अल्लाह के लिये झुका दिया[320] और वोह नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर चला[321]

حَنِيْفًاؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

जो हर बातिल से जुदा था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया[322] और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में है

وَمَا فِي الْاَرْضِؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾ؑ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ

और जो कुछ ज़मीन में और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है[323] और तुम से औरतों के बारे

فِي النِّسَآءِؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ

में फ़तवा पूछते हैं[324] तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें उन का फ़तवा देता है और वोह जो तुम पर क़ुरआन में पढ़ा जाता है

315 : जो तुम ने सोच रखा है कि बुत तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाएंगे। **316 :** जो कहते कि हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, हमें आग चन्द रोज़ से ज़ियादा न जलाएगी, यहूदो नसारा का येह ख़याल भी मुश्रिकीन की त़रह बातिल है। **317 :** ख़्वाह मुश्रिकीन में से हो या यहूदो नसारा में से **318 :** येह वईद कुफ़्फ़ार के लिये है **319 मस्अला :** इस में इशारा है कि आ'माल दाख़िले ईमान नहीं। **320 :** या'नी इताअ़त व इख़्लास इख़्तियार किया **321 :** जो मिल्लते इस्लाम के मुवाफ़िक़ है। हज़रते इब्राहीम की शरीअ़त व मिल्लत सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्लत में दाख़िल है और ख़ुसूसिय्याते दीने मुहम्मदी कि इस के इ़लावा हैं, दीने मुहम्मदी का इत्तिबाअ़ करने से शरअ़ व मिल्लते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का इत्तिबाअ़ हासिल होता है, चूंकि अ़रब और यहूदो नसारा सब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इन्तिसाब (निस्बत रखने) पर फ़ख़्र करते थे और आप की शरीअ़त इन सब को मक़्बूल थी और शरए मुहम्मदी इस पर हावी है तो इन सब को दीने मुहम्मदी में दाख़िल होना और इस को क़बूल करना लाज़िम है। **322 :** ख़ुल्लत सफ़ाए मुवद्दत (सच्ची महब्बत) और ग़ैर से इन्क़िताअ़ को कहते हैं, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات येह औसाफ़ रखते थे, इस लिये आप को ख़लील कहा गया, एक क़ौल येह भी है कि ख़लील उस मुहिब को कहते हैं जिस की महब्बत कामिला हो और उस में किसी क़िस्म का ख़लल और नुक़्सान न हो, येह मा'ना भी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات में पाए जाते हैं। तमाम अम्बिया के जो कमालात हैं सब सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हासिल हैं। हुज़ूर अल्लाह के ख़लील भी हैं जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है। और हबीब भी जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि मैं अल्लाह का हबीब हूं और येह फ़ख़्रन नहीं कहता। **323 :** और वोह उस के इहात़ए इल्मो क़ुदरत में है। **इहात़ा बिल इ़ल्म** येह है कि किसी शै के लिये जितने वुजूह हो सकते हैं उन में से कोई वज्ह इ़ल्म से ख़ारिज न हो। **324 : शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब के लोग औ़रत और छोटे बच्चों को मय्यित के माल का

فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ

उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उन का मुक़र्रर है[325] और उन्हें निकाह़ में भी

تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

लाने से मुंह फेरते हो और कमज़ोर[326] बच्चों के बारे में और येह कि यतीमों के ह़क़ में

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾ وَاِنِ

इन्साफ़ पर क़ाइम रहो[327] और तुम जो भलाई करो तो **अल्लाह** को उस की ख़बर है और अगर

امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ

कोई औरत अपने शोहर की ज़ियादती या बे रग़बती का अन्देशा करे[328] तो उन पर गुनाह नहीं कि

يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ

आपस में सुल्ह़ कर लें[329] और सुल्ह़ ख़ूब है[330] और दिल लालच के फन्दे में हैं[331]

وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۸﴾ وَلَنْ

और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो[332] तो **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है[333] और तुम से

تَسْتَطِيْعُوْۤا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ

हरगिज़ न हो सकेगा कि औरतों को बराबर रखो चाहे कितनी ही ह़िर्स करो[334] तो येह तो न हो कि एक त़रफ़ पूरा

वारिस नहीं क़रार देते थे, जब आयते मीरास नाज़िल हुई तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! क्या औरत और छोटे बच्चे वारिस होंगे ? आप ने उन को इस आयत से जवाब दिया। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ने फ़रमाया कि यतीमों के औलिया का दस्तूर येह था कि अगर यतीम लड़की साह़िबे मालो जमाल होती तो उस से थोड़े महर पर निकाह़ कर लेते और अगर हुस्नो माल न रखती तो उसे छोड़ देते और अगर हुस्ने सूरत न रखती और होती मालदार तो उस से निकाह़ न करते और इस अन्देशे से दूसरे के निकाह़ में भी न देते कि वोह माल में ह़िस्सेदार हो जाएगा। **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयतें नाज़िल फ़रमा कर उन्हें इन आ़दतों से मन्अ़ फ़रमाया। **325 :** मीरास से **326 :** यतीम **327 :** उन के पूरे हुक़ूक़ उन को दो। **328 : ज़ियादती** तो इस त़रह़ कि उस से अ़लाह़दा रहे, खाने पहनने को न दे या कमी करे या मारे या बद ज़बानी करे और **ए'राज़** येह कि मह़ब्बत न रखे, बोलचाल तर्क कर दे या कम कर दे। **329 :** और इस सुल्ह़ के लिये अपने हुक़ूक़ का बार कम करने पर राज़ी हो जाएं। **330 :** और ज़ियादती और जुदाई दोनों से बेहतर है। **331 :** हर एक अपनी राह़तो आसाइश चाहता और अपने ऊपर कुछ मशक़्क़त गवारा कर के दूसरे की आसाइश को तरजीह़ नहीं देता। **332 :** और बा वुजूद ना मरग़ूब होने के अपनी मौजूदा औरतों पर सब्र करो और ब रिआ़यते ह़क़्क़े सोह़बत उन के साथ अच्छा बरताव करो और उन्हें ईज़ा व रन्ज देने से और झगड़ा पैदा करने वाली बातों से बचते रहो और सोह़बतो मुआ़शरत में नेक सुलूक करो और येह जानते रहो कि वोह तुम्हारे पास अमानतें हैं **333 :** वोह तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देगा। **334 :** या'नी अगर कई बीबियां हों तो येह तुम्हारी मक़्दिरत (त़ाक़त) में नहीं कि हर अम्र में तुम उन्हें बराबर रखो और किसी अम्र में किसी को किसी पर तरजीह़ न होने दो न मैलो मह़ब्बत में न ख़्वाहिशो रग़बत में न इशरतो इख़्तिलात़ में न नज़रो तवज्जोह में, तुम कोशिश कर के येह तो कर नहीं सकते, लेकिन अगर इतना तुम्हारे मक़्दूर में नहीं है और इस वज्ह से इन तमाम पाबन्दियों का बार तुम पर नहीं रखा गया और मह़ब्बते क़ल्बी और मैले त़ब्ई जो तुम्हारा इख़्तियारी नहीं है इस में बराबरी करने का तुम्हें हुक्म नहीं दिया गया।

الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَ اِنْ تُصْلِحُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

झुक जाओ कि दूसरी को अधर (दरमियान) में लटक्ती छोड़ दो[335] और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो तो बेशक **अल्लाह**

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۲۹﴾ وَ اِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ كَانَ

बख़्शने वाला मेहरबान है और अगर वोह दोनों[336] जुदा हो जाएं तो **अल्लाह** अपनी कशाइश से तुम में हर एक को दूसरे से बे नियाज़ कर देगा[337] और

اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿۱۳۰﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ

अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और बेशक

وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ اِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि **अल्लाह** से डरते रहो[338]

وَ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

और अगर कुफ़्र करो तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[339] और **अल्लाह**

غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿۱۳۱﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ

बे नियाज़ है[340] सब ख़ूबियों वाला और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** काफ़ी है

وَكِيْلًا ﴿۱۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَ يَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

कारसाज़ (काम बनाने वाला) ऐ लोगो वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए[341] और औरों को ले आए और **अल्लाह** को

عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ

इस की क़ुदरत है जो दुन्या का इन्आम चाहे तो **अल्लाह** ही के पास दुन्या व आख़िरत

الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

दोनों का इन्आम है[342] और **अल्लाह** सुनता देखता है ऐ ईमान वालो

335 : बल्कि येह ज़रूर है कि जहां तक तुम्हें क़ुदरतो इख़्तियार है वहां तक यक्सां बरताव करो, महब्बत इख़्तियारी शै नहीं तो बातचीत, हुस्ने अख़्लाक़, खाने, पहनने, पास रखने और ऐसे उमूर में बराबरी करना इख़्तियारी है, इन उमूर में दोनों के साथ यक्सां सुलूक करना लाज़िम व ज़रूरी है। **336 :** ज़न व शो (मियां बीवी) बाहम सुल्ह़ न करें और वोह जुदाई ही बेहतर समझें और ख़ुलअ़ के साथ तफ़्रीक़ हो जाए, या मर्द औरत को त़लाक़ दे कर उस का महर और इद्दत का नफ़्क़ा अदा कर दे और इस त़रह़ वोह **337 :** और हर एक को बेहतर बदल अ़त़ा फ़रमाएगा **338 :** उस की फ़रमां बरदारी करो और उस के हुक्म के ख़िलाफ़ न करो, तौह़ीद व शरीअ़त पर क़ाइम रहो। इस आयत से मा'लूम हुवा कि तक़्वा और परहेज़ गारी का हुक्म क़दीम है, तमाम उम्मतों को इस की ताकीद होती रही है। **339 :** तमाम जहान उस के फ़रमां बरदारों से भरा है, तुम्हारे कुफ़्र से उस का क्या ज़रर। **340 :** तमाम ख़ल्क़ से और उन की इ़बादत से। **341 :** मा'दूम कर दे **342 :** मा'ना येह हैं कि जिस को अपने अ़मल से दुन्या मक़्सूद हो और उस की मुराद इतनी है जो **अल्लाह** उस को दे देता है और सवाबे आख़िरत से वोह मह़रूम रहता है और जिस ने अ़मल रिज़ाए इलाही और सवाबे आख़िरत के लिये किया तो **अल्लाह** दुन्या व आख़िरत दोनों में सवाब देने वाला

كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ

इन्साफ़ पर खूब क़ाइम हो जाओ अल्लाह के लिये गवाही देते चाहे इस में तुम्हारा अपना नुक़्सान हो या मां बाप का

وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا

या रिश्तेदारों का जिस पर गवाही दो वोह ग़नी हो या फ़क़ीर हो[343] बहर हाल अल्लाह को इस का सब से ज़ियादा इख़्तियार है तो ख़्वाहिश के पीछे

الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا

न जाओ कि हक़ से अलग पड़ो और अगर तुम हेर फेर करो[344] या मुंह फेरो[345] तो अल्लाह को तुम्हारे

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

कामों की ख़बर है[346] ऐ ईमान वालो ईमान रखो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर[347]

وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ

और उस किताब पर जो अपने इन रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले

قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓىٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

उतारी[348] और जो न माने अल्लाह और उस के फ़िरिश्तों और किताबों और रसूलों और क़ियामत को[349]

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ

तो वोह ज़रूर दूर की गुमराही में पड़ा बेशक वोह लोग जो ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाए फिर

كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ

काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े[350] अल्लाह हरगिज़ न उन्हें बख़्शे[351] न उन्हें राह

है तो जो शख़्स अल्लाह से फ़क़त दुन्या का तालिब हो वोह नादान ख़सीस और कम हिम्मत है। **343 :** किसी की रिआयत व तरफ़ दारी में इन्साफ़ से न हटो और कोई क़राबत व रिश्ता हक़ कहने में मुख़िल न होने पाए। **344 :** हक़ के बयान में और जैसा चाहिये न कहो **345 :** अदाए शहादत से **346 :** जैसे अमल होंगे वैसा बदला देगा। **347 :** या'नी ईमान पर साबित रहो, येह मा'ना इस सूरत में हैं कि "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" का ख़िताब मुसल्मानों से हो और अगर ख़िताब यहूदो नसारा से हो तो मा'ना येह हैं कि ऐ बा'ज़ किताबों बा'ज़ रसूलों पर ईमान लाने वालो तुम्हें येह हुक्म है, और अगर ख़िताब मुनाफ़िक़ीन से हो तो मा'ना येह हैं कि ऐ ईमान का ज़ाहिरी दा'वा करने वालो इख़्लास के साथ ईमान ले आओ, यहां रसूल से सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और किताब से कुरआने पाक मुराद है। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अब्दुल्लाह बिन सलाम और असद व उसैद और सा'लबा बिन क़ैस और सलाम व सलमा व यामीन के हक़ में नाज़िल हुई, येह लोग मोमिनीने अहले किताब में से थे, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : हम आप पर और आप की किताब पर और हज़रते मूसा पर और तौरैत पर और उज़ैर पर ईमान लाते हैं और इस के सिवा बाक़ी किताबों और रसूलों पर ईमान न लाएंगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर और कुरआन पर और इस से पहली हर किताब पर ईमान लाओ, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **348 :** या'नी कुरआने पाक पर और उन तमाम किताबों पर ईमान लाओ जो अल्लाह तआला ने कुरआन से पहले अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाईं। **349 :** या'नी इन में से किसी एक का भी इन्कार करे, कि एक रसूल और एक किताब का इन्कार भी सब का इन्कार है। **350 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने

سَبِيۡلًا ﴿١٣٧﴾ بَشِّرِ الۡمُنٰفِقِيۡنَ بِاَنَّ لَهُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمَا ﴿١٣٨﴾ الَّذِيۡنَ يَتَّخِذُوۡنَ

दिखाए खुश ख़बरी दो मुनाफ़िक़ों को कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है वोह जो मुसल्मानों को

الۡكٰفِرِيۡنَ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ؕ اَيَبۡتَغُوۡنَ عِنۡدَهُمُ

छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं[352] क्या उन के पास इ़ज़्ज़त

الۡعِزَّةَ فَاِنَّ الۡعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيۡعًا ﴿١٣٩﴾ وَقَدۡ نَزَّلَ عَلَيۡكُمۡ فِى الۡكِتٰبِ

ढूंडते हैं तो इ़ज़्ज़त तो सारी **अल्लाह** के लिये है[353] और बेशक **अल्लाह** तुम पर किताब[354] में उतार चुका

اَنۡ اِذَا سَمِعۡتُمۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكۡفَرُ بِهَا وَيُسۡتَهۡزَاُ بِهَا فَلَا تَقۡعُدُوۡا

कि जब तुम **अल्लाह** की आयतों को सुनो कि उन का इन्कार किया जाता और उन की हंसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ

مَعَهُمۡ حَتّٰى يَخُوۡضُوۡا فِىۡ حَدِيۡثٍ غَيۡرِهٖۤ ۖ اِنَّكُمۡ اِذًا مِّثۡلُهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न बैठो जब तक वोह और बात में मश्ग़ूल न हों[355] वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो[356] बेशक **अल्लाह**

جَامِعُ الۡمُنٰفِقِيۡنَ وَالۡكٰفِرِيۡنَ فِىۡ جَهَنَّمَ جَمِيۡعَا ﴿١٤٠﴾ الَّذِيۡنَ يَتَرَبَّصُوۡنَ

काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों सब को जहन्नम में इकठ्ठा करेगा वोह जो तुम्हारी ह़ालत तका (देखा)

بِكُمۡ ۚ فَاِنۡ كَانَ لَكُمۡ فَتۡحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوۡۤا اَلَمۡ نَكُنۡ مَّعَكُمۡ ۖ وَ

करते हैं तो अगर **अल्लाह** की त़रफ़ से तुम को फ़त्ह़ मिले कहें क्या हम तुम्हारे साथ न थे[357] और

اِنۡ كَانَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ نَصِيۡبٌ ۙ قَالُوۡۤا اَلَمۡ نَسۡتَحۡوِذۡ عَلَيۡكُمۡ وَنَمۡنَعۡكُمۡ

अगर काफ़िरों का ह़िस्सा हो तो उन से कहें क्या हमें तुम पर क़ाबू न था[358] और हम ने तुम्हें

अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई, जो ह़ज़रते मूसा علیہ السلام पर ईमान लाए फिर बछड़ा पूज कर काफ़िर हुए, फिर इस के बा'द ईमान लाए फिर ह़ज़रते ईसा علیہ السلام और इन्जील का इन्कार कर के काफ़िर हो गए, फिर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم और क़ुरआन का इन्कार कर के और कुफ़्र में बढ़े। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, कि वोह ईमान लाए, फिर काफ़िर हो गए ईमान के बा'द, फिर ईमान लाए या'नी उन्हों ने अपने ईमान का इज़्हार किया ताकि उन पर मोमिनीन के अह़काम जारी हों, फिर कुफ़्र में बढ़े या'नी कुफ़्र पर उन की मौत हुई। **351 :** जब तक कुफ़्र पर रहें और कुफ़्र पर मरें क्यूं कि कुफ़्र बख़्शा नहीं जाता, मगर जब कि काफ़िर तौबा करे और ईमान लाए जैसा कि फ़रमाया : "قُلۡ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّنۡتَهُوۡا يُغۡفَرۡ لَهُمۡ مَّا قَدۡ سَلَفَ" (तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा) **352 :** येह मुनाफ़िक़ीन का ह़ाल है जिन का ख़याल था कि इस्लाम ग़ालिब न होगा और इस लिये वोह कुफ़्फ़ार को साहिबे क़ुव्वत और शौकत समझ कर उन से दोस्ती करते थे और उन से मिलने में इ़ज़्ज़त जानते थे, बा वुजूदे कि कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती मम्नूअ़ और उन के मिलने से त़लबे इ़ज़्ज़त बात़िल। **353 :** और उस के लिये जिस को वोह इ़ज़्ज़त दे जैसे कि अम्बिया व मोमिनीन। **354 :** या'नी क़ुरआन **355 :** कुफ़्फ़ार की हम नशीनी और उन की मजलिसों में शिर्कत करना ऐसे ही और बे दीनों और गुमराहों की मजलिसों की शिर्कत और उन के साथ याराना व मुसाह़बत मम्नूअ़ फ़रमाई गई। **356 :** इस से साबित हुवा कि कुफ़्र के साथ राज़ी होने वाला भी काफ़िर है। **357 :** इस से उन की मुराद ग़नीमत में शिर्कत करना और ह़िस्सा चाहना है। **358 :** कि हम तुम्हें क़त्ल करते गिरिफ़्तार करते, मगर हम ने येह कुछ नहीं किया।

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ

मुसल्मानों से बचाया[359] तो अल्लाह तुम सब में[360] क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा[361] और अल्लाह काफ़िरों को

اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ

मुसल्मानों पर कोई राह न देगा[362] बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ

हैं[363] और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों[364] तो हारे जी से[365] लोगों का

النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ

दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा[366] बीच में डग मगा रहे हैं[367]

لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ

न इधर के न उधर के[368] और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो उस के लिये कोई राह न

سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ

पाएगा ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ

دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

मुसल्मानों के सिवा[369] क्या येह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिये सरीह़ हुज्जत कर लो[370]

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ

बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बक़े में हैं[371] और तू हरगिज़ उन का कोई

359 : और उन्हें त़रह़ त़रह़ के ह़ीलों से रोका और उन के राज़ों पर तुम्हें मुत्त़लअ़ किया तो अब हमारे इस सुलूक की क़द्र करो और हिस्सा दो। (येह मुनाफ़िक़ों का ह़ाल है) 360 : ऐ ईमानदारो और मुनाफ़िक़ो ! 361 : कि मोमिनीन को जन्नत अ़त़ा करेगा और मुनाफ़िक़ों को दाख़िले जहन्नम करेगा। 362 : या'नी काफ़िर न मुसल्मानों को मिटा सकेंगे न हुज्जत में ग़ालिब आ सकेंगे। उ़लमा ने इस आयत से चन्द मसाइल मुस्तम्बित़ किये हैं (1) काफ़िर मुसल्मान का वारिस नहीं। (2) काफ़िर मुसल्मान के माल पर इस्तीला पा कर मालिक नहीं हो सकता। (3) काफ़िर, मुसल्मान ग़ुलाम के ख़रीदने का मजाज़ नहीं (4) ज़िम्मी के इवज़ मुसल्मान क़त्ल न किया जाएगा। (جمل) 363 : क्यूं कि ह़क़ीक़त में तो अल्लाह को फ़रेब देना मुम्किन नहीं। 364 : मोमिनीन के साथ 365 : क्यूं कि ईमान तो है नहीं जिस से ज़ौक़े त़ाअ़त और लुत्फ़े इबादत ह़ासिल हो, मह़ज़ रियाकारी है, इस लिये मुनाफ़िक़ को नमाज़ बार मा'लूम होती है। 366 : इस त़रह़ कि मुसल्मानों के पास हुए तो नमाज़ पढ़ ली और अ़लाह़दा हुए तो नदारद (छोड़ दी)। 367 : कुफ़्र व ईमान के 368 : न ख़ालिस मोमिन न खुले काफ़िर। 369 : इस आयत में मुसल्मानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार को दोस्त बनाना मुनाफ़िक़ीन की ख़स्लत है, तुम इस से बचो। 370 : अपने निफ़ाक़ की और मुस्तह़िक़े जहन्नम हो जाओ। 371 : मुनाफ़िक़ का अ़ज़ाब काफ़िर से भी ज़ियादा है क्यूं कि वोह दुन्या में इज़्हारे इस्लाम कर के मुजाहिदीन के हाथों से बचा रहा है और कुफ़्र के बा वुजूद मुसल्मानों को मुग़ालत़ा देना और इस्लाम के साथ इस्तिहज़ा (मज़ाक़) करना इस का शेवा रहा है।

نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا

मददगार न पाएगा मगर वोह जिन्हों ने तौबा की[372] और संवरे (अपनी इस्लाह़ की) और **अल्लाह** की रस्सी मज़बूत़ थामी और अपना दीन ख़ालिस

دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ

अल्लाह के लिये कर लिया तो येह मुसल्मानों के साथ हैं[373] और अन्क़रीब **अल्लाह** मुसल्मानों को

اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ

बड़ा सवाब देगा और **अल्लाह** तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम ह़क़ मानो और ईमान लाओ

وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

और **अल्लाह** है सिला देने वाला जानने वाला

---

372 : निफ़ाक़ से 373 : दारैन में।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का ए'लान करना[374] मगर मज़्लूम से[375] और **अल्लाह**

سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ

सुनता जानता है अगर तुम कोई भलाई अ़लानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दर गुज़रो तो बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ

अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला क़ुदरत वाला है[376] वोह जो **अल्लाह** और उस के रसूलों को नहीं मानते और

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ

चाहते हैं कि **अल्लाह** से उस के रसूलों को जुदा कर दें[377] और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाए और

نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۵۰﴾ اُولٰٓئِكَ

किसी के मुन्किर हुए[378] और चाहते हैं कि ईमान व कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें यही

هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾ وَ الَّذِيْنَ

हैं ठीक ठीक काफ़िर[379] और हम ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है और वोह जो

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ لَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ

अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी पर ईमान में फ़र्क़ न किया उन्हें अ़न्क़रीब

374 : या'नी किसी के पोशीदा हाल का ज़ाहिर करना। इस में ग़ीबत भी आ गई चुग़ल ख़ोरी भी। आ़क़िल वोह है जो अपने ऐ़बों को देखे, एक क़ौल येह भी है कि बुरी बात से गाली मुराद है। **375 :** कि उस को जाइज़ है कि ज़ालिम के ज़ुल्म बयान करे, वोह चोर या ग़ासिब की निस्बत कह सकता है कि इस ने मेरा माल चुराया, ग़स्ब किया। **शाने नुज़ूल :** एक शख़्स एक क़ौम का मेहमान हुवा था, उन्हों ने अच्छी त़रह उस की मेज़बानी न की, जब वोह वहां से निकला तो उन की शिकायत करता निकला। इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के बाब में नाज़िल हुई, एक शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की शान में ज़बान दराज़ी करता रहा, आप ने कई बार सुकूत किया मगर वोह बाज़ न आया तो एक मरतबा आप ने उस को जवाब दिया, इस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم उठ खड़े हुए, ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم येह शख़्स मुझ को बुरा कहता रहा तो हुज़ूर ने कुछ न फ़रमाया मैं ने एक मरतबा जवाब दिया तो हुज़ूर उठ गए, फ़रमाया : एक फ़िरिश्ता तुम्हारी त़रफ़ से जवाब दे रहा था जब तुम ने जवाब दिया तो फ़िरिश्ता चला गया और शैत़ान आ गया। इस के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **376 :** तुम उस के बन्दों से दर गुज़र करो वोह तुम से दर गुज़र फ़रमाएगा। **ह़दीस :** तुम ज़मीन वालों पर रह़्म करो आस्मान वाला तुम पर रह़्म करेगा। **377 :** इस त़रह़ कि **अल्लाह** पर ईमान लाएं और उस के रसूलों पर न लाएं। **378 : शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई, कि यहूद ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर ईमान लाए और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया और नसारा ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र किया। **379 :** बा'ज़ रसूलों पर ईमान लाना उन्हें कुफ़्र से नहीं बचाता क्यूं कि एक नबी का इन्कार भी तमाम अम्बिया के इन्कार के बराबर है।

يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ

अल्लाह उन के सवाब देगा[380] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है[381] ऐ महबूब ! अहले किताब[382] तुम

الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰۤى اَكْبَرَ

से सुवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से एक किताब उतार दो[383] तो वोह तो मूसा से इस से भी बड़ा

مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْۤا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ

सुवाल कर चुके[384] कि बोले हमें **अल्लाह** को अ़लानिया (ज़ाहिर कर के) दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उन के गुनाहों पर फिर

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ

बछड़ा ले बैठे[385] बा'द इस के कि रोशन आयतें[386] उन के पास आ चुकीं तो हम ने येह मुआ़फ़ फ़रमा दिया[387]

وَ اٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۵۳﴾ وَ رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ

और हम ने मूसा को रोशन ग़लबा दिया[388] फिर हम ने उन पर तूर को ऊंचा किया उन से अ़ह्द लेने को

وَ قُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ

और उन से फ़रमाया कि दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और उन से फ़रमाया कि हफ़्ते में ह़द से न बढ़ो[389]

وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَ كُفْرِهِمْ

और हम ने उन से गाढ़ा (पुख़्ता) अ़ह्द लिया[390] तो उन की कैसी बद अ़ह्दियों के सबब हम ने उन पर ला'नत की और इस लिये कि वोह

380 : मुरतकिबे कबीरा भी इस में दाख़िल है क्यूं कि वोह **अल्लाह** और उस के सब रसूलों पर ईमान रखता है। "मो'तज़िला" साहिबे कबीरा (कबीरा गुनाह करने वाले) के ख़ुलूदे अ़ज़ाब (हमेशा जहन्नम में रहने) का अ़क़ीदा रखते हैं। इस आयत से उन के इस अ़क़ीदे का बुत़लान साबित हुवा। **381 मस्अला :** येह आयत सिफ़ाते फ़े'लिया (जैसे कि मग़्फ़िरत व रह़मत) के क़दीम होने पर दलालत करती है क्यूं कि हुदूस के क़ाइल को कहना पड़ता है कि **अल्लाह** तआ़ला अज़ल में ग़फ़ूर व रह़ीम नहीं था फिर हो गया (مَعَاذَاللّٰه)। उस के इस क़ौल को येह आयत बात़िल करती है। **382 :** बराहे सरकशी **383 :** यक्बारगी। **शाने नुज़ूल :** यहूद में से का'ब बिन अशरफ़, फ़िन्ह़ास बिन आ़ज़ूरा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि अगर आप नबी हैं तो हमारे पास आस्मान से यक्बारगी किताब लाइये जैसा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरैत लाए थे। येह सुवाल उन का त़लबे हिदायत व इत्तिबाअ़ के लिये न था बल्कि सरकशी व बग़ावत से था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **384 :** या'नी येह सुवाल उन का कमाले जह्ल (इन्तिहाई जहालत के सबब) से है और इस क़िस्म की जहालतों में उन के बाप दादा भी गिरिफ़्तार थे। अगर सुवाल त़लबे रुश्द (हिदायत त़लब करने) के लिये होता तो पूरा कर दिया जाता मगर वोह तो किसी ह़ाल में ईमान लाने वाले न थे। **385 :** उस को पूजने लगे **386 :** तौरैत और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात जो **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिद्क़ पर वाज़ेहुद्दलालह (वाज़ेह़ दलील) थे और बा वुजूदे कि तौरैत हम ने यक्बारगी ही नाज़िल की थी लेकिन "خُوئے بد را بہانہ بسیار" (बद ख़स्लत के लिये बहाने बहुत) बजाए इत़ाअ़त करने के उन्हों ने ख़ुदा के देखने का सुवाल किया। **387 :** जब उन्हों ने तौबा की। इस में हुज़ूर के ज़माने के यहूदियों के लिये तवक़्क़ोअ़ है कि वोह भी तौबा करें तो **अल्लाह** उन्हें भी अपने फ़ज़्ल से मुआ़फ़ फ़रमाए। **388 :** ऐसा तसल्लुत़ अ़ता फ़रमाया कि जब आप ने बनी इसराईल को तौबा के लिये ख़ुद उन के अपने क़त्ल का हुक्म दिया वोह इन्कार न कर सके और उन्हों ने इत़ाअ़त की। **389 :** या'नी मछली का शिकार वग़ैरा जो अ़मल इस रोज़ तुम्हारे लिये ह़लाल नहीं, न करो। सूरए बक़र में इन तमाम अह़काम की तफ़्सीलें गुज़र चुकीं। **390 :** कि जो उन्हें हुक्म दिया गया है वोह करें और जिस की मुमानअ़त की गई है उस से बाज़ रहें, फिर उन्हों ने इस अ़ह्द को तोड़ा।

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ

आयाते इलाही के मुन्किर हुए[391] और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते[392] और उन के इस कहने पर कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं[393] बल्कि

طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۪﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ

अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े और इस लिये कि उन्हों ने कुफ़्र किया[394]

وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۙ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ

और मरयम पर बड़ा बोहतान उठाया (बांधा) और उन के इस कहने पर कि हम ने मसीह

عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ

ईसा बिन मरयम **अल्लाह** के रसूल को शहीद किया[395] और है येह कि उन्हों ने न उसे क़त्ल किया न उसे सूली दी बल्कि उन के लिये उस की शबीह (शक्लो सूरत) का

لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ

एक बना दिया गया[396] और वोह जो उस के बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उस की त़रफ़ से शुबहे में पड़े हुए हैं[397] उन्हें उस की कुछ भी ख़बर नहीं[398]

اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ

मगर येही गुमान की पैरवी[399] और बेशक उन्हों ने उस को क़त्ल न किया[400] बल्कि **अल्लाह** ने उसे अपनी त़रफ़ उठा लिया[401] और

اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ

अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है कोई किताबी ऐसा नहीं जो उस की मौत से पहले

قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ

उस पर ईमान न लाए[402] और क़ियामत के दिन वोह उन पर गवाह होगा[403] तो यहूदियों के बड़े

391 : जो अम्बिया के सिद्क़ पर दलालत करते थे, जैसे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात। **392 :** अम्बिया का क़त्ल करना तो नाहक़ है ही, किसी त़रह ह़क़ हो ही नहीं सकता, लेकिन यहां मक़्सूद येह है कि उन के ज़ो'म में भी उन्हें इस का कोई इस्तिह़्क़ाक़ (ह़क़ ह़ासिल) न था। **393 :** लिहाज़ा कोई पन्द (नसीह़त) व वा'ज़ कारगर नहीं हो सकता। **394 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ भी। **395 :** यहूद ने दा'वा किया कि उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़त्ल कर दिया और नसारा ने इस की तस्दीक़ की थी, **अल्लाह** तआ़ला ने इन दोनों की तक्ज़ीब फ़रमा दी। **396 :** जिस को उन्हों ने क़त्ल किया और ख़याल करते रहे कि येह ह़ज़रते ईसा हैं, बा वुजूदे कि उन का येह ख़याल ग़लत़ था। **397 :** और यक़ीनी नहीं कह सकते कि वोह मक़्तूल कौन है। बा'ज़े कहते हैं कि येह मक़्तूल ईसा हैं, बा'ज़ कहते हैं कि येह चेहरा तो ईसा का है और जिस्म ईसा का नहीं, लिहाज़ा येह वोह नहीं। इसी तरद्दुद (शशो पन्ज) में हैं। **398 :** जो ह़क़ीक़ते ह़ाल है। **399 :** और अट्कलें दौड़ाना। **400 :** उन का दा'वाए क़त्ल झूटा है। **401 :** सह़ीह़ो सालिम ब सूए आस्मान (आस्मान की त़रफ़)। **अह़ादीस** में इस की तफ़्सीलें वारिद हैं, सूरए आले इमरान में इस वाक़िए का ज़िक्र गुज़र चुका है। **402 :** इस आयत की तफ़्सीर में चन्द क़ौल हैं : **एक क़ौल** येह है कि यहूदो नसारा को अपनी मौत के वक़्त जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते नज़र आते हैं तो वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आते हैं जिन के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया था और उस वक़्त का ईमान मक़्बूल व मो'तबर नहीं। **दूसरा क़ौल** येह है कि क़रीबे क़ियामत जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से नुज़ूल फ़रमाएंगे उस वक़्त के तमाम अहले किताब उन पर ईमान ले आएंगे, उस वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह के मुत़ाबिक़ हुक्म करेंगे, और इसी दीन के अइम्मा में से एक इमाम की ह़ैसिय्यत में होंगे और नसारा ने इन की निस्बत

الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بِصَدِّهِمْ عَنْ

ज़ुल्म के[404] सबब हम ने वोह बा'ज़ सुथरी चीज़ें कि उन के लिये ह़लाल थीं[405] उन पर ह़राम फ़रमा दीं और इस लिये कि उन्हों ने बहुतों

سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿۱۶۰﴾ وَّ اَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَ قَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَ اَكْلِهِمْ

(बहुत से लोगों) को अल्लाह की राह से रोका और इस लिये कि वोह सूद लेते हालां कि वोह इस से मन्अ़ किये गए थे और लोगों का

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾

माल नाह़क़ खा जाते[406] और उन में जो काफ़िर हुए हम ने उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ

हां जो उन में इ़ल्म में पक्के[407] और ईमान वाले हैं वोह ईमान लाते हैं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी

اِلَيْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَ الْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَ الْمُؤْتُوْنَ

त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा[408] और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात

الزَّكٰوةَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا

देने वाले और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब

عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ اِنَّاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ كَمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّ النَّبِيّٖنَ مِنْۢ

देंगे बेशक ऐ मह़बूब हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़्य भेजी जैसे वह़्य नूह़ और उस के बा'द पैग़म्बरों को

بَعْدِهٖ ۚ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ

भेजी[409] और हम ने इब्राहीम और इस्माईल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और इन के बेटों

जो गुमान बांध रखे हैं उन का इब्त़ाल (रद) फ़रमाएंगे, दीने मुह़म्मदी की इशाअ़त करेंगे, उस वक़्त यहूदो नसारा को या तो इस्लाम क़बूल करना होगा या क़त्ल कर डाले जाएंगे। जिज़्या क़बूल करने का हुक्म ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नुज़ूल करने के वक़्त तक है। **तीसरा क़ौल** येह है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हर किताबी अपनी मौत से पहले सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ले आएगा। **चौथा क़ौल** येह है कि अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आएगा लेकिन वक़्ते मौत का ईमान मक़्बूल नहीं, नाफ़ेअ़ न होगा। **403 :** या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام यहूद पर तो येह गवाही देंगे कि उन्हों ने आप की तक्ज़ीब की और आप के ह़क़ में ज़बाने त़ा'न दराज़ की और नसारा पर येह कि उन्हों ने आप को रब ठहराया और ख़ुदा का शरीक गर्दाना और अहले किताब में से जो लोग ईमान ले आएं उन के ईमान की भी आप शहादत देंगे। **404 :** नक़्ज़े अ़ह्द (वा'दा ख़िलाफ़ी) वग़ैरा जिन का ऊपर आयात में ज़िक्र हो चुका। **405 :** जिन का सूरए अन्आ़म की आयह "وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا" में बयान है। **406 :** रिश्वत वग़ैरा ह़राम त़रीक़ों से। **407 :** मिस्ल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब के, जो इ़ल्मे रासिख़ (ज़बर दस्त इ़ल्म) और अ़क़्ले साफ़ी (या'नी शुकूको शुबुहात से पाक अ़क़्ल) और बसीरते कामिला रखते थे। उन्हों ने अपने इ़ल्म से दीने इस्लाम की ह़क़ीक़त को जाना और सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **408 :** पहले अम्बिया पर। **409 : शाने नुज़ूल :** यहूदो नसारा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जो येह सुवाल किया था कि उन के लिये आस्मान से यक्बारगी किताब नाज़िल की जाए तो वोह आप की नुबुव्वत पर ईमान लाएं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन पर हुज्जत क़ाइम की गई कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۚ﴿۱۶۳﴾

और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान को वह्य की और हम ने दावूद को ज़बूर अ़ता फ़रमाई

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ

और रसूलों को जिन का ज़िक्र आगे हम तुम से फ़रमा चुके[410] और उन को जिन का ज़िक्र तुम से

عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۚ﴿۱۶۴﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ

न फ़रमाया[411] और अल्लाह ने मूसा से ह़क़ीक़तन कलाम फ़रमाया[412] रसूल ख़ुश ख़बरी देते[413] और डर सुनाते[414]

لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا

कि रसूलों के बा'द अल्लाह के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे[415] और अल्लाह ग़ालिब

حَكِيْمًا ﴿۱۶۵﴾ لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَ

हिक्मत वाला है लेकिन ऐ महबूब अल्लाह इस का गवाह है जो उस ने तुम्हारी त़रफ़ उतारा वोह उस ने अपने इ़ल्म से उतारा है और

الْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ﴿۱۶۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ

फ़िरिश्ते गवाह हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया[416] और

صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۶۷﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

अल्लाह की राह से रोका[417] बेशक वोह दूर की गुमराही में पड़े बेशक जिन्हों

के सिवा ब कसरत अम्बिया हैं जिन में से ग्यारह के अस्माए शरीफ़ा यहां आयत में बयान फ़रमाए गए हैं, अहले किताब इन सब की नुबुव्वत को मानते हैं, इन सब ह़ज़रात में से किसी पर यक्बारगी किताब नाज़िल न हुई तो जब इस वज्ह से इन की नुबुव्वत तस्लीम करने में अहले किताब को कुछ पसो पेश न हुवा तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत तस्लीम करने में क्या उ़ज़्र है और मक़्सूद रसूलों के भेजने से ख़ल्क़ की हिदायत और इन को अल्लाह तआ़ला की तौहीद व मा'रिफ़त का दर्स देना और ईमान की तक्मील और त़रीक़े इ़बादत की ता'लीम है, किताब के मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर नाज़िल होने से येह मक़्सद बर वज्हे अतम ह़ासिल होता है कि थोड़ा थोड़ा ब आसानी दिल नशीन होता चला जाता है। इस हिक्मत को न समझना और ए'तिराज़ करना कमाले हमाक़त (इन्तिहाई बे वुक़ूफ़ी) है। **410 :** क़ुरआन शरीफ़ में नाम बनाम फ़रमा चुके हैं। **411 :** और अब तक उन के अस्मा की तफ़्सील क़ुरआने पाक में ज़िक्र नहीं फ़रमाई गई। **412 :** तो जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बे वासित़ा कलाम फ़रमाना दूसरे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की नुबुव्वत में क़ादेह़ (ऐब लगाने वाला) नहीं जिन से इस त़रह़ कलाम नहीं फ़रमाया गया, ऐसे ही ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर किताब का यक्बारगी नाज़िल होना दूसरे अम्बिया की नुबुव्वत में कुछ भी क़ादेह़ नहीं हो सकता। **413 :** सवाब की ईमान लाने वालों को **414 :** अ़ज़ाब का कुफ़्र करने वालों को **415 :** और येह कहने का मौक़अ़ न हो कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम ज़रूर उन का हुक्म मानते और अल्लाह के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार होते। इस आयत से येह मस्अला मा'लूम होता है कि अल्लाह तआ़ला रसूलों की बि'सत से क़ब्ल ख़ल्क़ पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता जैसा दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया : "وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا" (और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें)। और येह मस्अला भी साबित होता है कि मा'रिफ़ते इलाही बयाने शरअ़ व ज़बाने अम्बिया ही से ह़ासिल होती है अ़क़्ले मह़ज़ (सिर्फ़ अ़क़्ल) से इस मन्ज़िल तक पहुंचना मुयस्सर नहीं होता। **416 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इन्कार कर के। **417 :** हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त छुपा कर और लोगों के दिलों में शुबा डाल कर (येह ह़ाल यहूद का है।)

كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾ اِلَّا

ने कुफ़्र किया[418] और हद से बढ़े[419] **अल्लाह** हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा[420] न उन्हें कोई राह दिखाए मगर

طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾

जहन्नम का रास्ता कि उस में हमेशा हमेशा रहेंगे और येह **अल्लाह** को आसान है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا

ऐ लोगो तुम्हारे पास येह रसूल[421] हक़ के साथ तुम्हारे रब की त़रफ़ से तशरीफ़ लाए तो ईमान लाओ

لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

अपने भले को और अगर तुम कुफ़्र करो[422] तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और **अल्लाह**

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا

इल्मो हिक्मत वाला है ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़ियादती न करो[423] और **अल्लाह** पर

عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

न कहो मगर सच[424] मसीह़ ईसा मरयम का बेटा[425] **अल्लाह** का रसूल ही है

وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ قف وَ

और उस का एक कलिमा[426] कि मरयम की त़रफ़ भेजा और उस के यहां की एक रूह़ तो **अल्लाह** और उस के रसूलों पर ईमान लाओ[427] और

418 : **अल्लाह** के साथ **419 :** किताबे इलाही में हुज़ूर के औसाफ़ बदल कर और आप की नुबुव्वत का इन्कार कर के **420 :** जब तक वोह कुफ़्र पर क़ाइम रहें या कुफ़्र पर मरें। **421 :** सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **422 :** और सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत का इन्कार करो तो इस में उन का कुछ ज़रर नहीं और **अल्लाह** तुम्हारे ईमान से बे नियाज़ है। **423 शाने नुज़ूल :** येह आयत नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जिन के कई फ़िर्क़े हो गए थे और हर एक हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत जुदागाना कुफ़्री अक़ीदा रखता था। नस्तूरी आप को ख़ुदा का बेटा कहते थे, मरकूसी कहते कि वोह तीन में के तीसरे हैं। और इस कलिमे की तौजीहात में भी इख़्तिलाफ़ था : बा'ज़ तीन उक़्नूम मानते थे और कहते थे कि बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस। बाप से ज़ात, बेटे से ईसा, रूहुल क़ुदुस से इन में हुलूल करने वाली ह़यात मुराद लेते थे। तो उन के नज़्दीक "इलाह" तीन थे और इस तीन को एक बताते थे "तौह़ीद फ़ित्तस्लीस" (तीनों के मज्मूए को ख़ुदा समझने) और "तस्लीस फ़ित्तौह़ीद" (तीनों में से हर एक को ख़ुदा समझने) के चक्कर में गिरिफ़्तार थे। बा'ज़ कहते थे कि ईसा नासूतिय्यत (बशरिय्यत) और उलूहिय्यत (मा'बूदिय्यत) के जामेअ हैं, मां की त़रफ़ से इन में "नासूतिय्यत" आई, और बाप की त़रफ़ से "उलूहिय्यत" आई, تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (**अल्लाह** इन की बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है)। येह फ़िर्क़ा बन्दी नसारा में एक यहूदी ने पैदा की जिस का नाम बौलुस था और उस ने उन्हें गुमराह करने के लिये इस क़िस्म के अक़ीदों की ता'लीम की। इस आयत में अहले किताब को हिदायत की गई कि वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाब में इफ़्रातो तफ़रीत़ (कमी ज़ियादती) से बाज़ रहें, ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा भी न कहें और इन की तन्क़ीस (शान में कमी) भी न करें। **424 :** **अल्लाह** का शरीक और बेटा भी किसी को न बनाओ और हुलूल व इत्तिहाद (या'नी हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ात में ख़ुदा के उतर आने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام व हज़रते मरयम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का मिल कर एक ख़ुदा होने) का ऐब भी मत लगाओ और इस ए'तिक़ादे हक़ पर रहो कि **425 :** है और इस मोह़तरम के लिये इस के सिवा कोई नसब नहीं **426 :** कि "कुन" फ़रमाया और वोह बिग़ैर बाप और बिग़ैर नुत्फ़े के मह़ज़ अम्रे इलाही से पैदा हो गए। **427 :** और तस्दीक़

لَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ

तीन न कहो[428] बाज़ रहो अपने भले को अल्लाह तो एक ही ख़ुदा है[429] पाकी उसे

اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى

इस से कि उस के कोई बच्चा हो उसी का माल है जो आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[430] और अल्लाह काफ़ी

بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۷۱﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا

कारसाज़ (काम बनाने वाला) है हरगिज़ मसीह अल्लाह का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता[431] और न

الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ

मुक़र्रब फ़िरिश्ते और जो अल्लाह की बन्दगी से नफ़रत और तकब्बुर करे

فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿۱۷۲﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

तो कोई दम जाता है कि वोह उन सब को अपनी त़रफ़ हांकेगा[432] तो वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا

उन की मज़दूरी उन्हें भरपूर दे कर अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़ियादा देगा और वोह जिन्हों ने[433] नफ़रत

وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और अल्लाह के सिवा न अपना कोई

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۷۳﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ

हिमायती पाएंगे न मददगार ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से वाज़ेह़ दलील आई[434] और

اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿۱۷۴﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا

हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन नूर उतारा[435] तो वोह जो अल्लाह पर ईमान लाए और उस की रस्सी मज़बूत़

करो कि अल्लाह वाहिद है, बेटे और औलाद से पाक है और उस के रसूलों की तस्दीक़ करो और इस की, कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अल्लाह के रसूलों में से हैं **428 :** जैसा कि नसारा का अ़क़ीदा है कि वोह कुफ़्रे मह़्ज़ (ख़ालिस कुफ़्र) है **429 :** कोई उस का शरीक नहीं। **430 :** और वोह सब का मालिक है और जो मालिक हो वोह बाप नहीं हो सकता। **431** **शाने नुज़ूल :** नसाराए नजरान का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, उस ने हुज़ूर से कहा कि आप ह़ज़रते ईसा को ऐब लगाते हैं कि वोह अल्लाह के बन्दे हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा के लिये येह आ़र की बात नहीं। इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। **432 :** या'नी आख़िरत में इस तकब्बुर की सज़ा देगा। **433 :** इबादते इलाही बजा लाने से **434 :** दलीले वाज़ेह़ से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी मुराद है जिन के सिद्क़ पर इन के मो'जिज़े शाहिद हैं और मुन्किरीन की अ़क़्लों को ह़ैरान कर देते हैं। **435 :** या'नी क़ुरआने पाक।

بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا

थामी तो अन्क़रीब **अल्लाह** उन्हें अपनी रह़मत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा[436] और उन्हें अपनी त़रफ़ सीधी राह

مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا

दिखाएगा ऐ मह़बूब तुम से फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें कलालह[437] में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द

هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

का इन्तिक़ाल हो जो बे औलाद है[438] और उस की एक बहन हो तो तर्के में से उस की बहन का आधा है[439] और मर्द अपनी बहन का वारिस होगा

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ

अगर बहन की औलाद न हो[440] फिर अगर दो बहनें हों तर्के में उन का दो तिहाई

وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

और अगर भाई बहन हों मर्द भी और औ़रतें भी तो मर्द का ह़िस्सा दो औ़रतों के बराबर

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ ع

अल्लाह तुम्हारे लिये साफ़ बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और **अल्लाह** हर चीज़ जानता है

सूरए माइदह मदनिय्या है, इस में एक सो बीस आयात और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह़रबान रह़म वाला

436 : और जन्नत व दरजाते आ़लिया अ़त़ा फ़रमाएगा। **437 :** "कलालह" उस को कहते हैं जो अपने बा'द न बाप छोड़े न औलाद। **438 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से मरवी है कि वोह बीमार थे तो रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم मअ़ ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ عنہ के इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते जाबिर बेहोश थे, ह़ज़रत ने वुज़ू फ़रमा कर आबे वुज़ू उन पर डाला, उन्हें इफ़ाक़ा हुवा आंख खोल कर देखा तो ह़ुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हैं, अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! मैं अपने माल का क्या इन्तिज़ाम करूं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई (بخاری و مسلم), अबू दावूद की रिवायत में येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने ह़ज़रते जाबिर رضی اللہ عنہ से फ़रमाया : ऐ जाबिर ! मेरे इ़ल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है। इस ह़दीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए। **मस्अला :** बुज़ुर्गों का आबे वुज़ू तबर्रुक है और इस को ह़ुसूले शिफ़ा के लिये इस्ति'माल करना सुन्नत है। **मस्अला :** मरीज़ों की इ़यादत सुन्नत है। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم को **अल्लाह** तआ़ला ने उ़लूमे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाए हैं, इस लिये ह़ुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم को मा'लूम था कि ह़ज़रते जाबिर की मौत इस मरज़ में नहीं है। **439 :** अगर वोह बहन सगी या बाप शरीक हो। **440 :** या'नी अगर बहन बे औलाद मरी और भाई रहा तो वोह भाई उस के कुल माल का वारिस होगा। **1 :** सूरए माइदह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई सिवाए आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ" के, येह आयत रोज़े अ़रफ़ा, ह़ज्जतुल वदाअ़ में नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने ख़ुत़्बे में इस को पढ़ा इस में एक सो बीस आयतें और बारह ह़ज़ार चार सो चौंसठ ह़र्फ़ हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ۬ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ

ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अ़ह्द) पूरे करो[2] तुम्हारे लिये ह़लाल हुए बे ज़बान मवेशी

اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ

मगर वोह जो आगे सुनाया जाएगा तुम को[3] लेकिन शिकार ह़लाल न समझो जब तुम एह़राम में हो[4] बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है

مَا يُرِيْدُ ۝۱ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ

जो चाहे ऐ ईमान वालो ह़लाल न ठहरा लो **अल्लाह** के निशान[5] और न अदब

الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْیَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ

वाले महीने[6] और न ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां और न[7] जिन के गले में अ़लामतें आवेज़ां[8] और न उन का माल आबरू जो इ़ज़्ज़त वाले घर का क़स्द कर के आएं[9]

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

अपने रब का फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी चाहते और जब एह़राम से निकलो तो शिकार कर सकते हो[10] और तुम्हें किसी

شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ

क़ौम की अ़दावत कि उन्हों ने तुम को मस्जिदे ह़राम से रोका था ज़ियादती करने पर न उभारे[11]

2 : उक़ूद के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं : इब्ने जरीर ने कहा कि अहले किताब को ख़ित़ाब फ़रमाया गया है, मा'ना येह हैं कि ऐ मोमिनीने अहले किताब ! मैं ने कुतुबे मुतक़द्दिमा (साबिक़ा आस्मानी किताबों) में सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप की इत़ाअ़त करने के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम से अ़ह्द लिये हैं वोह पूरे करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ख़ित़ाब मोमिनीन को है, इन्हें उ़क़ूद के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन उ़क़ूद से मुराद ईमान और वोह अ़ह्द हैं जो ह़राम व ह़लाल के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक में लिये गए। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस में मोमिनीन के बाहमी मुआ़हदे मुराद हैं। **3 :** या'नी जिन की हुरमत शरीअ़त में वारिद हुई उन के सिवा तमाम चौपाए तुम्हारे लिये ह़लाल किये गए। **4 मस्अला :** कि ख़ुश्की का शिकार ह़ालते एह़राम में ह़राम है और दरियाई शिकार जाइज़ है जैसा कि इस सूरत के आख़िर में आएगा। **5 :** उस के दीन के मआ़लिम (अरकाने ह़ज या अह़कामे इस्लाम)। मा'ना येह हैं कि जो चीज़ें **अल्लाह** ने फ़र्ज़ कीं और जो मन्अ़ फ़रमाईं सब की हुरमत का लिह़ाज़ रखो। **6 :** माह-हाए ह़ज जिन में ''क़िताल'' ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मम्नूअ़ था और इस्लाम में भी येह हुक्म बाक़ी रहा। **7 :** वोह क़ुरबानियां। **8 :** अ़रब के लोग क़ुरबानियों के गले में ह़रम शरीफ़ के अश्जार की छालों वग़ैरा से गुलूबन्द बुन कर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि येह ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां हैं और इन से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करें **9 :** ह़ज व उ़मरह करने के लिये। **शाने नुज़ूल :** शुरैह़ बिन हिन्द एक मश्हूर शक़ी (बद बख़्त) था, वोह मदीनए त़य्यिबा में आया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगा कि आप ख़ल्क़े ख़ुदा को क्या दा'वत देते हैं ? फ़रमाया : अपने रब के साथ ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक़ करने और नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात देने की, कहने लगा बहुत अच्छी दा'वत है, मैं अपने सरदारों से राय ले लूं तो मैं भी इस्लाम लाऊंगा और उन्हें भी लाऊंगा, येह कह कर चला गया। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस के आने से पहले ही अपने अस्ह़ाब को ख़बर दे दी थी कि क़बीलए रबीआ़ का एक शख़्स आने वाला है जो शैत़ानी ज़बान बोलेगा। उस के चले जाने के बा'द ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िर का चेहरा ले कर आया और ग़ादिर व बद अ़ह्द की त़रह़ पीठ फेर कर गया, येह इस्लाम लाने वाला नहीं। चुनान्चे उस ने ग़दर (धोका) किया और मदीने शरीफ़ से निकलते हुए वहां के मवेशी और अम्वाल ले गया। अगले साल यमामा के ह़ाजियों के साथ तिजारत का कसीर सामान और ह़ज की क़िलादा पोश (हार व गुलूबन्द पहनाई हुई) क़ुरबानियां ले कर ब इरादए ह़ज निकला, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, राह में सह़ाबा ने शुरैह़ को देखा और चाहा कि मवेशी उस से वापस ले लें, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि जिस की ऐसी शान हो उस से तअ़र्रुज़ न चाहिये। **10 :** येह बयाने इबाह़त है कि एह़राम के बा'द शिकार मुबाह़ हो जाता है। **11 :** या'नी अहले मक्का ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप के अस्ह़ाब को रोज़े

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪

और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो[12]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ

और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है तुम पर ह़राम है[13] मुर्दार

وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَ

और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और

الْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا

बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें

ذَكَّيْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ

तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान (बातिल मा'बूदों के मख़्सूस निशानात) पर ज़ब्ह़ किया गया और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह

فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

का काम है आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई[14] तो उन से न डरो

हुदैबिया उ़म्रे से रोका, उन के इस मुआनिदाना (दुश्मनाना) फ़े'ल का तुम इन्तिक़ाम न लो। **12 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया जिस का हुक्म दिया गया उस का बजा लाना ''بِرّ'' (नेकी) और जिस से मन्अ़ फ़रमाया गया उस को तर्क करना ''तक़्वा'' और जिस का हुक्म दिया गया उस को न करना ''اِثْم'' (गुनाह) और जिस से मन्अ़ किया गया उस को करना ''عدوان'' (ज़ियादती) कहलाता है। **13 :** आयत ''اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ'' में जो इस्तिस्ना ज़िक्र फ़रमाया गया था यहां उस का बयान है और ग्यारह चीज़ों की हुरमत का ज़िक्र किया गया है **एक** मुर्दार या'नी जिस जानवर के लिये शरीअ़त में ज़ब्ह़ का हुक्म हो और वोह बे ज़ब्ह़ मर जाए। **दूसरे** बहने वाला ख़ून। **तीसरे** सुअर का गोश्त और इस के तमाम अज्ज़ा। **चौथे** वोह जानवर जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते थे, और जिस जानवर को ज़ब्ह़ तो सिर्फ़ अल्लाह के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे अवक़ात में वोह ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ मन्सूब रहा हो वोह ह़राम नहीं जैसे कि अ़ब्दुल्लाह की गाय, अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर, या वोह जानवर जिन से औलिया की अरवाह़ को सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो उन को ग़ैरे वक़्ते ज़ब्ह़ में औलिया के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़ब्ह़ उन का फ़क़त़ अल्लाह के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए वोह ह़लाल व त़य्यिब हैं। इस आयत में सिर्फ़ उसी को ह़राम फ़रमाया गया है जिस को ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो, वहाबी जो ज़ब्ह़ की क़ैद नहीं लगाते वोह आयत के मा'ना में ग़लती करते हैं और उन का क़ौल तमाम तफ़ासीरे मो'तबरा के ख़िलाफ़ है और ख़ुद आयत उन के मा'ना को बनने नहीं देती क्यूं कि ''مَآ اُهِلَّ بِهٖ'' को अगर वक़्ते ज़ब्ह़ के साथ मुक़य्यद न करें तो ''اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ'' का इस्तिस्ना इस को लाह़िक़ होगा और वोह जानवर जो ग़ैरे वक़्ते ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा के नाम से मौसूम रहा हो वोह ''اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ'' से ह़लाल होगा। ग़रज़ वहाबी को आयत से सनद लाने की कोई सबील नहीं। **पांचवां** गला घोंट कर मारा हुवा जानवर। **छटे** वोह जानवर जो लाठी, पथ्थर, ढेले, गोली, छर्रे या'नी बिग़ैर धारदार चीज़ से मारा गया हो। **सातवें** जो गिर कर मरा हो ख़्वाह पहाड़ से या कूंएं वग़ैरा में। **आठवें** वोह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वोह उस के सदमे से मर गया हो। **नवें** वोह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा खाया हो और वोह उस के ज़ख़्म की तक्लीफ़ से मर गया हो। लेकिन अगर येह जानवर मर न गए हों और बा'द ऐसे वाक़िआ़त के ज़िन्दा बच रहे हों फिर तुम उन्हें बा क़ाइदा ज़ब्ह़ कर लो तो वोह ह़लाल हैं। **दसवें** वोह जो किसी थान पर इ़बादतन ज़ब्ह़ किया गया हो जैसे कि अहले जाहिलिय्यत ने का'बे शरीफ़ के गिर्द तीन सो साठ पथ्थर नस्ब किये थे जिन की वोह इ़बादत करते और उन के लिये ज़ब्ह़ करते थे और इस ज़ब्ह़ से उन की ता'ज़ीम व तक़र्रुब की निय्यत करते थे। **ग्यारहवें** हिस्सा और हुक्म मा'लूम करने के लिये पांसा (क़ुरआ़) डालना, ज़मानए जाहिलिय्यत के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह़ वग़ैरा काम दरपेश होते तो वोह तीन तीरों से पांसे डालते और जो निकलता उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते और इस को हुक्मे इलाही जानते, इन सब की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **14 :** येह आयत ह़ज्जतुल वदाअ़ में अ़रफ़ा के रोज़ जो जुमुआ़ को था बा'दे अ़स्र नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन पर ग़ालिब आने से मायूस हो गए।

وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया[15] और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी[16]

وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ

और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया[17] तो जो भूक प्यास की शिद्दत में नाचार (मजबूर) हो यूं कि

مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ③ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَاۤ اُحِلَّ

गुनाह की त़रफ़ न झुके[18] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है ऐ मह़बूब तुम से पूछते हैं कि उन के लिये क्या

لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ

ह़लाल हुवा तुम फ़रमा दो कि ह़लाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीज़ें[19] और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा (सिखा) लिये[20] उन्हें शिकार पर दौड़ाते

تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّاۤ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَ

जो इ़ल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उस में से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वोह मार कर तुम्हारे लिये रहने दें[21] और

15 : और उमूरे तक्लीफ़िय्या (बन्दों पर लाज़िम चीज़ों) में ह़राम व ह़लाल के जो अह़काम हैं वोह और क़ियास के क़ानून सब मुकम्मल कर दिये, इसी लिये इस आयत के नुज़ूल के बा'द बयाने ह़लाल व ह़राम की कोई आयत नाज़िल न हुई अगर्चे "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ" नाज़िल हुई मगर वोह आयते मौइ़ज़त व नसीह़त है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि दीन कामिल करने के मा'ना इस्लाम को ग़ालिब करना है। जिस का येह असर है कि ह़ज्जतुल वदाअ़ में जब येह आयत नाज़िल हुई कोई मुश्रिक मुसल्मानों के साथ ह़ज में शरीक न हो सका। एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि मैं ने तुम्हें दुश्मन से अम्न दी, एक क़ौल येह है कि दीन का इक्माल येह है कि वोह पिछली शरीअ़तों की त़रह मन्सूख़ न होगा और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा। **शाने नुज़ूल :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ के पास एक यहूदी आया और उस ने कहा कि ऐ अमीरुल मुअमिनीन आप की किताब में एक आयत है अगर वोह हम यहूदियों पर नाज़िल हुई होती तो हम रोज़े नुज़ूल को ई़द मनाते, फ़रमाया : कौन सी आयत ? उस ने येही आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ" पढ़ी, आप ने फ़रमाया : मैं उस दिन को जानता हूं जिस में येह नाज़िल हुई थी और इस के मक़ामे नुज़ूल को भी पहचानता हूं, वोह मक़ाम अ़रफ़ात का था और दिन जुमुआ़ का। आप की मुराद इस से येह थी कि हमारे लिये वोह दिन ई़द है। तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है आप से भी एक यहूदी ने ऐसा ही कहा, आप ने फ़रमाया कि जिस रोज़ येह नाज़िल हुई उस दिन दो ई़दें थीं जुमुआ़ व अ़रफ़ा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी दीनी काम्याबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जाइज़ और सह़ाबा से साबित है वरना ह़ज़रते उ़मर व इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہم साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िआ़ हो उस की यादगार क़ाइम करना और उस रोज़ को ई़द मनाना हम बिदअ़त जानते हैं। इस से साबित हुवा कि ई़दे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूं कि वोह "اَعْظَمِ نِعَمِ اِلٰهِيَه" (अल्लाह तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत) की यादगार व शुक्र गुज़ारी है। **16 :** मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर। **17 :** कि इस के सिवा कोई और दीन क़बूल नहीं। **18 :** मा'ना येह हैं कि ऊपर ह़राम चीज़ों का बयान कर दिया गया है लेकिन जब खाने पीने को कोई ह़लाल चीज़ मुयस्सर ही न आए और भूक प्यास की शिद्दत से जान पर बन जाए, उस वक़्त जान बचाने के लिये क़द्रे ज़रूरत खाने पीने की इजाज़त है इस त़रह़ कि गुनाह की त़रफ़ माइल न हो या'नी ज़रूरत से ज़ियादा न खाए। और ज़रूरत इसी क़दर खाने से रफ़्अ़ हो जाती है जिस से ख़त़रए जान जाता रहे। **19 :** जिन की ह़ुरमत क़ुरआनो ह़दीस, इज्माअ़ और क़ियास से साबित नहीं है, एक क़ौल येह भी है कि त़य्यिबात वोह चीज़ें हैं जिन को अ़रब और सलीमुत्तब्अ़ (नेक त़बीअ़त) लोग पसन्द करते हैं और ख़बीस वोह चीज़ें हैं जिन से सलीम त़बीअ़तें नफ़रत करती हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी चीज़ की ह़ुरमत (ह़राम होने) पर दलील न होना भी उस की ह़िल्लत (ह़लाल होने) के लिये काफ़ी है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़दी इब्ने ह़ातिम और ज़ैद बिन मुहल्हिल के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन का नाम रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने ज़ैदुल ख़ैर रखा था, इन दोनों साह़िबों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रीए शिकार करते हैं तो क्या हमारे लिये ह़लाल है ? तो इस पर आयते करीमा नाज़िल हुई। **20 :** ख़्वाह वोह दरिन्दों में से हों मिस्ल कुत्ते और चीते के या शिकारी परिन्दों में से मिस्ल शिक्रे, बाज़, शाहीन वग़ैरा के। जब उन्हें इस त़रह़ सधा लिया जाए कि जो शिकार करें उस में से न खाएं और जब शिकारी उन को छोड़े तब शिकार पर जाएं जब बुलाए वापस आ जाएं ऐसे शिकारी जानवरों को "मुअ़ल्लम" (सिखाया हुवा) कहते हैं। **21 :** और ख़ुद उस में से

اذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ④

उस पर अल्लाह का नाम लो[22] और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह को हिसाब करते देर नहीं लगती

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۗ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۖ

आज तुम्हारे लिये पाक चीजें हलाल हुईं और किताबियों का खाना[23] तुम्हारे लिये हलाल है

وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ

और तुम्हारा खाना उन के लिये हलाल है और पारसा (पाक दामन) औरतें मुसल्मान[24] और पारसा औरतें उन में से

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ

जिन को तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उन के महर दो क़ैद में लाते हुए[25]

غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ

न मस्ती निकालते और न आशना बनाते[26] और जो मुसल्मान से काफ़िर हो

حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ⑤ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

उस का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ) गया और वोह आख़िरत में ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) है[27] ऐ ईमान वालो

اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ

जब नमाज़ को खड़े होना चाहो[28] तो अपने मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ[29]

न खाएं। **22 :** आयत से जो मुस्तफ़ाद (फ़ाएदा हासिल) होता है उस का ख़ुलासा येह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिक्रा वग़ैरा कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उस का शिकार चन्द शर्तों से हलाल है : (1) शिकारी जानवर मुसल्मान का हो और सिखाया हुवा। (2) उस ने शिकारी को ज़ख़्म लगा कर मारा हो। (3) शिकारी जानवर "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर छोड़ा गया हो (4) अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उस को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर ज़ब्ह करे। अगर इन शर्तों में से कोई शर्त न पाई गई तो हलाल न होगा। मसलन अगर शिकारी जानवर मुअ़ल्लम (सिखाया हुवा) न हो या उस ने ज़ख़्म न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" न पढ़ा हो या शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो और उस को ज़ब्ह न किया हो या मुअ़ल्लम के साथ ग़ैरे मुअ़ल्लम शिकार में शरीक हो गया हो या ऐसा शिकारी जानवर शरीक हो गया हो जिस को छोड़ते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" न पढ़ा गया हो या वोह शिकारी जानवर मजूसी (आतश परस्त) काफ़िर का हो, इन सब सूरतों में वोह शिकार हराम है। **मस्अला :** तीर से शिकार करने का भी येही हुक्म है अगर "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर तीर मारा और उस से शिकार मजरूह (ज़ख़्मी) हो कर मर गया तो हलाल है और अगर न मरा तो दोबारा उस को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" पढ़ कर ज़ब्ह करे, अगर उस पर بِسْمِ اللّٰه न पढ़ी या तीर का ज़ख़्म उस को न लगा या ज़िन्दा पाने के बा'द उस को ज़ब्ह न किया इन सब सूरतों में हराम है। **23 :** या'नी इन के ज़बीहे। **मस्अला :** मुस्लिम व किताबी का ज़बीहा हलाल है ख़्वाह वोह मर्द हो या औरत या बच्चा। **24 :** निकाह करने में औरत की पारसाई (पाक दामनी) का लिहाज़ मुस्तहब है लेकिन सिहहते निकाह के लिये शर्त नहीं। **25 :** निकाह कर के **26 :** ना जाइज़ तरीक़े से मस्ती निकालने से बे धड़क ज़िना करना और आशना बनाने से पोशीदा ज़िना मुराद है। **27 :** क्यूं कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम अ़मल अकारत (बरबाद) हो जाते हैं। **28 :** और तुम बे वुज़ू हो तो तुम पर वुज़ू फ़र्ज़ है और फ़राइज़ वुज़ू के येह चार हैं जो आगे बयान किये जाते हैं। **फ़ाएदा :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू के आदी थे अगर्चे एक वुज़ू से भी बहुत सी नमाज़ें फ़राइज़ व नवाफ़िल दुरुस्त हैं मगर हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू करना ज़ियादा बरकत व सवाब का मूजिब है, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इब्तिदाए इस्लाम में हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू फ़र्ज़ था बा'द में मन्सूख़ किया गया और जब तक हदस (वुज़ू का टूटना) वाक़ेअ़ न हो एक ही वुज़ू से फ़राइज़ व नवाफ़िल सब का अदा करना जाइज़ हुवा। **29 :** कोहनियां भी धोने के हुक्म में दाख़िल हैं जैसा कि हदीस से साबित है, जम्हूर इसी पर हैं।

وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا

और सरों का मस्ह़ करो[30] और गट्टों तक पाउं धोओ[31] और अगर तुम्हें नहाने की ह़ाजत हो

فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ

तो ख़ूब सुथरे हो लो[32] और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए ह़ाजत

الْغَآىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا

से आया या तुम ने औ़रतों से सोह़बत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो

فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ

तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह़ करो अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कुछ

مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ

तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे और अपनी ने'मत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम

تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ

एह़सान मानो और याद करो अल्लाह का एह़सान अपने ऊपर[33] और वोह अ़ह्द जो उस ने तुम से

بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

लिया[34] जब कि तुम ने कहा हम ने सुना और माना[35] और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह दिलों की

الصُّدُوْرِ ۝٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ

बात जानता है ऐ ईमान वालो अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ؗ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ

गवाही देते[36] और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत (दुश्मनी) इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो इन्साफ़ करो वोह

30 : चौथाई सर का मस्ह़ फ़र्ज़ है येह मिक़्दार ह़दीसे मुग़ीरा से साबित है और येह ह़दीस आयत का बयान है। 31 : येह वुज़ू का चौथा फ़र्ज़ है। ह़दीसे सह़ीह़ में है सय्यिदे आ़लम ﷺ ने कुछ लोगों को पाउं पर मस्ह़ करते देखा तो मन्अ़ फ़रमाया और अ़त़ा से मरवी है वोह ब क़सम फ़रमाते हैं कि मेरे इ़ल्म में अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह ﷺ में से किसी ने भी वुज़ू में पाउं पर मस्ह़ न किया। 32 **मस्अला :** जनाबत से त़हारते कामिला लाज़िम होती है। जनाबत कभी बेदारी में दफ़्क़ व शहवत के साथ इन्ज़ाल से होती है और कभी नींद में एह़तिलाम से जिस के बा'द असर पाया जाए ह़त्ता कि अगर ख़्वाब याद आया मगर तरी न पाई तो ग़ुस्ल वाजिब न होगा, और कभी सबीलैन में से किसी में इदख़ाले ह़शफ़ा से। फ़ाइ़ल व मफ़ऊ़ल दोनों के ह़क़ में ख़्वाह इन्ज़ाल हो या न हो। येह तमाम सूरतें जनाबत में दाख़िल हैं इन से ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। **मस्अला :** ह़ैज़ो निफ़ास से भी ग़ुस्ल लाज़िम होता है। ह़ैज़ का मस्अला सूरए बक़रह में गुज़र गया और निफ़ास का मूजिबे ग़ुस्ल होना इज्माअ़ से साबित है। तयम्मुम का बयान सूरए निसाअ में गुज़र चुका। 33 : कि तुम्हें मुसल्मान किया। 34 : नबिय्ये करीम ﷺ से बैअ़त करते वक़्त शबे उ़क़्बा और बैअ़ते रिज़्वान में 35 : नबिय्ये करीम ﷺ का हर हुक्म हर ह़ाल में। 36 : इस त़रह़ कि क़राबत व

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۸﴾ وَعَدَ

परहेज़ गारी से ज़ियादा क़रीब है और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है ईमान

اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۹﴾

वाले नेकोकारों से **अल्लाह** का वा'दा है कि उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۰﴾ يٰۤاَيُّهَا

और वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोही दोज़ख़ वाले हैं[37] ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا

ईमान वालो **अल्लाह** का एहसान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर

اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

दस्त दराज़ी करें तो उस ने उन के हाथ तुम पर से रोक दिये[38] और **अल्लाह** से डरो और मुसल्मानों को

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ

अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और बेशक **अल्लाह** ने बनी इसराईल से अ़हद लिया[39]

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ

और हम ने उन में बारह सरदार क़ाइम किये[40] और **अल्लाह** ने फ़रमाया बेशक मैं[41] तुम्हारे साथ हूं ज़रूर अगर तुम

الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ

नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** को

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ

क़र्ज़े हसन दो[42] तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा

अ़दावत का कोई असर तुम्हें अ़द्ल से न हटा सके। **37 :** येह आयत नस्से क़ातेअ़ है इस पर कि ख़ुलूदे नार (हमेशा जहन्नम में रहना) सिवाए कुफ़्फ़ार के और किसी के लिये नहीं। (خازن) **38 शाने नुज़ूल :** एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक मन्ज़िल में क़ियाम फ़रमाया, अस्हाब जुदा जुदा दरख़्तों के साए में आराम करने लगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी तलवार एक दरख़्त में लटका दी, एक आ'राबी मौक़अ़ पा कर आया और छुप कर उस ने तलवार ली और तलवार खींच कर हुज़ूर से कहने लगा : ऐ मुहम्मद ! तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? हुज़ूर ने फ़रमाया : "**अल्लाह**"। येह फ़रमाना था हज़रते जिब्रील ने उस के हाथ से तलवार गिरा दी और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तलवार ले कर फ़रमाया कि तुझे मुझ से कौन बचाएगा ? कहने लगा कि कोई नहीं। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। (تفسیر ابو السعود) **39 :** कि **अल्लाह** की इबादत करेंगे, उस के साथ किसी को शरीक न करेंगे, तौरैत के अह़काम का इत्तिबाअ़ करेंगे। **40 :** हर सिब्त़ (गुरौह) पर एक सरदार जो अपनी क़ौम का ज़िम्मेदार हो कि वोह अ़हदे वफ़ा करेंगे और हुक्म पर चलेंगे। **41 :** मदद व नुसरत से **42 :** या'नी उस की राह में ख़र्च करो।

تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۚ فَمَنۡ كَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِكَ مِنۡكُمۡ فَقَدۡ ضَلَّ

जिन के नीचे नहरें रवां फिर इस के बा'द जो तुम में से कुफ़्र करे वोह ज़रूर सीधी

سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ﴿۱۲﴾ فَبِمَا نَقۡضِهِمۡ مِّيۡثَاقَهُمۡ لَعَنّٰهُمۡ وَجَعَلۡنَا قُلُوۡبَهُمۡ

राह से बहका[43] तो उन की कैसी बद अ़हदियों[44] पर हम ने उन्हें ला'नत की और उन के दिल

قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوۡنَ الۡكَلِمَ عَنۡ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوۡا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوۡا

सख़्त कर दिये अल्लाह की बातों को[45] उन के ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी

بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنۡهُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا مِّنۡهُمۡ فَاعۡفُ

गईं[46] और तुम हमेशा उन की एक न एक दग़ा पर मुत्तलअ़ होते रहोगे[47] सिवा थोड़ों के[48] तो उन्हें मुआ़फ़

عَنۡهُمۡ وَاصۡفَحۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۳﴾ وَمِنَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّا

कर दो और उन से दर गुज़रो[49] बेशक एहसान वाले अल्लाह को महबूब हैं और वोह जिन्हों ने दा'वा किया कि हम

نَصٰرٰٓى اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَهُمۡ فَنَسُوۡا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوۡا بِهٖ ۖ فَاَغۡرَيۡنَا

नसारा हैं हम ने उन से अ़हद लिया[50] तो वोह भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं[51] तो हम ने

بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَالۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ؕ وَسَوۡفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ

उन के आपस में क़ियामत के दिन तक बैर (दुश्मनी) और बुग़्ज़ डाल दिया[52] और अ़न्क़रीब अल्लाह उन्हें बता देगा

43 : वाक़िआ़ येह था कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वा'दा फ़रमाया था कि उन्हें और उन की क़ौम को "अर्ज़े मुक़द्दसा" (बैतुल मक़्दिस) का वारिस बनाएगा जिस में कन्आ़नी जब्बार रहते थे तो फ़िरऔ़न के हलाक के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्मे इलाही हुवा कि बनी इसराईल को "अर्ज़े मुक़द्दसा" की त़रफ़ ले जाएं मैं ने उस को तुम्हारे लिये दारो क़रार बनाया है तो वहां जाओ और जो दुश्मन वहां हैं उन पर जिहाद करो, मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा और ऐ मूसा ! तुम अपनी क़ौम के हर हर सिब्त़ (गुरोह) में से एक एक सरदार बनाओ, इस त़रह़ बारह सरदार मुक़र्रर करो हर एक उन में से अपनी क़ौम के हुक्म मानने और अ़हदे वफ़ा करने का ज़िम्मेदार हो, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सरदार मुन्तख़ब कर के बनी इस्राईल को ले कर रवाना हुए, जब अरीह़ा (बस्ती) के क़रीब पहुंचे तो उन नक़ीबों को तजस्सुसे अह़वाल (ह़ालात का जाएज़ा लेने) के लिये भेजा, वहां उन्हों ने देखा कि लोग बहुत अ़ज़ीमुल जुस्सा (बड़े बड़े जिस्मों वाले) और निहायत क़वी व तुवाना साहिबे हैबतो शौकत हैं, येह उन से हैबत ज़दा हो कर वापस हुए और आ कर उन्हों ने अपनी क़ौम से सब ह़ाल बयान किया, बा वुजूदे कि उन को इस से मन्अ़ किया गया था लेकिन सब ने अ़हद शिकनी की सिवाए कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून के कि येह अ़हद पर क़ाइम रहे। **44 :** कि उन्हों ने अ़हदे इलाही को तोड़ा और हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया की तक्ज़ीब की और अम्बिया को क़त्ल किया, किताब के अह़काम की मुख़ालफ़त की। **45 :** जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है और जो तौरैत में बयान की गई हैं। **46 :** तौरैत में कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करें और उन पर ईमान लाएं। **47 :** क्यूं कि दग़ा व ख़ियानत व नक़्ज़े अ़हद और रसूलों के साथ बद अ़हदी उन की और उन के आबा की क़दीम आ़दत है। **48 :** जो ईमान लाए। **49 :** और जो कुछ उन से पहले सरज़द हुवा उस पर गिरिफ़्त न करो। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत उस क़ौम के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहले नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़हद किया फिर तोड़ा फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस पर मुत्तलअ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल की, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि उन की इस अ़हद शिकनी से दर गुज़र कीजिये जब तक कि वोह जंग से बाज़ रहें और जिज़्या अदा करने से मन्अ़ न करें। **50 :** अल्लाह तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाने का। **51 :** इन्जील में और उन्हों ने अ़हद शिकनी की। **52 :** क़तादा ने कहा कि जब नसारा ने किताबे इलाही (इन्जील) पर अ़मल करना

بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ

जो कुछ करते थे[53] ऐ किताब वालो[54] बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल[55] तशरीफ़ लाए कि तुम पर ज़ाहिर

لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ؕ قَدْ

फ़रमाते हैं बहुत सी वोह चीज़ें जो तुम ने किताब में छुपा डाली थीं[56] और बहुत सी मुआफ़ फ़रमाते हैं[57] बेशक

جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ

तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आया[58] और रोशन किताब[59] **अल्लाह** इस से हिदायत देता है उसे जो **अल्लाह** की

رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

मरज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रोशनी की त़रफ़ ले जाता है अपने हुक्म से

وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ

और उन्हें सीधी राह दिखाता है बेशक काफ़िर हुए वोह जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह**

هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ

मसीह़ बिन मरयम ही है[60] तुम फ़रमा दो फिर **अल्लाह** का कोई क्या कर सकता है अगर वोह चाहे कि

يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ

हलाक कर दे मसीह़ बिन मरयम और उस की मां और तमाम ज़मीन वालों को[61] और **अल्लाह**

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

ही के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की जो चाहे पैदा करता है और **अल्लाह**

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ

सब कुछ कर सकता है और यहूदी और नसरानी बोले कि हम **अल्लाह** के बेटे

तर्क किया और रसूलों की ना फ़रमानी की, फ़राइज़ अदा न किये, हुदूद की परवाह न की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दरमियान अ़दावत डाल दी। **53 :** या'नी रोज़े क़ियामत वोह अपने किरदार का बदला पाएंगे। **54 :** यहूदियो व नसरानियो ! **55 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **56 :** जैसे कि आयते रज्म और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ और हुज़ूर का इस को बयान फ़रमाना मो'जिज़ा है। **57 :** और उन का ज़िक्र भी नहीं करते न उन पर मुआख़ज़ा फ़रमाते हैं क्यूं कि आप उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिस में मस्लह़त हो। **58 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नूर फ़रमाया गया क्यूं कि आप से तारीकिये कुफ़्र दूर हुई और राहे ह़क़ वाज़ेह़ हुई। **59 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **60 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि नजरान के नसारा से येह मक़ूला सरज़द हुवा और नसरानियों के फ़िर्क़े या'क़ूबिया व मलकानिया का येह मज़हब है वोह ह़ज़रते मसीह़ को "**अल्लाह**" बताते हैं क्यूं कि वोह हुलूल के क़ाइल हैं और उन का ए'तिक़ादे बात़िल येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने बदने ईसा में हुलूल किया (समा गया)। مَعَاذَ اللّٰه। "وَتَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا" (**अल्लाह** उन की बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है)। **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में हुक्मे कुफ़्र दिया और इस के बा'द उन के मज़हब का फ़साद बयान फ़रमाया। **61 :** इस का जवाब येही है कि कोई कुछ नहीं कर सकता तो फिर ह़ज़रते मसीह़ को **अल्लाह** बताना कितना सरीह़ बात़िल है।

وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ

और उस के प्यारे हैं[62] तुम फ़रमा दो फिर तुम्हें क्यूं तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब फ़रमाता है[63] बल्कि तुम आदमी हो उस की

خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ

मख़्लूक़ात से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और **अल्लाह** ही के लिये है सल्त़नत

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की और उसी की त़रफ़ फिरना है ऐ किताब वालो

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا

बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल[64] तशरीफ़ लाए कि तुम पर हमारे अह़काम ज़ाहिर फ़रमाते हैं बा'द इस के कि रसूलों का आना मुद्दतों बन्द रहा था[65] कि तुम कहो

جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّ لَا نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى

हमारे पास कोई ख़ुशी और डर सुनाने वाला न आया तो येह ख़ुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए हैं और **अल्लाह** को

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ

सब कुदरत है और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** का एह़सान अपने

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ

ऊपर याद करो कि तुम में से पैग़म्बर किये[66] और तुम्हें बादशाह किया[67] और तुम्हें वोह दिया जो

يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ

आज सारे जहान में किसी को न दिया[68] ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो

62 **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास अहले किताब आए और उन्हों ने दीन के मुआ़मले में आप से गुफ़्तगू शुरूअ़ की आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी और **अल्लाह** की ना फ़रमानी करने से उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! आप हमें क्या डराते हैं हम तो **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस दा'वे का बुत़्लान ज़ाहिर फ़रमाया गया। 63 : या'नी इस बात का तो तुम्हें भी इक़रार है कि गिनती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे तो सोचो कोई बाप अपने बेटे को या कोई शख़्स अपने प्यारे को आग में जलाता है ! जब ऐसा नहीं तो तुम्हारे दा'वे का किज़्ब व बुत़्लान तुम्हारे इक़रार से साबित है। 64 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم 65 : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक पांच सो उन्हत्तर बरस की मुद्दत नबी से ख़ाली रही इस के बा'द हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की मिन्नत (एह़सान) का इज़्हार फ़रमाया जाता है कि निहायत ह़ाजत के वक़्त तुम पर **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत भेजी गई और इस में इल्ज़ामे हुज्जत (दलील क़ाइम करना) व क़त्ए उ़ज़्र (उ़ज़्र ख़त्म करना) भी है कि अब येह कहने का मौक़अ़ न रहा कि हमारे पास तम्बीह करने वाले तशरीफ़ न लाए। 66 **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों की तशरीफ़ आवरी ने'मत है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को इस के ज़िक्र का हुक्म दिया कि वोह बरकातो समरात का सबब है, इस से मह़फ़िले मीलादे मुबारक के मूजिबे बरकातो समरात और मह़मूदो मुस्तह़सन होने की सनद मिलती है। 67 : या'नी आज़ाद व साह़िबे हशम व ख़िदम (नोकर चाकर वाला) और फ़िरऔ़नियों के हाथों में मुक़य्यद होने के बा'द उन की ग़ुलामी से नजात ह़ासिल कर के ऐ़शो आराम की ज़िन्दगी पाना बड़ी ने'मत है ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में जो कोई ख़ादिम और औ़रत और सुवारी रखता वोह मलिक (बादशाह) कहलाया जाता। 68 : जैसे कि दरिया में राह बनाना,

الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾

जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है और पीछे न पलटो[69] कि नुक़्सान पर पलटोगे

قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى

बोले ऐ मूसा उस में तो बड़े ज़बर दस्त लोग हैं और हम उस में हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक

يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ رَجُلٰنِ

वोह वहां से निकल न जाएं हां वोह वहां से निकल जाएं तो हम वहां जाएंगे दो मर्द

مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا

कि अल्लाह से डरने वालों में से थे[70] अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा[71] बोले कि ज़बर दस्ती दरवाज़े में[72] उन पर दाख़िल हो अगर

دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۬ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾

तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो तुम्हारा ही ग़लबा है[73] और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है

قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ

बोले[74] ऐ मूसा हम तो वहां[75] कभी न जाएंगे जब तक वोह वहां हैं तो आप जाइये और

رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا

आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं मूसा ने अ़र्ज़ की, कि ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर

نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَ فَاِنَّهَا

अपना और अपने भाई का तो तू हम को इन बे हुक्मों से जुदा रख[76] फ़रमाया तो वोह

दुश्मन को ग़र्क़ करना, मन्न और सल्वा उतारना, पथ्थर से चश्मे जारी करना, अब्र को साएबान बनाना वग़ैरा। **69 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को अल्लाह की ने'मतें याद दिलाने के बा'द उन को अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिये निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल हो जाओ। उस ज़मीन को मुक़द्दस इस लिये कहा गया कि वोह अम्बिया की मस्कन थी। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की सुकूनत से ज़मीनों को भी शरफ़ ह़ासिल होता है और दूसरों के लिये वोह बाइसे बरकत होता है। कल्बी से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कोहे लुबनान पर चढ़े तो आप से कहा गया देखिये जहां तक आप की नज़र पहुंचे वोह जगह मुक़द्दस है और आप की ज़ुर्रिय्यत की मीरास है, येह सर ज़मीन तूर और उस के गिर्दो पेश की थी और एक क़ौल येह है कि तमाम मुल्के शाम **70 :** कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून जो उन नुक़बा (सरदारों) में से थे जिन्हें ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जबाबिरा का ह़ाल दरयाफ़्त करने के लिये भेजा था। **71 :** हिदायत और वफ़ाए अ़ह्द के साथ उन्हों ने जबाबिरा का ह़ाल सिर्फ़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया और इस का इफ़्शा (किसी और के सामने इज़्हार) न किया ब ख़िलाफ़ दूसरे नुक़बा के कि उन्हों ने इफ़्शा किया था। **72 :** शहर के। **73 :** क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने मदद का वा'दा किया है और उस का वा'दा ज़रूर पूरा होना है। तुम जब्बारीन के बड़े बड़े जिस्मों से अन्देशा न करो, हम ने उन्हें देखा है उन के जिस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं। इन दोनों ने जब येह कहा तो बनी इसराईल बहुत बरहम हुए और उन्हों ने चाहा कि इन पर संगबारी करें। **74 :** बनी इसराईल **75 :** जब्बारीन के शहर में **76 :** और हमें इन की सोह़बत और

مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ

ज़मीन इन पर हराम है[77] चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में[78] तो तुम इन

عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ

बे हुक्मों का अफ़्सोस न खाओ और इन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर[79] जब

قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ

दोनों ने एक एक नियाज़ (कुरबानी) पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला

لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ

क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा[80] कहा **अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है[81] बेशक अगर तू अपना हाथ

ركوع ٨ · النصف

क़ुर्ब से बचा। या येह मा'ना कि हमारे इन के दरमियान फ़ैसला फ़रमा। **77 :** उस में न दाख़िल हो सकेंगे **78 :** वोह ज़मीन जिस में येह लोग भटक्ते फिरे नव फ़रसंग थी और क़ौम छ[6] लाख जंगी जो अपने सामान लिये तमाम दिन चलते थे, जब शाम होती तो अपने को वहीं पाते जहां से चले थे येह उन पर उ़क़ूबत (सज़ा) थी सिवाए ह़ज़रते मूसा व हारून व यूशअ़ व कालिब के कि इन पर **अल्लाह** तआ़ला ने आसानी फ़रमाई और इन की इआ़नत की जैसा कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आग को सर्द और सलामती बनाया और इतनी बड़ी जमाअ़ते अ़ज़ीमा का इतने छोटे ह़िस्सए ज़मीन में चालीस बरस आवारा व ह़ैरान फिरना और किसी का वहां से निकल न सकना ख़वारिक़े आ़दात (ख़िलाफ़े आ़दात) में से है। जब बनी इसराईल ने इस जंगल में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से खाने पीने वग़ैरा ज़रूरिय्यात और तकालीफ़ की शिकायत की तो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन को आस्मानी ग़िज़ा "मन्न व सल्वा" अ़ता फ़रमाया और लिबास ख़ुद उन के बदन पर पैदा किया जो जिस्म के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पथ्थर कोहे तूर का इनायत किया कि जब रख़्ते सफ़र (सफ़र का सामान) उतारते और किसी वक़्त ठहरते तो ह़ज़रत उस पथ्थर पर अ़सा मारते उस से बनी इसराईल के बारह अस्बात़ (गुरौहों) के लिये बारह चश्मे जारी हो जाते और साया करने के लिये एक अब्र भेजा और "तीह" (मैदान) में जितने लोग दाख़िल हुए थे उन में से जो बीस साल से ज़ियादा उ़म्र के थे सब वहीं मर गए सिवाए यूशअ़ बिन नून और कालिब बिन यूक़न्ना के, और जिन लोगों ने अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल होने से इन्कार किया उन में से कोई भी दाख़िल न हो सका। और कहा गया है कि तीह में ही ह़ज़रते हारून और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात हुई। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से चालीस बरस बा'द ह़ज़रते यूशअ़ को नुबुव्वत अ़ता की गई और जब्बारीन पर जिहाद का हुक्म दिया गया। आप बाक़ी मांदा बनी इसराईल को साथ ले कर गए और जब्बारीन पर जिहाद किया। **79 :** जिन का नाम हाबील और क़ाबील था, इस ख़बर को सुनाने से मक़्सद येह है कि ह़सद की बुराई मा'लूम हो और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ह़सद करने वालों को इस से सबक़ ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिले। उ़लमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि ह़ज़रते ह़व्वा के ह़म्ल में एक लड़का, एक लड़की पैदा होते थे और एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की के साथ निकाह़ किया जाता था और जब कि आदमी सिर्फ़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में मुन्ह़सिर थे तो मुनाकह़त (निकाह़) की और कोई सबील ही न थी इसी दस्तूर के मुताबिक़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़ाबील का निकाह़ "लियूज़ा" से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी और हाबील का "इक़्लीमा" से जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा, क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा और चूंकि इक़्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये उस का त़लब गार हुवा। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि वोह तेरे साथ पैदा हुई लिहाज़ा तेरी बहन है उस के साथ तेरा निकाह़ ह़लाल नहीं। कहने लगा : येह तो आप की राय है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह हुक्म नहीं दिया। आप ने फ़रमाया : तो तुम दोनों कुरबानियां लाओ जिस की कुरबानी मक़्बूल हो जाए वोही इक़्लीमा का ह़क़दार है। उस ज़माने में जो कुरबानी मक़्बूल होती थी आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी। क़ाबील ने एक अम्बार गन्दुम और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की, आस्मानी आग ने हाबील की कुरबानी को ले लिया और क़ाबील के गेहूं छोड़ गई। इस पर क़ाबील के दिल में बहुत बुग़्ज़ो ह़सद पैदा हुवा। **80 :** जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा कि मैं तुझ को क़त्ल करूंगा। हाबील ने कहा : क्यूं ? कहने लगा : इस लिये कि तेरी कुरबानी मक़्बूल हुई मेरी न हुई और तू इक़्लीमा का मुस्तह़िक़ ठहरा, इस में मेरी ज़िल्लत है। **81 :** हाबील के इस मक़ूले का येह मत़लब है कि कुरबानी का क़बूल करना **अल्लाह** का काम है वोह मुत्तक़ियों की कुरबानी क़बूल फ़रमाता है, तू मुत्तक़ी होता तो तेरी कुरबानी क़बूल होती, येह ख़ुद तेरे अफ़्आ़ल का नतीजा है, इस में मेरा क्या दख़्ल है।

اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ

मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं[82] मैं अल्लाह से डरता हूं

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٨ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ

जो मालिक सारे जहान का मैं तो येह चाहता हूं कि मेरा[83] और तेरा गुनाह[84] दोनों तेरे ही पल्ले पड़े

مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٩ۚ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ

तो तू दोज़ख़ी हो जाए और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है तो उस के नफ़्स ने उसे भाई के

قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٣٠ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا

क़त्ल का चाव दिलाया (क़त्ल पर उभारा) तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़्सान में[85] तो अल्लाह ने एक कव्वा भेजा

يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى

ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाए क्यूंकर (किस त़रह़) अपने भाई की लाश छुपाए[86] बोला हाए ख़राबी

اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ

मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता

فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ۝٣١ۚۛ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

तो पचताता रह गया[87] इस सबब से हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया

اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के[88] तो गोया उस ने सब

النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ

लोगों को क़त्ल किया[89] और जिस ने एक जान को जिला लिया[90] उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया और बेशक

82 : और मेरी त़रफ़ से इब्तिदा हो बा वुजूदे कि मैं तुझ से क़वी व तुवाना हूं, येह सिर्फ़ इस लिये कि **83 :** या'नी मुझ को क़त्ल करने का। **84 :** जो इस से पहले तूने किया कि वालिद की ना फ़रमानी की, ह़सद किया और ख़ुदाई फ़ैसले को न माना। **85 :** और मुतहय्यर (हैरानो परेशान) हुवा कि इस लाश को क्या करे ? क्यूं कि उस वक़्त तक कोई इन्सान मरा ही न था, मुद्दत तक लाश को पुश्त पर लादे फिरा **86 :** मरवी है कि दो कव्वे आपस में लड़े, उन में से एक ने दूसरे को मार डाला, फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी मिन्क़ार (चोंच) और पन्जों से ज़मीन कुरेद कर गढ़ा किया उस में मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया, येह देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को दफ़्न करना चाहिये, चुनान्चे उस ने ज़मीन खोद कर दफ़्न कर दिया। (جلالین، مدارک وغیرہ) **87 :** अपनी नादानी व परेशानी पर, और येह नदामत गुनाह पर न थी कि तौबा में शुमार हो सकती या नदामत का तौबा होना सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ही की उम्मत के साथ ख़ास हो (مدارک) **88 :** या'नी ख़ूने नाह़क़ किया कि न तो मक़्तूल को किसी ख़ून के बदले क़िसास के त़ौर पर मारा न शिर्क व कुफ़्र या क़त्ए त़रीक़ (रहज़नी) वग़ैरा किसी मूजिबे क़त्ल फ़साद की वज्ह से मारा। **89 :** क्यूं कि उस ने ह़क़्क़ुल्लाह की रिआयत और ह़ुदूदे शरीअ़त का पास न किया। **90 :** इस त़रह़ कि क़त्ल

جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي

उन के[91] पास हमारे रसूल रोशन दलीलों के साथ आए[92] फिर बेशक उन में बहुत इस के बा'द

الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿۳۲﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं[93] वोह कि अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते[94]

وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ

और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के

اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ

एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं येह दुन्या में

خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۳۳﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

उन की रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब मगर वोह जिन्हों ने तौबा कर ली

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۴﴾ ع

इस से पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ[95] तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उस की तरफ़ वसीला ढूंडो[96] और उस की राह में

فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي

जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ बेशक वोह जो काफ़िर हुए जो कुछ

الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

ज़मीन में है सब और इस की बराबर और अगर उन की मिल्क हो कि इसे दे कर क़ियामत के अ़ज़ाब से अपनी जान

होने या डूबने या जलने वग़ैरा अस्बाबे हलाकत से बचाया। **91 :** या'नी बनी इसराईल के **92 :** मो'जिज़ाते बाहिरात भी लाए और अह़कामो शराएअ़ भी। **93 :** कि कुफ़्र व क़त्ल वग़ैरा का इरतिकाब कर के हुदूद से तजावुज़ करते हैं। **94 :** अल्लाह तआ़ला से लड़ना येही है कि उस के औलिया से अ़दावत करे जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। इस आयत में क़ुत्ताए तरीक़ या'नी राहज़नों की सज़ा का बयान है। **शाने नुज़ूल :** 6 सि.हि. में उ़रैना के चन्द लोग मदीनए तय्यिबा में आ कर इस्लाम लाए और बीमार हो गए, उन के रंग ज़र्द हो गए, पेट बढ़ गए, हुज़ूर ने हुक्म दिया कि सदक़े के ऊंटों का दूध और पेशाब मिला कर पिया करें, ऐसा करने से वोह तन्दुरुस्त हो गए मगर तन्दुरुस्त हो कर वोह मुरतद हो गए और पन्दरह ऊंट ले कर वोह अपने वतन को चलते हो गए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की तलब में ह़ज़रते यसार को भेजा। उन लोगों ने इन के हाथ पाउं काटे और ईज़ाएं देते देते शहीद कर डाला, फिर जब येह लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गिरिफ़्तार कर के हाज़िर किये गए तो उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر احمدی) **95 :** या'नी गिरिफ़्तारी से क़ब्ल तौबा कर लेने से वोह अ़ज़ाबे आख़िरत और क़त्ए तरीक़ (रहज़नी) की ह़द से तो बच जाएंगे मगर माल की वापसी और क़िसास ह़क़्क़ुल इ़बाद है येह बाक़ी रहेगा। (احمدی) **96 :** जिस

مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ

छुड़ाएं तो उन से न लिया जाएगा और उन के लिये दुख का अ़ज़ाब है[97] दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे

النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ

और वोह उस से न निकलेंगे और उन को दवामी (हमेशा हमेशा की) सज़ा है और जो मर्द

وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ

या औ़रत चोर हो[98] तो उन का हाथ काटो[99] उन के किये का बदला **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा और

اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेह्र

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा[100] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है क्या तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** के लिये है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ

आस्मानों और ज़मीन की बादशाही सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ

चाहे और **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है[101] ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन न करें

الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ

वोह जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[102] कुछ वोह जो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और

تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ

उन के दिल मुसल्मान नहीं[103] और कुछ यहूदी झूट ख़ूब सुनते हैं[104] और लोगों

की बदौलत तुम्हें उस का कु़र्ब ह़ासिल हो । **97 :** या'नी कुफ़्फ़ार के लिये अ़ज़ाब लाज़िम है और इस से रिहाई पाने की कोई सबील नहीं । **98 :** और उस की चोरी दो मरतबा के इक़रार या दो मर्दों की शहादत से ह़ाकिम के सामने साबित हो और जो माल चुराया है वोह दस दिरहम से कम का न हो (كمافی حدیث ابن مسعود) **99 :** या'नी दाह्ना, इस लिये कि ह़ज़रत इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की क़िराअत में "اَیْمَانَهُمَا" आया है । **मस्अला :** पहली मरतबा की चोरी में दाह्ना हाथ काटा जाएगा फिर दोबारा अगर करे तो बायां पाउं इस के बा'द भी अगर चोरी करे तो क़ैद किया जाए यहां तक कि तौबा करे । **मस्अला :** चोर का हाथ काटना तो वाजिब है और "माले मसरूक़" (चोरी शुदा माल) मौजूद हो तो उस का वापस करना भी वाजिब और अगर वोह ज़ाएअ़ हो गया हो तो ज़मान (तावान) वाजिब नहीं । (تفسیر احمدی) **100 :** और अ़ज़ाबे आख़िरत से उस को नजात देगा । **101 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अ़ज़ाब करना और रह़मत फ़रमाना **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत पर है वोह मालिक है जो चाहे करे किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं । इस से क़दरिय्या व मो'तज़िला का इब्त़ाल हो गया जो मुत़ीअ़ पर रह़मत और आ़सी पर अ़ज़ाब करना **अल्लाह** तआ़ला पर वाजिब कहते हैं । **102 :** **अल्लाह** तआ़ला सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم को "يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ" के

لِقَوۡمٍ اٰخَرِيۡنَ ۙ لَمۡ يَاۡتُوۡكَ ؕ يُحَرِّفُوۡنَ الۡكَلِمَ مِنۡۢ بَعۡدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ

की खूब सुनते हैं[105] जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए **अल्लाह** की बातों को उन के ठिकानों के बा'द बदल देते हैं

يَقُوۡلُوۡنَ اِنۡ اُوۡتِيۡتُمۡ هٰذَا فَخُذُوۡهُ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡتَوۡهُ فَاحۡذَرُوۡا ؕ

कहते हैं येह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और येह न मिले तो बचो[106]

وَمَنۡ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتۡنَتَهٗ فَلَنۡ تَمۡلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ

और जिसे **अल्लाह** गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू **अल्लाह** से उस का कुछ बना न सकेगा वोह हैं कि

ख़िताबे इज़्ज़त के साथ मुख़ातब फ़रमा कर तस्कीने ख़ातिर फ़रमाता है कि ऐ हबीब ! मैं आप का नासिर व मुईन हूं, मुनाफ़िक़ीन के कुफ़्र में जल्दी करने या'नी उन के इज़्हारे कुफ़्र और कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात कर लेने से आप रन्जीदा न हों। **103 :** येह उन के निफ़ाक़ का बयान है। **104 :** अपने सरदारों से और उन के इफ़्तिराओं को क़बूल करते हैं। **105 :** ماشآءالله हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने बहुत सहीह तरजमा फ़रमाया इस मक़ाम पर बा'ज़ मुतर्जिमीन व मुफ़स्सिरीन से लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई कि उन्हों ने "لِقَوۡمٍ" के "لام" को इल्लत क़रार दे कर आयत के मा'ना येह बयान किये कि मुनाफ़िक़ीन व यहूद अपने सरदारों की झूटी बातें सुनते हैं, आप की बातें दूसरी क़ौम की ख़ातिर से कान धर कर सुनते हैं जिस के वोह जासूस हैं। मगर येह मा'ना सहीह नहीं और नज़्मे क़ुरआनी इस से बिल्कुल मुवाफ़क़त नहीं फ़रमाती बल्कि यहां "لام" "مِنۡ" के मा'ना में है और मुराद येह है कि येह लोग अपने सरदारों की झूटी बातें खूब सुनते हैं और लोगों या'नी यहूदे ख़ैबर की बातों को ख़ूब मानते हैं जिन के अहवाल का आयत शरीफ़ में बयान आ रहा है (تفسیر ابوالسعود و جمل) **106 शाने नुज़ूल :** यहूदे ख़ैबर के शुरफ़ा में से एक बियाहे (शादी शुदा) मर्द और बियाही औ़रत ने ज़िना किया, इस की सज़ा तौरैत में संगसार करना थी, येह उन्हें गवारा न था इस लिये उन्हों ने चाहा कि इस मुक़द्दमे का फ़ैसला हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم से कराएं, चुनान्चे उन दोनों (मुजरिमों) को एक जमाअ़त के साथ मदीनए त़य्यिबा भेजा और कह दिया कि अगर हुज़ूर "ह़द" का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो मत मानना। वोह लोग यहूदे बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर के पास आए और ख़याल किया कि येह हुज़ूर के हम वत़न हैं और इन के साथ आप की सुल्ह़ भी है इन की सिफ़ारिश से काम बन जाएगा, चुनान्चे सरदाराने यहूद में से का'ब बिन अशरफ़ व का'ब बिन असद व सईद बिन अ़म्र व मालिक बिन सैफ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ वग़ैरा उन्हें ले कर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मस्अला दरयाफ़्त किया। हुज़ूर ने फ़रमाया : मेरा फ़ैसला मानोगे ? उन्हों ने इक़रार किया, आयते रज्म नाज़िल हुई और संगसार करने का हुक्म दिया गया, यहूद ने इस हुक्म को मानने से इन्कार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम में एक नौ जवान गोरा यकचश्म (एक आंख वाला) फ़िदक का बाशिन्दा "इब्ने सूरिया" नामी है तुम उस को जानते हो ? कहने लगे : हां। फ़रमाया : वोह कैसा आदमी है ? कहने लगे कि आज रूए ज़मीन पर यहूद में उस के पाए का आ़लिम नहीं, तौरैत का यक्ता माहिर है। फ़रमाया : उस को बुलाओ, चुनान्चे बुलाया गया जब वोह हाज़िर हुवा तो हुज़ूर ने फ़रमाया : तू इब्ने सूरिया है ? उस ने अ़र्ज़ किया : जी हां। फ़रमाया : यहूद में सब से बड़ा आ़लिम तू ही है ? अ़र्ज़ किया : लोग तो ऐसा ही कहते हैं। हुज़ूर ने यहूद से फ़रमाया : इस मुआ़मले में इस की बात मानोगे ? सब ने इक़रार किया। तब हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से फ़रमाया : मैं तुझे उस **अल्लाह** की क़सम देता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जिस ने हज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई और तुम लोगों को मिस्र से निकाला, तुम्हारे लिये दरिया में राहें बनाईं, तुम्हें नजात दी, फ़िरऔ़नियों को ग़र्क़ किया, तुम्हारे लिये अब्र को साएबान बनाया, मन्न व सल्वा नाज़िल फ़रमाया, अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिस में ह़लाल व ह़राम का बयान है, क्या तुम्हारी किताब में बियाहे मर्द व औ़रत के लिये संगसार करने का हुक्म है ? इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ किया : बेशक है उसी की क़सम जिस का आप ने मुझ से ज़िक्र किया, अ़ज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं इक़्रार न करता और झूट बोल देता मगर येह फ़रमाइये कि आप की किताब में इस का क्या हुक्म है ? फ़रमाया : जब चार आ़दिल व मो'तबर शाहिदों की गवाही से ज़िना ब सराह़त साबित हो जाए तो संगसार करना वाजिब हो जाता है। इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ किया : बख़ुदा बिऐनिही ऐसा ही तौरैत में है, फिर हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से दरयाफ़्त फ़रमाया कि हुक्मे इलाही में तब्दीली किस त़रह़ वाक़ेअ़ हुई ? उस ने अ़र्ज़ किया कि हमारा दस्तूर येह था कि हम किसी शरीफ़ को पकड़ते तो छोड़ देते और ग़रीब आदमी पर ह़द क़ाइम करते, इस त़र्ज़े अ़मल से शुरफ़ा में ज़िना की बहुत कसरत हो गई यहां तक कि एक मरतबा बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हम ने उस को संगसार न किया फिर एक दूसरे शख़्स ने अपनी क़ौम की औ़रत से ज़िना किया तो बादशाह ने उस को संगसार करना चाहा, उस की क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्हों ने कहा कि जब तक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाए उस वक़्त तक इस को हरगिज़ संगसार न किया जाएगा, तब हम ने जम्अ़ हो कर ग़रीब शरीफ़ सब के लिये बजाए संगसार करने के येह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जाएं और मुंह काला कर के गधे पर उलटा बिठा कर गश्त कराई जाए। येह सुन कर यहूद बहुत बिगड़े और इब्ने सूरिया से कहने लगे : तूने हज़रत को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हम

لَمۡ يُرِدِ اللّٰهُ اَنۡ يُّطَهِّرَ قُلُوۡبَهُمۡ‌ؕ لَهُمۡ فِى الدُّنۡيَا خِزۡىٌ ۚۖ وَّلَهُمۡ فِى

अल्लाह ने उन का दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुन्या में रुस्वाई है और उन्हें

الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۴۱﴾ سَمّٰعُوۡنَ لِلۡكَذِبِ اَكّٰلُوۡنَ لِلسُّحۡتِ‌ؕ فَاِنۡ

आख़िरत में बड़ा अज़ाब बड़े झूट सुनने वाले बड़े हराम ख़ोर[107] तो अगर

جَآءُوۡكَ فَاحۡكُمۡ بَيۡنَهُمۡ اَوۡ اَعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ‌ ۚ وَاِنۡ تُعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ فَلَنۡ

तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों[108] तो उन में फ़ैसला फ़रमाओ या उन से मुंह फेर लो[109] और अगर तुम उन से मुंह फेर लोगे तो

يَّضُرُّوۡكَ شَيۡـًٔـا‌ ؕ وَاِنۡ حَكَمۡتَ فَاحۡكُمۡ بَيۡنَهُمۡ بِالۡقِسۡطِ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे[110] और अगर उन में फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़

يُحِبُّ الۡمُقۡسِطِيۡنَ ﴿۴۲﴾ وَكَيۡفَ يُحَكِّمُوۡنَكَ وَعِنۡدَهُمُ التَّوۡرٰٮةُ فِيۡهَا

वाले अल्लाह को पसन्द हैं और वोह तुम से क्यूंकर चाहेंगे हालां कि उन के पास तौरैत है जिस में

حُكۡمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ‌ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓـئِكَ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۴۳﴾

अल्लाह का हुक्म मौजूद है[111] ब ईं हमा (इस के बा वुजूद) उसी से मुंह फेरते हैं[112] और वोह ईमान लाने वाले नहीं

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَا التَّوۡرٰٮةَ فِيۡهَا هُدًى وَّنُوۡرٌ‌ ۚ يَحۡكُمُ بِهَا النَّبِيُّوۡنَ الَّذِيۡنَ

बेशक हम ने तौरैत उतारी उस में हिदायत और नूर है उस के मुताबिक़ यहूद को हुक्म देते थे

اَسۡلَمُوۡا لِلَّذِيۡنَ هَادُوۡا وَالرَّبّٰنِيُّوۡنَ وَالۡاَحۡبَارُ بِمَا اسۡتُحۡفِظُوۡا مِنۡ

हमारे फ़रमां बरदार नबी और आलिम और फ़क़ीह कि इन से किताबुल्लाह की हिफ़ाज़त

كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوۡا عَلَيۡهِ شُهَدَآءَ‌ ۚ فَلَا تَخۡشَوُا النَّاسَ وَاخۡشَوۡنِ وَلَا

चाही गई थी[113] और वोह इस पर गवाह थे तो[114] लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो और

ने जितनी तेरी ता'रीफ़ की थी तू उस का मुस्तहिक़ नहीं। इब्ने सूरिया ने कहा कि हुज़ूर ने मुझे तौरैत की क़सम दिलाई अगर मुझे अज़ाब के नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं आप को ख़बर न देता। इस के बा'द हुज़ूर के हुक्म से उन दोनों ज़िनाकारों को संगसार किया गया और येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) **107 :** येह यहूद के हुक्काम की शान में है जो रिश्वतें ले कर हराम को हलाल करते और अहकामे शरअ़ को बदल देते थे। **मस्अला :** रिश्वत का लेना देना दोनों हराम हैं। हदीस शरीफ़ में रिश्वत लेने देने वाले दोनों पर ला'नत आई है। **108 :** या'नी अहले किताब **109 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मुख़य्यर फ़रमाया गया कि अहले किताब आप के पास कोई मुक़द्दमा लाएं तो आप को इख़्तियार है फ़ैसला फ़रमाएं या न फ़रमाएं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह तख़्यीर आयह "وَاَنِ احۡكُمۡ بَيۡنَهُمۡ" से मन्सूख़ हो गई। इमाम अहमद ने फ़रमाया कि इन आयतों में कुछ मुनाफ़ात (एक आयत दूसरी के ख़िलाफ़) नहीं क्यूं कि येह आयत मुफ़ीदे तख़्यीर है और आयत "وَاَنِ احۡكُمۡ... الخ" में कैफ़िय्यते हुक्म का बयान है। (خازن ومدارک وغیرہ) **110 :** क्यूं कि अल्लाह तआ़ला आप का निगहबान है। **111 :** कि बियाहे मर्द और शोहर दार औरत के ज़िना की सज़ा रज्म या'नी संगसार करना है। **112 :** बा वुजूदे कि तौरैत पर ईमान लाने के मुद्दई भी

تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ

मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो[115] और जो **अल्लाह** के उतारे पर हुक्म न करे[116] वोही लोग

هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَكَتَبْنَا عَلَیْهِمْ فِیْهَاۤ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَیْنَ

काफ़िर हैं और हम ने तौरैत में उन पर वाजिब किया[117] कि जान के बदले जान[118] और आंख

بِالْعَیْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ

के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत

وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ لَّمْ

और ज़ख़्मों में बदला है[119] फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करावे तो वोह उस का गुनाह उतार देगा[120] और जो

یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَقَفَّیْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ

अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वोही लोग ज़ालिम हैं और हम उन नबियों के पीछे उन के निशाने क़दम

بِعِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَیْنٰهُ

पर ईसा बिन मरयम को लाए तस्दीक़ करता हुवा तौरैत की जो इस से पहले थी[121] और हम ने उसे

الْاِنْجِیْلَ فِیْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ

इन्जील अ़ता की जिस में हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती है तौरैत की, कि इस से पहली थी

हैं और उन्हें येह भी मा'लूम है कि तौरैत में रज्म का हुक्म है, उस को न मानना और आप की नुबुव्वत के मुन्किर होते हुए आप से फ़ैसला चाहना निहायत तअ़ज्जुब की बात है। **113 :** कि उस को अपने सीनों में महफ़ूज़ रखें और उस के दर्स में मशग़ूल रहें ताकि वोह किताब फ़रामोश न हो और उस के अह़काम ज़ाएअ़ न हों। (خازن) **मस्अला :** तौरैत के मुताबिक़ अम्बिया का हुक्म देना जो इस आयत में मज़्कूर है इस से साबित होता है कि हम से पहली शरीअ़तों के जो अह़काम **अल्लाह** और रसूल ने बयान फ़रमाए हों और उन के हमें तर्क का हुक्म न दिया हो, मन्सूख़ न किये गए हों वोह हम पर लाज़िम होते हैं। (جمل وابوالسعود) **114 :** ऐ यहूदियो ! तुम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और रज्म का हुक्म जो तौरैत में मज़्कूर है उस के इज़्हार में **115 :** या'नी अह़कामे इलाहिय्यह की तब्दील बहर सूरत मम्नूअ़ है ख़्वाह लोगों के ख़ौफ़ और उन की नाराज़ी के अन्देशे से हो या माल व जाह व रिश्वत की त़मअ़ से। **116 :** उस का मुन्किर हो कर (كَمَا قَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) **117 :** इस आयत में अगर्चे येह बयान है कि तौरैत में यहूद पर क़िसास के येह अह़काम थे लेकिन चूंकि हमें इन के तर्क का हुक्म नहीं दिया गया इस लिये हम पर येह अह़काम लाज़िम रहेंगे, क्यूं कि शराइए साबिक़ा के जो अह़काम ख़ुदा और रसूल के बयान से हम तक पहुंचे और मन्सूख़ न हुए हों वोह हम पर लाज़िम हुवा करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुवा। **118 :** या'नी अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उस की जान मक़्तूल के बदले में माख़ूज़ होगी ख़्वाह वोह मक़्तूल मर्द हो या औ़रत, आज़ाद हो या ग़ुलाम, मुस्लिम हो या ज़िम्मी। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि मर्द को औ़रत के बदले क़त्ल न करते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (مدارک) **119 :** या'नी मुमासलत व मुसावात की रिआ़यत ज़रूरी है। **120 :** या'नी जो क़ातिल या जिनायत करने वाला अपने जुर्म पर नादिम हो कर वबाले मा'सियत से बचने के लिये बख़ुशी अपने ऊपर हुक्मे शरई जारी कराए तो क़िसास उस के जुर्म का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उस पर अ़ज़ाब न होगा। (جلالین وجمل) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि जो साहिबे ह़क़ क़िसास को मुआ़फ़ कर दे तो येह मुआ़फ़ी उस के लिये कफ़्फ़ारा है। (مدارک) तफ़्सीरे अह़मदी में है येह तमाम क़िसास जब ही वाजिब होंगे जब कि साहिबे ह़क़ मुआ़फ़ न करे और अगर वोह मुआ़फ़ कर दे तो क़िसास साक़ित़। **121 :** अह़कामे तौरैत के बयान के बा'द अह़कामे इन्जील का ज़िक्र शुरूअ़ हुवा और

وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ

और हिदायत[122] और नसीहत परहेज़ गारों को और चाहिये कि इन्जील वाले हुक्म करें उस पर जो अल्लाह ने

اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾

उस में उतारा[123] और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती[124]

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

और उन पर मुहाफ़िज़ व गवाह तो उन में फ़ैसला करो अल्लाह के उतारे से[125] और ऐ सुनने वाले उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना

عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ

अपने पास आया हुवा हक़ छोड़ कर हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा[126] और

شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا

अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत कर देता मगर मन्ज़ूर येह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उस में तुम्हें आज़्माए[127] तो भलाइयों

الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ

की तरफ़ सब्क़त चाहो तुम सब का फिरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वोह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

झगड़ते थे और येह कि ऐ मुसल्मान अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उन की ख़्वाहिशों पर न चल

बताया गया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरैत के मुसद्दिक़ थे कि वोह मुनज़्ज़ल मिनल्लाह (अल्लाह की उतारी हुई किताब) है और नस्ख़ से पहले उस पर अ़मल वाजिब था। हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त में इस के बा'ज़ अह़काम मन्सूख़ हुए। **122 :** इस आयत में इन्जील के लिये लफ़्ज़े "هُدًى" दो जगह इर्शाद हुवा, पहली जगह ज़लालत व जहालत से बचाने के लिये रहनुमाई मुराद है, दूसरी जगह هُدًى से सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की बिशारत मुराद है जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत की तरफ़ लोगों की राहयाबी का सबब है। **123 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने का हुक्म। **124 :** जो इस से क़ब्ल हज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल हुईं। **125 :** या'नी जब अहले किताब अपने मुक़द्दमात में आप की तरफ़ रुजूअ़ करें तो आप क़ुरआने पाक से फ़ैसला फ़रमाएं। **126 :** या'नी फ़ुरूअ़ व आ'माल हर एक के ख़ास हैं और अस्ल दीन सब का एक। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि ईमान हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने से येही है कि "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" की शहादत और जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आया उस का इक़रार करना और शरीअ़त व तरीक़ हर उम्मत का ख़ास है। **127 :** और इम्तिहान में डाले ताकि ज़ाहिर हो जाए कि हर ज़माने के मुनासिब जो अह़काम दिये क्या तुम उन पर इस यक़ीन व ए'तिक़ाद के साथ अ़मल करते हो कि इन का इख़्तिलाफ़ मशिय्यते इलाहिय्यह के इक़्तिज़ा से हिक्मते बालिग़ा और दुन्यवी व उख़्रवी मसालेहे नाफ़ेआ़ पर मब्नी है, या हक़ को छोड़ कर हवाए नफ़्स का इत्तिबाअ़ करते हो। (تفسیر ابو السعود)

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ

और उन से बचता रह कि कहीं तुझे लग़िज़श न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी त़रफ़ उतरा फिर अगर वोह

تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ

मुंह फेरें[128] तो जान लो कि अल्लाह उन के बा'ज़ गुनाहों की[129] सज़ा उन को पहुंचाया चाहता है[130] और बेशक

كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝۴۹ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ

बहुत आदमी बे हुक्म हैं तो क्या जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं[131] और

اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝۵۰ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह से बेहतर किस का हुक्म यक़ीन वालों के लिये ऐ ईमान वालो

لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ

यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ[132] वोह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं[133]

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है[134] बेशक अल्लाह बे इन्साफ़ों को राह

128 : अल्लाह के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्म से **129 :** जिन में येह ए'राज़ भी है। **130 :** दुन्या में क़त्ल व गिरिफ़्तारी व जला वत़नी के साथ और तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा। **131 :** जो सरासर गुमराही और ज़ुल्म और मुख़ालिफ़े अह़कामे इलाही होता था। **शाने नुज़ूल :** बनी नज़ीर और बनी क़ुरैज़ा यहूद के दो क़बीले थे, इन में बाहम एक दूसरे का क़त्ल होता रहता था, जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो येह लोग अपना मुक़द्दमा ह़ुज़ूर की ख़िदमत में लाए और बनी क़ुरैज़ा ने कहा कि बनी नज़ीर हमारे भाई हैं, हम (और) वोह एक जद की औलाद हैं, एक दीन रखते हैं एक किताब (तौरैत) मानते हैं लेकिन अगर बनी नज़ीर हम में से किसी को क़त्ल करें तो उस के ख़ून बहा में हम (को) सत्तर वस्क़ खजूरें देते हैं और अगर हम में से कोई उन के किसी आदमी को क़त्ल करे तो हम से उस के ख़ून बहा में एक सो चालीस वस्क़ लेते हैं, आप इस का फ़ैसला फ़रमा दें। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया मैं हुक्म देता हूं कि क़ुरैज़ी और नज़ीरी का ख़ून बराबर है, किसी को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं। इस पर बनी नज़ीर बहुत बरहम हुए और कहने लगे हम आप के फ़ैसले से राज़ी नहीं, आप हमारे दुश्मन हैं, हमें ज़लील करना चाहते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलिय्यत की गुमराही व ज़ुल्म का हुक्म चाहते हैं। **132 मस्अला :** इस आयत में यहूदो नसारा के साथ दोस्ती व मुवालात या'नी इन की मदद करना इन से मदद चाहना इन के साथ मह़ब्बत के रवाबित़ रखना मम्नूअ़ फ़रमाया गया, येह हुक्म आ़म है अगर्चे आयत का नुज़ूल किसी ख़ास वाक़िए़ में हुवा हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित सह़ाबी और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुनाफ़िक़ीन का सरदार था, ह़ज़रते उ़बादा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया कि यहूद में मेरे बहुत कसीरुत्ता'दाद (बहुत ज़ियादा) दोस्त हैं जो बड़ी शौकत व क़ुव्वत वाले हैं, अब मैं उन की दोस्ती से बेज़ार हूं और अल्लाह व रसूल के सिवा मेरे दिल में और किसी की मह़ब्बत की गुन्जाइश नहीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा कि मैं तो यहूद की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता मुझे पेश आने वाले ह़वादिस का अन्देशा है और मुझे उन के साथ रस्मो राह रखनी ज़रूर है। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि यहूद की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है, उ़बादा का येह काम नहीं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) **133 :** इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर कोई भी हों उन में बाहम कितने ही इख़्तिलाफ़ हों मुसल्मानों के मुक़ाबले में वोह सब एक हैं ''اَلْكُفْرُ مِلَّةٌ وَّاحِدَةٌ'' (مدارک) **134 :** इस में बहुत शिद्दत व ताकीद है कि मुसल्मानों पर यहूदो नसारा और हर मुख़ालिफ़े दीने इस्लाम से अ़लाह़दगी और जुदा रहना वाजिब है। (مدارک وخازن)

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ

नहीं देता[135] अब तुम उन्हें देखोगे जिन के दिलों में आज़ार (बीमारी) है[136] कि यहूदो नसारा की तरफ़ दौड़ते हैं

يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ

कहते हैं हम डरते हैं कि हम पर कोई गर्दिश आ जाए[137] तो नज़्दीक है कि अल्लाह फ़त्ह लाए[138]

اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ؕ

या अपनी तरफ़ से कोई हुक्म[139] फिर उस पर जो अपने दिलों में छुपाया था[140] पचताते रह जाएं

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ

और[141] ईमान वाले कहते हैं क्या येही हैं जिन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई थी अपने हल्फ़ (अ़हद) में पूरी कोशिश से

اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

कि वोह तुम्हारे साथ हैं उन का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ) गया तो रह गए नुक़्सान में[142] ऐ ईमान

اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ

वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा[143] तो अ़न्क़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वोह अल्लाह के प्यारे

وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ

और अल्लाह उन का प्यारा मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे[144] येह अल्लाह का फ़ज़्ल है

135 : जो काफ़िरों से दोस्ती कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का कातिब नसरानी था, हज़रत अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन से फ़रमाया कि नसरानी से क्या वासिता? तुम ने येह आयत नहीं सुनी "يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ... الآيه" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : उस का दीन उस के साथ मुझे तो उस की किताबत से ग़रज़ है। अमीरुल मुअमिनीन ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इ़ज़्ज़त न दो, अल्लाह ने उन्हें दूर किया तुम उन्हें क़रीब न करो, हज़रते अबू मूसा ने अ़र्ज़ किया कि बिग़ैर उस के हुकूमते बसरा का काम चलाना दुश्वार है, या'नी इस ज़रूरत से ब मजबूरी उस को रखा है कि इस क़ाबिलिय्यत का दूसरा आदमी मुसल्मानों में नहीं मिलता, इस पर हज़रते अमीरुल मुअमिनीन ने फ़रमाया : नसरानी मर गया! वस्सलाम या'नी फ़र्ज़ करो कि वोह मर गया उस वक़्त जो इन्तिज़ाम करोगे वोही अब करो और उस से हरगिज़ काम न लो येह आख़िरी बात है। (خازن) 136 : या'नी निफ़ाक़। 137 : जैसे कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने कहा। 138 : और अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मुज़फ़्फ़रो मन्सूर करे और इन के दीन को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करे और मुसल्मानों को इन के दुश्मन यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ग़लबा दे, चुनान्चे येह ख़बर सादिक़ हुई और बि करमिही तआ़ला मक्कए मुकर्रमा और यहूद के बिलाद फ़त्ह हुए। (خازن وغیرہ) 139 : जैसे कि सर ज़मीने हिजाज़ को यहूद से पाक करना और वहां उन का नामो निशान बाक़ी न रखना या मुनाफ़िक़ीन के राज़ इफ़्शा कर के उन्हें रुस्वा करना। (خازن وجلالین) 140 : या'नी निफ़ाक़, या मुनाफ़िक़ीन का येह ख़याल कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में काम्याब न होंगे। 141 : मुनाफ़िक़ीन का पर्दा खुलने पर 142 : कि दुन्या में ज़लीलो रुस्वा हुए और आख़िरत में अ़ज़ाबे दाइमी के सज़ावार। 143 : कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝٥٤ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ

जिसे चाहे दे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उस का रसूल और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ

ईमान वाले[145] कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर

رٰكِعُوْنَ ۝٥٥ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ

झुके हुए हैं[146] और जो अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों को अपना दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह

اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝٥٦ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ

ही का गुरोह ग़ालिब है ऐ ईमान वालो जिन्हों ने तुम्हारे दीन को

اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ

हंसी खेल बना लिया है[147] वोह जो तुम से पहले किताब दिये गए और काफ़िर[148] उन में किसी को

الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٥٧ وَاِذَا نَادَيْتُمْ

अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो[149] और जब तुम नमाज़ के

बे दीनी व इरतिदाद की मुस्तदई (तलब) है। इस की मुमानअ़त के बा'द मुरतद्दीन का ज़िक्र फ़रमाया और मुरतद होने से क़ब्ल लोगों के मुरतद होने की ख़बर दी। चुनान्चे येह ख़बर सादिक़ हुई और बहुत लोग मुरतद हुए। **144 :** येह सिफ़त जिन की है वोह कौन हैं ? इस में कई क़ौल हैं : हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा व हसन व क़तादा ने कहा कि येह लोग हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उन के अस्हाब हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صلى الله عليه وسلم के बा'द मुरतद होने और ज़कात से मुन्किर होने वालों पर जिहाद किया। इयाज़ बिन ग़नम अश्अ़री से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم ने हज़रते अबू मूसा अश्अ़री की निस्बत फ़रमाया कि येह इन की क़ौम है। एक क़ौल येह है कि येह लोग अहले यमन हैं जिन की ता'रीफ़ बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों में आई है। सुद्दी का क़ौल है कि येह लोग अन्सार हैं जिन्हों ने रसूले करीम صلى الله عليه وسلم की ख़िदमत की और इन अक़्वाल में कुछ मुनाफ़ात (इख़्तिलाफ़) नहीं क्यूं कि इन सब हज़रात का इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ होना सहीह है। **145 :** जिन के साथ मुवालात हराम है उन का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द उन का बयान फ़रमाया जिन के साथ मुवालात वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** हज़रते जाबिर رضي الله عنه ने फ़रमाया कि येह आयत हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के हक़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** हमारी क़ौम क़ुरैज़ा और नज़ीर ने हमें छोड़ दिया और क़समें खा लीं कि वोह हमारे साथ मुजालसत (हम नशीनी) न करेंगे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा : हम राज़ी हैं अल्लाह के रब होने पर, उस के रसूल के नबी होने पर, मोमिनीन के दोस्त होने पर, और हुक्म आयत का तमाम मोमिनीन के लिये आ़म है, सब एक दूसरे के दोस्त और मुहिब हैं। **146 :** जुम्ला ''وَهُمْ رَاكِعُوْنَ'' दो वज्ह रखता है, एक येह कि पहले जुम्लों पर मा'तूफ़ हो। दूसरी येह कि हाल वाक़ेअ़ हो, पहली वज्ह अज़्हर व अक़्वा है और हज़रते मुतर्जिम قدس سره का तरजमा भी इसी के मुसाइद है। (جمل عن السمين) दूसरी वज्ह पर दो एहतिमाल हैं एक येह कि ''يُقِيْمُوْنَ'', ''وَيُؤْتُوْنَ'' दोनों फ़े'लों के फ़ाइल से हाल वाक़ेअ़ हो, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि वोह ब ख़ुशूअ़ व तवाज़ोअ़ नमाज़ क़ाइम करते और ज़कात देते हैं। (تفسير ابو السعود) दूसरा एहतिमाल येह है कि सिर्फ़ ''يُؤْتُوْنَ'' के फ़ाइल से हाल वाक़ेअ़ हो, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और मुतवाज़ेअ़ हो कर ज़कात देते हैं। (جمل) बा'ज़ का क़ौल है कि येह आयत हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضي الله عنه की शान में है कि आप ने नमाज़ में साइल को अंगुश्तरी सदक़तन दी थी, वोह अंगुश्तरी (अंगूठी) अंगुश्ते मुबारक में ढीली थी बे अ़मले कसीर के निकल गई। लेकिन इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी ने तफ़्सीरे कबीर में इस का बहुत शद्दो मद से रद किया और इस के बुत्लान पर बहुत वुजूह क़ाइम किये हैं। **147 शाने नुज़ूल :** रुफ़ाआ़ बिन ज़ैद और सुवैद बिन हारिस दोनों इज़्हारे इस्लाम के बा'द मुनाफ़िक़ हो गए, बा'ज़ मुसल्मान इन से महब्बत रखते थे अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया कि ज़बान से इस्लाम का इज़्हार करना और दिल में कुफ़्र छुपाए रखना दीन को हंसी और खेल बनाना है। **148 :** या'नी बुत परस्त मुश्रिक जो अहले

إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾

लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं[150] येह इस लिये कि वोह निरे बे अक़्ल लोग हैं[151]

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ

तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी

اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ قُلْ هَلْ

तरफ़ उतरा और उस पर जो पहले उतरा[152] और येह कि तुम में अक्सर बे हुक्म (ना फ़रमान) हैं तुम फ़रमाओ क्या

اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ

मैं बता दूं जो **अल्लाह** के यहां इस से बदतर दरजे में हैं[153] वोह जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन पर ग़ज़ब

عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ

फ़रमाया और उन में से कर दिये बन्दर और सुअर[154] और शैतान के पुजारी उन का ठिकाना

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۶۰﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا

ज़ियादा बुरा है[155] और येह सीधी राह से ज़ियादा बहके और जब तुम्हारे पास आएं[156] तो कहते हैं हम मुसलमान हैं

وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا

और वोह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो

किताब से भी बदतर हैं। (خازن) **149 :** क्यूं कि ख़ुदा के दुश्मनों से दोस्ती करना ईमानदार का काम नहीं। **150 शाने नुज़ूल :** कल्बी का क़ौल है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिये अज़ान कहता और मुसल्मान उठते तो यहूद हंसते और तमस्ख़ुर (मज़ाक़ उड़ाया) करते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। सुद्दी का क़ौल है कि मदीनए तृय्यिबा में जब मुअज़्ज़िन अज़ान में ''اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه'' और ''اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه'' कहता तो एक नसरानी येह कहा करता कि जल जाए झूटा। एक शब उस का ख़ादिम आग लाया वोह और उस के घर के लोग सो रहे थे, आग से एक शरारा उड़ा और वोह नसरानी और उस के घर के लोग और तमाम घर जल गया। **151 :** जो ऐसी सफ़ीहाना (बे वुक़ूफ़ाना) और जाहिलाना हरकात करते हैं। इस आयत से मा'लूम हुवा कि अज़ान नस्से क़ुरआनी से भी साबित है। **152 शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअत ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि आप अम्बिया में से किस किस को मानते हैं? इस सुवाल से उन का मतलब येह था कि अगर आप हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न मानें तो वोह आप पर ईमान ले आएं लेकिन हुज़ूर ने इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं **अल्लाह** पर ईमान रखता हूं और जो उस ने हम पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रते इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'क़ूब व अस्बात पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रते ईसा व मूसा को दिया गया या'नी तौरैत व इन्जील और जो और नबियों को उन के रब की तरफ़ से दिया गया सब को मानता हूं, हम अम्बिया में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को मानें और किसी को न मानें। जब उन्हें मा'लूम हुवा कि आप हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को भी मानते हैं तो वोह आप की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए और कहने लगे : जो ईसा को माने हम उस पर ईमान न लाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **153 :** कि इस बरहक़ दीन वालों को तो तुम महज़ अपने इनाद व अ़दावत ही से बुरा कहते हो और तुम पर **अल्लाह** तआ़ला ने ला'नत की और ग़ज़ब फ़रमाया और आयत में जो मज़्कूर है वोह तुम्हारा हाल हुवा तो बदतर दरजे में तो तुम ख़ुद हो, कुछ दिल में सोचो ! **154 :** सूरतें मस्ख़ कर के। **155 :** और वोह जहन्नम है। **156 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपने ईमान व इख़्लास का इज़्हार किया और कुफ़्रो ज़लाल छुपाए रखा **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ

छुपा रहे हैं और उन[157] में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती

وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ

और ह़राम ख़ोरी पर दौड़ते हैं[158] बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं उन्हें क्यूं नहीं मन्अ़ करते

الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ

उन के पादरी और दरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से बेशक

مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ

बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं[159] और यहूदी बोले **अल्लाह** का हाथ बंधा हुवा है[160] उन्हीं के

اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ

हाथ बांधे जाएं[161] और उन पर इस कहने से ला'नत है बल्कि उस के हाथ कुशादा हैं[162] अ़त़ा फ़रमाता है जैसे

يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا

चाहे[163] और ऐ मह़बूब येह[164] जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा इस से उन में बहुतों को शरारत

وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَاۤ

और कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी[165] और उन में हम ने क़ियामत तक आपस में दुश्मनी और बैर (बुग़्ज़) डाल दिया[166] जब कभी

اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ

लड़ाई की आग भड़काते हैं **अल्लाह** उसे बुझा देता है[167] और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं

को उन के हाल की ख़बर दी। **157 :** या'नी यहूद **158 :** गुनाह हर मा'सियत व ना फ़रमानी को शामिल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गुनाह से तौरैत के मज़ामीन का छुपाना और उस में सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم के जो मह़ासिन व औसाफ़ हैं उन का मख़्फ़ी रखना और उ़दवान या'नी ज़ियादती से तौरैत के अन्दर अपनी त़रफ़ से कुछ बढ़ा देना और ह़राम ख़ोरी से रिश्वतें वग़ैरा मुराद हैं। (خازن) **159 :** कि लोगों को गुनाहों और बुरे कामों से नहीं रोकते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि उ़लमा पर नसीह़त और बदी से रोकना वाजिब है और जो शख़्स बुरी बात से मन्अ़ करने को तर्क करे और नह्ये मुन्कर से बाज़ रहे वोह ब मन्ज़िला मुर्तकिबे गुनाह के है। **160 :** या'नी معاذ الله वोह बख़ील है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضي الله تعالى عنهما ने फ़रमाया कि यहूद बहुत ख़ुशह़ाल और निहायत दौलत मन्द थे, जब उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم की तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त की तो उन की रोज़ी कम हो गई, उस वक़्त फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि **अल्लाह** का हाथ बंधा है या'नी معاذ الله वोह रिज़्क़ देने और ख़र्च करने में बुख़्ल करता है, उस के इस क़ौल पर किसी यहूदी ने मन्अ़ न किया बल्कि राज़ी रहे, इसी लिये येह सब का मक़ूला क़रार दिया गया और येह आयत उन के ह़क़ में नाज़िल हुई। **161 :** तंगी और दादो दिहिश (सख़ावत) से। इस इर्शाद का येह असर हुवा कि यहूद दुन्या में सब से ज़ियादा बख़ील हो गए या येह मा'ना हैं कि उन के हाथ जहन्नम में बांधे जाएं और इस त़रह़ उन्हें आतिशे दोज़ख़ में डाला जाए उन की इस बेहूदा गोई और गुस्ताख़ी की सज़ा में। **162 :** वोह जवाद करीम है। **163 :** अपनी ह़िक्मत के मुवाफ़िक़, इस में किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं। **164 :** क़ुरआन शरीफ़ **165 :** या'नी जितना क़ुरआने पाक उतरता जाएगा इतना ह़सद व इनाद बढ़ता जाएगा और वोह इस के साथ कुफ़्र व सरकशी में बढ़ते रहेंगे। **166 :** वोह हमेशा बाहम मुख़्तलिफ़ रहेंगे और उन के दिल कभी न मिलेंगे। **167 :** और उन की मदद नहीं फ़रमाता, वोह ज़लील होते हैं।

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا

और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़ गारी करते

لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

तो ज़रूर हम उन के गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते और अगर क़ाइम रखते

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ

तौरैत और इन्जील[168] और जो कुछ उन की त़रफ़ उन के रब की त़रफ़ से उतरा[169] तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से

وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ

और उन के पाउं के नीचे से[170] उन में कोई गुरौह ए'तिदाल पर है[171] और उन में अक्सर बहुत ही बुरे

مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ

काम कर रहे हैं[172] ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से[173] और ऐसा

لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से[174] बेशक अल्लाह

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَیْءٍ

काफ़िरों को राह नहीं देता तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो तुम कुछ भी नहीं हो[175]

حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

जब तक न क़ाइम करो तौरैत और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[176]

وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ

और बेशक ऐ मह़बूब वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उन में बहुतों को शरारत और कुफ़्र की और तरक़्क़ी होगी[177]

168 : इस त़रह़ कि सय्यिदे अम्बिया ﷺ पर ईमान लाते और आप का इत्तिबाअ़ करते कि तौरैत व इन्जील में इस का हुक्म दिया गया है। **169 :** या'नी तमाम किताबें जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों पर नाज़िल फ़रमाईं सब में सय्यिदे अम्बिया ﷺ का ज़िक्र और आप पर ईमान लाने का हुक्म है। **170 :** या'नी रिज़्क़ की कसरत होती और हर त़रफ़ से पहुंचता। **फ़ाएदा :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि दीन की पाबन्दी और अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से रिज़्क़ में वुस्अ़त होती है। **171 :** ह़द से तजावुज़ नहीं करता, येह यहूदियों में से वोह लोग हैं जो सय्यिदे आ़लम ﷺ पर ईमान लाए। **172 :** जो कुफ़्र पर जमे हुए हैं। **173 :** और कुछ अन्देशा न करो। **174 :** या'नी कुफ़्फ़ार से जो आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं। सफ़रों में शब को हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम ﷺ का पहरा दिया जाता था, जब येह आयत नाज़िल हुई पहरा हटा दिया गया और हुज़ूर ने पहरेदारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ ! अल्लाह तआ़ला ने मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाई। **175 :** किसी दीन व मिल्लत में नहीं। **176 :** या'नी क़ुरआने पाक। इन तमाम किताबों में सय्यिदे आ़लम ﷺ की ना'त व सिफ़त और आप पर ईमान लाने का हुक्म है, जब तक हुज़ूर पर ईमान न लाएं तौरैत

فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ बेशक वोह जो अपने आप को मुसल्मान कहते हैं[178] और इसी त़रह़ यहूदी

وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا

और सितारा परस्त और नसरानी इन में जो कोई सच्चे दिल से **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान लाए और अच्छा काम करे

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ

तो उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म बेशक हम ने बनी इसराईल

اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا

से अ़ह्द लिया[179] और उन की त़रफ़ रसूल भेजे जब कभी उन के पास कोई रसूल वोह बात ले कर आया जो

تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَحَسِبُوْۤا اَلَّا

उन के नफ़्स की ख़्वाहिश न थी[180] एक गुरोह को झुटलाया और एक गुरोह को शहीद करते हैं[181] और इस गुमान में रहे कि

تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا

कोई सज़ा न होगी[182] तो अन्धे और बहरे हो गए[183] फिर **अल्लाह** ने उन की तौबा क़बूल की[184] फिर उन में बहुतेरे (बहुत से)

كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۷۱﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا

अन्धे और बहरे हो गए और **अल्लाह** उन के काम देख रहा है बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ

कि **अल्लाह** वोही मसीह़ मरयम का बेटा है[185] और मसीह़ ने तो येह कहा था ऐ बनी इसराईल

اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ

अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब[186] और तुम्हारा रब बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर

व इन्जील की इक़ामत का दा'वा सह़ीह़ नहीं हो सकता। **177 :** क्यूं कि जितना क़ुरआने पाक नाज़िल होता जाएगा येह मुक़ाबरा व इनाद (ग़ुरूर व दुश्मनी की वज्ह) से इस के इन्कार में और शिद्दत करते जाएंगे। **178 :** और दिल में ईमान नहीं रखते, मुनाफ़िक़ हैं **179 :** तौरैत में कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाएं और हुक्मे इलाही के मुत़ाबिक़ अ़मल करें। **180 :** और उन्हों ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़काम को अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पाया तो उन में से **181 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब में तो यहूदो नसारा सब शरीक हैं मगर क़त्ल करना येह ख़ास यहूद का काम है। उन्हों ने बहुत से अम्बिया को शहीद किया जिन में से ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं। **182 :** और ऐसे शदीद जुर्मों पर भी अ़ज़ाब न किया जाएगा। **183 :** ह़क़ के देखने और सुनने से। येह उन के ग़ायते जहल और निहायते कुफ़्र और क़बूले ह़क़ से ब दरजए ग़ायत ए'राज़ करने का बयान है। **184 :** जब उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तौबा की, इस के बा'द दोबारा **185 :** नसारा के बहुत फ़िर्क़े हैं, उन में से या'क़ूबिया और मल्कानिया का येह क़ौल था वोह कहते थे कि मरयम ने "इलाह" जना और येह भी कहते थे कि इलाह ने ज़ाते ईसा में ह़ुलूल किया और वोह उन के साथ मुत्तह़िद हो गया तो ईसा इलाह हो गए। تَعَالَى اللّٰهُ عَنْ ذٰلِكَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (**अल्लाह** इन बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है) (خازن) **186 :** और मैं उस का बन्दा

عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝۷۲ لَقَدْ كَفَرَ

जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं बेशक काफ़िर हैं

الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ

वोह जो कहते हैं **अल्लाह** तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है[187] और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा[188]

وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ

और अगर अपनी बात से बाज़ न आए[189] तो जो उन में काफ़िर मरेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब

اَلِيْمٌ ۝۷۳ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

पहुंचेगा तो क्यूं नहीं रुजूअ़ करते **अल्लाह** की त़रफ़ और उस से बख़्शिश मांगते और **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ۝۷۴ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ

मेहरबान मसीह इब्ने मरयम नहीं मगर एक रसूल[190] इस से पहले बहुत

الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ

रसूल हो गुज़रे[191] और इस की मां सिद्दीक़ा है[192] दोनों खाना खाते थे[193] देखो तो

نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝۷۵ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

हम कैसी साफ़ निशानियां उन के लिये बयान करते हैं फिर देखो वोह कैसे औंधे जाते हैं तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा ऐसे को

اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝۷۶

पूजते हो जो तुम्हारे नुक़्सान का मालिक न नफ़्अ़ का[194] और **अल्लाह** ही सुनता जानता है

हूं इलाह नहीं। **187 :** येह क़ौल नसारा के फ़िर्क़ए मरकूसिया व नस्तूरिया का है, अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से उन की मुराद येह थी कि **अल्लाह** और मरयम और ईसा तीनों इलाह हैं और इलाह होना इन सब में मुश्तरक है। मुतकल्लिमीन फ़रमाते हैं कि नसारा कहते हैं कि बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस येह तीनों एक इलाह हैं। **188 :** न उस का कोई सानी न सालिस, वोह वह़दानिय्यत के साथ मौसूफ़ है, उस का कोई शरीक नहीं, बाप बेटे बीवी सब से पाक। **189 :** और तस्लीस (तीन ख़ुदा होने) के मो'तक़िद रहे, तौह़ीद इख़्तियार न की **190 :** इन को इलाह मानना ग़लत़ बात़िल और कुफ़्र है। **191 :** वोह भी मो'जिज़ात रखते थे, येह मो'जिज़ात उन के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील थे, इसी त़रह ह़ज़रते मसीह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी रसूल हैं, इन के मो'जिज़ात भी दलीले नुबुव्वत हैं, इन्हें रसूल ही मानना चाहिये, जैसे और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मो'जिज़ात की बिना पर ख़ुदा नहीं मानते इन को भी ख़ुदा न मानो। **192 :** जो अपने रब के कलिमात और उस की किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं। **193 :** इस में नसारा का रद है कि इलाह ग़िज़ा का मोहताज नहीं हो सकता तो जो ग़िज़ा खाए, जिस्म रखे, उस जिस्म में तह़लील (लाग़री व कमज़ोरी) वाक़ेअ़ हो, ग़िज़ा उस का बदल बने, वोह कैसे इलाह हो सकता है ? **194 :** येह इब्त़ाले शिर्क की एक और दलील है। इस का ख़ुलासा येह है कि इलाह (मुस्तह़िक़े इ़बादत) वोही हो सकता है जो नफ़्अ़ व ज़रर वग़ैरा हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत व इख़्तियार रखता हो, जो ऐसा न हो वोह इलाह मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं हो सकता और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नफ़्अ़ व ज़रर के बिज़्ज़ात मालिक न थे **अल्लाह** तआ़ला के मालिक करने से मालिक हुए तो उन की निस्बत उलूहिय्यत का ए'तिक़ाद बात़िल है। (تفسیر ابو السعود)

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ غَیْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا
तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़ियादती न करो[195] और ऐसे लोगों की

اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ
ख़्वाहिश पर न चलो[196] जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह से

السَّبِیْلِ۠ ﴿۷۷﴾ لُعِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ
बहक गए ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दावूद

وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾ كَانُوْا لَا
और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर[197] येह[198] बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का जो बुरी बात करते आपस में

یَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾ تَرٰى كَثِیْرًا
एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे[199] उन में तुम बहुत को

مِّنْهُمْ یَتَوَلَّوْنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ
देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये ख़ुद आगे भेजी येह कि

سَخِطَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ فِی الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ لَوْ كَانُوْا یُؤْمِنُوْنَ
अल्लाह का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अज़ाब में हमेशा रहेंगे[200] और अगर वोह ईमान लाते[201]

195 : यहूद की ज़ियादती तो येह कि हज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत ही नहीं मानते, और नसारा की ज़ियादती येह कि उन्हें मा'बूद ठहराते हैं। **196 :** या'नी अपने बद दीन बाप दादा वग़ैरा की। **197 :** बाशिन्दगाने ऐला ने जब हद से तजावुज़ किया और सनीचर के रोज़ शिकार तर्क करने का जो हुक्म था उस की मुख़ालफ़त की तो हज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की और उन के हक़ में बद दुआ फ़रमाई तो वोह बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए और अस्हाबे माइदा ने जब नाज़िल शुदा ख़्वान की ने'मतें खाने के बा'द कुफ़्र किया तो हज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन के हक़ में बद दुआ की तो वोह ख़िन्ज़ीर और बन्दर हो गए और उन की ता'दाद पांच हज़ार थी। (جمل وغیرہ) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहूद अपने आबा पर फ़ख़्र किया करते थे और कहते थे : हम अम्बिया की औलाद हैं। इस आयत में उन्हें बताया गया कि उन अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की है। **एक क़ौल** येह है कि हज़रते दावूद और हज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की है। **एक क़ौल** येह है कि हज़रते दावूद और हज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की जल्वा अफ़रोज़ी की बिशारत दी और हुज़ूर पर ईमान न लाने और कुफ़्र करने वालों पर ला'नत की। **198 :** ला'नत **199 मस्अला :** आयत से साबित हुवा कि नह्ये मुन्कर या'नी बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है और बदी को मन्अ करने से बाज़ रहना सख़्त गुनाह है। तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब बनी इसराईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उन के उलमा ने अव्वल तो उन्हें मन्अ किया, जब वोह बाज़ न आए तो फिर भी उन से मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उन के साथ शामिल हो गए, उन के इस इस्यान व तअद्दी का येह नतीजा हुवा कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते दावूद व हज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से उन पर ला'नत उतारी। **200 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात हराम और **अल्लाह** तआला के ग़ज़ब का सबब है। **201 :** सिद्क़ो इख़्लास के साथ बिग़ैर निफ़ाक़ के।

بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا

अल्लाह और इन नबी पर और उस पर जो उन की त़रफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते[202] मगर उन में तो बहुतेरे (अक्सर)

مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ

फ़ासिक़ हैं ज़रूर तुम मुसल्मानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों

وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ

और मुश्रिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसल्मानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे

قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ

जो कहते थे हम नसारा हैं[203] येह इस लिये कि उन में आ़लिम और दरवेश हैं और येह

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

गु़रूर नहीं करते[204]

202 : इस से साबित हुवा कि मुश्रिकीन के साथ दोस्ती और मुवालात अ़लामते निफ़ाक़ है। **203 :** इस आयत में उन की मद्ह़ है जो ज़मानए अक़्दस तक ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन पर रहे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत मा'लूम होने पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ले आए। **शाने नुज़ूल :** इब्तिदाए इस्लाम में जब कुफ़्फ़ारे कु़रैश ने मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं दीं तो अस्ह़ाबे किराम में से ग्यारह मर्द और चार औ़रतों ने हुज़ूर के हुक्म से ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, उन मुहाजिरीन के अस्मा येह हैं : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और इन की ज़ौजए त़ाहिरा ह़ज़रते रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते अबू हुज़ैफ़ा और इन की ज़ौजा ह़ज़रते सहला बिन्ते सुहैल और ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर, ह़ज़रते अबू सलमा और इन की बीबी ह़ज़रते उम्मे सलमा बिन्ते उमय्या, ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न, ह़ज़रते आ़मिर बिन रबीआ़ और इन की बीबी ह़ज़रते लैला बिन्ते अबी ख़ैसमा, ह़ज़रते ह़ातिब बिन उ़मर व ह़ज़रते सुहैल बिन बैज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم। येह ह़ज़रात नुबुव्वत के पांचवें साल माहे रजब में बह़री सफ़र कर के ह़बशा पहुंचे, इस हिजरत को हिजरते ऊला कहते हैं, इन के बा'द ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब गए, फिर और मुसल्मान रवाना होते रहे यहां तक कि बच्चों और औ़रतों के इ़लावा मुहाजिरीन की ता'दाद बयासी मर्दों तक पहुंच गई, जब कु़रैश को इस हिजरत का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने एक जमाअ़त तोह़फ़े तह़ाइफ़ दे कर नज्जाशी बादशाह के पास भेजी, उन लोगों ने दरबारे शाही में बारयाबी ह़ासिल कर के बादशाह से कहा कि हमारे मुल्क में एक शख़्स ने नुबुव्वत का दा'वा किया है और लोगों को नादान बना डाला है, उन की जमाअ़त जो आप के मुल्क में आई है वोह यहां फ़साद अंगेज़ी करेगी और आप की रिआ़या को बाग़ी बनाएगी, हम आप को ख़बर देने के लिये आए हैं और हमारी क़ौम दरख़्वास्त करती है कि आप उन्हें हमारे ह़वाले कीजिये। नज्जाशी बादशाह ने कहा : हम उन लोगों से गुफ़्तगू कर लें, येह कह कर मुसल्मानों को त़लब किया और उन से दरयाफ़्त किया कि तुम ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की वालिदा के ह़क़ में क्या ए'तिक़ाद रखते हो ? ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल और कलिमतुल्लाह व रूहुल्लाह हैं और ह़ज़रते मरयम कुंवारी पाक हैं। येह सुन कर नज्जाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठा कर कहा : ख़ुदा की क़सम तुम्हारे आक़ा ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी येह लकड़ी या'नी हुज़ूर का इर्शाद कलामे ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। येह देख कर मुश्रिकीने मक्का के चेहरे उतर गए। फिर नज्जाशी ने कु़रआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की, ह़ज़रते जा'फ़र ने सूरए मरयम तिलावत की, उस वक़्त दरबार में नसरानी आ़लिम और दरवेश मौजूद थे, कु़रआने करीम सुन कर बे इख़्तियार रोने लगे और नज्जाशी ने मुसल्मानों से कहा : तुम्हारे लिये मेरे क़लम रव (मुल्क) में कोई ख़त़रा नहीं। मुश्रिकीने मक्का नाकाम फिरे और मुसल्मान नज्जाशी के पास बहुत इ़ज़्ज़तो आसाइश के साथ रहे और फ़ज़्ले इलाही से नज्जाशी को दौलते ईमान का शरफ़ ह़ासिल हुवा। इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **204** **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि इ़ल्म और तर्के तकब्बुर बहुत काम आने वाली चीज़ें हैं और इन की बदौलत हिदायत नसीब होती है।

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْیُنَهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ

और जब सुनते हैं वोह जो रसूल की त़रफ़ उतरा[205] तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं[206]

مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۸۳﴾

इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए[207] तो हमें ह़क़ के गवाहों में लिख ले[208]

وَ مَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ یُّدْخِلَنَا

और हमें क्या हुवा कि हम ईमान न लाएं **अल्लाह** पर और उस ह़क़ पर कि हमारे पास आया और हम त़मअ़ करते हैं कि हमें हमारा रब

رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۸۴﴾ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِیْ

नेक लोगों के साथ दाखि़ल करे[209] तो **अल्लाह** ने उन के इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۸۵﴾ وَ

जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येह बदला है नेकों का[210] और

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۸۶﴾ ع یٰۤاَیُّهَا

वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह हैं दोज़ख़ वाले ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَیِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ

ईमान वालो[211] ह़राम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल कीं[212] और ह़द से न बढ़ो

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۸۷﴾ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَیِّبًا ص

बेशक ह़द से बढ़ने वाले **अल्लाह** को ना पसन्द हैं और खाओ जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने रोज़ी दी ह़लाल पाकीज़ा

205 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ **206 :** येह उन की रिक़्क़ते क़ल्ब का बयान है कि क़ुरआने करीम के दिल में असर करने वाले मज़ामीन सुन कर रो पड़ते हैं। चुनान्चे नजाशी बादशाह की दरख़्वास्त पर ह़ज़रते जा'फ़र ने उस के दरबार में सूरए मरयम और सूरए त़ाहा की आयात पढ़ कर सुनाईं तो नजाशी बादशाह और उस के दरबारी जिन में उस की क़ौम के उ़लमा मौजूद थे सब ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। इसी त़रह़ नजाशी की क़ौम के सत्तर आदमी जो सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए थे हुज़ूर से सूरए यासीन सुन कर बहुत रोए। **207 :** सय्यिदे आ़लम ﷺ पर और हम ने उन के बरह़क़ होने की शहादत दी **208 :** और सय्यिदे आ़लम ﷺ की उम्मत में दाखि़ल कर जो रोज़े क़ियामत तमाम उम्मतों के गवाह होंगे। (येह उन्हें इन्जील से मा'लूम हो चुका था) **209 :** जब ह़बशा का वफ़्द इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर वापस हुवा तो यहूद ने उन्हें इस पर मलामत की, इस के जवाब में उन्हों ने येह कहा कि जब ह़क़ वाज़ेह़ हो गया तो हम क्यूं ईमान न लाते, या'नी ऐसी ह़ालत में ईमान न लाना क़ाबिले मलामत है न कि ईमान लाना क्यूं कि येह सबब है फ़लाहे दारैन का। **210 :** जो सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाएं और ह़क़ का इक़रार करें। **211 शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त रसूले करीम ﷺ का वा'ज़ सुन कर एक रोज़ ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न के यहां जम्अ़ हुई और उन्हों ने बाहम तर्के दुन्या का अ़हद किया और इस पर इत्तिफ़ाक़ किया कि वोह टाट पहनेंगे, हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे, शब इ़बादते इलाही में बेदार रह कर गुज़ारा करेंगे, बिस्तर पर न लैटेंगे, गोश्त और चिक्नाई न खाएंगे, औ़रतों से जुदा रहेंगे, ख़ुश्बू न लगाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया। **212 :** या'नी जिस त़रह़ ह़राम को तर्क किया जाता है उस त़रह़ ह़लाल चीज़ों को तर्क न करो और न मुबालग़तन किसी ह़लाल चीज़ को येह

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ لَا یُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ

और डरो अल्लाह से जिस पर तुम्हें ईमान है अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत़ फ़हमी

اَیْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ یُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَیْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ

की क़समों पर[213] हां उन क़समों पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम ने मज़बूत़ किया[214] तो ऐसी क़सम का बदला दस

عَشَرَةِ مَسٰكِیْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِیْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ

मिस्कीनों को खाना देना[215] अपने घर वालों को जो खिलाते हो उस के औसत़ में से[216] या उन्हें कपड़े देना[217] या

تَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ ثَلٰثَةِ اَیَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ

एक बरदा (ग़ुलाम) आज़ाद करना तो जो इन में से कुछ न पाए तो तीन दिन के रोज़े[218] येह बदला है

اَیْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَ احْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तुम्हारी क़समों का जब क़सम खाओ[219] और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो[220] इसी त़रह़ अल्लाह तुम से अपनी

اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ

आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एह़सान मानो ऐ ईमान वालो शराब और जूआ और

الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ

बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम

تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ

फ़लाह़ पाओ शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे

कहो कि हम ने इस को अपने ऊपर ह़राम कर लिया। **213 :** ग़लत़ फ़हमी की क़सम या'नी यमीने लग्व येह है कि आदमी किसी वाक़िए को अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खा ले और ह़क़ीक़त में वोह ऐसा न हो, ऐसी क़सम पर कफ़्फ़ारा नहीं। **214 :** या'नी यमीने मुन्अक़िदा पर जो किसी आयिन्दा अम्र पर क़स्द कर के खाई जाए ऐसी क़सम तोड़ना गुनाह भी है और इस पर कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है। **215 :** दोनों वक़्त का ख़्वाह उन्हें खिलावे या पौने दो सेर गेहूं या साढ़े तीन सेर जव सदक़ए फ़ित्र की त़रह़ दे दे। (दो किलो में अस्सी 80 ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत्बूआ, बाबुल मदीना कराची")। **मस्अला :** येह भी जाइज़ है कि एक मिस्कीन को दस रोज़ दे दे या खिला दिया करे। **216 :** या'नी न बहुत आ'ला दरजे का न बिल्कुल अदना, बल्कि मुतवस्सित़। **217 :** औसत़ दरजे के जिन से अक्सर बदन ढक सके। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक तहबन्द और कुरता या एक तहबन्द और एक चादर हो। **मस्अला :** कफ़्फ़ारे में इन तीनों बातों का इख़्तियार है ख़्वाह खाना दे ख़्वाह कपड़े, ख़्वाह ग़ुलाम आज़ाद करे, हर एक से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। **218 मस्अला :** रोज़े से कफ़्फ़ारा जब ही अदा हो सकता है जब कि खाना, कपड़ा देने और ग़ुलाम आज़ाद करने की क़ुदरत न हो। **मस्अला :** येह भी ज़रूरी है कि येह रोज़े मुतवातिर रखे जाएं। **219 :** और क़सम खा कर तोड़ दो या'नी उस को पूरा न करो। **मस्अला :** क़सम तोड़ने से पहले कफ़्फ़ारा देना दुरुस्त नहीं। **220 :** या'नी उन्हें पूरा करो अगर उस में शरअ़न कोई ह़रज न हो और येह भी ह़िफ़ाज़त है कि क़सम खाने की आदत तर्क की जाए।

فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके[221] तो क्या तुम

مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ

बाज़ आए और हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ[222]

فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

तो जान लो कि हमारे रसूल का ज़िम्मा सिर्फ़ वाज़ेह़ त़ौर पर हुक्म पहुंचा देना है[223] जो ईमान लाए और नेक

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है[224] जो कुछ उन्हों ने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और

الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ

नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और अल्लाह नेकों को

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَیْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ

दोस्त रखता है[225] ऐ ईमान वालो ज़रूर अल्लाह तुम्हें आज़्माएगा ऐसे बा'ज़ शिकार से

تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ

जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंचें[226] कि अल्लाह पहचान करा दे उन की जो उस से बिन देखे डरते हैं फिर इस

221 : इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूए बाज़ी का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग़्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से मह़रूम हो जाता है। 222 : इत़ाअ़ते ख़ुदा और रसूल से 223 : येह वईदो तहदीद है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हुक्मे इलाही साफ़ साफ़ पहुंचा दिया तो उन का जो फ़र्ज़ था अदा हो चुका अब जो ए'राज़ करे वोह मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब है। 224 **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो शराब ह़राम किये जाने से क़ब्ल वफ़ात पा चुके थे। ह़ुरमते शराब का हुक्म नाज़िल होने के बा'द सहाबए किराम को उन की फ़िक्र हुई कि उन से इस का मुआख़ज़ा होगा या न होगा ? उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि ह़ुरमत का हुक्म नाज़िल होने से क़ब्ल जिन नेक ईमानदारों ने कुछ खाया पिया वोह गुनहगार नहीं। 225 : आयत में लफ़्ज़ ''اِتَّقَوْا'' जिस के मा'ना डरने और परहेज़ करने के हैं तीन मरतबा आया है। **पहले** से शिर्क से डरना और परहेज़ करना, **दूसरे** से शराब और जूए से बचना, **तीसरे** से तमाम मुह़र्रमात से परहेज़ करना मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि **पहले** से तर्के शिर्क, **दूसरे** से तर्के मआ़सी व मुह़र्रमात, **तीसरे** से तर्के शुबुहात मुराद है। बा'ज़ का क़ौल है कि **पहले** से तमाम ह़राम चीज़ों से बचना और **दूसरे** से इस पर क़ाइम रहना और **तीसरे** से ज़मानए नुज़ूले वह़्य में या उस के बा'द जो चीज़ें मन्अ़ की जाएं उन को छोड़ देना मुराद है। (مدارک وخازن وجمل وغیرہ) 226 : 6 हिजरी जिस में ह़ुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया उस साल मुसल्मान मोह़रिम (ह़ालते एह़राम में) थे, इस ह़ालत में वोह इस आज़्माइश में डाले गए कि वुह़ूश व त़ुयूर (जंगली जानवर और परिन्दे) ब कसरत आए और उन की सुवारियों पर छा गए, हाथ से पकड़ना, हथियार से शिकार कर लेना बिल्कुल इख़्तियार में था। अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस आज़्माइश में वोह ब फ़ज़्ले इलाही फ़रमां बरदार साबित हुए और हुक्मे इलाही की ता'मील में साबित क़दम रहे। (خازن وغیرہ)

اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۹۴﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا

के बा'द जो हद से बढ़े[227] उस के लिये दर्दनाक सज़ा है ऐ ईमान वालो शिकार

الصَّیْدَ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَ مَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا

न मारो जब तुम एह्राम में हो[228] और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे[229] तो उस का बदला येह है कि

قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ یَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْیًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ

वैसा ही जानवर मवेशी से दे[230] तुम में कि दो सिक़ह आदमी इस का हुक्म करें[231] येह क़ुरबानी हो का'बे को पहुंचती[232] या

كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِیْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِیَامًا لِّیَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ

कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना[233] या इस के बराबर रोज़े कि अपने काम का वबाल चखे

عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَ مَنْ عَادَ فَیَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ

अल्लाह ने मुआ़फ़ किया जो हो गुज़रा[234] और जो अब करेगा **अल्लाह** उस से बदला लेगा और **अल्लाह** ग़ालिब है

ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَیْدُ الْبَحْرِ وَ طَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَ لِلسَّیَّارَةِ ۚ

बदला लेने वाला हलाल है तुम्हारे लिये दरिया का शिकार और उस का खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाएदे को

وَ حُرِّمَ عَلَیْكُمْ صَیْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ

और तुम पर हराम है ख़ुश्की का शिकार[235] जब तक तुम एह्राम में हो और **अल्लाह** से डरो जिस की त़रफ़ तुम्हें

227 : और बा'द इब्तिला के ना फ़रमानी करे 228 **मस्अला :** मोह्रिम पर शिकार या'नी ख़ुश्की के किसी वह्शी जानवर को मारना ह़राम है। **मस्अला :** जानवर की त़रफ़ शिकार करने के लिये इशारा करना या किसी त़रह़ बताना भी शिकार में दाख़िल और मम्नूअ़ है। **मस्अला :** ह़ालते एह्राम में हर वह्शी जानवर का शिकार मम्नूअ़ है ख़्वाह वोह ह़लाल हो या न हो। **मस्अला :** काटने वाला कुत्ता और कव्वा, और बिच्छू और चील और चूहा और भेड़िया और सांप इन जानवरों को अह़ादीस में फ़वासिक़ फ़रमाया गया और इन के क़त्ल की इजाज़त दी गई। **मस्अला :** मच्छर, पिस्सू, च्यूंटी, मख्खी और ह़शरातुल अर्द़ और ह़म्ला आवर दरिन्दों को मारना मुआ़फ़ है। (تفسیر احمدی وغیرہ) 229 **मस्अला :** ह़ालते एह्राम में जिन जानवरों का मारना मम्नूअ़ है वोह हर ह़ाल में मम्नूअ़ है अ़मदन हो या ख़त़ाअन। अ़मदन का हुक्म तो इस आयत से मा'लूम हुवा और ख़त़ाअन का ह़दीस शरीफ़ से साबित है। (مدارک) 330 : वैसा ही जानवर देने से मुराद येह है कि क़ीमत में मारे हुए जानवर के बराबर हो। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْهِمَا का येही क़ौल है और इमाम मुह़म्मद व शाफ़ेई رَحْمَةُ الله عَلَيْهِما के नज़्दीक ख़िल्क़त व सूरत में मारे हुए जानवर की मिस्ल होना मुराद है। (مدارک واحمدی) 231 : या'नी क़ीमत का अन्दाज़ा करें और क़ीमत वहां की मो'तबर होगी जहां शिकार मारा गया हो या उस के क़रीब के मक़ाम की। 232 : या'नी कफ़्फ़ारे के जानवर का ह़रमे मक्का शरीफ़ के बाहर ज़ब्ह़ करना दुरुस्त नहीं, मक्कए मुकर्रमा में होना चाहिये और ऐन का'बे में भी ज़ब्ह़ जाइज़ नहीं, इसी लिये का'बे को पहुंचती फ़रमाया का'बे के अन्दर न फ़रमाया और कफ़्फ़ारा खाने या रोज़े से अदा किया जाए तो उस के लिये मक्कए मुकर्रमा में होने की क़ैद नहीं बाहर भी जाइज़ है। (تفسیر احمدی وغیرہ) 233 **मस्अला :** येह भी जाइज़ है कि शिकार की क़ीमत का ग़ल्ला ख़रीद कर मसाकीन को इस त़रह़ दे कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र के बराबर पहुंचे और येह भी जाइज़ है कि इस क़ीमत में जितने मिस्कीनों के ऐसे ह़िस्से होते थे इतने रोज़े रखे। 234 : या'नी इस हुक्म से क़ब्ल जो शिकार मारे। 235 : इस आयत में येह **मस्अला** बयान फ़रमाया गया कि मोह्रिम के लिये दरिया का शिकार ह़लाल है और ख़ुश्की का ह़राम। दरिया का शिकार वोह है जिस की पैदाइश दरिया में हो और ख़ुश्की का वोह जिस की पैदाइश ख़ुश्की में हो।

تُحْشَرُوْنَ ﴿۹۶﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَیْتَ الْحَرَامَ قِیٰمًا لِّلنَّاسِ وَ الشَّهْرَ

उठना है अल्लाह ने अदब वाले घर का'बे को लोगों के क़ियाम का बाइस किया[236] और हुरमत वाले

الْحَرَامَ وَ الْهَدْیَ وَ الْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِی

महीने[237] और हरम की क़ुरबानी और गले में अ़लामत आवेज़ां जानवरों को[238] येह इस लिये कि तुम यक़ीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۹۷﴾ اِعْلَمُوْۤا

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और येह कि अल्लाह सब कुछ जानता है जान रखो कि

اَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ وَ اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۹۸﴾ؕ مَا عَلَی

अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है[239] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान रसूल पर नहीं

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۹۹﴾ قُلْ لَّا

मगर हुक्म पहुंचाना[240] और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो[241] तुम फ़रमा दो

یَسْتَوِی الْخَبِیْثُ وَ الطَّیِّبُ وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِیْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

कि सुथरा और गन्दा बराबर नहीं[242] अगर्चे तुझे गन्दे की कसरत भाए तो अल्लाह से डरते रहो

یٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ؑ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا

ऐ अ़क़्ल वालो कि तुम फ़लाह पाओ ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न

عَنْ اَشْیَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِیْنَ یُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें[243] और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है

236 : कि वहां दीनी व दुन्यवी उमूर का क़ियाम होता है, ख़ाइफ़ वहां पनाह लेता है, ज़ईफ़ों को वहां अमान मिलती है, ताजिर वहां नफ़्अ़ पाते हैं, हज व उ़मरह करने वाले वहां हाज़िर हो कर मनासिक अदा करते हैं। **237 :** या'नी ज़िल हिज्जा को जिस में हज किया जाता है। **238 :** कि इन में सवाब ज़ियादा है, इन सब को तुम्हारे मसालेह के क़ियाम का सबब बनाया। **239 :** तो हरम व एहराम की हुरमत का लिहाज़ रखो, अल्लाह तआला ने अपनी रहमतों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द अपनी सिफ़त ''شَدِیْدُ الْعِقَاب'' ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ो रजा से तक्मीले ईमान हो, इस के बा'द सिफ़ते ग़फ़ूर व रहीम बयान फ़रमा कर अपनी वुस्अ़ते रहमत का इज़्हार फ़रमाया। **240 :** तो जब रसूल हुक्म पहुंचा कर फ़ारिग़ हो गए तो तुम पर ताअ़त लाज़िम और हुज्जत क़ाइम हो गई और जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही। **241 :** उस को तुम्हारे ज़ाहिरो बातिन, निफ़ाक़ व इख़्लास सब का इल्म है। **242 :** या'नी हलाल व हराम, नेक व बद, मुस्लिम व काफ़िर और खरा खोटा एक दरजे में नहीं हो सकता। **243 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोग सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से बहुत से बे फ़ाएदा सुवाल किया करते थे, येह ख़ातिरे मुबारक पर गिरां होता था। एक रोज़ फ़रमाया कि जो जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करो मैं हर बात का जवाब दूंगा, एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि मेरा अन्जाम क्या है? फ़रमाया : जहन्नम। दूसरे ने दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है? आप ने उस के अस्ली बाप का नाम बता दिया जिस के नुत्फ़े से वोह था कि सदाक़ा है बा वुजूदे कि उस की मां का शोहर और था, जिस का येह शख़्स बेटा कहलाता था। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि ऐसी बातें न पूछो जो ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें ना गवार गुज़रें। (تفسیر احمدی) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा फ़रमाते हुए फ़रमाया : जिस को जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करे! अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा

تُبۡدَ لَكُمۡ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنۡهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ حَلِيۡمٌ ﴿۱۰۱﴾ قَدۡ سَاَلَهَا قَوۡمٌ مِّنۡ

तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी अल्लाह उन्हें मुआफ़ फ़रमा चुका है[244] और अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है तुम से अगली एक क़ौम ने

قَبۡلِكُمۡ ثُمَّ اَصۡبَحُوۡا بِهَا كٰفِرِيۡنَ ﴿۱۰۲﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنۡۢ بَحِيۡرَةٍ وَّلَا

उन्हें पूछा[245] फिर उन से मुन्किर हो बैठे अल्लाह ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुवा और न

سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيۡلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى

बिजार और न वसीला और न हामी[246] हां काफ़िर लोग अल्लाह पर झूटा

اللّٰهِ الۡكَذِبَ ؕ وَاَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا اِلٰى

इफ़्तिरा बांधते हैं[247] और उन में अक्सर निरे बे अ़क़्ल हैं[248] और जब उन से कहा जाए आओ उस त़रफ़

مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوۡلِ قَالُوۡا حَسۡبُنَا مَا وَجَدۡنَا عَلَيۡهِ اٰبَآءَنَا ؕ

जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की त़रफ़[249] कहें हमें वोह बहुत है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया

सहमी ने खड़े हो कर दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है? फ़रमाया : हुज़ाफ़ा। फिर फ़रमाया : और पूछो ! हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उठ कर इक़रारे ईमान व रिसालत के साथ मा'ज़िरत पेश की। इब्ने शहाब की रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की वालिदा ने उन से शिकायत की और कहा कि तू बहुत ना लाइक़ बेटा है, तुझे क्या मा'लूम कि ज़मानए जाहिलिय्यत की औ़रतों का क्या ह़ाल था, ख़ुदा न ख़्वास्ता तेरी मां से कोई क़ुसूर हुवा होता तो आज वोह कैसी रुस्वा होती, इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने कहा कि अगर हुज़ूर किसी ह़बशी ग़ुलाम को मेरा बाप बता देते तो मैं यक़ीन के साथ मान लेता। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि लोग ब त़रीक़े इस्तिहज़ा इस क़िस्म के सुवाल किया करते थे कोई कहता : मेरा बाप कौन है? कोई पूछता मेरी ऊंटनी गुम हो गई है वोह कहां है? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने ख़ुत़्बे में ह़ज फ़र्ज़ होने का बयान फ़रमाया। इस पर एक शख़्स ने कहा : क्या हर साल फ़र्ज़ है? ह़ज़रत ने सुकूत फ़रमाया, साइल ने सुवाल की तक्रार की तो इर्शाद फ़रमाया कि जो मैं बयान न करूं उस के दरपै न हो अगर मैं हां कह देता तो हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता और तुम न कर सकते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अह़काम हुज़ूर को मुफ़व्वज़ (अ़त़ा कर दिये गए) हैं, जो फ़र्ज़ फ़रमा दें वोह फ़र्ज़ हो जाए, न फ़रमाएं न हो। **244 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जिस अम्र की शरअ़ में मुमानअ़त न आई हो वोह मुबाह़ है। हज़रते सलमान رضی اللہ عنہ की ह़दीस में है कि ह़लाल वोह है जो अल्लाह ने अपनी किताब में ह़लाल फ़रमाया, ह़राम वोह है जिस को उस ने अपनी किताब में ह़राम फ़रमाया और जिस से सुकूत किया वोह मुआफ़ तो कुल्फ़त (तक्लीफ़ व मशक़्क़त) में न पड़ो। (خازن) **245 :** अपने अम्बिया से। और बे ज़रूरत सुवाल किये। ह़ज़राते अम्बिया ने अह़काम बयान फ़रमा दिये तो बजा न ला सके। **246 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार का येह दस्तूर था कि जो ऊंटनी पांच मरतबा बच्चे जनती और आख़िर मरतबा उस के नर होता उस का कान चीर देते, फिर न उस पर सुवारी करते न उस को ज़ब्ह़ करते न पानी और चारे पर से हंकाते, उस को बह़ीरा कहते और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो येह नज़्र करते कि अगर मैं सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आऊं या तन्दुरुस्त हो जाऊं तो मेरी ऊंटनी साइबा (बिजार) है और उस से भी नफ़्अ़ उठाना बह़ीरा की त़रह़ ह़राम जानते और उस को आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात मरतबा बच्चे जन चुकती तो अगर सातवां बच्चा नर होता तो उस को मर्द खाते और अगर मादा होता तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर मादा दोनों होते तो कहते कि येह अपने भाई से मिल गई उस को वसीला कहते और जब नर ऊंट से दस गियाभ (ह़म्ल) ह़ासिल हो जाते तो उस को छोड़ देते, न उस पर सुवारी करते, न उस से काम लेते, न उस को चारे पानी पर से रोकते, उस को ह़ामी कहते। (مدارک) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बह़ीरा वोह है जिस का दूध बुतों के लिये रोकते थे, कोई उस जानवर का दूध न दोहता और साइबा वोह जिस को अपने बुतों के लिये छोड़ देते थे, कोई उन से काम न लेता। येह रस्में ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए अ़हदे इस्लाम तक चली आ रही थीं। इस आयत में इन को बात़िल किया गया। **247 :** क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने इन जानवरों को ह़राम नहीं किया, उस की त़रफ़ इस की निस्बत ग़लत़ है। **248 :** जो अपने सरदारों के कहने से इन चीज़ों को ह़राम समझते हैं, इतना शुऊ़र नहीं रखते कि जो चीज़ अल्लाह और उस के रसूल ने ह़राम न की उस को कोई ह़राम नहीं कर सकता। **249 :** या'नी हुक्मे ख़ुदा और रसूल का इत्तिबाअ़ करो और समझ लो कि येह चीज़ें ह़राम नहीं।

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ जानें और न राह पर हों[250] ऐ ईमान

اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ

वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो[251] तुम सब की रुजूअ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह ही की त़रफ़ है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे ऐ ईमान वालो[252]

شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا

तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आए[253] वसिय्यत करते वक़्त तुम में के दो

عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ

मो'तबर शख़्स हैं या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ

250 : या'नी बाप दादा का इत्तिबाअ़ जब दुरुस्त होता कि वोह इल्म रखते और सीधी राह पर होते। **251 :** मुसल्मान कुफ़्फ़ार की महरूमी पर अफ़्सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़्फ़ार इनाद में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से महरूम रहे अल्लाह तआ़ला ने उन की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़रर नहीं अम्र बिल मा'रूफ़, नही अ़निल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा कर के तुम बरिय्युज़्ज़िम्मा हो चुके, तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया : इस आयत में अम्र बिल मा'रूफ़ व नही अ़निल मुन्कर के वुजूब की बहुत ताकीद की है क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह हैं कि एक दूसरे की ख़बर गीरी करे, नेकियों की रग़्बत दिलाए, बदियों से रोके। (خازن) **252 शाने नुज़ूल :** मुहाजिरीन में से बुदैल जो ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स के मवाली (ग़ुलामों) में से थे ब क़स्दे तिजारत मुल्के शाम की त़रफ़ दो नसरानियों के साथ रवाना हुए, उन में से एक का नाम तमीम बिन औस दारी था और दूसरे का अ़दी बिन बद्दाअ, शाम पहुंचते ही बुदैल बीमार हो गए और उन्हों ने अपने तमाम सामान की एक फ़ेहरिस्त लिख कर सामान में डाल दी और हमराहियों को उस की इत्तिलाअ़ न दी, जब मरज़ की शिद्दत हुई तो बुदैल ने तमीम व अ़दी दोनों को वसिय्यत की, कि इन का तमाम सरमाया मदीने शरीफ़ पहुंच कर इन के अह्ल को दे दें और बुदैल की वफ़ात हो गई। उन दोनों ने उन की मौत के बा'द उन का सामान देखा, उस में एक चांदी का जाम था जिस पर सोने का काम बना था, उस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी थी, बुदैल येह जाम बादशाह को नज़्र करने के क़स्द से लाए थे। उन की वफ़ात के बा'द उन के दोनों साथियों ने उस जाम को ग़ाइब कर दिया और अपने काम से फ़ारिग़ होने के बा'द जब येह लोग मदीनए त़य्यिबा पहुंचे तो उन्हों ने बुदैल का सामान उन के घर वालों के सिपुर्द कर दिया। सामान खोलने पर फ़ेहरिस्त उन के हाथ आ गई जिस में तमाम मताअ़ की तफ़्सील थी। सामान को उस के मुत़ाबिक़ किया तो जाम न पाया। अब वोह तमीम व अ़दी के पास पहुंचे और उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या बुदैल ने कुछ सामान बेचा भी था? उन्हों ने कहा : नहीं। कहा : कोई तिजारती मुआ़मला किया था? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर दरयाफ़्त किया बुदैल बहुत अ़र्सा बीमार रहे और उन्हों ने अपने इलाज में कुछ ख़र्च किया? उन्हों ने कहा : नहीं, वोह तो शहर पहुंचते ही बीमार हो गए और जल्द ही उन का इन्तिक़ाल हो गया। इस पर उन लोगों ने कहा कि उन के सामान में एक फ़ेहरिस्त मिली है, उस में चांदी का एक जाम सोने से मुनक़्क़श किया हुवा जिस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी है, येह भी लिखा है। तमीम व अ़दी ने कहा : हमें नहीं मा'लूम, हमें तो जो वसिय्यत की थी उस के मुत़ाबिक़ सामान हम ने तुम्हें दे दिया, जाम की हमें ख़बर भी नहीं। येह मुक़द्दमा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के दरबार में पेश हुवा, तमीम व अ़दी वहां भी इन्कार पर जमे रहे और क़सम खा ली, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की रिवायत में है कि फिर वोह जाम मक्कए मुकर्रमा में पकड़ा गया, जिस शख़्स के पास था उस ने कहा कि मैं ने येह जाम तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। मालिके जाम के औलिया में से दो शख़्सों ने खड़े हो कर क़सम खाई कि हमारी शहादत इन की शहादत से ज़ियादा अह़क़ (अहम और दुरुस्त) है, येह जाम हमारे मूरिस का है। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। (ترمذی) **253 :** या'नी मौत का वक़्त क़रीब आए, ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे, मौत के आसार व अ़लामात ज़ाहिर हों।

فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِیْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَیُقْسِمٰنِ

फिर तुम्हें मौत का हादिसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बा'द रोको[254] वोह अल्लाह की

بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِیْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰی ۙ وَلَا نَكْتُمُ

क़सम खाएं अगर तुम्हें कुछ शक पड़े[255] हम ह़ल्फ़ के बदले कुछ माल न ख़रीदेंगे[256] अगर्चे क़रीब का रिश्तेदार हो और अल्लाह की गवाही

شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِیْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤی اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ

न छुपाएंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनहगारों में हैं फिर अगर पता चले कि वोह किसी गुनाह के सज़ावार

اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ یَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِیْنَ اسْتَحَقَّ عَلَیْهِمُ

हुए[257] तो उन की जगह दो और खड़े हों उन में से कि इस गुनाह या'नी झूटी गवाही ने उन का ह़क़ ले कर उन को नुक़्सान पहुंचाया[258] जो मय्यित से

الْاَوْلَیٰنِ فَیُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا

ज़ियादा क़रीब हों तो अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही ज़ियादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम

اعْتَدَیْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۰۷﴾ ذٰلِكَ اَدْنٰۤی اَنْ یَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ

ह़द से न बढ़े[259] ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों येह क़रीब तर है इस से कि गवाही

عَلٰی وَجْهِهَاۤ اَوْ یَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَیْمَانٌۢ بَعْدَ اَیْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद कर दी जाएं उन की क़समों के बा'द[260] और अल्लाह से डरो

وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ ع یَوْمَ یَجْمَعُ اللّٰهُ

और हुक्म सुनो और अल्लाह बे हुक्मों को राह नहीं देता जिस दिन अल्लाह जम्अ़ फ़रमाएगा

254 : इस नमाज़ से नमाज़े अ़स्र मुराद है क्यूं कि वोह लोगों के इज्तिमाअ़ का वक़्त होता है। ह़सन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया कि नमाज़े ज़ोहर या अ़स्र। क्यूं कि अहले ह़िजाज़ मुक़द्दमात इसी वक़्त करते थे ह़दीस शरीफ़ में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर अ़दी व तमीम को बुलाया उन दोनों को मिम्बर शरीफ़ के पास क़समें दीं, उन दोनों ने क़समें खाईं, इस के बा'द मक्कए मुकर्रमा में वोह जाम पकड़ा गया तो जिस शख़्स के पास था उस ने कहा : मैं ने तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। (مدارک) 255 : उन की अमानत व दियानत में और वोह येह कहें कि 256 : या'नी झूटी क़सम न खाएंगे और किसी की ख़ातिर ऐसा न करेंगे 257 : ख़ियानत के या झूट वग़ैरा के 258 : और वोह मय्यित के अहलो अक़ारिब हैं। 259 : चुनान्चे बुदैल के वाक़िए में जब इन के दोनों हमराहियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बुदैल के वुरसा में से दो शख़्स खड़े हुए और उन्हों ने क़सम खाई कि येह जाम हमारे मूरिस का है और हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़ियादा ठीक है। 260 : ह़ासिले मा'ना येह है कि इस मुआ़मले में जो हुक्म दिया गया कि अ़दी व तमीम की क़समों के बा'द माल बरआमद होने पर औलियाए मय्यित की क़समें ली गईं, येह इस लिये कि लोग इस वाक़िए से सबक़ लें और शहादतों में राहे ह़क़्क़ो सवाब न छोड़ें और इस से ख़ाइफ़ रहें कि झूटी गवाही का अन्जाम शरमिन्दगी व रुस्वाई है। **फ़ाएदा :** मुद्दई पर क़सम नहीं, लेकिन यहां जब माल पाया गया तो मुद्दआ़ अ़लैहिमा ने दा'वा किया कि इन्हों ने मय्यित से ख़रीद लिया था, अब उन की ह़ैसिय्यत मुद्दई की हो गई और उन के पास इस का कोई सुबूत न था, लिहाज़ा उन के ख़िलाफ़ औलियाए मय्यित की क़सम ली गई।

الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ

रसूलों को[261] फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला[262] अ़र्ज़ करेंगे हमें कुछ इल्म नहीं बेशक तू ही है सब ग़ैबों का

الْغُيُوْبِ ۝۱۰۹ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى

ख़ूब जानने वाला[263] जब **अल्लाह** फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एह़सान अपने ऊपर और

وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۣ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ

अपनी मां पर[264] जब मैं ने पाक रूह़ से तेरी मदद की[265] तू लोगों से बातें करता पालने (झूले) में[266] और पक्की उ़म्र का हो कर[267]

وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और ह़िक्मत[268] और तौरैत और इन्जील और जब तू मिट्टी

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا

से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उस में फूंक मारता तो वोह मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى

उड़ने लगती[269] और तू मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ

ज़िन्दा निकालता[270] और जब मैं ने बनी इसराईल को तुझ से रोका[271] जब तू उन के पास रोशन निशानियां ले कर आया तो

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۱۰ وَاِذْ اَوْحَيْتُ

उन में के काफ़िर बोले कि येह[272] तो नहीं मगर खुला जादू और जब मैं ने ह़वारियों[273]

261 : या'नी रोज़े क़ियामत 262 : या'नी जब तुम ने अपनी उम्मतों को ईमान की दा'वत दी तो उन्हों ने तुम्हें क्या जवाब दिया ? इस सुवाल में मुन्किरीन की तौबीख़ है। 263 : अम्बिया का येह जवाब उन के कमाले अदब की शान ज़ाहिर करता है कि वोह इल्मे इलाही के हुज़ूर अपने इल्म को अस्लन नज़र में न लाएंगे और क़ाबिले ज़िक्र क़रार न देंगे और मुआमला **अल्लाह** तआ़ला के इल्मो अ़द्ल पर तफ़्वीज़ फ़रमा (सोंप) देंगे। 264 : कि मैं ने उन को पाक किया और जहां की औ़रतों पर उन को फ़ज़ीलत दी। 265 : या'नी ह़ज़रते जिब्रील से कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ रहते और ह़वादिस में उन की मदद करते। 266 : सिग़र सिनी में, और येह मो'जिज़ा है। 267 : इस आयत से साबित होता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ियामत से पहले नुज़ूल फ़रमाएंगे क्यूं कि कहूलत (बुढ़ापे) का वक़्त आने से पहले आप उठा लिये गए, नुज़ूल के वक़्त आप तेंतीस साल के जवान की सूरत में जल्वा अफ़रोज़ होंगे और ब मिस्दाक़ इस आयत के कलाम करेंगे और जो पालने (झूले) में फ़रमाया था ''اِنِّيْ عَبْدُاللّٰهِ'' (मैं हूं **अल्लाह** का बन्दा) वोही फ़रमाएंगे। (جمل) 268 : या'नी असरारे उ़लूम 269 : येह भी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था। 270 : अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को बीना और तन्दुरुस्त करना और मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के निकालना येह सब बि इज़्निल्लाह (**अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से) ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ाते जलीला हैं। 271 : येह एक और ने'मत का बयान है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को यहूद के शर से मह़फ़ूज़ रखा जिन्हों ने ह़ज़रत के मो'जिज़ाते बाहिरात देख कर आप के क़त्ल का इरादा किया, **अल्लाह** तआ़ला ने आप को आस्मान पर उठा लिया और यहूद ना मुराद रह गए। 272 : या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात। 273 : ह़वारी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्ह़ाब और आप के मख़्सूसीन हैं।

إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي ۚ قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا

के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर[274] ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि

مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ

हम मुसल्मान हैं[275] जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आप का रब ऐसा

رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ

करेगा कि हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतारे[276] कहा अल्लाह से डरो अगर

كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَ

ईमान रखते हो[277] बोले हम चाहते हैं[278] कि उस में से खाएं और हमारे दिल ठहरें[279] और

نَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيسَى

हम आंखों देख लें कि आप ने हम से सच फ़रमाया[280] और हम उस पर गवाह हो जाएं[281] ईसा इब्ने मरयम

ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ

ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह

لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ

हमारे लिये ईद हो[282] हमारे अगले पिछलों की[283] और तेरी त़रफ़ से निशानी[284] और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर

274 : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर 275 : ज़ाहिर और बात़िन में मुख़्लिस व मुत़ीअ़। 276 : मा'ना येह हैं कि क्या अल्लाह तआ़ला इस बाब में आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा। 277 : और तक़्वा इख़्तियार करो ताकि येह मुराद ह़ासिल हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मा'ना येह हैं कि तमाम उम्मतों से निराला सुवाल करने में अल्लाह से डरो या येह मा'ना हैं कि उस की कमाले क़ुदरत पर ईमान रखते हो तो इस में तरद्दुद न करो। ह़वारी मोमिन, आ़रिफ़ और क़ुदरते इलाहिय्यह के मो'तरिफ़ थे। उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया : 278 : ह़ुसूले बरकत के लिये 279 : और यक़ीन क़वी हो और जैसा कि हम ने क़ुदरते इलाही को दलील से जाना है मुशाहदे से भी इस को पुख़्ता कर लें। 280 : बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। 281 : अपने बा'द वालों के लिये। ह़वारियों के येह अ़र्ज़ करने पर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया : जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो अल्लाह तआ़ला से जो दुआ़ करोगे क़बूल होगी। उन्हों ने रोज़े रख कर ख़्वान उतरने की दुआ़ की उस वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल फ़रमाया और मोटा लिबास पहना और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और सरे मुबारक झुकाया और रो कर येह दुआ़ की जिस का अगली आयत में ज़िक्र है। 282 : या'नी हम उस के नुज़ूल के दिन को ईद बनाएं, उस की ता'ज़ीम करें, ख़ुशियां मनाएं, तेरी इबादत करें, शुक्र बजा लाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ अल्लाह तआ़ला की ख़ास रह़मत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियां मनाना, इबादतें करना, शुक्रे इलाही बजा लाना त़रीक़ए सालिह़ीन है और कुछ शक नहीं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन ने'मत और बुज़ुर्ग तरीन रह़मत है। इस लिये ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादते मुबारका के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़ कर शुक्रे इलाही बजा लाना और इज़्हारे फ़रह़ और सुरूर करना मुस्तह़सन व मह़मूद और अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। 283 : जो दीनदार हमारे ज़माने में हैं उन की और जो हमारे बा'द आएं उन की 284 : तेरी क़ुदरत की और मेरी नुबुव्वत की।

الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ

रोज़ी देने वाला है अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उसे तुम पर उतारता हूं फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा[285]

فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ ع وَاِذْ قَالَ

तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा[286] और जब अल्लाह

اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ

फ़रमाएगा[287] ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तू ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा बना लो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ق

अल्लाह के सिवा[288] अ़र्ज़ करेगा पाकी है तुझे[289] मुझे रवा नहीं कि वोह बात कहूं जो मुझे नहीं

بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا

पहुंचती[290] अगर मैं ने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मा'लूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो

فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۱۶﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ

तेरे इ़ल्म में है बेशक तू ही सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला[291] मैं ने तो उन से न कहा मगर वोही जो मुझे तू ने हुक्म

بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ

दिया था कि अल्लाह को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उन पर मुत्तलअ़ था जब तक मैं

فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ

उन में रहा फिर जब तू ने मुझे उठा लिया[292] तो तू ही उन पर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे

شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۱۷﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ

सामने हाज़िर है[293] अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे

285 : या'नी ख़्वान नाज़िल होने के बा'द 286 : चुनान्चे आस्मान से ख़्वान नाज़िल हुवा, इस के बा'द जिन्हों ने उन में से कुफ़्र किया वोह सूरतें मस्ख़ कर के ख़िन्ज़ीर बना दिये गए और तीन रोज़ में सब हलाक हो गए। 287 : रोज़े क़ियामत ईसाइयों की तौबीख़ के लिये 288 : इस ख़ित़ाब को सुन कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कांप जाएंगे और 289 : जुम्ला नक़ाइस व उ़यूब से और इस से कि कोई तेरा शरीक हो सके। 290 : या'नी जब कोई तेरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं येह लोगों से कैसे कह सकता था। 291 : इ़ल्म को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ निस्बत करना और मुआ़मला उस को तफ़्वीज़ कर देना और अ़ज़मते इलाही के सामने अपनी मिस्कीनी का इज़्हार करना येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की शाने अदब है। 292 : "تَوَفَّيْتَنِيْ" के लफ़्ज़ से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मौत पर दलील लाना सह़ीह़ नहीं, क्यूं कि अव्वल तो लफ़्ज़ "توفّٰی" मौत के लिये ख़ास नहीं, किसी शै के पूरे तौर पर लेने को कहते हैं ख़्वाह वोह बिग़ैर मौत के हो जैसा कि क़ुरआने करीम में इर्शाद हुवा : "اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا" (अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन के सोए में) (رکوع:٢) दुवुम जब येह सुवाल व जवाब रोज़े क़ियामत का है तो अगर लफ़्ज़ "تَوَفّٰی" मौत के मा'नी में भी फ़र्ज़ कर लिया जाए जब भी

فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ

तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला[294] अल्लाह ने फ़रमाया कि येह[295] है वोह दिन जिस में सच्चों को[296]

صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ

उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उन में रहेंगे

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ

अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी येह है बड़ी काम्याबी अल्लाह ही के लिये है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۲۰﴾ ع

आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्तनत और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है[297]

सूरए अन्आम मक्किय्या है, इस में एक सो पेंसठ आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रहम वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[2] और अंधेरियां और रोशनी पैदा की[3]

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत क़ब्ले नुज़ूल इस से साबित न हो सकेगी। **293 :** और मेरा उन का किसी का हाल तुझ से पोशीदा नहीं। **294 :** हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मा'लूम है कि क़ौम में बा'ज़ लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे, बा'ज़ शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए, इस लिये आप की बारगाहे इलाही में येह अ़र्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर क़ाइम रहे उन पर तू अ़ज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल हक़ व बजा और अ़द्लो इन्साफ़ है क्यूं कि उन्हों ने हुज्जत तमाम होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्लो करम है और तेरा हर काम हिक्मत है। **295 :** रोज़े क़ियामत **296 :** जो दुन्या में सच्चाई पर रहे जैसे कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام। **297 :** सादिक़ को सवाब देने पर भी और काज़िब को अ़ज़ाब फ़रमाने पर भी। **मस्अला :** क़ुदरत मुम्किनात से मुतअ़ल्लिक़ होती है न कि वाजिबात व मुहालात से, तो मा'ना आयत के येह हैं कि अल्लाह तआ़ला हर अम्रे मुम्किनुल वुजूद पर क़ादिर है। (جمل) **मस्अला :** किज़्ब वग़ैरा उ़यूबो क़बाएह अल्लाह سُبْحَانَهٗ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى के लिये मुहाल हैं इन को तहते क़ुदरत बताना और इस आयत से सनद लाना ग़लत व बातिल है। **1 :** सूरए अन्आम मक्की है इस में बीस रुकूअ़ और एक सो पेंसठ आयतें तीन हज़ार एक सो कलिमे और बारह हज़ार नव सो पेंतीस हर्फ़ हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह कुल सूरत एक ही शब में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई और इस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आए जिन से आस्मानों के किनारे भर गए। येह भी एक रिवायत में है कि वोह फ़िरिश्ते तस्बीहो तक़्दीस करते आए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ" फ़रमाते हुए सर ब सुजूद हुए। **2 :** हज़रते का'ब अहबार رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने फ़रमाया तौरैत में सब से अव्वल येही आयत है, इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़ना के साथ हम्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आस्मान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अ़जाइबे क़ुदरत व ग़राइबे हिक्मत और इ़ब्रतें व मनाफ़ेअ़ हैं। **3 :** या'नी हर एक अंधेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अंधेरी शब की हो या कुफ़्र की या जह्ल की या जहन्नम की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इ़ल्म व जन्नत की। ظُلُمَات को जम्अ़ और نُوْر को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में इस त़रफ़ इशारा है कि बातिल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे हक़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम।

ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ۝١ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ

इस पर[4] काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं[5] वोही है जिस ने तुम्हें[6] मिट्टी से पैदा किया

ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝٢ وَ هُوَ

फिर एक मीआ़द का हुक्म रखा[7] और एक मुक़र्ररा वा'दा उस के यहां है[8] फिर तुम लोग शक करते हो और वोही

اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ فِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ یَعْلَمُ مَا

अल्लाह है आस्मानों का और ज़मीन का[9] उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मा'लूम है और तुम्हारे

تَكْسِبُوْنَ ۝٣ وَ مَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

काम जानता है और उन के पास कोई भी निशानी उन के रब की निशानियों से नहीं आती मगर उस से मुंह

مُعْرِضِیْنَ ۝٤ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ یَاْتِیْهِمْ

फेर लेते हैं तो बेशक उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया[10] जब उन के पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुवा

اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥ اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ

चाहती है उस चीज़ की जिस पर हंस रहे थे[11] क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने उन से पहले[12] कितनी संगतें

مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ

(क़ौमें) खपा दीं उन्हें हम ने ज़मीन में वोह जमाव दिया[13] जो तुम को न दिया और उन पर

عَلَیْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

मूस्लाधार पानी भेजा[14] और उन के नीचे नहरें बहाईं[15] तो उन्हें हम ने उन के गुनाहों

بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ۝٦ وَ لَوْ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ

के सबब हलाक किया[16] और उन के बा'द और संगत उठाई[17] और अगर हम तुम पर काग़ज़

4 : या'नी बा वुजूद ऐसे दलाइल पर मुत्तलअ़ होने और ऐसे निशानहाए क़ुदरत देखने के 5 : दूसरों को, ह़त्ता कि पथ्थरों को पूजते हैं बा वुजूदे कि इस के मुक़िर (इक़रारी) हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला **अल्लाह** है। 6 : या'नी तुम्हारी अस्ल ह़ज़रते आदम को जिन की नस्ल से तुम पैदा हुए। **फ़ाएदा :** इस में मुश्रिकीन का रद है जो कहते थे कि हम जब गल कर मिट्टी हो जाएंगे फिर कैसे ज़िन्दा किये जाएंगे ? उन्हें बताया गया कि तुम्हारी अस्ल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या तअ़ज्जुब ! जिस क़ादिर ने पहले पैदा किया उस की क़ुदरत से बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाने को बईद जानना नादानी है। 7 : जिस के पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे। 8 : मरने के बा'द उठाने का। 9 : उस का कोई शरीक नहीं। 10 : यहां ह़क़ से या क़ुरआने मजीद की आयात मुराद हैं या सय्यिदे आ़लम ﷺ और आप के मो'जिज़ात। 11 : कि वोह कैसी अ़ज़मत वाली है और उस की हंसी बनाने का अन्जाम कैसा वबाल व अ़ज़ाब। 12 : पिछली उम्मतों में से 13 : क़ुव्वत व माल और दुन्या के कसीर सामान दे कर 14 : जिस से खेतियां शादाब हों 15 : जिस से बाग़ परवरिश पाए और दुन्या की ज़िन्दगानी के लिये ऐशो राह़त के अस्बाब बहम पहुंचे 16 : कि उन्हों ने अम्बिया की तक्ज़ीब की और उन का येह सरो सामान उन्हें हलाकत

كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

में कुछ लिखा हुवा उतारते[18] कि वोह उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि येह नहीं

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا

मगर खुला जादू और बोले[19] इन पर[20] कोई फ़िरिश्ता क्यूं न उतारा गया और अगर हम फ़िरिश्ता उतारते[21]

لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا

तो काम तमाम हो गया होता[22] फिर उन्हें मोहलत न दी जाती[23] और अगर हम नबी को फ़िरिश्ता करते[24] जब भी उसे मर्द ही बनाते[25]

وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ

और उन पर वोही शुबा रखते जिस में अब पड़े हैं और ज़रूर ऐ महबूब तुम से पहले रसूलों के साथ भी ठट्ठा किया गया

فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ قُلْ

तो वोह जो उन से हंसते थे उन की हंसी उन्हीं को ले बैठी[26] तुम फ़रमा दो[27]

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١ قُلْ

ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा[28] तुम फ़रमाओ

से न बचा सका। **17 :** और दूसरे क़र्न (ज़माने) वालों को उन का जा नशीन किया, मुद्दआ येह है कि गुज़री हुई उम्मतों के हाल से इब्रत व नसीहत हासिल करना चाहिये कि वोह लोग बा वुजूदे कुव्वतो दौलत व कस्रते मालो इयाल के कुफ़्रो तुग़्यान की वज्ह से हलाक कर दिये गए तो चाहिये कि उन के हाल से इब्रत हासिल कर के ख़्वाबे गफ़्लत से बेदार हों। **18 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन उमय्या और नौफ़ल बिन खुवैलिद के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने कहा था कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे पास **अल्लाह** की तरफ़ से किताब न लाओ जिस के साथ चार फ़िरिश्ते हों वोह गवाही दें कि येह **अल्लाह** की किताब है और तुम उस के रसूल हो। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि येह सब हीले बहाने हैं अगर काग़ज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वोह उसे अपने हाथों से छू कर और टटोल कर देख भी लेते और येह कहने का मौक़अ़ भी न होता कि नज़र बन्दी कर दी गई थी किताब उतरती नज़र आई, था कुछ भी नहीं। तो भी येह बद नसीब ईमान लाने वाले न थे उस को जादू बताते और जिस तरह शक़्क़ुल क़मर को जादू बताया और उस मो'जिज़े को देख कर ईमान न लाए इस तरह इस पर भी ईमान न लाते, क्यूं कि जो लोग इनादन इन्कार करते हैं वोह आयात व मो'जिज़ात से मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते। **19 :** मुश्रिकीन **20 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **21 :** और फिर भी येह ईमान न लाते **22 :** या'नी अ़ज़ाब वाजिब हो जाता और येह सुन्नते इलाहिय्यह है कि जब कुफ़्फ़ार कोई निशानी तलब करें और उस के बा'द भी ईमान न लाएं तो अ़ज़ाब वाजिब हो जाता है और वोह हलाक कर दिये जाते हैं। **23 :** एक लम्हे की भी और अ़ज़ाब मुअख़्ख़र न किया जाता तो फ़िरिश्ते का उतारना जिस को वोह तलब करते हैं उन्हें क्या नाफ़ेअ़ होता। **24 :** येह उन कुफ़्फ़ार का जवाब है जो नबी عَلَيْهِ السَّلَام को कहा करते थे येह हमारी तरह बशर हैं और इसी ख़ब्त़ (जुनून) में वोह ईमान से महरूम रहते थे। इन्हें इन्सानों में से रसूल मब्ऊस फ़रमाने की हिक्मत बताई जाती है कि इन के मुन्तफ़ेअ़ होने और ता'लीमे नबी से फ़ैज़ उठाने की येही सूरत है कि नबी सूरते बशरी में जल्वा गर हो, क्यूं कि फ़िरिश्ते को उस की अस्ली सूरत में देखने की तो येह लोग ताब न ला सकते, देखते ही हैबत से बेहोश हो जाते या मर जाते। इस लिये अगर बिलफ़र्ज़ रसूल फ़िरिश्ता ही बनाया जाता **25 :** और सूरते इन्सानी ही में भेजते, ताकि येह लोग उस को देख सकें उस का कलाम सुन सकें उस से दीन के अहकाम मा'लूम कर सकें, लेकिन अगर फ़िरिश्ता सूरते बशरी में आता तो उन्हें फिर वोही कहने का मौक़अ़ रहता कि येह बशर है तो फ़िरिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ाएदा होता। **26 :** वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली व तस्कीने ख़ातिर है कि आप रन्जीदा व मलूल न हों, कुफ़्फ़ार का पहले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है और इस का वबाल उन कुफ़्फ़ार को उठाना पड़ा है, नीज़ मुश्रिकीन को तम्बीह है कि पिछली उम्मतों के हाल से इब्रत हासिल करें और अम्बिया के साथ तरीक़े अदब मल्हूज़ रखें ताकि पहलों की तरह मुब्तलाए अ़ज़ाब न हों। **27 :** ऐ हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! इन तमस्ख़ुर (ठट्ठा) करने वालों से कि तुम **28 :** और

لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ

किस का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में[29] तुम फ़रमाओ अल्लाह का है[30] उस ने अपने करम के ज़िम्मे पर रहमत लिख ली है[31]

لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

बेशक ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जम्अ़ करेगा[32] इस में कुछ शक नहीं वोह जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली[33]

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ

ईमान नहीं लाते और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में[34] और वोही है सुनता

الْعَلِيْمُ ۝١٣ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

जानता[35] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊं[36] वोह अल्लाह जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये

وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

और वोह खिलाता है और खाने से पाक है[37] तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुवा है कि सब से पहले गरदन रखूं[38]

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٤ قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ

और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मुझे

عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٥ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ

बड़े दिन[39] के अ़ज़ाब का डर है उस दिन जिस से अ़ज़ाब फेर दिया जाए[40] ज़रूर उस पर अल्लाह की मेह्र (रहमत) हुई

وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝١٦ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا

और येही खुली काम्याबी है और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई[41] पहुंचाए तो उस के सिवा उस का कोई दूर करने वाला

उन्हों ने कुफ़्र व तक्ज़ीब का क्या समरा पाया। **29 :** अगर वोह इस का जवाब न दें तो **30 :** क्यूं कि इस के सिवा कोई जवाब ही नहीं है और वोह इस के ख़िलाफ़ नहीं कर सकते क्यूं कि बुत जिन को मुश्रिकीन पूजते हैं वोह बेजान हैं किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहिय्यत नहीं रखते खुद दूसरे के मम्लूक हैं, आस्मान व ज़मीन का वोही मालिक हो सकता है जो ह़य्यु व क़य्यूम, अज़ली व अबदी, क़ादिरे मुत़्लक़, हर शै पर मुतसर्रिफ़ व हुक्मरान हो, तमाम चीजें उस के पैदा करने से वुजूद में आई हों, ऐसा सिवाए अल्लाह के कोई नहीं, इस लिये तमाम समावी व अर्ज़ी काएनात का मालिक उस के सिवा कोई नहीं हो सकता। **31 :** या'नी उस ने रहमत का वा'दा किया और उस का वा'दा ख़िलाफ़ नहीं हो सकता क्यूं कि वा'दा ख़िलाफ़ी व किज़्ब उस के लिये मुहाल है। और रहमत आ़म है दीनी हो या दुन्यवी अपनी मा'रिफ़त और तौहीद और इल्म की त़रफ़ हिदायत फ़रमाना भी रहमत में दाख़िल है और कुफ़्फ़ार को मोहलत देना और उ़क़ूबत में ता'जील न फ़रमाना भी, कि इस से उन्हें तौबा और इनाबत का मौक़अ़ भी मिलता है। (جمل وغیرہ) **32 :** और आ'माल का बदला देगा **33 :** कुफ़्र इख़्तियार कर के **34 :** या'नी तमाम मौजूदात उसी की मिल्क है और वोह सब का ख़ालिक़, मालिक, रब है। **35 :** उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं। **36 शाने नुज़ूल :** जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूरे अक्दस صلی اللہ علیہ وسلم को अपने बाप दादा के दीन की दा'वत दी तो येह आयत नाज़िल हुई। **37 :** या'नी ख़ल्क़ सब उस की मोहताज है, वोह सब से बे नियाज़। **38 :** क्यूं कि नबी अपनी उम्मत से दीन में साबिक़ होते हैं। **39 :** या'नी रोज़े क़ियामत **40 :** और नजात दी जाए **41 :** बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला।

هُوَ ۚ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ

नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए[42] तो वोह सब कुछ कर सकता है[43] और वोही ग़ालिब है

فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾ قُلْ اَيُّ شَىْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ

अपने बन्दों पर और वोही है हिक्मत वाला ख़बरदार तुम फ़रमाओ सब से बड़ी गवाही किस की[44]

قُلِ اللّٰهُ ۣ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۣ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ

तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** गवाह है मुझ में और तुम में[45] और मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह्‌य हुई है

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً

कि मैं इस से तुम्हें डराऊं[46] और जिन जिन को पहुंचे[47] तो क्या तुम[48] येह गवाही देते हो कि **अल्लाह** के साथ

اُخْرٰى ۭ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

और ख़ुदा हैं तुम फ़रमाओ[49] कि मैं येह गवाही नहीं देता[50] तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है[51] और मैं बेज़ार हूं उन से जिन को

تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ

वقف لازم

तुम शरीक ठहराते हो[52] जिन को हम ने किताब दी[53] इस नबी को पहचानते हैं[54] जैसा अपने

42 : मिस्ल सिह़्ह़त व दौलत वग़ैरा के। **43 :** क़ादिरे मुत़्लक़ है हर शै पर ज़ाती क़ुदरत रखता है, कोई उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उस के सिवा मुस्तह़िक़्क़े इबादत कैसे हो सकता है। येह रद्दे शिर्क की दिल में असर करने वाली दलील है। **44 शाने नुज़ूल :** अहले मक्का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें कोई ऐसा दिखाइये जो आप की रिसालत की गवाही देता हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **45 :** और इतनी बड़ी और क़ाबिले क़ुबूल गवाही और किस की हो सकती है। **46 :** या'नी **अल्लाह** तआला मेरी नुबुव्वत की शहादत देता है इस लिये कि उस ने मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह्‌य फ़रमाई और येह ऐसा मो'जिज़ा है कि तुम बा वुजूद फ़सीह़, बलीग़, साह़िबे ज़बान होने के इस के मुक़ाबले से आ़जिज़ रहे तो इस किताब का मुझ पर नाज़िल होना **अल्लाह** की त़रफ़ से मेरे रसूल होने की शहादत है, जब येह क़ुरआन **अल्लाह** तआला की त़रफ़ से यक़ीनी शहादत है और मेरी त़रफ़ वह्‌य फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊं कि तुम हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त न करो। **47 :** या'नी मेरे बा'द क़ियामत तक आने वाले जिन्हें येह क़ुरआने पाक पहुंचे ख़्वाह वोह इन्सान हों या जिन्न उन सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से डराऊं। ह़दीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को क़ुरआने पाक पहुंचा गोया कि उस ने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा और आप का कलामे मुबारक सुना। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किस्रा और क़ैसर वग़ैरा सलात़ीन को दा'वते इस्लाम के मक्तूब भेजे। (مدارک وخازن) इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि مَنْ بَلَغَ में ''مَنْ'' मरफ़ूउ़ल मह़ल है और मा'ना येह हैं कि इस क़ुरआन से मैं तुम को डराऊं और वोह डराएं जिन्हें येह क़ुरआन पहुंचे। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तरो ताज़ा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया, बहुत से पहुंचाए हुए सुनने वाले से ज़ियादा अह्‌ल होते हैं। और एक रिवायत में है सुनने वाले से ज़ियादा अफ़्क़ह (ग़ौरो फ़िक्र करने वाले) होते हैं। इस से फ़ुक़हा की मन्ज़िलत मा'लूम होती है। **48 :** ऐ मुशरिकीन ! **49 :** ऐ ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **50 :** जो गवाही तुम देते हो और **अल्लाह** के साथ दूसरे मा'बूद ठहराते हो। **51 :** उस का कोई शरीक नहीं **52 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जो शख़्स इस्लाम लाए उस को चाहिये कि तौह़ीदो रिसालत की शहादत के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़े अ़क़ीदा व दीन से बेज़ारी का इज़्हार करे। **53 :** या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा जिन्हों ने तौरैत व इन्जील पाई। **54 :** आप के ह़ुल्ये शरीफ़ और आप की ना'त व सिफ़त से जो उन किताबों में मज़्कूर है।

وقف لازم ٢

اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ

बेटों को पहचानते हैं[55] जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली वोह ईमान नहीं लाते और उस से

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[56] या उस की आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ

न पाएंगे और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे कहां हैं

شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ

तुम्हारे वोह शरीक जिन का तुम दा'वा करते थे फिर उन की कुछ बनावट न रही[57] मगर येह कि

قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

बोले हमें अपने रब अल्लाह की क़सम कि हम मुश्रिक न थे देखो कैसा झूट बांधा ख़ुद अपने ऊपर[58]

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ

और गुम गईं उन से जो बातें बनाते थे और उन में कोई वोह है जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाता है[59]

وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ

और हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उन के कानों में टेंट (ठोंसी हुई रूई) और अगर

يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ

सारी निशानियां देखें तो उन पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हुज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों तो

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ

काफ़िर कहें येह तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें[60] और वोह उस से रोकते[61]

55 : या'नी बिग़ैर किसी शको शुबा के। 56 : उस का शरीक ठहराए या जो बात उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत करे। 57 : या'नी कुछ मा'ज़िरत न मिली। 58 : कि उम्र भर के शिर्क ही से मुकर गए। 59 : अबू सुफ़्यान, वलीद व नज़्र और अबू जहल वग़ैरा जम्अ हो कर नबिय्ये करीम ﷺ की तिलावते क़ुरआने पाक सुनने लगे तो नज़्र से उस के साथियों ने कहा कि मुहम्मद (ﷺ) क्या कहते हैं? कहने लगा मैं नहीं जानता ज़बान को ह़रकत देते हैं और पहलों के क़िस्से कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूं। अबू सुफ़्यान ने कहा कि इन की बातें मुझे ह़क़ मा'लूम होती हैं। अबू जहल ने कहा कि इस का इक़्रार करने से मर जाना बेहतर है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 60 : इस से उन का मत़लब कलामे पाक के वह़्ये इलाही होने का इन्कार करना है। 61 : या'नी मुश्रिकीन लोगों को क़ुरआन शरीफ़ से या रसूले करीम ﷺ से और आप पर ईमान लाने और आप का इत्तिबाअ़ करने से रोकते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो लोगों को सय्यिदे आ़लम ﷺ से और आप पर ईमान लाने और आप की मजलिस में हाज़िर होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकते थे और ख़ुद भी दूर रहते थे कि कहीं कलामे मुबारक उन के दिल में असर न कर जाए।

عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

और उस से दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें[62] और उन्हें शुऊर नहीं

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ

और कभी तुम देखो जब वोह आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी तरह हम वापस भेजे जाएं[63] और अपने रब की आयतें

رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ

न झुटलाएं और मुसल्मान हो जाएं बल्कि उन पर खुल गया जो पहले

مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۲۸﴾

छुपाते थे[64] और अगर वापस भेजे जाएं तो फिर वोही करें जिस से मन्अ़ किये गए थे और बेशक वोह ज़रूर झूटे हैं

وَقَالُوْۤا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ

और बोले[65] वोह तो येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं[66] और कभी

تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ

तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे फ़रमाएगा क्या येह हक़ नहीं है[67] कहेंगे क्यूं नहीं हमें

رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

अपने रब की क़सम फ़रमाएगा तो अब अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का बेशक हार में रहे वोह जिन्हों ने अपने

كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا

रब से मिलने का इन्कार किया यहां तक कि जब उन पर क़ियामत अचानक आ गई बोले हाए अफ़्सोस

عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا

हमारा इस पर कि इस के मानने में तक़्सीर की और वोह अपने[68] बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं अरे कितना

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह आयत हुज़ूर के चचा अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई जो मुश्रिकीन को तो हुज़ूर की ईज़ा रसानी से रोकते थे और ख़ुद ईमान लाने से बचते थे। **62 :** या'नी इस का ज़रर ख़ुद उन्हीं को पहुंचता है। **63 :** दुन्या में **64 :** जैसा कि ऊपर इसी रुकूअ़ में मज़्कूर हो चुका कि मुश्रिकीन से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं तो वोह अपने कुफ़्र को छुपा जाएंगे और **अल्लाह** की क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे। इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें ज़ाहिर हो जाएगा जो वोह छुपाते थे या'नी उन का कुफ़्र इस तरह ज़ाहिर होगा कि उन के आ'ज़ा व जवारेह उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाहियां देंगे तब वोह दुन्या में वापस जाने की तमन्ना करेंगे। **65 :** या'नी कुफ़्फ़ार जो बअ़्स व आख़िरत के मुन्किर हैं और इस का वाक़िआ़ येह था कि जब नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने कुफ़्फ़ार को क़ियामत के अहवाल और आख़िरत की ज़िन्दगानी, ईमानदारों और फ़रमां बरदारों के सवाब, काफ़िरों और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुन्या ही की है। **66 :** या'नी मरने के बा'द। **67 :** क्या तुम मरने के बा'द ज़िन्दा नहीं किये गए ? **68 :** गुनाहों के।

سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ

बुरा बोझ उठाए हैं[69] और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेलकूद[70] और बेशक

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ

पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं[71] तो क्या तुम्हें समझ नहीं हमें मा'लूम है कि

لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

तुम्हें रन्ज देती है वोह बात जो येह कह रहे हैं[72] तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते[73] बल्कि ज़ालिम

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا

अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं[74] और तुम से पहले रसूल झुटलाए गए तो उन्हों ने सब्र किया

عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ

उस झुटलाने और ईज़ाएं पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई[75] और अल्लाह की बातें बदलने वाला

اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ

कोई नहीं[76] और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी हैं[77] और अगर उन का मुंह

عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ

फेरना तुम पर शाक़ गुज़रा है[78] तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या

69 : हदीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस के सामने निहायत क़बीह भयानक और बहुत बदबूदार सूरत आएगी वोह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है ? काफ़िर कहेगा कि नहीं, तो वोह काफ़िर से कहेगी : मैं तेरा ख़बीस अ़मल हूं दुन्या में तू मुझ पर सुवार रहा था आज मैं तुझ पर सुवार होउंगा और तुझे तमाम ख़ल्क़ में रुस्वा करूंगा फिर वोह उस पर सुवार हो जाता है। 70 : जिसे बक़ा नहीं जल्द गुज़र जाती है और नेकियां और ताअ़तें अगर्चे मोमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं। 71 : इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तक़ीन के सिवा दुन्या में जो कुछ है सब लह्वो लअ़ब है। 72 **शाने नुज़ूल :** अख़्नस बिन शरीक़ और अबू जह्ल की बाहम मुलाक़ात हुई तो अख़्नस ने अबू जह्ल से कहा : ऐ अबुल हकम ! (कुफ़्फ़ार अबू जह्ल को अबुल हकम कहते थे) येह तन्हाई की जगह है और यहां कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर मुत्तलअ़ हो सके अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हैं या नहीं। अबू जह्ल ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूटा हर्फ़ उन की ज़बान पर न आया मगर बात येह है कि येह क़ुसय की औलाद हैं और लिवा, सिक़ायत, हिजाबत, नदवा वग़ैरा तो सारे ए'ज़ाज़ इन्हें हासिल ही हैं नुबुव्वत भी इन्हीं में हो जाए तो बाक़ी क़रशियों के लिये ए'ज़ाज़ क्या रह गया। तिरमिज़ी ने हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से रिवायत की, कि अबू जह्ल ने हज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा हम आप की तक्ज़ीब नहीं करते हम तो उस किताब की तक्ज़ीब करते हैं जो आप लाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 73 : इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर है कि क़ौम हुज़ूर के सिद्क़ का ए'तिक़ाद रखती है लेकिन उन की ज़ाहिरी तक्ज़ीब का बाइस उन का हसद व इनाद है। 74 : आयत के येह मा'ना भी होते हैं कि ऐ हबीबे अकरम आप की तक्ज़ीब आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब है और तक्ज़ीब करने वाले ज़ालिम। 75 : और तक्ज़ीब करने वाले हलाक किये गए। 76 : उस के हुक्म को कोई पलट नहीं सकता रसूलों की नुसरत और उन की तक्ज़ीब करने वालों का हलाक उस ने जिस वक़्त मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होगा। 77 : और आप जानते हैं कि उन्हें कुफ़्फ़ार से कैसी ईज़ाएं पहुंचीं येह पेशे नज़र रख कर आप दिल मुत्मइन रखें। 78 : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ख़्वाहिश थी कि सब लोग इस्लाम ले आएं, जो इस्लाम से महरूम रहते उन की महरूमी आप पर बहुत शाक़ रहती।

سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى

आस्मान में ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ[79] और **अल्लाह** चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता

فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَ

तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन मानते तो वोही हैं जो सुनते हैं[80] और

الْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ

उन मुर्दा दिलों[81] को **अल्लाह** उठाएगा[82] फिर उस की त़रफ़ हांके जाएंगे[83] और बोले[84] उन पर कोई निशानी क्यूं न उतरी

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا

उन के रब की त़रफ़ से[85] तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उन में बहुत निरे

يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ

जाहिल हैं[86] और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों उड़ता है मगर

اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

तुम जैसी उम्मतें[87] हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा[88] फिर अपने रब की त़रफ़

يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ

उठाए जाएंगे[89] और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बहरे और गूंगे हैं[90] अंधेरों में[91] **अल्लाह**

النصف وقف غفران

وقف منزل عند البعض على يسمعون

79 : मक़्सूद उन के ईमान की त़रफ़ से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की उम्मीद मुन्क़त़अ़ करना है ताकि आप को उन के ए'राज़ करने और ईमान न लाने से रन्जो तक्लीफ़ न हो। **80 :** दिल लगा कर समझने के लिये वोही पन्द पज़ीर होते (नसीहत क़बूल करते) हैं और दीने ह़क़ की दा'वत क़बूल करते हैं। **81 :** या'नी कुफ़्फ़ार **82 :** रोज़े क़ियामत **83 :** और अपने आ'माल की जज़ा पाएंगे। **84 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **85 :** कुफ़्फ़ार की गुमराही और उन की सरकशी इस ह़द तक पहुंच गई कि वोह कसीर आयत व मो'जिज़ात जो उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से मुशाहदा किये थे उन पर क़नाअ़त न की और सब से मुकर गए और ऐसी आयत त़लब करने लगे जिस के साथ अ़ज़ाबे इलाही हो, जैसा कि उन्हों ने कहा था ''اَللّٰھُمَّ اِنْ کَانَ ھٰذَا ھُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِکَ فَاَمْطِرْ عَلَیْنَا حِجَارَۃً مِّنَ السَّمَآءِ'' या रब ! अगर येह ह़क़ है तेरे पास से तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा। (تفسیر ابوالسعود) **86 :** नहीं जानते कि उस का नुज़ूल उन के लिये बला है कि इन्कार करते ही हलाक कर दिये जाएंगे। **87 :** या'नी तमाम जानदार ख़्वाह वोह बहाइम हों या दरिन्दे या परिन्द तुम्हारी मिस्ल उम्मतें हैं। येह मुमासलत (मिस्ल होना) जमीअ़ वुजूह से तो है नहीं बा'ज़ से है, उन वुजूह के बयान में बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह ह़ैवानात तुम्हारी त़रह़ **अल्लाह** को पहचानते, वाह़िद जानते, उस की तस्बीह़ पढ़ते, इ़बादत करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि वोह मख़्लूक़ होने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा कि वोह इन्सान की त़रह़ बाहमी उल्फ़त रखते और एक दूसरे से तफ़्हीमो तफ़ह्हुम (बात समझते और समझाया) करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि रोज़ी त़लब करने, हलाकत से बचने, नर मादा का इम्तियाज़ रखने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा पैदा होने, मरने, मरने के बा'द ह़िसाब के लिये उठने में तुम्हारी मिस्ल हैं। **88 :** या'नी जुम्ला उ़लूम और तमाम ''مَاکَانَ وَمَا یَکُوْن'' का इस में बयान है और जमीअ़ अश्या का इ़ल्म इस में है, इस किताब से येह क़ुरआने करीम मुराद है या लौह़े मह़फ़ूज़। (جمل وغیرہ) **89 :** और तमाम दवाब व त़ुयूर का ह़िसाब होगा, इस के बा'द वोह ख़ाक कर दिये जाएंगे। **90 :** कि ह़क़ मानना और ह़क़ बोलना उन्हें मुयस्सर नहीं। **91 :** जह्ल और ह़ैरत और कुफ़्र के।

يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۹﴾ قُلْ

जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रस्ते डाल दे[92] तुम फ़रमाओ

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ

भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब आए या क़ियामत क़ाइम हो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को पुकारोगे[93]

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۰﴾ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ

अगर सच्चे हो[94] बल्कि उसी को पुकारोगे तो वोह अगर चाहे[95] जिस पर उसे पुकारते हो

اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿۴۱﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे[96] और बेशक हम ने तुम से पहली उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे

فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿۴۲﴾ فَلَوْلَآ اِذْ

तो उन्हें सख़्ती और तक्लीफ़ से पकड़ा[97] कि वोह किसी त़रह गिड़गिड़ाएं[98] तो क्यूं न हुवा कि जब

جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ

उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए[99] और शैत़ान ने उन के काम

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ

उन की निगाह में भले कर दिखाए फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं[100] हम ने उन पर हर चीज़

كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

के दरवाज़े खोल दिये[101] यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला[102] तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया[103] अब वोह

مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

आस टूटे रह गए तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की[104] और सब ख़ूबियां सराहा **अल्लाह** रब

92 : इस्लाम की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। 93 : और जिन को दुन्या में मा'बूद मानते थे उन से ह़ाजत रवाई चाहोगे। 94 : अपने इस दा'वे में कि مَعَاذَاللّٰه बुत मा'बूद हैं तो इस वक़्त पुकारो मगर ऐसा न करोगे। 95 : तो उस मुसीबत को 96 : जिन्हें अपने ए'तिक़ादे बात़िल में मा'बूद जानते थे और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात भी न करोगे क्यूं कि तुम्हें मा'लूम है कि वोह तुम्हारे काम नहीं आ सकते। 97 : फ़क़्रो इफ़्लास और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला किया। 98 : **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ करें, अपने गुनाहों से बाज़ आएं। 99 : वोह बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी करने के बजाए कुफ़्रो तक्ज़ीब पर मुसिर रहे। 100 : और वोह किसी त़रह़ पन्द पज़ीर न हुए न पेश आई हुई मुसीबतों से न अम्बिया की नसीह़तों से। 101 : सिह़ह़तो सलामत और वुस्अ़ते रिज़्क़ व ऐश वग़ैरा के। 102 : और अपने आप को उस का मुस्तह़िक़ समझे और क़ारून की त़रह़ तकब्बुर करने लगे 103 : और मुब्तलाए अ़ज़ाब किया। 104 : और सब के सब हलाक कर दिये गए कोई बाक़ी न छोड़ा गया।

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

सारे जहां का[105] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर अल्लाह तुम्हारे कान आंख ले ले और तुम्हारे

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ

दिलों पर मोहर कर दे[106] तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है कि तुम्हें येह चीज़ें ला दे[107] देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं

ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ

फिर वोह मुंह फेर लेते हैं तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आए अचानक[108] या

جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ

खुल्लम खुल्ला[109] तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के[110] और हम नहीं भेजते रसूलों को

اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ

मगर ख़ुशी और डर सुनाते[111] तो जो ईमान लाए और संवरे[112] उन को न कुछ अन्देशा

لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

न कुछ ग़म और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ

बदला उन की बे हुक्मी का तुम फ़रमा दो मैं तुम से नहीं कहता मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कहूं कि मैं आप

الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ

ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से येह कहूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं[113] मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मुझे वहूय आती है[114] तुम फ़रमाओ क्या

105 : इस से मा'लूम हुवा कि गुमराहों, बे दीनों, ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआ़ला की ने'मत है इस पर शुक्र करना चाहिये। 106 : और इल्मो मा'रिफ़त का तमाम निज़ाम दरहम बरहम हो जाए 107 : इस का जवाब येही है कि कोई नहीं, तो अब तौहीद पर दलील क़ाइम हो गई कि जब अल्लाह के सिवा कोई इतनी क़ुदरत व इख़्तियार वाला नहीं तो इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वोही है और शिर्क बद तरीन ज़ुल्म व जुर्म है। 108 : जिस के आसार व अ़लामात पहले से मा'लूम न हों 109 : आंखों देखते 110 : या'नी काफ़िरों के, कि उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और येह हलाकत उन के हक़ में अ़ज़ाब है। 111 : ईमानदारों को जन्नत व सवाब की बिशारतें देते और काफ़िरों को जहन्नम व अ़ज़ाब से डराते। 112 : नेक अ़मल करे। 113 : कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा था कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से त़रह़ त़रह़ के सुवाल किया करते थे, कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दीजिये कि हम कभी मोहताज न हों, हमारे लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये, कभी कहते कि गुज़श्ता और आयिन्दा की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे मुस्तक़्बिल की ख़बर दीजिये क्या क्या पेश आएगा? ताकि हम मनाफ़ेअ़ हासिल कर लें और नुक़्सानों से बचने के पहले से इन्तिज़ाम कर लें, कभी कहते हमें क़ियामत का वक़्त बताइये कब आएगी? कभी कहते कि आप कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं, निकाह़ भी करते हैं। उन की इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि येह कलाम निहायत बे महल और जाहिलाना है, क्यूं कि जो शख़्स किसी अम्र का मुद्दई हो उस से वोही बातें दरयाफ़्त की जा सकती हैं जो उस के दा'वे से तअ़ल्लुक़ रखती हों ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातों का दरयाफ़्त करना और उन को उस दा'वे के ख़िलाफ़ हुज्जत बनाना इन्तिहा दरजे का जहल है। इस लिये इर्शाद हुवा कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दा'वा येह तो नहीं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से

يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝۵۰ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ

बराबर हो जाएंगे अन्धे और अंख्यारे[115] तो क्या तुम गौर नहीं करते और इस कुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें

يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ

ख़ौफ़ हो कि अपने रब की त़रफ़ यूं उठाए जाएं कि **अल्लाह** के सिवा न उन का कोई ह़िमायती हो न कोई सिफ़ारिशी

لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝۵۱ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ

इस उम्मीद पर कि वोह परहेज़ गार हो जाएं और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और

الْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ

शाम उस की रिज़ा चाहते[116] तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर

حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۵۲ وَ

तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं[117] फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है और

كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ

यूंही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मोह़ताज मुसल्मानों को देख कर[118] कहें क्या येह हैं जिन पर **अल्लाह** ने एह़सान किया

بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝۵۳ وَاِذَا جَاۗءَكَ الَّذِيْنَ

हम में से[119] क्या **अल्लाह** ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को और जब तुम्हारे ह़ुज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो

मालो दौलत का सुवाल करो और मैं उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करूं तो रिसालत से मुन्किर हो जाओ, न मेरा दा'वा ज़ाती ग़ैबदानी का है कि अगर मैं तुम्हें गुज़श्ता या आयिन्दा की ख़बरें न बताऊं तो मेरी नुबुव्वत मानने में उ़ज़्र कर सको, न मैं ने फ़िरिश्ता होने का दा'वा किया है कि खाना पीना निकाह़ करना क़ाबिले ए'तिराज़ हो, तो जिन चीज़ों का दा'वा ही नहीं किया उन का सुवाल बे मह़ल है और उस की इजाबत (जवाब देही) मुझ पर लाज़िम नहीं, मेरा दा'वा नुबुव्वत व रिसालत का है और जब इस पर ज़बर दस्त दलीलें और क़वी बुरहानें क़ाइम हो चुकीं तो ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातें पेश करना क्या मा'नी रखता है। **फ़ाएदा :** इस से साफ़ वाज़ेह़ हो गया कि इस आयते करीमा को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ग़ैब पर मुत्तलअ़ किये जाने की नफ़ी के लिये सनद बनाना ऐसा ही बे मह़ल है जैसा कुफ़्फ़ार का इन सुवालात को इन्कारे नुबुव्वत की दस्तावेज़ बनाना बे मह़ल था। इलावा बरीं इस आयत से ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के इल्मे अ़त़ाई की नफ़ी किसी त़रह मुराद ही नहीं हो सकती क्यूं कि इस सूरत में तआ़रुज़ बैनल आयात का क़ाइल होना पड़ेगा وَهُوَ بَاطِلٌ (और येह बात़िल है)। मुफ़स्सिरीन का येह भी क़ौल है कि ह़ुज़ूर का "لَآ اَقُوْلُ لَكُمْ" الآيه फ़रमाना ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है। (مدارک وخازن وجمل وغیرہ) **114 :** और येही नबी का काम है तो मैं तुम्हें वोही दूंगा जिस का मुझे इज़्न होगा, वोही बताऊंगा जिस की इजाज़त होगी, वोही करूंगा जिस का मुझे हुक्म मिला हो। **115 :** मोमिन व काफ़िर, आ़लिम व जाहिल। **116 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई तो उन्हों ने देखा कि ह़ुज़ूर के गिर्द ग़रीब सह़ाबा की एक जमाअ़त ह़ाज़िर है जो अदना दरजे के लिबास पहने हुए हैं, येह देख कर वोह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहें। ह़ुज़ूर ने इस को मन्ज़ूर न फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **117 :** सब का ह़िसाब **अल्लाह** पर है वोही तमाम ख़ल्क़ को रोज़ी देने वाला है उस के सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का ह़िसाब नहीं, ह़ासिले मा'ना येह कि वोह ज़ईफ़ फ़ुक़रा जिन का ऊपर ज़िक्र हुवा आप के दरबार में क़ुर्ब पाने के मुस्तह़िक़ हैं उन्हें दूर न करना ही बजा है। **118 :** ब त़रीक़े ह़सद **119 :** कि उन्हें ईमान व हिदायत नसीब की बा वुजूदे कि वोह लोग फ़क़ीर ग़रीब हैं और हम रईस सरदार हैं। इस से उन का मत़लब **अल्लाह** तआ़ला पर ए'तिराज़ करना है कि ग़ुरबा

يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह्मत लाज़िम कर ली है[120]

اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ

कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो बेशक **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ

बख़्शने वाला मेह्रबान है और इसी त़रह़ हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं[121] और इस लिये कि मुजरिमों का

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

रस्ता ज़ाहिर हो जाए[122] तुम फ़रमाओ मुझे मन्अ़ किया गया है कि उन्हें पूजूं जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ

पूजते हो[123] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता[124] यूं हो तो मैं बहक जाऊं और राह

الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

पर न रहूं तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं[125] और तुम उसे झुटलाते हो मेरे पास नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ

जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो[126] हुक्म नहीं मगर **अल्लाह** का वोह ह़क़ फ़रमाता है और वोह सब से बेहतर

الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ

फ़ैसला करने वाला तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी कर रहे हो[127] तो मुझ में

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

तुम में काम ख़त्म हो चुका होता[128] और **अल्लाह** ख़ूब जानता है सितम गारों को और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की

उमरा पर सब्क़त नहीं रखते तो अगर वोह ह़क़ होता जिस पर येह ग़ुरबा हैं तो वोह हम पर साबिक़ न होते। **120 :** अपने फ़ज़्लो करम से वा'दा फ़रमाया **121 :** ताकि ह़क़ ज़ाहिर हो और उस पर अ़मल किया जाए। **122 :** ताकि उस से इज्तिनाब किया जाए। **123 :** क्यूं कि येह अ़क़्लो नक़्ल दोनों के ख़िलाफ़ है। **124 :** या'नी तुम्हारा त़रीक़ा इत्तिबाए़ नफ़्स व ख़्वाहिशे हवा है, न कि इत्तिबाए़ दलील, इस लिये इख़्तियार करने के क़ाबिल नहीं। **125 :** और मुझे उस की मा'रिफ़त ह़ासिल है मैं जानता हूं कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं। रोशन दलील क़ुरआन शरीफ़ और मो'जिज़ात और तौह़ीद के बराहीने वाज़ेह़ा सब को शामिल है। **126 :** कुफ़्फ़ार इस्तिहज़ाअन ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अ़ज़ाब नाज़िल कराइये, इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि ह़ुज़ूर से येह सुवाल करना निहायत बे जा है। **127 :** या'नी अ़ज़ाब **128 :** मैं तुम्हें एक साअ़त की मोहलत न देता और तुम्हें रब का मुख़ालिफ़ देख कर बे दरंग हलाक कर डालता। लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ह़लीम है उ़क़ूबत में जल्दी नहीं फ़रमाता।

لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَ يَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ

उन्हें वोही जानता है[129] और जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है और जो पत्ता गिरता है

اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ

वोह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ

रोशन किताब में लिखा न हो[130] और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है[131] और जानता है जो कुछ दिन

بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ

में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआ़द पूरी हो[132] फिर उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है[133] फिर

يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ

वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे और वोही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर

عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ

निगहबान भेजता है[134] यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं[135] और वोह

لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۟ وَهُوَ

क़ुसूर नहीं करते[136] फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला अल्लाह की त़रफ़ सुनता है उसी का हुक्म है[137] और वोह

129 : तो जिसे वोह चाहे वोही ग़ैब पर मुत्तलअ़ हो सकता है बिग़ैर उस के बताए कोई ग़ैब नहीं जान सकता। (واحدی) 130 : किताबे मुबीन से लौहे़ मह़फ़ूज़ मुराद है अल्लाह तआ़ला ने مَاكَانَ وَمَا يَكُوْنُ (जो कुछ हो चुका और आयिन्दा जो कुछ होगा तमाम) के उ़लूम उस में मक्तूब फ़रमाए। 131 : तो तुम पर नींद मुसल्लत़ होती है और तुम्हारे तसर्रुफ़ात अपने ह़ाल पर बाक़ी नहीं रहते। 132 : और उ़म्र अपनी इन्तिहा को पहुंचे। 133 : आख़िरत में। इस आयत में بَعْث بَعْدَ الْمَوْت या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई, जिस त़रह़ रोज़मर्रा सोने के वक़्त एक त़रह़ की मौत तुम पर वारिद की जाती है जिस से तुम्हारे ह़वास मुअ़त्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और बेदारी के अफ़्आ़ल सब मुअ़त्तल होते हैं इस के बा'द फिर बेदारी के वक़्त अल्लाह तआ़ला तमाम क़ुवा (त़ाक़तों) को उन के तसर्रुफ़ात अ़त़ा फ़रमाता है। येह दलीले बय्यिन है इस बात की, कि वोह ज़िन्दगानी के तसर्रुफ़ात बा'दे मौत अ़त़ा करने पर इसी त़रह़ क़ादिर है। 134 : फ़िरिश्ते जिन को किरामन कातिबीन कहते हैं वोह बनी आदम की नेकी और बदी लिखते रहते हैं, हर आदमी के साथ दो फ़िरिश्ते हैं एक दाह्ने एक बाएं, नेकियां दाह्नी त़रफ़ का फ़िरिश्ता लिखता है और बदियां बाईं त़रफ़ का। बन्दों को चाहिये होशियार रहें और बदियों और गुनाहों से बचें क्यूं कि हर एक अ़मल लिखा जाता है और रोज़े क़ियामत वोह नामए आ'माल तमाम ख़ल्क़ के सामने पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रुस्वाई का सबब होंगे अल्लाह पनाह दे। (آمین ثم آمین) 135 : इन फ़िरिश्तों से मुराद या तन्हा मलकुल मौत हैं इस सूरत में सीग़ए जम्अ़ ता'ज़ीम के लिये है या मलकुल मौत मअ़ उन फ़िरिश्तों के मुराद हैं जो उन के आ'वान (मुआ़विन व मददगार) हैं, जब किसी की मौत का वक़्त आता है मलकुल मौत ब हुक्मे इलाही अपने आ'वान को उस की रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म देते हैं जब रूह़ ह़ल्क़ तक पहुंचती है तो ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाते हैं। (خازن) 136 : और ता'मीले हुक्म में उन से कोताही वाक़ेअ़ नहीं होती और उन के अ़मल में सुस्ती और ताख़ीर राह नहीं पाती, अपने फ़राइज़ ठीक वक़्त पर अदा करते हैं। 137 : और उस रोज़ उस के सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं।

اَسْرَعُ الْحٰسِبِیْنَ ﴿۶۲﴾ قُلْ مَنْ یُّنَجِّیْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ

सब से जल्द हिसाब करने वाला[138] तुम फ़रमाओ वोह कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से

تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वोह हमें इस से बचावे तो हम ज़रूर

الشّٰكِرِیْنَ ﴿۶۳﴾ قُلِ اللّٰهُ یُنَجِّیْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ

एह़सान मानेंगे[139] तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें नजात देता है इस से और हर बेचैनी से फिर तुम

تُشْرِكُوْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ یَّبْعَثَ عَلَیْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ

शरीक ठहराते हो[140] तुम फ़रमाओ वोह क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से

اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ یَلْبِسَكُمْ شِیَعًا وَّ یُذِیْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ

या तुम्हारे पाउं के तले से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गुरोह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती

بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَیْفَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ كَذَّبَ بِهٖ

चखाए देखो हम क्यूंकर त़रह़ त़रह़ से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उन को समझ हो[141] और उसे[142] झुटलाया

قَوْمُكَ وَ هُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَیْكُمْ بِوَكِیْلٍ ﴿ؕ۶۶﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ٘

तुम्हारी क़ौम ने और येही ह़क़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा (निगह्बान) नहीं[143] हर ख़बर का एक वक़्त मुक़र्रर है[144]

138 : क्यूं कि उस को सोचने, जांचने, शुमार करने की ह़ाजत नहीं जिस में देर हो। 139 : इस आयत में कुफ़्फ़ार को तम्बीह की गई कि ख़ुश्की और तरी के सफ़रों में जब वोह मुब्तलाए आफ़ात हो कर परेशान होते हैं और ऐसे शदाइद व अहवाल पेश आते हैं जिन से दिल कांप जाते हैं और ख़त़रात क़ुलूब को मुज़्तरिब और बेचैन कर देते हैं उस वक़्त बुत परस्त भी बुतों को भूल जाता है और अल्लाह तआ़ला ही से दुआ़ करता है उसी की जनाब में तज़र्रोअ़ व ज़ारी करता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तू ने नजात दी तो मैं शुक्र गुज़ार होउंगा और तेरा ह़क़्क़े ने'मत बजा लाऊंगा। 140 : और बजाए शुक्र गुज़ारी के ऐसी बड़ी ना शुक्री करते हो और येह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं किसी काम के नहीं फिर उन्हें अल्लाह का शरीक करते हो कितनी बड़ी गुमराही है। 141 : मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि इस आयत से कौन लोग मुराद हैं? एक जमाअ़त ने कहा कि इस से उम्मते मुह़म्मदिय्यह मुराद है और आयत इन्हीं के ह़क़ में नाज़िल हुई। बुख़ारी की ह़दीस में है कि जब येह नाज़िल हुवा कि वोह क़ादिर है तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से तो सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा कि या तुम्हारे पाउं के नीचे से तो फ़रमाया : मैं तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा या तुम्हें भिड़ावे मुख़्तलिफ़ गुरोह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए तो फ़रमाया : येह आसान है। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम ﷺ ने मस्जिदे बनी मुआ़विया में दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और इस के बा'द त़वील दुआ़ की, फिर सह़ाबा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : मैं ने अपने रब से तीन सुवाल किये उन में से सिर्फ़ दो क़बूल फ़रमाए गए, एक सुवाल तो येह था कि मेरी उम्मत को क़ह़त़े आ़म से हलाक न फ़रमाए येह क़बूल हुवा, एक येह था कि इन्हें ग़र्क़ से अ़ज़ाब न फ़रमाए येह भी क़बूल हुवा, तीसरा सुवाल येह था कि इन में बाहम जंगो जिदाल न हो येह क़बूल नहीं हुवा। 142 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ को या नुज़ूले अ़ज़ाब को 143 : मेरा काम हिदायत है क़ुलूब की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं। 144 : या'नी अल्लाह तआ़ला ने जो ख़बरें दीं उन के लिये वक़्त मुअ़य्यन हैं उन का वुक़ूअ़ ठीक उसी वक़्त होगा।

وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ اِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ

और अन्क़रीब जान जाओगे और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं[145] तो उन से मुंह

عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا

फेर ले[146] जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो

تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَ مَا عَلَى الَّذِيْنَ

याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ और परहेज़ गारों पर

يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन के हिसाब से कुछ नहीं[147] हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आएं[148]

وَ ذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ

और छोड़ दे उन को जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और

ذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِیٌّ

कुरआन से नसीहत दो[149] कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए[150] अल्लाह के सिवा न उस का कोई हिमायती हो

وَّ لَا شَفِيْعٌ ۚ وَ اِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ

न सिफ़ारिशी और अगर अपने इवज़ सारे बदले दे तो उस से न लिये जाएं येह हैं[151] वोह जो

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا

अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के

يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَ لَا يَضُرُّنَا وَ

कुफ़्र का तुम फ़रमाओ[152] क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा[153] और

145 : ता'न, तश्नीअ़, इस्तिहज़ा के साथ 146 : और उन की हम नशीनी तर्क कर। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की जिस मजलिस में दीन का एह़तिराम न किया जाता हो मुसल्मान को वहां बैठना जाइज़ नहीं। इस से साबित हो गया कि कुफ़्फ़ार और बे दीनों के जल्से जिन में वोह दीन के ख़िलाफ़ तक़्रीरें करते हैं उन में जाना सुनने के लिये शिर्कत करना जाइज़ नहीं और रद व जवाब के लिये जाना मुजालसत (शिर्कत करना) नहीं बल्कि इज़्हारे ह़क़ है वोह मम्नूअ़ नहीं जैसा कि अगली आयत से ज़ाहिर है। 147 : या'नी ता'न व इस्तिहज़ा करने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं, उन्हीं से इस का हिसाब होगा, परहेज़ गारों पर नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों ने कहा था कि हमें गुनाह का अन्देशा है जब कि हम उन्हें छोड़ दें और मन्अ़ न करें इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 148 **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीहत और इज़्हारे ह़क़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है। 149 : और अह़कामे शरइय्या बताओ। 150 : और अपने जराइम के सबब अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार न हो। 151 : दीन को हंसी और खेल बनाने वाले और दुन्या के मफ़्तून (शैदाई) 152 : ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! उन मुशरिकीन से जो अपने बाप दादा के दीन की दा'वत देते हैं। 153 : और उस में कोई क़ुदरत नहीं।

نُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى

उलटे पाउं पलटा दिये जाएं बा'द इस के कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई[154] उस की त़रह़ जिसे शैत़ानों ने

الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۪ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ

ज़मीन में राह भुला दी[155] हैरान है उस के रफ़ीक़ उसे राह की त़रफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि

هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ۙ وَاَنْ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[156] और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गरदन रख दें[157] जो रब है सारे जहान का और येह कि

اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِىْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِىْ

नमाज़ क़ाइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है और वोही है जिस ने

الثلث

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ۬ قَوْلُهُ

आस्मान व ज़मीन ठीक बनाए[158] और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वोह फ़ौरन हो जाएगी उस की बात

الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ

सच ही है और उसी की सल्त़नत है जिस दिन सूर फूंका जाएगा[159] हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला

وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ

और वोही है ह़िक्मत वाला ख़बरदार और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप[160] आज़र से कहा क्या तुम

154 : और इस्लाम और तौह़ीद की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई और बुत परस्ती के बद तरीन वबाल से बचाया। 155 : इस आयत में ह़क़ व बात़िल की दा'वत देने वालों की एक तम्सील बयान फ़रमाई गई कि जिस त़रह़ मुसाफ़िर अपने रफ़ीक़ों के साथ था जंगल में भूतों और शैत़ानों ने उस को रस्ता बहका दिया और कहा मन्ज़िले मक़्सूद की येही राह है और उस के रफ़ीक़ उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाने लगे वोह ह़ैरान रह गया किधर जाए ! अन्जाम उस का येही होगा कि अगर वोह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाएगा और रफ़ीक़ों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मन्ज़िल पर पहुंच जाएगा। येही ह़ाल उस शख़्स का है जो त़रीक़ए इस्लाम से बहका और शैत़ान की राह चला मुसल्मान उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाते हैं अगर इन की बात मानेगा राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा। 156 : या'नी जो त़रीक़ अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये वाज़ेह़ फ़रमाया और जो दीन इन के लिये मुक़र्रर किया वोही हिदायत व नूर है और जो उस के सिवा है वोह दीन बात़िल है। 157 : और उसी की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करें और ख़ास उसी की इ़बादत करें। 158 : जिन से उस की क़ुदरते कामिला और उस का इ़ल्मे मुह़ीत़ और उस की ह़िक्मत व सन्अ़त ज़ाहिर है। 159 : कि नाम को भी कोई सल्त़नत का दा'वा करने वाला न होगा। तमाम जबाबिरा फ़राइना (ज़ालिमो जाबिर बादशाह) और सब दुन्या की सल्त़नत का ग़ुरूर करने वाले देखेंगे कि दुन्या में जो वोह सल्त़नत का दा'वा रखते थे वोह बात़िल था। 160 : क़ामूस में है कि आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के चचा का नाम है। इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी ने मसालिकुल ह़ुनफ़ाअ में भी ऐसा ही लिखा है। चचा को बाप कहना तमाम ममालिक में मा'मूल है बिल ख़ुसूस अ़रब में। क़ुरआने करीम में है : "نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا" इस में ह़ज़रते इस्माईल को ह़ज़रते या'क़ूब के आबा में ज़िक्र किया गया है बा वुजूदे कि आप अ़म (चचा) हैं। ह़दीस शरीफ़ में भी ह़ज़रत सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ को اَبْ फ़रमाया। चुनान्चे इर्शाद किया : "رُدُّوْا عَلَيَّ اَبِىْ" और यहां अबी से ह़ज़रते अ़ब्बास मुराद हैं। (مفردات راغب وكبير وغيره)

اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّیْۤ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۷۴﴾ وَكَذٰلِكَ

बुतों को ख़ुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूं[161] और इसी तरह

نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِیَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِیْنَ ﴿۷۵﴾

हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की[162] और इस लिये कि वोह ऐनुल यक़ीन वालों में हो जाए[163]

فَلَمَّا جَنَّ عَلَیْهِ الَّیْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ

फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा[164] बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे

اُحِبُّ الْاٰفِلِیْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ

ख़ुश नहीं आते डूबने वाले फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वोह डूब गया

161 : येह आयत मुश्रिकीने अ़रब पर हुज्जत है जो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुअ़ज़्ज़म जानते थे और उन की फ़ज़ीलत के मो'तरिफ़ थे, उन्हें दिखाया जाता है कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बुत परस्ती को कितना बड़ा ऐब और गुमराही बताते हैं अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो। **162 :** या'नी जिस तरह हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दीन में बीनाई अ़ता फ़रमाई ऐसे ही उन्हें आस्मानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया इस से आस्मानों और ज़मीन की ख़ल्क़ मुराद है। मुजाहिद और सईद बिन जुबैर कहते हैं कि आयाते समावातो अर्ज़ (ज़मीन व आस्मान के अ़जाइबात) मुराद हैं। येह इस तरह कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सख़्रा (एक चट्टान) पर खड़ा किया गया और आप के लिये समावात मक्शूफ़ किये (खोल दिये) गए, यहां तक कि आप ने अ़र्शो कुर्सी और आस्मानों के तमाम अ़जाइब और जन्नत में अपने मक़ाम को मुआ़यना फ़रमाया, आप के लिये ज़मीन कश्फ़ फ़रमा दी गई यहां तक कि आप ने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अ़जाइब देखे। मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह रूयत ब चश्मे बातिन थी या ब चश्मे सर। (درمنثور وخازن وغیرہ) **163 :** क्यूं कि हर ज़ाहिर व मख़्फ़ी चीज़ उन के सामने कर दी गई और ख़ल्क़ के आ'माल में से कुछ भी उन से न छुपा रहा। **164 :** उ़लमाए तफ़्सीर और अस्हाबे अख़्बारो सियर का बयान है कि नमरूद इब्ने कन्आ़न बड़ा जाबिर बादशाह था सब से पहले इसी ने ताज सर पर रखा येह बादशाह लोगों से अपनी परस्तिश कराता था, काहिन और मुनज्जिम (नुजूमी) कसरत से इस के दरबार में हाज़िर रहते थे। नमरूद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा तुलूअ़ हुवा है, उस की रोशनी के सामने आफ़्ताब महताब बिल्कुल बे नूर हो गए, इस से वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा काहिनों से ता'बीर दरयाफ़्त की, उन्हों ने कहा : इस साल तेरी क़लम रव (सल्तनत) में एक फ़रज़न्द पैदा होगा जो तेरे ज़वाले मुल्क का बाइस होगा और तेरे दीन वाले उस के हाथ से हलाक होंगे। येह ख़बर सुन कर वोह परेशान हुवा और उस ने हुक्म दे दिया कि जो बच्चा पैदा हो क़त्ल कर डाला जाए और मर्द औ़रतों से अ़लाहदा रहें और इस की निगहबानी के लिये एक महकमा क़ाइम कर दिया गया। तक़्दीराते इलाहिय्यह को कौन टाल सकता है हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदए माजिदा हामिला हुईं और काहिनों ने नमरूद को इस की भी ख़बर दी कि वोह बच्चा हम्ल में आ गया लेकिन चूंकि हज़रत की वालिदा साहिबा की उ़म्र कम थी उन का हम्ल किसी तरह पहचाना ही न गया, जब ज़मानए विलादत क़रीब हुवा तो आप की वालिदा उस तहख़ाने में चली गईं जो आप के वालिद ने शहर से दूर खोद कर तय्यार किया था, वहां आप की विलादत हुई और वहीं आप रहे, पथ्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था रोज़ाना वालिदा साहिबा दूध पिला आती थीं और जब वहां पहुंचती थीं तो देखती थीं कि आप अपनी सरे अंगुश्त चूस रहे हैं और उस से दूध बरआमद होता है आप बहुत जल्द बढ़ते थे एक महीने में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में, इस में इख़्तिलाफ़ है कि आप तहख़ाने में कितना अ़र्सा रहे, बा'ज़ कहते हैं सात बरस, बा'ज़ तेरह बरस, बा'ज़ सतरह बरस। येह **मस्अला** यक़ीनी है कि अम्बिया हर हाल में मा'सूम होते हैं और वोह अपनी इब्तिदाए हस्ती से तमाम अवक़ात वुजूद में आ़रिफ़ होते हैं। एक रोज़ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी वालिदा से दरयाफ़्त फ़रमाया : मेरा रब (पालने वाला) कौन है? उन्हों ने कहा : मैं। फ़रमाया : तुम्हारा रब कौन है? उन्हों ने कहा : तुम्हारे वालिद। फ़रमाया : उन का रब कौन है? इस पर वालिदा ने कहा : ख़ामोश रहो और अपने शोहर से जा कर कहा कि जिस लड़के की निस्बत येह मश्हूर है कि वोह ज़मीन वालों का दीन बदल देगा वोह तुम्हारा फ़रज़न्द ही है और येह गुफ़्तगू बयान की। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इब्तिदा ही से तौहीद की हिमायत और अ़क़ाइदे कुफ़्रिय्या का इब्ताल शुरूअ़ फ़रमा दिया और जब एक सूराख़ की राह से शब के वक़्त आप ने ज़ोहरा या मुश्तरी सितारे को देखा तो इक़ामते हुज्जत शुरूअ़ कर दी क्यूं कि उस ज़माने के लोग बुत और कवाकिब की परस्तिश करते थे तो आप ने एक निहायत नफ़ीस और दिल नशीन पैराए में उन्हें नज़र व इस्तिद्लाल की तरफ़ राहनुमाई

قَالَ لَىِٕنْ لَّمْ یَهْدِنِیْ رَبِّیْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّیْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا

कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता[165] फिर जब

رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّیْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتْ قَالَ

सूरज जग मगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो[166] येह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वोह डूब गया कहा

یٰقَوْمِ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ

ऐ क़ौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो[167] मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۷۹﴾ ج وَحَآجَّهٗ

आस्मान व ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर[168] और मैं मुशिरकों में नहीं और उन की क़ौम उन से

قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّیْ فِی اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَاۤ اَخَافُ مَا

झगड़ने लगी कहा क्या **अल्लाह** के बारे में मुझ से झगड़ते हो वोह तो मुझे राह बता चुका[169] और मुझे उन का डर नहीं

تُشْرِكُوْنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ رَبِّیْ شَیْــٴًـا ؕ وَسِعَ رَبِّیْ كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ؕ

जिन्हें तुम शरीक बताते हो[170] हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे[171] मेरे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत़ है

اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَكَیْفَ اَخَافُ مَاۤ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ

तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूंकर डरूं[172] और तुम नहीं डरते कि तुम ने

اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ عَلَیْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَیُّ الْفَرِیْقَیْنِ

अल्लाह का शरीक उस को ठहराया जिस की तुम पर उस ने कोई सनद न उतारी तो दोनों गुरौहों में

की जिस से वोह इस नतीजे पर पहुंचे कि आ़लम बि तमामिही ह़ादिस है, इलाह नहीं हो सकता, वोह ख़ुद मूजिद व मुदब्बिर का मोह़ताज है जिस के कु़दरतो इख़्तियार से इस में तग़य्युर होते रहते हैं। **165 :** इस में क़ौम को तम्बीह है कि जो क़मर को इलाह ठहराए वोह गुमराह है क्यूं कि उस का एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल होना दलीले हुदूसो इम्कान है। **166 :** शम्स मुअन्नस ग़ैर ह़क़ीक़ी है इस के लिये मुज़क्कर मुअन्नस के दोनों सीग़े इस्ति'माल किये जा सकते हैं, यहां ''هٰذَا'' मुज़क्कर लाया गया इस में ता'लीमे अदब है कि लफ़्ज़ रब की रिआ़यत के लिये लफ़्ज़ तानीस न लाया गया, इसी लिह़ाज़ से **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़त में अ़ल्लाम आता है न कि अ़ल्लामा। **167 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की सलाहिय्यत नहीं रखता इन का इलाह होना बात़िल है और क़ौम जिस शिर्क में मुब्तला है आप ने उस से बेज़ारी का इज़्हार किया और इस के बा'द दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया जो आगे आता है। **168 :** या'नी इस्लाम के सिवा बाक़ी तमाम अद्यान से जुदा रह कर। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दीने ह़क़ का क़ियाम व इस्तिह़काम जब ही हो सकता है जब कि तमाम अद्याने बात़िला से बेज़ारी हो। **169 :** अपनी तौह़ीद व मा'रिफ़त की **170 :** क्यूं कि वोह बेजान बुत हैं न ज़रर दे सकते हैं न नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं उन से क्या डरना। येह आप ने मुशिरकीन से जवाब में फ़रमाया था जिन्हों ने आप से कहा था कि बुतों से डरो, उन के बुरा कहने से कहीं आप को कुछ नुक़्सान न पहुंच जाए। **171 :** वोह होगी क्यूं कि मेरा रब क़ादिरे मुत़्लक़ है। **172 :** जो बेजान जमाद और आ़जिज़े मह्ज़ हैं।

اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا

अमान का ज़ियादा सज़ावार कौन है[173] अगर तुम जानते हो वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी

اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

नाहक़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं और येह हमारी दलील है

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ

कि हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अ़ता फ़रमाई हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें[174] बेशक तुम्हारा रब इ़ल्मो ह़िक्मत

عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا

वाला है और हम ने उन्हें इस्ह़ाक़ और या'कूब अ़ता किये उन सब को हम ने राह दिखाई और उन से पहले नूह़ को

مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَ

राह दिखाई और उस की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और

هٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَ

हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को और ज़करिय्या और यह़्या और ईसा और

اِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ

इल्यास को येह सब हमारे क़ुर्ब के लाइक़ हैं और इस्माईल और यसअ़ और यूनुस और लूत़ को

وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَ

और हम ने हर एक को उस के वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी[175] और कुछ उन के बाप दादा और औलाद और भाइयों में से बा'ज़ को[176] और

173 : मुवह़्ह़िद (तौह़ीद का क़ाइल) या मुश्रिक, **174 :** इ़ल्मो अ़क़्ल व फ़हमो फ़ज़ीलत के साथ जैसे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए दुन्या में इ़ल्मो ह़िक्मत व नुबुव्वत के साथ और आख़िरत में क़ुर्ब व सवाब के साथ। **175 :** नुबुव्वत व रिसालत के साथ। **मस्अला :** इस आयत से इस पर सनद लाई जाती है कि अम्बिया मलाएका से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि आ़लम **अल्लाह** के सिवा तमाम मौजूदात को शामिल है फ़िरिश्ते भी इस में दाख़िल हैं तो जब तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी तो मलाएका पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई। यहां **अल्लाह** तआ़ला ने अठ्ठारह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया और इस ज़िक्र में तरतीब न ज़माने के ए'तिबार से है न फ़ज़ीलत के न "वाव" तरतीब का मुक़्तज़ी, लेकिन जिस शान से कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के अस्मा ज़िक्र फ़रमाए गए इस में एक अ़जीब लत़ीफ़ा है वोह येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया की हर जमाअ़त को एक ख़ास त़रह़ की करामत व फ़ज़ीलत के साथ मुमताज़ फ़रमाया तो ह़ज़रते नूह़ व इब्राहीम व इस्ह़ाक़ व या'कूब का अव्वल ज़िक्र किया क्यूं कि येह अम्बिया के उसूल (आबाओ अज्दाद) हैं या'नी इन की औलाद में ब कसरत अम्बिया हुए जिन के अन्साब इन्हीं की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। नुबुव्वत के बा'द मरातिबे मो'तबरा में से मुल्क व इख़्तियार व सल्त़नत व इक़्तिदार है **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद व सुलैमान को इस का ह़ज़्ज़े वाफ़िर (बहुत हिस्सा) दिया। और मरातिबे रफ़ीआ़ में से मुसीबतो बला पर साबिर रहना है, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते अय्यूब को इस के साथ मुमताज़ फ़रमाया, फिर मुल्क व सब्र के दोनों मर्तबे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इनायत किये कि आप ने शिद्दतो बला पर मुद्दतों सब्र फ़रमाया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत के साथ मुल्के मिस्र अ़ता किया। कस्रते मो'जिज़ात व क़ुव्वते बराहीन भी मरातिबे मो'तबरा में से हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा व हारून को इस के साथ

اجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۸۷﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ

हम ने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई येह अल्लाह की हिदायत है

بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वोह शिर्क करते तो ज़रूर उन का किया अकारत जाता

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا

येह हैं जिन को हम ने किताब और हुक्म और नुबुव्वत अ़ता की तो अगर येह लोग[177] इस से

هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ هَدَى

मुन्किर हों तो हम ने इस के लिये एक ऐसी क़ौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं[178] येह हैं जिन को अल्लाह ने

اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى

हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह चलो[179] तुम फ़रमाओ मैं कुरआन पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता वोह तो नहीं मगर नसीहत

لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

सारे जहान को[180] और यहूद ने अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[181] जब बोले अल्लाह ने किसी आदमी पर

بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ

कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे रोशनी और

मुशर्रफ़ किया। ज़ोहद व तर्के दुन्या भी मरातिबे मो'तबरा में से है, हज़रते ज़करिय्या व यह्या व ईसा व इल्यास को इस के साथ मख़्सूस फ़रमाया। इन हज़रात के बा'द अल्लाह तआ़ला ने उन अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन के न मुत्तबिईन बाक़ी रहे न उन की शरीअ़त जैसे कि हज़रते इस्माईल, यसअ़, यूनुस, लूत़ عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام। इस शान से अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाने में उन की करामतों और ख़ुसूसिय्यतों का एक अ़जीब लत़ीफ़ा नज़र आता है। **176 :** हम ने फ़ज़ीलत दी **177 :** या'नी अहले मक्का **178 :** इस क़ौम से या अन्सार मुराद हैं या मुहाजिरीन या तमाम अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم या हुज़ूर पर ईमान लाने वाले सब लोग। **फ़ाएदा :** इस आयत में दलालत है कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की नुसरत फ़रमाएगा और आप के दीन को कुव्वत देगा और इस को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करेगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और येह ग़ैबी ख़बर वाक़ेअ़ हो गई। **179 मस्अला :** उ़लमाए दीन ने इस आयत से येह मस्अला साबित किया है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम अम्बिया से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि ख़िसाले कमाल व औसाफ़े शरफ़ जो जुदा जुदा अम्बिया को अ़ता फ़रमाए गए थे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के लिये सब को जम्अ़ फ़रमा दिया और आप को हुक्म दिया ''فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ'' (तो तुम इन्हीं की राह चलो) तो जब आप तमाम अम्बिया के औसाफ़े कमालिया के जामेअ़ हैं तो बेशक सब से अफ़्ज़ल हुए। **180 :** इस आयत से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं और आप की दा'वत तमाम ख़ल्क़ को आ़म और कुल जहान आप की उम्मत। (خازن) **181 :** और उस की मा'रिफ़त से महरूम रहे और अपने बन्दों पर उस को जो रहमतो करम है उस को न जाना। **शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त अपने हिब्रुल अह्बार (बड़े आ़लिम पेश्वा) मालिक इब्ने सैफ़ को ले कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से मुजादला करने आई, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : मैं तुझे उस परवरदगार की क़सम देता हूं जिस ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई। क्या तौरैत में तू ने येह देखा है ''اِنَّ اللّٰهَ يُبْغِضُ الْحِبْرَ السَّمِيْنَ'' या'नी अल्लाह को मोटा आ़लिम मब्ग़ूज़ है, कहने लगा : हां ! येह तौरैत में है, हुज़ूर ने फ़रमाया : तू मोटा आ़लिम ही तो है। इस पर वोह ग़ज़ब नाक हो कर कहने लगा कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में फ़रमाया गया किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे ? तो वोह ला जवाब हुवा और यहूद उस से बरहम हुए और उस को झिड़कने लगे और उस को हिब्र के ओ़हदे से मा'ज़ूल कर दिया। (مدارک وخازن)

هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ

लोगों के लिये हिदायत जिस के तुम ने अलग अलग काग़ज़ बना लिये ज़ाहिर करते हो[182] और बहुत सा छुपा लेते हो[183] और

عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ

तुम्हें वोह सिखाया जाता है[184] जो न तुम को मा'लूम था न तुम्हारे बाप दादा को **अल्लाह** कहो[185] फिर उन्हें छोड़ दो उन की

خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ

बेहूदगी में खेलता[186] और येह है बरकत वाली किताब कि हम ने उतारी[187] तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

जो आगे थीं और इस लिये कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को[188] और जो कोई सारे जहान में इस के गिर्द हैं और वोह जो आख़िरत पर

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

ईमान लाते हैं[189] इस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّ

जो **अल्लाह** पर झूट बांधे[190] या कहे मुझे वह्य हुई और उसे कुछ वह्य न हुई[191] और

مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ

जो कहे अभी मैं उतारता हूं ऐसा जैसा ख़ुदा ने उतारा[192] और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम

182 : उन में से बा'ज़ को जिस का इज़्हार अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ समझते हो **183 :** जो तुम्हारी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करते हैं जैसे कि तौरैत के वोह मज़ामीन जिन में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है। **184 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'लीम और क़ुरआने करीम से **185 :** या'नी जब वोह उस का जवाब न दे सकें कि वोह किताब किस ने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये **अल्लाह** ने **186 :** क्यूं कि जब आप ने हुज्जत क़ाइम कर दी और इन्ज़ार व नसीहत निहायत को पहुंचा दी और उन के लिये जाए उ़ज़्र न छोड़ी इस पर भी वोह बाज़ न आएं तो उन्हें उन की बेहूदगी में छोड़ दीजिये, येह कुफ़्फ़ार के हक़ में वईद व तहदीद है। **187 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **188 :** اُمُّ الْقُرٰى मक्कए मुकर्रमा है क्यूं कि वोह तमाम ज़मीन वालों का क़िब्ला है। **189 :** और क़ियामत व आख़िरत और मरने के बा'द उठने का यक़ीन रखते हैं और अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल और बे ख़बर नहीं हैं। **190 :** और नुबुव्वत का झूटा दा'वा करे। **191 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में नाज़िल हुई जिस ने यमामा अ़लाक़ए यमन में नुबुव्वत का झूटा दा'वा किया था। क़बीलए बनी हनीफ़ा के चन्द लोग उस के फ़रेब में आ गए थे, येह कज़्ज़ाब ज़मानए ख़िलाफ़ते हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ में वह़शी क़ातिले अमीर ह़म्ज़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के हाथ से क़त्ल हुवा। **192 शाने नुज़ूल :** येह अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ कातिबे वह्य के हक़ में नाज़िल हुई। जब आयत ''وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ'' (और बेशक हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया) नाज़िल हुई उस ने इस को लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते पैदाइशे इन्सान की तफ़्सील पर मुत्तलअ़ हो कर मुतअ़ज्जिब हुवा और इस हालत में आयत का आख़िर ''فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ'' (तो बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह** सब से बेहतर बनाने वाला) बे इख़्तियार उस की ज़बान पर जारी हो गया, इस पर उस को येह घमन्ड हुवा कि मुझ पर वह्य आने लगी और मुरतद हो गया येह न समझा कि नूरे वह्य और क़ुव्वत व हुस्ने कलाम से आयत का आख़िर कलिमा ज़बान पर आ गया इस में उस की क़ाबिलिय्यत का कोई दख़्ल न था ज़ोरे कलाम ख़ुद अपने आख़िर को बता दिया करता है जैसे कभी कोई शाइ़र नफ़ीस मज़मून पढ़े वोह मज़मून ख़ुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शाइ़र से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं उन में ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शे'र कहने पर क़ादिर नहीं तो क़ाफ़िया बताना उन की क़ाबिलिय्यत नहीं कलाम की क़ुव्वत है और यहां तो नूरे वह्य और नूरे नबी से सीने में रोशनी

غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ

मौत की सख़्तियों में हैं और फ़िरिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं[193] कि निकालो अपनी जानें आज

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ

तुम्हें ख़्वारी का अ़ज़ाब दिया जाएगा बदला उस का कि **अल्लाह** पर झूट लगाते थे[194] और

عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ

उस की आयतों से तकब्बुर करते और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया

مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

था[195] और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो मताअ़ हम ने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ

जिन का तुम अपने में साझा बताते थे[196] बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई[197] और तुम से गए

مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ

जो दा'वे करते थे[198] बेशक **अल्लाह** दाने और गुठली को चीरने वाला है[199] ज़िन्दा को

مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾

मुर्दा से निकाले[200] और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला[201] येह है **अल्लाह** तुम कहां औंधे जाते हो[202]

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

तारीकी चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला और उस ने रात को चैन बनाया[203] और सूरज और चांद को ह़िसाब[204] येह

आती थी। चुनान्चे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और मुरतद हो जाने के बा'द फिर वोह एक जुम्ला भी ऐसा बनाने पर क़ादिर न हुवा जो नज़्मे क़ुरआनी से मिल सकता, आख़िर कार ज़मानए अक़्दस ही में क़ब्ल फ़त्ह़े मक्का फिर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुवा। **193 :** अरवाह़ क़ब्ज़ करने के लिये झिड़क्ते जाते हैं और कहते जाते हैं **194 :** नुबुव्वत और वह़्य के झूटे दा'वे कर के और **अल्लाह** के लिये शरीक और बीबी बच्चे बता कर। **195 :** न तुम्हारे साथ माल है न जाह न औलाद जिन की मह़ब्बत में तुम उ़म्र भर गिरिफ़्तार रहे न वोह बुत जिन्हें पूजा किये (करते थे) आज उन में से कोई तुम्हारे काम न आया। येह कुफ़्फ़ार से रोज़े क़ियामत फ़रमाया जावेगा। **196 :** कि वोह इ़बादत के ह़क़दार होने में **अल्लाह** के शरीक हैं। (مَعَاذَاللّٰه) **197 :** और अ़लाक़े (तअ़ल्लुक़ात) टूट गए जमाअ़त मुन्तशिर हो गई। **198 :** तुम्हारे वोह तमाम झूटे दा'वे जो तुम दुन्या में किया करते थे बात़िल हो गए। **199 :** तौह़ीद व नुबुव्वत के बयान के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कमाले क़ुदरत व इ़ल्मो ह़िक्मत के दलाइल ज़िक्र फ़रमाए क्यूं कि मक़्सूदे आ'ज़म **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ और उस के तमाम सिफ़ात व अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त है और येह जानना कि वोही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है और जो ऐसा हो वोही मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत हो सकता है न कि वोह बुत जिन्हें मुश्रिकीन पूजते हैं। ख़ुश्क दाना और गुठली को चीर कर उन से सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी संगलाख़ ज़मीनों में इन के नर्म रेशों को रवां करना जहां आहनी मेख़ भी काम न कर सके उस की क़ुदरत के कैसे अ़जाइबात हैं। **200 :** जानदार सब्ज़े को बेजान दाने और गुठली से और इन्सान व ह़ैवान को नुत़्फ़े से और परिन्द को अन्डे से। **201 :** जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को, और इन्सान व ह़ैवान से नुत़्फ़े को और परिन्द से अन्डे को, येह उस के अ़जाइबे क़ुदरतो ह़िक्मत हैं। **202 :** और ऐसे बराहीन क़ाइम होने के बा'द क्यूं ईमान नहीं लाते और मौत के

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا

साधा (मुक़र्रर किया हुवा) है ज़बर दस्त जानने वाले का और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह

بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

पाओ ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में हम ने निशानियां मुफ़स्सल बयान कर दीं इल्म वालों के लिये

وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ

और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया[205] फिर कहीं तुम्हें ठहरना है[206] और कहीं अमानत रहना[207]

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये और वोही है जिस ने आस्मान से

مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ

पानी उतारा तो हम ने उस से हर उगने वाली चीज़ निकाली[208] तो हम ने उस से निकाली सब्ज़ी जिस में

مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ

से दाने निकालते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास पास गुच्छे और अंगूर

مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْۤا

के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग उस का

اِلٰى ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

फल देखो जब फले और उस का पकना बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ

और[209] अल्लाह का शरीक ठहराया जिन्नों को[210] हालां कि उसी ने इन को बनाया और उस के लिये बेटे और बेटियां गढ़ लीं

बा'द उठने का यक़ीन नहीं करते, जो बेजान नुत्फ़े से जानदार हैवान पैदा करता है उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा करना क्या बईद है। **203 :** कि ख़ल्क़ इस में चैन पाती है और दिन की तकान व मांदगी को इस्तिराहत से दूर करती है और शब बेदार ज़ाहिद तन्हाई में अपने रब की इबादत से चैन पाते हैं। **204 :** कि इन के दौरे और सैर (गर्दिश करने) से इबादात व मुआमलात के अवक़ात मा'लूम हों। **205 :** या'नी हज़रते आदम से। **206 :** मां के रेह्म में या ज़मीन के ऊपर **207 :** बाप की पुश्त में या क़ब्र के अन्दर **208 :** पानी एक, और इस से जो चीज़ें उगाईं वोह क़िस्म क़िस्म और रंगारंग **209 :** बा वुजूदे कि इन दलाइले क़ुदरत व अ़जाइबे हिक्मत और इस इन्आ़मो इक्राम और इन ने'मतों के पैदा करने और अ़ता फ़रमाने का इक़्तिज़ा था कि उस करीम कारसाज़ पर ईमान लाते बजाए इस के बुत परस्तों ने येह सितम किया (जो आयत में आगे मज़्कूर है) कि **210 :** कि उन की इताअ़त कर के बुत परस्त हो गए।

عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ ع بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

जहालत से पाकी और बर तरी है उस को उन की बातों से बे किसी नुमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला

اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ

उस के बच्चा कहां से हो ह़ालां कि उस की औ़रत नहीं[211] और उस ने हर चीज़ पैदा की[212]

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ

और वोह सब कुछ जानता है येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब[213] उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का

كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۰۲﴾ لَا تُدْرِكُهُ

बनाने वाला तो उसे पूजो और वोह हर चीज़ पर निगह्बान है[214] आंखें उसे

الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۰۳﴾ قَدْ

इह़ात़ा नहीं करतीं[215] और सब आंखें उस के इह़ात़े में हैं और वोही है निहायत बात़िन पूरा ख़बरदार तुम्हारे पास

جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ

आंखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की त़रफ़ से तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा तो अपने बुरे को

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿۱۰۴﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا

और मैं तुम पर निगह्बान नहीं और हम इसी त़रह़ आयतें त़रह़ त़रह़ से बयान करते हैं[216] और इस लिये कि काफ़िर बोल उठें

211 : और बे औ़रत औलाद नहीं होती और ज़ौजा उस की शान के लाइक़ नहीं क्यूं कि कोई शै उस की मिस्ल नहीं। **212 :** तो जो है वोह उस की मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़्लूक़ को औलाद बताना बात़िल है। **213 :** जिस की सिफ़ात मज़्कूर हुईं और जिस की येह सिफ़ात हों वोही मुस्तह़िक़े इ़बादत है। **214 :** ख़्वाह वोह रिज़्क़ हो या अजल या ह़म्ल। **215 : मसाइल : इदराक** के मा'ना हैं मरई के जवानिब व ह़ुदूद पर वाक़िफ़ होना, इसी को इह़ात़ा कहते हैं। इदराक की येही तफ़्सीर ह़ज़रते सई़द इब्ने मुसय्यब और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मन्क़ूल है और जम्हूर मुफ़स्सिरीन इदराक की तफ़्सीर इह़ात़ा से फ़रमाते हैं और इह़ात़ा उसी चीज़ का हो सकता है जिस के ह़ुदूद व जिहात हों, **अल्लाह** तआ़ला के लिये ह़द व जिहत मुह़ाल है तो उस का इदराक व इह़ात़ा भी ना मुम्किन, येही मज़हब है अहले सुन्नत का। ख़वारिज व मो'तज़िला वग़ैरा गुमराह फ़िर्क़े इदराक और रूयत में फ़र्क़ नहीं करते, इस लिये वोह इस गुमराही में मुब्तला हो गए कि उन्हों ने दीदारे इलाही को मुह़ाले अ़क़्ली क़रार दे दिया, बा वुजूदे कि नफ़्ये रूयत नफ़्ये इ़ल्म को मुस्तल्ज़िम है वरना जैसा कि बारी तआ़ला ब ख़िलाफ़ तमाम मौजूदात के बिला कैफ़िय्यत व जिहत जाना जा सकता है, ऐसे ही देखा भी जा सकता है, क्यूं कि अगर दूसरी मौजूदात बिग़ैर कैफ़िय्यत व जिहत के देखी नहीं जा सकतीं तो जानी भी नहीं जा सकतीं। राज़ इस का येह है कि रूयत व दीद के मा'ना येह हैं कि बसर किसी शै को जैसी कि वोह हो वैसा जाने तो जो शै जिहत वाली होगी उस की रूयत व दीद जिहत में होगी और जिस के लिये जिहत न होगी उस की दीद बे जिहत होगी। **दीदारे इलाही :** आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मोमिनीन के लिये अहले सुन्नत का अ़क़ीदा और क़ुरआन व ह़दीस व इज्माए़ सह़ाबा व सलफ़े उम्मत के दलाइले कसीरा से साबित है। क़ुरआने करीम में फ़रमाया : ''وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ'' (कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब को देखते) इस से साबित है कि मोमिनीन को रोज़े क़ियामत उन के रब का दीदार मुयस्सर होगा। इस के इ़लावा और बहुत आयात और सिह़ाह़ की कसीर अह़ादीस से साबित है, अगर दीदारे इलाही ना मुम्किन होता तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दीदार का सुवाल न फ़रमाते, ''رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ'' (ऐ रब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं) इर्शाद न करते और उन के जवाब में ''اِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ'' (येह पहाड़ अगर अपनी जगह ठहरा रहा तो तू अ़न्क़रीब मुझे देख लेगा) न फ़रमाया जाता। इन दलाइल से साबित हो गया कि आख़िरत में मोमिनीन के लिये दीदारे इलाही शरअ़ में साबित है और इस का इन्कार गुमराही है। **216 :** कि ह़ुज्जत लाज़िम हो।

دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

कि तुम तो पढ़े हो और इस लिये कि उसे इल्म वालों पर वाज़ेह़ कर दें उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से वह़्य होती है[217]

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ

उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो और अल्लाह चाहता तो वोह

اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَ

शरीक न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगह्बान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े (निगह्बान) नहीं और

لَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ

उन्हें गाली न दो जिन को वोह अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वोह अल्लाह की शान में बे अदबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से[218]

كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ

यूंही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अ़मल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है और वोह उन्हें बता देगा

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ

जो करते थे और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उन के पास कोई निशानी

اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَاۤ اِذَا

आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं[219] और तुम्हें[220] क्या ख़बर कि जब

جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

वोह आएं तो येह ईमान न लाएंगे और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को[221] जैसा वोह पहली बार उस पर

بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

ईमान न लाए थे[222] और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें

217 : और कुफ़्फ़ार की बेहूदा गोइयों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करो। इस में नबिय्ये करीम ﷺ की तस्कीने ख़ात़िर है कि आप कुफ़्फ़ार की यावह गोइयों से रन्जीदा न हों, येह उन की बद नसीबी है कि वोह ऐसी वाज़ेह़ बुरहानों से फ़ाएदा न उठाएं। 218 : क़तादा का क़ौल है कि मुसल्मान कुफ़्फ़ार के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़्फ़ार को नसीह़त हो और वोह बुत परस्ती के ऐब से बा ख़बर हों मगर उन ना ख़ुदा शनास जाहिलों ने बजाए पन्द पज़ीर होने के शाने इलाही में बे अदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरूअ़ की। इस पर येह आयत नाज़िल हुई अगर्चे बुतों को बुरा कहना और उन की ह़क़ीक़त का इज़्हार ता़अ़त व सवाब है लेकिन अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की शान में कुफ़्फ़ार की बद गोइयों को रोकने के लिये इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। इब्ने अम्बारी का क़ौल है कि येह हुक्म अव्वल ज़माने में था जब अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई मन्सूख़ हो गया। 219 : वोह जब चाहता है ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत नाज़िल फ़रमाता है। 220 : ऐ मुसल्मानो ! 221 : ह़क़ के मानने और देखने से 222 : उन आयात पर जो नबिय्ये करीम ﷺ के दस्ते अक़्दस पर ज़ाहिर हुई थीं मिस्ल शक़्क़ुल क़मर वग़ैरा मो'जिज़ाते बाहिरात के।

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَاۤ اِلَیْهِمُ الْمَلٰٓىٕكَةَ وَ كَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَ حَشَرْنَا عَلَیْهِمْ

और अगर हम उन की त़रफ़ फ़िरिश्ते उतारते[223] और उन से मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़

كُلَّ شَیْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِیُؤْمِنُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

उन के सामने उठा लाते जब भी वोह ईमान लाने वाले न थे[224] मगर येह कि ख़ुदा चाहता[225] लेकिन उन में बहुत

یَجْهَلُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا شَیٰطِیْنَ الْاِنْسِ

निरे जाहिल हैं[226] और इसी त़रह़ हम ने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों

وَ الْجِنِّ یُوْحِیْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَ لَوْ

और जिन्नों में के शैत़ान कि उन में एक दूसरे पर ख़ुफ़्या डालता है बनावट की बात[227] धोके को और तुम्हारा

شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَ مَا یَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ لِتَصْغٰۤى اِلَیْهِ

रब चाहता तो वोह ऐसा न करते[228] तो उन्हें उन की बनावटों पर छोड़ दो[229] और इस लिये कि उस[230] की त़रफ़

اَفْـِٕدَةُ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَ لِیَرْضَوْهُ وَ لِیَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ

उन के दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएं जो उन्हें

مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ اَفَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِیْ حَكَمًا وَّ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ اِلَیْكُمُ

गुनाह कमाना है तो क्या **अल्लाह** के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूं और वोही है जिस ने तुम्हारी त़रफ़

الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَ الَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ

मुफ़स्सल किताब उतारी[231] और जिन को हम ने किताब दी वोह जानते हैं कि येह तेरे रब की त़रफ़ से

223 **शाने नुज़ूल :** इब्ने जरीर का क़ौल है कि येह आयत इस्तिह्ज़ा करने वाले क़ुरैश की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम ﷺ से कहा था कि ऐ मुहम्मद ! (ﷺ) आप हमारे मुर्दों को उठा लाइये हम उन से दरयाफ़्त कर लें कि आप जो फ़रमाते हैं येह ह़क़ है या नहीं और हमें फ़िरिश्ते दिखाइये जो आप के रसूल होने की गवाही दें या **अल्लाह** और फ़िरिश्तों को हमारे सामने लाइये। इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 224 : वोह अहले शक़ावत हैं। 225 : उस की मशिय्यत जो होती है वोही होता है जो उस के इ़ल्म में अहले सआ़दत हैं वोह ईमान से मुशर्रफ़ होते हैं। 226 : नहीं जानते कि येह लोग वोह निशानियां बल्कि उस से ज़ियादा देख कर भी ईमान लाने वाले नहीं। (جمل ومدارک) 227 : या'नी वस्वसे और फ़रेब की बातें इग़्वा करने (बहकाने) के लिये। 228 : लेकिन **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है इम्तिहान में डालता है ताकि उस के मेहनत पर साबिर रहने से ज़ाहिर हो जाए कि येह जज़ील सवाब पाने वाला है। 229 : **अल्लाह** उन्हें बदला देगा, रुस्वा करेगा और आप की मदद फ़रमाएगा। 230 : बनावट की बात 231 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ जिस में अम्र व नही, वा'दा व वई़द और ह़क़ व बात़िल का फ़ैसला और मेरे सिद्क़ की शहादत और तुम्हारे इफ़्तिरा का बयान है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम ﷺ से मुशरिकीन कहा करते थे कि आप हमारे और अपने दरमियान एक ह़कम मुक़र्रर कीजिये। उन के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई।

رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

सच उतरा है[232] तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो और पूरी है तेरे रब की बात

صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾ وَاِنْ

सच और इन्साफ़ में उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं[233] और वोही है सुनता जानता और ऐ सुनने

تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

वाले ज़मीन में अक्सर वोह हैं कि तू उन के कहे पर चले तो तुझे **अल्लाह** की राह से बहका दें वोह सिर्फ़ गुमान के

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ

पीछे हैं[234] और निरी अट्कलें [फ़ुज़ूल अन्दाज़े] दौड़ाते हैं[235] तेरा रब खूब जानता है कि कौन बहका

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ

उस की राह से और वोह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को तो खाओ उस में से जिस पर **अल्लाह** का नाम

عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

लिया गया[236] अगर तुम उस की आयतें मानते हो और तुम्हें क्या हुवा कि उस में से न खाओ जिस[237]

اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ

पर **अल्लाह** का नाम लिया गया वोह तो तुम से मुफ़स्सल बयान कर चुका जो कुछ तुम पर ह़राम हुवा[238] मगर जब तुम्हें उस से मजबूरी हो[239]

وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने बेशक तेरा रब ह़द से बढ़ने

232 : क्यूं कि उन के पास इस की दलीलें हैं। 233 : न कोई उस की क़ज़ा का तब्दील करने वाला न हुक्म का रद करने वाला न उस का वा'दा ख़िलाफ़ हो सके। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि कलाम जब ताम है तो वोह क़ाबिले नक़्स व तग़्यीर नहीं और वोह क़ियामत तक तह़रीफ़ व तग़्यीर से मह़फ़ूज़ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि किसी की क़ुदरत नहीं कि क़ुरआने पाक की तह़रीफ़ कर सके क्यूं कि **अल्लाह** तआला इस की ह़िफ़ाज़त का ज़ामिन है। (تفسیر ابوالسعود) 234 : अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा की तक़्लीद करते हैं, बसीरत व ह़क़ शनासी से मह़रूम हैं। 235 : कि येह ह़लाल है येह ह़राम और अट्कल से कोई चीज़ ह़लाल ह़राम नहीं होती जिसे **अल्लाह** और उस के रसूल ने ह़लाल किया वोह ह़लाल और जिसे ह़राम किया वोह ह़राम। 236 : या'नी जो **अल्लाह** के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया न वोह जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया वोह ह़राम है, ह़िल्लत **अल्लाह** के नाम पर ज़ब्ह़ होने से मुतअ़ल्लिक़ है, येह मुश्रिकीन के उस ए'तिराज़ का जवाब है कि जो उन्हों ने मुसल्मानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुवा तो खाते हो और **अल्लाह** का मारा हुवा या'नी जो अपनी मौत मरे उस को ह़राम जानते हो। 237 : ज़बीह़ा 238 **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि ह़राम चीज़ों का मुफ़स्सल ज़िक्र होता है और सुबूते हुरमत के लिये हुक्मे हुरमत दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअ़त में हुरमत (ह़राम होने) का हुक्म न हो वोह मुबाह़ है। 239 : तो इन्दल इज़्तिरार क़दरे ज़रूरत रवा है। (या'नी शदीद मजबूरी के वक़्त ब क़दरे ज़रूरत जाइज़ है)

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَ ذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَ بَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

वालों को ख़ूब जानता है और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह वोह जो

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَ لَا تَاْكُلُوْا مِمَّا

गुनाह कमाते हैं अन्क़रीब अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे और उसे न खाओ जिस

لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ اِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَ اِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى

पर **अल्लाह** का नाम न लिया गया[240] और वोह बेशक हुक्म उ़दूली है और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के

اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَ اِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ ع اَوَ مَنْ

दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानो[241] तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो[242] और क्या

كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَ جَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ كَمَنْ

वोह कि मुर्दा था तो हम ने उसे ज़िन्दा किया[243] और उस के लिये एक नूर कर दिया[244] जिस से लोगों में चलता है[245] वोह उस

مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ

जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है[246] उन से निकलने वाला नहीं यूंही काफ़िरों की आंख में उन के

240 : वक़्ते ज़ब्ह़ न तह़क़ीक़न न तक़्दीरन, ख़्वाह इस त़रह़ कि वोह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस त़रह़ कि उस को बिग़ैर तस्मिया के या ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो येह सब ह़राम हैं लेकिन जहां मुसल्मान ज़ब्ह़ करने वाला वक़्ते ज़ब्ह़ بِسْمِ اللّٰهِ اَكْبَرُ कहना भूल गया वोह ज़ब्ह़ जाइज़ है वहां ज़िक्र तक़्दीरी है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। **241 :** और **अल्लाह** के ह़राम किये हुए को ह़लाल जानो **242 :** क्यूं कि दीन में हुक्मे इलाही को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना **अल्लाह** के सिवा और को ह़ाकिम क़रार देना शिर्क है। **243 :** मुर्दा से काफ़िर और ज़िन्दा से मोमिन मुराद है क्यूं कि कुफ़्र क़ुलूब के लिये मौत है और ईमान ह़यात। **244 :** नूर से ईमान मुराद है जिस की बदौलत आदमी कुफ़्र की तारीकियों से नजात पाता है। क़तादा का क़ौल है कि नूर से किताबुल्लाह या'नी क़ुरआन मुराद है। **245 :** और बीनाई ह़ासिल कर के राहे ह़क़ का इम्तियाज़ कर लेता है। **246 :** कुफ़्र व जह्ल व तीरह बात़िनी की येह एक मिसाल है जिस में मोमिन व काफ़िर का ह़ाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मोमिन उस मुर्दे की त़रह़ है जिस ने ज़िन्दगानी पाई और उस को नूर मिला जिस से वोह मक़्सूद की राह पाता है और काफ़िर उस की मिस्ल है जो त़रह़ त़रह़ की अंधेरियों में गिरिफ़्तार हुवा और उन से निकल न सके हमेशा ह़ैरत में मुब्तला रहे, येह दोनों मिसालें हर मोमिन व काफ़िर के लिये आ़म हैं अगर्चे बक़ौल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا इन का शाने नुज़ूल येह है कि अबू जह्ल ने एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर कोई नजिस चीज़ फेंकी थी उस रोज़ ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ शिकार को गए हुए थे जिस वक़्त वोह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस वाक़िए की ख़बर दी गई, गो अभी तक वोह ईमान से मुशर्रफ़ न हुए थे मगर येह ख़बर सुन कर उन को निहायत त़ैश आया वोह अबू जह्ल पर चढ़ गए और उस को कमान से मारने लगे और अबू जह्ल आ़जिज़ी व ख़ुशामद करने लगा और कहने लगा ऐ अबू या'ला ! (ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की कुन्यत है) क्या आप ने नहीं देखा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) कैसा दीन लाए और उन्हों ने हमारे मा'बूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालफ़त की और हमें बद अ़क़्ल बताया, इस पर ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा ने फ़रमाया : तुम्हारे बराबर बद अ़क़्ल कौन है कि **अल्लाह** को छोड़ कर पथ्थरों को पूजते हो, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं, उसी वक़्त ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा इस्लाम ले आए। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा का ह़ाल उस के मुशाबेह है जो मुर्दा था ईमान न रखता था **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और नूरे बात़िन अ़त़ा फ़रमाया और अबू जह्ल की शान येही है कि वोह कुफ़्र व जह्ल की तारीकियों में गिरिफ़्तार है और

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا

आ'माल भले कर दिये गए हैं   और इसी तरह़ हम ने हर बस्ती में उस के मुजरिमों के सरग़ने किये

لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَ مَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَ اِذَا

कि उस में दाउं खेलें[247]   और दाउं नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुऊ़र नहीं[248]   और जब

جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَاۤ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔۘ

उन के पास कोई निशानी आए कहते हैं हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा **अल्लाह** के रसूलों को मिला[249]

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ

अल्लाह ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे[250]   अ़न्क़रीब मुजरिमों को **अल्लाह**

عِنْدَ اللّٰهِ وَ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ

के यहां ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अ़ज़ाब बदला उन के मक्र का   और जिसे **अल्लाह**

اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَ مَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ

राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है[251]   और जिसे गुमराह करना चाहे उस का

صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ

सीना तंग ख़ूब रुका हुवा कर देता है[252] गोया किसी की ज़बर दस्ती से आस्मान पर चढ़ रहा है   **अल्लाह** यूंही

اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَ هٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ

अ़ज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को   और येह[253] तुम्हारे रब की सीधी

مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ

राह है   हम ने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीहत मानने वालों के लिये   उन के लिये सलामती का घर है

---

247 : और त़रह़ त़रह़ के ह़ीलों और फ़रेबों और मक्कारियों से लोगों को बहकाते और बात़िल को रवाज देने की कोशिश करते हैं। **248 :** कि इस का वबाल उन्हीं पर पड़ता है। **249 :** या'नी जब तक हमारे पास वह्य न आए और हमें नबी न बनाया जाए। **शाने नुज़ूल :** वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा था कि अगर नुबुव्वत ह़क़ हो तो इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ मैं हूं क्यूं कि मेरी उ़म्र सय्यिदे आ़लम (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) से ज़ियादा है और माल भी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **250 :** या'नी **अल्लाह** जानता है कि नुबुव्वत की अहलिय्यत और इस का इस्तिह़्क़ाक़ किस को है किस को नहीं, उ़म्र व माल से कोई मुस्तह़िक़े नुबुव्वत नहीं हो सकता, येह नुबुव्वत के त़लब गार तो ह़सद, मक्र, बद अ़हदी वग़ैरा क़बाएह़ अफ़्आ़ल और रज़ाइल ख़िसाल में मुब्तला हैं, येह कहां और नुबुव्वत का मन्सबे आ़ली कहां। **251 :** उस को ईमान की तौफ़ीक़ देता है और उस के दिल में रोशनी पैदा करता है। **252 :** कि उस में इ़ल्म और दलाइले तौह़ीद व ईमान की गुन्जाइश न हो तो उस की ऐसी ह़ालत होती है कि जब उस को ईमान की दा'वत दी जाती है और इस्लाम की त़रफ़ बुलाया जाता है तो वोह उस पर निहायत शाक़ होता है और उस को बहुत दुश्वार मा'लूम होता है। **253 :** दीने इस्लाम

عِنۡدَ رَبِّهِمۡ وَهُوَ وَلِيُّهُمۡ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾ وَيَوۡمَ يَحۡشُرُهُمۡ

अपने रब के यहां और वोह उन का मौला है येह उन के कामों का फल है और जिस दिन उन सब को उठाएगा

جَمِيۡعًا ۚ يٰمَعۡشَرَ الۡجِنِّ قَدِ اسۡتَكۡثَرۡتُمۡ مِّنَ الۡاِنۡسِ ۚ وَقَالَ

और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गुरौह तुम ने बहुत आदमी घेर लिये[254] और उन के

اَوۡلِيٰٓؤُهُمۡ مِّنَ الۡاِنۡسِ رَبَّنَا اسۡتَمۡتَعَ بَعۡضُنَا بِبَعۡضٍ وَّبَلَغۡنَاۤ اَجَلَنَا

दोस्त आदमी अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया[255] और हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए

الَّذِيۡۤ اَجَّلۡتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثۡوٰٮكُمۡ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اِلَّا مَا شَآءَ

जो तू ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी[256] फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इस में रहो मगर जिसे ख़ुदा

اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيۡمٌ عَلِيۡمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيۡ بَعۡضَ الظّٰلِمِيۡنَ

चाहे[257] ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इ़ल्म वाला है और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे

بَعۡضًاۢ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۱۲۹﴾ ع يٰمَعۡشَرَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ

पर मुसल्लत़ करते हैं बदला उन के किये का[258] ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरौह क्या तुम्हारे पास

رُسُلٌ مِّنۡكُمۡ يَقُصُّوۡنَ عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِيۡ وَيُنۡذِرُوۡنَكُمۡ لِقَآءَ يَوۡمِكُمۡ

तुम में के रसूल न आए थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें येह दिन[259] देखने से

هٰذَا ؕ قَالُوۡا شَهِدۡنَا عَلٰۤى اَنۡفُسِنَا وَغَرَّتۡهُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا وَشَهِدُوۡا

डराते[260] कहेंगे हम ने अपनी जानों पर गवाही दी[261] और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और ख़ुद

عَلٰۤى اَنۡفُسِهِمۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰفِرِيۡنَ ﴿۱۳۰﴾ ذٰلِكَ اَنۡ لَّمۡ يَكُنۡ رَّبُّكَ مُهۡلِكَ

अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वोह काफ़िर थे[262] येह[263] इस लिये कि तेरा रब बस्तियों को[264]

254 : उन को बहकाया और इग़्वा किया। 255 : इस त़रह कि इन्सानों ने शहवात व मआ़सी में उन से मदद पाई और जिन्नों ने इन्सानों को अपना मुत़ीअ़ बनाया आख़िर कार इस का नतीजा पाया। 256 : वक़्त गुज़र गया क़ियामत का दिन आ गया ह़स्रतो नदामत बाक़ी रह गई। 257 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना उस क़ौम की त़रफ़ राजेअ़ है जिस की निस्बत इ़ल्मे इलाही में है कि वोह इस्लाम लाएंगे और नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم की तस्दीक़ करेंगे और जहन्नम से निकाले जाएंगे। 258 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उन पर मुसल्लत़ करता है बुराई चाहता है तो बुरों को, इस से येह नतीजा बरआमद होता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उस पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत़ किया जाता है तो जो उस ज़ालिम के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि ज़ुल्म तर्क करें। 259 : या'नी रोज़े क़ियामत 260 : और अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाते 261 : काफ़िर जिन्न और इन्सान इक़रार करेंगे कि रसूल उन के पास आए और उन्हों ने ज़बानी पयाम पहुंचाए और इस दिन के पेश आने वाले ह़ालात का ख़ौफ़ दिलाया लेकिन काफ़िरों ने उन की तक्ज़ीब की और उन पर ईमान न लाए, कुफ़्फ़ार का येह इक़रार उस वक़्त होगा जब कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के शिर्क व कुफ़्र की शहादतें देंगे।

الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا

ज़ुल्म से तबाह नहीं करता कि उन के लोग बे ख़बर हों[265] और हर एक के लिये[266] उन के कामों से दरजे हैं और

رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ

तेरा रब उन के आ'माल से बे ख़बर नहीं और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे परवा है रहमत वाला ऐ लोगो वोह चाहे तो

يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ

तुम्हें ले जाए[267] और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लाए जैसे तुम्हें औरों

قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

की औलाद से पैदा किया[268] बेशक जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है[269] ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किस

تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا

का रहता है आख़िरत का घर बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाते और[270] अल्लाह ने जो

ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا

खेती और मवेशी पैदा किये उन में उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले येह अल्लाह का है उन के ख़याल में और येह

لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ

हमारे शरीकों का[271] तो वोह जो उन के शरीकों का है वोह तो ख़ुदा को नहीं पहुंचता और जो ख़ुदा का है

262 : क़ियामत का दिन बहुत तवील होगा और उस में हालात बहुत मुख़्तलिफ़ पेश आएंगे। जब कुफ़्फ़ार मोमिनीन के इन्आमो इक्राम और इज़्ज़तो मन्ज़िलत को देखेंगे तो अपने कुफ़्रो शिर्क से मुन्किर हो जाएंगे और इस ख़याल से कि शायद मुकर जाने से कुछ काम बने येह कहेंगे "وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ" या'नी ख़ुदा की क़सम ! हम मुशरिक न थे, उस वक़्त उन के मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उन के आ'ज़ा उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाही देंगे इसी की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा : "وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ" 263 : या'नी रसूलों की बि'सत 264 : उन की मा'सियत और 265 : बल्कि रसूल भेजे जाते हैं वोह उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं हुज्जतें क़ाइम करते हैं इस पर भी वोह सरकशी करते हैं तब हलाक किये जाते हैं। 266 : ख़्वाह वोह नेक हो या बद, नेकी और बदी के दरजे हैं उन्ही के मुताबिक़ सवाब व अज़ाब होगा। 267 : या'नी हलाक कर दे 268 : और उन का जा नशीन बनाया। 269 : वोह चीज़ ख़्वाह क़ियामत हो या मरने के बा'द उठना या हिसाब या सवाब व अज़ाब। 270 : ज़मानए जाहिलिय्यत में मुशिरकीन का तरीक़ा था कि वोह अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो अल्लाह का मुक़र्रर करते थे और एक हिस्सा बुतों का तो जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते थे उस को तो मेहमानों और मिस्कीनों पर सर्फ़ कर देते थे और जो बुतों के लिये मुक़र्रर करते थे वोह ख़ास उन पर और उन के ख़ादिमों पर सर्फ़ करते, जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते अगर उस में से कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ इस में मिलता तो उस को निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते, इस आयत में उन की इस जहालत और बद अक़्ली का ज़िक्र फ़रमा कर उन पर तम्बीह फ़रमाई गई। 271 : या'नी बुतों का।

فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ ۗ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ

वोह उन के शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं[272] और यूं ही बहुत मुश्रिकों

لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ

की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है[273] कि उन्हें हलाक करें

وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا

और उन का दीन उन पर मुश्तबह कर दें[274] और **अल्लाह** चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वोह हैं और

يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن

उन के इफ़्तिरा और बोले[275] येह मवेशी और खेती रोकी हुई[276] है इसे वोही खाए जिसे हम

نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ

चाहें अपने झूटे ख़याल से[277] और कुछ मवेशी हैं जिन पर चढ़ना ह़राम ठहराया[278] और कुछ मवेशी के ज़ब्ह़ पर

اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

अल्लाह का नाम नहीं लेते[279] येह सब **अल्लाह** पर झूट बांधना है अ़न्क़रीब वोह उन्हें बदला देगा उन के इफ़्तिराओं का

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ

और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वोह निरा [ख़ालिस] हमारे मर्दों का है[280] और हमारी औ़रतों पर

أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ

ह़राम है और मरा हुवा निकले तो वोह सब[281] उस में शरीक हैं क़रीब है कि **अल्लाह** उन्हें उन की

272 : और इन्तिहा दरजे के जहल में गिरिफ़्तार हैं, ख़ालिक़े मुन्इ़म के इ़ज़्ज़तो जलाल की उन्हें ज़रा भी मा'रिफ़त नहीं और फ़सादे अ़क़्ल इस ह़द तक पहुंच गया कि उन्हों ने बेजान बुतों पथ्थर की तस्वीरों को कारसाज़े आ़लम के बराबर कर दिया और जैसा उस के लिये ह़िस्सा मुक़र्रर किया ऐसा ही बुतों के लिये भी किया बेशक येह बहुत ही बुरा फ़े'ल और इन्तिहा का जह्ल और अ़ज़ीम ख़त़ा व ज़लाल (गुमराही) है, इस के बा'द उन के जहल और ज़लालत की एक और ह़ालत ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **273 :** यहां शरीकों से मुराद वोह शयात़ीन हैं जिन की इत़ाअ़त के शौक़ में मुश्रिकीन **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी और उस की मा'सियत गवारा करते थे और ऐसे क़बाएह़ अफ़्आ़ल और जाहिलाना अफ़्आ़ल के मुरतकिब होते थे जिन को अ़क़्ले सह़ीह़ कभी गवारा न कर सके और जिन की क़बाह़त में अदना समझ के आदमी को भी तरद्दुद न हो, बुत परस्ती की शामत से वोह ऐसे फ़सादे अ़क़्ल में मुब्तला हुए कि ह़ैवानों से बदतर हो गए और औलाद जिस के साथ हर जानदार को फ़ित़्रतन मह़ब्बत होती है शयात़ीन के इत्तिबाअ़ में उस का बे गुनाह ख़ून करना उन्हों ने गवारा किया और इस को अच्छा समझने लगे। **274 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह लोग पहले ह़ज़रते इस्माईल علیہ السلام के दीन पर थे शयात़ीन ने उन को इग़्वा कर के इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें दीने इस्माईली से मुन्ह़रिफ़ करें **275 :** मुश्रिकीन अपने बा'ज़ मवेशियों और खेतियों को अपने बात़िल मा'बूदों के साथ नामज़द कर के कि **276 :** मम्नूउ़ल इन्तिफ़ाअ़ (फ़ाएदा उठाना मन्अ़) **277 :** या'नी बुतों की ख़िदमत करने वाले वग़ैरा। **278 :** जिन को बह़ीरा, साइबा, ह़ामी कहते हैं। **279 :** बल्कि उन बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं और इन तमाम अफ़्आ़ल की निस्बत येह ख़याल करते हैं कि इन्हें **अल्लाह** ने इस का हुक्म दिया है। **280 :** सिर्फ़ उन्हीं के लिये ह़लाल है अगर ज़िन्दा पैदा हो। **281 :** मर्द व औ़रत

وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْۤا اَوْلَادَهُمْ

उन बातों का बदला देगा बेशक वोह इल्म, हिक्मत वाला है बेशक तबाह हुए वोह जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं

سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ

अह्मक़ाना जहालत से[282] और ह़राम ठहराते हैं वोह जो **अल्लाह** ने उन्हें रोज़ी दी[283] **अल्लाह** पर झूट बांधने को[284] बेशक

ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ ع وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ

वोह बहके और राह न पाई[285] और वोही है जिस ने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए [छाए] हुए[286]

وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ

और कुछ बे छए [बे फैले] और खजूर और खेती जिस में रंग रंग के खाने[287] और ज़ैतून

وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ

और अनार किसी बात में मिलते[288] और किसी में अलग[289] खाओ उस का फल जब फल लाए

وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾

और उस का ह़क़ दो जिस दिन कटे[290] और बे जा न ख़र्चो[291] बेशक बे जा ख़रच्ने वाले उसे पसन्द नहीं

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا

और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे[292] खाओ उस में से जो **अल्लाह** ने तुम्हें रोज़ी दी और शैतान

282 शाने नुज़ूल : येह आयत ज़मानए जाहिलिय्यत के उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बे रह़मी के साथ ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे, रबीआ़ व मुज़र वग़ैरा क़बाइल में इस का बहुत रवाज था और जाहिलिय्यत के बा'ज़ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे और बे रह़मी का येह आ़लम था कि कुत्तों की परवरिश करते और औलाद को क़त्ल करते थे उन की निस्बत येह इर्शाद हुवा कि तबाह हुए। इस में शक नहीं कि औलाद **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है और इस की हलाकत से अपनी ता'दाद कम होती है अपनी नस्ल मिटती है येह दुन्या का ख़सारा है घर की तबाही है और आख़िरत में इस पर अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है तो येह अ़मल दुन्या और आख़िरत दोनों में तबाही का बाइस हुवा और अपनी दुन्या और आख़िरत दोनों को तबाह कर लेना और औलाद जैसी अ़ज़ीज़ और प्यारी चीज़ के साथ इस क़िस्म की सफ़्फ़ाकी और बे दर्दी गवारा करना इन्तिहा दरजे की ह़माक़त और जहालत है। **283 :** या'नी बह़ीरे, साइबा, ह़ामी वग़ैरा जो मज़्कूर हो चुके। **284 :** क्यूं कि वोह येह गुमान करते हैं कि ऐसे मज़्मूम अफ़्आ़ल का **अल्लाह** ने हुक्म दिया है कि उन का येह ख़याल **अल्लाह** पर इफ़्तिरा है। **285 :** ह़क़ व सवाब की। **286 :** या'नी टेटों (सहारे) पर क़ाइम किये हुए मिस्ल अंगूर वग़ैरा के **287 :** रंग और मज़े और मिक़्दार और ख़ुश्बू में बाहम मुख़्तलिफ़ **288 :** मसलन रंग में या पत्तों में **289 :** मसलन ज़ाएक़े और तासीर में। **290 :** मा'ना येह हैं कि येह चीज़ें जब फलें खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिये मुबाह़ है और उस की ज़कात या'नी उ़श्र उस के कामिल होने के बा'द वाजिब होता है जब खेती काटी जाए या फल तोड़े जाएं। **मस्अला :** लकड़ी, बांस, घास के सिवा ज़मीन की बाक़ी पैदावार में अगर येह पैदावार बारिश से हो तो उस में उ़श्र वाजिब होता है और अगर रहट (चरख़े) वग़ैरा से हो तो निस्फ़ उ़श्र। **291 :** ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इसराफ़ का तरजमा बे जा ख़र्च करना फ़रमाया, निहायत ही नफ़ीस तरजमा है अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने अ़याल को कुछ न दिया और ख़ुद फ़क़ीर बन बैठा तो सुद्दी का क़ौल है कि येह ख़र्च बे जा है और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो येह भी बे जा और दाख़िले इसराफ़ है जैसा कि सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया। सुफ़्यान का क़ौल है कि **अल्लाह** की ताअ़त के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जावे वोह क़लील भी हो तो इसराफ़ है। ज़ोहरी का क़ौल है कि इस के मा'ना येह हैं कि मा'सियत में ख़र्च न करो। मुजाहिद ने कहा : ह़क़्क़ुल्लाह

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾ ۙ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ

के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा सरीह़ दुश्मन है आठ नर और मादा एक जोड़ा भेड़

اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

का और एक जोड़ा बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा

اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ

या वोह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं[293] किसी इ़ल्म से बताओ अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ ۙ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ

सच्चे हो और एक जोड़ा ऊंट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ

ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ

क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा पेट में

الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

लिये हैं[294] क्या तुम मौजूद थे जब **अल्लाह** ने तुम्हें येह हुक्म दिया[295] तो उस से बढ़ कर ज़ालिम

में कोताही करना इसराफ़ है और अगर अबू क़ुबैस पहाड़ सोना हो और उस तमाम को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो तो इसराफ़ न हो और एक दिरहम मा'सियत में ख़र्च करो तो इसराफ़। **292 :** चौपाए दो क़िस्म के होते हैं : कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं कुछ छोटे मिस्ल बकरी वग़ैरा के जो इस क़ाबिल नहीं, इन में से जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल किये उन्हें खाओ और अहले जाहिलिय्यत की त़रह़ **अल्लाह** की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम न ठहराओ। **293 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने न भेड़ बकरी के नर ह़राम किये न उन की मादाएं ह़राम कीं न उन की औलाद, इन में तुम्हारा येह फ़े'ल कि कभी नर ह़राम ठहराओ कभी मादा कभी उन के बच्चे येह सब तुम्हारा इख़्तिराअ़ है (या'नी तुम्हारी ईजाद है) और हवाए नफ़्स का इत्तिबाअ़। कोई ह़लाल चीज़ किसी के ह़राम करने से ह़राम नहीं होती। **294 :** इस आयत में अहले जाहिलिय्यत को तौबीख़ की गई जो अपनी त़रफ़ से ह़लाल चीज़ों को ह़राम ठहरा लिया करते थे जिन का ज़िक्र ऊपर की आयात में आ चुका है। जब इस्लाम में अह़काम का बयान हुवा तो उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जिदाल (झगड़ा) किया और उन का ख़त़ीब मालिक बिन औ़फ़ जुशमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम ने सुना है की आप उन चीज़ों को ह़राम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते चले आए हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बिग़ैर किसी अस्ल के चन्द क़िस्में चौपायों की ह़राम कर लीं और **अल्लाह** तआ़ला ने आठ नर व मादा अपने बन्दों के खाने और उन के नफ़्अ़ उठाने के लिये पैदा किये, तुम ने कहां से उन्हें ह़राम किया ? उन में ह़ुरमत नर की त़रफ़ से आई या मादा की त़रफ़ से ? मालिक बिन औ़फ़ येह सुन कर साकित और मुतह़य्यिर (ह़ैरान) रह गया और कुछ न बोल सका, नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बोलता क्यूं नहीं ? कहने लगा : आप फ़रमाइये मैं सुनूंगा। سُبْحٰنَ اللّٰه ! सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कलाम की क़ुव्वत और ज़ोर ने अहले जाहिलिय्यत के ख़त़ीब को साकित व ह़ैरान कर दिया और वोह बोल ही क्या सकता था अगर कहता कि नर की त़रफ़ से ह़ुरमत आई तो लाज़िम होता कि तमाम नर ह़राम हों अगर कहता कि मादा की त़रफ़ से तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा ह़राम हो और अगर कहता जो पेट में है वोह ह़राम है तो फिर सब ही ह़राम हो जाते क्यूं कि जो पेट में रहता है वोह नर होता है या मादा। वोह जो तख़्सीसें क़ाइम करते थे और बा'ज़ को ह़लाल और बा'ज़ को ह़राम क़रार देते थे इस ह़ुज्जत ने उन के इस दा'वए तह़रीम को बात़िल कर दिया, इलावा बरीं उन से येह दरयाफ़्त करना कि **अल्लाह** ने नर ह़राम किये हैं या मादा या उन के बच्चे येह मुन्किरे नुबुव्वत मुख़ालिफ़ को इक़रारे नुबुव्वत पर मजबूर करता था क्यूं कि जब तक नुबुव्वत का वासित़ा न हो तो **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी और उस का किसी चीज़ को ह़राम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है। चुनान्चे अगले जुम्ले ने इस को साफ़ किया है। **295 :** जब येह नहीं है और नुबुव्वत का तो इक़रार नहीं करते तो इन अह़कामे ह़ुरमत को **अल्लाह** की त़रफ़ निस्बत करना किज़्ब व बात़िल व इफ़्तिराए ख़ालिस है।

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِيْ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا

ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता तुम फ़रमाओ[296] मैं नहीं पाता उस में जो मेरी त़रफ़ वह्य हुई किसी खाने

عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ

वाले पर कोई खाना ह़राम[297] मगर येह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून[298] या बद जानवर का

خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

गोश्त कि वोह नजासत है या वोह बे हुक्मी का जानवर जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुवा[299] न यूं कि आप ख़्वाहिश

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا

करे और न यूं कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[300] और यहूदियों पर हम ने

حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ

ह़राम किया हर नाख़ुन वाला जानवर[301] और गाय और बकरी की चरबी उन पर ह़राम की

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ

मगर जो उन की पीठ में लगी हो या आंत में या हड्डी से मिली हो हम ने

جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۫ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ

येह उन की सरकशी का बदला दिया[302] और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब

ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

वसीअ़ रह़मत वाला है[303] और उस का अ़ज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता[304]

296 : उन जाहिल मुश्रिकों से जो ह़लाल चीज़ों को अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से ह़राम कर लेते हैं। 297 : इस में तम्बीह है कि ह़ुरमत जिहते शरअ़ से साबित होती है, न हवाए नफ़्स से। **मस्अला :** तो जिस चीज़ की ह़ुरमत शरअ़ में वारिद न हो उस को ना जाइज़ व ह़राम कहना बात़िल। सुबूते ह़ुरमत ख़्वाह वह्ये क़ुरआनी से हो या वह्ये ह़दीस से येही मो'तबर है। 298 : तो जो ख़ून बहता न हो मिस्ल जिगर व तिल्ली के वोह ह़राम नहीं। 299 : और ज़रूरत ने उसे इन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर किया ऐसी ह़ालत में मुज़्त़र हो कर उस ने कुछ खाया। 300 : इस पर मुआख़ज़ा न फ़रमाएगा। 301 : जो उंगली रखता हो ख़्वाह चौपाया हो या परिन्द इस में ऊंट और शुतुर मुर्ग़ दाख़िल हैं। (مدارک) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहां शुतुर मुर्ग़ और बत़ (बत़ख़) और ऊंट ख़ास त़ौर पर मुराद हैं। 302 : यहूद अपनी सरकशी के बाइस उन चीज़ों से मह़रूम किये गए लिहाज़ा येह चीज़ें उन पर ह़राम रहीं और हमारी शरीअ़त में गाय बकरी की चरबी और ऊंट और बत़ और शुतुर मुर्ग़ ह़लाल हैं इसी पर सह़ाबा और ताबिईन का इज्माअ़ है। (تفسیر احمدی) 303 : मुकज़्ज़िबीन (झुटलाने वालों) को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़अ़ मिले। 304 : अपने वक़्त पर आ ही जाता है।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا

अब कहेंगे मुश्रिक कि[305] अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा

وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

न हम कुछ ह़राम ठहराते[306] ऐसा ही इन से अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा

بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا

अ़ज़ाब चखा[307] तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इ़ल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो तुम तो निरे गुमान

الظَّنَّ وَ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ

के पीछे हो और तुम यूंही तख़्मीने करते हो[308] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की हु़ज्जत पूरी है[309] तो वोह

شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ

चाहता तो तुम सब को हिदायत फ़रमाता तुम फ़रमाओ लाओ अपने वोह गवाह जो गवाही दें

اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ

कि अल्लाह ने इसे ह़राम किया[310] फिर अगर वोह गवाही दे बैठें[311] तो ऐ सुनने वाले उन के साथ गवाही न देना और उन की ख़्वाहिशों

اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ

के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने

بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ ع قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا

रब का बराबर वाला ठहराते हैं[312] तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया[313] येह कि

تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ

उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई[314] और अपनी औलाद क़त्ल न करो

305 : येह ख़बरे ग़ैब है कि जो बात वोह कहने वाले थे वोह बात पहले से बयान फ़रमा दी। 306 : हम ने जो कुछ किया येह सब अल्लाह की मशिय्यत से हुवा, येह दलील है इस की, कि वोह इस से राज़ी है। 307 : और येह उ़ज़्रे बात़िल उन के कुछ काम न आया क्यूं कि किसी अम्र का मशिय्यत में होना उस की मरज़ी व मामूर होने को मुस्तल्ज़िम नहीं, मरज़ी वोही है जो अम्बिया के वासित़े से बताई गई और उस का अम्र फ़रमाया गया। 308 : और ग़लत़ अट्कलें चलाते हो। 309 : कि उस ने रसूल भेजे किताबें नाज़िल फ़रमाईं और राहे ह़क़ वाज़ेह़ कर दी। 310 : जिसे तुम अपने लिये ह़राम क़रार देते हो और कहते हो कि अल्लाह तआ़ला ने हमें इस का हुक्म दिया है। येह गवाही इस लिये त़लब की गई कि ज़ाहिर हो जाए कि कुफ़्फ़ार के पास कोई शाहिद नहीं है और जो वोह कहते हैं वोह उन की तराशीदा बात है। 311 : इस में तम्बीह है कि अगर येह शहादत वाक़ेअ़ हो भी तो वोह मह़्ज़ इत्तिबाए़ हवा और किज़्ब व बात़िल होगी। 312 : बुतों को मा'बूद मानते हैं और शिर्क में गिरिफ़्तार हैं। 313 : उस का बयान येह है 314 : क्यूं कि तुम पर उन के बहुत हुक़ूक़ हैं उन्हों ने तुम्हारी परवरिश की, तुम्हारे साथ शफ़्क़त और मेहरबानी का सुलूक किया, तुम्हारी हर ख़त़रे से निगहबानी की, उन के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ न करना और उन के साथ हु़स्ने सुलूक का तर्क करना ह़राम है।

اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ

मुफ़्लिसी के बाइस हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे[315] और बे हयाइयों के पास न जाओ जो इन में

مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ

खुली हैं और जो छुपी[316] और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत रखी उसे नाहक़ न मारो[317]

ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا

येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अक़्ल हो और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर

بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ

बहुत अच्छे त़रीक़े से[318] जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे[319] और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ

पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़्दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगर्चे तुम्हारे

ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾

रिश्तेदार का मुआमला हो और अल्लाह ही का अ़हद पूरा करो येह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीहत मानो

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ

और येह कि[320] येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो[321] कि तुम्हें

بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اٰتَيْنَا

उस की राह से जुदा कर देंगी येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर हम ने

مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

मूसा को किताब अ़त़ा फ़रमाई[322] पूरा एह़सान करने को उस पर जो निकोकार है और हर चीज़ की तफ़्सील

---

315 : इस में औलाद को ज़िन्दा दरगोर करने और मार डालने की हुरमत बयान फ़रमाई गई जिस का अहले जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि वोह अक्सर नादारी के अन्देशे से औलाद को हलाक करते थे उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा, उन का, सब का अल्लाह है फिर तुम क्यूं क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इरतिकाब करते हो। 316 : क्यूं कि इन्सान जब खुले और ज़ाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उस का ज़ाहिर गुनाह से बचना भी लिल्लाहिय्यत से नहीं लोगों के दिखाने और उन की बदगोई से बचने के लिये है और अल्लाह की रिज़ा व सवाब का मुस्तह़िक़ वोह है जो उस के ख़ौफ़ से गुनाह तर्क करे। 317 : वोह उमूर जिन से क़त्ल मुबाह़ होता है येह हैं : मुरतद होना या क़िसास या बियाहे हुए का ज़िना। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : कोई मुसल्मान जो "لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ" की गवाही देता हो उस का ख़ून ह़लाल नहीं मगर इन तीन सबबों में से किसी एक सबब से या तो बियाहे होने के बा वुजूद उस से ज़िना सरज़द हुवा हो या उस ने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और उस का क़िसास उस पर आता हो या वोह दीन छोड़ कर मुरतद हो गया हो। 318 : जिस से उस का फ़ाएदा हो। 319 : उस वक़्त उस का माल उस के सिपुर्द कर दो। 320 : इन दोनों आयतों में जो हुक्म दिया। 321 : जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों यहूदिय्यत हो या

وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ

और हिदायत और रह़मत कि कहीं वोह[323] अपने रब से मिलने पर ईमान लाएं[324] और येह बरकत वाली किताब[325]

اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلُوْۤا

हम ने उतारी तो इस की पैरवी करो और परहेज़ गारी करो कि तुम पर रह़्म हो कभी कहो

اِنَّمَاۤ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآىِٕفَتَیْنِ مِنْ قَبْلِنَا۪ وَ اِنْ كُنَّا عَنْ

कि किताब तो हम से पहले दो गुरोहों पर उतरी थी[326] और हमें उन के

دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِیْنَ ﴿۱۵۶﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّاۤ اُنْزِلَ عَلَیْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّاۤ

पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी[327] या कहो कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से

اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَیِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ

ज़ियादा ठीक राह पर होते[328] तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रह़मत आई[329]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِی الَّذِیْنَ

तो उस से ज़ियादा ज़ालिम कौन जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उन से मुंह फेरे अ़न्क़रीब वोह जो हमारी

یَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰیٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا یَصْدِفُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ هَلْ

आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें बुरे अ़ज़ाब की सज़ा देंगे बदला उन के मुंह फेरने का काहे के

یَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِیَهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ اَوْ یَاْتِیَ رَبُّكَ اَوْ یَاْتِیَ بَعْضُ اٰیٰتِ

इन्तिज़ार में हैं[330] मगर येह कि आएं उन के पास फ़िरिश्ते[331] या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए या तुम्हारे रब की एक निशानी

رَبِّكَ ؕ یَوْمَ یَاْتِیْ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ لَا یَنْفَعُ نَفْسًا اِیْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ

आए[332] जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले

नसरानिय्यत या और कोई मिल्लत **322 :** तौरैत **323 :** या'नी बनी इसराईल **324 :** और बअ़्स व ह़िसाब और सवाब व अ़ज़ाब और दीदारे इलाही की तस्दीक़ करें। **325 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ जो कसीरुल ख़ैर और कसीरुन्नफ़्अ़ और कसीरुल बरकत है और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा और तह़रीफ़ व तब्दील व नस्ख़ से मह़फ़ूज़ रहेगा। **326 :** या'नी यहूदो नसारा पर तौरैत और इन्जील **327 :** क्यूं कि वोह हमारी ज़बान ही में न थी न हमें किसी ने उस के मा'ना बताए अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमा कर उन के इस उ़ज़्र को क़त्अ़ फ़रमा दिया। **328 :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने कहा था कि यहूदो नसारा पर किताबें नाज़िल हुईं मगर वोह बद अ़क़्ली में गिरिफ़्तार रहे उन किताबों से मुन्तफ़ेअ़ (नफ़्अ़ उठाने वाले) न हुए हम उन की त़रह़ ख़फ़ीफ़ुल अ़क़्ल (कम अ़क़्ल) और नादान नहीं हैं हमारी अ़क़्लें सह़ीह़ हैं हमारी अ़क़्लो ज़हानत और फ़हमो फ़िरासत ऐसी है कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते, क़ुरआन नाज़िल फ़रमा कर उन का येह उ़ज़्र भी क़त्अ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे आगे इर्शाद होता है **329 :** या'नी येह क़ुरआने पाक जिस में ह़ुज्जते वाज़ेह़ा और बयाने साफ़ और हिदायत व रह़मत है। **330 :** जब वह़दानिय्यत व रिसालत पर ज़बर दस्त ह़ुज्जतें क़ाइम हो चुकीं और ए'तिक़ादाते कुफ़्रो ज़लाल का बुत़लान ज़ाहिर कर दिया गया तो अब ईमान लाने में क्यूं तवक़्क़ुफ़ है क्या इन्तिज़ार बाक़ी है ? **331 :** उन

اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِیْۤ اِیْمَانِهَا خَیْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْۤا اِنَّا

ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी[333] तुम फ़रमाओ रस्ता देखो[334] हम

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِیَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ

भी देखते हैं वोह जिन्हों ने अपने दीन में जुदा जुदा राहें निकालीं और कई गुरोह हो गए[335] ऐ महबूब तुम्हें उन से कुछ

فِیْ شَیْءٍ ؕ اِنَّمَاۤ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ یُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं उन का मुआ़मला **अल्लाह** ही के ह़वाले है फिर वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह करते थे[336]

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّیِّئَةِ فَلَا

जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं[337] और जो बुराई लाए तो उसे

یُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْۤ اِلٰى

बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर और उन पर ज़ुल्म न होगा तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने

صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۚ۬ دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَ مَا كَانَ مِنَ

सीधी राह दिखाई[338] ठीक दीन इब्राहीम की मिल्लत जो हर बात़िल से जुदा थे और मुश्रिक

الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۶۱﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُكِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ

न थे[339] तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब **अल्लाह** के लिये है

की अरवाह़ क़ब्ज़ करने के लिये **332 :** क़ियामत की निशानियों में से। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस निशानी से आफ़्ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना मुराद है। तिरमिज़ी की ह़दीस में भी ऐसा ही वारिद है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक आफ़्ताब मग़रिब से तुलूअ़ न करे और जब वोह मग़रिब से तुलूअ़ करेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और येह ईमान नफ़अ़ न देगा **333 :** या'नी त़ाअ़त न की थी, मा'ना येह हैं कि निशानी आने से पहले जो ईमान न लाए निशानी के बा'द उस का ईमान क़बूल नहीं इसी त़रह़ जो निशानी से पहले तौबा न करे बा'द निशानी के उस की तौबा क़बूल नहीं लेकिन जो ईमानदार पहले से नेक अ़मल करते होंगे निशानी के बा'द भी उन के अ़मल मक़्बूल होंगे। **334 :** उन में से किसी एक का या'नी मौत के फ़िरिश्तों की आमद या अ़ज़ाब या निशानी आने का। **335 :** मिस्ल यहूदो नसारा के। ह़दीस शरीफ़ में है यहूद इक्हत्तर फ़िर्क़े हो गए उन से सिर्फ़ एक नाजी (नजात पाने वाला) है बाक़ी सब नारी और नसारा बहत्तर फ़िर्क़े हो गए एक नाजी बाक़ी सब नारी और मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़े हो जाएगी। वोह सब के सब नारी होंगे सिवाए एक के जो सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअ़त है और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे अस्ह़ाब की राह पर है। **336 :** और आख़िरत में उन्हें अपने किरदार का अन्जाम मा'लूम हो जाएगा। **337 :** या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह भी ह़द व निहायत के त़रीक़े पर नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए एक के सात सो करे या बे ह़िसाब अ़त़ा फ़रमाए, अस्ल येह है कि नेकियों का सवाब मह़ज़ फ़ज़्ल है येही मज़्हब है अहले सुन्नत का और बदी की इतनी ही जज़ा येह अ़द्ल है। **338 :** या'नी दीने इस्लाम जो **अल्लाह** को मक़्बूल है। **339 :** इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का रद है जो गुमान करते थे कि वोह दीने इब्राहीमी पर हैं **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام मुश्रिक व बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुश्रिकीन का येह दा'वा कि वोह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं बात़िल है।

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

जो रब सारे जहान का उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुक्म हुवा है और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[340]

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा और रब चाहूं हालां कि वोह हर चीज़ का रब है[341] और जो कोई कुछ कमाए वोह

اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ

उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी[342] फिर तुम्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है[343]

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ

वोह तुम्हें बता देगा जिस में इख़्तिलाफ़ करते थे और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें

الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَا

नाइब किया[344] और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[345] कि तुम्हें आज़माए[346] उस चीज़ में जो

اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾ ع

तुम्हें अ़ता की बेशक तुम्हारे रब को अ़ज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वोह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

ركوعاتها ٢٤ ﴿٧ سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ ٣٩﴾ اٰياتها ٢٠٦

सूरए आ'राफ़ मक्किय्या है, इस में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला

340 : "अव्वलिय्यत" या तो इस ए'तिबार से है कि अम्बिया का इस्लाम उन की उम्मत पर मुक़द्दम होता है या इस ए'तिबार से कि सय्यिदे आ़लम ﷺ अव्वले मख़्लूक़ात हैं तो ज़रूर अव्वलुल मुस्लिमीन हुए। **341 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने नबिय्ये करीम ﷺ से कहा था कि आप हमारे दीन की त़रफ़ लौट आइये और हमारे मा'बूदों की इबादत कीजिये। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुग़ीरा कहता था कि मेरा रस्ता इख़्तियार करो इस में अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गरदन पर, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि वोह रस्ता बात़िल है ख़ुदा शनास किस त़रह़ गवारा कर सकता है कि **अल्लाह** के सिवा किसी और को रब बताए और येह भी बात़िल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके। **342 :** हर शख़्स अपने गुनाह में माख़ूज़ (पकड़ा हुवा) होगा दूसरे के गुनाह में नहीं। **343 :** रोज़े क़ियामत **344 :** क्यूं कि सय्यिदे आ़लम ﷺ ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं आप के बा'द कोई नबी नहीं और आप की उम्मत आख़िरुल उमम है इस लिये इन को ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि इस के मालिक हों और इस में तसर्रुफ़ करें। **345 :** शक्लो सूरत में, हुस्नो जमाल में, रिज़्क़ो माल में, इल्मो अ़क़्ल में, क़ुव्वतो कमाल में **346 :** या'नी आज़्माइश में डाले कि तुम ने'मत व जाहो माल पा कर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो। **1 :** येह सूरत मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई और एक रिवायत में है कि येह सूरत मक्किय्या है सिवा पांच आयतों के जिन में से पहली "وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ" है। इस सूरत में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं और तीन हज़ार तीन सो पच्चीस कलिमे और चौदह हज़ार दस हर्फ़ हैं।

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِىْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ

ऐ महबूब एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी इस से न रुके[2]

لِتُنْذِرَ بِهٖ وَ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ

इस लिये कि तुम इस से डर सुनाओ और मुसल्मानों को नसीहत ऐ लोगो उस पर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास

رَّبِّكُمْ وَ لَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَ كَمْ

से उतरा[3] और उसे छोड़ कर हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो और कितनी

مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا

ही बस्तियां हम ने हलाक कीं[4] तो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात में आया या जब वोह दो पहर को सोते थे[5] तो उन

كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

के मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अ़ज़ाब उन पर आया मगर येही बोले कि हम ज़ालिम थे[6]

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَ لَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ

तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उन से जिन के पास रसूल गए[7] और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से[8] तो ज़रूर हम उन को

عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّ مَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَ الْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ﹰالْحَقُّ ۚ فَمَنْ

बता देंगे[9] अपने इ़ल्म से और हम कुछ ग़ाइब न थे और उस दिन तोल ज़रूर होनी है[10] तो जिन

2 : ब ई ख़याल कि शायद लोग न मानें और इस से ए'राज़ करें और इस की तक्ज़ीब के दरपै हों। 3 : या'नी क़ुरआन शरीफ़, जिस में हिदायत व नूर का बयान है। ज़ज्जाज ने कहा कि इत्तिबाअ़ करो क़ुरआन का और उस चीज़ का जो नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم लाए क्यूं कि येह सब **अल्लाह** का नाज़िल किया हुवा है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया : مَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ...الْاٰيَه या'नी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लाएं उसे अख़्ज़ (क़बूल) करो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं उस से बाज़ रहो। 4 : अब हुक्मे इलाही का इत्तिबाअ़ तर्क करने और उस से ए'राज़ करने के नताइज पिछली क़ौमों के हालात में दिखाए जाते हैं। 5 : मा'ना येह हैं कि हमारा अ़ज़ाब ऐसे वक़्त आया जब कि उन्हें ख़याल भी न था या तो रात का वक़्त था और वोह आराम की नींद सोते थे या दिन में क़ैलूला का वक़्त था और वोह मसरूफ़े राहत थे न अ़ज़ाब के नुज़ूल की कोई निशानी थी न क़रीना कि पहले से आगाह होते अचानक आ गया। इस से कुफ़्फ़ार को मुतनब्बेह किया जाता है कि वोह अस्बाबे अम्नो राहत पर मग़रूर न हों अ़ज़ाबे इलाही जब आता है तो दफ़्अ़तन आ जाता है। 6 : अ़ज़ाब आने पर उन्हों ने अपने जुर्म का ए'तिराफ़ किया और उस वक़्त ए'तिराफ़ भी फ़ाएदा नहीं देता। 7 : कि उन्हों ने रसूलों की दा'वत का क्या जवाब दिया और उन के हुक्म की क्या ता'मील की। 8 : कि उन्हों ने अपनी उम्मतों को हमारे पयाम पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हें क्या जवाब दिया। 9 : रसूलों को भी और उन की उम्मतों को भी कि उन्हों ने दुन्या में क्या किया। 10 : इस तरह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक मीज़ान क़ाइम फ़रमाएगा जिस का हर एक पल्ला इतनी वुस्अ़त रखेगा जैसी मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान वुस्अ़त है। इब्ने जूज़ी ने कहा कि ह़दीस में आया है कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में मीज़ान देखने की दरख़्वास्त की जब मीज़ान दिखाई गई और आप ने उस के पल्लों की वुस्अ़त देखी तो अ़र्ज़ किया : या रब ! किस का मक़्दूर है कि इन को नेकियों से भर सके। इर्शाद हुवा कि ऐ दावूद मैं जब अपने बन्दों से राज़ी होता हूं तो एक खजूर से इस को भर देता हूं या'नी थोड़ी नेकी भी मक़्बूल हो जाए तो फ़ज़्ले इलाही से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे।

ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۸﴾ وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ

के पल्ले भारी हुए[11] वोही मुराद को पहुंचे और जिन के पल्ले हलके हुए[12]

فَاُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿۹﴾ وَ

तो वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे[13] और

لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में जमाव [ठिकाना] दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए[14] बहुत ही कम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع وَ لَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ

शुक्र करते हो[15] और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हम ने मलाएका से फ़रमाया कि

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖۗ فَسَجَدُوْٓا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۱۱﴾

आदम को सज्दा करो तो वोह सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस येह सज्दे वालों में न हुवा

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ

फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सज्दा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था[16] बोला मैं उस से बेहतर हूं तू ने मुझे

مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ

आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया[17] फ़रमाया तो यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां

تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۱۳﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ

रह कर गुरूर करे निकल[18] तू है ज़िल्लत वालों में[19] बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि

11 : नेकियां ज़ियादा हुईं **12 :** और उन में कोई नेकी न हुई, येह कुफ़्फ़ार का हाल होगा जो ईमान से महरूम हैं और इस वज्ह से उन का कोई अ़मल मक़्बूल नहीं। **13 :** कि उन को छोड़ते थे झुटलाते थे और उन की इताअ़त से मुंह मोड़ते थे। **14 :** और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें राहतें दीं बा वुजूद इस के तुम **15 :** शुक्र की ह़क़ीक़त ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार है और ना शुक्री ने'मत को भूल जाना और उस को छुपाना। **16 मस्अला :** इस से साबित होता है कि अम्र वुजूब के लिये होता है और सज्दा न करने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाना तौबीख़ के लिये है और इस लिये कि शैत़ान की मुआ़नदत (दुश्मनी) और उस का कुफ़्र व किब्र और अपनी अस्ल पर मुफ़्तख़िर (फ़ख़्र करने वाला) होना और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के अस्ल की तह़क़ीर करना ज़ाहिर हो जाए। **17 :** इस से उस की मुराद येह थी कि आग मिट्टी से अफ़्ज़लो आ'ला है तो जिस की अस्ल आग होगी वोह उस से अफ़्ज़ल होगा जिस की अस्ल मिट्टी हो और उस ख़बीस का येह ख़याल ग़लत व बात़िल है क्यूं कि अफ़्ज़ल वोह है जिसे मालिको मौला फ़ज़ीलत दे, फ़ज़ीलत का मदार अस्ल व जौहर पर नहीं बल्कि मालिक की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी पर है और आग का मिट्टी से अफ़्ज़ल होना येह भी सह़ीह़ नहीं क्यूं कि आग में तैश व तेज़ी और तरफ़्फ़ोअ़ (ऊपर की त़रफ़ उठना) है येह सबब इस्तिक्बार (तकब्बुर व ग़ुरूर पैदा करने) का होता है और मिट्टी से वक़ार, ह़िल्मो ह़या व सब्र ह़ासिल होते हैं मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं, आग से हलाक, मिट्टी अमानत दार है जो चीज़ उस में रखी जाए उस को मह़फ़ूज़ रखे और बढ़ाए, आग फ़ना कर देती है, बा वुजूद इस के लुत़्फ़ येह है कि मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फ़ना नहीं कर सकती, इलावा बरीं ह़माक़त व शक़ावत इब्लीस की येह कि उस ने नस्स के मौजूद होते हुए इस के मुक़ाबिल क़ियास किया और जो क़ियास कि नस्स के ख़िलाफ़ हो वोह ज़रूर मरदूद। **18 :** जन्नत से कि येह जगह इताअ़त व तवाज़ोअ़ वालों की है मुन्किर व सरकश की नहीं। **19 :** कि इन्सान तेरी मज़म्मत करेगा और हर ज़बान

يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۱۵﴾ قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَيْتَنِيْ

लोग उठाए जाएं फ़रमाया तुझे मोहलत है[20] बोला तो क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۶﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ

मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा[21] फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा

اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآىِٕلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ

उन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से[22] और तू उन में

اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ

अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा[23] फ़रमाया यहां से निकल जा रद किया गया रांदा (धुत्कारा) हुवा ज़रूर जो

تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ

उन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा[24] और ऐ आदम तू और

اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ

तेरा जोड़ा[25] जन्नत में रहो तो उस में से जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना

فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا

कि हद से बढ़ने वालों में होगे फिर शैतान ने उन के जी (दिल) में ख़तरा डाला कि उन पर खोल दे

مَاوٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ

उन की शर्म की चीज़ें[26] जो उन से छुपी थीं[27] और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस

तुझ पर ला'नत करेगी और येही तकब्बुर वाले का अन्जाम है। **20 :** और मुद्दत इस मोहलत की सूरए हिज्र में बयान फ़रमाई गई ''اِنَّکَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ٥ اِلٰی یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ'' (तो तू मोहलत वालों में है उस जाने हुए वक़्त के दिन तक) और येह वक़्त नफ़्ख़ए ऊला का है जब सब लोग मर जाएंगे शैतान ने मुर्दों के ज़िन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और उस से उस का मत़्लब येह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए येह क़बूल न हुवा और नफ़्ख़ए ऊला तक की मोहलत दी गई। **21 :** कि बनी आदम के दिल में वस्वसे डालूं और उन्हें बात़िल की त़रफ़ माइल करूं, गुनाहों की रग़्बत दिलाऊं, तेरी इत़ाअ़त और इबादत से रोकूं और गुमराही में डालूं। **22 :** या'नी चारों त़रफ़ से उन्हें घेर कर राहे रास्त से रोकूंगा। **23 :** चूंकि शैत़ान बनी आदम को गुमराह करने और मुब्तलाए शहवात व क़बाएह़ करने में अपनी इन्तिहाई सई ख़र्च करने का अ़ज़्म कर चुका था इस लिये उसे गुमान था कि वोह बनी आदम को बहका लेगा। उन्हें फ़रेब दे कर ख़ुदावन्दे आ़लम की ने'मतों के शुक्र और उस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी से रोक देगा। **24 :** तुझ को भी और तेरी ज़ुर्रिय्यत को भी और तेरी इत़ाअ़त करने वाले आदमियों को भी सब को जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। शैत़ान को जन्नत से निकाल देने के बा'द ह़ज़रते आदम को ख़िताब फ़रमाया जो आगे आता है। **25 :** या'नी ह़ज़रते ह़व्वा **26 :** या'नी ऐसा वस्वसा डाला कि जिस का नतीजा येह हो कि वोह दोनों आपस में एक दूसरे के सामने बरह्ना हो जाएं। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि वोह जिस्म जिस को औ़रत कहते हैं उस का छुपाना ज़रूरी और खोलना मन्अ़ है और येह भी साबित हुवा कि इस का खोलना हमेशा से अ़क़्ल के नज़्दीक मज़्मूम और त़बीअ़तों को ना गवार रहा है। **27 :** इस से मा'लूम हुवा कि इन दोनों साहिबों ने अब तक एक दूसरे का सत्र न देखा था।

الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَیْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَ قَاسَمَهُمَاۤ

पेड़ से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले[28] और उन से क़सम खाई

اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से[29] फिर जब उन्हों ने वोह पेड़ चखा

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ طَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَ

उन पर उन की शर्म की चीज़ें खुल गईं[30] और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और

نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَ اَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ

उन्हें उन के रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें उस पेड़ से मन्अ़ न किया और न फ़रमाया था कि

الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۲۲﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَ اِنْ لَّمْ

शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है दोनों ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू

تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

हमें न बख़्शे और हम पर रह़्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए फ़रमाया उतरो[31] तुम में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ﴿۲۴﴾ قَالَ

दूसरे का दुश्मन और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरत्ना है फ़रमाया

فِیْهَا تَحْیَوْنَ وَ فِیْهَا تَمُوْتُوْنَ وَ مِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾ ع یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ قَدْ

उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में से उठाए जाओगे[32] ऐ आदम की औलाद बेशक

اَنْزَلْنَا عَلَیْكُمْ لِبَاسًا یُّوَارِیْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِیْشًا ؕ وَ لِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ

हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वोह कि तुम्हारी आराइश हो[33] और परहेज़ गारी का लिबास

28 : कि जन्नत में रहो और कभी न मरो। 29 : मा'ना येह हैं कि इब्लीस मल्ऊ़न ने झूटी क़सम खा कर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को धोका दिया और पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है, ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को गुमान भी न था कि कोई अल्लाह की क़सम खा कर झूट बोल सकता है इस लिये आप ने उस की बात का ए'तिबार किया। 30 : और जन्नती लिबास जिस्म से जुदा हो गए और उन में एक दूसरे से अपना बदन छुपा न सका, उस वक़्त तक इन साह़िबों में से किसी ने ख़ुद भी अपना सत्र न देखा था और न उस वक़्त तक उन्हें इस की ह़ाजत पेश आई थी। 31 : ऐ आदम व ह़व्वा ! मअ़ अपनी ज़ुर्रिय्यत के जो तुम में है 32 : रोज़े क़ियामत ह़िसाब के लिये। 33 : या'नी एक लिबास तो वोह है जिस से बदन छुपाया जाए और सत्र किया जाए और एक लिबास वोह है जिस से ज़ीनत हो और येह भी ग़रज़ सह़ीह़ है।

ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ

वोह सब से भला[34] येह अल्लाह की निशानियों में से है कि कहीं वोह नसीहत मानें ऐ आदम की औलाद[35]

لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَاۤ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا

ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बिहिश्त से निकाला उतरवा दिये उन

لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ

के लिबास कि उन की शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ीं बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि

لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۷﴾

तुम उन्हें नहीं देखते[36] बेशक हम ने शैतानों को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते

وَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَاۤ اٰبَآءَنَا وَ اللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ

और जब कोई बे हयाई करें[37] तो कहते हैं हम ने इस पर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया[38]

قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾

तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह बे हयाई का हुक्म नहीं देता क्या अल्लाह पर वोह बात लगाते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۟ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ

तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उस की इबादत करो

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۬ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿۲۹﴾ؕ فَرِيْقًا هَدٰى

निरे [ख़ालिस] उस के बन्दे हो कर जैसे उस ने तुम्हारा आग़ाज़ किया वैसे ही पलटोगे[39] एक फ़िर्क़े को राह दिखाई[40]

34 : परहेज़ गारी का लिबास ईमान, हया, नेक ख़स्लतें, नेक अ़मल हैं येह बेशक लिबासे ज़ीनत से अफ़्ज़ल व बेहतर हैं। 35 : शैतान की कय्यादी (मक्कारी) और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ उस की अ़दावत का बयान फ़रमा कर बनी आदम को मुतनब्बेह और होशियार किया जाता है कि वोह शैतान के वस्वसे और इग़्वा (बहकावे) और उस की मक्कारियों से बचते रहें, जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ऐसी फ़रेब कारी कर चुका है वोह उन की औलाद के साथ कब दर गुज़र करने वाला है। 36 : अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को ऐसा इदराक दिया है कि वोह इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसा इदराक नहीं मिला कि वोह जिन्नों को देख सकें। ह़दीस शरीफ़ में है कि शैतान इन्सान के जिस्म में ख़ून की राहों में पैर (समा) जाता है। ह़ज़रते ज़ुन्नून رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि अगर शैतान ऐसा है कि वोह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उस को देखता हो और वोह उसे न देख सके या'नी अल्लाह करीम सत्तार रह़ीम ग़फ़्फ़ार से मदद चाहो। 37 : और कोई क़बीह़ फ़े'ल या गुनाह उन से सादिर हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग मर्द व औ़रत नंगे हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करते थे। अ़त़ा का क़ौल है कि बे हयाई शिर्क है और ह़क़ीक़त येह है कि हर क़बीह़ फ़े'ल और तमाम मआ़सी व कबाइर इस में दाख़िल हैं अगर्चे येह आयत ख़ास नंगे हो कर त़वाफ़ करने के बारे में आई हो। जब कुफ़्फ़ार की ऐसी बे हयाई के कामों पर उन की मज़म्मत की गई तो इस पर उन्हों ने जो कहा वोह आगे आता है। 38 : कुफ़्फ़ार ने अपने अफ़्आ़ले क़बीह़ा के दो उ़ज़्र बयान किये एक तो येह कि उन्हों ने अपने बाप दादा को येही फ़े'ल करते पाया लिहाज़ा उन की इत्तिबाअ़ में येह भी करते हैं येह तो जाहिल बदकार की तक़्लीद हुई और येह किसी साह़िबे अ़क़्ल के नज़्दीक जाइज़ नहीं। तक़्लीद की जाती है अहले इल्मो तक़्वा की न कि जाहिल गुमराह की। दूसरा

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ

और एक फ़िर्क़े की गुमराही साबित हुई[41] उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों

دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝۳۰ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ

को वाली बनाया[42] और समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

जब मस्जिद में जाओ[43] और खाओ और पियो[44] और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले

الْمُسْرِفِيْنَ ۝۳۱ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْۤ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ

उसे पसन्द नहीं तुम फ़रमाओ किस ने ह़राम की अल्लाह की वोह ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिये निकाली[45] और पाक

مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ

रिज़्क़[46] तुम फ़रमाओ कि वोह ईमान वालों के लिये है दुन्या में और क़ियामत में तो ख़ास

الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝۳۲ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ

उन्हीं की है हम यूंही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं[47] इल्म वालों के लिये[48] तुम फ़रमाओ मेरे

उ़ज़्र उन का येह था कि अल्लाह ने उन्हें इन अफ़्आ़ल का हुक्म दिया है येह मह़ज़ इफ़्तिरा व बोहतान था। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआ़ला रद फ़रमाता है **39 :** या'नी जैसे उस ने तुम्हें नीस्त से हस्त किया ऐसे ही बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाएगा, येह उख़्रवी ज़िन्दगी का इन्कार करने वालों पर ह़ुज्जत है और इस से येह भी मुस्तफ़ाद होता है कि जब उसी की त़रफ़ पलटना है और वोह आ'माल की जज़ा देगा तो त़ाआ़त व इ़बादात को उस के लिये ख़ालिस करना ज़रूरी है। **40 :** ईमान व मा'रिफ़त की और उन्हें त़ाअ़त व इ़बादत की तौफ़ीक़ दी। **41 :** वोह कुफ़्फ़ार हैं **42 :** उन की इत़ाअ़त की, उन के कहे पर चले, उन के हुक्म से कुफ़्र व मआ़सी को इख़्तियार किया। **43 :** या'नी लिबासे ज़ीनत और एक क़ौल येह है कि कंघी करना, ख़ुश्बू लगाना दाख़िले ज़ीनत है। **मस्अला :** और सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर हैअत के साथ नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना, इ़त्र लगाना मुस्तह़ब जैसा कि सत्रे औ़रत वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दिन में मर्द और रात में औ़रतें नंगे हो कर त़वाफ़ करते थे। इस आयते करीमा में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औ़रत नमाज़ व त़वाफ़ और हर ह़ाल में वाजिब है। **44 शाने नुज़ूल :** कलबी का क़ौल है कि बनी आ़मिर ज़मानए ह़ज में अपनी ख़ूराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त और चिक्नाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इस को ह़ज की ता'ज़ीम जानते थे, मुसल्मानों ने उन्हें देख कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** हमें ऐसा करने का ज़ियादा ह़क़ है इस पर येह नाज़िल हुवा कि खाओ और पियो गोश्त हो ख़्वाह चिक्नाई हो और इसराफ़ न करो और वोह येह है कि सेर हो चुकने के बा'द भी खाते रहो या ह़राम की परवाह न करो और येह भी इसराफ़ है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने ह़राम नहीं की उस को ह़राम कर लो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया : खा जो चाहे और पहन जो चाहे इसराफ़ और तकब्बुर से बचता रह। **मस्अला :** आयत में दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें ह़लाल हैं सिवाए उन के जिन पर शरीअ़त में दलीले ह़ुरमत क़ाइम हो क्यूं कि येह क़ाइदा मुक़र्ररा मुसल्लमा है कि अस्ल तमाम अश्या में इबाह़त है मगर जिस पर शारेअ़ ने मुमानअ़त फ़रमाई हो और उस की ह़ुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो। **45 :** ख़्वाह लिबास हो या और सामाने ज़ीनत **46 :** और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें। **मस्अला :** आयत अपने उ़मूम पर है हर खाने की चीज़ इस में दाख़िल है कि जिस की ह़ुरमत पर नस्स वारिद न हुई हो। (خازن) तो जो लोग तोशए ग्यारहवीं शरीफ़, मीलाद शरीफ़, बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा, उ़र्स, मजालिसे शहादत वग़ैरा की शीरीनी, सबील के शरबत को मम्नूअ़ कहते हैं वोह इस आयत के ख़िलाफ़ कर के गुनहगार होते हैं और इस को मम्नूअ़ कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और येही बिद्अ़त व ज़लालत है। **47 :** जिन से ह़लाल व ह़राम के अह़काम मा'लूम हों। **48 :** जो येह जानते हैं कि अल्लाह "وَاحِدٌ لَا شَرِيْكَ لَهٗ" है वोह जो ह़राम करे वोही ह़राम है।

رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْیَ بِغَیْرِ الْحَقِّ

रब ने तो बे ह़याइयां ह़राम फ़रमाई हैं[49] जो उन में खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाह़क़ ज़ियादती

وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا

और येह[50] कि **अल्लाह** का शरीक करो जिस की उस ने सनद न उतारी और येह[51] कि **अल्लाह** पर वोह बात कहो जिस

لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۳۳ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا یَسْتَاْخِرُوْنَ

का इल्म नहीं रखते और हर गुरौह का एक वा'दा है[52] तो जब उन का वा'दा आएगा एक घड़ी न

سَاعَةً وَّلَا یَسْتَقْدِمُوْنَ ۝۳۴ یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ اِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

पीछे हो न आगे ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आएं[53]

یَقُصُّوْنَ عَلَیْكُمْ اٰیٰتِیْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ

मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़ गारी करे[54] और संवरे[55] तो उस पर न कुछ ख़ौफ़ और न

یَحْزَنُوْنَ ۝۳۵ وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَاۤ اُولٰٓىِٕكَ

कुछ ग़म और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया वोह

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۳۶ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى

दोज़ख़ी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस ने

اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اُولٰٓىِٕكَ یَنَالُهُمْ نَصِیْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ

अल्लाह पर झूट बांधा या उस की आयतें झुटलाईं उन्हें उन के नसीब का लिखा पहुंचेगा[56]

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا یَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْۤا اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ

यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए[57] उन की जान निकालने आएं तो उन से कहते हैं कहां हैं वोह जिन को तुम

49 : येह ख़िताब मुश्रिकीन से है जो बरह्ना हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल की हुई पाक चीज़ों को ह़राम कर लेते थे, उन से फ़रमाया जाता है कि **अल्लाह** ने येह चीज़ें ह़राम नहीं कीं और उन से अपने बन्दों को नहीं रोका, जिन चीज़ों को उस ने ह़राम फ़रमाया वोह येह हैं जो **अल्लाह** तआ़ला बयान फ़रमाता है, उन में से बे ह़याइयां हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई क़ौली हों या फ़े'ली। **50 :** ह़राम किया **51 :** ह़राम किया **52 :** वक़्ते मुअ़य्यन जिस पर मोहलत ख़त्म हो जाती है। **53 :** मुफ़स्सिरीन के इस में दो क़ौल हैं : **एक** तो येह कि रुसुल से तमाम मुर्सलीन मुराद हैं। **दूसरा** येह कि ख़ास सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल अम्बिया صلی اللہ علیہ وسلم मुराद हैं जो तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाए गए हैं और सीग़ए जम्अ़ ता'ज़ीम के लिये है। **54 :** मम्नूआ़त से बचे **55 :** त़ाआ़त व इबादात बजा लाए **56 :** या'नी जितनी उ़म्र और रोज़ी **अल्लाह** ने उन के लिये लिख दी है उन को पहुंचेगी। **57 :** मलकुल मौत और उन के आ'वान (दूसरे मददगार फ़िरिश्ते) उन लोगों की उ़म्रें और रोज़ियां पूरी होने के बा'द।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَ شَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

अल्लाह के सिवा पूजते थे कहते हैं वोह हम से गुम गए[58] और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वोह

كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ

काफ़िर थे अल्लाह उन से[59] फ़रमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअ़तें जिन्न और आदमियों की

وَ الْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا

आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक गुरौह[60] दाख़िल होता है दूसरे पर ला'नत करता है[61] यहां तक कि जब

ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا

सब उस में जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे[62] ऐ रब हमारे उन्हों ने हम को बहकाया था

فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ۬ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾

तो उन्हें आग का दूना (दुगना) अ़ज़ाब दे फ़रमाएगा सब को दूना है[63] मगर तुम्हें ख़बर नहीं[64]

وَ قَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا

और पहले पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हम से अच्छे न रहे[65] तो चखो

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾ؑ اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

अ़ज़ाब बदला अपने किये का[66] वोह जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं

وَ اسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَ لَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ

और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे[67] और न वोह जन्नत में दाख़िल हों

حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۴۰﴾

जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो[68] और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं[69]

58 : उन का कहीं नामो निशान ही नहीं 59 : उन काफ़िरों से रोज़े क़ियामत 60 : दोज़ख़ में 61 : जो उस के दीन पर था तो मुश्रिक मुश्रिकों पर ला'नत करेंगे और यहूद यहूदियों पर और नसारा नसारा पर 62 : या'नी पहलों की निस्बत अल्लाह तआ़ला से कहेंगे 63 : क्यूं कि पहले ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्हों ने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि ख़ुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही इत्तिबाअ़ करते रहे। 64 : कि तुम में से हर फ़रीक़ के लिये कैसा अ़ज़ाब है। 65 : कुफ़्रो ज़लाल में दोनों बराबर हैं। 66 : कुफ़्र का और आ'माले ख़बीसा का। 67 : न उन के आ'माल के लिये न उन की अरवाह़ के लिये क्यूं कि उन के आ'माल व अरवाह़ दोनों ख़बीस हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोमिनीन की अरवाह़ के लिये खोले जाते हैं। इब्ने जुरैज ने कहा कि आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएं न अरवाह़ के लिये या'नी न ज़िन्दगी में उन का अ़मल ही आस्मान पर जा सकता है न बा'दे मौत रूह़। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के येह मा'ना हैं कि वोह ख़ैरो बरकत और रह़मत के नुज़ूल से मह़रूम रहते हैं। 68 : और येह

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي

उन्हें आग ही बिछोना और आग ही ओढ़ना[70] और ज़ालिमों को हम ऐसा ही

الظّٰلِمِيْنَ ۝٤١ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا

बदला देते हैं और वोह जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़ियादा

وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٤٢ وَنَزَعْنَا مَا

बोझ नहीं रखते वोह जन्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना और हम ने उन के

فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ

सीनों में से कीने खींच लिये[71] उन के नीचे नहरें बहेंगी और कहेंगे[72] सब खूबियां अल्लाह को

الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ

जिस ने हमें उस की राह दिखाई[73] और हम राह न पाते अगर अल्लाह न दिखाता बेशक

جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا

हमारे रब के रसूल हक़ लाए[74] और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली[75]

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٤٣ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ

सिला तुम्हारे आ'माल का और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۭ قَالُوْا

हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था[76] तो क्या तुम ने भी पाया जो तुम्हारे रब ने[77] सच्चा वा'दा तुम्हें दिया था बोले

मुहाल तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना मुहाल क्यूं कि मुहाल पर जो मौक़ूफ़ हो वोह मुहाल होता है, इस से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार का जन्नत से महरूम रहना क़त्ई है। **69 :** मुजरिमीन से यहां कुफ़्फ़ार मुराद हैं क्यूं कि ऊपर इन की सिफ़त में आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब और उन से तकब्बुर करने का बयान हो चुका है। **70 :** या'नी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। **71 :** जो दुन्या में उन के दरमियान थे और तबीअ़तें साफ़ कर दी गईं और उन में आपस में न बाक़ी रही मगर महब्बत व मुवद्दत (प्यार)। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह हम अहले बद्र के हक़ में नाज़िल हुवा और येह भी आप से मरवी है कि आप ने फ़रमाया : मुझे उम्मीद है कि मैं और उ़स्मान और तल्हा और ज़ुबैर उन में से हों जिन के हक़ में अल्लाह तआला ने ''وَنَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ'' फ़रमाया। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा के इस इर्शाद ने रिफ़्ज़ (राफ़िज़ियों के अ़क़ीदे) की बेख़ो बुन्याद का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर दिया। **72 :** मोमिनीन जन्नत में दाख़िल होते वक़्त **73 :** और हमें ऐसे अ़मल की तौफ़ीक़ दी जिस का येह अज्रो सवाब है और हम पर फ़ज़्लो रहमत फ़रमाई और अपने करम से अ़ज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ किया। **74 :** और जो उन्हों ने हमें दुन्या में सवाब की ख़बरें दीं वोह सब हम ने इयां देख लीं, उन की हिदायत हमारे लिये कमाले लुत्फ़ो करम था। **75 :** मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे एक निदा करने वाला पुकारेगा तुम्हारे लिये ज़िन्दगानी है कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरुस्ती है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये ऐश है कभी तंगहाल न होगे। जन्नत को मीरास फ़रमाया गया इस में इशारा है कि वोह महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से हासिल हुई। **76 :** और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान व ताअ़त पर अज्रो सवाब पाओगे। **77 :** कुफ़्र व ना फ़रमानी पर अ़ज़ाब का।

نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ الَّذِيْنَ

हां और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि अल्लाह की ला'नत ज़ालिमों पर जो

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

अल्लाह की राह से रोकते हैं[78] और उसे कजी चाहते हैं[79] और आख़िरत का

كٰفِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ

इन्कार रखते हैं और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है[80] और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे[81] कि दोनों फ़रीक़ को

كُلًّا بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۟ لَمْ

उन की पेशानियों से पहचानेंगे[82] और वोह जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर येह[83]

يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ

जन्नत में न गए और इस की तमअ़ रखते हैं और जब उन की[84] आंखें दोज़ख़ियों की तरफ़

النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ

फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर और आ'राफ़ वाले

الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ

कुछ मर्दों को[85] पुकारेंगे जिन्हें उन की पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जथ्था

78 : और लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से मन्अ़ करते हैं। 79 : या'नी येह चाहते हैं कि दीने इलाही को बदल दें और जो त़रीक़ा अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है उस में तग़य्युर डाल दें। (خازن) 80 : जिस को आ'राफ़ कहते हैं। 81 : येह किस त़बक़े के होंगे इस में बहुत मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : एक क़ौल तो येह है कि येह वोह लोग होंगे जिन की नेकियां और बदियां बराबर हों वोह आ'राफ़ पर ठहरे रहेंगे जब अहले जन्नत की त़रफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़ख़ियों की त़रफ़ देखेंगे तो कहेंगे या रब ! हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर। आख़िर कार जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे, एक क़ौल येह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उन के वालिदैन उन से नाराज़ थे वोह आ'राफ़ में ठहराए जाएंगे, एक क़ौल येह है : जो लोग ऐसे हैं कि उन के वालिदैन में से एक उन से राज़ी हो, एक नाराज़ वोह आ'राफ़ में रखे जाएंगे। इन अक़्वाल से मा'लूम होता है कि अहले आ'राफ़ का मर्तबा अहले जन्नत से कम है। मुजाहिद का क़ौल येह है : आ'राफ़ में सुलहा, फ़ुक़रा, उ़लमा होंगे और उन का वहां क़ियाम इस लिये होगा कि दूसरे उन के फ़ज़्लो शरफ़ को देखें। और एक क़ौल येह है कि आ'राफ़ में अम्बिया होंगे और वोह इस मकाने आ़ली में तमाम अहले क़ियामत पर मुमताज़ किये जाएंगे और उन की फ़ज़ीलत और रुत्बए आ़लिया का इज़्हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उन को देखें और वोह उन सब के अह़वाल और सवाब व अ़ज़ाब के मिक़्दार व अह़वाल का मुआ़यना करें। इन क़ौलों पर अस्ह़ाबे आ'राफ़ जन्नतियों में से अफ़्ज़ल लोग होंगे क्यूं कि वोह बाक़ियों से मर्तबे में आ'ला हैं। इन तमाम अक़्वाल में कुछ तनाक़ुज़ (टकराव) नहीं है इस लिये कि येह हो सकता है कि हर त़बक़े के लोग आ'राफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराने की ह़िक्मत जुदागाना हो। 82 : दोनों फ़रीक़ से जन्नती और दोज़ख़ी मुराद हैं, जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद और तरो ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे सियाह और आंखें नीली, येही उन की अ़लामतें हैं। 83 : आ'राफ़ वाले अभी तक 84 : आ'राफ़ वालों की 85 : कुफ़्फ़ार में से

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ

और वोह जो तुम ग़ुरूर करते थे[86] क्या येह हैं वोह लोग[87] जिन पर तुम क़समें खाते थे कि **अल्लाह** उन को अपनी रहमत कुछ

بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

न करेगा[88] उन से तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को अन्देशा न कुछ ग़म

وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ

और दोज़ख़ी बिहिश्तियों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो

اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ۙ

या उस खाने का जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया[89] कहेंगे बेशक **अल्लाह** ने इन दोनों को काफ़िरों पर ह़राम किया है

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ

जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया[90] और दुन्या की ज़ीस्त ने उन्हें फ़रेब दिया[91]

فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्हों ने उस दिन के मिलने का ख़याल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से

يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً

इन्कार करते थे और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए[92] जिसे हम ने एक बड़े इल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रह़मत

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ

ईमान वालों के लिये काहे की राह देखते हैं मगर उस की, कि इस किताब का कहा हुवा अन्जाम सामने आए जिस दिन इस का बताया अन्जाम वाक़ेअ़ होगा[93]

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ

बोल उठेंगे वोह जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे[94] कि बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लाए थे

86 : और अहले आ'राफ़ ग़रीब मुसल्मानों की त़रफ़ इशारा कर के कुफ़्फ़ार से कहेंगे **87 :** जिन को तुम दुन्या में ह़क़ीर समझते थे और **88 :** अब देख लो कि जन्नत के दाइमी ऐशो राह़त में किस इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ हैं। **89 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि जब आ'राफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़ख़ियों को भी त़मअ़ दामनगीर होगी और वोह अ़र्ज़ करेंगे : या रब ! जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इजाज़त फ़रमा कि हम उन्हें देखें उन से बात करें, इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रिश्तेदारों को जन्नत की ने'मतों में देखेंगे और पहचानेंगे लेकिन अहले जन्नत उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्यूं कि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे, सूरतें बिगड़ गई होंगी तो वोह जन्नतियों को नाम ले ले कर पुकारेंगे कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को और कहेगा मैं जल गया मुझ पर पानी डालो और तुम्हें **अल्लाह** ने दिया है खाने को दो, इस पर अहले जन्नत **90 :** कि ह़लाल व ह़राम में अपनी हवाए नफ़्स के ताबेअ़ हुए, जब ईमान की त़रफ़ उन्हें दा'वत दी गई मस्ख़रगी करने लगे। **91 :** उस की लज़्ज़तों में आख़िरत को भूल गए। **92 :** क़ुरआन शरीफ़ **93 :** और वोह रोज़े क़ियामत है। **94 :** न उस पर ईमान लाते थे न उस के मुत़ाबिक़ अ़मल

فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا

तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअ़त करें या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के ख़िलाफ़

نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

काम करें[95] बेशक उन्हों ने अपनी जानें नुक़्सान में डालीं और उन से खोए गए जो बोहतान उठाते थे[96]

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मान और ज़मीन[97] छ[6] दिन में बनाए[98] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّ الشَّمْسَ

अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है[99] रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज

وَ الْقَمَرَ وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ

और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत

اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

वाला है अल्लाह रब सारे जहान का अपने रब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَ ادْعُوْهُ

उसे पसन्द नहीं[100] और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ[101] इस के संवरने के बा'द[102] और उस से दुआ़ करो

करते थे। **95 :** या'नी बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत और ना फ़रमानी के त़ाअ़त और फ़रमां बरदारी इख़्तियार करें मगर न उन्हें शफ़ाअ़त मुयस्सर आएगी न दुन्या में वापस भेजे जाएंगे। **96 :** और झूट बकते थे कि बुत ख़ुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअ़त करेंगे अब आख़िरत में उन्हें मा'लूम हो गया कि उन के येह दा'वे झूटे थे। **97 :** मअ़ उन तमाम चीज़ों के जो इन के दरमियान हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : ''وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ''। **98 :** छ[6] दिन से दुन्या के छ[6] दिनों की मिक़्दार मुराद है क्यूं कि येह दिन तो उस वक़्त थे नहीं, आफ़्ताब ही न था जिस से दिन होता और अल्लाह तआ़ला क़ादिर था कि एक लम्हे में या इस से कम में पैदा फ़रमाता लेकिन इतने अ़र्से में उन की पैदाइश फ़रमाना ब तक़ाज़ाए हिक्मत है और इस से बन्दों को अपने कामों में तदरीज इख़्तियार करने का सबक़ मिलता है। **99 :** येह इस्तवा मुतशाबहात में से है हम इस पर ईमान लाते हैं कि अल्लाह की इस से जो मुराद है हक़ है। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि इस्तवा मा'लूम है और इस की कैफ़िय्यत मज्हूल और इस पर ईमान लाना वाजिब। ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया : या इस के मा'ना येह हैं कि आफ़्रीनिश (काएनात) का ख़ातिमा अ़र्श पर जा ठहरा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَسْرَارِ كِتَابِهٖ। **100 :** दुआ़ अल्लाह तआ़ला से ख़ैर त़लब करने को कहते हैं और येह दाख़िले इबादत है क्यूं कि दुआ़ करने वाला अपने आप को आ़जिज़ व मोहताज और अपने परवरदगार को ह़क़ीक़ी क़ादिर व ह़ाजत रवा ए'तिक़ाद करता है, इसी लिये ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा : "اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ" (या'नी दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है) तज़र्रोअ़ से इज़्हारे इज्ज़ व ख़ुशूअ़ मुराद है और अदब दुआ़ में येह है कि आहिस्ता हो। ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ़ करना अ़लानिया दुआ़ करने से सत्तर दरजे ज़ियादा अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** इस में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है कि इबादात में इज़्हार अफ़्ज़ल है या इख़्फ़ा, बा'ज़ कहते हैं कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है क्यूं कि वोह रिया से बहुत दूर है, बा'ज़ कहते हैं कि इज़्हार अफ़्ज़ल है इस लिये कि इस से दूसरों को रग़बते इबादत पैदा होती है। तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिये इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशए रिया न हो तो इज़्हार अफ़्ज़ल है। बा'ज़ ह़ज़रात येह फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इबादतों में इज़्हार अफ़्ज़ल है, नमाज़ फ़र्ज़ मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात

خَوْفًا وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَ هُوَ

डरते और तमअ् करते बेशक अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है और वोही है

الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ

कि हवाएं भेजता है उस की रहमत के आगे मुज़्दा सुनाती[103] यहां तक कि जब उठा लाएं

سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ

भारी बादल हम ने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया[104] फिर उस से पानी उतारा फिर उस से

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

तरह तरह के फल निकाले इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे[105] कहीं तुम नसीहत मानो

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ

और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है[106] और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता

اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا

मगर थोड़ा ब मुश्किल[107] हम यूंही तरह तरह से आयतें बयान करते हैं[108] उन के लिये जो एहसान मानें बेशक हम ने

نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

नूह़ को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा[109] तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[110] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[111]

का इज़्हार कर के देना ही अफ़्ज़ल है और नफ़्ल इबादात में ख़्वाह वोह नमाज़ हो या सदक़ा वग़ैरा उन में इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। दुआ़ में ह़द से बढ़ना कई त़रह़ होता है उस में से एक येह भी है कि बहुत बुलन्द आवाज़ से चीखे़। **101 :** कुफ़्रो मा'सियत व ज़ुल्म कर के **102 :** अम्बिया के तशरीफ़ लाने, ह़क़ की दा'वत फ़रमाने, अह़काम बयान करने, अ़द्ल क़ाइम फ़रमाने के बा'द। **103 :** बारिश का। और रह़मत से यहां मींह मुराद है। **104 :** जहां बारिश न हुई थी सब्ज़ा न जमा था। **105 :** या'नी जिस त़रह़ मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बा'द ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाता और उस को सर सब्ज़ और शादाब फ़रमाता है और उस में खेती दरख़्त फल फूल पैदा करता है ऐसे ही मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाएगा क्यूं कि जो ख़ुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उसे मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या बई़द है, क़ुदरत की येह निशानी देख लेने के बा'द आ़क़िल, सलीमुल ह़वास को मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने में कुछ तरद्दुद बाक़ी नहीं रहता। **106 :** येह मोमिन की मिसाल है जिस त़रह़ उम्दा ज़मीन पानी से नफ़्अ़ पाती है और उस में फूल फल पैदा होते हैं इसी त़रह़ जब मोमिन के दिल पर क़ुरआनी अन्वार की बारिश होती है तो वोह उस से नफ़्अ़ पाता है ईमान लाता है त़ाआ़त व इबादात से फलता फूलता है। **107 :** येह काफ़िर की मिसाल है कि जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़्अ़ नहीं पाती ऐसे ही काफ़िर क़ुरआने पाक से मुन्तफ़ेअ़ (फ़ाएदा ह़ासिल करने वाला) नहीं होता। **108 :** जो तौह़ीद व ईमान पर ह़ुज्जत व बुरहान हैं। **109 :** ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद का नाम लमक है वोह मुतवश्शिलख़ के वोह अख़्नूख़ عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं अख़्नूख़ ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम है, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चालीस या पचास साल की उ़म्र में नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए। आयाते बाला में अल्लाह तआ़ला ने अपने दलाइले क़ुदरत व ग़राइबे सन्अ़त बयान फ़रमाए जिन से उस की तौह़ीद व रबूबिय्यत साबित होती है और मरने के बा'द उठने और ज़िन्दा होने की सिह़ह़त पर दलाइले क़ात़ेआ़ क़ाइम किये इस के बा'द अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाता है और उन के उन मुआ़मलात का जो उन्हीं उम्मतों के साथ पेश आए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि फ़क़त़ आप ही की क़ौम ने क़बूले ह़क़ से ए'राज़ नहीं किया बल्कि पहली उम्मतें भी ए'राज़ करती रहीं और अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का

اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۵۹﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا

बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[112] उस की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम

لَنَرٰىكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۰﴾ قَالَ یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ

तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं कहा ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं

رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۱﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ اَنْصَحُ لَكُمْ

मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता

وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ

और मैं अल्लाह की त़रफ़ से वोह इ़ल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास

رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِیُنْذِرَكُمْ وَ لِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۶۳﴾

तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त[113] कि वोह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रह़्म हो

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَیْنٰهُ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ فِی الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا

तो उन्हों ने उसे[114] झुटलाया तो हम ने उसे और जो[115] उस के साथ कश्ती में थे नजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को

بِاٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِیْنَ ﴿۶۴﴾ ع وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ

डुबो दिया बेशक वोह अन्धा गुरौह था[116] और आ़द की त़रफ़[117] उन की बिरादरी से हूद को भेजा[118] कहा

یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۶۵﴾ قَالَ

ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[119] उस

अन्जाम दुन्या में हलाक और आख़िरत में अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है, इस से ज़ाहिर है कि अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले ग़ज़बे इलाही के सज़ावार होते हैं जो शख़्स सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की तक्ज़ीब करेगा उस का भी येही अन्जाम होगा। अम्बिया के इन तज़्किरों में सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील है क्यूं कि हु़ज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم उम्मी थे फिर आप का इन वाक़िआ़त को तफ़्सीलन बयान फ़रमाना बिल ख़ुसूस ऐसे मुल्क में जहां अहले किताब के उ़लमा ब कसरत मौजूद थे और सरगर्मे मुख़ालफ़त भी थे ज़रा सी बात पाते तो बहुत शोर मचाते वहां हु़ज़ूर का इन वाक़िआ़त को बयान फ़रमाना और अहले किताब का साकित व ह़ैरान रह जाना सरीह़ दलील है कि आप नबिय्ये बरह़क़ हैं और परवर्दगारे आ़लम ने आप पर उ़लूम के दरवाज़े खोल दिये हैं। **110 :** वोही मुस्तह़िक़े इबादत है **111 :** तो उस के सिवा किसी को न पूजो। **112 :** रोज़े क़ियामत का या रोज़े तूफ़ान का अगर तुम मेरी नसीह़त क़बूल न करो और राहे रास्त पर न आओ। **113 :** जिस को तुम ख़ूब जानते और उस के नसब को पहचानते हो **114 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ علیہ السلام को **115 :** उन पर ईमान लाए और **116 :** जिसे ह़क़ नज़र न आता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि उन के दिल अन्धे थे, नूरे मा'रिफ़त से उन को बहरा न था। **117 :** यहां आ़दे ऊला मुराद है येह ह़ज़रते हूद علیہ السلام की क़ौम है और आ़दे सानिया ह़ज़रते सालेह़ علیہ السلام की क़ौम है उसी को समूद कहते हैं, इन दोनों के दरमियान सो बरस का फ़ासिला है। (جمل) **118 :** हूद علیہ السلام ने **119 :** अल्लाह के अ़ज़ाब का।

اَلۡمَلَاُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ قَوۡمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىۡ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ

की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों

مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوۡمِ لَيۡسَ بِىۡ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ

में गुमान करते हैं[120] कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बे वुक़ूफ़ी से क्या अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) मैं तो परवर्दगारे

رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٦٧﴾ اُبَلِّغُكُمۡ رِسٰلٰتِ رَبِّىۡ وَاَنَا لَكُمۡ نَاصِحٌ اَمِيۡنٌ ﴿٦٨﴾

आ़लम का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मो'तमद ख़ैर ख़्वाह हूं[121]

اَوَعَجِبۡتُمۡ اَنۡ جَآءَكُمۡ ذِكۡرٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ عَلٰى رَجُلٍ مِّنۡكُمۡ لِيُنۡذِرَكُمۡ ؕ

और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त कि वोह तुम्हें डराए

وَاذۡكُرُوۡۤا اِذۡ جَعَلَكُمۡ خُلَفَآءَ مِنۡۢ بَعۡدِ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّزَادَكُمۡ فِى الۡخَلۡقِ

और याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह़ का जा नशीन किया[122] और तुम्हारे बदन का फैलाव

بَصۜۡطَةً ۚ فَاذۡكُرُوۡۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوۡۤا اَجِئۡتَنَا لِنَعۡبُدَ

बढ़ाया[123] तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो[124] कि कहीं तुम्हारा भला हो बोले क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो[125] कि

اللّٰهَ وَحۡدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاۡتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنۡ كُنۡتَ

हम एक **अल्लाह** को पूजें और जो[126] हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ[127] जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर

مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدۡ وَقَعَ عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ رِجۡسٌ وَّغَضَبٌ ؕ

सच्चे हो कहा[128] ज़रूर तुम पर तुम्हारे रब का अ़ज़ाब और ग़ज़ब पड़ गया[129]

120 : या'नी रिसालत के दा'वे में सच्चा नहीं जानते। 121 : कुफ़्फ़ार का ह़ज़रते हूद عَلَيۡهِ السَّلَام की जनाब में येह गुस्ताख़ाना कलाम कि तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं झूटा गुमान करते हैं इन्तिहा दरजे की बे अदबी और कमीनगी थी और वोह मुस्तह़िक़ इस बात के थे कि उन्हें सख़्त तरीन जवाब दिया जाता मगर आप ने अपने अख़्लाक़ो अदब और शाने ह़िल्म से जो जवाब दिया उस में शाने मुक़ाबला ही न पैदा होने दी और उन की जहालत से चश्म पोशी फ़रमाई। इस से दुन्या को सबक़ मिलता है कि सुफ़हा (बे वुक़ूफ़) और बद ख़िसाल (बुरे) लोगों से इस त़रह़ मुख़ात़बा (कलाम) करना चाहिये مَعَ هٰذا (इस के साथ) आप ने अपनी रिसालत और ख़ैर ख़्वाही व अमानत का ज़िक्र फ़रमाया। इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि अहले इल्मो कमाल को ज़रूरत के मौक़अ़ पर अपने मन्सबो कमाल का इज़्हार जाइज़ है। 122 : येह उस का कितना बड़ा एह़सान है 123 : और बहुत ज़ियादा क़ुव्वत व तूले क़ामत इनायत किया 124 : और ऐसे मुन्इम (ने'मत अ़त़ा फ़रमाने वाले) पर ईमान लाओ और त़ाअ़ात व इ़बादात बजा ला कर उस के एह़सान की शुक्र गुज़ारी करो 125 : या'नी अपने इ़बादत ख़ाने से। ह़ज़रते हूद عَلَيۡهِ السَّلَام अपनी क़ौम की बस्ती से अ़लाह़िदा एक तन्हाई के मक़ाम में इ़बादत किया करते थे, जब आप के पास वह़्य आती तो क़ौम के पास आ कर सुना देते। 126 : बुत 127 : वोह अ़ज़ाब 128 : ह़ज़रते हूद عَلَيۡهِ السَّلَام ने 129 : और तुम्हारी सरकशी से तुम पर अ़ज़ाब आना वाजिब व लाज़िम हो गया।

اَتُجَادِلُوْنَنِیْ فِیْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا

क्या मुझ से ख़ाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये[130] अल्लाह ने उन की कोई

مِنْ سُلْطٰنٍؕ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ﴿۷۱﴾ فَاَنْجَیْنٰهُ

सनद न उतारी तो रास्ता देखो[131] मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूं तो हम ने उसे और उस

وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ مَا

के साथ वालों को[132] अपनी एक बड़ी रह़मत फ़रमा कर नजात दी[133] और जो हमारी आयतें झुटलाते[134] थे उन की जड़ काट दी[135] और वोह

كَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ﴿۷۲﴾ ع وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا

ईमान वाले न थे और समूद की त़रफ़[136] उन की बिरादरी से सालेह को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को

130 : और उन्हें पूजने लगे और मा'बूद मानने लगे बा वुजूदे कि इन की कुछ ह़क़ीक़त ही नहीं है और उलूहिय्यत के मा'ना से क़त्अ़न ख़ाली व आ़री हैं। **131 :** अ़ज़ाबे इलाही का **132 :** जो उन के मुत्तबेअ़ थे और उन पर ईमान लाए थे **133 :** उस अ़ज़ाब से जो क़ौमे हूद पर उतरा। **134 :** और ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام की तक्ज़ीब करते **135 :** और इस त़रह़ हलाक कर दिया कि उन में एक भी न बचा। मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि क़ौमे आ़द अह़क़ाफ़ में रहती थी जो उ़मान व ह़ज़्रमौत के दरमियान अ़लाक़ए यमन में एक रेगिस्तान है, इन्हों ने ज़मीन को फ़िस्क़ से भर दिया था और दुन्या की क़ौमों को अपनी जफ़ाकारियों से अपने ज़ोरे क़ुव्वत के ज़ो'म में पामाल कर डाला था, येह लोग बुत परस्त थे उन के एक बुत का नाम सुदाअ, एक का सुमूद, एक का हबाअ था। अल्लाह तआ़ला ने इन में ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया, आप ने उन्हें तौह़ीद का हुक्म दिया शिर्क व बुत परस्ती और ज़ुल्मो जफ़ाकारी की मुमानअ़त की, इस पर वोह लोग मुन्किर हुए आप की तक्ज़ीब करने लगे और कहने लगे : हम से ज़ियादा ज़ोर आवर कौन है, चन्द आदमी उन में से ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام पर ईमान लाए वोह थोड़े थे और अपना ईमान छुपाए रहते थे, उन मोमिनीन में से एक शख़्स का नाम मरसद इब्ने सा'द बिन उ़फ़ैर था वोह अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, जब क़ौम ने सरकशी की और अपने नबी ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और ज़मीन में फ़साद किया और सितम गारियों में ज़ियादती की और बड़ी मज़बूत़ इमारतें बनाईं मा'लूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वोह दुन्या में हमेशा ही रहेंगे, जब उन की नौबत यहां तक पहुंची तो अल्लाह तआ़ला ने बारिश रोक दी तीन साल बारिश न हुई अब वोह बहुत मुसीबत में मुब्तला हुए और उस ज़माने में दस्तूर येह था कि जब कोई बला या मुसीबत नाज़िल होती थी तो लोग बैतुल्लाहिल ह़राम में ह़ाज़िर हो कर अल्लाह तआ़ला से उस के दफ़्अ़ की दुआ़ करते थे, इसी लिये उन लोगों ने एक वफ़्द बैतुल्लाह को रवाना किया उस वफ़्द में क़ील बिन अ़नज़ा और नईम बिन हज़्ज़ाल और मरसद बिन सा'द थे येह वोही साह़िब हैं जो ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام पर ईमान लाए थे और अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अ़मालीक़ की सुकूनत थी और इन लोगों का सरदार मुआ़विया बिन बक्र था इस शख़्स का नानिहाल क़ौमे आ़द में था इसी अ़लाक़े (तअ़ल्लुक़) से येह वफ़्द मक्कए मुकर्रमा के ह़वाली (गिर्दो नवाह़) में मुआ़विया बिन बक्र के यहां मुक़ीम हुवा, उस ने इन लोगों का बहुत इक्राम किया निहायत ख़ात़िरो मदारात की, येह लोग वहां शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे, इस त़रह़ इन्हों ने ऐ़शो नशात़ में एक महीना बसर किया मुआ़विया को ख़याल आया कि येह लोग तो राह़त में पड़ गए और क़ौम की मुसीबत को भूल गए जो वहां गिरिफ़्तारे बला है मगर मुआ़विया बिन बक्र को येह ख़याल भी था कि अगर वोह इन लोगों से कुछ कहे तो शायद वोह येह ख़याल करें कि अब इस को मेज़बानी गिरां गुज़रने लगी है इस लिये उस ने गाने वाली बांदी को ऐसे अश्आ़र दिये जिन में क़ौमे आ़द की ह़ाजत का तज़्किरा था, जब बांदी ने वोह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं, अब उन्हें ख़याल हुवा कि ह़रम शरीफ़ में दाख़िल हो कर क़ौम के लिये पानी बरसने की दुआ़ करें, उस वक़्त मरसद बिन सा'द ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! तुम्हारी दुआ़ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की इत़ाअ़त करो और अल्लाह तआ़ला से तौबा करो तो बारिश होगी और उस वक़्त मरसद ने अपने इस्लाम का इज़्हार कर दिया, उन लोगों ने मरसद को छोड़ दिया और ख़ुद मक्कए मुकर्रमा जा कर दुआ़ की, अल्लाह तआ़ला ने तीन अब्र (बादल) भेजे एक सफ़ेद एक सुर्ख़ एक सियाह और आस्मान से निदा हुई कि ऐ क़ील ! अपने और अपनी क़ौम के लिये इन में से एक अब्र इख़्तियार कर। उस ने अब्रे सियाह को इख़्तियार किया ब ईं ख़याल कि इस से बहुत पानी बरसेगा। चुनान्चे वोह अब्र क़ौमे आ़द की त़रफ़ चला और वोह लोग उस को देख कर बहुत ख़ुश हुए, मगर उस में से एक हवा चली वोह इस शिद्दत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी, येह देख कर वोह लोग घरों में दाख़िल हुए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिये मगर हवा की तेज़ी से बच न सके उस ने दरवाज़े भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया और क़ुदरते इलाही से सियाह परिन्दे नुमूदार हुए जिन्हों ने उन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया, ह़ज़रते हूद मोमिनीन को ले कर क़ौम से जुदा हो गए थे इस लिये वोह सलामत रहे, क़ौम के हलाक होने

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ هٰذِهٖ

पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से[137] रोशन दलील आई[138] येह

نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ

अल्लाह का नाक़ा है[139] तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ[140]

فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ

कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ लेगा और याद करो[141] जब तुम को आ़द का जा नशीन

عَادٍ وَّ بَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّ تَنْحِتُوْنَ

किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में मह़ल बनाते हो[142] और पहाड़ों में

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ

मकान तराश्ते हो[143] तो अल्लाह की ने'मतें याद करो[144] और ज़मीन में फ़साद मचाते

مُفْسِدِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

न फिरो उस की क़ौम के तकब्बुर वाले कमज़ोर

اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ

मुसल्मानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब के रसूल हैं

قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا

बोले वोह जो कुछ ले कर भेजे गए हम उस पर ईमान रखते हैं[145] मुतकब्बिर बोले जिस

بِالَّذِيْۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

पर तुम ईमान लाए हमें उस से इन्कार है पस[146] नाक़ा की कूचें (क़दम) काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की

के बा'द ईमानदारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आख़िर उम्र शरीफ़ तक वहीं अल्लाह तआ़ला की इबादत करते रहे। **136 :** जो ह़िजाज़ व शाम के दरमियान सर ज़मीने ह़िज्र में रहते थे। **137 :** मेरे सिदक़े नुबुव्वत पर **138 :** जिस का बयान येह है कि **139 :** जो न किसी पीठ में रहा न किसी पेट में, न किसी नर से पैदा हुवा न मादा से, न ह़म्ल में रहा न इस की ख़िल्क़त तदरीजन (दरजा ब दरजा पैदाइश) कमाल को पहुंची, बल्कि त़रीक़ए आ़दिया के ख़िलाफ़ वोह पहाड़ के एक पथ्थर से दफ़्अ़तन पैदा हुवा, इस की येह पैदाइश मो'जिज़ा है, फिर वोह एक दिन पानी पीता है और तमाम क़बीलए समूद एक दिन। येह भी मो'जिज़ा है कि एक नाक़ा एक क़बीले के बराबर पी जाए इस के इलावा उस के पीने के रोज़ उस का दूध दोहा जाता था और वोह इतना होता था कि तमाम क़बीले को काफ़ी हो और पानी के क़ाइम मक़ाम हो जाए येह भी मो'जिज़ा और तमाम वुहूश व ह़ैवानात उस की बारी के रोज़ पानी पीने से बाज़ रहते थे येह भी मो'जिज़ा। इतने मो'जिज़ात ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام के सिदक़े नुबुव्वत की ज़बर दस्त ह़ुज्जतें हैं। **140 :** न मारो न हकाओ अगर ऐसा किया तो येही नतीजा होगा **141 :** ऐ क़ौमे समूद ! **142 :** मौसिमे गरमा में आराम करने के लिये **143 :** मौसिमे सरमा के लिये **144 :** और उस का शुक्र बजा लाओ। **145 :** उन के दीन को क़ुबूल करते हैं उन की रिसालत को मानते हैं। **146 :** क़ौमे समूद ने

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷۷﴾

और बोले ऐ सालेह़ हम पर ले आओ[147] जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۷۸﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ को अपने घरों में औंधे रह गए तो सालेह़ ने उन से मुंह फेरा[148]

وَقَالَ یٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّیْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا

और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम

تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۷۹﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ

ख़ैर ख़्वाहों के ग़रज़ी [पसन्द करने वाले] ही नहीं और लूत़ को भेजा[149] जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या वोह बे ह़याई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَمَا كَانَ

शह्वत से जाते हो[150] औ़रतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए[151] और उस की

جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْیَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ

क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन[152] को अपनी बस्ती से निकाल दो येह

147 : वोह अ़ज़ाब **148 :** जब कि उन्हों ने सरकशी की। मन्क़ूल है कि उन लोगों ने चहार शम्बा (बुध) को नाक़ा की कूंचें काटी थीं तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तुम इस के बा'द तीन रोज़ ज़िन्दा रहोगे पहले रोज़ तुम्हारे सब के चेहरे ज़र्द हो जाएंगे दूसरे रोज़ सुर्ख़ तीसरे रोज़ सियाह चौथे रोज़ अ़ज़ाब आएगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और यक शम्बा (इतवार) को दोपहर के क़रीब आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस से उन लोगों के दिल फट गए और सब हलाक हो गए। **149 :** जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भतीजे हैं, आप अहले सदूम की त़रफ़ भेजे गए और जब आप के चचा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने शाम की त़रफ़ हिजरत की तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने सर ज़मीने फ़िलिस्त़ीन में नुज़ूल फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام उर्दुन में उतरे अल्लाह तआला ने आप को अहले सदूम की त़रफ़ मब्ऊ़स किया आप उन लोगों को दीने ह़क़ की दा'वत देते थे और फ़े'ले बद से रोकते थे जैसा कि आयत शरीफ़ में ज़िक्र आता है। **150 :** या'नी उन के साथ बद फ़े'ली करते हो **151 :** कि ह़लाल को छोड़ कर ह़राम में मुब्तला हुए और ऐसे ख़बीस फ़े'ल का इरतिकाब किया। इन्सान को शह्वत बक़ाए नस्ल और दुन्या की आबादी के लिये दी गई है और औ़रतें मह़ल्ले शह्वत व मौज़ए नस्ल बनाई गई हैं कि उन से ब त़रीक़ए मा'रूफ़ ह़स्बे इजाज़ते शरअ़ औलाद ह़ासिल की जाए, जब आदमियों ने औ़रतों को छोड़ कर उन का काम मर्दों से लेना चाहा तो वोह ह़द से गुज़र गए और उन्हों ने इस क़ुव्वत के मक़्सदे सह़ीह़ को फ़ौत कर दिया क्यूं कि मर्द को न ह़म्ल रहता है न वोह बच्चा जनता है, तो इस के साथ मश्ग़ूल होना सिवाए शैत़ानियत के और क्या है। उ़लमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि क़ौमे लूत़ की बस्तियां निहायत सर सब्ज़ो शादाब थीं और वहां ग़ल्ले और फल ब कसरत पैदा होते थे ज़मीन का दूसरा ख़ित़्ता उस का मिस्ल न था इस लिये जा बजा से लोग यहां आते थे और उन्हें परेशान करते थे, ऐसे वक़्त में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा और उन से कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस कसरत से नजात चाहते हो तो जब वोह लोग आएं तो उन के साथ बद फ़े'ली करो, इस त़रह़ येह फ़े'ले बद उन्हों ने शैत़ान से सीखा और उन में राइज हुवा। **152 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ और उन के मुत्तबिईन।

أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ

लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं[153] तो हम ने उसे[154] और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत वोह रह जाने

الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

वालों में हुई[155] और हम ने उन पर एक मींह बरसाया[156] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا

मुजरिमों का[157] और मद्यन की त़रफ़ उन की बिरादरी से शुऐ़ब को भेजा[158] कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** की इ़बादत

اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا

करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन दलील आई[159] तो

الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي

नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटा कर न दो[160] और ज़मीन में

الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَ

इन्तिज़ाम के बा'द फ़साद न फैलाओ येह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ और

لَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ

हर रास्ते पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और **अल्लाह** की राह से उन्हें रोको[161] जो

آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ

उस पर ईमान लाए और इस में कजी चाहो (टेढ़ा रास्ता ढूंडो) और याद करो जब तुम थोड़े थे उस ने तुम्हें बढ़ा दिया[162]

وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ

और देखो[163] फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा और अगर तुम में एक गुरौह

153 : और पाकीज़गी ही अच्छी होती है वोही क़ाबिले मद्ह है लेकिन उस क़ौम का ज़ौक़ इतना ख़राब हो गया था कि उन्हों ने इस सिफ़ते मद्ह को ऐ़ब क़रार दिया। 154 : या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को 155 : वोह काफ़िरा थी और उस क़ौम से मह़ब्बत रखती थी। 156 : अ़जीब त़रह़ का जिस में ऐसे पथ्थर बरसे कि गन्धक और आग से मुरक्कब थे। एक क़ौल येह है कि बस्ती में रहने वाले जो वहां मुक़ीम थे वोह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वोह उस बारिश से हलाक किये गए। 157 : मुजाहिद ने कहा कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और उन्हों ने अपना बाज़ू क़ौमे लूत़ की बस्तियों के नीचे डाल कर उस ख़ित्ते को उखाड़ लिया और आस्मान के क़रीब पहुंच कर उस को औंधा कर के गिरा दिया इस के बा'द पथ्थरों की बारिश की गई। 158 : ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने 159 : जिस से मेरी नुबुव्वत व रिसालत यक़ीनी त़ौर पर साबित होती है, इस दलील से मो'जिज़ा मुराद है। 160 : उन के ह़क़ दियानत दारी के साथ पूरे पूरे अदा करो। 161 : और दीन का इत्तिबाअ़ करने में लोगों के लिये सद्दे राह (रुकावट) न बनो। 162 : तुम्हारी ता'दाद ज़ियादा

اٰمَنُوْا بِالَّذِیْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ طَآىٕفَةٌ لَّمْ یُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى

उस पर ईमान लाया जो मैं ले कर भेजा गया और एक गुरौह ने न माना[164] तो ठहरे रहो यहां तक कि

یَحْكُمَ اللّٰهُ بَیْنَنَا ۚ وَ هُوَ خَیْرُ الْحٰكِمِیْنَ ﴿۸۷﴾

अल्लाह हम में फ़ैसला करे[165] और अल्लाह का फ़ैसला सब से बेहतर[166]

कर दी तो उस की ने'मत का शुक्र करो और ईमान लाओ। **163 :** ब निगाहे इब्रत पिछली उम्मतों के अह्वाल और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अन्जाम व मआल देखो और सोचो **164 :** या'नी अगर तुम मेरी रिसालत में इख़्तिलाफ़ कर के दो फ़िर्क़े हो गए एक फ़िर्क़े ने माना और एक मुन्किर हुवा **165 :** कि तस्दीक़ करने वाले ईमानदारों को इ़ज़्ज़त दे और उन की मदद फ़रमाए और झुटलाने वाले मुन्किरीन को हलाक करे और उन्हें अ़ज़ाब दे। **166 :** क्यूं कि वोह हाकिमे ह़क़ीक़ी है।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ

उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुऐब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले

اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا

मुसल्मानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा[167] क्या अगर्चे हम

كٰرِهِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ

बेज़ार हों[168] ज़रूर हम **अल्लाह** पर झूट बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जाएं बा'द इस के कि

نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَاۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह ने हमें इस से बचाया है[169] और हम मुसल्मानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि **अल्लाह** चाहे[170]

رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ

जो हमारा रब है हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत् (घेरे हुए) है हम ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया[171] ऐ रब हमारे हम में

بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿۸۹﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ

और हमारी क़ौम में हक़ फ़ैसला कर[172] और तेरा फ़ैसला सब से बेहतर और उस की क़ौम के

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۹۰﴾

काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐब के ताबेअ़ हुए तो ज़रूर तुम नुक़्सान में रहोगे

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۱﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए[173] शुऐब को झुटलाने

167 : हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने 168 : हासिले मत़लब येह है कि हम तुम्हारा दीन न क़बूल करेंगे और अगर तुम ने हम पर जब्र किया जब भी न मानेंगे क्यूं कि 169 : और तुम्हारे दीने बात़िल के क़ुब्ह़ (ऐब) व फ़साद का इल्म दिया है। 170 : और उस को हलाक करना मन्ज़ूर हो और ऐसा ही मुक़द्दर हो। 171 : अपने तमाम उमूर में वोही हमें ईमान पर साबित रखेगा वोही ज़ियादते ईक़ान (ईमान व यक़ीन में इज़ाफ़े) की तौफ़ीक़ देगा। 172 : ज़ुज्जाज ने कहा कि इस के येह मा'ना हो सकते हैं कि ऐ रब हमारे अम्र को ज़ाहिर फ़रमा दे, मुराद इस से येह है कि इन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा जिस से इन का बात़िल पर होना और हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام और इन के मुत्तबिईन का हक़ पर होना ज़ाहिर हो। 173 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस क़ौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उन पर दोज़ख़ की शदीद गरमी भेजी जिस से सांस बन्द हो गए, अब न उन्हें साया काम देता था न पानी, इस ह़ालत में वोह तहख़ाने में दाख़िल हुए ताकि वहां उन्हें कुछ अम्न मिले लेकिन वहां बाहर से ज़ियादा गरमी थी। वहां से निकल कर जंगल की त़रफ़ भागे **अल्लाह** तआ़ला ने एक अब्र (बादल) भेजा जिस में निहायत सर्द और ख़ुश गवार हवा थी उस के साए में आए और एक ने दूसरे को पुकार पुकार कर जम्अ़ कर लिया, मर्द औ़रतें बच्चे सब मुज्तमअ़ हो गए तो वोह ब हुक्मे इलाही आग बन कर भड़क उठा और वोह इस त़रह जल गए जैसे भाड़ (भट्टी) में कोई चीज़ भुन जाती है। क़तादा का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को अस्ह़ाबे ऐका की त़रफ़ भी मब्ऊ़स फ़रमाया था और अहले मद्यन की त़रफ़ भी, अस्ह़ाबे ऐका तो अब्र से हलाक किये गए और अहले मद्यन ज़ल्ज़ले में गिरिफ़्तार हुए और एक होलनाक आवाज़ से हलाक हो गए।

شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ

वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे शुऐब को झुटलाने वाले वोही

الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۲﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ

तबाही में पड़े तो शुऐब ने उन से मुंह फेरा[174] और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा चुका

وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۹۳﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

और तुम्हारे भले को नसीहत की[175] तो क्यूंकर ग़म करूं काफ़िरों का और न भेजा हम ने किसी बस्ती में

مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿۹۴﴾

कोई नबी[176] मगर येह कि उस के लोगों को सख़्ती और तक्लीफ़ में पकड़ा[177] कि वोह किसी त़रह ज़ारी (आ़जिज़ी) करें[178]

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّ قَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई बदल दी[179] यहां तक कि वोह बहुत हो गए[180] और बोले बेशक हमारे बाप दादा को

الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَلَوْ اَنَّ

रन्ज व राह़त पहुंचे थे[181] तो हम ने उन्हें अचानक उन की ग़फ़्लत में पकड़ लिया[182] और अगर

اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ

बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते[183] तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें

الْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ

खोल देते[184] मगर उन्हों ने तो झुटलाया[185] तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया[186] क्या बस्तियों वाले[187]

174 : जब उन पर अ़ज़ाब आया। 175 : मगर तुम किसी त़रह ईमान न लाए। 176 : जिस को उस की क़ौम ने न झुटलाया हो। 177 : फ़क्रो तंगदस्ती और मरज़ व बीमारी में गिरिफ़्तार किया 178 : तकब्बुर छोड़ें, तौबा करें, हुक्मे इलाही के मुत़ीअ़ बनें। 179 : कि सख़्ती व तक्लीफ़ के बा'द राह़तो आसाइश पहुंचना और बदनी व माली ने'मतें मिलना इत़ाअ़त व शुक्र गुज़ारी का मुस्तद्ई (चाहने वाला) है। 180 : उन की ता'दाद भी ज़ियादा हुई और माल भी बढ़े। 181 : या'नी ज़माने का दस्तूर ही येह है कि कभी तक्लीफ़ होती है कभी राह़त, हमारे बाप दादा पर भी ऐसे अह़वाल गुज़र चुके हैं, इस से उन का मुद्दआ़ येह था कि पिछला ज़माना जो सख़्तियों में गुज़रा है वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कुछ उ़क़ूबत व सज़ा न था तो अपना दीन तर्क करना न चाहिये। न उन लोगों ने शिद्दत व तक्लीफ़ से कुछ नसीह़त ह़ासिल की न राह़तो आराम से उन में कोई जज़्बए शुक्रो त़ाअ़त पैदा हुवा वोह ग़फ़्लत में सरशार रहे। 182 : जब कि उन्हें अ़ज़ाब का ख़याल भी न था। इन वाक़िआ़त से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये और बन्दों को गुनाह व सरकशी तर्क कर के अपने मालिक का रिज़ा जू (रिज़ा मन्दी चाहने वाला) होना चाहिये। 183 : और ख़ुदा और रसूल की इत़ाअ़त इख़्तियार करते और जिस चीज़ को **अल्लाह** और रसूल ने मन्अ़ फ़रमाया उस से बाज़ रहते 184 : हर त़रफ़ से उन्हें ख़ैर पहुंचती, वक़्त पर नाफ़ेअ़ और मुफ़ीद बारिशें होतीं, ज़मीन से खेती फल ब कसरत पैदा होते, रिज़्क़ की फ़राख़ी होती, अम्नो सलामती रहती, आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहते 185 : **अल्लाह** के रसूलों को 186 : और अन्वाए अ़ज़ाब में मुब्तला किया 187 : कुफ़्फ़ार ख़्वाह वोह मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले हों या गिर्दो पेश के या और कहीं के।

الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآىِٕمُوْنَ ﴿۹۷﴾ اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى

नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को आए जब वोह सोते हों या बस्तियों वाले नहीं डरते कि

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۸﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ

उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आए जब वोह खेल रहे हों[188] क्या **अल्लाह** की ख़ुफ़्री तदबीर से निडर हैं[189] तो **अल्लाह** की ख़ुफ़्री तदबीर

مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ

से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले[190] और क्या वोह जो ज़मीन के मालिकों के बा'द उस के

الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَ

वारिस हुए उन्हें इतनी हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर आफ़त पहुंचाएं[191] और

نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ

हम उन के दिलों पर मोहर करते हैं कि वोह कुछ नहीं सुनते[192] येह बस्तियां हैं[193] जिन के

عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآىِٕهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا

अह़वाल हम तुम्हें सुनाते हैं[194] और बेशक उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें[195] ले कर आए तो वोह[196]

كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ

इस क़ाबिल न हुए कि वोह उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे[197] **अल्लाह** यूंही छाप (मोहर) लगा देता है काफ़िरों

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۱﴾ وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ

के दिलों पर[198] और उन में अक्सर को हम ने क़ौल (वा'दे) का सच्चा न पाया[199] और ज़रूर उन में अक्सर को

لَفٰسِقِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ

बे हुक्म ही पाया फिर उन[200] के बा'द हम ने मूसा को अपनी निशानियों[201] के साथ फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों

188 : और अ़ज़ाब के आने से ग़ाफ़िल हों 189 : और उस के ढील देने और दुन्यवी ने'मत देने पर मग़रूर हो कर उस के अ़ज़ाब से बे फ़िक्र हो गए हैं 190 : और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं। रबीअ़ बिन ख़ैसम की साहिब ज़ादी ने उन से कहा क्या सबब है मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं ? फ़रमाया ऐ नूरे नज़र तेरा बाप शब को सोने से डरता है। या'नी येह कि ग़ाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अ़ज़ाब न हो। 191 : जैसा कि हम ने उन के मूरिसों (विरसा छोड़ने वालों) को उन की ना फ़रमानी के सबब हलाक किया। 192 : और कोई पन्दो नसीह़त नहीं मानते। 193 : क़ौमे ह़ज़रते नूह़ और आ़द व समूद और क़ौमे ह़ज़रते लूत़ व क़ौमे ह़ज़रते शुऐ़ब की। 194 : ताकि मा'लूम हो कि हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों या'नी काफ़िरों के मुक़ाबले में मदद किया करते हैं। 195 : या'नी मो'जिज़ाते बाहिरात (ज़बर दस्त मो'जिज़ात) 196 : ता दमे मर्ग 197 : अपने कुफ़्रो तक्ज़ीब पर जमे ही रहे। 198 : जिन की निस्बत उस के इ़ल्म में है कि कुफ़्र पर क़ाइम रहेंगे और कभी ईमान न लाएंगे। 199 : उन्हों ने **अल्लाह** के अ़ह्द पूरे न किये, उन पर जब

مَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَقَالَ

की तरफ़ भेजा तो उन्हों ने उन निशानियों पर ज़ियादती की[202] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) का और मूसा

مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ حَقِيْقٌ عَلٰۤى اَنْ لَّاۤ

ने कहा ऐ फ़िरऔन मैं परवर्दगारे आलम का रसूल हूं मुझे सज़ावार (मुनासिब येही) है कि

اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ

अल्लाह पर न कहूं मगर सच्ची बात[203] मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूं[204] तो तू बनी इसराईल को

مَعِيَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۰۵﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ اِنْ كُنْتَ

मेरे साथ छोड़ दे[205] बोला अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो लाओ अगर

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۷﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

सच्चे हो तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा हो गया[206] और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا

तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा[207] क़ौमे फ़िरऔन के सरदार बोले येह तो एक

لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۹﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

इ़ल्म वाला जादूगर है[208] तुम्हें तुम्हारे मुल्क[209] से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मश्वरा है

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ

बोले उन्हें और उन के भाई[210] को ठहरा और शहरों में लोग जम्अ़ करने वाले भेज दे कि हर इ़ल्म वाले

कभी कोई मुसीबत आती तो अ़ह्द करते कि या रब ! तू अगर इस से हमें नजात दे तो हम ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर जब नजात पाते अ़ह्द से फिर जाते। (مدارک) **200 :** अम्बियाए मज़्कूरीन **201 :** या'नी मो'जिज़ाते वाज़ेहात मिस्ले यदे बैज़ा व अ़सा वग़ैरा **202 :** उन्हें झुटलाया और कुफ़्र किया। **203 :** क्यूं कि रसूल की येही शान है, वोह कभी ग़लत़ बात नहीं कहते और तब्लीग़े रिसालत में इन का किज़्ब मुम्किन नहीं। **204 :** जिस से मेरी रिसालत साबित है और वोह निशानी मो'जिज़ात हैं। **205 :** और अपनी क़ैद से आज़ाद कर दे ताकि वोह मेरे साथ अर्ज़े मुक़द्दसा में चले जाएं जो उन का वत़न है। **206 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़सा डाला तो वोह एक बड़ा अज़्दहा बन गया ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊंचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा उस ने ज़मीन पर रखा और एक क़स्रे शाही की दीवार पर फिर उस ने फ़िरऔन की तरफ़ रुख़ किया तो फ़िरऔन अपने तख़्त से कूद कर भागा और डर से उस की रीह़ निकल गई और लोगों की तरफ़ रुख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए फ़िरऔन घर में जा कर चीख़ने लगा : ऐ मूसा ! तुम्हें उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ लो मैं तुम पर ईमान लाता हूं और तुम्हारे साथ बनी इसराईल को भेजे देता हूं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उस को उठा लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ अ़सा था। **207 :** और उस की रोशनी और चमक नूरे आफ़्ताब पर ग़ालिब हो गई। **208 :** जिस ने जादू से नज़र बन्दी की और लोगों को अ़सा अज़्दहा नज़र आने लगा और गन्दुमी रंग का हाथ आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन मा'लूम होने लगा। **209 :** मिस्र **210 :** ह़ज़रते हारून।

سِحْرٍ عَلِيْمٍ ﴿۱۱۲﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْۤا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا

जादूगर को तेरे पास ले आएं[211] और जादूगर फ़िरऔन के पास आए बोले कुछ हमें इन्आम मिलेगा अगर

نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى

हम ग़ालिब आएं बोला हां और उस वक़्त तुम मुक़र्रब हो जाओगे बोले ऐ मूसा

اِمَّاۤ اَنْ تُلْقِیَ وَاِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّاۤ

या तो[212] आप डालें या हम डालने वाले हों[213] कहा तुम्हीं डालो[214] जब

اَلْقَوْا سَحَرُوْۤا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَ

उन्हों ने डाला[215] लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और बड़ा जादू लाए और

اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِیَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ ۚ

हम ने मूसा को वह्‌य फ़रमाई कि अपना अ़सा डाल तो नागाह वोह उन की बनावटों को निगलने लगा[216]

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ ۚ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا

तो हक़ साबित हुवा और उन का काम बातिल हुवा तो यहां वोह मग़्लूब पड़े और ज़लील

صٰغِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ ۚ وَاُلْقِیَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ ۙ

हो कर पलटे और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गए[217] बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ

जो रब है मूसा और हारून का फ़िरऔन बोला तुम इस पर ईमान ले आए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं

211 : जो सेहूर में माहिर हो और सब से फ़ाइक़, चुनान्चे लोग रवाना हुए और अत़राफ़ व बिलाद में तलाश कर के जादूगरों को ले आए। **212 :** पहले अपना अ़सा **213 :** जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह अदब किया कि आप को मुक़द्दम किया और बिग़ैर आप की इजाज़त के अपने अ़मल में मश्ग़ूल न हुए, इस अदब का इ़वज़ (बदला) उन्हें येह मिला कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ईमान व हिदायत के साथ मुशर्रफ़ किया। **214 :** येह फ़रमाना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इस लिये था कि आप उन की कुछ परवाह नहीं करते थे और ए'तिमादे कामिल रखते थे कि उन के मो'जिज़े के सामने सेहूर नाकाम व मग़्लूब होगा। **215 :** अपना सामान जिस में बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे तो वोह अज़्दहे नज़र आने लगे और मैदान उन से भरा मा'लूम होने लगा। **216 :** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा डाला तो वोह एक अ़ज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया। इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि येह इज्तिमाअ़ इस्कन्दरिया में हुवा था और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अज़्दहे की दुम समुन्दर के पार पहुंच गई थी वोह जादूगरों की सेहूर कारियों को एक एक कर के निगल गया और तमाम रस्से व लठ्ठे जो उन्हों ने जम्अ़ किये थे जो तीन सो ऊंट का बार थे सब का ख़ातिमा कर दिया, जब मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की त़रह़ अ़सा हो गया और उस का ह़ज्म और वज़्न अपने ह़ाल पर रहा, येह देख कर जादूगरों ने पहचान लिया कि अ़साए मूसा सेहूर नहीं और क़ुदरते बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती, ज़रूर येह अम्र समावी है, येह बात समझ कर वोह ''اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ'' (हम ईमान लाए जहान के रब पर) कहते हुए सज्दे में गिर गए। **217 :** या'नी येह मो'जिज़ा देख कर उन पर ऐसा असर हुवा कि वोह बे इख़्तियार सज्दे में गिर गए, मा'लूम होता था कि किसी ने पेशानियां पकड़ कर ज़मीन पर लगा दीं।

اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِی الْمَدِیْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَاۤ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ

येह तो बड़ा जा'ल (मक्रो फ़रेब) है जो तुम सब ने[218] शहर में फैलाया है कि शहर वालों को इस से निकाल दो[219] तो अब

تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَیْدِیَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ

जान जाओगे[220] क़सम है कि मैं तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा फिर तुम सब को

اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ ۚ وَ مَا تَنْقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ

सूली दूंगा[221] बोले हम अपने रब की त़रफ़ फिरने वाले हैं[222] और तुझे हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि

اٰمَنَّا بِاٰیٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا

हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वोह हमारे पास आईं ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे[223] और हमें

مُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲۶﴾ ۧ وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَ قَوْمَهٗ

मुसल्मान उठा[224] और क़ौमे फ़िरऔन के सरदार बोले क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है

لِیُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ یَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं[225] और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मा'बूदों को छोड़ दे[226] बोला अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे

وَ نَسْتَحْیٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ

और इन की बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक इन पर ग़ालिब हैं[227] मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया

218 : या'नी तुम ने और हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने सब ने मुत्तफ़िक़ हो कर 219 : और खुद इस पर मुसल्लत़ हो जाओ। 220 : कि मैं तुम्हारे साथ किस त़रह पेश आता हूं। 221 : नील के किनारे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि दुन्या में पहला सूली देने वाला पहला हाथ पाउं काटने वाला फ़िरऔ़न है। फ़िरऔ़न की इस गुफ़्त्गू पर जादूगरों ने येह जवाब दिया जो अगली आयत में मज़्कूर है : 222 : तो हमें मौत का क्या ग़म, क्यूं कि मर कर हमें अपने रब की लिक़ा (मुलाक़ात व दीदार) और उस की रह़मत नसीब होगी और जब सब को उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है तो वोह ख़ुद हमारे तेरे दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा। 223 : या'नी हम को सब्रे कामिल ताम अ़त़ा फ़रमा और इस कसरत से अ़त़ा फ़रमा जैसे पानी किसी पर उंडेल दिया जाता है। 224 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह लोग दिन के अव्वल वक़्त में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर वक़्त में शहीद। 225 : या'नी मिस्र में तेरी मुख़ालफ़त करें और वहां के बाशिन्दों का दीन बदलें और येह उन्हों ने इस लिये कहा था कि साहिरों के साथ छ[6] लाख आदमी ईमान ले आए थे। (مدارک) 226 : कि न तेरी इ़बादत करें न तेरे मुक़र्रर किये हुए मा'बूदों की। सुद्दी का क़ौल है कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लिये बुत बनवा दिये थे और उन की इ़बादत करने का हुक्म देता था और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रब हूं और इन बुतों का भी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न दहरी था या'नी "सानेए़ आ़लम के वुजूद का मुन्किर" उस का ख़याल था कि आ़लमे सिफ़्ली के मुदब्बिर कवाकिब हैं इसी लिये उस ने सितारों की सूरतों पर बुत बनवाए थे, उन की ख़ुद भी इ़बादत करता था और दूसरों को भी उन की इ़बादत का हुक्म देता था और अपने आप को मुताअ़ व मख़्दूम (सरदार व मालिक) ज़मीन का कहता था इसी लिये "اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى" (मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं) कहता था। 227 : क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदारों ने फ़िरऔ़न से येह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं, इस से उन का मत़लब फ़िरऔ़न को हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के और आप की क़ौम के क़त्ल पर उभारना था, जब उन्हों ने ऐसा किया तो मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने उन को नुज़ूले अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम की ख़्वाहिश पर क़ुदरत नहीं रखता था क्यूं कि वोह हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के मो'जिज़े की क़ुव्वत से मरऊ़ब हो चुका था इसी लिये उस ने अपनी क़ौम से येह कहा कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे

اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙۗ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ

अल्लाह की मदद चाहो[228] और सब्र करो[229] बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह है[230] अपने बन्दों में जिसे चाहे

عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۸﴾ قَالُوْۤا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَ

वारिस बनाए[231] और आख़िर मैदान परहेज़ गारों के हाथ है[232] बोले हम सताए गए आप के आने से पहले[233] और

مِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ

आप के तशरीफ़ लाने के बा'द[234] कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उस की जगह

فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ

ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखे कैसे काम करते हो[235] और बेशक हम ने फ़िरऔन वालों को

بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ

बरसों के क़हत और फलों के घटाने से पकड़ा[236] कि कहीं वोह नसीहत मानें[237] तो जब उन्हें भलाई

الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ

मिलती[238] कहते येह हमारे लिये है[239] और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से

مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَقَالُوْا

बद शुगूनी लेते[240] सुन लो उन के नसीबे (मुक़द्दर) की शामत तो अल्लाह के यहां है[241] लेकिन उन में अक्सर को ख़बर नहीं और बोले

लड़कियों को छोड़ देंगे, इस से उस का मत़लब येह था कि इस त़रह क़ौमे ह़ज़रत मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ता'दाद घटा कर उन की क़ुव्वत कम करेंगे और अ़वाम में अपना भरम रखने के लिये येह भी कह दिया कि हम बेशक उन पर ग़ालिब हैं, लेकिन फ़िरऔन के इस क़ौल से कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे बनी इसराईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इस की शिकायत की, इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया (जो इस के बा'द आता है) **228 :** वोह काफ़ी है **229 :** मुसीबतों और बलाओं पर और घबराओ नहीं **230 :** और ज़मीने मिस्र भी इस में दाख़िल है। **231 :** येह फ़रमा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इसराईल को तवक़्क़ोअ़ (उम्मीद) दिलाई कि फ़िरऔन और उस की क़ौम हलाक होगी और बनी इसराईल उन की ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे। **232 :** उन्हीं के लिये फ़त्ह़ो ज़फ़र है और उन्हीं के लिये आक़िबते मह़मूदा। **233 :** कि फ़िरऔन और फ़िरऔनियों ने त़रह त़रह की मुसीबतों में मुब्तला कर रखा था और लड़कों को बहुत ज़ियादा क़त्ल किया था **234 :** कि अब वोह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है तो हमारी मदद कब होगी और येह मुसीबतें कब दफ़्अ़ की जाएंगी। **235 :** और किस त़रह शुक्रे ने'मत बजा लाते हो। **236 :** और फ़क़्रो फ़ाक़ा की मुसीबत में गिरिफ़्तार किया **237 :** और कुफ़्रो मा'सियत से बाज़ आएं। फ़िरऔन ने अपनी चार सो बरस की उ़म्र में से तीन सो बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला ही नहीं हुवा अब क़ह़त़ साली की सख़्ती उन पर इस लिये डाली गई कि वोह इस सख़्ती ही से ख़ुदा को याद करें और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हों, लेकिन वोह कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ (पुख़्ता) हो चुके थे कि इन तक्लीफ़ों से भी उन की सरकशी ही बढ़ती रही। **238 :** और अरज़ानी व फ़राख़ी (या'नी फलों की कसरत) व अम्नो आफ़िय्यत होती **239 :** या'नी हम इस के मुस्तह़िक़ ही हैं और इस को अल्लाह का फ़ज़्ल न जानते और शुक्रे इलाही न बजा लाते। **240 :** और कहते कि येह बलाएं उन की वज्ह से पहुंचीं अगर येह न होते तो येह मुसीबतें न आतीं। **241 :** जो उस ने मुक़द्दर किया है वोही पहुंचता है और येह उन के कुफ़्र के सबब है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि बड़ी शामत तो वोह है जो उन के लिये अल्लाह के यहां है या'नी अ़ज़ाबे दोज़ख़।

مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾

तुम कैसी भी निशानी ले कर हमारे पास आओ कि हम पर उस से जादू करो हम किसी त़रह़ तुम पर ईमान लाने वाले नहीं[242]

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ

तो भेजा हम ने उन पर तूफ़ान[243] और टीड़ी (टिड्डी) और घुन (किलनी या जूएं) और मेंडक और ख़ून

242 : जब उन की सरकशी यहां तक पहुंची तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन के ह़क़ में बद दुआ़ की, आप मुस्तजाबुद्दा'वात थे, दुआ़ क़बूल हुई । **243 :** जब जादूगरों के ईमान लाने के बा'द भी फ़िरऔ़नी अपने कुफ़्रो सरकशी पर जमे रहे तो उन पर आयाते इलाहिय्यह पयापै (लगातार) वारिद होने लगीं क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की थी कि या रब फ़िरऔ़न ज़मीन में बहुत सरकश हो गया और इस की क़ौम ने अ़ह्द शिकनी की, इन्हें ऐसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर जो इन के लिये सज़ा हो और मेरी क़ौम और बा'द वालों के लिये इब्रत, तो **अल्लाह** तआ़ला ने तूफ़ान भेजा अब्र आया, अंधेरा हुवा, कसरत से बारिश होने लगी, क़िब्त़ियों के घरों में पानी भर गया, यहां तक कि वोह उस में खड़े रह गए और पानी उन की गरदनों की हंस्लियों तक आ गया, उन में से जो बैठा डूब गया, न हिल सकते थे न कुछ काम कर सकते थे । सनीचर से सनीचर (या'नी एक हफ़्ते से अगले हफ़्ते) तक सात रोज़ तक इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद इस के कि बनी इसराईल के घर उन के घरों से मुत्तसिल थे उन के घरों में पानी न आया, जब येह लोग आ़जिज़ हुए तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया : हमारे लिये दुआ़ फ़रमाइये कि येह मुसीबत रफ़्अ़ हो तो हम आप पर ईमान लाएं और बनी इसराईल को आप के साथ भेज दें । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई तूफ़ान की मुसीबत रफ़्अ़ हुई, ज़मीन में वोह सर सब्ज़ी व शादाबी आई जो पहले न देखी थी, खेतियां ख़ूब हुईं, दरख़्त ख़ूब फले तो फ़िरऔ़नी कहने लगे येह पानी तो ने'मत था और ईमान न लाए । एक महीना तो आ़फ़िय्यत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने टिड्डी भेजी, वोह खेतियां और फल, दरख़्तों के पत्ते, मकानों के दरवाज़े, छतें, तख़्ते, सामान ह़त्ता कि लोहे की कीलें तक खा गईं और क़िब्त़ियों के घरों में भर गईं और बनी इसराईल के यहां न गईं, अब क़िब्त़ियों ने परेशान हो कर फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की, ईमान लाने का वा'दा किया, इस पर अ़ह्दो पैमान किया, सात रोज़ या'नी शम्बा से शम्बा तक टिड्डी की मुसीबत में मुब्तला रहे, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ से नजात पाई खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रह गए थे उन्हें देख कर कहने लगे येह हमें काफ़ी हैं, हम अपना दीन नहीं छोड़ते, चुनान्चे ईमान न लाए, अ़ह्द वफ़ा न किया और अपने आ'माले ख़बीसा में मुब्तला हो गए । एक महीना आ़फ़िय्यत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुम्मल भेजे । इस में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ कहते हैं क़ुम्मल घुन है, बा'ज़ कहते हैं जूं, बा'ज़ कहते हैं एक और छोटा सा कीड़ा है, उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वोह खा लिये, कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था, खाने में भर जाता था, अगर कोई दस बोरी गेहूं चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता, बाक़ी सब कीड़े खा जाते । येह कीड़े फ़िरऔ़नियों के बाल, भवें, पलकें चाट गए । जिस्म पर चेचक की त़रह़ भर जाते, सोना दुश्वार कर दिया था, इस मुसीबत से फ़िरऔ़नी चीख़ पड़े और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया हम तौबा करते हैं, आप इस बला के दफ़्अ़ होने की दुआ़ फ़रमाइये, चुनान्चे सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी ह़ज़रत की दुआ़ से रफ़्अ़ हुई लेकिन फ़िरऔ़नियों ने फिर अ़ह्द शिकनी की और पहले से ज़ियादा ख़बीस तर अ़मल शुरूअ़ किये । एक महीना अम्न में गुज़रने के बा'द फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बद दुआ़ की तो **अल्लाह** तआ़ला ने मेंडक भेजे और येह ह़ाल हुवा कि आदमी बैठता था तो उस की मजलिस में मेंडक भर जाते थे, बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंडक कूद कर मुंह में पहुंचता । हांडियों में मेंडक, खानों में मेंडक, चूल्हों में मेंडक भर जाते थे आग बुझ जाती थी, लैटते थे तो मेंडक ऊपर सुवार होते थे, इस मुसीबत से फ़िरऔ़नी रो पड़े और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया अब की बार हम पक्की तौबा करते हैं, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से अ़ह्दो पैमान ले कर दुआ़ की तो सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी दफ़्अ़ हुई और एक महीना आ़फ़िय्यत से गुज़रा लेकिन फिर उन्हों ने अ़ह्द तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की त़रफ़ लौटे, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बद दुआ़ फ़रमाई तो तमाम कूंओं का पानी नहरों और चश्मों का पानी दरियाए नील का पानी ग़रज़ हर पानी उन के लिये ताज़ा ख़ून बन गया । उन्हों ने फ़िरऔ़न से इस की शिकायत की तो कहने लगा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी, उन्हों ने कहा : कैसी नज़र बन्दी ? हमारे बरतनों में ख़ून के सिवा पानी का नामो निशान ही नहीं । फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि क़िब्त़ी बनी इसराईल के साथ एक ही बरतन से पानी लें तो जब बनी इसराईल निकालते तो पानी निकलता क़िब्त़ी निकालते तो उसी बरतन से ख़ून निकलता, यहां तक कि फ़िरऔ़नी औ़रतें प्यास से आ़जिज़ हो कर बनी इसराईल की औ़रतों के पास आईं और उन से पानी मांगा तो वोह पानी उन के बरतन में आते ही ख़ून हो गया । तो फ़िरऔ़नी औ़रत कहने लगी कि तू पानी अपने मुंह में ले कर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे, जब तक वोह पानी इसराईली औ़रत के मुंह में रहा पानी था जब फ़िरऔ़नी औ़रत के मुंह में पहुंचा ख़ून हो गया । फ़िरऔ़न ख़ुद प्यास से मुज़्तर (बेचैन) हुवा तो उस ने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी वोह रतूबत मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गई । सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने की मुयस्सर न आई तो फिर ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने

اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ لَمَّا وَقَعَ

जुदा जुदा निशानियां[244] तो उन्हों ने तकब्बुर किया[245] और वोह मुजरिम क़ौम थी और जब

عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ

उन पर अ़ज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करो उस अ़ह्द के सबब जो उस का तुम्हारे पास है[246] बेशक अगर

كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَ لَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۳۴﴾ۚ

तुम हम पर से अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰۤى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

फिर जब हम उन से अ़ज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِی الْیَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا

तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया[247] इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उन से

غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ اَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ

बे ख़बर थे[248] और हम ने उस क़ौम को[249] जो दबा ली (कमज़ोर समझी) गई थी इस ज़मीन[250] के पूरब

الْاَرْضِ وَ مَغَارِبَهَا الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى

पश्चिम (मशरिक़ो मग़रिब) का वारिस किया जिस में हम ने बरकत रखी[251] और तेरे रब का अच्छा वा'दा

عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَ دَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ

बनी इसराईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का और हम ने बरबाद कर दिया[252] जो कुछ फ़िरऔ़न और

قَوْمُهٗ وَ مَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ جٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا

उस की क़ौम बनाती और जो चुनाइयां उठाते (ता'मीर करते) थे और हम ने[253] बनी इसराईल को दरिया पार उतारा तो उन का गुज़र

का वा'दा किया। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई, येह मुसीबत भी रफ़्अ़ हुई मगर ईमान फिर भी न लाए। **244 :** एक के बा'द दूसरी और हर अ़ज़ाब एक हफ़्ता क़ाइम रहता और दूसरे अ़ज़ाब से एक महीने का फ़ासिला होता। **245 :** और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाए। **246 :** कि वोह आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा। **247 :** या'नी दरियाए नील में। जब बार बार उन्हें अ़ज़ाबों से नजात दी गई और वोह किसी अ़ह्द पर क़ाइम न रहे और ईमान न लाए और कुफ़्र न छोड़ा तो वोह मीआ़द पूरी होने के बा'द जो उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाई गई थी उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया। **248 :** अस्लन तदब्बुर व इल्तिफ़ात (अन्जाम पर ग़ौर व तवज्जोह) न करते थे। **249 :** या'नी बनी इसराईल को **250 :** या'नी मिस्र व शाम **251 :** नहरों, दरख़्तों, फलों, खेतियों और पैदावार की कसरत से **252 :** उन तमाम इमारतों और ऐवानों और बाग़ों को **253 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को दसवीं मुहर्रम को ग़र्क़ करने के बा'द।

عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰۤى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا

एक ऐसी क़ौम पर हुवा कि अपने बुतों के आगे आसन मारे (इबादत के लिये जम कर बैठे) थे[254] बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

इन के लिये इतने ख़ुदा हैं बोला तुम ज़रूर जाहिल लोग हो[255] येह हाल तो बरबादी का है जिस में

فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّ هُوَ

येह[256] लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा (बिल्कुल) बातिल है कहा क्या **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं हालां कि उस ने

فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَ اِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ

तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी[257] और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें

سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ

बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियां बाक़ी रखते और इस में

بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۱۴۱﴾ ع وَ وٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّ اَتْمَمْنٰهَا

तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा[258] और हम ने मूसा से[259] तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में[260] दस और

بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ

बढ़ा कर पूरी कीं तो उस के रब का वा'दा पूरी चालीस रात का हुवा[261] और मूसा ने[262] अपने भाई हारून से कहा

اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَ اَصْلِحْ وَ لَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَ لَمَّا جَآءَ

मेरी क़ौम पर मेरे नाइब रहना और इस्लाह़ करना और फ़सादियों की राह को दख़्ल न देना (उन के रास्ते पर न चलना) और जब मूसा हमारे

254 : और उन की इबादत करते थे। इब्ने जुरैज ने कहा कि येह बुत गाय की शक्ल के थे, इन को देख कर बनी इसराईल **255 :** कि इतनी निशानियां देख कर भी न समझे कि **अल्लाह** वाहिद "لَاشَرِيْكَ لَهٗ" है, उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इबादत नहीं और किसी की इबादत जाइज़ नहीं। **256 :** बुत परस्त **257 :** या'नी ख़ुदा वोह नहीं होता जो तलाश कर के बना लिया जाए बल्कि ख़ुदा वोह है जिस ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी क्यूं कि वोह फ़ज़्लो एहसान पर क़ादिर है तो वोही इबादत का मुस्तह़िक़ है। **258 :** या'नी जब उस ने तुम पर ऐसी अज़ीम ने'मतें फ़रमाईं तो तुम्हें कब शायान है कि तुम उस के सिवा और की इबादत करो। **259 :** तौरैत अ़ता फ़रमाने के लिये माहे ज़ुल क़ा'दह की **260 :** ज़िल ह़िज्जा की **261 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बनी इसराईल से वा'दा था कि जब **अल्लाह** तआ़ला उन के दुश्मन फ़िरऔन को हलाक फ़रमा दे तो वोह उन के पास **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से एक किताब लाएंगे जिस में ह़लाल और ह़राम का बयान होगा, जब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔन को हलाक किया तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने रब से उस किताब के नाज़िल फ़रमाने की दरख़्वास्त की। हुक्म हुवा कि तीस रोज़े रखें, जब वोह रोज़े पूरे कर चुके तो आप को अपने दहन मुबारक में एक त़रह़ की बू मा'लूम हुई। आप ने मिस्वाक की मलाएका ने अ़र्ज़ किया कि हमें आप के दहने मुबारक से बड़ी मह़बूब ख़ुश्बू आया करती थी आप ने मिस्वाक कर के उस को ख़त्म कर दिया। **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि माह ज़िल ह़िज्जा में दस रोज़े और रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि रोज़ेदार के मुंह की ख़ुश्बू मेरे नज़्दीक ख़ुश्बूए मुश्क से ज़ियादा अत़्यब (पसन्द) है। **262 :** पहाड़ पर मुनाजात के लिये जाते वक़्त।

مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ

वा'दे पर हाज़िर हुवा और उस से उस के रब ने कलाम फ़रमाया[263] अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न

تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ

देख सकेगा[264] हां इस पहाड़ की त़रफ़ देख येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़न्क़रीब तू मुझे देख लेगा[265]

فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ

फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुवा

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ يٰمُوْسٰۤى

बोला पाकी है तुझे मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[266] फ़रमाया ऐ मूसा

اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ

मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तो ले जो मैं ने तुझे अ़त़ा फ़रमाया और

مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ

शुक्र वालों में हो और हम ने उस के लिये तख़्तियों में[267] लिख दी हर चीज़ की नसीह़त और

263 : आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया, इस पर हमारा ईमान है और हमारी क्या ह़क़ीक़त है कि हम उस कलाम की ह़क़ीक़त से बह़स कर सकें, अख़्बार (रिवायतों) में वारिद है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कलाम सुनने के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप ने त़हारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर तूरे सीना में ह़ाज़िर हुए। **अल्लाह** तआ़ला ने एक अब्र नाज़िल फ़रमाया जिस ने पहाड़ को हर त़रफ़ से ब क़दर चार फ़रसंग के ढक लिया। शयात़ीन और ज़मीन के जानवर ह़त्ता कि साथ रहने वाले फ़िरिश्ते तक वहां से अ़लाह़दा कर दिये गए और आप के लिये आस्मान खोल दिया गया तो आप ने मलाएका को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं और आप ने अ़र्शे इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अल्वाह़ पर क़लमों की आवाज़ सुनी और **अल्लाह** तआ़ला ने आप से कलाम फ़रमाया। आप ने उस की बारगाह में अपने मा'रूज़ात पेश किये। उस ने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप के साथ थे लेकिन जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया वोह उन्हों ने कुछ न सुना। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उस के दीदार का आरज़ू मन्द बनाया। (خازن وغیرہ) **264 :** इन आंखों से, सुवाल कर के। बल्कि दीदारे इलाही बिग़ैर सुवाल के मह़ज़ उस की अ़त़ा व फ़ज़्ल से ह़ासिल होगा वोह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाक़ी आंख से या'नी कोई बशर मुझे दुन्या में देखने की त़ाक़त नहीं रखता। **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुम्किन नहीं। इस से साबित हुवा कि दीदारे इलाही मुम्किन है अगर्चे दुन्या में न हो क्यूं कि सह़ीह़ ह़दीसों में है कि रोज़े क़ियामत मोमिनीन अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे इलावा बरीं येह कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़रिफ़ बिल्लाह हैं अगर दीदारे इलाही मुम्किन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते। **265 :** और पहाड़ का साबित रहना अम्रे मुम्किन है क्यूं कि इस की निस्बत फ़रमाया : ''جَعَلَهٗ دَكًّا'' उस को पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की मज्ऊल (बनाई हुई) हो और जिस को वोह मौजूद फ़रमाए, मुम्किन है कि वोह न मौजूद हो अगर उस को न मौजूद करे क्यूं कि वोह अपने फ़े'ल में मुख़्तार है, इस से साबित हुवा कि पहाड़ का इस्तिक़रार अम्रे मुम्किन है मुह़ाल नहीं और जो चीज़ अम्रे मुम्किन पर मुअ़ल्लक़ की जाए वोह भी मुम्किन ही होती है मुह़ाल नहीं होती लिहाज़ा दीदारे इलाही जिस को पहाड़ के साबित रहने पर मुअ़ल्लक़ फ़रमाया गया वोह मुम्किन हुवा तो उन का क़ौल बात़िल है जो **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मुह़ाल बताते हैं। **266 :** बनी इसराईल में से। **267 :** तौरैत की जो सात या दस थीं ज़बर जद की या ज़ुमुर्रुद की।

تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَیْءٍۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ یَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَاؕ

हर चीज़ की तफ़्सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़्बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें[268]

سَاُورِیْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ

अ़न्क़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर[269] और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में

فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّؕ وَ اِنْ یَّرَوْا كُلَّ اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَاۚ وَ اِنْ یَّرَوْا

नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं[270] और अगर सब निशानियां देखें उन पर ईमान न लाएं और अगर हिदायत

سَبِیْلَ الرُّشْدِ لَا یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًاۚ وَ اِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الْغَیِّ یَتَّخِذُوْهُ

की राह देखें उस में चलना पसन्द न करें[271] और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उस में चलने को

سَبِیْلًاؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَ الَّذِیْنَ

मौजूद हो जाएं येह इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन से बे ख़बर बने और जिन्हों ने

كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْؕ هَلْ یُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार (आख़िरत की हाज़िरी) को झुटलाया उन का सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही

كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ۧ وَ اتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِیِّهِمْ عِجْلًا

जो करते थे और मूसा के[272] बा'द उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से[273] एक बछड़ा बना बैठी

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌؕ اَلَمْ یَرَوْا اَنَّهٗ لَا یُكَلِّمُهُمْ وَ لَا یَهْدِیْهِمْ سَبِیْلًاۘ

बेजान का धड़[274] गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वोह उन से न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए[275]

268 : इस के अह़काम पर आ़मिल हों। 269 : जो आख़िरत में उन का ठिकाना है। ह़सन व अ़त़ा ने कहा कि बे हुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है। क़तादा का क़ौल है कि मा'ना येह हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों के मनाज़िल दिखाऊंगा जिन्हों ने अल्लाह की मुख़ालफ़त की ताकि तुम्हें उस से इब्रत ह़ासिल हो। अ़त़िय्या औफ़ी का क़ौल है कि "دارُ الْفَاسِقِین" से फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के मकानात मुराद हैं जो मिस्र में हैं। सुद्दी का क़ौल है कि इस से मनाज़िले कुफ़्फ़ार मुराद हैं। कल्बी ने कहा कि आ़द व समूद और हलाक शुदा उम्मतों के मनाज़िल मुराद हैं जिन पर अ़रब के लोग अपने सफ़रों में हो कर गुज़रा करते थे। 270 : ज़ुन्नून قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हिक्मते क़ुरआन से अहले बात़िल के क़ुलूब का इक्राम नहीं फ़रमाता। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मुराद येह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर तजब्बुर (तकब्बुर व ज़ियादती की रविश इख़्तियार) करते हैं और मेरे औलिया से लड़ते हैं मैं उन्हें अपनी आयतों के क़बूल और तस्दीक़ से फेर दूंगा ताकि वोह मुझ पर ईमान न लाएं, येह उन के इनाद (बुग़्ज़ व दुश्मनी) की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से मह़रूम किया गया। 271 : येही तकब्बुर का समरा मुतकब्बिर का अन्जाम है। 272 : तूर की त़रफ़ अपने रब की मुनाजात के लिये जाने के 273 : जो उन्हों ने क़ौमे फ़िरऔ़न से अपनी ईद के लिये आ़रिय्यत लिये थे 274 : और उस के मुंह में ह़ज़रते जिब्रील के घोड़े के क़दम के नीचे की ख़ाक डाली जिस के असर से वोह 275 : नाक़िस है, आ़जिज़ है, जमाद है या ह़ैवान, दोनों तक़्दीरों पर सलाह़िय्यत नहीं रखता कि पूजा जाए।

اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ

उसे लिया और वोह ज़ालिम थे[276] और जब पचताए और समझे कि हम

ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

बहके बोले अगर हमारा रब हम पर मेहर (रह्‌मो करम) न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ

और जब मूसा[277] अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटा ग़ुस्से में भरा झुंजलाया हुवा[278] कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जा नशीनी की

مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ

मेरे बा'द[279] क्या तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी की[280] और तख़्तियां डाल दीं[281] और अपने भाई के सर के बाल

اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا

पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचने लगा[282] कहा ऐ मेरे मां जाए[283] क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि

يَقْتُلُوْنَنِيْ ۫ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ

मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा[284] और मुझे ज़ालिमों

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۫ۖ وَ

में न मिला[285] अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे[286] और हमें अपनी रह्‌मत के अन्दर ले ले और

اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ

तू सब मेहर (रह्‌म करने) वालों से बढ़ कर मेहर वाला बेशक वोह जो बछड़ा ले बैठे अ़न्क़रीब उन्हें उन के रब

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾

का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचना है दुन्या की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बोहतान हायों (बोहतान बांधने वालों) को

276 : कि उन्हों ने अल्लाह तआ़ला की इबादत से ए'राज़ किया और ऐसे आ़जिज़ो नाक़िस बछड़े को पूजा। **277 :** अपने रब की मुनाजात से मुशर्रफ़ हो कर तूर से **278 :** इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने उन को ख़बर दे दी थी कि सामरी ने उन की क़ौम को गुमराह कर दिया। **279 :** कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका। **280 :** और मेरे तौरैत ले कर आने का इन्तिज़ार न किया। **281 :** तौरैत की। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **282 :** क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी क़ौम का ऐसी बद तरीन मा'सियत में मुब्तला होना निहायत शाक़ और गिरां हुवा तब ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से **283 :** मैं ने क़ौम को रोकने और उन को वा'ज़ो नसीह़त करने में कमी नहीं की लेकिन **284 :** और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिस से वोह ख़ुश हों। **285 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने भाई का उ़ज़्र क़बूल कर के बारगाहे इलाही में **286 :** अगर हम में से किसी से कोई इफ़रात़ या तफ़रीत़ (कमी या बेशी) हो गई। येह दुआ़ आप ने भाई को राज़ी करने और आ'दा की शमातत रफ़्अ़ (दुश्मन के ख़ुश होने को दूर) करने के लिये फ़रमाई।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْۤا٘ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ

और जिन्हों ने बुराइयां कीं और उन के बा'द तौबा की और ईमान लाए तो इस के बा'द

بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۵۳﴾ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ

तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है[287] और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा (दूर हुवा) तख़्तियां

الْاَلْوَاحَ ۚۖ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

उठा लीं और उन की तह़रीर में हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ

और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वा'दे के लिये चुने[288] फिर जब उन्हें

الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا

ज़ल्ज़ले ने लिया[289] मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता[290] क्या तू हमें उस काम

بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ

पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया[291] वोह नहीं मगर तेरा आज़्माना तू उस से बहकाए जिसे चाहे और

تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ

राह दिखाए जिसे चाहे तू हमारा मौला है तो हमें बख़्श दे और हम पर मेह्र (रह़्मो करम) कर और तू सब से बेहतर

الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَاۤ

बख़्शने वाला है और हमारे लिये इस दुन्या में भलाई लिख[292] और आख़िरत में बेशक हम तेरी त़रफ़

اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْۤ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ

रुजूअ़ लाए फ़रमाया[293] मेरा अ़ज़ाब मैं जिसे चाहूं दूं[294] और मेरी रह़मत हर चीज़ को

287 मस्अला : इस आयत से साबित हुवा कि गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा जब बन्दा उन से तौबा करता है तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन सब को मुआ़फ़ फ़रमाता है। **288 :** कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ **अल्लाह** के ह़ुज़ूर में ह़ाज़िर हो कर क़ौम की गौसाला परस्ती की उ़ज़्र ख़्वाही करें चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन्हें ले कर ह़ाज़िर हुए। **289 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ज़ल्ज़ले में मुब्तला होने का सबब येह था कि क़ौम ने जब बछड़ा क़ाइम किया था येह उन से जुदा न हुए थे। (خازن) **290 :** या'नी मीक़ात में ह़ाज़िर होने से पहले ताकि बनी इसराईल उन सब की हलाकत अपनी आंखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़अ़ न मिलता। **291 :** या'नी हमें हलाक न कर और अपना लुत़्फ़ो करम फ़रमा। **292 :** और हमें तौफ़ीक़े त़ाअ़त मर्ह़मत फ़रमा। **293 : अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **294 :** मुझे इख़्तियार है सब मेरे मम्लूक और बन्दे हैं किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं।

شَیْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِیْنَ هُمْ

घेरे है[295] तो अन्क़रीब मैं[296] ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वोह

بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اَلَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الَّذِیْ

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं वोह जो गुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की[297] जिसे

یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِیْلِ٘ یَاْمُرُهُمْ

लिखा हुवा पाएंगे अपने पास तौरैत और इन्जील में[298] वोह उन्हें भलाई

295 : दुन्या में नेक और बद सब को पहुंचती है। **296 :** आख़िरत की **297 :** यहां रसूल से ब इज्माए मुफ़स्सिरीन सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुराद हैं, आप का ज़िक्र वस्फ़े रिसालत से फ़रमाया गया क्यूं कि आप **अल्लाह** और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासिता हैं, फ़राइज़े रिसालत अदा फ़रमाते हैं, **अल्लाह** तआ़ला के अवामिर व नह्य व शराएअ़ व अह़काम उस के बन्दों को पहुंचाते हैं, इस के बा'द आप की तौसीफ़ में नबी फ़रमाया गया, इस का तरजमा ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने "ग़ैब की ख़बरें देने वाले" किया है और येह निहायत ही सह़ीह़ तरजमा है क्यूं कि "نَبَأٌ" (उस) ख़बर को कहते हैं जो मुफ़ीदे इ़ल्म हो और शाइबए किज़्ब से ख़ाली हो। क़ुरआने करीम में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में ब कसरत मुस्ता'मल हुवा है, एक जगह इर्शाद हुवा : "قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِیْمٌ" (तुम फ़रमाओ वोह बड़ी ख़बर है), एक जगह फ़रमाया : "تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهَاۤ اِلَیْكَ" (येह ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी त़रफ़ वह्य करते हैं), एक जगह फ़रमाया : "فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىٕهِمْ" (जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये) और ब कसरत आयात में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में वारिद हुवा है, फिर येह लफ़्ज़ या फ़ाइल के मा'ना में होगा या मफ़ऊ़ल के मा'ना में, पहली सूरत में इस के मा'ना ग़ैब की ख़बरें देने वाले और दूसरी सूरत में इस के मा'ना होंगे ग़ैब की ख़बरें दिये हुए और दोनों मा'ना को क़ुरआने करीम से ताईद पहुंचती है, पहले मा'ना की ताईद इस आयत से होती है : "نَبِّئْ عِبَادِیْۤ" (ख़बर दो मेरे बन्दों को)", दूसरी आयत में फ़रमाया : "قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ" (तुम फ़रमाओ ! क्या मैं तुम्हें ख़बर दूं) और इसी क़बील से है ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शाद जो क़ुरआन में वारिद हुवा : "وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ" (और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो जम्अ़ कर रखते हो) और दूसरी सूरत की ताईद इस आयत से होती है : "نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ" (मुझे इ़ल्म वाले ख़बरदार ने बताया) और ह़क़ीक़त में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ग़ैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं। तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि आप के वस्फ़ में नबी फ़रमाया क्यूं कि नबी होना आ'ला और अशरफ़ मरातिब में से है और येह इस पर दलालत करता है कि आप **अल्लाह** के नज़्दीक बहुत बुलन्द दरजे रखने वाले और उस की त़रफ़ से ख़बर देने वाले हैं। "اُمِّی" का तरजमा ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने (बे पढ़े) फ़रमाया, येह तरजमा बिल्कुल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के इर्शाद के मुताबिक़ है और यक़ीनन "उम्मी" होना आप के मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा है कि दुन्या में किसी से पढ़े नहीं और किताब वोह लाए जिस में अव्वलीन व आख़िरीन और ग़ैबों के उ़लूम हैं। (خازن)

خاکی و بر اوج عرش منزل — اُمّی و کتاب خانہ در دل
बशर ऐसे कि अ़र्श की बुलन्दियों पर आप का मक़ाम है — उम्मी ऐसे कि तमाम उ़लूम का ख़ज़ाना आप के दिल में है

دیگر اُمّی و دقیقہ دانِ عالَم — بے سایہ و سائبانِ عالَم
उम्मी हैं मगर दक़ीक़ा दाने जहां हैं — बे साया हैं लेकिन साएबाने जहां हैं (صَلٰوةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ سَلَامُهٗ)

298 : या'नी तौरैत व इन्जील में आप की ना'त व सिफ़त व नुबुव्वत लिखी पाएंगे। **ह़दीस :** ह़ज़रते अ़त़ा इब्ने यसार ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के वोह औसाफ़ दरयाफ़्त किये जो तौरैत में मज़्कूर हैं, उन्हों ने फ़रमाया कि ह़ुज़ूर के जो औसाफ़ क़ुरआने करीम में आए हैं उन्हीं में से बा'ज़ औसाफ़ तौरैत में मज़्कूर हैं, इस के बा'द उन्हों ने पढ़ना शुरूअ़ किया ऐ नबी ! हम ने तुम्हें भेजा शाहिद व मुबश्शिर और नज़ीर और उम्मियों का निगहबां बना कर, तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो, मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा, न बद ख़ुल्क़ हो न सख़्त मिज़ाज, न बाज़ारों में आवाज़ बुलन्द करने वाले, न बुराई से बुराई को दफ़्अ़ करो, लेकिन ख़त़ाकारों को मुआ़फ़ करते हो और उन पर एह़सान फ़रमाते हो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें न उठाएगा जब तक कि तुम्हारी बरकत से ग़ैर मुस्तक़ीम मिल्लत (सीधे रास्ते से भटके हुए लोगों) को इस त़रह रास्त (राहे ह़क़ पर) न फ़रमा दे कि लोग सिद्क़ो यक़ीन के साथ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अन्धी आंखें "बीना" और बहरे कान "शिन्वा" (सुनने वाले) और पर्दों में लिपटे हुए दिल "कुशादा" हो जाएं और ह़ज़रते का'ब अह़बार से ह़ुज़ूर की सिफ़ात में तौरैत शरीफ़ का येह मज़्मून भी मन्क़ूल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की सिफ़त में फ़रमाया कि मैं उन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा और हर ख़ुल्क़े करीम अ़त़ा फ़रमाऊंगा और इत़्मीनाने क़ल्ब व वक़ार को उन का लिबास बनाऊंगा

بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ

का हुक्म देगा और बुराई से मन्अ़ फ़रमाएगा और सुथरी चीजें उन के लिये ह़लाल फ़रमाएगा और गन्दी चीजें

عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर ह़राम करेगा और उन पर से वोह बोझ[299] और गले के फन्दे[300] जो उन पर थे उतारेगा

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ

तो वोह जो उस पर[301] ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के

और ताआत व एह़सान को उन का शिआर करूंगा और तक़्वे को उन का ज़मीर और ह़िक्मत को उन का राज़ और सिद्क़ो वफ़ा को उन की त़बीअ़त और अ़फ़्वो करम को उन की आ़दत और अ़द्ल को उन की सीरत और इज़्हारे ह़क़ को उन की शरीअ़त और हिदायत को उन का इमाम और इस्लाम को उन की मिल्लत बनाऊंगा। अह़मद उन का नाम है, ख़ल्क़ को उन के सदक़े में गुमराही के बा'द हिदायत और जहालत के बा'द इल्मो मा'रिफ़त और गुमनामी के बा'द रिफ़्अ़तो मन्ज़िलत अ़त़ा करूंगा और उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बा'द कसरत और फ़क़्र के बा'द दौलत और तफ़्रिक़े के बा'द मह़ब्बत इनायत करूंगा, उन्हीं की बदौलत मुख़्तलिफ़ क़बाइल, ग़ैर मुज्तमअ़ ख़्वाहिशों और इख़्तिलाफ़ रखने वाले दिलों में उल्फ़त पैदा करूंगा और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों से बेहतर करूंगा। एक और ह़दीस में तौरैत शरीफ़ से हुज़ूर के येह औसाफ़ मन्क़ूल हैं: मेरे बन्दे अह़मदे मुख़्तार, उन का जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा और जाए हिजरत मदीनए त़य्यिबा है, उन की उम्मत हर ह़ाल में अल्लाह की कसीर ह़म्द करने वाली है। येह चन्द नुक़ूल अह़ादीस से पेश किये गए। कुतुबे इलाहिय्यह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त से भरी हुई थीं, अहले किताब हर क़र्न (ज़माने) में अपनी किताबों में तराश ख़राश करते रहे और उन की बड़ी कोशिश इस पर मुसल्लत़ रही की हुज़ूर का ज़िक्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें। तौरैत इन्जील वग़ैरा उन के हाथ में थीं इस लिये उन्हें इस में कुछ दुश्वारी न थी, लेकिन हज़ारों तब्दीलियां करने के बा'द भी मौजूदा ज़माने की बाईबल में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बिशारत का कुछ न कुछ निशान बाक़ी रह ही गया, चुनान्चे ब्रिटिश एन्ड फ़ोरन बाईबल सोसायटी लाहोर 1931 सि.ई. की छपी हुई बाईबल में यूह़न्ना की इन्जील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है: "और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वोह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे।" लफ़्ज़ "मददगार" पर ह़ाशिया है उस में इस के मा'ने वकील या शफ़ीअ़ लिखे (हैं) तो अब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ़ हो और अबद तक रहे या'नी उस का दीन कभी मन्सूख़ न हो बजुज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कौन है? फिर उन्तीसवीं तीसवीं आयत में है: "और अब मैं ने तुम से उस के होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यक़ीन करो इस के बा'द मैं तुम से बहुत सी बातें न करूंगा क्यूं कि दुन्या का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं।" कैसी साफ़ बिशारत है और ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी उम्मत को हुज़ूर की विलादत का कैसा मुन्तज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है और दुन्या का सरदार ख़ास सय्यिदे आ़लम का तरजमा है और येह फ़रमाना कि मुझ में उस का कुछ नहीं हुज़ूर की अ़ज़्मत का इज़्हार और इस के हुज़ूर अपना कमाले अदब व इन्किसार है फिर इसी किताब के बाब सोलह की सातवीं आयत है: "लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ाएदे मन्द है क्यूं कि अगर मैं न जाऊं तो वोह मददगार तुम्हारे पास न आएगा लेकिन अगर जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" इस में हुज़ूर की बिशारत के साथ इस का भी साफ़ इज़्हार है कि हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया हैं आप का ज़ुहूर जब ही होगा जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام भी तशरीफ़ ले जाएं। इस की तेरहवीं आयत है: "लेकिन जब वोह या'नी सच्चाई का रूह़ आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इस लिये कि वोह अपनी त़रफ़ से न कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा और तुम्हें आयिन्दा की ख़बरें देगा।" इस आयत में बताया गया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की आमद पर दीने इलाही की तक्मील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह या'नी दीने ह़क़ को मुकम्मल कर देंगे इस से येही नतीजा निकलता है कि उन के बा'द कोई नबी न होगा और येह कलिमे कि अपनी त़रफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा ख़ास "مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى" का तरजमा है और येह जुम्ला कि तुम्हें आयिन्दा की ख़बरें देगा इस में साफ़ बयान है कि वोह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़ैबी उ़लूम ता'लीम फ़रमाएंगे जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया: "يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ" (और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था) और "مَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ" (येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं) **299**: या'नी सख़्त तक्लीफ़ें जैसे कि तौबा में अपने आप को क़त्ल करना और जिन आ'ज़ा से गुनाह सादिर हों उन को काट डालना। **300**: या'नी अह़कामे शाक़्क़ा (वोह अह़काम जिन पर अ़मल करना दुश्वार हो) जैसे कि बदन और कपड़े के जिस मक़ाम को नजासत लगे उस को कैंची से काट डालना और ग़नीमतों को जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना वग़ैरा। **301**: या'नी मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर।

مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

साथ उतरा[302] वोही बा मुराद हुए तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ उस

اِلَیْكُمْ جَمِیْعَا الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

अल्लाह का रसूल हूं[303] कि आस्मान व ज़मीन की बादशाही उसी को है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं

یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ

जिलाए और मारे (ज़िन्दगी और मौत दे) तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि **अल्लाह** और उस की

بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ

बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ और मूसा की क़ौम से एक गुरौह है

یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا

कि ह़क़ की राह बताता और उसी से[304] इन्साफ़ करता और हम ने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले

اُمَمًا ؕ وَ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ

गुरौह गुरौह और हम ने वह़्य भेजी मूसा को जब उस से उस की क़ौम ने[305] पानी मांगा कि इस पथ्थर पर अपना

الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

अ़सा मारो तो उस में से बारह चश्मे फूट निकले[306] हर गुरौह ने अपना घाट

مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَ ظَلَّلْنَا عَلَیْهِمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَیْهِمُ الْمَنَّ وَ

पहचान लिया और हम ने उन पर अब्र साएबान किया[307] और उन पर मन्न व सल्वा

السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا

उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीजें और उन्हों ने[308] हमारा कुछ नुक़्सान न किया लेकिन अपनी ही

302 : इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है जिस से मोमिन का दिल रोशन होता है और शक व जहालत की तारीकियां दूर होती हैं और इल्मो यक़ीन की ज़िया फैलती है। **303 :** येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : हुज़ूर फ़रमाते हैं : पांच चीजें मुझे ऐसी अ़त़ा हुईं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं : (1) हर नबी ख़ास क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स होता था और मैं सुर्ख़ व सियाह की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया। (2) मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं। (3) मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (क़ाबिले तयम्मुम) और मस्जिद की गई, जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले। (4) दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई। (5) और मुझे शफ़ाअ़त इनायत की गई। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में येह भी है कि मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए। **304 :** या'नी ह़क़ से **305 :** तीह में **306 :** हर गुरौह के लिये एक चश्मा। **307 :** ताकि धूप से अम्न में रहें। **308 :** ना शुक्री कर के।

اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿١٦٠﴾ وَ اِذۡ قِيۡلَ لَهُمُ اسۡكُنُوۡا هٰذِهِ الۡقَرۡيَةَ وَكُلُوۡا

जानों का बुरा करते थे और याद करो जब उन[309] से फ़रमाया गया उस शह्‌र में बसो[310] और उस में

مِنۡهَا حَيۡثُ شِئۡتُمۡ وَقُوۡلُوۡا حِطَّةٌ وَّادۡخُلُوا الۡبَابَ سُجَّدًا نَّغۡفِرۡ لَكُمۡ

जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे (ऐ अल्लाह हमारे गुनाह बख़्श दे) और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह

خَطِيۡٓـٰٔتِكُمۡ‌ؕ سَنَزِيۡدُ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡهُمۡ قَوۡلًا

बख़्श देंगे अ़न्क़रीब नेकों को ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे तो उन में के ज़ालिमों ने बात बदल दी

غَيۡرَ الَّذِىۡ قِيۡلَ لَهُمۡ فَاَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ رِجۡزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوۡا

उस के ख़िलाफ़ जिस का उन्हें हुक्म था[311] तो हम ने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा बदला उन के

يَظۡلِمُوۡنَ ﴿١٦٢﴾ ع وَسۡـَٔلۡهُمۡ عَنِ الۡقَرۡيَةِ الَّتِىۡ كَانَتۡ حَاضِرَةَ الۡبَحۡرِ‌ۘ اِذۡ

ज़ुल्म का[312] और उन से हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी[313] जब

يَعۡدُوۡنَ فِى السَّبۡتِ اِذۡ تَاۡتِيۡهِمۡ حِيۡتَانُهُمۡ يَوۡمَ سَبۡتِهِمۡ شُرَّعًا وَّيَوۡمَ لَا

वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ते[314] जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन

309 : बनी इसराईल 310 : या'नी बैतुल मक़्दिस में 311 : या'नी हुक्म तो येह था कि "حِطَّةٌ" कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों "حِطَّةٌ" तौबा और इस्तिग़्फ़ार का कलिमा है लेकिन वोह बजाए इस के बराहे तमस्ख़ुर "حِنْطَةٌ فِىْ شعيرة" कहते हुए दाख़िल हुए। 312 : या'नी अ़ज़ाब भेजने का सबब उन का ज़ुल्म और हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त करना है। 313 : ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब है कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूद से तौबीख़न (मलामत करते हुए) उस बस्ती वालों का हाल दरयाफ़्त फ़रमाएं, मक़्सूद इस सुवाल से येह था कि कुफ़्फ़ार पर ज़ाहिर कर दिया जाए कि कुफ़्रो मा'सियत इन का क़दीमी दस्तूर है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के मो'जिज़ात का इन्कार करना येह उन के लिये कोई नई बात नहीं है इन के पहले भी कुफ़्र पर मुसिर रहे हैं। इस के बा'द उन के अस्लाफ़ का हाल बयान फ़रमाया कि वोह हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त के सबब बन्दरों और सुअरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए, उस बस्ती में इख़्तिलाफ़ है कि वोह कौन सी थी? ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह एक क़र्या मिस्र व मदीने के दरमियान है। एक क़ौल है कि मद्यन व तूर के दरमियान। ज़ोहरी ने कहा कि वोह क़र्या तबरिया शाम है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की एक रिवायत में है कि वोह मद्यन है। बा'ज़ ने कहा : ऐला है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم 314 : कि बा वुजूद मुमानअ़त के हफ़्ते के रोज़ शिकार करते, उस बस्ती के लोग तीन गुरौह में मुन्क़सिम हो गए थे एक तिहाई ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मन्अ़ करते थे और एक तिहाई ख़ामोश थे दूसरों को मन्अ़ न करते थे और मन्अ़ करने वालों से कहते थे ऐसी क़ौम को क्यूं नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है, और एक गुरौह वोह ख़ताकार लोग थे जिन्हों ने हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और शिकार किया और खाया और बेचा और जब वोह इस मा'सियत से बाज़ न आए तो मन्अ़ करने वाले गुरौह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ बूदो बाश (रहना सहना इकठ्ठा) न रखेंगे और गाउं को तक़्सीम कर के दरमियान में एक दीवार खींच दी। मन्अ़ करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था जिस से आते जाते थे। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ताकारों पर ला'नत की। एक रोज़ मन्अ़ करने वालों ने देखा कि ख़ताकारों में से कोई नहीं निकला तो उन्हों ने ख़याल किया कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे, उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़े तो देखा कि वोह बन्दरों की सूरतों में मस्ख़ हो गए थे। अब येह लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़े सूंघते थे और येह लोग उन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे उन लोगों ने उन से कहा क्या हम लोगों ने तुम को मन्अ़ नहीं किया था ! उन्हों ने सर के इशारे से कहा : हां। और वोह सब हलाक हो गए और मन्अ़ करने वाले सलामत रहे।

معانقة النصف

يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَاِذْ

हफ़्ते का न होता न आतीं इस त़रह़ हम उन्हें आज़्माते थे उन की बे हुक्मी के सबब और जब

قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब

شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا

देने वाला बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर मा'ज़िरत को[315] और शायद उन्हें डर हो[316] फिर जब वोह भुला बैठे

مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ

जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे और ज़ालिमों को

ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا

बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की

عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ﴿۱۶۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ

हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुत्कारे (धुत्कारे) हुए[317] और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर

عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ

क़ियामत के दिन तक उन[318] पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए[319] बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द

الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ

अ़ज़ाब वाला है[320] और बेशक वोह बख़्शने वाला मेह्रबान है[321] और उन्हें हम ने ज़मीन में मुतफ़र्रिक़ कर दिया गुरौह गुरौह उन में कुछ

الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ

नेक हैं[322] और कुछ और त़रह़ के[323] और हम ने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आज़्माया कि कहीं

يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ

वोह रुजूअ़ लाएं[324] फिर उन की जगह उन के बा'द वोह[325] ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए[326] इस दुन्या

315 : ताकि हम पर "नही अ़निल मुन्कर" तर्क करने का इल्ज़ाम न रहे। 316 : और वोह नसीह़त से नफ़्अ़ उठा सकें। 317 : वोह बन्दर हो गए और तीन रोज़ इसी ह़ाल में मुब्तला रह कर हलाक हो गए। 318 : यहूद 319 : चुनान्चे उन पर अल्लाह तआ़ला ने बुख़्ते नस्सर और सिन्जारीब और शाहाने रूम को भेजा जिन्हों ने उन्हें सख़्त ईज़ाएं और तक्लीफ़ें दीं और क़ियामत तक के लिये उन पर जिज़्या और ज़िल्लत लाज़िम हुई। 320 : उन के लिये जो कुफ़्र पर क़ाइम रहें। इस आयत से साबित हुवा कि उन पर अ़ज़ाब मुस्तमिर (हमेशा) रहेगा दुन्या में भी और आख़िरत में भी। 321 : उन को जो अल्लाह की इत़ाअ़त करें और ईमान लाएं। 322 : जो अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और दीन पर साबित रहे। 323 : जिन्हों ने ना फ़रमानी

عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَ يَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ

का माल लेते हैं[327] और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी[328] और अगर वैसा ही माल उन के पास और आए

يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

तो ले लें[329] क्या उन पर किताब में अ़ह्द न लिया गया कि अल्लाह की त़रफ़ निस्बत न करें

اِلَّا الْحَقَّ وَ دَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ

मगर ह़क़ और उन्हों ने उसे पढ़ा[330] और बेशक पिछला घर (आख़िरत) बेहतर है परहेज़ गारों को[331]

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَ الَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا

तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं और वोह जो किताब को मज़बूत़ थामते हैं[332] और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम रखी हम

لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّ

नेकों का नेग (सवाब) नहीं गंवाते (ज़ाएअ़ नहीं करते) और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गोया वोह साएबान है और

ظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ

समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा[333] लो जो हम ने तुम्हें दिया ज़ोर से[334] और याद करो जो उस में है कि कहीं

की और जिन्हों ने कुफ़्र किया और दीन को बदला और मुतग़य्यर किया। **324 :** भलाइयों से ने'मतो राह़त और बुराइयों से शिद्दतो तक्लीफ़ मुराद है। **325 :** जिन की दो क़िस्में बयान फ़रमाई गईं। **326 :** या'नी तौरैत के, जो उन्हों ने अपने अस्लाफ़ से पाई और उस के अवामिर व नवाही और तह़लील व तह़रीम वग़ैरा मज़ामीन पर मुत्तलअ़ हुए। मदारिक में है कि येह वोह लोग हैं जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने में थे उन की ह़ालत येह है कि **327 :** बत़ौर रिश्वत के अह़काम की तब्दील और कलाम की तग़्यीर पर और वोह जानते भी हैं कि येह ह़राम है लेकिन फिर भी इस गुनाहे अ़ज़ीम पर मुसिर हैं। **328 :** और इन गुनाहों पर हम से कुछ मुआख़ज़ा न होगा। **329 :** और आयिन्दा भी गुनाह करते चले जाएं। सुद्दी ने कहा कि बनी इसराईल में कोई क़ाज़ी ऐसा न होता था जो रिश्वत न ले, जब उस से कहा जाता था कि तुम रिश्वत लेते हो तो कहता था कि येह गुनाह बख़्श दिया जाएगा। उस के ज़माने में दूसरे उस पर त़ा'न करते थे लेकिन जब वोह मर जाता या मा'ज़ूल कर दिया जाता और वोही त़ा'न करने वाले उस की जगह ह़ाकिम व क़ाज़ी होते तो वोह भी इसी त़रह़ रिश्वत लेते। **330 :** लेकिन बा वुजूद इस के उन्हों ने उस के ख़िलाफ़ किया। तौरैत में गुनाह पर इसरार करने वाले के लिये मग़्फ़िरत का वा'दा न था तो उन का गुनाह किये जाना तौबा न करना और इस पर येह कहना कि हम से मुआख़ज़ा न होगा येह अल्लाह पर इफ़्तिरा है। **331 :** जो अल्लाह के अ़ज़ाब से डरें और रिश्वत व ह़राम से बचें और उस की फ़रमां बरदारी करें **332 :** और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हैं और उस के तमाम अह़काम को मानते हैं और उस में तग़्यीर व तब्दील रवा (जाइज़) नहीं रखते। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले किताब में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरा ऐसे अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहली किताब का इत्तिबाअ़ किया उस की तह़रीफ़ न की, उस के मज़ामीन को न छुपाया और उस किताब के इत्तिबाअ़ की बदौलत उन्हें कुरआने पाक पर ईमान नसीब हुवा। (خازن ومدارک) **333 :** जब बनी इसराईल ने तकालीफ़े शाक़्क़ा की वज्ह से अह़कामे तौरैत को क़बूल करने से इन्कार किया तो ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही एक पहाड़ जिस की मिक़्दार उन के लश्कर के बराबर एक फ़रसंग त़वील एक फ़रसंग अ़रीज़ थी उठा कर साएबान की त़रह़ उन के सरों के क़रीब कर दिया और उन से कहा गया कि अह़कामे तौरैत क़बूल करो वरना येह तुम पर गिरा दिया जाएगा, पहाड़ को सरों पर देख कर सब के सब सज्दे में गिर गए मगर इस त़रह़ कि बायां रुख़्सारा व अब्रू तो उन्हों ने सज्दे में रख दी और दाह्नी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े चुनान्चे अब तक यहूदियों के सज्दे की शान येही है। **334 :** अ़ज़्म व कोशिश से।

تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾ وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ

तुम परहेज़ गार हो और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और

اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى شَهِدْنَا اَنْ تَقُوْلُوْا

उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं[335] सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुए[336] कि कहीं

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِیْنَ ﴿١٧٢﴾ اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ

क़ियामत के दिन कहो कि हमें इस की ख़बर न थी[337] या कहो कि शिर्क तो पहले

اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا ذُرِّیَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

हमारे बाप दादा ने किया और हम उन के बा'द बच्चे हुए[338] तो क्या तू हमें उस पर हलाक फ़रमाएगा जो

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ وَ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾ وَ اتْلُ

अहले बातिल ने किया[339] और हम इसी तरह आयतें रंग रंग (तफ़्सील) से बयान करते हैं[340] और इस लिये कि कहीं वोह फिर आएं[341] और ऐ महबूब

عَلَیْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ

उन्हें उस का अह्वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं[342] तो वोह उन से साफ़ निकल गया[343] तो शैतान उस के पीछे लगा तो

335 : हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पुश्त से उन की ज़ुर्रिय्यत निकाली और उन से अ़हद लिया। आयात व हदीस दोनों पर नज़र करने से येह मा'लूम होता है कि ज़ुर्रिय्यत का निकालना उस सिल्सिले के साथ था जिस तरह कि दुन्या में एक दूसरे से पैदा होंगे और उन के लिये रबूबिय्यत और वहदानिय्यत के दलाइल क़ाइम फ़रमा कर और अ़क़्ल दे कर उन से अपनी रबूबिय्यत की शहादत तलब फ़रमाई **336 :** अपने ऊपर और हम ने तेरी रबूबिय्यत और वहदानिय्यत का इक़रार किया। येह शाहिद करना इस लिये है **337 :** हमें कोई तम्बीह नहीं की गई थी। **338 :** जैसा उन्हें देखा उन के इत्तिबाअ़ व इक़्तिदा में वैसा ही करते रहे। **339 :** येह उ़ज़्र करने का मौक़अ़ न रहा जब कि उन से अ़हद ले लिया गया और उन के पास रसूल आए और उन्हों ने उस अ़हद को याद दिलाया और तौहीद पर दलाइल क़ाइम हुए। **340 :** ताकि बन्दे तदब्बुर व तफ़क्कुर कर के हक़ व ईमान क़बूल करें **341 :** शिर्को कुफ़्र से तौहीदो ईमान की तरफ़ और नबी साहिबे मो'जिज़ात के बताने से अपने अ़हदे मीसाक़ को याद करें और उस के मुताबिक़ अ़मल करें। **342 :** या'नी बल्अ़म बाऊ़र जिस का वाक़िआ़ मुफ़स्सिरीन ने इस तरह बयान किया है कि जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जब्बारीन से जंग का क़स्द किया और सर ज़मीने शाम में नुज़ूल फ़रमाया तो बल्अ़म बाऊ़र की क़ौम उस के पास आई और उस से कहने लगी कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उन के साथ कसीर लश्कर है वोह यहां आए हैं, हमें हमारे बिलाद से निकालेंगे और क़त्ल करेंगे और बजाए हमारे बनी इसराईल को इस सर ज़मीन में आबाद करेंगे, तेरे पास इस्मे आ'ज़म है और तेरी दुआ़ क़बूल होती है तू निकल और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कर कि अल्लाह तआ़ला उन्हें यहां से हटा दे। बल्अ़म बाऊ़र ने कहा : तुम्हारा बुरा हो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं और उन के साथ फ़िरिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं मैं कैसे उन पर दुआ़ करूं, मैं जानता हूं जो अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक उन का मर्तबा है, अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाएगी, मगर क़ौम उस से इसरार करती रही और बहुत इल्हाहो ज़ारी (रोने पीटने) के साथ उन्हों ने अपना येह सुवाल जारी रखा तो बल्अ़म बाऊ़र ने कहा कि मैं अपने रब की मरज़ी मा'लूम कर लूं और इस का येही तरीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ़ करता पहले मरज़िये इलाही मा'लूम कर लेता और ख़्वाब में उस का जवाब मिल जाता, चुनान्चे इस मरतबा भी उस को येही जवाब मिला कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के हमराहियों के ख़िलाफ़ दुआ़ न करना उस ने क़ौम से कह दिया कि मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन पर दुआ़ करने की मुमानअ़त फ़रमा दी, तब क़ौम ने उस को हदिये और नज़राने दिये जो उस ने क़बूल किये और क़ौम ने अपना सुवाल जारी रखा तो फिर दूसरी मरतबा बल्अ़म बाऊ़र ने रब तबारक व तआ़ला से इजाज़त चाही उस का कुछ जवाब न मिला उस ने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस मरतबा कुछ जवाब ही न मिला तो क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर अल्लाह को मन्ज़ूर न होता तो वोह पहले की तरह दोबारा

مِنَ الْغٰوِیْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ

गुमराहों में हो गया और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते[344] मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया[345] और

اتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ

अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुवा तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो

یَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

ज़बान निकाले[346] येह ह़ाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो तुम नसीह़त

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ مَثَلَا الْقَوْمُ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا

सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें क्या बुरी कहावत है उन की जिन्हों ने हमारी आयतें

بِاٰیٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِیْ ۚ وَ

झुटलाईं और अपनी ही जान का बुरा करते थे जिसे **अल्लाह** राह दिखाए तो वोही राह पर है और

مَنْ یُّضْلِلْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾ وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِیْرًا مِّنَ

जिसे गुमराह करे तो वोही नुक़्सान में रहे और बेशक हम ने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत

الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا یَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اَعْیُنٌ لَّا یُبْصِرُوْنَ

जिन्न और आदमी[347] वोह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं[348] और वोह आंखें जिन से देखते नहीं[349]

بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا یَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ

और वोह कान जिन से सुनते नहीं[350] वोह चौपायों की त़रह़ हैं[351] बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह[352]

भी मन्अ़ फ़रमाता और क़ौम का इल्ह़ाह़ व इसरार और भी ज़ियादा हुवा, ह़त्ता कि उन्हों ने उस को फ़ित्ने में डाल दिया और आख़िर कार वोह बद दुआ़ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो बद दुआ़ करता था **अल्लाह** तआ़ला उस की ज़बान को उस की क़ौम की त़रफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो दुआ़ए ख़ैर करता था बजाए क़ौम के बनी इसराईल का नाम उस की ज़बान पर आता था। क़ौम ने कहा : ऐ बल्अ़म ! येह क्या कर रहा है ? बनी इसराईल के लिये दुआ़ करता है हमारे लिये बद दुआ़। कहा : येह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और उस की ज़बान बाहर निकल पड़ी तो उस ने अपनी क़ौम से कहा : मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो गईं। इस आयत में इस का बयान है। **343 :** और उन का इत्तिबाअ़ न किया। **344 :** और बुलन्द दरजा अ़त़ा फ़रमा कर अबरार (फ़रमां बरदारों) की मनाज़िल में पहुंचाते **345 :** और दुन्या का मफ़्तूं हो गया **346 :** येह एक ज़लील जानवर के साथ तश्बीह है कि दुन्या की ह़िर्स रखने वाला अगर उस को नसीह़त करो तो मुफ़ीद नहीं, मुब्तलाए ह़िर्स रहता है, छोड़ दो तो उसी ह़िर्स का गिरिफ़्तार। जिस त़रह़ ज़बान निकालना कुत्ते की लाज़िमी त़बीअ़त है ऐसी ही ह़िर्स उन के लिये लाज़िम हो गई है। **347 :** या'नी कुफ़्फ़ार जो आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर से ए'राज़ करते हैं और उन का काफ़िर होना **अल्लाह** के इल्मे अज़ली में है। **348 :** या'नी ह़क़ से ए'राज़ कर के आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर करने से मह़रूम हो गए और येही दिल का ख़ास काम था। **349 :** राहे ह़क़ व हिदायत और आयाते इलाहिय्यह और दलाइले तौह़ीद। **350 :** मौइज़त व नसीह़त को बगोश (वा'ज़ नसीह़त को ग़ौर व तवज्जोह से सुन कर) क़बूल और बा वुजूद क़ल्बो ह़वास रखने के वोह उमूरे दीन में उन से नफ़्अ़ नहीं उठाते लिहाज़ा **351 :** कि अपने क़ल्बो ह़वास से मदारिके इल्मिय्या व मआ़रिफ़े रब्बानिया का इदराक नहीं करते हैं। खाने पीने के दुन्यवी कामों में तमाम ह़ैवानात भी अपने ह़वास से काम लेते हैं, इन्सान भी इतना ही करता रहा तो इस को बहाइम पर क्या फ़ज़ीलत।

اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَ ذَرُوا

वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं और अल्लाह ही के हैं बहुत अच्छे नाम[353] तो उसे उन से पुकारो और उन्हें छोड़ दो

الَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اَسْمَآىٕهٖ ؕ سَیُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ

जो उस के नामों में हक़ से निकलते हैं[354] वोह जल्द अपना किया पाएंगे और

مِمَّنْ خَلَقْنَاۤ اُمَّةٌ یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا

हमारे बनाए हुओं में एक गुरौह वोह है कि हक़ बताएं और उस पर इन्साफ़ करें[355] और जिन्हों ने हमारी आयतें

بِاٰیٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَیْثُ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾ وَ اُمْلِیْ لَهُمْ ؕ اِنَّ

झुटलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता[356] अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा[357] बेशक

كَیْدِیْ مَتِیْنٌ ﴿۱۸۳﴾ اَوَ لَمْ یَتَفَكَّرُوْا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ

मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है[358] क्या सोचते नहीं कि उन के साहिब को जुनून से कुछ अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं वोह तो साफ़

اِلَّا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۸۴﴾ اَوَ لَمْ یَنْظُرُوْا فِیْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا

डर सुनाने वाले हैं[359] क्या उन्हों ने निगाह न की आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत में और जो जो

352 : क्यूं कि चौपाया भी अपने नफ़्अ़ की त़रफ़ बढ़ता है और ज़रर से बचता और उस से पीछे हटता है और काफ़िर जहन्नम की राह चल कर अपना ज़रर इख़्तियार करता है तो इस से बदतर हुवा। आदमी रूह़ानी, शहवानी, समावी, अर्ज़ी है जब इस की रूह़ शहवात पर ग़ालिब हो जाती है तो मलाएका से फ़ाइक़ हो जाता है और जब शहवात रूह़ पर ग़लबा पा जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है। **353 :** ह़दीस शरीफ़ में है अल्लाह तआ़ला के निनानवे[99] नाम जिस किसी ने याद कर लिये जन्नती हुवा। उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अस्माए इलाहिय्यह निनानवे में मुन्ह़सर नहीं हैं, ह़दीस का मक़्सूद सिर्फ़ येह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है। **शाने नुज़ूल :** अबू जह्ल ने कहा था कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा ﷺ) का दा'वा तो येह है कि वोह एक परवर्दगार की इ़बादत करते हैं फिर वोह अल्लाह और रह़मान दो को क्यूं पुकारते हैं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस जाहिले बे ख़िरद (बे अ़क़्ल) को बताया गया कि मा'बूद तो एक ही है नाम उस के बहुत हैं। **354 :** उस के नामों में ह़क़ व इस्तिक़ामत से निकलना कई त़रह़ पर है। **मसाइल : एक** तो येह कि उस के नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इत़्लाक़ करना जैसा कि मुश्रिकीन ने ''इलाह'' का ''लात'' और ''अ़ज़ीज़'' का ''उ़ज़्ज़ा'' और ''मन्नान'' का ''मनात'' कर के अपने बुतों के नाम रखे थे, येह नामों में ह़क़ से तजावुज़ और ना जाइज़ है। **दूसरे** येह कि अल्लाह तआ़ला के लिये ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जो क़ुरआन व ह़दीस में न आया हो येह भी जाइज़ नहीं, जैसे कि सख़ी या रफ़ीक़ कहना क्यूं कि अल्लाह तआ़ला के अस्माए तौक़ीफ़िया (या'नी शरीअ़त से ही मा'लूम हो सकते) हैं। **तीसरे** ह़ुस्ने अदब की रिआ़यत करना, तो फ़क़त़ يا ضارُّ یانافع یامعطی یاخَالِقَ الْخَلق کہنا जाइज़ नहीं बल्कि दूसरे अस्मा के साथ मिला कर कहा जाएगा یاضَارّ یامانع یاخَالِقَ الْقِرَدَۃ। **चौथे** येह कि अल्लाह तआ़ला के लिये कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जिस के मा'ना फ़ासिद हों, येह भी बहुत सख़्त ना जाइज़ है जैसे कि लफ़्ज़ ''राम'' और ''परमात्मा'' वग़ैरा। **पन्जुम** ऐसे अस्मा का इत़्लाक़ जिन के मा'ना मा'लूम नहीं हैं और येह नहीं जाना जा सकता कि वोह जलाले इलाही के लाइक़ हैं या नहीं **355 :** येह गुरौह ह़क़ पजोह (अहले ह़क़) उ़लमा और हादियाने दीन का है। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि हर ज़माने के अहले ह़क़ का इज्माअ़ ह़ुज्जत है और येह भी साबित हुवा कि कोई ज़माना ह़क़ परस्तों और दीन के हादियों से ख़ाली न होगा जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि एक गुरौह मेरी उम्मत का ता क़ियामत दीने ह़क़ पर क़ाइम रहेगा, उस को किसी की अ़दावत व मुख़ालफ़त ज़रर न पहुंचा सकेगी। **356 :** या'नी तदरीजी **357 :** उन की उ़म्रें दराज़ कर के **358 :** और मेरी गिरिफ़्त सख़्त। **359 शाने नुज़ूल :** जब नबिय्ये करीम ﷺ ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर शब के वक़्त क़बीले क़बीले को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराने वाला हूं और आप ने उन्हें अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले ह़वादिस का ज़िक्र किया तो उन में से किसी ने आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत की इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया क्या उन्हों ने फ़िक्रो तअम्मुल से काम न लिया

خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّ اَنْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ

चीज़ अल्लाह ने बनाई[360] और येह कि शायद उन का वा'दा नज़्दीक आ गया हो[361]

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَ

तो इस के बा'द और कौन सी बात पर यक़ीन लाएंगे[362] जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और

يَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ

उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें तुम से क़ियामत को पूछते हैं[363] कि वोह कब को ठहरी है

مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔؕ ثَقُلَتْ

(कब आएगी) तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा[364] भारी पड़ रही है

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ

आस्मानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तहक़ीक़

عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ قُلْ

कर रखा है तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं[365] तुम फ़रमाओ

لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ

मैं अपनी जान के भले बुरे का ख़ुद मुख़्तार नहीं[366] मगर जो अल्लाह चाहे[367] और अगर मैं ग़ैब जान

وقف منزل / وقف لازم

और आक़िबत अन्देशी व दूरबीनी बिल्कुल बालाए ताक़ रख दी और येह देख कर कि सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अक़्वाल व अफ़्आल में उन के मुख़ालिफ़ हैं और दुन्या और इस की लज़्ज़तों से आप ने मुंह फेर लिया है, आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह हैं और अल्लाह तआला की त़रफ़ दा'वत देने और उस का ख़ौफ़ दिलाने में शबो रोज़ मश्ग़ूल हैं, उन लोगों ने आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत कर दी, येह उन की ग़लती है। **360 :** उन सब में उस की वहदानिय्यत और कमाले हिक्मतो क़ुदरत की रोशन दलीलें हैं। **361 :** और वोह कुफ़्र पर मर जाएं और हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाएं, ऐसे हाल में आक़िल पर ज़रूरी है कि वोह सोचे समझे दलाइल पर नज़र करे। **362 :** या'नी क़ुरआने पाक के बा'द और कोई किताब और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द और कोई रसूल आने वाला नहीं जिस का इन्तिज़ार हो क्यूं कि आप ख़ातमुल अम्बिया हैं। **363 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़ियामत कब क़ाइम होगी? क्यूं कि हमें इस का वक़्त मा'लूम है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **364 :** क़ियामत के वक़्त का बताना रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुम ने क़रार दिया और ऐ यहूद! तुम ने जो इस का वक़्त जानने का दा'वा किया येह भी ग़लत़ है, अल्लाह तआला ने इस को मख़्फ़ी किया है और इस में उस की हिक्मत है। **365 :** इस के इख़्फ़ा की हिक्मत तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि बा'ज़ मशाइख़ इस त़रफ़ गए हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ब ए'लामे इलाही (अल्लाह तआला की अ़ता से) वक़्ते क़ियामत का इल्म है और येह हस्र आयत के मुनाफ़ी नहीं। **366 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली चौपाए भागे तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि मदीनए त़य्यिबा में रिफ़ाआ का इन्तिक़ाल हो गया और येह भी फ़रमाया कि देखो मेरा नाक़ा कहां है, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपनी क़ौम से कहने लगा इन का कैसा अ़जीब हाल है कि मदीने में मरने वाले की तो ख़बर दे रहे हैं और अपनी नाक़ा मा'लूम ही नहीं कि कहां है, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उस का येह क़ौल भी मख़्फ़ी न रहा, हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरा नाक़ा उस घाटी में है उस की नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था उसी शान से वोह नाक़ा पाया गया इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (تفسیر کبیر) **367 :** वोह मालिके हक़ीक़ी है जो कुछ है उस की

الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ

लिया करता तो यूं होता कि मैं ने बहुत भलाई जम्अ़ कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुंची[368] मैं तो येही डर[369]

وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ

और ख़ुशी सुनाने वाला हूं उन्हें जो ईमान रखते हैं वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया[370] और

جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا

उसी में से उस का जोड़ा बनाया[371] कि उस से चैन (आराम) पाए फिर जब मर्द उस पर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया[372] तो उसे लिये

فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ

फिरा की (चलती फिरती रही) फिर जब बोझल पड़ी दोनों ने अपने रब **अल्लाह** से दुआ़ की ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहिये बच्चा देगा तो बेशक हम

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۸۹﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ

शुक्र गुज़ार होंगे फिर जब उस ने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अ़ता फ़रमाया उन्हों ने उस की अ़ता में उस के साझी (शरीक) ठहराए

فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ

तो **अल्लाह** को बरतरी है उन के शिर्क से[373] क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए[374] और वोह

अ़ता से है। **368 :** येह कलाम बराहे अदब व तवाज़ोअ़ है, मा'ना येह हैं कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता जो जानता हूं वोह **अल्लाह** तआ़ला की इत्तिलाअ़ और उस की अ़ता से। (خازن) हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया भलाई जम्अ़ करना और बुराई न पहुंचना उसी के इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती क़ुदरत रखे और ज़ाती क़ुदरत वोही रखेगा जिस का इल्म भी ज़ाती हो क्यूं कि जिस की एक सिफ़त ज़ाती है उस के तमाम सिफ़ात ज़ाती, तो मा'ना येह हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो क़ुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जम्अ़ कर लेता और बुराई न पहुंचने देता, भलाई से मुराद राह़तें और काम्याबियां और दुश्मनों पर ग़लबा है और बुराइयों से तंगी व तक्लीफ़ और दुश्मनों का ग़ालिब आना है। येह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुत़ीअ़ और ना फ़रमानों का फ़रमां बरदार और काफ़िरों का मोमिन कर लेना हो और बुराई से बद बख़्त लोगों का बा वुजूद दा'वत के मह़रूम रह जाना, तो ह़ासिले कलाम येह होगा कि अगर मैं नफ़्अ़ व ज़रर का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरीन ! तुम्हें सब को मोमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्री ह़ालत देखने की तक्लीफ़ मुझे न पहुंचती। **369 :** सुनाने वाला हूं काफ़िरों को **370 :** इक्रिमा का क़ौल है कि इस आयत में ख़िताब आ़म है हर एक शख़्स को और मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** वोही है जिस ने तुम में से हर एक को एक जान से या'नी उस के बाप से पैदा किया और उस की जिन्स से उस की बीबी को बनाया फिर जब वोह दोनों जम्अ़ हुए और ह़म्ल ज़ाहिर हुवा और उन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चे की दुआ़ की और ऐसा बच्चा मिलने पर अदाए शुक्र का अ़ह्द किया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इनायत फ़रमाया। उन की ह़ालत येह हुई कि कभी तो वोह उस बच्चे को त़बाएअ़ की त़रफ़ निस्बत करते हैं जैसे दहरियों का ह़ाल है, कभी सितारों की त़रफ़ जैसा कवाकिब परस्तों का त़रीक़ा है, कभी बुतों की त़रफ़ जैसा बुत परस्तों का दस्तूर है **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि वोह उन के इस शिर्क से बरतर है। (کبیر) **371 :** या'नी उस के बाप की जिन्स से उस की बीबी बनाई। **372 :** मर्द का छाना किनाया है जिमाअ़ करने से और हलका सा पेट रहना इब्तिदाए ह़म्ल की ह़ालत का बयान है। **373 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में क़ुरैश को ख़िताब है जो क़ुसय की औलाद हैं उन से फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शख़्स क़ुसय से पैदा किया और उस की बीबी उसी की जिन्स से अ़रबी क़ुरशी की ताकि उस से चैन व आराम पाए फिर जब उन की दरख़्वास्त के मुत़ाबिक़ उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इनायत किया तो उन्हों ने **अल्लाह** की इस अ़ता में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अ़ब्दे मनाफ़, अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा, अ़ब्दे क़ुसय और अ़ब्दुद्दार रखा। **374 :** या'नी बुतों को जिन्हों ने कुछ नहीं बनाया।

يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَاۤ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ

ख़ुद बनाए हुए हैं और न वोह उन को कोई मदद पहुंचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें[375] और अगर

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ

तुम उन्हें[376] राह की त़रफ़ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न आएं[377] तुम पर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या

صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ

चुप रहो[378] बेशक वोह जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तुम्हारी त़रह़ बन्दे हैं[379] तो उन्हें पुकारो

فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَاۤ ز

फिर वोह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो क्या उन के पाउं हैं जिन से चलें

اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَاۤ ز اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَاۤ ز اَمْ لَهُمْ

या उन के हाथ हैं जिन से गिरिफ़्त करें या उन के आंखें हैं जिन से देखें या उन के

اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

कान हैं जिन से सुनें[380] तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दाउं चलो और मुझे मोहलत न दो[381]

اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ

बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी[382] और वोह नेकों को दोस्त रखता है[383] और जिन्हें

375 : इस में बुतों की बे क़द्री और बुत़्लाने शिर्क का बयान और मुश्रिकीन के कमाले जह्ल का इज़्हार है और बताया गया है कि इ़बादत का मुस्तह़िक़ वोही हो सकता है जो आ़बिद को नफ़्अ़ पहुंचाने और उस का ज़रर दफ़्अ़ करने की क़ुदरत रखता हो। मुश्रिकीन जिन बुतों को पूजते हैं उन की बे क़ुदरती इस दरजे की है कि वोह किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते ख़ुद अपनी ज़ात में दूसरे से बे नियाज़ नहीं, आप मख़्लूक़ हैं, बनाने वाले के मोह़ताज हैं, इस से बढ़ कर बे इख़्तियारी येह है कि वोह किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करें ख़ुद उन्हें ज़रर पहुंचे तो दफ़्अ़ नहीं कर सकते, कोई उन्हें तोड़ दे, गिरा दे, जो चाहे करे, वोह उस से अपनी ह़िफ़ाज़त नहीं कर सकते ऐसे मजबूर बे इख़्तियार को पूजना इन्तिहा दरजे का जह्ल है। **376 :** या'नी बुतों को **377 :** क्यूं कि वोह न सुन सकते हैं न समझ सकते हैं **378 :** वोह बहर ह़ाल आ़जिज़ हैं, ऐसे को पूजना और मा'बूद बनाना बड़ी बे ख़िरदी (बे अ़क़्ली) है **379 :** और **अल्लाह** के मम्लूक व मख़्लूक़, किसी त़रह़ पूजने के क़ाबिल नहीं, इस पर भी अगर तुम उन्हें मा'बूद कहते हो **380 :** येह कुछ भी नहीं, तो फिर अपने से कमतर को पूज कर क्यूं ज़लील होते हो। **381 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब बुत परस्ती की मज़म्मत की और बुतों की आ़जिज़ी और बे इख़्तियारी का बयान फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने धम्काया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं, बरबाद हो जाते हैं, येह बुत उन्हें हलाक कर देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई कि अगर बुतों में कुछ क़ुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो ! और मेरी नुक़्सान रसानी में उन से मदद लो और तुम भी जो मक्रो फ़रेब कर सकते हो वोह मेरे मुक़ाबले में करो और इस में देर न करो, मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की कुछ भी परवाह नहीं और तुम सब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। **382 :** और मेरी त़रफ़ वह्य भेजी और मेरी इ़ज़्ज़त की। **383 :** और उन का ह़ाफ़िज़ो नासिर है, उस पर भरोसा रखने वालों को मुश्रिकीन वग़ैरा का क्या अन्देशा तुम और तुम्हारे मा'बूद मुझे कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते।

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَاۤ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۷﴾ وَ

उस के सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न खुद अपनी मदद करें[384] और

اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ

अगर उन्हें राह की त़रफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वोह तेरी त़रफ़ देख रहे हैं[385] और उन्हें

لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۹۸﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

कुछ भी नहीं सूझता ऐ मह़बूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۰۰﴾

और ऐ सुनने वाले अगर शैत़ान तुझे कोई कोंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए)[386] तो **अल्लाह** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ

बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की

مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ ج وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ وَاِذَا

आंखें खुल जाती हैं[387] और वोह जो शैत़ानों के भाई हैं[388] शैत़ान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर गई (कोताही) नहीं करते और ऐ मह़बूब

لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ مِنْ

जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुम ने दिल से क्यूं न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी त़रफ़ मेरे रब से

رَّبِّيْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰۳﴾ وَ

वह़्य होती है येह तुम्हारे रब की त़रफ़ से आंखें खोलना है और हिदायत और रह़मत मुसल्मानों के लिये और

اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ وَاذْكُرْ

जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़म हो[389] और अपने रब

384 : तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे। **385 :** क्यूं कि बुतों की तस्वीरें इस शक्ल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है। **386 :** कोई वस्वसा डाले **387 :** और वोह उस वस्वसे को दूर कर देते हैं और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। **388 :** या'नी कुफ़्फ़ार। **389 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त क़ुरआने करीम पढ़ा जाए ख़्वाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़ उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है, जुम्हूर सह़ाबा رضی اللہ عنہم इस त़रफ़ हैं कि येह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है और एक क़ौल येह है कि इस में ख़ुत़्बा सुनने के लिये गोश बर आवाज़ होने (ख़ुत़्बा बग़ौर सुनने) और ख़ामोश रहने का हुक्म है और एक क़ौल येह है कि इस से नमाज़ व ख़ुत़्बा दोनों में बग़ौर सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ عنہ की ह़दीस में है आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो। ग़रज़ इस आयत से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम (नमाज़े बा जमाअ़त में इमाम के पीछे क़िराअत) की मुमानअ़त साबित होती है और कोई ह़दीस ऐसी नहीं है जिस को इस के मुक़ाबिल हुज्जत क़रार दिया जा सके। क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम की ताईद में सब से ज़ियादा

رَّبَّكَ فِیْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِیْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ

को अपने दिल में याद करो[390] ज़ारी (आ़जिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह़

وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا

और शाम[391] और ग़ाफ़िलों में न होना बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं[392]

یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوْنَهٗ وَ لَهٗ یَسْجُدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾

उस की इ़बादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बोलते और उसी को सज्दा करते हैं[393]

सूरए अन्फ़ाल मदनिय्या है, इस में पछत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ

ऐ मह़बूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं[2] तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह व रसूल हैं[3] तो अल्लाह से डरो[4] और

ए'तिमाद जिस ह़दीस पर किया जाता है वोह येह है : "لَاصَلٰوةَ اِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ" मगर इस ह़दीस से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम का वुजूब तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बिग़ैर फ़ातिह़ा के नमाज़ कामिल नहीं होती तो जब कि ह़दीस : "قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ" से साबित है कि इमाम का क़िराअत करना ही मुक़्तदी का क़िराअत करना है तो जब इमाम ने क़िराअत की और मुक़्तदी साकित रहा तो उस की क़िराअत हुक्मिया हुई उस की नमाज़ बे क़िराअत कहां रही, येह क़िराअत हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िराअत न करने से क़ुरआन व ह़दीस दोनों पर अ़मल हो जाता है और क़िराअत करने से आयत का इत्तिबाअ़ तर्क होता है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिह़ा वग़ैरा कुछ न पढ़े। **390 :** ऊपर की आयत के बा'द इस आयत के देखने से मा'लूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और बे आवाज़ निकाले दिल में ज़िक्र करना या'नी अ़ज़मतो जलाले इलाही का इस्तिह़्ज़ार (मौजूद होना) लाज़िम है كَذَافِیْ تَفْسِیْرِ ابْنِ جَرِیْر । इस से इमाम के पीछे बुलन्द या पस्त आवाज़ से क़िराअत की मुमानअ़त साबित होती है और दिल में अ़ज़मतो जलाले ह़क़ का इस्तिह़्ज़ार ज़िक्रे क़ल्बी है। **मस्अला :** ज़िक्र बिल जह्र और ज़िक्र बिल इख़्फ़ा दोनों में नुसूस वारिद हैं जिस शख़्स को जिस क़िस्म के ज़िक्र में ज़ौक़ो शौक़े ताम व इख़्लासे कामिल मुयस्सर हो उस के लिये वोही अफ़्ज़ल है, كذا فى ردالمحتار वग़ैरा। **391 :** शाम अ़स्र व मग़रिब के दरमियान का वक़्त है, इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़्ज़ल है क्यूं कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द तुलूए आफ़्ताब तक और इसी त़रह़ नमाज़े अ़स्र के बा'द ग़ुरूबे आफ़्ताब तक नमाज़ मम्नूअ़ है इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तह़ब हुवा ताकि बन्दे के तमाम अवक़ात क़ुरबत व त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहें। **392 :** या'नी मलाइकए मुक़र्रबीन **393 :** येह आयत आयाते सज्दा में से है, इन के पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्दा लाज़िम हो जाता है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैत़ान रोता है और कहता है अफ़्सोस बनी आदम को सज्दे का हुक्म दिया गया वोह सज्दा कर के जन्नती हुवा और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार कर के जहन्नमी हो गया। **1 :** येह सूरत मदनी है बजुज़ सात आयतों के जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुईं और "اِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ" से शुरूअ़ होती हैं, इस में पछत्तर आयतें और एक हज़ार पछत्तर कलिमे और पांच हज़ार अस्सी ह़ुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : उन्हों ने फ़रमाया कि येह आयत हम अहले बद्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जब ग़नीमत के मुआ़मले में हमारे दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा और बद मज़गी की नौबत आ गई तो अल्लाह तआ़ला ने मुआ़मला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के सिपुर्द किया। आप ने वोह माल बराबर तक़्सीम कर दिया। **3 :** जैसे चाहें तक़्सीम फ़रमाएं। **4 :** और बाहम इख़्तिलाफ़ न करो।

أَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

अपने आपस में मेल (सुल्ह सफ़ाई) रखो और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ

ईमान वाले वोही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए[5] उन के दिल डर जाएं और जब उन पर

عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ② الَّذِينَ يُقِيمُونَ

उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें[6] वोह जो नमाज़ क़ाइम

الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ③ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ

रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये

دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ④ كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ

दरजे हैं इन के रब के पास[7] और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[8] जिस त़रह़ ऐ मह़बूब तुम्हें तुम्हारे रब ने

مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَارِهُونَ ⑤

तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बरआमद किया[9] और बेशक मुसल्मानों का एक गुरौह इस पर नाख़ुश था[10]

5 : तो उस के अ़ज़्मतो जलाल से 6 : और अपने तमाम कामों को उस के सिपुर्द करें। 7 : ब क़दर उन के आ'माल के क्यूं कि मोमिनीन के अह़वाल इन औसाफ़ में मुतफ़ावित हैं इस लिये उन के मरातिब भी जुदागाना हैं। 8 : जो हमेशा इक्राम व ता'ज़ीम के साथ बे मेह़नतो मशक़्क़त अ़ता की जाए। 9 : या'नी मदीनए त़य्यिबा से बद्र की त़रफ़। 10 : क्यूं कि वोह देख रहे थे कि उन की ता'दाद कम है, हथियार थोड़े हैं, दुश्मन की ता'दाद भी ज़ियादा है और वोह अस्लह़ा वग़ैरा का बड़ा सामान रखता है। मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि अबू सुफ़्यान के मुल्के शाम से एक क़ाफ़िले के साथ आने की ख़बर पा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हुए मक्कए मुकर्रमा से अबू जह्ल क़ुरैश का एक लश्करे गिरां ले कर क़ाफ़िले की इमदाद के लिये रवाना हुवा। अबू सुफ़्यान तो रस्ते से कतरा कर मअ़ अपने क़ाफ़िले के साह़िले बह़्र की राह चल पड़े और अबू जह्ल से उस के रफ़ीक़ों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया अब मक्कए मुकर्रमा वापस चल, तो उस ने इन्कार कर दिया और वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग करने के क़स्द से बद्र की त़रफ़ चल पड़ा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार के दोनों गुरौहों में से एक पर मुसल्मानों को फ़त्ह़ मन्द करेगा ख़्वाह क़ाफ़िला हो या क़ुरैश का लश्कर। सह़ाबा ने इस में मुवाफ़क़त की मगर बा'ज़ को येह उ़ज़्र हुवा कि हम इस तय्यारी से नहीं चले थे और न हमारी ता'दाद इतनी है न हमारे पास काफ़ी सामाने अस्लह़ा है, येह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को गिरां गुज़रा और ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला तो साह़िल की त़रफ़ निकल गया और अबू जह्ल सामने आ रहा है। इस पर उन लोगों ने फिर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क़ाफ़िले ही का तआ़क़ुब कीजिये और लश्करे दुश्मन को छोड़ दीजिये। येह बात ना गवार ख़ात़िरे अक़्दस हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर व ह़ज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने खड़े हो कर अपने इख़्लास व फ़रमां बरदारी और रिज़ाजूई व जां निसारी का इज़्हार किया और बड़ी क़ुव्वत व इस्तिह़्काम के साथ अ़र्ज़ की, कि वोह किसी त़रह़ मरज़िये मुबारक के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं फिर और सह़ाबा ने भी अ़र्ज़ किया कि अल्लाह ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को जो अम्र फ़रमाया उस के मुत़ाबिक़ तशरीफ़ ले चलें, हम साथ हैं, कभी तख़ल्लुफ़ न करें (पीछे न रहें)गे, हम आप पर ईमान लाए, हम ने आप की तस्दीक़ की, हम ने आप के इत्तिबाअ़ के अ़ह्द किये, हमें आप की इत्तिबाअ़ में समुन्दर के अन्दर कूद जाने से भी उ़ज़्र नहीं है। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : चलो अल्लाह की बरकत पर भरोसा करो, उस ने मुझे वा'दा दिया है, मैं तुम्हें बिशारत देता हूं, मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही है और ह़ुज़ूर ने कुफ़्फ़ार के मरने और गिरने की जगह नाम बनाम बता दीं और एक एक की जगह पर निशानात लगा दिये और येह मो'जिज़ा देखा गया कि उन में से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा, उस से ख़त़ा न की।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ

सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे[11] बा'द इस के कि ज़ाहिर हो चुकी[12] गोया वोह आंखों देखी मौत की त़रफ़

يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآىِٕفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ

हांके जाते हैं[13] और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम्हें वा'दा दिया था कि इन दोनों गुरौहों[14] में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे

اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ

कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका (किसी नुक़्सान का डर) नहीं[15] और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए[16]

وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ

और काफ़िरों की जड़ काट दे (हलाक कर दे)[17] कि सच को सच करे और झूट को झूटा[18] पड़े बुरा

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨﴾ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ

मानें मुजरिम जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे[19] तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार

مِّنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ

फ़िरिश्तों की क़ित़ार से[20] और येह तो **अल्लाह** ने न किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इस लिये कि तुम्हारे दिल

قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ

चैन पाएं और मदद नहीं मगर **अल्लाह** की त़रफ़ से[21] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है जब

ع ١٥

11 : और कहते थे कि हमें लश्करे क़ुरैश का ह़ाल ही मा'लूम न था कि हम उन के मुक़ाबले की तय्यारी कर के चलते। 12 : येह बात कि ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम ﷺ जो कुछ करते हैं हुक्मे इलाही से करते हैं और आप ने ए'लान फ़रमा दिया है कि मुसल्मानों को ग़ैबी मदद पहुंचेगी। 13 : या'नी क़ुरैश से मुक़ाबला उन्हें ऐसा मुहीब (बड़ा भयानक) मा'लूम होता है। 14 : या'नी अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले और अबू जह्ल के लश्कर। 15 : या'नी अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला 16 : दीने ह़क़ को ग़लबा दे, इस को बुलन्दो बाला करे। 17 : और उन्हें इस त़रह़ हलाक करे कि उन में से कोई बाक़ी न बचे। 18 : या'नी इस्लाम को ज़ुहूरो सबात अ़त़ा फ़रमाए और कुफ़्र को मिटाए। 19 **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है रोज़े बद्र रसूले करीम ﷺ ने मुशरिकीन को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हज़ार हैं और आप के अस्ह़ाब तीन सो दस से कुछ ज़ियादा तो हुज़ूर क़िब्ले की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और अपने मुबारक हाथ फैला कर अपने रब से येह दुआ़ करने लगे या रब ! जो तू ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है पूरा कर, या रब ! जो तू ने मुझ से वा'दा किया इनायत फ़रमा, या रब ! अगर तू अहले इस्लाम की इस जमाअ़त को हलाक कर देगा तो ज़मीन में तेरी परस्तिश न होगी। इसी त़रह़ हुज़ूर दुआ़ करते रहे यहां तक कि दोशे (शानए) मुबारक से चादर शरीफ़ उतर गई तो ह़ज़रते अबू बक्र ह़ाज़िर हुए और चादरे मुबारक दोशे अक़्दस पर डाली और अ़र्ज़ किया : **या नबिय्यल्लाह !** आप की मुनाजात अपने रब के साथ काफ़ी हो गई, वोह बहुत जल्द अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा, इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। 20 : चुनान्चे अव्वल हज़ार फ़िरिश्ते आए फिर तीन हज़ार फिर पांच हज़ार, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुसल्मान उस रोज़ काफ़िरों का तआ़क़ुब करते थे और काफ़िर मुसल्मान के आगे आगे भागता जाता था अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती थी और सुवार का येह कलिमा सुना जाता था : (اَقْدِمْ حَيْزُوْم) या'नी आगे बढ़ ऐ ह़ैज़ूम ! (ह़ैज़ूम ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उस की नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया। सह़ाबा ने सय्यिदे आ़लम ﷺ से अपने येह मुआ़यने बयान किये तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि येह आस्माने सिवुम की मदद है। अबू जह्ल ने ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ से कहा कि कहां से ज़र्ब आती थी ? मारने वाला तो हम को नज़र नहीं आता था। आप ने फ़रमाया : फ़िरिश्तों की त़रफ़ से, तो कहने लगा : फिर वोही तो ग़ालिब हुए तुम तो ग़ालिब नहीं हुए। 21 : तो बन्दे को चाहिये कि उसी पर भरोसा करे और अपने ज़ोर व क़ुव्वत और अस्बाब व

يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً

उस ने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उस की त़रफ़ से चैन (तस्कीन) थी[22] और आस्मान से तुम पर पानी उतारा

لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ

कि तुम्हें उस से सुथरा कर दे और शैत़ान की नापाकी तुम से दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों की ढारस बंधाए और

يُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا

उस से तुम्हारे क़दम जमा दे[23] जब ऐ मह़बूब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वह़्य भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसल्मानों

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا

को साबित रखो[24] अ़न्क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों

فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا

की गरदनों से ऊपर मारो और उन की एक एक पोर (जोड़) पर ज़र्ब लगाओ[25] येह इस लिये कि उन्हों ने **अल्लाह** और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

उस के रसूल से मुख़ालफ़त की और जो **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब

जमाअ़त पर नाज़ न करे। **22 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि ग़ुनूदगी अगर जंग में हो तो अम्न है और **अल्लाह** की त़रफ़ से है और नमाज़ में हो तो शैत़ान की त़रफ़ से है, जंग में ग़ुनूदगी का अम्न होना इस से ज़ाहिर है कि जिसे जान का अन्देशा हो उसे नींद और ऊंघ नहीं आती वोह ख़त़रे और इज़्तिराब में रहता है। ख़ौफ़े शदीद के वक़्त ग़ुनूदगी आना ह़ुसूले अम्न और ज़वाले ख़ौफ़ की दलील है बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि जब मुसल्मानों को दुश्मनों की कसरत और मुसल्मानों की क़िल्लत से जानों का ख़ौफ़ हुवा और बहुत ज़ियादा प्यास लगी तो उन पर ग़ुनूदगी डाल दी गई जिस से उन्हें राह़त ह़ासिल हुई और तकान और प्यास रफ़्अ़ हुई और वोह दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए। येह ऊंघ उन के ह़क़ में ने'मत थी और यकबारगी सब को आई, जमाअ़ते कसीर का ख़ौफ़े शदीद की ह़ालत में इस त़रह़ यकबारगी ऊंघ जाना ख़िलाफ़े आ़दत है इसी लिये बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : येह ऊंघ मो'जिज़े के हुक्म में है। (خازن) **23 :** रोज़े बद्र मुसल्मान रेगिस्तान में उतरे उन के और उन के जानवरों के पाउं रैत में धंसे जाते थे और मुश्रिकीन इन से पहले लबे आब क़ब्ज़ा कर चुके थे। सह़ाबा में बा'ज़ ह़ज़रात को वुज़ू की बा'ज़ को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी और प्यास की शिद्दत थी तो शैत़ान ने वस्वसा डाला कि तुम गुमान करते हो कि तुम ह़क़ पर हो तुम में **अल्लाह** के नबी हैं और तुम अल्लाह वाले हो और ह़ाल येह है कि मुश्रिकीन ग़ालिब हो कर पानी पर पहुंच गए तुम बिग़ैर वुज़ू और ग़ुस्ल किये नमाज़ें पढ़ते हो तो तुम्हें दुश्मन पर फ़त्ह़ याब होने की किस त़रह़ उम्मीद है तो **अल्लाह** तआ़ला ने मींह भेजा जिस से जंगल सैराब हो गया और मुसल्मानों ने उस से पानी पिया और ग़ुस्ल किये और वुज़ू किये और अपनी सुवारियों को पिलाया और अपने बरतनों को भरा और ग़ुबार बैठ गया और ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उस पर क़दम जमने लगे और शैत़ान का वस्वसा ज़ाइल हुवा और सह़ाबा के दिल ख़ुश हुए और येह ने'मते फ़त्ह़ो ज़फ़र ह़ासिल होने की दलील हुई। **24 :** इन की इआ़नत कर के और इन्हें बिशारत दे कर **25 :** अबू दावूद माज़नी जो बद्र में ह़ाज़िर हुए थे फ़रमाते हैं कि मैं मुश्रिक की गरदन मारने के लिये उस के दरपै हुवा, उस का सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया तो मैं ने जान लिया कि इस को किसी और ने क़त्ल किया। सह्ल बिन ह़ुनैफ़ फ़रमाते हैं कि रोज़े बद्र हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उस की तलवार पहुंचने से पहले ही मुश्रिक का सर जिस्म से जुदा हो कर गिर जाता था। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने यकमुश्त संगरेज़े कुफ़्फ़ार पर फेंक कर मारे तो कोई काफ़िर ऐसा न बचा जिस की आंखों में उस में से कुछ पड़ा न हो। बद्र का येह वाक़िआ़ सुब्ह़े जुमुआ़ सतरह रमज़ान मुबारक 2 सिने हिजरी में पेश आया।

الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا

सख़्त है येह तो चखो[26] और इस के साथ येह है कि काफ़िरों को आग का अ़ज़ाब है[27] ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾

ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम (लश्कर) से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो[28]

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىٕذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾ فَلَمْ

तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरी जगह है पलटने की[29] तो तुम

تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

ने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि **अल्लाह** ने[30] उन्हें क़त्ल किया और ऐ महबूब वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी बल्कि **अल्लाह** ने

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

फेंकी और इस लिये कि मुसल्मानों को इस से अच्छा इन्आ़म अ़ता फ़रमाए बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ

येह[31] तो लो और इस के साथ येह है कि **अल्लाह** काफ़िरों का दाउं सुस्त करने वाला है ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो येह फ़ैसला

الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ

तुम पर आ चुका[32] और अगर बाज़ आओ[33] तो तुम्हारा भला है और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे और तुम्हारा जथ्था (गुरौह)

26 : जो बद्र में पेश आया और कुफ़्फ़ार मक़्तूल और मुक़य्यद (क़ैद) हुए येह तो अ़ज़ाबे दुन्या है। **27 :** आख़िरत में **28 :** या'नी अगर कुफ़्फ़ार तुम से ज़ियादा भी हों तो उन के मुक़ाबले से न भागो। **29 :** या'नी मुसल्मानों में से जो जंग में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागा वोह ग़ज़बे इलाही में गिरिफ़्तार हुवा, उस का ठिकाना दोज़ख़ है, सिवाए दो ह़ालतों के **: एक** तो येह कि लड़ाई का हुनर या करतब करने के लिये पीछे हटा हो वोह पीठ देने और भागने वाला नहीं है। **दूसरे** जो अपनी जमाअ़त में मिलने के लिये पीछे हटा वोह भी भागने वाला नहीं है। **30 शाने नुज़ूल :** जब मुसल्मान जंगे बद्र से वापस हुए तो उन में से एक कहता था कि मैं ने फ़ुलां को क़त्ल किया, दूसरा कहता था कि मैं ने फ़ुलां को क़त्ल किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोर व कुव्वत की त़रफ़ निस्बत न करो कि येह दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** की इमदाद और उस की तक़्वियत और ताईद है। **31 :** फ़त्ह़ो नुसरत **32 शाने नुज़ूल :** येह ख़ित़ाब मुश्रिकीन को है जिन्हों ने बद्र में सय्यिदे आ़लम ﷺ से जंग की और उन में से अबू जहल ने अपनी और ह़ुज़ूर की निस्बत येह दुआ़ की, कि या रब ! हम में जो तेरे नज़्दीक अच्छा हो उस की मदद कर और जो बुरा हो उसे मुब्तलाए मुसीबत कर और एक रिवायत में है कि मुश्रिकीन ने मक्कए मुकर्रमा से बद्र को चलते वक़्त का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर येह दुआ़ की थी कि या रब ! अगर मुह़म्मद (ﷺ) ह़क़ पर हों तो उन की मदद फ़रमा और अगर हम ह़क़ पर हों तो हमारी मदद कर, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि जो फ़ैसला तुम ने चाहा था वोह कर दिया गया और जो गुरौह ह़क़ पर था उस को फ़त्ह़ दी गई, येह तुम्हारा मांगा हुवा फ़ैसला है, अब आस्मानी फ़ैसले से भी जो उन का त़लब किया हुवा था इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत साबित हुई। अबू जहल भी इस जंग में ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ मारा गया और उस का सर रसूल ﷺ के ह़ुज़ूर में ह़ाज़िर किया गया। **33 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ के साथ अ़दावत और ह़ुज़ूर

عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَوْ كَثُرَتْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۹﴾ یٰۤاَیُّهَا

तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और इस के साथ येह है कि **अल्लाह** मुसल्मानों के साथ है ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ اَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿۲۰﴾

ईमान वालो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो[34] और सुन सुना कर उस से न फिरो

وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ هُمْ لَا یَسْمَعُوْنَ ﴿۲۱﴾ اِنَّ شَرَّ

और उन जैसे न होना जिन्हों ने कहा हम ने सुना और वोह नहीं सुनते[35] बेशक सब जानवरों

الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِیْنَ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ لَوْ عَلِمَ

में बदतर **अल्लाह** के नज़्दीक वोह हैं जो बहरे गूंगे हैं जिन को अक़्ल नहीं[36] और अगर **अल्लाह** उन में

اللّٰهُ فِیْهِمْ خَیْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَ لَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾

कुछ भलाई[37] जानता तो उन्हें सुना देता और अगर[38] सुना देता जब भी अन्जाम कार मुंह फेर कर पलट जाते[39]

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِیْبُوْا لِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا یُحْیِیْكُمْ ۚ

ऐ ईमान वालो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो[40] जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी[41]

وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَحُوْلُ بَیْنَ الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ وَ اَنَّهٗۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

और जान लो कि **अल्लाह** का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादों में हाइल हो जाता है और येह कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है

के साथ जंग करने से **34 :** क्यूं कि रसूल की इत़ाअ़त और **अल्लाह** की इत़ाअ़त एक ही चीज़ है, जिस ने रसूल की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की। **35 :** क्यूं कि जो सुन कर नफ़्अ़ न उठाए और नसीह़त पज़ीर न हो उस का सुनना सुनना ही नहीं है, येह मुनाफ़िक़ीन व मुश्रिकीन का ह़ाल है, मुसल्मानों को इस ह़ाल से दूर रहने का हुक्म दिया जाता है। **36 :** न वोह ह़क़ सुनते हैं, न ह़क़ बोलते हैं, न ह़क़ को समझते हैं, कान और ज़बान व अ़क़्ल से फ़ाएदा नहीं उठाते, जानवरों से भी बदतर हैं क्यूं कि येह दीदा दानिस्ता बहरे गूंगे बनते हैं और अ़क़्ल से दुश्मनी करते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी अ़ब्दुद्दार बिन क़ुसय के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि जो कुछ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ लाए हम उस से बहरे, गूंगे, अन्धे हैं। येह सब लोग जंगे उहुद में मक़्तूल हुए और उन में से सिर्फ़ दो शख़्स ईमान लाए : मुस्अ़ब बिन उ़मैर और सुवैबित़ बिन ह़र्मला। **37 :** या'नी सिद्क़ो रग़बत **38 :** ब ह़ालते मौजूदा येह जानते हुए कि उन में सिद्क़ो रग़बत नहीं है **39 :** अपने इनाद (बुग़्ज़) और ह़क़ से दुश्मनी के बाइस **40 :** क्यूं कि रसूल का बुलाना **अल्लाह** ही का बुलाना है। बुख़ारी शरीफ़ में सईद बिन मुअ़ल्ला से मरवी है फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था, मुझे रसूले अकरम ﷺ ने पुकारा मैं ने जवाब न दिया फिर मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** मैं नमाज़ पढ़ रहा था, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि क्या **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया है कि **अल्लाह** और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो? ऐसा ही दूसरी ह़दीस में है कि ह़ज़रते उबय बिन का'ब नमाज़ पढ़ते थे, हुज़ूर ने उन्हें पुकारा, उन्हों ने जल्दी नमाज़ तमाम कर के सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम्हें जवाब देने से क्या बात मानेअ़ हुई? अ़र्ज़ किया : हुज़ूर मैं नमाज़ में था। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम ने क़ुरआने पाक में येह नहीं पाया कि **अल्लाह** और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो? अ़र्ज़ किया : बेशक आयिन्दा ऐसा न होगा। **41 :** उस चीज़ से या ईमान मुराद है क्यूं कि काफ़िर मुर्दा होता है, ईमान से उस को ज़िन्दगी ह़ासिल होती है। क़तादा ने कहा कि वोह चीज़ क़ुरआन है क्यूं कि इस से दिलों की ज़िन्दगी है और इस में नजात है और इ़स्मते दारैन है। मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि वोह चीज़ जिहाद है क्यूं कि इस की बदौलत **अल्लाह** तआ़ला ज़िल्लत के बा'द इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाता

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا

और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा[42] और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ

कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है और याद करो[43] जब तुम थोड़े थे मुल्क में

فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ

दबे हुए[44] डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएं तो उस ने तुम्हें[45] जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया

وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दीं[46] कि कहीं तुम एहसान मानो ऐ ईमान वालो अल्लाह

تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَ

व रसूल से दग़ा न करो[47] और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत और

है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि वोह शहादत है इस लिये कि शुहदा अपने रब के नज़्दीक ज़िन्दा हैं। **42 :** बल्कि अगर तुम उस से न डरे और उस के अस्बाब या'नी मम्नूआत को तर्क न किया और फ़ितना नाज़िल हुवा तो येह न होगा कि उस में ख़ास ज़ालिम और बदकार ही मुब्तला हों बल्कि वोह नेक और बद सब को पहुंच जाएगा। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने दरमियान मम्नूआत न होने दें या'नी अपने मक़्दूर (ताक़त) तक बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ करें, अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अज़ाब उन सब को आम होगा, ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सब को पहुंचेगा। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला मख़्सूस लोगों के अमल पर अज़ाब आम नहीं करता जब तक कि आम तौर पर लोग ऐसा न करें कि मम्नूआत को अपने दरमियान होता देखते रहें और उस के रोकने और मन्अ करने पर क़ादिर हों बा वुजूद इस के न रोकें न मन्अ करें, जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआला अज़ाब में आम व ख़ास सब को मुब्तला करता है। अबू दावूद की हदीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में सरगर्मे मआसी हो और वोह लोग बा वुजूद क़ुदरत के उस को न रोकें तो अल्लाह तआला मरने से पहले उन्हें अज़ाब में मुब्तला करता है। इस से मा'लूम हुवा कि जो क़ौम नही अनिल मुन्कर तर्क करती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती वोह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अज़ाब होती है। **43 :** ऐ मोमिनीने मुहाजिरीन ! इब्तिदाए इस्लाम में हिजरत करने से पहले मक्कए मुकर्रमा में **44 :** क़ुरैश तुम पर ग़ालिब थे और तुम **45 :** मदीनए तय्यिबा में **46 :** या'नी अम्वाले ग़नीमत जो तुम से पहले किसी उम्मत के लिय हलाल नहीं किये गए थे। **47 :** फ़राइज़ का छोड़ देना अल्लाह तआला से ख़ियानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल صلی اللہ علیہ وسلم से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू लुबाबा हारून बिन अब्दुल मुन्ज़िर अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ येह था कि रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने यहूदे बनी क़ुरैज़ा का दो हफ़्ते से ज़ियादा अर्से तक मुहासरा फ़रमाया वोह इस मुहासरे से तंग आ गए और उन के दिल ख़ाइफ़ हो गए तो उन से उन के सरदार का'ब बिन असद ने येह कहा कि अब तीन शक्लें (सूरतें) हैं या इस शख़्स या'नी सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم की तस्दीक़ करो और इन की बैअत कर लो क्यूं कि क़सम ब ख़ुदा वोह नबिय्ये मुरसल हैं, येह ज़ाहिर हो चुका और येह वोही रसूल हैं जिन का ज़िक्र तुम्हारी किताब में है, इन पर ईमान ले आए तो जान, माल, अहलो औलाद सब महफ़ूज़ रहेंगे, मगर इस बात को क़ौम ने न माना तो का'ब ने दूसरी शक्ल (सूरत) पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीबी बच्चों को क़त्ल कर दें फिर तलवारें खींच कर मुहम्मद मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ وسلم और इन के अस्हाब के मुक़ाबिल आएं कि अगर हम इस मुक़ाबले में हलाक भी हो जाएं तो हमारे साथ अपने अहलो औलाद का ग़म तो न रहे। इस पर क़ौम ने कहा कि अहलो औलाद के बा'द जीना ही किस काम का ? तो का'ब ने कहा कि येह भी मन्ज़ूर नहीं है तो सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم से सुल्ह की दरख़्वास्त करो शायद इस में कोई बेहतरी की सूरत निकले, तो उन्हों ने हुज़ूर से सुल्ह की दरख़्वास्त की लेकिन हुज़ूर ने मन्ज़ूर न फ़रमाया सिवाए इस के कि अपने हक़ में सा'द बिन मुआज़ के फ़ैसले को मन्ज़ूर करें, इस पर उन्हों ने कहा कि हमारे पास अबू लुबाबा को भेज दीजिये क्यूं कि अबू लुबाबा से उन के तअल्लुक़ात थे और अबू लुबाबा का माल और उन की औलाद और उन के इयाल सब बनी क़ुरैज़ा के पास थे। हुज़ूर ने अबू लुबाबा को भेज दिया बनी क़ुरैज़ा ने उन से राय दरयाफ़्त की, कि क्या हम सा'द बिन मुआज़ का फ़ैसला मन्ज़ूर कर लें कि जो कुछ वोह हमारे हक़ में फ़ैसला दें वोह हमें

اعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितना है[48] और **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है[49]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ

ऐ ईमान वालो अगर **अल्लाह** से डरोगे[50] तो तुम्हें वोह देगा जिस से हक़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी

عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ يَمْكُرُ

बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है और ऐ महबूब याद करो जब काफ़िर

بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ

तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द (क़ैद) कर लें या शहीद कर दें या निकाल (जला वतन कर) दें[51] और वोह अपना सा मक्र करते थे

क़बूल हो ? अबू लुबाबा ने अपनी गरदन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि येह तो गले कटवाने की बात है, अबू लुबाबा कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी जगह से हटने न पाए थे कि मेरे दिल में येह बात जम गई कि मुझ से **अल्लाह** और उस के रसूल की ख़ियानत वाक़ेअ़ हुई, येह सोच कर वोह हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में तो न आए सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आप को बंधवा लिया और **अल्लाह** की क़सम खाई कि न कुछ खाएंगे न पियेंगे यहां तक कि मर जाएं या **अल्लाह** तआ़ला उन की तौबा क़बूल करे। वक़्तन फ़ वक़्तन उन की बीबी आ कर उन्हें नमाज़ों के लिये और इन्सानी हाजतों के लिये खोल दिया करती थीं और फिर बांध दिये जाते थे। हुज़ूर को जब येह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अबू लुबाबा मेरे पास आते तो मैं उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करता लेकिन जब उन्हों ने येह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जब तक **अल्लाह** उन की तौबा क़बूल न करे। वोह सात रोज़ बंधे रहे न कुछ खाया न पिया यहां तक कि बेहोश हो कर गिर गए, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल की। सहाबा ने उन्हें तौबा क़बूल होने की बिशारत दी तो उन्हों ने कहा : मैं ख़ुदा की क़सम ! न खुलूंगा जब तक रसूले करीम ﷺ मुझे ख़ुद न खोलें। हज़रत ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक से खोल दिया। अबू लुबाबा ने कहा मेरी तौबा उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूं जिस में मुझ से येह ख़ता सरज़द हुई और मैं अपने कुल माल को अपने मिल्क से निकाल दूं। सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : तिहाई माल का सदक़ा करना काफ़ी है। उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **48 :** कि आख़िरत के कामों में सद्दे राह (रुकावट) होता है। **49 :** तो आ़क़िल को चाहिये कि उसी का तृलब गार रहे और माल व औलाद के सबब से उस से महरूम न हो। **50 :** इस तरह कि गुनाह तर्क करो और ताअ़त बजा लाओ। **51 :** इस में उस वाक़िए का बयान है जो हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश दारुन्नद्वा (कमेटी घर) में रसूले करीम ﷺ की निस्बत मश्वरा करने के लिये जम्अ़ हुए और इब्लीसे लईन एक बुढ्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं शैख़े नज्द हूं मुझे तुम्हारे इस इज्तिमाअ़ की इत्तिलाअ़ हुई तो मैं आया, मुझ से तुम कुछ न छुपाना, मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ़मले में बेहतर राय से तुम्हारी मदद करूंगा, उन्हों ने इस को शामिल कर लिया और सय्यिदे आ़लम ﷺ के मुतअ़ल्लिक़ राय ज़नी शुरूअ़ हुई, अबुल बख़्तरी ने कहा कि मेरी राय येह है कि मुहम्मद (ﷺ) को पकड़ कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़बूत बन्दिशों से बांध दो दरवाज़ा बन्द कर दो सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिस से कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं वोह हलाक हो कर रह जाएं, इस पर शैताने लईन जो शैख़े नज्दी बना हुवा था बहुत नाख़ुश हुवा और कहा निहायत नाक़िस राय है, येह ख़बर मश्हूर होगी और उन के अस्हाब आएंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उन को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे। लोगों ने कहा : शैख़े नज्दी ठीक कहता है। फिर हिशाम बिन अ़म्र खड़ा हुवा उस ने कहा मेरी राय येह है कि उन को (या'नी मुहम्मद ﷺ) को ऊंट पर सुवार कर के अपने शहर से निकाल दो फिर वोह जो कुछ भी करें उस से तुम्हें कुछ ज़रर नहीं। इब्लीस ने इस राय को भी ना पसन्द किया और कहा : जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिश मन्दों को हैरान बना दिया उस को तुम दूसरों की तरफ़ भेजते हो ! तुम ने उस की शीरीं कलामी, सैफ़े ज़बानी, दिलकशी नहीं देखी है ! अगर तुम ने ऐसा किया तो वोह दूसरी क़ौम के क़ुलूब तस्ख़ीर कर के उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे, अहले मज्मअ़ ने कहा : शैख़े नज्दी की राय ठीक है, इस पर अबू जह्ल खड़ा हुवा और उस ने येह राय दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आ़ली नसब जवान मुन्तख़ब किया जाए और उन को तेज़ तलवारें दी जाएं वोह सब यकबारगी हज़रत पर हम्ला आवर हो कर क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे। ग़ायत येह है कि ख़ून का मुआ़वज़ा देना पड़े वोह दे दिया जाएगा। इब्लीसे लईन ने इस तज्वीज़ को पसन्द किया और अबू जह्ल

وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۳۰﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

और अल्लाह अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की खुफ़्या तदबीर सब से बेहतर और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

हां हम ने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते येह तो नहीं मगर अगलों

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ

के क़िस्से[52] और जब बोले[53] कि ऐ अल्लाह अगर येही (कुरआन) तेरी त़रफ़ से ह़क़ है

فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۲﴾ وَمَا كَانَ

तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर ला और अल्लाह का काम

اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ

नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ मह़बूब तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो[54] और अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब करने वाला नहीं जब तक वोह

की बहुत ता'रीफ़ की और इसी पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ गुज़ारिश किया और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर अपनी ख़्वाब गाह में शब को न रहें, अल्लाह तआ़ला ने इज़्न दिया है मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाएं, हुज़ूर ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को शब में अपनी ख़्वाब गाह में रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ो तुम्हें कोई ना गवार बात पेश न आएगी और हुज़ूर दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुश्त ख़ाक दस्ते मुबारक में ली और आयत "اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا" पढ़ कर मुह़ासरा करने वालों पर मारी सब की आंखों और सरों पर पहुंची सब अन्धे हो गए और हुज़ूर को न देख सके और हुज़ूर मअ़ अबू बक्र सिद्दीक़ के ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा छोड़ा मुश्रिकीन रात भर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की दौलत सराए का पहरा देते रहे, सुब्ह़ को जब क़त्ल के इरादे से ह़म्ला आवर हुए तो देखा कि ह़ज़रते अ़ली हैं उन से हुज़ूर को दरयाफ़्त किया कि कहां हैं उन्हों ने फ़रमाया कि हमें मा'लूम नहीं तो तलाश के लिये निकले, जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इस में दाख़िल होते तो येह जाले बाक़ी न रहते, हुज़ूर इस ग़ार में तीन रोज़ ठहरे फिर मदीनए त़य्यिबा रवाना हुए। **52 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कुरआने पाक सुन कर कहा था कि हम चाहते तो हम भी ऐसी ही किताब कह लेते। अल्लाह तआ़ला ने उन का येह मक़ूला नक़्ल किया कि इस में उन की कमाल बेशर्मी व बे ह़याई है कि कुरआने पाक के तह़द्दी फ़रमाने (ललकारने) और फ़ुसह़ाए अ़रब को कुरआने करीम के मिस्ल एक सूरत बना लाने की दा'वतें देने और उन सब के आ़जिज़ो दरमांदा (मजबूर) रह जाने के बा'द येह कलिमा कहना और ऐसा इद्दिआ़ए बात़िल (बात़िल दा'वा) करना निहायत ज़लील ह़रकत है। **53 :** कुफ़्फ़ार और उन में येह कहने वाला या नज़्र बिन ह़ारिस था या अबू जहल जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है। **54 :** क्यूं कि रह़्मतुल्लिल आ़लमीन बना कर भेजे गए हो और सुन्नते इलाहिय्यह येह है कि जब तक किसी क़ौम में उस के नबी मौजूद हों उन पर आ़म बरबादी का अ़ज़ाब नहीं भेजता जिस से सब के सब हलाक हो जाएं और कोई न बचे। एक जमाअ़ते मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उस वक़्त नाज़िल हुई जब आप मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम थे, फिर जब आप ने हिजरत फ़रमाई और कुछ मुसल्मान रह गए जो इस्तिग़्फ़ार किया करते थे तो "وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ" नाज़िल हुवा, जिस में बताया गया कि जब तक इस्तिग़्फ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद हैं उस वक़्त तक भी अ़ज़ाब न आएगा, फिर जब वोह ह़ज़रात भी मदीनए त़य्यिबा को रवाना हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने फ़त्ह़े मक्का का इज़्न दिया और येह अ़ज़ाबे मौऊ़द (जिस का वा'दा किया गया वोह) आ गया जिस की निस्बत इस आयत में फ़रमाया : "وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ" मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि "مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ" भी कुफ़्फ़ार का मक़ूला है जो उन से ह़िकायतन नक़्ल किया गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की जहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़दर अह़मक़ हैं, आप ही तो येह कहते हैं कि या रब! अगर येह तेरी त़रफ़ से ह़क़ है तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल कर, और आप ही येह कहते हैं कि या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم)! जब तक आप हैं अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। क्यूं कि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती। किस क़दर मुआ़रिज़ (एक दूसरे के मुख़ालिफ़) अक़्वाल हैं।

يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ

बख़्शिश मांग रहे हैं[55] और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न करे वोह तो मस्जिदे ह़राम

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

से रोक रहे हैं[56] और वोह इस के अह्ल नहीं[57] उस के औलिया तो परहेज़ गार ही हैं

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا

मगर उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं और का'बे के पास उन की नमाज़ नहीं मगर

مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सीटी और ताली[58] तो अब अ़ज़ाब चखो[59] बदला अपने कुफ़्र का बेशक

كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا

काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोकें[60] तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे

ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى جَهَنَّمَ

फिर वोह उन पर पछतावा होंगे[61] फिर मग़लूब कर दिये जाएंगे और काफ़िरों का ह़श्र

يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَا لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ

जहन्नम की त़रफ़ होगा इस लिये कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे[62] और नजासतों को

بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ

तले ऊपर रख कर सब एक ढेर बना कर जहन्नम में डाल दे वोही नुक़्सान

الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ ع قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ

पाने वाले हैं[63] तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा[64]

55 : इस आयत से साबित हुवा कि "इस्तिग़्फ़ार" अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़ है। ह़दीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के लिये दो अमानें उतारीं, एक मेरा उन में तशरीफ़ फ़रमा होना, एक उन का इस्तिग़्फ़ार करना 56 : और मोमिनीन को त़वाफ़े का'बा के लिये नहीं आने देते जैसा कि वाक़िअ़ए हुदैबिया के साल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को रोका। 57 : और का'बे के उमूर में तसर्रुफ़ व इन्तिज़ाम का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्यूं कि मुश्रिक हैं। 58 : या'नी नमाज़ की जगह सीटी और ताली बजाते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कुरैश नंगे हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और सीटियां और तालियां बजाते थे और येह फ़े'ल उन का या तो इस ए'तिक़ादे बात़िल से था कि सीटी और ताली बजाना इ़बादत है या इस शरारत से कि उन के इस शोर से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ में परेशानी हो। 59 : क़त्ल व क़ैद का बद्र में 60 : या'नी लोगों को अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाने से मानेअ़ हों। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ार में से उन बारह क़ुरैशियों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने लश्करे कुफ़्फ़ार का खाना अपने ज़िम्मे लिया था और हर एक उन में से लश्कर को खाना देता था हर रोज़ दस ऊंट। 61 : कि माल भी गया और काम भी न बना। 62 : या'नी गुरोहे

وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا

और अगर फिर वोही करें तो अगलों का दस्तूर गुज़र चुका है[65] और उन से लड़ो यहां तक

تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا

कि कोई फ़साद[66] बाक़ी न रहे और सारा दीन **अल्लाह** ही का हो जाए फिर अगर वोह बाज़ रहें तो **अल्लाह**

يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى

उन के काम देख रहा है और अगर वोह फिरें[67] तो जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारा मौला है[68] तो क्या ही अच्छा मौला

وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۴۰﴾

और क्या ही अच्छा मददगार

कुफ़्फ़ार को गुरौहे मोमिनीन से मुमताज़ कर दे। **63 :** कि दुन्या व आख़िरत के टोटे में रहे और अपने माल ख़र्च कर के अज़ाबे आख़िरत मोल लिया। **64 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि काफ़िर जब कुफ़्र से बाज़ आए और इस्लाम लाए तो उस का पहला कुफ़्र और मआ़सी (तमाम गुनाह) मुआ़फ़ हो जाते हैं। **65** कि **अल्लाह** तआ़ला अपने दुश्मनों को हलाक करता है और अपने अम्बिया और औलिया की मदद फ़रमाता है। **66 :** या'नी शिर्क **67 :** ईमान लाने से **68 :** तुम उस की मदद पर भरोसा रखो।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِی

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो[69] तो उस का पांचवां हिस्सा ख़ास **अल्लाह** और रसूल और क़राबत

الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ

वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों का है[70] अगर तुम ईमान लाए हो **अल्लाह** पर

وَ مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى

और उस पर जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारा जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं[71] और **अल्लाह**

كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَ هُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى

सब कुछ कर सकता है जब तुम नाले के उस किनारे थे[72] और काफ़िर परले किनारे

وَ الرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَ لَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ وَ

और क़ाफ़िला[73] तुम से तराई में[74] और अगर तुम आपस में कोई वा'दा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुंचते[75]

لٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ۬ لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ

लेकिन येह इस लिये कि **अल्लाह** पूरा करे जो काम होना है[76] कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो[77]

وَّ یَحْیٰى مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾ اِذْ یُرِیْكَهُمُ

और जो जिये दलील से जिये[78] और बेशक **अल्लाह** ज़रूर सुनता जानता है जब कि ऐ महबूब **अल्लाह** तुम्हें

69 : ख़्वाह क़लील या कसीर। "ग़नीमत" वोह माल है जो मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार से जंग में ब त़रीक़े क़हरो ग़लबा हासिल हो। **मस्अला :** माले ग़नीमत पांच हिस्सों पर तक़्सीम किया जाए उस में से चार हिस्से ग़ानिमीन (ग़ाज़ियों) के। **70 मस्अला :** ग़नीमत का पांचवां हिस्सा फिर पांच हिस्सों पर तक़्सीम होगा उन में से एक हिस्सा जो कुल माल का पच्चीसवां हिस्सा हुवा वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये है और एक हिस्सा आप के अहले क़राबत के लिये और तीन हिस्से यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये। **मस्अला :** रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द हुज़ूर और आप के अहले क़राबत के हिस्से भी यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और येह पांचवां हिस्सा उन्हीं तीन पर तक़्सीम हो जाएगा। येही क़ौल है इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه का। **71 :** इस दिन से रोज़े बद्र मुराद है और दोनों फ़ौजों से मुसल्मानों और काफ़िरों की फ़ौजें और येह वाक़िआ़ सतरह या उन्नीस रमज़ान को पेश आया। अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'दाद तीन सो दस से कुछ ज़ियादा थी और मुश्रिकीन हज़ार के क़रीब थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें हज़ीमत (शिकस्त) दी उन में से सत्तर से ज़ियादा मारे गए और इतने ही गिरिफ़्तार हुए। **72 :** जो मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ है **73 :** क़ुरैश का जिस में अबू सुफ़्यान वग़ैरा थे। **74 :** तीन मील के फ़ासिले पर साहिल की त़रफ़। **75 :** या'नी अगर तुम और वोह बाहम जंग का कोई वक़्त मुअ़य्यन करते फिर तुम्हें अपनी क़िल्लत व बे सामानी और उन की कसरत व सामान का ह़ाल मा'लूम होता तो ज़रूर तुम हैबत व अन्देशे से मीआ़द में इख़्तिलाफ़ करते। **76 :** या'नी इस्लाम और मुस्लिमीन की नुसरत और दीन का ए'ज़ाज़ और दुश्मनाने दीन की हलाकत, इस लिये तुम्हें उस ने बे मीआ़द (वक़्त मुक़र्रर किये बिग़ैर) ही जम्अ़ कर दिया। **77 :** या'नी हुज्जते ज़ाहिरा क़ाइम होने और इ़ब्रत का मुआ़यना कर लेने के बा'द। **78 :** मुहम्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि हलाक से कुफ़्र, ह़यात से ईमान मुराद है। मा'ना येह हैं कि जो कोई काफ़िर हो उस को चाहिये कि पहले हुज्जत क़ाइम करे और ऐसे ही जो ईमान लाए वोह यक़ीन के साथ ईमान लाए और हुज्जत व बुरहान से जान ले कि येह दीन ह़क़ है और बद्र का वाक़िआ़ आयाते वाज़ेह़ा में से है, इस के बा'द जिस ने कुफ़्र इख़्तियार किया वोह मकाबिर (बड़ा मग़रूर) है, अपने नफ़्स को मुग़ालत़ा (धोका) देता है।

اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ

काफ़िरों को तुम्हारी ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था[79] और ऐ मुसल्मानो अगर वोह तुम्हें बहुत कर के दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मुआमले में

فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤٣ وَاِذْ

झगड़ा डालते[80] मगर **अल्लाह** ने बचा लिया[81] बेशक वोह दिलों की बात जानता है और

يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْۤ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْۤ اَعْيُنِهِمْ

जब लड़ते वक़्त[82] तुम्हें काफ़िर थोड़े कर के दिखाए[83] और तुम्हें उन की निगाहों में थोड़ा किया[84]

لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٤٤ يٰۤاَيُّهَا

कि **अल्लाह** पूरा करे जो काम होना है[85] और **अल्लाह** की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ

ईमान वालो जब किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और **अल्लाह** की याद बहुत करो[86] कि तुम

تُفْلِحُوْنَ ۝٤٥ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ

मुराद को पहुंचो और **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई

رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٤٦ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

हवा जाती रहेगी[87] और सब्र करो बेशक **अल्लाह** सब्र वालों के साथ है[88] और उन जैसे न होना जो

79 : येह **अल्लाह** तआला की ने'मत थी कि नबिय्ये करीम ﷺ को कुफ़्फ़ार की ता'दाद थोड़ी दिखाई गई और आप ने अपना येह ख़्वाब अस्हाब से बयान किया इस से उन की हिम्मतें बढ़ीं और अपने ज़ो'फ़ व कमज़ोरी का अन्देशा न रहा और उन्हें दुश्मन पर जुरअत पैदा हुई और क़ल्ब क़वी हुए। अम्बिया का ख़्वाब हक़ होता है आप को कुफ़्फ़ार दिखाए गए थे और ऐसे कुफ़्फ़ार जो दुन्या से बे ईमान जाएं और कुफ़्र ही पर उन का ख़ातिमा हो वोह थोड़े ही थे क्यूं कि जो लश्कर मुक़ाबिल आया था उस में कसीर लोग वोह थे जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में ईमान नसीब हुवा और ख़्वाब में क़िल्लत की ता'बीर ज़ो'फ़ से है। चुनान्चे **अल्लाह** तआला ने मुसल्मानों को ग़ालिब फ़रमा कर कुफ़्फ़ार का ज़ो'फ़ ज़ाहिर कर दिया। **80 :** और सबात व फ़िरार (साबित क़दम रहने और मैदान से भागने) में मुतरद्दिद रहते। **81 :** तुम को बुज़दिली और तरद्दुद और बाहमी इख़्तिलाफ़ से। **82 :** ऐ मुसल्मानो ! **83 :** हज़रते इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि वोह हमारी निगाहों में इतने कम जचे कि मैं ने अपने बराबर वाले एक शख़्स से कहा क्या तुम्हारे गुमान में काफ़िर सत्तर होंगे उस ने कहा कि मेरे ख़याल में सो हैं और थे हज़ार। **84 :** यहां तक कि अबू जहल ने कहा कि इन्हें रस्सियों में बांध लो गोया कि वोह मुसल्मानों की जमाअ़त को इतना क़लील देख रहा था कि मुक़ाबला करने और जंग आज़्मा होने के लाइक़ भी ख़याल नहीं करता था और मुश्रिकीन को मुसल्मानों की ता'दाद थोड़ी दिखाने में येह हिक्मत थी कि मुश्रिकीन मुक़ाबले पर जम जाएं भाग न पड़ें और येह बात इब्तिदा में थी, मुक़ाबला होने के बा'द उन्हें मुसल्मान बहुत ज़ियादा नज़र आने लगे। **85 :** या'नी इस्लाम का ग़लबा और मुसल्मानों की नुसरत और शिर्क का इब्त़ाल और मुश्रिकीन की ज़िल्लत और रसूले करीम ﷺ के मो'जिज़े का इज़्हार कि जो फ़रमाया था वोह हुवा कि जमाअ़ते क़लीला लश्करे गिरां (बड़े लश्कर) पर फ़त्ह याब हुई। **86 :** उस से मदद चाहो और कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब होने की दुआएं करो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इन्सान को हर ह़ाल में लाज़िम है कि वोह अपने क़ल्ब व ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखे और किसी सख़्ती व परेशानी में भी इस से ग़ाफ़िल न हो। **87 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बाहमी तनाज़ोअ़ ज़ो'फ़ व कमज़ोरी और बे वक़ारी का सबब है और येह भी मा'लूम हुवा कि बाहमी तनाज़ोअ़ से महफ़ूज़ रहने की तदबीर ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी और दीन का इत्तिबाअ़ है। **88 :** उन का मुईन व मददगार।

خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते[89]

وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ

और उन के सब काम अल्लाह के क़ाबू में हैं और जब कि शैतान ने उन की निगाह में उन के काम भले कर दिखाए[90] और बोला

لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

आज तुम पर कोई शख़्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ

उलटे पाउं भागा और बोला मैं तुम से अलग हूं[91] मैं वोह देखता हूं जो तुम्हें नज़र नहीं आता[92] मैं

اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ

अल्लाह से डरता हूं[93] और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है जब कहते थे मुनाफ़िक़[94] और वोह जिन के

89 **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुई जो बद्र में बहुत इतराते और तकब्बुर करते आए थे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ की : या रब ! येह क़ुरैश आ गए, तकब्बुर व ग़ुरूर में सरशार और जंग के लिये तय्यार, तेरे रसूल को झुटलाते हैं, या रब ! अब वोह मदद इनायत हो जिस का तू ने वा'दा किया था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जब अबू सुफ़्यान ने देखा कि क़ाफ़िले को कोई ख़त़रा नहीं रहा तो उन्हों ने क़ुरैश के पास पयाम भेजा कि तुम क़ाफ़िले की मदद के लिये आए थे, अब इस के लिये कोई ख़त़रा नहीं है लिहाज़ा वापस जाओ, इस पर अबू जहल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम वापस न होंगे यहां तक कि हम बद्र में उतरें, तीन रोज़ क़ियाम करें, ऊंट ज़ब्ह़ करें, बहुत से खाने पकाएं, शराबें पियें, कनीज़ों का गाना बजाना सुनें, अ़रब में हमारी शोहरत हो और हमारी हैबत हमेशा बाक़ी रहे, लेकिन ख़ुदा को कुछ और ही मन्ज़ूर था, जब वोह बद्र में पहुंचे तो जामे शराब की जगह उन्हें साग़रे मौत पीना पड़ा और कनीज़ों की साज़ो नवा की जगह रोने वालियां उन्हें रोईं। अल्लाह तआ़ला मोमिनीन को हुक्म फ़रमाता है कि इस वाक़िए से इ़ब्रत ह़ासिल करें और समझ लें कि फ़ख़्रो रिया और ग़ुरूरो तकब्बुर का अन्जाम ख़राब है बन्दे को इख़्लास और इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल चाहिये। **90 :** और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत और मुसल्मानों की मुख़ालफ़त में जो कुछ उन्हों ने किया था इस पर उन की ता'रीफ़ें कीं और उन्हें ख़बीस आ'माल पर क़ाइम रहने की रग़बत दिलाई और जब क़ुरैश ने बद्र में जाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो उन्हें याद आया कि उन के और क़बीलए बनी बक्र के दरमियान अ़दावत है मुम्किन था कि वोह येह ख़याल कर के वापसी का क़स्द करते, येह शैत़ान को मन्ज़ूर न था इस लिये उस ने येह फ़रेब किया कि वोह सुराक़ा बिन मालिक बिन जु'शुम बनी किनाना के सरदार की सूरत में नुमूदार हुवा और एक लश्कर और एक झन्डा साथ ले कर मुश्रिकीन से आ मिला और उन से कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मादार हूं आज तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं। जब मुसल्मानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर सफ़ आरा हुए और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक मुश्ते ख़ाक मुश्रिकीन के मुंह पर मारी और वोह पीठ फेर कर भागे और ह़ज़रते जिब्रील इब्लीसे लईन की त़रफ़ बढ़े जो सुराक़ा की शक्ल में ह़ारिस बिन हिशाम का हाथ पकड़े हुए था, वोह हाथ छुड़ा कर मअ़ अपने गुरौह के भागा, ह़ारिस पुकारता रह गया सुराक़ा ! सुराक़ा ! तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे कहां जाते हो ? कहने लगा : मुझे वोह नज़र आता है जो तुम्हें नज़र नहीं आता, इस आयत में इस वाक़िए का बयान है। **91 :** और अम्न की जो ज़िम्मादारी ली थी उस से सुबुक दोश (बरिय्युज़्ज़िम्मा) होता हूं, इस पर ह़ारिस बिन हिशाम ने कहा कि हम तेरे भरोसे पर आए थे तू इस ह़ालत में हमें रुस्वा करेगा ! कहने लगा : **92 :** या'नी लश्करे मलाएका। **93 :** कहीं वोह मुझे हलाक न कर दे। जब कुफ़्फ़ार को हज़ीमत (हार) हुई और वोह शिकस्त खा कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे तो उन्हों ने येह मश्हूर किया कि हमारी शिकस्त व हज़ीमत का बाइ़स सुराक़ा हुवा। सुराक़ा को येह ख़बर पहुंची तो उसे ह़ैरत हुई और उस ने कहा : येह लोग क्या कहते हैं ! न मुझे इन के आने की ख़बर न जाने की। हज़ीमत हो गई जब मैं ने सुना है। तो क़ुरैश ने कहा कि तू फ़ुलां फ़ुलां रोज़ हमारे पास आया था। उस ने क़सम खाई कि येह ग़लत़ है, तब उन्हें मा'लूम हुवा कि वोह शैत़ान था। **94 :** मदीने के।

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰۤؤُلَآءِ دِیْنُهُمْ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ

दिलों में आज़ार (बीमारी) है[95] कि येह मुसलमान अपने दीन पर मग़रूर हैं[96] और जो अल्लाह पर भरोसा करे[97] तो बेशक अल्लाह[98]

عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۴۹﴾ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذْ یَتَوَفَّى الَّذِیْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓىٕكَةُ یَضْرِبُوْنَ

ग़ालिब हिक्मत वाला है और कभी तू देखे जब फ़िरिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं मार रहे हैं

وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ۚ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿۵۰﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

उन के मुंह पर और उन की पीठ पर[99] और चखो आग का अ़ज़ाब येह[100] बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने

اَیْدِیْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۵۱﴾ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

आगे भेजा[101] और अल्लाह बन्दों पर जुल्म नहीं करता[102] जैसे फ़िरऔ़न वालों

وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ

और उन से अगलों का दस्तूर[103] वोह अल्लाह की आयतों से मुन्किर हुए तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा

اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ یَكُ مُغَیِّرًا نِّعْمَةً

बेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब वाला है येह इस लिये कि अल्लाह किसी क़ौम से जो ने'मत उन्हें

اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۳﴾ ۙ

दी थी बदलता नहीं जब तक वोह ख़ुद न बदल जाएं[104] और बेशक अल्लाह सुनता जानता है

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ

जैसे फ़िरऔ़न वालों और उन से अगलों का दस्तूर उन्हों ने अपने रब की आयतें झुटलाईं

95 : येह मक्कए मुकर्रमा के कुछ लोग थे जिन्हों ने कलिमए इस्लाम तो पढ़ लिया था मगर अभी तक उन के दिलों में शक व तरद्दुद बाक़ी था। जब कुफ़्फ़ारे कुरैश सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग के लिये निकले येह भी उन के साथ बद्र में पहुंचे, वहां जा कर मुसल्मानों को क़लील देखा तो शक और बढ़ा और मुरतद हो गए और कहने लगे : 96 : कि बा वुजूद अपनी ऐसी क़लील ता'दाद के ऐसे लश्करे गिरां (बड़े लश्कर) के मुक़ाबिल हो गए, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : 97 : और अपना काम उस के सिपुर्द कर दे और उस के फ़ज़्लो एहसान पर मुत्मइन हो 98 : उस का हाफ़िज़ो नासिर है। 99 : लोहे के गुर्ज़ जो आग में लाल किये हुए हैं और उन से जो ज़ख़्म लगता है उस में आग पड़ती है और सोज़िश होती है, उन से मार कर फ़िरिश्ते काफ़िरों से कहते हैं : 100 : मुसीबतें और अ़ज़ाब 101 : या'नी जो तुम ने कस्ब किया कुफ़्र और इस्यान। 102 : किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं करता और काफ़िर पर अ़ज़ाब करना अ़द्ल है। 103 : या'नी इन काफ़िरों की आ़दत कुफ़्र व सरकशी में फ़िरऔ़नी और इन से पहलों की मिस्ल है तो जिस त़रह़ वोह हलाक किये गए येह भी रोज़े बद्र क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किये गए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जिस त़रह़ फ़िरऔ़नियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को ब यक़ीन जान कर उन की तक्ज़ीब की येही ह़ाल इन लोगों का है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत को जान पहचान कर तक्ज़ीब करते हैं। 104 : और ज़ियादा बदतर ह़ाल में मुब्तला न हों जैसे कि अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे मक्का को रोज़ी दे कर भूक की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की, अम्न दे कर ख़ौफ़ से नजात दी और उन की त़रफ़ अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नबी बना कर मब्ऊ़स किया। उन्हों ने इन ने'मतों पर शुक्र तो न किया बजाए इस के येह सरकशी की,

فَاَهۡلَكۡنٰهُمۡ بِذُنُوۡبِهِمۡ وَاَغۡرَقۡنَاۤ اٰلَ فِرۡعَوۡنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوۡا ظٰلِمِيۡنَ ﴿۵۴﴾

तो हम ने उन को उन के गुनाहों के सबब हलाक किया और हम ने फ़िरऔन वालों को डुबो दिया[105] और वोह सब ज़ालिम थे

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنۡدَ اللّٰهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۵﴾ اَلَّذِيۡنَ

बेशक सब जानवरों में बदतर **अल्लाह** के नज़्दीक वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते वोह जिन से

عٰهَدۡتَّ مِنۡهُمۡ ثُمَّ يَنۡقُضُوۡنَ عَهۡدَهُمۡ فِىۡ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمۡ لَا يَتَّقُوۡنَ ﴿۵۶﴾

तुम ने मुआहदा किया था फिर हर बार अपना अ़ह्द तोड़ देते हैं[106] और डरते नहीं[107]

فَاِمَّا تَثۡقَفَنَّهُمۡ فِى الۡحَرۡبِ فَشَرِّدۡ بِهِمۡ مَّنۡ خَلۡفَهُمۡ لَعَلَّهُمۡ يَذَّكَّرُوۡنَ ﴿۵۷﴾

तो अगर तुम कहीं उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिस से उन के पसमांदों को भगाओ[108] इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इब्रत हो[109]

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنۡ قَوۡمٍ خِيَانَةً فَانۢبِذۡ اِلَيۡهِمۡ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा (अ़ह्द शिकनी) का अन्देशा करो[110] तो उन का अ़ह्द उन की त़रफ़ फेंक दो बराबरी पर[111] बेशक दग़ा वाले

يُحِبُّ الۡخَآئِنِيۡنَ ﴿۵۸﴾ وَلَا يَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا سَبَقُوۡا ؕ اِنَّهُمۡ

अल्लाह को पसन्द नहीं और हरगिज़ काफ़िर इस घमन्ड में न रहें कि वोह[112] हाथ से निकल गए बेशक वोह

لَا يُعۡجِزُوۡنَ ﴿۵۹﴾ وَاَعِدُّوۡا لَهُمۡ مَّا اسۡتَطَعۡتُمۡ مِّنۡ قُوَّةٍ وَّمِنۡ رِّبَاطِ

आ़जिज़ नहीं करते[113] और उन के लिये तय्यार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े[114] और जितने घोड़े

कि नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की, इन की ख़ूंरेज़ी के दरपै हुए और लोगों को राहे हक़ से रोका। सुद्दी ने कहा कि **अल्लाह** की ने'मत हज़रत सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं। **105 :** ऐसे ही येह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हैं जिन्हें बद्र में हलाक किया गया। **106 शाने नुज़ूल :** ''اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ'' और इस के बा'द की आयतें बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुईं जिन का रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़ह्द था कि वोह आप से न लड़ेंगे न आप के दुश्मनों की मदद करेंगे। उन्हों ने अ़ह्द तोड़ा और मुश्रिकीने मक्का ने जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग की तो उन्हों ने हथियारों से उन की मदद की फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मा'ज़िरत की, कि हम भूल गए थे और हम से क़ुसूर हुवा, फिर दोबारा अ़ह्द किया और उस को भी तोड़ा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्यूं कि कुफ़्फ़ार सब जानवरों से बदतर हैं और बा वुजूद कुफ़्र के अ़ह्द शिकन भी हों तो और भी ख़राब। **107 :** ख़ुदा से, न अ़ह्द शिकनी के ख़राब नतीजे से और न इस से शरमाते हैं, बा वुजूदे कि अ़ह्द शिकनी हर आ़क़िल के नज़्दीक शर्मनाक जुर्म है और अ़ह्द शिकनी करने वाला सब के नज़्दीक बे ए'तिबार हो जाता है, जब उन की बे ग़ैरती इस दरजे पहुंच गई तो यक़ीनन वोह जानवरों से बदतर हैं। **108 :** और उन की हिम्मतें तोड़ दो और उन की जमाअ़तें मुन्तशिर कर दो। **109 :** और वोह पन्द पज़ीर (नसीहत क़बूल करने वाले) हों। **110 :** और ऐसे आसार व क़राइन पाए जाएं जिन से साबित हो कि वोह ग़द्र करेंगे और अ़ह्द पर क़ाइम न रहेंगे **111 :** या'नी उन्हें उस अ़ह्द की मुख़ालफ़त करने से पहले आगाह कर दो कि तुम्हारी बद अ़ह्दी के क़राइन पाए गए लिहाज़ा वोह अ़ह्द क़ाबिले ए'तिबार न रहा, उस की पाबन्दी न की जाएगी। **112 :** जंगे बद्र से भाग कर क़त्ल व क़ैद से बच गए और मुसल्मानों के **113 :** अपने गिरिफ़्तार करने वाले को। इस के बा'द मुसल्मानों को ख़ित़ाब होता है। **114 :** ख़्वाह वोह हथियार हों या क़ल्ए़ या तीर अन्दाज़ी। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस आयत की तफ़्सीर में क़ुव्वत के मा'ना रमी या'नी तीर अन्दाज़ी बताए।

الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا

बांध सको कि उन से उन के दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं[115] और उन के सिवा कुछ औरों के दिलों में

تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

जिन्हें तुम नहीं जानते[116] अल्लाह उन्हें जानता है और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا

तुम्हें पूरा दिया जाएगा[117] और किसी तरह घाटे में नहीं रहोगे और अगर वोह सुल्ह की तरफ़ झुकें तो तुम भी झुको[118]

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۱﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ

और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वोही है सुनता जानता और अगर वोह तुम्हें

يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ

फ़रेब दिया चाहें[119] तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है वोही है जिस ने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ

मुसल्मानों का और उन के दिलों में मैल कर दिया (उल्फ़त पैदा कर दी)[120] अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है

جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ

सब ख़र्च कर देते उन के दिल न मिला सकते[121] लेकिन अल्लाह ने उन के दिल मिला दिये बेशक वोही है ग़ालिब

حَكِيْمٌ ﴿۶۳﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۴﴾ ع

हिक्मत वाला ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसल्मान तुम्हारे पैरव हुए[122]

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दो अगर तुम में के

115 : या'नी कुफ़्फ़ार अहले मक्का हों या दूसरे। **116 :** इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यहां औरों से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं। हसन का क़ौल है कि काफ़िर जिन्न। **117 :** उस की जज़ा वाफ़िर मिलेगी **118 :** उन से सुल्ह क़बूल कर लो। **119 :** और सुल्ह का इज़्हार मक्र (फ़रेब देने) के लिये करें **120 :** जैसा कि क़बीलए औस व ख़ज़रज में महब्बत व उल्फ़त पैदा कर दी बा वुजूदे कि इन में सो बरस से ज़ियादा की अ़दावतें थीं और बड़ी बड़ी लड़ाइयां होती रहती थीं, येह महज़ अल्लाह का करम है। **121 :** या'नी उन की बाहमी अ़दावत इस हद तक पहुंच गई थी कि उन्हें मिला देने के लिये तमाम सामान (हर्बे) बेकार हो चुके थे और कोई सूरत बाक़ी न रही थी, ज़रा ज़रा सी बात में बिगड़ जाते और सदियों तक जंग बाक़ी रहती, किसी तरह दो दिल न मिल सकते। जब रसूले करीम صلى الله عليه وسلم मब्ऊ़स हुए और अ़रब लोग आप पर ईमान लाए और उन्हों ने आप का इत्तिबाअ़ किया तो येह हालत बदल गई और दिलों से देरीना अ़दावतें (पुरानी दुश्मनियां) और कीने दूर हुए और ईमानी महब्बतें पैदा हुईं, येह रसूले करीम صلى الله عليه وسلم का रोशन मो'जिज़ा है। **122 शाने नुज़ूल :** सईद बिन जुबैर हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضى الله عنهما से रिवायत करते हैं कि येह आयत हज़रते उ़मर رضى الله عنه के ईमान लाने के बारे

عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا

बीस सब्र वाले होंगे दो सो पर ग़ालिब होंगे और अगर तुम में के सो हों तो काफ़िरों के

اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ

हज़ार पर ग़ालिब आएंगे इस लिये कि वोह समझ नहीं रखते[123] अब **अल्लाह** ने तुम पर से तख़्फ़ीफ़

عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا

फ़रमा दी और उसे मा'लूम है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में सो सब्र वाले हों दो सो पर ग़ालिब

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

आएंगे और अगर तुम में के हज़ार हों तो दो हज़ार पर ग़ालिब होंगे **अल्लाह** के हुक्म से और **अल्लाह**

مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي

सब्र वालों के साथ है किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब

الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ

न बहाए[124] तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो[125] और **अल्लाह** आख़िरत चाहता है[126] और **अल्लाह**

में नाज़िल हुई। ईमान से सिर्फ़ तेंतीस मर्द और छ[6] औरतें मुशर्रफ़ हो चुके थे, तब हज़रते उमर رضی اللہ عنہ इस्लाम लाए। इस क़ौल की बिना पर येह आयत मक्की है, नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم के हुक्म से मदनी सूरत में लिखी गई। एक क़ौल येह है कि येह आयत ग़ज़्वए बद्र में क़ब्ले क़िताल नाज़िल हुई, इस तक़्दीर पर आयत मदनी है और मोमिनीन से यहां एक क़ौल में अन्सार, एक में तमाम मुहाजिरीन व अन्सार मुराद हैं। **123 :** येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वा'दा और बिशारत है कि मुसल्मानों की जमाअ़त साबिर रहे तो ब मददे इलाही दस गुने काफ़िरों पर ग़ालिब रहेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार जाहिल हैं और उन की ग़रज़ जंग से न हुसूले सवाब है न ख़ौफ़े अ़ज़ाब, जानवरों की त़रह लड़ते भिड़ते हैं, तो वोह लिल्लाहिय्यत (इख़्लास) के साथ लड़ने वाले के मुक़ाबिल क्या ठहर सकेंगे। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो मुसल्मानों पर फ़र्ज़ कर दिया गया कि मुसल्मानों का एक दस के मुक़ाबले से न भागे फिर आयत ''اَلْـئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ'' नाज़िल हुई तो येह लाज़िम किया गया कि एक सो दो सो के मुक़ाबिल क़ाइम रहें या'नी दस गुने से मुक़ाबले की फ़र्ज़िय्यत मन्सूख़ हुई और दो गुने के मुक़ाबले से भागना मम्नूअ़ रखा गया। **124 :** और क़त्ले कुफ़्फ़ार में मुबालग़ा कर के कुफ़्र की ज़िल्लत और इस्लाम की शौकत का इज़्हार न करे। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरा की अहादीस में है कि जंगे बद्र में सत्तर काफ़िर क़ैद कर के सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के हुज़ूर में लाए गए, हुज़ूर ने उन के मुतअ़ल्लिक़ सहाबा से मश्वरा त़लब फ़रमाया। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया कि येह आप की क़ौम व क़बीले के लोग हैं, मेरी राय में इन्हें फ़िद्या ले कर छोड़ दिया जाए इस से मुसल्मानों को क़ुव्वत भी पहुंचेगी और क्या अ़जब है कि **अल्लाह** तआ़ला इन लोगों को इस्लाम नसीब करे। ह़ज़रते उमर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि इन लोगों ने आप की तक्ज़ीब की, आप को मक्कए मुकर्रमा में न रहने दिया, येह कुफ़्र के सरदार और सर परस्त हैं, इन की गरदनें उड़ाइये **अल्लाह** तआ़ला ने आप को फ़िदये से ग़नी किया है, अ़लिय्ये मुर्तज़ा को अ़क़ील पर और ह़ज़रते ह़म्ज़ा को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे क़राबती पर मुक़र्रर कीजिये कि इन की गरदनें मार दें। आख़िर कार फ़िद्या ही लेने की राय क़रार पाई और जब फ़िद्या लिया गया तो आयत नाज़िल हुई। **125 :** येह ख़ित़ाब मोमिनीन को है और माल से फ़िद्या मुराद है। **126 :** या'नी तुम्हारे लिये आख़िरत का सवाब जो क़त्ले कुफ़्फ़ार व ए'ज़ाज़े इस्लाम पर मुरत्तब है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह हुक्म बद्र में था जब कि मुसल्मान थोड़े थे फिर जब मुसल्मानों की ता'दाद ज़ियादा हुई और वोह फ़ज़्ले इलाही से क़वी हुए तो क़ैदियों के ह़क़ में नाज़िल हुई ''فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً'' और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم और मोमिनीन को इख़्तियार दिया कि चाहे काफ़िरों को क़त्ल करें, चाहे उन्हें ग़ुलाम बनाएं, चाहे फ़िद्या लें, चाहे आज़ाद करें। बद्र के क़ैदियों का फ़िद्या चालीस ऊक़िया सोना फ़ी कस था जिस के सोलह सो दिरहम हुए।

عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ

ग़ालिब हिक्मत वाला है अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता[127] तो ऐ मुसल्मानो तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उस में

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तुम पर बड़ा अज़ाब आता तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली हलाल पाकीज़ा[128] और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ

बख़्शने वाला मेह्रबान है ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं उन से फ़रमाओ[129]

اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में भलाई जानी[130] तो जो तुम से लिया गया[131] इस से बेहतर तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ

और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है[132] और ऐ महबूब अगर वोह[133] तुम से दग़ा चाहेंगे[134] तो इस से पहले अल्लाह ही की ख़ियानत कर चुके हैं

127 : येह कि इज्तिहाद पर अ़मल करने वाले से मुआख़ज़ा (पूछगछ) न फ़रमाएगा और यहां सहाबा ने इज्तिहाद ही किया था और उन की फ़िक्र में येही बात आई थी कि काफ़िरों को ज़िन्दा छोड़ देने में इन के इस्लाम लाने की उम्मीद है और फ़िदया लेने में दीन को तक़्वियत होती है और इस पर नज़र नहीं की गई कि क़त्ल में इ़ज़्ज़ते इस्लाम और तहदीदे कुफ़्फ़ार (काफ़िरों के दिलों में ख़ौफ़ और दबदबा बिठाना) है। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इस दीनी मुआ़मले में सहाबा की राय दरयाफ़्त फ़रमाना मश्रूइय्यते इज्तिहाद की दलील है या "كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ" से वोह मुराद है जो उस ने लौहे महफ़ूज़ में लिखा कि अहले बद्र पर अ़ज़ाब न किया जाएगा। **128 :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो अस्हाबे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जो फ़िदये लिये थे उन से हाथ रोक लिये, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी ग़नीमतें हलाल की गईं उन्हें खाओ। सहीहैन की हदीस में है अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये ग़नीमतें हलाल कीं, हम से पहले किसी के लिये हलाल न की गई थीं। **129 शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه के बारे में नाज़िल हुई है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा हैं, येह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के उन दस सरदारों में से थे जिन्हों ने जंगे बद्र में लश्करे कुफ़्फ़ार के खाने की ज़िम्मादारी ली थी और येह इस ख़र्च के लिये बीस ऊक़िया सोना साथ ले कर चले थे (एक ऊक़िया चालीस दिरहम का होता है) लेकिन इन के ज़िम्मे जिस दिन खिलाना तज्वीज़ हुवा था ख़ास उसी रोज़ जंग का वाक़िआ़ पेश आया और क़िताल में खाने खिलाने की फ़ुरसत व मोहलत न मिली तो येह बीस ऊक़िया सोना इन के पास बच रहा, जब वोह गिरिफ़्तार हुए और येह सोना इन से ले लिया गया तो इन्हों ने दरख़्वास्त की, कि येह सोना उन के फ़िदये में महसूब (शुमार) कर लिया जाए, मगर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्कार फ़रमाया इर्शाद किया जो चीज़ हमारी मुख़ालफ़त में सर्फ़ करने के लिये लाए थे वोह न छोड़ी जाएगी और हज़रते अ़ब्बास पर इन के दोनों भतीजों अ़क़ील बिन अबी तालिब और नौफ़ल बिन हारिस के फ़िदये का बार भी डाला गया तो हज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया या मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) तुम मुझे इस हाल में छोड़ोगे कि मैं बाक़ी उम्र क़ुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूं ? तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर वोह सोना कहां है जिस को तुम्हारे मक्कए मुकर्रमा से चलते वक़्त तुम्हारी बीबी उम्मुल फ़ज़्ल ने दफ़्न किया है और तुम उन से कह कर आए हो कि ख़बर नहीं है कि मुझे क्या हादिसा पेश आए अगर मैं जंग में काम आ जाऊं (मारा जाऊं) तो येह तेरा है और अ़ब्दुल्लाह और उ़बैदुल्लाह का और फ़ज़्ल और क़ुसम का (येह सब इन के बेटे थे)। हज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया कि आप को कैसे मा'लूम हुवा ? हुज़ूर ने फ़रमाया : मुझे मेरे रब ने ख़बरदार किया है। इस पर हज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया : मैं गवाही देता हूं बेशक आप सच्चे हैं और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक आप उस के बन्दे और रसूल हैं, मेरे इस राज़ पर अल्लाह के सिवा कोई मुत्तलअ़ न था और हज़रते अ़ब्बास ने अपने भतीजों अ़क़ील व नौफ़ल को हुक्म दिया वोह भी इस्लाम लाए। **130 :** ख़ुलूसे ईमान और सिह्हते निय्यत से **131 :** या'नी फ़िदया। **132 :** जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास बहरीन का माल आया जिस की मिक़्दार अस्सी हज़ार थी तो हुज़ूर ने नमाज़े ज़ोहर के लिये वुज़ू किया और नमाज़ से पहले पहले कुल का कुल तक़्सीम कर दिया और हज़रते अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه को हुक्म दिया कि इस में से ले लो। तो जितना उन से उठ सका उतना उन्हों ने ले लिया। वोह फ़रमाते थे कि येह उस से बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और मैं उस की मग़्फ़िरत की उम्मीद रखता हूं और उन के तमव्वुल (दौलत मन्द होने) का येह हाल हुवा कि उन के बीस ग़ुलाम थे सब के सब ताजिर और उन में सब से कम सरमाया जिस का था उस का बीस हज़ार का था। **133 :** वोह क़ैदी **134 :** तुम्हारी बैअ़त से फिर कर और कुफ़्र इख़्तियार कर के।

قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

जिस पर उस ने इतने तुम्हारे क़ाबू में दे दिये[135] और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है बेशक जो ईमान लाए और

هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

अल्लाह के लिये[136] घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े[137] और वोह जिन्हों ने जगह दी

وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓىِٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا

और मदद की[138] वोह एक दूसरे के वारिस हैं[139] और वोह जो ईमान लाए[140] और हिजरत न की

مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ

तुम्हें उन का तर्का कुछ नहीं पहुंचता जब तक हिजरत न करें और अगर वोह दीन में

فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ

तुम से मदद चाहें तो तुम पर मदद देना वाजिब है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उन में मुआ़हदा है और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا

तुम्हारे काम देख रहा है और काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं[141] ऐसा

تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद होगा[142] और वोह जो ईमान लाए और

هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓىِٕكَ هُمُ

हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्हों ने जगह दी और मदद की वोही

الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ

सच्चे ईमान वाले हैं उन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[143] और जो बा'द को ईमान

---

135 : जैसा कि वोह बद्र में देख चुके हैं कि क़त्ल हुए, गिरिफ़्तार हुए, आयिन्दा भी अगर उन के अत़्वार वोही रहे तो उन्हें इसी का उम्मीद वार रहना चाहिये। 136 : और उसी के रसूल की मह़ब्बत में उन्हों ने अपने 137 : येह मुहाजिरीने अव्वलीन हैं। 138 : मुसल्मानों की और उन्हें अपने मकानों में ठहराया, येह अन्सार हैं। इन मुहाजिरीन और अन्सार दोनों के लिये इर्शाद होता है : 139 : मुहाजिर अन्सार के और अन्सार मुहाजिर के। येह विरासत आयत "وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ" से मन्सूख़ हो गई। 140 : और मक्कए मुकर्रमा ही में मुक़ीम रहे 141 : उन के और मोमिनीन के दरमियान विरासत नहीं। इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार की मुवालात व मुवारसत से मन्अ़ किया गया और उन से जुदा रहने का हुक्म दिया गया और मुसल्मानों पर बाहम मेलजोल रखना लाज़िम किया गया। 142 : या'नी अगर मुसल्मानों में बाहम तआ़वुन व तनासुर न हो और वोह एक दूसरे के मददगार हो कर एक क़ुव्वत न बन जाएं तो कुफ़्फ़ार क़वी होंगे और मुसल्मान ज़ईफ़ और येह बड़ा फ़ितना व फ़साद है। 143 : पहली आयत में मुहाजिरीन व अन्सार के बाहमी तअ़ल्लुक़ात और उन में से हर एक के दूसरे के मुईन व नासिर होने का बयान था। इस आयत में इन दोनों के ईमान की तस्दीक़ और इन के मूरिदे रह़मते इलाही होने का ज़िक्र है।

بَعۡدُ وَهَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا مَعَكُمۡ فَاُولٰٓئِكَ مِنۡكُمۡ ؕ وَاُولُوا الۡاَرۡحَامِ

लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वोह भी तुम्हीं में से हैं[144] और रिश्ते वाले

بَعۡضُهُمۡ اَوۡلٰى بِبَعۡضٍ فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۷۵﴾

एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक हैं अल्लाह की किताब में[145] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है

ایاتها ١٢٩ ۹ سورة التوبة مدنية ١١٣ ركوعاتها ١٦

सूरए तौबह मदनिय्या है इस में एक सो उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖۤ اِلَى الَّذِيۡنَ عٰهَدۡتُّمۡ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ؕ ﴿۱﴾

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ से उन मुश्रिकों को जिन से तुम्हारा मुआ़हदा था और वोह क़ाइम न रहे[2]

فَسِيۡحُوۡا فِى الۡاَرۡضِ اَرۡبَعَةَ اَشۡهُرٍ وَّاعۡلَمُوۡۤا اَنَّكُمۡ غَيۡرُ مُعۡجِزِى

तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नहीं

144 : और तुम्हारे ही हुक्म में हैं ऐ मुहाजिरीन व अन्सार। **मुहाजिरीन के कई त़बक़े हैं :** एक वोह हैं जिन्हों ने पहली मरतबा मदीनए त़य्यिबा को हिजरत की उन्हें मुहाजिरीने अव्वलीन कहते हैं। कुछ वोह ह़ज़रात हैं जिन्हों ने पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, फिर मदीनए त़य्यिबा उन्हें अस्ह़ाबुल हिज्रतैन कहते हैं। बा'ज़ ह़ज़रात वोह हैं जिन्हों ने सुल्ह़े हुदैबिया के बा'द फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल हिजरत की येह अस्ह़ाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं। पहली आयत में मुहाजिरीने अव्वलीन का ज़िक्र है और इस आयत में अस्ह़ाबे हिजरते सानिया का। **145 :** इस आयत से तवारुस बिल हिजरत (हिजरत की वज्ह से जो विरासत में ह़िस्सा मिलता था) मन्सूख़ किया गया और ज़विल अरह़ाम (रिश्ते वालों) की विरासत साबित हुई। **1 :** सूरए तौबह मदनिय्या है मगर इस के अख़ीर की आयतें "لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ" से अख़ीर तक इन को बा'ज़ उ़लमा मक्की कहते हैं। इस सूरत में सोलह 16 रुकूअ़ एक सो उन्तीस 129 आयतें चार हज़ार अठत्तर 4078 कलिमे दस हज़ार चार सो अठासी 10488 ह़र्फ़ हैं। इस सूरत के दस नाम हैं उन में से तौबह और बराअत दो नाम मश्हूर हैं। इस सूरत के अव्वल में "بِسْمِ اللّٰه" नहीं लिखी गई इस की अस्ल वज्ह येह है कि जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इस सूरत के साथ "بِسْمِ اللّٰه" ले कर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "بِسْمِ اللّٰه" लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से मरवी है कि "بِسْمِ اللّٰه" अमान है और येह सूरत तलवार के साथ अम्न उठा देने के लिये नाज़िल हुई। बुख़ारी ने ह़ज़रते बराअ से रिवायत किया कि क़ुरआने करीम की सूरतों में सब से आख़िर येही सूरत नाज़िल हुई। **2 :** मुश्रिकीने अ़रब और मुसल्मानों के दरमियान अ़ह्द था, उन में से चन्द के सिवा सब ने अ़ह्द शिकनी की तो उन अ़ह्द शिकनों का अ़ह्द साक़ित़ कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वोह अम्न के साथ जहां चाहें गुज़ारें उन से कोई तअ़र्रुज़ न किया जाएगा, इस अ़र्से में उन्हें मौक़अ़ है कि ख़ूब सोच समझ लें कि उन के लिये क्या बेहतर है और अपनी एह़तियातें कर लें और जान लें कि इस मुद्दत के बा'द इस्लाम मन्ज़ूर करना होगा या क़त्ल। येह सूरत 9 सि. हिजरी में फ़त्ह़े मक्का से एक साल बा'द नाज़िल हुई, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस सनह में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه को अमीरे ह़ज मुक़र्रर फ़रमाया था और इन के बा'द अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मज्मए़ हुज्जाज में येह सूरत सुनाने के लिये भेजा। चुनान्चे ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने दस ज़िल ह़िज्जा को जम्रए अ़क़बा के पास खड़े हो कर निदा की "يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ" मैं तुम्हारी त़रफ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़िरिस्तादा (भेजा हुवा) आया हूं। लोगों ने कहा : आप क्या पयाम लाए हैं ? तो आप ने तीस या चालीस आयतें इस सूरते मुबारका की तिलावत फ़रमाईं, फिर फ़रमाया मैं चार हुक्म लाया हूं : (1) इस साल के बा'द कोई मुश्रिक का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पास न आए। (2) कोई शख़्स बरहना हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ न करे। (3) जन्नत में मोमिन के सिवा कोई दाख़िल न होगा। (4) जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़ह्द है वोह अ़ह्द अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिस की मुद्दत मुअ़य्यन नहीं है उस की मीआ़द चार माह पर तमाम हो जाएगी। मुश्रिकीन ने येह सुन कर कहा कि ऐ अ़ली ! अपने चचा के फ़रज़न्द (या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ख़बर दे दीजिये कि हम ने अ़ह्द पसे पुश्त फेंक दिया हमारे उन के दरमियान कोई अ़ह्द नहीं है बजुज़ नेज़ा बाज़ी और तैग़ ज़नी के। इस वाक़िए में ख़िलाफ़ते ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर की त़रफ़ एक लत़ीफ़ इशारा है कि हुज़ूर ने ह़ज़रते अबू बक्र को तो अमीरे ह़ज बनाया और ह़ज़रते अ़लिय्ये मुर्तज़ा को उन के पीछे सूरए बराअत पढ़ने के लिये भेजा तो ह़ज़रते अबू बक्र इमाम हुए और

اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِی الْكٰفِرِیْنَ ۝۲ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖۤ اِلَى

सकते[3] और येह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है[4] और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ से

النَّاسِ یَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِیْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۙ۬ وَرَسُوْلُهٗ ؕ

सब लोगों में बड़े ह़ज के दिन[5] कि अल्लाह बेज़ार है मुश्रिकों से और उस का रसूल

فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّیْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَیْرُ مُعْجِزِی

तो अगर तुम तौबा करो[6] तो तुम्हारा भला है और अगर मुंह फेरो[7] तो जान लो कि तुम अल्लाह को न थका

اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ۙ۝۳ اِلَّا الَّذِیْنَ عٰهَدْتُّمْ

सकोगे[8] और काफ़िरों को ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की मगर वोह मुश्रिक जिन से तुम्हारा

مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ثُمَّ لَمْ یَنْقُصُوْكُمْ شَیْـًٔا وَّلَمْ یُظَاهِرُوْا عَلَیْكُمْ اَحَدًا

मुआ़हदा था फिर उन्हों ने तुम्हारे अ़ह्द में कुछ कमी न की[9] और तुम्हारे मुक़ाबिल किसी को मदद न दी

فَاَتِمُّوْۤا اِلَیْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ۝۴

तो उन का अ़ह्द ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो बेशक अल्लाह परहेज़ गारों को दोस्त रखता है

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ

फिर जब ह़ुरमत वाले महीने निकल जाएं तो मुश्रिकों को मारो[10] जहां पाओ[11]

وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ

और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उन की ताक में बैठो फिर अगर वोह तौबा करें[12] और

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِیْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो उन की राह छोड़ दो[13] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा मुक़्तदी । इस से ह़ज़रते अबू बक्र की तक़्दीम ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा पर साबित हुई । 3 : और बा वुजूद इस मोहलत के उस की गिरिफ़्त से नहीं बच सकते । 4 : दुन्या में क़त्ल के साथ और आख़िरत में अ़ज़ाब के साथ । 5 : ह़ज को ह़ज्जे अक्बर फ़रमाया इस लिये कि उस ज़माने में उ़मरह को ह़ज्जे असग़र कहा जाता था और एक क़ौल येह है कि उस ह़ज को ह़ज्जे अक्बर इस लिये कहा गया कि उस साल रसूले करीम ﷺ ने ह़ज फ़रमाया था और चूंकि येह जुमुआ़ को वाक़ेअ़ हुवा था इस लिये मुसल्मान उस ह़ज को जो रोज़े जुमुआ़ हो ह़ज्जे वदाअ़ का मुज़क्किर (याद दिलाने वाला) जान कर ह़ज्जे अक्बर कहते हैं । 6 : कुफ़्र व ग़द्र से 7 : ईमान लाने और तौबा करने से 8 : येह वई़दे अ़ज़ीम है और इस में येह ए'लाम (जताना मक़्सूद) है कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब नाज़िल करने पर क़ादिर है । 9 : और उस को उस की शर्तों के साथ पूरा किया । येह लोग बनी ज़मुरा थे जो किनाना का एक क़बीला है और इन की मुद्दत के नव महीने बाक़ी रहे थे । 10 : जिन्हों ने अ़ह्द शिकनी की 11 : ह़िल में ख़्वाह ह़रम में किसी वक़्त व मकान की तख़्सीस नहीं । 12 : शिर्को कुफ़्र से और ईमान क़बूल करें 13 : और क़ैद से रिहा कर दो और उन से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करो ।

رَّحِيۡمٌ ۝٥ وَاِنۡ اَحَدٌ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ اسۡتَجَارَكَ فَاَجِرۡهُ حَتّٰى يَسۡمَعَ

मेह्रबान है   और ऐ मह़बूब अगर कोई मुशरिक तुम से पनाह मांगे[14] तो उसे पनाह दो कि वोह अल्लाह का

كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبۡلِغۡهُ مَاۡمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٦ كَيۡفَ

कलाम सुने फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुंचा दो[15]   येह इस लिये कि वोह नादान लोग हैं[16]   मुशरिकों

يَكُوۡنُ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ عَهۡدٌ عِنۡدَ اللّٰهِ وَعِنۡدَ رَسُوۡلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيۡنَ عٰهَدۡتُّمۡ

के लिये अल्लाह और उस के रसूल के पास कोई अ़ह्द क्यूंकर होगा[17] मगर वोह जिन से तुम्हारा मुआ़हदा

عِنۡدَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ۚ فَمَا اسۡتَقَامُوۡا لَـكُمۡ فَاسۡتَقِيۡمُوۡا لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

मस्जिदे ह़राम के पास हुवा[18]   तो जब तक वोह तुम्हारे लिये अ़ह्द पर क़ाइम रहें तुम उन के लिये क़ाइम रहो   बेशक

يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝٧ كَيۡفَ وَاِنۡ يَّظۡهَرُوۡا عَلَيۡكُمۡ لَا يَرۡقُبُوۡا فِيۡكُمۡ اِلًّا وَّ

परहेज़ गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं   भला क्यूंकर[19] उन का ह़ाल तो येह है कि तुम पर क़ाबू पाएं तो न क़राबत का लिह़ाज़ करें

لَا ذِمَّةً ؕ يُرۡضُوۡنَكُمۡ بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَتَاۡبٰى قُلُوۡبُهُمۡ ۚ وَاَكۡثَرُهُمۡ فٰسِقُوۡنَ ۝٨

न अ़ह्द का   अपने मुंह से तुम्हें राज़ी करते हैं[20] और उन के दिलों में इन्कार है   और उन में अक्सर बे हुक्म हैं[21]

اِشۡتَرَوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيۡلًا فَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ؕ اِنَّهُمۡ سَآءَ مَا

अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिये[22] तो उस की राह से रोका[23]   बेशक वोह बहुत

كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝٩ لَا يَرۡقُبُوۡنَ فِىۡ مُؤۡمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ

ही बुरे काम करते हैं   किसी मुसल्मान में न क़राबत का लिह़ाज़ करें न अ़ह्द का[24]   और वोही

الۡمُعۡتَدُوۡنَ ۝١٠ فَاِنۡ تَابُوۡا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخۡوَانُكُمۡ

सरकश हैं   फिर अगर वोह[25] तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो वोह तुम्हारे

14 : मोहलत के महीने गुज़रने के बा'द ताकि आप से तौह़ीद के मसाइल और क़ुरआने पाक सुनें जिस की आप दा'वत देते हैं। **15 :** अगर ईमान न लाए। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि मुस्तामिन को ईज़ा न दी जाए और मुद्दत गुज़रने के बा'द उस को दारुल इस्लाम में इक़ामत का ह़क़ नहीं। **16 :** इस्लाम और इस की ह़क़ीक़त को नहीं जानते तो उन्हें अम्न देनी ऐन ह़िक्मत है ताकि कलामुल्लाह सुनें और समझें। **17 :** कि वोह ग़द्र व अ़ह्द शिकनी किया करते हैं। **18 :** और उन से कोई अ़ह्द शिकनी ज़ुहूर में न आई, मिस्ल बनी किनाना व बनी ज़मुरा के। **19 :** अ़ह्द पूरा करेंगे और कैसे क़ौल पर क़ाइम रहेंगे। **20 :** ईमान और वफ़ाए अ़ह्द के वा'दे कर के। **21 :** अ़ह्द शिकन कुफ़्र में सरकश बे मुरव्वत झूट से न शरमाने वाले, उन्हों ने **22 :** और दुन्या के थोड़े से नफ़्अ़ के पीछे ईमान व क़ुरआन छोड़ बैठे और जो अ़ह्द रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से किया था वोह अबू सुफ़्यान के थोड़े से लालच देने से तोड़ दिया। **23 :** और लोगों को दीने इलाही में दाख़िल होने से मानेअ़ हुए। **24 :** जब मौक़अ़ पाएं क़त्ल कर डालें। तो मुसल्मानों को भी चाहिये कि जब मुशरिकीन पर दस्त रस हो (क़ाबू) पाएं तो उन से दर गुज़र न करें। **25 :** कुफ़्र व अ़ह्द शिकनी से बाज़ आएं और ईमान क़बूल कर के।

فِي الدِّيْنِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

दीनी भाई हैं[26] और हम आयतें मुफ़स्सल (खोल खोल कर) बयान करते हैं जानने वालों के लिये[27] और अगर अ़ह्द कर के

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ

अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुंह आएं (ए'तिराज़ व ता'न करें) तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो[28] बेशक उन की

اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿۱۲﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वोह बाज़ आएं[29] क्या उस क़ौम से न लड़ोगे जिन्हों ने अपनी क़समें तोड़ीं[30]

وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۗ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ

और रसूल के निकालने का इरादा किया[31] हालां कि उन्हीं की त़रफ़ से पहल हुई है क्या उन से डरते हो

فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ

तो अल्लाह इस का ज़ियादा मुस्तहिक़ है कि उस से डरो अगर ईमान रखते हो तो उन से लड़ो अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब

اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ

देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा[32] और तुम्हें उन पर मदद देगा[33] और ईमान वालों का जी

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ

ठन्डा करेगा और उन के दिलों की घुटन (जलन व ग़ुस्सा) दूर फ़रमाएगा[34] और अल्लाह जिस की चाहे तौबा क़बूल फ़रमाए[35]

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۵﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है क्या इस गुमान में हो कि यूंही छोड़ दिये जाओगे और अभी अल्लाह ने पहचान न कराई उन की जो

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ

तुम में से जिहाद करेंगे[36] और अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों के सिवा किसी को अपना महरमे राज़

26 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित हुवा कि अहले क़िब्ला के ख़ून ह़राम हैं। 27 : इस से साबित हुवा कि तफ़्सीले आयात पर जिस को नज़र हो वोह आ़लिम है। 28 **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जो काफ़िरे ज़िम्मी दीने इस्लाम पर ज़ाहिर ता'न करे उस का अ़ह्द बाक़ी नहीं रहता और वोह ज़िम्मे से ख़ारिज हो जाता है उस का क़त्ल करना जाइज़ है। 29 : इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने से मुसल्मानों की ग़रज़ उन्हें कुफ़्र व बद आ'माली से रोक देना है। 30 : और सुल्ह़े हुदैबिया का अ़ह्द तोड़ा और मुसल्मानों के ह़लीफ़ ख़ुज़ाआ़ के मुक़ाबिल बनी बक्र की मदद की 31 : मक्कए मुकर्रमा से दारुन्नदवा में मश्वरा कर के। 32 : क़त्ल व क़ैद से 33 : और उन पर ग़लबा अ़ता फ़रमाएगा 34 : येह तमाम मवाईद (वा'दे) पूरे हुए और नबी صلی اللہ علیہ وسلم की ख़बरें सादिक़ हुईं और नुबुव्वत का सुबूत वाज़ेह़ तर हो गया। 35 : इस में अश्आ़र है कि बा'ज़ अहले मक्का कुफ़्र से बाज़ आ कर ताइब होंगे, येह ख़बर भी ऐसी ही वाक़ेअ़ हो गई। चुनान्चे अबू सुफ़्यान और इ़क्रिमा बिन अबू जह्ल और सुहैल बिन अ़म्र ईमान से मुशर्रफ़ हुए। 36 : इख़्लास के साथ अल्लाह की राह में।

وَلِيجَةً ۚ وَاللّٰهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝١٦ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا

न बनाएंगे[37] और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है मुश्रिकों को नहीं पहुंचता कि **अल्लाह** की

مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِينَ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ أُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚ

मस्जिदें आबाद करें[38] ख़ुद अपने कुफ़्र की गवाही दे कर[39] उन का तो सब किया धरा अकारत (ज़ाएअ) है

وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُونَ ۝١٧ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ

और वोह हमेशा आग में रहेंगे[40] **अल्लाह** की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और

الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى

क़ियामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और ज़कात देते हैं[41] और **अल्लाह** के सिवा किसी से नहीं डरते[42] तो क़रीब है कि

أُولٰٓئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝١٨ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَ

येह लोग हिदायत वालों में हों तो क्या तुम ने हाजियों की सबील और

عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِي

मस्जिदे हराम की ख़िदमत उस के बराबर ठहरा ली जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाया और **अल्लाह** की राह

37 : इस से मा'लूम हुवा कि मुख़्लिस और ग़ैर मुख़्लिस में इम्तियाज़ कर दिया जाएगा और मक़्सूद इस से मुसल्मानों को मुश्रिकीन की मुवालात (आपस की दोस्ती व तअ़ल्लुक़) और उन के पास मुसल्मानों के राज़ पहुंचाने से मुमानअ़त करना है। **38 :** मस्जिदों से मस्जिदे हराम का'बए मुअ़ज़्ज़मा मुराद है, इस को जम्अ़ के सीग़े से इस लिये ज़िक्र फ़रमाया कि वोह तमाम मस्जिदों का क़िब्ला और इमाम है, इस का आबाद करने वाला ऐसा है जैसे तमाम मस्जिदों को आबाद करने वाला और जम्अ़ का सीग़ा लाने की येह वज्ह भी हो सकती है कि हर बुक़्अ़ा (हर हिस्सा व टुकड़ा) मस्जिदे हराम का मस्जिद है। और येह भी हो सकता है कि मस्जिदों से जिन्स मुराद हो और का'बए मुअ़ज़्ज़मा इस में दाख़िल हो क्यूं कि वोह इस जिन्स का सद्र है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के रुअसा की एक जमाअ़त जो बद्र में गिरिफ़्तार हुई और उन में हुज़ूर के चचा हज़रते अ़ब्बास भी थे उन को अस्हाबे किराम ने शिर्क पर आ़र दिलाई और हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने तो ख़ास हज़रते अ़ब्बास को सय्यिदे आ़लम ﷺ के मुक़ाबिल आने पर बहुत सख़्त सुस्त कहा। हज़रते अ़ब्बास कहने लगे कि तुम हमारी बुराइयां तो बयान करते हो और हमारी ख़ूबियां छुपाते हो ! उन से कहा गया कि क्या आप की कुछ ख़ूबियां भी हैं ? उन्हों ने कहा : हां, हम तुम से अफ़्ज़ल हैं, हम मस्जिदे हराम को आबाद करते हैं, का'बे की ख़िदमत करते हैं, हाजियों को सैराब करते हैं, असीरों को रिहा कराते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि मस्जिदों का आबाद करना काफ़िरों को नहीं पहुंचता क्यूं कि मस्जिद आबाद की जाती है **अल्लाह** की इबादत के लिये तो जो ख़ुदा ही का मुन्किर हो उस के साथ कुफ़्र करे वोह क्या मस्जिद आबाद करेगा। और आबाद करने के मा'ना में भी कई क़ौल हैं : **एक** तो येह कि आबाद करने से मस्जिद का बनाना, बुलन्द करना, मरम्मत करना मुराद है काफ़िर को इस से मन्अ़ किया जाएगा। **दूसरा** क़ौल येह है कि मस्जिद आबाद करने से इस में दाख़िल होना, बैठना मुराद है। **39 :** और बुत परस्ती का इक़रार कर के, या'नी येह दोनों बातें किस तरह जम्अ़ हो सकती हैं कि आदमी काफ़िर भी हो और ख़ास इस्लामी और तौहीद के इबादत ख़ाने को आबाद भी करे **40 :** क्यूं कि हालते कुफ़्र के आ'माल मक़्बूल नहीं, न मेहमान दारी, न हाजियों की ख़िदमत, न क़ैदियों का रिहा कराना, इस लिये कि काफ़िर का कोई फ़े'ल **अल्लाह** के लिये तो होता नहीं लिहाज़ा उस का अ़मल सब अकारत (ज़ाएअ) है और अगर वोह इसी कुफ़्र पर मर जाए तो जहन्नम में उन के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है। **41 :** इस आयत में येह बयान किया गया कि मस्जिदों के आबाद करने के मुस्तहिक़ मोमिनीन हैं। मस्जिदों के आबाद करने में येह उमूर भी दाख़िल हैं : झाड़ू देना, सफ़ाई करना, रोशनी करना और मस्जिदों को दुन्या की बातों से और ऐसी चीज़ों से महफ़ूज़ रखना जिन के लिये वोह नहीं बनाई गईं। मस्जिदें इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है। **42 :** या'नी किसी की रिज़ा को रिज़ाए इलाही पर किसी अन्देशे से भी मुक़द्दम नहीं करते। येही मा'ना हैं **अल्लाह** से डरने और ग़ैर से न डरने के।

سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسۡتَوٗنَ عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ

में जिहाद किया वोह अल्लाह के नज़्दीक बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिमों को राह

الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَهَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ

وقف لازم

नहीं देता[43] वोह जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल जान से

بِاَمۡوَالِهِمۡ وَاَنۡفُسِهِمۡ ۙ اَعۡظَمُ دَرَجَةً عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ

अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहां उन का दरजा बड़ा है[44] और वोही

الۡفَآئِزُوۡنَ ﴿۲۰﴾ يُبَشِّرُهُمۡ رَبُّهُمۡ بِرَحۡمَةٍ مِّنۡهُ وَرِضۡوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمۡ

मुराद को पहुंचे[45] उन का रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रह़मत और अपनी रिज़ा की[46] और उन बाग़ों की

فِيۡهَا نَعِيۡمٌ مُّقِيۡمٌ ﴿۲۱﴾ ۙ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنۡدَهٗۤ اَجۡرٌ عَظِيۡمٌ ﴿۲۲﴾

जिन में उन्हें दाइमी ने'मत है हमेशा हमेशा उन में रहेंगे बेशक अल्लाह के पास बड़ा सवाब है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰبَآءَكُمۡ وَاِخۡوَانَكُمۡ اَوۡلِيَآءَ اِنِ اسۡتَحَبُّوا

ऐ ईमान वालो अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वोह ईमान पर

الۡكُفۡرَ عَلَى الۡاِيۡمَانِ ؕ وَمَنۡ يَّتَوَلَّهُمۡ مِّنۡكُمۡ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۳﴾

कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई उन से दोस्ती करेगा तो वोही ज़ालिम हैं[47]

قُلۡ اِنۡ كَانَ اٰبَآؤُكُمۡ وَاَبۡنَآؤُكُمۡ وَاِخۡوَانُكُمۡ وَاَزۡوَاجُكُمۡ وَعَشِيۡرَتُكُمۡ

तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा

وَاَمۡوَالُ ۨاقۡتَرَفۡتُمُوۡهَا وَتِجَارَةٌ تَخۡشَوۡنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرۡضَوۡنَهَاۤ

और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान

43 : मुराद येह है कि कुफ़्फ़ार को मोमिनीन से कुछ निस्बत नहीं न उन के आ'माल को इन के आ'माल से, क्यूं कि काफ़िर के आ'माल राएगां हैं ख़्वाह वोह ह़ाजियों के लिये सबील लगाएं या मस्जिदे ह़राम की ख़िदमत करें, उन के आ'माल को मोमिन के आ'माल के बराबर क़रार देना ज़ुल्म है। **शाने नुज़ूल :** रोज़े बद्र जब ह़ज़रते अ़ब्बास गिरिफ़्तार हो कर आए तो उन्हों ने अस्ह़ाबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم से कहा कि तुम को इस्लाम और हिजरत व जिहाद में सब्क़त ह़ासिल है तो हम को भी मस्जिदे ह़राम की ख़िदमत और ह़ाजियों के लिये सबीलें लगाने का शरफ़ ह़ासिल है। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और आगाह किया गया कि जो अ़मल ईमान के साथ न हों वोह बेकार हैं। 44 : दूसरों से 45 : और उन्हीं को दुन्या व आख़िरत की सआ़दत मिली 46 : और येह आ'ला तरीन बिशारत है क्यूं कि मालिक की रह़मत व रिज़ा बन्दे का सब से बड़ा मक़्सद और प्यारी मुराद है। 47 : जब मुसल्मानों को मुश्रिकीन से तर्के मुवालात (तअ़ल्लुक़ात ख़त्म करने) का हुक्म दिया गया तो बा'ज़ लोगों ने कहा येह कैसे मुम्किन है कि आदमी अपने बाप भाई वग़ैरा क़राबत दारों से तर्के तअ़ल्लुक़ करे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार से मुवालात जाइज़ नहीं चाहे उन से कोई भी रिश्ता हो। चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया।

أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ

यह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो (इन्तिज़ार करो) यहां तक कि

يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ

अल्लाह अपना हुक्म लाए[48] और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता बेशक अल्लाह ने

اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ

बहुत जगह तुम्हारी मदद की[49] और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो

تُغْنِ عَنكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم

वोह तुम्हारे कुछ काम न आई[50] और ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर तुम पर तंग हो गई[51] फिर तुम पीठ दे कर

مُّدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ

फिर गए फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर[52] और मुसल्मानों पर[53]

وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ

और वोह लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे[54] और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया[55] और मुन्किरों की

48 : और जल्दी आने वाले अ़ज़ाब में मुब्तला करे या देर में आने वाले में। इस आयत से साबित हुवा कि दीन के महफ़ूज़ रखने के लिये दुन्या की मशक़्क़त बरदाश्त करना मुसल्मान पर लाज़िम है और अल्लाह और उस के रसूल की इत़ाअ़त के मुक़ाबिल दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात कुछ क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं और ख़ुदा और रसूल की महब्बत ईमान की दलील है। 49 : या'नी रसूले करीम ﷺ के ग़ज़्वात में मुसल्मानों को काफ़िरों पर ग़लबा अ़ता फ़रमाया, जैसा कि वाक़िअ़ए बद्र और क़ुरैज़ा और नज़ीर और हुदैबिया और ख़ैबर और फ़त्हे मक्का में। 50 : हुनैन एक वादी है ताइफ़ के क़रीब मक्कए मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासिले पर, यहां फ़त्हे मक्का से थोड़े ही रोज़ बा'द क़बीलए हवाज़िन व सक़ीफ़ से जंग हुई। इस जंग में मुसल्मानों की ता'दाद बहुत कसीर बारह हज़ार या इस से ज़ाइद थी और मुश्रिकीन चार हज़ार थे, जब दोनों लश्कर मुक़ाबिल हुए तो मुसल्मानों में से किसी शख़्स ने अपनी कसरत पर नज़र कर के येह कहा कि अब हम हरगिज़ मग़लूब न होंगे। येह कलिमा रसूले करीम ﷺ को बहुत गिरां गुज़रा क्यूं कि हुज़ूर हर हाल में अल्लाह तआला पर तवक्कुल फ़रमाते थे और ता'दाद की क़िल्लत व कसरत पर नज़र न रखते थे। जंग शुरूअ़ हुई और क़िताले शदीद हुवा मुश्रिकीन भागे और मुसल्मान ग़नीमत लेने में मसरूफ़ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस को ग़नीमत समझा और तीरों की बारिश शुरूअ़ कर दी और तीर अन्दाज़ी में वोह बहुत महारत रखते थे। नतीजा येह हुवा कि इस हंगामे में मुसल्मानों के क़दम उखड़ गए लश्कर भाग पड़ा और सय्यिदे आ़लम ﷺ के पास सिवाए हुज़ूर के चचा हज़रते अ़ब्बास और आप के इब्ने अ़म अबू सुफ़्यान बिन हारिस के और कोई बाक़ी न रहा, हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सुवारी को कुफ़्फ़ार की त़रफ़ आगे बढ़ाया और हज़रते अ़ब्बास को हुक्म दिया कि वोह बुलन्द आवाज़ से अपने अस्हाब को पुकारें, उन के पुकारने से वोह लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आए और कुफ़्फ़ार से जंग (फिर से) शुरूअ़ हो गई, जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक में संगरेज़े ले कर कुफ़्फ़ार के मूंहों पर मारे और फ़रमाया : रब्बे मुहम्मद की क़सम भाग निकले, संगरेज़ों का मारना था कि कुफ़्फ़ार भाग पड़े और रसूले करीम ﷺ ने उन की ग़नीमतें मुसल्मानों को तक़्सीम फ़रमा दीं। इन आयतों में इस वाक़िए का बयान है। 51 : और तुम वहां न ठहर सके। 52 : कि इत्मीनान के साथ अपनी जगह क़ाइम रहे। 53 : कि हज़रते अ़ब्बास رضی اللہ عنہ के पुकारने से नबिय्ये करीम ﷺ की ख़िदमत में वापस आए। 54 : या'नी फ़िरिश्ते जिन्हें कुफ़्फ़ार ने अब्लक़ घोड़ों पर सफ़ेद लिबास पहने इमामा बांधे देखा। येह फ़िरिश्ते मुसल्मानों की शौकत बढ़ाने के लिये आए थे, इस जंग में उन्हों ने क़िताल नहीं किया क़िताल सिर्फ़ बद्र में किया था। 55 : कि पकड़े गए, मारे गए, उन के इयाल व अम्वाल मुसल्मानों के हाथ आए।

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

येही सज़ा है फिर इस के बा'द अल्लाह जिसे चाहेगा तौबा देगा[56] और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا

मेह्रबान है ऐ ईमान वालो मुश्रिक निरे (बिल्कुल) नापाक हैं[57] तो इस बरस के बा'द वोह

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ

मस्जिदे ह़राम के पास न आने पाएं[58] और अगर तुम्हें मोह़ताजी का डर है[59] तो अ़न्क़रीब अल्लाह तुम्हें दौलत मन्द

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا

कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे[60] बेशक अल्लाह इल्मो ह़िक्मत वाला है लड़ो उन से जो

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ

ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और क़ियामत पर[61] और ह़राम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को ह़राम किया अल्लाह और

رَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا

उस के रसूल ने[62] और सच्चे दीन[63] के ताबेअ़ नहीं होते या'नी वोह जो किताब दिये गए जब तक

56 : और तौफ़ीक़े इस्लाम अ़ता फ़रमाएगा। चुनान्चे हवाज़ुन के बाक़ी लोगों को तौफ़ीक़ दी और वोह मुसल्मान हो कर रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और हुज़ूर ने उन के असीरों को रिहा फ़रमा दिया। **57 :** कि उन का बातिन ख़बीस है और वोह न त़हारत करते हैं न नजासतों से बचते हैं। **58 :** न ह़ज के लिये न उ़मरह के लिये और इस साल से मुराद 9 हिजरी है और मुश्रिकीन के मन्अ़ करने के मा'ना येह हैं कि मुसल्मान उन को रोकें। **59 :** कि मुश्रिकीन को ह़ज से रोक देने से तिजारतों को नुक़्सान पहुंचेगा और अहले मक्का को तंगी पेश आएगी। **60 :** इक्रिमा ने कहा : ऐसा ही हुवा, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ग़नी कर दिया, बारिशें ख़ूब हुईं, पैदावार कसरत से हुई। मक़ातिल ने कहा कि ख़ित्ताहाए यमन के लोग मुसल्मान हुए और उन्हों ने अहले मक्का पर अपनी कसीर दौलतें ख़र्च कीं "अगर चाहे" फ़रमाने में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये कि त़लबे ख़ैर और दफ़्ए़ आफ़ात के लिये हमेशा अल्लाह की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे और तमाम उमूर को उसी की मशिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ जाने। **61 :** अल्लाह पर ईमान लाना येह है कि उस की ज़ात और जुम्ला सिफ़ात व तन्ज़ीहात को माने और जो उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत न करे और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने रसूलों पर ईमान लाना भी अल्लाह पर ईमान लाने में दाख़िल क़रार दिया है तो यहूदो नसारा अगर्चे अल्लाह पर ईमान लाने के मुद्दई हैं लेकिन उन का येह दा'वा बातिल है क्यूं कि यहूद तज्सीम व तश्बीह (ख़ुदा के इन्सानों की त़रह़ मुजस्सम व मिस्ल होने) के और नसारा ह़ुलूल (ख़ुदा का ईसा के जिस्म में उतर आने) के मो'तक़िद हैं तो वोह किस त़रह़ अल्लाह पर ईमान लाने वाले हो सकते हैं? ऐसे ही यहूद में से जो ह़ज़रते उ़ज़ैर को और नसारा ह़ज़रते मसीह़ को ख़ुदा का बेटा कहते हैं तो इन में से कोई भी अल्लाह पर ईमान लाने वाला न हुवा, इसी त़रह़ जो एक रसूल की तक्ज़ीब करे वोह अल्लाह पर ईमान लाने वाला नहीं। यहूदो नसारा बहुत अम्बिया की तक्ज़ीब करते हैं लिहाज़ा वोह अल्लाह पर ईमान लाने वालों में नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुजाहिद का क़ौल है कि येह आयत उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि नबी ﷺ को रूम से क़िताल करने का हुक्म दिया गया और इसी के नाज़िल होने के बा'द ग़ज़्वए तबूक हुवा। कल्बी का क़ौल है कि येह आयत यहूद के क़बीले क़ुरैज़ा और नज़ीर के ह़क़ में नाज़िल हुई। सय्यिदे आ़लम ﷺ ने उन से सुल्ह़ मन्ज़ूर फ़रमाई और येही पहला जिज़्या है जो अहले इस्लाम को मिला और पहली ज़िल्लत है जो कुफ़्फ़ार को मुसल्मानों के हाथ से पहुंची। **62 :** क़ुरआनो ह़दीस में, और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मा'ना येह हैं कि तौरैत व इन्जील के मुताबिक़ अ़मल नहीं करते उन की तह़रीफ़ (रद्दो बदल) करते हैं और अह़काम अपने दिल से घड़ते हैं। **63 :** इस्लाम दीने इलाही।

الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَ

अपने हाथ से जिज़्या न दें ज़लील हो कर[64] और यहूदी बोले उ़ज़ैर **अल्लाह** का बेटा है[65] और

قَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ

नसरानी बोले मसीह़ **अल्लाह** का बेटा है येह बातें वोह अपने मुंह से बकते हैं[66] अगले

قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْۤا

काफ़िरों की सी बात बनाते हैं **अल्लाह** उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं[67] उन्हों ने

اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ

अपने पादरियों और जोगियों को **अल्लाह** के सिवा ख़ुदा बना लिया[68] और मसीह़ इब्ने मरयम को[69]

وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا

और उन्हें हुक्म न था[70] मगर येह कि एक **अल्लाह** को पूजें उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसे पाकी है

يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ

उन के शिर्क से चाहते हैं कि **अल्लाह** का नूर[71] अपने मुंह से बुझा दें और **अल्लाह** न मानेगा

اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ

मगर अपने नूर का पूरा करना[72] पड़े (अगर्चे) बुरा मानें काफ़िर वोही है जिस ने अपना रसूल[73]

بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ

हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[74] पड़े बुरा मानें

64 : मुआ़हिदे अहले किताब से जो ख़िराज लिया जाता है उस का नाम जिज़्या है। **मसाइल :** येह जिज़्या नक़्द लिया जाता है इस में उधार नहीं। **मस्अला :** जिज़्या देने वाले को ख़ुद हाज़िर हो कर देना चाहिये। **मस्अला :** पियादा पा (पैदल बिग़ैर सुवारी के) ले कर हाज़िर हो, खड़े हो कर पेश करे। **मस्अला :** क़बूले जिज़्या में तुर्क व हिन्दू वग़ैरा अहले किताब के साथ मुल्ह़िक़ हैं सिवा मुश्रिकीने अ़रब के, कि इन से जिज़्या क़बूल नहीं। **मस्अला :** इस्लाम लाने से जिज़्या साक़ित़ हो जाता है। ह़िक्मत जिज़्या मुक़र्रर करने की येह है कि कुफ़्फ़ार को मोहलत दी जाए ताकि वोह इस्लाम के मह़ासिन और दलाइल की क़ुव्वत देखें और कुतुबे क़दीमा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़बर और हुज़ूर की ना'त व सिफ़त देख कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने का मौक़अ़ पाएं। 65 : अहले किताब की बे दीनी का जो ऊपर ज़िक्र फ़रमाया गया येह उस की तफ़्सील है कि वोह **अल्लाह** की जनाब में ऐसे फ़ासिद ए'तिक़ाद रखते हैं और मख़्लूक़ को **अल्लाह** का बेटा बना कर पूजते हैं। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में यहूद की एक जमाअ़त आई वोह लोग कहने लगे कि हम आप का किस त़रह इत्तिबाअ़ करें आप ने हमारा क़िब्ला छोड़ दिया और आप ह़ज़रते उ़ज़ैर को ख़ुदा का बेटा नहीं समझते इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 66 : जिन पर न कोई दलील न बुरहान और फिर अपने जहल से इस बात़िले सरीह़ के मो'तक़िद भी हैं। 67 : और **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत पर हुज्जतें क़ाइम होने और दलीलें वाज़ेह़ होने के बा वुजूद इस कुफ़्र में मुब्तला होते हैं। 68 : हुक्मे इलाही को छोड़ कर उन के हुक्म के पाबन्द हुए। 69 : कि उन्हें भी ख़ुदा बनाया और उन की निस्बत येह ए'तिक़ादे बात़िल किया कि वोह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हैं या ख़ुदा ने उन में हुलूल किया है। 70 : उन की किताबों में न उन के अम्बिया की त़रफ़ से 71 : या'नी दीने इस्लाम या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत के दलाइल। 72 : और अपने दीन को ग़लबा देना 73 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। 74 : और उस की हुज्जत

الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَ الرُّهْبَانِ

मुश्रिक ऐ ईमान वालो बेशक बहुत पादरी और जोगी

لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَ

लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं[75] और अल्लाह की राह से[76] रोकते हैं और

الَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَ لَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते[77]

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا

उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में[78] फिर उस से दाग़ेंगे

جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَ ظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

उन की पेशानियां और करवटें और पीठें[79] येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا

इस जोड़ने का बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़्दीक बारह महीने हैं[80]

فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ

अल्लाह की किताब में[81] जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए उन में से चार हुरमत वाले हैं[82]

क़वी करे और दूसरे दीनों को इस से मन्सूख़ करे। चुनान्चे اَلْحَمْدُ لِله ऐसा ही हुवा। ज़ह्हाक का क़ौल है कि येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नुज़ूल के वक़्त ज़ाहिर होगा जब कि कोई दीन वाला ऐसा न होगा जो इस्लाम में दाख़िल न हो जाए। हज़रते अबू हुरैरा की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में इस्लाम के सिवा हर मिल्लत हलाक हो जाएगी। **75 :** इस त़रह़ कि दीन के अह़काम बदल कर लोगों से रिश्वतें लेते हैं और अपनी किताबों में त़मए ज़र (दुन्यवी माल की लालच) के लिये तह़रीफ़ व तब्दील करते हैं और कुतुबे साबिक़ा की जिन आयात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है माल ह़ासिल करने के लिये उन में फ़ासिद तावीलें और तह़रीफ़ें करते हैं। **76 :** इस्लाम से और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से **77 :** बुख़्ल करते हैं और माल के हुक़ूक़ अदा नहीं करते ज़कात नहीं देते। **शाने नुज़ूल :** सुद्दी का क़ौल है कि येह आयत मानिईने ज़कात के ह़क़ में नाज़िल हुई जब कि अल्लाह तआ़ला ने अह़बार और रुहबान (यहूदी व ईसाई उ़लमा) की ह़िर्स माल का ज़िक्र फ़रमाया तो मुसल्मानों को माल जम्अ़ करने और उस के हुक़ूक़ अदा न करने से ह़ज़र (ख़ौफ़) दिलाया। हज़रते इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि जिस माल की ज़कात दी गई वोह "कन्ज़" नहीं ख़्वाह दफ़ीना ही हो और जिस की ज़कात न दी गई वोह "कन्ज़" है, जिस का ज़िक्र क़ुरआन में हुवा कि उस के मालिक को उस से दाग़ दिया जाएगा। रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया कि सोने चांदी का तो येह ह़ाल मा'लूम हुवा तो फिर कौन सा माल बेहतर है जिस को जम्अ़ किया जाए ? फ़रमाया : ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीबी जो ईमानदार की उस के ईमान पर मदद करे या'नी परहेज़ गार हो कि उस की सोहबत से त़ाअ़त व इ़बादत का शौक़ बढ़े। (رواہ الترمذی) **मस्अला :** माल का जम्अ़ करना मुबाह़ है मज़्मूम नहीं जब कि उस के हुक़ूक़ अदा किये जाएं। हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और हज़रते त़ल्ह़ा वग़ैरा अस्ह़ाब मालदार थे और जो अस्ह़ाब कि जम्ए़ माल से नफ़्रत रखते थे वोह इन पर ए'तिराज़ न करते थे। **78 :** और शिद्दते ह़रारत से सफ़ेद हो जाएगा। **79 :** जिस्म के तमाम अत़राफ़ो जवानिब और कहा जाएगा : **80 :** यहां येह बयान फ़रमाया गया कि अह़कामे शरअ़ की बिना क़मरी महीनों पर है जिन का ह़िसाब चांद से है। **81 :** यहां अल्लाह की किताब से या लौहे मह़फ़ूज़ मुराद है या क़ुरआन या वोह जो उस ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया। **82 :** तीन मुत्तसिल ज़ुल क़ा'दह

ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ

येह सीधा दीन है तो इन महीनों में[83] अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुशिरकों से हर वक़्त

كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنَّمَا

लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह परहेज़ गारों के साथ है[84] उन का

النَّسِیْٓءُ زِیَادَةٌ فِی الْكُفْرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا یُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ

महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना[85] इस से काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे[86] हलाल ठहराते हैं और

یُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ

दूसरे बरस उसे हराम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई[87] और अल्लाह के हराम किये हुए हलाल कर लें

زُیِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۷﴾ ع یٰۤاَیُّهَا

उन के बुरे काम उन की आंखों में भले लगते हैं और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِیْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ

ईमान वालो तुम्हें क्या हुवा जब तुम से कहा जाए कि राहे ख़ुदा में कूच करो तो बोझ के मारे

اِلَی الْاَرْضِ ؕ اَرَضِیْتُمْ بِالْحَیٰوةِ الدُّنْیَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

ज़मीन पर बैठ जाते हो[88] क्या तुम ने दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले पसन्द कर ली और जीती दुन्या (दुन्या की ज़िन्दगी)

व ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम और एक जुदा रजब। अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन महीनों की ता'ज़ीम करते थे और इन में क़िताल हराम जानते थे, इस्लाम में इन महीनों की हुरमत व अ़ज़मत और ज़ियादा की गई। **83 :** गुनाह व ना फ़रमानी से **84 :** उन की नुसरत व मदद फ़रमाएगा। **85 :** نَسِیٓءُ लुग़त में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं और यहां शहरे हराम की हुरमत का दूसरे महीने की तरफ़ हटा देना मुराद है। ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब अश्हुरे हुरुम (या'नी ज़ुल क़ा'दह व ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम, रजब) की हुरमतो अ़ज़मत के मो'तक़िद थे तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में येह हुरमत वाले महीने आ जाते तो उन को बहुत शाक़ गुज़रते, इस लिये उन्हों ने येह किया कि एक महीने की हुरमत दूसरे की तरफ़ हटाने लगे, मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते और बजाए इस के सफ़र को माहे हराम बना लेते और जब इस से भी तहरीम हटाने की हाजत समझते तो इस में भी जंग हलाल कर लेते और रबीउ़ल अव्वल को माहे हराम क़रार देते, इस तरह तहरीम साल के तमाम महीनों में घूमती और उन के इस तर्ज़े अ़मल से माहहाए हराम की तख़्सीस ही बाक़ी न रही, इसी तरह हज को मुख़्तलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमाया कि نَسِیٓءُ के महीने गए गुज़रे हुए, अब महीनों के अवक़ात की वज़्ए इलाही के मुताबिक़ हिफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए और इस आयत में نَسِیٓءُ को मम्नूअ़ क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया क्यूं कि इस में माहहाए हराम में तहरीमे क़िताल को हलाल जानना और ख़ुदा के हराम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है। **86 :** या'नी माहे हराम को या इस हटाने को **87 :** या'नी माहे हराम चार ही रहें इस की तो पाबन्दी करते हैं और इन की तख़्सीस तोड़ कर हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त, जो महीना हराम था उसे हलाल कर लिया इस की जगह दूसरे को हराम क़रार दिया। **88 :** और सफ़र से घबराते हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ग़ज़्वए तबूक की तरग़ीब में नाज़िल हुई। तबूक एक मक़ाम है अत्राफ़े शाम में मदीनए तय्यिबा से चौदह मन्ज़िल फ़ासिले पर। रजब 9 सि. हिजरी में ताइफ़ से वापसी के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़बर पहुंची कि अ़रब के नसरानियों की तहरीक से हरक़ुल शाहे रूम ने रूमियों और शामियों की फ़ौजे गिरां (कसीर फ़ौज) जम्अ़ की है और वोह मुसल्मानों पर हम्ले का इरादा रखता है तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को जिहाद का हुक्म दिया। येह ज़माना निहायत तंगी क़हूत

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا

का अस्बाब आख़िरत के सामने नहीं मगर थोड़ा[89] अगर न कूच करोगे तो[90] तुम्हें सख़्त

اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा[91] और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे और **अल्लाह** सब कुछ

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कर सकता है अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक **अल्लाह** ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा[92]

ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ

सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों[93] ग़ार में थे जब अपने यार से[94] फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह**

مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ

हमारे साथ है तो **अल्लाह** ने उस पर अपना सकीना (इत्मीनान) उतारा[95] और उन फ़ौजों से उस की मदद की जो तुम ने न देखीं[96] और काफ़िरों

साली और शिद्दते गरमी का था यहां तक कि दो दो आदमी एक एक खजूर पर बसर करते थे, सफ़र दूर का था दुश्मन कसीर और क़वी थे, इस लिये बा'ज़ क़बीले बैठ रहे और उन्हें इस वक़्त जिहाद में जाना गिरां मा'लूम हुवा और इस ग़ज़्वे में बहुत से मुनाफ़िक़ीन का पर्दा फ़ाश और हाल ज़ाहिर हो गया। हज़रते उस्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इस ग़ज़्वे में बड़ी आली हिम्मती से ख़र्च किया, दस हज़ार मुजाहिदीन को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़्वे पर ख़र्च किये नव सो ऊंट और सो घोड़े मअ़ साज़ो सामान के इस के इलावा हैं और अस्हाब ने भी ख़ूब ख़र्च किया, इन में सब से पहले हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ हैं जिन्हों ने अपना कुल माल हाज़िर कर दिया जिस की मिक़्दार चार हज़ार दिरहम थी और हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने अपना निस्फ़ माल हाज़िर किया और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तीस हज़ार का लश्कर ले कर रवाना हुए। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मदीनए तृय्यिबा में छोड़ा अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और उस के हमराही मुनाफ़िक़ीन सनिय्यतुल वदाअ़ तक चल कर रह गए, जब लश्करे इस्लाम तबूक में उतरा तो उन्हों ने देखा कि चश्मे में पानी बहुत थोड़ा है। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस के पानी से उस में कुल्ली फ़रमाई जिस की बरकत से पानी जोश में आया और चश्मा भर गया लश्कर और उस के तमाम जानवर अच्छी तरह सैराब हुए, हज़रत ने काफ़ी अ़र्सा यहां क़ियाम फ़रमाया। हिरक़ल अपने दिल में आप को सच्चा नबी जानता था इस लिये उसे ख़ौफ़ हुवा और उस ने आप से मुक़ाबला न किया, हज़रत ने अत्राफ़ में लश्कर भेजे चुनान्चे हज़रते ख़ालिद को चार सो से ज़ाइद सुवारों के साथ उकैदिर हाकिमे दूमतुल जन्दल के मुक़ाबिल भेजा और फ़रमाया कि तुम उस को नील गाय के शिकार में पकड़ लो। चुनान्चे ऐसा ही हुवा जब वोह नील गाय के शिकार के लिये अपने क़ल्ए से उतरा और हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ उस को गिरिफ़्तार कर के ख़िदमते अक़्दस में लाए हुज़ूर ने जिज़्या मुक़र्रर फ़रमा कर उस को छोड़ दिया, इसी तरह हाकिमे ऐला पर इस्लाम पेश किया और जिज़्ये पर सुल्ह फ़रमाई। वापसी के वक़्त जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने के क़रीब तशरीफ़ लाए तो जो लोग जिहाद में साथ होने से रह गए थे वोह हाज़िर हुए हुज़ूर ने अस्हाब से फ़रमाया कि इन में से किसी से कलाम न करें और अपने पास न बिठाएं जब तक हम इजाज़त न दें तो मुसल्मानों ने उन से ए'राज़ किया यहां तक कि बाप और भाई की तरफ़ भी इल्तिफ़ात न किया, इसी बाब में येह आयतें नाज़िल हुई। **89 :** कि दुन्या और इस की तमाम मताअ़ फ़ानी है और आख़िरत और इस की तमाम ने'मतें बाक़ी हैं। **90 :** ऐ मुसल्मानो ! रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हस्बे हुक्म **अल्लाह** तआ़ला **91 :** जो तुम से बेहतर और फ़रमां बरदार होंगे। मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुसरत और उन के दीन को इ़ज़्ज़त देने का ख़ुद कफ़ील है तो अगर तुम इताअ़ते फ़रमाने रसूल में जल्दी करोगे तो येह सआ़दत तुम्हें नसीब होगी और अगर तुम ने सुस्ती की तो **अल्लाह** तआ़ला दूसरों को अपने नबी के शरफ़े ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। **92 :** या'नी वक़्ते हिजरत मक्कए मुकर्रमा से। जब कि कुफ़्फ़ार ने दारुन्नदवा में हुज़ूर के लिये क़त्ल व क़ैद वग़ैरा के बुरे बुरे मश्वरे किये थे। **93 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ। **94 :** या'नी सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ से। **मस्अला :** हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ की सहाबिय्यत इस आयत से साबित है। हसन बिन फ़ज़्ल ने फ़रमाया : जो शख़्स हज़रते सिद्दीक़े अक्बर की सहाबिय्यत का इन्कार करे वोह नस्से क़ुरआनी का मुन्किर हो कर काफ़िर हुवा। **95 :** और क़ल्ब को इत्मीनान अ़ता फ़रमाया **96 :** इन से मुराद मलाएका की फ़ौजें हैं जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के रुख़ फेर दिये और वोह आप को देख न सके और बद्र व अहज़ाब व हुनैन में भी इन्हीं ग़ैबी फ़ौजों से मदद फ़रमाई।

كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

की बात नीचे डाली[97] अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब

حَكِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ

हिक्मत वाला है कूच करो हलकी जान से चाहे भारी दिल से[98] और अल्लाह की राह में लड़ो अपने

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا

माल और जान से येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर जानो[99] अगर कोई क़रीब

قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَ

माल या मुतवस्सित् सफ़र होता[100] तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते[101] मगर उन पर तो मशक़्क़त का रास्ता दूर पड़ गया और

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَ

अब अल्लाह की क़सम खाएंगे[102] कि हम से बन पड़ता तो ज़रूर तुम्हारे साथ चलते[103] अपनी जानों को हलाक करते हैं[104] और

اللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۴۲﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى

अल्लाह जानता है कि वोह बेशक ज़रूर झूटे हैं अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे[105] तुम ने उन्हें क्यूं इज़्न (इजाज़त) दे दिया जब तक

يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۴۳﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ

न खुले थे तुम पर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूटे वोह जो अल्लाह और क़ियामत

97 : दा'वते कुफ़्रो शिर्क को पस्त फ़रमाया। 98 : या'नी ख़ुशी से या गिरानी से। और एक क़ौल येह है कि क़ुव्वत के साथ या ज़ो'फ़ के साथ और बे सामानी से या सरो सामान से 99 : कि जिहाद का सवाब बैठ रहने से बेहतर है तो मुस्तइद्दी (पूरी आमादगी) के साथ तय्यार हो और काहिली न करो। 100 : और दुन्यवी नफ़्अ़ की उम्मीद होती और शदीद मेहनतो मशक़्क़त का अन्देशा न होता 101 **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने ग़ज़्वए तबूक में जाने से तख़ल्लुफ़ (पीछे बैठ जाना इख़्तियार) किया था। 102 : येह मुनाफ़िक़ीन, और इस तरह मा'ज़िरत करेंगे 103 : मुनाफ़िक़ीन की इस मा'ज़िरत से पहले ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बर और दलाइले नुबुव्वत में से है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था वैसा ही पेश आया और उन्हों ने येही मा'ज़िरत की और झूटी क़समें खाईं। 104 : झूटी क़सम खा कर। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि झूटी क़समें खाना सबबे हलाकत है। 105 : "عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ" से इब्तिदाए कलाम व इफ़्तिताहे ख़िताब, मुख़ातब की ता'ज़ीमो तौक़ीर में मुबालग़े के लिये है और ज़बाने अ़रब में येह उ़र्फ़ शाएअ़ है कि मुख़ातब की ता'ज़ीम के मौक़अ़ पर ऐसे कलिमे इस्ति'माल किये जाते हैं। क़ाज़ी इयाज़ رضی اللہ عنہ ने (अपनी किताब) शिफ़ा में फ़रमाया : जिस किसी ने इस सुवाल को इताब क़रार दिया उस ने ग़लती की क्यूं कि ग़ज़्वए तबूक में हाज़िर न होने और घर रह जाने की इजाज़त मांगने वालों को इजाज़त देना न देना दोनों हज़रत के इख़्तियार में थे और आप इस में मुख़्तार थे। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : "فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ" आप इन में से जिसे चाहें इजाज़त दीजिये तो "لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" फ़रमाना इताब के लिये नहीं है बल्कि येह इज़्हार है कि अगर आप इन्हें इजाज़त न देते तो भी वोह जिहाद में जाने वाले न थे और "عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ" के मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें मुआफ़ करे, गुनाह से तो तुम्हें वासिता ही नहीं, इस में सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की कमाले तक्रीमो तौक़ीर और तस्कीनो तसल्ली है कि क़ल्बे मुबारक पर "لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" फ़रमाने से कोई बार न हो।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَ

पर ईमान रखते हैं तुम से छुट्टी न मांगेंगे इस से कि अपने माल और जान से जिहाद करें और

اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۴﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह खूब जानता है परहेज़ गारों को तुम से येह छुट्टी वोही मांगते हैं जो अल्लाह

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَوْ

और क़ियामत पर ईमान नहीं रखते[106] और उन के दिल शक में पड़े हैं तो वोह अपने शक में डांवांडोल हैं[107] उन्हें

اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ

निकलना मन्ज़ूर होता[108] तो इस का सामान करते मगर खुदा ही को उन का उठना ना पसन्द हुवा तो उन में काहिली भर दी

وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۴۶﴾ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

और[109] फ़रमाया गया कि बैठ रहो बैठ रहने वालों के साथ[110] अगर वोह तुम में निकलते तो उन से सिवा नुक़्सान के तुम्हें कुछ न बढ़ता

وَّلَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ

और तुम में फ़ितना डालने को तुम्हारे बीच में गुराबें दौड़ाते (फ़साद फैलाते)[111] और तुम में उन के जासूस मौजूद हैं[112] और अल्लाह

عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

खूब जानता है ज़ालिमों को बेशक उन्हों ने पहले ही फ़ितना चाहा था[113] और ऐ महबूब तुम्हारे लिये तदबीरें उलटी पलटीं[114]

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

यहां तक कि हक़ आया[115] और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हुवा[116] और उन्हें ना गवार था और उन में कोई तुम से यूं अ़र्ज़ करता है

ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ

कि मुझे रुख़्सत दीजिये और फ़ितने में न डालिये[117] सुन लो वोह फ़ितने ही में पड़े[118] और बेशक जहन्नम घेरे हुए है

106 : या'नी मुनाफ़िक़ीन **107 :** न इधर के हुए न उधर के हुए न कुफ़्फ़ार के साथ रह सके न मोमिनीन का साथ दे सके। **108 :** और जिहाद का इरादा रखते **109 :** उन के इजाज़त चाहने पर **110 :** बैठ रहने वालों से औ़रतें बच्चे बीमार और अपाहज लोग मुराद हैं। **111 :** और झूटी झूटी बातें बना कर फ़साद अंगेज़ियां करते। **112 :** जो तुम्हारी बातें उन तक पहुंचाएं। **113 :** और वोह आप के अस्हाब को दीन से रोकने की कोशिश करते जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ ने रोज़े उहुद किया कि मुसल्मानों को इग़्वा करने के लिये अपनी जमाअ़त ले कर वापस हुवा। **114 :** और उन्हों ने तुम्हारा काम बिगाड़ने और दीन में फ़साद डालने के लिये बहुत मक्रो ह़ीले किये **115 :** या'नी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ताईद व नुसरत। **116 :** और उस का दीन ग़ालिब हुवा। **117 शाने नुज़ूल :** येह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक के लिये तय्यारी फ़रमाई तो जद बिन क़ैस ने कहा : **या रसूलल्लाह!** मेरी क़ौम जानती है कि मैं औ़रतों का बड़ा शैदाई हूं मुझे अन्देशा है कि मैं रूमी औ़रतों को देखूंगा तो मुझ से सब्र न हो सकेगा इस लिये आप मुझे यहीं ठहर जाने की इजाज़त दीजिये और उन औ़रतों के फ़ितने में न डालिये मैं आप की

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۹﴾ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

काफ़िरों को अगर तुम्हें भलाई पहुंचे[119] तो उन्हें बुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[120]

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا وَّ هُمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۰﴾ قُلْ

तो कहें[121] हम ने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और खुशियां मनाते फिर जाएं तुम फ़रमाओ

لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

हमें न पहुंचेगा मगर जो **अल्लाह** ने हमारे लिये लिख दिया वोह हमारा मौला है और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَ

पर भरोसा चाहिये तुम फ़रमाओ तुम हम पर किस चीज़ का इन्तिज़ार करते हो मगर दो खूबियों में से एक का[122] और

نَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ

हम तुम पर इस इन्तिज़ार में हैं कि **अल्लाह** तुम पर अज़ाब डाले अपने पास से[123] या हमारे हाथों[124]

فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿۵۲﴾ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ

तो अब राह देखो (इन्तिज़ार करो) हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे हैं[125] तुम फ़रमाओ कि दिल से ख़र्च करो या ना गवारी से तुम से हरगिज़

يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَ مَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ

क़बूल न होगा[126] बेशक तुम बे हुक्म (ना फ़रमान) लोग हो और वोह जो ख़र्च करते हैं

مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ لَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

उस का क़बूल होना बन्द न हुवा मगर इसी लिये कि वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और नमाज़ को नहीं आते

अपने माल से मदद करूंगा। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि येह उस का हीला था और इस में सिवाए निफ़ाक़ के और कोई इल्लत न थी। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस की तरफ़ से मुंह फेर लिया और उसे इजाज़त दे दी, उस के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई **118 :** क्यूं कि जिहाद से रुक रहना और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म की मुख़ालफ़त करना बहुत बड़ा फ़ितना है। **119 :** और तुम दुश्मन पर फ़त्ह याब हो और ग़नीमत तुम्हारे हाथ आए **120 :** और किसी तरह की शिद्दत पेश आए **121 :** मुनाफ़िक़ीन कि चालाकी से जिहाद में न जा कर **122 :** या तो फ़त्ह व ग़नीमत मिलेगी या शहादत व मग़्फ़िरत। क्यूं कि मुसल्मान जब जिहाद में जाता है तो वोह अगर ग़ालिब हो जब तो फ़त्ह व ग़नीमत और अज्रे अज़ीम पाता है और अगर राहे ख़ुदा में मारा जाए तो उस को शहादत हासिल होती है जो उस की आ'ला मुराद है। **123 :** और तुम्हें आद व समूद वग़ैरा की तरह हलाक करे **124 :** तुम को क़त्ल व असीरी के अज़ाब में गिरिफ़्तार करे **125 :** कि तुम्हारा क्या अन्जाम होता है। **126 शाने नुज़ूल :** येह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने जिहाद में न जाने की इजाज़त तलब करने के साथ येह कहा था कि मैं अपने माल से मदद करूंगा। इस पर हज़रते हक़ तबारक व तआला ने अपने हबीब सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया (ऐ महबूब आप फ़रमा दीजिये) कि तुम ख़ुशी से दो या नाख़ुशी से तुम्हारा माल क़बूल न किया जाएगा या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस को न लेंगे क्यूं कि येह देना **अल्लाह** के लिये नहीं है।

إِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ إِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ

मगर जी हारे (सुस्ती की ह़ालत में) और ख़र्च नहीं करते मगर ना गवारी से[127] तो तुम्हें उन के माल और उन की

وَلَآ أَوْلَادُهُمْ ؕ إِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

औलाद का तअ़ज्जुब न आए **अल्लाह** येही चाहता है कि दुन्या की ज़िन्दगी में इन चीज़ों से उन पर वबाल डाले और

تَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَ

कुफ़्र ही पर उन का दम निकल जाए[128] और **अल्लाह** की क़समें खाते हैं[129] कि वोह तुम में से हैं[130] और

مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً أَوْ مَغٰرٰتٍ

तुम में से हैं नहीं[131] हां वोह लोग डरते हैं[132] अगर पाएं कोई पनाह या ग़ार

أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى

या समा जाने की जगह तो रस्सियां तुड़ाते (पूरी कोशिश करते) उधर फिर जाएंगे[133] और उन में कोई वोह है कि सदक़े बांटने

الصَّدَقٰتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَإِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ إِذَا هُمْ

में तुम पर ता'न करता है[134] तो अगर उन[135] में से कुछ मिले तो राज़ी हो जाएं और न मिले तो जभी

يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا

वोह नाराज़ हैं और क्या अच्छा होता अगर वोह उस पर राज़ी होते जो **अल्लाह** व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें **अल्लाह**

اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ إِنَّآ إِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ إِنَّمَا

काफ़ी है अब देता है हमें **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से और **अल्लाह** का रसूल हमें **अल्लाह** ही की त़रफ़ रग़बत है[136] ज़कात

127 : क्यूं कि उन्हें रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं। 128 : तो वोह माल उन के ह़क़ में सबबे राह़त न हुवा बल्कि वबाल हुवा। 129 : मुनाफ़िक़ीन इस पर 130 : या'नी तुम्हारे दीनो मिल्लत पर हैं, मुसल्मान हैं। 131 : तुम्हें धोका देते और झूट बोलते हैं। 132 : कि अगर उन का निफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाए तो मुसल्मान उन के साथ वोही मुआ़मला करेंगे जो मुश्रिकीन के साथ करते हैं, इस लिये वोह बराहे तक़य्या अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। 133 : क्यूं कि उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ और मुसल्मानों से इन्तिहा दरजे का बुग़्ज़ है। 134 **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ुल ख़ुवैसिरा तमीमी के ह़क़ में नाज़िल हुई। इस शख़्स का नाम हुरक़ूस बिन ज़ुहैर है और येही ख़वारिज की अस्ल व बुन्याद है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम ﷺ माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे तो ज़ुल ख़ुवैसिरा ने कहा : **या रसूलल्लाह !** अ़द्ल कीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुझे ख़राबी हो, मैं न अ़द्ल करूंगा तो अ़द्ल कौन करेगा ? ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने अ़र्ज़ किया : मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो, इस के और भी हमराही हैं कि तुम उन की नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को ह़क़ीर देखोगे, वोह क़ुरआन पढ़ेंगे और उन के गलों से न उतरेगा, वोह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से। 135 : सदक़ात 136 : कि हम पर अपना फ़ज़्ल वसीअ़ करे और हमें ख़ल्क़ के अम्वाल से ग़नी और बे नियाज़ कर दे।

الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ

तो इन्हीं लोगों के लिये है[137] मोहताज और निरे नादार और जो इसे तह़सील (वुसूल) कर के लाएं और जिन के दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए

وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ

और गरदनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और **अल्लाह** की राह में और मुसाफ़िर को येह ठहराया हुवा है

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ

अल्लाह का और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और उन में कोई वोह हैं कि इन ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) को सताते हैं[138] और कहते हैं

هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ

वोह तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिये कान हैं **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और मुसल्मानों की बात पर यक़ीन करते हैं[139] और

رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ

जो तुम में मुसल्मान हैं उन के वासिते रह़मत हैं और वोह जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ

दर्दनाक अ़ज़ाब है तुम्हारे सामने **अल्लाह** की क़सम खाते हैं[140] कि तुम्हें राज़ी कर लें[141] और **अल्लाह** व रसूल का ह़क़ ज़ाइद था

137 : जब मुनाफ़िक़ीन ने तक़्सीमे सदक़ात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ता'न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयत में बयान फ़रमा दिया कि सदक़ात के मुस्तह़िक़ सिर्फ़ येही आठ क़िस्म के लोग हैं इन्हीं पर सदक़ात सर्फ़ किये जाएंगे इन के सिवा और कोई मुस्तह़िक़ नहीं और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को अम्वाले सदक़ा से कोई वासिता ही नहीं आप पर और आप की औलाद पर सदक़ात ह़राम हैं तो ता'न करने वालों को ए'तिराज़ का क्या मौक़अ़ ? **सदक़े** से इस आयत में ज़कात मुराद है। **मस्अला :** ज़कात के मुस्तह़िक़ आठ क़िस्म के लोग क़रार दिये गए हैं उन में से मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब ब इज्माए़ सह़ाबा साक़ित हो गए क्यूं कि जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इस की ह़ाजत न रही, येह इज्माअ़ ज़मानए सिद्दीक़ में मुन्अ़क़िद हुवा। **मस्अला : फ़क़ीर** वोह है जिस के पास अदना चीज़ हो और जब तक उस के पास एक वक़्त के लिये कुछ हो उस को सुवाल ह़लाल नहीं। **मिस्कीन** वोह है जिस के पास कुछ न हो, वोह सुवाल कर सकता है। **आ़मिलीन** वोह लोग हैं जिन को इमाम ने सदक़े तह़सील करने पर मुक़र्रर किया हो, उन्हें इमाम इतना दे जो उन के और उन के मुतअ़ल्लिक़ीन के लिये काफ़ी हो। **मस्अला :** अगर आ़मिल ग़नी हो तो भी उस को लेना जाइज़ है। **मस्अला :** आ़मिल सय्यिद या हाशिमी हो तो वोह ज़कात में से न ले। **गरदनें छुड़ाने** से मुराद येह है कि जिन ग़ुलामों को उन के मालिकों ने मुकातब कर दिया हो और एक मिक़्दार माल की मुक़र्रर कर दी हो कि इस क़दर वोह अदा कर दें तो आज़ाद हैं वोह भी मुस्तह़िक़ हैं उन को आज़ाद कराने के लिये माले ज़कात दिया जाए। **क़र्ज़दार** जो बिग़ैर किसी गुनाह के मुब्तलाए क़र्ज़ हुए हों और इतना माल न रखते हों जिस से क़र्ज़ अदा करें उन्हें अदाए क़र्ज़ में माले ज़कात से मदद दी जाए। **अल्लाह की राह** में ख़र्च करने से बे सामान मुजाहिदीन और नादार ह़ाजियों पर सर्फ़ करना मुराद है। **इब्ने सबील** से वोह मुसाफ़िर मुराद है जिस के पास माल न हो। **मस्अला :** ज़कात देने वाले को येह भी जाइज़ है कि वोह इन तमाम अक़्साम के लोगों को ज़कात दे और येह भी जाइज़ है कि इन में से किसी एक ही क़िस्म को दे। **मस्अला :** ज़कात इन्हीं लोगों के साथ ख़ास की गई तो इन के इलावा और दूसरे मसरफ़ में ख़र्च न की जाएगी न मस्जिद की ता'मीर में न मुर्दे के कफ़न में न उस के क़र्ज़ की अदा में। **मस्अला :** ज़कात बनी हाशिम और ग़नी और उन के ग़ुलामों को न दी जाए और न आदमी अपनी बीबी और औलाद और ग़ुलामों को दे। (تفسیر احمدی و مدارک) **138 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को। **शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन अपने जल्सों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में ना शाइस्ता बातें बका करते थे, उन में से बा'ज़ों ने कहा कि अगर ह़ुज़ूर को ख़बर हो गई तो हमारे ह़क़ में अच्छा न होगा। जुलास बिन सुवैद मुनाफ़िक़ ने कहा : हम जो चाहें कहें, ह़ुज़ूर के सामने मुकर जाएंगे और क़सम खा लेंगे वोह तो कान हैं उन से जो कह दिया जाए सुन कर मान लेते हैं। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और येह फ़रमाया कि अगर वोह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह़ के सुनने और मानने वाले हैं शर और फ़साद के नहीं। **139 :** न मुनाफ़िक़ों की बात पर। **140 :** मुनाफ़िक़ीन, इस लिये **141 शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन अपनी मजलिसों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ता'न किया करते थे और मुसल्मानों के पास आ कर उस से मुकर जाते थे

اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ

कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे **अल्लाह**

وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿۶۳﴾

और उस के रसूल का तो उस के लिये जहन्नम की आग है कि हमेशा उस में रहेगा येही बड़ी रुस्वाई है

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

मुनाफ़िक़ डरते हैं कि उन[142] पर कोई सूरत ऐसी उतरे जो उन[143] के दिलों की छुपी[144] जता दे

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

तुम फ़रमाओ हंसे जाओ **अल्लाह** को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिस का तुम्हें डर है और ऐ महबूब अगर तुम उन से पूछो

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ

तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे[145] तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** और उस की आयतों और उस के रसूल

كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ

से हंसते हो बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसल्मान हो कर[146] अगर

نَّعْفُ عَنْ طَآىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۶۶﴾

हम तुम में से किसी को मुआफ़ करें[147] तो औरों को अज़ाब देंगे इस लिये कि वोह मुजरिम थे[148]

और क़समें खा खा कर अपनी बरिय्यत (बे गुनाही) साबित करते थे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मुसल्मानों को राज़ी करने के लिये क़समें खाने से ज़ियादा अहम **अल्लाह** और उस के रसूल को राज़ी करना था अगर ईमान रखते थे तो ऐसी हरकतें क्यूं कीं जो ख़ुदा और रसूल की नाराज़ी का सबब हों। **142 :** मुसल्मानों **143 :** मुनाफ़िक़ों **144 :** दिलों की छुपी चीज़ उन का निफ़ाक़ है और वोह बुग़्ज़ो अ़दावत जो वोह मुसल्मानों के साथ रखते थे और उस को छुपाया करते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात देखने और आप की ग़ैबी ख़बरें सुनने और उन को वाक़ेअ़ के मुताबिक़ पाने के बा'द मुनाफ़िक़ों को अन्देशा हो गया कि कहीं **अल्लाह** तआ़ला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमाए जिस से उन के असरार ज़ाहिर कर दिये जाएं और उन की रुस्वाई हो। इस आयत में इसी का बयान है। **145 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए तबूक में जाते हुए मुनाफ़िक़ीन के तीन नफ़रों में से दो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत तमस्ख़ुरन कहते थे कि इन का ख़याल है कि येह रूम पर ग़ालिब आ जाएंगे कितना बईद ख़याल है और एक नफ़र बोलता तो न था मगर इन बातों को सुन कर हंसता था। हुज़ूर ने उन को त़लब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि तुम ऐसा ऐसा कह रहे थे ? उन्हों ने कहा : हम रास्ता काटने के लिये हंसी खेल के त़ौर पर दिललगी की बातें कर रहे थे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन का येह उ़ज़्र व हीला क़बूल न किया गया और उन के लिये येह फ़रमाया गया जो आगे इर्शाद होता है : **146 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी कुफ़्र है जिस त़रह भी हो उस में उ़ज़्र क़बूल नहीं। **147 :** उस के ताइब होने और ब इख़्लास ईमान लाने से। मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ का क़ौल है कि इस से वोही शख़्स मुराद है जो हंसता था मगर उस ने अपनी ज़बान से कोई कलिमए गुस्ताख़ी न कहा था जब येह आयत नाज़िल हुई तो वोह ताइब हुवा और इख़्लास के साथ ईमान लाया और उस ने दुआ़ की, कि या रब ! मुझे अपनी राह में मक़्तूल कर के ऐसी मौत दे कि कोई येह कहने वाला न हो कि मैं ने ग़ुस्ल दिया मैं ने कफ़न दिया मैं ने दफ़्न किया, चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि वोह जंगे यमामा में शहीद हुए और उन का पता ही न चला। उन का नाम यह़्या बिन हुमैर अश्जई था और चूंकि उन्हों ने हुज़ूर की बदगोई से ज़बान रोकी थी इस लिये उन्हें तौबा व ईमान की तौफ़ीक़ मिली। **148 :** और अपने जुर्म पर क़ाइम रहे और ताइब न हुए।

وقف لازم

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक थेली के चट्टे बट्टे (एक जैसे) हैं[149] बुराई का हुक्म दें[150] और

يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَ يَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ

भलाई से मन्अ़ करें[151] और अपनी मुठ्ठी बन्द रखें (ख़र्च न करें)[152] वोह **अल्लाह** को छोड़ बैठे[153] तो **अल्लाह** ने उन्हें छोड़ दिया[154] बेशक

الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝۶۷ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْكُفَّارَ

मुनाफ़िक़ वोही पक्के बे हुक्म (ना फ़रमान) हैं **अल्लाह** ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और काफ़िरों को

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

जहन्नम की आग का वा'दा दिया है जिस में हमेशा रहेंगे वोह उन्हें बस (काफ़ी) है और **अल्लाह** की उन पर ला'नत है और उन के लिये क़ाइम रहने वाला

مُّقِيْمٌ ۝۶۸ۙ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّ اَكْثَرَ اَمْوَالًا

अ़ज़ाब है जैसे वोह जो तुम से पहले थे तुम से ज़ोर में बढ़ कर थे और उन के माल और औलाद

وَّ اَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ

तुम से ज़ियादा तो वोह अपना हिस्सा[155] बरत (फ़ाएदा उठा) गए तो तुम ने अपना हिस्सा बरता जैसे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَ خُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓىِٕكَ حَبِطَتْ

अगले अपना हिस्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वोह पड़े थे[156] उन के अ़मल

اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۶۹ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ

अकारत (ज़ाएअ़) गए दुन्या और आख़िरत में और वोही लोग घाटे में हैं[157] क्या उन्हें[158] अपने

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۙ۬ وَ قَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَ اَصْحٰبِ

से अगलों की ख़बर न आई[159] नूह़ की क़ौम[160] और आ़द[161] और समूद[162] और इब्राहीम की क़ौम[163] और मद्यन

149 : वोह सब निफ़ाक़ और आ'माले ख़बीसा में यक्सां हैं। उन का हाल येह है कि **150 :** या'नी कुफ़्रो मा'सियत और रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब का। (خازن) **151 :** या'नी ईमान व ताअ़त व तस्दीक़े रसूल से **152 :** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से **153 :** और उन्हों ने उस की इताअ़त व रिज़ा तलबी न की। **154 :** और सवाब व फ़ज़्ल से महरूम कर दिया। **155 :** लज़्ज़ात व शहवाते दुन्यविय्या का **156 :** और तुम ने इत्तिबाए बातिल और तक्ज़ीबे ख़ुदा व रसूल और मोमिनीन के साथ इस्तिहज़ा (ठठ्ठा मज़ाक़) करने में उन की राह इख़्तियार की। **157 :** उन्हीं कुफ़्फ़ार की तरह ऐ मुनाफ़िक़ीन ! तुम टोटे में हो और तुम्हारे अ़मल बातिल हैं। **158 :** या'नी मुनाफ़िक़ों को। **159 :** गुज़री हुई उम्मतों का हाल मा'लूम न हुवा कि हम ने उन्हें अपने हुक्म की मुख़ालफ़त और अपने रसूलों की ना फ़रमानी करने पर किस तरह हलाक किया। **160 :** जो तूफ़ान से हलाक की गई। **161 :** जो हवा से हलाक किये गए। **162 :** जो ज़ल्ज़ले से हलाक किये गए। **163 :** जो सल्बे ने'मत से हलाक की गई और नमरूद मच्छर से हलाक किया गया।

مَدۡيَنَ وَالۡمُؤۡتَفِكٰتِ ؕ اَتَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ

वाले[164] और वोह बस्तियां कि उलट दी गईं[165] उन के रसूल रोशन दलीलें उन के पास लाए थे[166] तो अल्लाह की शान न थी

لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿٧٠﴾ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ

कि उन पर ज़ुल्म करता[167] बल्कि वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे[168] और मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औ़रतें

بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ۘ يَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ

एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं[169] भलाई का हुक्म दें[170] और बुराई से मन्अ़ करें

وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيۡعُوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ ؕ

और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें

اُولٰٓئِكَ سَيَرۡحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

येह हैं जिन पर अ़न्क़रीब अल्लाह रह़्म करेगा बेशक अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है अल्लाह ने मुसल्मान मर्दों

وَالۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا وَمَسٰكِنَ

और मुसल्मान औ़रतों को बाग़ों का वा'दा दिया है जिन के नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा

طَيِّبَةً فِىۡ جَنّٰتِ عَدۡنٍ ؕ وَرِضۡوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكۡبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ

मकानों का[171] बसने के बाग़ों में और अल्लाह की रिज़ा सब से बड़ी[172] येही है बड़ी

الۡعَظِيۡمُ ﴿٧٢﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الۡكُفَّارَ وَالۡمُنٰفِقِيۡنَ وَاغۡلُظۡ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَ

मुराद पानी ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर[173] और उन पर सख़्ती करो और

مَاۡوٰىهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿٧٣﴾ يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوۡا ؕ وَلَقَدۡ

उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरी जगह पलटने की अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा[174] और बेशक

वक़्फ़ लाज़िम

रुकूअ़ 15

164 : या'नी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيۡهِ السَّلَام की क़ौम जो रोज़े अब्र (ग़ैबी आग) के अ़ज़ाब से हलाक कर दी गई। 165 : और ज़ेरो ज़बर कर डाली गईं वोह क़ौमे लूत़ की बस्तियां थीं अल्लाह तआ़ला ने इन छ॰ का ज़िक्र फ़रमाया इस लिये कि बिलादे शाम व इराक़ व यमन जो सर ज़मीने अ़रब के बिल्कुल क़रीब हैं इन में उन हलाक शुदा क़ौमों के निशान बाक़ी हैं और अ़रब लोग इन मक़ामात पर अक्सर गुज़रते रहते हैं। 166 : उन लोगों ने बजाए तस्दीक़ करने के अपने रसूलों की तक्ज़ीब की जैसा कि ऐ मुनाफ़िक़ीन, कुफ़्फ़ार ! तुम कर रहे हो, डरो कि उन्हीं की त़रह मुब्तलाए अ़ज़ाब न किये जाओ। 167 : क्यूं कि वोह ह़कीम है बिग़ैर जुर्म के सज़ा नहीं फ़रमाता। 168 : कि कुफ़्र और तक्ज़ीबे अम्बिया कर के अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ बने। 169 : और बाहम दीनी मह़ब्बत व मुवालात (दोस्ताना तअ़ल्लुक़ात) रखते हैं और एक दूसरे के मुईनो मददगार हैं। 170 : या'नी अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करने का। 171 : ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ से मरवी है कि जन्नत में मोती और याक़ूते सुर्ख़ और ज़बर जद के मह़ल मोमिनीन को अ़त़ा होंगे। 172 : और तमाम ने'मतों से आ'ला और आ़शिक़ाने इलाही की सब से बड़ी तमन्ना। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰی بِجَاهِ حَبِيۡبِهٖ صلی اللّٰه علیه وسلم। 173 : काफ़िरों पर तो तलवार और ह़र्ब से और मुनाफ़िक़ों पर इक़ामते ह़ुज्जत से। 174 **शाने नुज़ूल :** इमाम बग़वी ने कलबी से नक़्ल किया कि येह आयत

قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا

ज़रूर उन्हों ने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए और वोह चाहा था जो उन्हें न मिला[175] और उन्हें

نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ

क्या बुरा लगा येही ना कि **अल्लाह** व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया[176] तो अगर वोह तौबा करें

خَيْرًا لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ

तो उन का भला है और अगर मुंह फेरें[177] तो **अल्लाह** उन्हें सख़्त अ़ज़ाब करेगा दुन्या और आख़िरत में

وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ

और ज़मीन में कोई न उन का हिमायती होगा न मददगार[178] और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने **अल्लाह** से अ़हद किया था

لَئِنْ آتَانَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا

कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे[179] तो जब

जुलास बिन सुवैद के हक़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ़ येह था कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबूक में ख़ुत्बा फ़रमाया उस में मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र किया और उन की बदहाली व बद मआली का ज़िक्र फ़रमाया। येह सुन कर जुलास ने कहा कि अगर मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हैं तो हम लोग गधों से बदतर। जब हुज़ूर मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो आ़मिर बिन क़ैस ने हुज़ूर से जुलास का मक़ूला बयान किया, जुलास ने इन्कार किया और कहा कि **या रसूलल्लाह !** आ़मिर ने मुझ पर झूट बोला। हुज़ूर ने दोनों को हुक्म फ़रमाया कि मिम्बर के पास क़सम खाएं। जुलास ने बा'दे अ़स्र मिम्बर के पास खड़े हो कर **अल्लाह** की क़सम खाई कि येह बात इस ने नहीं कही और आ़मिर ने इस पर झूट बोला। फिर आ़मिर ने खड़े हो कर क़सम खाई कि बेशक येह मक़ूला जुलास ने कहा और मैं ने इस पर झूट नहीं बोला। फिर आ़मिर ने हाथ उठा कर **अल्लाह** के हुज़ूर में दुआ़ की : या रब ! अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक़ नाज़िल फ़रमा। उन दोनों के जुदा होने से पहले ही हज़रते जिब्रील येह आयत ले कर नाज़िल हुए आयत में "فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ" सुन कर जुलास खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** सुनिये **अल्लाह** ने मुझे तौबा का मौक़अ़ दिया, आ़मिर बिन क़ैस ने जो कुछ कहा सच कहा, मैं ने वोह कलिमा कहा था और अब मैं तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूं। हुज़ूर ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई और वोह तौबा पर साबित रहे। **175 :** मुजाहिद ने कहा कि जुलास ने इफ़्शाए राज़ (भेद खुल जाने) के अन्देशे से आ़मिर के क़त्ल का इरादा किया था, इस की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि वोह पूरा न हुवा। **176 :** ऐसी हालत में उन पर शुक्र वाजिब था न कि ना सिपासी (ना शुक्री)। **177 :** तौबा व ईमान से। और कुफ़्र व निफ़ाक़ पर मुसिर रहें। **178 :** कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। **179 शाने नुज़ूल :** सा'लबा बिन हातिब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि इस के लिये मालदार होने की दुआ़ फ़रमाएं। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'लबा थोड़ा माल जिस का तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है जिस का शुक्र अदा न कर सके। दोबारा फिर सा'लबा ने हाज़िर हो कर येही दरख़्वास्त की और कहा : उसी की क़सम ! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा कि अगर वोह मुझे माल देगा तो मैं हर हक़ वाले का हक़ अदा करूंगा। हुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई **अल्लाह** तआ़ला ने उस की बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीने में उन की गुन्जाइश न हुई तो सा'लबा उन को ले कर जंगल में चला गया और जुमुआ़ व जमाअ़त की हाज़िरी से भी महरूम हो गया। हुज़ूर ने उस का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि उस का माल बहुत कसीर हो गया है और अब जंगल में भी उस के माल की गुन्जाइश न रही। हुज़ूर ने फ़रमाया कि सा'लबा पर अफ़्सोस ! फिर जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़कात के तहसील (हासिल) करने वाले भेजे लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़ात दिये जब सा'लबा से जा कर उन्हों ने सदक़ा मांगा उस ने कहा येह तो टेक्स हो गया, जाओ मैं सोच लूं। जब येह लोग रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस आए तो हुज़ूर ने उन के कुछ अ़र्ज़ करने से क़ब्ल दो मरतबा फ़रमाया : सा'लबा पर अफ़्सोस ! तो येह आयत नाज़िल हुई। फिर सा'लबा सदक़ा ले कर हाज़िर हुवा तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस के क़बूल फ़रमाने की मुमानअ़त फ़रमा दी, वोह अपने सर पर ख़ाक डाल कर वापस हुवा, फिर उस सदक़े को ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास लाया। उन्हों ने भी उसे क़बूल न फ़रमाया। फिर ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में हज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास लाया, उन्हों ने भी क़बूल न फ़रमाया और ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में येह शख़्स हलाक हो गया। (مدارک)

[आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की तहक़ीक़ के मुताबिक़ इस मुनाफ़िक़ का दुरुस्त नाम "सा'लबा इब्ने अबी हातिब" था। फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 453। इल्मिय्या]

آتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ

अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए तो उस के पीछे

نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا

अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला इस का कि उन्हों ने अल्लाह से वा'दा झूटा किया और बदला इस

كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَ

का कि झूट बोलते थे[180] क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उन के दिल की छुपी और उन की सरगोशी को जानता है और

اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ﴿٧٨﴾ ج اَلَّذِیْنَ یَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِیْنَ مِنَ

येह कि अल्लाह सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है[181] वोह जो ऐब लगाते हैं उन मुसल्मानों को

الْمُؤْمِنِیْنَ فِی الصَّدَقٰتِ وَالَّذِیْنَ لَا یَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

कि दिल से ख़ैरात करते हैं[182] और उन को जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत से[183]

فَیَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٧٩﴾ اِسْتَغْفِرْ

तो उन से हंसते हैं[184] अल्लाह उन की हंसी की सज़ा देगा और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है तुम उन की मुआफ़ी

لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً فَلَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ

चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उन की मुआफ़ी चाहोगे तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं

180 : इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित होता है कि अ़हद शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी से निफ़ाक़ पैदा होता है तो मुसल्मान पर लाज़िम है कि इन बातों से एहतिराज़ करे और अ़हद पूरा करने और वा'दा वफ़ा करने में पूरी कोशिश करे। हदीस शरीफ़ में है : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : जब बात करे झूट बोले, जब वा'दा करे ख़िलाफ़ करे, जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे। **181 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं मुनाफ़िक़ीन के दिलों की बात भी जानता है और जो आपस में वोह एक दूसरे से कहें वोह भी। **182 शाने नुज़ूल :** जब आयते सदक़ा नाज़िल हुई तो लोग सदक़ा लाए उन में कोई बहुत कसीर लाए उन्हें तो मुनाफ़िक़ीन ने रियाकार कहा और कोई एक साअ़ (3 ½ सेर) (3840 ग्राम या'नी चार किलो में 20 ग्राम कम। दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, बाबुल मदीना कराची) लाए तो उन्हें कहा : अल्लाह को इस की क्या परवाह, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने लोगों को सदक़े की रग़बत दिलाई तो हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ चार हज़ार दिरहम लाए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** मेरा कुल माल आठ हज़ार दिरहम था चार हज़ार तो येह राहे ख़ुदा में हाज़िर है और चार हज़ार मैं ने घर वालों के लिये रोक लिये हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया : जो तुम ने दिया अल्लाह उस में भी बरकत फ़रमाए और जो रोक लिया उस में भी बरकत फ़रमाए। हुज़ूर की दुआ़ का येह असर हुवा कि इन का माल बहुत बढ़ा यहां तक कि जब इन की वफ़ात हुई तो इन्हों ने दो बीबियां छोड़ीं उन्हें आठवां हिस्सा मिला जिस की मिक़्दार एक लाख साठ हज़ार दिरहम थी। **183 :** अबू अ़क़ील अन्सारी एक साअ़ खजूरें ले कर हाज़िर हुए और उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि मैं ने आज रात पानी खींचने की मज़दूरी की उस की उजरत दो साअ़ खजूरें मिलीं एक साअ़ तो मैं घर वालों के लिये छोड़ आया और एक साअ़ राहे ख़ुदा में हाज़िर है। हुज़ूर ने येह सदक़ा क़बूल फ़रमाया और उस की क़द्र की। **184 :** मुनाफ़िक़ीन। और सदक़े की क़िल्लत पर आ़र दिलाते हैं।

لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ

बख़्शेगा[185] येह इस लिये कि वोह अल्लाह और उस के रसूल से मुन्किर हुए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह

الْفٰسِقِیْنَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا

नहीं देता[186] पीछे रह जाने वाले इस पर ख़ुश हुए कि वोह रसूल के पीछे बैठ रहे[187] और उन्हें गवारा न हुवा

اَنْ یُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِی

कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें और बोले इस गरमी

الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا یَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْیَضْحَكُوْا

में न निकलो तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सब से सख़्त गर्म है किसी त़रह उन्हें समझ होती[188] तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा

قَلِیْلًا وَّلْیَبْكُوْا كَثِیْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ

हंसें और बहुत रोएं[189] बदला उस का जो कमाते थे[190] फिर ऐ मह़बूब[191] अगर अल्लाह तुम्हें

اللّٰهُ اِلٰى طَآىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا

उन[192] में से किसी गुरौह की त़रफ़ वापस ले जाए और वोह[193] तुम से जिहाद को निकलने की इजाज़त मांगें तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी

مَعِیَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِیَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِیْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ

मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुश्मन से न लड़ो तुम ने पहली दफ़्अ़ा बैठ रहना

مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِیْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا

पसन्द किया तो बैठ रहो पीछे रह जाने वालों के साथ[194] और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना

185 शाने नुज़ूल : ऊपर की आयतें जब नाज़िल हुईं और मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ खुल गया और मुसल्मानों पर ज़ाहिर हो गया तो मुनाफ़िक़ीन सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप से मा'ज़िरत कर के कहने लगे कि आप हमारे लिये इस्तिग़्फ़ार कीजिये। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अल्लाह तआ़ला हरगिज़ उन की मग़्फ़िरत न फ़रमाएगा चाहे आप इस्तिग़्फ़ार में मुबालग़ा करें। **186 :** जो ईमान से ख़ारिज हों जब तक कि वोह कुफ़्र पर रहें। (مدارک) **187 :** और ग़ज़्वए तबूक में न गए **188 :** तो थोड़ी देर की गरमी बरदाश्त करते और हमेशा की आग में जलने से अपने आप को बचाते। **189 :** या'नी दुन्या में ख़ुश होना और हंसना चाहे कितनी ही दराज़ मुद्दत के लिये हो मगर वोह आख़िरत के रोने के मुक़ाबिल थोड़ा है क्यूं कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत दाइम और बाक़ी है। **190 :** या'नी आख़िरत का रोना दुन्या में हंसने और ख़बीस अ़मल करने का बदला है। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वोह जो मैं जानता हूं तो थोड़ा हंसते और बहुत रोते। **191 :** ग़ज़्वए तबूक के बा'द **192 :** मुतख़ल्लिफ़ीन (पीछे रह जाने वालों) **193 :** अगर वोह मुनाफ़िक़ जो तबूक में जाने से बैठ रहा था। **194 :** औ़रतों, बच्चों, बीमारों और अपाहजों के। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि जिस शख़्स से मक्र व ख़द्अ़ (धोका और फ़रेब) ज़ाहिर हो उस से इन्क़िताअ़ और अ़लाहदगी करना चाहिये और मह़ज़ इस्लाम के मुद्दई होने से मुसाहबत व मुवाफ़क़त (या'नी हम नशीनी और दोस्ती) जाइज़ नहीं होती, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी ﷺ के साथ मुनाफ़िक़ीन के जिहाद में जाने को मन्अ़ फ़रमा दिया। आज कल जो लोग कहते हैं कि हर कलिमा गो को मिला लो और उस के साथ इत्तिफ़ाक़ो इत्तिहाद करो येह इस हुक्मे क़ुरआनी के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।

وَلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ

और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और फ़िस्क़ ही

فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ

में मर गए[195] और उन के माल या औलाद पर तअज्जुब न करना **अल्लाह** येही चाहता है कि

يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَآ

इसे दुन्या में उन पर वबाल करे और कुफ़्र ही पर उन का दम निकल जाए और जब

اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا

कोई सूरत उतरे कि **अल्लाह** पर ईमान लाओ और उस के रसूल के हमराह जिहाद करो तो उन के मक़्दूर (ताक़त रखने) वाले

الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا

तुम से रुख़्सत मांगते हैं और कहते हैं हमें छोड़ दीजिये कि बैठ रहने वालों के साथ हो लें उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली

مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ

औरतों के साथ हो जाएं और उन के दिलों पर मोहर कर दी गई[196] तो वोह कुछ नहीं समझते[197] लेकिन रसूल

195 : इस आयत में सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मुनाफ़िक़ीन के जनाज़े की नमाज़ और उन के दफ़्न में शिर्कत करने से मन्अ फ़रमाया गया। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी हाल में जाइज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़े होना भी मम्नूअ है और येह जो फ़रमाया "और फ़िस्क़ ही में मर गए" यहां फ़िस्क़ से कुफ़्र मुराद है, क़ुरआने करीम में और जगह भी फ़िस्क़ ब मा'ना कुफ़्र वारिद हुवा है जैसे कि आयत "اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا" में। **मस्अला :** फ़ासिक़ के जनाज़े की नमाज़ जाइज़ है इस पर सहाबा और ताबिईन का इज्माअ है और इस पर उ़लमाए सालिहीन का अ़मल और येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़्हब है। **मस्अला :** इस आयत से मुसल्मानों के जनाज़े की नमाज़ का जवाज़ भी साबित होता है और इस का फ़र्ज़े किफ़ाया होना ह़दीसे मशहूर से साबित है। **मस्अला :** जिस शख़्स के मोमिन या काफ़िर होने में शुबा हो उस के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाए। **मस्अला :** जब कोई काफ़िर मर जाए और उस का वली मुसल्मान हो तो उस को चाहिये कि ब त़रीक़े मस्नून ग़ुस्ल न दे बल्कि नजासत की त़रह उस पर पानी बहा दे और न कफ़ने मस्नून दे बल्कि इतने कपड़े में लपेट दे जिस से सत्र छुप जाए और न सुन्नत त़रीक़े पर दफ़्न करे न ब त़रीक़े सुन्नत क़ब्र बनाए सिर्फ़ गढ़ा खोद कर दबा दे। **शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ों का सरदार था जब वोह मर गया तो उस के बेटे अ़ब्दुल्लाह ने जो मुसल्मान सालेह़ मुख़्लिस सहाबी और कसीरुल इबादत थे। इन्हों ने येह ख़्वाहिश की, कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم इन के बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को कफ़न के लिये अपना क़मीसे मुबारक इनायत फ़रमा दें और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की राय इस के ख़िलाफ़ थी लेकिन चूंकि उस वक़्त तक मुमानअ़त नहीं हुई थी और हुज़ूर को मा'लूम था कि हुज़ूर का येह अ़मल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का बाइस होगा इस लिये हुज़ूर ने अपनी क़मीस भी इनायत फ़रमाई और जनाज़े की शिर्कत भी की। क़मीस देने की एक वज्ह येह भी थी कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास जो बद्र में असीर हो कर आए थे तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने अपना कुरता उन्हें पहनाया था हुज़ूर को उस का बदला कर देना भी मन्ज़ूर था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, और इस के बा'द फिर कभी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की शिर्कत न फ़रमाई और हुज़ूर की वोह मस्लहत भी पूरी हुई। चुनान्चे जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि ऐसा शदीदुल अ़दावत शख़्स जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के कुरते से बरकत ह़ासिल करना चाहता है तो उस के अ़क़ीदे में भी आप **अल्लाह** के ह़बीब और उस के सच्चे रसूल हैं येह सोच कर हज़ार काफ़िर मुसल्मान हो गए।
196 : उन के कुफ़्र व निफ़ाक़ इख़्तियार करने के बाइस। **197 :** कि जिहाद में क्या फ़ौज़ व सआ़दत (काम्याबी व ख़ुश बख़्ती) और बैठ रहने में कैसी हलाकत व शक़ावत (नाकामी व बद बख़्ती) है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ

और जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिये

الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

भलाइयां हैं[198] और येही मुराद को पहुंचे अल्लाह ने उन के लिये तय्यार कर रखी हैं बिहिश्तें जिन

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ

के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येही बड़ी मुराद मिलनी है और बहाने बनाने वाले

مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

गंवार आए[199] कि उन्हें रुख़्सत दी जाए और बैठ रहे वोह जिन्हों ने अल्लाह व रसूल से झूट बोला था[200]

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ

जल्द उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा[201] ज़ईफ़ों पर कुछ ह़रज नहीं[202]

وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا

और न बीमारों पर[203] और उन पर जिन्हें ख़र्च का मक़्दूर (त़ाक़त) न हो[204] जब

نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

कि अल्लाह व रसूल के ख़ैर ख़्वाह रहें[205] नेकी वालों पर कोई राह नहीं[206] और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ ۙ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ

मेहरबान है और न उन पर जो तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों कि तुम उन्हें सुवारी अ़त़ा फ़रमाओ[207] तुम से येह जवाब पाएं कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस

198 : दोनों जहान की **199 :** सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमत में जिहाद से रह जाने का उ़ज़्र करने। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि येह आ़मिर बिन तु़फ़ैल की जमाअ़त थी, इन्हों ने सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया कि **या नबिय्यल्लाह!** अगर हम आप के साथ जिहाद में जाएं तो क़बीलए त़य के अ़रब हमारी बीबियों, बच्चों और जानवरों को लूट लेंगे। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया मुझे अल्लाह ने तुम्हारे ह़ाल से ख़बरदार किया है और वोह मुझे तुम से बे नियाज़ करेगा। अ़म्र बिन अ़ला ने कहा कि उन लोगों ने उ़ज़्रे बात़िल बना कर पेश किया था। **200 :** येह दूसरे गुरौह का ह़ाल है जो बिग़ैर किसी उ़ज़्र के बैठ रहे, येह मुनाफ़िक़ीन थे इन्हों ने ईमान का दा'वा झूटा किया था। **201 :** दुन्या में क़त्ल होने का और आख़िरत में जहन्नम का। **202 :** बात़िल वालों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द सच्चे उ़ज़्र वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि इन पर से जिहाद की फ़र्ज़िय्यत साक़ित़ है। येह कौन लोग हैं? उन के चन्द त़बक़े बयान फ़रमाए : पहले ज़ईफ़ जैसे कि बूढ़े, बच्चे, औ़रतें और वोह शख़्स भी इन्ही में दाख़िल है जो पैदाइशी कमज़ोर ज़ईफ़ नह़ीफ़ नाकारा हो। **203 :** येह दूसरा त़बक़ा है जिस में अन्धे, लंगड़े, अपाहज भी दाख़िल हैं। **204 :** और सामाने जिहाद न कर सकें, येह लोग रह जाएं तो इन पर कोई गुनाह नहीं। **205 :** इन की इत़ाअ़त करें और मुजाहिदीन के घर वालों की ख़बर गीरी रखें। **206 :** मुआख़ज़े की। **207 शाने नुज़ूल :** अस्ह़ाबे रसूल ﷺ में से चन्द ह़ज़रात जिहाद में जाने के लिये ह़ाज़िर हुए, उन्हों ने हुज़ूर से सुवारी की दरख़्वास्त की। हुज़ूर ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं जिस पर मैं तुम्हें सुवार करूं तो वोह रोते वापस हुए उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई।

اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا وَّ اَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا

पर तुम्हें सुवार करूं इस पर यूं वापस जाएं कि उन की आंखों से आंसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च का

مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿۹۲﴾ؕ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ

मक़्दूर न पाया मुआख़ज़ा (पकड़) तो उन से है जो तुम से रुख़्सत मांगते हैं और वोह

اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى

दौलत मन्द हैं[208] उन्हें पसन्द आया कि औ़रतों के साथ पीछे बैठ रहें और **अल्लाह** ने उन के दिलों पर

قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۳﴾

मोहर कर दी तो वोह कुछ नहीं जानते[209]

---

208 : जिहाद में जाने की कुदरत रखते हैं बा वुजूद इस के **209 :** कि जिहाद में क्या नफ़्अ़ व सवाब है।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ

तुम से बहाने बनाएंगे[210] जब तुम उन की त़रफ़ लौट कर जाओगे तुम फ़रमाना बहाने न बनाओ हम हरगिज़

نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ

तुम्हारा यक़ीन न करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम

وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

देखेंगे[211] फिर उस की त़रफ़ पलट कर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सब को जानता है वोह तुम्हें जता देगा जो कुछ

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ

तुम करते थे अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खाएंगे जब[212] तुम उन की त़रफ़ पलट कर जाओगे

لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ز وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ج

इस लिये कि तुम उन के ख़याल में न पड़ो[213] तो हां तुम उन का ख़याल छोड़ो[214] वोह तो निरे (बिल्कुल) पलीद हैं[215] और उन का ठिकाना जहन्नम है

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ج فَاِنْ

बदला उस का जो कमाते थे[216] तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उन से राज़ी हो जाओ तो अगर

تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾ اَلْاَعْرَابُ

तुम उन से राज़ी हो जाओ[217] तो बेशक अल्लाह तो फ़ासिक़ लोगों से राज़ी न होगा[218] गंवार[219]

210 : और बात़िल उ़ज़्र पेश करेंगे येह जिहाद से रह जाने वाले मुनाफ़िक़ तुम्हारे इस सफ़र से वापस होने के वक़्त **211 :** कि तुम निफ़ाक़ से तौबा करते हो या इस पर क़ाइम रहते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उन्हों ने वा'दा किया था कि ज़मानए मुस्तक़्बिल में वोह मोमिनीन की मदद करेंगे हो सकता है कि इसी की निस्बत फ़रमाया गया हो कि अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे कि तुम अपने इस अ़हद को भी वफ़ा करते हो या नहीं। **212 :** अपने इस सफ़र से वापस हो कर मदीनए त़य्यिबा में **213 :** और उन पर मलामत व इ़ताब न करो। **214 :** और उन से इज्तिनाब करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मुराद येह है कि उन के साथ बैठना, उन से बोलना तर्क कर दो चुनान्चे जब नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर ने मुसल्मानों को हुक्म दिया कि मुनाफ़िक़ीन के पास न बैठें, उन से बात न करें क्यूं कि उन के बात़िन ख़बीस और आ'माल क़बीह़ (बुरे) हैं और मलामत व इ़ताब से उन की इस्लाह़ न होगी इस लिये कि **215 :** और पलीदी के पाक होने का कोई त़रीक़ा नहीं। **216 :** दुन्या में ख़बीस अ़मल। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत जद बिन क़ैस और मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर और इन के साथियों के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह अस्सी मुनाफ़िक़ थे। नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन के पास न बैठो, इन से कलाम न करो। मक़ातिल ने कहा कि येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के ह़क़ में नाज़िल हुई, इस ने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने क़सम खाई थी कि अब कभी वोह जिहाद में जाने से सुस्ती न करेगा और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की थी कि हुज़ूर उस से राज़ी हो जाएं इस पर येह आयत और इस के बा'द वाली आयत नाज़िल हुई **217 :** और उन के उ़ज़्र क़बूल कर लो तो इस से उन्हें कुछ नफ़्अ़ न होगा, क्यूं कि तुम अगर उन की क़समों का ए'तिबार भी कर लो **218 :** इस लिये कि वोह उन के दिल के कुफ़्रो निफ़ाक़ को जानता है। **219 :** जंगल के रहने वाले।

اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़ियादा सख़्त हैं[220] और इसी क़ाबिल हैं कि **अल्लाह** ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उस

رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۹۷﴾ وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا

से जाहिल रहें और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है और कुछ गंवार वोह हैं कि जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करें

يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَ

तो उसे तावान समझें[221] और तुम पर गर्दिशें (मसाइब) आने के इन्तिज़ार में रहें[222] उन्हीं पर है बुरी गर्दिश[223] और

اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۹۸﴾ وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ

अल्लाह सुनता जानता है और कुछ गाउं वाले वोह हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान

الْاٰخِرِ وَ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَ صَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ

रखते हैं[224] और जो ख़र्च करें उसे **अल्लाह** की नज़्दीकियों और रसूल से दुआएं लेने का ज़रीआ समझें[225]

اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

हां हां वोह उन के लिये बाइसे क़ुर्ब है **अल्लाह** जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۹۹﴾ ع وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ

मेहरबान है और सब में अगले पहले मुहाजिर[226] और अन्सार[227] और

الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ

जो भलाई के साथ उन के पैरव (पैरवी करने वाले) हुए[228] **अल्लाह** उन से राज़ी[229] और वोह **अल्लाह** से राज़ी[230] और उन के लिये

220 : क्यूं कि वोह मजालिसे इल्म और सोहबते उ़लमा से दूर रहते हैं। **221 :** क्यूं कि वोह जो कुछ ख़र्च करते हैं रिज़ाए इलाही और त़लबे सवाब के लिये तो करते नहीं रियाकारी और मुसल्मानों के ख़ौफ़ से ख़र्च करते हैं। **222 :** और येह राह देखते हैं कि कब मुसल्मानों का ज़ोर कम हो और कब वोह मग़्लूब हों, उन्हें ख़बर नहीं कि **अल्लाह** को क्या मन्ज़ूर है वोह बतला दिया जाता है। **223 :** और वोही रन्जो बला और बदहाली में गिरिफ़्तार होंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत क़बीलए असद व ग़त़फ़ान व तमीम के आ'राबियों (दीहातियों) के हक़ में नाज़िल हुई फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इन में से जिन को मुस्तस्ना किया उन का ज़िक्र अगली आयत में है। (خازن) **224 :** मुजाहिद ने कहा कि येह लोग क़बीलए मुज़ैना में से बनी मुक़र्रिन हैं। कल्बी ने कहा : वोह अस्लम और ग़िफ़ार और जुहैना के क़बीले हैं। बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ुरैश और अन्सार और जुहैना और मुज़ैना और अस्लम और शुजाअ़ और ग़िफ़ार मवाली हैं, **अल्लाह** और रसूल के सिवा इन का कोई मौला नहीं। **225 :** कि जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हु़ज़ूर में सदक़ा लाएं तो हु़ज़ूर उन के लिये ख़ैरो बरकत व मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाएं, येही रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का त़रीक़ा था। **मस्अला :** येही फ़ातिहा़ की अस्ल है कि सदक़े के साथ दुआ़ए मग़्फ़िरत की जाती है, लिहाज़ा फ़ातिहा़ को बिद्अ़त व ना रवा (ना जाइज़) बताना क़ुरआन व ह़दीस के ख़िलाफ़ है। **226 :** वोह ह़ज़रात जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ें पढ़ीं या अहले बद्र या अहले बैअ़ते रिज़्वान **227 :** अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए ऊला जो छ[6] ह़ज़रात थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सानिया जो बारह थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सालिसा जो सत्तर अस्ह़ाब हैं, येह ह़ज़रात साबिक़ीने अन्सार कहलाते हैं। (خازن) **228 :** कहा गया है कि इन से बाक़ी मुहाजिरीन व अन्सार मुराद हैं, तो अब तमाम अस्ह़ाब

لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿۱۰۰﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ؕۛ وَمِنْ اَهْلِ

काम्याबी है और तुम्हारे आस पास[231] के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ हैं और कुछ मदीना

الْمَدِيْنَةِ ۛؔ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ

वाले उन की ख़ू (आदत) हो गई है निफ़ाक़ तुम उन्हें नहीं जानते हम उन्हें जानते हैं[232]

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۱﴾ ۚ وَاٰخَرُوْنَ

जल्द हम उन्हें दो बार[233] अ़ज़ाब करेंगे फिर बड़े अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे[234] और कुछ और हैं जो

اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ

अपने गुनाहों के मुक़िर (इक़रारी) हुए[235] और मिलाया एक काम अच्छा[236] और दूसरा बुरा[237] क़रीब है कि

يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰۲﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ

अल्लाह उन की तौबा क़बूल करे बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है ऐ मह्बूब उन के माल में से

وقف منزل

इस में आ गए और एक क़ौल येह है कि पैरव होने वालों से क़ियामत तक के वोह ईमानदार मुराद हैं जो ईमान व त़ाअ़त व नेकी में अन्सार व मुहाजिरीन की राह चलें। **229 :** उस को उन के नेक अ़मल क़बूल **230 :** उस के सवाब व अ़त़ा से ख़ुश **231 :** या'नी मदीनए त़य्यिबा के क़ुर्बो जवार **232 :** इस के मा'ना या तो येह हैं कि ऐसा जानना जिस का असर उन्हें मा'लूम हो वोह हमारा जानना है कि हम उन्हें अ़ज़ाब करेंगे या हुज़ूर से मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल जानने की नफ़ी ब ए'तिबारे मा सबक़ है और इस का इ़ल्म बा'द को अ़त़ा हुवा जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : ''وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِیْ لَحْنِ الْقَوْلِ'' (جمل) कल्बी व सुद्दी ने कहा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रोज़े जुमुआ ख़ुत्बे के लिये क़ियाम कर के नाम बनाम फ़रमाया : निकल ऐ फ़ुलां ! तू मुनाफ़िक़ है, निकल ऐ फ़ुलां ! तू मुनाफ़िक़ है। तो मस्जिद से चन्द लोगों को रुस्वा कर के निकाला। इस से भी मा'लूम होता है कि हुज़ूर को इस के बा'द मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया। **233 :** एक बार तो दुन्या में रुस्वाई और क़त्ल के साथ और दूसरी मरतबा क़ब्र में **234 :** या'नी अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ जिस में हमेशा गिरिफ़्तार रहेंगे। **235 :** और उन्हों ने दूसरों की त़रह़ झूटे उ़ज़्र न किये और अपने फ़े'ल पर नादिम हुए। **शाने नुज़ूल :** जुम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत मदीनए त़य्यिबा के मुसल्मानों की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ग़ज़्वए तबूक में ह़ाज़िर न हुए थे, इस के बा'द नादिम हुए और तौबा की और कहा : अफ़्सोस हम गुमराहों के साथ या औ़रतों के साथ रह गए और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब जिहाद में हैं, जब हुज़ूर अपने सफ़र से वापस हुए और क़रीबे मदीना पहुंचे तो उन लोगों ने क़सम खाई कि हम अपने आप को मस्जिद के सुतूनों से बांध देंगे और हरगिज़ न खोलेंगे यहां तक कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ही खोलें, येह क़समें खा कर वोह मस्जिद के सुतूनों से बंध गए। जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए और उन्हें मुलाह़ज़ा किया तो फ़रमाया : येह कौन हैं ? अ़र्ज़ किया गया : येह वोह लोग हैं जो जिहाद में ह़ाज़िर होने से रह गए थे, इन्हों ने **अल्लाह** से अ़ह्द किया है कि येह अपने आप को न खोलेंगे जब तक हुज़ूर इन से राज़ी हो कर इन्हें ख़ुद न खोलें। हुज़ूर ने फ़रमाया : और मैं **अल्लाह** की क़सम खाता हूं कि मैं इन्हें न खोलूंगा न इन का उ़ज़्र क़बूल करूं जब तक कि मुझे **अल्लाह** की त़रफ़ से इन के खोलने का हुक्म दिया जाए। तब येह आयत नाज़िल हुई और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें खोला तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** येह माल हमारे रह जाने के बाइ़स हुए, इन्हें ले लीजिये और सदक़ा कीजिये और हमें पाक कर दीजिये और हमारे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाइये। हुज़ूर ने फ़रमाया : मुझे तुम्हारे माल लेने का हुक्म नहीं दिया गया। इस पर अगली आयत नाज़िल हुई ''خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ''। **236 :** यहां अ़मले सालेह़ से या ए'तिराफ़े क़ुसूर और तौबा मुराद है या इस तख़ल्लुफ़ (जिहाद से रह जाने) से पहले ग़ज़्वात में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ ह़ाज़िर होना या त़ाअ़त व तक़्वा के तमाम आ'माल इस तक़्दीर पर आयत तमाम मुसल्मानों के ह़क़ में होगी। **237 :** इस से तख़ल्लुफ़ या'नी जिहाद से रह जाना मुराद है।

صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ

ज़कात तहसील (वुसूल) करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उन के हक़ में दुआए ख़ैर करो[238] बेशक तुम्हारी दुआ

سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ

उन के दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने

التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

बन्दों की तौबा क़बूल करता और सदक़े ख़ुद अपने दस्ते मुबारक में लेता है और येह कि अल्लाह ही तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَ

मेह्रबान है[239] और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा अल्लाह और उस के रसूल और

الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

मुसल्मान और जल्द उस की त़रफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वोह तुम्हारे काम

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ ج وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ

तुम्हें जता देगा और कुछ[240] मौक़ूफ़ रखे गए हैं अल्लाह के हुक्म पर या उन पर अ़ज़ाब करे

وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

या उन की तौबा क़बूल करे[241] और अल्लाह इल्मो ह़िक्मत वाला है और वोह जिन्हों ने मस्जिद

مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا

बनाई[242] नुक़्सान पहुंचाने को[243] और कुफ़्र के सबब[244] और मुसल्मानों में तफ़्रिक़ा डालने को[245] और उस के इन्तिज़ार में

238 : आयत में जो सदक़ा वारिद हुवा है इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं **: एक** तो येह कि वोह सदक़ा ग़ैर वाजिबा था जो बतौ़र कफ़्फ़ारा के उन साहिबों ने दिया था जिन का ज़िक्र ऊपर की आयत में है। **दूसरा** क़ौल येह है कि इस सदक़े से मुराद वोह ज़कात है जो उन के ज़िम्मे वाजिब थी, वोह ताइब हुए और उन्हों ने ज़कात अदा करनी चाही तो अल्लाह तआ़ला ने उस के लेने का हुक्म दिया। इमाम अबू बक्र राज़ी जसास ने इस क़ौल को तरजीह दी है कि सदक़े से ज़कात मुराद है। (خازن واحکام القرآن) मदारिक में है कि सुन्नत येह है कि सदक़ा लेने वाला सदक़ा देने वाले के लिये दुआ़ करे और बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की ह़दीस है कि जब कोई नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास सदक़ा लाता आप उस के ह़क़ में दुआ़ करते। मेरे बाप ने सदक़ा ह़ाज़िर किया तो हुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی اٰلِ اَبِیْ اَوْفٰی" (या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अबी औफ़ा पर रह़मत फ़रमा)। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि फ़ातिह़ा में जो सदक़ा लेने वाले सदक़ा पा कर दुआ़ करते हैं येह क़ुरआन व ह़दीस के मुत़ाबिक़ है। **239 :** इस में तौबा करने वालों को बिशारत दी गई कि इन की तौबा और इन के सदक़ात मक़्बूल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि जिन लोगों ने अब तक तौबा नहीं की इस आयत में उन्हें तौबा और सदक़े की तरग़ीब दी गई। **240 :** मुतख़ल्लिफ़ीन में से **241 :** मुतख़ल्लिफ़ीन या'नी ग़ज़्वए तबूक से रह जाने वाले तीन क़िस्म के थे **: एक** मुनाफ़िक़ीन जो निफ़ाक़ के ख़ूगर और आ़दी थे। **दूसरे** वोह लोग जिन्हों ने क़ुसूर के ए'तिराफ़ और तौबा में जल्दी की जिन का ऊपर ज़िक्र हो चुका। **तीसरे** वोह जिन्हों ने तवक्क़ुफ़ किया और जल्दी तौबा न की, येही इस आयत से मुराद हैं। **242 शाने नुज़ूल :** येह आयत एक जमाअ़ते मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मस्जिदे क़ुबा को नुक़्सान पहुंचाने और उस की जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ करने के लिये उस

لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا

जो पहले से अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है[246] और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो

الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ

भलाई चाही और अल्लाह गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना[247]

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ

बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़ गारी पर रखी गई है[248] वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं[249] और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं

के क़रीब एक मस्जिद बनाई थी, इस में एक बड़ी चाल थी वोह येह कि अबू आ़मिर जो ज़मानए जाहिलिय्यत में नसरानी राहिब हो गया था सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाने पर हुज़ूर से कहने लगा : येह कौन सा दीन है जो आप लाए हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं मिल्लते ह़नीफ़िय्या दीने इब्राहीम लाया हूं। कहने लगा : मैं उसी दीन पर हूं। हुज़ूर ने फ़रमाया : नहीं। उस ने कहा कि आप ने इस में कुछ और मिला दिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि नहीं, मैं ख़ालिस साफ़ मिल्लत लाया हूं। अबू आ़मिर ने कहा : हम में से जो झूटा हो अल्लाह उस को मुसाफ़रत में तन्हा और बेकस कर के हलाक करे। हुज़ूर ने आमीन फ़रमाया। लोगों ने उस का नाम अबू आ़मिर फ़ासिक़ रख दिया। रोज़े उहुद अबू आ़मिर फ़ासिक़ ने हुज़ूर से कहा कि जहां कहीं कोई क़ौम आप से जंग करने वाली मिलेगी मैं उस के साथ हो कर आप से जंग करूंगा चुनान्चे जंगे हुनैन तक उस का येही मा'मूल रहा और वोह हुज़ूर के साथ मसरूफ़े जंग रहा। जब हवाज़ुन को शिकस्त हुई और वोह मायूस हो कर मुल्के शाम की त़रफ़ भागा तो उस ने मुनाफ़िक़ीन को ख़बर भेजी कि तुम से जो सामाने जंग हो सके क़ुव्वत व सिलाह़ सब जम्अ़ करो और मेरे लिये एक मस्जिद बनाओ मैं शाहे रूम के पास जाता हूं वहां से रूमी लश्कर ले कर आऊंगा और (सय्यिदे आ़लम) मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) और इन के अस्ह़ाब को निकालूंगा, येह ख़बर पा कर उन लोगों ने मस्जिदे ज़िरार बनाई थी और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया था येह मस्जिद हम ने आसानी के लिये बना दी है कि जो लोग बूढ़े ज़ईफ़ कमज़ोर हैं वोह इस में ब फ़राग़त नमाज़ पढ़ लिया करें आप उस में एक नमाज़ पढ़ दीजिये और बरकत की दुआ़ फ़रमा दीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अब तो मैं सफ़रे तबूक के लिये पा ब रकाब (चलने को तय्यार) हूं वापसी पर अल्लाह की मरज़ी होगी तो वहां नमाज़ पढ़ लूंगा। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस हो कर मदीने शरीफ़ के क़रीब एक मौज़अ़ (गाउं) में ठहरे तो मुनाफ़िक़ीन ने आप से दरख़्वास्त की, कि इन की मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इन के फ़ासिद इरादों का इज़्हार फ़रमाया गया, तब रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बा'ज़ अस्ह़ाब को हुक्म दिया कि उस मस्जिद को जा कर ढा दें और जला दें चुनान्चे ऐसा ही किया गया और अबू आ़मिर राहिब मुल्के शाम में ब ह़ालते सफ़र बे कसी व तन्हाई में हलाक हुवा। **243 :** मस्जिदे क़ुबा वालों के। **244 :** कि वहां ख़ुदा और रसूल के साथ कुफ़्र करें और निफ़ाक़ को क़ुव्वत दें। **245 :** जो मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ के लिये मुज्तमअ़ होते हैं। **246 :** या'नी अबू आ़मिर राहिब। **247 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मस्जिदे ज़िरार में नमाज़ पढ़ने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **मस्अला :** जो मस्जिद फ़ख़्रो रिया और नुमूदो नुमाइश या रिज़ाए इलाही के सिवा और किसी ग़रज़ के लिये या ग़ैरे त़य्यिब माल से बनाई गई हो वोह मस्जिदे ज़िरार के साथ लाह़िक़ है। (مدارک) **248 :** इस से मुराद मस्जिदे क़ुबा है जिस की बुन्याद रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रखी और जब तक हुज़ूर ने क़ुबा में क़ियाम फ़रमाया उस में नमाज़ पढ़ी। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हर हफ़्ते मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाते थे। दूसरी ह़दीस में है कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उ़मरह के बराबर है। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि इस से मस्जिदे मदीना मुराद है और इस में भी ह़दीसें वारिद हैं, इन दोनों बातों में कुछ तआ़रुज़ नहीं क्यूं कि आयत का मस्जिदे क़ुबा के ह़क़ में नाज़िल होना इस को मुस्तल्ज़िम नहीं है कि मस्जिदे मदीना में येह औसाफ़ न हों। **249 :** तमाम नजासतों से या गुनाहों से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले मस्जिदे क़ुबा के ह़क़ में नाज़िल हुई। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ गुरौहे अन्सार ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी सना फ़रमाई, तुम वुज़ू और इस्तिन्जे के वक़्त क्या अ़मल करते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हम बड़ा इस्तिन्जा तीन ढेलों से करते हैं, इस के बा'द फिर पानी से त़हारत करते हैं।

أَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ

तो क्या जिस ने अपनी बुन्याद रखी **अल्लाह** से डर और उस की रिज़ा पर[250] वोह भला या वोह जिस

اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ

ने अपनी नीव चुनी (बुन्याद रखी) एक गिराउ गढ़े के कनारे[251] तो वोह उसे ले कर जहन्नम की आग में ढै पड़ा[252] और **अल्लाह**

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ

ज़ालिमों को राह नहीं देता वोह ता'मीर जो चुनी हमेशा उन के दिलों में खटक्ती

قُلُوْبِهِمْ اِلَّاۤ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ

रहेगी[253] मगर येह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं[254] और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है बेशक **अल्लाह** ने

اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ

मुसल्मानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है[255]

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي

अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें[256] और मरें[257] उस के ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा

التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

तौरैत और इन्जील और क़ुरआन में[258] और **अल्लाह** से ज़ियादा क़ौल का पूरा कौन तो ख़ुशियां मनाओ

मस्अला : नजासत अगर जाए ख़ुरूज से मुतजाविज़ हो जाए तो पानी से इस्तिन्जा वाजिब है वरना मुस्तहब। **मस्अला :** ढेलों से इस्तिन्जा सुन्नत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस पर मुवाज़बत (हमेशगी) फ़रमाई और कभी तर्क भी किया। **250 :** जैसे कि मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे मदीना। **251 :** जैसे कि मस्जिदे ज़िरार वाले। **252 :** मुराद येह है कि जिस शख़्स ने अपने दीन की बिना (बुन्याद) तक़्वा और रिज़ाए इलाही की मज़बूत़ सत़ह पर रखी वोह बेहतर है न कि वोह जिस ने अपने दीन की बिना बातिल व निफ़ाक़ के गिराउ गढ़े पर रखी। **253 :** और उस के गिराए जाने का सदमा बाक़ी रहेगा। **254 :** ख़्वाह क़त्ल हो कर या मर कर या क़ब्र में या जहन्नम में। मा'ना येह हैं कि उन के दिलों का ग़मो ग़ुस्सा ता मर्ग बाक़ी रहेगा : بمیرتا برہی اے حسود کیں رنجیست کہ از مشقتِ اُو جز بمرگ نتواں رست (ऐ हासिद ! हसद की बीमारी से छुटकारा पाने के लिये मर जा क्यूं कि इस से नजात पाने के लिये तेरे पास मौत के सिवा कोई रास्ता नहीं) और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जब तक उन के दिल अपने क़ुसूर की नदामत और अफ़्सोस से पारह पारह न हों और वोह इख़्लास से ताइब न हों उस वक़्त तक वोह इसी रन्जो ग़म में रहेंगे। (مدارک) **255 :** राहे ख़ुदा में जानो माल ख़र्च कर के जन्नत पाने वाले ईमानदारों की एक तम्सील है जिस से कमाले लुत्फ़ो करम का इज़्हार होता है कि परवर्दगारे आलम ने उन्हें जन्नत अ़ता फ़रमाना उन के जानो माल का इवज़ क़रार दिया और अपने आप को ख़रीदार फ़रमाया येह कमाले इज़्ज़त अफ़्ज़ाई है कि वोह हमारा ख़रीदार बने और हम से ख़रीदे किस चीज़ को जो न हमारी बनाई हुई न हमारी पैदा की हुई, जान है तो उस की पैदा की हुई, माल है तो उस का अ़ता फ़रमाया हुवा। **शाने नुज़ूल :** जब अन्सार ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से शबे अक़्बा बैअ़त की तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, कि **या रसूलल्लाह !** अपने रब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त़ फ़रमा लीजिये जो आप चाहें। फ़रमाया : मैं अपने रब के लिये तो येह शर्त़ करता हूं कि तुम उस की इ़बादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और अपने लिये येह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जानो माल को बचाते और महफ़ूज़ रखते हो उस को मेरे लिये भी गवारा न करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हम ऐसा करें तो हमें क्या मिलेगा ? फ़रमाया : जन्नत। **256 :** ख़ुदा के दुश्मनों को **257 :** राहे ख़ुदा में **258 :** इस से साबित हुवा कि तमाम शरीअ़तों और मिल्लतों में जिहाद का हुक्म था।

بِبَيۡعِكُمُ الَّذِىۡ بَايَعۡتُمۡ بِهٖ‌ ؕ وَذٰ لِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۱۱۱﴾ اَلتَّآٮِٕبُوۡنَ

अपने सौदे की जो तुम ने उस से किया है और येही बड़ी काम्याबी है तौबा वाले[259]

الۡعٰبِدُوۡنَ الۡحٰمِدُوۡنَ السّآٮِٕحُوۡنَ الرّٰكِعُوۡنَ السّٰجِدُوۡنَ الۡاٰمِرُوۡنَ

इबादत वाले[260] सराहने वाले[261] रोज़े वाले रुकूअ़ वाले सज्दा वाले[262] भलाई के

بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَالنَّاهُوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَالۡحٰـفِظُوۡنَ لِحُدُوۡدِ اللّٰهِ‌ ؕ وَ

बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और **अल्लाह** की हृदें निगाह रखने वाले[263] और

بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِىِّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ يَّسۡتَغۡفِرُوۡا

खुशी सुनाओ मुसल्मानों को[264] नबी और ईमान वालों को लाइक़ नहीं कि मुश्रिकों की

لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ وَلَوۡ كَانُوۡۤا اُولِىۡ قُرۡبٰى مِنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُمۡ اَصۡحٰبُ

बख़्शिश चाहें अगर्चे वोह रिश्तेदार हों[265] जब कि उन्हें खुल चुका कि वोह

الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسۡتِغۡفَارُ اِبۡرٰهِيۡمَ لِاَبِيۡهِ اِلَّا عَنۡ مَّوۡعِدَةٍ

दोज़ख़ी हैं[266] और इब्राहीम का अपने बाप[267] की बख़्शिश चाहना वोह तो न था मगर एक वा'दे के सबब

وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ‌ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنۡهُ‌ ؕ اِنَّ اِبۡرٰهِيۡمَ

जो उस से कर चुका था[268] फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वोह **अल्लाह** का दुश्मन है उस से तिन्का तोड़ दिया (ला तअ़ल्लुक़ हो गया)[269] बेशक इब्राहीम ज़रूर

259 : तमाम गुनाहों से **260 :** **अल्लाह** के फ़रमां बरदार बन्दे जो इख़्लास के साथ उस की इबादत करते हैं और इबादत को अपने ऊपर लाज़िम जानते हैं **261 :** जो हर हाल में **अल्लाह** की हम्द करते हैं। **262 :** या'नी नमाज़ों के पाबन्द और इन को खूबी से अदा करने वाले **263 :** और उस के अहकाम बजा लाने वाले येह लोग जन्नती हैं **264 :** कि वोह **अल्लाह** का अह्द वफ़ा करेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। **265 शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं : (1) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने चचा अबू तालिब से फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिये इस्तिग़्फ़ार करूंगा जब तक कि मुझे मुमानअ़त न की जाए तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर मुमानअ़त फ़रमा दी। (2) सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने अपने रब से अपनी वालिदा की ज़ियारते क़ब्र की इजाज़त चाही उस ने मुझे इजाज़त दी फिर मैं ने उन के लिये इस्तिग़्फ़ार की इजाज़त चाही तो मुझे इजाज़त न दी और मुझ पर येह आयत नाज़िल हुई ''مَا كَانَ لِلنَّبِىِّ'' अक़ूलु (मैं कहता हूं) : येह वज्ह शाने नुज़ूल की सहीह नहीं है क्यूं कि येह हदीस हाकिम ने रिवायत की और इस को सहीह बताया और ज़हबी ने हाकिम पर ए'तिमाद कर के मीज़ान में इस की तस्हीह की लेकिन ''मुख़्तसरुल मुस्तदरक'' में ज़हबी ने इस हदीस की तज़्ईफ़ की और कहा कि अय्यूब बिन हानी को इब्ने मुईन ने ज़ईफ़ बताया है, इलावा बरीं येह हदीस बुख़ारी की हदीस के मुख़ालिफ़ भी है जिस में इस आयत के नुज़ूल का सबब आप का वालिदा के लिये इस्तिग़्फ़ार करना नहीं बताया गया बल्कि बुख़ारी की हदीस से येही साबित है कि अबू तालिब के लिये इस्तिग़्फ़ार करने के बाब में येह हदीस वारिद हुई, इस के इलावा और हदीसें जो इस मज़्मून की हैं जिन को तबरानी और इब्ने सा'द और इब्ने शाहीन वग़ैरा ने रिवायत किया है वोह सब ज़ईफ़ हैं, इब्ने सा'द ने तबक़ात में हदीस की तख़्रीज के बा'द इस को ग़लत बताया और सनदुल मुहद्दिसीन इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने अपने रिसाले अत्ता'ज़ीम वल मिन्नह में इस मज़्मून की तमाम अहादीस को मा'लूल बताया, लिहाज़ा येह वज्हे शाने नुज़ूल में सहीह नहीं और येह साबित है इस पर बहुत दलाइल क़ाइम हैं कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा मुवह्हिदा और दीने इब्राहीमी पर थीं। (3) बा'ज़ अस्हाब ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अपने आबा के लिये इस्तिग़्फ़ार करने की दरख़्वास्त की थी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई **266 :** शिर्क पर मरे **267 :** या'नी आज़र **268 :** इस से या तो वोह वा'दा मुराद है

لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ

बहुत आहें करने वाला[270] मुतहम्मिल है और **अल्लाह** की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत कर के गुमराह फ़रमाए[271]

حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ

जब तक उन्हें साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हें बचना चाहिये[272] बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है बेशक **अल्लाह**

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है और मारता है और **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

तुम्हारा कोई वाली और न मददगार बेशक **अल्लाह** की रहमतें मुतवज्जेह हुईं इन ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) और उन मुहाजिरीन

وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ

और अन्सार पर जिन्हों ने मुश्किल की घड़ी में इन का साथ दिया[273] बा'द इस के कि क़रीब था कि

قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾ لا

उन में कुछ लोगों के दिल फिर जाएं[274] फिर उन पर रहमत से मुतवज्जेह हुवा[275] बेशक वोह उन पर निहायत मेहरबान रहम वाला है

जो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने आज़र से किया था कि मैं अपने रब से तेरी मग़्फ़िरत की दुआ करूंगा या वोह वा'दा मुराद है जो आज़र ने हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से इस्लाम लाने का किया था। **शाने नुज़ूल :** हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई ''سَاَسْتَغْفِرُ لَکَ رَبِّیْ'' तो मैं ने सुना कि एक शख़्स अपने वालिदैन के लिये दुआए मग़्फ़िरत कर रहा है बा वुजूदे कि वोह दोनों मुश्रिक थे तो मैं ने कहा तू मुश्रिकों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करता है उस ने कहा क्या इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने आज़र के लिये दुआ न की थी वोह भी तो मुश्रिक था, येह वाक़िआ मैं ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ज़िक्र किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस्तिग़्फ़ार ब उम्मीदे इस्लाम था जिस का आज़र आप से वा'दा कर चुका था और आप आज़र से इस्तिग़्फ़ार का वा'दा कर चुके थे जब वोह उम्मीद मुन्क़तअ़ हो गई तो आप ने उस से अपना अ़लाक़ा क़त्अ़ (तअ़ल्लुक़ ख़त्म) कर दिया **269 :** और इस्तिग़्फ़ार करना तर्क फ़रमा दिया। **270 :** ''कसीरुद्दुआ मुतज़र्रेअ़'' (बहुत ज़ियादा दुआ और इज़्हारे इज्ज़ो ख़ुशूअ़ करने वाला) **271 :** या'नी उन पर गुमराही का हुक्म करे और उन्हें गुमराहों में दाख़िल फ़रमा दे **272 :** मा'ना येह हैं कि जो चीज़ मम्नूअ़ है और उस से इज्तिनाब वाजिब है इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस वक़्त तक अपने बन्दों की गिरिफ़्त नहीं फ़रमाता जब तक कि उस की मुमानअ़त का साफ़ बयान **अल्लाह** की तरफ़ से न आ जाए लिहाज़ा क़ब्ले मुमानअ़त उस फ़े'ल के करने में हरज नहीं। (مدارک وخازن) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस चीज़ की जानिब शरअ़ से मुमानअ़त न हो वोह जाइज़ है। **शाने नुज़ूल :** जब मोमिनीन को मुश्रिकीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करने से मन्अ़ फ़रमाया गया तो उन्हें अन्देशा हुवा कि हम पहले जो इस्तिग़्फ़ार कर चुके हैं कहीं उस पर गिरिफ़्त न हो, इस आयत से उन्हें तस्कीन दी गई और बताया गया कि मुमानअ़त का बयान होने के बा'द उस पर अ़मल करने से मुआख़ज़ा होता है। **273 :** या'नी ग़ज़्वए तबूक में जिस को ग़ज़्वए उ़सरत भी कहते हैं। इस ग़ज़्वे में उ़सरत (मुफ़्लिसी व तंगी) का येह हाल था कि दस दस आदमियों में सुवारी के लिये एक एक ऊंट था, नौबत ब नौबत (बारी बारी) उसी पर सुवार हो लेते थे और खाने की क़िल्लत का येह हाल था कि एक एक खजूर पर कई कई आदमी बसर करते थे, इस तरह कि हर एक ने थोड़ी थोड़ी चूस कर एक घूंट पानी पी लिया, पानी की भी निहायत क़िल्लत थी, गरमी शिद्दत की थी, प्यास का ग़लबा और पानी नापैद, इस हाल में सहाबा अपने सिद्क़ो यक़ीन और इमानो इख़्लास के साथ हुज़ूर की जां निसारी में साबित क़दम रहे। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह! अल्लाह** तआ़ला से दुआ फ़रमाइये। फ़रमाया : क्या तुम्हें येह ख़्वाहिश है? अ़र्ज़ किया : जी हां। तो हुज़ूर ने दस्ते मुबारक उठा कर दुआ फ़रमाई और अभी दस्ते मुबारक उठे ही हुए थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने अब्र भेजा, बारिश हुई, लश्कर सैराब हुवा, लश्कर वालों ने अपने बरतन भर लिये, इस के बा'द जब आगे चले तो ज़मीन ख़ुश्क थी, अब्र ने लश्कर के बाहर बारिश ही नहीं की, वोह ख़ास उसी लश्कर को सैराब करने के लिये भेजा गया था। **274 :** और वोह इस शिद्दत व सख़्ती में रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जुदा होना गवारा करें। **275 :** और वोह साबिर व साबित रहे और उन का

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ

और उन तीन पर जो मौक़ूफ़ रखे गए थे[276] यहां तक कि जब ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर उन पर

بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ

तंग हो गई[277] और वोह अपनी जान से तंग आए[278] और उन्हें यक़ीन हुवा कि अल्लाह से पनाह

اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

नहीं मगर उसी के पास फिर[279] उन की तौबा क़बूल की, कि ताइब रहें बेशक अल्लाह ही तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

मेहरबान है ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो[280] और सच्चों के साथ हो[281]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا

मदीने वालों[282] और उन के गिर्द दीहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से

عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

पीछे बैठ रहें[283] और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें[284] येह इस लिये कि उन्हें

لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ

जो प्यास या तक्लीफ़ या भूक अल्लाह की राह में पहुंचती है और जहां ऐसी जगह क़दम

इख़्लास महफ़ूज़ रहा और जो ख़तरा दिल में गुज़रा था उस पर नादिम हुए। **276 :** तौबा से, जिन का ज़िक्र आयत ''وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ'' में है और येह तीन साहिब का'ब बिन मालिक और हिलाल बिन उमय्या और मरारह बिन रबीअ़ हैं येह सब अन्सारी थे। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबूक से वापस हो कर इन से जिहाद में हाज़िर न होने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई और फ़रमाया : ठहरो ! जब तक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये कोई फ़ैसला फ़रमाए और मुसल्मानों को इन लोगों से मिलने जुलने कलाम करने से मुमानअ़त फ़रमा दी हत्ता कि इन के रिश्तेदारों और दोस्तों ने इन से कलाम तर्क कर दिया यहां तक कि ऐसा मा'लूम होता था कि इन को कोई पहचानता ही नहीं और इन की किसी से शनासाई (वाक़िफ़िय्यत) ही नहीं, इस हाल पर इन्हें पचास रोज़ गुज़रे। **277 :** और उन्हें कोई ऐसी जगह न मिल सकी जहां एक लम्हे के लिये उन्हें क़रार होता, हर वक़्त परेशानी और रन्जो ग़म बेचैनी व इज़्तिराब में मुब्तला थे। **278 :** शिद्दते रन्जो ग़म से, न कोई अनीस (दोस्त) है जिस से बात करें न कोई ग़म ख़्वार जिसे हाले दिल सुनाएं, वहशतो तन्हाई है और शबो रोज़ की गिर्या व ज़ारी। **279 :** अल्लाह तआ़ला ने उन पर रहम फ़रमाया और **280 :** मआ़सी तर्क करो **281 :** जो सादिक़ुल ईमान हैं, मुख़्लिस हैं, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इख़्लास के साथ तस्दीक़ करते हैं। सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि सादिक़ीन से हज़रते अबू बक्र व उमर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا मुराद हैं। इब्ने जरीर कहते हैं कि मुहाजिरीन। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह लोग जिन की निय्यतें साबित रहीं और क़ल्ब व आ'माल मुस्तक़ीम और वोह इख़्लास के साथ ग़ज़्वए तबूक में हाज़िर हुए। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि इज्माअ़ हुज्जत है क्यूं कि सादिक़ीन के साथ रहने का हुक्म फ़रमाया, इस से उन के क़ौल का क़बूल करना लाज़िम आता है। **282 :** यहां अहले मदीना से मदीनए तय्यिबा में सुकूनत रखने वाले मुराद हैं ख़्वाह वोह मुहाजिरीन हों या अन्सार। **283 :** और जिहाद में हाज़िर न हों **284 :** बल्कि उन्हें हुक्म था कि शिद्दते तक्लीफ़ में हुज़ूर का साथ न छोड़ें और सख़्ती के मौक़अ़ पर अपनी जानें आप पर फ़िदा करें।

مَوۡطِئًا يَّغِيۡظُ الۡكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوۡنَ مِنۡ عَدُوٍّ نَّيۡلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمۡ بِهٖ

रखते हैं[285] जिस से काफ़िरों को ग़ैज़ (गुस्सा) आए और जो कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं[286] इस सब के बदले उन के लिये

عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۙ﴿۱۲۰﴾ وَلَا يُنۡفِقُوۡنَ

नेक अ़मल लिखा जाता है[287] बेशक **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्र व इन्आ़म) ज़ाएअ़ नहीं करता और जो कुछ ख़र्च करते

نَفَقَةً صَغِيۡرَةً وَّلَا كَبِيۡرَةً وَّلَا يَقۡطَعُوۡنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمۡ

हैं छोटा[288] या बड़ा[289] और जो नाला तै करते हैं सब उन के लिये लिखा जाता है

لِيَجۡزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحۡسَنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۱﴾ وَمَا كَانَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ

ताकि **अल्लाह** उन के सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे[290] और मुसलमानों से येह तो हो नहीं सकता

لِيَنۡفِرُوۡا كَآفَّةً ؕ فَلَوۡلَا نَفَرَ مِنۡ كُلِّ فِرۡقَةٍ مِّنۡهُمۡ طَآئِفَةٌ

कि सब के सब निकलें[291] तो क्यूं न हुवा कि उन के हर गुरोह में से[292] एक जमाअ़त निकले

لِّيَتَفَقَّهُوۡا فِى الدِّيۡنِ وَلِيُنۡذِرُوۡا قَوۡمَهُمۡ اِذَا رَجَعُوۡۤا اِلَيۡهِمۡ لَعَلَّهُمۡ

कि दीन की समझ ह़ासिल करें और वापस आ कर अपनी क़ौम को डर सुनाएं[293] इस उम्मीद पर कि

285 : और कुफ़्फ़ार की ज़मीन को अपने घोड़ों के सुमों (पाउं के खुरों) से रौंदते हैं **286 :** क़ैद कर के या क़त्ल कर के या ज़ख़्मी कर के या हज़ीमत (शिकस्त) दे कर। **287 :** इस से साबित हुवा कि जो शख़्स इत़ाअ़ते इलाही का क़स्द करे उस का उठना, बैठना, चलना, ह़रकत करना, साकिन रहना, सब नेकियां हैं, **अल्लाह** के यहां लिखी जाती हैं। **288 :** या'नी क़लील मसलन एक खजूर। **289 :** जैसा कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने जैशे उ़सरत में ख़र्च किया। **290 :** इस आयत से जिहाद की फ़ज़ीलत और इस का ह़ुस्नुल आ'माल होना साबित हुवा **291 :** और एक दम अपने वत़न ख़ाली कर दें। **292 :** एक जमाअ़त वत़न में रहे और **293 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि क़बाइले अ़रब में से हर हर क़बीले से जमाअ़तें सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में ह़ाज़िर होतीं और वोह ह़ुज़ूर से दीन के मसाइल सीखते और तफ़क्क़ोह (दीन में समझ बूझ) ह़ासिल करते और अपने लिये अह़काम दरयाफ़्त करते और अपनी क़ौम के लिये ह़ुज़ूर उन्हें **अल्लाह** और रसूल की फ़रमां बरदारी का ह़ुक्म देते और नमाज़, ज़कात, वग़ैरा की ता'लीम के लिये उन्हें उन की क़ौम पर मामूर फ़रमाते। जब वोह लोग अपनी क़ौम में पहुंचते तो ए'लान कर देते कि जो इस्लाम लाए वोह हम में से है और लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाते और दीन की मुख़ालफ़त से डराते यहां तक कि लोग अपने वालिदैन को छोड़ देते और रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم उन्हें दीन के तमाम ज़रूरी उ़लूम ता'लीम फ़रमा देते। (خازن) येह रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم का मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है कि बिल्कुल बे पढ़े लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अह़काम का आ़लिम और क़ौम का हादी (राहनुमा) बना देते थे। इस आयत से चन्द मसाइल मा'लूम हुए : **मस्अला :** इल्मे दीन ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। जो चीज़ें बन्दे पर फ़र्ज़ व वाजिब हैं और जो इस के लिये मम्नूअ़ व ह़राम हैं उस का सीखना फ़र्ज़े ऐन है और इस से ज़ाइद इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया। ह़दीस शरीफ़ में है : इल्म सीखना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है। इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ने फ़रमाया कि इल्म सीखना नफ़्ल नमाज़ से अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** त़लबे इल्म के लिये सफ़र का ह़ुक्म ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स त़लबे इल्म के लिये राह चले **अल्लाह** उस के लिये जन्नत की राह आसान करता है। (ترمذی) **मस्अला :** फ़िक़्ह अफ़्ज़ल तरीन उ़लूम है। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये बेहतरी चाहता है उस को दीन में फ़क़ीह बनाता है, मैं तक़्सीम करने वाला हूं और **अल्लाह** तआ़ला देने वाला है। (بخاری و مسلم) ह़दीस में है : एक "फ़क़ीह" शैत़ान पर हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा सख़्त है। (ترمذی) "फ़िक़्ह" अह़कामे दीन के इल्म को कहते हैं। फ़िक़्हे मुस्त़लह़ इस का सह़ीह़ मिस्दाक़ है।

يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ

वोह बचें[294] ऐ ईमान वालो जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब

الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾

हैं[295] और चाहिये कि वोह तुम में सख़्ती पाएं और जान रखो कि अल्लाह परहेज़ गारों के साथ है[296]

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ

और जब कोई सूरत उतरती है तो उन में कोई कहने लगता है कि उस ने तुम में किस के ईमान को तरक़्क़ी

اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَ

दी[297] तो वोह जो ईमान वाले हैं उन के ईमान को उस ने तरक़्क़ी दी और वोह ख़ुशियां मना रहे हैं और

اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا

जिन के दिलों में आज़ार (बीमारी) है[298] उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई[299] और कुफ़्र ही

وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ

पर मर गए क्या उन्हें[300] नहीं सूझता कि हर साल एक या दो बार आज़्माए

مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ

जाते हैं[301] फिर न तो तौबा करते हैं न नसीहत मानते हैं और जब कोई सूरत

سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ

उतरती है उन में एक दूसरे को देखने लगता है[302] कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं[303] फिर पलट जाते हैं[304]

صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ

अल्लाह ने उन के दिल पलट दिये[305] कि वोह ना समझ लोग हैं[306] बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़

294 : अज़ाबे इलाही से अह्कामे दीन का इत्तिबाअ़ कर के। 295 : क़िताल तमाम काफ़िरों से वाजिब है क़रीब के हों या दूर के लेकिन क़रीब वाले मुक़द्दम हैं फिर जो उन से मुत्तसिल हों ऐसे ही दरजा ब दरजा। 296 : उन्हें ग़लबा देता है और उन की नुसरत फ़रमाता है। 297 : या'नी मुनाफ़िक़ीन आपस में ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा ऐसी बातें कहते हैं, उन के जवाब में इर्शाद होता है : 298 : शक व निफ़ाक़ का 299 : कि पहले जितना नाज़िल हुवा था उसी के इन्कार के वबाल में गिरिफ़्तार थे, अब जो और नाज़िल हुवा उस के इन्कार की ख़बासत में भी मुब्तला हुए। 300 : या'नी मुनाफ़िक़ीन को 301 : अमराज़ व शदाइद और क़ह्त़ वग़ैरा के साथ। 302 : और आंखों से निकल भागने के इशारे करता है और कहता है : 303 : अगर देखता हुवा तो बैठ गए वरना निकल गए। 304 : कुफ़्र की तरफ़ 305 : इस सबब से 306 : अपने नफ़्अ़ व ज़रर को नहीं सोचते।

رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ

लाए तुम में से वोह रसूल[307] जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले

بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۸﴾ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِىَ اللّٰهُ

मुसल्मानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान[308] फिर अगर वोह मुंह फेरें[309] तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफ़ी है

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۱۲۹﴾

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है[310]

ركوعاتها ۱۱ | ۱۰ سُوۡرَةُ يُوۡنُسَ مَكِّيَّةٌ ۵۱ | اٰياتها ۱۰۹

सूरए यूनुस मक्किय्या है इस में एक सो नव आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۱﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنۡ اَوۡحَيۡنَاۤ

येह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं क्या लोगों को इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि हम ने उन में से

اِلٰى رَجُلٍ مِّنۡهُمۡ اَنۡ اَنۡذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنَّ لَهُمۡ

एक मर्द को वह़्य भेजी कि लोगों को डर सुनाओ[2] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये

قَدَمَ صِدۡقٍ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ قَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۲﴾

उन के रब के पास सच का मक़ाम है काफ़िर बोले बेशक येह तो खुला जादूगर है[3]

307 : मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم अ़रबी क़ुरशी जिन के ह़सब व नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आ़ली नसब हैं और तुम उन के सिदक़ो अमानत, ज़ोहदो तक़्वा, त़हारतो तक़द्दुस और अख़्लाक़े ह़मीदा को भी ख़ूब जानते हो और एक क़िराअत में "اَنۡفَسِكُمۡ" ब फ़त्ह़ "فا" आया है, इस के मा'ना हैं कि तुम में सब से नफ़ीस तर और अशरफ़ो अफ़्ज़ल। इस आयते करीमा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है। तिरमिज़ी की ह़दीस से भी साबित है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने अपनी पैदाइश का बयान क़ियाम कर के फ़रमाया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मह़फ़िले मीलादे मुबारक की अस्ल क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। **308 :** इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم को अपने दो नामों से मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह कमाले तक्रीम है इस सरवरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم की **309 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप पर ईमान लाने से ए'राज़ करें **310 :** ह़ाकिम ने मुस्तदरक में उबय इब्ने का'ब से एक ह़दीस रिवायत की है कि "لَقَدۡ جَآءَكُمۡ" से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें क़ुरआने करीम में सब के बा'द नाज़िल हुईं। **1 :** सूरए यूनुस मक्किय्या है सिवाए तीन आयतों के "فَاِنۡ كُنۡتَ فِىۡ شَكٍّ" से। इस में ग्यारह रुकूअ़ और एक सो नव आयतें और एक हज़ार आठ सो बत्तीस कलिमे और नव हज़ार निनानवे ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمَا ने फ़रमाया जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم को रिसालत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और आप ने इस का इज़्हार किया तो अ़रब मुन्किर हो गए और उन में से बा'ज़ों ने येह कहा कि **अल्लाह** इस से बरतर है कि किसी बशर को रसूल बनाए। इस पर येह आयात नाज़िल हुईं। **3 :** कुफ़्फ़ार ने पहले तो बशर का रसूल होना क़ाबिले तअ़ज्जुब व इन्कार क़रार दिया और फिर जब हुज़ूर के मो'जिज़ात

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ[6] दिन में बनाए फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है[4] कोई सिफ़ारिशी नहीं मगर उस की इजाज़त

اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ

के बा'द[5] येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब[6] तो उस की बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते उसी की त़रफ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

तुम सब को फिरना है[7] **अल्लाह** का सच्चा वा'दा बेशक वोह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ

कि उन को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला दे[8] और काफ़िरों

كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ

के लिये पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के कुफ़्र का वोही

الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا

है जिस ने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद चमकता और इस के लिये मन्ज़िलें ठहराईं[9] कि तुम

عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ

बरसों की गिनती और[10] हि़साब जानो **अल्लाह** ने इसे न बनाया मगर ह़क़[11] निशानियां

देखे और यक़ीन हुवा कि येह बशर के मक़्दिरत (इन्सान की त़ाक़त) से बालातर हैं तो आप को साहि़र (जादूगर) बताया, उन का येह दा'वा तो किज़्ब व बाति़ल है मगर इस में भी हु़ज़ूर के कमाल और अपने इ़ज्ज़ का ए'तिराफ़ पाया जाता है। **4 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ के उमूर का ह़स्बे इक़्तिज़ाए हि़क्मत सर अन्जाम फ़रमाता है। **5 :** इस में बुत परस्तों के इस क़ौल का रद है कि बुत उन की शफ़ाअ़त करेंगे, उन्हें बताया गया कि "शफ़ाअ़त" माज़ूनीन (इजाज़त याफ़्ता) के सिवा कोई नहीं करेगा और माज़ून सिर्फ़ उस के मक़्बूल बन्दे होंगे। **6 :** जो आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ और तमाम उमूर का मुदब्बिर है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं फ़क़त़ वोही मुस्तहि़क़े इ़बादत है। **7 :** रोज़े क़ियामत और येही है **8 :** इस आयत में ह़श्रो नश्र व मआ़द का बयान और मुन्किरीन का रद है और इस पर निहायत लत़ीफ़ पैराए में दलील क़ाइम फ़रमाई गई है कि वोह पहली बार बनाता है और आ'ज़ाए मुरक्कबा को पैदा करता है और तरकीब देता है तो मौत के साथ मुतफ़र्रिक़ व मुन्तशिर होने के बा'द उन को दोबारा फिर तरकीब देना और बने हुए इन्सान को फ़ना के बा'द फिर दोबारा बना देना और वोही जान जो उस के बदन से मुतअ़ल्लिक़ थी उस को उस बदन की दुरुस्ती के बा'द फिर उसी बदन से मुतअ़ल्लिक़ कर देना उस की क़ुदरत से क्या बईद है और इस दोबारा पैदा करने का मक़्सूद जज़ाए आ'माल या'नी मुत़ीअ़ को सवाब और आ़सी (ना फ़रमान) को अ़ज़ाब देना है। **9 :** अठ्ठाईस मन्ज़िलें जो बारह बुर्जों पर मुन्क़सिम हैं हर बुर्ज के लिये $2\frac{1}{3}$ मन्ज़िलें हैं, चांद हर शब एक मन्ज़िल में रहता है और महीना तीस दिन का हो तो दो शब, वरना एक शब छुपता है। **10 :** महीनों, दिनों, साअ़तों का **11 :** कि इस से उस की क़ुदरत और उस की वह़दानिय्यत के दलाइल ज़ाहिर हों।

الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ۝۵ اِنَّ فِى اخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ

मुफ़स्सल बयान फ़रमाता है इल्म वालों के लिये[12] बेशक रात और दिन का बदलता आना और जो कुछ

اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَّقُوۡنَ ۝۶ اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا

अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन में पैदा किया उन में निशानियां हैं डर वालों के लिये बेशक वोह जो

يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوۡا بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَاطۡمَاَنُّوۡا بِهَا وَالَّذِيۡنَ هُمۡ

हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते[13] और दुन्या की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इस पर मुत्मइन हो गए[14] और वोह जो

عَنۡ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوۡنَ ۝۷ اُولٰٓئِكَ مَاۡوٰٮهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ۝۸

हमारी आयतों से ग़फ़्लत करते हैं[15] उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उन की कमाई का

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهۡدِيۡهِمۡ رَبُّهُمۡ بِاِيۡمَانِهِمۡ ۚ

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन का रब उन के ईमान के सबब उन्हें राह देगा[16]

تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ فِىۡ جَنّٰتِ النَّعِيۡمِ ۝۹ دَعۡوٰٮهُمۡ فِيۡهَا

उन के नीचे नहरें बहती होंगी ने'मत के बाग़ों में उन की दुआ उस में येह होगी कि

سُبۡحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمۡ فِيۡهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعۡوٰٮهُمۡ اَنِ الۡحَمۡدُ

अल्लाह तुझे पाकी है[17] और उन के मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है[18] और उन की दुआ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियों सराहा (ख़ूबियों वाला)

لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝۱۰ ع وَلَوۡ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسۡتِعۡجَالَهُمۡ

अल्लाह जो रब है सारे जहान का[19] और अगर **अल्लाह** लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वोह भलाई की

ع ۱

12 : कि इन में ग़ौर कर के नफ़्अ़ उठाएं। 13 : रोज़े क़ियामत और सवाब व अ़ज़ाब के क़ाइल नहीं। 14 : और इस फ़ानी (दुन्या) को जाविदानी (हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत) पर तरजीह़ दी और उ़म्र इस की त़लब में गुज़ारी। 15 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि यहां आयात से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم की ज़ाते पाक और क़ुरआन शरीफ़ मुराद है और ग़फ़्लत करने से मुराद इन से ए'राज़ करना है। 16 : जन्नतों की त़रफ़। क़तादा का क़ौल है कि मोमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस का अ़मल ख़ूब सूरत शक्ल में उस के सामने आएगा। येह शख़्स कहेगा : तू कौन है? वोह कहेगा : मैं तेरा अ़मल हूं और उस के लिये नूर होगा और जन्नत तक पहुंचाएगा और काफ़िर का मुआ़मला बर अ़क्स होगा कि उस का अ़मल बुरी शक्ल में नुमूदार हो कर उसे जहन्नम पहुंचाएगा। 17 : या'नी अहले जन्नत **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़, तह़मीद, तक़्दीस में मश्ग़ूल रहेंगे और उस के ज़िक्र से उन्हें फ़रह़त व सुरूर और इन्तिहा दरजे की लज़्ज़त ह़ासिल होगी, سُبۡحٰنَ اللّٰہ। 18 : या'नी अहले जन्नत आपस में एक दूसरे की तह़िय्यत व तक्रीम (ता'ज़ीम) सलाम से करेंगे या मलाएका उन्हें बत़ौरे तह़िय्यत सलाम अ़र्ज़ करेंगे या मलाएका रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के पास सलाम लाएंगे। 19 : उन के कलाम की इब्तिदा **अल्लाह** की ता'ज़ीम व तन्ज़ीह (पाकी) से होगी और कलाम का इख़्तिताम उस की ह़म्दो सना पर होगा।

بِالۡخَيۡرِ لَقُضِيَ اِلَيۡهِمۡ اَجَلُهُمۡ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيۡنَ لَا يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا

जल्दी करते हैं तो उन का वा'दा पूरा हो चुका होता[20] तो हम छोड़ते उन्हें जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते

فِیۡ طُغۡيَانِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ﴿١١﴾ وَ اِذَا مَسَّ الۡاِنۡسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنۡۢبِهٖۤ اَوۡ

कि अपनी सरकशी में भटका करें[21] और जब आदमी को[22] तक्लीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लैटे और

قَاعِدًا اَوۡ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنۡ لَّمۡ يَدۡعُنَاۤ اِلٰی

बैठे और खड़े[23] फिर जब हम उस की तक्लीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है[24] गोया कभी किसी तक्लीफ़ के

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلۡمُسۡرِفِيۡنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدۡ

पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था यूंही भले कर दिखाए हैं ह़द से बढ़ने वालों को[25] उन के काम[26] और बेशक

اَهۡلَكۡنَا الۡقُرُوۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا ۙ وَ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ

हम ने तुम से पहली संगतें[27] हलाक फ़रमा दीं जब वोह ह़द से बढ़े[28] और उन के रसूल उन के पास

بِالۡبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوۡا لِيُؤۡمِنُوۡا ؕ كَذٰلِكَ نَجۡزِی الۡقَوۡمَ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿١٣﴾

रोशन दलीलें ले कर आए[29] और वोह ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते हम यूंही बदला देते हैं मुजरिमों को

ثُمَّ جَعَلۡنٰكُمۡ خَلٰٓئِفَ فِی الۡاَرۡضِ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ لِنَنۡظُرَ كَيۡفَ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٤﴾

फिर हम ने उन के बा'द तुम्हें ज़मीन में जा नशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो[30]

20 : या'नी अगर **अल्लाह** तआला लोगों की बद दुआएं जैसे कि वोह ग़ज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने अह्ल व औलाद व माल के लिये करते हैं और कहते हैं हम हलाक हो जाएं, ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बरबाद करे और ऐसे कलिमे ही अपनी औलाद व अक़ारिब के लिये कह गुज़रते हैं जिसे हिन्दी में कोसना कहते हैं अगर वोह दुआ ऐसी जल्दी क़बूल कर ली जाती जैसी जल्दी वोह दुआए ख़ैर के क़बूल होने में चाहते हैं तो उन लोगों का ख़ातिमा हो चुका होता और वोह कब के हलाक हो गए होते लेकिन **अल्लाह** तबारक व तआला अपने करम से दुआए ख़ैर क़बूल फ़रमाने में जल्दी करता है, दुआए बद के क़बूल में नहीं, येह उस की रह़मत है। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था : या रब ! येह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़्दीक ह़क़ है तो हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थर बरसा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि अगर **अल्लाह** तआला काफ़िरों के लिये अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता जैसा कि उन के लिये माल व औलाद वग़ैरा दुन्या की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई तो वोह सब हलाक हो चुके होते। **21 :** और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उन के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाते। **22 :** यहां आदमी से काफ़िर मुराद है। **23 :** हर ह़ाल में और जब तक उस की तक्लीफ़ ज़ाइल न हो दुआ में मश्ग़ूल रहता है। **24 :** अपने पहले त़रीक़े पर और वोही कुफ़्र की राह इख़्तियार करता है और तक्लीफ़ के वक़्त को भूल जाता है। **25 :** या'नी काफ़िरों को **26 :** मक़्सद येह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बे सब्रा है और राह़त के वक़्त निहायत नाशुक्रा, जब तक्लीफ़ पहुंचती है तो खड़े, लैटे, बैठे हर ह़ाल में दुआ करता है, जब **अल्लाह** तक्लीफ़ दूर कर दे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी ह़ालते साबिक़ा की त़रफ़ लौट जाता है, येह ह़ाल ग़ाफ़िल का है, मोमिने आ़क़िल का ह़ाल इस के ख़िलाफ़ है, वोह मुसीबत व बला पर सब्र करता है, राह़तो आसाइश में शुक्र करता है, तक्लीफ़ व राह़त के जुम्ला अह़वाल में **अल्लाह** तआला के हुज़ूर तज़र्रोअ़ (गिर्या) व ज़ारी और दुआ करता है और एक मक़ाम इस से भी आ'ला है जो मोमिनों में भी मख़्सूस बन्दों को ह़ासिल है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है उस पर सब्र करते हैं, क़ज़ाए इलाही पर दिल से राज़ी रहते हैं और जमीअ़ अह़वाल पर शुक्र करते हैं। **27 :** या'नी उम्मतें **28 :** और कुफ़्र में मुब्तला हुए। **29 :** जो उन के सिद्क़ की बहुत वाज़ेह़ दलीलें थीं लेकिन उन्हों ने न माना और अम्बिया की तस्दीक़ न की। **30 :** ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे अ़मल के लाइक़ मुआ़मला

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

और जब उन पर हमारी रोशन आयतें[31] पढ़ी जाती हैं वोह कहने लगते हैं जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं[32] कि

ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ

इस के सिवा और कुरआन ले आइये[33] या इसी को बदल दीजिये[34] तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी तरफ़

تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ

से बदल दूं मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मेरी तरफ़ वह्य होती है[35] मैं अगर अपने रब की ना फ़रमानी करूं[36]

رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ

तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[37] तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसे तुम पर न पढ़ता न वोह

اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

तुम को इस से ख़बरदार करता[38] तो मैं इस से पहले तुम में अपनी एक उ़म्र गुज़ार चुका हूं[39] तो क्या तुम्हें अ़क्ल नहीं[40]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[41] या उस की आयतें झुटलाए बेशक

يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا

मुजरिमों का भला न होगा और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़[42] को पूजते हैं जो उन का न कुछ नुक़्सान करे और न

फ़रमाएं **31 :** जिन में हमारी तौहीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्तों की सज़ा का बयान है। **32 :** और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। **33 :** जिस में बुतों की बुराई न हो। **34 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप पर ईमान ले आएं तो आप इस कुरआन के सिवा दूसरा कुरआन लाइये ! जिस में लात व उ़ज़्ज़ा व मनात वग़ैरा बुतों की बुराई और इन की इबादत छोड़ने का हुक्म न हो और अगर अल्लाह ऐसा कुरआन नाज़िल न करे तो आप अपनी तरफ़ से बना लीजिये या इसी कुरआन को बदल कर हमारी मरज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम ईमान ले आएंगे। उन का येह कलाम या तो ब तरीक़े तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा था या उन्हों ने तजरिबा व इम्तिहान के लिये ऐसा कहा था कि अगर येह दूसरा कुरआन बना लाएं या इस को बदल दें तो साबित हो जाएगा कि कुरआन कलामे रब्बानी नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि इस का येह जवाब दें जो आयत में मज़्कूर होता है **: 35 :** मैं इस में कोई तग़यीर व तब्दील कमी बेशी नहीं कर सकता, येह मेरा कलाम नहीं कलामे इलाही है। **36 :** या उस की किताब के अह़काम को बदलूं **37 :** और दूसरा कुरआन बनाना इन्सान की मक़्दिरत (ताक़त) ही से बाहर है और ख़ल्क़ का इस से आ़जिज़ होना ख़ूब ज़ाहिर हो चुका। **38 :** या'नी इस की तिलावत महज़ अल्लाह की मरज़ी से है। **39 :** और चालीस साल तुम में रहा हूं, इस ज़माने में मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैं ने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया तुम ने मेरे अह़वाल का ख़ूब मुशाहदा किया है, मैं ने किसी से एक हर्फ़ नहीं पढ़ा, किसी किताब का मुतालआ़ न किया, इस के बा'द येह किताबे अ़ज़ीम लाया जिस के हुज़ूर हर एक कलामे फ़सीह पस्त और बे हक़ीक़त हो गया, इस किताब में नफ़ीस उ़लूम हैं, उसूल व फ़ुरूअ़ का बयान है, अह़काम व आदाब हैं, मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम है, ग़ैबी ख़बरें हैं, इस की फ़साहतो बलाग़त ने मुल्क भर के फ़ुसहा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया है, हर साहिबे अ़क़्ले सलीम के लिये येह बात अज़्हर मिनश्शम्स (सूरज से ज़ियादा रोशन) हो गई है कि येह बिग़ैर वह्ये इलाही के मुम्किन ही नहीं। **40 :** कि इतना समझ सको कि येह कुरआन अल्लाह की तरफ़ से है मख़्लूक़ की कुदरत में नहीं कि इस की मिस्ल बना सके **41 :** उस के लिये शरीक बताए **42 :** बुत।

يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰۤؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ

कुछ भला और कहते हैं कि येह अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं[43] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वोह बात जताते हो

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

जो उस के इल्म में न आस्मानों में है न ज़मीन में[44] उसे पाकी और बरतरी है उन के

يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّاۤ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا

शिर्क से और लोग एक ही उम्मत थे[45] फिर मुख़्तलिफ़ हुए और अगर तेरे

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾

रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती[46] तो यहीं उन के इख़्तिलाफ़ों का उन पर फ़ैसला हो गया होता[47]

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ

और कहते हैं उन पर उन के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी[48] तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह के लिये है

43 : या'नी दुन्यवी उमूर में क्यूं कि आख़िरत और मरने के बा'द उठने का तो वोह ए'तिक़ाद ही नहीं रखते । 44 : या'नी उस का वुजूद ही नहीं क्यूं कि जो चीज़ मौजूद है वोह ज़रूर इल्मे इलाही में है । 45 : एक दीने इस्लाम पर जैसा कि ज़मानए हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام में क़ाबील के हाबील को क़त्ल करने के वक़्त तक हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की ज़ुर्रिय्यत एक ही दीन पर थे इस के बा'द उन में इख़्तिलाफ़ हुवा, और एक क़ौल येह है कि ज़मानए नूह عَلَيْهِ السَّلَام तक एक दीन पर रहे फिर इख़्तिलाफ़ हुवा तो नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाए गए । एक क़ौल येह है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कश्ती से उतरने के वक़्त सब लोग एक दीने इस्लाम पर थे । एक क़ौल येह है कि अ़हदे हज़रते इब्राहीम से सब लोग एक दीन पर थे यहां तक कि अ़म्र बिन लुहय्य ने दीन को मुतग़य्यर किया । इस तक़्दीर पर "اَلنَّاسُ" से मुराद ख़ास अ़रब होंगे । एक क़ौल येह है कि लोग एक दीन पर थे या'नी कुफ़्र पर फिर अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया को भेजा तो बा'ज़ उन में से ईमान लाए और बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि मा'ना येह हैं कि लोग अव्वले ख़िल्क़त में फ़ित़्रते सलीमा पर थे फिर इन में इख़्तिलाफ़ात हुए । ह़दीस शरीफ़ में है हर बच्चा फ़ित़रत पर पैदा होता है फिर उस के मां बाप उस को यहूदी बनाते हैं या नसरानी बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं और ह़दीस में फ़ित़रत से फ़ित़्रते इस्लाम मुराद है । 46 : और हर उम्मत के लिये एक मीआ़द मुअ़य्यन न कर दी गई होती या जज़ाए आ'माल क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमाई गई होती 47 : नुज़ूले अ़ज़ाब से । 48 : अहले बात़िल का त़रीक़ा है कि जब उन के ख़िलाफ़ बुरहाने क़वी क़ाइम होती है और वोह जवाब से आ़जिज़ हो जाते हैं तो उस बुरहान का ज़िक्र इस त़रह छोड़ देते हैं जैसे कि वोह पेश ही नहीं हुई और येह कहा करते हैं कि दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस मुग़ालते में पड़ जाएं कि इन के मुक़ाबिल अब तक कोई दलील ही नहीं क़ाइम की गई है, इस त़रह कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर के मो'जिज़ात और बिल ख़ुसूस क़ुरआने करीम जो मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है इस की त़रफ़ से आंखें बन्द कर के येह कहना शुरूअ़ किया कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी गोया कि मो'जिज़ात उन्हों ने देखे ही नहीं और क़ुरआने पाक को वोह निशानी शुमार ही नहीं करते । अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अल्लाह के लिये है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं । तक़रीर जवाब येह है कि दलालते क़ाहिरा (ज़बर दस्त दलील) इस पर क़ाइम है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ुरआने पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है क्यूं कि हुज़ूर उन में पैदा हुए, उन के दरमियान हुज़ूर बढ़े, तमाम ज़माने हुज़ूर के उन की आंखों के सामने गुज़रे, वोह ख़ूब जानते हैं कि आप ने न किसी किताब का मुत़ालआ़ किया, न किसी उस्ताद की शागिर्दी की, यकबारगी क़ुरआने करीम आप पर ज़ाहिर हुवा और ऐसी बे मिसाल आ'ला तरीन किताब का ऐसी शान के साथ नुज़ूल बिग़ैर वह्य के मुम्किन ही नहीं, येह क़ुरआने करीम के मो'जिज़ए क़ाहिरा होने की बुरहान है और जब ऐसी क़वी बुरहान क़ाइम है तो इस्बाते नुबुव्वत के लिये किसी दूसरी निशानी का त़लब करना क़त्अ़न ग़ैर ज़रूरी है, ऐसी ह़ालत में इस निशानी का नाज़िल करना न करना अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत पर है चाहे करे चाहे न करे तो येह अम्र ग़ैब हुवा और इस के लिये इन्तिज़ार लाज़िम आया कि अल्लाह क्या करता है । लेकिन वोह येह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो कुफ़्फ़ार ने त़लब की है नाज़िल फ़रमाए या न फ़रमाए नुबुव्वत साबित हो चुकी और रिसालत का सुबूते क़ाहिरा मो'जिज़ात से कमाल को पहुंच चुका ।

فَانۡتَظِرُوۡۤا ۚ اِنِّىۡ مَعَكُمۡ مِّنَ الۡمُنۡتَظِرِيۡنَ ۝٢٠ وَاِذَاۤ اَذَقۡنَا النَّاسَ

अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं और जब हम आदमियों को रहमत का

رَحۡمَةً مِّنۡۢ بَعۡدِ ضَرَّآءَ مَسَّتۡهُمۡ اِذَا لَهُمۡ مَّكۡرٌ فِىۡۤ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ

मज़ा देते हैं किसी तक्लीफ़ के बा'द जो उन्हें पहुंची थी जभी वोह हमारी आयतों के साथ दाउं चलते हैं[49] तुम फ़रमा दो अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर

اَسۡرَعُ مَكۡرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكۡتُبُوۡنَ مَا تَمۡكُرُوۡنَ ۝٢١ هُوَ الَّذِىۡ

सब से जल्द हो जाती है[50] बेशक हमारे फ़िरिश्ते तुम्हारे मक्र लिख रहे हैं[51] वोही है कि

يُسَيِّرُكُمۡ فِى الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا كُنۡتُمۡ فِى الۡفُلۡكِ ۚ وَجَرَيۡنَ بِهِمۡ

तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है[52] यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो और वोह[53] अच्छी हवा

بِرِيۡحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوۡا بِهَا جَآءَتۡهَا رِيۡحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الۡمَوۡجُ

से उन्हें ले कर चलें और इस पर ख़ुश हुए[54] उन पर आंधी का झोंका आया और हर त़रफ़ लहरों

مِنۡ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ اُحِيۡطَ بِهِمۡ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ

ने उन्हें आ लिया और समझ लिये कि हम घिर गए उस वक़्त अल्लाह को पुकारते हैं निरे (ख़ालिस) उस के

الدِّيۡنَ ۚ لَئِنۡ اَنۡجَيۡتَنَا مِنۡ هٰذِهٖ لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيۡنَ ۝٢٢ فَلَمَّاۤ

बन्दे हो कर कि अगर तू इस से हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे[55] फिर अल्लाह जब

اَنۡجٰهُمۡ اِذَا هُمۡ يَبۡغُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا

उन्हें बचा लेता है जभी वोह ज़मीन में नाहक़ ज़ियादती करने लगते हैं[56] ऐ लोगो

بَغۡيُكُمۡ عَلٰۤى اَنۡفُسِكُمۡ ۙ مَّتَاعَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۫ ثُمَّ اِلَيۡنَا مَرۡجِعُكُمۡ

तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारी ही जानों का वबाल है दुन्या के जीते जी बरत लो (फ़ाएदा उठा लो) फिर तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना है

49 : अहले मक्का पर अल्लाह तआला ने क़ह्त़ मुसल्लत़ किया जिस की मुसीबत में वोह सात बरस गिरिफ़्तार रहे यहां तक कि क़रीब हलाकत के पहुंचे फिर उस ने रह्म फ़रमाया, बारिश हुई, ज़मीनें सर सब्ज़ हुईं तो अगर्चे इस तक्लीफ़ व राह़त दोनों में क़ुदरत की निशानियां थीं और तक्लीफ़ के बा'द राह़त बड़ी अ़ज़ीम ने'मत थी, इस पर शुक्र लाज़िम था मगर बजाए इस के वोह पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) न हुए और फ़साद व कुफ़्र की त़रफ़ पलटे 50 : और उस का अ़ज़ाब देर नहीं करता 51 : और तुम्हारी ख़ुफ़्या तदबीरें कातिबे आ'माल फ़िरिश्तों पर भी मख़्फ़ी नहीं हैं तो अल्लाह अ़लीम व ख़बीर से कैसे छुप सकती हैं। 52 : और तुम्हें क़त्ए मसाफ़त (रास्ता तै करने) की क़ुदरत देता है ख़ुश्की में तुम पियादा और सुवार मन्ज़िलें तै करते हो और दरियाओं में कश्तियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो वोह तुम्हें ख़ुश्की और तरी दोनों में अस्बाबे सैर अ़त़ा फ़रमाता है। 53 : या'नी कश्तियां 54 : कि हवा मुवाफ़िक़ है अचानक 55 : तेरी ने'मतों के, तुझ पर ईमान ला कर और ख़ास तेरी इबादत कर के। 56 : और वा'दे के ख़िलाफ़ कर के कुफ़्र व मा'सियत में मुब्तला होते हैं।

فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ

उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतक (करतूत) थे[57] दुन्या की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वोह पानी

اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ

कि हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें घनी (ज़ियादा) हो कर निकलें जो कुछ आदमी और

وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ

चौपाए खाते हैं[58] यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया[59] और ख़ूब आरास्ता हो गई और उस के

اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا

मालिक समझे कि येह हमारे बस में आ गई[60] हमारा हुक्म उस पर आया रात में या दिन में[61] तो हम ने उसे कर दिया

حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

काटी हुई गोया कल थी ही नहीं[62] हम यूंही आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं ग़ौर करने

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ

वालों के लिये[63] और **अल्लाह** सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है[64] और जिसे चाहे

يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ

सीधी राह चलाता है[65] भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद[66]

57 : और उन की तुम्हें जज़ा देंगे। **58 :** ग़ल्ले और फल और सब्ज़ा। **59 :** ख़ूब फूली फली सर सब्ज़ो शादाब हुई **60 :** कि खेतियां तय्यार हो गईं फल रसीदा (तय्यार) हो गए ऐसे वक़्त **61 :** या'नी अचानक हमारा अ़ज़ाब आया ख़्वाह बिजली गिरने की शक्ल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में। **62 :** येह उन लोगों के ह़ाल की एक तम्सील है जो दुन्या के शेफ़्ता (आ़शिक़) हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवा नहीं। इस में बहुत दिल पज़ीर त़रीक़े पर ख़ात़िर गुज़ीं किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है इस में उ़म्र खो कर जब आदमी इस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उस को ह़ुसूले मुराद का इत्मीनान हो और वोह काम्याबी के नशे में मस्त हो अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से मह़रूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुन्या का त़लब गार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अ़ज़ाबे इलाही आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं ग़ारत हो जाता है। **63 :** ताकि वोह नफ़्अ़ ह़ासिल करें और ज़ुल्माते शुकूको अवहाम से नजात पाएं और दुन्याए ना पाएदार की बे सबाती (ना पाएदारी) से बा ख़बर हों। **64 :** दुन्या की बे सबाती बयान फ़रमाने के बा'द दारे बाक़ी (हमेशा रहने वाले घर जन्नत) की त़रफ़ दा'वत दी। क़तादा ने कहा कि दारुस्सलाम जन्नत है, येह **अल्लाह** का कमाले रह़मतो करम है कि अपने बन्दों को जन्नत की दा'वत दी। **65 :** सीधी राह दीने इस्लाम है। बुख़ारी की ह़दीस में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर हुए, आप ख़्वाब में थे, उन में से बा'ज़ ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और बा'ज़ों ने कहा कि आंखें ख़्वाब में हैं दिल बेदार है। बा'ज़ कहने लगे कि इन की कोई मिसाल बयान करो तो उन्हों ने कहा : जिस त़रह़ किसी शख़्स ने एक मकान बनाया और उस में त़रह़ त़रह़ की ने'मतें मुहय्या कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाए, जिस ने उस बुलाने वाले की इत़ाअ़त की उस मकान में दाख़िल हुवा और उन ने'मतों को खाया पिया और जिस ने बुलाने वाले की इत़ाअ़त न की वोह न मकान में दाख़िल हो सका न कुछ खा सका, फिर वोह कहने लगे कि इस मिसाल की तत़्बीक़ करो कि समझ में आए। तत़्बीक़ येह है कि मकान जन्नत है दाई मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं जिस ने इन की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की जिस ने इन की ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। **66 :** भलाई वालों से **अल्लाह** के फ़रमां बरदार बन्दे मोमिनीन मुराद हैं और येह जो

وَ لَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ

और उन के मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़्वारी[67] वोही जन्नत वाले हैं वोह

فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ الَّذِیْنَ كَسَبُوا السَّیِّاٰتِ جَزَآءُ سَیِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا ۙ وَ

उस में हमेशा रहेंगे और जिन्हों ने बुराइयां कमाईं[68] तो बुराई का बदला उसी जैसा[69] और

تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِیَتْ وُجُوْهُهُمْ

उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा गोया उन के चेहरों पर अंधेरी

قِطَعًا مِّنَ الَّیْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾

रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं[70] वोही दोज़ख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे

وَ یَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ

और जिस दिन हम उन सब को उठाएंगे[71] फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे अपनी जगह रहो तुम

وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَیَّلْنَا بَیْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِیَّانَا

और तुम्हारे शरीक[72] तो हम उन्हें मुसल्मानों से जुदा कर देंगे और उन के शरीक उन से कहेंगे तुम हमें

تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنَنَا وَ بَیْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ

कब पूजते थे[73] तो अल्लाह गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें

عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِیْنَ ﴿۲۹﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّاۤ اَسْلَفَتْ وَ رُدُّوْۤا

तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी यहां हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा[74] और अल्लाह की तरफ़

फ़रमाया कि उन के लिये भलाई है। इस भलाई से जन्नत मुराद है और ज़ियादत इस पर दीदारे इलाही है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द अल्लाह तआला फ़रमाएगा क्या तुम चाहते हो कि तुम पर और ज़ियादा इनायत करूं वोह अ़र्ज़ करेंगे या रब ! क्या तू ने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये, क्या तू ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया, क्या तू ने हमें दोज़ख़ से नजात नहीं दी। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो दीदारे इलाही उन्हें हर ने'मत से ज़ियादा प्यारा होगा। सिहा़ह़ की बहुत ह़दीसें येह साबित करती हैं कि ज़ियादत से आयत में दीदारे इलाही मुराद है। 67 : कि येह बात जहन्नम वालों के लिये है। 68 : या'नी कुफ़्र व मआ़सी में मुब्तला हुए। 69 : ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सो गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अ़ज़ाब भी बढ़ा दिया जाए बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अ़ज़ाब किया जाएगा। 70 : येह ह़ाल होगा उन की रू सियाही का, ख़ुदा की पनाह। 71 : और तमाम ख़ल्क़ को मौक़िफ़े हिसाब में जम्अ़ करेंगे 72 : या'नी वोह बुत जिन को तुम पूजते थे। 73 : रोज़े क़ियामत एक साअ़त ऐसी शिद्दत की होगी कि बुत अपने पुजारियों के पूजा का इन्कार कर देंगे और अल्लाह की क़सम खा कर कहेंगे कि हम न सुनते थे, न देखते थे, न जानते थे, न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो, इस पर बुत परस्त कहेंगे कि अल्लाह की क़सम ! हम तुम्हीं को पूजते थे तो बुत कहेंगे : 74 : या'नी इस मौक़िफ़ में सब को मा'लूम हो जाएगा कि इन्हों ने पहले जो अ़मल किये थे वोह कैसे थे अच्छे या बुरे मुज़िर या मुफ़ीद।

إِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع قُلْ مَنْ

फेरे जाएंगे जो उन का सच्चा मौला है और उन की सारी बनावटें[75] उन से गुम हो जाएंगी[76] तुम फ़रमाओ तुम्हें

يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

कौन रोज़ी देता है आस्मान और ज़मीन से[77] या कौन मालिक है कान और आंखों का[78] और

مَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ

कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दे से[79] और कौन तमाम कामों की

الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ

तदबीर करता है तो अब कहेंगे कि अल्लाह[80] तो तुम फ़रमाओ तो क्यूं नहीं डरते[81] तो येह अल्लाह है

رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

तुम्हारा सच्चा रब[82] फिर हक़ के बा'द क्या है मगर गुमराही[83] फिर कहां फिरे जाते हो

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

यूंही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिक़ों पर[84] तो वोह ईमान नहीं लाएंगे

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में[85] कोई ऐसा है कि अव्वल बनाए फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाए[86] तुम फ़रमाओ अल्लाह

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

अव्वल बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा तो कहां औंधे जाते हो[87] तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में

75 : बुतों को ख़ुदा का शरीक बताना और मा'बूद ठहराना। 76 : और बातिल व बे हक़ीक़त साबित होंगी। 77 : आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। 78 : और येह हवास तुम्हें किस ने दिये हैं ? किस ने येह अजाइब तुम्हें इनायत किये हैं ? कौन इन्हें मुद्दतों महफ़ूज़ रखता है ? 79 : इन्सान को नुत़्फ़े से और नुत़्फ़े को इन्सान से, परिन्द को अन्डे से और अन्डे को परिन्दे से, मोमिन को काफ़िर से और काफ़िर को मोमिन से, आ़लिम को जाहिल से और जाहिल को आ़लिम से। 80 : और उस की क़ुदरते कामिला का ए'तिराफ़ करेंगे और इस के सिवा कुछ चारह न होगा। 81 : उस के अ़ज़ाब से और क्यूं बुतों को पूजते और इन को मा'बूद बनाते हो बा वुजूदे कि वोह कुछ क़ुदरत नहीं रखते। 82 : जिस की ऐसी क़ुदरते कामिला है 83 : या'नी जब ऐसे बराहीने वाज़ेह़ा और दलाइले क़त़इय्या से साबित हो गया कि मुस्तह़िक़े इ़बादत सिर्फ़ अल्लाह है तो मा सिवा उस के सब बातिल व ज़लाल (गुमराही) है और जब तुम ने उस की क़ुदरत को पहचान लिया और उस की कारसाज़ी का ए'तिराफ़ कर लिया तो 84 : जो कुफ़्र में रासिख़ हो गए और रब की बात से मुराद या क़ज़ाए इलाही है या अल्लाह तआ़ला का इर्शाद لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ الآيه (बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा......الخ) 85 : जिन्हें ऐ मुश्रिकीन ! तुम मा'बूद ठहराते हो। 86 : इस का जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्यूं कि मुश्रिकीन भी येह जानते हैं कि पैदा करने वाला अल्लाह ही है, लिहाज़ा ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم ! 87 : और ऐसी रोशन दलीलें क़ाइम होने के बा'द राहे रास्त से मुन्हरिफ़ होते हो।

مَنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى

कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए[88] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह हक़ की राह दिखाता है तो क्या जो हक़ राह

الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫

दिखाए उस के हुक्म पर चलना चाहिये या उस के जो ख़ुद ही राह न पाए जब तक राह न दिखाया जाए[89] तो तुम्हें क्या हुवा

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۳۵ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ

कैसा हुक्म लगाते हो और उन[90] में अक्सर नहीं चलते मगर गुमान पर[91] बेशक गुमान हक़

مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۳۶ وَمَا كَانَ هٰذَا

का कुछ काम नहीं देता बेशक अल्लाह उन के कामों को जानता है और इस क़ुरआन की

الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ

येह शान नहीं कि कोई अपनी त़रफ़ से बना ले बे अल्लाह के उतारे[92] हां वोह अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۳۷ ۫ اَمْ

तस्दीक़ है[93] और लौह़ में जो कुछ लिखा है सब की तफ़्सील है इस में कुछ शक नहीं परवर्दगारे आ़लम की त़रफ़ से है क्या

يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ

येह कहते हैं[94] कि उन्हों ने इसे बना लिया है तुम फ़रमाओ[95] तो इस जैसी एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जो मिल सकें

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۳۸ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا

सब को बुला लाओ[96] अगर तुम सच्चे हो बल्कि इसे झुटलाया जिस के इ़ल्म पर क़ाबू

88 : हुज्जतें और दलाइल क़ाइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, मुकल्लिफ़ीन को अ़क़्लो नज़र अ़ता फ़रमा कर, इस का वाज़ेह़ जवाब येह है कि कोई नहीं तो ऐ ह़बीब ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) 89 : जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जब तक कि कोई उठा ले जाने वाला उन्हें उठा कर ले न जाए और न किसी चीज़ की ह़क़ीक़त को समझें और राहे ह़क़ को पहचानें बिग़ैर इस के कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़िन्दगी, अ़क़्ल और इदराक दे तो जब उन की मजबूरी का येह आ़लम है तो वोह दूसरों को क्या राह बता सकें ! ऐसों को मा'बूद बनाना, उन का मुत़ीअ़ बनना कितना बात़िल और बेहूदा है । 90 : मुश्रिकीन 91 : जिस की उन के पास कोई दलील नहीं, न उस की सिह़्ह़त का जज़्मो यक़ीन, शक में पड़े हुए हैं और येह गुमान करते हैं कि पहले लोग भी बुत परस्ती करते थे उन्हों ने कुछ तो समझा होगा । 92 : कुफ़्फ़ारे मक्का ने येह वह्म किया था कि क़ुरआने करीम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुद बना लिया है, इस आयत में उन का येह वह्म दफ़्अ़ फ़रमाया गया कि क़ुरआने करीम ऐसी किताब ही नहीं जिस की निस्बत तरद्दुद हो सके, इस की मिसाल बनाने से सारी मख़्लूक़ आ़जिज़ है तो यक़ीनन वोह अल्लाह की नाज़िल फ़रमाई हुई किताब है । 93 : तौरैत व इन्जील वग़ैरा की 94 : कुफ़्फ़ार सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत 95 : कि अगर तुम्हारा येह ख़याल है तो तुम भी अ़रब हो, फ़साह़तो बलाग़त के दा'वेदार हो, दुन्या में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिस के कलाम के मुक़ाबिल कलाम बनाने को तुम ना मुम्किन समझते हो, अगर तुम्हारे गुमान में येह इन्सानी कलाम है 96 : और उन से मददें लो और सब मिल कर क़ुरआन जैसी एक सूरत तो बनाओ ।

بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ

न पाया[97] और अभी उन्हों ने इस का अन्जाम नहीं देखा है[98] ऐसे ही उन से अगलों ने झुटलाया था[99] तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا

ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा[100] और उन[101] में कोई इस[102] पर ईमान लाता है और उन में कोई इस पर

يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ

ईमान नहीं लाता है और तुम्हारा रब मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) को ख़ूब जानता है[103] और अगर वोह तुम्हें झुटलाएं[104] तो फ़रमा दो कि मेरे

عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

लिये मेरी करनी और तुम्हारे लिये तुम्हारी करनी[105] तुम्हें मेरे काम से अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं और मुझे तुम्हारे काम

تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

से तअ़ल्लुक़ नहीं[106] और उन में कोई वोह हैं जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाते हैं[107] तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगर्चे

كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي

उन्हें अ़क़्ल न हो[108] और उन में कोई तुम्हारी त़रफ़ तकता है[109] क्या तुम अन्धों को

الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّ

राह दिखा दोगे अगर्चे वोह न सूझें (न देख सकें) बेशक **अल्लाह** लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता[110]

لٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْۤا

हां लोग ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं[111] और जिस दिन उन्हें उठाएगा[112] गोया दुन्या में न रहे थे

---

97 : या'नी क़ुरआने पाक को समझने और जानने के बिग़ैर उन्हों ने इस की तक्ज़ीब की और येह कमाले जहल है कि किसी शै को जाने बिग़ैर उस का इन्कार किया जाए। क़ुरआने करीम का ऐसे उ़लूम पर मुश्तमिल होना जिन का मुद्दइयाने इल्मो ख़िरद (इल्मो अ़क़्ल के दा'वेदार) इह़ात़ा न कर सकें इस किताब की अ़ज़मतो जलालत ज़ाहिर करता है तो ऐसी आ'ला उ़लूम वाली किताब को मानना चाहिये था न कि इस का इन्कार करना **98 :** या'नी उस अ़ज़ाब को जिस की क़ुरआने पाक में वई़दें हैं। **99 :** इनाद से अपने रसूलों को बिग़ैर इस के कि उन के मो'जिज़ात और आयात देख कर नज़र व तदब्बुर से काम लेते। **100 :** और पहली उम्मतें अपने अम्बिया को झुटला कर कैसे कैसे अ़ज़ाबों में मुब्तला हुईं तो ऐ सय्यिदे अम्बिया ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप की तक्ज़ीब करने वालों को डरना चाहिये। **101 :** अहले मक्का **102 :** नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या क़ुरआने करीम **103 :** जो इनाद से ईमान नहीं लाते और कुफ़्र पर मुसिर रहते हैं। **104 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! और उन की राह पर आने और ह़क़ व हिदायत क़बूल करने की उम्मीद मुन्क़त़अ़ हो जाए **105 :** हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा **106 :** किसी के अ़मल पर दूसरा माख़ूज़ (गिरिफ़्तार) न होगा जो पकड़ा जाएगा ख़ुद अपने अ़मल पर पकड़ा जाएगा, येह फ़रमाना बत़ौर ज़ज्र (तम्बीह) के है कि तुम नसीह़त नहीं मानते और हिदायत क़बूल नहीं करते तो इस का वबाल ख़ुद तुम पर होगा किसी दूसरे का इस से ज़रर नहीं। **107 :** और आप से क़ुरआने पाक और अह़कामे दीन सुनते हैं और बुग़्ज़ो अ़दावत की वज्ह से दिल में जगह नहीं देते और क़बूल नहीं करते तो येह सुनना बेकार है और वोह हिदायत से नफ़्अ़ न पाने में बहरों की मिस्ल हैं। **108 :** और वोह न ह़वास से काम लें न अ़क़्ल से। **109 :** और दलाइले सिद्क़ और ए'लामे नुबुव्वत को देखता है लेकिन तस्दीक़ नहीं करता और इस देखने से नतीजा नहीं निकालता, फ़ाइदा नहीं उठाता, दिल की बीनाई से मह़रूम और बात़िन का अन्धा है। **110 :** बल्कि उन्हें

اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۭ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

मगर इस दिन की एक घड़ी[113] आपस में पहचान करेंगे[114] पूरे घाटे में रहे वोह

كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝٤٥ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुटलाया और हिदायत पर न थे[115] और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ[116] उस में से

الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا

जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं[117] या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला लें[118] बहर हाल उन्हें हमारी तरफ़ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है[119] उन

يَفْعَلُوْنَ ۝٤٦ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ

के कामों पर और हर उम्मत में एक रसूल हुवा[120] जब उन का रसूल उन के पास आता[121] उन पर

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٤٧ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ

इन्साफ़ का फ़ैसला कर दिया जाता[122] और उन पर ज़ुल्म न होता और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ۝٤٨ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ

सच्चे हो[123] तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ज़ाती इख़्तियार नहीं रखता मगर जो अल्लाह

हिदायत और राह पाने के तमाम सामान अ़ता फ़रमाता है और रोशन दलाइल क़ाइम फ़रमाता है। **111 :** कि इन दलाइल में ग़ौर नहीं करते और हक़ वाज़ेह हो जाने के बा वुजूद ख़ुद गुमराही में मुब्तला होते हैं। **112 :** क़ब्रों से मौक़िफ़े हिसाब (हिसाबो किताब की जगह) में हाज़िर करने के लिये तो उस रोज़ की हैबतो वहशत से येह हाल होगा कि वोह दुन्या में रहने की मुद्दत को बहुत थोड़ा समझेंगे और येह ख़याल करेंगे कि **113 :** और इस की वज्ह येह है कि चूंकि कुफ़्फ़ार ने तलबे दुन्या में उम्रें ज़ाएअ़ कर दीं और अल्लाह की ताअ़त जो आज कारआमद होती बजा न लाए तो उन की ज़िन्दगानी का वक़्त उन के काम न आया इस लिये वोह इसे बहुत ही कम समझेंगे। **114 :** क़ब्रों से निकलते वक़्त तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुन्या में पहचानते थे फिर रोज़े क़ियामत के अहवाल और दहशत नाक मनाज़िर देख कर येह मा'रिफ़त बाक़ी न रहेगी और एक क़ौल येह है कि रोज़े क़ियामत दम बदम हाल बदलेंगे, कभी ऐसा हाल होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे, कभी ऐसा कि न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे : **115 :** जो उन्हें घाटे से बचाती। **116 :** अ़ज़ाब **117 :** दुन्या ही में आप के ज़मानए हयात में तो वोह मुलाहज़ा कीजिये **118 :** तो आख़िरत में आप को उन का अ़ज़ाब दिखाएंगे। इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह तआ़ला अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को काफ़िरों के बहुत से अ़ज़ाब और उन की ज़िल्लतो रुस्वाइयां आप की हयाते दुन्या ही में आप को दिखाएगा चुनान्चे बद्र वग़ैरा में दिखाई गईं और जो अ़ज़ाब काफ़िरों के लिये ब सबबे कुफ़्र व तक्ज़ीब के आख़िरत में मुक़र्रर फ़रमाया है वोह आख़िरत में दिखाएगा। **119 :** मुत्तलअ़ है, अ़ज़ाब देने वाला है **120 :** जो उन्हें दीने हक़ की दा'वत देता और ताअ़त व ईमान का हुक्म करता। **121 :** और अहकामे इलाही की तब्लीग़ करता तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ तक्ज़ीब करते और मुन्किर हो जाते तो **122 :** कि रसूल को और उन पर ईमान लाने वालों को नजात दी जाती और तक्ज़ीब करने वालों को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया जाता। आयत की तफ़्सीर में दूसरा क़ौल येह है कि इस में आख़िरत का बयान है और मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर उम्मत के लिये एक रसूल होगा जिस की तरफ़ वोह मन्सूब होगी जब वोह रसूल मौक़िफ़ (हिसाबो किताब की जगह) में आएगा और मोमिन व काफ़िर पर शहादत देगा तब उन में फ़ैसला किया जाएगा कि मोमिनों को नजात होगी और काफ़िर गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होंगे। **123 शाने नुज़ूल :** जब आयत ''اِمَّا نُرِيَنَّكَ'' में अ़ज़ाब की वईद दी गई तो काफ़िरों ने बराहे सरकशी येह कहा कि ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) जिस अ़ज़ाब का आप वा'दा देते हैं वोह कब आएगा ? उस में क्या ताख़ीर है ? उस अ़ज़ाब को जल्द लाइये, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।

اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ

चाहे[124] हर गुरौह का एक वा'दा है[125] जब उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें

لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

न आगे बढ़ें तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उस का अ़ज़ाब[126] तुम पर रात को आए[127] या दिन को[128]

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ

तो उस में वोह कौन सी चीज़ है कि मुजरिमों को जिस की जल्दी है तो क्या जब[129] हो पड़ेगा उस वक़्त इस का यक़ीन करोगे[130]

آٰلْئٰنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا

क्या अब मानते हो पहले तो[131] इस की जल्दी मचा रहे थे फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा

عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

का अ़ज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वोही जो कमाते थे[132]

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕۚ وَمَآ اَنْتُمْ

और तुम से पूछते हैं क्या वोह[133] हक़ है तुम फ़रमाओ हां मेरे रब की क़सम बेशक वोह ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ

न सकोगे[134] और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है[135] सब की मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में

بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

देती[136] और दिल में चुपके चुपके पशेमान हुए जब अ़ज़ाब देखा और उन में इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ

और उन पर ज़ुल्म न होगा सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में[137] सुन लो

वक़्फ़ुन्नबी صلى الله عليه وسلم — ربع

124 : या'नी दुश्मनों पर अ़ज़ाब नाज़िल करना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़लबा देना येह सब ब मशिय्यते इलाही है और मशिय्यते इलाही में 125 : उस के हलाक व अ़ज़ाब का एक वक़्त मुअ़य्यन है, लौहे़ महफ़ूज़ में मक्तूब है। 126 : जिस की तुम जल्दी करते हो 127 : जब तुम ग़ाफ़िल पड़े सोते हो। 128 : जब तुम मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो। 129 : वोह अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल 130 : उस वक़्त का यक़ीन कुछ फ़ाएदा न देगा और कहा जाएगा : 131 : ब त़रीक़े तक्ज़ीब व इस्तिह्ज़ा 132 : या'नी दुन्या में जो अ़मल करते थे और कुफ़्र व तक्ज़ीबे अम्बिया में मसरूफ़ रहते थे उसी का बदला। 133 : बअ़्स और अ़ज़ाब जिस के नाज़िल होने की आप ने हमें ख़बर दी 134 : या'नी वोह अ़ज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा 135 : मालो मताअ़ ख़ज़ाना व दफ़ीना 136 : और रोज़े क़ियामत उस को अपनी रिहाई के लिये फ़िदया कर डालती, मगर येह फ़िदया क़बूल नहीं और तमाम दुन्या की दौलत ख़र्च कर के भी अब रिहाई मुम्किन नहीं, जब क़ियामत में येह मन्ज़र पेश आया और कुफ़्फ़ार की उम्मीदें टूटीं 137 : तो काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वोह ख़ुद भी **अल्लाह** का मम्लूक है, इस का फ़िदया देना मुम्किन ही नहीं।

اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ

बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है मगर उन में अक्सर को ख़बर नहीं वोह जिलाता और

يُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ

मारता है और उसी की तरफ़ फिरोगे ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत

رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

आई[138] और दिलों की सिह्हत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا

तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रहमत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें[139] वोह उन के सब

يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ

धन दौलत से बेहतर है तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये रिज़्क़ उतारा उस में तुम ने

مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَ

अपनी तरफ़ से हराम व हलाल ठहरा लिया[140] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह ने इस की तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूट बांधते हो[141] और

مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

क्या गुमान है उन का जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं कि क़ियामत में उन का क्या हाल होगा बेशक अल्लाह

138 : इस आयत में क़ुरआने करीम के आने और इस के मौइज़त व शिफ़ा व हिदायत व रहमत होने का बयान है कि येह किताब इन फ़वाइदे अज़ीमा की जामेअ़ है। **मौइज़त** के मा'ना हैं वोह चीज़ जो इन्सान को मरग़ूब की तरफ़ बुलाए और ख़त्रे से बचाए। ख़लील ने कहा कि मौइज़त नेकी की नसीहत करना है जिस से दिल में नरमी पैदा हो। **शिफ़ा** से मुराद येह है कि क़ुरआने पाक क़ल्बी अमराज़ को दूर करता है। दिल के अमराज़, अख़्लाक़े ज़मीमा, अ़क़ाइदे फ़ासिदा और जहालते मोहलिका हैं, क़ुरआने पाक इन तमाम अमराज़ को दूर करता है। क़ुरआने करीम की सिफ़त में हिदायत भी फ़रमाया क्यूं कि वोह गुमराही से बचाता और राहे हक़ दिखाता है और ईमान वालों के लिये रहमत इस लिये फ़रमाया कि वोही इस से फ़ाएदा उठाते हैं। **139 : फ़रह :** किसी प्यारी और महबूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त हासिल होती है उस को फ़रह कहते हैं। मा'ना येह हैं कि ईमान वालों को अल्लाह के फ़ज़्लो रहमत पर ख़ुश होना चाहिये कि उस ने इन्हें मवाइज़ और शिफ़ाए सुदूर और ईमान के साथ दिल की राहत व सुकून अ़ता फ़रमाए। हज़रते इब्ने अ़ब्बास व हसन व क़तादा (رضی اللہ تعالی عنہم) ने कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम और उस की रहमत से क़ुरआन मुराद है। एक क़ौल येह है कि फ़ज़्लुल्लाह से क़ुरआन और रहमत से अहादीस मुराद हैं। **140 :** जैसे कि अहले जाहिलिय्यत ने बहीरा साइबा वग़ैरा को अपनी तरफ़ से हराम क़रार दे लिया था। **141 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि किसी चीज़ को अपनी तरफ़ से हलाल या हराम करना मम्नूअ़ और ख़ुदा पर इफ़्तिरा है (अल्लाह की पनाह) आज कल बहुत लोग इस में मुब्तला हैं मम्नूआत को हलाल कहते हैं और मुबाहात को हराम, बा'ज़ सूद को हलाल करने पर मुसिर हैं, बा'ज़ तस्वीरों को, बा'ज़ खेल तमाशों को, बा'ज़ औरतों की बे क़ैदियों और बे पर्दगियों को, बा'ज़ भूक हड़ताल को जो ख़ुदकुशी है मुबाह समझते हैं और हलाल ठहराते हैं और बा'ज़ लोग हलाल चीज़ों को हराम ठहराने पर मुसिर हैं जैसे महफ़िले मीलाद को, फ़ातिहा को, ग्यारहवीं को और दीगर तरीक़ाहाए ईसाले सवाब को, बा'ज़ मीलाद शरीफ़ व फ़ातिहा व तोशे की शीरीनी व तबर्रुक को जो सब हलाल व तय्यिब चीज़ें हैं ना जाइज़ व मम्नूअ़ बताते हैं, इसी को क़ुरआने पाक ने ख़ुदा पर इफ़्तिरा करना बताया है।

لَنُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَمَا تَكُوْنُ

लोगों पर फ़ज़्ल करता है[142] मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते और तुम किसी

فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا

काम में हो[143] और उस की तरफ़ से कुछ क़ुरआन पढ़ो और तुम लोग[144] कोई काम करो हम

عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ

तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उस को शुरूअ़ करते हो और तुम्हारे रब से

مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ

ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ाइब नहीं ज़मीन में न आस्मान में और न इस से छोटी और न इस

اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

से बड़ी कोई चीज़ जो एक रोशन किताब में न हो[145] सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى

न कुछ ग़म[146] वोह जो ईमान लाए और परहेज़ गारी करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी है

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

दुन्या की ज़िन्दगी में[147] और आख़िरत में **अल्लाह** की बातें बदल नहीं सकतीं[148] येही

142 : कि रसूल भेजता है किताबें नाज़िल फ़रमाता है और हलाल व हराम से बा ख़बर फ़रमाता है। 143 : ऐ हबीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ! 144 : ऐ मुसल्मानो ! 145 : किताबे मुबीन से लौहे महफ़ूज़ मुराद है। 146 : वली की अस्ल विला से है जो क़ुर्ब व नुसरत के मा'ना में है। वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से क़ुर्बे इलाही हासिल करे और इताअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्तग़रक़ हो, जब देखे दलाइले क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने **अल्लाह** की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की सना ही के साथ बोले और जब हरकत करे ताअ़ते इलाही में हरकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअ़ए क़ुर्बे इलाही हो, **अल्लाह** के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से ख़ुदा के सिवा किसी ग़ैर को न देखे येह सिफ़त औलिया की है, बन्दा जब इस हाल पर पहुंचता है तो **अल्लाह** उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है। मुतकल्लिमीन कहते हैं : वली वोह है जो ए'तिक़ादे सहीह मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिहा शरीअ़त के मुताबिक़ बजा लाता हो। बा'ज़ आरिफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम है क़ुर्बे इलाही और हमेशा **अल्लाह** के साथ मश्ग़ूल रहने का, जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और न किसी शै के फ़ौत होने का ग़म होता है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि वली वोह है जिस को देखने से **अल्लाह** याद आए। येही तबरी की हदीस में भी है। इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वोही है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़्कूर है ''اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ'' या'नी ईमान व तक़्वा दोनों का जामेअ़ हो। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि वली वोह हैं जो ख़ालिस **अल्लाह** के लिये महब्बत करें। औलिया की येह सिफ़त अहादीसे कसीरा में वारिद हुई है। बा'ज़ अकाबिर ने फ़रमाया : वली वोह हैं जो ताअ़त से क़ुर्बे इलाही की तलब करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला करामत से उन की कारसाज़ी फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ **अल्लाह** कफ़ील हो और वोह उस का हक़्क़े बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्क़ पर रहम करने के लिये वक़्फ़ हो गए। येह मआ़नी और इबारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन इन में इख़्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है, क्यूं कि हर एक इबारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे क़ुर्बे इलाही हासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होते हैं, विलायत के दरजे और मरातिब में हर एक ब क़दर अपने दरजे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है 147 : इस ख़ुश ख़बरी

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ

बड़ी काम्याबी है और तुम उन की बातों का ग़म न करो[149] बेशक इ़ज़्ज़त सारी अल्लाह के लिये है[150] वोही

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ

सुनता जानता है सुन लो बेशक अल्लाह ही की मिल्क हैं जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीनों में[151]

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا

और काहे के पीछे जा रहे हैं[152] वोह जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहें हैं वोह तो पीछे नहीं जाते मगर

الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ

गुमान के और वोह तो नहीं मगर अट्कलें दौड़ाते (अन्दाज़े करते)[153] वोही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई

لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

कि इस में चैन पाओ[154] और दिन बनाया तुम्हारी आंखें खोलता[155] बेशक इस में निशानियां हैं सुनने

يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي

वालों के लिये[156] बोले अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई[157] पाकी उस को वोही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ

से या तो वोह मुराद है जो परहेज़ गार ईमानदारों को क़ुरआने करीम में जा ब जा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद है जो मोमिन देखता है या उस के लिये देखा जाता है जैसा कि कसीर अह़ादीस में वारिद हुवा है और इस का सबब येह है कि वली का क़ल्ब और उस की रूह़ दोनों ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ रहते हैं तो वक़्ते ख़्वाब उस के दिल में सिवाए ज़िक्रो मा'रिफ़ते इलाही के और कुछ नहीं होता। इस लिये वली जब ख़्वाब देखता है तो उस का ख़्वाब ह़क़ और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से उस के ह़क़ में बिशारत होती है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस बिशारत से दुन्या की नेकनामी भी मुराद ली है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया गया : उस शख़्स के लिये क्या इर्शाद फ़रमाते हैं जो नेक अ़मल करता है और लोग उस की ता'रीफ़ करते हैं। फ़रमाया : येह मोमिन के लिये बिशारते आ़जिला है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि येह बिशारते आ़जिला रिज़ाए इलाही और अल्लाह की मह़ब्बत फ़रमाने और ख़ल्क़ के दिल में मह़ब्बत डाल देने की दलील है, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है कि उस को ज़मीन में मक़्बूल कर दिया जाता है। क़तादा ने कहा कि मलाएका वक़्ते मौत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से बिशारत देते हैं। अ़त़ा का क़ौल है कि दुन्या की बिशारत तो वोह है जो मलाएका वक़्ते मौत सुनाते हैं और आख़िरत की बिशारत वोह है जो मोमिन को जान निकलने के बा'द सुनाई जाती है कि इस से अल्लाह राज़ी है। **148 :** उस के वा'दे ख़िलाफ़ नहीं हो सकते जो उस ने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने औलिया और अपने फ़रमां बरदार बन्दों से फ़रमाए। **149 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीन फ़रमाई गई कि कुफ़्फ़ारे ना बकार जो आप की तक्ज़ीब करते हैं और आप के ख़िलाफ़ बुरे बुरे मश्वरे करते हैं आप उस का कुछ ग़म न फ़रमाएं। **150 :** वोह जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। ऐ सय्यिदे अम्बिया ! वोह आप का नासिर व मददगार है उस ने आप को और आप के सदक़े में आप के फ़रमां बरदारों को इ़ज़्ज़त दी, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह के लिये इ़ज़्ज़त है और उस के रसूल के लिये और ईमानदारों के लिये। **151 :** सब उस के मम्लूक हैं उस के तह़ते क़ुदरतो इख़्तियार और मम्लूक रब नहीं हो सकता, इस लिये कि अल्लाह के सिवा हर एक की परस्तिश बात़िल है, येह तौह़ीद की एक उ़म्दा बुरहान है। **152 :** या'नी किस दलील का इत्तिबाअ़ करते हैं। मुराद येह है कि उन के पास कोई दलील नहीं। **153 :** और बे दलील मह़ज़ गुमाने फ़ासिद से अपने बात़िल मा'बूदों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं, इस के बा'द अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुदरत व ने'मत का इज़्हार फ़रमाता है। **154 :** और आराम कर के दिन की तकान दूर करो। **155 :** रोशन ताकि तुम अपने ह़वाइज (ह़ाजात) व अस्बाबे मआ़श का सर अन्जाम कर सको। **156 :** जो सुनें और समझें कि जिस ने इन चीज़ों को पैदा किया वोही मा'बूद है उस का कोई शरीक नहीं, इस के बा'द मुश्रिकीन का एक मक़ूला ज़िक्र फ़रमाता है **157 :** कुफ़्फ़ार का येह कलिमा निहायत क़बीह़ और इन्तिहा दरजे के जह्ल का है, अल्लाह तआ़ला इस का रद फ़रमाता है।

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الۡاَرۡضِ ؕ اِنۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۢ بِهٰذَا ؕ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[158] तुम्हारे पास इस की कोई भी सनद नहीं

اَتَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝٦٨ قُلۡ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى

क्या अल्लाह पर वोह बात बताते हो जिस का तुम्हें इल्म नहीं तुम फ़रमाओ वोह जो अल्लाह पर

اللّٰهِ الۡكَذِبَ لَا يُفۡلِحُوۡنَ ؕ ۝٦٩ مَتَاعٌ فِي الدُّنۡيَا ثُمَّ اِلَيۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ ثُمَّ

झूट बांधते हैं उन का भला न होगा दुन्या में कुछ बरत लेना (फ़ाएदा उठाना) है फिर उन्हें हमारी तरफ़ वापस आना फिर

نُذِيۡقُهُمُ الۡعَذَابَ الشَّدِيۡدَ بِمَا كَانُوۡا يَكۡفُرُوۡنَ ۝٧٠ ع وَاتۡلُ عَلَيۡهِمۡ

हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे बदला उन के कुफ़्र का और उन्हें नूह़ की ख़बर

نَبَاَ نُوۡحٍ ۘ اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖ يٰقَوۡمِ اِنۡ كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكُمۡ مَّقَامِيۡ

पढ़ कर सुनाओ जब उस ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम पर शाक़ (ना गवार) गुज़रा है मेरा खड़ा होना[159]

وَتَذۡكِيۡرِيۡ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلۡتُ فَاَجۡمِعُوۡۤا اَمۡرَكُمۡ

और अल्लाह की निशानियां याद दिलाना[160] तो मैं ने अल्लाह ही पर भरोसा किया[161] तो मिल कर काम करो

وَشُرَكَآءَكُمۡ ثُمَّ لَا يَكُنۡ اَمۡرُكُمۡ عَلَيۡكُمۡ غُمَّةً ثُمَّ اقۡضُوۡۤا اِلَيَّ وَلَا

और अपने झूटे मा'बूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गुन्जलक (उल्झन व पोशीदगी) न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और

تُنۡظِرُوۡنِ ۝٧١ فَاِنۡ تَوَلَّيۡتُمۡ فَمَا سَاَلۡتُكُمۡ مِّنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ اَجۡرِيَ اِلَّا

मुझे मोहलत न दो[162] फिर अगर तुम मुंह फेरो[163] तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[164] मेरा अज्र तो नहीं मगर

الرُّبُع الثَّالِث — وقف لازم

158 : यहां मुश्रिकीन के इस मक़ूले (अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई) के तीन रद फ़रमाए **पहला** रद तो कलिमा "سُبۡحٰنَهٗ" में है जिस में बताया गया कि उस की ज़ात वलद से मुनज़्ज़ा है कि वोह वाहिदे ह़क़ीक़ी है। **दूसरा** रद "هُوَ الۡغَنِيُّ" फ़रमाने में है कि वोह तमाम ख़ल्क़ से बे नियाज़ है तो औलाद उस के लिये कैसे हो सकती है? औलाद तो या कमज़ोर चाहता है जो उस से क़ुव्वत ह़ासिल करे या फ़क़ीर चाहता है जो उस से मदद ले या ज़लील चाहता है जो उस के ज़रीए से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करे ग़रज़ जो चाहता है वोह ह़ाजत रखता है तो जो ग़नी हो या ग़ैर मोह़ताज हो उस के लिये वलद किस त़रह़ हो सकता है, नीज़ वलद वालिद का एक जुज़्व होता है तो वालिद होना मुरक्कब होने को मुस्तल्ज़िम और मुरक्कब होना मुम्किन होने को और हर मुम्किन ग़ैर का मोह़ताज है तो ह़ादिस हुवा, लिहाज़ा मुह़ाल हुवा कि ग़नी क़दीम के वलद हो। **तीसरा** रद "لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الۡاَرۡضِ" में है कि तमाम ख़ल्क़ उस की मम्लूक है और मम्लूक होना बेटा होने के साथ नहीं जम्अ़ होता, लिहाज़ा इन में से कोई उस की औलाद नहीं हो सकता। **159 :** और मुद्दते दराज़ तक तुम में ठहरना **160 :** और इस पर तुम ने मेरे क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है **161 :** और अपना मुआ़मला उस वाहिद لَاشَرِيۡكَ لَهٗ के सिपुर्द किया। **162 :** मुझे कुछ परवाह नहीं है, ह़ज़रते नूह़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह कलाम ब त़रीक़े ता'जीज़ (आ़जिज़ कर देने के लिये) है, मुद्दआ़ येह है कि मुझे अपने क़वी व क़ादिर परवर्दगार पर कामिल भरोसा है तुम और तुम्हारे बे इख़्तियार मा'बूद मुझे कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा सकते। **163 :** मेरी नसीह़त से **164 :** जिस के फ़ौत होने का मुझे अफ़्सोस हो।

عَلَى اللّٰهِ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَ

अल्लाह पर[165] और मुझे हुक्म है कि मैं मुसल्मानों से हूं तो उन्हों ने उसे[166] झुटलाया तो हम ने उसे और

مَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَ جَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

जो उस के साथ कश्ती में थे उन को नजात दी और उन्हें हम ने नाइब किया[167] और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन को

بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ

हम ने डुबो दिया तो देखो डराए हुओं का अन्जाम कैसा हुवा फिर इस के बा'द और

رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا

रसूल[168] हम ने उन की क़ौमों की त़रफ़ भेजे तो वोह उन के पास रोशन दलीलें लाए तो वोह ऐसे न थे कि ईमान लाते उस पर

كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ

जिसे पहले झुटला चुके थे हम यूंही मोहर लगा देते हैं सरकशों के दिलों पर फिर

بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَ هٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا

उन के बा'द हम ने मूसा और हारून को फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़ अपनी निशानियां दे कर भेजा

فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ

तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम लोग थे तो जब उन के पास हमारी त़रफ़ से

عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ

ह़क़ आया[169] बोले येह तो ज़रूर खुला जादू है मूसा ने कहा क्या ह़क़ की निस्बत ऐसा कहते हो

لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَ لَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا

जब वोह तुम्हारे पास आया क्या येह जादू है[170] और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते बोले[171] क्या तुम हमारे पास

لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي

इस लिये आए हो कि हमें उस[172] से फेर दो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हीं दोनों

165 : वोही मुझे जज़ा देगा, मुद्दआ येह है कि मेरा वा'ज़ो नसीह़त ख़ास अल्लाह के लिये है किसी दुन्यवी ग़रज़ से नहीं। 166 : या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को 167 : और हलाक होने वालों के बा'द ज़मीन में साकिन किया। 168 : हूद, सालेह़, इब्राहीम, लूत़, शुऐब वग़ैरहुम عَلَيْهِمُ السَّلَام। 169 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वासित़े से और फ़िरऔ़नियों ने पहचान लिया कि येह ह़क़ है अल्लाह की त़रफ़ से है तो बराहे नफ़्सानिय्यत 170 : हरगिज़ नहीं 171 : फ़िरऔ़नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से 172 : दीनो मिल्लत और बुत परस्ती व फ़िरऔ़न परस्ती

الۡاَرۡضِ ؕ وَمَا نَحۡنُ لَـكُمَا بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۷۸﴾ وَقَالَ فِرۡعَوۡنُ ائۡتُوۡنِىۡ

की बड़ाई रहे और हम तुम पर ईमान लाने के नहीं और फ़िरऔ़न[173] बोला हर जादूगर

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيۡمٍ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمۡ مُّوۡسٰٓى اَلۡقُوۡا مَاۤ

इ़ल्म वाले को मेरे पास ले आओ फिर जब जादूगर आए उन से मूसा ने कहा डालो जो

اَنۡتُمۡ مُّلۡقُوۡنَ ﴿۸۰﴾ فَلَمَّاۤ اَلۡقَوۡا قَالَ مُوۡسٰى مَا جِئۡتُمۡ بِهِ ۙ السِّحۡرُ ؕ

तुम्हें डालना है[174] फिर जब उन्हों ने डाला मूसा ने कहा येह जो तुम लाए येह जादू है[175]

اِنَّ اللّٰهَ سَيُبۡطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصۡلِحُ عَمَلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۸۱﴾ وَيُحِقُّ

अब **अल्लाह** उसे बात़िल कर देगा **अल्लाह** मुफ़्सिदों का काम नहीं बनाता और **अल्लाह** अपनी

اللّٰهُ الۡحَـقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوۡ كَرِهَ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۸۲﴾ؑ فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوۡسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ

बातों से[176] ह़क़ को ह़क़ कर दिखाता है पड़े बुरा मानें मुजरिम तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उस की क़ौम की औलाद से

مِّنۡ قَوۡمِهٖ عَلٰى خَوۡفٍ مِّنۡ فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهِمۡ اَنۡ يَّفۡتِنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ

कुछ लोग[177] फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें[178] हटने पर मजबूर न कर दें और बेशक

فِرۡعَوۡنَ لَعَالٍ فِى الۡاَرۡضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿۸۳﴾ وَقَالَ

फ़िरऔ़न ज़मीन में सर उठाने वाला था और बेशक वोह ह़द से गुज़र गया[179] और मूसा

173 : सरकश व मुतकब्बिर ने चाहा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े का मुक़ाबला बात़िल से करे और दुन्या को इस मुग़ालते़ में डाले कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात (مَعَاذَالله) जादू की क़िस्म से हैं इस लिये वोह **174 :** रस्से शहतीर वग़ैरा और जो तुम्हें जादू करना है करो। येह आप ने इस लिये फ़रमाया कि ह़क़ व बात़िल ज़ाहिर हो जाए और जादू के करिश्मे जो वोह करने वाले हैं उन का फ़साद वाज़ेह़ हो। **175 :** न कि वोह आयाते इलाहिय्यह जिन को फ़िरऔ़न ने अपनी बे ईमानी से जादू बताया। **176 :** या'नी अपने हुक्म अपनी क़ज़ा व क़दर और अपने इस वा'दे से कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जादूगरों पर ग़ालिब करेगा। **177 :** इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का निहायत एहतिमाम फ़रमाते थे और उन के ए'राज़ करने से मग़मूम होते थे आप की तस्कीन फ़रमाई गई कि बा वुजूदे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इतना बड़ा मो'जिज़ा दिखाया फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान क़बूल किया, ऐसी ह़ालतें अम्बिया को पेश आती रही हैं आप अपनी उम्मत के ए'राज़ से रन्जीदा न हों ''مِنۡ قَوۡمِهٖ'' में जो ज़मीर है वोह या तो ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ राजेअ़ है। इस सूरत में क़ौम की ज़ुर्रिय्यत से बनी इसराईल मुराद होंगे जिन की औलाद मिस्र में आप के साथ थी और एक क़ौल येह है कि इस से वोह लोग मुराद हैं जो फ़िरऔ़न के क़त्ल से बच रहे थे क्यूं कि जब बनी इसराईल के लड़के ब हुक्मे फ़िरऔ़न क़त्ल किये जाते थे तो बनी इसराईल की बा'ज़ औ़रतें जो क़ौमे फ़िरऔ़न की औ़रतों के साथ कुछ रस्मो राह रखती थीं वोह जब बच्चा जनतीं तो उस की जान के अन्देशे से वोह बच्चा फ़िरऔ़नी क़ौम की औ़रतों को दे डालतीं, ऐसे बच्चे जो फ़िरऔ़नियों के घरों में पले थे उस रोज़ ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आए जिस दिन **अल्लाह** तआ़ला ने आप को जादूगरों पर ग़लबा दिया था और एक क़ौल येह है कि येह ज़मीर फ़िरऔ़न की त़रफ़ राजेअ़ है और क़ौमे फ़िरऔ़न की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) मुराद है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنۡهُمَا से मरवी है कि वोह क़ौमे फ़िरऔ़न के थोड़े लोग थे जो ईमान लाए। **178 :** दीन से **179 :** कि बन्दा हो कर ख़ुदाई का मुद्दई हुवा।

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ

ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो[180] अगर इस्लाम

مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ

रखते हो बोले हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया इलाही हम को ज़ालिम लोगों के लिये

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ

आज़्माइश न बना[181] और अपनी रह्मत फ़रमा कर हमें काफ़िरों से नजात दे[182] और हम ने

اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ

मूसा और उस के भाई को वह्य भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के लिये मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह

قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ

करो[183] और नमाज़ क़ाइम रखो और मुसल्मानों को ख़ुश ख़बरी सुना[184] और मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे

اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا

तू ने फ़िरऔ़न और उस के सरदारों को आराइश[185] और माल दुन्या की ज़िन्दगी में दिये ऐ रब हमारे

لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

इस लिये कि तेरी राह से बहकावें ऐ रब हमारे इन के माल बरबाद कर दे[186] और इन के दिल सख़्त कर दे

فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ

कि ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें[187] फ़रमाया तुम दोनों की दुआ़

دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

क़बूल हुई[188] तो साबित क़दम रहो[189] और नादानों की राह न चलो[190]

180 : वोह अपने फ़रमां बरदारों की मदद करता और दुश्मनों को हलाक फ़रमाता है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह पर भरोसा करना कमाले ईमान का मुक़्तज़ा है **181 :** या'नी उन्हें हम पर ग़ालिब न कर ताकि वोह येह गुमान न करें कि वोह हक़ पर हैं। **182 :** और उन के ज़ुल्मो सितम से बचा। **183 :** कि क़िब्ला रू हो, हज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام का क़िब्ला का'बा शरीफ़ था और इब्तिदा में बनी इसराईल को येही हुक्म था कि वोह घरों में छुप कर नमाज़ पढ़ें ताकि फ़िरऔ़नियों के शर व ईज़ा से मह़फ़ूज़ रहें। **184 :** मददे इलाही की और जन्नत की **185 :** उ़म्दा लिबास नफ़ीस फ़र्श क़ीमती ज़ेवर त़रह त़रह के सामान **186 :** कि वोह तेरी ने'मतों पर बजाए शुक्र के जरी हो कर मा'सियत करते हैं। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ क़बूल हुई और फ़िरऔ़नियों के दिरहमो दीनार वग़ैरा पथ्थर हो कर रह गए ह़त्ता कि फल और खाने की चीज़ें भी और येह उन नव निशानियों में से एक है जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दी गई थीं। **187 :** जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हो गए तब आप ने उन के लिये येह दुआ़ की और ऐसा ही हुवा कि वोह ग़र्क़ होने के वक़्त तक ईमान न लाए। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी शख़्स के लिये कुफ़्र पर मरने की दुआ़ करना कुफ़्र नहीं है। (مدارک) **188 :** दुआ़ की निस्बत हज़रते मूसा

وَجَاوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّ

और हम बनी इसराईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔन और उस के लश्करों ने उन का पीछा किया सरकशी और

عَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ

ज़ुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया[191] बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के

اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٩٠ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ

जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं मुसल्मान हूं[192] क्या अब[193] और

عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٩١ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ

पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था[194] आज हम तेरी लाश को उतरा दें (बाक़ी रखें)गे

لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا

कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो[195] और बेशक लोग हमारी आयतों से

لَغٰفِلُوْنَ ۝٩٢ ع وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ

ग़ाफ़िल हैं और बेशक हम ने बनी इसराईल को इ़ज़्ज़त की जगह दी[196] और उन्हें

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ

सुथरी रोज़ी अ़ता की तो इख़्तिलाफ़ में न पड़े[197] मगर इ़ल्म आने के बा'द[198] बेशक तुम्हारा रब क़ियामत

व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام दोनों की त़रफ़ की गई बा वुजूदे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام दुआ़ करते थे और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام आमीन कहते थे। इस से मा'लूम हुवा कि आमीन कहने वाला भी दुआ़ करने वालों में शुमार किया जाता है। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि आमीन दुआ़ है लिहाज़ा इस के लिये इख़्फ़ा (आहिस्ता कहना) ही मुनासिब है। (مدارک) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ और उस की मक़्बूलिय्यत के दरमियान चालीस बरस का फ़ासिला हुवा। **189 :** दा'वतो तब्लीग़ पर **190 :** जो क़बूले दुआ़ में देर होने की ह़िक्मत नहीं जानते। **191 :** तब फ़िरऔन **192 :** फ़िरऔन ने ब तमन्नाए क़बूल ईमान का मज़्मून तीन मरतबा तकरार के साथ अदा किया लेकिन येह ईमान क़बूल न हुवा क्यूं कि मलाएका और अ़ज़ाब के देखने के बा'द ईमान मक़्बूल नहीं, अगर ह़ालते इख़्तियार में वोह एक मरतबा भी येह कलिमा कहता तो उस का ईमान क़बूल कर लिया जाता लेकिन उस ने वक़्त खो दिया इस लिये उस से येह कहा गया जो आयत में आगे मज़्कूर है। **193 :** ह़ालते इज़्तिरार में जब कि ग़र्क़ में मुब्तला हो चुका है और ज़िन्दगानी की उम्मीद बाक़ी नहीं रही उस वक़्त ईमान लाता है **194 :** ख़ुद गुमराह था, दूसरों को गुमराह करता था। मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फ़िरऔन के पास एक इस्तिफ़्ता लाए जिस का मज़्मून येह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के ह़क़ में जिस ने एक शख़्स के माल व ने'मत में परवरिश पाई फिर उस की नाशुक्री की और उस के ह़क़ का मुन्किर हो गया और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया ? इस पर फ़िरऔन ने येह जवाब लिखा कि जो ग़ुलाम अपने आक़ा की ने'मतों का इन्कार करे और उस के मुक़ाबिल आए उस की सज़ा येह है कि उस को दरिया में डुबो दिया जाए जब फ़िरऔन डूबने लगा तो ह़ज़रते जिब्रील ने उस का वोही फ़तवा उस के सामने कर दिया और उस ने उस को पहचान लिया। (سُبْحٰنَ اللّٰہ) **195 :** उ़लमाए तफ़्सीर कहते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔन और उस की क़ौम को ग़र्क़ किया और मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को उन की हलाकत की ख़बर दी तो बा'ज़ बनी इसराईल को शुबा रहा और उस की अ़ज़मतो हैबत जो उन के क़ुलूब में थी उस के बाइ़स उन्हें उस की हलाकत का यक़ीन न आया, ब अम्रे इलाही दरिया ने फ़िरऔन की लाश साह़िल पर फेंक दी, बनी इसराईल ने उस को देख कर पहचाना **196 :** इ़ज़्ज़त की जगह से या तो मुल्के मिस्र और फ़िरऔन व फ़िरऔनियों के अम्लाक (जाएदाद) मुराद हैं या सर ज़मीने शाम व क़ुदुस व उर्दुन जो निहायत सर सब्ज़ो शादाब और ज़रख़ेज़ बिलाद (शहर) हैं। **197 :** बनी इसराईल जिन के

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ

के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे[199] और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुबा हो

مِّمَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ فَسْــَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ

उस में जो हम ने तेरी त़रफ़ उतारा[200] तो उन से पूछ देख जो तुझ से पहले किताब पढ़ने वाले हैं[201] बेशक

جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَكُوْنَنَّ

तेरे पास तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ आया[202] तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो और हरगिज़ उन

مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

में न होना जिन्हों ने अल्लाह की आयतें झुटलाईं कि तू ख़सारे वालों में हो जाएगा बेशक वोह

حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ

जिन पर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है[203] ईमान न लाएंगे अगर्चे सब निशानियां उन के पास आएं

حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۹۷﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَاۤ

जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें[204] तो हुई होती न कोई बस्ती[205] कि ईमान लाती[206] तो उस का ईमान

اِيْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي

काम आता हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अ़ज़ाब

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ مَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي

दुन्या की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरत्ने दिया[207] और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में

साथ येह वाक़िआत हो चुके **198 :** इल्म से मुराद यहां या तो तौरैत है जिस के मा'ना में यहूद बाहम इख़्तिलाफ़ करते थे या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी है कि इस से पहले तो यहूद सब आप के मुक़िर (मानने वाले) और आप की नुबुव्वत पर मुत्तफ़िक़ थे और तौरैत में जो आप की सिफ़ात मज़्कूर थीं उन को मानते थे लेकिन तशरीफ़ आवरी के बा'द इख़्तिलाफ़ करने लगे कुछ ईमान ले आए और कुछ लोगों ने ह़सद व अ़दावत से कुफ़्र किया। एक क़ौल येह है कि इल्म से क़ुरआन मुराद है। **199 :** इस त़रह़ कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! आप पर ईमान लाने वालों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और आप का इन्कार करने वालों को जहन्नम में अ़ज़ाब फ़रमाएगा। **200 :** ब वासित़ा अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के **201 :** या'नी उ़लमाए अहले किताब मिस्ले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब के ताकि वोह तुझ को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इत़्मीनान दिलाएं और आप की ना'त व सिफ़त जो तौरैत में मज़्कूर है वोह सुना कर शक रफ़्अ़ (दूर) करें। **फ़ाएदा :** शक इन्सान के नज़्दीक किसी अम्र में दोनों त़रफ़ों का बराबर होना है ख़्वाह इस त़रह़ हो कि दोनों जानिब बराबर क़रीने पाए जाएं ख़्वाह इस त़रह़ कि किसी त़रफ़ भी कोई क़रीना न हो। मुह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक शक अक़्सामे जह्ल से है और जह्ल व शक में आ़म व ख़ास मुत़्लक़ की निस्बत है कि हर एक शक जह्ल है और हर जह्ल शक नहीं। **202 :** जो बराहीने लाइह़ा व आयाते वाज़ेह़ा से इतना रोशन है कि इस में शक की मजाल नहीं। (خازن) **203 :** या'नी वोह क़ौल उन पर साबित हो चुका जो लौह़े मह़फ़ूज़ में लिख दिया गया है और जिस की मलाएका ने ख़बर दी है कि येह लोग काफ़िर मरेंगे वोह **204 :** और उस वक़्त का ईमान नाफ़ेअ़ नहीं। **205 :** उन बस्तियों में से जिन को हम ने हलाक किया। **206 :** और इख़्लास के साथ तौबा करती अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले। (مدارک) **207 :** क़ौमे यूनुस का वाक़िआ़ येह है कि नैनवा

الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾

जितने हैं सब के सब ईमान ले आते[208] तो क्या तुम लोगों को ज़बर दस्ती करोगे यहां तक कि मुसलमान हो जाएं[209]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى

और किसी जान की क़ुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से[210] और अ़ज़ाब उन पर

الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

डालता है जिन्हें अ़क़्ल नहीं तुम फ़रमाओ देखो[211] आस्मानों और ज़मीन में क्या क्या है[212]

وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ

और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिन के नसीब में ईमान नहीं तो उन्हें काहे का इन्तिज़ार है

اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ

मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उन से पहले हो गुज़रे[213] तुम फ़रमाओ तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا

इन्तिज़ार में हूं[214] फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को नजात देंगे बात येही है हमारे

अ़लाक़ा मौसिल में येह लोग रहते थे और कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला थे। अल्लाह तआ़ला ने हज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की तरफ़ भेजा आप ने बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का उन को हुक्म दिया। उन लोगों ने इन्कार किया, हज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की, आप ने उन्हें ब हुक्मे इलाही नुज़ूले अ़ज़ाब की ख़बर दी, उन लोगों ने आपस में कहा कि हज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कभी कोई बात ग़लत नहीं कही है देखो अगर वोह रात को यहां रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्हों ने रात यहां न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिये कि अ़ज़ाब आएगा। शब में हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام वहां से तशरीफ़ ले गए सुब्ह को आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हो गए, आस्मान पर सियाह हैबत नाक अब्र आया और धूआं कसीर जम्अ़ हुवा, तमाम शहर पर छा गया, येह देख कर उन्हें यक़ीन हुवा कि अ़ज़ाब आने वाला है तो उन्हों ने हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की जुस्तजू की और आप को न पाया, अब उन्हें और ज़ियादा अन्देशा हुवा तो वोह मअ़ अपनी औ़रतों बच्चों और जानवरों के जंगल को निकल गए, मोटे कपड़े पहने और तौबा व इस्लाम का इज़्हार किया, शोहर से बीबी और मां से बच्चे जुदा हो गए और सब ने बारगाहे इलाही में गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ की और कहा कि जो यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام लाए उस पर हम ईमान लाए और तौबए सादिक़ा (सच्ची तौबा) की, जो मज़ालिम उन से हुए थे उन को दफ़्अ़ किया, पराए माल वापस किये, हत्ता कि अगर एक पथ्थर दूसरे का किसी की बुन्याद में लग गया था तो बुन्याद उखाड़ कर पथ्थर निकाल दिया और वापस कर दिया और अल्लाह तआ़ला से इख़्लास के साथ मग़्फ़िरत की दुआ़एं कीं। परवर्दगारे आ़लम ने उन पर रह्म किया, दुआ़ क़बूल फ़रमाई अ़ज़ाब उठा दिया गया। यहां येह सुवाल पैदा होता है कि जब नुज़ूले अ़ज़ाब के बा'द फ़िरऔ़न का ईमान और उस की तौबा क़बूल न हुई तो क़ौमे यूनुस की तौबा क़बूल फ़रमाने और अ़ज़ाब उठा देने में क्या हिक्मत है? उ़लमा ने इस के कई जवाब दिये हैं : **एक** तो येह करमे ख़ास था क़ौमे हज़रते यूनुस के साथ। **दूसरा** जवाब येह है कि फ़िरऔ़न अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बा'द ईमान लाया जब उम्मीदे ज़िन्दगानी ही बाक़ी न रही और क़ौमे यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام से जब अ़ज़ाब क़रीब हुवा तो वोह उस में मुब्तला होने से पहले ईमान ले आए और अल्लाह क़ुलूब का जानने वाला है, इख़्लास मन्दों के सिद्क़ो इख़्लास का उस को इ़ल्म है। **208 :** या'नी ईमान लाना सआ़दते अज़ली पर मौक़ूफ़ है, ईमान वोही लाएंगे जिन के लिये तौफ़ीक़े इलाही मुसाइद (मददगार) हो, इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान ले आएं और राहे रास्त इख़्तियार करें फिर जो ईमान से महरूम रह जाते हैं उन का आप को ग़म होता है इस का आप को ग़म न होना चाहिये क्यूं कि अज़ल से जो शक़ी है वोह ईमान न लाएगा। **209 :** और ईमान में ज़बर दस्ती नहीं हो सकती क्यूं कि ईमान होता है तस्दीक़ व इक़रार से और जब्रो इकराह (ज़बर दस्ती करने) से तस्दीक़े क़ल्बी हासिल नहीं होती। **210 :** उस की मशिय्यत से **211 :** दिल की आंखों से और ग़ौर करो कि **212 :** जो अल्लाह तआ़ला की तौहीद पर दलालत करता है। **213 :** मिस्ल नूह व आ़द व समूद वग़ैरा। **214 :** तुम्हारी हलाकत और अ़ज़ाब के। रबीअ़ बिन अनस ने कहा कि अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाने के बा'द अगली आयत में येह बयान फ़रमाया कि जब अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता है तो अल्लाह तआ़ला रसूल को और

عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ

ज़िम्मए करम पर हक़ है मुसल्मानों को नजात देना   तुम फ़रमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से

دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ

किसी शुबे में हो तो मैं तो उसे न पूजूंगा जिसे तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो[215] हां उस **अल्लाह** को पूजता हूं

الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَاَنْ اَقِمْ

जो तुम्हारी जान निकालेगा[216]   और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में होउं   और येह कि अपना मुंह

وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ

दीन के लिये सीधा रख सब से अलग हो कर[217]   और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना   और **अल्लाह** के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ

उस की बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा   फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ

ज़ालिमों से होगा   और अगर तुझे **अल्लाह** कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस का कोई टालने वाला नहीं उस के सिवा और अगर तेरा

يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ

भला चाहे तो उस के फ़ज़्ल का रद करने वाला कोई नहीं[218]   उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ

और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है   तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

से हक़ आया[219]   तो जो राह पर आया वोह अपने भले को राह पर आया[220]   और जो बहका वोह अपने

يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ

बुरे को बहका[221]   और कुछ मैं तुम पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[222]   और उस पर चलो जो तुम पर वह्य होती है और

उन के साथ ईमान लाने वालों को नजात अ़ता फ़रमाता है। **215 :** क्यूं कि वोह मख़्लूक़ है इबादत के लाइक़ नहीं। **216 :** क्यूं कि वोह क़ादिर, मुख़्तार, इलाहे बरहक़ मुस्तहिक़े इबादत है। **217 :** या'नी मुख़्लिस मोमिन रहो **218 :** वोही नफ़्अ़ व ज़रर का मालिक है, तमाम काएनात उसी की मोहताज है, वोही हर चीज़ पर क़ादिर और जूदो करम वाला है, बन्दों को उस की तरफ़ रग़बत और उस का ख़ौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर ए'तिमाद चाहिये और नफ़्अ़ व ज़रर जो कुछ भी है वोही **219 :** हक़ से यहां क़ुरआन मुराद है या इस्लाम या सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। **220 :** क्यूं कि इस का नफ़्अ़ उसी को पहुंचेगा। **221 :** क्यूं कि इस का वबाल उसी पर है। **222 :** कि तुम पर जब्र करूं

اصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

सब्र करो[223] यहां तक कि **अल्लाह** हुक्म फ़रमाए[224] और वोह सब से बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है[225]

सूरए हूद मक्किय्या है, इस में एक सो तेईस आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह्म वाला[1]

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं[2] फिर तफ़्सील की गईं[3] हिक्मत वाले ख़बरदार की त़रफ़ से

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ

कि बन्दगी न करो मगर **अल्लाह** की बेशक मैं तुम्हारे लिये उस की त़रफ़ से डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूं और येह कि

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ

अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरत्ना (फ़ाएदा) देगा[4] एक ठहराए

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ

वा'दे तक और हर फ़ज़ीलत वाले को[5] उस का फ़ज़्ल पहुंचाएगा[6] और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर

223 : कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब और उन की ईज़ा पर **224 :** मुश्रिकीन से क़िताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का। **225 :** कि उस के हुक्म में ख़त़ा व ग़लत़ का एह्तिमाल नहीं और वोह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी ह़ालात सब का जानने वाला है, उस का फ़ैसला दलील व गवाह का मोहताज नहीं। **1 :** सूरए हूद मक्किय्या है ह़सन व इक्रिमा वग़ैरहुम मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आयत "وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ" के सिवा बाक़ी तमाम सूरत मक्किय्या है। मक़ातिल ने कहा कि आयत "فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ" और "اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ" और "اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ" के इलावा तमाम सूरत मक्की है, इस में दस रुकूअ़ और एक सो तेईस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और नव हज़ार पांच सो सरसठ ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हुज़ूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए। फ़रमाया : मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ़, सूरए "عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ" और सूरए "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" ने बूढ़ा कर दिया। (ترمذی) ग़ालिबन येह इस वज्ह से फ़रमाया कि इन सूरतों में क़ियामत व बअ़्स व ह़िसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है। **2 :** जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा : "تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ"। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि "اُحْكِمَتْ" के मा'ना येह हैं कि इन की नज़्म मोह्कम व उस्तुवार की गई। इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि इस में नक़्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वोह बिनाए मोह्कम है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कोई किताब इन की नासिख़ नहीं जैसा कि येह दूसरी किताबों और शरीअ़तों की नासिख़ हैं। **3 :** और सूरत सूरत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गईं या अ़लाह़दा अ़लाह़दा नाज़िल हुईं या अ़क़ाइद व अह़काम व मवाइज़ व क़िसस और ग़ैबी ख़बरें इन में ब तफ़्सील बयान फ़रमाई गईं **4 :** उ़म्रे दराज़ और ऐशे वसीअ़ व रिज़्के कसीर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करना दराज़िये उ़म्र व कशाइशे रिज़्क़ के लिये बेहतर अ़मल है। **5 :** जिस ने दुन्या में आ'माले फ़ाज़िला किये हों और उस की त़ाआ़त व ह़सनात ज़ियादा हों **6 :** उस को जन्नत में ब क़द्रे आ'माल दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : आयत के मा'ना येह हैं कि जिस ने **अल्लाह** के लिये अ़मल किया, **अल्लाह** तआ़ला आयिन्दा के लिये उसे अ़मले नेक व त़ाअ़त की तौफ़ीक़ देता है।

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝٣ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

बड़े दिन[7] के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करता हूं तुम्हें **अल्लाह** ही की त़रफ़ फिरना है[8] और वोह हर शै पर

قَدِيْرٌ ۝٤ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا

क़ादिर है[9] सुनो वोह अपने सीने दोहरे करते (मुंह छुपाते) हैं कि **अल्लाह** से पर्दा करें[10] सुनो

حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ

जिस वक़्त वोह अपने कपड़ों से सारा बदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी **अल्लाह** उन का छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है

اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٥

बेशक वोह दिलों की बात जानने वाला है

---

7 : या'नी रोज़े क़ियामत 8 : आख़िरत में वहां नेकियों और बदियों की जज़ा व सज़ा मिलेगी। 9 : दुन्या में रोज़ी देने पर भी, मौत देने पर भी, मौत के बा'द ज़िन्दा करने और सवाब व अ़ज़ाब पर भी। 10 **शाने नुज़ूल :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अख़्नस बिन शरीक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई येह बहुत शीरीं गुफ़्तार शख़्स था, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने आता तो बहुत ख़ुशामद की बातें करता और दिल में बुग़्ज़ो अ़दावत छुपाए रखता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि वोह अपने सीनों में अ़दावत छुपाए रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है, एक क़ौल येह है कि बा'ज़े मुनाफ़िक़ीन की आ़दत थी कि जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का सामना होता तो सीना और पीठ झुकाते और सर नीचा करते चेहरा छुपा लेते ताकि उन्हें रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم देख न पाएं इस पर येह आयत नाज़िल हुई। बुख़ारी ने अफ़्राद में एक ह़दीस रिवायत की, कि मुसल्मान बौलो बराज़ व मुजामअ़त के वक़्त अपने बदन खोलने से शरमाते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई कि **अल्लाह** से बन्दे का कोई ह़ाल छुपा ही नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि वोह शरीअ़त की इजाज़तों पर आ़मिल रहे।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا

और ज़मीन पर चलने वाला कोई[11] ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो[12] और जानता है कि कहां ठहरेगा[13]

وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

और कहां सिपुर्द होगा[14] सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब[15] में है और वोही है जिस ने आस्मानों और

الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ

ज़मीन को छ[6] दिन में बनाया और उस का अ़र्श पानी पर था[16] कि तुम्हें आज़्माए[17] तुम में

اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ

किस का काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बा'द उठाए जाओगे

لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا

तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि येह[18] तो नहीं मगर खुला जादू[19] और अगर हम उन से

عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰۤى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ

अ़ज़ाब[20] कुछ गिनती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने उसे रोका है[21] सुन लो जिस दिन

يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۸﴾

उन पर आएगा उन से फेरा न जाएगा और उन्हें घेर लेगा वोही अ़ज़ाब जिस की हंसी उड़ाते थे

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ

और अगर हम आदमी को अपनी किसी रह़मत का मज़ा दें[22] फिर उसे उस से छीन लें ज़रूर वोह बड़ा ना उम्मीद

كَفُوْرٌ ﴿۹﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

नाशुक्रा है[23] और अगर हम उसे ने'मत का मज़ा दें उस मुसीबत के बा'द जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि बुराइयां

11 : जानदार हो 12 : या'नी वोह अपने फ़ज़्ल से हर जानदार के रिज़्क़ का कफ़ील है। 13 : या'नी उस के जाए सुकूनत को जानता है। 14 : सिपुर्द होने की जगह से या मदफ़न मुराद है या मकान या मौत या क़ब्र। 15 : या'नी लौहे मह़फ़ूज़ 16 : या'नी अ़र्श के नीचे पानी के सिवा और कोई मख़्लूक़ न थी। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि अ़र्श और पानी आस्मानों और ज़मीनों की पैदाइश से क़ब्ल पैदा फ़रमाए गए। 17 : या'नी आस्मान व ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात को पैदा किया जिस में तुम्हारे मनाफ़ेअ़ व मसालेह़ (भलाइयां) हैं ताकि तुम्हें आज़्माइश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्र गुज़ार, मुत्तक़ी, फ़रमां बरदार है और 18 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ जिस में मरने के बा'द उठाए जाने का बयान है येह 19 : या'नी बातिल और धोका। 20 : जिस का वा'दा किया है 21 : वोह अ़ज़ाब क्यूं नाज़िल नहीं होता ? क्या देर है ? कुफ़्फ़ार का येह जल्दी करना बराहे तक्ज़ीब व इस्तिह्ज़ा है। 22 : सिह़्ह़त व अम्न का या वुस्अ़ते रिज़्क़ व दौलत का 23 : कि दोबारा उस ने'मत के पाने से मायूस हो जाता है और अल्लाह के फ़ज़्ल से अपनी उम्मीद क़त्अ़ (ख़त्म) कर लेता है और सब्रो रिज़ा पर साबित नहीं रहता और गुज़श्ता ने'मत की नाशुक्री करता है।

السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۙ﴿۱۰﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا

मुझ से दूर हुई बेशक वोह ख़ुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है[24] मगर जिन्हों ने सब्र किया और

الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ

अच्छे काम किये[25] उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या जो वह्य तुम्हारी त़रफ़

مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ

होती है उस में से कुछ तुम छोड़ दोगे और उस पर दिलतंग होगे[26] इस बिना पर कि वोह कहते हैं इन के साथ

كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

कोई ख़ज़ाना क्यूं न उतरा या इन के साथ कोई फ़िरिश्ता आता तुम तो डर सुनाने वाले हो[27] और **अल्लाह** हर चीज़ पर

وَّكِيْلٌ ﴿۱۲﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ

मुहाफ़िज़ है क्या[28] येह कहते हैं कि इन्हों ने इसे जी से बना लिया तुम फ़रमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ[29]

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَاِلَّمْ

और **अल्लाह** के सिवा जो मिल सकें[30] सब को बुला लो अगर सच्चे हो[31] तो ऐ मुसल्मानो

يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

अगर वोह तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सकें तो समझ लो कि वोह **अल्लाह** के इल्म ही से उतरा है और येह कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं

فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ

तो क्या अब तुम मानोगे[32] जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो[33] हम इस में

24 : बजाए शुक्र गुज़ार होने और ह़क़्क़े ने'मत अदा करने के। **25 :** मुसीबत पर साबिर और ने'मत पर शाकिर रहे **26 :** तिरमिज़ी ने कहा कि इस्तिफ़्हाम "नह्य" के मा'ना में है या'नी आप की त़रफ़ जो वह्य होती है वोह सब आप उन्हें पहुंचाएं और दिलतंग न हों। येह तब्लीग़े रिसालत की ताकीद है बा वुजूदे कि **अल्लाह** तआ़ला जानता है कि उस के रसूल ﷺ अदाए रिसालत में कमी करने वाले नहीं और उस ने इन को इस से मा'सूम फ़रमाया है। इस ताकीद में नबी ﷺ की तस्कीने ख़ात़िर भी है और कुफ़्फ़ार की मायूसी भी कि उन का इस्तिहज़ा तब्लीग़ के काम में मुख़िल नहीं हो सकता। **शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या मख़्ज़ूमी ने रसूले करीम ﷺ से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आप का ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है तो उस ने आप पर ख़ज़ाना क्यूं नहीं उतारा ? या आप के साथ कोई फ़िरिश्ता क्यूं नहीं भेजा ? जो आप की रिसालत की गवाही देता, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **27 :** तुम्हें क्या परवाह अगर कुफ़्फ़ार न मानें या तमस्ख़ुर करें। **28 :** कुफ़्फ़ारे मक्का क़ुरआने करीम की निस्बत **29 :** क्यूं कि इन्सान अगर ऐसा कलाम बना सकता है तो इस के मिस्ल बनाना तुम्हारे मक़्दूर से बाहर न होगा ! तुम भी अ़रब हो फ़सीह़ो बलीग़ हो कोशिश करो। **30 :** अपनी मदद के लिये **31 :** इस में कि येह कलाम इन्सान का बनाया हुवा है। **32 :** और यक़ीन रखोगे कि येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है, या'नी ए'जाज़े क़ुरआन देख लेने के बा'द ईमान व इस्लाम पर साबित रहो। **33 :** और अपनी दून हिम्मती (ग़फ़्लत) से आख़िरत पर नज़र न रखता हो।

اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ

उन का पूरा फल दे देंगे[34] और इस में कमी न देंगे ये हैं वोह जिन के लिये

لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद (बरबाद) हुए जो उन के

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ

अ़मल थे[35] तो क्या वोह जो अपने रब की तरफ़ से रोशन दलील पर हो[36] और उस पर अल्लाह की तरफ़ से गवाह आए[37] और उस

قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

से पहले मूसा की किताब[38] पेशवा और रहमत वोह इस पर[39] ईमान लाते हैं और जो इस का मुन्किर हो

بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ الْحَقُّ

सारे गुरौहों में[40] तो आग उस का वा'दा है तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ उस में शक न हो बेशक वोह ह़क़ है

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى

तेरे रब की तरफ़ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ

झूट बांधे[41] वोह अपने रब के हुज़ूर पेश किये जाएंगे[42] और गवाह कहेंगे येह हैं

الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ

जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला था अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत[43] जो

34 : और जो आ'माल उन्हों ने त़लबे दुन्या के लिये किये हैं उस का अज्र सिह़ह़तो दौलत, वुस्अ़ते रिज़्क़, कस्रते औलाद वग़ैरा से दुन्या ही में पूरा कर देंगे। 35 **शाने नुज़ूल :** ज़ह़्ह़ाक ने कहा कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में है कि वोह अगर सिलए रेह़्मी करें या मोह़ताजों को दें या किसी परेशान ह़ाल की मदद करें या इस त़रह़ की कोई और नेकी करें तो अल्लाह तआ़ला वुस्अ़ते रिज़्क़ वग़ैरा से उन के अ़मल की जज़ा दुन्या ही में दे देता है और आख़िरत में उन के लिये कोई हिस्सा नहीं। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सवाबे आख़िरत के तो मो'तक़िद न थे और जिहादों में माले ग़नीमत ह़ासिल करने के लिये शामिल होते थे। 36 : वोह उस की मिस्ल हो सकता है जो दुन्या की ज़िन्दगी और इस की आराइश चाहता हो, ऐसा नहीं, इन दोनों में अ़ज़ीम फ़र्क़ है। रोशन दलील से वोह दलीले अ़क़्ली मुराद है जो इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर दलालत करे और उस शख़्स से जो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हो वोह यहूद मुराद हैं जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम। 37 : और उस की सिह़ह़त की गवाही दे। येह गवाह क़ुरआने मजीद है। 38 : या'नी तौरैत। 39 : या'नी क़ुरआन पर 40 : ख़्वाह कोई भी हों। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जान है ! इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी जिस को भी मेरी ख़बर पहुंचे और वोह मेरे दीन पर ईमान लाए बिग़ैर मर जाए, वोह ज़रूर जहन्नमी है। 41 : और उस के लिये शरीक व औलाद बताए। इस आयत से साबित होता है कि अल्लाह तआ़ला पर झूट बोलना बद तरीन ज़ुल्म है। 42 : रोज़े क़ियामत और उन से उन के आ'माल दरयाफ़्त किये जाएंगे और अम्बिया व मलाएका उन पर गवाही देंगे। 43 : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

अल्लाह की राह से रोकते हैं और इस में कजी चाहते हैं और वोही आख़िरत के

كٰفِرُوْنَ ۝١٩ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ

मुन्किर हैं वोह थकाने वाले नहीं ज़मीन में[44] और न अल्लाह से जुदा

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ

उन के कोई हिमायती[45] उन्हें अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब होगा[46] वोह न सुन सकते

السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ

थे और न देखते[47] वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली और

ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ

उन से खोई गईं जो बातें जोड़ते थे ख़्वाह न ख़्वाह (यक़ीनन) वोही आख़िरत में सब से

الْاَخْسَرُوْنَ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى

ज़ियादा नुक़्सान में हैं[48] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की त़रफ़

رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٣ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ

रुजूअ़ लाए वोह जन्नत वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे दोनों फ़रीक़[49] का ह़ाल ऐसा है

كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا

जैसे एक अन्धा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता[50] क्या इन दोनों का ह़ाल एक सा है[51] तो क्या

تَذَكَّرُوْنَ ۝٢٤ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۘ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ

तुम ध्यान नहीं करते और बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा[52] कि मैं तुम्हारे लिये सरीह़ डर

को तमाम ख़ल्क़ के सामने कहा जाएगा कि येह वोह हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत, इस त़रह़ वोह तमाम ख़ल्क़ के सामने रुस्वा किये जाएंगे। **44 :** अल्लाह को। अगर वोह उन पर अ़ज़ाब करना चाहे क्यूं कि वोह उस के क़ब्ज़े और उस की मिल्क में हैं, न उस से भाग सकते हैं न बच सकते हैं। **45 :** कि उन की मदद करें और उन्हें उस के अ़ज़ाब से बचाएं। **46 :** क्यूं कि उन्हों ने लोगों को राहे ख़ुदा से रोका और मरने के बा'द उठने का इन्कार किया। **47 :** क़तादा ने कहा कि वोह ह़क़ सुनने से बहरे हो गए तो कोई ख़ैर की बात सुन कर नफ़्अ़ नहीं उठाते और न वोह आयाते क़ुदरत को देख कर फ़ाएदा उठाते हैं। **48 :** कि उन्हों ने बजाए जन्नत के जहन्नम को इख़्तियार किया। **49 :** या'नी काफ़िर और मोमिन **50 :** काफ़िर उस की मिस्ल है जो न देखे न सुने, येह नाक़िस है और मोमिन उस की मिस्ल है जो देखता भी है और सुनता भी है, वोह कामिल है ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ रखता है। **51 :** हरगिज़ नहीं **52 :** उन्हों ने क़ौम से फ़रमाया।

مُّبِيْنٌ ﴿۲۵﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ

सुनाने वाला हूं कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुम पर एक मुसीबत वाले दिन के अ़ज़ाब से

اَلِیْمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا

डरता हूं[53] तो उस की क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते

مِّثْلَنَا وَ مَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ ۚ وَ

हैं[54] और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने[55] सरसरी नज़र से[56] और

مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ یٰقَوْمِ

हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते[57] बल्कि हम तुम्हें[58] झूटा ख़याल करते हैं बोला ऐ मेरी क़ौम

اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ اٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं[59] और उस ने मुझे अपने पास से रह़मत बख़्शी[60]

فَعُمِّیَتْ عَلَیْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَ اَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ یٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ

तो तुम उस से अन्धे रहे क्या हम उसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो[61] और ऐ क़ौम मैं तुम से कुछ इस पर[62]

عَلَیْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ

माल नहीं मांगता[63] मेरा अज्र तो **अल्लाह** ही पर है और मैं मुसल्मानों को दूर करने वाला नहीं[64]

اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ لٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَ یٰقَوْمِ مَنْ

बेशक वोह अपने रब से मिलने वाले हैं[65] लेकिन मैं तुम को निरे जाहिल लोग पाता हूं[66] और ऐ क़ौम

53 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام चालीस साल के बा'द मब्ऊ़स हुए और नव सो पचास साल अपनी क़ौम को दा'वत फ़रमाते रहे और तूफ़ान के बा'द साठ बरस दुन्या में रहे तो आप की उ़म्र एक हज़ार पचास साल की हुई, इस के इ़लावा उ़म्र शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ और भी क़ौल हैं। (خازن) **54 :** इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें मुब्तला हो कर इस्लाम से मह़रूम रहीं, क़ुरआने पाक में जा ब जा उन के तज़्किरे हैं। इस उम्मत में भी बहुत से बद नसीब सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बशर कहते और हमसरी का ख़याले फ़ासिद रखते हैं। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें गुमराही से बचाए। **55 :** कमीनों से मुराद उन की वोह लोग थे जो उन की नज़र में ख़सीस (अदना व मा'मूली) पेशे रखते थे और ह़क़ीक़त येह है कि उन का येह क़ौल जह्ले ख़ालिस था क्यूं कि इन्सान का मर्तबा दीन की इत्तिबाअ़ और रसूल की फ़रमां बरदारी से है मालो मन्सब व पेशे को इस में दख़्ल नहीं। दीनदार नेक सीरत पेशावर को नज़रे ह़क़ारत से देखना और ह़क़ीर जानना जाहिलाना फ़े'ल है। **56 :** या'नी बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के। **57 :** माल और रियासत में, उन का येह क़ौल भी जह्ल था क्यूं कि **अल्लाह** के नज़्दीक बन्दे के लिये ईमान व त़ाअ़त सबबे फ़ज़ीलत है न कि माल व रियासत। **58 :** नुबुव्वत के दा'वे में और तुम्हारे मुत्तबिईन को इस की तस्दीक़ में **59 :** जो मेरे दा'वे के सिद्क़ पर गवाह हो **60 :** या'नी नुबुव्वत अ़त़ा की **61 :** और इस ह़ुज्जत को ना पसन्द रखते हो। **62 :** या'नी तब्लीग़े रिसालत पर **63 :** कि तुम पर उस का अदा करना गिरां हो **64 :** येह ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने उन की इस बात के जवाब में फ़रमाया था जो वोह लोग कहते थे कि ऐ नूह़ ! रज़ील (ह़क़ीर व कमीन) लोगों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हमें आप की मजलिस में बैठने से शर्म न आए। **65 :** और उस के क़ुर्ब से फ़ाइज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूं **66 :** ईमानदारों को रज़ील कहते हो और

يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳۰ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ

मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूंगा तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं और मैं तुम से नहीं कहता कि

عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ

मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कि मैं ग़ैब जान लेता हूं और न येह कहता हूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं[67] और मैं उन्हें नहीं कहता

لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْۤ

जिन को तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें अल्लाह कोई भलाई न देगा अल्लाह ख़ूब जानता है जो

اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّىْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۳۱ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا

उन के दिलों में है[68] ऐसा करूं[69] तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूं[70] बोले ऐ नूह़ तुम हम से झगड़े

فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۳۲ قَالَ

और बहुत ही झगड़े तो ले आओ जिस[71] का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो बोला

اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝۳۳ وَلَا يَنْفَعُكُمْ

वोह तो अल्लाह तुम पर लाएगा अगर चाहे और तुम थका न सकोगे[72] और तुम्हें मेरी नसीह़त

نُصْحِىْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ

नफ़्अ़ न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूं जब कि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे वोह

उन की क़द्र नहीं करते और नहीं जानते कि वोह तुम से बेहतर हैं। **67 :** ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की क़ौम ने आप की नुबुव्वत में तीन शुब्हे किये थे : **एक** शुबा तो येह कि ''مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ'' कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते या'नी तुम मालो दौलत में हम से ज़ियादा नहीं हो। इस के जवाब में ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : ''لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ'' या'नी मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, तो तुम्हारा येह ए'तिराज़ बिल्कुल बे मह़ल है। मैं ने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुन्यवी दौलत का तुम को मुतवक़्क़ेअ़ नहीं किया और अपनी दा'वत को माल के साथ वाबस्ता नहीं किया फिर तुम येह कहने के कैसे मुस्तह़िक़ हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते और तुम्हारा येह ए'तिराज़ महूज़ बेहूदा है। **दूसरा** शुबा क़ौमे नूह़ ने येह किया था : ''مَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ'' या'नी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से। मतलब येह था कि वोह भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मोमिन हैं बातिन में नहीं। इस के जवाब में ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूं तो मेरे अह़काम ग़ैब पर मब्नी हैं ताकि तुम्हें येह ए'तिराज़ करने का मौक़अ़ होता। जब मैं ने येह कहा ही नहीं, तो ए'तिराज़ बे मह़ल है, और शरअ़ में ज़ाहिर ही का ए'तिबार है, लिहाज़ा तुम्हारा ए'तिराज़ बिल्कुल बे जा है नीज़ ''لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ'' फ़रमाने में क़ौम पर एक लतीफ़ ता'रीज़ भी है कि किसी के बातिन पर हुक्म करना उस का काम है जो ग़ैब का इल्म रखता हो। मैं ने तो इस का दा'वा नहीं किया बा वुजूदे कि नबी हूं ! तुम किस त़रह़ कहते हो कि वोह दिल से ईमान नहीं लाए। **तीसरा** शुबा उस क़ौम का येह था कि ''مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا'' या'नी हम तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं। इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं तुम से येह नहीं कहता कि मैं फ़िरिश्ता हूं या'नी मैं ने अपनी दा'वत को अपने फ़िरिश्ता होने पर मौक़ूफ़ नहीं किया था कि तुम्हें येह ए'तिराज़ का मौक़अ़ मिलता कि जताते तो थे वोह अपने आप को फ़िरिश्ता और थे बशर लिहाज़ा तुम्हारा येह ए'तिराज़ भी बातिल है। **68 :** नेकी या बदी, इख़्लास या निफ़ाक़। **69 :** या'नी अगर मैं उन के ईमाने ज़ाहिर को झुटला कर उन के बातिन पर इल्ज़ाम लगाऊं और उन्हें निकाल दूं **70 :** और بِحَمْدِ اللّٰه मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूं तो ऐसा कभी न करूंगा। **71 :** अ़ज़ाब **72 :** उस को अ़ज़ाब करने से, या'नी न उस अ़ज़ाब

رَبُّكُمْ ۟ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ؕ﴿۳۴﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

तुम्हारा रब है और उसी की त़रफ़ फिरोगे[73] क्या येह कहते हैं कि इन्हों ने इसे अपने जी से बना लिया[74] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने बना लिया होगा

فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ

तो मेरा गुनाह मुझ पर है[75] और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूं और नूह़ को वह़्य हुई कि तुम्हारी

يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾

क़ौम से मुसल्मान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उस पर जो वोह करते हैं[76]

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ

और कश्ती बना हमारे सामने[77] और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना[78] वोह ज़रूर

مُّغْرَقُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۟ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا

डुबाए जाएंगे[79] और नूह़ कश्ती बनाता है और जब उस की क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर

مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ؕ﴿۳۸﴾ فَسَوْفَ

हंसते[80] बोला अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे[81] जैसा तुम हंसते हो[82] तो अब

تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۹﴾

जान जाओगे किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करे[83] और उतरता है वोह अ़ज़ाब जो हमेशा रहे[84]

को रोक सकोगे न उस से बच सकोगे। **73 :** आख़िरत में वोही तुम्हारे आ'माल का बदला देगा। **74 :** और इस त़रह़ ख़ुदा के कलाम और उस के अह़काम मानने से गुरेज़ करते हैं और उस के रसूल पर बोहतान उठाते हैं और उन की त़रफ़ इफ़्तिरा की निस्बत करते हैं जिन का सिद्क़ (सच्चा होना) बराहीने बय्यिना और हुज्जते क़विय्या (इन्तिहाई वाज़ेह़ और मज़बूत़ दलाइल) से साबित हो चुका है, लिहाज़ा अब उन से **75 :** ज़रूर इस का वबाल आएगा लेकिन "بِحَمْدِاللّٰه" मैं सादिक़ हूं, तो तुम समझ लो कि तुम्हारी तक्ज़ीब का वबाल तुम पर पड़ेगा। **76 :** या'नी कुफ़्र और आप की तक्ज़ीब और आप की ईज़ा क्यूं कि अब आप के आ'दा से इन्तिक़ाम लेने का वक़्त आ गया। **77 :** हमारी ह़िफ़ाज़त में, हमारी ता'लीम से **78 :** या'नी उन की शफ़ाअ़त और दफ़्ए अ़ज़ाब की दुआ़ न करना क्यूं कि उन का ग़र्क़ मुक़द्दर हो चुका है **79 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ब हुक्मे इलाही साल के दरख़्त बोए, बीस साल में येह दरख़्त तय्यार हुए। इस अ़र्से में मुत़्लक़न कोई बच्चा पैदा न हुवा, इस से पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वोह बालिग़ हो गए और उन्हों ने भी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कश्ती बनाने में मश्ग़ूल हुए। **80 :** और कहते ऐ नूह़! क्या करते हो? आप फ़रमाते : ऐसा मकान बनाता हूं जो पानी पर चले। येह सुन कर हंसते क्यूं कि आप कश्ती जंगल में बनाते थे जहां दूर दूर तक पानी न था और वोह लोग तमस्ख़ुर (मज़ाक़) से येह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे अब बढ़ई हो गए। **81 :** तुम्हें हलाक होता देख कर **82 :** कश्ती देख कर। मरवी है कि येह कश्ती दो साल में तय्यार हुई, इस की लम्बाई तीन सो गज़, चौड़ाई पचास गज़, ऊंचाई तीस गज़ थी, इस में और भी अक़्वाल हैं। इस कश्ती में तीन दरजे बनाए गए थे। त़ब्क़ए ज़ेरीं (निचली मन्ज़िल) में वुह़ूश (जंगली जानवर) और दरिन्दे (चीर फाड़ करने वाले जानवर) और हवाम (ज़मीन पर रींगने वाले जानवर) और दरमियानी त़बक़े में चौपाए वग़ैरा, और त़ब्क़ए आ'ला में ख़ुद ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और आप के साथी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का जसदे मुबारक जो औ़रतों और मर्दों के दरमियान ह़ाइल था और खाने वग़ैरा का सामान था। परिन्दे भी ऊपर ही के त़ब्क़े में थे। (خازن ومدارک) **83 :** दुन्या में और वोह अ़ज़ाबे ग़र्क़ है। **84 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया[85] और तन्नूर उबला[86] हम ने फ़रमाया कश्ती में सुवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा

اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ

नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है[87] उन के सिवा अपने घर वालों और बाक़ी मुसल्मानों को और उस के साथ मुसल्मान न थे

اِلَّا قَلِيْلٌ ۞ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ

मगर थोड़े[88] और बोला इस में सुवार हो[89] अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना[90] बेशक

رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ وَهِىَ تَجْرِىْ بِهِمْ فِىْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى

मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है और वोह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़[91] और नूह़ ने

نُوْحُ ابْنَهٗ وَكَانَ فِىْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَىَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۞

अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से कनारे था[92] ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो[93]

قَالَ سَاٰوِیْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِىْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ

बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वोह मुझे पानी से बचा लेगा कहा आज अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला

اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۞

नहीं मगर जिस पर वोह रह़्म करे और उन के बीच में मौज आड़े आई तो वोह डूबतों में रह गया[94]

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِىْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِىْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِىَ

और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम

85 : अ़ज़ाब व हलाक का **86 :** और पानी ने उस में से जोश मारा। तन्नूर से या रूए ज़मीन मुराद है या येही तन्नूर जिस में रोटी भी पकाई जाती है। इस में भी चन्द क़ौल है : एक क़ौल येह है कि वोह तन्नूर पथ्थर का था, ह़ज़रते ह़व्वा का जो आप को तर्के में पहुंचा था और वोह या शाम में था या हिन्द में और तन्नूर का जोश मारना अ़ज़ाब आने की अ़लामत थी। **87 :** या'नी उन के हलाक का हुक्म हो चुका है और उन से मुराद आप की बीवी वाइला जो ईमान न लाई थी और आप का बेटा कन्आ़न है। चुनान्चे ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन सब को सुवार किया। जानवर आप के पास आते थे और आप का दाहना हाथ नर पर और बायां मादा पर पड़ता था और आप सुवार करते जाते थे। **88 :** मुक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द व औ़रत बहत्तर 72 थे और इस में और अक़्वाल भी हैं, सह़ीह़ ता'दाद अल्लाह जानता है उन की ता'दाद किसी सह़ीह़ ह़दीस में वारिद नहीं है। **89 :** येह कहते हुए कि **90 :** इस में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो उस को ''بِسْمِ اللّٰه'' पढ़ कर शुरूअ़ करे ताकि उस काम में बरकत हो और वोह सबबे फ़लाह़ हो। ज़ह़ह़ाक ने कहा कि जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام चाहते थे कि कश्ती चले तो ''بِسْمِ اللّٰه'' फ़रमाते थे कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाए ''بِسْمِ اللّٰه'' फ़रमाते थे ठहर जाती थी। **91 :** चालीस शबो रोज़ आस्मान से मींह बरसता रहा और ज़मीन से पानी उबलता रहा यहां तक कि तमाम पहाड़ ग़र्क़ हो गए। **92 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام से जुदा था, आप के साथ सुवार न हुवा था। **93 :** कि हलाक हो जाएगा। येह लड़का मुनाफ़िक़ था, अपने वालिद पर अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करता था और बात़िन में काफ़िरों के साथ मुत्तफ़िक़ था। (حسینی) **94 :** जब तूफ़ान अपनी निहायत (इन्तिहा) पर पहुंचा और कुफ़्फ़ार ग़र्क़ हो चुके तो हुक्मे इलाही आया।

الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِیِّ وَقِیْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٤٤﴾ وَ

हुवा और कश्ती[95] कोहे जूदी पर ठहरी[96] और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग और

نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَ اِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ

नूह़ ने अपने रब को पुकारा अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है[97] और बेशक तेरा वा'दा सच्चा है

وَ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِیْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ یٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ

और तू सब से बढ़ कर हुक्म वाला[98] फ़रमाया ऐ नूह़ वोह तेरे घर वालों में नहीं[99] बेशक उस के

عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ﳓ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ

काम बड़े ना लाइक़ हैं तो मुझ से वोह बात न मांग जिस का तुझे इ़ल्म नहीं[100] मैं तुझे नसीह़त फ़रमाता हूं कि

تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَیْسَ

नादान न बन अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझ से वोह चीज़ मांगूं जिस का

لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَ تَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿٤٧﴾ قِیْلَ

मुझे इ़ल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रह़्म न करे तो मैं ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) हो जाऊं फ़रमाया गया

یٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَ بَرَكٰتٍ عَلَیْكَ وَ عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ

ऐ नूह़ कश्ती से उतर हमारी त़रफ़ से सलाम और बरकतों के साथ[101] जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर[102] और

اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ یَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ

कुछ गुरौह वोह हैं जिन्हें हम दुन्या बरतने देंगे[103] फिर उन्हें हमारी त़रफ़ से दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा[104] येह ग़ैब की ख़बरें हैं

95 : छ[6] महीने तमाम ज़मीन का त़वाफ़ कर के **96 :** जो मौसिल या शाम की ह़ुदूद में वाक़ेअ़ है, ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام कश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुह़र्रम को कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी तो आप ने उस के शुक्र का रोज़ा रखा और अपने तमाम साथियों को भी रोज़े का हुक्म फ़रमाया। **97 :** और तू ने मुझ से मेरे और मेरे घर वालों की नजात का वा'दा फ़रमाया है **98 :** तो इस में क्या ह़िक्मत है ? शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया कि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का बेटा कन्आ़न मुनाफ़िक़ था और आप के सामने अपने आप को मोमिन ज़ाहिर करता था अगर वोह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप **अल्लाह** तआ़ला से उस के नजात की दुआ़ न करते। (مدارک) **99 :** इस से साबित हुवा कि नसबी क़राबत से दीनी क़राबत ज़ियादा क़वी है। **100 :** कि वोह मांगने के क़ाबिल है या नहीं। **101 :** इन बरकतों से आप की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) और आप के मुत्तबिईन की कसरत मुराद है कि ब कसरत अम्बिया और अइम्मए दीन आप की नस्ले पाक से हुए, उन की निस्बत फ़रमाया कि येह बरकात। **102 :** मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने कहा कि इन गुरौहों में क़ियामत तक होने वाला हर एक मोमिन दाख़िल है। **103 :** इस से ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द पैदा होने वाले काफ़िर गुरौह मुराद हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला उन की मीआ़दों तक फ़राख़िये ऐ़श (लम्बी ज़िन्दगी) और वुस्अ़ते रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा। **104 :** आख़िरत में।

نُوۡحِيۡهَاۤ اِلَيۡكَ ۚ مَا كُنۡتَ تَعۡلَمُهَاۤ اَنۡتَ وَلَا قَوۡمُكَ مِنۡ قَبۡلِ هٰذَا ۛ

कि हम तुम्हारी तरफ़ वह्य करते हैं[105] उन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस[106] से पहले

فَاصۡبِرۡ ۛ اِنَّ الۡعَاقِبَةَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۴۹﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمۡ هُوۡدًا ؕ قَالَ

तो सब्र कर[107] बेशक भला अन्जाम परहेज़ गारों का[108] और आ़द की त़रफ़ उन के हमक़ौम हूद को[109] कहा

يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَـكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا مُفۡتَرُوۡنَ ﴿۵۰﴾

ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो[110] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तुम तो निरे मुफ़्तरी (बिल्कुल झूटे इल्ज़ाम आ़इद करने वाले) हो[111]

يٰقَوۡمِ لَاۤ اَسۡـئَلُكُمۡ عَلَيۡهِ اَجۡرًا ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ ؕ اَفَلَا

ऐ क़ौम मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया[112] तो क्या

تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۵۱﴾ وَيٰقَوۡمِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّكُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَيۡهِ يُرۡسِلِ

तुम्हें अ़क़्ल नहीं[113] और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो[114] फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर

السَّمَآءَ عَلَيۡكُمۡ مِّدۡرَارًا وَّيَزِدۡكُمۡ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمۡ وَلَا تَتَوَلَّوۡا

ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी क़ुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा[115] और जुर्म करते हुए

105 : येह ख़िताब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को फ़रमाया। **106 :** ख़बर देने **107 :** अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर जैसा कि नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर सब्र किया। **108 :** कि दुन्या में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर और आख़िरत में मुसाब व माजूर (अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़)। **109 :** नबी बना कर भेजा, ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को ''اَخٌ'' (भाई) ब ए'तिबारे नसब फ़रमाया गया, इसी लिये ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इस लफ़्ज़ का तरजमा हमक़ौम किया ''اَعْلَى اللّٰهُ مَقَامَهٗ'' (**अल्लाह** तआ़ला इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए)। **110 :** उस की तौह़ीद के मो'तक़िद रहो, उस के साथ किसी को शरीक न करो। **111 :** जो बुतों को ख़ुदा का शरीक बताते हो। **112 :** जितने रसूल तशरीफ़ लाए सब ने अपनी क़ौमों से येही फ़रमाया और नसीह़ते ख़ालिसा वोही है जो किसी त़मअ़ से न हो। **113 :** इतना समझ सको कि जो मह़ज़ बे ग़रज़ नसीह़त करता है वोह यक़ीनन ख़ैर ख़्वाह और सच्चा है। बात़िल कार जो किसी को गुमराह करता है ज़रूर किसी न किसी ग़रज़ और किसी न किसी मक़्सद से करता है। इस से ह़क़ व बात़िल में ब आसानी तमीज़ की जा सकती है। **114 :** ईमान ला कर। जब क़ौमे आ़द ने ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत क़बूल न की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के कुफ़्र के सबब तीन साल तक बारिश मौक़ूफ़ कर दी और निहायत शदीद क़ह़त़ नुमूदार हुवा और उन की औ़रतों को बांझ कर दिया, जब येह लोग बहुत परेशान हुए तो ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वा'दा फ़रमाया कि अगर वोह **अल्लाह** पर ईमान लाएं और उस के रसूल की तस्दीक़ करें और उस के ह़ुज़ूर तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें तो **अल्लाह** तआ़ला बारिश भेजेगा और उन की ज़मीनों को सर सब्ज़ो शादाब कर के ताज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाएगा और क़ुव्वत व औलाद देगा। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक मरतबा अमीरे मुआ़विया (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से (ह़ज़रते) अमीरे मुआ़विया के एक मुलाज़िम ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरे कोई औलाद नहीं, मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस से **अल्लाह** मुझे औलाद दे। आप ने फ़रमाया : इस्तिग़्फ़ार पढ़ा करो। उस ने इस्तिग़्फ़ार की यहां तक कसरत की, कि रोज़ाना सात सो मरतबा इस्तिग़्फ़ार पढ़ने लगा, इस की बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुए। येह ख़बर ह़ज़रते मुआ़विया को हुई तो उन्हों ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रत इमाम से येह क्यूं न दरयाफ़्त किया कि येह अ़मल ह़ुज़ूर ने कहां से फ़रमाया ? दूसरी मरतबा जब उस शख़्स को इमाम से नियाज़ ह़ासिल हुवा तो उस ने येह दरयाफ़्त किया : इमाम ने फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रते हूद का क़ौल नहीं सुना जो उन्हों ने फ़रमाया : ''يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ'' (तुम में जितनी क़ुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा) और ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का येह इर्शाद : ''يُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ'' (माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा) **फ़ाएदा :** कस्रते रिज़्क़ और ह़ुसूले औलाद के लिये इस्तिग़्फ़ार का ब कसरत पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है। **115 :** माल व औलाद के साथ।

مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْۤ اٰلِهَتِنَا

रू गर्दानी न करो[116] बोले ऐ हूद तुम कोई दलील ले कर हमारे पास न आए[117] और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने

عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ

के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाएं हम तो येही कहते हैं कि हमारे किसी ख़ुदा की

اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْۤ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

तुम्हें बुरी झपट (पकड़) पहुंची[118] कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूं और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूं उन सब से जिन्हें

تُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ

तुम अल्लाह के सिवा उस का शरीक ठहराते हो तुम सब मिल कर मेरा बुरा चाहो[119] फिर मुझे मोहलत न दो[120] मैं ने अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ

भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब कोई चलने वाला नहीं[121] जिस की चोटी उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में न हो[122] बेशक मेरा रब

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۶﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ

सीधे रास्ते पर मिलता है फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़

اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ

ले कर भेजा गया[123] और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों को ले आएगा[124] और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे[125] बेशक

رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۵۷﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ

मेरा रब हर शै पर निगहबान है[126] और जब हमारा हुक्म आया हम ने हूद और उस के

---

116 : मेरी दा'वत से। **117 :** जो तुम्हारे दा'वे की सिह्हत पर दलालत करती और येह बात उन्हों ने बिल्कुल ग़लत़ और झूट कही थी। हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें जो मो'जिज़ात दिखाए थे उन सब से मुकर गए। **118 :** या'नी तुम जो बुतों को बुरा कहते हो, इस लिये उन्हों ने तुम्हें दीवाना कर दिया, मुराद येह है कि अब जो कुछ कहते हो येह दीवानगी की बातें हैं। (مَعَاذَ الله) **119 :** या'नी तुम और वोह जिन्हें तुम मा'बूद समझते हो सब मिल कर मुझे ज़रर पहुंचाने की कोशिश करो। **120 :** मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं और मुझे तुम्हारी शौकतो कुव्वत से कुछ अन्देशा नहीं, जिन को तुम मा'बूद कहते हो वोह जमाद व बेजान हैं, न किसी को नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं न ज़रर, उन की क्या ह़क़ीक़त कि वोह मुझे दीवाना कर सकते। येह ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है कि आप ने एक ज़बर दस्त जब्बार साहिबे कुव्वतो शौकत क़ौम से जो आप के ख़ून की प्यासी और जान की दुश्मन थी, इस त़रह़ के कलिमात फ़रमाए और अस्लन ख़ौफ़ न किया और वोह क़ौम बा वुजूद इन्तिहाई अ़दावत और दुश्मनी के आप को ज़रर पहुंचाने से आ़जिज़ रही। **121 :** इस में बनी आदम और हैवान सब आ गए। **122 :** या'नी वोह सब का मालिक है और सब पर ग़ालिब और क़ादिर व मुतसर्रिफ़ है। **123 :** और हुज्जत साबित हो चुकी। **124 :** या'नी अगर तुम ने ईमान से ए'राज़ किया और जो अह़काम मैं तुम्हारी त़रफ़ लाया हूं उन्हें क़बूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक करेगा और बजाए तुम्हारे एक दूसरी क़ौम को तुम्हारे दियार व अम्वाल का वाली बनाएगा जो उस की तौह़ीद के मो'तक़िद हों और उस की इ़बादत करें। **125 :** क्यूं कि वोह इस से पाक है कि उसे कोई ज़रर पहुंच सके, लिहाज़ा तुम्हारे ए'राज़ का जो ज़रर है वोह तुम्हीं को पहुंचेगा। **126 :** और किसी का क़ौल, फ़े'ल उस से मख़्फ़ी नहीं। जब क़ौमे हूद नसीह़त पज़ीर न हुई तो बारगाहे क़दीरे बरह़क़ से उन के अ़ज़ाब का हुक्म नाफ़िज़ हुवा।

اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۸﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ

साथ के मुसल्मानों को[127] अपनी रह़मत फ़रमा कर बचा लिया[128] और उन्हें[129] सख़्त अ़ज़ाब से नजात दी और येह आ़द हैं[130]

جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ

कि अपने रब की आयतों से मुन्किर हुए और उस के रसूलों की ना फ़रमानी की और हर बड़े सरकश हटधर्म के

عَنِيْدٍ ﴿۵۹﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا

कहने पर चले और उन के पीछे लगी इस दुन्या में ला'नत और क़ियामत के दिन सुन लो बेशक आ़द

كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿۶۰﴾ ۧ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ

अपने रब से मुन्किर हुए अरे दूर हों आ़द हूद की क़ौम और समूद की त़रफ़ उन के हमक़ौम

صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ

सालेह़ को[131] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[132] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[133] उस ने तुम्हें

مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ

ज़मीन से पैदा किया[134] और इस में तुम्हें बसाया[135] तो उस से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक

رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ

मेरा रब क़रीब है दुआ़ सुनने वाला बोले ऐ सालेह़ इस से पहले तो तुम हम में होन्हार मा'लूम होते थे[136]

اَتَنْهٰنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

क्या तुम हमें इस से मन्अ़ करते हो कि अपने बाप दादा के मा'बूदों को पूजें और बेशक जिस बात की त़रफ़ हमें बुलाते हो हम उस से एक बड़े धोका डालने वाले

مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ

शक में हैं बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं और उस ने मुझे

127 : जिन की ता'दाद चार हज़ार थी। 128 : और क़ौमे आ़द को हवा के अ़ज़ाब से हलाक कर दिया 129 : या'नी जैसे मुसल्मानों को अ़ज़ाबे दुन्या से बचाया ऐसे ही आख़िरत के 130 : येह ख़िताब है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की उम्मत को, और تِلْکَ इशारा है क़ौमे आ़द की क़ुबूर व आसार की त़रफ़। मक़्सद येह है कि ज़मीन में चलो इन्हें देखो और इ़ब्रत ह़ासिल करो 131 : भेजा, तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से 132 : और उस की वह़दानिय्यत मानो 133 : सिर्फ़ वोही मुस्तह़िक़े इ़बादत है क्यूं कि 134 : तुम्हारे जद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस से पैदा कर के और तुम्हारी नस्ल की अस्ल नुत़्फ़ों के माद्दों को इस से बना कर। 135 : और ज़मीन को तुम से आबाद किया। ज़ह़्ह़ाक ने "اِسْتَعْمَرَكُمْ" के मा'ना येह बयान किये हैं कि तुम्हें त़वील उ़म्रें दीं, ह़त्ता कि उन की उ़म्रें तीन सो बरस से ले कर हज़ार बरस तक की हुईं। 136 : और हम उम्मीद करते थे कि तुम हमारे सरदार बनोगे क्यूं कि आप कमज़ोरों की मदद करते थे, फ़क़ीरों पर सख़ावत फ़रमाते थे, जब आप ने तौह़ीद की दा'वत दी और बुतों की बुराइयां बयान कीं तो क़ौम की उम्मीदें आप से मुन्क़त़अ़ हो गईं और कहने लगे।

مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ قف فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ

अपने पास से रहमत बख़्शी[137] तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूं[138] तो तुम मुझे सिवा नुक़्सान के कुछ न

تَخْسِيْرٍ ﴿۶۳﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ

बढ़ाओगे[139] और ऐ मेरी क़ौम येह **अल्लाह** का नाक़ा (ऊंटनी) है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि **अल्लाह** की ज़मीन में

اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿۶۴﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ

खाए और इसे बुरी त़रह़ हाथ न लगाना कि तुम को नज़्दीक अ़ज़ाब पहुंचेगा[140] तो उन्हों ने[141] उस की कूचें काटीं (पाउं काट दिये) तो सालेह़ ने कहा

تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ط ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿۶۵﴾ فَلَمَّا جَآءَ

अपने घरों में तीन दिन और बरत लो (फ़ाएदा उठा लो)[142] येह वा'दा है कि झूटा न होगा[143] फिर जब

اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ مِنْ خِزْيِ

हमारा हुक्म आया हम ने सालेह़ और उस के साथ के मुसल्मानों को अपनी रह़मत फ़रमा कर[144] बचा लिया और उस दिन की

يَوْمِىٕذٍ ط اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿۶۶﴾ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

रुस्वाई से बेशक तुम्हारा रब क़वी इ़ज़्ज़त वाला है और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[145]

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۶۷﴾ لا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ط اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَا۟

तो सुब्ह़ अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए गोया कभी यहां बसे ही न थे सुन लो बेशक समूद

كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ط اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿۶۸﴾ ع وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ

अपने रब से मुन्किर हुए अरे ला'नत हो समूद पर और बेशक हमारे फ़िरिश्ते इब्राहीम के पास[146]

بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ط قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿۶۹﴾

मुज़्दा ले कर आए बोले सलाम कहा[147] सलाम फिर कुछ देर न की, कि एक बछड़ा भुना ले आए[148]

137 : हि़क्मत व नुबुव्वत अ़ता की। **138 :** रिसालत की तब्लीग़ और बुत परस्ती से रोकने में। **139 :** या'नी मुझे तुम्हारे ख़सारे का तजरिबा और ज़ियादा होगा। **140 :** समूद ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मो'जिज़ा त़लब किया था (जिस का बयान सूरए आ'राफ़ में हो चुका है)। आप ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ की तो पथ्थर से ब हुक्मे इलाही नाक़ा पैदा हुवा, येह नाक़ा उन के लिये आयत (निशानी) व मो'जिज़ा था। इस आयत में उस नाक़ा (ऊंटनी) के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम इर्शाद फ़रमाए गए कि इसे ज़मीन में चरने दो और कोई आज़ार (तक्लीफ़) न पहुंचाओ वरना दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगे और मोहलत न पाओगे। **141 :** हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और चहार शम्बा (बुध) को **142 :** या'नी जुमुआ़ तक जो कुछ दुन्या का ऐ़श करना है कर लो शम्बा (हफ़्ते) को तुम पर अ़ज़ाब आएगा। पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे ज़र्द हो जाएंगे, दूसरे रोज़ सुर्ख़ और तीसरे रोज़ या'नी जुमुआ़ को सियाह और शम्बा को अ़ज़ाब नाज़िल हो जाएगा। **143 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **144 :** इन बलाओं से **145 :** या'नी होलनाक आवाज़ ने जिस की हैबत से उन के दिल फट गए और वोह सब के सब मर गए। **146 :** सादा रू नौ जवानों की ह़सीन शक्लों में ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام की पैदाइश का **147 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **148 :** मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि ह़ज़रते

فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا

फिर जब देखा कि उन के हाथ खाने की त़रफ़ नहीं पहुंचते उन को ऊपरी (अजनबी) समझा और जी ही जी में उन से डरने लगा बोले

لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ؕ﴿۷۰﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ

डरिये नहीं हम क़ौमे लूत़ की त़रफ़[149] भेजे गए हैं और उस की बीबी[150] खड़ी थी वोह हंसने लगी

فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿۷۱﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ

तो हम ने उसे[151] इस्ह़ाक़ की ख़ुश ख़बरी दी और इस्ह़ाक़ के पीछे[152] या'क़ूब की[153] बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा

وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْۤا

और मैं बूढ़ी हूं[154] और येह हैं मेरे शोहर बूढ़े[155] बेशक येह तो अचम्भे (तअ़ज्जुब) की बात है फ़िरिश्ते बोले

اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ

क्या **अल्लाह** के काम का अचम्भा (तअ़ज्जुब) करती हो **अल्लाह** की रह़मत और उस की बरकतें तुम पर ऐ इस घर वालो[156]

اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى

बेशक वोही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ाइल (दूर) हुवा और उसे ख़ुश ख़बरी मिली

يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ؕ﴿۷۴﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿۷۵﴾ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ

हम से क़ौमे लूत़ के बारे में झगड़ने लगा[157] बेशक इब्राहीम तह़म्मुल वाला बहुत आहें करने वाला रुजूअ़ लाने वाला है[158] ऐ इब्राहीम

इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات बहुत ही मेहमान नवाज़ थे, बिग़ैर मेहमान के खाना तनावुल न फ़रमाते। उस वक़्त ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि पन्दरह रोज़ से कोई मेहमान न आया था, आप इस ग़म में थे, उन मेहमानों को देखते ही आप ने उन के लिये खाना लाने में जल्दी फ़रमाई, चूंकि आप के यहां गाएं ब कसरत थीं इस लिये बछड़े का भुना हुवा गोश्त सामने लाया गया। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि गाय का गोश्त ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات के दस्तर ख़्वान पर ज़ियादा आता था और आप उस को पसन्द फ़रमाते थे, गाय का गोश्त खाने वाले अगर सुन्नते इब्राहीमी अदा करने की निय्यत करें तो मज़ीद सवाब पाएं। **149 :** अ़ज़ाब करने के लिये **150 :** ह़ज़रते सारह पसे पर्दा **151 :** उस के फ़रज़न्द **152 :** ह़ज़रते इस्ह़ाक़ के फ़रज़न्द **153 :** ह़ज़रते सारह को ख़ुश ख़बरी देने की वज्ह येह थी कि औलाद की ख़ुशी औ़रतों को मर्दों से ज़ियादा होती है और नीज़ येह भी सबब था कि ह़ज़रते सारह के कोई औलाद न थी और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام मौजूद थे, इस बिशारत के ज़िम्न में एक बिशारत येह भी थी कि ह़ज़रते सारह की उ़म्र इतनी दराज़ होगी कि वोह पोते को भी देखेंगी। **154 :** मेरी उ़म्र नव्वे से मुतजाविज़ हो चुकी है। **155 :** जिन की उ़म्र एक सो बीस साल की हो गई है। **156 :** फ़िरिश्तों के कलाम के मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये क्या "जाए तअ़ज्जुब" (तअ़ज्जुब की बात) है ! तुम उस घर में हो जो मो'जिज़ात और ख़वारिक़े आ़दात (करामात) और **अल्लाह** तआ़ला की रह़मतों और बरकतों का मौरिद (मक़ामे नुज़ूल) बना हुवा है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि बीबियां अहले बैत में दाख़िल हैं। **157 :** या'नी कलाम व सुवाल करने लगा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुजादला (तकरार करना) येह था कि आप ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि क़ौमे लूत़ की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे ? फ़िरिश्तों ने कहा नहीं। फ़रमाया : अगर चालीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं। आप ने फ़रमाया : अगर तीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं। आप इस त़रह़ फ़रमाते रहे यहां तक कि आप ने फ़रमाया : अगर एक मर्द मुसल्मान मौजूद हो तब हलाक कर दोगे ? उन्हों ने कहा नहीं। तो आप ने फ़रमाया : उस में लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام हैं। इस पर फ़िरिश्तों ने कहा : हमें मा'लूम है जो वहां हैं, हम ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को और उन

اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَ اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ

इस ख़याल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अ़ज़ाब आने वाला है

غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ

कि फेरा न जाएगा और जब लूत़ के पास हमारे फ़िरिश्ते आए[159] उसे उन का ग़म हुवा और उन के सबब दिलतंग

ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ

हुवा और बोला येह बड़ी सख़्ती का दिन है[160] और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती आई

وَ مِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ

और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आ़दत पड़ी थी[161] कहा ऐ क़ौम येह मेरी क़ौम की बेटियां हैं येह

اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो **अल्लाह** से डरो[162] और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो क्या तुम में एक आदमी भी

رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ

नेक चलन नहीं बोले तुम्हें मा'लूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई ह़क़ नहीं[163] और तुम ज़रूर जानते हो

مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا

जो हमारी ख़्वाहिश है बोला ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत़ पाए की पनाह लेता[164] फ़िरिश्ते बोले

के घर वालों को बचाएंगे सिवाए उन की औ़रत के। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़्सद येह था कि आप अ़ज़ाब में ताख़ीर चाहते थे ताकि उस बस्ती वालों को कुफ़्र व मआ़सी से बाज़ आने के लिये एक फ़ुरसत और मिल जाए, चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़त में इर्शाद होता है : **158 :** इन सिफ़ात से आप की रिक़्क़ते क़ल्ब और आप की राफ़त व रह़मत मा'लूम होती है जो इस मुबाह़से का सबब हुई। फ़िरिश्तों ने कहा : **159 :** ह़सीन सूरतों में। और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की हैअत और जमाल को देखा तो क़ौम की ख़बासत व बद अ़मली का ख़याल कर के **160 :** मरवी है कि मलाएका को हुक्मे इलाही येह था कि वोह क़ौमे लूत़ को उस वक़्त तक हलाक न करें जब तक कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद उस क़ौम की बद अ़मली पर चार मरतबा गवाही न दें, चुनान्चे जब येह फ़िरिश्ते ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से मिले तो आप ने उन से फ़रमाया कि क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का ह़ाल मा'लूम न था ! फ़िरिश्तों ने कहा : इन का क्या ह़ाल है ? आप ने फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं कि अ़मल के ए'तिबार से रूए ज़मीन पर येह बद तरीन बस्ती है और येह बात आप ने चार मरतबा फ़रमाई, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औ़रत जो काफ़िरा थी निकली और उस ने अपनी क़ौम को जा कर ख़बर दी कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام के यहां ऐसे ख़ूबरू और ह़सीन मेहमान आए हैं जिन की मिस्ल अब तक कोई शख़्स नज़र नहीं आया। **161 :** और कुछ शर्मो ह़या बाक़ी न रही थी। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **162 :** और अपनी बीबियों से तमत्तोअ़ (फ़ाएदा ह़ासिल) करो कि येह तुम्हारे लिये ह़लाल है। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन की औ़रतों को जो क़ौम की बेटियां थीं बुज़ुर्गाना शफ़्क़त से अपनी बेटियां फ़रमाया ताकि इस ह़ुस्ने अख़्लाक़ से वोह फ़ाएदा उठाएं और ह़मिय्यत (ग़ैरत) सीखें। **163 :** या'नी हमें उन की त़रफ़ रग़बत नहीं। **164 :** या'नी मुझे अगर तुम्हारे मुक़ाबले की त़ाक़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुक़ाबला व मुक़ातला करता। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने मकान का दरवाज़ा बन्द कर लिया था और अन्दर से येह गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, क़ौम ने चाहा कि दीवार तोड़े, फ़िरिश्तों ने आप का रन्जो इज़्तिराब देखा तो।

يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْۤا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ

ऐ लूत़ हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं[165] वोह तुम तक नहीं पहुंच सकते[166] तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ

और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे[167] सिवाए तुम्हारी औ़रत के उसे भी वोही पहुंचना है जो इन्हें पहुंचेगा[168] बेशक

مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا

इन का वा'दा सुब्ह़ के वक़्त है[169] क्या सुब्ह़ क़रीब नहीं फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने

عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ۬ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾ۙ

उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया[170] और उस पर कंकर के पथ्थर लगातार बरसाए

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ؑ وَ اِلٰى مَدْيَنَ

जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं[171] और वोह पथ्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं[172] और[173] मद्यन की त़रफ़

اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا

उन के हमक़ौम शुऐ़ब को[174] कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[175] और

تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

नाप और तोल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा ह़ाल (मालदार व ख़ुशह़ाल) देखता हूं[176] और मुझे तुम पर

النصف ١٥ ع

165 : तुम्हारा पाया मज़्बूत़ है, हम इन लोगों को अ़ज़ाब करने के लिये आए हैं, तुम दरवाज़ा खोल दो और हमें और इन्हें छोड़ दो **166 :** और तुम्हें कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते। ह़ज़रते ने दरवाज़ा खोल दिया, क़ौम के लोग मकान में घुस आए। ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही अपना बाज़ू उन के मुंह पर मारा सब अन्धे हो गए और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मकान से निकल कर भागे, उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था और येह कहते जाते थे : हाए हाए लूत़ के घर में बड़े जादूगर हैं, उन्हों ने हमें जादू कर दिया। फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा : **167 :** इस त़रह़ आप के घर के तमाम लोग चले जाएं **168 :** ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : येह अ़ज़ाब कब होगा ? ह़ज़रते जिब्रील ने कहा : **169 :** ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि मैं तो इस से जल्दी चाहता हूं। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : **170 :** या'नी उलट दिया इस त़रह़ कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ौमे लूत़ के शहर जिस त़ब्क़ए ज़मीन पर थे उस के नीचे अपना बाज़ू डाला और उन पांचों शहरों को जिन में सब से बड़ा सदूम था और उन में चार लाख आदमी बसते थे, इतना ऊंचा उठाया कि वहां के कुत्तों और मुर्ग़ों की आवाज़ें आस्मान पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तगी से उठाया कि किसी बरतन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला बेदार न हुवा, फिर उस बुलन्दी से उस को औंधा कर के पलटा **171 :** उन पथ्थरों पर ऐसा निशान था जिस से वोह दूसरों से मुमताज़ थे। क़तादा ने कहा कि उन पर सुर्ख़ ख़ुत़ूत़ थे। ह़सन व सुद्दी का क़ौल है कि उन पर मोहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल येह है कि जिस पथ्थर से जिस शख़्स की हलाकत मन्ज़ूर थी उस का नाम उस पथ्थर पर लिखा था। **172 :** या'नी अहले मक्का से। **173 :** हम ने भेजा बाशिन्दगाने शहर **174 :** आप ने अपनी क़ौम से **175 :** पहले तो आप ने तौह़ीद व इ़बादत की हिदायत फ़रमाई कि वोह तमाम उमूर में सब से अहम है। इस के बा'द जिन आ़दाते क़बीह़ा में वोह मुब्तला थे उस से मन्अ़ फ़रमाया और इर्शाद किया **176 :** ऐसे ह़ाल में आदमी को चाहिये कि ने'मत की शुक्र गुज़ारी करे और दूसरों को अपने माल से फ़ाएदा पहुंचाए न कि उन के हुक़ूक़ में कमी करे, ऐसी ह़ालत में इस ख़ियानत की आ़दत से अन्देशा है कि कहीं इस ने'मत से मह़रूम न कर दिये जाओ।

عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَ

घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब का डर है[177] और ऐ मेरी क़ौम नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और

لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾

अल्लाह का दिया जो बच रहे वोह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो[178] और मैं कुछ तुम पर निगहबान नहीं[179]

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ

बोले ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के खुदाओं को छोड़ दें[180] या

نَّفْعَلَ فِيْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ

अपने माल में जो चाहें न करें[181] हां जी तुम्हीं बड़े अ़क्ल मन्द नेक चलन हो कहा ऐ मेरी क़ौम

اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूं[182] और उस ने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी[183]

وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ

और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस का ख़िलाफ़ करने लगूं[184] मैं तो जहां तक बने संवारना ही

مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

चाहता हूं और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ़ होता हूं

177 : कि जिस से किसी को रिहाई मुयस्सर न हो और सब के सब हलाक हो जाएं, येह भी हो सकता है कि इस दिन के अ़ज़ाब से अ़ज़ाबे आख़िरत मुराद हो। **178 :** या'नी माले ह़राम तर्क करने के बा'द ह़लाल जिस क़दर भी बचे वोही तुम्हारे लिये बेहतर है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि पूरा तोलने और नापने के बा'द जो बचे वोह बेहतर है। **179 :** कि तुम्हारे अफ़्आ़ल पर दारो गीर (मुआख़ज़ा) करूं। उ़लमा ने फ़रमाया कि बा'ज़ अम्बिया को ह़र्ब (जिहाद व क़िताल) की इजाज़त थी जैसे ह़ज़रते मूसा, ह़ज़रते दावूद, ह़ज़रते सुलैमान علیہم السلام वग़ैरहुम, बा'ज़ वोह थे जिन्हें ह़र्ब (क़िताल) का हुक्म न था, ह़ज़रते शुऐब علیہ السلام उन्हीं में से हैं, तमाम दिन वा'ज़ फ़रमाते और शब तमाम नमाज़ में गुज़ारते, क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ाएदा? आप फ़रमाते : नमाज़ ख़ूबियों का हुक्म देती है बुराइयों से मन्अ़ करती है, तो इस पर वोह तमस्ख़ुर से (मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह कहते जो अगली आयत में मज़्कूर है। **180 :** बुत परस्ती न करें **181 :** मत़लब येह था कि हम अपने माल के मुख़्तार हैं, चाहे कम नापें चाहे कम तोलें। **182 :** बसीरत व हिदायत पर **183 :** या'नी नुबुव्वत व रिसालत या माले ह़लाल और हिदायत व मा'रिफ़त, तो येह कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें बुत परस्ती और गुनाहों से मन्अ़ न करूं क्यूं कि अम्बिया इसी लिये भेजे जाते हैं। **184 :** इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी علیہ الرحمہ ने फ़रमाया कि क़ौम ने ह़ज़रते शुऐब علیہ السلام के ह़लीम व रशीद होने का ए'तिराफ़ किया था और उन का येह कलाम इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़) न था, बल्कि मुद्दआ येह था कि आप बा वुजूद ह़िल्म व कमाले अ़क्ल के हम को अपने माल में अपने ह़स्बे मरज़ी तसर्रुफ़ करने से क्यूं मन्अ़ फ़रमाते हैं? इस का जवाब जो ह़ज़रते शुऐब علیہ السلام ने फ़रमाया उस का ह़ासिल येह है कि जब तुम मेरे कमाले अ़क्ल के मो'तरिफ़ हो तो तुम्हें येह समझ लेना चाहिये कि मैं ने अपने लिये जो

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ

और ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद येह न कमवा दे (बुरा काम करा दे) कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह़ की क़ौम या

قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا

हूद की क़ौम या सालेह़ की क़ौम पर और लूत़ की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं[185] और अपने रब से

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا

मुआफ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक मेरा रब मेह्रबान मह़ब्बत वाला है बोले ऐ शुऐ़ब

نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ

हमारी समझ में नहीं आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं[186] और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता[187]

لَرَجَمْنٰكَ ز وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ

तो हम ने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इ़ज़्ज़त नहीं कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बे का दबाव

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

अल्लाह से ज़ियादा है[188] और उसे तुम ने अपनी पीठ पीछे डाल रखा[189] बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के

مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

बस में है और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं अब जाना (जानना) चाहते हो

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करेगा और कौन झूटा है[190] और इन्तिज़ार करो[191] मैं भी तुम्हारे साथ

رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

इन्तिज़ार में हूं और जब[192] हमारा हुक्म आया हम ने शुऐ़ब और उस के साथ के मुसल्मानों को अपनी रह़मत फ़रमा कर

बात पसन्द की है वोह वोही होगी जो सब से बेहतर हो और वोह ख़ुदा की तौह़ीद और नाप तोल में तर्के ख़ियानत है, मैं इस का पाबन्दी से आ़मिल हूं तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि येही त़रीक़ा बेहतर है। **185 :** उन्हें कुछ ज़ियादा ज़माना नहीं गुज़रा है न वोह कुछ दूर के रहने वाले थे तो उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल करो। **186 :** कि अगर हम आप के साथ कुछ ज़ियादती करें तो आप में मुदाफ़अ़त की त़ाक़त नहीं। **187 :** जो दीन में हमारा मुवाफ़िक़ है और जिस को हम अ़ज़ीज़ रखते हैं। **188 :** कि अल्लाह के लिये तो तुम मेरे क़त्ल से बाज़ न रहे और मेरे कुम्बे की वज्ह से बाज़ रहे और तुम ने अल्लाह के नबी का तो एह़तिराम न किया और कुम्बे का एह़तिराम किया। **189 :** और उस के हुक्म की कुछ परवाह न की। **190 :** अपने दआ़वी (दा'वों) में या'नी तुम्हें जल्द मा'लूम हो जाएगा कि मैं ह़क़ पर हूं या तुम और अ़ज़ाबे इलाही से शक़ी की शक़ावत (बद बख़्त की बद बख़्ती) ज़ाहिर हो जाएगी। **191 :** आ़क़िबते अम्र और अन्जामे कार का **192 :** उन के अ़ज़ाब और हलाक के लिये।

مِّنَّا ۚ وَ اَخَذَتِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوا الصَّیْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دِیَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۹۴﴾ ۙ

बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[193] तो सुब्ह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए

كَاَنْ لَّمْ یَغْنَوْا فِیْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْیَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ ۧ وَ لَقَدْ

गोया कभी वहां बसे ही न थे अरे दूर हों मद्यन जैसे दूर हुए समूद[194] और बेशक

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰیٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۹۶﴾ ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَاۡئِهٖ

हम ने मूसा को अपनी आयतों[195] और सरीह़ ग़लबे के साथ फ़िरऔन और उस के दरबारियों की त़रफ़ भेजा

فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ مَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِیْدٍ ﴿۹۷﴾ یَقْدُمُ قَوْمَهٗ یَوْمَ

तो वोह फ़िरऔन के कहने पर चले[196] और फ़िरऔन का काम रास्ती (दुरुस्त व दियानत दारी) का न था[197] अपनी क़ौम के आगे होगा क़ियामत के

الْقِیٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَ بِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾ وَ اُتْبِعُوْا فِیْ هٰذِهٖ

दिन तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा[198] और वोह क्या ही बुरा घाट उतरने का और उन के पीछे पड़ी इस जहान में

لَعْنَةً وَّ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى

ला'नत और क़ियामत के दिन[199] क्या ही बुरा इन्आम जो उन्हें मिला येह बस्तियों[200] की ख़बरें हैं

نَقُصُّهٗ عَلَیْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّ حَصِیْدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ ظَلَمُوْۤا

कि हम तुम्हें सुनाते हैं[201] उन में कोई खड़ी है[202] और कोई कट गई[203] और हम ने उन पर ज़ुल्म न किया बल्कि ख़ुद उन्हों ने[204]

اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِیْ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

अपना बुरा किया तो उन के मा'बूद जिन्हें[205] अल्लाह के सिवा पूजते थे उन के कुछ काम न

193 : ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام ने हैबत नाक आवाज़ से कहा : "مُوْتُوْا جَمِیْعًا" सब मर जाओ ! इस आवाज़ की दहशत से उन के दम निकल गए और सब मर गए। 194 : अल्लाह की रह़मत से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतें एक ही अ़ज़ाब में मुब्तला नहीं की गईं बजुज़ ह़ज़रते शुऐब व सालेह़ عَلَیْهِمَا السَّلَام की उम्मतों के, लेकिन क़ौमे सालेह़ को उन के नीचे से होलनाक आवाज़ ने हलाक किया और क़ौमे शुऐब को ऊपर से। 195 : या'नी मो'जिज़ात 196 : और कुफ़्र में मुब्तला हुए और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर ईमान न लाए। 197 : वोह खुली गुमराही में था क्यूं कि बा वुजूद बशर होने के ख़ुदाई का दा'वा करता था और अ़लानिया ऐसे ज़ुल्म और ऐसी सितम गारियां करता था जिस का शैत़ानी काम होना ज़ाहिर और यक़ीनी है, वोह कहां और ख़ुदाई कहां ! और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ रुश्दो ह़क़्क़ानिय्यत थी, आप की सच्चाई की दलीलें, आयाते ज़ाहिरा व मो'जिज़ाते बाहिरा (साफ़ साफ़ आयतें और ज़बर दस्त मो'जिज़ात) वोह लोग मुआयना कर चुके थे, फिर भी उन्हों ने आप की इत्तिबाअ़ से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह की इत़ाअ़त की, तो जब वोह दुन्या में कुफ़्रो ज़लाल में अपनी क़ौम का पेश्वा था ऐसे ही जहन्नम में उन का इमाम होगा और 198 : जैसा कि उन्हें दरियाए नील में ला डाला था। 199 : या'नी दुन्या में भी मल्ऊ़न और आख़िरत में भी मल्ऊ़न। 200 : या'नी गुज़री हुई उम्मतों 201 : कि तुम अपनी उम्मत को उन की ख़बरें दो ताकि वोह उन से इ़ब्रत ह़ासिल करें, उन बस्तियों की ह़ालत खेतियों की त़रह़ है कि 202 : उस के मकानों की दीवारें मौजूद हैं, खन्डर पाए जाते हैं, निशान बाक़ी हैं जैसे कि आ़द व समूद के दियार (बस्तियां)। 203 : या'नी कटी हुई खेती की त़रह़ बिल्कुल बे नामो निशान हो गई और उस का कोई असर बाक़ी न रहा जैसे कि क़ौमे नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام के दियार। 204 : कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के 205 : जह्ल व गुमराही से

شَیْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَیْرَ تَتْبِیْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ

आए[206] जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उन[207] से उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा और ऐसी ही पकड़ है

رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰی وَهِیَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِیْمٌ شَدِیْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ

तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक कर्री (सख़्त) है[208] बेशक

فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ یَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ

इस में निशानी[209] है उस के लिये जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे वोह दिन है जिस में सब लोग[210]

النَّاسُ وَ ذٰلِكَ یَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ؕ ﴿۱۰۴﴾

इकठ्ठे होंगे और वोह दिन हाज़िरी का है[211] और हम उसे[212] पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिये[213]

یَوْمَ یَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِیٌّ وَّسَعِیْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا

जब वोह दिन आएगा कोई बे हुक्मे ख़ुदा बात न करेगा[214] तो उन में कोई बद बख़्त है और कोई ख़ुश नसीब[215] तो

الَّذِیْنَ شَقُوْا فَفِی النَّارِ لَهُمْ فِیْهَا زَفِیْرٌ وَّشَهِیْقٌ ﴿۱۰۶﴾ ۙ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا

वोह जो बद बख़्त हैं वोह तो दोज़ख़ में हैं वोह उस में गधे की त़रह रैंकें (चीख़ें चिल्लाएं)गे वोह उस में रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ

जब तक आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[216] बेशक तुम्हारा रब

لِّمَا یُرِیْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَاَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا دَامَتِ

जब जो चाहे करे और वोह जो ख़ुश नसीब हुए वोह जन्नत में हैं हमेशा उस में रहेंगे जब तक

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَیْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿۱۰۸﴾

आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[217] येह बख़्शिश है कभी ख़त्म न होगी

206 : और एक शम्मा (थोड़ा सा भी) अ़ज़ाब दफ़्अ़ न कर सके। 207 : बुतों और झूटे मा'बूदों 208 : तो हर ज़ालिम को चाहिये कि इन वाक़िआ़त से इ़ब्रत पकड़े और तौबा में जल्दी करे। 209 : इ़ब्रत व नसीहत 210 : अगले पिछले हिसाब के लिये 211 : जिस में आस्मान वाले और ज़मीन वाले सब ह़ाज़िर होंगे। 212 : या'नी रोज़े क़ियामत को 213 : या'नी जो मुद्दत हम ने बक़ाए दुन्या के लिये मुक़र्रर फ़रमाई है उस के तमाम होने तक। 214 : तमाम ख़ल्क़ साकित होगी, क़ियामत का दिन बहुत त़वील होगा, उस में अह़वाल मुख़्तलिफ़ होंगे, बा'ज़ अह़वाल में तो शिद्दते हैबत से किसी को बे इज़्ने इलाही बात ज़बान पर लाने की क़ुदरत न होगी और बा'ज़ अह़वाल में इज़्न दिया जाएगा कि लोग इज़्न (इजाज़त) से कलाम करेंगे और बा'ज़ अह़वाल में होल व दहशत कम होगी उस वक़्त लोग अपने मुआ़मलात में झगड़ेंगे और अपने मुक़द्दमात पेश करेंगे। 215 : शक़ीक़ बल्ख़ी قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया : सआ़दत की पांच अ़लामतें हैं : (1) दिल की नरमी (2) कस्रते गिर्या (3) दुन्या से नफ़रत (4) उम्मीदों का कोताह होना (5) हया। और बद बख़्ती की अ़लामतें भी पांच चीज़ें हैं : (1) दिल की सख़्ती (2) आंख की ख़ुश्की या'नी अ़दमे गिर्या (न रोना) (3) दुन्या की रग़बत (4) दराज़ उम्मीदें (5) बे ह़याई। 216 : इतना और ज़ियादा रहेंगे और

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ

तो ऐ सुनने वाले धोके में न पड़ उस से जिसे येह काफ़िर पूजते हैं[218] येह वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले

اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ ع وَلَقَدْ

इन के बाप दादा पूजते थे[219] और बेशक हम इन का हिस्सा इन्हें पूरा फेर देंगे जिस में कमी न होगी और बेशक

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ

हम ने मूसा को किताब दी[220] तो उस में फूट पड़ गई[221] अगर तुम्हारे रब की एक बात[222] पहले न हो चुकी होती

لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ

तो जभी उन का फ़ैसला कर दिया जाता[223] और बेशक वोह उस की त़रफ़ से[224] धोका डालने वाले शक में हैं[225] और बेशक जितने हैं[226] एक एक को

رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَ

तुम्हारा रब उस का अ़मल पूरा भर देगा उसे उन के कामों की ख़बर है[227] तो क़ाइम रहो[228] जैसा तुम्हें हुक्म है और

مَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا

जो तुम्हारे साथ रुजूअ़ लाया है[229] और ऐ लोगो सरकशी न करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है और ज़ालिमों की त़रफ़

اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ

न झुको[230] कि तुम्हें आग छूएगी और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं[231]

इस ज़ियादती की कोई इन्तिहा नहीं, तो मा'ना येह हुए कि हमेशा रहेंगे, कभी इस से रिहाई न पाएंगे। (جلالین) **217 :** इतना और ज़ियादा रहेंगे। इस ज़ियादती की कुछ इन्तिहा नहीं इस से हमेशगी मुराद है चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है **: 218 :** बेशक येह इस बुत परस्ती पर अ़ज़ाब दिये जाएंगे जैसे कि पहली उम्मतें मुब्तलाए अ़ज़ाब हुईं। **219 :** और तुम्हें मा'लूम हो चुका कि उन का क्या अन्जाम होगा। **220 :** या'नी तौरैत। **221 :** बा'ज़े उस पर ईमान लाए और बा'ज़ ने कुफ़्र किया। **222 :** कि इन के ह़िसाब में जल्दी न फ़रमाएगा। मख़्लूक़ के ह़िसाब व जज़ा का दिन रोज़े क़ियामत है। **223 :** और दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब किये जाते। **224 :** या'नी आप की उम्मत के कुफ़्फ़ार क़ुरआने करीम की त़रफ़ से। **225 :** जिस ने उन की अ़क़्लों को ह़ैरान कर दिया है। **226 :** तमाम ख़ल्क़, तस्दीक़ करने वाले हों या तक्ज़ीब करने वाले रोज़े क़ियामत **227 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। इस में नेकों और तस्दीक़ करने वालों के लिये तो बिशारत है कि वोह नेकी की जज़ा पाएंगे और काफ़िरों और तक्ज़ीब करने वालों के लिये वईद है कि वोह अपने अ़मल की सज़ा में गिरिफ़्तार होंगे। **228 :** अपने रब के हुक्म और उस के दीन की दा'वत पर **229 :** और उस ने तुम्हारा दीन क़बूल किया है, वोह दीन व त़ाअ़त पर क़ाइम रहे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी ने रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी से दरयाफ़्त करने की ह़ाजत न रहे। फ़रमाया : "اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ" कह और क़ाइम रह। **230 :** "किसी की त़रफ़ झुकना" उस के साथ मेल मह़ब्बत रखने को कहते हैं, अबुल आ़लिया ने कहा कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों के आ'माल से राज़ी न हो। सुद्दी ने कहा : उन के साथ मुदाहनत (बा वुजूदे क़ुदरत उन के सामने दीन में पिलपिला पन इख़्तियार) न करो। क़तादा ने कहा : मुश्रिकीन से न मिलो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ख़ुदा के ना फ़रमानों के साथ या'नी काफ़िरों और बे दीनों और गुमराहों के साथ मेलजोल, रस्मो राह, मवद्दत (प्यार) व मह़ब्बत, उन की हां में हां मिलाना, उन की ख़ुशामद में रहना मम्नूअ़ है। **231 :** कि तुम्हें उस के अ़ज़ाब से बचा सके। येह ह़ाल तो उन का है जो ज़ालिमों से रस्मो राह मेल व मह़ब्बत रखें और इसी से उन का ह़ाल क़ियास करना चाहिये जो ख़ुद ज़ालिम हैं।

ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ

फिर मदद न पाओगे और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों[232] और कुछ रात के हिस्सों में[233] बेशक

الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ﴿۱۱۴﴾ ۚ وَ اصْبِرْ فَاِنَّ

नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं[234] येह नसीहत है नसीहत मानने वालों को और सब्र करो कि

اللّٰهَ لَا یُضِیْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَلَوْ لَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ

अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता तो क्यूं न हुए तुम में से अगली संगतों (क़ौमों) में[235] ऐसे जिन में

اُولُوْا بَقِیَّةٍ یَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِی الْاَرْضِ اِلَّا قَلِیْلًا مِّمَّنْ اَنْجَیْنَا

भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते[236] हां उन में थोड़े थे वोही जिन को हम ने नजात

مِنْهُمْ ۚ وَ اتَّبَعَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِیْهِ وَ كَانُوْا مُجْرِمِیْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَ

दी[237] और ज़ालिम उसी ऐ़श के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया[238] और वोह गुनहगार थे और

مَا كَانَ رَبُّكَ لِیُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَ لَوْ شَآءَ

तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को बे वज्ह हलाक कर दे और उन के लोग अच्छे हों और अगर

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لَا یَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِیْنَ ﴿۱۱۸﴾ ۙ اِلَّا مَنْ

तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता[239] और वोह हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे[240] मगर जिन

رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـٴَنَّ جَهَنَّمَ

पर तुम्हारे रब ने रह़म किया[241] और लोग इसी लिये बनाए हैं[242] और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा

232 : दिन के दो किनारों से सुब्ह़ व शाम मुराद हैं। ज़वाल से क़ब्ल का वक़्त सुब्ह़ में और बा'द का शाम में दाख़िल है। सुब्ह़ की नमाज़ "फ़ज्र" और शाम की नमाज़ "ज़ोहर व अ़स्र" हैं। 233 : और रात के ह़िस्सों की नमाज़ें "मग़रिब व इ़शा" हैं। 234 : नेकियों से मुराद या येही पन्जगाना नमाज़ें हैं जो आयत में ज़िक्र हुईं या मुत़्लक़ त़ाअ़तें या "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" पढ़ना। **मस्अला :** आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ हों या सदक़ा या ज़िक्र व इस्तिग़्फ़ार या और कुछ। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक और एक रिवायत में है कि रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़्फ़ारा हैं उन गुनाहों के लिये जो इन के दरमियान वाक़ेअ़ हों जब कि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे। **शाने नुज़ूल :** एक शख़्स ने किसी औ़रत को देखा और उस से कोई ख़फ़ीफ़ सी ह़रकत बे ह़िजाबी की सरज़द हुई इस पर वोह नादिम हुवा और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपना ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि सग़ीरा गुनाहों के लिये नेकियों का कफ़्फ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिये है ? फ़रमाया : नहीं, सब के लिये। 235 : या'नी पहली उम्मतों में जो हलाक की गईं। 236 : मा'ना येह हैं कि उन उम्मतों में ऐसे अहले ख़ैर नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मन्अ़ करते, इसी लिये हम ने उन्हें हलाक कर दिया। 237 : वोह अम्बिया पर ईमान लाए, उन के अह़काम पर फ़रमां बरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे। 238 : और तनअ़ुम व तलज़्ज़ुज़ (ऐ़श व लज़्ज़ात) और ख़्वाहिशात व शहवात के आ़दी हो गए और कुफ़्र व मआ़सी में डूबे रहे। 239 : तो सब एक दीन पर होते 240 : कोई किसी दीन पर कोई किसी पर 241 : वोह दीने ह़क़ पर मुत्तफ़िक़ रहेंगे और इस में इख़्तिलाफ़

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ

जिन्नों और आदमियों को मिला कर[243] और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं

مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى

जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं[244] और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया[245] और मुसल्मानों को

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا

पन्दो नसीहत[246] और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ[247] हम अपना

عٰمِلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ

काम करते हैं[248] और राह देखो हम भी राह देखते हैं[249] और अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ

ज़मीन के ग़ैब[250] और उसी की त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तो उस की बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं

اٰياتها ١١١ ﴿١٢ سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ ٥٣﴾ رکوعاتها ١٢

सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है, इस में एक सो ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۱﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

येह रोशन किताब की आयतें हैं[2] बेशक हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा

न करेंगे। **242 :** या'नी इख़्तिलाफ़ वाले इख़्तिलाफ़ के लिये और रह़मत वाले इत्तिफ़ाक़ के लिये। **243 :** क्यूं कि उस को इ़ल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे। **244 :** और अम्बिया के ह़ाल और उन की उम्मतों के सुलूक देख कर आप को अपनी क़ौम की ईज़ा का बरदाश्त करना और उस पर सब्र फ़रमाना आसान हो। **245 :** और अम्बिया और उन की उम्मतों के तज़्किरे वाक़ेअ़ के मुत़ाबिक़ बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को ह़ासिल नहीं या'नी जो वाक़िआ़त बयान फ़रमाए गए वोह ह़क़ भी हैं। **246 :** भी, कि गुज़री हुई उम्मतों के ह़ालात और उन के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें। **247 :** अ़न्क़रीब इस का नतीजा पा लोगे। **248 :** जिस का हमें हमारे रब ने हुक्म दिया। **249 :** तुम्हारे अन्जामे कार की। **250 :** उस से कुछ छुप नहीं सकता। **1 :** सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है इस में बारह रुकूअ़ और एक सो ग्यारह आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और सात हज़ार एक सो छियासठ ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद ने अशराफ़े अ़रब से कहा था कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करो कि औलादे ह़ज़रते या'क़ूब मुल्के शाम से मिस्र में किस त़रह़ पहुंची और उन के वहां जा कर आबाद होने का क्या सबब हुवा और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का वाक़िआ़

تَعْقِلُوْنَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

कि तुम समझो हम तुम्हें सब से अच्छा बयान सुनाते हैं[3] इस लिये कि हम ने तुम्हारी तरफ़

هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَ اِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝٣ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ

इस कुरआन की वह्य भेजी अगर्चे बेशक इस से पहले तुम्हें ख़बर न थी याद करो जब यूसुफ़ ने

لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ

अपने बाप[4] से कहा ऐ मेरे बाप मैं ने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें

لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا

अपने लिये सज्दा करते देखा[5] कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना[6] कि वोह तेरे साथ कोई चाल

لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ

चलेंगे[7] बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है[8] और इसी तरह तुझे तेरा रब चुन लेगा[9]

क्या है ? इस पर येह सूरए मुबारका नाज़िल हुई । **2 :** जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर और मिन इन्दिल्लाह (**अल्लाह** की तरफ़ से) होना वाज़ेह और मआनी अहले इल्म के नज़्दीक गैर मुश्तबह हैं और इस में हलाल व हराम हुदूद व अहकाम साफ़ बयान फ़रमाए गए हैं और एक क़ौल येह है कि इस में मुतक़द्दिमीन के अहवाल रोशन तौर पर मज़्कूर हैं और हक़ व बातिल को मुमताज़ कर दिया गया है । **3 :** जो बहुत से अजाइब व गराइब और हिक्मतों और इब्रतों पर मुश्तमिल है और इस में दीन व दुन्या के बहुत फ़वाइद और सलातीन व रिआया और उलमा के अहवाल और औरतों के ख़साइस और दुश्मनों की ईज़ाओं पर सब्र और उन पर क़ाबू पाने के बा'द उन से तजावुज़ करने का नफ़ीस बयान है, जिस से सुनने वाले में नेक सीरती और पाकीज़ा ख़साइल पैदा होते हैं । साहिबे बहरुल हक़ाइक़ ने कहा कि इस बयान का अह्सन होना इस सबब से है कि येह क़िस्सा इन्सान के अहवाल के साथ कमाले मुशाबहत रखता है, अगर यूसुफ़ से दिल को और या'क़ूब से रूह को और राहील से नफ़्स को, बिरादराने यूसुफ़ से क़वी हवास को ता'बीर किया जाए और तमाम क़िस्से को इन्सानों के हालात से मुताबक़त दी जाए, चुनान्चे उन्हों ने वोह मुताबक़त बयान भी की है जो यहां ब नज़्रे इख़्तिसार दर्ज नहीं की जा सकती । **4 :** हज़रते या'क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِمُ السَّلَام **5 :** हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब देखा कि आस्मान से ग्यारह सितारे उतरे और उन के साथ सूरज और चांद भी हैं, उन सब ने आप को सज्दा किया । येह ख़्वाब शबे जुमुआ को देखा, येह रात शबे क़द्र थी । सितारों की ता'बीर आप के ग्यारह भाई हैं और सूरज आप के वालिद और चांद आप की वालिदा या ख़ाला, आप की वालिदए माजिदा का नाम राहील है । सुद्दी का क़ौल है कि चूंकि राहील का इन्तिक़ाल हो चुका था इस लिये क़मर से आप की ख़ाला मुराद हैं और सज्दा करने से तवाज़ोअ़ करना और मुतीअ़ होना मुराद है और एक क़ौल येह है कि हक़ीक़तन सज्दा ही मुराद है क्यूं कि उस ज़माने में सलाम की तरह सज्दए तहिय्यत (ता'ज़ीमी सज्दा) था । हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल की थी और सात और सतरह के क़ौल भी आए हैं । हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बहुत ज़ियादा महब्बत थी इस लिये उन के साथ उन के भाई हसद करते थे और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इस पर मुत्तलअ़ थे इस लिये जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह ख़्वाब देखा तो हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने **6 :** क्यूं कि वोह इस की ता'बीर को समझ लेंगे । हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि **अल्लाह** तआला हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नुबुव्वत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमाएगा और दारैन की ने'मतें और शरफ़ इनायत करेगा इस लिये आप को भाइयों के हसद का अन्देशा हुवा और आप ने फ़रमाया : **7 :** और तुम्हारी हलाकत की कोई तदबीर सोचेंगे । **8 :** उन को कैद व हसद पर उभारेगा । इस में ईमा (इशारा) है कि बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अगर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये ईज़ा व ज़रर पर इक़्दाम करेंगे तो इस का सबब वस्वसए शैतान होगा । (خازن) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है : रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छा ख़्वाब **अल्लाह** की तरफ़ से है, चाहिये कि उस को मुहिब से बयान किया जावे और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है जब कोई देखने वाला वोह ख़्वाब देखे तो चाहिये कि अपनी बाईं तरफ़ तीन मरतबा थुत्कारे और येह पढ़े : ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الرُّؤْيَا'' **9 :** इज्तिबा या'नी **अल्लाह** तआला का किसी बन्दे को

وَ يُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اٰلِ

और तुझे बातों का अन्जाम निकालना सिखाएगा[10] और तुझ पर अपनी ने'मत पूरी करेगा और या'कूब के

يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

घर वालों पर[11] जिस त़रह़ तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इस्ह़ाक़ पर पूरी की[12] बेशक तेरा रब

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۶﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَ اِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿۷﴾ اِذْ

इल्मो ह़िक्मत वाला है बेशक यूसुफ़ और उस के भाइयों में[13] पूछने वालों के लिये निशानियां हैं[14] जब

قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَ نَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا

बोले[15] कि ज़रूर यूसुफ़ और उस का भाई[16] हमारे बाप को हम से ज़ियादा प्यारे हैं और हम एक जमाअ़त हैं[17] बेशक हमारे बाप

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ﴿۸﴾ ۚۖ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ

सराह़तन इन की मह़ब्बत में डूबे हुए हैं[18] यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ[19] कि तुम्हारे बाप का मुंह सिर्फ़ तुम्हारी ही

बरगुज़ीदा कर लेना या'नी चुन लेना, इस के मा'ना येह हैं कि किसी बन्दे को फ़ैज़े रब्बानी के साथ मख़्सूस करे जिस से उस को त़रह़ त़रह़ के करामात व कमालात बे सअ्यो मेह़नत ह़ासिल हों। येह मर्तबा अम्बिया के साथ ख़ास है और उन की बदौलत उन के मुक़र्रबीन, सिद्दीक़ीन व शुहदा व सालिह़ीन भी इस ने'मत से सरफ़राज़ किये जाते हैं। **10 :** इल्मो ह़िक्मत अ़त़ा करेगा और कुतुबे साबिक़ा और अह़ादीसे अम्बिया के ग़वामिज़ कश्फ़ (भेद ज़ाहिर) फ़रमाएगा और मुफ़स्सिरीन ने इस से ता'बीरे ख़्वाब भी मुराद ली है। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ता'बीरे ख़्वाब के बड़े माहिर थे। **11 :** नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमा कर, जो आ'ला मनासिब में से है और ख़ल्क़ के तमाम मन्सब इस से फ़रोतर (कमतर) हैं और सल्त़नतें दे कर दीन व दुन्या की ने'मतों से सरफ़राज़ कर के। **12 :** कि उन्हें नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस ने'मत से मुराद येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नारे नमरूद से ख़लासी दी और अपना ख़लील बनाया और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते या'कूब और अस्बात़ इनायत किये। **13 :** ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पहली बीबी लया बिन्ते लयान आप के मामूं की बेटी हैं, उन से आप के छ[6] फ़रज़न्द हुए : रूबील, शम्ऊ़न, लावी, यहूज़ा, ज़बूलून, यश्जुर और चार बेटे ह़रम (बांदियों) से हुए : दान, नफ़्ताली, जाद, आशिर, इन की माएं ज़ुल्फ़ा और बुल्हा। "लया" के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इन की बहन राह़ील से निकाह़ फ़रमाया, इन से दो फ़रज़न्द हुए : यूसुफ़, बिन्यामीन। येह ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के बारह साह़िब ज़ादे हैं। इन्हीं को "अस्बात़" कहते हैं। **14 :** पूछने वालों से यहूद मुराद हैं जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ह़ाल और औलादे ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ित़्त़ए कन्आ़न से सर ज़मीने मिस्र की त़रफ़ मुन्तक़िल होने का सबब दरयाफ़्त किया था। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़ालात बयान फ़रमाए और यहूद ने उन को तौरैत के मुत़ाबिक़ पाया तो उन्हें ह़ैरत हुई कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किताबें पढ़ने और उ़लमा व अह़बार की मजलिस में बैठने और किसी से कुछ सीखने के बिग़ैर इस क़दर सह़ीह़ वाक़िआत कैसे बयान फ़रमाए! येह दलील है कि आप ज़रूर नबी हैं और क़ुरआने पाक ज़रूर वह़्ये इलाही है और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इल्मे क़ुद्स से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इलावा बरीं इस वाक़िए में बहुत सी इ़ब्रतें और नसीह़तें और ह़िक्मतें हैं। **15 :** बिरादराने ह़ज़रते यूसुफ़ **16 :** ह़क़ीक़ी बिन्यामीन **17 :** क़वी हैं, ज़ियादा काम आ सकते हैं, ज़ियादा फ़ाएदा पहुंचा सकते हैं, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام छोटे हैं क्या काम कर सकते हैं? **18 :** और येह बात उन के ख़याल में न आई कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा का उन की सिग़र सिनी में इन्तिक़ाल हो गया इस लिये वोह मज़ीद शफ़्क़त व मह़ब्बत के मौरिद (मुस्तह़िक़) हुए और उन में रुश्दो नजाबत (बुज़ुर्गी) की वोह निशानियां पाई जाती हैं जो दूसरे भाइयों में नहीं हैं। येह सबब है कि ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ज़ियादा मह़ब्बत है। येह सब बातें ख़याल में न ला कर उन्हें अपने वालिदे माजिद का ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा मह़ब्बत फ़रमाना शाक़ गुज़रा और उन्हों ने बाहम मिल कर येह मश्वरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिये जिस से हमारे वालिद साह़िब को हमारी त़रफ़ ज़ियादा इल्तिफ़ात हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि शैत़ान भी उस मजलिसे मश्वरा में शरीक हुवा और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल की राय दी और गुफ़्तगूए मश्वरा इस त़रह़ हुई **19 :** आबादियों से दूर। बस येही सूरतें हैं जिन से

اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا

तरफ़ रहे[20] और इस के बा'द फिर नेक हो जाना[21] उन में एक कहने वाला[22] बोला

تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

यूसुफ़ को मारो नहीं[23] और उसे अन्धे (गहरे तारीक) कूंएं में डाल दो कि कोई राह चलता उसे आ कर ले जाए[24]

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ

अगर तुम्हें करना है[25] बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुवा कि यूसुफ़ के मुआमले में हमारा ए'तिबार नहीं करते और हम तो इस के

لَنٰصِحُوْنَ ۝١١ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٢

ख़ैर ख़्वाह हैं कल इसे हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले[26] और बेशक हम इस के निगहबान हैं[27]

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ

बोला बेशक मुझे रन्ज देगा कि तुम इसे ले जाओ[28] और डरता हूं कि इसे भेड़िया खा ले[29] और तुम

عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا

इस से बे ख़बर रहो[30] बोले अगर इसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअ़त हैं जब तो हम किसी

لَّخٰسِرُوْنَ ۝١٤ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ج

मसरफ़ (काम) के नहीं[31] फिर जब उसे ले गए[32] और सब की राय येही ठहरी कि इसे अन्धे (तारीक गहरे) कूंएं में डाल दें[33]

20 : और उन्हें फ़क़त़ तुम्हारी ही महब्बत हो और की नहीं। 21 : और तौबा कर लेना। 22 : या'नी यहूज़ा या रूबील 23 : क्यूं कि क़त्ल गुनाहे अ़ज़ीम है। 24 : या'नी कोई मुसाफ़िर वहां गुज़रे और किसी मुल्क को उन्हें ले जाए, इस से भी ग़रज़ ह़ासिल है कि न वोह यहां रहेंगे न वालिद साहिब की नज़रे इनायत इस त़रह़ उन पर होगी। 25 : इस में इशारा है कि चाहिये तो येह कि कुछ भी न करो लेकिन अगर तुम ने इरादा ही कर लिया है तो बस इतने ही पर इक्तिफ़ा करो। चुनान्चे सब इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए और अपने वालिद से 26 : या'नी तफ़रीह के ह़लाल मशाग़िल से लुत़्फ़ अन्दोज़ हों मिस्ल शिकार और तीर अन्दाज़ी वग़ैरा के। 27 : इन की पूरी निगहदाश्त रखेंगे। 28 : क्यूं कि इन की एक साअ़त की जुदाई गवारा नहीं है। 29 : क्यूं कि इस सर ज़मीन में भेड़िये और दरिन्दे बहुत हैं। 30 : और अपनी सैरो तफ़रीह में मश्ग़ूल हो जाओ। 31 : लिहाज़ा इन्हें हमारे साथ भेज दीजिये। तक़्दीरे इलाही यूंही थी ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इजाज़त दी और वक़्ते रवानगी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़मीस जो ह़रीरे जन्नत (जन्नती रेशम) की थी और जिस वक़्त कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कपड़े उतार कर आग में डाला गया था ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने वोह क़मीस आप को पहनाई थी, वोह क़मीसे मुबारक ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام को और उन से उन के फ़रज़न्द ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंची थी, वोह क़मीस ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ता'वीज़ बना कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के गले में डाल दी। 32 : इस त़रह़ कि जब तक ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام उन्हें देखते रहे वहां तक तो वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को अपने कन्धों पर सुवार किये हुए इ़ज़्ज़तो आराम के साथ ले गए, जब दूर निकल गए और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की नज़रों से ग़ाइब हो गए तो उन्हों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ज़मीन पर दे पटका और दिलों में जो अ़दावत थी वोह ज़ाहिर हुई, जिस की त़रफ़ जाते थे वोह मारता था और त़ा'ने देता था और ख़्वाब जो किसी त़रह़ उन्हों ने सुन पाया था उस पर तश्नीअ़ करते थे और कहते थे अपने ख़्वाब को बुला वोह अब तुझे हमारे हाथों छुटाए (छुड़ाए)। जब सख़्तियां ह़द को पहुंचीं तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने यहूज़ा से कहा : ख़ुदा से डर ! और इन लोगों को इन ज़ियादतियों से रोक ! यहूज़ा ने अपने भाइयों से कहा कि तुम ने मुझ से

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَجَآءُوْ

और हम ने उसे वह्य भेजी[34] कि ज़रूर तू उन्हें उन का येह काम जता देगा[35] ऐसे वक़्त कि वोह न जानते होंगे[36] और रात हुए

اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا

अपने बाप के पास रोते आए[37] बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए[38] और यूसुफ़ को

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا

अपने अस्बाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी त़रह़ हमारा यक़ीन न करेंगे अगर्चे

صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ

हम सच्चे हों[39] और उस के कुरते पर एक झूटा ख़ून लगा लाए[40] कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने

اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَ

एक बात तुम्हारे वासिते बना ली है[41] तो सब्र अच्छा और **अल्लाह** ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो[42] और

क्या अ़ह्द किया था ? याद करो, क़त्ल की नहीं ठहरी थी, तब वोह इन हरकतों से बाज़ आए। **33 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया। येह कूंवां कन्आ़न से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर ह़वाली बैतुल मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस के इर्द गिर्द) या सर ज़मीने उरदुन में वाक़ेअ़ था। ऊपर से इस का मुंह तंग था और अन्दर से फ़राख़। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हाथ पाउं बांध कर, क़मीस उतार कर, कूंएं में छोड़ा, जब वोह उस की निस्फ़ गहराई तक पहुंचे तो रस्सी छोड़ दी ताकि आप पानी में गिर कर हलाक हो जाएं। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन ब हुक्मे इलाही पहुंचे और उन्हों ने आप को एक पथ्थर पर बिठा दिया जो कूंएं में था और आप के हाथ खोल दिये और रवानगी के वक़्त ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का क़मीस जो ता'वीज़ बना कर आप के गले में डाल दिया था वोह खोल कर आप को पहना दिया, उस से अंधेरे कूंएं में रोशनी हो गई। سُبْحٰنَ اللّٰه अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक अज्सादे शरीफ़ा में क्या बरकत है कि एक क़मीस जो उस बा बरकत बदन से मस हुवा उस ने अंधेरे कूंएं को रोशन कर दिया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मल्बूसात और आसारे मक़्बूलाने ह़क़ से बरकत ह़ासिल करना शरअ़ से साबित और अम्बिया की सुन्नत है। **34 :** ब वासित़ा ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के या ब त़रीक़े इल्हाम कि आप ग़मगीन न हों हम आप को अ़मीक़ चाह (गहरे कूंएं) से बुलन्द जाह (बुलन्द मर्तबे) पर पहुंचाएंगे और तुम्हारे भाइयों को ह़ाजत मन्द बना कर तुम्हारे पास लाएंगे और उन्हें तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान करेंगे और ऐसा होगा **35 :** जो उन्हों ने इस वक़्त तुम्हारे साथ किया। **36 :** कि तुम यूसुफ़ हो। क्यूं कि उस वक़्त आप की शान ऐसी रफ़ीअ़ होगी, आप उस मस्नदे सल्त़नत व हुकूमत पर होंगे कि वोह आप को न पहचानेंगे। अल ह़ासिल बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में डाल कर वापस हुए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का क़मीस जो उतार लिया था उस को एक बकरी के बच्चे के ख़ून में रंग कर साथ ले लिया। **37 :** जब मकान के क़रीब पहुंचे उन के चीख़ने की आवाज़ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने सुनी तो घबरा कर बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ मेरे फ़रज़न्दो ! क्या तुम्हें बकरियों में कुछ नुक़्सान हुवा ? उन्हों ने कहा : नहीं। फ़रमाया फिर क्या मुसीबत पहुंची और यूसुफ़ कहां हैं ? **38 :** या'नी हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे कि कौन आगे निकले इस दौड़ में हम दूर निकल गए **39 :** क्यूं कि न हमारे साथ कोई गवाह है न कोई ऐसी दलील व अ़लामत है जिस से हमारी रास्त गोई (सच्चाई) साबित हो। **40 :** और क़मीस को फाड़ना भूल गए। ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام वोह क़मीस अपने चेहरए मुबारक पर रख कर बहुत रोए और फ़रमाया : अ़जब त़रह़ का होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को खा तो गया और क़मीस को फाड़ा तक नहीं। एक रिवायत में येह भी है कि वोह एक भेड़िया पकड़ लाए और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि येह भेड़िया है जिस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को खाया है आप ने उस भेड़िये से दरयाफ़्त फ़रमाया : वोह ब हुक्मे इलाही गोया हो कर कहने लगा : हुज़ूर न मैं ने आप के फ़रज़न्द को खाया और न अम्बिया के साथ कोई भेड़िया ऐसा कर सकता है। ह़ज़रत ने उस भेड़िये को छोड़ दिया और बेटों से **41 :** और वाक़िआ़ इस के ख़िलाफ़ है। **42 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन रोज़ कूंएं में रहे, इस के बा'द **अल्लाह** ने उन्हें इस से नजात अ़त़ा फ़रमाई।

جَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا

एक क़ाफ़िला आया[43] उन्हों ने अपना पानी लाने वाला भेजा[44] तो उस ने अपना डोल डाला[45] बोला आहा कैसी ख़ुशी की बात है येह तो

غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ

एक लड़का है और उसे एक पूंजी बना कर छुपा लिया[46] और अल्लाह जानता है जो वोह करते हैं और भाइयों ने उसे खोटे

بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزَّاهِدِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَقَالَ

दामों गिनती के रुपों पर बेच डाला[47] और उन्हें उस में कुछ रग़बत न थी[48] और मिस्र के

الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ

जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा वोह अपनी औ़रत से बोला[49] इन्हें इ़ज़्ज़त से रख[50] शायद इन से हमें नफ़्अ़ पहुंचे[51]

اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۫ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ

या इन को हम बेटा बना लें[52] और इसी त़रह़ हम ने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाव (रहने को ठिकाना) दिया और इस लिये कि उसे

تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

बातों का अन्जाम सिखाएं[53] और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी

43 : जो मद्यन से मिस्र की त़रफ़ जा रहा था वोह रास्ता बहक कर इस जंगल में आ पड़ा जहां आबादी से बहुत दूर येह कूंवां था और इस का पानी खारी था मगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की बरकत से मीठा हो गया, जब वोह क़ाफ़िले वाले इस कूंएं के क़रीब उतरे तो 44 : जिस का नाम मालिक बिन ज़ु'र ख़ज़ाई था, येह शख़्स मद्यन का रहने वाला था, जब वोह कूंएं पर पहुंचा 45 : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वोह डोल पकड़ लिया और उस में लटक गए, मालिक ने डोल खींचा, आप बाहर तशरीफ़ लाए, उस ने आप का ह़ुस्ने आ़लम अफ़रोज़ देखा तो निहायत ख़ुशी में आ कर अपने यारों को मुज़्दा दिया 46 : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई जो इस जंगल में अपनी बकरियां चराते थे वोह देखभाल रखते थे, आज जो उन्हों ने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में न देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़िले में पहुंचे वहां उन्हों ने मालिक बिन ज़ु'र के पास ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को देखा तो वोह उस से कहने लगे कि येह ग़ुलाम है, हमारे पास से भाग आया है, किसी काम का नहीं है, ना फ़रमान है, अगर ख़रीदो तो हम इसे सस्ता बेच देंगे, फिर इसे कहीं इतनी दूर ले जाना कि इस की ख़बर भी हमारे सुनने में न आए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام उन के ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और आप ने कुछ न फ़रमाया। 47 : जिन की ता'दाद बक़ौल क़तादा बीस दिरहम थी। 48 : फिर मालिक बिन ज़ु'र और उस के साथी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मिस्र में लाए, उस ज़माने में मिस्र का बादशाह रय्यान बिन वलीद बिन नज़्वान अ़मलीक़ी था और उस ने अपनी इनाने सल्त़नत क़ित़्फ़ीर मिस्री के हाथ में दे रखी थी, तमाम ख़ज़ाइन उस के तह़्ते तसर्रुफ़ थे, उस को अ़ज़ीज़े मिस्र कहते थे और वोह बादशाह का वज़ीरे आ'ज़म था, जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिये लाए गए तो हर शख़्स के दिल में आप की त़लब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरूअ़ की ता आंकि आप के वज़्न के बराबर सोना, इतनी ही चांदी, इतना ही मुश्क, इतना ही ह़रीर, क़ीमत मुक़र्रर हुई और आप का वज़्न चार सो रत़्ल था और उ़म्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सतरह साल की थी, अ़ज़ीज़े मिस्र ने इस क़ीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया, दूसरे ख़रीदार उस के मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए। 49 : जिस का नाम ज़ुलैख़ा था 50 : क़ियाम गाह नफ़ीस हो, लिबास व ख़ूराक आ'ला क़िस्म की हो। 51 : और वोह हमारे कामों में अपने तदब्बुर व दानाई से हमारे लिये नाफ़ेअ़ और बेहतर मददगार हों और उमूरे सल्त़नत व मुल्क दारी के सर अन्जाम में हमारे काम आएं क्यूं कि रुश्द के आसार इन के चेहरे से नुमूदार हैं। 52 : येह क़ित़्फ़ीर ने इस लिये कहा कि उस के कोई औलाद न थी। 53 : या'नी ख़्वाबों की ता'बीर।

يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى

नहीं जानते और जब अपनी पूरी कुव्वत को पहुंचा[54] हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता फ़रमाया[55] और हम ऐसा ही सिला देते हैं

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ

नेकों को और वोह जिस औ़रत[56] के घर में था उस ने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके[57] और दरवाज़े सब बन्द

الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ

कर दिये[58] और बोली आओ तुम्हीं से कहती हूं[59] कहा **अल्लाह** की पनाह[60] वोह अ़ज़ीज़ तो मेरा रब या'नी परवरिश करने वाला है

مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ

उस ने मुझे अच्छी त़रह़ रखा[61] बेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता और बेशक औ़रत ने उस का इरादा किया और वोह भी औ़रत का इरादा करता अगर

اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ

अपने रब की दलील न देख लेता[62] हम ने यूं ही किया कि उस से बुराई और बे ह़याई को फेर दें[63] बेशक वोह

مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ

हमारे चुने हुए बन्दों में से है[64] और दोनों दरवाज़े की त़रफ़ दौड़े[65] और औ़रत ने उस का कुरता पीछे से चीर लिया

وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا

और दोनों को औ़रत का मियां[66] दरवाज़े के पास मिला[67] बोली क्या सज़ा है इस की जिस ने तेरी घर वाली से बदी चाही[68]

54 : शबाब अपनी निहायत (उ़रूज) पर आया और उ़म्र शरीफ़ बक़ौले ज़ह़्ह़ाक बीस साल की और बक़ौले सुद्दी तीस की और बक़ौले कलबी अठ्ठारह और तीस के दरमियान हुई **55 :** या'नी इ़ल्मे बा अ़मल और फ़क़ाहत फ़िद्दीन (दीन की कामिल पहचान) इनायत की। बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि हुक्म से क़ौले सवाब और इ़ल्म से ता'बीरे ख़्वाब मुराद है। बा'ज़ ने फ़रमाया : इ़ल्म ह़क़ाइक़े अश्या का जानना और ह़िक्मत इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करना है। **56 :** या'नी ज़ुलैख़ा **57 :** और उस के साथ मशग़ूल हो कर उस की ना जाइज़ ख़्वाहिश को पूरा करें। ज़ुलैख़ा के मकान में यके बा'द दीगरे सात दरवाज़े थे। उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام पर तो येह ख़्वाहिश पेश की **58 :** मुक़फ़्फ़ल कर डाले (ताले लगा दिये) **59 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **60 :** वोह मुझे इस क़बाह़त से बचाए जिस की तू त़लब गार है, मुद्दआ़ येह था कि येह फ़े'ले ह़राम है, मैं इस के पास जाने वाला नहीं। **61 :** उस का बदला येह नहीं कि मैं उस के अह्ल में ख़ियानत करूं, जो ऐसा करे वोह ज़ालिम है **62 :** मगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने रब की बुरहान देखी और इस इरादए फ़ासिदा से मह़फ़ूज़ रहे और बुरहान इ़स्मते नुबुव्वत है। **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नुफ़ूसे त़ाहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा (बुरे अख़्लाक़) व अफ़्आ़ले रज़ीला (घटिया कामों) से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा त़ाहिरा मुक़द्दसा पर इन की ख़िल्क़त फ़रमाई है इस लिये वोह हर ना कर्दनी (ना क़ाबिले अ़मल) फ़े'ल से बाज़ रहते हैं। एक रिवायत येह भी है कि जिस वक़्त ज़ुलैख़ा आप के दरपै हुई उस वक़्त आप ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को देखा कि अंगुश्ते मुबारक दन्दाने अक़्दस के नीचे दबा कर इज्तिनाब का इशारा फ़रमाते हैं। **63 :** और ख़ियानत व ज़िना से मह़फ़ूज़ रखें **64 :** जिन्हें हम ने बरगुज़ीदा किया है और जो हमारी त़ाअ़त में इख़्लास रखते हैं। अल ह़ासिल जब ज़ुलैख़ा आप के दरपै हुई तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भागे और ज़ुलैख़ा उन के पीछे उन्हें पकड़ने भागी, ह़ज़रत जिस जिस दरवाज़े पर पहुंचते जाते थे उस का क़ुफ़्ल खुल कर गिरता चला जाता था। **65 :** आख़िर कार ज़ुलैख़ा ह़ज़रत तक पहुंची और उस ने आप का कुरता पीछे से पकड़ कर आप को खींचा कि आप निकलने न पाएं मगर आप ग़ालिब आए। **66 :** या'नी अ़ज़ीज़े मिस्र **67 :** फ़ौरन ही ज़ुलैख़ा ने अपनी बराअत ज़ाहिर करने और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने मक्र से ख़ाइफ़ करने के लिये ह़ीला तराशा और शोहर से **68 :** इतना कह कर उसे अन्देशा हुवा कि कहीं

إِلَّآ أَنْ يُّسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَ

मगर येह कि क़ैद किया जाए या दुख की मार[69] कहा इस ने मुझ को लुभाया कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं[70] और

شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ

औरत के घर वालों में से एक गवाह ने[71] गवाही दी अगर इन का कुरता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है

وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَإِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ

और इन्हों ने ग़लत कहा[72] और अगर इन का कुरता पीछे से चाक हुवा तो औरत झूटी है और येह

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۭ

सच्चे[73] फिर जब अ़ज़ीज़ ने उस का कुरता पीछे से चिरा देखा[74] बोला बेशक येह तुम औरतों का चरित्र (फ़रेब) है

إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۜ وَاسْتَغْفِرِيْ

बेशक तुम्हारा चरित्र (फ़रेब) बड़ा है[75] ऐ यूसुफ़ तुम इस का ख़याल न करो[76] और ऐ औरत तू अपने गुनाह की

لِذَنْۢبِكِ ۖۚ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ ع وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ

मुआफ़ी मांग[77] बेशक तू ख़ताकारों में है[78] और शहर में कुछ औरतें बोलीं[79] कि अ़ज़ीज़ की

अ़ज़ीज़ तैश में आ कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल के दरपै न हो जाए और येह ज़ुलैख़ा की शिद्दते महब्बत कब गवारा कर सकती थी इस लिये उस ने येह कहा : **69** : या'नी इस को कोड़े लगाए जाएं। जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि ज़ुलैख़ा उलटा आप पर इल्ज़ाम लगाती है और आप के लिये क़ैद व सज़ा की सूरत पैदा करती है तो आप ने अपनी बराअत का इज़्हार और ह़क़ीक़ते ह़ाल का बयान ज़रूरी समझा और **70** : या'नी येह मुझ से फ़े'ले क़बीह़ की त़लब गार हुई मैं ने उस से इन्कार किया और मैं भागा। अ़ज़ीज़ ने कहा : येह बात किस त़रह़ बावर की जाए ? हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि घर में एक चार महीने का बच्चा पालने में था जो ज़ुलैख़ा के मामूं का लड़का है उस से दरयाफ़्त करना चाहिये। अ़ज़ीज़ ने कहा कि चार महीने का बच्चा क्या जाने और कैसे बोले ? हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला उस को गोयाई देने और उस से मेरी बे गुनाही की शहादत अदा करा देने पर क़ादिर है। अ़ज़ीज़ ने उस बच्चे से दरयाफ़्त किया : क़ुदरते इलाही से वोह बच्चा गोया हुवा और उस ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ की और ज़ुलैख़ा के क़ौल को बात़िल बताया। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **71** : या'नी उस बच्चे ने **72** : क्यूं कि येह सूरत बताती है कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आगे बढ़े और और ज़ुलैख़ा ने इन को दफ़्अ़ किया तो कुरता आगे से फटा **73** : इस लिये कि येह ह़ाल साफ़ बताता है कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से भागते थे और ज़ुलैख़ा पीछे से पकड़ती थी इस लिये कुरता पीछे से फटा। **74** : और जान लिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सच्चे हैं और ज़ुलैख़ा झूटी है। **75** : फिर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर अ़ज़ीज़ ने इस त़रह़ मा'ज़िरत की **76** : और इस पर मग़मूम न हो बेशक तुम पाक हो और इस कलाम से येह भी मत़लब था कि इस का किसी से ज़िक्र न करो ताकि चरचा न हो और शोहरा आ़म न हो जाए। **फ़ाएदा** : इस के इलावा भी हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बराअत की बहुत सी अ़लामतें मौजूद थीं : एक तो येह कि कोई शरीफ़ त़बीअ़त इन्सान अपने मोह़सिन के साथ इस त़रह़ की ख़ियानत रवा नहीं रखता, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब ई करामते अख़्लाक़ किस त़रह़ ऐसा कर सकते थे। दुवुम येह कि देखने वालों ने आप को भागते आते देखा और त़ालिब की येह शान नहीं होती, वोह दरपै होता है, भागता नहीं, भागता वोही है जो किसी बात पर मजबूर किया जाए और वोह उसे गवारा न करे। सिवुम येह कि औरत ने इन्तिहा दरजे का सिंगार किया था और वोह ग़ैर मा'मूली ज़ैबो ज़ीनत की ह़ालत में थी। इस से मा'लूम होता है कि रग़्बत व एहतिमाम मह़ज़ उस की त़रफ़ से था। चहारुम हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का तक़्वा व त़हारत जो एक दराज़ मुद्दत तक देखा जा चुका था इस से आप की त़रफ़ ऐसे अम्रे क़बीह़ (बुरे फ़े'ल) की निस्बत किसी त़रह़ क़ाबिले ए'तिबार नहीं हो सकती थी, फिर अ़ज़ीज़े मिस्र ज़ुलैख़ा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : **77** : कि तू ने बे गुनाह पर तोहमत लगाई। **78** : अ़ज़ीज़े मिस्र ने अगर्चे इस क़िस्से को बहुत दबाया लेकिन येह ख़बर छुप न सकी और इस का चरचा और शोहरा हो ही गया **79** : या'नी शुरफ़ाए मिस्र की औरतें

الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ

बीबी अपने नौ जवान का दिल लुभाती है बेशक उन की महब्बत इस के दिल में पेर (समा) गई है हम तो इसे सरीह

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ

ख़ुद रफ़्ता पाते हैं[80] तो जब ज़ुलैख़ा ने उन का चकरवा (चे मी गोई व ता'न) सुना तो उन औरतों को बुला भेजा[81] और उन के लिये

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ

मस्नदें तय्यार कीं[82] और उन में हर एक को एक छुरी दी[83] और यूसुफ़[84] से कहा इन पर निकल

عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ

आओ[85] जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा उस की बड़ाई बोलने लगीं[86] और अपने हाथ काट लिये[87] और बोलीं अल्लाह को

لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ

पाकी है येह तो जिन्से बशर से नहीं[88] येह तो नहीं मगर कोई मुअ़ज़्ज़ फ़िरिश्ता ज़ुलैख़ा ने कहा तो येह हैं वोह जिन पर

لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ

तुम मुझे ता'ना देती थीं[89] और बेशक मैं ने इन का जी लुभाना चाहा तो इन्हों ने अपने आप को बचाया[90] और बेशक अगर वोह येह काम न करेंगे

مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

जो मैं इन से कहती हूं तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वोह ज़रूर ज़िल्लत उठाएंगे[91] यूसुफ़ ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे क़ैदख़ाना ज़ियादा पसन्द

80 : कि इस आशुफ़्तगी में इस को अपने नंगो नामूस (इ़ज़्ज़त व मर्तबे) और पर्दे व इ़फ़्फ़त (पाक दामनी) का लिहाज़ भी न रहा। **81 :** या'नी जब उस ने सुना कि अशराफ़े मिस्र की औ़रतें उस को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की महब्बत पर मलामत करती हैं तो उस ने चाहा कि वोह अपना उ़ज़्र उन्हें ज़ाहिर कर दे, इस लिये उस ने उन की दा'वत की और अशराफ़े मिस्र की चालीस औ़रतों को मदऊ़ कर दिया, उन में वोह सब भी थीं जिन्हों ने इस पर मलामत की थी, ज़ुलैख़ा ने उन औ़रतों को बहुत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ मेहमान बनाया **82 :** निहायत पुर तकल्लुफ़, जिन पर वोह बहुत इ़ज़्ज़तो आराम से तक्ये लगा कर बैठीं और दस्तर ख़्वान बिछाए गए और क़िस्म क़िस्म के खाने और मेवे चुने गए। **83 :** ताकि खाने के लिये उस से गोश्त काटें और मेवे तराशें **84 :** को उ़म्दा लिबास पहना कर उन **85 :** पहले तो आप ने इस से इन्कार किया लेकिन जब इसरार व ताकीद ज़ियादा हुई तो उस की मुख़ालफ़त के अन्देशे से आप को आना ही पड़ा। **86 :** क्यूं कि उन्हों ने इस जमाले आ़लम अफ़्रोज़ के साथ नुबुव्वत व रिसालत के अन्वार और तवाज़ोअ़ व इन्किसार के आसार व शाहाना हैबत व इक़्तिदार और लज़ाइज़े अत़्इमा (लज़ीज़ खानों) और सुवरे जमीला (ह़सीन चेहरों) की त़रफ़ से बे नियाज़ी की शान देखी तअ़ज्जुब में आ गईं और आप की अ़ज़मतो हैबत दिलों में भर गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारफ़्ता किया कि उन औ़रतों को ख़ुद फ़रामोशी हो गई **87 :** बजाए लीमूं के और दिल ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ऐसे मश्ग़ूल हुए कि हाथ काटने की तक्लीफ़ का अस्लन एह़सास न हुवा **88 :** कि ऐसा हुस्नो जमाल बशर में देखा ही नहीं गया और इस के साथ नफ़्स की येह त़हारत कि मिस्र के आ़ली ख़ानदान, जमीलए मुख़द्दरात (ख़ूब सूरत पर्दा नशीन औ़रतें) त़रह़ त़रह़ के नफ़ीस लिबासों और ज़ेवरों से आरास्ता व पैरास्ता सामने मौजूद हैं और आप किसी की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाते और क़त्अ़न इल्तिफ़ात नहीं करते। **89 :** अब तुम ने देख लिया और तुम्हें मा'लूम हो गया कि मेरी शेफ़्तगी (महब्बत) कुछ क़ाबिले तअ़ज्जुब और जाए मलामत नहीं। **90 :** और किसी त़रह़ मेरी त़रफ़ माइल न हुए। इस पर मिस्री औ़रतों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा कि आप ज़ुलैख़ा का कहना मान लीजिये ! ज़ुलैख़ा बोली : **91 :** और चोरों और क़ातिलों और ना फ़रमानों के साथ जेल में रहेंगे क्यूं कि इन्हों ने मेरा दिल लिया और मेरी ना फ़रमानी की और फ़िराक़ की तलवार से मेरा ख़ून बहाया तो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को भी ख़ुश गवार खाना पीना

إِلَىَّ مِمَّا يَدْعُونَنِىٓ إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّى كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ

है उस काम से जिस की त़रफ़ येह मुझे बुलाती हैं और अगर तू मुझ से इन का मक्र न फेरेगा[92] तो मैं इन की त़रफ़ माइल होउंगा

وَأَكُن مِّنَ الْجَٰهِلِينَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُۥ رَبُّهُۥ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ

और नादान बनूंगा तो उस के रब ने उस की सुन ली और उस से औ़रतों का मक्र फेर दिया

إِنَّهُۥ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّنۢ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْءَايَٰتِ

बेशक वोही है सुनता जानता[93] फिर सब कुछ निशानियां देख दिखा कर पिछली मत इन्हें येही आई (येही मुनासिब समझा) कि ज़रूर

لَيَسْجُنُنَّهُۥ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَآ

एक मुद्दत तक इसे क़ैदख़ाने में डालें[94] और उस के साथ क़ैदख़ाने में दो जवान दाख़िल हुए[95] उन में एक[96] बोला

إِنِّىٓ أَرَىٰنِىٓ أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْءَاخَرُ إِنِّىٓ أَرَىٰنِىٓ أَحْمِلُ فَوْقَ

मैं ने ख़्वाब देखा कि[97] शराब निचोड़ता हूं और दूसरा बोला[98] मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सर पर

رَأْسِى خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِۦٓ ۖ إِنَّا نَرَىٰكَ مِنَ

कुछ रोटियां हैं जिन में से परिन्द खाते हैं हमें इस की ता'बीर बताइये बेशक हम आप को नेकोकार

الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِۦٓ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِۦ

देखते हैं[99] यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वोह तुम्हारे पास न आने पाएगा कि मैं इस की ता'बीर उस के आने से

और आराम की नींद सोना मुयस्सर न होगा, जैसा मैं जुदाई की तक्लीफ़ों में मुसीबतें झेलती और सदमों में परेशानी के साथ वक़्त काटती हूं, येह भी तो कुछ तक्लीफ़ उठाएं, मेरे साथ ह़रीर (नर्म व मुलायम रेशमी बिस्तर) में शाहाना सरीर (शाही पलंग) पर ऐ़श गवारा नहीं है तो क़ैदख़ाने के चुभने वाले बोरिये पर नंगे जिस्म को दुखाना गवारा करें। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام येह सुन कर मजलिस से उठ गए और मिस्री औ़रतें मलामत करने के बहाने से बाहर आईं और एक एक ने आप से अपनी तमन्नाओं और मुरादों का इज़्हार किया, आप को उन की गुफ़्तगू बहुत ना गवार हुई (خازن ومدارک وحسینی) तो बारगाहे इलाही में **92 :** और अपनी इ़स्मत की पनाह में न लेगा **93 :** जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उम्मीद पूरी होने की कोई शक्ल न देखी तो मिस्री औ़रतों ने ज़ुलैख़ा से कहा कि मुनासिब येह मा'लूम होता है कि अब दो तीन रोज़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को क़ैदख़ाने में रखा जाए ताकि वहां की मेह़नतो मशक़्क़त देख कर उन्हें ने'मतो राह़त की क़द्र हो और वोह तेरी दरख़्वास्त क़बूल करें, ज़ुलैख़ा ने इस राय को माना और अ़ज़ीज़े मिस्र से कहा कि मैं उस इ़बरी ग़ुलाम की वज्ह से बदनाम हो गई हूं और मेरी त़बीअ़त उस से नफ़रत करने लगी है, मुनासिब येह है कि उन को क़ैद किया जाए ताकि लोग समझ लें कि वोह ख़त़ावार हैं और मैं मलामत से बरी होउं, येह बात अ़ज़ीज़ के ख़याल में आ गई। **94 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया और आप को क़ैदख़ाने में भेज दिया। **95 :** उन में से एक तो मिस्र के शाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद बिन नज़्वान अ़मलीक़ी का मोह्तमिमे मत़्बख़ (बावर्ची ख़ाने का ज़िम्मेदार) था और दूसरा उस का साक़ी (शराब पिलाने वाला) उन दोनों पर येह इल्ज़ाम था कि इन्हों ने बादशाह को ज़ह्र देना चाहा, इस जुर्म में दोनों क़ैद किये गए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام जब क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए तो आप ने अपने इ़ल्म का इज़्हार शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया कि मैं ख़्वाबों की ता'बीर का इ़ल्म रखता हूं। **96 :** जो बादशाह का साक़ी था **97 :** मैं एक बाग़ में हूं वहां एक अंगूर के दरख़्त में तीन ख़ोशे रसीदा लगे हुए हैं, बादशाह का कासा मेरे हाथ में है, मैं उन ख़ोशों से **98 :** या'नी मोह्तमिमे मत़्बख़ **99 :** कि आप दिन में रोज़ादार रहते हैं, रात तमाम नमाज़ में गुज़ारते हैं, जब कोई जेल में बीमार होता है उस की इ़यादत करते हैं, उस की ख़बर गीरी रखते हैं, जब किसी पर तंगी होती है उस के लिये कशाइश

قَبْلَ اَنْ یَّاْتِیَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ ؕ اِنِّیْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا

पहले तुम्हें बता दूंगा[100] येह उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है बेशक मैं ने उन लोगों का दीन न माना जो

یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ اتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ

अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वोह आख़िरत से मुन्किर हैं और मैं ने अपने बाप दादा

اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ

इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब का दीन इख़्तियार किया[101] हमें नहीं पहुंचता कि किसी चीज़ को **अल्लाह** का शरीक

شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَیْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

ठहराएं येह[102] **अल्लाह** का एक फ़ज़्ल है हम पर और लोगों पर मगर अक्सर लोग

لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ

शुक्र नहीं करते[103] ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोनों साथियो क्या जुदा जुदा रब[104] अच्छे या एक

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿ؕ۳۹﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ

अल्लाह जो सब पर ग़ालिब[105] तुम उस के सिवा नहीं पूजते मगर निरे नाम जो तुम ने और तुम्हारे

اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ

बाप दादा ने तराश लिये हैं[106] **अल्लाह** ने उन की कोई सनद न उतारी हुक्म नहीं मगर **अल्लाह** का

की राह निकालते हैं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन को ता'बीर देने से पहले अपने मो'जिज़े का इज़्हार और तौहीद की दा'वत शुरूअ़ कर दी और येह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि इल्म में आप का दरजा इस से ज़ियादा है जितना वोह लोग आप की निस्बत ए'तिक़ाद रखते हैं, क्यूं कि इल्मे ता'बीर ज़न पर मब्नी है इस लिये आप ने चाहा कि उन्हें ज़ाहिर फ़रमा दें कि आप ग़ैब की यक़ीनी ख़बरें देने पर क़ुदरत रखते हैं और इस से मख़्लूक़ आ़जिज़ है। जिस को **अल्लाह** ने ग़ैबी उ़लूम अ़ता फ़रमाए हों उस के नज़्दीक ख़्वाब की ता'बीर क्या बड़ी बात है। उस वक़्त मो'जिज़े का इज़्हार आप ने इस लिये फ़रमाया कि आप जानते थे कि इन दोनों में एक अ़न्क़रीब सूली दिया जाएगा तो आप ने चाहा कि इस को कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल करें और जहन्नम से बचावें। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर आ़लिम अपनी इल्मी मन्ज़िलत का इस लिये इज़्हार करे कि लोग इस से नफ़्अ़ उठाएं तो येह जाइज़ है। (مدارک وخازن) **100 :** उस की मिक़्दार और उस का रंग और उस के आने का वक़्त और येह कि तुम ने क्या खाया या कितना खाया, कब खाया। **101 :** हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने मो'जिज़े का इज़्हार फ़रमाने के बा'द येह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप ख़ानदाने नुबुव्वत से हैं और आप के आबाओ अज्दाद अम्बिया हैं, जिन का मर्तबए उ़ल्या (बुलन्द तरीन मर्तबा) दुन्या में मश्हूर है। इस से आप का मक़्सद येह था कि सुनने वाले आप की दा'वत क़बूल करें और आप की हिदायत को मानें। **102 :** तौहीद इख़्तियार करना और शिर्क से बचना **103 :** उस की इबादत बजा नहीं लाते और मख़्लूक़ परस्ती करते हैं। **104 :** जैसे कि बुत परस्तों ने बना रखे हैं। कोई सोने का कोई चांदी का, कोई तांबे का, कोई लोहे का, कोई लकड़ी का, कोई पथ्थर का, कोई और किसी चीज़ का, कोई छोटा, कोई बड़ा, मगर सब के सब निकम्मे, बेकार, न नफ़्अ़ दे सकें, न ज़रर पहुंचा सकें, ऐसे झूटे मा'बूद **105 :** कि न कोई उस का मुक़ाबिल हो सकता है न उस के हुक्म में दख़्ल दे सकता है न उस का कोई शरीक है न नज़ीर, सब पर उस का हुक्म जारी और सब उस के मम्लूक (बन्दे)। **106 :** और उन का नाम मा'बूद रख लिया है, बा वुजूदे कि वोह बे हक़ीक़त पथ्थर हैं।

أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّآ إِيَّاهُ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

उस ने फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी को न पूजो[107] येह सीधा दीन है[108] लेकिन अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾ يَٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّآ أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا

नहीं जानते[109] ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने रब (बादशाह) को शराब पिलाएगा[110]

وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِن رَّأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي

रहा दूसरा[111] वोह सूली दिया जाएगा तो परिन्दे उस का सर खाएंगे[112] हुक्म हो चुका उस बात का

فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ ﴿٤١﴾ وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ

जिस का तुम सुवाल करते थे[113] और यूसुफ़ ने उन दोनों में से जिसे बचता समझा[114] उस से कहा अपने रब (बादशाह) के पास मेरा

رَبِّكَ فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ

ज़िक्र करना[115] तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब (बादशाह) के सामने यूसुफ़ का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ कई बरस और जेलख़ाने में

سِنِينَ ﴿٤٢﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ

रहा[116] और बादशाह ने कहा मैं ने ख़्वाब में देखीं सात गाएं फ़रबा (मोटी ताज़ी) कि उन्हें सात दुबली गाएं खा

سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ

रही हैं और सात बालें हरी और दूसरी सात सूखी[117] ऐ दरबारियो

أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾ قَالُوا أَضْغَاثُ

मेरे ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की ता'बीर आती हो बोले परेशान

107 : क्यूं कि सिर्फ़ वोही मुस्तहिक़े इबादत है। 108 : जिस पर दलाइल व बराहीन क़ाइम हैं। 109 : तौहीद व इबादते इलाही की दा'वत देने के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ता'बीरे ख़्वाब की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इर्शाद किया : 110 : या'नी बादशाह का साक़ी तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा और पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाएगा और तीन ख़ोशे जो ख़्वाब में बयान किये गए हैं येह तीन दिन हैं इतने ही अय्याम क़ैदख़ाने में रहेगा, फिर बादशाह उस को बुला लेगा। 111 : या'नी मोहतमिमे मत्बख़ व तआम 112 : हज़रते इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि ता'बीर सुन कर उन दोनों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि ख़्वाब तो हम ने कुछ भी नहीं देखा हम तो हंसी कर रहे थे। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : 113 : जो मैं ने कह दिया येह ज़रूर वाक़ेअ़ होगा तुम ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो, अब येह हुक्म टल नहीं सकता। 114 : या'नी साक़ी को। 115 : और मेरा हाल बयान करना कि क़ैदख़ाने में एक मज़लूम बे गुनाह क़ैद है और उस की क़ैद को एक ज़माना गुज़र चुका है। 116 : अक्सर मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ हैं कि इस वाक़िए के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام सात बरस और क़ैद में रहे और पांच बरस पहले रह चुके थे और इस मुद्दत के गुज़रने के बा'द जब **अल्लाह** तआला को हज़रते यूसुफ़ का क़ैद से निकालना मन्ज़ूर हुवा तो मिस्र के शाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा, जिस से उस को बहुत परेशानी हुई और उस ने मुल्क के साहिरों और काहिनों और ता'बीर देने वालों को जम्अ़ कर के उन से अपना ख़्वाब बयान किया। 117 : जो हरी पर लिपटीं और उन्हों ने हरी को सुखा दिया।

اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِيْ

ख़्वाबें हैं और हम ख़्वाब की ता'बीर नहीं जानते और बोला वोह जो

نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾

उन दोनों में से बचा था[118] और एक मुद्दत बा'द उसे याद आया[119] मैं तुम्हें इस की ता'बीर बताऊंगा मुझे भेजो[120]

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ

ऐ यूसुफ़ ऐ सिद्दीक़ हमें ता'बीर दीजिये सात फ़रबा गायों की जिन्हें सात दुबली खाती

عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى

हैं और सात हरी बालें और दूसरी सात सूखी[121] शायद मैं लोगों की तरफ़

النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا

लौट कर जाऊं शायद वोह आगाह हों[122] कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार[123] तो जो

حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ

काटो उसे उस की बाल में रहने दो[124] मगर थोड़ा जितना खा लो[125] फिर इस के

بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا

बा'द सात करें (सख़्त तंगी वाले) बरस आएंगे[126] कि खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिये पहले जम्अ़ कर रखा था[127] मगर थोड़ा जो

تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ

बचा लो[128] फिर इन के बा'द एक बरस आएगा जिस में लोगों को मींह दिया जाएगा और उस में

يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ ع وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ

रस निचोड़ेंगे[129] और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ तो जब उस के पास एलची आया[130] कहा

118 : या'नी साक़ी **119 :** कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया था कि अपने आक़ा के सामने मेरा ज़िक्र करना। साक़ी ने कहा कि **120 :** क़ैदख़ाने में वहां ता'बीरे ख़्वाब के एक आ़लिम हैं, बस बादशाह ने उस को भेज दिया, वोह क़ैदख़ाने में पहुंच कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ करने लगा : **121 :** येह ख़्वाब बादशाह ने देखा है और मुल्क के तमाम उ़लमा व हुकमा इस की ता'बीर से आ़जिज़ रहे हैं, हज़रत इस की ता'बीर इर्शाद फ़रमाएं। **122 :** ख़्वाब की ता'बीर से और आप के इल्मो फ़ज़्ल और मर्तबतो मन्ज़िलत को जानें और आप को इस मेहनत से रिहा कर के अपने पास बुलाएं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ता'बीर दी और **123 :** इस ज़माने में ख़ूब पैदावार होगी, सात मोटी गायों और सात सब्ज़ बालियों से इसी की तरफ़ इशारा है। **124 :** ताकि ख़राब न हो और आफ़ात से महफ़ूज़ रहे **125 :** उस पर से भूसी उतार लो और उसे साफ़ कर लो, बाक़ी को ज़ख़ीरा बना कर महफ़ूज़ कर लो। **126 :** जिन की तरफ़ दुबली गायों और सूखी बालों में इशारा है **127 :** और ज़ख़ीरा कर लिया था। **128 :** बीज के लिये ताकि उस से काश्त करो। **129 :** अंगूर का और तिल, ज़ैतून के तेल निकालेंगे, येह साल कसीरुल ख़ैर होगा, ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब होगी, दरख़्त ख़ूब फलेंगे। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से येह

ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِیْ قَطَّعْنَ اَیْدِیَهُنَّ ؕ

अपने रब (बादशाह) के पास पलट जा फिर उस से पूछ[131] क्या हाल है उन औ़रतों का जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे

اِنَّ رَبِّیْ بِكَیْدِهِنَّ عَلِیْمٌ ﴿۵۰﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ یُوْسُفَ

बेशक मेरा रब उन का फ़रेब जानता है[132] बादशाह ने कहा ऐ औ़रतो तुम्हारा क्या काम था जब तुम ने यूसुफ़ का

عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَیْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ

जी (दिल) लुभाना चाहा बोलीं अल्लाह को पाकी है हम ने उन में कोई बदी न पाई अ़ज़ीज़ की औ़रत[133]

الْعَزِیْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ٘ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ

बोली अब अस्ली बात खुल गई मैं ने उन का जी लुभाना चाहा था और वोह बेशक

الصّٰدِقِیْنَ ﴿۵۱﴾ ذٰلِكَ لِیَعْلَمَ اَنِّیْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَیْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ

सच्चे हैं[134] यूसुफ़ ने कहा येह मैं ने इस लिये किया कि अ़ज़ीज़ को मा'लूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे ख़ियानत न की और अल्लाह

كَیْدَ الْخَآئِنِیْنَ ﴿۵۲﴾

दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता

ता'बीर सुन कर वापस हुवा और बादशाह की ख़िदमत में जा कर ता'बीर बयान की, बादशाह को येह ता'बीर बहुत पसन्द आई और उसे यक़ीन हुवा कि जैसा ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया है ज़रूर वैसा ही होगा, बादशाह को शौक़ पैदा हुवा कि इस ख़्वाब की ता'बीर ख़ुद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बाने मुबारक से सुने। **130 :** और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में बादशाह का पयाम अ़र्ज़ किया तो आप ने **131 :** या'नी उस से दरख़्वास्त कर कि वोह पूछे तफ़्तीश करे **132 :** येह आप ने इस लिये फ़रमाया ताकि बादशाह के सामने आप की बराअत और बे गुनाही मा'लूम हो जाए और येह उस को मा'लूम हो कि येह क़ैदे त़वील बे वज्ह हुई ताकि आयिन्दा ह़ासिदों को नेश ज़नी (बुराई करने) का मौक़अ़ न मिले। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दफ़्ए़ तोहमत में कोशिश करना ज़रूरी है। अब क़ासिद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास से येह पयाम ले कर बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा। बादशाह ने सुन कर औ़रतों को जम्अ़ किया और उन के साथ अ़ज़ीज़ की औ़रत को भी। **133 :** ज़ुलैख़ा **134 :** बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास पयाम भेजा कि औ़रतों ने आप की पाकी बयान की और अ़ज़ीज़ की औ़रत ने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया, इस पर ह़ज़रत।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِىْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىْ ؕ

और मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता[135] बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रह़्म करे[136]

اِنَّ رَبِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵۳ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِىْ بِهٖۤ اَسْتَخْلِصْهُ

बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है[137] और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें ख़ास अपने

لِنَفْسِىْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ۝۵۴ قَالَ

लिये चुन लूं[138] फिर जब उस से बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहां मुअ़ज़्ज़ज़ मो'तमद हैं[139] यूसुफ़ ने कहा

اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ۝۵۵ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا

मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इ़ल्म वाला हूं[140] और यूंही हम ने

135 : ज़ुलैख़ा के इक़रार व ए'तिराफ़ के बा'द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जो येह फ़रमाया था कि मैं ने अपनी बराअत का इज़्हार इस लिये चाहा था ताकि अ़ज़ीज़ को येह मा'लूम हो जाए कि मैं ने उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजूदगी) में उस की ख़ियानत नहीं की है और उस के अह्ल की हुरमत (इ़ज़्ज़त) ख़राब करने से मुज्तनिब (दूर) रहा हूं और जो इल्ज़ाम मुझ पर लगाए गए हैं मैं उन से पाक हूं, इस के बा'द आप का ख़याल मुबारक इस त़रफ़ गया कि इस में अपनी त़रफ़ पाकी की निस्बत और अपनी नेकी का बयान है ऐसा न हो कि इस में शाने ख़ुदबीनी और ख़ुद पसन्दी (अपने फ़ख़्रो कमाल और ता'रीफ़) का शाइबा भी आए। इसी लिये अल्लाह तआ़ला की जनाब में तवाज़ोअ़ व इन्किसार (आ़जिज़ी) से अ़र्ज़ किया कि मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता, मुझे अपनी बे गुनाही पर नाज़ नहीं है और मैं गुनाह से बचने को अपने नफ़्स की ख़ूबी क़रार नहीं देता, नफ़्स की जिन्स का येह ह़ाल है कि 136 : या'नी अपने जिस मख़्सूस बन्दे को अपने करम से मा'सूम करे तो उस का बुराइयों से बचना अल्लाह के फ़ज़्लो रह़मत से है और मा'सूम करना उसी का करम है। 137 : जब बादशाह को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़ल्म और आप की अमानत का ह़ाल मा'लूम हुवा, और वोह आप के हुस्ने सब्र, हुस्ने अदब, क़ैदख़ाने वालों के साथ एह़सान, मेह़नतों और तक्लीफ़ों पर सबात व इस्तिक़्लाल (साबित क़दमी) रखने पर मुत्तलअ़ हुवा तो उस के दिल में आप का बहुत ही अ़ज़ीम ए'तिक़ाद पैदा हुवा 138 : और अपना मख़्सूस बना लूं। चुनान्चे उस ने मुअ़ज़्ज़ज़ीन की एक जमाअ़त बेहतरीन सुवारियां और शाहाना साज़ो सामान और नफ़ीस लिबास ले कर क़ैदख़ाने भेजी ताकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को निहायत ता'ज़ीमो तक्रीम के साथ ऐवाने शाही में लाएं, उन लोगों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर बादशाह का पयाम अ़र्ज़ किया, आप ने क़बूल फ़रमाया और क़ैदख़ाने से निकलते वक़्त क़ैदियों के लिये दुआ़ फ़रमाई, जब क़ैदख़ाने से बाहर तशरीफ़ लाए तो उस के दरवाज़े पर लिखा : येह बला का घर, ज़िन्दों की क़ब्र और दुश्मनों की बदगोई और सच्चों के इम्तिह़ान की जगह है, फिर ग़ुस्ल फ़रमाया और पोशाक पहन कर ऐवाने शाही की त़रफ़ रवाना हुए, जब क़ल्ए के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया : मेरा रब मुझे काफ़ी है उस की पनाह बड़ी और उस की सना बरतर और उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर क़ल्ए में दाख़िल हुए बादशाह के सामने पहुंचे तो येह दुआ़ की, कि या रब मेरे ! तेरे फ़ज़्ल से इस की भलाई त़लब करता हूं और इस की और दूसरों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं, जब बादशाह से नज़र मिली तो आप ने अ़रबी में सलाम फ़रमाया, बादशाह ने दरयाफ़्त किया : येह क्या ज़बान है ? फ़रमाया : येह मेरे अ़म (चचा) ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बान है, फिर आप ने उस को इबरानी ज़बान में दुआ़ दी। उस ने दरयाफ़्त किया : येह कौन सी ज़बान है ? फ़रमाया : येह मेरे अब्बा की ज़बान है। बादशाह येह दोनों ज़बानें न समझ सका बा वुजूदे कि वोह सत्तर ज़बानें जानता था, फिर उस ने जिस ज़बान में ह़ज़रत से गुफ़्तगू की आप ने उसी ज़बान में उस को जवाब दिया, उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ तीस साल की थी, इस उ़म्र में येह वुस्अ़ते उ़लूम देख कर बादशाह को बहुत ह़ैरत हुई और उस ने आप को अपने बराबर जगह दी। 139 : बादशाह ने दरख़्वास्त की, कि ह़ज़रत इस के ख़्वाब की ता'बीर अपनी ज़बान मुबारक से सुना दें, ह़ज़रत ने उस ख़्वाब की पूरी तफ़्सील भी सुना दी जिस जिस शान से कि उस ने देखा था, बा वुजूदे कि आप से येह ख़्वाब पहले मुज्मलन (मुख़्तसरन) बयान किया गया था। इस पर बादशाह को बहुत तअ़ज्जुब हुवा ! कहने लगा कि आप ने मेरा ख़्वाब हू बहू बयान फ़रमा दिया, ख़्वाब तो अ़जीब था ही मगर आप का इस त़रह़ बयान फ़रमा देना इस से भी ज़ियादा अ़जीब तर है, अब ता'बीर इर्शाद हो जाए, आप ने ता'बीर बयान फ़रमाने के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि अब लाज़िम येह है कि ग़ल्ले जम्अ़ किये जाएं और इन फ़राख़ी के सालों में कसरत से काश्त कराई जाए और ग़ल्ले मअ़ बालियों के मह़फ़ूज़ रखे जाएं और रिआ़या की पैदावार में से ख़ुमुस (पांचवां हि़स्सा) लिया जाए, इस से जो जम्अ़ होगा वोह मिस्र व ह़वालिये मिस्र (मिस्र के इर्द गिर्द) के बाशिन्दों के लिये काफ़ी होगा और फिर ख़ल्क़े ख़ुदा हर हर त़रफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहां इतने ख़ज़ाइन व अम्वाल जम्अ़ होंगे जो तुझ से पहलों के लिये जम्अ़ न हुए, बादशाह ने कहा : येह इन्तिज़ाम कौन करेगा ? 140 : या'नी अपनी क़लम रव (सल्त़नत) के तमाम

لِيُوسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا

यूसुफ़ को उस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी उस में जहां चाहे रहे[141] हम अपनी रह़मत[142] जिसे

مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

चाहें पहुंचाएं और हम नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते और बेशक आख़िरत का सवाब उन के लिये बेहतर जो

ख़ज़ाने मेरे सिपुर्द कर दे, बादशाह ने कहा : आप से ज़ियादा इस का मुस्तह़िक़ और कौन हो सकता है और उस ने इस को मन्ज़ूर किया। **मसाइल :** अह़ादीस में त़लबे इमारत (हुकूमत) की मुमानअ़त आई है, उस के येह मा'ना हैं कि जब मुल्क में अह्ल मौजूद हों और इक़ामते अह़कामे इलाही किसी एक शख़्स के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत त़लब करना मकरूह है, लेकिन जब एक ही शख़्स अह्ल हो तो उस को अह़कामे इलाहिय्यह की इक़ामत के लिये इमारत त़लब करना जाइज़ बल्कि वाजिब है और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इसी ह़ाल में थे, आप रसूल थे, उम्मत के मसालेह़ (फ़ाएदों) के आ़लिम थे, येह जानते थे कि क़ह़्त़ शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राह़तो आसाइश पहुंचाने की येही सबील (राह) है कि इनाने हुकूमत (निज़ामे हुकूमत) को आप अपने हाथ में लें, इस लिये आप ने इमारत त़लब फ़रमाई। **मस्अला :** ज़ालिम बादशाह की त़रफ़ से ओ़हदे क़बूल करना ब निय्यते इक़ामते अ़द्ल जाइज़ है। **मस्अला :** अगर अह़कामे दीन का इज्रा (नफ़ाज़) काफ़िर या फ़ासिक़ बादशाह की तम्कीन (त़ाक़त) के बिग़ैर न हो सके तो उस में उस से मदद लेना जाइज़ है। **मस्अला :** अपनी ख़ूबियों का बयान तफ़ाख़ुर व तकब्बुर के लिये ना जाइज़ है लेकिन दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाने या ख़ल्क़ के हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करने के लिये अगर इज़्हार की ज़रूरत पेश आए तो मम्नूअ़ नहीं, इसी लिये ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बादशाह से फ़रमाया कि मैं ह़िफ़ाज़त व इल्म वाला हूं।
141 : सब इन के तह़्ते तसर्रुफ़ (इख़्तियार में) है। इमारत त़लब करने के एक साल बा'द बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बुला कर आप की ताजपोशी की और तलवार और मोह्र आप के सामने पेश की और आप को त़िलाई तख़्त पर तख़्त नशीन किया जो जवाहिरात से मुरस्सअ़ था और अपना मुल्क आप को तफ़्वीज़ (सिपुर्द) किया और क़ित़्फ़ीर (अ़ज़ीज़े मिस्र) को मा'ज़ूल कर के आप को उस की जगह वाली बनाया और तमाम ख़ज़ाइन आप को तफ़्वीज़ किये और सल्त़नत के तमाम उमूर आप के हाथ में दे दिये और ख़ुद मिस्ल ताबेअ़ के हो गया कि आप की राय में दख़्ल न देता और आप के हर हुक्म को मानता। उसी ज़माने में अ़ज़ीज़े मिस्र का इन्तिक़ाल हो गया, बादशाह ने उस के इन्तिक़ाल के बा'द ज़ुलैख़ा का निकाह़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के साथ कर दिया, जब यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़ुलैख़ा के पास पहुंचे और उस से फ़रमाया : क्या येह उस से बेहतर नहीं जो तू चाहती थी ! ज़ुलैख़ा ने अ़र्ज़ किया : ऐ सिद्दीक़ ! मुझे मलामत न कीजिये, मैं ख़ूबरू थी, नौ जवान थी, ऐ़श में थी और अ़ज़ीज़े मिस्र औ़रतों से सरोकार ही न रखता था और आप को **अल्लाह** तआ़ला ने येह हुस्नो जमाल अ़त़ा किया है, मेरा दिल इख़्तियार से बाहर हो गया और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को मा'सूम किया है आप मह़फ़ूज़ रहे। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ुलैख़ा को बाकिरा (कुंवारी) पाया और उस से आप के दो फ़रज़न्द हुए इफ़रासीम और मीशा और मिस्र में आप की हुकूमत मज़बूत़ हुई, आप ने अ़द्ल की बुन्यादें क़ाइम कीं, हर ज़न व मर्द के दिल में आप की मह़ब्बत पैदा हुई और आप ने क़ह़्त़ साली के अय्याम के लिये ग़ल्लों के ज़ख़ीरे जम्अ़ करने की तदबीर फ़रमाई, इस के लिये बहुत वसीअ़ और आ़लीशान अम्बार ख़ाने (गोदाम) ता'मीर फ़रमाए और बहुत कसीर ज़ख़ाइर जम्अ़ किये, जब फ़राख़ी के साल गुज़र गए और क़ह़्त़ का ज़माना आया तो आप ने बादशाह और उस के ख़ुद्दाम के लिये रोज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमा दिया, एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने ह़ज़रत (यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام) से भूक की शिकायत की, आप ने फ़रमाया : येह क़ह़्त़ की इब्तिदा का वक़्त है। **पहले** साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरे थे सब ख़त्म हो गए, बाज़ार ख़ाली रह गए, अह्ले मिस्र ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से जिन्स (ग़ल्ला) ख़रीदने लगे और उन के तमाम दिरहम, दीनार आप के पास आ गए। **दूसरे** साल ज़ेवर और जवाहिरात से ग़ल्ला ख़रीदा और वोह तमाम आप के पास आ गए, लोगों के पास ज़ेवर व जवाहिर की क़िस्म से कोई चीज़ न रही। **तीसरे** साल चौपाए और जानवर दे कर ग़ल्ले ख़रीदे और मुल्क में कोई किसी जानवर का मालिक न रहा। **चौथे** साल में ग़ल्ले के लिये तमाम ग़ुलाम और बांदियां बेच डालीं। **पांचवें** साल तमाम अराज़ी व अ़मला व जागीरें फ़रोख़्त कर के ह़ज़रत से ग़ल्ला ख़रीदा और येह तमाम चीज़ें ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंच गईं। **छटे** साल जब कुछ न रहा तो उन्हों ने अपनी औलादें बेचीं, इस त़रह ग़ल्ले ख़रीद कर वक़्त गुज़ारा। **सातवें** साल वोह लोग ख़ुद बिक गए और ग़ुलाम बन गए और मिस्र में कोई आज़ाद मर्द व औ़रत बाक़ी न रहा जो मर्द था वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का ग़ुलाम था जो औ़रत थी वोह आप की कनीज़ थी और लोगों की ज़बान पर था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सी अ़ज़मत व जलालत कभी किसी बादशाह को मुयस्सर न आई। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने बादशाह से कहा कि तू ने देखा **अल्लाह** का मुझ पर कैसा करम है, उस ने मुझ पर ऐसा एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया, अब इन के ह़क़ में तेरी क्या राय है ? बादशाह ने कहा : जो ह़ज़रत की राय और हम आप के ताबेअ़ हैं। आप ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** को गवाह करता हूं और तुझ को गवाह करता हूं कि मैं ने तमाम अह्ले मिस्र को आज़ाद किया और इन के तमाम अम्लाक (माल व मकानात) और कुल जागीरें वापस कीं। उस ज़माने में ह़ज़रत ने कभी शिकम सेर हो कर खाना नहीं मुलाह़ज़ा फ़रमाया, आप से अ़र्ज़ किया गया कि इतने अ़ज़ीम ख़ज़ानों के मालिक हो कर आप भूके रहते हैं ? फ़रमाया : इस अन्देशे से कि सेर हो जाऊं तो कहीं भूकों को न भूल जाऊं। سُبْحٰنَ الله ! क्या पाकीज़ा अख़्लाक़ हैं। मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं

اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ

ईमान लाए और परहेज़ गार रहे[143] और यूसुफ़ के भाई आए तो उस के पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें[144] पहचान लिया

وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ

और वोह उस से अन्जान रहे[145] और जब उन का सामान मुहय्या कर दिया[146] कहा अपना सोतेला भाई[147]

لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْۤ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾

मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा मापता हूं[148] और मैं सब से बेहतर मेहमान नवाज़ हूं

فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا

फिर अगर उसे ले कर मेरे पास न आओ तो तुम्हारे लिये मेरे यहां माप नहीं और मेरे पास न फटक्ना बोले

سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

हम इस की ख़्वाहिश करेंगे उस के बाप से और हमें येह ज़रूर करना और यूसुफ़ ने अपने ग़ुलामों से कहा इन की पूंजी इन की

فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَاۤ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

खुरजियों (थेलों) में रख दो[149] शायद वोह इसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौट कर जाएं[150] शायद वोह

कि मिस्र के तमाम ज़न व मर्द को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ख़रीदे हुए ग़ुलाम और कनीज़ें बनाने में **अल्लाह** तआ़ला की येह हिक्मत थी कि किसी को येह कहने का मौक़अ़ न हो कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ग़ुलाम की शान में आए थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए हैं, बल्कि सब मिस्री इन के ख़रीदे और आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हों और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जो उस हालत में सब्र किया उस की येह जज़ा दी गई। **142 :** या'नी मुल्क व दौलत या नुबुव्वत **143 :** इस से साबित हुवा कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आख़िरत का अज्रो सवाब इस से बहुत ज़ियादा अफ़्ज़लो आ'ला है जो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें दुन्या में अ़ता फ़रमाया और इब्ने उयैना ने कहा कि मोमिन अपनी नेकियों का समरा दुन्या व आख़िरत दोनों में पाता है और काफ़िर जो कुछ पाता है दुन्या ही में पाता है आख़िरत में उस का कोई हिस्सा नहीं। मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि जब क़ह्त़ की शिद्दत हुई और बलाए अ़ज़ीम आ़म हो गई तमाम बिलाद व अम्सार (शहर) क़ह्त़ की सख़्त तर मुसीबत में मुब्तला हुए और हर जानिब से लोग ग़ल्ला ख़रीदने के लिये मिस्र पहुंचने लगे, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام किसी को एक ऊंट के बार से ज़ियादा ग़ल्ला नहीं देते थे ताकि मुसावात (बराबरी) रहे और सब की मुसीबत रफ़्अ़ हो। क़ह्त़ की जैसी मुसीबत मिस्र और तमाम बिलाद में आई, ऐसी ही कन्आ़न में भी आई, उस वक़्त हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन (हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के छोटे भाई) के सिवा अपने दसों बेटों को ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र भेजा। **144 :** देखते ही **145 :** क्यूं कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में डालने से अब तक चालीस साल का त़वील ज़माना गुज़र चुका था और उन का ख़याल येह था कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का इन्तिक़ाल हो चुका होगा और यहां आप तख़्ते सल्त़नत पर शाहाना लिबास में शौकतो शान के साथ जल्वा फ़रमा थे इस लिये उन्हों ने आप को न पहचाना और आप से इबरानी ज़बान में गुफ़्तगू की, आप ने भी इसी ज़बान में जवाब दिया, आप ने फ़रमाया : तुम कौन लोग हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हम शाम के रहने वाले हैं जिस मुसीबत में दुन्या मुब्तला है उसी में हम भी हैं, आप से ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। आप ने फ़रमाया : कहीं तुम जासूस तो नहीं हो ? उन्हों ने कहा : हम **अल्लाह** की क़सम खाते हैं हम जासूस नहीं हैं हम सब भाई हैं, एक बाप की औलाद हैं, हमारे वालिद बहुत बुज़ुर्ग मुअ़म्मर (बड़ी उ़म्र के) सिद्दीक़ हैं और उन का नामे नामी हज़रते या'क़ूब है वोह **अल्लाह** के नबी हैं। आप ने फ़रमाया : तुम कितने भाई हो ? कहने लगे : थे तो हम बारह मगर एक भाई हमारा हमारे साथ जंगल गया था हलाक हो गया और वोह वालिद साहिब को हम सब से ज़ियादा प्यारा था। फ़रमाया : अब तुम कितने हो ? अ़र्ज़ किया : दस। फ़रमाया : ग्यारहवां कहां है ? कहा : वोह वालिद साहिब के पास है क्यूं कि जो हलाक हो गया वोह उसी का ह़क़ीक़ी भाई था, अब वालिद साहिब की उसी से कुछ तसल्ली होती है। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन भाइयों की बहुत इ़ज़्ज़त की और बहुत ख़ात़िरो मुदारात (अच्छी तरह) से उन की मेज़बानी फ़रमाई। **146 :** हर एक का ऊंट भर दिया और ज़ादे सफ़र दे दिया। **147 :** या'नी बिन्यामीन **148 :** उस को ले आओगे तो एक ऊंट ग़ल्ला उस के हिस्से का और ज़ियादा दूंगा। **149 :** जो उन्हों ने क़ीमत

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ

वापस आएं फिर जब वोह अपने बाप की त़रफ़ लौट कर गए[151] बोले ऐ हमारे बाप हम से ग़ल्ला रोक दिया गया[152]

فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ

तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिये कि ग़ल्ला लाएं और हम ज़रूर इस की ह़िफ़ाज़त करेंगे कहा क्या इस के बारे में तुम पर

عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ

वैसा ही ए'तिबार कर लूं जैसा पहले इस के भाई के बारे में किया था[153] तो अल्लाह सब से बेहतर निगह्बान और वोह

اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ

हर मेह्रबान से बढ़ कर मेह्रबान और जब उन्हों ने अपना अस्बाब खोला अपनी पूंजी पाई कि उन को फेर

اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ

दी गई है बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें येह है हमारी पूंजी कि हमें वापस कर दी गई और हम अपने घर के

اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾

लिये ग़ल्ला लाएं और अपने भाई की ह़िफ़ाज़त करें और एक ऊंट का बोझ और ज़ियादा पाएं येह देना बादशाह के सामने कुछ नहीं[154]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ

कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम मुझे अल्लाह का येह अ़ह्द न दे दो[155] कि ज़रूर इसे ले कर आओगे मगर

اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

येह कि तुम घिर जाओ (मजबूर हो जाओ)[156] फिर जब उन्हों ने या'क़ूब को अ़ह्द दे दिया कहा[157] अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहे हैं

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ

और कहा ऐ मेरे बेटो[158] एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना[159]

में दी थी ताकि जब वोह अपना सामान खोलें तो अपनी पूंजी उन्हें मिल जाए और क़ह़्त़ के ज़माने में काम आए और मख़्फ़ी (पोशीदा) त़ौर पर उन के पास पहुंचे ताकि उन्हें लेने में शर्म भी न आए और येह करम व एह़सान दोबारा आने के लिये उन की रग़्बत का बाइ़स भी हो। **150 :** और इस का वापस करना ज़रूरी समझें। **151 :** और बादशाह के ह़ुस्ने सुलूक और उस के एह़सान का ज़िक्र किया, कहा कि उस ने हमारी वोह इ़ज़्ज़तो तक्रीम की, कि अगर आप की औलाद में से कोई होता तो भी ऐसा न कर सकता। फ़रमाया : अब अगर तुम बादशाहे मिस्र के पास जाओ तो मेरी त़रफ़ से सलाम पहुंचाना और कहना कि हमारे वालिद तेरे ह़क़ में तेरे इस सुलूक की वज्ह से दुआ़ करते हैं। **152 :** अगर आप हमारे भाई बिन्यामीन को न भेजेंगे तो ग़ल्ला न मिलेगा। **153 :** उस वक़्त भी तुम ने ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था। **154 :** क्यूं कि उस ने इस से ज़ियादा एह़सान किये हैं। **155 :** या'नी अल्लाह की क़सम न खाओ **156 :** और इस को ले कर आना तुम्हारी त़ाक़त से बाहर हो जाए। **157 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने **158 :** मिस्र में **159 :** ताकि नज़रे बद से मह़्फ़ूज़ रहो। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि नज़र ह़क़ है। पहली मरतबा ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह नहीं फ़रमाया था इस लिये कि उस वक़्त तक कोई येह न जानता था कि

وَمَاۤ اُغْنِیْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُۚ

और मैं तुम्हें अल्लाह से बचा नहीं सकता[160] हुक्म तो सब अल्लाह ही का है मैं ने उसी पर भरोसा किया

وَ عَلَیْهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ(۶۷) وَ لَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَیْثُ اَمَرَهُمْ

और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये और जब वोह दाख़िल हुए जहां से उन के बाप

اَبُوْهُمْؕ مَا كَانَ یُغْنِیْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِیْ نَفْسِ

ने हुक्म दिया था[161] वोह कुछ उन्हें अल्लाह से बचा न सकता हां या'कूब के जी की

یَعْقُوْبَ قَضٰىهَاؕ وَ اِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

एक ख़्वाहिश थी जो उस ने पूरी कर ली और बेशक वोह साहिबे इ़ल्म है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं

یَعْلَمُوْنَ۠(۶۸) وَ لَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى یُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَیْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّیْۤ اَنَا

जानते[162] और जब वोह यूसुफ़ के पास गए[163] उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी[164] कहा यक़ीन जान मैं ही

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ(۶۹) فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ

तेरा भाई[165] हूं तो येह जो कुछ करते हैं इस का ग़म न खा[166] फिर जब उन का सामान मुहय्या कर दिया[167]

جَعَلَ السِّقَایَةَ فِیْ رَحْلِ اَخِیْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَیَّتُهَا الْعِیْرُ اِنَّكُمْ

पियाला अपने भाई के कजावे में रख दिया[168] फिर एक मुनादी ने निदा की ऐ क़ाफ़िले वालो ! बेशक

येह सब भाई और एक बाप की औलाद हैं, लेकिन अब चूंकि जान चुके थे इस लिये नज़र हो जाने (लग जाने) का एहतिमाल था, इस वासिते आप ने अ़लाहदा अ़लाहदा हो कर दाख़िल होने का हुक्म दिया । इस से मा'लूम हुवा कि आफ़तों और मुसीबतों से दफ़्अ़ की तदबीर और मुनासिब एहतियातें अम्बिया का त़रीक़ा हैं और इस के साथ ही आप ने अम्रुल्लाह को तफ़्वीज़ कर दिया कि बा वुजूद एहतियातों के तवक्कुल व ए'तिमाद अल्लाह पर है अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं । **160 :** या'नी जो मुक़द्दर है वोह तदबीर से टाला नहीं जा सकता । **161 :** या'नी शहर के मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से तो उन का मुतफ़र्रिक़ हो कर दाख़िल होना **162 :** जो अल्लाह तआ़ला अपने अस्फ़िया (ख़ास बन्दों) को इ़ल्म देता है । **163 :** और उन्हों ने कहा कि हम आप के पास अपने भाई बिन्यामीन को ले आए तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम ने बहुत अच्छा किया, फिर उन्हें इ़ज़्ज़त के साथ मेहमान बनाया और जा बजा दस्तर ख़्वान लगाए गए और हर दस्तर ख़्वान पर दो दो साहिबों को बिठाया गया, बिन्यामीन अकेले रह गए तो वोह रो पड़े और कहने लगे कि आज अगर मेरे भाई यूसुफ़ (عَلَیْهِ السَّلَام) ज़िन्दा होते तो मुझे अपने साथ बिठाते, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया और आप ने बिन्यामीन को अपने दस्तर ख़्वान पर बिठाया । **164 :** और फ़रमाया कि तुम्हारे हलाक शुदा भाई की जगह मैं तुम्हारा भाई हो जाऊं तो क्या तुम पसन्द करोगे ? बिन्यामीन ने कहा कि आप जैसा भाई किस को मुयस्सर आए लेकिन या'कूब (عَلَیْهِ السَّلَام) का फ़रज़न्द और राह़ील (मादरे ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام) का नूरे नज़र होना तुम्हें कैसे ह़ासिल हो सकता है, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام रो पड़े और बिन्यामीन को गले से लगाया और **165 :** यूसुफ़ (عَلَیْهِ السَّلَام) **166 :** बेशक अल्लाह ने हम पर एह़सान किया और हमें ख़ैर के साथ जम्अ़ फ़रमाया और अभी इस राज़ की भाइयों को इत्तिलाअ़ न देना, येह सुन कर बिन्यामीन फ़र्ते मसर्रत से बेख़ुद हो गए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام से कहने लगे : अब मैं आप से जुदा न होउंगा आप ने फ़रमाया : वालिद साहिब को मेरी जुदाई का बहुत ग़म पहुंच चुका है अगर मैं ने तुम्हें भी रोक लिया तो उन्हें और ज़ियादा ग़म होगा, इलावा बरीं रोकने की बजुज़ इस के और कोई सबील भी नहीं है कि तुम्हारी त़रफ़ कोई ग़ैर पसन्दीदा बात मन्सूब हो । बिन्यामीन ने कहा : इस में कोई मुज़ायक़ा नहीं । **167 :** और हर एक को एक बारे शुतुर (एक ऊंट का बोझ) ग़ल्ला दे दिया और एक बारे शुतुर बिन्यामीन के नाम ख़ास कर दिया **168 :** जो बादशाह के पानी पीने का सोने का जवाहिरात से मुरस्सअ़ किया हुवा था और उस वक़्त उस से ग़ल्ला नापने

لَسٰرِقُوْنَ ۝٧٠ قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝٧١ قَالُوْا نَفْقِدُ

तुम चोर हो बोले और उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तुम क्या नहीं पाते बोले बादशाह का

صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّ اَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝٧٢ قَالُوْا

पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लाएगा उस के लिये एक ऊंट का बोझ है और मैं इस का ज़ामिन हूं बोले

تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِی الْاَرْضِ وَ مَا كُنَّا سٰرِقِیْنَ ۝٧٣

ख़ुदा की क़सम तुम्हें ख़ूब मा'लूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने न आए और न हम चोर

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِیْنَ ۝٧٤ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِیْ

बोले फिर क्या सज़ा है उस की अगर तुम झूटे हो[169] बोले उस की सज़ा येह है कि जिस के

رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِیْنَ ۝٧٥ فَبَدَاَ بِاَوْعِیَتِهِمْ

अस्बाब (सामान) में मिले वोही उस के बदले में ग़ुलाम बने[170] हमारे यहां ज़ालिमों की येही सज़ा है[171] तो अव्वल उन की ख़ुरजियों (थेलों) से तलाशी शुरूअ़

قَبْلَ وِعَآءِ اَخِیْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِیْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا

की अपने भाई[172] की ख़ुरजी से पहले फिर उसे अपने भाई की ख़ुरजी से निकाल लिया[173] हम ने यूसुफ़ को

لِیُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِیَاْخُذَ اَخَاهُ فِیْ دِیْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

येही तदबीर बताई[174] बादशाही क़ानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को ले ले[175] मगर येह कि ख़ुदा चाहे[176]

نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَ فَوْقَ كُلِّ ذِیْ عِلْمٍ عَلِیْمٌ ۝٧٦ قَالُوْۤا اِنْ

हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें[177] और हर इ़ल्म वाले से ऊपर एक इ़ल्म वाला है[178] भाई बोले अगर

का काम लिया जाता था, येह पियाला बिन्यामीन के कजावे में रख दिया गया और क़ाफ़िला कन्आ़न के क़स्द से रवाना हो गया, जब शहर के बाहर जा चुका तो अम्बार ख़ाने के कारकुनों को मा'लूम हुवा कि पियाला नहीं है, उन के ख़याल में येही आया कि येह क़ाफ़िले वाले ले गए, उन्हों ने इस की जुस्तजू के लिये आदमी भेजे। **169 :** इस बात में और पियाला तुम्हारे पास निकले। **170 :** और शरीअ़ते ह़ज़रत या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام में चोरी की येही सज़ा मुक़र्रर थी। चुनान्चे उन्हों ने कहा कि **171 :** फिर येह क़ाफ़िला मिस्र लाया गया और उन साहि़बों को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में ह़ाज़िर किया गया **172 :** या'नी बिन्यामीन **173 :** या'नी बिन्यामीन की ख़ुरजी से पियाला बरआमद किया। **174 :** अपने भाई के लेने की। इस मुआ़मले में भाइयों से इस्तिफ़्सार करें ताकि वोह शरीअ़ते ह़ज़रत या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म बताएं जिस से भाई मिल सके। **175 :** क्यूं कि बादशाहे मिस्र के क़ानून में चोरी की सज़ा मारना और दूना माल ले लेना मुक़र्रर थी। **176 :** या'नी येह बात ख़ुदा की मशिय्यत (मरज़ी) से हुई कि इन के दिल में डाल दिया कि सज़ा भाइयों से दरयाफ़्त करें और उन के दिल में डाल दिया कि वोह अपनी सुन्नत के मुत़ाबिक़ जवाब दें। **177 :** इ़ल्म में जैसे कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए। **178 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हर आ़लिम के ऊपर उस से ज़ियादा इ़ल्म रखने वाला आ़लिम होता है यहां तक कि येह सिल्सिला **अल्लाह** तआ़ला तक पहुंचता है, उस का इ़ल्म सब के इ़ल्म से बरतर है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भाई उ़लमा थे और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन से आ'लम (बड़े आ़लिम) थे। जब पियाला बिन्यामीन के सामान से निकला तो भाई शरमिन्दा हुए और उन्हों ने सर झुकाए और।

يَّسۡرِقۡ فَقَدۡ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوۡسُفُ فِىۡ نَفۡسِهٖ وَلَمۡ

येह चोरी करे[179] तो बेशक इस से पहले एक भाई चोरी कर चुका है[180] तो यूसुफ़ ने येह बात अपने दिल में रखी और उन

يُبۡدِهَا لَهُمۡ ۚ قَالَ اَنۡتُمۡ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا تَصِفُوۡنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوۡا

पर ज़ाहिर न की जी में कहा तुम बदतर जगह हो[181] और अल्लाह ख़ूब जानता है जो बातें बनाते हो बोले

يٰۤاَيُّهَا الۡعَزِيۡزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيۡخًا كَبِيۡرًا فَخُذۡ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا

ऐ अज़ीज़ ! इस के एक बाप हैं बूढ़े बड़े[182] तो हम में इस की जगह किसी को ले लो बेशक हम

نَرٰٮكَ مِنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنۡ نَّاۡخُذَ اِلَّا مَنۡ وَّجَدۡنَا

तुम्हारे एह्सान देख रहे हैं कहा[183] ख़ुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिस के पास

مَتَاعَنَا عِنۡدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوۡنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسۡتَيۡــَٔسُوۡا مِنۡهُ خَلَصُوۡا نَجِيًّا ؕ

हमारा माल मिला[184] जब तो हम ज़ालिम होंगे फिर जब इस से ना उम्मीद हुए अलग जा कर सरगोशी करने लगे

قَالَ كَبِيۡرُهُمۡ اَلَمۡ تَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اَبَاكُمۡ قَدۡ اَخَذَ عَلَيۡكُمۡ مَّوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ

उन का बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का अ़ह्द ले लिया था

وَمِنۡ قَبۡلُ مَا فَرَّطْتُّمۡ فِىۡ يُوۡسُفَ ۚ فَلَنۡ اَبۡرَحَ الۡاَرۡضَ حَتّٰى يَاۡذَنَ لِىۡۤ

और इस से पहले यूसुफ़ के ह़क़ में तुम ने कैसी तक़्सीर की तो मैं यहां से न टलूंगा यहां तक कि मेरे बाप[185]

اَبِىۡۤ اَوۡ يَحۡكُمَ اللّٰهُ لِىۡ ۚ وَهُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿٨٠﴾ اِرۡجِعُوۡۤا اِلٰٓى اَبِيۡكُمۡ فَقُوۡلُوۡا

मुझे इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाए[186] और उस का हुक्म सब से बेहतर अपने बाप के पास लौट कर जाओ फिर अ़र्ज़ करो

يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابۡنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدۡنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمۡنَا وَمَا كُنَّا لِلۡغَيۡبِ

ऐ हमारे बाप बेशक आप के बेटे ने चोरी की[187] और हम तो इतनी ही बात के गवाह हुए थे जितनी हमारे इ़ल्म में थी[188] और हम ग़ैब के

179 : या'नी सामान में पियाला निकलने से सामान वाले का चोरी करना तो यक़ीनी नहीं लेकिन अगर येह फ़े'ल इस का हो **180 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और जिस को उन्हों ने चोरी क़रार दे कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ निस्बत किया वोह वाक़िआ़ येह था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के नाना का एक बुत था जिस को वोह पूजते थे, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने चुपके से वोह बुत लिया और तोड़ कर रास्ते में नजासत के अन्दर डाल दिया, येह ह़क़ीक़त में चोरी न थी बुत परस्ती का मिटाना था, भाइयों का इस ज़िक्र से येह मुद्दआ (मक़्सद) था कि हम लोग बिन्यामीन के सोतेले भाई हैं, येह फ़े'ल हो तो शायद बिन्यामीन का हो, न हमारी इस में शिर्कत न हमें इस की इत्तिलाअ़। **181 :** उस से जिस की त़रफ़ चोरी की निस्बत करते हो। क्यूं कि चोरी की निस्बत ह़ज़रते यूसुफ़ की त़रफ़ तो ग़लत़ है वोह फ़े'ल तो शिर्क का इब्त़ाल (मिटाना) और इ़बादत था और तुम ने जो यूसुफ़ के साथ किया वोह बड़ी ज़ियादतियां हैं। **182 :** इन से मह़ब्बत रखते हैं और इन्हीं से उन के दिल की तसल्ली है **183 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **184 :** क्यूं कि तुम्हारे फ़ैसले से हम उसी को लेने के मुस्तह़िक़ हैं जिस के कजावे में हमारा माल मिला, अगर हम बजाए इस के दूसरे को लें **185 :** मेरे वापस आने की **186 :** मेरे भाई को ख़लासी दे कर या इस को छोड़

حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْــَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ

निगहबान न थे[189] और उस बस्ती से पूछ देखिये जिस में हम थे और उस क़ाफ़िले से जिस में हम आए

وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ

और हम बेशक सच्चे हैं[190] कहा[191] तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें कुछ ह़ीला बना दिया तो अच्छा सब्र है

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ

क़रीब है कि अल्लाह उन सब को मुझ से ला मिलाए[192] बेशक वोही इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है और

تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

उन से मुंह फेरा[193] और कहा हाए अफ़्सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उस की आंखें ग़म से सफ़ेद हो गईं[194]

فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا

तो वोह गुस्सा खाता रहा बोले[195] ख़ुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहां तक कि गोर कनारे (मौत के क़रीब) जा लगें

اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ

या जान से गुज़र जाएं कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूं[196]

وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ

और मुझे अल्लाह की वोह शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते[197] ऐ बेटो ! जाओ यूसुफ़ और उस के भाई

وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْــَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا

का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर

कर तुम्हारे साथ चलने का। **187 :** या'नी उन की त़रफ़ चोरी की निस्बत की गई **188 :** कि पियाला उन के कजावे में निकला **189 :** और हमें ख़बर न थी कि येह सूरत पेश आएगी, ह़क़ीक़ते ह़ाल अल्लाह ही जाने कि क्या है और पियाला किस त़रह़ बिन्यामीन के सामान से बरआमद हुवा। **190 :** फिर येह लोग अपने वालिद के पास वापस आए और सफ़र में जो कुछ पेश आया था उस की ख़बर दी और बड़े भाई ने जो कुछ बता दिया था वोह सब वालिद से अ़र्ज़ किया। **191 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कि चोरी की निस्बत बिन्यामीन की त़रफ़ ग़लत़ है और चोरी की सज़ा ग़ुलाम बनाना येह भी कोई क्या जाने अगर तुम फ़तवा न देते और तुम्हीं न बताते, तो **192 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ को और इन के दोनों भाइयों को। **193 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन की ख़बर सुन कर और आप का ग़मो अन्दोह (रन्जो अलम) इन्तिहा को पहुंच गया **194 :** रोते रोते आंख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई ज़ईफ़ हो गई। ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जुदाई में ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अस्सी बरस रोते रहे। और अह़िब्बा (प्यारों) के ग़म में रोना जो तक्लीफ़ और नुमाइश से न हो और उस के साथ अल्लाह की शिकायत व बे सब्री न पाई जाए रह़मत है, इन ग़म के अय्याम में ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बाने मुबारक पर कभी कोई कलिमा बे सब्री का न आया। **195 :** बिरादराने यूसुफ़ अपने वालिद से **196 :** तुम से या और किसी से नहीं **197 :** इस से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं और उन से मिलने की तवक़्क़ोअ़ रखते थे और येह भी जानते थे कि उन का ख़्वाब ह़क़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा। एक रिवायत येह भी है कि आप ने ह़ज़रते मलकुल मौत से दरयाफ़्त किया कि क्या तुम ने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूह़ क़ब्ज़ की है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं ! इस से भी आप को उन की ज़िन्दगानी

الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ

काफ़िर लोग[198] फिर जब वोह यूसुफ़ के पास पहुंचे बोले ऐ अ़ज़ीज़ हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुंची[199] और

اَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ

हम बे क़दर पूंजी ले कर आए हैं[200] तो आप हमें पूरा माप दीजिये[201] और हम पर

عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ

ख़ैरात कीजिये[202] बेशक अल्लाह ख़ैरात वालों को सिला देता है[203] बोले कुछ ख़बर है तुम ने यूसुफ़ और

بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ

उस के भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे[204] बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ हैं

قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِيْ٘ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ

कहा मैं यूसुफ़ हूं और येह मेरा भाई बेशक अल्लाह ने हम पर एह़सान किया[205] बेशक जो परहेज़ गारी और

يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ

सब्र करे तो अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता[206] बोले ख़ुदा की क़सम बेशक अल्लाह ने आप को

اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ

हम पर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़ताबार थे[207] कहा आज[208] तुम पर कुछ मलामत नहीं

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ٘ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ

अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है[209] मेरा येह कुरता ले जाओ[210] इसे मेरे बाप के

का इत्मीनान हुवा और आप ने अपने फ़रज़न्दों से फ़रमाया **198 :** येह सुन कर बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام फिर मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए। **199 :** या'नी तंगी और भूक की सख़्ती और जिस्मों का दुबला हो जाना। **200 :** रद्दी खोटी जिसे कोई सौदागर माल की क़ीमत में क़बूल न करे, वोह चन्द खोटे दिरहम थे और असासुल बैत (घरेलू सामान) की चन्द पुरानी बोसीदा चीज़ें। **201 :** जैसा खरे दामों से देते थे **202 :** येह नाक़िस पूंजी क़बूल कर के। **203 :** उन का येह ह़ाल सुन कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर गिर्या त़ारी हुवा और चश्मे गौहर फ़िशां से अश्क रवां हो गए और **204 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को मारना, कूंएं में गिराना, बेचना, वालिद से जुदा करना और उन के बा'द उन के भाई को तंग रखना, परेशान करना तुम्हें याद है ? और येह फ़रमाते हुए ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तबस्सुम आ गया और उन्हों ने आप के गौहरे दन्दान (मोती जैसे दांतों) का ह़ुस्न देख कर पहचाना कि येह तो जमाले यूसुफ़ी की शान है। **205 :** हमें जुदाई के बा'द सलामती के साथ मिलाया और दुन्या व दीन की ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। **206 :** बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ब त़रीक़े उ़ज़्र ख़्वाही (मुआ़फ़ी चाहते हुए) **207 :** इसी का नतीजा है कि अल्लाह ने आप को इ़ज़्ज़त दी, बादशाह बनाया और हमें मिस्कीन बना कर आप के सामने लाया। **208 :** अगर्चे मलामत करने का दिन है मगर मेरी जानिब से **209 :** इस के बा'द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से अपने वालिदे माजिद का ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन्हों ने कहा : आप की जुदाई के ग़म में रोते रोते उन की बीनाई बह़ाल नहीं रही आप ने फ़रमाया **210 :** जो मेरे वालिदे माजिद ने ता'वीज़ बना कर मेरे गले में डाल दिया था।

عَلٰى وَجْهِ اَبِىْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِىْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ

मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी और अपने सब घरभर (घर वालों) को मेरे पास ले आओ जब क़ाफ़िला मिस्र से

الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾

जुदा हुवा[211] यहां उन के बाप ने[212] कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पाता हूं अगर मुझे येह न कहो कि सठ (बहक) गया

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِىْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ

बेटे बोले ख़ुदा की क़सम आप अपनी उसी पुरानी ख़ुद रफ़्तगी (महब्बत) में हैं[213] फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया[214]

اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّىْۤ اَعْلَمُ

उस ने वोह कुरता या'क़ूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उस की आंखें फिर आईं (रोशन हो गईं) कहा मैं न कहता था कि मुझे **अल्लाह** की वोह

مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا

शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते[215] बोले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगिये बेशक हम

خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

ख़त़ावार हैं कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है[216]

211 : और कन्आ़न की त़रफ़ रवाना हुवा। **212 :** अपने पोतों और पास वालों से **213 :** क्यूं कि वोह इस गुमान में थे कि अब ह़ज़रते यूसुफ़ (عَلَیْہِ السَّلام) कहां, उन की वफ़ात भी हो चुकी होगी। **214 :** लश्कर के आगे आगे वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلام के भाई यहूदा थे, उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلام के पास ख़ून आलूदा क़मीस भी मैं ही ले कर गया था, मैं ने ही कहा था कि यूसुफ़ (عَلَیْہِ السَّلام) को भेड़िया खा गया, मैं ने ही उन्हें ग़मगीन किया था, आज कुरता भी मैं ही ले कर जाऊंगा और ह़ज़रते यूसुफ़ (عَلَیْہِ السَّلام) की ज़िन्दगानी की फ़रह़त अंगेज़ (ख़ुशी पहुंचाने वाली) ख़बर भी मैं ही सुनाऊंगा तो यहूदा बरह्ना सर, बरह्ना पा, कुरता ले कर अस्सी फ़रसंग (दो सो चालीस मील) दौड़ते आए, रास्ते में खाने के लिये सात रोटियां साथ लाए थे, फ़र्ते शौक़ का येह आ़लम था कि उन को भी रास्ते में खा कर तमाम न कर सके। **215 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلام ने दरयाफ़्त फ़रमाया : यूसुफ़ कैसे हैं ? यहूदा ने अ़र्ज़ किया : ह़ुज़ूर वोह मिस्र के बादशाह हैं। फ़रमाया : मैं बादशाही को क्या करूं येह बताओ किस दीन पर हैं ? अ़र्ज़ किया : दीने इस्लाम पर। फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **अल्लाह** की ने'मत पूरी हुई। बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلام **216 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने वक़्ते सह़र बा'दे नमाज़ हाथ उठा कर **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में अपने साह़िब ज़ादों के लिये दुआ़ की, वोह क़बूल हुई और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلام को वह़्य फ़रमाई गई कि साह़िब ज़ादों की ख़त़ा बख़्श दी गई। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلام ने अपने वालिदे माजिद को मअ़ उन के अह्लो औलाद के बुलाने के लिये अपने भाइयों के साथ दो सो सुवारियां और कसीर सामान भेजा था, ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلام ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने अह्ल को जम्अ़ किया, कुल मर्द व ज़न बहत्तर या तिहत्तर तन थे, **अल्लाह** तआ़ला ने उन में येह बरकत फ़रमाई कि उन की नस्ल इतनी बढ़ी कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के साथ बनी इसराईल मिस्र से निकले तो छ⁶ लाख से ज़ियादा थे, बा वुजूदे कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का ज़माना इस से सिर्फ़ चार सो साल बा'द है। अल ह़ासिल (क़िस्सा मुख़्तसर येह कि) जब ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلام मिस्र के क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلام ने मिस्र के बादशाहे आ'ज़म को अपने वालिदे माजिद की तशरीफ़ आवरी की इत्तिलाअ़ दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिस्री सुवारों को हमराह ले कर आप अपने वालिद साह़िब के इस्तिक़्बाल के लिये सदहा रेशमी फरेरे उड़ाते (झन्डे लहराते), क़ित़ारें बांधे रवाना हुए, ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلام अपने फ़रज़न्द यहूदा के हाथ पर टेक लगाए तशरीफ़ ला रहे थे, जब आप की नज़र लश्कर पर पड़ी और आप ने देखा कि सह़रा ज़र्क़ बर्क़ (रंग बरंगे) सुवारों से पुर हो रहा है। फ़रमाया : ऐ यहूदा ! क्या येह फ़िरऔ़ने मिस्र है जिस का लश्कर इस शौकतो शिकोह से आ रहा है ? अ़र्ज़ किया : नहीं ! येह ह़ुज़ूर के फ़रज़न्द यूसुफ़ हैं। "عَلَیْہِمُ السَّلام" ह़ज़रते जिब्रील ने आप को मुतअ़ज्जिब देख कर अ़र्ज़

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ

फिर जब वोह सब यूसुफ़ के पास पहुंचे उस ने अपने मां[217] बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में[218] दाख़िल हो

شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ

अल्लाह चाहे तो अमान के साथ[219] और अपने मां बाप को तख़्त पर बिठाया और वोह सब[220] उस के लिये सज्दे में गिरे[221] और

قَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَایَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّیْ حَقًّا ؕ وَ

यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप येह मेरे पहले ख़्वाब की ता'बीर है[222] बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया और

قَدْ اَحْسَنَ بِیْۤ اِذْ اَخْرَجَنِیْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ

बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला[223] और आप सब को गाउं से ले आया बा'द इस के

اَنْ نَّزَغَ الشَّیْطٰنُ بَیْنِیْ وَبَیْنَ اِخْوَتِیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَطِیْفٌ لِّمَا یَشَآءُ ؕ

कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَیْتَنِیْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِیْ

बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है[224] ऐ मेरे रब बेशक तू ने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे कुछ

مِنْ تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ قف اَنْتَ وَلِیّٖ فِی

बातों का अन्जाम निकालना सिखाया ऐ आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने वाला है

किया : हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये आप के सुरूर में शिर्कत के लिये मलाएका हाज़िर हुए हैं जो मुद्दतों आप के ग़म के सबब रोते रहे हैं। मलाएका की तस्बीह ने और घोड़ों के हिनहिनाने ने और तब्लो बूक़ की आवाज़ों ने अजीब कैफ़िय्यत पैदा कर दी थी, येह मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी जब दोनों हज़रात वालिदो वल्द, पिदरो पिसर (बाप और बेटा) क़रीब हुए। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सलाम अर्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया, हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ किया कि आप तवक़्क़ुफ़ कीजिये और वालिद साहिब को इब्तिदा ब सलाम का मौक़अ़ दीजिये। चुनान्चे हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَامُذْهِبَ الْاَحْزَان (या'नी ऐ ग़मो अन्दोह के दूर करने वाले सलाम हो) और दोनों साहिबों ने उतर कर मुआनक़ा किया और मिल कर ख़ूब रोए, फिर उस मुज़य्यन फ़िरूद गाह (क़ियाम गाह) में दाख़िल हुए जो पहले से आप के इस्तिक़्बाल के लिये नफ़ीस ख़ैमे वग़ैरा नस्ब कर के आरास्ता की गई थी। येह दुख़ूल हुदूदे मिस्र में था इस के बा'द दूसरा दुख़ूल ख़ास शहर में है जिस का बयान अगली आयत में है। **217 :** मां से या ख़ास वालिदा मुराद हैं अगर उस वक़्त तक ज़िन्दा हों या ख़ाला। मुफ़स्सिरीन के इस बाब में कई अक़्वाल हैं। **218 :** या'नी ख़ास शहर में **219 :** जब मिस्र में दाख़िल हुए और हज़रते यूसुफ़ अपने तख़्त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए आप ने अपने वालिदैन का इक्राम फ़रमाया। **220 :** या'नी वालिदैन और सब भाई **221 :** येह सज्दा तहिय्यत व तवाज़ोअ़ (सलाम व आजिज़ी) का था जो उन की शरीअ़त में जाइज़ था जैसे कि हमारी शरीअ़त में किसी मुअ़ज़्ज़म (बुज़ुर्ग) की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम और मुसाफ़हा और दस्त बोसी जाइज़ है। सज्दए इबादत **अल्लाह** तआला के सिवा और किसी के लिये कभी जाइज़ नहीं हुवा न हो सकता है क्यूं कि येह शिर्क है और सज्दए तहिय्यत व ता'ज़ीम भी हमारी शरीअ़त में जाइज़ नहीं। **222 :** जो मैं ने सिग़र सिनी या'नी बचपन की हालत में देखा था। **223 :** इस मौक़अ़ पर आप ने कूंएं का ज़िक्र न किया ताकि भाइयों को शरमिन्दगी न हो। **224 :** अस्हाबे तवारीख़ का बयान है कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास मिस्र में चौबीस 24 साल बेहतरीन ऐ़शो आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे, क़रीबे वफ़ात आप ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को वसिय्यत की, कि आप का जनाज़ा मुल्के शाम में ले जा कर अर्ज़े मुक़द्दसा में आप के वालिद हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए, इस वसिय्यत की ता'मील की गई और बा'दे

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكَ مِنْ

दुन्या और आख़िरत में मुझे मुसलमान उठा और उन से मिला जो तेरे कुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं[225] येह कुछ

اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْۤا اَمْرَهُمْ

ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वह्य करते हैं और तुम उन के पास न थे[226] जब उन्हों ने अपना काम पक्का किया था

وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَمَاۤ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا

और वोह दाउं चल रहे थे[227] और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लाएंगे और तुम

تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ

इस पर उन से कुछ उजरत नहीं मांगते येह[228] तो नहीं मगर सारे जहान को नसीहत और कितनी निशानियां

اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَ

हैं[229] आस्मानों और ज़मीन में कि लोग उन पर गुज़रते हैं[230] और उन से बे ख़बर रहते हैं और

مَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿۱۰۶﴾ اَفَاَمِنُوْۤا اَنْ تَاْتِيَهُمْ

उन में अक्सर वोह हैं कि **अल्लाह** पर यक़ीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए[231] क्या इस से निडर हो बैठे कि

غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

अल्लाह का अज़ाब उन्हें आ कर घेर ले या क़ियामत उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो

वफ़ात साल (एक ख़ास क़िस्म के दरख़्त) की लकड़ी के ताबूत में आप का जसदे अत़्हर शाम में लाया गया, उसी वक़्त आप के भाई ईस की वफ़ात हुई और आप दोनों भाइयों की विलादत भी साथ हुई थी और दफ़्न भी एक ही क़ब्र में किये गए और दोनों साहिबों की उ़म्र एक सो पेंतालीस साल की थी, जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिद और चचा को दफ़्न कर के मिस्र की त़रफ़ वापस हुए तो आप ने येह दुआ़ की जो अगली आयत में मज़्कूर है। **225 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمُ السَّلَام। अम्बिया सब मा'सूम हैं, ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की येह दुआ़ ता'लीमे उम्मत के लिये है कि वोह ह़ुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ मांगते रहें। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिदे माजिद के बा'द तेईस साल रहे इस के बा'द आप की वफ़ात हुई, आप के मक़ामे दफ़्न में अहले मिस्र के अन्दर सख़्त इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा, हर मह़ल्ले वाले ह़ुसूले बरकत के लिये अपने ही मह़ल्ले में दफ़्न करने पर मुसिर (इसरार कर रहे) थे, आख़िर येह राय क़रार पाई कि आप को दरियाए नील में दफ़्न किया जाए ताकि पानी आप की क़ब्र से छूता हुवा गुज़रे और उस की बरकत से तमाम अहले मिस्र फ़ैज़याब हों। चुनान्चे आप को संगे रुख़ाम, या संगे मरमर के सन्दूक़ में दरियाए नील के अन्दर दफ़्न किया गया और आप वहीं रहे यहां तक कि चार सो बरस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप का ताबूत शरीफ़ निकाला और आप को आप के आबाए किराम के पास मुल्के शाम में दफ़्न किया। **226 :** या'नी बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के **227 :** बा वुजूद इस के ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आप का इन तमाम वाक़िआ़त को इस तफ़्सील से बयान फ़रमाना ग़ैबी ख़बर और मो'जिज़ा है। **228 :** क़ुरआन शरीफ़ **229 :** ख़ालिक़ और उस की तौह़ीद व सिफ़ात पर दलालत करने वाली, इन निशानियों से हलाक शुदा उम्मतों के आसार मुराद हैं। (مدارک) **230 :** और उन का मुशाहदा करते हैं लेकिन तफ़क्कुर (सोच बिचार) नहीं करते, इ़ब्रत नहीं ह़ासिल करते **231 :** जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक येह आयत मुश्रिकीन के रद में नाज़िल हुई जो **अल्लाह** तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत व रज़्ज़ाक़िय्यत का इक़रार करने के साथ बुत परस्ती कर के ग़ैरों को इ़बादत में उस का शरीक करते थे।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْۤ اَدْعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ ۚ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ

तुम फ़रमाओ[232] येह मेरी राह है मैं **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाता हूं मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आंखें रखते हैं[233]

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

और **अल्लाह** को पाकी है[234] और मैं शरीक करने वाला नहीं और हम ने तुम से पहले जितने रसूल भेजे

اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

सब मर्द ही थे[235] जिन्हें हम वह़्य करते और सब शहर के साकिन थे[236] तो क्या येह लोग ज़मीन में चले नहीं

فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ

तो देखते इन से पहलों का क्या अन्जाम हुवा[237] और बेशक आख़िरत का घर

لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ حَتّٰۤى اِذَا اسْتَايْــَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْۤا

परहेज़ गारों के लिये बेहतर तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं यहां तक कि जब रसूलों को ज़ाहिरी अस्बाब की उम्मीद न रही[238] और लोग समझे

اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا

कि रसूलों ने उन से ग़लत़ कहा था[239] उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हम ने चाहा बचा लिया गया[240] और हमारा अ़ज़ाब

عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي

मुजरिम लोगों से फेरा नहीं जाता बेशक उन की ख़बरों से[241] अ़क़्ल मन्दों की आंखें

الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ

खुलती हैं[242] येह कोई बनावट की बात नहीं[243] लेकिन अपने से अगले कामों की[244]

232 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन मुशरिकीन से कि तौह़ीदे इलाही और दीने इस्लाम की दा'वत देना **233 :** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के अस्ह़ाब अह़सन त़रीक़ और अफ़्ज़ल हिदायत पर हैं, येह इ़ल्म के मा'दिन (सरचश्मे), ईमान के ख़ज़ाने, रह़मान के लश्कर हैं। इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : त़रीक़ा इख़्तियार करने वालों को चाहिये कि गुज़रे हुओं का त़रीक़ा इख़्तियार करें वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब हैं जिन के दिल उम्मत में सब से ज़ियादा पाक, इ़ल्म में सब से अ़मीक़ (कामिल), तकल्लुफ़ (नुमूदो नुमाइश) में सब से कम, ऐसे ह़ज़रात हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सोह़बत और उन के दीन की इशाअ़त के लिये बरगुज़ीदा किया। **234 :** तमाम उ़यूबो नक़ाइस और शुरका व अज़्दाद व अन्दाद (मुख़ालिफ़ व हमपल्ला) से। **235 :** न फ़िरिश्ते न किसी औ़रत को नबी बनाया गया। येह अहले मक्का का जवाब है जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** ने फ़िरिश्तों को क्यूं न नबी बना कर भेजा ? उन्हें बताया गया कि येह क्या तअ़ज्जुब की बात है पहले ही से कभी फ़िरिश्ते नबी हो कर न आए। **236 :** ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि अहले बादिया (दीहातियों) और जिन्नात और औ़रतों में से कभी कोई नबी नहीं किया गया। **237 :** अम्बिया के झुटलाने से किस त़रह हलाक किये गए **238 :** या'नी लोगों को चाहिये कि अ़ज़ाबे इलाही में ताख़ीर होने और ऐ़शो आसाइश के देर तक रहने पर मग़रूर न हो जाएं क्यूं कि पहली उम्मतों को भी बहुत मोहलतें दी जा चुकी हैं यहां तक कि जब उन के अ़ज़ाबों में बहुत ताख़ीर हुई और ब अस्बाबे ज़ाहिर रसूलों को क़ौम पर दुन्या में ज़ाहिर अ़ज़ाब आने की उम्मीद न रही। (ابوالسعود) **239 :** या'नी क़ौमों ने गुमान किया कि रसूलों ने उन्हें जो अ़ज़ाब के वा'दे दिये थे वोह पूरे होने वाले नहीं। (مدارک وغیرہ) **240 :** अपने बन्दों में से या'नी इत़ाअ़त करने

तस्दीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसल्मानों के लिये हिदायत व रह़मत

सूरए रा'द मदनिय्या है, इस में तेंतालीस आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ ؕ وَالَّذِىۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَـقُّ وَ

येह किताब की आयतें हैं[2] और वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[3] ह़क़ है[4]

لٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٍ

मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते[5] **अल्लाह** है जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया बे सुतूनों के कि

تَرَوۡنَهَا ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجۡرِىۡ

तुम देखो[6] फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया[7] हर एक एक ठहराए हुए

لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّكُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّكُمۡ

वा'दे तक चलता है[8] **अल्लाह** काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियां बताता है[9] कहीं तुम अपने रब का मिलना

वाले ईमानदारों को बचा लिया। **241 :** या'नी अम्बिया की और उन की क़ौमों की **242 :** जैसे कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए से बड़े बड़े नताइज निकलते हैं और मा'लूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामत व करामत है और ईज़ा रसानी व बद ख़्वाही का अन्जाम नदामत और **अल्लाह** पर भरोसा रखने वाला काम्याब होता है और बन्दे को सख़्तियों के पेश आने से मायूस न होना चाहिये, रह़मते इलाही दस्त गीरी करे तो किसी की बद ख़्वाही कुछ नहीं कर सकती। इस के बा'द क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है : **243 :** जिस को किसी इन्सान ने अपनी त़रफ़ से बना लिया हो क्यूं कि इस का ए'जाज़ (आ़जिज़ कर देना) इस के मिनल्लाह (**अल्लाह** की त़रफ़ से) होने को क़त़ई त़ौर पर साबित करता है। **244 :** तौरैत इन्जील वग़ैरा कुतुबे इलाहिय्यह की **1 :** सूरए रा'द मक्किय्या है और **एक** रिवायत ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से येह है कि दो आयतें ''لَا يَزَالُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا تُصِيۡبُهُمۡ'' और ''يَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَسۡتَ مُرۡسَلًا'' के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं, और **दूसरा** क़ौल येह है कि येह सूरह मदनी है, इस में छ[6] रुकूअ़ तेंतालीस या पेंतालीस आयतें और आठ सो पचपन कलिमे और तीन हज़ार पांच सो छ[6] ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ की **3 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **4 :** कि इस में कुछ शुबा नहीं **5 :** या'नी मुश्रिकीने मक्का जो येह कहते हैं कि येह कलाम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है इन्हों ने ख़ुद बनाया, इस आयत में उन का रद फ़रमाया और इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी रुबूबिय्यत के दलाइल और अपने अ़जाइबे क़ुदरत बयान फ़रमाए जो उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करते हैं **6 :** इस के दो मा'ना हो सकते हैं, **एक** येह कि आस्मानों को बिग़ैर सुतूनों के बुलन्द किया जैसा कि तुम इन को देखते हो या'नी ह़क़ीक़त में कोई सुतून ही नहीं है और येह **मा'ना** भी हो सकते हैं कि तुम्हारे देखने में आने वाले सुतूनों के बिग़ैर बुलन्द किया, इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे देखने में नहीं आते और क़ौले अव्वल सह़ीह़ तर है इसी पर जुम्हूर हैं। (خازن وجمل) **7 :** अपने बन्दों के मनाफ़ेअ़ और अपने बिलाद के मसालेह़ के लिये, वोह ह़स्बे हुक्म गर्दिश में हैं। **8 :** या'नी फ़नाए दुन्या के वक़्त तक। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا ने फ़रमाया कि اَجَلٍ مُّسَمًّى से इन के दरजात व मनाज़िल मुराद हैं या'नी वोह अपनी मनाज़िल व दरजात में एक ग़ायत (ह़द) तक गर्दिश करते हैं जिस से तजावुज़ नहीं कर सकते, शम्सो क़मर में से हर एक के लिये सैरे ख़ास जिहते ख़ास की त़रफ़ सुरअ़त व बत़ू व ह़रकत की मिक़्दारे ख़ास से मुक़र्रर फ़रमाई है। **9 :** अपनी वह़दानिय्यत व कमाले क़ुदरत की।

تُوۡقِنُوۡنَ ﴿۲﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ مَدَّ الۡاَرۡضَ وَجَعَلَ فِيۡهَا رَوَاسِىَ وَاَنۡهٰرًا ؕ

यक़ीन करो[10] और वोही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और इस में लंगर[11] और नहरें बनाईं

وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيۡهَا زَوۡجَيۡنِ اثۡنَيۡنِ يُغۡشِى الَّيۡلَ النَّهَارَ ؕ

और ज़मीन में हर क़िस्म के फल दो दो त़रह़ के बनाए[12] रात से दिन को छुपा लेता है

اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۳﴾ وَفِى الۡاَرۡضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ

बेशक इस में निशानियां हैं ध्यान करने वालों को[13] और ज़मीन के मुख़्तलिफ़ क़ित़ए (टुकड़े) हैं और हैं पास पास[14]

وَّجَنّٰتٌ مِّنۡ اَعۡنَابٍ وَّزَرۡعٌ وَّنَخِيۡلٌ صِنۡوَانٌ وَّغَيۡرُ صِنۡوَانٍ يُّسۡقٰى بِمَآءٍ

और बाग़ हैं अंगूरों के और खेती और खजूर के पेड़ एक थाले (गढ़े) से उगे और अलग अलग सब को एक ही पानी

وَّاحِدٍ وَّنُفَضِّلُ بَعۡضَهَا عَلٰى بَعۡضٍ فِى الۡاُكُلِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ

दिया जाता है और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं बेशक इस में निशानियां हैं

يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۴﴾ وَاِنۡ تَعۡجَبۡ فَعَجَبٌ قَوۡلُهُمۡ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِىۡ خَلۡقٍ

अ़क़्ल मन्दों के लिये[15] और अगर तुम तअ़ज्जुब करो[16] तो अचम्बा (तअ़ज्जुब) तो उन के इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी हो कर फिर

جَدِيۡدٍ ؕ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ ۚ وَاُولٰٓـئِكَ الۡاَغۡلٰلُ فِىۡۤ

नए बनेंगे[17] वोह हैं जो अपने रब से मुन्किर हुए और वोह हैं जिन की गरदनों में

اَعۡنَاقِهِمۡ ۚ وَاُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۵﴾ وَيَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ

तौक़ होंगे[18] और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसी में रहना और तुम से अ़ज़ाब की

10 : और जानो कि जो इन्सान को नीस्ती के बा'द हस्त (या'नी जब वोह था ही नहीं तो उस को पैदा) करने पर क़ादिर है वोह उस को मौत के बा'द भी ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **11 :** या'नी मज़बूत़ पहाड़ **12 :** सियाह व सफ़ेद, तुर्श व शीरीं, सग़ीर व कबीर, बर्री व बुस्तानी (सहराई व बाग़ाती), गर्म व सर्द, तर व ख़ुश्क वग़ैरा। **13 :** जो समझें कि येह तमाम आसार सानेए ह़कीम (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के वुजूद पर दलालत करते हैं। **14 :** एक दूसरे से मिले हुए, इन में कोई क़ाबिले ज़राअ़त है कोई ना क़ाबिले ज़राअ़त, कोई पथरीला कोई रेतीला। **15 :** ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : इस में बनी आदम के क़ुलूब की एक तम्सील (मिसाल) है कि जिस त़रह़ ज़मीन एक थी इस के मुख़्तलिफ़ क़ित़आत (टुकड़े) हुए, उन पर आस्मान से एक ही पानी बरसा, उस से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फल फूल बेल बूटे अच्छे बुरे पैदा हुए, इसी त़रह़ आदमी ह़ज़रते आदम से पैदा किये गए, इन पर आस्मान से हिदायत उतरी, उस से बा'ज़ दिल नर्म हुए उन में ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा हुवा, बा'ज़ सख़्त हो गए वोह लहवो लग़्व में मुब्तला हुए तो जिस त़रह़ ज़मीन के क़ित़आत अपने फूल फल में मुख़्तलिफ़ हैं इसी त़रह़ इन्सानी क़ुलूब अपने आसार व अन्वार व असरार में मुख़्तलिफ़ हैं। **16 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब करने से बा वुजूदे कि आप इन में सादिक़ो अमीन मा'रूफ़ थे **17 :** और उन्हों ने कुछ न समझा कि जिस ने इब्तिदाअन बिग़ैर मिसाल के पैदा कर दिया उस को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। **18 :** रोज़े क़ियामत।

بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ

जल्दी करते हैं रहमत से पहले[19] और इन से अगलों की सज़ाएं हो चुकीं[20] और बेशक तुम्हारा रब

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۶﴾ وَ

तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक तरह की मुआफ़ी देता है[21] और बेशक तुम्हारे रब का अ़ज़ाब सख़्त है[22] और

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ

काफ़िर कहते हैं इन पर इन के रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी[23] तुम तो

مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿۷﴾ ع اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ

डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी[24] **अल्लाह** जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है[25] और पेट जो

19 : मुशरिकीने मक्का और येह जल्दी करना ब त़रीक़े तमस्ख़ुर (बत़ौरे मज़ाक़) था और रहमत से सलामतो आफ़िय्यत मुराद है। **20 :** वोह भी रसूलों की तक्ज़ीब और अ़ज़ाब का तमस्ख़ुर किया करते थे, उन का हाल देख कर इब्रत ह़ासिल करना चाहिये। **21 :** कि उन के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता और उन्हें मोहलत देता है। **22 :** जब अ़ज़ाब फ़रमाए। **23 :** काफ़िरों का येह क़ौल निहायत बे ईमानी का क़ौल था जितनी आयात नाज़िल हो चुकी थीं और मो'जिज़ात दिखाए जा चुके थे सब को उन्हों ने कल्अ़दम क़रार दे दिया, येह इन्तिहा दरजे की ना इन्साफ़ी और ह़क़ दुश्मनी है, जब ह़ुज्जत क़ाइम हो चुके और ना क़ाबिले इन्कार बराहीन पेश कर दिये जाएं और ऐसे दलाइल से मुद्दआ़ साबित कर दिया जाए जिस के जवाब से मुख़ालिफ़ीन के तमाम अहले इल्मो हुनर आ़जिज़ो मुतह़य्यर (हैरान) रहें और उन्हें लब हिलाना और ज़बान खोलना मुह़ाल हो जाए। ऐसे आयाते बय्यिना और बराहीने वाज़ेह़ा (रोशन दलाइल) व मो'जिज़ाते ज़ाहिरा देख कर येह कह देना कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरती रोज़े रोशन में दिन का इन्कार कर देने से भी ज़ियादा बदतर और बात़िल तर है और ह़क़ीक़त में येह ह़क़ को पहचान कर उस से इनाद (सरकशी) व फ़िरार है, किसी मुद्दआ़ पर जब बुरहाने क़वी (मज़बूत़ दलील) क़ाइम हो जाए फिर उस पर दोबारा दलील क़ाइम करनी ज़रूरी नहीं रहती और ऐसी ह़ालत में त़लबे दलील इनाद व मुकाबरा (सरकशी व झगड़ा करना) होता है, जब तक कि दलील को मजरूह़ (बात़िल) न कर दिया जाए कोई शख़्स दूसरी दलील के त़लब करने का ह़क़ नहीं रखता और अगर येह सिल्सिला क़ाइम कर दिया जाए कि हर शख़्स के लिये नई बुरहान क़ाइम की जाए जिस को वोह त़लब करे और वोही निशानी लाई जाए जो वोह मांगे तो निशानियों का सिल्सिला कभी ख़त्म न होगा, इस लिये ह़िक्मते इलाहिय्यह येह है कि अम्बिया को ऐसे मो'जिज़ात दिये जाते हैं जिन से हर शख़्स उन के सिद्क़ व नुबुव्वत का यक़ीन कर सके और बेश्तर वोह उस क़बील (क़िस्म) से होते हैं जिस में उन की उम्मत और उन के अ़ह्द (ज़माने) के लोग ज़ियादा मश्क़ व महारत रखते हैं, जैसे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में इल्मे सेह़्र (जादू का इल्म) अपने कमाल को पहुंचा हुवा था और उस ज़माने के लोग सेह़्र के बड़े माहिरे कामिल थे तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वोह मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा जिस ने सेह़्र को बात़िल कर दिया और साह़िरों (जादूगरों) को यक़ीन दिला दिया कि जो कमाल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दिखाया वोह रब्बानी निशान है, सेह़्र (जादू) से उस का मुक़ाबला मुम्किन नहीं। इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में त़िब इन्तिहाए उ़रूज पर थी, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को शिफ़ाए अमराज़ व एह़याए अम्वात (बीमारियों से शिफ़ा और मुर्दों को ज़िन्दा करने) का वोह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया गया जिस से त़िब के माहिर आ़जिज़ हो गए और वोह इस यक़ीन पर मजबूर थे कि येह काम त़िब से ना मुम्किन है ज़रूर येह क़ुदरते इलाही का ज़बर दस्त निशान है, इसी त़रह़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में अ़रब की फ़साह़तो बलाग़त औजे कमाल पर पहुंची हुई थी और वोह लोग ख़ुश बयानी में आ़लम पर फ़ाइक़ थे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वोह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया जिस ने उन्हें आ़जिज़ व ह़ैरान कर दिया और उन के बड़े से बड़े लोग और उन के अहले कमाल की जमाअ़तें क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल एक छोटी सी इ़बारत पेश करने से भी आ़जिज़ व क़ासिर रहीं और क़ुरआन के इस कमाल ने येह साबित कर दिया कि बेशक येह रब्बानी अ़ज़ीम निशान है और इस का मिस्ल बना लाना बशरी क़ुव्वत के इम्कान में नहीं, इस के इ़लावा और सदहा मो'जिज़ात सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने पेश फ़रमाए जिन्हों ने हर त़बक़े के इन्सानों को आप के सिद्क़े रिसालत का यक़ीन दिला दिया इन मो'जिज़ात के होते हुए येह कह देना कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी किस क़दर इनाद और ह़क़ से मुकरना है। **24 :** अपनी नुबुव्वत के दलाइल पेश करने और इत़्मीनान बख़्श मो'जिज़ात दिखा कर अपनी रिसालत साबित कर देने के बा'द अह़कामे इलाहिय्यह पहुंचाने और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाने के सिवा आप पर कुछ लाज़िम नहीं और हर हर शख़्स के लिये उस की त़ल्बीदा (मांगी हुई) जुदा जुदा निशानियां पेश करना आप पर ज़रूरी नहीं जैसा कि आप से पहले हादियों (अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام) का त़रीक़ा रहा है। **25 :** नर, मादा एक या ज़ियादा وَغَيْرُ ذَالِك।

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝۸ عٰلِمُ الْغَیْبِ

कुछ घटते और बढ़ते हैं[26] और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है[27] हर छुपे और

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِ ۝۹ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ

खुले का जानने वाला सब से बड़ा बुलन्दी वाला[28] बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो

جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّیْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝۱۰ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ

आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है[29] आदमी के लिये बदली वाले

مِّنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ یَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

फ़िरिश्ते हैं उस के आगे और पीछे[30] कि ब हुक्मे ख़ुदा उस की हिफ़ाज़त करते हैं[31] बेशक **अल्लाह**

یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ

किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद[32] अपनी हालत न बदल दें और जब **अल्लाह** किसी क़ौम से बुराई

سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝۱۱ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ

चाहे[33] तो वोह फिर नहीं सकती और उस के सिवा उन का कोई हिमायती नहीं[34] वोही है कि तुम्हें बिजली

الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝۱۲ ۚ وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ

दिखाता है डर को और उम्मीद को[35] और भारी बदलियां उठाता है और गरज उसे सराहती (ख़ुदा की ता'रीफ़ करती) हुई

بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ

उस की पाकी बोलती है[36] और फ़िरिश्ते उस के डर से[37] और कड़क भेजता है[38] तो उसे डालता है जिस पर

26 : या'नी मुद्दत में किस का ह़म्ल जल्द वज़्अ़ (बच्चा जल्द पैदा) होगा किस का देर में। ह़म्ल की कम से कम मुद्दत जिस में बच्चा पैदा हो कर ज़िन्दा रह सके छ[6] माह है और ज़ियादा से ज़ियादा दो साल येही ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने फ़रमाया और इसी के ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ क़ाइल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह भी कहा है कि पेट के घटने बढ़ने से बच्चे का क़वी, ताम्मुल ख़िल्क़त और नाक़िसुल ख़िल्क़त (आ'ज़ा का तमाम और ना तमाम) होना मुराद है। **27 :** कि उस से घट बढ़ नहीं सकती। **28 :** हर नक़्स से मुनज़्ज़ा (पाक)। **29 :** या'नी दिल की छुपी बातें और ज़बान से ब ए'लान कही हुई और रात को छुप कर किये हुए अ़मल और दिन को ज़ाहिर तौर पर किये हुए काम सब **अल्लाह** तआ़ला जानता है कोई उस के इ़ल्म से बाहर नहीं। **30 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि तुम में फ़िरिश्ते नौबत ब नौबत (बारी बारी) आते हैं रात और दिन में और नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े अ़स्र में जम्अ़ होते हैं नए फ़िरिश्ते रह जाते हैं और जो फ़िरिश्ते रह चुके हैं वोह चले जाते हैं। **अल्लाह** तआ़ला उन से दरयाफ़्त फ़रमाता है कि तुम ने मेरे बन्दे को किस ह़ाल में छोड़ा वोह अ़र्ज़ करते हैं कि नमाज़ पढ़ते पाया और नमाज़ पढ़ते छोड़ा। **31 :** मुजाहिद ने कहा : हर बन्दे के साथ एक फ़िरिश्ता ह़िफ़ाज़त पर मामूर है जो सोते जागते जिन्नो इन्स और मूज़ी (तक्लीफ़ पहुंचाने वाले) जानवरों से उस की ह़िफ़ाज़त करता है और हर सताने वाली चीज़ को उस से रोक देता है बजुज़ उस के जिस का पहुंचना मशिय्यत में हो। **32 :** मआ़सी में मुब्तला हो कर **33 :** उस के अ़ज़ाब व हलाक का इरादा फ़रमाए **34 :** जो उस के अ़ज़ाब को रोक सके। **35 :** कि उस से गिर कर नुक़्सान पहुंचाने का ख़ौफ़ होता है और बारिश से नफ़्अ़ उठाने की उम्मीद या बा'ज़ों को ख़ौफ़ होता है जैसे मुसाफ़िरों को जो सफ़र में हों और बा'ज़ों को फ़ाएदे की उम्मीद जैसे कि काश्तकार वग़ैरा। **36 :** गरज या'नी बादल

يَّشَآءُ وَهُمۡ يُجَادِلُوۡنَ فِى اللّٰهِ‌ۚ وَهُوَ شَدِيۡدُ الۡمِحَالِؕ ﴿۱۳﴾ لَهٗ دَعۡوَةُ الۡحَـقِّ‌ؕ

चाहे और वोह अल्लाह में झगड़ते होते हैं[39] और उस की पकड़ सख़्त है उसी का पुकारना सच्चा है[40]

وَالَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا يَسۡتَجِيۡبُوۡنَ لَهُمۡ بِشَىۡءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ

और उस के सिवा जिन को पुकारते हैं[41] वोह उन की कुछ भी नहीं सुनते मगर उस की तरह जो पानी

كَفَّيۡهِ اِلَى الۡمَآءِ لِيَبۡلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِـغِهٖ‌ؕ وَمَا دُعَآءُ الۡكٰفِرِيۡنَ اِلَّا

के सामने अपनी हथेलियां फैलाए बैठा है कि उस के मुंह में पहुंच जाए[42] और वोह हरगिज़ न पहुंचेगा और काफ़िरों की हर दुआ

فِىۡ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا وَّ

भटक्ती फिरती है और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से[43] ख़्वाह मजबूरी से[44] और

से जो आवाज़ होती है। इस के तस्बीह करने के मा'ना येह हैं कि इस आवाज़ का पैदा होना ख़ालिक़, क़ादिर, हर नक़्स से मुनज़्ज़ा के वुजूद की दलील है। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीहे रा'द से वोह मुराद है कि इस आवाज़ को सुन कर अल्लाह के बन्दे उस की तस्बीह करते हैं। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि रा'द एक फ़िरिश्ते का नाम है जो बादल पर मामूर है इस को चलाता है। **37 :** या'नी उस की हैबतो जलाल से उस की तस्बीह करते हैं। **38 :** साइक़ा वोह शदीद आवाज़ है जो जव्व (आस्मान व ज़मीन के दरमियान) से उतरती है फिर उस में आग पैदा हो जाती है या अज़ाब या मौत और वोह अपनी ज़ात में एक ही चीज़ है और येह तीनों चीज़ें उसी से पैदा होती हैं। (خازن) **39 शाने नुज़ूल :** हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़रब के एक निहायत सरकश काफ़िर को इस्लाम की दा'वत देने के लिये अपने अस्हाब की एक जमाअ़त भेजी उन्हों ने उस को दा'वत दी कहने लगा : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) का रब कौन है जिस की तुम मुझे दा'वत देते हो क्या वोह सोने का है या चांदी का या लोहे का या तांबे का ? मुसल्मानों को येह बात बहुत गिरां गुज़री और उन्हों ने वापस हो कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि ऐसा अक्फ़र (सख़्त काफ़िर) सियाह दिल, सरकश देखने में नहीं आया। हुज़ूर ने फ़रमाया : उस के पास फिर जाओ ! उस ने फिर वोही गुफ़्तगू की और इतना और कहा कि मैं मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल कर के ऐसे रब को मान लूं जिसे न मैं ने देखा है न पहचाना। येह ह़ज़रात फिर वापस हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर उस का ख़ुब्स (शर) तो और तरक़्क़ी पर है। फ़रमाया : फिर जाओ ! ब ता'मीले इर्शाद (हुक्म बजा लाते हुए) फिर गए जिस वक़्त उस से गुफ़्तगू कर रहे थे और वोह ऐसी ही सियाह दिली की बातें बक रहा था एक अब्र आया उस से बिजली चमकी और कड़क हुई और बिजली गिरी और उस काफ़िर को जला दिया। येह ह़ज़रात उस के पास बैठे रहे जब वहां से वापस हुए तो राह में उन्हें अस्हाबे किराम की एक और जमाअ़त मिली वोह कहने लगे कहिये वोह शख़्स जल गया ? उन ह़ज़रात ने कहा कि आप साहिबों को कैसे मा'लूम हो गया ? उन्हों ने फ़रमाया : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास वह्य आई है "وَيُرۡسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيۡبُ بِهَا مَنۡ يَّشَآءُ وَهُمۡ يُجَادِلُوۡنَ فِى اللّٰهِ" । (خازن) **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि आ़मिर बिन तुफ़ैल ने अरबद बिन रबीआ़ से कहा कि मुह़म्मद मुस्तफ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के पास चलो मैं उन्हें बातों में लगाऊंगा तू पीछे से तलवार से ह़म्ला करना, येह मश्वरा कर के वोह हुज़ूर के पास आए और आ़मिर ने हुज़ूर से गुफ़्तगू शुरूअ़ की, बहुत त़वील गुफ़्तगू के बा'द कहने लगा कि अब हम जाते हैं और एक बड़ा जर्रार लश्कर आप पर लाएंगे, येह कह कर चला आया, बाहर आ कर अरबद से कहने लगा कि तू ने तलवार क्यूं नहीं मारी ? उस ने कहा : जब मैं तलवार मारने का इरादा करता था तो तू दरमियान में आ जाता था, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन लोगों के निकलते वक़्त येह दुआ़ फ़रमाई : "اَللّٰهُمَّ اكۡفِنِيۡهِمَا بِمَا شِئۡتَ" जब येह दोनों मदीने शरीफ़ से बाहर आए तो उन पर बिजली गिरी अरबद जल गया और आ़मिर भी इसी राह में बहुत बदतर ह़ालत में मरा। (حسینی) **40 :** या'नी उस की तौह़ीद की शहादत देना और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना या येह मा'ना हैं कि वोह दुआ़ क़बूल करता है और उसी से दुआ़ करना सज़ावार है। **41 :** मा'बूद जान कर या'नी कुफ़्फ़ार जो बुतों की इबादत करते हैं और उन से मुरादें मांगते हैं **42 :** तो हथेलियां फैलाने और बुलाने से पानी कूंएं से निकल कर उस के मुंह में न आएगा क्यूं कि पानी को न इल्म है न शुऊ़र जो उस की ह़ाजत और प्यास को जाने और उस के बुलाने को समझे और पहचाने न उस में येह क़ुदरत है कि अपनी जगह से ह़रकत करे और अपने मुक़्तज़ाए त़बीअ़त (या'नी त़बीअ़त की ख़्वाहिश) के ख़िलाफ़ ऊपर चढ़ कर बुलाने वाले के मुंह में पहुंच जाए, येही ह़ाल बुतों का है कि न उन्हें बुत परस्तों के पुकारने की ख़बर है न उन की ह़ाजत का शुऊ़र न वोह उन के नफ़्अ़ पर कुछ क़ुदरत रखते हैं। **43 :** जैसे कि मोमिन **44 :** जैसे कि मुनाफ़िक़ व काफ़िर।

ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ط

उन की परछाइयां हर सुब्ह व शाम[45] तुम फ़रमाओ कौन रब है आस्मानों और ज़मीन का

قُلِ اللّٰهُ ط قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ

तुम ख़ुद ही फ़रमाओ अल्लाह[46] तुम फ़रमाओ तो क्या उस के सिवा तुम ने वोह हिमायती बना लिये हैं जो अपना

نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا ط قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي

भला बुरा नहीं कर सकते हैं[47] तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे अन्धा और अंख्यारा[48] या क्या बराबर हो जाएंगी

الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ

अंधेरियां और उजाला[49] क्या अल्लाह के लिये ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्हों ने अल्लाह की त़रह़ कुछ बनाया तो उन्हें उन का और उस का बनाना

عَلَيْهِمْ ط قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ

एक सा मा'लूम हुवा[50] तुम फ़रमाओ अल्लाह हर चीज़ का बनाने वाला है[51] और वोह अकेला सब पर ग़ालिब है[52] उस ने

السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ط وَ

आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रौ (धार) उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और

مِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ط كَذٰلِكَ

जिस पर आग दहकाते हैं[53] गहना (ज़ेवर) या और अस्बाब[54] बनाने को उस से भी वैसे ही झाग उठते हैं अल्लाह

يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ ۙ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَ

बताता है कि ह़क़ और बात़िल की येही मिसाल है तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है और

45 : उन की तब्इय्यत में अल्लाह को सज्दा करती हैं। ज़ज्जाज ने कहा कि काफ़िर "ग़ैरुल्लाह" को सज्दा करता है और उस का साया अल्लाह को। इब्ने अम्बारी ने कहा कि कुछ बईद नहीं कि अल्लाह तआ़ला परछाइयों (या'नी साए) में ऐसी फ़ह्म (समझ) पैदा करे कि वोह उस को सज्दा करें। **बा'ज़** का क़ौल है : सज्दे से साए का एक त़रफ़ से दूसरी त़रफ़ माइल होना और आफ़्ताब के इरतिफ़ाअ़ व नुज़ूल (बुलन्द होने व ढलने) के साथ दराज़ व कोताह (लम्बा और छोटा) होना मुराद है। (خازن) **46 :** क्यूं कि इस सुवाल का इस के सिवा और कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिकीन बा वुजूद ग़ैरुल्लाह की इ़बादत करने के इस के मुक़िर (इक़रार करने वाले) हैं कि आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ अल्लाह है, जब येह अम्र मुसल्लम (माना हुवा) है तो **47 :** या'नी बुत। जब उन की येह बे क़ुदरती व बेचारगी है तो वोह दूसरे को क्या नफ़्अ़ व ज़रर पहुंचा सकते हैं ऐसों को मा'बूद बनाना और ख़ालिक़, राज़िक़, क़वी व क़ादिर को छोड़ना इन्तिहा दरजे की गुमराही है। **48 :** या'नी काफ़िर व मोमिन **49 :** या'नी कुफ़्र व ईमान **50 :** और इस वज्ह से ह़क़ उन पर मुश्तबह (मश्कूक) हो गया और वोह बुत परस्ती करने लगे, ऐसा तो नहीं है बल्कि जिन बुतों को वोह पूजते हैं अल्लाह की मख़्लूक़ की त़रह़ कुछ बनाना तो कुजा वोह बन्दों की मस्नूआ़त (तय्यार की हुई चीज़ों) के मिस्ल भी नहीं बना सकते आ़जिज़े मह़ज़ हैं, ऐसे पथ्थरों का पूजना अ़क़्लो दानिश के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। **51 :** जो मख़्लूक़ होने की सलाहिय्यत रखे उस सब का ख़ालिक़ अल्लाह ही है और कोई नहीं तो दूसरे को शरीके इ़बादत करना आ़क़िल किस त़रह़ गवारा कर सकता है। **52 :** सब उस के तह़्ते क़ुदरतो इख़्तियार हैं। **53 :** जैसे कि सोना, चांदी, तांबा वग़ैरा **54 :** बरतन वग़ैरा

اَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ

वोह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है[55] **अल्लाह** यूं ही मिसालें बयान

الْاَمْثَالَ ﴿۱۷﴾ؕ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا

फ़रमाता है जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना उन्हीं के लिये भलाई है[56] और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना[57]

لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

अगर ज़मीन में जो कुछ है वोह सब और इस जैसा और उन की मिल्क में होता तो अपनी जान छुड़ाने को दे देते येही हैं

لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ع اَفَمَنْ يَّعْلَمُ

जिन का बुरा ह़िसाब होगा[58] और उन का ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा बिछोना तो क्या वोह जो जानता है

اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा ह़क़ है[59] वोह उस जैसा होगा जो अन्धा है[60] नसीह़त वोही मानते हैं

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ۙ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾ۙ

जिन्हें अ़क़्ल है वोह जो **अल्लाह** का अ़ह्द पूरा करते हैं[61] और क़ौल बांध कर (वा'दा कर के) फिरते नहीं

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ

और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का **अल्लाह** ने हुक्म दिया[62] और अपने रब से डरते और

يَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ؕ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ

ह़िसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं[63] और वोह जिन्हों ने सब्र किया[64] अपने रब की रिज़ा चाहने को और

55 : ऐसे ही बात़िल अगर्चे कितना ही उभर जाए और बा'ज़ अवक़ात व अह़वाल में झाग की त़रह़ ह़द से ऊंचा हो जाए मगर अन्जामे कार मिट जाता है और ह़क़ अस्ले शै और जौहरे साफ़ की त़रह़ बाक़ी व साबित रहता है। **56 :** या'नी जन्नत **57 :** और कुफ़्र किया **58 :** कि हर अम्र पर मुआख़ज़ा किया जाएगा और उस में से कुछ न बख़्शा जाएगा। (جلالین و خازن) **59 :** और उस पर ईमान लाता है और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करता है **60 :** ह़क़ को नहीं जानता, क़ुरआन पर ईमान नहीं लाता, उस के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करता। येह आयत ह़ज़रते ह़म्ज़ा इब्ने अ़ब्दुल मुत्त़लिब और अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई। **61 :** उस की रबूबिय्यत की शहादत देते हैं और उस का हुक्म मानते हैं **62 :** या'नी **अल्लाह** की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बा'ज़ को मान कर बा'ज़ से मुन्किर हो कर उन में तफ़रीक़ (जुदाई) नहीं करते या येह मा'ना हैं कि ह़ुक़ूक़े क़राबत की रिआ़यत रखते हैं और रिश्ता क़त़्अ़ नहीं करते, इसी में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं, सादाते किराम का एह़तिराम और मुसल्मानों के साथ मवद्दत (प्यार व मह़ब्बत) व एह़सान और उन की मदद और उन की त़रफ़ से मुदाफ़अ़त (दिफ़ाअ़) और उन के साथ शफ़्क़त और सलाम व दुआ़ और मुसल्मान मरीज़ों की इ़यादत और अपने दोस्तों ख़ादिमों हमसायों, सफ़र के साथियों के ह़ुक़ूक़ की रिआ़यत भी इस में दाख़िल है और शरीअ़त में इस का लिह़ाज़ रखने की बहुत ताकीदें आई हैं ब कसरत अह़ादीसे सह़ीह़ा इस बाब में वारिद हैं। **63 :** और वक़्ते ह़िसाब से पहले ख़ुद अपने नफ़्सों से मुह़ासबा करते हैं **64 :** त़ाअ़तों और मुसीबतों पर और मा'सियत से बाज़ रहे।

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया[65] और बुराई के बदले

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا

भलाई कर के टालते हैं[66] उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे

وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ

और जो लाइक़ हों[67] उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में[68] और फ़िरिश्ते[69] हर दरवाज़े से

عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾

उन पर[70] येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ

और वोह जो **अल्लाह** का अ़हद उस के पक्के होने[71] के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को **अल्लाह** ने फ़रमाया

بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ

उसे क़त्अ़ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[72] उन का हिस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा

الدَّارِ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ

घर[73] **अल्लाह** जिस के लिये चाहे रिज़्क़ कुशादा और[74] तंग करता है और काफ़िर दुन्या की ज़िन्दगी पर

الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿۲۶﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ

इतरा गए[75] और दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना और काफ़िर कहते

كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

इन पर कोई निशानी इन के रब की त़रफ़ से क्यूं न उतरी तुम फ़रमाओ बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे गुमराह करता है[76]

---

65 : नवाफ़िल का छुपाना और फ़राइज़ का ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है। **66 :** बद कलामी का जवाब शीरीं सुख़नी (ख़ुश कलामी) से देते हैं और जो उन्हें महरूम करता है उस पर अ़ता करते हैं, जब उन पर ज़ुल्म किया जाता है मुआफ़ करते हैं, जब उन से पैवन्द (तअ़ल्लुक़) क़त्अ़ किया जाता है मिलाते हैं और जब गुनाह करते हैं तौबा करते हैं, जब ना जाइज़ काम देखते हैं उसे बदलते हैं, जहल के बदले हिल्म और ईज़ा के बदले सब्र करते हैं। **67 :** या'नी मोमिन हों **68 :** अगर्चे लोगों ने उन के से अ़मल न किये हों जब भी **अल्लाह** तआ़ला उन के इक्राम के लिये इन को उन के दरजे में दाख़िल फ़रमाएगा **69 :** हर एक रोज़ो शब में हदाया (तोहफ़े) और रिज़ा की बिशारतें ले कर जन्नत के **70 :** ब त़रीक़े तहिय्यतो तक्रीम (इ़ज़्ज़तो एहतिराम) **71 :** और उस को क़बूल कर लेने **72 :** कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के **73 :** या'नी जहन्नम। **74 :** जिस के लिये चाहे **75 :** और शुक्र गुज़ार न हुए। **मस्अला :** दौलते दुन्या पर इतराना और मग़रूर होना ह़राम है। **76 :** कि वोह आयात व मो'जिज़ात नाज़िल होने के बा'द भी येह कहता रहता है कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी, कोई मो'जिज़ा क्यूं नहीं आया, मो'जिज़ाते कसीरा के बा वुजूद गुमराह रहता है।

وَيَهۡدِیۡۤ اِلَیۡهِ مَنۡ اَنَابَ ﴿۲۷﴾ اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِکۡرِ

और अपनी राह उसे देता है जो उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाए वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन

اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ﴿ؕ۲۸﴾ اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا

पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है[77] वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ طُوۡبٰی لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَاٰبٍ ﴿۲۹﴾ کَذٰلِکَ اَرۡسَلۡنٰکَ فِیۡۤ اُمَّةٍ

काम किये उन को ख़ुशी है और अच्छा अन्जाम[78] इसी त़रह़ हम ने तुम को इस उम्मत में भेजा

قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتۡلُوَا عَلَیۡهِمُ الَّذِیۡۤ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡکَ وَهُمۡ

जिस से पहले उम्मतें हो गुज़रीं[79] कि तुम उन्हें पढ़ कर सुनाओ[80] जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़्य की और वोह

یَکۡفُرُوۡنَ بِالرَّحۡمٰنِ ؕ قُلۡ هُوَ رَبِّیۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَیۡهِ تَوَکَّلۡتُ وَاِلَیۡهِ

रह़मान के मुन्किर हो रहे हैं[81] तुम फ़रमाओ वोह मेरा रब है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़

مَتَابِ ﴿۳۰﴾ وَلَوۡ اَنَّ قُرۡاٰنًا سُیِّرَتۡ بِهِ الۡجِبَالُ اَوۡ قُطِّعَتۡ بِهِ الۡاَرۡضُ

मेरी रुजूअ़ है और अगर कोई ऐसा क़ुरआन आता जिस से पहाड़ टल जाते[82] या ज़मीन फट जाती

اَوۡ کُلِّمَ بِهِ الۡمَوۡتٰی ؕ بَلۡ لِّلّٰهِ الۡاَمۡرُ جَمِیۡعًا ؕ اَفَلَمۡ یَایۡـَٔسِ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا

या मुर्दे बातें करते जब भी येह काफ़िर न मानते[83] बल्कि सब काम **अल्लाह** ही के इख़्तियार में हैं[84] तो क्या मुसल्मान इस से ना उम्मीद न हुए[85]

77 : उस के रह़मतो फ़ज़्ल और उस के एह़सानो करम को याद कर के बे क़रार दिलों को क़रार व इत़्मीनान ह़ासिल होता है। अगर्चे उस के अ़द्ल व इताब (ग़ज़ब) की याद दिलों को ख़ाइफ़ कर देती है जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : "اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُکِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ" ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि मुसल्मान जब **अल्लाह** का नाम ले कर क़सम खाता है दूसरे मुसल्मान उस का ए'तिबार कर लेते हैं और उन के दिलों को इत़्मीनान हो जाता है। **78 :** "तूबा" बिशारत है राह़तो ने'मत और ख़ुर्रमी व ख़ुशह़ाली की। सईद बिन जुबैर ने कहा कि तूबा ज़बाने ह़बशी में जन्नत का नाम है। ह़ज़रते अबू हुरैरा और दीगर अस्ह़ाब से मरवी है कि तूबा जन्नत के एक दरख़्त का नाम है जिस का साया हर जन्नत में पहुंचेगा, येह दरख़्त जन्नते अ़द्न में है और इस की अस्ल (जड़) सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के ऐवाने मुअ़ल्ला में और इस की शाख़ें जन्नत के हर ग़ुरफ़ा (कमरे) और क़स्र (मह़ल) में, इस में सिवा सियाही के हर क़िस्म के रंग और ख़ुशनुमाइयां हैं हर त़रह़ के फल और मेवे इस में फले हैं, इस की बेख़ (जड़) से काफ़ूर सल्सबील (एक चश्मा) की नहरें रवां हैं। **79 :** तो तुम्हारी उम्मत सब से पिछली उम्मत है और तुम ख़ातमुल अम्बिया हो तुम्हें बड़े शानो शिकोह से रिसालत अ़ता की **80 :** वोह किताबे अ़ज़ीम **81 शाने नुज़ूल :** क़तादा व मुक़ातिल वग़ैरा का क़ौल है कि येह आयत सुल्ह़े हुदैबिया में नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि सुहैल बिन अ़म्र जब सुल्ह़ के लिये आया और सुल्ह़ नामा लिखने पर इत्तिफ़ाक़ हो गया तो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से फ़रमाया : लिखो "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" कुफ़्फ़ार ने इस में झगड़ा किया और कहा कि आप हमारे दस्तूर के मुत़ाबिक़ "بِاسْمِکَ اللّٰهُمَّ" (या'नी ऐ **अल्लाह** तेरे नाम से शुरूअ़) लिखवाइये। इस के मुतअ़ल्लिक़ आयत में इर्शाद होता है कि वोह रह़मान के मुन्किर हो रहे हैं। **82 :** अपनी जगह से **83 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से कहा था कि अगर आप येह चाहें कि हम आप की नुबुव्वत मानें और आप का इत्तिबाअ़ करें तो आप क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर इस की तासीर से मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ हटा दीजिये ताकि हमें खेतियां करने (काश्त कारी) के लिये वसीअ़ मैदान मिल जाएं और ज़मीन फाड़ कर चश्मा जारी कीजिये ताकि हम खेतों और बाग़ों को उन से सैराब करें और क़ुसय बिन किलाब वग़ैरा हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये

اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कि **अल्लाह** चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता[86] और काफ़िरों को हमेशा उन के किये

تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ

पर सख़्त धमक (इन्तिहाई सख़्त मुसीबत) पहुंचती रहेगी[87] या उन के घरों के नज़्दीक उतरेगी[88] यहां तक कि

وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۳۱﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ

अल्लाह का वा'दा आए[89] बेशक **अल्लाह** वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता[90] और बेशक तुम से अगले रसूलों

مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ

पर भी हंसी की गई तो मैं ने काफ़िरों को कुछ दिनों ढील दी फिर उन्हें पकड़ा[91] तो मेरा अ़ज़ाब

عِقَابِ ﴿۳۲﴾ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

कैसा था तो क्या वोह जो हर जान पर उस के आ'माल की निगहदाश्त रखता है[92] और वोह **अल्लाह** के शरीक

شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ

ठहराते हैं तुम फ़रमाओ उन का नाम तो लो[93] या उसे वोह बताते हो जो उस के इल्म में सारी ज़मीन में नहीं[94] या यूंही ऊपरी

वोह हम से कह जाएं कि आप नबी हैं। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि येह ह़ीले ह़वाले करने वाले किसी ह़ाल में भी ईमान लाने वाले नहीं। **84 :** तो ईमान वोही लाएगा जिस को **अल्लाह** चाहे और तौफ़ीक़ दे, उस के सिवा और कोई ईमान लाने वाला नहीं अगर्चे उन्हें वोही निशान दिखा दिये जाएं जो वोह त़लब करें **85 :** या'नी कुफ़्फ़ार के ईमान लाने से ख़्वाह उन्हें कितनी ही निशानियां दिखला दी जाएं और क्या मुसल्मानों को इस का यक़ीनी इल्म नहीं **86 :** बिग़ैर किसी निशानी के लेकिन वोह जो चाहता है करता है और वोही हिक्मत है, येह जवाब है उन मुसल्मानों का जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के नई नई निशानियां त़लब करने पर येह चाहा था कि जो काफ़िर भी कोई निशानी त़लब करे वोही उस को दिखा दी जाए। इस में उन्हें बता दिया गया कि जब ज़बर दस्त निशान आ चुके और शुकूको अवहाम की तमाम राहें बन्द कर दी गईं, दीन की ह़क़्क़ानिय्यत रोज़े रोशन से ज़ियादा वाज़ेह़ हो चुकी, इन जली बुरहानों (रोशन दलीलों) के बा वुजूद जो लोग मुकर गए, ह़क़ के मो'तरिफ़ न हुए (ह़क़ को न माने) ज़ाहिर हो गया कि वोह मुआ़निद (बुग़्ज़ो कीना रखने वाले) हैं और मुआ़निद किसी दलील से भी माना नहीं करता तो मुसल्मानों को अब उन से क़बूले ह़क़ की क्या उम्मीद। क्या अब तक उन का इनाद देख कर और आयातो बय्यिनाते वाज़ेह़ा (साफ़ और रोशन दलीलों) से ए'राज़ मुशाहदा कर के भी उन से क़बूले ह़क़ की उम्मीद रखी जा सकती है? अलबत्ता अब उन के ईमान लाने और मान जाने की येही सूरत है कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें मजबूर करे और उन का इख़्तियार सल्ब फ़रमा ले। इस त़रह़ की हिदायत चाहता तो तमाम आदमियों को हिदायत फ़रमा देता और कोई काफ़िर न रहता मगर दारुल इब्तिला व दारुल इम्तिह़ान की हिक्मत इस की मुतक़ाज़ी नहीं। **87 :** या'नी वोह इस तक्ज़ीब व इनाद की वज्ह से त़रह़ त़रह़ के ह़वादिस व मसाइब और आफ़तों और बलाओं में मुब्तला रहेंगे कभी क़ह़त़ में, कभी लुटने में, कभी मारे जाने में, कभी क़ैद में। **88 :** और उन के इज़्तिराब व परेशानी का बाइ़स होगी और उन तक उन मसाइब के ज़रर (नुक़्सानात) पहुंचेंगे **89 : अल्लाह** की त़रफ़ से फ़त्ह़ो नुसरत आए और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन का दीन ग़ालिब हो और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ किया जाए। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस वा'दे से रोज़े क़ियामत मुराद है जिस में आ'माल की जज़ा दी जाएगी। **90 :** इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर (तसल्ली व दिलजूई) फ़रमाता है कि इस क़िस्म के बेहूदा सुवाल और ऐसे तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा (ठठ्ठे और मज़ाक़) से आप रन्जीदा न हों क्यूं कि हादियों को ऐसे वाक़िआ़त पेश आया ही करते हैं। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है **91 :** और दुन्या में उन्हें क़ह़त़ व क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किया और आख़िरत में उन के लिये अ़ज़ाबे जहन्नम है **92 :** नेक की भी बद की भी या'नी **अल्लाह** तआ़ला क्या वोह उन बुतों की मिस्ल हो सकता है जो ऐसे नहीं, न उन्हें इल्म है न क़ुदरत, आ़जिज़ बे शुऊ़र हैं **93 :** वोह हैं कौन **94 :** और जो उस के इल्म में न हो वोह बात़िले मह़ज़ है, हो ही नहीं सकता क्यूं कि उस का इल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है लिहाज़ा उस के लिये शरीक होना बात़िल व ग़लत़।

مِّنَ الۡقَوۡلِ ؕ بَلۡ زُیِّنَ لِلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مَکۡرُهُمۡ وَ صُدُّوۡا عَنِ السَّبِیۡلِ ؕ

(बे मा'ना) बात[95] बल्कि काफ़िरों की निगाह में उन का फ़रेब अच्छा ठहरा है और राह से रोके गए[96]

وَ مَنۡ یُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿۳۳﴾ لَهُمۡ عَذَابٌ فِی الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا وَ

और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं उन्हें दुन्या के जीते अ़ज़ाब होगा[97] और

لَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَ مَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّاقٍ ﴿۳۴﴾ مَثَلُ الۡجَنَّةِ

बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त है और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं अह़वाल उस जन्नत का

الَّتِیۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ اُکُلُهَا دَآئِمٌ وَّ ظِلُّهَا ؕ

कि डर वालों के लिये जिस का वा'दा है उस के नीचे नहरें बहती हैं उस के मेवे हमेशा और उस का साया[98]

تِلۡکَ عُقۡبَی الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا ٭ۖ وَّ عُقۡبَی الۡکٰفِرِیۡنَ النَّارُ ﴿۳۵﴾ وَ الَّذِیۡنَ اٰتَیۡنٰهُمُ

डर वालों का तो येह अन्जाम है[99] और काफ़िरों का अन्जाम आग और जिन को हम ने

الۡکِتٰبَ یَفۡرَحُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مِنَ الۡاَحۡزَابِ مَنۡ یُّنۡکِرُ بَعۡضَهٗ ؕ

किताब दी[100] वोह उस पर ख़ुश होते जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उन गुरौहों में[101] कुछ वोह हैं कि इस के बा'ज़ से मुन्किर हैं

قُلۡ اِنَّمَاۤ اُمِرۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ اللّٰهَ وَ لَاۤ اُشۡرِکَ بِهٖ ؕ اِلَیۡهِ اَدۡعُوۡا وَ اِلَیۡهِ

तुम फ़रमाओ मुझे तो येही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करूं और उस का शरीक न ठहराऊं मैं उसी की त़रफ़ बुलाता हूं और उसी की त़रफ़

مَاٰبِ ﴿۳۶﴾ وَ کَذٰلِکَ اَنۡزَلۡنٰهُ حُکۡمًا عَرَبِیًّا ؕ وَ لَئِنِ اتَّبَعۡتَ اَهۡوَآءَهُمۡ

मुझे फिरना[102] और इसी त़रह़ हम ने इसे अ़रबी फ़ैसला उतारा[103] और ऐ सुनने वाले अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चलेगा[104]

بَعۡدَ مَا جَآءَکَ مِنَ الۡعِلۡمِ ۙ مَا لَکَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِیٍّ وَّ لَا وَاقٍ ﴿۳۷﴾ؑ وَ لَقَدۡ

बा'द इस के कि तुझे इ़ल्म आ चुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई ह़िमायती होगा न बचाने वाला और बेशक

95 : के दरपै होते हो जिस की कुछ अस्ल व ह़क़ीक़त नहीं 96 : या'नी रुश्दो हिदायत और दीन की राह से 97 : क़त्ल व क़ैद का 98 : या'नी उस के मेवे और उस का साया दाइमी है इन में से कोई मुन्क़त़अ़ और ज़ाइल होने वाला नहीं। जन्नत का ह़ाल अ़जीब है इस में न सूरज है न चांद न तारीकी, बा वुजूद इस के ग़ैर मुन्क़त़अ़ दाइमी (न ख़त्म होने वाला हमेशा का) साया है। 99 : या'नी तक़्वा वालों के लिये जन्नत है 100 : या'नी वोह यहूदो नसारा जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरा और ह़बशा व नजरान के नसरानी। 101 : यहूदो नसारा व मुश्रिकीन के जो आप की अ़दावत में सरशार हैं और आप पर उन्हों ने चढ़ाइयां की हैं। 102 : इस में क्या बात क़ाबिले इन्कार है क्यूं नहीं मानते 103 : या'नी जिस त़रह़ पहले अम्बिया को उन की ज़बानों में अह़काम दिये थे इसी त़रह़ हम ने येह क़ुरआन ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! आप की ज़बान अ़रबी में नाज़िल फ़रमाया। क़ुरआने करीम को हुक्म इस लिये फ़रमाया कि इस में अल्लाह की इ़बादत और उस की तौह़ीद और उस के दीन की त़रफ़ दा'वत और तमाम तकालीफ़ व अह़काम और ह़लाल व ह़राम का बयान है। **बा'ज़** उ़लमा ने फ़रमाया : चूंकि अल्लाह तआ़ला ने तमाम ख़ल्क़ पर क़ुरआन शरीफ़ के क़बूल करने और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करने का हुक्म फ़रमाया इस लिये इस का नाम हुक्म रखा। 104 : या'नी काफ़िरों की जो अपने दीन की

اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ

हम ने तुम से पहले रसूल भेजे और उन के लिये बीबियां[105] और बच्चे किये और किसी

لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿۳۸﴾ يَمْحُوا

रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी ले आए मगर **अल्लाह** के हुक्म से हर वा'दे की एक लिखत (तह़रीर) है[106] **अल्लाह** जो

اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿۳۹﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ

चाहे मिटाता और साबित करता है[107] और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है[108] और अगर हमीं तुम्हें दिखा दें

بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

कोई वा'दा[109] जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही[110] अपने पास बुला लें तो बहर ह़ाल तुम पर तो सिर्फ़ पहुंचाना है और ह़िसाब लेना[111]

الْحِسَابُ ﴿۴۰﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ

हमारा ज़िम्मा[112] क्या उन्हें नहीं सूझता कि हम हर त़रफ़ से उन की आबादी घटाते आ रहे हैं[113] और **अल्लाह**

يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۴۱﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ

हुक्म फ़रमाता है उस का हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं[114] और उसे ह़िसाब लेते देर नहीं लगती और उन से अगले[115] फ़रेब

قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ

कर चुके हैं तो सारी ख़ुफ़्या तदबीर का मालिक तो **अल्लाह** ही है[116] जानता है जो कुछ कोई जान कमाए[117] और अब जानना चाहते हैं काफ़िर

त़रफ़ बुलाते हैं **105 शाने नुज़ूल :** काफ़िरों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर येह ऐब लगाया था कि वोह निकाह़ करते हैं अगर नबी होते तो दुन्या तर्क कर देते, बीबी बच्चे से कुछ वासित़ा न रखते। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि बीबी बच्चे होना नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं, लिहाज़ा येह ए'तिराज़ मह़ज़ बे जा है और पहले जो रसूल आ चुके हैं वोह भी निकाह़ करते थे उन के भी बीबियां और बच्चे थे **106 :** उस से मुक़द्दम व मुअख़्ख़र नहीं हो सकता ख़्वाह वोह वा'दा अ़ज़ाब का हो या कोई और **107 :** सईद बिन जुबैर और क़तादा ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा कि **अल्लाह** जिन अह़काम को चाहता है मन्सूख़ फ़रमाता है, जिन्हें चाहता है बाक़ी रखता है। इन्हीं इब्ने जुबैर का एक क़ौल येह है कि बन्दों के गुनाहों में से **अल्लाह** जो चाहता है मग़्फ़िरत फ़रमा कर मिटा देता है और जो चाहता है साबित रखता है। इक्रिमा का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला तौबा से जिस गुनाह को चाहता है मिटाता है और उस की जगह नेकियां क़ाइम फ़रमाता है और इस की तफ़्सीर में और भी बहुत अक़्वाल हैं **108 :** जिस को उस ने अज़ल में लिखा। येह इल्मे इलाही है या उम्मुल किताब से लौह़े मह़फ़ूज़ मुराद है जिस में तमाम काएनात और आ़लम में होने वाले जुम्ला ह़वादिस व वाक़िआ़त और तमाम अश्या मक्तूब हैं और इस में तग़य्युर व तबद्दुल नहीं होता। **109 :** अ़ज़ाब का **110 :** हम तुम्हें **111 :** और आ'माल की जज़ा देना **112 :** तो आप काफ़िरों के ए'राज़ करने से रन्जीदा न हों और अ़ज़ाब की जल्दी न करें। **113 :** और ज़मीने शिर्क की वुस्अ़त दम बदम कम कर रहे हैं और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये कुफ़्फ़ार के गिर्दो पेश की अराज़ी यके बा'द दीगरे फ़त्ह़ होती चली जाती है और येह सरीह़ दलील है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब की मदद फ़रमाता है और इन के लश्कर को फ़त्ह़ मन्द करता है और इन के दीन को ग़लबा देता है। **114 :** उस का हुक्म नाफ़िज़ है किसी की मजाल नहीं कि उस में चूं चरा या तग़ईर व तब्दील कर सके, जब वोह इस्लाम को ग़लबा देना चाहे और कुफ़्र को पस्त करना तो किस की ताब व मजाल कि उस के हुक्म में दख़्ल दे सके। **115 :** या'नी गुज़री हुई उम्मतों के कुफ़्फ़ार अपने अम्बिया के साथ **116 :** फिर बिग़ैर उस की मशिय्यत के किसी की क्या चल सकती है और जब ह़क़ीक़त येह है तो मख़्लूक़ का क्या अन्देशा। **117 :** हर एक का कस्ब **अल्लाह** तआ़ला को मा'लूम है और उस के नज़्दीक उन की जज़ा मुक़र्रर है।

لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ

किसे मिलता है पिछला घर[118] और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं तुम फ़रमाओ

كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में[119] और वोह जिसे किताब का इल्म है[120]

اٰيَاتُهَا ٥٢ ۝ ١٤ سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ ٧٢ ۝ رُكُوْعَاتُهَا ٧

सूरए इब्राहीम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

एक किताब है[2] कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी कि तुम लोगों को[3] अंधेरियों से[4] उजाले में लाओ[5]

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

उन के रब के हुक्म से उस की राह[6] की त़रफ़ जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है अल्लाह कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ

और जो कुछ ज़मीन में[7] और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अ़ज़ाब से जिन्हें

يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

आख़िरत से दुन्या की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते[8]

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ

और इस में कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं वोह दूर की गुमराही में हैं[9] और हम ने हर रसूल

118 : या'नी काफ़िर अ़न्क़रीब जान लेंगे कि राह़ते आख़िरत मोमिनीन के लिये है और वहां की ज़िल्लतो ख़्वारी कुफ़्फ़ार के लिये है। 119 : जिस ने मेरे हाथों में मो'जिज़ाते बाहिरा व आयाते क़ाहिरा ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबिय्ये मुरसल होने की शहादत दी। 120 : ख़्वाह वोह उ़लमाए यहूद में से तौरैत का जानने वाला हो या नसारा में से इन्जील का आ़लिम, वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत को अपनी किताबों में देख कर जानता है, इन उ़लमा में से अक्सर आप की रिसालत की शहादत देते हैं। 1 : सूरए इब्राहीम मक्किय्या है सिवाए आयत ''اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا'' और इस के बा'द वाली आयत के। इस सूरत में सात रुकूअ़ बावन आयतें आठ सो इक्सठ कलिमे, तीन हज़ार चार सो चौंतीस ह़र्फ़ हैं 2 : येह क़ुरआन शरीफ़ 3 : कुफ़्रो ज़लालत व जहलो गवायत (जहालत व गुमराहिय्यत) की 4 : ईमान के 5 : ज़ुल्मात को जम्अ़ और नूर को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में ईमा (इशारा) है कि दीने ह़क़ की राह एक है और कुफ़्रो ज़लालत के त़रीक़े कसीर। 6 : या'नी दीने इस्लाम 7 : वोह सब का ख़ालिक़ो मालिक है, सब उस के बन्दे और मम्लूक (क़ब्ज़े में हैं) तो उस की इ़बादत सब पर लाज़िम और उस के सिवा किसी की इ़बादत रवा नहीं। 8 : और लोगों को दीने इलाही

رَسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ

उस की क़ौम ही की ज़बान में भेजा[10] कि वोह उन्हें साफ़ बताए[11] फिर **अल्लाह** गुमराह करता है जिसे चाहे और

يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۴ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

वोह राह दिखाता है जिसे चाहे और वोही इ़ज़्ज़त ह़िक्मत वाला है और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियां[12]

بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ

दे कर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से[13] उजाले में ला और उन्हें **अल्लाह** के दिन

اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝۵ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى

याद दिला[14] बेशक इस में निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र गुज़ार को और जब मूसा ने अपनी क़ौम

لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

से कहा[15] याद करो अपने ऊपर **अल्लाह** का एह़सान जब उस ने तुम्हें फ़िरऔ़न वालों से नजात दी

يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ

जो तुम को बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियां ज़िन्दा रखते

क़बूल करने से मानेअ़ होते हैं **9 :** कि ह़क़ से बहुत दूर हो गए हैं। **10 :** जिस में वोह रसूल मब्ऊ़स हुवा ख़्वाह उस की दा'वत आ़म हो और दूसरी क़ौमों और दूसरे मुल्कों पर भी उस का इत्तिबाअ़ लाज़िम हो जैसा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत तमाम आदमियों और जिन्नों बल्कि सारी ख़ल्क़ की त़रफ़ है और आप सब के नबी हैं जैसा कि कुरआने करीम में फ़रमाया गया ''لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا''। **11 :** और जब उस की क़ौम अच्छी त़रह़ समझ ले तो दूसरी क़ौमों को तरजमों के ज़रीए़ से वोह अह़काम पहुंचा दिये जाएं और उन के मा'ना समझा दिये जाएं। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी फ़रमाया है कि ''قَوْمِهٖ'' की ज़मीर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ राजेअ़ है और मा'ना येह हैं कि हम ने हर रसूल को सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़बान या'नी अ़रबी में वह़्य फ़रमाई और येह मा'ना एक रिवायत में भी आए हैं कि वह़्य हमेशा अ़रबी ज़बान ही में नाज़िल हुई फिर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने अपनी क़ौमों के लिये उन की ज़बानों में तरजमा फ़रमा दिया। (اتقان، حسینی) **मस्अला :** इस से मा'लूम होता है कि अ़रबी तमाम ज़बानों में सब से अफ़्ज़ल है। **12 :** मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरा मो'जिज़ाते बाहिरा के **13 :** कुफ़्र की निकाल कर ईमान के **14 :** क़ामूस में है कि ''اَيَّامُ اللّٰه'' से **अल्लाह** की ने'मतें मुराद हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व उबय बिन का'ब व मुजाहिद व क़तादा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) ने भी اَيَّامُ اللّٰه की तफ़्सीर (**अल्लाह** की ने'मतें) फ़रमाई। मुक़ातिल का क़ौल है कि اَيَّامُ اللّٰه से वोह बड़े बड़े वक़ाएअ़ (ह़ादिसात व वाक़िआ़त) मुराद हैं जो **अल्लाह** के अम्र से वाक़ेअ़ हुए। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि اَيَّامُ اللّٰه से वोह दिन मुराद हैं जिन में **अल्लाह** ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सल्वा उतारने का दिन, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन। (خازن ومدارک ومفردات راغب) इन اَيَّامُ اللّٰه में सब से बड़ी ने'मत के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादत व मे'राज के दिन हैं, इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हु़क्म में दाख़िल है, इसी त़रह़ और बुज़ुर्गों पर जो **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें हुईं या जिन अय्याम में वाक़िआ़ते अ़ज़ीमा पेश आए जैसा कि दसवीं मुह़र्रम को करबला का वाक़िअ़ए हाइला (होलनाक वाक़िआ़) इन की यादगार क़ाइम करना भी तज़्कीर ब اَيَّامُ اللّٰه में दाख़िल है, बा'ज़ लोग मीलाद शरीफ़, मे'राज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के अय्याम की तख़्सीस (तारीख़ मख़्सूस करने) में कलाम करते हैं उन्हें इस आयत से नसीह़त पज़ीर होना चाहिये। **15 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का अपनी क़ौम को येह इर्शाद फ़रमाना तज़्कीर ब اَيَّامُ اللّٰه की ता'मील है।

وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ

ع

और इस में[16] तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿۷﴾ وَقَالَ مُوْسٰۤى اِنْ

तो मैं तुम्हें और दूंगा[17] और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है और मूसा ने कहा अगर

تَكْفُرُوْۤا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۸﴾ اَلَمْ

तुम और ज़मीन में जितने हैं सब काफ़िर हो जाओ[18] तो बेशक **अल्लाह** बे परवाह सब ख़ूबियों वाला है क्या

يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛؕ وَالَّذِيْنَ مِنْ

तुम्हें उन की ख़बरें न आईं जो तुम से पहले थे नूह़ की क़ौम और आ़द और समूद और जो उन के

بَعْدِهِمْ ؕۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا

مع

बा'द हुए उन्हें **अल्लाह** ही जाने[19] उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें ले कर आए[20] तो वोह अपने

اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ

हाथ[21] अपने मुंह की त़रफ़ ले गए[22] और बोले हम मुन्किर हैं उस के जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह[23] की

شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۹﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ

الثلث

त़रफ़ हमें बुलाते हो उस में हमें वोह शक है कि बात खुलने नहीं देता उन के रसूलों ने कहा क्या **अल्लाह** में शक है[24] आस्मानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ

और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हें बुलाता है[25] कि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शे[26] और मौत के मुक़र्रर वक़्त

---

16 : या'नी नजात देने में **17 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है। शुक्र की अस्ल येह है कि आदमी ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार करे और ह़क़ीक़ते शुक्र येह है कि मुन्इम (ने'मत देने वाले) की ने'मत का उस की ता'ज़ीम के साथ ए'तिराफ़ करे और नफ़्स को इस का ख़ूगर बनाए, यहां एक बारीकी (अहम बात) है वोह येह कि बन्दा जब **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों और उस के त़रह़ त़रह़ के फ़ज़्लो करम व एह़सान का मुत़ालआ़ करता है तो उस के शुक्र में मश्ग़ूल होता है इस से ने'मतें ज़ियादा होती हैं और बन्दे के दिल में **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत बढ़ती चली जाती है, येह मक़ाम बहुत बरतर है और इस से आ'ला मक़ाम येह है कि मुन्इम की मह़ब्बत यहां तक ग़ालिब हो कि क़ल्ब को ने'मतों की त़रफ़ इल्तिफ़ात (रग़बत) बाक़ी न रहे, येह मक़ाम सिद्दीक़ों का है। **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **18 :** तो तुम ही ज़रर पाओगे और तुम ही ने'मतों से मह़रूम रहोगे। **19 :** कितने थे **20 :** और उन्हों ने मो'जिज़ात दिखाए **21 :** शिद्दते ग़ैज़ (सख़्त ग़ुस्से) से **22 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि वोह ग़ुस्से में आ कर अपने हाथ काटने लगे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि उन्हों ने किताबुल्लाह सुन कर तअ़ज्जुब से अपने मुंह पर हाथ रखे। ग़रज़ येह कोई न कोई इन्कार की अदा थी। **23 :** या'नी तौह़ीद व ईमान **24 :** क्या उस की तौह़ीद में तरद्दुद है ? येह कैसे हो सकता है उस की दलीलें तो निहायत ज़ाहिर हैं। **25 :** अपनी त़ाअ़त व ईमान की त़रफ़ **26 :** जब तुम ईमान ले आओ। इस लिये कि इस्लाम लाने के बा'द पहले के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं सिवाए हुक़ूक़े इ़बाद के और इसी लिये कुछ गुनाह फ़रमाया।

اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا

तक तुम्हारी ज़िन्दगी बे अ़ज़ाब काट दे बोले तुम तो हमीं जैसे आदमी हो[27] तुम चाहते हो कि हमें उस से बाज़ रखो

عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۰﴾ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ

जो हमारे बाप दादा पूजते थे[28] अब कोई रोशन सनद हमारे पास ले आओ[29] उन के रसूलों ने उन से कहा[30]

اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ

हम हैं तो तुम्हारी त़रह़ इन्सान मगर **अल्लाह** अपने बन्दों में जिस पर चाहे एह़सान फ़रमाता है[31]

وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आएं मगर **अल्लाह** के हुक्म से और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَ

भरोसा चाहिये[32] और हमें क्या हुवा कि **अल्लाह** पर भरोसा न करें[33] उस ने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं[34] और

لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ

तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये और

قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ

काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन[35] से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन

مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ

पर हो जाओ तो उन्हें उन के रब ने वह़्य भेजी कि हम ज़रूर उन ज़ालिमों को हलाक करेंगे और ज़रूर हम तुम को उन के

الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ وَ

बा'द ज़मीन में बसाएंगे[36] येह उस के लिये है जो[37] मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे और

27 : ज़ाहिर में हमें अपनी मिस्ल मा'लूम होते हो, फिर कैसे माना जाए कि हम तो नबी न हुए और तुम्हें येह फ़ज़ीलत मिल गई। 28 : या'नी बुत परस्ती से 29 : जिस से तुम्हारे दा'वे की सिह़्ह़त साबित हो। येह कलाम उन का इनाद व सरकशी से था और बा वुजूदे कि अम्बिया आयात ला चुके थे मो'जिज़ात दिखा चुके थे फिर भी उन्हों ने नई सनद मांगी और पेश किये हुए मो'जिज़ात को कल्अ़दम (ना क़ाबिले क़बूल) क़रार दिया। 30 : अच्छा येही मानो कि 31 : और नुबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है और इस मन्सबे अ़ज़ीम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाता है। 32 : वोही आ'दा का शर दफ़्अ़ करता और उस से मह़फ़ूज़ रखता है 33 : हम से ऐसा हो ही नहीं सकता क्यूं कि हम जानते हैं कि जो कुछ क़ज़ाए इलाही में है वोही होगा, हमें उस पर पूरा भरोसा और कामिल ए'तिमाद है। अबू तुराब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का क़ौल है कि तवक्कुल बदन को उ़बूदिय्यत में डालना, क़ल्ब को रबूबिय्यत के साथ मुतअ़ल्लिक़ रखना, अ़ता पर शुक्र, बला पर सब्र का नाम है। 34 : और रुश्द व नजात के त़रीक़े हम पर वाज़ेह़ फ़रमा दिये और हम जानते हैं कि तमाम उमूर उस के क़ुदरतो इख़्तियार में हैं। 35 : या'नी अपने दियार 36 : ह़दीस शरीफ़ में है जो अपने हमसाए को ईज़ा देता है **अल्लाह** उस के घर का उसी हमसाए को मालिक बनाता है। 37 : क़ियामत के दिन।

اسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ

उन्हों ने[38] फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म ना मुराद हुवा[39] जहन्नम उस के पीछे लगी और उसे पीप का पानी

مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

पिलाया जाएगा ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी[40] और उसे हर त़रफ़ से

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ

मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब[41] अपने रब

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ

से मुन्किरों का ह़ाल ऐसा है कि उन के काम हैं[42] जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झोंका आया आंधी

عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ

के दिन में[43] सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा येही है दूर की

الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ

गुमराही क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान व ज़मीन ह़क़ के साथ बनाए[44] अगर

يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَ

चाहे तो तुम्हें ले जाए[45] और एक नई मख़्लूक़ ले आए[46] और येह[47] अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं और

بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا

सब अल्लाह के हु़ज़ूर[48] अ़लानिया ह़ाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे वोह[49] बड़ाई वालों से कहेंगे[50] हम तुम्हारे ताबेअ़ थे

38 : या'नी अम्बिया ने अल्लाह तआ़ला से मदद त़लब की या उम्मतों ने अपने और रसूलों के दरमियान अल्लाह तआ़ला से 39 : मा'ना येह हैं कि अम्बिया की नुसरत फ़रमाई गई और उन्हें फ़त्ह़ दी गई और ह़क़ के मुआ़निद, सरकश, काफ़िर ना मुराद हुए और उन के ख़लास (छुटकारे) की कोई सबील न रही। 40 : ह़दीस शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा जब वोह मुंह के पास आएगा तो उस को बहुत ना गवार मा'लूम होगा जब और क़रीब होगा तो उस से चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जाएंगी। (अल्लाह की पनाह) 41 : या'नी हर अ़ज़ाब के बा'द उस से ज़ियादा शदीद व ग़लीज़ अ़ज़ाब होगा। (نَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ غَضَبِ الْجَبَّارِ) 42 : जिन को वोह नेक अ़मल समझते थे जैसे कि मोह़ताजों की इमदाद, मुसाफ़िरों की इआ़नत और बीमारों की ख़बर गीरी वग़ैरा। चूंकि ईमान पर मब्नी नहीं इस लिये वोह सब बेकार हैं और उन की ऐसी मिसाल है 43 : और वोह सब उड़ गई और उस के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और उस में से कुछ बाक़ी न रहा, येही ह़ाल है कुफ़्फ़ार के आ'माल का कि उन के शिर्क व कुफ़्र की वज्ह से सब बरबाद और बात़िल हो गए 44 : इन में बड़ी ह़िक्मतें हैं और इन की पैदाइश अ़बस (बेकार) नहीं है। 45 : मा'दूम कर दे 46 : बजाए तुम्हारे जो फ़रमां बरदार हो, उस की क़ुदरत से येह क्या बईद है जो आस्मान व ज़मीन पैदा करने पर क़ादिर है 47 : मा'दूम करना और मौजूद फ़रमाना 48 : रोज़े क़ियामत 49 : और दौलत मन्दों और बा असर लोगों की इत्तिबाअ़ में उन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया था 50 : कि दीन व ए'तिक़ाद में।

فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا

क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अ़ज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो[51] कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत

اللّٰهُ لَهَدَیْنٰكُمْؕ سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَجَزِعْنَاۤ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِیْصٍ۠ ﴿۲۱﴾

करता तो हम तुम्हें करते[52] हम पर एक सा है चाहे बे क़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं

وَ قَالَ الشَّیْطٰنُ لَمَّا قُضِیَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ

और शैतान कहेगा जब फ़ैसला हो चुकेगा[53] बेशक अल्लाह ने तुम को सच्चा वा'दा दिया था[54] और

وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْؕ وَ مَا كَانَ لِیَ عَلَیْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ

मैं ने जो तुम को वा'दा दिया था[55] वोह मैं ने तुम से झूटा किया और मेरा तुम पर कुछ क़ाबू न था[56] मगर येही कि मैं ने तुम को[57] बुलाया

فَاسْتَجَبْتُمْ لِیْۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِیْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ

तुम ने मेरी मान ली[58] तो अब मुझ पर इल्ज़ाम न रखो[59] ख़ुद अपने ऊपर इल्ज़ाम रखो न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुंच सकूं न

اَنْتُمْ بِمُصْرِخِیَّؕ اِنِّیْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُؕ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ

तुम मेरी फ़रियाद को पहुंच सको वोह जो पहले तुम ने मुझे शरीक ठहराया था[60] मैं उस से सख़्त बेज़ार हूं बेशक ज़ालिमों

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۲۲﴾ وَ اُدْخِلَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह बाग़ों में दाख़िल किये जाएंगे

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْؕ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا

जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें अपने रब के हुक्म से उस में उन के मिलते वक़्त का

51 : येह कलाम उन का तौबीख़ व इनाद के तौर पर होगा कि दुन्या में तुम ने गुमराह किया था और राहे हक़ से रोका था और बढ़ बढ़ कर बातें किया करते थे अब वोह दा'वे क्या हुए अब इस अ़ज़ाब में से ज़रा सा तो टालो ! काफ़िरों के सरदार इस के जवाब में **52 :** जब ख़ुद ही गुमराह हो रहे थे तो तुम्हें क्या राह दिखाते, अब ख़लासी की कोई राह नहीं न काफ़िरों के लिये शफ़ाअ़त । आओ रोएं और फ़रियाद करें, पांच सो बरस फ़रियाद व ज़ारी करेंगे और कुछ काम न आएगी तो कहेंगे कि अब सब्र कर के देखो शायद इस से कुछ काम निकले, पांच सो बरस सब्र करेंगे वोह भी काम न आएगा तो कहेंगे कि **53 :** और हिसाब से फ़रागत हो जाएगी । जन्नती जन्नत का और दोज़ख़ी दोज़ख़ का हुक्म पा कर जन्नत व दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे और दोज़ख़ी शैतान पर मलामत करेंगे और उस को बुरा कहेंगे कि बद नसीब तू ने हमें गुमराह कर के इस मुसीबत में गिरिफ़्तार किया तो वोह जवाब देगा कि **54 :** कि मरने के बा'द फिर उठना है और आख़िरत में नेकियों और बदियों का बदला मिलेगा अल्लाह का वा'दा सच्चा था सच्चा हुवा **55 :** कि न मरने के बा'द उठना, न जज़ा, न जन्नत, न दोज़ख़ **56 :** न मैं ने तुम्हें अपनी इत्तिबाअ़ पर मजबूर किया था या येह कि मैं ने अपने वा'दे पर तुम्हारे सामने कोई हुज्जत व बुरहान पेश नहीं की थी । **57 :** वस्वसे डाल कर गुमराही की तरफ़ **58 :** और बिग़ैर हुज्जत व बुरहान के तुम मेरे बहकाए में आ गए बा वुजूदे कि अल्लाह तआ़ला ने तुम से फ़रमा दिया था कि शैतान के बहकाए में न आना और उस के रसूल उस की तरफ़ से दलाइल ले कर तुम्हारे पास आए और उन्हों ने हुज्जतें पेश कीं और बुरहानें क़ाइम कीं तो तुम पर ख़ुद लाज़िम था कि तुम उन का इत्तिबाअ़ करते और उन के रोशन दलाइल और ज़ाहिर मो'जिज़ात से मुंह न फेरते और मेरी बात न मानते और मेरी तरफ़ इल्तिफ़ात न करते मगर तुम ने ऐसा न किया **59 :** क्यूं कि मैं दुश्मन

سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ

इक्राम सलाम है[61] क्या तुम ने न देखा **अल्लाह** ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की[62] जैसे पाकीज़ा दरख़्त

اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِی السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِیْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِیْنٍۭ بِاِذْنِ

जिस की जड़ क़ाइम और शाख़ें आस्मान में हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के

رَبِّهَا ؕ وَیَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ

हुक्म से[63] और **अल्लाह** लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वोह समझें[64] और गन्दी

كَلِمَةٍ خَبِیْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِیْثَةِ ﹰاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا

बात[65] की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़[66] कि ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया अब उसे

مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ یُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِی الْحَیٰوةِ

कोई क़ियाम नहीं[67] **अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात[68] पर दुन्या की ज़िन्दगी

الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَةِ ۚ وَیُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِیْنَ ۙ۫ وَیَفْعَلُ اللّٰهُ مَا یَشَآءُ ﴿٢٧﴾ ع

में[69] और आख़िरत में[70] और **अल्लाह** ज़ालिमों को गुमराह करता है[71] और **अल्लाह** जो चाहे करे

हूं और मेरी दुश्मनी ज़ाहिर है और दुश्मन से ख़ैर ख़्वाही की उम्मीद रखना ही हमाक़त है तो **60 :** **अल्लाह** का उस की इबादत में (خازن) **61 :** **अल्लाह** तआला की त़रफ़ से और फ़िरिश्तों की त़रफ़ से और आपस में एक दूसरे की त़रफ़ से। **62 :** या'नी कलिमए तौह़ीद की **63 :** ऐसे ही कलिमए ईमान है कि इस की जड़ क़ल्बे मोमिन की ज़मीन में साबित और मज़बूत़ होती है और इस की शाख़ें या'नी अ़मल आस्मान में पहुंचते हैं और इस के समरात बरकत व सवाब हर वक़्त ह़ासिल होते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अस्ह़ाबे किराम से फ़रमाया : वोह दरख़्त बताओ जो मोमिन के मिस्ल है उस के पत्ते नहीं गिरते और वोह हर वक़्त फल देता है (या'नी जिस त़रह़ मोमिन के अ़मल अकारत नहीं होते और उस की बरकतें हर वक़्त ह़ासिल रहती हैं) सह़ाबा ने फ़िक्रें कीं कि ऐसा कौन सा दरख़्त है जिस के पत्ते न गिरते हों और उस का फल हर वक़्त मौजूद रहता है। चुनान्चे जंगल के दरख़्तों के नाम लिये जब ऐसा कोई दरख़्त ख़याल में न आया तो हुज़ूर से दरयाफ़्त किया, फ़रमाया : वोह खजूर का दरख़्त है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से अ़र्ज़ किया कि जब हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया था तो मेरे दिल में आया था कि येह खजूर का दरख़्त है लेकिन बड़े बड़े सह़ाबा तशरीफ़ फ़रमा थे मैं छोटा था इस लिये मैं अदबन ख़ामोश रहा, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि अगर तुम बता देते तो मुझे बहुत ख़ुशी होती। **64 :** और ईमान लाएं क्यूं कि मिसालों से मा'ना अच्छी त़रह़ ख़ात़िर गुज़ीं (ज़ेहन नशीन) हो जाते हैं **65 :** या'नी कुफ़्री कलाम **66 :** मिस्ल इन्दिराइन (एक फल) के जिस का मज़ा कड़वा, बू ना गवार या मिस्ले लहसन के बदबूदार **67 :** क्यूं कि जड़ उस की ज़मीन में साबित व मुस्तह़कम नहीं शाख़ें उस की बुलन्द नहीं होतीं येही ह़ाल है कुफ़्री कलाम का कि उस की कोई अस्ल साबित नहीं और कोई हुज्जत व बुरहान नहीं रखता जिस से इस्तिह़काम (मज़बूत़ी) हो, न उस में कोई ख़ैरो बरकत कि वोह बुलन्दिये क़बूल पर पहुंच सके। **68 :** या'नी कलिमए ईमान **69 :** कि वोह इब्तिला (आज़्माइश) और मुसीबत के वक़्तों में भी साबिर व क़ाइम रहते हैं और राहे ह़क़ व दीने क़वीम से नहीं हटते ह़त्ता कि उन की ह़यात का ख़ातिमा ईमान पर होता है। **70 :** या'नी क़ब्र में कि अव्वल मनाज़िले आख़िरत है, जब मुन्कर नकीर आ कर उन से पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है, तुम्हारा दीन क्या है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ इशारा कर के दरयाफ़्त करते हैं कि इन की निस्बत तू क्या कहता है? तो मोमिन इस मन्ज़िल में ब फ़ज़्ले इलाही साबित रहता है और कह देता है कि मेरा रब **अल्लाह** है, मेरा दीन इस्लाम और येह मेरे नबी हैं मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم, **अल्लाह** के बन्दे और उस के रसूल। फिर उस की क़ब्र वसीअ़ कर दी जाती है और उस में जन्नत की हवाएं और ख़ुश्बूएं आती हैं और वोह मुनव्वर कर दी जाती है और आस्मान से निदा होती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा। **71 :** वोह क़ब्र में मुन्कर नकीर को जवाब सह़ीह़ नहीं दे सकते और हर सुवाल के जवाब में

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ

क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हों ने अल्लाह की ने'मत नाशुक्री से बदल दी[72] और अपनी क़ौम को तबाही के घर

الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوا لِلّٰهِ أَنْدَادًا

ला उतारा वोह जो दोज़ख़ है उस के अन्दर जाएंगे और क्या ही बुरी ठहरने की जगह और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराए[73]

لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ

कि उस की राह से बहकावें तुम फ़रमाओ[74] कुछ बरत लो कि तुम्हारा अन्जाम आग है[75] मेरे उन

لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ

बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और

عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِي

ज़ाहिर ख़र्च करें उस दिन के आने से पहले जिस में न सौदागरी होगी[76] न याराना[77] अल्लाह है जिस

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ

ने आस्मान और ज़मीन बनाए और आस्मान से पानी उतारा तो उस से कुछ फल

الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ

तुम्हारे खाने को पैदा किये और तुम्हारे लिये कश्ती को मुसख़्ख़र किया कि उस के हुक्म से दरिया में चले[78]

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۚ وَ

और तुम्हारे लिये नदियां मुसख़्ख़र कीं[79] और तुम्हारे लिये सूरज और चांद मुसख़्ख़र किये जो बराबर चल रहे हैं[80] और

येही कहते हैं हाए हाए मैं नहीं जानता। आस्मान से निदा होती है मेरा बन्दा झूटा है इस के लिये आग का फ़र्श बिछाओ, दोज़ख़ का लिबास पहनाओ, दोज़ख़ की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो। उस को दोज़ख़ की गरमी और दोज़ख़ की लपट पहुंचती है और क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि एक तरफ़ की पस्लियां दूसरी तरफ़ आ जाती हैं, अज़ाब करने वाले फ़िरिश्ते उस पर मुक़र्रर किये जाते हैं जो उसे लोहे के गुरज़ों से मारते हैं। (اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَثَبَّتَنَا عَلَى الْاِيْمَانِ) **72 :** बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि उन लोगों से मुराद कुफ़्फ़ारे मक्का हैं और वोह ने'मत जिस की शुक्र गुज़ारी उन्हों ने न की वोह अल्लाह के हबीब हैं सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि अल्लाह तआला ने इन के वुजूद से इस उम्मत को नवाज़ा और इन की ज़ियारत सरापा करामत की सआदत से मुशर्रफ़ किया, लाज़िम था कि इस ने'मते जलीला का शुक्र बजा लाते और इन का इत्तिबाअ़ कर के मज़ीद करम के मूरिद (क़ाबिल) होते। बजाए इस के उन्हों ने नाशुक्री की और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इन्कार किया और अपनी क़ौम को जो दीन में उन के मुवाफ़िक़ थे दारुल हलाक (या'नी दोज़ख़) में पहुंचाया। **73 :** या'नी बुतों को उस का शरीक किया **74 :** ऐ मुस्तफ़ा ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इन कुफ़्फ़ार से कि थोड़े दिन दुन्या की ख़्वाहिशात को **75 :** आख़िरत में। **76 :** कि ख़रीदो फ़रोख़्त या'नी माली मुआवज़े और फ़िदये ही से कुछ नफ़्अ़ उठाया जा सके **77 :** कि इस से नफ़्अ़ उठाया जाए बल्कि बहुत से दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे। इस आयत में नफ़्सानी व तब्ई दोस्ती की नफ़ी है और ईमानी दोस्ती जो महब्बते इलाही के सबब से हो वोह बाक़ी रहेगी जैसा कि सूरए ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया : ''اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ''। **78 :** और उस से तुम फ़ाएदा उठाओ **79 :** कि उन से काम लो। **80 :** न थकें न रुकें तुम

سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَ اِنْ

तुम्हारे लिये रात और दिन मुसख़्ख़र किये[81] और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और अगर

تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَ اِذْ

अल्लाह की ने'मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है[82] और याद करो

قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِيْ وَ بَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ

जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर[83] को अमान वाला कर दे[84] और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के

الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ

पूजने से बचा[85] ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये[86] तो जिस ने मेरा साथ दिया[87]

فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَ مَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ اَسْكَنْتُ

वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है[88] ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कुछ औलाद

مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا

एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती तेरे हुरमत वाले घर के पास[89] ऐ हमारे रब इस लिये कि वोह[90]

उन से नफ़्अ़ उठाते हो **81 :** आराम और काम के लिये **82 :** कि कुफ़्र व मा'सियत का इरतिकाब कर के अपने ऊपर ज़ुल्म करता है और अपने रब की ने'मत और उस के एहसान का हक़ नहीं मानता। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि इन्सान से यहां अबू जहल मुराद है। ज़ज्जाज का क़ौल है कि इन्सान इस्मे जिन्स है (या'नी मुसल्मान हो या काफ़िर) और यहां इस से काफ़िर मुराद है। **83 :** मक्कए मुकर्रमा **84 :** कि क़ुर्बे क़ियामत दुन्या के वीरान होने के वक़्त तक येह वीरानी से महफ़ूज़ रहे या इस शहर वाले अम्न में हों। हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई अल्लाह तआ़ला ने मक्कए मुकर्रमा को वीरान होने से अम्न दिया और कोई भी इस के वीरान करने पर क़ादिर न हो सका और इस को अल्लाह तआ़ला ने हरम बनाया कि इस में न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न किसी पर ज़ुल्म किया जाए न वहां शिकार मारा जाए न सब्ज़ा काटा जाए। **85 :** अम्बिया عليهم السلام बुत परस्ती और तमाम गुनाहों से मा'सूम हैं, हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام का येह दुआ़ करना बारगाहे इलाही में तवाज़ोअ़ व इज़्हारे एहतियाज के लिये है कि बा वुजूदे कि तू ने अपने करम से मा'सूम किया लेकिन हम तेरे फ़ज़्लो रहमत की त़रफ़ दस्ते एहतियाज दराज़ रखते हैं। **86 :** या'नी उन की गुमराही का सबब हुए कि वोह उन्हें पूजने लगे **87 :** और मेरे अ़क़ीदे व दीन पर रहा **88 :** चाहे तो उसे हिदायत करे और तौफ़ीक़े तौबा अ़ता फ़रमाए। **89 :** या'नी उस वादी में जहां अब मक्कए मुकर्रमा है। और ज़ुर्रिय्यत से मुराद हज़रते इस्माईल عليه السلام हैं, आप सर ज़मीने शाम में हज़रते हाजिरा के बत़्ने पाक से पैदा हुए, हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والتسليمات की बीबी हज़रते सारह के कोई औलाद न थी इस वज्ह से उन्हें रश्क पैदा हुवा और उन्हों ने हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام से कहा कि आप हाजिरा और इन के बेटे को मेरे पास से जुदा कर दीजिये, हिक्मते इलाही ने येह एक सबब पैदा किया था। चुनान्चे वह्य आई कि आप हज़रते हाजिरा व इस्माईल को उस सर ज़मीन में ले जाएं (जहां अब मक्कए मुकर्रमा है) आप इन दोनों को अपने साथ बुराक़ पर सुवार कर के शाम से सर ज़मीने हरम में लाए और का'बए मुक़द्दसा के नज़्दीक उतारा, यहां उस वक़्त न कोई आबादी थी, न कोई चश्मा, न पानी, एक तोशादान में खजूरें और एक बरतन में पानी उन्हें दे कर आप वापस हुए और मुड़ कर उन की त़रफ़ न देखा, हज़रते हाजिरा वालिदए इस्माईल ने अ़र्ज़ किया कि आप कहां जाते हैं और हमें इस वादी में बे अनीस व रफ़ीक़ (बे यारो मददगार) छोड़े जाते हैं ? लेकिन आप ने इस का कुछ जवाब न दिया और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात (ध्यान) न फ़रमाया। हज़रते हाजिरा ने चन्द मरतबा येही अ़र्ज़ किया और जवाब न पाया तो कहा कि क्या अल्लाह ने आप को इस का हुक्म दिया है ? आप ने फ़रमाया : हां ! उस वक़्त उन्हें इत्मीनान हुवा। हज़रते इब्राहीम عليه السلام चले गए और उन्हों ने बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर येह दुआ़ की जो आयत में मज़्कूर है। हज़रते हाजिरा

الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْۤ اِلَیْهِمْ وَ ارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ

नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल इन की त़रफ़ माइल कर दे[91] और इन्हें कुछ फल खाने को दे[92]

لَعَلَّهُمْ یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِیْ وَ مَا نُعْلِنُ ؕ وَ مَا یَخْفٰی

शायद वोह एह़सान मानें ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते और अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ

कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आस्मान में[93] सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने

وَهَبَ لِیْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾

मुझे बुढ़ापे में इस्माईल व इस्ह़ाक़ दिये बेशक मेरा रब दुआ़ सुनने वाला है

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖۗ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾

ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को[94] ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले

رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾ ع وَ لَا

ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को[95] और सब मुसल्मानों को जिस दिन ह़िसाब क़ाइम होगा और हरगिज़

अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام को दूध पिलाने लगीं, जब वोह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की शिद्दत हुई और साह़िब ज़ादे का ह़ल्क़ शरीफ़ भी प्यास से ख़ुश्क हो गया तो आप पानी की जुस्तजू या आबादी की तलाश में सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ीं, ऐसा सात मरतबा हुवा। यहां तक कि फ़िरिश्ते के पर मारने से या ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام के क़दमे मुबारक से उस ख़ुश्क ज़मीन में एक चश्मा (ज़मज़म) नुमूदार हुवा। आयत में ह़ुरमत वाले घर से बैतुल्लाह मुराद है जो तूफ़ाने नूह़ से पहले का'बए मुक़द्दसा की जगह था और तूफ़ान के वक़्त आस्मान पर उठा लिया गया, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का येह वाक़िआ़ आप के आग में डाले जाने के बा'द हुवा, आग के वाक़िए में आप ने दुआ़ न फ़रमाई थी और इस वाक़िए में दुआ़ की और तज़र्रोअ़ किया (या'नी गिर्या व ज़ारी की)। अल्लाह तआ़ला की कारसाज़ी पर ए'तिमाद कर के दुआ़ न करना भी तवक्कुल और बेहतर है लेकिन मक़ामे दुआ़ इस से भी अफ़्ज़ल है तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات का इस आख़िर वाक़िए में दुआ़ फ़रमाना इस लिये है कि आप मदारिजे कमाल (कमाल के दरजात) में दम बदम तरक़्क़ी पर हैं। **90 :** या'नी ह़ज़रते इस्माईल और इन की औलाद इस वादिये बे ज़राअ़त में तेरे ज़िक्र व इबादत में मश्ग़ूल हों और तेरे बैते ह़राम के पास **91 :** अत़राफ़ व बिलाद से यहां आएं और उन के क़ुलूब इस मकाने त़ाहिर के शौक़े ज़ियारत में खिंचें। इस में ईमानदारों के लिये येह दुआ़ है कि उन्हें बैतुल्लाह का ह़ज मुयस्सर आए और अपनी यहां रहने वाली ज़ुर्रिय्यत (नस्ल) के लिये येह कि वोह ज़ियारत के लिये आने वालों से मुन्तफ़ेअ़ होते रहें, ग़रज़ येह दुआ़ दीनी दुन्यवी बरकात पर मुश्तमिल है। ह़ज़रत की दुआ़ क़बूल हुई और क़बीलए जुरहुम ने इस त़रफ़ से गुज़रते हुए एक परिन्द देखा तो उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि बयाबान में परिन्द कैसा शायद कहीं चश्मा नुमूदार हुवा, जुस्तजू की तो देखा कि ज़मज़म शरीफ़ में पानी है, येह देख कर उन लोगों ने ह़ज़रते हाजिरा से वहां बसने की इजाज़त चाही, उन्हों ने इस शर्त से इजाज़त दी कि पानी में तुम्हारा ह़क़ न होगा, वोह लोग वहां बसे और ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जवान हुए तो उन लोगों ने आप के सलाह़ व तक़्वा को देख कर अपने ख़ानदान में आप की शादी कर दी और ह़ज़रते हाजिरा का विसाल हो गया। इस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ पूरी हुई और आप ने दुआ़ में येह भी फ़रमाया **92 :** इसी का समरा (नतीजा) है कि फ़ुसूले मुख़्तलिफ़ा (मुख़्तलिफ़ मौसिमों) रबीअ़ व ख़रीफ़ व सैफ़ व शिता (बहार व ख़ज़ां, गर्मी व सर्दी) के मेवे वहां बयक वक़्त मौजूद मिलते हैं। **93 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक और फ़रज़न्द की दुआ़ की थी अल्लाह तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई तो आप ने उस का शुक्र अदा किया और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया **94 :** क्यूं कि बा'ज़ की निस्बत तो आप को ब ए'लामे इलाही (रब तआ़ला के आगाह फ़रमा देने से) मा'लूम था कि काफ़िर होंगे, इस लिये बा'ज़ ज़ुर्रिय्यत के वासिते नमाज़ों की पाबन्दी व मुह़ाफ़ज़त की दुआ़ की। **95 :** बशर्ते ईमान या मां बाप से ह़ज़रते आदम व ह़व्वा मुराद हैं।

تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ

अल्लाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से[96] उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये

تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ﴿۴۲﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ

जिस में[97] आंखें खुली की खुली रह जाएंगी बे तहाशा दौड़ते निकलेंगे[98] अपने सर उठाए हुए कि उन की पलक

اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ﴿۴۳﴾ وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ

उन की तरफ़ लौटती नहीं[99] और उन के दिलों में कुछ सकत (ताक़त) न होगी[100] और लोगों को उस दिन से डराओ[101] जब उन पर

الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ

अज़ाब आएगा तो ज़ालिम[102] कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें[103] मोहलत दे कि हम तेरा

دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ

बुलाना मानें[104] और रसूलों की ग़ुलामी करें[105] तो क्या तुम पहले[106] क़सम न खा चुके थे कि हमें दुन्या से कहीं

زَوَالٍ ۙ﴿۴۴﴾ وَّ سَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ

हट कर जाना नहीं[107] और तुम उन के घरों में बसे जिन्हों ने अपना बुरा किया था[108] और तुम पर ख़ूब खुल गया

كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَ قَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ

हम ने उन के साथ कैसा किया[109] और हम ने तुम्हें मिसालें दे दे कर बता दिया[110] और बेशक वोह[111] अपना सा दाउं (फ़रेब) चले[112]

وَ عِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَ اِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا

और उन का दाउं अल्लाह के क़ाबू में है और उन का दाउं कुछ ऐसा न था कि जिस से येह पहाड़ टल जाएं[113] तो हरगिज़

96 : इस में मज़्लूम को तसल्ली दी गई कि अल्लाह तआला ज़ालिम से उस का इन्तिक़ाम लेगा 97 : होल व दहशत से 98 : हज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام की तरफ़ जो उन्हें अर्सए महशर की तरफ़ बुलाएंगे। 99 : कि अपने आप को देख सकें 100 : शिद्दते हैरत व दहशत से। क़तादा ने कहा कि दिल सीनों से निकल कर गलों में आ फंसेंगे न बाहर निकल सकेंगे न अपनी जगह वापस जा सकेंगे। मा'ना येह हैं कि उस दिन की शिद्दते होल व दहशत का येह आ़लम होगा कि सर ऊपर उठे होंगे, आंखें खुली की खुली रह जाएंगी दिल अपनी जगह पर क़रार न पा सकेंगे। 101 : या'नी कुफ़्फ़ार को क़ियामत के दिन का ख़ौफ़ दिलाओ 102 : या'नी काफ़िर 103 : दुन्या में वापस भेज दे और 104 : और तेरी तौहीद पर ईमान लाएं 105 : और हम से जो क़ुसूर हो चुके उस की तलाफ़ी करें, इस पर उन्हें ज़ज्रो तौबीख़ की जाएगी और फ़रमाया जाएगा 106 : दुन्या में 107 : और क्या तुम ने बअ़्स व आख़िरत का इन्कार न किया था 108 : कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के जैसे कि क़ौमे नूह व आ़द व समूद वग़ैरा। 109 : और तुम ने अपनी आंखों से उन की मनाज़िल में अ़ज़ाब के आसार और निशान देखे और तुम्हें उन की हलाकत व बरबादी की ख़बरें मिलीं, येह सब कुछ देख कर और जान कर तुम ने इ़ब्रत न ह़ासिल की और तुम कुफ़्र से बाज़ न आए। 110 : ताकि तुम तदबीर करो और समझो और अ़ज़ाब व हलाक से अपने आप को बचाओ। 111 : इस्लाम के मिटाने और कुफ़्र की ताईद करने के लिये नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ 112 : कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के क़त्ल करने या क़ैद करने या निकाल देने का इरादा किया। 113 : या'नी आयाते इलाही और अह़कामे शरए मुस्तफ़ाई जो अपने क़ुव्वतो सबात में ब मन्ज़िला मज़बूत पहाड़ों के हैं। मुहाल है कि काफ़िरों के मक्र और उन की ह़ीला अंगेज़ियों से अपनी जगह से टल सकें।

تَحۡسَبَنَّ اللّٰهَ مُخۡلِفَ وَعۡدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ ذُو انۡتِقَامٍ ؕ ﴿۴۷﴾

ख़याल न करना कि **अल्लाह** अपने रसूलों से वा'दा ख़िलाफ़ करेगा[114] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला

يَوۡمَ تُبَدَّلُ الۡاَرۡضُ غَيۡرَ الۡاَرۡضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوۡا لِلّٰهِ الۡوَاحِدِ

जिस दिन[115] बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आस्मान[116] और लोग सब निकल खड़े होंगे[117] एक **अल्लाह** के सामने

الۡقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَتَرَى الۡمُجۡرِمِيۡنَ يَوۡمَئِذٍ مُّقَرَّنِيۡنَ فِى الۡاَصۡفَادِ ۚ ﴿۴۹﴾

जो सब पर ग़ालिब है और उस दिन तुम मुजरिमों[118] को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे[119]

سَرَابِيۡلُهُمۡ مِّنۡ قَطِرَانٍ وَّتَغۡشٰى وُجُوۡهَهُمُ النَّارُ ۙ ﴿۵۰﴾ لِيَجۡزِىَ اللّٰهُ كُلَّ

उन के कुरते राल के होंगे[120] और उन के चेहरे आग ढांप लेगी इस लिये कि **अल्लाह** हर जान को

نَفۡسٍ مَّا كَسَبَتۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيۡعُ الۡحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ

उस की कमाई का बदला दे बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती येह[121] लोगों को हुक्म पहुंचाना है और

لِيُنۡذَرُوۡا بِهٖ وَلِيَعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ﴿۵۲﴾

इस लिये कि वोह इस से डराए जाएं और इस लिये कि वोह जान लें कि वोह एक ही मा'बूद है[122] और इस लिये कि अक़्ल वाले नसीहत मानें

اٰياتها ٩٩ ﴿١٥ سُوۡرَةُ الۡحِجۡرِ مَكِّيَّةٌ ٥٤﴾ رُكوعاتها ٦

सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में निनानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला[1]

الۤرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ وَقُرۡاٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱﴾

येह आयतें हैं किताब और रोशन क़ुरआन की

114 : येह तो मुम्किन ही नहीं वोह ज़रूर वा'दा पूरा करेगा और अपने रसूल की नुसरत फ़रमाएगा, इन के दीन को ग़ालिब करेगा, इन के दुश्मनों को हलाक करेगा **115 :** इस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **116 :** ज़मीन व आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो क़ौल हैं **: एक** येह कि इन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे मसलन ज़मीन एक सत्ह़ हो जाएगी न इस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे न बुलन्द टीले न गहरे ग़ार न दरख़्त न इमारत न किसी बस्ती और इक़्लीम का निशान और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़्ताब, माहताब की रोशनियां मा'दूम होंगी, येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं। **दूसरा** क़ौल येह है कि आस्मान व ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी, इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी, सफ़ेद व साफ़ जिस पर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आस्मान सोने का होगा। येह दो क़ौल अगर्चे ब ज़ाहिर बाहम मुख़ालिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सहीह़ है और वज्हे जम्अ़ येह है कि अव्वल तब्दीले सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'दे हिसाब तब्दीले सानी होगी इस में ज़मीन व आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी। **117 :** अपनी क़ब्रों से **118 :** या'नी काफ़िरों **119 :** अपने शयातीन के साथ बंधे हुए **120 :** सियाह रंग बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं। (مدارک وخازن)

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا

बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर[2] काश मुसलमान होते उन्हें छोड़ो[3] कि खाएं और बरतें[4]

وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا

और उम्मीद[5] उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं[6] और जो बस्ती हम ने हलाक की उस का एक

كِتَابٌ مَعْلُومٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾ وَ

जाना हुवा नविश्ता (लिखा हुवा फ़ैसला) था[7] कोई गुरौह अपने वा'दे से न आगे बढ़े न पीछे हटे और

قَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾ لَوْ مَا تَأْتِينَا

बोले[8] कि ऐ वोह जिन पर क़ुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो[9] हमारे पास फ़िरिश्ते क्यूं

بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ

नहीं लाते[10] अगर तुम सच्चे हो[11] हम फ़िरिश्ते बेकार नहीं उतारते

وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ

और वोह उतरें तो उन्हें मोहलत न मिले[12] बेशक हम ने उतारा है येह क़ुरआन और बेशक हम ख़ुद

لَحَافِظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا

इस के निगहबान हैं[13] और बेशक हम ने तुम से पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे और

तफ़्सीरे बैज़ावी में है कि उन के बदनों पर राल (एक ख़ास गोंद) लेप दी जाएगी वोह मिस्ल कुरते के हो जाएगी उस की सोज़िश और उस के रंग की वहशत व बदबू से तक्लीफ़ पाएंगे। **121 :** क़ुरआन शरीफ़ **122 :** या'नी इन आयात से **अल्लाह** तआला की तौहीद की दलीलें पाएं। **1 :** सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ निनानवे आयतें, छ[6] सो चव्वन कलिमे, दो हज़ार सात सो साठ हर्फ़ हैं। **2 :** येह आरज़ूएं या वक़्ते नज़्अ अ़ज़ाब देख कर होंगी जब काफ़िर को मा'लूम हो जाएगा कि वोह गुमराही में था या आख़िरत में रोज़े क़ियामत के शदाइद और अहवाल और अपना अन्जाम व मआल देख कर। ज़ुज्जाज का क़ौल है कि काफ़िर जब कभी अपने अहवाल, अ़ज़ाब और मुसल्मानों पर **अल्लाह** की रह़मत देखेंगे हर मरतबा आरज़ूएं करेंगे कि **3 :** ऐ मुस्तफ़ा ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **4 :** दुन्या की लज़्ज़तें **5 :** तनअ़ुम व तलज़्ज़ुज़ (ऐशो लज़्ज़त) व तूले ह़यात की जिस के सबब वोह ईमान से मह़रूम हैं। **6 :** अपना अन्जामे कार, इस में तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार होना और लज़्ज़ाते दुन्या की त़लब में ग़र्क़ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ़ ह़क़ से रोकता है। **7 :** लौहे मह़फ़ूज़ में इसी मुअ़य्यन वक़्त पर वोह हलाक हुई। **8 :** कुफ़्फ़ारे मक्का ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से **9 :** उन का येह क़ौल तमस्ख़ुर और इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़) के त़ौर पर था जैसा कि फ़िरऔ़न ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत कहा था : ''اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِىْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ'' । **10 :** जो तुम्हारे रसूल होने और क़ुरआन शरीफ़ के किताबे इलाही होने की गवाही दें **11 : अल्लाह** तआला इस के जवाब में फ़रमाता है **12 :** फ़िलहाल अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दिये जाएं। **13 :** कि तह़रीफ़ व तब्दील व ज़ियादती व कमी से इस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते हैं, तमाम जिन्नो इन्स और सारी ख़ल्क़ के मक़्दूर (बस) में नहीं है कि इस में एक ह़र्फ़ की कमी बेशी करे या तग़य्युर व तब्दील कर सके और चूंकि **अल्लाह** तआला ने क़ुरआने करीम की ह़िफ़ाज़त का वा'दा फ़रमाया है इस लिये येह ख़ुसूसिय्यत सिर्फ़ क़ुरआन शरीफ़ ही की है दूसरी किसी किताब को येह बात मुयस्सर नहीं। येह ह़िफ़ाज़त कई त़रह़ पर है एक येह कि क़ुरआने करीम को मो'जिज़ा बनाया कि बशर का कलाम इस में मिल ही न सके, एक येह कि इस को मुआ़रज़े और मुक़ाबले से मह़फ़ूज़ किया कि कोई इस की मिस्ल कलाम बनाने पर क़ादिर न हो, एक येह कि सारी ख़ल्क़ को इस के नेस्तो

يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ

उन के पास कोई रसूल नहीं आता मगर उस से हंसी करते हैं[14] ऐसे ही हम उस हंसी को उन

قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣

मुजरिमों[15] के दिलों में राह देते हैं वोह इस पर[16] ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है[17]

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤ لَقَالُوْٓا

और अगर हम उन के लिये आस्मान में कोई दरवाज़ा खोल दें कि दिन को उस में चढ़ते जब भी येही

اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥ وَلَقَدْ جَعَلْنَا

कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई है बल्कि हम पर जादू हुवा[18] और बेशक हम ने

فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٦ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

आस्मान में बुर्ज बनाए[19] और उसे देखने वालों के लिये आरास्ता किया[20] और उसे हम ने हर शैतान

رَّجِيْمٍ ۝١٧ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝١٨ وَ

मरदूद से महफ़ूज़ रखा[21] मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उस के पीछे पड़ता है रोशन शो'ला[22] और

الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हम ने ज़मीन फैलाई और इस में लंगर डाले[23] और इस में हर चीज़ अन्दाज़े

नाबूद और मा'दूम करने से आ़जिज़ कर दिया कि कुफ़्फ़ार बा वुजूद कमाले अ़दावत के इस किताबे मुक़द्दस को मा'दूम करने से आ़जिज़ हैं। **14 :** इस आयत में बताया गया कि जिस त़रह़ कुफ़्फ़ारे मक्का ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जाहिलाना बातें कीं और बे अदबी से आप को मजनून कहा, क़दीम ज़माने से कुफ़्फ़ार की अम्बिया के साथ येही आ़दत रही है और वोह रसूलों के साथ तमस्ख़ुर करते रहे। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर (तसल्ली व दिलजूई) है। **15 :** या'नी मुश्रिकीने मक्का **16 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या कुरआन पर **17 :** कि वोह अम्बिया की तक्ज़ीब कर के अ़ज़ाबे इलाही से हलाक होते रहे हैं, येही ह़ाल इन का है तो इन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डरते रहना चाहिये। **18 :** या'नी इन कुफ़्फ़ार का इनाद इस दरजे पर पहुंच गया है कि अगर इन के लिये आस्मान में दरवाज़ा खोल दिया जाए और इन्हें उस में चढ़ना मुयस्सर हो और दिन में उस से गुज़रें और आंखों से देखें जब भी न मानें और येह कह दें कि हमारी नज़र बन्दी की गई और हम पर जादू हुवा, तो जब ख़ुद अपने मुआ़यने से उन्हें यक़ीन ह़ासिल न हुवा तो मलाएका के आने और गवाही देने से जिस को येह त़लब करते हैं उन्हें क्या फ़ाएदा होगा। **19 :** जो कवाकिब सय्यारा के मनाज़िल हैं, वोह बारह हैं : 1ह़मल, 2सौर, 3जौज़ा, 4सरत़ान, 5असद, 6सुम्बुला, 7मीज़ान, 8अ़क्रब, 9क़ौस, 10जद्य, 11दल्व, 12हूत। **20 :** सितारों से **21 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : शयात़ीन आस्मानों में दाख़िल होते थे और वहां की ख़बरें काहिनों के पास लाते थे जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुए तो शयात़ीन तीन आस्मानों से रोक दिये गए। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादत हुई तो तमाम आस्मानों से मन्अ़ कर दिये गए। **22 :** शिहाब उस सितारे को कहते हैं जो शो'ले के मिस्ल रोशन होता है और फ़िरिश्ते उस से शयात़ीन को मारते हैं। **23 :** पहाड़ों के ताकि साबित व क़ाइम रहे और जुम्बिश न करे।

مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَ

से उगाई और तुम्हारे लिये इस में रोज़ियां कर दीं[24] और वोह कर दिये जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते[25] और

اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآىِٕنُهٗ ۫ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾

कोई चीज़ नहीं जिस के हमारे पास ख़ज़ाने न हों[26] और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मा'लूम अन्दाज़े से

وَاَرْسَلْنَا الرِّیٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَیْنٰكُمُوْهُ ۚ

और हम ने हवाएं भेजीं बादलों को बार वर करने वालियां[27] तो हम ने आस्मान से पानी उतारा फिर वोह तुम्हें पीने को दिया

وَمَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِیْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْیٖ وَنُمِیْتُ وَنَحْنُ

और तुम कुछ उस के ख़ज़ान्ची नहीं[28] और बेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम

الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِیْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

ही वारिस हैं[29] और बेशक हमें मा'लूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और बेशक हमें मा'लूम हैं

الْمُسْتَاْخِرِیْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ یَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ﴿٢٥﴾ ع

जो तुम में पीछे रहे[30] और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़ियामत में उठाएगा[31] बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾ ۚ وَالْجَآنَّ

और बेशक हम ने आदमी को[32] बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बूदार गारा थी[33] और जिन्न को

24 : ग़ल्ले फल वग़ैरा। **25 :** बांदी गुलाम चौपाए और ख़ुद्दाम वग़ैरा। **26 :** ख़ज़ाने होना इबारत है इक़्तिदार व इख़्तियार से मा'ना येह हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर क़ादिर हैं जितनी चाहें और जो अन्दाज़ा मुक़्तज़ाए हिक्मत हो। **27 :** जो आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं। **28 :** कि पानी तुम्हारे इख़्तियार में हो बा वुजूदे कि तुम्हें इस की हाजत है। इस में **अल्लाह** तआला की क़ुदरत और बन्दों के इज्ज़ पर दलालते अज़ीमा है। **29 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ फ़ना होने वाली है और हम ही बाक़ी रहने वाले हैं और मुद्दइये मुल्क की मिल्क ज़ाएअ हो जाएगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा। **30 :** या'नी पहली उम्मतें और उम्मते मुहम्मदिय्यह जो सब उम्मतों में पिछली है या वोह जो ताअत व ख़ैर में सब्क़त करने वाले हैं और जो सुस्ती से पीछे रह जाने वाले हैं या वोह जो फ़ज़ीलत हासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और जो उज़्र से पीछे रह जाने वाले हैं। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने जमाअते नमाज़ की सफ़े अव्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए तो सहाबा सफ़े अव्वल हासिल करने में निहायत कोशां हुए और उन का इज़्दिहाम होने लगा और जिन हज़रात के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकान बेच कर क़रीब मकान ख़रीदने पर आमादा हो गए ताकि सफ़े अव्वल में जगह मिलने से कभी महरूम न हों, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब निय्यतों पर है और **अल्लाह** तआला अगलों को भी जानता है और जो उज़्र से पीछे रह गए हैं उन को भी जानता है और उन की निय्यतों से भी ख़बरदार है और उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। **31 :** जिस हाल पर वोह मरे होंगे। **32 :** या'नी हज़रते आदम علیہ السلام को सूखी **33 : अल्लाह** तआला ने जब हज़रते आदम علیہ السلام के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ज़मीन से एक मुश्त ख़ाक ली उस को पानी में ख़मीर किया जब वोह गारा सियाह हो गया और उस में बू पैदा हुई तो उस में सूरते इन्सानी बनाई, फिर वोह सूख कर ख़ुश्क हो गया तो जब हवा उस में जाती तो वोह बजता और उस में आवाज़ पैदा होती जब आफ़्ताब की तमाज़त (गरमी) से वोह पुख़्ता हो गया तो उस में रूह फूंकी और वोह इन्सान हो गया।

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ

इस से पहले बनाया बे धूएं की आग से[34] और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾ فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ

आदमी को बनाने वाला हूं बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है तो जब मैं उसे ठीक कर लूं और उस में

فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ﴿٢٩﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ

अपनी त़रफ़ की ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ रूह़ फूंक लूं[35] तो उस[36] के लिये सज्दे में गिर पड़ना तो जितने फ़िरिश्ते थे सब के सब

اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰۤى اَنْ یَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ

सज्दे में गिरे सिवा इब्लीस के उस ने सज्दे वालों का साथ न माना[37] फ़रमाया

یٰۤاِبْلِیْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ

ऐ इब्लीस तुझे क्या हुवा कि सज्दा करने वालों से अलग रहा बोला मुझे ज़ैबा नहीं कि बशर को

لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا

सज्दा करूं जिसे तू ने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा

فَاِنَّكَ رَجِیْمٌ ﴿٣٤﴾ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى یَوْمِ الدِّیْنِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ

कि तू मरदूद है और बेशक क़ियामत तक तुझ पर ला'नत है[38] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿٣٧﴾ اِلٰى

तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[39] फ़रमाया तू उन में है जिन को उस मा'लूम

یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغْوَیْتَنِیْ لَاُزَیِّنَنَّ لَهُمْ فِی

वक़्त के दिन तक मोहलत है[40] बोला ऐ रब मेरे क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन

34 : जो अपनी ह़रारत व लत़ाफ़त से मसामों में नुफ़ूज़ (सरायत) कर जाती है। **35 :** और उस को ह़यात अ़ता फ़रमा दूं **36 :** की तह़िय्यत व ता'ज़ीम **37 :** और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सज्दा न किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने **38 :** कि आस्मान व ज़मीन वाले तुझ पर ला'नत करेंगे और जब क़ियामत का दिन आएगा तो इस ला'नत के साथ हमेशगी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी, येह सुन कर शैत़ान **39 :** या'नी क़ियामत के दिन तक। इस से शैत़ान का मत़लब येह था कि वोह कभी न मरे क्यूं कि क़ियामत के बा'द कोई न मरेगा और क़ियामत तक की इस ने मोहलत मांग ही ली लेकिन इस की इस दुआ़ को **अल्लाह** तआ़ला ने इस त़रह़ क़बूल किया कि **40 :** जिस में तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी और वोह नफ़्ख़ए ऊला (पहली मरतबा फूंका जाने वाला सूर) है तो शैत़ान के मुर्दा रहने की मुद्दत नफ़्ख़ए ऊला से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरे सूर फूंकने) तक चालीस बरस है और इस को इस क़दर मोहलत देना इस के इक्राम के लिये नहीं बल्कि इस की बला व शक़ावत और अ़ज़ाब की ज़ियादती के लिये है, येह सुन कर शैत़ान।

الۡاَرۡضِ وَلَاُغۡوِيَنَّهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۴۰﴾

में भुलावे दूंगा[41] और ज़रूर मैं उन सब को[42] बे राह कर दूंगा मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं[43]

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَىَّ مُسۡتَقِيۡمٌ ﴿۴۱﴾ اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ

फ़रमाया येह रास्ता सीधा मेरी त़रफ़ आता है बेशक मेरे[44] बन्दों पर तेरा कुछ

سُلۡطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡغٰوِيۡنَ ﴿۴۲﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوۡعِدُهُمۡ

क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें[45] और बेशक जहन्नम उन सब का

اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۴۳﴾ لَهَا سَبۡعَةُ اَبۡوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنۡهُمۡ جُزۡءٌ مَّقۡسُوۡمٌ ﴿۴۴﴾

वा'दा है[46] इस के सात दरवाज़े हैं[47] हर दरवाज़े के लिये उन में से एक हि़स्सा बटा हुवा है[48]

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿۴۵﴾ اُدۡخُلُوۡهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيۡنَ ﴿۴۶﴾ وَ

बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में हैं[49] उन में दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में[50] और

نَزَعۡنَا مَا فِىۡ صُدُوۡرِهِمۡ مِّنۡ غِلٍّ اِخۡوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيۡنَ ﴿۴۷﴾ لَا

हम ने उन के सीनों में जो कुछ[51] कीने थे सब खींच लिये[52] आपस में भाई हैं[53] तख़्तों पर रू बरू बैठे न

يَمَسُّهُمۡ فِيۡهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمۡ مِّنۡهَا بِمُخۡرَجِيۡنَ ﴿۴۸﴾ نَبِّئۡ عِبَادِىۡۤ اَنِّىۡۤ اَنَا

उन्हें उस में कुछ तक्लीफ़ पहुंचे न वोह उस में से निकाले जाएं ख़बर दो[54] मेरे बन्दों को कि बेशक

الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ﴿۴۹﴾ وَاَنَّ عَذَابِىۡ هُوَ الۡعَذَابُ الۡاَلِيۡمُ ﴿۵۰﴾ وَنَبِّئۡهُمۡ عَنۡ

मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन्हें अह़वाल सुनाओ

41 : या'नी दुन्या में गुनाहों की रग़बत दिलाऊंगा **42 :** दिलों में वस्वसा डाल कर **43 :** जिन्हें तू ने अपनी तौह़ीद व इ़बादत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमा लिया उन पर शैत़ान का वस्वसा और उस का कैद (धोका) न चलेगा। **44 :** ईमानदार **45 :** या'नी जो काफ़िर कि तेरे मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार हो जाएं और तेरे इत्तिबाअ़ का क़स्द कर लें। **46 :** इब्लीस का भी और उस के इत्तिबाअ़ करने वालों का भी। **47 :** या'नी सात त़बक़े। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि दोज़ख़ के सात दरकात (त़बक़ात) हैं : अव्वल [1]जहन्नम, [2]लज़ा, [3]हु़त़मह, [4]सईर, [5]सक़र, [6]जह़ीम, [7]हावियह। **48 :** या'नी शैत़ान की पैरवी करने वाले भी सात हि़स्सों में मुन्क़सिम हैं इन में से हर एक के लिये जहन्नम का एक दरका (त़बक़ा) मुअ़य्यन है। **49 :** उन से कहा जाएगा कि **50 :** या'नी जन्नत में दाख़िल हो अम्नो सलामती के साथ न यहां से निकाले जाओ न मौत आए न कोई आफ़त रूनुमा हो न कोई ख़ौफ़ न परेशानी। **51 :** दुन्या में **52 :** और उन के नुफ़ूस को हि़क़्दो ह़सद व इनादो अ़दावत वग़ैरा मज़्मूम ख़स्लतों से पाक कर दिया वोह **53 :** एक दूसरे के साथ मह़ब्बत करने वाले ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उ़स्मान और त़ल्ह़ा और ज़ुबैर इन ही में से हैं या'नी हमारे सीनों से इनादो अ़दावत और बुग़्ज़ो ह़सद निकाल दिया गया है, हम आपस में ख़ालिस मह़ब्बत रखने वाले हैं। इस में रवाफ़िज़ का रद है। **54 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم।

ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۵۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ

इब्राहीम के मेहमानों का[55] जब वोह उस के पास आए तो बोले सलाम[56] कहा हमें तुम से

وَجِلُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿۵۳﴾ قَالَ

डर मा'लूम होता है[57] उन्हों ने कहा डरिये नहीं हम आप को एक इल्म वाले लड़के की बिशारत देते हैं[58] कहा

اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰۤى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿۵۴﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

क्या इस पर मुझे बिशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बिशारत देते हो[59] कहा हम ने आप को सच्ची

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ

बिशारत दी है[60] आप ना उम्मीद न हों कहा अपने रब की रह़मत से कौन ना उम्मीद हो

اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿۵۶﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ

मगर वोही जो गुमराह हुए[61] कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़िरिश्तो[62] बोले हम

اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۵۸﴾ اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ

एक मुजरिम क़ौम की त़रफ़ भेजे गए हैं[63] मगर लूत़ के घर वाले उन सब को हम

اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۹﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ

बचा लेंगे[64] मगर उस की औ़रत हम ठहरा चुके हैं कि वोह पीछे रह जाने वालों में है[65] तो जब

اٰلَ لُوْطِ ﹰالْمُرْسَلُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾ قَالُوْا بَلْ

लूत़ के घर फ़िरिश्ते आए[66] कहा तुम तो कुछ बेगाना लोग हो[67] कहा बल्कि

55 : जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इस लिये भेजा था कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़रज़न्द की बिशारत दें और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम को हलाक करें। येह मेहमान ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام थे मअ़ कई फ़िरिश्तों के। 56 : या'नी फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को सलाम किया और आप की तह़िय्यतो तक्रीम बजा लाए तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से 57 : इस लिये कि बे इज़्न और बे वक़्त आए और खाना नहीं खाया। 58 : या'नी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की, इस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने 59 : या'नी ऐसी पीराना साली (बुढ़ापे) में औलाद होना अ़जीबो ग़रीब है किस त़रह़ औलाद होगी, क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी ह़ालत में बेटा अ़त़ा फ़रमाया जाएगा ? फ़िरिश्तों ने 60 : क़ज़ाए इलाही इस पर जारी हो चुकी कि आप के बेटा हो और उस की ज़ुर्रिय्यत बहुत फैले 61 : या'नी मैं उस की रह़मत से ना उम्मीद नहीं क्यूं कि रह़मत से ना उम्मीद काफ़िर होते हैं, हां उस की सुन्नत जो आ़लम में जारी है उस से येह बात अ़जीब मा'लूम हुई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरिश्तों से 62 : या'नी इस बिशारत के सिवा और क्या काम है जिस के लिये तुम भेजे गए हो। 63 : या'नी क़ौमे लूत़ की त़रफ़ कि हम उन्हें हलाक करें 64 : क्यूं कि वोह ईमानदार हैं 65 : अपने कुफ़्र के सबब। 66 : ख़ूब सूरत नौ जवानों की शक्ल में और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को अन्देशा हुवा कि क़ौम इन के दरपै होगी तो आप ने फ़िरिश्तों से 67 : न तो यहां के बाशिन्दे हो न कोई मुसाफ़रत की अ़लामत तुम में पाई जाती है क्यूं आए हो ? फ़िरिश्तों ने।

جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿۶۳﴾ وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اِنَّا

हम तो आप के पास वोह[68] लाए हैं जिस में येह लोग शक करते थे[69] और हम आप के पास सच्चा हुक्म लाए हैं और हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَ اتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَ لَا

बेशक सच्चे हैं तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे ले कर बाहर जाइये और आप उन के पीछे चलिये और

يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّ امْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ قَضَيْنَاۤ اِلَيْهِ ذٰلِكَ

तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे[70] और जहां को हुक्म है सीधे चले जाइये[71] और हम ने उसे उस

الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰۤؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۶۶﴾ وَ جَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ

हुक्म का फ़ैसला सुना दिया कि सुब्ह होते इन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी[72] और शह्र वाले[73]

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۶۷﴾ قَالَ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿۶۸﴾ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ

ख़ुशियां मनाते आए लूत़ ने कहा येह मेरे मेहमान हैं[74] मुझे फ़ज़ीह़त न करो[75] और अल्लाह से डरो

وَ لَا تُخْزُوْنِ ﴿۶۹﴾ قَالُوْۤا اَوَ لَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ هٰۤؤُلَآءِ

और मुझे रुस्वा न करो[76] बोले क्या हम ने तुम्हें मन्अ़ न किया था कि औरों के मुआ़मले में दख़्ल न दो कहा येह क़ौम की औ़रतें

بَنٰتِیْۤ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿۷۱﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۷۲﴾

मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है[77] ऐ मह़बूब तुम्हारी जान की क़सम[78] बेशक वोह अपने नशे में भटक रहे हैं

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا

तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया[79] तो हम ने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उस के नीचे का हिस्सा कर दिया[80]

68 : अ़ज़ाब जिस के नाज़िल होने का आप अपनी क़ौम को ख़ौफ़ दिलाया करते थे **69 :** और आप को झुटलाते थे। **70 :** कि क़ौम पर क्या बला नाज़िल हुई और वोह किस अ़ज़ाब में मुब्तला किये गए। **71 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि हुक्म मुल्के शाम को जाने का था। **72 :** और तमाम क़ौम अ़ज़ाब से हलाक कर दी जाएगी। **73 :** या'नी शह्र सदूम के रहने वाले। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम के लोग ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के यहां ख़ूब सूरत नौ जवानों के आने की ख़बर सुन कर ब इरादए फ़ासिद व ब निय्यते नापाक **74 :** और मेहमान का इक्राम लाज़िम होता है, तुम इन की बे हुरमती का क़स्द कर के **75 :** कि मेहमान की रुस्वाई मेज़बान के लिये ख़जालत व शरमिन्दगी का सबब होती है। **76 :** इन के साथ बुरा इरादा कर के, इस पर क़ौम के लोग ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से **77 :** तो इन से निकाह़ करो और ह़राम से बाज़ रहो। अब अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से ख़ित़ाब फ़रमाता है **78 :** और मख़्लूक़े इलाही में से कोई जान बारगाहे इलाही में आप की जाने पाक की त़रह़ इ़ज़्ज़तो हुरमत नहीं रखती और अल्लाह तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उ़म्र के सिवा किसी की उ़म्र व ह़यात की क़सम नहीं फ़रमाई, येह मर्तबा सिर्फ़ हुज़ूर ही का है। अब इस क़सम के बा'द इर्शाद फ़रमाता है **79 :** या'नी होलनाक आवाज़ ने। **80 :** इस त़रह़ कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام उस ख़ित़्ते को उठा कर आस्मान के क़रीब ले गए और वहां से औंधा कर के ज़मीन पर डाल दिया।

عَلَيۡهِمۡ حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلۡمُتَوَسِّمِيۡنَ ﴿٧٥﴾

और उन पर कंकर के पथ्थर बरसाए बेशक इस में निशानियां हैं फ़िरासत वालों के लिये

وَ اِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ مُّقِيۡمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٧٧﴾ وَ اِنۡ كَانَ

और बेशक वोह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चलती है[81] बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को और बेशक

اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ﴿٧٨﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ ۘ وَ اِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ

झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे[82] तो हम ने उन से बदला लिया[83] और बेशक येह दोनों बस्तियां[84]

مُّبِيۡنٍ ﴿٧٩﴾ وَ لَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٨٠﴾ وَ اٰتَيۡنٰهُمۡ

खुले रास्ते पर पड़ती हैं[85] और बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुटलाया[86] और हम ने उन को

اٰيٰتِنَا فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿٨١﴾ وَ كَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا

अपनी निशानियां दीं[87] तो वोह उन से मुंह फेरे रहे[88] और वोह पहाड़ों में घर तराशते थे

اٰمِنِيۡنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ﴿٨٣﴾ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا

बे ख़ौफ़[89] तो उन्हें सुब्ह होते चिंघाड़ ने आ लिया[90] तो उन की कमाई कुछ

كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿٨٤﴾ وَ مَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ وَ مَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا

उन के काम न आई[91] और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है

بِالۡحَقِّ ؕ وَ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ الۡجَمِيۡلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ

अ़बस (बेकार) न बनाया और बेशक क़ियामत आने वाली है[92] तो तुम अच्छी त़रह़ दर गुज़र करो[93] बेशक तुम्हारा रब

81 : और क़ाफ़िले उस पर गुज़रते हैं और ग़ज़बे इलाही के आसार उन के देखने में आते हैं। **82 :** या'नी काफ़िर थे। "اَيۡكَة" झाड़ी को कहते हैं, उन लोगों का शह्‌र सर सब्ज़ जंगलों और मर्ग़ज़ारों (सब्ज़ा ज़ारों) के दरमियान था अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيۡهِ السَّلَام को उन पर रसूल बना कर भेजा, उन लोगों ने ना फ़रमानी की और ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيۡهِ السَّلَام को झुटलाया। **83 :** या'नी अ़ज़ाब भेज कर हलाक किया। **84 :** या'नी क़ौमे लूत़ के शह्‌र और अस्ह़ाबे ऐका के **85 :** जहां आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं, तो ऐ अहले मक्का तुम इन को देख कर क्यूं इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **86 :** "हिज्र" एक वादी है मदीने और शाम के दरमियान जिस में क़ौमे समूद रहते थे, उन्हों ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते सालेह़ عَلَيۡهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और एक नबी की तक्ज़ीब तमाम अम्बिया की तक्ज़ीब है क्यूं कि हर रसूल तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देता है। **87 :** कि पथ्थर से नाक़ा (ऊंटनी को) पैदा किया जो बहुत से अ़जाइब पर मुश्तमिल था, मसलन उस का अ़ज़ीमुल जुस्सा (क़दो क़ामत का बड़ा) होना और पैदा होते ही बच्चा जनना और कसरत से दूध देना कि तमाम क़ौमे समूद को काफ़ी हो वग़ैरा, येह सब ह़ज़रते सालेह़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात और क़ौमे समूद के लिये हमारी निशानियां थीं **88 :** और ईमान न लाए। **89 :** कि उन्हें उस के गिरने और उस में नक़्ब लगाए जाने का अन्देशा न था और वोह समझते थे कि येह घर तबाह नहीं हो सकते इन पर कोई आफ़त नहीं आ सकती। **90 :** और वोह अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। **91 :** और उन के मालो मताअ़ और उन के मज़बूत़ मकान उन्हें अ़ज़ाब से न बचा सके। **92 :** और हर एक को उस के अ़मल की जज़ा मिलेगी। **93 :** ऐ मुस्तफ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم और अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर तह़म्मुल करो। येह हुक्म आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गया।

هُوَ الۡخَلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنٰكَ سَبۡعًا مِّنَ الۡمَثَانِيۡ وَالۡقُرۡاٰنَ

ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है[94] और बेशक हम ने तुम को सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं[95] और अ़ज़्मत

الۡعَظِيۡمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيۡنَيۡكَ اِلٰى مَا مَتَّعۡنَا بِهٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡهُمۡ وَلَا

वाला कुरआन अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने उन के कुछ जोड़ों को बरत्ने को दी[96] और

تَحۡزَنۡ عَلَيۡهِمۡ وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلۡ اِنِّيۡۤ اَنَا

उन का कुछ ग़म न खाओ[97] और मुसल्मानों को अपने रह़मत के परों में ले लो[98] और फ़रमाओ कि मैं ही हूं

النَّذِيۡرُ الۡمُبِيۡنُ ﴿٨٩﴾ كَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَى الۡمُقۡتَسِمِيۡنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيۡنَ جَعَلُوا

साफ़ डर सुनाने वाला (उस अ़ज़ाब से) जैसा हम ने बांटने वालों पर उतारा जिन्हों ने कलामे इलाही को

الۡقُرۡاٰنَ عِضِيۡنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسۡـَٔلَنَّهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوۡا

तिक्के बोटी कर लिया[99] तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे[100] जो कुछ वोह

يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٩٣﴾ فَاصۡدَعۡ بِمَا تُؤۡمَرُ وَاَعۡرِضۡ عَنِ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا

करते थे[101] तो अ़लानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है[102] और मुश्रिकों से मुंह फेर लो[103] बेशक

94 : उसी ने सब को पैदा किया और वोह अपनी मख़्लूक़ के तमाम ह़ाल जानता है। **95 :** नमाज़ की रक्अ़तों में या'नी हर रक्अ़त में पढ़ी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरते फ़ातिह़ा मुराद है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में वारिद हुवा। **96 :** मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हम ने आप को ऐसी ने'मतें अ़ता फ़रमाईं जिन के सामने दुन्यवी ने'मतें ह़क़ीर हैं तो आप मताए़ दुन्या से मुस्तग़्नी रहें जो यहूदो नसारा वग़ैरा मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को दी गईं। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो कुरआन की बदौलत हर चीज़ से मुस्तग़्नी न हो गया या'नी कुरआन ऐसी ने'मत है जिस के सामने दुन्यवी ने'मतें हेच हैं। **97 :** कि वोह ईमान न लाए **98 :** और उन्हें अपने करम से नवाज़ो **99 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बांटने वालों से यहूदो नसारा मुराद हैं, चूंकि वोह कुरआने करीम के कुछ हिस्से पर ईमान लाए जो उन के ख़याल में उन की किताबों के मुवाफ़िक़ था और कुछ के मुन्किर हो गए। क़तादा व इब्ने साइब का क़ौल है कि बांटने वालों से कुफ़्फ़ारे कुरैश मुराद हैं जिन में बा'ज़ कुरआन को सेह़र बा'ज़ कहानत बा'ज़ अफ़्साना कहते थे। इस त़रह़ उन्हों ने कुरआने करीम के ह़क़ में अपने अक़्वाल तक़्सीम कर रखे थे और एक क़ौल येह है कि बांटने वालों से वोह बारह अश्ख़ास मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा के रास्तों पर मुक़र्रर किया था, ह़ज के ज़माने में हर हर रास्ते पर उन में का एक एक शख़्स बैठ जाता था और वोह आने वालों को बहकाने और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुन्ह़रिफ़ करने के लिये एक एक बात मुक़र्रर कर लेता था कि कोई आने वालों से येह कहता था कि उन की बातों में न आना कि वोह जादूगर हैं, कोई कहता वोह कज़्ज़ाब हैं, कोई कहता वोह मजनून हैं, कोई कहता वोह काहिन हैं, कोई कहता वोह शाइ़र हैं, येह सुन कर लोग जब ख़ानए का'बा के दरवाज़े पर आते वहां वलीद बिन मुग़ीरा बैठा रहता, उस से नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ाल दरयाफ़्त करते और कहते कि हम ने मक्कए मुकर्रमा आते हुए शहर के कनारे उन की निस्बत ऐसा सुना वोह कह देता कि ठीक सुना, इस त़रह़ ख़ल्क़ को बहकाते और गुमराह करते, उन लोगों को अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। **100 :** रोज़े क़ियामत **101 :** और जो कुछ वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और कुरआन की निस्बत कहते थे। **102 :** इस आयत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को रिसालत की तब्लीग़ और इस्लाम की दा'वत के इज़्हार का हुक्म दिया गया, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैदा का क़ौल है कि इस आयत के नुज़ूल के वक़्त तक दा'वते इस्लाम ए'लान के साथ नहीं की जाती थी। **103 :** या'नी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुश्रिकों की मलामत करने की परवाह न करो और उन की त़रफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न हो और उन के तमस्खुर व इस्तिहज़ा का ग़म न करो।

كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ

उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं[104] जो अल्लाह के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब

يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

जान जाएंगे[105] और बेशक हमें मा'लूम है कि उन की बातों से तुम दिलतंग होते हो[106]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى

तो अपने रब को सराहते हुए उस की पाकी बोलो और सज्दा वालों में हो[107] और मरते दम तक अपने रब की

يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

इबादत में रहो

सूरए नह्ल मक्किय्या है इस में एक सो अठ्ठाईस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह्म वाला[1]

104 : कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पांच सरदार [1]आ़स बिन वाइल सह्मी और [2]अस्वद बिन मुत्तलिब और [3]अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस और [4]हारिस बिन क़ैस और इन सब का अफ़्सर [5]वलीद इब्ने मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, येह लोग नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ईज़ा देते और आप के साथ तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा करते थे। अस्वद बिन मुत्तलिब के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ की थी कि या रब ! इस को अन्धा कर दे। एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे येह पांचों आए और इन्हों ने हस्बे दस्तूर ता'नो तमस्ख़ुर के कलिमात कहे और तवाफ़ में मश्ग़ूल हो गए। इसी हाल में हज़रते जिब्रीले अमीन हज़रत की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिंडली की तरफ़ और आ़स के कफ़े पा (पाउं के तल्वों) की तरफ़ और अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों की तरफ़ और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस के पेट की तरफ़ और हारिस बिन क़ैस के सर की तरफ़ इशारा किया और कहा मैं इन का शर दफ़्अ़ करूंगा। चुनान्चे थोड़े अ़र्से में येह हलाक हो गए, वलीद बिन मुग़ीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा उस के तहबन्द में एक पैकान चुभा (या'नी नेज़े की नोक चुभी) मगर उस ने तकब्बुर से उस को निकालने के लिये सर नीचा न किया, उस से उस की पिंडली में ज़ख़्म आया और उसी में मर गया, आ़स इब्ने वाइल के पाउं में कांटा लगा और नज़र न आया, इस से पाउं वरम कर गया और येह शख़्स भी मर गया, अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द हुवा कि दीवार में सर मारता था, इसी में मर गया और येह कहता मरा कि मुझ को मुहम्मद ने क़त्ल किया (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस को इस्तिस्क़ा हुवा (या'नी प्यास लगने की बीमारी हो गई) और कल्बी की रिवायत में है कि इस को लू लगी और इस का मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया, इसी हाल में येह कहता मर गया कि मुझ को मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के रब ने क़त्ल किया और हारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुवा इसी में हलाक हो गया, इन्हीं के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **105 :** अपना अन्जामे कार **106 :** और उन के ता'न और इस्तिहज़ा और शिर्को कुफ़्र की बातों से आप को मलाल होता है **107 :** कि ख़ुदा परस्तों के लिये तस्बीह व इबादत में मश्ग़ूल होना ग़म का बेहतरीन इलाज है। हदीस शरीफ़ में है कि जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कोई अहम वाक़िआ़ पेश आता तो नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते। **1 :** सूरए नह्ल मक्किय्या है मगर आयत "فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ" से आख़िर सूरत तक जो आयात हैं वोह मदीनए तय्यिबा में नाज़िल हुईं और इस में और अक़्वाल भी हैं, इस सूरत में सोलह रुकूअ़ और एक सो अठ्ठाईस आयतें और दो हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सो सात हर्फ़ हैं।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ①

अब आता है अल्लाह का हुक्म तो उस की जल्दी न करो[2] पाकी और बरतरी है उसे उन के शरीकों से[3]

یُنَزِّلُ الْمَلٰٓىٕكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ

मलाएका को ईमान की जान या'नी वह्य ले कर अपने जिन बन्दों पर चाहे उतारता है[4] कि

اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ

डर सुनाओ कि मेरे सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो मुझ से डरो[5] उस ने आस्मान और ज़मीन

بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ③ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ

बजा बनाए[6] वोह उन के शिर्क से बरतर है (उस ने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया[7] तो जभी

خَصِیْمٌ مُّبِیْنٌ ④ وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِیْهَا دِفْءٌ وَّ مَنَافِعُ وَ مِنْهَا

खुला झगड़ालू है और चौपाए पैदा किये उन में तुम्हारे लिये गर्म लिबास और मन्फ़अ़तें हैं[8] और उन में से

تَاْكُلُوْنَ ⑤ وَ لَكُمْ فِیْهَا جَمَالٌ حِیْنَ تُرِیْحُوْنَ وَ حِیْنَ تَسْرَحُوْنَ ۪⑥

खाते हो और तुम्हारा उन में तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो

وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِیْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ

और वोह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शह्र की त़रफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अधमरे हो कर बेशक

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ۙ⑦ وَّ الْخَیْلَ وَ الْبِغَالَ وَ الْحَمِیْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ

तुम्हारा रब निहायत मेह्रबान रह़्म वाला है[9] और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि इन पर सुवार हो और

2 शाने नुज़ूल : जब कुफ़्फ़ार ने अ़ज़ाबे मौऊ़द (मुक़र्ररा अ़ज़ाब) के नुज़ूल और क़ियामत के क़ाइम होने की ब त़रीक़े तक्ज़ीब व इस्तिहज़ा जल्दी की इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि जिस की तुम जल्दी करते हो वोह कुछ दूर नहीं बहुत ही क़रीब है और अपने वक़्त पर बिल यक़ीन वाक़ेअ़ होगा और जब वाक़ेअ़ होगा तो तुम्हें उस से ख़लास की कोई राह न मिलेगी और वोह बुत जिन्हें तुम पूजते हो तुम्हारे कुछ काम न आएंगे। **3 :** वोह वाहि़द ''لَاشَرِیْکَ لَهٗ'' है उस का कोई शरीक नहीं **4 :** और उन्हें नुबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है **5 :** और मेरी ही इ़बादत करो और मेरे सिवा किसी को न पूजो क्यूं कि मैं वोह हूं कि **6 :** जिन में उस की तौह़ीद के बे शुमार दलाइल हैं। **7 :** या'नी मनी से, जिस में न हि़स है न ह़रकत, फिर उस को अपनी क़ुदरते कामिला से इन्सान बनाया, क़ुव्वतो त़ाक़त अ़त़ा की। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उबय बिन ख़लफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मरने के बा'द ज़िन्दा होने का इन्कार करता था। एक मरतबा वोह किसी मुर्दे की गली हुई हड्डी उठा लाया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहने लगा कि आप का येह ख़याल है कि अल्लाह तआ़ला इस हड्डी को ज़िन्दगी देगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और निहायत नफ़ीस जवाब दिया गया कि हड्डी तो कुछ न कुछ उ़ज़्वी शक्ल रखती भी है अल्लाह तआ़ला तो मनी के एक छोटे से बे हि़सो ह़रकत क़त़रे से तुझ जैसा झगड़ालू इन्सान पैदा कर देता है, येह देख कर भी तू उस की क़ुदरत पर ईमान नहीं लाता। **8 :** कि उन की नस्ल से दौलत बढ़ाते हो, उन के दूध पीते हो और उन पर सुवारी करते हो **9 :** कि उस ने तुम्हारे नफ़्अ़ और आराम के लिये येह चीज़ें पैदा कीं।

زِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا

ज़ीनत के लिये और वोह पैदा करेगा[10] जिस की तुम्हें ख़बर नहीं[11] और बीच की राह[12] ठीक अल्लाह तक है और कोई राह

جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

टेढ़ी है[13] और चाहता तो तुम सब को राह पर लाता[14] वोही है जिस ने आस्मान से

مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿۱۰﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

पानी उतारा इस से तुम्हारा पीना है और इस से दरख़्त हैं जिन से चराते हो[15] इस पानी से तुम्हारे लिये

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ

खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल[16] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ

इस में निशानी है[17] ध्यान करने वालों को और उस ने तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ़) किये रात और दिन

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

और सूरज और चांद और सितारे उस के हुक्म के बांधे हैं बेशक इस में निशानियां हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ

अ़क़्ल मन्दों को[18] और वोह जो तुम्हारे लिये ज़मीन में पैदा किया रंग बरंग[19] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا

इस में निशानी है याद करने वालों को और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये दरिया मुसख़्ख़र किया[20] कि उस में से

10 : ऐसी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें **11 :** इस में वोह तमाम चीज़ें आ गईं जो आदमी के नफ़्अ़ व राह़त व आरामो आसाइश के काम आती हैं और उस वक़्त तक मौजूद नहीं हुई थीं। अल्लाह तआ़ला को उन का आयिन्दा पैदा करना मन्ज़ूर था जैसे की दुख़ानी (भाप से चलने वाले) जहाज़, रेलें, मोटर, हवाई जहाज़, बर्क़ी (बिजली की) क़ुव्वतों से काम करने वाले आलात, दुख़ानी (धूएं वाली) और बर्क़ी (बिजली वाली) मशीनें, ख़बर रसानी व नश्रे सौत (आवाज़ फैलाने) के सामान और ख़ुदा जाने इस के इ़लावा उस को क्या क्या पैदा करना मन्ज़ूर है। **12 :** या'नी सिराते़ मुस्तक़ीम और दीने इस्लाम क्यूं कि दो मक़ामों के दरमियान जितनी राहें निकाली जाएं उन में से जो बीच की राह होगी वोही सीधी होगी। **13 :** जिस पर चलने वाला मन्ज़िले मक़्सूद को नहीं पहुंच सकता, कुफ़्र की तमाम राहें ऐसी ही हैं। **14 :** राहे रास्त पर **15 :** अपने जानवरों को और अल्लाह तआ़ला **16 :** मुख़्तलिफ़ सूरत व रंग, मज़े, बू, ख़ासिय्यत वाले कि सब एक ही पानी से पैदा होते हैं और हर एक के औसाफ़ दूसरे से जुदा हैं, येह सब अल्लाह की ने'मतें हैं। **17 :** उस की क़ुदरतो हि़क्मत और वह़दानिय्यत की **18 :** जो इन चीज़ों में ग़ौर कर के समझें कि अल्लाह तआ़ला फ़ाइ़ले मुख़्तार है और उ़ल्विय्यात (बुलन्दियां) व सिफ़्लिय्यात (पस्तियां) सब उस के तह़्ते क़ुदरतो इख़्तियार **19 :** ख़्वाह हैवानों की क़िस्म से हो या दरख़्तों की या फलों की। **20 :** कि उस में कश्तियों पर सुवार हो कर सफ़र करो या ग़ोते़ लगा कर उस की तह तक पहुंचो या उस से शिकार करो।

مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ

ताज़ा गोश्त खाते हो[21] और उस में से गहना (ज़ेवर) निकालते हो जिसे पहनते हो[22] और तू उस में कश्तियां देखे

مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَاَلْقٰى فِي

कि पानी चीर कर चलती हैं और इस लिये कि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो और कहीं एह्सान मानो और उस ने

الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵﴾ لا

ज़मीन में लंगर डाले[23] कि कहीं तुम्हें ले कर न कांपे और नदियां और रस्ते कि तुम राह पाओ[24]

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ

और अ़लामतें[25] और सितारे से वोह राह पाते हैं[26] तो क्या जो बनाए[27] वोह ऐसा हो जाएगा जो न बनाए[28]

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तो क्या तुम नसीह़त नहीं मानते और अगर **अल्लाह** की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे[29] बेशक **अल्लाह**

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَالَّذِيْنَ

बख़्शने वाला मेह्रबान है[30] और **अल्लाह** जानता है[31] जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो और

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿۲۰﴾ ؕ اَمْوَاتٌ

अल्लाह के सिवा जिन को पूजते हैं[32] वोह कुछ भी नहीं बनाते और[33] वोह ख़ुद बनाए हुए हैं[34] मुर्दे हैं[35]

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۲۱﴾ ع اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ

ज़िन्दा नहीं और उन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जाएंगे[36] तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[37]

فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۲۲﴾

तो वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन के दिल मुन्किर हैं[38] और वोह मग़रूर[39]

21 : या'नी मछली। **22 :** या'नी गौहर व मरजान। **23 :** भारी पहाड़ों के **24 :** अपने मक़ासिद की त़रफ़ **25 :** बनाईं जिन से तुम्हें रस्ते का पता चले। **26 :** ख़ुश्की और तरी में और इस से उन्हें रस्ते और क़िब्ले की पहचान होती है। **27 :** इन तमाम चीज़ों को अपनी क़ुदरतो हिक्मत से या'नी **अल्लाह** तआ़ला। **28 :** किसी चीज़ को और आ़जिज़ व बे क़ुदरत हो जैसे कि बुत तो आ़क़िल को कब सज़ावार (लाइक़) है कि ऐसे ख़ालिक़ो मालिक की इ़बादत छोड़ कर आ़जिज़ व बे इख़्तियार बुतों की परस्तिश करे या उन्हें इ़बादत में उस का शरीक ठहराए। **29 :** चे जाए कि उन के शुक्र से ओ़हदा बरआ हो सको। **30 :** कि तुम्हारे अदाए शुक्र से क़ासिर होने के बा वुजूद अपनी ने'मतों से तुम्हें मह़रूम नहीं फ़रमाता। **31 :** तुम्हारे तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल **32 :** या'नी बुतों को **33 :** बनाएं क्या कि **34 :** और अपने वुजूद में बनाने वाले के मोह़ताज और वोह **35 :** बे जान **36 :** तो ऐसे मजबूर और बे जान बे इ़ल्म मा'बूद कैसे हो सकते हैं इन दलाइले क़ात़ेआ़ से साबित हो गया कि **37 :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो अपनी ज़ात व सिफ़ात में नज़ीर व शरीक से पाक है। **38 :** वह़दानिय्यत के **39 :** कि ह़क़ ज़ाहिर हो जाने के बा वुजूद उस का इत्तिबाअ़ नहीं करते।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

फ़िल हक़ीक़त अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं बेशक वोह मग़रूरों

الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿۲۳﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَاۤ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ

को पसन्द नहीं फ़रमाता और जब उन से कहा जाए[40] तुम्हारे रब ने क्या उतारा[41] कहें अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۴﴾ لِيَحْمِلُوْۤا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَ مِنْ اَوْزَارِ

कहानियां हैं[42] कि क़ियामत के दिन अपने[43] बोझ पूरे उठाएं और कुछ बोझ

الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ

उन के जिन्हें अपनी जहालत से गुमराह करते हैं सुन लो क्या ही बुरा बोझ उठाते हैं बेशक उन से अगलों ने[44]

مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

फ़रेब किया था तो अल्लाह ने उन की चुनाई को नीव (बुन्याद) से लिया तो ऊपर से उन पर छत गिर

فَوْقِهِمْ وَ اَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

पड़ी और अ़ज़ाब उन पर वहां से आया जहां की उन्हें ख़बर न थी[45] फिर क़ियामत के दिन

يُخْزِيْهِمْ وَ يَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ

उन्हें रुस्वा करेगा और फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वोह शरीक[46] जिन में तुम झगड़ते थे[47]

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَ السُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۷﴾

इ़ल्म वाले[48] कहेंगे आज सारी रुस्वाई और बुराई[49] काफ़िरों पर है

40 : या'नी लोग उन से दरयाफ़्त करें कि **41 :** मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर तो **42 :** या'नी झूटे अफ़्साने, कोई मानने की बात नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस की शान में नाज़िल हुई, उस ने बहुत सी कहानियां याद कर ली थीं, उस से जब कोई क़ुरआने करीम की निस्बत दरयाफ़्त करता तो वोह येह जानने के बा वुजूद कि क़ुरआन शरीफ़ किताबे मो'जिज़ (आ़जिज़ करने वाली) और ह़क़ व हिदायत से मम्लू (भरी हुई) है। लोगों को गुमराह करने के लिये येह कह देता कि येह पहले लोगों की कहानियां हैं ऐसी कहानियां मुझे भी बहुत याद हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि लोगों को इस त़रह़ गुमराह करने का अन्जाम येह है **43 :** गुनाहों और गुमराही व गुमराह गरी के **44 :** या'नी पहली उम्मतों ने अपने अम्बिया के साथ **45 :** येह एक तम्सील (मिसाल) है कि पिछली उम्मतों ने अपने रसूलों के साथ मक्र करने के लिये कुछ मन्सूबे बनाए थे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़ुद उन्हीं के मन्सूबों में हलाक किया और उन का ह़ाल ऐसा हुवा जैसे किसी क़ौम ने कोई बुलन्द इमारत बनाई, फिर वोह इमारत उन पर गिर पड़ी और वोह हलाक हो गए, इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार अपनी मक्कारियों से ख़ुद बरबाद हुए। मुफ़स्सिरीन ने येह भी ज़िक्र किया है कि इस आयत में अगले मक्र करने वालों से नमरूद बिन कन्आ़न मुराद है जो ज़मानए इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام में रूए ज़मीन का सब से बड़ा बादशाह था। उस ने बाबिल में बहुत ऊंची एक इमारत बनाई थी जिस की बुलन्दी पांच हज़ार गज़ थी और उस का मक्र येह था कि उस ने येह बुलन्द इमारत अपने ख़याल में आस्मान पर पहुंचने और आस्मानों वालों से लड़ने के लिये बनाई थी अल्लाह तआ़ला ने हवा चलाई और वोह इमारत उन पर गिर पड़ी और वोह लोग हलाक हो गए। **46 :** जो तुम ने घड़ लिये थे और **47 :** मुसल्मानों से **48 :** या'नी उन उम्मतों के अम्बिया व उ़लमा जो उन्हें दुन्या में ईमान की दा'वत देते और नसीह़त करते थे और येह लोग उन की बात न मानते थे **49 :** या'नी अ़ज़ाब।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ

वोह कि फ़िरिश्ते उन की जान निकालते हैं इस ह़ाल पर कि वोह अपना बुरा कर रहे थे[50] अब सुल्ह़ डालेंगे[51] कि हम तो कुछ

مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ

बुराई न करते थे[52] हां क्यूं नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) थे[53] अब जहन्नम के दरवाज़ों

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ

में जाओ कि हमेशा उस में रहो तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का और डर वालों[54] से

اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ

कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा बोले ख़ूबी[55] जिन्हों ने इस दुन्या में भलाई की[56] उन के

الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۰﴾ لا جَنّٰتُ

लिये भलाई है[57] और बेशक पिछला घर सब से बेहतर और ज़रूर[58] क्या ही अच्छा घर परहेज़ गारों का बसने के

عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ

बाग़ जिन में जाएंगे उन के नीचे नहरें रवां उन्हें वहां मिलेगा जो चाहें[59]

كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۱﴾ لا الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ لا

अल्लाह ऐसा ही सिला देता है परहेज़ गारों को वोह जिन की जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरे पन में[60]

50 : या'नी कुफ़्र में मुब्तला थे। **51 :** और वक़्ते मौत अपने कुफ़्र से मुकर जाएंगे और कहेंगे **52 :** इस पर फ़िरिश्ते कहेंगे **53 :** लिहाज़ा येह इन्कार तुम्हें मुफ़ीद नहीं। **54 :** या'नी ईमानदारों **55 :** या'नी "क़ुरआन शरीफ़" जो तमाम ख़ूबियों का जामेअ़ और ह़सनातो बरकात का मम्बअ़ और दीनी व दुन्यवी और ज़ाहिरी व बातिनी कमालात का सरचश्मा है। **शाने नुज़ूल :** क़बाइले अ़रब अय्यामे ह़ज में ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये मक्कए मुकर्रमा को क़ासिद भेजते थे, येह क़ासिद जब मक्कए मुकर्रमा पहुंचते और शहर के कनारे रास्तों पर उन्हें कुफ़्फ़ार के कारन्दे मिलते (जैसा कि साबिक़ में ज़िक्र हो चुका है) उन से येह क़ासिद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ाल दरयाफ़्त करते तो वोह बहकाने पर मामूर ही होते थे। उन में से कोई ह़ज़रत को साह़िर कहता, कोई काहिन, कोई शाइर, कोई कज़्ज़ाब, कोई मजनून और इस के साथ येह भी कह देते कि तुम उन से न मिलना येही तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है, इस पर क़ासिद कहते कि अगर हम मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर बिग़ैर उन से मिले अपनी क़ौम की त़रफ़ वापस हों तो हम बुरे क़ासिद होंगे और ऐसा करना क़ासिद के मन्सबी फ़राइज़ का तर्क और क़ौम की ख़ियानत होगी, हमें तह़क़ीक़ के लिये भेजा गया है हमारा फ़र्ज़ है कि हम उन के अपने और बेगानों सब से उन के ह़ाल की तह़क़ीक़ करें और जो कुछ मा'लूम हो उस से बे कमो कास्त (बिग़ैर कमी बेशी के) क़ौम को मुत्तलअ़ करें, इस ख़याल से वोह लोग मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो कर अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से भी मिलते थे और उन से आप के ह़ाल की तह़क़ीक़ करते थे, अस्ह़ाबे किराम उन्हें तमाम ह़ाल बताते थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ालातो कमालात और क़ुरआने करीम के मज़ामीन से मुत्तलअ़ करते थे। उन का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया। **56 :** या'नी ईमान लाए और नेक अ़मल किये **57 :** या'नी ह़याते त़य्यिबा है और फ़त्ह़ो ज़फ़र व रिज़्क़े वसीअ़ वग़ैरा ने'मतें। **58 :** दारे आख़िरत **59 :** और येह बात जन्नत के सिवा किसी को कहीं भी ह़ासिल नहीं। **60 :** कि वोह शिर्क व कुफ़्र से पाक होते हैं और उन के अक़्वालो अफ़्आ़ल और अख़्लाक़ व ख़िसाल पाकीज़ा होते हैं, त़ाअ़तें साथ होती हैं, मुहर्रमात व मम्नूआ़त के दाग़ों से उन का दामने अ़मल मैला नहीं होता, क़ब्ज़े रूह़ के वक़्त उन को जन्नत व रिज़्वान व रह़मतो करामत की बिशारतें दी जाती हैं, इस ह़ालत में मौत उन्हें ख़ुश गवार मा'लूम होती है और जान फ़रह़तो सुरूर के साथ जिस्म से निकलती है और मलाएका इ़ज़्ज़त के साथ उस को क़ब्ज़

يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾ هَلْ

येह कहते हुए कि सलामती हो तुम पर[61] जन्नत में जाओ बदला अपने किये का काहे के

يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

इन्तिज़ार में हैं[62] मगर इस के कि फ़िरिश्ते इन पर आएं[63] या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए[64] इन से अगलों

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۳۳﴾

ने भी ऐसा ही किया[65] और अल्लाह ने उन पर कुछ जु़ल्म न किया हां वोह खु़द ही[66] अपनी जानों पर जु़ल्म करते थे

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۴﴾ ع

तो उन की बुरी कमाइयां उन पर पड़ीं[67] और उन्हें घेर लिया उस[68] ने जिस पर हंसते थे

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ

और मुश्रिक बोले अल्लाह चाहता तो उस के सिवा कुछ न पूजते

نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

न हम और न हमारे बाप दादा और न उस से जुदा हो कर हम कोई चीज़ ह़राम ठहराते[69] ऐसा ही

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾ وَلَقَدْ

इन से अगलों ने किया[70] तो रसूलों पर क्या है मगर साफ़ पहुंचा देना[71] और बेशक

بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ

हर उम्मत में से हम ने एक रसूल भेजा[72] कि अल्लाह को पूजो और शैत़ान से बचो

فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي

तो उन[73] में किसी को अल्लाह ने राह दिखाई[74] और किसी पर गुमराही ठीक उतरी[75] तो ज़मीन में चल

करते हैं। (خازن) 61 : मरवी है कि क़रीबे मौत बन्दए मोमिन के पास फ़िरिश्ता आ कर कहता है : ऐ अल्लाह के दोस्त ! तुझ पर सलाम और अल्लाह तआ़ला तुझे सलाम फ़रमाता है और आख़िरत में उन से कहा जाएगा : 62 : कुफ़्फ़ार क्यूं ईमान नहीं लाते ? किस चीज़ के इन्तिज़ार में हैं 63 : इन की अरवाह़ क़ब्ज़ करने 64 : दुन्या में या रोज़े क़ियामत। 65 : या'नी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार ने भी, कि कुफ़्र व तक्ज़ीब पर क़ाइम रहे। 66 : कुफ़्र इख़्तियार कर के 67 : और उन्हों ने अपने आ'माले ख़बीसा की सज़ा पाई 68 : अ़ज़ाब 69 : मिस्ल बह़ीरा व साइबा वग़ैरा के, इस से उन की मुराद येह थी कि इन का शिर्क करना और इन चीज़ों को ह़राम क़रार दे लेना अल्लाह की मशिय्यत व मरज़ी से है, इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : 70 : कि रसूलों की तक्ज़ीब की और ह़लाल को ह़राम किया और ऐसे ही तमस्खु़र की बातें कहीं। 71 : ह़क़ का ज़ाहिर कर देना और शिर्क के बात़िल व क़बीह़ होने पर मुत्तलअ़ कर देना। 72 : और हर रसूल को हु़क्म दिया कि वोह अपनी क़ौम से फ़रमाएं 73 : उम्मतों 74 : वोह ईमान से मुशर्रफ़ हुए 75 : वोह अपनी अज़ली शक़ावत से कुफ़्र पर मरे और ईमान से मह़रूम रहे।

الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى

फिर कर देखो कैसा अन्जाम हुवा झुटलाने वालों का[76] अगर तुम उन की

هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

हिदायत की ह़िर्स करो[77] तो बेशक **अल्लाह** हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उन का कोई मददगार नहीं

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا

और उन्हों ने **अल्लाह** की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में ह़द की कोशिश से कि **अल्लाह** मुर्दे न उठाएगा[78] हां क्यूं नहीं[79]

عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ ۙ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ

सच्चा वा'दा उस के ज़िम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[80] इस लिये कि उन्हें साफ़ बता दे जिस

يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا

बात में झगड़ते थे[81] और इस लिये कि काफ़िर जान लें कि वोह झूटे थे[82] जो चीज़

قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۰﴾ ع وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا

हम चाहें उस से हमारा फ़रमाना येही होता है कि हम कहें हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[83] और जिन्हों ने **अल्लाह** की

فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ

राह में[84] अपने घरबार छोड़े मज़्लूम हो कर ज़रूर हम उन्हें दुन्या में अच्छी जगह देंगे[85] और बेशक

الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी त़रह़ लोग जानते[86] वोह जिन्हों ने सब्र किया[87] और अपने रब ही पर

76 : जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक किया और उन के शहर वीरान किये, उजड़ी हुई बस्तियां उन के हलाक की ख़बर देती हैं, इस को देख कर समझो कि अगर तुम भी उन की त़रह़ कुफ़्रो तक्ज़ीब पर मुसिर रहे तो तुम्हारा भी ऐसा ही अन्जाम होना है। **77 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ब ह़ाले कि येह लोग उन में से हैं जिन की गुमराही साबित हो चुकी और उन की शक़ावत अज़ली है। **78 शाने नुज़ूल :** एक मुश्रिक एक मुसल्मान का मक़्रूज़ था मुसल्मान ने मुश्रिक पर तक़ाज़ा किया, दौराने गुफ़्तगू में उस ने इस त़रह़ **अल्लाह** की क़सम खाई कि "उस की क़सम जिस से मैं मरने के बा'द मिलने की तमन्ना रखता हूं" इस पर मुश्रिक ने कहा कि तेरा येह ख़याल है कि तू मरने के बा'द उठेगा और मुश्रिक ने क़सम खा कर कहा कि **अल्लाह** मुर्दे न उठाएगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया **79 :** या'नी ज़रूर उठाएगा। **80 :** इस उठाने की ह़िक्मत और उस की क़ुदरत बेशक वोह मुर्दों को उठाएगा। **81 :** या'नी मुर्दों को उठाने में कि वोह ह़क़ है **82 :** और मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने का इन्कार ग़लत़। **83 :** तो हमें मुर्दों को ज़िन्दा कर देना क्या दुश्वार। **84 :** उस के दीन की ख़ात़िर हिजरत की। **शाने नुज़ूल :** क़तादा ने कहा कि येह आयत अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन पर अहले मक्का ने बहुत ज़ुल्म किये और उन्हें दीन की ख़ात़िर वत़न छोड़ना ही पड़ा, बा'ज़ उन में से ह़बशा चले गए फिर वहां से मदीनए त़य्यिबा आए और बा'ज़ मदीना शरीफ़ ही को हिजरत कर गए उन्हों ने **85 :** वोह मदीनए त़य्यिबा है जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये दारुल हिजरत (हिजरत गाह) बनाया। **86 :** या'नी कुफ़्फ़ार या वोह लोग जो हिजरत करने से रह गए कि इस का अज्र कितना अ़ज़ीम है। **87 :** वत़न की मुफ़ारक़त और कुफ़्फ़ार की ईज़ा और जान व माल के ख़र्च करने पर।

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

भरोसा करते हैं[88] और हम ने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द[89] जिन की तरफ़ हम वह्य करते

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ

तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं[90] रोशन दलीलें और किताबें ले कर[91]

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ येह यादगार उतारी[92] कि तुम लोगों से बयान कर दो जो[93] उन की तरफ़ उतरा और कहीं वोह

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾ اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ

ध्यान करें तो क्या जो लोग बुरे मक्र करते हैं[94] इस से नहीं डरते कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में

الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ

धंसा दे[95] या उन्हें वहां से अज़ाब आए जहां से उन्हें ख़बर न हो[96] या उन्हें चलते फिरते[97]

فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ فَاِنَّ

पकड़ ले कि वोह थका नहीं सकते[98] या उन्हें नुक़्सान देते देते गिरिफ़्तार कर ले कि बेशक

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ

तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रह्म वाला है[99] और क्या उन्हों ने न देखा कि जो[100] चीज़ अल्लाह ने बनाई है

يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

उस की परछाइयां दाहने और बाएं झुकती हैं[101] अल्लाह को सज्दा करती और वोह उस के हुज़ूर ज़लील हैं[102]

88 : और उस के दीन की वज्ह से जो पेश आए उस पर राज़ी हैं और ख़ल्क़ से इन्क़िताअ़ (अलाहदगी इख़्तियार) कर के बिल्कुल हक़ की तरफ़ मुतवज्जेह हैं और सालिक के लिये येह इन्तिहाए सुलूक का मक़ाम है। **89 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीने मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इस तरह इन्कार किया था कि अल्लाह तआ़ला की शान इस से बरतर है कि वोह किसी बशर को रसूल बनाए। उन्हें बताया गया कि सुन्नते इलाही इसी तरह जारी है, हमेशा उस ने इन्सानों में से मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा। **90 :** ह़दीस शरीफ़ में है : बीमारिये जह्ल की शिफ़ा उ़लमा से दरयाफ़्त करना है, लिहाज़ा उ़लमा से दरयाफ़्त करो, वोह तुम्हें बता देंगे कि सुन्नते इलाहिय्यह यूंही जारी रही कि उस ने मर्दों को रसूल बना कर भेजा। **91 :** मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि रोशन दलीलों और किताबों के जानने वालों से पूछो अगर तुम को दलील व किताब का इल्म न हो। **मस्अला :** इस आयत से तक़्लीदे अइम्मा का वुजूब साबित होता है। **92 :** या'नी कुरआन शरीफ़। **93 :** हुक्म **94 :** रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब के साथ और इन की ईज़ा के दरपै रहते हैं और छुप छुप कर फ़साद अंगेज़ी की तदबीरें किया करते हैं जैसे कि कुफ़्फ़ारे मक्का। **95 :** जैसे क़ारून को धंसा दिया था **96 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि बद्र में हलाक किये गए बा वुजूदे कि वोह येह नहीं समझते थे। **97 :** सफ़रो हज़र में हर एक हा़ल में **98 :** ख़ुदा को अ़ज़ाब करने से। **99 :** कि हि़ल्म करता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **100 :** सायादार **101 :** सुब्ह और शाम **102 :** ख़्वार व आ़जिज़ व मुती़अ़ व मुसख़्ख़र।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَ

और **अल्लाह** ही को सज्दा करते हैं जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में चलने वाला है[103] और फ़िरिश्ते और

هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا

वोह ग़ुरूर नहीं करते   अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो

يُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ ۩ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ

السجدة ٣ ع

उन्हें हुक्म हो[104]   और **अल्लाह** ने फ़रमाया दो ख़ुदा न ठहराओ[105]   वोह तो एक ही

وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿۵۱﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ

मा'बूद है   तो मुझी से डरो[106]   और उसी का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और उसी की

الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ

फ़रमां बरदारी लाज़िम है   तो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी दूसरे से डरोगे[107] और तुम्हारे पास जो ने'मत है सब **अल्लाह** की त़रफ़ से है

ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ۚ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا

फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचती है[108] तो उसी की त़रफ़ पनाह ले जाते हो[109] फिर जब वोह तुम से बुराई टाल देता है तो

فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ ۙ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫

तुम में एक गुरौह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है[110]   कि हमारी दी ने'मतों की नाशुक्री करें   तो कुछ बरत लो[111]

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ

कि अन्क़रीब जान जाओगे[112]   और अन्जानी चीज़ों के लिये[113] हमारी दी हुई रोज़ी में से[114] हिस्सा मुक़र्रर करते हैं

تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ

ख़ुदा की क़सम तुम से ज़रूर सुवाल होना है जो कुछ झूट बांधते थे[115]   और **अल्लाह** के लिये बेटियां ठहराते हैं[116]

103 : सज्दा दो त़रह पर है **: एक** सज्दए त़ाअ़तो इ़बादत जैसा कि मुसल्मानों का सज्दा **अल्लाह** के लिये, **दूसरा** सज्दए इन्क़ियाद (फ़रमां बरदारी) व ख़ुज़ूअ़ जैसा कि साया वग़ैरा का सज्दा, हर चीज़ का सज्दा उस के ह़स्बे हैसिय्यत है, मुसल्मानों और फ़िरिश्तों का सज्दा, सज्दए त़ाअ़तो इ़बादत है और इन के मा सिवा का सज्दा सज्दए इन्क़ियाद व ख़ुज़ूअ़। **104 :** इस आयत से साबित हुवा कि फ़िरिश्ते मुकल्लफ़ हैं और जब साबित कर दिया गया कि तमाम आस्मान व ज़मीन की काएनात **अल्लाह** के हुज़ूर ख़ाज़ेअ़ व मुतवाज़ेअ़ और आ़बिद व मुत़ीअ़ है और सब उस के मम्लूक और उसी के तह़ते क़ुदरतो तसर्रुफ़ हैं तो शिर्क से मुमानअ़त फ़रमाई। **105 :** क्यूं कि दो तो ख़ुदा हो ही नहीं सकते। **106 :** मैं ही वोह मा'बूदे बरह़क़ हूं जिस का कोई शरीक नहीं है। **107 :** बा वुजूदे कि मा'बूदे बरह़क़ सिर्फ़ वोही है। **108 :** ख़्वाह फ़क़्र की या मरज़ की या और कोई **109 :** उसी से दुआ़ मांगते हो उसी से फ़रियाद करते हो। **110 :** और उन लोगों का अन्जाम येह होता है **111 :** और चन्द रोज़ इस ह़ालत में ज़िन्दगी गुज़ार लो **112 :** कि इस का क्या नतीजा हुवा। **113 :** या'नी बुतों के लिये जिन का इलाह और मुस्तह़िक़ और नाफ़ेअ़ व ज़ार (फ़ाएदा मन्द व नुक़्सान देह) होना उन्हें मा'लूम नहीं। **114 :** या'नी खेतियों और चौपायों वग़ैरा में से **115 :** बुतों को मा'बूद और अहले तक़र्रुब और बुत परस्ती को ख़ुदा का हुक्म बता कर **116 :** जैसे कि ख़ुज़ाआ़ व किनाना कहते थे कि फ़िरिश्ते **अल्लाह**

سُبۡحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمۡ مَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِالۡاُنۡثٰى ظَلَّ

पाकी है उस को[117] और अपने लिये जो अपना जी चाहता है[118] और जब उन में किसी को बेटी होने की खुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर

وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ كَظِيۡمٌ ﴿۵۸﴾ يَتَوَارٰى مِنَ الۡقَوۡمِ مِنۡ سُوۡٓءِ مَا بُشِّرَ

उस का मुंह[119] काला रहता है और वोह गुस्सा खाता है लोगों से[120] छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या

بِهٖ ؕ اَيُمۡسِكُهٗ عَلٰى هُوۡنٍ اَمۡ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا

इसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या इसे मिट्टी में दबा देगा[121] अरे बहुत ही बुरा

يَحۡكُمُوۡنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوۡءِ ۚ وَلِلّٰهِ

हुक्म लगाते हैं[122] जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा हाल है और **अल्लाह**

الۡمَثَلُ الۡاَعۡلٰى ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۶۰﴾ وَلَوۡ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ

की शान सब से बुलन्द[123] और वोही इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है और अगर **अल्लाह** लोगों को उन के ज़ुल्म पर गिरिफ़्त करता[124]

بِظُلۡمِهِمۡ مَّا تَرَكَ عَلَيۡهَا مِنۡ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنۡ يُّؤَخِّرُهُمۡ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता[125] लेकिन उन्हें एक ठहराए वा'दे तक मोहलत देता है[126]

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمۡ لَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ﴿۶۱﴾

फिर जब उन का वा'दा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे बढ़ें

وَيَجۡعَلُوۡنَ لِلّٰهِ مَا يَكۡرَهُوۡنَ وَتَصِفُ اَلۡسِنَتُهُمُ الۡكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ

और **अल्लाह** के लिये वोह ठहराते हैं जो अपने लिये ना गवार है[127] और उन की ज़बानें झूटों कहती हैं कि उन के लिये

की बेटियां हैं। (مَعَاذَ الله) **117 :** वोह बरतर है औलाद से और उस की शान में ऐसा कहना निहायत बे अदबी व कुफ़्र है। **118 :** या'नी कुफ़्र के साथ येह कमाले बद तमीज़ी भी है कि अपने लिये बेटे पसन्द करते हैं बेटियां ना पसन्द करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला के लिये जो मुत्लक़न औलाद से मुनज़्ज़ा और पाक है और उस के लिये औलाद ही का साबित करना ऐ़ब लगाना है, उस के लिये औलाद में भी वोह साबित करते हैं जिस को अपने लिये हक़ीर और सबबे आ़र जानते हैं। **119 :** ग़म से **120 :** शर्म के मारे **121 :** जैसा कि कुफ़्फ़ारे मुज़र व ख़ुज़ाआ़ व तमीम (क़बीले) लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे। **122 :** कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये बेटियां साबित करते हैं जो अपने लिये उन्हें इस क़दर ना गवार हैं। **123 :** कि वोह वालिद व वलद (औलाद) सब से पाक और मुनज़्ज़ा कोई उस का शरीक नहीं, तमाम सिफ़ात जलाल व कमाल से मुत्तसिफ़ **124 :** या'नी मआ़सी पर पकड़ता और अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता **125 :** सब को हलाक कर देता। ज़मीन पर चलने वाले से या काफ़िर मुराद हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है : ''اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنۡدَ اللّٰهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا'' या येह मा'ना हैं कि रूए ज़मीन पर किसी चलने वाले को बाक़ी नहीं छोड़ता जैसा कि नूह़ عَلَيۡهِ السَّلَام के ज़माने में जो कोई ज़मीन पर था उन सब को हलाक कर दिया सिर्फ़ वोही बाक़ी रहे जो ज़मीन पर न थे ह़ज़रते नूह़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ कश्ती में थे और एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों को हलाक कर देता और उन की नस्लें मुन्क़त़अ़ हो जातीं फिर ज़मीन में कोई बाक़ी नहीं रहता। **126 :** अपने फ़ज़्लो करम और ह़िल्म से, ठहराए वा'दे से या इख़्तितामे उ़म्र मुराद है या क़ियामत। **127 :** या'नी बेटियां और शरीक।

الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَ اَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿۶۲﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ

भलाई है[128] तो आप ही हुवा कि उन के लिये आग है और वोह ह़द से गुज़ारे हुए हैं[129] ख़ुदा की क़सम हम ने तुम से पहले

اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَیَّنَ لَهُمُ الشَّیْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِیُّهُمُ الْیَوْمَ

कितनी उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे तो शैत़ान ने उन के कौतक (बुरे आ'माल) उन की आंखों में भले कर दिखाए[130] तो आज वोही उन का रफ़ीक़ है[131]

وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۶۳﴾ وَ مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَیِّنَ لَهُمُ

और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[132] और हम ने तुम पर येह किताब न उतारी[133] मगर इस लिये कि तुम लोगों पर रोशन कर दो

الَّذِی اخْتَلَفُوْا فِیْهِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَ اللّٰهُ

जिस बात में इख़्तिलाफ़ करें[134] और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये और अल्लाह

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

ने आस्मान से पानी उतारा तो उस से ज़मीन को[135] ज़िन्दा कर दिया उस के मरे पीछे[136] बेशक इस में

لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ اِنَّ لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِیْكُمْ مِّمَّا

निशानी है उन को जो कान रखते हैं[137] और बेशक तुम्हारे लिये चौपायों में निगाह ह़ासिल होने की जगह है[138] हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से

فِیْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَیْنِ فَرْثٍ وَّ دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآىٕغًا لِّلشّٰرِبِیْنَ ﴿۶۶﴾

जो उन के पेट में है गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से सह्ल उतरता पीने वालों के लिये[139]

128 : या'नी जन्नत। कुफ़्फ़ार बा वुजूद अपने कुफ़्र व बोहतान के और ख़ुदा के लिये बेटियां बताने के भी अपने आप को ह़क़ पर गुमान करते थे और कहते थे कि अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हों और ख़ल्क़त मरने के बा'द फिर उठाई जाए तो जन्नत हमीं को मिलेगी क्यूं कि हम ह़क़ पर हैं उन के ह़क़ में **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : **129 :** जहन्नम ही में छोड़ दिये जाएंगे। **130 :** और उन्हों ने अपनी बदियों को नेकियां समझा **131 :** दुन्या में उसी के कहे पर चलते हैं और जो शैत़ान को अपना रफ़ीक़ और मुख़्तारे कार बनाए वोह ज़रूर ज़लीलो ख़्वार हो या येह मा'ना हैं कि रोज़े आख़िरत शैत़ान के सिवा उन्हें कोई रफ़ीक़ न मिलेगा और शैत़ान ख़ुद ही गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा उन की क्या मदद कर सकेगा। **132 :** आख़िरत में। **133 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **134 :** उमूरे दीन से **135 :** रूईदगी (नबातात) से सर सब्ज़ी व शादाबी बख़्श कर **136 :** या'नी ख़ुश्क और बे सब्ज़ा व बे गियाह होने के बा'द। **137 :** और सुन कर समझते और ग़ौर करते हैं वोह इस नतीजे पर पहुंचते हैं जो क़ादिरे बरह़क़ ज़मीन को उस की मौत या'नी क़ुव्वते नामिया (बढ़ने की क़ुव्वत) फ़ना हो जाने के बा'द फिर ज़िन्दगी देता है वोह इन्सान को उस के मरने के बा'द बेशक ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **138 :** अगर तुम इस में ग़ौर करो तो बेहतर नताइज ह़ासिल कर सकते हो और ह़िक्मते इलाहिय्यह के अ़जाइब पर तुम्हें आगाही ह़ासिल हो सकती है। **139 :** जिस में कोई शाएबा किसी चीज़ की आमैज़िश का नहीं बा वुजूदे कि ह़ैवान के जिस्म में ग़िज़ा का एक ही मक़ाम है जहां चारा, घास, भूसा वग़ैरा पहुंचता है और दूध, ख़ून, गोबर सब उसी ग़िज़ा से पैदा होते हैं, उन में से एक दूसरे से मिलने नहीं पाता। दूध में न ख़ून की रंगत का शाएबा होता है न गोबर की बू का, निहायत साफ़ लत़ीफ़ बरआमद होता है। इस से ह़िक्मते इलाहिय्यह की अ़जीब कारी ज़ाहिर है। ऊपर मस्अला बअ़्स का बयान हो चुका है या'नी मुर्दों को ज़िन्दा किये जाने का, कुफ़्फ़ार इस के मुन्किर थे और उन्हें इस में दो शुब्हे दरपेश थे : **एक** तो येह कि जो चीज़ फ़ासिद हो गई और उस की ह़यात जाती रही उस में दोबारा फिर ज़िन्दगी किस त़रह़ लौटेगी, इस शुब्हे का इज़ाला तो इस से पहली आयत में फ़रमा दिया गया कि तुम देखते रहते हो कि हम मुर्दा ज़मीन को ख़ुश्क होने के बा'द आस्मान से पानी बरसा कर ह़यात अ़त़ा फ़रमा दिया करते हैं तो क़ुदरत का येह फ़ैज़ देखने के बा'द किसी मख़्लूक़ का मरने के बा'द ज़िन्दा होना ऐसे क़ादिरे मुत़्लक़ की क़ुदरत से बईद नहीं। **दूसरा** शुब्हा कुफ़्फ़ार का येह था कि जब आदमी मर गया और उस के जिस्म के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और ख़ाक में मिल गए वोह अज्ज़ा किस त़रह़ जम्अ़ किये

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا

और खजूर और अंगूर के फलों में से[140] कि इस से नबीज़ बनाते हो और अच्छा

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَاَوْحٰی رَبُّكَ اِلَی النَّحْلِ

रिज़्क़[141] बेशक इस में निशानी है अक़्ल वालों को और तुम्हारे रब ने शहद की मखखी को इल्हाम किया

اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا یَعْرِشُوْنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ

कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छतों में फिर

كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا

हर क़िस्म के फल में से खा और[142] अपने रब की राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं[143] उस के पेट से एक

شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ

पीने की चीज़[144] रंग बरंग निकलती है[145] जिस में लोगों की तन्दुरुस्ती है[146] बेशक इस में निशानी है[147]

یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰۤی اَرْذَلِ

ध्यान करने वालों को[148] और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया[149] फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा[150] और तुम में कोई सब से नाक़िस उम्र की तरफ़

जाएंगे और ख़ाक के ज़र्रों से उन को किस तरह मुमताज़ किया जाएगा ? इस आयते करीमा में जो साफ़ दूध का बयान फ़रमाया उस में ग़ौर करने से वोह शुब्हा बिल्कुल नेस्तो नाबूद हो जाता है कि कुदरते इलाही की येह शान तो रोज़ाना देखने में आती है कि वोह ग़िज़ा के मख़्लूत अज्ज़ा में से ख़ालिस दूध निकालता है और इस के कुर्बो जवार की चीज़ों की आमैज़िश का शाएबा भी इस में नहीं आता, उस हकीमे बरहक़ की कुदरत से क्या बईद कि इन्सानी जिस्म के अज्ज़ा को मुन्तशिर होने के बा'द फिर मुज्तमअ़ फ़रमा दे। शक़ीक़ बल्ख़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि ने'मत का इत्माम येही है कि दूध साफ़ ख़ालिस आए और उस में ख़ून और गोबर के रंग व बू का नामो निशान न हो वरना ने'मत ताम न होगी और तब्अ़ सलीम इस को क़बूल न करेगी, जैसी साफ़ ने'मत परवर्दगार की तरफ़ से पहुंचती है बन्दे को लाज़िम है कि वोह भी परवर्दगार के साथ इख़्लास से मुआमला करे और उस के अ़मल रिया और हवाए नफ़्स की आमैज़िशों से पाको साफ़ हों ताकि शरफ़े क़बूल से मुशर्रफ़ हों। **140 :** हम तुम्हें रस पिलाते हैं **141 :** या'नी सिर्का और रुब (पका हुवा रस जो जमा लिया गया हो) और ख़ुरमा (खजूर) और मवीज़ (बड़े सूखे हुए अंगूर)। **मस्अला :** मवीज़ और अंगूर वग़ैरा का रस जब इस क़दर पका लिया जाए कि दो तिहाई जल जाए और एक तिहाई बाक़ी रहे और तेज़ हो जाए इस को नबीज़ कहते हैं, येह हद सुक्र तक न पहुंचे और नशा न लाए तो शैख़ैन के नज़्दीक हलाल है और येही आयत और बहुत सी अहादीस इन की दलील है। **142 :** फलों की तलाश में **143 :** फ़ज़्ले इलाही से जिन का तुझे इल्हाम किया गया है हत्ता कि तुझे चलना फिरना दुश्वार नहीं और तू कितनी ही दूर निकल जाए राह नहीं बहक्ती और अपने मक़ाम पर वापस आ जाती है। **144 :** या'नी शहद **145 :** सफ़ेद और ज़र्द और सुर्ख़। **146 :** और नाफ़ेअ़ तरीन दवाओं में से है और ब कसरत मआ़जीन में शामिल किया जाता है। **147 : अल्लाह** तआ़ला की कुदरतो हिक्मत पर **148 :** कि उस ने एक कमज़ोर ना तुवान मख्खी को ऐसी ज़ीरकी व दानाई (अ़क़्ल मन्दी) अ़ता फ़रमाई और ऐसी दक़ीक़ सन्अ़तें मर्हमत कीं, पाक है वोह और अपनी ज़ातो सिफ़ात में शरीक से मुनज़्ज़ा, इस से फ़िक्र करने वालों को इस पर भी तम्बीह हो जाती है कि वोह अपनी कुदरते कामिला से एक अदना ज़ईफ़ सी मख्खी को येह सिफ़्त अ़ता फ़रमाता है कि वोह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फूलों और फलों से ऐसे लतीफ़ अज्ज़ा हासिल करे जिन से नफ़ीस शहद बने जो निहायत ख़ुश गवार हो, ताहिर व पाकीज़ा हो, फ़ासिद होने और सड़ने की उस में क़ाबिलिय्यत न हो, तो जो क़ादिर हकीम एक मख्खी को इस माद्दे के जम्अ़ करने की कुदरत देता है वोह अगर मरे हुए इन्सान के मुन्तशिर अज्ज़ा को जम्अ़ कर दे तो उस की कुदरत से क्या बईद है कि मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को मुहाल (ना मुम्किन) समझने वाले किस क़दर अहमक़ हैं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों पर अपनी कुदरत के वोह आसार ज़ाहिर फ़रमाता है जो ख़ुद उन में और उन के अहवाल में नुमायां हैं। **149 :** अ़दम से और नीस्ती (जब तुम्हारा वुजूद ही न था इस) के बा'द हस्ती अ़ता फ़रमाई, कैसी अ़जीब कुदरत है। **150 :** और तुम्हें ज़िन्दगी के बा'द मौत देगा जब तुम्हारी अजल पूरी हो जो उस ने मुक़र्रर फ़रमाई है ख़्वाह बचपन में या जवानी में या बुढ़ापे में।

الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝۷۰ وَاللّٰهُ

फेरा जाता है[151] कि जानने के बा'द कुछ न जाने[152] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता सब कुछ कर सकता है और अल्लाह ने

فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ

तुम में एक को दूसरे पर रिज़्क़ में बड़ाई दी[153] तो जिन्हें बड़ाई दी है

رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

वोह अपना रिज़्क़ अपने बांदी गुलामों को न फेर देंगे कि वोह सब उस में बराबर हो जाएं[154] तो क्या अल्लाह की ने'मत से

يَجْحَدُوْنَ ۝۷۱ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ

मुकरते हैं[155] और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स से औरतें बनाई और तुम्हारे लिये

اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ

तुम्हारी औरतों से बेटे और पोते नवासे पैदा किये और तुम्हें सुथरी चीज़ों से रोज़ी दी[156] तो क्या झूटी बात[157] पर

يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝۷۲ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

यक़ीन लाते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल[158] से मुन्किर होते हैं और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं[159] जो

لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝۷۳

उन्हें आस्मान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते न कुछ कर सकते हैं

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۷۴ ضَرَبَ

तो अल्लाह के लिये मानिन्द न ठहराओ[160] बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते अल्लाह ने एक

151 : जिस का ज़माना उम्रे इन्सानी के मरातिब में साठ साल के बा'द आता है कि कुवा (ताक़तें) और हवास सब नाकारा हो जाते हैं और इन्सान की येह हालत हो जाती है **152 :** और नादानी में बच्चों से ज़ियादा बदतर हो जाए। इन तग़य्युरात में कुदरते इलाही के कैसे अजाइब मुशाहदे में आते हैं। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मुसल्मान ब फ़ज़्ले इलाही इस से महफ़ूज़ हैं, तूले उम्र व बक़ा से इन्हें अल्लाह के हुज़ूर में करामत और अक़्लो मा'रिफ़त की ज़ियादती हासिल होती है और हो सकता है कि तवज्जोह इलल्लाह का ऐसा ग़लबा हो कि इस आलम से इन्क़िताअ़ हो जाए और बन्दए मक़्बूल दुन्या की तरफ़ इल्तिफ़ात से मुज्तनिब हो। इक्रिमा का क़ौल है कि जिस ने कुरआने पाक पढ़ा वोह इस अरज़ल (नाक़िस) उम्र की हालत को न पहुंचेगा कि इल्म के बा'द महूज़ बे इल्म हो जाए। **153 :** तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को मालदार किसी को नादार किसी को मालिक किसी को मम्लूक। **154 :** और बांदी गुलाम आक़ाओं के शरीक हो जाएं, जब तुम अपने गुलामों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं करते तो अल्लाह के बन्दों और उस के मम्लूकों को उस का शरीक ठहराना किस तरह गवारा करते हो سُبْحٰنَ اللّٰہ ! येह बुत परस्ती का कैसा नफ़ीस दिल नशीन और ख़ातिर गुज़ीन रद है। **155 :** कि उस को छोड़ कर मख़्लूक़ को पूजते हैं। **156 :** क़िस्म क़िस्म के ग़ल्लों, फलों, मेवों, खाने पीने की चीज़ों से। **157 :** या'नी शिर्क व बुत परस्ती **158 :** अल्लाह के फ़ज़्लो ने'मत से सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की ज़ाते गिरामी या इस्लाम मुराद है। (مدارک) **159 :** या'नी बुतों को **160 :** उस का किसी को शरीक न करो।

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا

कहावत बयान फ़रमाई[161] एक बन्दा है दूसरे की मिल्क आप कुछ मक्दूर (ताक़त) नहीं रखता और एक वोह जिसे हम ने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी

حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ

अ़ता फ़रमाई तो वोह उस में से ख़र्च करता है छुपे और ज़ाहिर[162] क्या वोह बराबर हो जाएंगे[163] सब ख़ूबियां अल्लाह को हैं बल्कि

اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ

उन में अक्सर को ख़बर नहीं[164] और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूंगा

لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ

जो कुछ काम नहीं कर सकता[165] और वोह अपने आक़ा पर बोझ है जिधर भेजे कुछ भलाई न लाए[166]

هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ وَ

क्या बराबर हो जाएगा येह और वोह जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और वोह सीधी राह पर है[167] और

لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ

अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[168] और क़ियामत का मुआ़मला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना

اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ

बल्कि इस से भी क़रीब[169] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी

بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

माओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे[170] और तुम्हें कान और आंख और

161 : येह कि **162 :** जैसे चाहता है तसर्रुफ़ करता है, तो वोह आ़जिज़ मम्लूक ग़ुलाम और येह आज़ाद मालिक साहिबे माल जो ब फ़ज़्ले इलाही क़ुदरतो इख़्तियार रखता है। **163 :** हरगिज़ नहीं तो जब ग़ुलाम व आज़ाद बराबर नहीं हो सकते बा वुजूदे कि दोनों अल्लाह के बन्दे हैं तो अल्लाह ख़ालिक़, मालिक, क़ादिर के साथ बे क़ुदरतो इख़्तियार बुत कैसे शरीक हो सकते हैं और इन को उस के मिस्ल क़रार देना कैसा बड़ा ज़ुल्म व जह्ल है। **164 :** कि ऐसे बराहीने बय्यिना और हुज्जते वाज़ेहा (रोशन और वाज़ेह दलाइल) के होते हुए शिर्क करना कितने बड़े वबाल व अ़ज़ाब का सबब है। **165 :** न अपनी किसी से कह सके न दूसरे की समझ सके **166 :** और किसी काम न आए येह मिसाल काफ़िर की है। **167 :** येह मिसाल मोमिन की है। मा'ना येह हैं कि काफ़िर नाकारा गूंगे ग़ुलाम की तरह है वोह किसी तरह मुसल्मान की मिस्ल नहीं हो सकता जो अ़द्ल का हुक्म करता है और सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गूंगे नाकारा ग़ुलाम से बुतों को तम्सील दी गई और इन्साफ़ का हुक्म देना शाने इलाही का बयान हुवा, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला के साथ बुतों को शरीक करना बातिल है क्यूं कि इन्साफ़ क़ाइम करने वाले बादशाह के साथ गूंगे और नाकारा ग़ुलाम को क्या निस्बत। **168 :** इस में अल्लाह तआ़ला के कमाले इ़ल्म का बयान है कि वोह जमीअ़ ग़ुयूब का जानने वाला है, उस पर कोई छुपने वाली चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से मुराद इ़ल्मे क़ियामत है। **169 :** क्यूं कि पलक मारना भी ज़माना चाहता है जिस में पलक की ह़रकत ह़ासिल हो और अल्लाह तआ़ला जिस चीज़ का होना चाहे वोह "कुन" फ़रमाते ही हो जाती है। **170 :** और अपनी पैदाइश की इब्तिदा और अव्वल फ़ित़रत में इ़ल्मो मा'रिफ़त से ख़ाली थे।

الْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ

दिल दिये[171] कि तुम एहसान मानो[172] क्या उन्हों ने परिन्दे न देखे हुक्म के बांधे आस्मान की

السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾

फ़ज़ा में उन्हें कोई नहीं रोकता[173] सिवा ख़ुदा के बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को[174]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ

और अल्लाह ने तुम्हें घर दिये बसने को[175] और तुम्हारे चौपायों की खालों से कुछ

بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا

घर बनाए[176] जो तुम्हें हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मन्ज़िलों पर ठहरने के दिन और उन की ऊन

وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿۸۰﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ

और बबरी (ऊंट के बाल) और बालों से कुछ गिरस्ती (घरेलू ज़रूरिय्यात) का सामान[177] और बरत्ने की चीज़ें एक वक़्त तक और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई

مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ

चीज़ों[178] से साए दिये[179] और तुम्हारे लिये पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई[180] और तुम्हारे लिये कुछ पहनावे बनाए

تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

कि तुम्हें गरमी से बचाएं और कुछ पहनावे[181] कि लड़ाई में तुम्हारी हिफ़ाज़त करें[182] यूंही अपनी ने'मत तुम पर पूरी करता है[183]

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۲﴾

कि तुम फ़रमान मानो[184] फिर अगर वोह मुंह फेरें[185] तो ऐ महबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[186]

171 : कि इन से अपना पैदाइशी जह्ल दूर करो **172 :** और इल्मो अ़मल से फ़ैज़याब हो कर मुन्इम (ने'मत देने वाले) का शुक्र बजा लाओ और उस की इबादत में मश्ग़ूल हो और उस के हुक़ूक़े ने'मत अदा करो। **173 :** गिरने से बा वुजूदे कि जिस्मे सक़ील (भारी जिस्म) बित्तबअ़ गिरना चाहता है। **174 :** कि उस ने इन्हें ऐसा पैदा किया कि वोह हवा में परवाज़ कर सकते हैं और अपने जिस्मे सक़ील की त़बीअ़त के ख़िलाफ़ हवा में ठहरे रहते हैं गिरते नहीं और हवा को ऐसा पैदा किया कि इस में उन की परवाज़ मुम्किन है, ईमानदार इस में ग़ौर कर के क़ुदरते इलाही का ए'तिराफ़ करते हैं। **175 :** जिन में तुम आराम करते हो **176 :** मिस्ल ख़ैमा वग़ैरा के **177 :** बिछाने ओढ़ने की चीज़ें। **मस्अला :** येह आयत अल्लाह की ने'मतों के बयान में है मगर इस से इशारतन ऊन और पश्मीने (ऊनी कपड़े) और बालों की त़हारत और इन से नफ़अ़ उठाने की हिल्लत साबित होती है। **178 :** मकानों, दीवारों, छतों, दरख़्तों और अब्र (बादलों) वग़ैरा **179 :** जिस में तुम आराम करते हो **180 :** ग़ार वग़ैरा, कि अमीर व ग़रीब सब आराम कर सकें **181 :** ज़िरह व जौशन वग़ैरा **182 :** कि तीर, तलवार, नेज़े वग़ैरा से बचाव का सामान हो। **183 :** दुन्या में तुम्हारे हवाइज व ज़रूरिय्यात का सामान पैदा फ़रमा कर **184 :** और उस की ने'मतों का ए'तिराफ़ कर के इस्लाम लाओ और दीने बरहक़ क़बूल करो। **185 :** और ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم वोह आप पर ईमान लाने और आप की तस्दीक़ करने से ए'राज़ करें और अपने कुफ़्र पर जमे रहें **186 :** और जब आप ने पयामे इलाही पहुंचा दिया तो आप का काम पूरा हो चुका और न मानने का वबाल उन की गरदन पर रहा।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَ اَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَ يَوْمَ

अल्लाह की ने'मत पहचानते हैं[187] फिर उस से मुन्किर होते हैं[188] और उन में अक्सर काफ़िर हैं[189] और जिस दिन[190]

نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ لَا هُمْ

हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह[191] फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो[192] न वोह

يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَ

मनाए जाएं[193] और ज़ुल्म करने वाले[194] जब अ़ज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वोह उन पर से हलका हो

لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَ اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا

न उन्हें मोहलत मिले और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे[195] कहेंगे ऐ हमारे रब

هٰۤؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ

येह हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे तो वोह उन पर बात फेंकेंगे

الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۸۶﴾ ۚ وَ اَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ۣالسَّلَمَ وَ ضَلَّ

कि तुम बेशक झूटे हो[196] और उस दिन[197] अल्लाह की त़रफ़ आ़जिज़ी से गिरेंगे[198] और उन से

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۸۷﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

गुम हो जाएंगी जो बनावटें करते थे[199] जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका

زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَ يَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

हम ने अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ाया[200] बदला उन के फ़साद का और जिस दिन हम

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَ جِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ ؕ

हर गुरोह में एक गवाह उन्हीं में से उठाएंगे कि उन पर गवाही दे[201] और ऐ मह़बूब तुम्हें उन सब पर[202] शाहिद बना कर लाएंगे

187 : या'नी जो ने'मतें कि ज़िक्र की गईं उन सब को पहचानते हैं और जानते हैं कि येह सब अल्लाह की त़रफ़ से हैं फिर भी उस का शुक्र बजा नहीं लाते। सुद्दी का क़ौल है कि अल्लाह की ने'मत से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि वोह हुज़ूर को पहचानते हैं और समझते हैं कि आप का वुजूद अल्लाह तआ़ला की बड़ी ने'मत है और बा वुजूद इस के 188 : और दीने इस्लाम क़बूल नहीं करते 189 : मुआ़निद (ह़ासिदीन) कि ह़सद व इनाद से कुफ़्र पर क़ाइम रहते हैं। 190 : या'नी रोज़े क़ियामत 191 : जो उन की तस्दीक़ व तक्ज़ीब और ईमान व कुफ़्र की गवाही दे और येह गवाह अम्बिया हैं عَلَيْهِمُ السَّلَام। 192 : मा'ज़िरत की या किसी कलाम की या दुन्या की त़रफ़ लौटने की 193 : या'नी न उन से इ़ताब व मलामत दूर की जाए। 194 : या'नी कुफ़्फ़ार 195 : बुतों वग़ैरा को जिन्हें पूजते थे 196 : जो हमें मा'बूद बताते हो, हम ने तुम्हें अपनी इ़बादत की दा'वत नहीं दी। 197 : मुश्रिकीन 198 : और उस के फ़रमां बरदार होना चाहेंगे 199 : दुन्या में बुतों को ख़ुदा का शरीक बता कर 200 : उन के कुफ़्र का अ़ज़ाब और दूसरों को ख़ुदा की राह से रोकने और गुमराह करने का अ़ज़ाब 201 : येह गवाह अम्बिया होंगे जो अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही देंगे। 202 : उम्मतों और उन के शाहिदों पर जो अम्बिया होंगे

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى

और हम ने तुम पर येह कुरआन उतारा कि हर चीज़ का रोशन बयान है[203] और हिदायत और रहमत और बिशारत

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى

मुसल्मानों को बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी[204] और रिश्तेदारों के देने का[205]

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

और मन्अ़ फ़रमाता है बे हयाई[206] और बुरी बात[207] और सरकशी से[208] तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا

और **अल्लाह** का अ़हद पूरा करो[209] जब क़ौल बांधो और क़समें मज़बूत कर के न तोड़ो

203 : जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : ''فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا'' (ابوالسعود وغیرہ) जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : ''مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ'' और तिरमिज़ी की हदीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने पेश आने वाले फ़ितनों की ख़बर दी, सहाबा ने उन से ख़लास (छुटकारे) का त़रीक़ा दरयाफ़्त किया। फ़रमाया : किताबुल्लाह में तुम से पहले वाक़िआ़त की भी ख़बर है तुम से बा'द के वाक़िआ़त की भी और तुम्हारे माबैन का इल्म भी। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है फ़रमाया : जो इल्म चाहे वोह कुरआन को लाज़िम कर ले, इस में अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें हैं। इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि उम्मत के सारे उ़लूम ह़दीस की शर्ह़ हैं और ह़दीस कुरआन की और येह भी फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जो कोई हुक्म भी फ़रमाया वोह वोही था जो आप को कुरआने पाक से मफ़्हूम हुवा। अबू बक्र बिन मुजाहिद से मन्क़ूल है : उन्हों ने एक रोज़ फ़रमाया कि आ़लम में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किताबुल्लाह या'नी कुरआन शरीफ़ में मज़्कूर न हो, इस पर किसी ने उन से कहा : सराओं (मुसाफ़िर ख़ाने) का ज़िक्र कहां है? फ़रमाया : इस आयत में ''لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ...الخ'' (इस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं।) इब्ने अबुल फ़ज़्ल मुरसी ने कहा कि अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उ़लूम कुरआने पाक में हैं। ग़रज़ येह किताब जामेअ़ है जमीअ़ उ़लूम की जिस किसी को इस का जितना इल्म मिला है उतना ही जानता है। **204 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो येह है कि आदमी لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही दे और नेकी और फ़राइज़ का अदा करना और आप ही से एक और रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी **अल्लाह** की इस त़रह़ इबादत करना गोया वोह तुम्हें देख रहा है और दूसरों के लिये वोही पसन्द करना जो अपने लिये पसन्द करते हो, अगर वोह मोमिन हो तो उस के बरकाते ईमान की तरक़्क़ी तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें येह पसन्द आए कि वोह तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाए। इन्हीं से एक और रिवायत है : उस में है कि इन्साफ़ तौहीद है और नेकी इख़्लास और इन तमाम रिवायतों का त़र्ज़े बयान अगर्चे जुदा जुदा है लेकिन मआल व मुद्दआ़ एक ही है। **205 :** और उन के साथ सिलए रेह़मी और नेक सुलूक करने का **206 :** या'नी हर शर्मनाक मज़्मूम क़ौल व फ़े'ल **207 :** या'नी शिर्क व कुफ़्र व मआ़सी तमाम मम्नूआ़ते शरइय्या **208 :** या'नी ज़ुल्म व तकब्बुर से। इब्ने उ़यैना ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा कि अ़द्ल ज़ाहिरो बात़िन दोनों में बराबर ह़क़ व त़ाअ़त बजा लाने को कहते हैं और एह़सान येह है कि बात़िन का ह़ाल ज़ाहिर से बेहतर हो और ''فَحْشَاء وَمُنْكَر وَبَغْي'' येह है कि ज़ाहिर अच्छा हो और बात़िन ऐसा न हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया और तीन से मन्अ़ फ़रमाया : अ़द्ल का हुक्म दिया और वोह इन्साफ़ व मुसावात है अक़्वाल व अफ़्आ़ल में, इस के मुक़ाबिल فَحْشَاء या'नी बे ह़याई है वोह क़बीह़ अक़्वाल व अफ़्आ़ल हैं और एह़सान का हुक्म फ़रमाया, वोह येह है कि जिस ने ज़ुल्म किया उस को मुआ़फ़ करो और जिस ने बुराई की उस के साथ भलाई करो, इस के मुक़ाबिल مُنْكَر है या'नी मोह़सिन के एह़सान का इन्कार करना और तीसरा हुक्म इस आयत में रिश्तेदारों को देने और उन के साथ सिलए रेह़मी और शफ़्क़तो मह़ब्बत का फ़रमाया, इस के मुक़ाबिल بَغْي है और वोह अपने आप को ऊंचा खींचना और अपने अ़लाक़ादारों के हुक़ूक़ तलफ़ करना है। इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि येह आयत तमाम ख़ैर व शर के बयान को जामेअ़ है। येही आयत ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न के इस्लाम का सबब हुई जो फ़रमाते हैं कि इस आयत के नुज़ूल से ईमान मेरे दिल में जगह पकड़ गया। इस आयत का असर इतना ज़बर दस्त हुवा कि वलीद बिन मुग़ीरा और अबू जहल जैसे सख़्त दिल कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर भी इस की ता'रीफ़ आ ही गई, इस लिये येह आयत हर ख़ुत़्बे के आख़िर में पढ़ी जाती है। **209 :** येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस्लाम पर बैअ़त की थी, उन्हें अपने अ़ह्द के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया और येह हुक्म इन्सान के हर अ़ह्दे नेक और वा'दे को शामिल है।

وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا

और तुम अल्लाह को[210] अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम जानता है और[211]

تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ

उस औ़रत की त़रह़ न हो जिस ने अपना सूत मज़बूत़ी के बा'द रेज़ा रेज़ा कर के तोड़ दिया[212] अपनी क़समें आपस में

دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ

एक बे अस्ल बहाना बनाते हो कि कहीं एक गुरौह दूसरे गुरौह से ज़ियादा न हो[213] अल्लाह तो इस से तुम्हें आज़्माता

بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ

है[214] और ज़रूर तुम पर साफ़ ज़ाहिर कर देगा क़ियामत के दिन[215] जिस बात में झगड़ते थे[216] और अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ

तो तुम को एक ही उम्मत करता[217] लेकिन अल्लाह गुमराह करता है[218] जिसे चाहे और राह देता है[219] जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْۤا اَيْمَانَكُمْ

चाहे और ज़रूर तुम से[220] तुम्हारे काम पूछे जाएंगे[221] और अपनी क़समें आपस में बे अस्ल

دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ

बहाना न बना लो कि कहीं कोई पाउं[222] जमने के बा'द लग़्ज़िश न करे और तुम्हें बुराई चखनी हो[223] बदला इस का

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا

कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब हो[224] और अल्लाह के अ़ह्द पर थोड़े दाम

قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ

मोल न लो[225] बेशक वोह[226] जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो जो तुम्हारे पास है[227]

210 : उस के नाम की क़सम खा कर **211 :** तुम अ़ह्द और क़समें तोड़ कर **212 :** मक्कए मुकर्रमा में रैत़ा बिन्ते अ़म्र एक औ़रत थी जिस की त़बीअ़त में बहुत वह्म था और अ़क़्ल में फ़ुतूर, वोह दोपहर तक मेह़नत कर के सूत काता करती और अपनी बांदियों से भी कतवाती और दोपहर के वक़्त उस काते हुए को तोड़ कर रेज़ा रेज़ा कर डालती और बांदियों से भी तुड़वाती, येही उस का मा'मूल था । मा'ना येह हैं कि अपने अ़ह्द को तोड़ कर उस औ़रत की त़रह़ बे वुक़ूफ़ न बनो । **213 :** मुजाहिद का क़ौल है कि लोगों का त़रीक़ा येह था कि एक क़ौम से ह़ल्फ़ करते और जब दूसरी क़ौम उस से ज़ियादा ता'दाद या माल या क़ुव्वत में पाते तो पहलों से जो ह़ल्फ़ किये थे तोड़ देते और अब दूसरे से ह़ल्फ़ करते अल्लाह तआ़ला ने इस को मन्अ़ फ़रमाया और अ़ह्द के वफ़ा करने का हुक्म दिया । **214 :** कि मुत़ीअ़ और आ़सी ज़ाहिर हो जाए **215 :** आ'माल की जज़ा दे कर **216 :** दुन्या के अन्दर **217 :** कि तुम सब एक दीन पर होते **218 :** अपने अ़द्ल से **219 :** अपने फ़ज़्ल से **220 :** रोज़े क़ियामत **221 :** जो तुम ने दुन्या में किये **222 :** राहे ह़क़ व त़रीक़ए इस्लाम से **223 :** या'नी अ़ज़ाब **224 :** आख़िरत में **225 :** इस त़रह़ कि दुन्याए ना पाएदार के क़लील नफ़्अ़ पर उस को तोड़ दो । **226 :** जज़ा व सवाब **227 :** सामाने दुन्या येह सब फ़ना हो जाएगा और ख़त्म ।

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

हो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है[228] हमेशा रहने वाला है और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उन का वोह सिला देंगे

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

जो उन के सब से अच्छे काम के क़ाबिल हो[229] जो अच्छा काम करे मर्द हो या औ़रत और हो मुसल्मान[230]

فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا

तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे[231] और ज़रूर उन्हें उन का नेग (अज्र) देंगे जो उन के सब से बेहतर काम के

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ

लाइक़ हो तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो **अल्लाह** की पनाह मांगो शैत़ान

الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

मरदूद से[232] बेशक उस का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ

भरोसा रखते हैं[233] उस का क़ाबू तो उन्हीं पर है जो उस से दोस्ती करते हैं और उसे

مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع وَاِذَا بَدَّلْنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْۤا

शरीक ठहराते हैं और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें[234] और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो उतारता है[235] काफ़िर कहें

اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ

तुम तो दिल से बना लाते हो[236] बल्कि उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं[237] तुम फ़रमाओ इसे पाकीज़गी

228 : उस का ख़ज़ानए रह़मत व सवाबे आख़िरत **229 :** या'नी उन की अदना सी अदना नेकी पर भी वोह अज्रो सवाब दिया जाएगा जो वोह अपनी आ'ला नेकी पर पाते। (ابوالسعود) **230 :** येह ज़रूर शर्त़ है क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बेकार हैं, अ़मले सालेह़ के मूजिबे सवाब होने के लिये ईमान शर्त़ है। **231 :** दुन्या में रिज़्क़े ह़लाल और क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा कर और आख़िरत में जन्नत की ने'मतें दे कर। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि अच्छी ज़िन्दगी से लज़्ज़ते इ़बादत मुराद है। **ह़िक्मत :** मोमिन अगर्चे फ़क़ीर भी हो इस की ज़िन्दगानी दौलत मन्द काफ़िर के ऐ़श से बेहतर और पाकीज़ा है क्यूं कि मोमिन जानता है कि इस की रोज़ी **अल्लाह** की त़रफ़ से है जो उस ने मुक़द्दर किया उस पर राज़ी होता है और मोमिन का दिल ह़िर्स की परेशानियों से मह़फ़ूज़ और आराम में रहता है और काफ़िर जो **अल्लाह** पर नज़र नहीं रखता वोह ह़रीस रहता है और हमेशा रन्जो तअ़ब (दुख) और तह़सीले माल की फ़िक्र में परेशान रहता है। **232 :** या'नी क़ुरआने करीम की तिलावत शुरूअ़ करते वक़्त "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ो, येह मुस्तह़ब है। اَعُوْذُ...اِلَخْ के मसाइल सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर में मज़्कूर हो चुके। **233 :** वोह शैत़ानी वस्वसे क़बूल नहीं करते। **234 :** और अपनी ह़िक्मत से एक हुक्म को मन्सूख़ कर के दूसरा हुक्म दें। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का अपनी जहालत से नस्ख़ पर ए'तिराज़ करते थे और इस की ह़िक्मतों से ना वाक़िफ़ होने के बाइ़स इस को तमस्ख़ुर बनाते थे और कहते थे कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) एक रोज़ एक हुक्म देते हैं दूसरे रोज़ और दूसरा ही हुक्म देते हैं, वोह अपने दिल से बातें बनाते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **235 :** कि इस में क्या ह़िक्मत और उस के बन्दों के लिये इस में क्या मस्लह़त है। **236 :** **अल्लाह** तआ़ला ने इस पर कुफ़्फ़ार की तज्हील फ़रमाई और इर्शाद किया **237 :** और वोह नस्ख़ो तब्दील की ह़िक्मत व फ़वाइद से ख़बरदार नहीं और येह भी नहीं जानते कि क़ुरआने करीम की त़रफ़ इफ़्तिरा की निस्बत हो ही नहीं सकती क्यूं कि जिस कलाम के मिस्ल बनाना

الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى

की रूह[238] ने उतारा तुम्हारे रब की त़रफ़ से ठीक ठीक कि इस से ईमान वालों को साबित क़दम करे और हिदायत और बिशारत

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ لَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ

मुसल्मानों को और बेशक हम जानते हैं कि वोह कहते हैं येह तो कोई आदमी सिखाता है जिस की

الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّ هٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾ اِنَّ

त़रफ़ ढालते (इशारा करते) हैं उस की ज़बान अ़जमी है और येह रोशन अ़रबी ज़बान[239] बेशक

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾

वोह जो **अल्लाह** की आयतों पर ईमान नहीं लाते[240] **अल्लाह** उन्हें राह नहीं देता और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[241]

اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

झूट बोहतान वोही बांधते हैं जो **अल्लाह** की आयतों पर ईमान नहीं रखते[242] और वोही

الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ

झूटे हैं जो ईमान ला कर **अल्लाह** का मुन्किर हो[243] सिवा उस के जो मजबूर किया जाए और उस का दिल

مُطْمَىٕنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ

ईमान पर जमा हुवा हो[244] हां वोह जो दिल खोल कर[245] काफ़िर हो उन पर **अल्लाह** का

क़ुदरते बशरी से बाहर है, वोह किसी इन्सान का बनाया हुवा कैसे हो सकता है ! लिहाज़ा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िता़ब हुवा **238 :** या'नी ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام **239 :** क़ुरआने करीम की ह़लावत और इस के उ़लूम की नूरानिय्यत जब क़ुलूब की तस्ख़ीर (दिलों को अपनी त़रफ़ माइल) करने लगी और कुफ़्फ़ार ने देखा कि दुन्या इस की गिरवीदा होती चली जाती है और कोई तदबीर इस्लाम की मुख़ालफ़त में काम्याब नहीं होती तो उन्हों ने त़रह़ त़रह़ के इफ़्तिरा उठाने (बोहतान लगाने) शुरूअ़ किये कभी इस को सेहूर बताया तो कभी पहलों के क़िस्से और कहानियां कहा, कभी येह कहा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह ख़ुद बना लिया है और हर त़रह़ कोशिश की, कि किसी त़रह़ लोग इस किताबे मुक़द्दस की त़रफ़ से बद गुमान हों, इन्हीं मक्कारियों में से एक मक्र येह भी था कि उन्हों ने एक अ़जमी ग़ुलाम की निस्बत कहा कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सिखाता है। इस के रद में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐसी बात़िल बातें दुन्या में कौन क़बूल कर सकता है, जिस ग़ुलाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार निस्बत करते हैं वोह तो अ़जमी है ऐसा कलाम बनाना उस के तो क्या इम्कान में होता तुम्हारे फ़ुसहा व बुलग़ा जिन की ज़बान दानी पर अहले अ़रब को फ़ख़्रो नाज़ है वोह सब के सब ह़ैरान हैं और चन्द जुम्ले क़ुरआन की मिस्ल बनाना उन्हें मुहा़ल और उन की क़ुदरत से बाहर है तो एक अ़जमी की त़रफ़ एसी निस्बत किस क़दर बात़िल और बेशर्मी का फ़े'ल है, ख़ुदा की शान जिस ग़ुलाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार येह निस्बत करते थे उस को भी इस कलाम के ए'जाज़ ने तस्ख़ीर किया और वोह भी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ल्क़ा बगोशे त़ाअ़त हुवा और सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाया। **240 :** और इस की तस्दीक़ नहीं करते **241 :** ब सबब इन्कारे क़ुरआन व तक्ज़ीबे रसूल عَلَيْهِ السَّلَام के। **242 :** या'नी झूट बोलना और इफ़्तिरा करना बे ईमानों ही का काम है। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि झूट कबीरा गुनाहों में बद तरीन गुनाह है। **243 :** उस पर **अल्लाह** का ग़ज़ब, **244 :** वोह मग़ज़ूब नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़म्मार बिन यासिर के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हें और उन के वालिद यासिर और उन की वालिदा सुमय्या और सुहैब और बिलाल और ख़ब्बाब और सालिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को पकड़ कर कुफ़्फ़ार ने सख़्त सख़्त ईज़ाएं दीं ताकि वोह इस्लाम से फिर जाएं लेकिन येह ह़ज़रात न फिरे, तो कुफ़्फ़ार ने ह़ज़रते अ़म्मार के वालिदैन को बहुत बे रह़मियों से क़त्ल किया और अ़म्मार

مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

ग़ज़ब है और उन को बड़ा अ़ज़ाब है   येह इस लिये कि उन्हों ने दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत से

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

प्यारी जानी[246]   और इस लिये कि **अल्लाह** (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता   येह हैं वोह जिन के

طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

दिल और कान और आंखों पर **अल्लाह** ने मोहर कर दी है[247]   और वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं[248]

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ

आप ही हुवा कि आख़िरत में वोही ख़राब हैं[249]   फिर बेशक तुम्हारा रब उन के लिये जिन्हों ने

هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا

अपने घर छोड़े[250] बा'द इस के कि सताए गए[251] फिर उन्हों ने[252] जिहाद किया और साबिर रहे   बेशक तुम्हारा रब इस[253] के बा'द

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ ع يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ

ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान   जिस दिन हर जान अपनी ही त़रफ़ झगड़ती आएगी[254] और हर जान को

نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً

उस का किया पूरा भर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा[255]   और **अल्लाह** ने कहावत बयान फ़रमाई[256] एक बस्ती[257]

ज़ईफ़ थे भाग नहीं सकते थे, उन्हों ने मजबूर हो कर जब देखा कि जान पर बन गई तो बा दिले न ख़्वास्ता कलिमए कुफ़्र का तलफ़्फ़ुज़ कर दिया। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी गई कि अ़म्मार काफ़िर हो गए। फ़रमाया : हरगिज़ नहीं ! अ़म्मार सर से पाउं तक ईमान से पुर हैं और उस के गोश्त और ख़ून में ज़ौक़े ईमानी सरायत कर गया है, फिर ह़ज़रते अ़म्मार रोते हुए ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए, हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या हुवा ? अ़म्मार ने अ़र्ज़ किया : ऐ ख़ुदा के रसूल ! बहुत ही बुरा हुवा और बहुत ही बुरे कलिमे मेरी ज़बान पर जारी हुए। इर्शाद फ़रमाया : उस वक़्त तेरे दिल का क्या ह़ाल था ? अ़र्ज़ किया : दिल ईमान पर ख़ूब जमा हुवा था। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने शफ़्क़तो रह़मत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो येही करना चाहिये, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن)
मस्अला : आयत से मा'लूम हुवा कि ह़ालाते इक्राह (कुफ़्र पर मजबूर किये जाने की ह़ालत) में अगर दिल ईमान पर जमा हुवा हो तो कलिमए कुफ़्र का इज्रा (ज़बान पर जारी करना) जाइज़ है जब कि आदमी को अपने जान या किसी उ़ज़्व के तलफ़ (ज़ाएअ़) होने का ख़ौफ़ हो। **मस्अला :** अगर इस ह़ालत में भी सब्र करे और क़त्ल कर डाला जाए तो वोह माजूर (सवाब पाएगा) और शहीद होगा, जैसा कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सब्र किया और वोह सूली पर चढ़ा कर शहीद कर डाले गए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें सय्यिदुश्शुहदा फ़रमाया। **मस्अला :** जिस शख़्स को मजबूर किया जाए अगर उस का दिल ईमान पर जमा हुवा न हो, वोह कलिमए कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर हो जाएगा। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स बिग़ैर मजबूरी के तमस्ख़ुर या जहल से कलिमए कुफ़्र ज़बान पर जारी करे काफ़िर हो जाएगा। (تفسیر احمدی) **245 :** रिज़ा मन्दी और ए'तिक़ाद के साथ **246 :** और येह दुन्या इरतिदाद (मुरतद होने) पर इक़्दाम करने का सबब है। **247 :** न वोह तदब्बुर (अन्जाम पर ग़ौर) करते हैं, न मवाइज़ व नसाएह़ पर कान रखते हैं, न त़रीक़े रुश्दो सवाब को देखते हैं। **248 :** कि अपनी आ़क़िबत व अन्जामे कार को नहीं सोचते। **249 :** कि उन के लिये दाइमी अ़ज़ाब है। **250 :** और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए त़य्यिबा को हिजरत की **251 :** कुफ़्फ़ार ने उन पर सख़्तियां कीं और उन्हें कुफ़्र पर मजबूर किया। **252 :** हिजरत के बा'द **253 :** हिजरत व जिहाद व सब्र **254 :** वोह रोज़े क़ियामत है जब हर एक नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और सब को अपनी अपनी पड़ी होगी। **255 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत लोगों में ख़ुसूमत (दुश्मनी) यहां तक बढ़ेगी कि रूह़ व

كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَىٕنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ

कि अमान व इत्मीनान से थी[258] हर तरफ़ से उस की रोज़ी कसरत से आती तो वोह **अल्लाह** की ने'मतों की नाशुक्री करने लगी[259]

بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَ الْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

तो **अल्लाह** ने उसे येह सज़ा चखाई कि उसे भूक और डर का पहनावा पहनाया[260] बदला उन के किये का

وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَ هُمْ

और बेशक उन के पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया[261] तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें अज़ाब ने पकड़ा[262] और वोह

ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّ اشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

बे इन्साफ़ थे तो **अल्लाह** की दी हुई रोज़ी[263] हलाल पाकीज़ा खाओ[264] और **अल्लाह** की ने'मत का शुक्र करो

اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ

अगर तुम उसे पूजते हो तुम पर तो येही हराम किया है मुर्दार और खून और सुअर का

الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ

गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया[265] फिर जो लाचार हो[266] न ख़्वाहिश करता और न हद से बढ़ता[267] तो बेशक

जिस्म में झगड़ा होगा। रूह कहेगी : या रब ! न मेरे हाथ था कि मैं किसी को पकड़ती न पाउं था कि चलती न आंख थी कि देखती। जिस्म कहेगा : या रब ! मैं तो लकड़ी की तरह था न मेरा हाथ पकड़ सकता था न पाउं चल सकता था न आंख देख सकती थी, जब येह रूह नूरी शुआअ़ की तरह आई तो इस से मेरी ज़बान बोलने लगी, आंख बीना हो गई, पाउं चलने लगे, जो कुछ किया इस ने किया। **अल्लाह** तआ़ला एक मिसाल बयान फ़रमाएगा कि एक अन्धा और एक लूला दोनों एक बाग़ में गए, अन्धे को तो फल नज़र नहीं आते थे और लूले का हाथ उन तक नहीं पहुंचता था तो अन्धे ने लूले को अपने ऊपर सुवार कर लिया, इस तरह उन्हों ने फल तोड़े तो सज़ा के वोह दोनों मुस्तहिक़ हुए, इस लिये रूह और जिस्म दोनों मुल्ज़म हैं। **256 :** ऐसे लोगों के लिये जिन पर **अल्लाह** तआ़ला ने इन्आ़म किया और वोह उस ने'मत पर मग़रूर हो कर नाशुक्री करने लगे काफ़िर हो गए। येह सबब **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी का हुवा, उन की मिसाल ऐसी समझो जैसे कि **257 :** मिस्ल मक्का के **258 :** न उस पर ग़नीम चढ़ता (दुश्मन हम्ला करता) न वहां के लोग क़त्ल व क़ैद की मुसीबत में गिरिफ़्तार किये जाते। **259 :** और उस ने **अल्लाह** के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की। **260 :** कि सात बरस नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बद दुआ़ से क़हत़ और ख़ुश्क साली की मुसीबत में गिरिफ़्तार रहे, यहां तक कि मुर्दार खाते थे, फिर अम्नो इत्मीनान के बजाए ख़ौफ़ो हिरास उन पर मुसल्लत़ हुवा और हर वक़्त मुसल्मानों के हम्ले और लश्कर कशी का अन्देशा रहने लगा। **261 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **262 :** भूक और ख़ौफ़ के **263 :** जो उस ने सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से अ़ता फ़रमाई। **264 :** बजाए उन हराम और ख़बीस अम्वाल के जो खाया करते थे लूट, ग़स्ब और ख़बीस मकासिब (पेशे) से हासिल किये हुए। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस आयत में मुख़ात़ब मुसल्मान हैं और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि मुख़ात़ब मुश्रिकीने मक्का हैं। कलबी ने कहा कि जब अहले मक्का क़हत़ के सबब भूक से परेशान हुए और तक्लीफ़ की बरदाश्त न रही तो उन के सरदारों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप से दुश्मनी तो मर्द करते हैं औ़रतों और बच्चों को जो तक्लीफ़ पहुंच रही है उस का ख़याल फ़रमाइये। इस पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इजाज़त दी कि उन के लिये तआ़म ले जाया जाए, इस आयत में इस का बयान हुवा। इन दोनों क़ौलों में अव्वल सहीह तर है। (خازن) **265 :** या'नी उस को बुतों के नाम पर ज़ब्ह किया गया हो। **266 :** और इन हराम चीज़ों में से कुछ खाने पर मजबूर हो **267 :** या'नी क़दरे ज़रूरत पर सब्र कर के।

اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُوۡلُوۡا لِمَا تَصِفُ اَلۡسِنَتُكُمُ الۡكَذِبَ هٰذَا

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं येह

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفۡتَرُوۡا عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ

हलाल है और येह हराम है कि अल्लाह पर झूट बांधो[268] बेशक जो

يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ لَا يُفۡلِحُوۡنَ ﴿١١٦﴾ؕ مَتَاعٌ قَلِيۡلٌ ۖ وَّلَهُمۡ

अल्लाह पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा थोड़ा बरत्ना है[269] और उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِيۡنَ هَادُوۡا حَرَّمۡنَا مَا قَصَصۡنَا عَلَيۡكَ مِنۡ

दर्दनाक अज़ाब[270] और ख़ास यहूदियों पर हम ने हराम फ़रमाई वोह चीज़ें जो पहले तुम्हें

قَبۡلُ ۚ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَلٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ

सुनाईं[271] और हम ने उन पर ज़ुल्म न किया हां वोही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे[272] फिर बेशक तुम्हारा रब

لِلَّذِيۡنَ عَمِلُوا السُّوۡٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ وَاَصۡلَحُوۡۤا

उन के लिये जो नादानी से[273] बुराई कर बैठें फिर उस के बा'द तौबा करें और संवर जाएं

اِنَّ رَبَّكَ مِنۡۢ بَعۡدِهَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١١٩﴾ع اِنَّ اِبۡرٰهِيۡمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا

बेशक तुम्हारा रब इस के बा'द[274] ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक इब्राहीम एक इमाम था[275] अल्लाह का फ़रमां बरदार

لِّلّٰهِ حَنِيۡفًا ؕ وَلَمۡ يَكُ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿١٢٠﴾ۙ شَاكِرًا لِّاَنۡعُمِهٖ ؕ اِجۡتَبٰهُ

और सब से जुदा[276] और मुश्रिक न था[277] उस के एहसानों पर शुक्र करने वाला अल्लाह ने उसे चुन लिया[278]

وَهَدٰٮهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيۡنٰهُ فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ

और उसे सीधी राह दिखाई और हम ने उसे दुन्या में भलाई दी[279] और बेशक वोह

268 : ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग अपनी तरफ़ से बा'ज़ चीज़ों को हलाल बा'ज़ चीज़ों को हराम कर लिया करते थे और उस की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ कर दिया करते थे, इस की मुमानअत फ़रमाई गई और इस को अल्लाह पर इफ़्तिरा फ़रमाया गया। आज कल भी जो लोग अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम बता देते हैं जैसे मीलाद शरीफ़ की शीरीनी, फ़ातिहा, ग्यारहवीं, उर्स वग़ैरा ईसाले सवाब की चीज़ें जिन की हुरमत शरीअत में वारिद नहीं हुई, उन्हें इस आयत के हुक्म से डरना चाहिये कि ऐसी चीज़ों की निस्बत येह कह देना कि येह शरअन हराम हैं अल्लाह तआला पर इफ़्तिरा करना है। **269 :** और दुन्या की चन्द रोज़ा आसाइश है जो बाक़ी रहने वाली नहीं। **270 :** है आख़िरत में **271 :** सूरए अन्आम में आयत ''وَعَلَى الَّذِيۡنَ هَادُوۡا حَرَّمۡنَا كُلَّ ذِىۡ ظُفُرٍ الآية'' में **272 :** बग़ावत व मा'सियत का इरतिकाब कर के जिस की सज़ा में वोह चीज़ें उन पर हराम हुईं, जैसा कि आयत ''فَبِظُلۡمٍ مِّنَ الَّذِيۡنَ هَادُوۡا حَرَّمۡنَا عَلَيۡهِمۡ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتۡ لَهُمۡ'' में इर्शाद फ़रमाया गया। **273 :** बिग़ैर अन्जाम सोचे **274 :** या'नी तौबा के **275 :** नेक ख़साइल और पसन्दीदा अख़्लाक़ और हमीदा सिफ़ात का जामेअ़ **276 :** दीने इस्लाम पर क़ाइम **277 :** इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तक्ज़ीब है जो अपने आप को दीने इब्राहीमी पर ख़याल करते थे। **278 :** अपनी नुबुव्वत व ख़ुल्लत के लिये **279 :** रिसालत

فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٢٢ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ

आख़िरत में शायाने क़ुर्ब है फिर हम ने तुम्हें वह्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٢٣ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى

करो जो हर बातिल से अलग था और मुशरिक न था[280] हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था

الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

जो इस में मुख़्तलिफ़ हो गए[281] और बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١٢٤ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ

इख़्तिलाफ़ करते थे[282] अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ[283] पक्की तदबीर और अच्छी

الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

नसीहत से[284] और उन से उस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो[285] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की

عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝١٢٥ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ

राह से बहका और वोह ख़ूब जानता है राह वालों को और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो

مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝١٢٦ وَاصْبِرْ

जैसी तक्लीफ़ तुम्हें पहुंचाई थी[286] और अगर तुम सब्र करो[287] तो बेशक सब्र वालों को सब्र सब से अच्छा और ऐ मह़बूब तुम सब्र करो

व अम्वाल व औलाद व सनाए ह़सन व क़बूले आ़म कि तमाम अद्यान वाले मुसल्मान और यहूद और नसारा और अ़रब के मुशरिकीन सब इन की अ़ज़मत करते और इन से मह़ब्बत रखते हैं। **280 :** इत्तिबाअ़ से मुराद यहां अ़क़ाइद व उसूले दीन में मुवाफ़क़त करना है। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस इत्तिबाअ़ का हुक्म किया गया, इस में आप की अ़ज़मतो मन्ज़िलत और रिफ़्अ़ते दरजत (बुलन्द दरजात) का इज़्हार है कि आप का दीने इब्राहीमी की मुवाफ़क़त फ़रमाना ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये उन के तमाम फ़ज़ाइलो कमालात में सब से आ'ला फ़ज़्लो शरफ़ है क्यूं कि आप अक्रमुल अव्वलीन वल आख़िरीन हैं जैसा कि सह़ीह़ ह़दीस में वारिद हुवा और तमाम अम्बिया और कुल ख़ल्क़ से आप का मर्तबा अफ़्ज़लो आ'ला है : تو اصلی وباقی طفیل تواند : تو شاہی ومجموع خیل تواند (सब से पहले आप हैं और बाक़ी सब आप के तुफ़ैल, आप बादशाह हैं बाक़ी सब आप की रिआ़या है) **281 :** या'नी शम्बे की ता'ज़ीम और इस रोज़ शिकार तर्क करना और वक़्त को इ़बादत के लिये फ़ारिग़ करना यहूद पर फ़र्ज़ किया गया था और इस का वाक़िआ़ इस त़रह़ हुवा था कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें रोज़े जुमुआ़ की ता'ज़ीम का हुक्म फ़रमाया था और इर्शाद किया था कि हफ़्ते में एक दिन **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत के लिये ख़ास करो, इस दिन में कुछ काम न करो, इस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया और कहा वोह दिन जुमुआ़ नहीं बल्कि सनीचर होना चाहिये बजुज़ एक छोटी सी जमाअ़त के जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हुक्म की ता'मील में जुमुआ़ पर ही राज़ी हो गई थी। **अल्लाह** तआ़ला ने यहूद को सनीचर की इजाज़त दे दी और शिकार ह़राम फ़रमा कर इब्तिला (इम्तिह़ान) में डाल दिया तो जो लोग जुमुआ़ पर राज़ी हो गए थे वोह तो मुत़ीअ़ रहे और उन्हों ने इस हुक्म की फ़रमां बरदारी की। बाक़ी लोग सब्र न कर सके उन्हों ने शिकार किये और नतीजा येह हुवा कि मस्ख़ किये गए। येह वाक़िआ़ तफ़्सील के साथ सूरए आ'राफ़ में बयान हो चुका है। **282 :** इस त़रह़ कि मुत़ीअ़ को सवाब देगा और आ़सी को इ़क़ाब (अ़ज़ाब) फ़रमाएगा। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब फ़रमाया जाता है : **283 :** या'नी ख़ल्क़ को दीने इस्लाम की दा'वत दो **284 :** पक्की तदबीर से वोह दलीले मोह़कम मुराद है जो ह़क़ को वाज़ेह़ और शुबुहात को ज़ाइल कर दे और अच्छी नसीह़त से तरग़ीबात व तरहीबात मुराद हैं। **285 :** बेहतर त़रीक़ से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ उस की आयात और दलाइल से बुलाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दा'वते ह़क़ और इज़्हारे ह़क़्क़ानिय्यते दीन के लिये मुनाज़रा जाइज़ है।

وَ مَا صَبۡرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحۡزَنۡ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا تَكُ فِىۡ ضَيۡقٍ مِّمَّا

और तुम्हारा सब्र **अल्लाह** ही की तौफ़ीक़ से है और उन का ग़म न खाओ[288] और उन के फ़रेबों से दिलतंग

يَمۡكُرُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا وَّالَّذِيۡنَ هُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ ﴿۱۲۸﴾ ع

न हो[289] बेशक **अल्लाह** उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं

286 : या'नी सज़ा ब क़दरे जनायत (जुर्म के बराबर) हो उस से ज़ाइद न हो। **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों के शुहदा के चेहरों को ज़ख़्मी कर के उन की शक्लों को तब्दील किया था और उन के पेट चाक किये थे उन के आ'ज़ा काटे थे उन शुहदा में हज़रते हम्ज़ा भी थे। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब उन्हें देखा तो हुज़ूर को बहुत सदमा हुवा और हुज़ूर ने क़सम खाई कि एक हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बदला सत्तर काफ़िरों से लिया जाएगा और सत्तर का येही हाल किया जाएगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हुज़ूर ने वोह इरादा तर्क फ़रमाया और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दिया। **मस्अला :** मुस्लह या'नी नाक, कान वग़ैरा काट कर किसी की हैअत को तब्दील करना शरअ़ में हराम है। (مدارک) **287 :** और इन्तिक़ाम न लो **288 :** अगर वोह ईमान न लाएं **289 :** क्यूं कि हम तुम्हारे मुईन व नासिर हैं।

ایاتها ۱۱۱ ۱۷ سُوۡرَۃُ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡل مَکِّیَّۃٌ ۵۰ رکوعاتها ۱۲

सूरए बनी इसराईल मक्किय्या है, इस में 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह्म वाला[1]

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ

पाकी है उसे[2] जो रातों रात अपने बन्दे[3] को ले गया[4] मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे

الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ لِنُرِیَہٗ مِنۡ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہٗ ہُوَ السَّمِیۡعُ

अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) तक[5] जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी[6] कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता

1 : सूरए बनी इसराईल इस का नाम सूरए असरा और सूरए सुब्ह़ान भी है, येह सूरत मक्किय्या है मगर आठ आयतें "وَاِنۡ کَادُوۡا لَیَفۡتِنُوۡنَکَ" से "نَصِیۡرًا" तक, येह क़ौल क़तादा का है। बैज़ावी ने जज़्म किया है कि येह सूरत तमाम की तमाम मक्किय्या है। इस सूरत में बारह रुकूअ़ और एक सो दस आयतें बसरी हैं और कूफ़ी एक सो ग्यारह और पांच सो तैंतीस कलिमे और तीन हज़ार चार सो साठ ह़र्फ़ हैं। 2 : मुनज़्ज़ा (पाक) है उस की ज़ात हर ऐब व नक़्स से। 3 : मह़बूब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 4 : शबे मे'राज 5 : जिस का फ़ासिला चालीस मन्ज़िल या'नी सवा महीने से ज़ियादा की राह है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم शबे मे'राज दरजाते आ़लिया व मरातिबे रफ़ीआ़ (बुलन्द तरीन मर्तबों) पर फ़ाइज़ हुए तो रब عَزَّوَجَلَّ ने ख़िता़ब फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) येह फ़ज़ीलत व शरफ़ मैं ने तुम्हें क्यूं अ़ता फ़रमाया ? हुज़ूर ने अ़र्ज़ किया : इस लिये कि तू ने मुझे अ़ब्दिय्यत के साथ अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाया, इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (خازن) 6 : दीनी भी दुन्यवी भी कि वोह सर ज़मीने पाक, वह्य की जाए नुज़ूल और अम्बिया की इबादत गाह और उन का जाए क़ियाम व क़िब्लए इबादत है और कस्रते अन्हार व अश्जार (दरियाओं और दरख़्तों की कसरत) से वोह ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब और मेवों और फलों की कसरत से बेहतरीन ऐ़शो राह़त का मक़ाम है। मे'राज शरीफ़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم का एक जलील मो'जिज़ा और अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत है और इस से हुज़ूर का वोह कमाले क़ुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूके़ इलाही में आप के सिवा किसी को मुयस्सर नहीं, नुबुव्वत के बारहवें साल सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم मे'राज से नवाज़े गए, महीने में इख़्तिलाफ़ है मगर अश्हर (ज़ियादा मश्हूर) येह है कि सत्ताईसवीं रजब को मे'राज हुई। मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूरे पुरनूर का बैतुल मक़्दिस तक शब के छोटे हिस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से क़ुरआनी से साबित है इस का मुन्किर काफ़िर है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले क़ुर्ब में पहुंचना अह़ादीसे सह़ीह़ा मो'तमदा मश्हूरा से साबित है जो ह़द्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं, इस का मुन्किर गुमराह है। मे'राज शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, येही जुम्हूर अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर के अजल्ला अस्ह़ाब (जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम) इसी के मो'तक़िद हैं, नुसूसे आयात व अह़ादीस से भी येही मुस्तफ़ाद होता है। तीरह दिमाग़ाने फ़ल्सफ़ा (बे वुक़ूफ़ फ़ल्सफ़ियों) के अवहामे फ़ासिदा (फ़ासिद ख़यालात व गुमान) महज़ बातिल हैं, क़ुदरते इलाही के मो'तक़िद (पुख़्ता यक़ीन रखने वाले) के सामने वोह तमाम शुबुहात मह़ज़ बे ह़क़ीक़त हैं। ह़ज़रते जिब्रील का बुराक़ ले कर ह़ाज़िर होना, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को ग़ायत (इन्तिहाई) इक्राम व एह़तिराम के साथ सुवार कर के ले जाना, बैतुल मक़्दिस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم का अम्बिया की इमामत फ़रमाना, फिर वहां से सैरे समावात (आस्मानों की सैर) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, जिब्रीले अमीन का हर हर आस्मान के दरवाज़े खुलवाना, हर हर आस्मान पर वहां के साहिबे मक़ाम अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام का शरफ़े ज़ियारत से मुशर्रफ़ होना और हुज़ूर की तक्रीम करना, एह़तिराम बजा लाना, तशरीफ़ आवरी की मुबारक बादें देना, हुज़ूर का एक आस्मान से दूसरे आस्मान की त़रफ़ सैर फ़रमाना, वहां के अ़जाइब देखना और तमाम मुक़र्रबीन की निहायते मनाज़िल (मनाज़िल की इन्तिहा) **"सिद्रतुल मुन्तहा"** को पहुंचना जहां से आगे बढ़ने की किसी मलके मुक़र्रब को भी मजाल नहीं है, जिब्रीले अमीन का वहां मा'ज़िरत कर के रह जाना, फिर मक़ामे क़ुर्बे ख़ास में हुज़ूर का तरक़्क़ियां फ़रमाना और उस क़ुर्बे आ'ला में पहुंचना कि जिस के तसव्वुर तक ख़ल्क़ के अवहाम व अफ़्कार (फ़िक्रो ख़याल) भी परवाज़ से आ़जिज़ हैं, वहां मूरिदे रह़मतो करम होना और इन्आ़माते इलाहिय्यह और ख़साइसे निअ़म (ख़ुसूसी ने'मतों) से सरफ़राज़ फ़रमाया जाना और मलकूते समावात व अर्ज़ और उन से अफ़्ज़लो बरतर उ़लूम पाना और उम्मत के लिये नमाज़ें फ़र्ज़ होना, हुज़ूर का शफ़ाअ़त फ़रमाना, जन्नत व दोज़ख़ की सैरें और फिर अपनी जगह वापस तशरीफ़ लाना और इस वाक़िए की ख़बरें देना, कुफ़्फ़ार का इस पर शोरिशें मचाना और बैतुल मक़्दिस की इमारत का ह़ाल और मुल्के शाम जाने वाले क़ाफ़िलों की कैफ़िय्यतें हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त करना, हुज़ूर का सब कुछ बताना और क़ाफ़िलों के जो अह़वाल हुज़ूर ने बताए क़ाफ़िलों के आने पर उन

الْبَصِیْرُ ① وَ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ

देखता है और हम ने मूसा को किताब[7] अ़ता फ़रमाई और उसे बनी इसराईल के लिये हिदायत किया

اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَكِیْلًا ② ذُرِّیَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ اِنَّهٗ

कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ (काम बनाने वाला) न ठहराओ ऐ उन की औलाद जिन को हम ने नूह़ के साथ[8] सुवार किया बेशक वोह

كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③ وَ قَضَیْنَآ اِلٰى بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ

बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था[9] और हम ने बनी इसराईल को किताब[10] में वह़्य भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में

فِی الْاَرْضِ مَرَّتَیْنِ وَ لَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِیْرًا ④ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا

दो बार फ़साद मचाओगे[11] और ज़रूर बड़ा ग़ुरूर करोगे[12] फिर जब उन में पहली बार[13] का वा'दा आया[14]

بَعَثْنَا عَلَیْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّیَارِ

हम ने तुम पर अपने कुछ बन्दे भेजे सख़्त लड़ाई वाले[15] तो वोह शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश को घुसे[16]

وَ كَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَیْهِمْ وَ اَمْدَدْنٰكُمْ

और येह एक वा'दा था[17] जिसे पूरा होना फिर हम ने उन पर उलट कर तुम्हारा ह़म्ला कर दिया[18] और तुम को

بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِیْنَ وَ جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِیْرًا ⑥ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ

मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जथ्था बढ़ा दिया अगर तुम भलाई करोगे

لِاَنْفُسِكُمْ وَ اِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِیَسُوْٓءٗا

अपना भला करोगे[19] और बुरा करोगे तो अपना फिर जब दूसरी बार का वा'दा आया[20] कि दुश्मन

की तस्दीक़ होना, येह तमाम सिहाह़ की मो'तबर अह़ादीस से साबित है और ब कसरत अह़ादीस इन तमाम उमूर के बयान और इन की तफ़सील से मम्लू (भरी हुई) हैं। **7 :** या'नी तौरैत **8 :** कश्ती में **9 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام कसीरुश्शुक्र (बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाले) थे, जब कुछ खाते पीते पहनते तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करते और उस का शुक्र बजा लाते और उन की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) पर लाज़िम है कि वोह अपने जद्दे मोह़तरम के त़रीक़े पर क़ाइम रहे। **10 :** तौरैत **11 :** इस से ज़मीने शाम व बैतुल मक़्दिस मुराद है और दो मरतबा के फ़साद का बयान अगली आयत में आता है। **12 :** और ज़ुल्मो बग़ावत में मुब्तला होगे। **13 :** के फ़साद के अ़ज़ाब **14 :** और उन्हों ने अह़कामे तौरैत की मुख़ालफ़त की और मह़ारिम व मआ़सी (ह़राम व गुनाह) का इरतिकाब किया और ह़ज़रते शा'या पैग़म्बर عَلَیْهِ السَّلَام (व बक़ौले) (और दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़) ह़ज़रते अरमिया को क़त्ल किया। (بیضاوی وغیرہ) **15 :** बहुत ज़ोर व क़ुव्वत वाले, उन को तुम पर मुसल्लत़ किया और वोह सिन्जारीब और उस की अफ़्वाज हैं या बुख़्ते नसर या जालूत जिन्हों ने बनी इसराईल के उ़लमा को क़त्ल किया, तौरैत को जलाया, मस्जिद को ख़राब किया और सत्तर हज़ार को उन में से गिरिफ़्तार किया। **16 :** कि तुम्हें लूटें और क़त्ल व क़ैद करें। **17 :** अ़ज़ाब का कि लाज़िम था। **18 :** जब तुम ने तौबा की और तकब्बुर व फ़साद से बाज़ आए तो हम ने तुम को दौलत दी और उन पर ग़लबा इनायत फ़रमाया जो तुम पर मुसल्लत़ हो चुके थे। **19 :** तुम्हें उस भलाई की जज़ा मिलेगी। **20 :** और तुम ने फिर फ़साद बरपा किया, ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام के क़त्ल के दरपै हुए, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बचाया और अपनी त़रफ़ उठा लिया और तुम ने ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़या عَلَیْهِمُ السَّلَام को क़त्ल किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर अहले फ़ारस और रूम को मुसल्लत़ किया कि तुम्हारे वोह दुश्मन तुम्हें क़त्ल करें, क़ैद करें और तुम्हें इतना परेशान करें

وُجُوۡهَكُمۡ وَلِيَدۡخُلُوا الۡمَسۡجِدَ كَمَا دَخَلُوۡهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوۡا

तुम्हारा मुंह बिगाड़ दें[21] और मस्जिद में दाख़िल हों[22] जैसे पहली बार दाख़िल हुए थे[23] और जिस चीज़ पर क़ाबू

مَا عَلَوۡا تَتۡبِيۡرًا ۝٧ عَسٰى رَبُّكُمۡ اَنۡ يَّرۡحَمَكُمۡ‌ ۚ وَاِنۡ عُدۡتُّمۡ عُدۡنَا‌ ۘ

पाएं[24] तबाह कर के बरबाद कर दें क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम पर रह़म करे[25] और अगर तुम फिर शरारत करो[26] तो हम फिर अ़ज़ाब करेंगे[27]

وَقف لازم

وَجَعَلۡنَا جَهَنَّمَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ حَصِيۡرًا ۝٨ اِنَّ هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ يَهۡدِىۡ لِلَّتِىۡ هِىَ

और हम ने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदख़ाना बनाया है बेशक येह क़ुरआन वोह राह दिखाता है जो

اَقۡوَمُ وَيُبَشِّرُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ الَّذِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ اَجۡرًا

सब से सीधी है[28] और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उन के लिये बड़ा

كَبِيۡرًا ۝٩ وَّاَنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ اَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ عَذَابًا

सवाब है और येह कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार

اَلِيۡمًا ۝١٠ ع وَيَدۡعُ الۡاِنۡسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالۡخَيۡرِ‌ ؕ وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ

कर रखा है और आदमी बुराई की दुआ़ करता है[29] जैसे भलाई मांगता है[30] और आदमी बड़ा

عَجُوۡلًا ۝١١ وَجَعَلۡنَا الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيۡنِ فَمَحَوۡنَاۤ اٰيَةَ الَّيۡلِ وَجَعَلۡنَاۤ

जल्द बाज़ है[31] और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया[32] तो रात की निशानी मिटी हुई रखी[33] और दिन की

اٰيَةَ النَّهَارِ مُبۡصِرَةً لِّتَبۡتَغُوۡا فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَلِتَعۡلَمُوۡا عَدَدَ السِّنِيۡنَ

निशानी दिखाने वाली की[34] कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो[35] और[36] बरसों की गिनती और

21 : कि रन्जो परेशानी के आसार तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर हों 22 : या'नी बैतुल मक़्दिस में और उस को वीरान करें 23 : और उस को वीरान किया था तुम्हारे पहले फ़साद के वक़्त 24 : बिलादे बनी इसराईल से उस को 25 : दूसरी मरतबा के बा'द भी अगर तुम दोबारा तौबा करो और मआ़सी से बाज़ आओ। 26 : तीसरी मरतबा। 27 : चुनान्चे ऐसा हुवा और उन्हों ने फिर अपनी शरारत की त़रफ़ औ़द किया (पलटे) और ज़मानए पाके मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की तक्ज़ीब की तो क़ियामत तक के लिये उन पर ज़िल्लत लाज़िम कर दी गई और मुसल्मान उन पर मुसल्लत़ फ़रमा दिये गए जैसा कि क़ुरआने करीम में यहूद की निस्बत वारिद हुवा : ''ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ'' الآيہ। 28 : वोह अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस के रसूलों पर ईमान लाना और उन की इत़ाअ़त करना है। 29 : अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल के लिये और अपनी औलाद के लिये और ग़ुस्से में आ कर उन सब को कोसता है और उन के लिये बद दुआ़एं करता है। 30 : अगर अल्लाह तआ़ला उस की येह बद दुआ़ क़बूल कर ले तो वोह शख़्स या उस के अहलो माल हलाक हो जाएं लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उस को क़बूल नहीं फ़रमाता। 31 : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में इन्सान से काफ़िर मुराद है और बुराई की दुआ़ से उस का अ़ज़ाब की जल्दी करना और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि नज़्र बिन ह़ारिस काफ़िर ने कहा : या रब ! अगर येह दीने इस्लाम तेरे नज़्दीक ह़क़ है तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या दर्दनाक अ़ज़ाब भेज अल्लाह तआ़ला ने उस की येह दुआ़ क़बूल कर ली और उस की गरदन मारी गई। 32 : अपनी वह़्दानिय्यत व क़ुदरत पर दलालत करने वाली 33 : या'नी शब को तारीक किया ताकि उस में आराम किया जाए। 34 : रोशन कि उस में सब चीज़ें नज़र आएं। 35 : और कस्बो मआ़श के काम ब आसानी अन्जाम दे सको। 36 : रात दिन के दौरे से

وَالۡحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَیۡءٍ فَصَّلۡنٰهُ تَفۡصِیۡلًا ﴿۱۲﴾ وَكُلَّ اِنۡسَانٍ اَلۡزَمۡنٰهُ طٰٓىِٕرَهٗ

हिसाब जानो[37] और हम ने हर चीज़ ख़ूब जुदा जुदा ज़ाहिर फ़रमा दी[38] और हर इन्सान की क़िस्मत हम ने उस के

فِیۡ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخۡرِجُ لَهٗ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلۡقٰىهُ مَنۡشُوۡرًا ﴿۱۳﴾ اِقۡرَاۡ

गले से लगा दी है[39] और उस के लिये क़ियामत के दिन एक नविश्ता (तह़रीर) निकालेंगे जिसे खुला हुवा पाएगा[40] फ़रमाया जाएगा कि अपना

كِتٰبَكَ ؕ كَفٰی بِنَفۡسِكَ الۡیَوۡمَ عَلَیۡكَ حَسِیۡبًا ﴿ؕ۱۴﴾ مَنِ اهۡتَدٰی فَاِنَّمَا

नामा (आ'माल) पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना ह़िसाब करने को बहुत है जो राह पर आया वोह

یَهۡتَدِیۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیۡهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

अपने ही भले को राह पर आया[41] और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका[42] और कोई बोझ उठाने वाली जान

وِّزۡرَ اُخۡرٰی ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیۡنَ حَتّٰی نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَاۤ

दूसरे का बोझ न उठाएगी[43] और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें[44] और जब

اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نُّهۡلِكَ قَرۡیَةً اَمَرۡنَا مُتۡرَفِیۡهَا فَفَسَقُوۡا فِیۡهَا فَحَقَّ عَلَیۡهَا

हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उस के ख़ुशह़ालों (अमीरों)[45] पर अह़काम भेजते हैं फिर वोह उस में बे हुक्मी करते हैं तो उस पर

الۡقَوۡلُ فَدَمَّرۡنٰهَا تَدۡمِیۡرًا ﴿۱۶﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنَ الۡقُرُوۡنِ مِنۡۢ بَعۡدِ

बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तबाह कर के बरबाद कर देते हैं और हम ने कितनी ही संगतें (क़ौमें)[46] नूह़ के बा'द हलाक

نُوۡحٍ ؕ وَكَفٰی بِرَبِّكَ بِذُنُوۡبِ عِبَادِهٖ خَبِیۡرًۢا بَصِیۡرًا ﴿۱۷﴾ مَنۡ كَانَ یُرِیۡدُ

कर दीं[47] और तुम्हारा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बरदार देखने वाला[48] जो येह जल्दी वाली

الۡعَاجِلَةَ عَجَّلۡنَا لَهٗ فِیۡهَا مَا نَشَآءُ لِمَنۡ نُّرِیۡدُ ثُمَّ جَعَلۡنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ

चाहे[49] हम उसे उस में जल्द दे दें जो चाहें जिसे चाहें[50] फिर उस के लिये जहन्नम कर दें

37 : दीनी व दुन्यवी कामों के अवक़ात का। **38 :** ख़्वाह उस की ह़ाजत दीन में हो या दुन्या में। मुद्दआ़ येह है कि हर एक चीज़ की तफ़्सील फ़रमा दी जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया ''مَافَرَّطْنَا فِی الْکِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ'' हम ने किताब में कुछ छोड़ न दिया और एक और आयत में इर्शाद किया ''وَنَزَّلْنَا عَلَیْکَ الْکِتٰبَ تِبْیَانًا لِّکُلِّ شَیْءٍ'' ग़रज़ इन आयात से साबित है कि क़ुरआने करीम में जमीअ़ अश्या का बयान है। ''سُبْحٰنَ اللّٰہ'' क्या किताब है ! कैसी इस की जामिइय्यत ! (جمل،خازن،مدارک وغیرہ) **39 :** या'नी जो कुछ उस के लिये मुक़द्दर किया गया है ख़ैर या शर, सआ़दत या शक़ावत वोह उस को इस त़रह़ लाज़िम है जैसे गले का हार जहां जाए साथ रहे कभी जुदा न हो। मुजाहिद ने कहा कि हर इन्सान के गले में उस की सआ़दत या शक़ावत का नविश्ता (लिखा हुवा) डाल दिया जाता है। **40 :** वोह उस का आ'माल नामा होगा। **41 :** उस का सवाब वोही पाएगा। **42 :** उस के बहकने का गुनाह और वबाल उस पर **43 :** हर एक के गुनाहों का बार उसी पर होगा। **44 :** जो उम्मत को उस के फ़राइज़ से आगाह फ़रमाए और राहे ह़क़ उन पर वाज़ेह़ करे और हुज्जत क़ाइम फ़रमाए।

يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ سَعٰى لَهَا سَعْیَهَا

कि उस में जाए मज़म्मत किया हुवा धक्के खाता और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे[51]

وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ كَانَ سَعْیُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَ

और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी[52] हम सब को मदद देते हैं इन को भी[53] और

هٰۤؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَؕ وَ مَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾ اُنْظُرْ

उन को भी[54] तुम्हारे रब की अ़ता से[55] और तुम्हारे रब की अ़ता पर रोक नहीं[56] देखो

كَیْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍؕ وَ لَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّ اَكْبَرُ

हम ने उन में एक को एक पर कैसी बड़ाई दी[57] और बेशक आख़िरत दरजों में सब से बड़ी और फ़ज़्ल में सब

تَفْضِیْلًا ﴿۲۱﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ ع

से आ'ला ऐ सुनने वाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया जाता बेकस[58]

وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने

عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ

उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं[59] तो उन से हूं (उफ़ तक) न कहना[60] और उन्हें न झिड़कना और

45 : और सरदारों 46 : या'नी तक्ज़ीब करने वाली उम्मतें 47 : मिस्ल आ़द व समूद वग़ैरा के। 48 : ज़ाहिर व बातिन का आ़लिम, उस से कुछ छुपाया नहीं जा सकता। 49 : या'नी दुन्या का त़लब गार हो। 50 : येह ज़रूरी नहीं कि त़ालिबे दुन्या की हर ख़्वाहिश पूरी की जाए और उसे दिया ही जाए और जो वोह मांगे वोही दिया जाए, ऐसा नहीं है, बल्कि उन में से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं, कभी ऐसा होता है कि मह़रूम कर देते हैं और कभी ऐसा होता है कि वोह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं, कभी ऐसा कि ऐश चाहता है तक्लीफ़ देते हैं, इन ह़ालतों में काफ़िर दुन्या व आख़िरत दोनों के टोटे (नुक़्सान) में रहा और अगर दुन्या में उस को उस की पूरी मुराद दे दी गई तो आख़िरत की बद नसीबी व शक़ावत जब भी है, ब ख़िलाफ़ मोमिन के जो आख़िरत का त़लब गार है अगर वोह दुन्या में फ़क़्र से भी बसर कर गया तो आख़िरत की दाइमी ने'मत उस के लिये है और अगर दुन्या में भी फ़ज़्ले इलाही से उस को ऐश मिला तो दोनों जहान में काम्याब, ग़रज़ मोमिन हर ह़ाल में काम्याब है और काफ़िर अगर दुन्या में आराम पा भी ले तो भी क्या ? क्यूं कि 51 : और अ़मले सालेह़ बजा लाए 52 : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अ़मल की मक़्बूलिय्यत के लिये तीन चीज़ें दरकार हैं : **एक** तो त़ालिबे आख़िरत होना या'नी निय्यत नेक। **दूसरे** सई या'नी अ़मल को ब एहतिमाम उस के हुक़ूक़ के साथ अदा करना। **तीसरी** ईमान जो सब से ज़ियादा ज़रूरी है। 53 : जो दुन्या चाहते हैं 54 : जो त़ालिबे आख़िरत हैं 55 : दुन्या में सब को रोज़ी देते हैं और अन्जाम हर एक का उस के ह़स्बे ह़ाल। 56 : दुन्या में सब उस से फ़ैज़ उठाते हैं नेक हों या बद। 57 : माल व कमाल व जाह व सरवत में। 58 : बे यारो मददगार। 59 : ज़ो'फ़ का ग़लबा हो आ'ज़ा में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उन के पास बे त़ाक़त था ऐसे ही वोह आख़िर उ़म्र में तेरे पास नातुवां रह जाएं 60 : या'नी ऐसा कोई कलिमा ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़रफ़ से त़बीअ़त पर कुछ गिरानी (बोझ) है।

قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ

उन से ता'ज़ीम की बात कहना[61] और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा[62] नर्म दिली से और

قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ

अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उ़म्र) में पाला[63] तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे

نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾ وَ

दिलों में है[64] अगर तुम लाइक़ हुए[65] तो बेशक वोह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है और

اٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ

रिश्तेदारों को उन का ह़क़ दे[66] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[67] और फ़ुज़ूल न उड़ा[68] बेशक

الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾

उड़ाने वाले (फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले) शैत़ानों के भाई हैं[69] और शैत़ान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है[70]

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا

और अगर तू उन से[71] मुंह फेरे अपने रब की रह़मत के इन्तिज़ार में जिस की तुझे उम्मीद है तो उन से आसान

---

61 : और हुस्ने अदब के साथ उन से ख़ित़ाब करना। **मस्अला :** मां बाप को उन का नाम ले कर न पुकारे येह ख़िलाफ़े अदब है और इस में उन की दिल आज़ारी है लेकिन वोह सामने न हों तो उन का ज़िक्र नाम ले कर करना जाइज़ है। **मस्अला :** मां बाप से इस त़रह़ कलाम करे जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम आक़ा से करता है। **62 :** या'नी ब नरमी व तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी से) पेश आ और उन के साथ थके वक़्त (बुढ़ापे) में शफ़्क़त व मह़ब्बत का बरताव कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त (बचपन में) तुझे मह़ब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वोह उन पर ख़र्च करने में दरेग़ न कर। **63 :** मुद्दआ़ येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एह़सान का ह़क़ अदा नहीं होता, इस लिये बन्दे को चाहिये कि बारगाहे इलाही में इन पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब ! मेरी ख़िदमतें इन के एह़सान की जज़ा नहीं हो सकतीं तू इन पर करम कर कि इन के एह़सान का बदला हो। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मान के लिये रह़मत व मग़्फ़िरत की दुआ़ जाइज़ और उसे फ़ाएदा पहुंचाने वाली है। मुर्दों के ईसाले सवाब में भी उन के लिये दुआ़ए रह़मत होती है लिहाज़ा उस के लिये येह आयत अस्ल है। **मस्अला :** वालिदैन काफ़िर हों तो उन के लिये हिदायत व ईमान की दुआ़ करे कि येही उन के ह़क़ में रह़मत है। ह़दीस शरीफ़ में है कि वालिदैन की रिज़ा में **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और उन की नाराज़ी में **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी है। दूसरी ह़दीस में है : वालिदैन का फ़रमां बरदार जहन्नमी न होगा और उन का ना फ़रमान कुछ भी अ़मल करे गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा। एक और ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो इस लिये कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और ना फ़रमान वोह ख़ुश्बू न पाएगा, न क़ातेए़ रेह़्म, न बूढ़ा ज़िनाकार, न तकब्बुर से अपनी इज़ार टख़्नों से नीचे लटकाने वाला। **64 :** वालिदैन की इत़ाअ़त का इरादा और उन की ख़िदमत का ज़ौक़। **65 :** और तुम से वालिदैन की ख़िदमत में तक़्सीर वाक़ेअ़ हुई तो तुम ने तौबा की। **66 :** उन के साथ सिलए रेह़्मी कर और मह़ब्बत और मेलजोल और ख़बरगीरी और मौक़अ़ पर मदद और हुस्ने मुआ़शरत। **मस्अला :** और अगर वोह मह़ारिम में से हों और मोह़ताज हो जाएं तो उन का ख़र्च उठाना, येह भी उन का ह़क़ है और साह़िबे इस्तित़ाअ़त रिश्तेदार पर लाज़िम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा है कि रिश्तेदारों से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ क़राबत रखने वाले मुराद हैं और उन का ह़क़्क़े ख़ुमुस देना और उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर बजा लाना है। **67 :** उन का ह़क़ दो या'नी ज़कात। **68 :** या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च न कर। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि "**تَبْذِیْر**" माल का नाह़क़ में ख़र्च करना है। **69 :** कि उन की राह चलते हैं। **70 :** तो उस की राह इख़्तियार करना न चाहिये। **71 :** या'नी रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मिहजअ़ व बिलाल व सुहैब व सालिम व ख़ब्बाब

مَّیْسُوْرًا ﴿۲۸﴾ وَلَا تَجْعَلْ یَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ

बात कह[72] और अपना हाथ अपनी गरदन से बंधा हुवा न रख और न पूरा

الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा[73] बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा

یَّشَآءُ وَیَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ﴿۳۰﴾ وَلَا تَقْتُلُوْۤا

देता और[74] कस्ता है (तंगी देता है) बेशक वोह अपने बन्दों को ख़ूब जानता[75] देखता है और अपनी औलाद

اَوْلَادَكُمْ خَشْیَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَ اِیَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ

को क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के डर से[76] हम तुम्हें भी और उन्हें भी रोज़ी देंगे बेशक उन का क़त्ल

خِطْاً كَبِیْرًا ﴿۳۱﴾ وَ لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَ سَآءَ

बड़ी ख़ता है और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे हयाई है और बहुत ही बुरी

سَبِیْلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ

राह और कोई जान जिस की हुरमत अल्लाह ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़

مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِیِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا یُسْرِفْ فِّی الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

मारा जाए तो बेशक हम ने उस के वारिस को क़ाबू दिया है[77] तो वोह क़त्ल में हद से न बढ़े[78] ज़रूर उस की

अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की शान में नाज़िल हुई जो वक़्तन फ़ वक़्तन सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से अपने हवाइज (हाजात) व ज़रूरिय्यात के लिये सुवाल करते रहते थे, अगर किसी वक़्त हुज़ूर के पास कुछ न होता तो आप "हयाअन" उन से ए'राज़ करते और ख़ामोश हो जाते ब ईं इन्तिज़ार कि अल्लाह तआला कुछ भेजे तो उन्हें अता फ़रमाएं। **72 :** या'नी उन की ख़ुशदिली के लिये उन से वा'दा कीजिये या उन के हक़ में दुआ फ़रमाइये। **73 :** येह तम्सील है जिस से इन्फ़ाक़ या'नी ख़र्च करने में ए'तिदाल मल्हूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और येह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और येह मा'लूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है देने के लिये हिल ही नहीं सकता, ऐसा करना तो सबबे मलामत होता है कि बख़ील कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरिय्यात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे। **शाने नुज़ूल :** एक मुसल्मान बीबी के सामने एक यहूदिया ने हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की सख़ावत का बयान किया और इस में इस हद तक मुबालग़ा किया कि हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم पर तरजीह दे दी और कहा कि हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات की सख़ावत तो इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरिय्यात के इलावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते, येह बात मुसल्मान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्हों ने कहा कि अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام सब साहिबे फ़ज़्लो कमाल हैं, हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं, लेकिन सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का मर्तबा सब से आ'ला है और येह कह कर उन्हों ने चाहा कि यहूदिया को हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के जूदो करम की आज़्माइश करा दी जाए। चुनान्चे उन्हों ने अपनी छोटी बच्ची को हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات की ख़िदमत में भेजा कि हुज़ूर से क़मीस मांग लाए उस वक़्त हुज़ूर के पास एक ही क़मीस थी जो जैबे तन थी वोही उतार कर अता फ़रमा दी और अपने आप दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ रखी शर्म से बाहर तशरीफ़ न लाए, यहां तक कि अज़ान का वक़्त आया अज़ान हुई, सहाबा ने इन्तिज़ार किया, हुज़ूर तशरीफ़ न लाए तो सब को फ़िक्र हुई, हाल मा'लूम करने के लिये दौलत सराए अक़्दस में हाज़िर हुए तो देखा कि जिस्मे मुबारक पर क़मीस नहीं है इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **74 :** जिसे चाहे उस के लिये तंगी करता और उस को **75 :** और उन के अहवाल व मसालेह को **76 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे और इस

مَنْصُوْرًا ﴿٣٣﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ

मदद होनी है[79] और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है[80] यहां तक कि वोह अपनी

اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ

जवानी को पहुंचे[81] और अ़ह्द पूरा करो[82] बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है और मापो तो

اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾

पूरा मापो और बराबर तराज़ू से तोलो येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ

और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इ़ल्म नहीं[83] बेशक कान और आंख और दिल इन सब

اُولٰٓىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ

से सुवाल होना है[84] और ज़मीन में इतराता न चल[85] बेशक तू हरगिज़

تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ

ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा[86] येह जो कुछ गुज़रा इन में की बुरी बात

عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ مِمَّاۤ اَوْحٰۤى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ

तेरे रब को ना पसन्द है येह उन वह़्यों में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी त़रफ़ भेजी ह़िक्मत की बातें[87]

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾

और ऐ सुनने वाले **अल्लाह** के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू जहन्नम में फेंका जाएगा त़ा'ना पाता धक्के खाता

के कई सबब थे नादारी व मुफ़्लिसी का ख़ौफ़, लूट का ख़ौफ़, **अल्लाह** तआला ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई। **77 :** क़िसास लेने का। **मस्अला :** आयत से साबित हुवा कि क़िसास लेने का ह़क़ वली को है और वोह ब तरतीबे अ़सबात हैं। **मस्अला :** और जिस का वली न हो उस का वली सुल्त़ान है। **78 :** और ज़मानए जाहिलिय्यत की त़रह एक मक़्तूल के इवज़ में कई कई को या बजाए क़ातिल के उस की क़ौम व जमाअ़त के और किसी शख़्स को क़त्ल न करे। **79 :** या'नी वली की या मक़्तूल मज़्लूम की या उस शख़्स की जिस को वली नाह़क़ क़त्ल करे। **80 :** वोह येह है कि उस की ह़िफ़ाज़त करो और उस को बढ़ाओ। **81 :** और वोह अठ्ठारह साल की उ़म्र है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما के नज़्दीक येही मुख़्तार है और ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़लामात ज़ाहिर न होने की ह़ालत में इन्तिहाए मुद्दते बुलूग़ इसी से तमस्सुक कर के अठ्ठारह साल क़रार दी। (احمدی) (अ़लामाते बुलूग़ ज़ाहिर न होने की सूरत में लड़का लड़की के लिये इन्तिहाई मुद्दते बुलूग़ 15 साल और अक़ल मुद्दत लड़के के लिये 12 और लड़की के लिये 9 साल है, और इसी क़ौल पर फ़तवा है। "फ़तावा रज़विय्या, जि. 11, स. 560" मुलख़्ख़सन) **82 : अल्लाह** का भी बन्दों का भी। **83 :** या'नी जिस चीज़ को देखा न हो उसे येह न कहो कि मैं ने देखा, जिस को सुना न हो उस की निस्बत न कहो कि मैं ने सुना। इब्ने ह़नीफ़ा से मन्क़ूल है कि झूटी गवाही न दो। इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : किसी पर वोह इल्ज़ाम न लगाओ जो तुम न जानते हो। **84 :** कि तुम ने इन से क्या काम लिया ? **85 :** तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से। **86 :** मा'ना येह हैं कि तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से कुछ फ़ाएदा नहीं। **87 :** जिन की सिह़्ह़त पर अ़क़्ल गवाही दे और उन से नफ़्स की इस्लाह़ हो उन की रिआ़यत लाज़िम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन आयात का ह़ासिल तौह़ीद और नेकियों और त़ाअ़तों का हुक्म देना और दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की त़रफ़ रग़बत दिलाना है।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِیْنَ وَ اتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓىٕكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ

क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिये और अपने लिये फ़िरिश्तों से बेटियां बनाईं[88] बेशक तुम

لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِیْمًا ﴿۴۰﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِیَذَّكَّرُوْا ؕ وَ

बड़ा बोल बोलते हो[89] और बेशक हम ने इस कुरआन में तरह तरह से बयान फ़रमाया[90] कि वोह समझें[91] और

مَا یَزِیْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا یَقُوْلُوْنَ اِذًا

इस से उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत[92] तुम फ़रमाओ अगर उस के साथ और ख़ुदा होते जैसा येह बकते हैं जब तो वोह

لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِی الْعَرْشِ سَبِیْلًا ﴿۴۲﴾ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یَقُوْلُوْنَ

अ़र्श के मालिक की त़रफ़ कोई राह ढूंड निकालते[93] उसे पाकी और बरतरी उन की बातों से

عُلُوًّا كَبِیْرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِیْهِنَّ ؕ

बड़ी बरतरी उस की पाकी बोलते हैं सातों आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं[94]

وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ

और कोई चीज़ नहीं[95] जो उसे सराहती (ता'रीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले[96] हां तुम उन की तस्बीह़ नहीं समझते[97] बेशक वोह

كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾ وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَ بَیْنَ

ह़िल्म वाला बख़्शने वाला है[98] और ऐ मह़बूब तुम ने कुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह अठ्ठारह आयतें "لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ" से "مَدْحُوْرًا" तक हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अल्वाह़ में थीं, उन की इब्तिदा तौह़ीद के हुक्म से हुई और इन्तिहा शिर्क की मुमानअ़त पर, इस से मा'लूम हुवा कि हर ह़िक्मत की अस्ल तौह़ीद व ईमान है और कोई क़ौल व अ़मल बिग़ैर इस के क़ाबिले पज़ीराई नहीं। **88 :** येह ख़िलाफ़े ह़िक्मत बात किस त़रह कहते हो। **89 :** कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये औलाद साबित करते हो जो ख़्वासे अज्साम से है और **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक, फिर इस में भी अपनी बड़ाई रखते हो कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हो और उस के लिये बेटियां तज्वीज़ करते हो, कितनी बे अदबी और गुस्ताख़ी है। **90 :** दलीलों से भी, मिसालों से भी, ह़िक्मतों से भी, इ़ब्रतों से भी और जा बजा इस मज़्मून को क़िस्म क़िस्म के पैरायों में बयान फ़रमाया। **91 :** और पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) हों। **92 :** और ह़क़ से दूरी। **93 :** और उस से बर सरे मुक़ाबला होते जैसा बादशाहों का त़रीक़ा है। **94 :** ज़बाने ह़ाल से, इस त़रह कि उन के वुजूद सानेअ़ की क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करते हैं या ज़बाने क़ाल से और येही सह़ीह़ है, अह़ादीसे कसीरा इस पर दलालत करती हैं और सलफ़ से येही मन्क़ूल है। **95 :** जमाद व नबात व ह़ैवान से ज़िन्दा। **96 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : हर ज़िन्दा चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ करती है और हर चीज़ की ज़िन्दगी उस के ह़स्बे ह़ैसिय्यत है। मुफ़स्सिरीन ने कहा कि दरवाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटख़्ना येह भी तस्बीह़ करना है और इन सब की तस्बीह़ "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" है। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मन्क़ूल है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की अंगुश्ते मुबारक से पानी के चश्मे जारी होते हम ने देखे और येह भी हम ने देखा कि खाते वक़्त में खाना तस्बीह़ करता था। (بخاری شریف) ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं उस पथ्थर को पहचानता हूं जो मेरी बि'सत के ज़माने में मुझे सलाम किया करता था। (مسلم شریف) इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم लकड़ी के एक सुतून से तक्या फ़रमा कर ख़ुत़्बा फ़रमाया करते थे, जब मिम्बर बनाया गया और ह़ुज़ूर मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए तो वोह सुतून रोया, ह़ुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات ने उस पर दस्ते करम फेरा और शफ़्क़त फ़रमाई और तस्कीन दी। (بخاری شریف) इन तमाम अह़ादीस से जमाद का कलाम और तस्बीह़ करना साबित हुवा।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۝٤٥ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया[99] और हम ने उन के दिलों पर

اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ

ग़िलाफ़ डाल दिये हैं कि इसे न समझें और उन के कानों में टेंट (रूई)[100] और जब तुम क़ुरआन में अपने अकेले रब की

وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ۝٤٦ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ

याद करते हो वोह पीठ फेर कर भागते हैं नफ़्रत करते हम ख़ूब जानते हैं जिस लिये वोह सुनते हैं[101]

اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ

जब तुम्हारी त़रफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मश्वरा करते हैं जब कि ज़ालिम कहते हैं तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द

اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٤٧ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا

के जिस पर जादू हुवा[102] देखो उन्हों ने तुम्हें कैसी तश्बीहें दीं तो गुमराह हुए कि

يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝٤٨ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ

राह नहीं पा सकते और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे क्या सचमुच

خَلْقًا جَدِيْدًا ۝٤٩ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝٥٠ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا

नए बन कर उठेंगे[103] तुम फ़रमाओ कि पथ्थर या लोहा हो जाओ या और कोई मख़्लूक़ जो

يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ

तुम्हारे ख़याल में बड़ी हो[104] तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा तुम फ़रमाओ वोही जिस ने तुम्हें

97 : इख़्तिलाफ़े लुग़ात के बाइस या दुश्वारिये इदराक के सबब **98 :** कि बन्दों की ग़फ़्लत पर अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **99 :** कि वोह आप को देख न सकें। **शाने नुज़ूल :** जब आयत ''تَبَّتْ يَدَا'' नाज़िल हुई तो अबू लहब की औ़रत पथ्थर ले कर आई, हुज़ूर मअ़ हज़रते अबू बक्र رضی اللہ تعالٰی عنہ के तशरीफ़ रखते थे, उस ने हुज़ूर को न देखा और हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ से कहने लगी तुम्हारे आक़ा कहां हैं ? मुझे मा'लूम हुवा है उन्हों ने मेरी हज्व की है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : वोह शे'र गोई नहीं करते हैं। तो वोह येह कहती हुई वापस हुई कि मैं उन का सर कुचलने के लिये येह पथ्थर लाई थी। हज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से अ़र्ज़ किया कि उस ने हुज़ूर को देखा नहीं। फ़रमाया : मेरे और उस के दरमियान एक फ़िरिश्ता ह़ाइल रहा, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **100 :** गिरानी जिस के बाइस वोह क़ुरआन शरीफ़ नहीं सुनते। **101 :** या'नी सुनते भी हैं तो तमस्ख़ुर और तक्ज़ीब (मज़ाक़ और झुटलाने) के लिये। **102 :** तो बा'ज़ उन में से आप को मजनूं कहते हैं, बा'ज़ साहिर, बा'ज़ काहिन, बा'ज़ शाइर। **103 :** येह बात उन्हों ने बहुत तअ़ज्जुब से कही और मरने और ख़ाक में मिल जाने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को उन्हों ने बहुत बईद समझा, अल्लाह तआ़ला ने उन का रद किया और अपने ह़बीब علیہ الصلوۃ والسلام को इर्शाद फ़रमाया : **104 :** और ह़यात से दूर हो, जान उस से कभी मुतअ़ल्लिक़ न हुई हो तो भी अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें ज़िन्दा करेगा और पहली ह़ालत की त़रफ़ वापस फ़रमाएगा चे जाए कि हड्डियां और इस जिस्म के ज़र्रे, उन्हें ज़िन्दा करना उस की क़ुदरत से क्या बईद है, इन से तो जान पहले मुतअ़ल्लिक़ रह चुकी है।

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ

पहली बार पैदा किया था तो अब तुम्हारी त़रफ़ मस्ख़रगी से सर हिला कर कहेंगे येह कब है[105] तुम फ़रमाओ

عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۱﴾ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَ

शायद नज़्दीक ही हो जिस दिन वोह तुम्हें बुलाएगा[106] तो तुम उस की ह़म्द करते चले आओगे और[107]

تَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾ ۧ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ

समझोगे कि न रहे थे[108] मगर थोड़ा और मेरे[109] बन्दों से फ़रमाओ[110] वोह बात कहें जो सब से

اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا

अच्छी हो[111] बेशक शैत़ान उन के आपस में फ़साद डाल देता है बेशक शैत़ान आदमी का खुला दुश्मन

مُّبِيْنًا ﴿۵۳﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ

है तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है वोह चाहे तो तुम पर रह़्म करे[112] या चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब करे

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۵۴﴾ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

और हम ने तुम को उन पर कड़ोड़ा (ज़िम्मेदार) बना कर न भेजा[113] और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आस्मानों और

الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ

ज़मीन में हैं[114] और बेशक हम ने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी[115] और दावूद को ज़बूर

زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ

अ़त़ा फ़रमाई[116] तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें जिन को अल्लाह के सिवा गुमान करते हो तो वोह इख़्तियार नहीं रखते तुम से

105 : या'नी क़ियामत कब क़ाइम होगी और मुर्दे कब उठाए जाएंगे ? **106 :** क़ब्रों से मौक़िफ़े क़ियामत (क़ियामत क़ाइम होने की जगह) की त़रफ़ **107 :** अपने सरों से ख़ाक झाड़ते और ''سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِکَ'' कहते और येह इक़रार करते कि अल्लाह ही पैदा करने वाला और मरने के बा'द उठाने वाला है। **108 :** दुन्या में या क़ब्रों में **109 :** ईमानदार **110 :** कि वोह काफ़िरों से **111 :** नर्म हो या पाकीज़ा हो अदब और तहज़ीब की हो, इर्शाद व हिदायत की हो, कुफ़्फ़ार अगर बेहूदगी करें तो उन का जवाब उन्हीं के अन्दाज़ में न दिया जाए। **शाने नुज़ूल :** मुश्‍रिकीन मुसल्मानों के साथ बद कलामियां करते और उन्हें ईज़ाएं देते थे, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से इस की शिकायत की, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और मुसल्मानों को बताया गया कि वोह कुफ़्फ़ार की जाहिलाना बातों का वैसा ही जवाब न दें, सब्र करें और ''يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ'' कह दें। येह हुक्म क़िताल व जिहाद के हुक्म से पहले था, बा'द को मन्सूख़ हो गया और इर्शाद फ़रमाया गया ''يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ'' और एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ह़क़ में नाज़िल हुई, एक काफ़िर ने उन की शान में बेहूदा कलिमा ज़बान से निकाला था, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सब्र करने और मुआ़फ़ फ़रमाने का हुक्म दिया। **112 :** और तुम्हें तौबा और ईमान की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **113 :** कि तुम उन के आ'माल के ज़िम्मेदार होते। **114 :** सब के अह़वाल को और इस को कि कौन किस लाइक़ है। **115 :** मख़्सूस फ़ज़ाइल के साथ जैसे कि ह़ज़रते इब्राहीम को ख़लील किया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को कलीम और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़बीब। **116 :** ज़बूर किताबे इलाही है जो ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई, इस में एक सो पचास सूरतें हैं, सब में दुआ़ और अल्लाह तआ़ला की सना और उस की तह़मीद व तम्जीद है, न उस

الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿۵۶﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ

तक्लीफ़ दूर करने और न फेर देने का[117] वोह मक्बूल बन्दे जिन्हें येह काफ़िर पूजते हैं[118] वोह आप ही अपने रब की त़रफ़

الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ

वसीला ढूंडते हैं कि उन में कौन ज़ियादा मुक़र्रब है[119] उस की रह़मत की उम्मीद रखते और उस के अ़ज़ाब से डरते हैं[120] बेशक

عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا

तुम्हारे रब का अ़ज़ाब डर की चीज़ है और कोई बस्ती नहीं मगर येह कि हम उसे रोज़े क़ियामत

قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ

से पहले नेस्त (हलाक) कर देंगे या उसे सख़्त अ़ज़ाब देंगे[121] येह किताब में[122]

مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾ وَمَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا

लिखा हुवा है और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूं ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने

الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ

झुटलाया[123] और हम ने समूद को[124] नाक़ा दिया (ऊंटनी दी) आंखें खोलने को[125] तो उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया[126] और हम ऐसी निशानियां

में ह़लाल व ह़राम का बयान न फ़राइज़ न ह़ुदूद व अह़काम, इस आयत में ख़ुसूसिय्यत के साथ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का नाम ले कर ज़िक्र फ़रमाया गया। **मुफ़स्सिरीन** ने इस के चन्द वुजूह बयान किये हैं : **एक** येह कि इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि अम्बिया में **अल्लाह** तआ़ला ने बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी, फिर इर्शाद किया कि ह़ज़रते दावूद को ज़बूर अ़ता की बा वुजूदे कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को नुबुव्वत के साथ मुल्क भी अ़ता किया था लेकिन उस का ज़िक्र न फ़रमाया, इस में तम्बीह है कि आयत में जिस फ़ज़ीलत का ज़िक्र है वोह फ़ज़ीलत इल्म है न कि फ़ज़ीलते मुल्क व माल। **दूसरी** वज्ह येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बूर में फ़रमाया है कि मुह़म्मद ख़ातमुल अम्बिया हैं और उन की उम्मत ख़ैरुल उमम, इसी सबब से आयत में ह़ज़रते दावूद और ज़बूर का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से फ़रमाया गया। **तीसरी** वज्ह येह है कि यहूद का गुमान था कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द कोई नबी नहीं और तौरैत के बा'द कोई किताब नहीं, इस आयत में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को ज़बूर अ़ता फ़रमाने का ज़िक्र कर के यहूद की तक्ज़ीब कर दी गई और इन के दा'वे का बुत़लान ज़ाहिर फ़रमा दिया गया ग़रज़ कि येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़ज़ीलते कुब्रा पर दलालत करती है।

क़त्आ़ : اے وصفِ تو در کتاب موسیٰ وَے نعتِ تو در زبور داود مقصود توئی ز آفرینش باقی به طفیل تست موجود

(**तरजमा : या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ही के औसाफ़े बा कमाल तो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब तौरात में हैं और वाह ! इसी त़रह़ आप की ना'त दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की किताब ज़बूर में मौजूद है, पस आप ही तो इस काएनात का मक़्सूद हैं, बाक़ी तो सब कुछ फ़क़त़ आप के त़ुफ़ैल से है)। **117 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार जब क़ह़ते शदीद में मुब्तला हुए और नौबत यहां तक पहुंची कि कुत्ते और मुर्दार खा गए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में फ़रियाद लाए और आप से दुआ़ की इल्तिजा की, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जब बुतों को ख़ुदा मानते हो तो इस वक़्त उन्हें पुकारो और वोह तुम्हारी मदद करें और जब तुम जानते हो कि वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो क्यूं उन्हें मा'बूद बनाते हो। **118 :** जैसे कि ह़ज़रते ईसा और ह़ज़रते उ़ज़ैर और मलाएका। **शाने नुज़ूल :** इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : येह आयत एक जमाअ़ते अ़रब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो जिन्नात के एक गुरौह को पूजते थे, वोह जिन्नात इस्लाम ले आए और उन के पूजने वालों को ख़बर न हुई **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और उन्हें आ़र दिलाई। **119 :** ताकि जो सब से ज़ियादा मुक़र्रब हो उस को वसीला बनाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुक़र्रब बन्दों को बारगाहे इलाही में वसीला बनाना जाइज़ और **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। **120 :** काफ़िर इन्हें किस त़रह़ मा'बूद समझते हैं। **121 :** क़त्ल वग़ैरा के साथ जब वोह कुफ़्र करें और मआ़सी में मुब्तला हों। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : जब किसी बस्ती में ज़िना और सूद की कसरत होती है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के हलाक का ह़ुक्म देता है। **122 :** लौह़े मह़फ़ूज़ में। **123 :** इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि सफ़ा पहाड़

بِالْاٰیٰتِ اِلَّا تَخْوِیْفًا ﴿۵۹﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَ مَا

नहीं भेजते मगर डराने को[127] और जब हम ने तुम से फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ाबू में हैं[128] और हम

جَعَلْنَا الرُّءْیَا الَّتِیْۤ اَرَیْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَ الشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِی

ने न किया वोह दिखावा[129] जो तुम्हें दिखाया था[130] मगर लोगों की आज़्माइश को[131] और वोह पेड़ जिस पर क़ुरआन

الْقُرْاٰنِ ؕ وَ نُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا یَزِیْدُهُمْ اِلَّا طُغْیَانًا كَبِیْرًا ﴿۶۰﴾ وَ اِذْ قُلْنَا

में ला'नत है[132] और हम उन्हें डराते हैं[133] तो उन्हें नहीं बढ़ती मगर बड़ी सरकशी और याद करो जब हम ने

لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ

फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो[134] तो उन सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस के बोला क्या मैं इसे सज्दा करूं

لِمَنْ خَلَقْتَ طِیْنًا ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَیْتَكَ هٰذَا الَّذِیْ كَرَّمْتَ عَلَیَّ ٘ لَىٕنْ

जिसे तू ने मिट्टी से बनाया बोला[135] देख तो जो येह तू ने मुझ से मुअ़ज़्ज़ज़ रखा[136] अगर

اَخَّرْتَنِ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّیَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ

तू ने मुझे क़ियामत तक मोहलत दी तो ज़रूर मैं इस की औलाद को पीस डालूं (बरबाद कर डालूं)गा[137] मगर थोड़ा[138] फ़रमाया

اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾

दूर हो[139] तो उन में जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक तुम सब का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा

को सोना कर दें और पहाड़ों को सर ज़मीने मक्का से हटा दें। इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को वह्य फ़रमाई कि आप फ़रमाएं तो आप की उम्मत को मोहलत दी जाए और अगर आप फ़रमाएं तो जो उन्हों ने त़लब किया है वोह पूरा किया जाए लेकिन अगर फिर भी वोह ईमान न लाए तो उन को हलाक कर के नेस्तो नाबूद कर दिया जाएगा इस लिये कि हमारी सुन्नत येही है कि जब कोई क़ौम निशानी त़लब कर के ईमान नहीं लाती तो हम उसे हलाक कर देते हैं और मोहलत नहीं देते, ऐसा ही हम ने पहलों के साथ किया है, इसी बयान में येह आयत नाज़िल हुई। 124 : उन के ह़स्बे त़लब 125 : या'नी हुज्जते वाज़ेह़ा (वाज़ेह़ व ज़बर दस्त दलाइल) 126 : और कुफ़्र किया कि उस के مِنَ اللہ होने से मुन्किर हो गए। 127 : जल्द आने वाले अ़ज़ाब से। 128 : उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में तो आप तब्लीग़ फ़रमाइये और किसी का ख़ौफ़ न कीजिये अल्लाह आप का निगहबान है। 129 : या'नी मुआयना अ़जाइबे आयाते इलाहिय्यह का। 130 : शबे मे'राज ब ह़ालते बेदारी 131 : या'नी अहले मक्का की। चुनान्चे जब सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने उन्हें वाक़िअ़ए मे'राज की ख़बर दी तो उन्हों ने इस की तक्ज़ीब की और बा'ज़ मुरतद हो गए और तमस्ख़ुर से इमारते बैतुल मक़्दिस का नक़्शा दरयाफ़्त करने लगे। हुज़ूर ने सारा नक़्शा बता दिया तो इस पर कुफ़्फ़ार आप को साह़िर कहने लगे। 132 : या'नी दरख़्ते ज़क़्क़ूम जो जहन्नम में पैदा होता है, इस को सबबे आज़्माइश बना दिया यहां तक कि अबू जह्ल ने कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم तुम को जहन्नम की आग से डराते हैं कि वोह पथ्थरों को जला देगी फिर येह भी फ़रमाते हैं कि उस में दरख़्त उगेंगे, आग में दरख़्त कहां रह सकता है? येह ए'तिराज़ उन्हों ने किया और क़ुदरते इलाही से ग़ाफ़िल रहे, न समझे कि उस क़ादिरे मुख़्तार की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना कुछ बईद नहीं, समन्दल एक कीड़ा होता है जो आग में पैदा होता है आग ही में रहता है। बिलादे तुर्क में इस के ऊन की तोलियां बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डाल कर साफ़ कर ली जातीं और जलती न थीं। शुतुर मुर्ग़ अंगारे खा जाता है अल्लाह की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना क्या बईद है। 133 : दीनी और दुन्यवी ख़ौफ़नाक उमूर से 134 : तहिय्यत का 135 : शैत़ान 136 : और इस को मुझ पर फ़ज़ीलत दी और इस को सज्दा कराया तो मैं क़सम खाता हूं कि 137 : गुमराह कर के 138 : जिन्हें अल्लाह बचाए और महफ़ूज़ रखे, वोह उस के मुख़्लिस बन्दे हैं, शैत़ान के इस कलाम पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस से 139 : तुझे नफ़्ख़ए ऊला (पहली मरतबा सूर फूंके जाने) तक मोहलत दी गई।

وَ اسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَ اَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ

और डिगा दे (बहका दे) उन में से जिस पर कुदरत पाए अपनी आवाज़ से[140] और उन पर लाम बांध ला (फ़ौजी लश्कर चढ़ा ला) अपने सुवारों और

رَجِلِكَ وَ شَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ وَ عِدْهُمْ ؕ وَ مَا يَعِدُهُمُ

अपने पियादों का[141] और उन का साझी हो मालों और बच्चों में[142] और उन्हें वा'दा दे[143] और शैतान उन्हें वा'दा

الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَ

नहीं देता मगर फ़रेब से बेशक जो मेरे बन्दे हैं[144] उन पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं और

كَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ

तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को[145] तुम्हारा रब वोह है कि तुम्हारे लिये दरिया में कश्ती रवां करता है

لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۶۶﴾ وَ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ

कि[146] तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो बेशक वोह तुम पर मेहरबान है और जब तुम्हें दरिया

فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ

में मुसीबत पहुंचती है[147] तो उस के सिवा जिन्हें पूजते हो सब गुम हो जाते हैं[148] फिर जब वोह तुम्हें ख़ुश्की की त़रफ़ नजात देता है

اَعْرَضْتُمْ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ

तो मुंह फेर लेते हो[149] और आदमी बड़ा नाशुक्रा है क्या तुम[150] इस से निडर हुए कि वोह ख़ुश्की ही का

جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿۶۸﴾ اَمْ

कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे[151] या तुम पर पथराव भेजे[152] फिर अपना कोई ह़िमायती न पाओ[153] या

140 : वस्वसे डाल कर और मा'सियत की त़रफ़ बुला कर। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि मुराद इस से गाने बाजे, लह्वो लअ़ब की आवाज़ें हैं। इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से मन्कूल है कि जो आवाज़ **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी के ख़िलाफ़ मुंह से निकले वोह शैत़ानी आवाज़ है। **141 :** या'नी अपने सब मक्र तमाम (फ़रेब मुकम्मल) कर ले और अपने तमाम लश्करों से मदद ले। **142 :** ज़ुज्जाज ने कहा कि जो गुनाह माल में हो या औलाद में हो इब्लीस उस में शरीक है जैसे कि सूद और माल ह़ासिल करने के दूसरे ह़राम त़रीक़े और फ़िस्क़ व मम्नूआ़त में ख़र्च करना और ज़कात न देना येह माली उमूर हैं जिन में शैत़ान की शिर्कत है और ज़िना व ना जाइज़ त़रीक़े से औलाद ह़ासिल करना येह औलाद में शैत़ान की शिर्कत है। **143 :** अपनी त़ाअ़त पर **144 :** नेक मुख़्लिस अम्बिया और अस्ह़ाबे फ़ज़्लो सलाह़। **145 :** उन्हें तुझ से मह़फ़ूज़ रखेगा और शैत़ानी मकाइद और वसाविस (शैत़ानी मक्रो फ़रेब और वस्वसों) को दफ़्अ़ फ़रमाएगा। **146 :** इन में तिजारतों के लिये सफ़र कर के **147 :** और डूबने का अन्देशा होता है **148 :** और उन झूटे मा'बूदों में से किसी का नाम ज़बान पर नहीं आता, उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला से ह़ाजत रवाई चाहते हैं। **149 :** उस की तौह़ीद से और फिर उन्हीं नाकारा बुतों की परस्तिश शुरूअ़ कर देते हो। **150 :** दरिया से नजात पा कर **151 :** जैसा कि क़ारून को धंसा दिया था। मक़्सद येह है कि ख़ुश्की व तरी सब उस के तह़्ते क़ुदरत हैं जैसा वोह समुन्दर में ग़र्क़ करने और बचाने दोनों पर क़ादिर है ऐसा ही ख़ुश्की में भी ज़मीन के अन्दर धंसा देने और मह़फ़ूज़ रखने दोनों पर क़ादिर है। ख़ुश्की हो या तरी हर कहीं बन्दा उस की रह़मत का मोह़ताज है। वोह ज़मीन में धंसाने पर भी क़ादिर है और येह भी क़ुदरत रखता है कि **152 :** जैसा क़ौमे लूत़ पर भेजा था। **153 :** जो तुम्हें बचा सके।

اَمِنْتُمْ اَنْ یُّعِیْدَكُمْ فِیْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَیُرْسِلَ عَلَیْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ

इस से निडर (बे ख़ौफ़) हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में ले जाए फिर तुम पर जहाज़ तोड़ने वाली

الرِّیْحِ فَیُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَیْنَا بِهٖ تَبِیْعًا ﴿۶۹﴾ وَ

आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिये कोई ऐसा न पाओ कि इस पर हमारा पीछा करे[154] और

لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِیْۤ اٰدَمَ وَ حَمَلْنٰهُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

बेशक हम ने औलादे आदम को इ़ज़्ज़त दी[155] और इन को ख़ुश्की और तरी में[156] सुवार किया और इन को सुथरी चीज़ें

الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِیْلًا ﴿۷۰﴾ یَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ

रोज़ी दीं[157] और इन को अपनी बहुत मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल किया[158] जिस दिन हम हर जमाअ़त को

اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ یَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ

उस के इमाम के साथ बुलाएंगे[159] तो जो अपना नामा दाहने हाथ में दिया गया येह लोग अपना नामा पढ़ेंगे[160]

وَ لَا یُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا ﴿۷۱﴾ وَ مَنْ كَانَ فِیْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى فَهُوَ فِی الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى

और तागे भर उन का ह़क़ न दबाया जाएगा[161] और जो इस ज़िन्दगी में[162] अन्धा हो वोह आख़िरत में अन्धा है[163]

154 : और हम से दरयाफ़्त कर सके कि हम ने ऐसा क्यूं किया क्यूं कि हम क़ादिरे मुख़्तार हैं जो चाहते हैं करते हैं हमारे काम में कोई दख़्ल देने वाला और दम मारने वाला नहीं। 155 : अ़क़्ल व इ़ल्म व गोयाई, पाकीज़ा सूरत, मो'तदिल क़ामत और मआ़श व मआ़द की तदाबीर और तमाम चीज़ों पर इस्तीला व तस्ख़ीर (ग़लबा व क़ाबू) अ़ता फ़रमा कर और इस के इ़लावा और बहुत सी फ़ज़ीलतें दे कर 156 : जानवरों और दूसरी सुवारियों और कश्तियों और जहाज़ों वग़ैरा में 157 : लतीफ़ ख़ुश ज़ाएक़ा हैवानी और नबाती हर त़रह़ की ग़िज़ाएं ख़ूब अच्छी त़रह़ पकी हुई क्यूं कि इन्सान के सिवा हैवानात में पकी हुई ग़िज़ा और किसी की ख़ूराक नहीं। 158 : ह़सन का क़ौल है कि अक्सर से कुल मुराद है और अक्सर का लफ़्ज़ कुल के मा'ना में बोला जाता है। क़ुरआने करीम में भी इर्शाद हुवा : "وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ" और "مَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا" में "अक्सर" ब मा'ना "कुल" है, लिहाज़ा मलाएका भी इस में दाख़िल हैं और ख़वासे बशर या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ख़वासे मलाएका से अफ़्ज़ल हैं और सुलह़ाए बशर (नेक व मुत्तक़ी इन्सान) अ़वामे मलाएका (आ़म फ़िरिश्तों) से। ह़दीस शरीफ़ में है कि मोमिन **अल्लाह** के नज़्दीक मलाएका से ज़ियादा करामत रखता है। वज्ह येह है कि **फ़िरिश्ते** त़ाअ़त पर मजबूर हैं येही इन की सिरिश्त (फ़ित़रत) है इन में अ़क़्ल है शहवत नहीं और **बहाइम** (जानवरों) में शहवत है अ़क़्ल नहीं और **आदमी** शहवत व अ़क़्ल दोनों का जामेअ़ है तो जिस ने अ़क़्ल को शहवत पर ग़ालिब किया वोह मलाएका से अफ़्ज़ल है और जिस ने शहवत को अ़क़्ल पर ग़ालिब किया वोह बहाइम से बदतर है। 159 : जिस का वोह दुन्या में इत्तिबाअ़ करता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह इमामे ज़मां मुराद है जिस की दा'वत पर दुन्या में लोग चले ख़्वाह उस ने ह़क़ की दा'वत की हो या बात़िल की। ह़ासिल येह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जम्अ़ होगी जिस के हुक्म पर दुन्या में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फ़ुलां के मुत्तबिई़न। 160 : नेक लोग जो दुन्या में साह़िबे बसीरत थे और राहे रास्त पर रहे उन को उन का नामए आ'माल दाहने हाथ में दिया जाएगा, वोह उस में नेकियां और त़ाअ़तें देखेंगे तो उस को ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ेंगे और जो बद बख़्त हैं कुफ़्फ़ार हैं उन के नामए आ'माल बाएं हाथ में दिये जाएंगे वोह उन्हें देख कर शरमिन्दा होंगे और दहशत से पूरी त़रह़ पढ़ने पर क़ादिर न होंगे। 161 : या'नी सवाबे आ'माल में उन से अदना भी कमी न की जाएगी। 162 : दुन्या की ह़क़ के देखने से 163 : नजात की राह से। मा'ना येह हैं कि जो दुन्या में काफ़िर गुमराह है वोह आख़िरत में अन्धा होगा, क्यूं कि दुन्या में तौबा मक़्बूल है और आख़िरत में तौबा मक़्बूल नहीं।

وَ اَضَلُّ سَبِیۡلًا ﴿۷۲﴾ وَ اِنۡ كَادُوۡا لَیَفۡتِنُوۡنَكَ عَنِ الَّذِیۡۤ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡكَ

और और भी ज़ियादा गुमराह और वोह तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लग़्ज़िश देते हमारी वह्य से जो हम ने तुम को भेजी

لِتَفۡتَرِیَ عَلَیۡنَا غَیۡرَهٗ ۖۗ وَ اِذًا لَّاتَّخَذُوۡكَ خَلِیۡلًا ﴿۷۳﴾ وَ لَوۡ لَاۤ اَنۡ

कि तुम हमारी त़रफ़ कुछ और निस्बत कर दो और ऐसा होता तो वोह तुम को अपना गहरा दोस्त बना लेते[164] और अगर हम तुम्हें[165]

ثَبَّتۡنٰكَ لَقَدۡ كِدۡتَّ تَرۡكَنُ اِلَیۡهِمۡ شَیۡـًٔا قَلِیۡلًا ﴿۷۴﴾ ۗۙ اِذًا لَّاَذَقۡنٰكَ ضِعۡفَ

साबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उन की त़रफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते और ऐसा होता तो हम तुम को दूनी

الۡحَیٰوةِ وَ ضِعۡفَ الۡمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَیۡنَا نَصِیۡرًا ﴿۷۵﴾ وَ اِنۡ

उ़म्र और दो चन्द मौत[166] का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाते और बेशक

كَادُوۡا لَیَسۡتَفِزُّوۡنَكَ مِنَ الۡاَرۡضِ لِیُخۡرِجُوۡكَ مِنۡهَا وَ اِذًا لَّا یَلۡبَثُوۡنَ

क़रीब था कि वोह तुम्हें इस ज़मीन से[167] डिगा दें (हटा दें) कि तुम्हें इस से बाहर कर दें और ऐसा होता तो वोह तुम्हारे

خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۷۶﴾ سُنَّةَ مَنۡ قَدۡ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنۡ رُّسُلِنَا وَ لَا

पीछे न ठहरते मगर थोड़ा[168] दस्तूर उन का जो हम ने तुम से पहले रसूल भेजे[169] और

تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحۡوِیۡلًا ﴿۷۷﴾ ع اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوۡكِ الشَّمۡسِ اِلٰی غَسَقِ الَّیۡلِ

तुम हमारा क़ानून बदलता न पाओगे नमाज़ क़ाइम रखो सूरज ढलने से रात की अंधेरी तक[170]

وَ قُرۡاٰنَ الۡفَجۡرِ ؕ اِنَّ قُرۡاٰنَ الۡفَجۡرِ كَانَ مَشۡهُوۡدًا ﴿۷۸﴾ وَ مِنَ الَّیۡلِ فَتَهَجَّدۡ

और सुब्ह़ का क़ुरआन[171] बेशक सुब्ह़ के क़ुरआन में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं[172] और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद

164 शाने नुज़ूल : (क़बीलए) सक़ीफ़ का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास आ कर कहने लगा कि अगर आप तीन बातें मन्ज़ूर कर लें तो हम आप की बैअ़त कर लें : **एक** तो येह कि नमाज़ में झुकेंगे नहीं या'नी रुकूअ़ सज्दा न करेंगे। **दूसरी** येह कि हम अपने बुत अपने हाथों से न तोड़ेंगे। **तीसरे** येह कि लात को पूजेंगे तो नहीं मगर एक साल उस से नफ़्अ़ उठा लें कि उस के पूजने वाले जो नज़्रें चढ़ावे लाएं उस को वुसूल कर लें। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस दीन में कुछ भलाई नहीं जिस में रुकूअ़ सज्दा न हो और बुतों को तोड़ने की बाबत तुम्हारी मरज़ी और लात व उ़ज़्ज़ा से फ़ाएदा उठाने की इजाज़त मैं हरगिज़ न दूंगा। वोह कहने लगे : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम चाहते येह हैं कि आप की त़रफ़ से हमें ऐसा ए'ज़ाज़ मिले जो दूसरों को न मिला हो ताकि हम फ़ख़्र कर सकें, इस में अगर आप को अन्देशा हो कि अ़रब शिकायत करेंगे तो आप उन से कह दीजियेगा कि **अल्लाह** का हुक्म ही ऐसा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **165 :** मा'सूम कर के **166 :** के अ़ज़ाब **167 :** या'नी अ़रब से। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने इत्तिफ़ाक़ कर के चाहा कि सब मिल कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सर ज़मीने अ़रब से बाहर कर दें लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन का येह इरादा पूरा न होने दिया और उन की येह मुराद बर न आई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **168 :** और जल्द हलाक कर दिये जाते। **169 :** या'नी जिस क़ौम ने अपने दरमियान से अपने रसूल को निकाला उन के लिये सुन्नते इलाही येही रही कि उन्हें हलाक कर दिया। **170 :** इस में ज़ोहर से इशा तक की चार नमाज़ें आ गईं। **171 :** इस से नमाज़े फ़ज्र मुराद है और इस को क़ुरआन इस लिये फ़रमाया गया कि क़िराअत एक रुक्न है और जुज़ से कुल ता'बीर किया जाता है जैसा कि क़ुरआने करीम में नमाज़ को रुकूअ़ व सुजूद से भी ता'बीर किया गया है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि क़िराअत नमाज़ का रुक्न है। **172 :** या'नी नमाज़े फ़ज्र में रात

بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾ وَ قُلْ رَّبِّ

करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है[173] क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द करें[174] और यूं अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब

اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّیْ مِنْ

मुझे सच्ची त़रह दाख़िल कर और सच्ची त़रह बाहर ले जा[175] और मुझे

لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ﴿۸۰﴾ وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ

अपनी त़रफ़ से मददगार ग़लबा दे[176] और फ़रमाओ कि ह़क़ आया और बात़िल मिट गया[177] बेशक

الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ

बात़िल को मिटना ही था[178] और हम कु़रआन में उतारते हैं वोह चीज़[179] जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत

لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۙ وَ لَا یَزِیْدُ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾ وَ اِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى

है[180] और इस से ज़ालिमों को[181] नुक़्सान ही बढ़ता है और जब हम आदमी पर

के फ़िरिश्ते भी मौजूद होते हैं और दिन के फ़िरिश्ते भी आ जाते हैं। **173 तहज्जुद :** नमाज़ के लिये नींद को छोड़ने या बा'द इशा सोने के बा'द जो नमाज़ पढ़ी जाए उस को कहते हैं। नमाज़े तहज्जुद की ह़दीस शरीफ़ में बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं, नमाज़े तहज्जुद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी, जुम्हूर का येही क़ौल है हुज़ूर की उम्मत के लिये येह नमाज़ सुन्नत है। **मस्अला :** तहज्जुद की कम से कम दो रक्अ़तें और मुतवस्सित़ चार और ज़ियादा आठ हैं और सुन्नत येह है कि दो दो रक्अ़त की निय्यत से पढ़ी जाएं। **मस्अला :** अगर आदमी शब की एक तिहाई इ़बादत करना चाहे और दो तिहाई सोना तो शब के तीन हिस्से कर ले दरमियानी तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़्ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोए आधी रात इ़बादत करे तो निस्फ़े अख़ीर अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** जो शख़्स नमाज़े तहज्जुद का आ़दी हो उस के लिये तहज्जुद तर्क करना मक्रूह है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है। (ردالمحتار) **174 :** और मक़ामे मह़मूद मक़ामे शफ़ाअ़त है कि इस में अव्वलीन व आख़िरीन हुज़ूर की ह़म्द करेंगे, इसी पर जुम्हूर हैं। **175 :** जहां भी मैं दाख़िल होऊं और जहां से भी मैं बाहर आऊं ख़्वाह वोह कोई मकान हो या मन्सब हो या काम। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मुराद येह है कि मुझे क़ब्र में अपनी रिज़ा और त़हारत के साथ दाख़िल कर और वक़्ते बि'सत इ़ज़्ज़त व करामत के साथ बाहर ला। बा'ज़ ने कहा : मा'ना येह हैं कि मुझे अपनी त़ाअ़त में सिद्क़ के साथ दाख़िल कर और अपने मनाही (मम्नूअ़ कामों) से सिद्क़ के साथ ख़ारिज फ़रमा और इस के मा'ना में एक क़ौल येह भी है कि मन्सबे नुबुव्वत में मुझे सिद्क़ के साथ दाख़िल और सिद्क़ के साथ दुन्या से रुख़्सत के वक़्त नुबुव्वत के हुक़ूक़े वाजिबा से ओ़ह्दा बरआ फ़रमा। एक क़ौल येह भी है कि मुझे मदीनए त़य्यिबा में पसन्दीदा दाख़िला इनायत कर और मक्कए मुकर्रमा से मेरा ख़ुरूज सिद्क़ के साथ कर कि इस से मेरा दिल ग़मगीन न हो, मगर येह तौजीह इस सूरत में सह़ीह़ हो सकती है जब कि येह आयत मदनी न हो जैसा कि अ़ल्लामा सुयूत़ी ने ''قِيْلَ'' फ़रमा कर इस आयत के मदनी होने का क़ौल ज़ईफ़ होने की त़रफ़ इशारा किया। **176 :** वोह क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमा जिस से मैं तेरे दुश्मनों पर ग़ालिब होऊं और वोह हुज्जत जिस से मैं हर मुख़ालिफ़ पर फ़त्ह़ पाऊं और वोह ग़लबए ज़ाहिरा जिस से मैं तेरे दीन को तक़्वियत दूं, येह दुआ़ क़बूल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब से उन के दीन को ग़ालिब करने और उन्हें दुश्मनों से मह़फ़ूज़ रखने का वा'दा फ़रमाया। **177 :** या'नी इस्लाम आया और कुफ़्र मिट गया या क़ुरआन आया और शैत़ान हलाक हुवा। **178 :** क्यूं कि अगर्चे बात़िल को किसी वक़्त में दौलत व सौलत (रो'ब व दबदबा) ह़ासिल हो मगर इस को पाएदारी नहीं, इस का अन्जाम बरबादी व ख़्वारी है। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोज़े फ़त्ह़ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो का'बए मुक़द्दसा के गिर्द तीन सो साठ बुत नस्ब किये हुए थे जिन को लोहे और रांग (क़लई धात) से जोड़ कर मज़्बूत़ किया गया था, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी थी हुज़ूर येह आयत पढ़ कर इस लकड़ी से जिस बुत की त़रफ़ इशारा फ़रमाते जाते थे वोह गिरता जाता था। **179 :** सूरतें और आयतें **180 :** कि इस से अमराज़े ज़ाहिरा और बात़िना, ज़लालत व जहालत वग़ैरा दूर होते हैं और ज़ाहिरी व बात़िनी सिह़्ह़त ह़ासिल होती है, ए'तिक़ादाते बात़िला व अख़्लाक़े रज़ीला (ग़लत़ अ़क़ीदे और बुरे अख़्लाक़) दफ़्अ़ होते हैं और अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा व मआ़रिफ़े इलाहिय्यह व सिफ़ाते ह़मीदा व अख़्लाक़े फ़ाज़िला (सह़ीह़ अ़क़ीदे, **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त व पहचान, बेहतरीन सिफ़ात और ज़बर दस्त अख़्लाक़) ह़ासिल होते हैं क्यूं कि येह किताबे मजीद ऐसे उ़लूम व दलाइल पर मुश्तमिल है जो वहमानी व शैत़ानी ज़ुल्मतों को

الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ یَـٴُـوْسًا ﴿۸۳﴾ قُلْ

एह़सान करते हैं[182] मुंह फेर लेता है और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[183] और जब उसे बुराई पहुंचे[184] तो ना उम्मीद हो जाता है[185] तुम फ़रमाओ

كُلٌّ یَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِیْلًا ﴿۸۴﴾ وَ

सब अपने कैंडे (अन्दाज़) पर काम करते हैं[186] तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़ियादा राह पर है और

یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَاۤ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

तुम से रूह़ को पूछते हैं तुम फ़रमाओ रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इ़ल्म न मिला

اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۸۵﴾ وَلَىٕنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ

मगर थोड़ा[187] और अगर हम चाहते तो येह वह़्य जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ की उसे ले जाते[188] फिर तुम कोई न पाते कि

لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ﴿۸۶﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ

तुम्हारे लिये हमारे हुज़ूर उस पर वकालत करता मगर तुम्हारे रब की रह़मत[189] बेशक तुम पर उस का

عَلَیْكَ كَبِیْرًا ﴿۸۷﴾ قُلْ لَّىٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ یَّاْتُوْا

बड़ा फ़ज़्ल है[190] तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि[191] इस क़ुरआन

अपने अन्वार से नेस्तो नाबूद कर देते हैं और इस का एक एक ह़र्फ़ बरकात का गन्जीना है जिस से जिस्मानी अमराज़ और आसेब दूर होते हैं। **181 :** या'नी काफ़िरों को जो इस की तक्ज़ीब करते हैं। **182 :** या'नी काफ़िर पर कि उस को सिह़्ह़त और वुस्अ़त अ़त़ा फ़रमाते हैं तो वोह हमारे ज़िक्र व दुआ़ और त़ाअ़त व अदाए शुक्र से **183 :** या'नी तकब्बुर करता है। **184 :** कोई शिद्दत व ज़रर (तक्लीफ़ व नुक़्सान) और कोई फ़क़्र व ह़ादिसा (मुफ़्लिसी व सदमा) तो तज़र्रोअ़ व ज़ारी से (गिड़गिड़ाते और रोते हुए) दुआ़एं करता है और उन दुआ़ओं के क़बूल का असर ज़ाहिर नहीं होता। **185 :** मोमिन को ऐसा न चाहिये अगर इजाबते दुआ़ में ताख़ीर हो तो वोह मायूस न हो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहे। **186 :** हम अपने त़रीक़े पर तुम अपने त़रीक़े पर जिस का जौहरे ज़ात, शरीफ़ व त़ाहिर है, उस से अफ़्आ़ले जमीला व अख़्लाक़े पाकीज़ा सादिर होते हैं और जिस का नफ़्स ख़बीस है उस से अफ़्आ़ले ख़बीसा रदिय्या सरज़द होते हैं। **187 :** क़ुरैश मश्वरे के लिये जम्अ़ हुए और उन में बाहम गुफ़्तगू येह हुई कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम में रहे और कभी हम ने उन को सिद्क़ो अमानत में कमज़ोर न पाया, कभी उन पर तोहमत लगाने का मौक़अ़ हाथ न आया, अब उन्हों ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया तो उन की सीरत और उन के चाल चलन पर कोई ऐब लगाना तो मुम्किन नहीं है, यहूद से पूछना चाहिये कि ऐसी ह़ालत में क्या किया जाए ? इस मत़लब के लिये एक जमाअ़त यहूद के पास भेजी गई, यहूद ने कहा कि उन से तीन सुवाल करो अगर तीनों के जवाब न दें तो वोह नबी नहीं और अगर तीनों का जवाब दे दें जब भी नबी नहीं और अगर दो का जवाब दे दें एक का जवाब न दें तो वोह सच्चे नबी हैं, वोह तीन सुवाल येह हैं : अस्ह़ाबे कह्फ़ का वाक़िआ़, ज़ुल क़रनैन का वाक़िआ़ और रूह़ का ह़ाल ? चुनान्चे क़ुरैश ने हुज़ूर से येह सुवाल किये। आप ने अस्ह़ाबे कह्फ़ और ज़ुल क़रनैन के वाक़िआ़त तो मुफ़स्सल बयान फ़रमा दिये और रूह़ का मुआ़मला इब्हाम में रखा (या'नी पोशीदा रखा) जैसा कि तौरैत में मुब्हम रखा गया था। क़ुरैश येह सुवाल कर के नादिम हुए। इस में इख़्तिलाफ़ है कि सुवाल ह़क़ीक़ते रूह़ से था या इस की मख़्लूक़िय्यत से। जवाब दोनों का हो गया और आयत में येह भी बता दिया गया कि मख़्लूक़ का इ़ल्म इ़ल्मे इलाही के सामने क़लील है अगर्चे "مَاۤ اُوْتِیْتُمْ" का ख़ित़ाब यहूद के साथ ख़ास हो। **188 :** या'नी क़ुरआने करीम को सीनों और सह़ीफ़ों से मह़्व कर देते (मिटा देते) और इस का कोई असर बाक़ी न छोड़ते। **189 :** कि क़ियामत तक इस को बाक़ी रखा और हर तग़य्युर व तबद्दुल से मह़फ़ूज़ फ़रमाया। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि क़ुरआने पाक ख़ूब पढ़ो ! इस से पहले कि क़ुरआने पाक उठा लिया जाए क्यूं कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक कि क़ुरआने पाक न उठाया जाए। **190 :** कि उस ने आप पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया और उस को बाक़ी व मह़फ़ूज़ रखा और आप को तमाम बनी आदम का सरदार और ख़ातमुन्नबिय्यीन किया और मक़ामे मह़मूद अ़त़ा फ़रमाया। **191 :** बलाग़त और ह़ुस्ने नज़्म व तरतीब और उ़लूमे ग़ैबिया व मआ़रिफ़े इलाहिय्यह में से किसी कमाल में।

بِمِثۡلِ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا يَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ وَلَوۡ كَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ

की मानिन्द ले आएं तो इस का मिस्ल न ला सकेंगे अगर्चे उन में एक दूसरे का

ظَهِيۡرًا ﴿۸۸﴾ وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا لِلنَّاسِ فِىۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ فَاَبٰۤى

मददगार हो[192] और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की मसल (मिसालें) त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई तो अक्सर

اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۸۹﴾ وَقَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ

आदमियों ने न माना मगर नाशुक्र करना[193] और बोले कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि तुम हमारे लिये

الۡاَرۡضِ يَنۡۢبُوۡعًا ﴿۹۰﴾ اَوۡ تَكُوۡنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ

ज़मीन से कोई चश्मा बहा दो[194] या तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो फिर तुम उस के अन्दर

---

192 शाने नुज़ूल : मुशरिकीन ने कहा था कि हम चाहें तो इस कुरआन की मिस्ल बना लें, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तबारक व तआला ने उन की तक्ज़ीब की, कि ख़ालिक़ के कलाम के मिस्ल मख़्लूक़ का कलाम हो ही नहीं सकता अगर वोह सब बाहम मिल कर कोशिश करें जब भी मुम्किन नहीं कि इस कलाम के मिस्ल ला सकें। चुनान्चे ऐसा ही हुवा तमाम कुफ़्फ़ार आ़जिज़ हुए और उन्हें रुस्वाई उठाना पड़ी और वोह एक सत़्र भी कुरआने करीम के मुक़ाबिल बना कर पेश न कर सके। **193 :** और ह़क़ से मुन्किर होना इख़्तियार किया। **194 शाने नुज़ूल :** जब कुरआने करीम का ए'जाज़ (मो'जिज़ा) ख़ूब ज़ाहिर हो चुका और मो'जिज़ाते वाज़ेह़ात ने हुज्जत क़ाइम कर दी और कुफ़्फ़ार के लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही तो वोह लोगों को मुग़ालते में डालने के लिये त़रह़ त़रह़ की निशानियां त़लब करने लगे और उन्हों ने कह दिया कि हम हरगिज़ आप पर ईमान न लाएंगे। मरवी है कि कुफ़्फ़ारे कुरैश के सरदार का'बए मुअ़ज़्ज़मा में जम्अ़ हुए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम ﷺ को बुलवाया। हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने कहा कि हम ने आप को इस लिये बुलाया है कि आज गुफ़्तगू कर के आप से मुआ़मला तै कर लें ताकि हम फिर आप के ह़क़ में मा'ज़ूर समझे जाएं, अ़रब में कोई आदमी ऐसा नहीं हुवा जिस ने अपनी क़ौम पर वोह शदाइद किये हों जो आप ने किये हैं, आप ने हमारे बाप दादा को बुरा कहा, हमारे दीन को ऐ़ब लगाए, हमारे दानिश मन्दों को कम अ़क़्ल ठहराया, मा'बूदों की तौहीन की, जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ कर दी, कोई बुराई उठा न रखी, इस से तुम्हारी ग़रज़ क्या है ? अगर तुम माल चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये इतना माल जम्अ़ कर दें कि हमारी क़ौम में तुम सब से ज़ियादा मालदार हो जाओ, अगर ए'ज़ाज़ चाहते हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें, अगर मुल्क व सल्त़नत चाहते हो तो हम तुम्हें बादशाह तस्लीम कर लें, येह सब बातें करने के लिये हम तय्यार हैं और अगर तुम्हें कोई दिमाग़ी बीमारी हो गई है या कोई ख़लिश (चुभन व दर्द) हो गया है तो हम तुम्हारा इ़लाज करें और इस में जिस क़दर ख़र्च हो उठाएं। सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : इन में से कोई बात नहीं और मैं माल व सल्त़नत व सरदारी किसी चीज़ का त़लब गार नहीं, वाक़िआ़ सिर्फ़ इतना है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर भेजा और मुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि मैं तुम्हें उस के मानने पर **अल्लाह** की रिज़ा और ने'मते आख़िरत की बिशारत दूं और इन्कार करने पर अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाऊं, मैं ने तुम्हें अपने रब का पयाम पहुंचाया अगर तुम इसे क़बूल करो तो येह तुम्हारे लिये दुन्या व आख़िरत की ख़ुश नसीबी है और न मानो तो मैं सब्र करूंगा और **अल्लाह** के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा। इस पर उन लोगों ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (ﷺ) अगर आप हमारे मा'रूज़ात (पेशकश) को क़बूल नहीं करते हैं तो इन पहाड़ों को हटा दीजिये और मैदान साफ़ निकाल दीजिये और नहरें जारी कर दीजिये और हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये हम उन से पूछ देखें कि आप जो फ़रमाते हैं क्या येह सच है ? अगर वोह कह देंगे तो हम मान लेंगे। हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं इन बातों के लिये नहीं भेजा गया, जो पहुंचाने के लिये मैं भेजा गया था वोह मैं ने पहुंचा दिया अगर तुम मानो तुम्हारा नसीब न मानो तो मैं ख़ुदाई फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा। कुफ़्फ़ार ने कहा : फिर आप अपने रब से अ़र्ज़ कर के एक फ़िरिश्ता बुलवा लीजिये जो आप की तस्दीक़ करे और अपने लिये बाग़ और मह़ल और सोने चांदी के ख़ज़ाने त़लब कीजिये। फ़रमाया कि मैं इस लिये नहीं भेजा गया, मैं बशीर व नज़ीर (ख़ुश ख़बरी देने और डर सुनाने वाला) बना कर भेजा गया हूं। इस पर कहने लगे : तो हम पर आस्मान गिरवा दीजिये और बा'ज़े उन में से येह बोले कि हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक आप **अल्लाह** को और फ़िरिश्तों को हमारे सामने न लाएं। इस पर सय्यिदे आ़लम ﷺ उस मजलिस से उठ आए और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या आप के साथ उठा और आप से कहने लगा : ख़ुदा की क़सम ! मैं कभी आप पर ईमान न लाऊंगा जब तक तुम सीढ़ी लगा कर आस्मान पर न चढ़ो और मेरी नज़रों के सामने वहां से एक किताब और फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त ले कर न आओ और ख़ुदा की क़सम ! अगर येह भी करो तो मैं समझता हूं कि मैं फिर भी न मानूंगा। रसूले करीम ﷺ ने जब देखा कि येह लोग इस क़दर ज़िद और इ़नाद में हैं और इन की ह़क़ दुश्मनी ह़द से गुज़र गई है तो आप को उन की ह़ालत पर रन्ज हुवा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا

बहती नहरें रवां करो या तुम हम पर आस्मान गिरा दो जैसा तुम ने कहा है

كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ

टुकड़े टुकड़े या **अल्लाह** और फ़िरिश्तों को ज़ामिन ले आओ[195] या तुम्हारे लिये तिलाई (सोने का) घर हो

اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا

या तुम आस्मान में चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हम पर एक किताब न उतारो

نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ

जो हम पढ़ें तुम फ़रमाओ पाकी है मेरे रब को मैं कौन हूं मगर आदमी **अल्लाह** का भेजा हुवा[196] और किस बात ने

النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا

लोगों को ईमान लाने से रोका जब उन के पास हिदायत आई मगर उसी ने कि बोले क्या **अल्लाह** ने आदमी को रसूल

رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓىِٕكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَىِٕنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا

बना कर भेजा[197] तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन में फ़िरिश्ते होते[198] चैन (इत्मीनान) से चलते तो उन पर

عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَ

हम रसूल भी फ़िरिश्ता उतारते[199] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** बस है गवाह मेरे

بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ

तुम्हारे दरमियान[200] बेशक वोह अपने बन्दों को जानता देखता है और जिसे **अल्लाह** राह दे वोही

الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ

राह पर है और जिसे गुमराह करे[201] तो उन के लिये उस के सिवा कोई हिमायत वाले न पाओगे[202] और हम उन्हें

195 : जो हमारे सामने तुम्हारे सिद्क़ (सच्चा होने) की गवाही दें। **196 :** मेरा काम **अल्लाह** का पयाम पहुंचा देना है, वोह मैं ने पहुंचा दिया, अब जिस क़दर मो'जिज़ात व आयात यक़ीन व इत्मीनान के लिये दरकार हैं उन से बहुत ज़ियादा मेरा परवरदगार ज़ाहिर फ़रमा चुका, हुज्जत ख़त्म हो गई, अब येह समझ लो कि रसूल के इन्कार करने और आयाते इलाहिय्यह से मुकरने का क्या अन्जाम होता है। **197 :** रसूलों को बशर ही जानते रहे और उन के मन्सबे नुबुव्वत और **अल्लाह** तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए कमालात के मुक़िर और मो'तरिफ़ (इक़रार व ए'तिराफ़ करने वाले) न हुए, येही उन के कुफ़्र की अस्ल थी और इसी लिये वोह कहा करते थे कि कोई फ़िरिश्ता क्यूं नहीं भेजा गया, इस पर **अल्लाह** तआ़ला अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है कि ऐ हबीब ! इन से **198 :** वोही इस में बसते **199 :** क्यूं कि वोह उन की जिन्स से होता, लेकिन जब ज़मीन में आदमी बसते हैं तो उन का मलाएका में से रसूल तृलब करना निहायत ही बे जा है। **200 :** मेरे सिद्क़ व अदाए फ़र्ज़े रिसालत और तुम्हारे किज़्बो अ़दावत पर **201 :** और तौफ़ीक़ न दे **202 :** जो उन्हें हिदायत करें।

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوۡهِهِمۡ عُمۡيًا وَّبُكۡمًا وَّصُمًّا ؕ مَاۡوٰٮهُمۡ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا

क़ियामत के दिन उन के मुंह के बल[203] उठाएंगे अन्धे और गूंगे और बहरे[204] उन का ठिकाना जहन्नम है जब कभी

خَبَتۡ زِدۡنٰهُمۡ سَعِيۡرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمۡ بِاَنَّهُمۡ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوۡۤا

बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे येह उन की सज़ा है उस पर कि उन्हों ने हमारी आयतों से इन्कार किया और बोले

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ خَلۡقًا جَدِيۡدًا ﴿٩٨﴾ اَوَلَمۡ

क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तो क्या सचमुच हम नए बन कर उठाए जाएंगे और क्या

يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنۡ يَّخۡلُقَ

वोह नहीं देखते कि वोह **अल्लाह** जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[205] उन लोगों की मिस्ल बना

مِثۡلَهُمۡ وَجَعَلَ لَهُمۡ اَجَلًا لَّا رَيۡبَ فِيۡهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوۡنَ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿٩٩﴾

सकता है[206] और उस ने उन के लिये[207] एक मीआ़द ठहरा रखी है जिस में कुछ शुबा नहीं तो ज़ालिम नहीं मानते बे नाशुक्री किये[208]

قُلۡ لَّوۡ اَنۡتُمۡ تَمۡلِكُوۡنَ خَزَآئِنَ رَحۡمَةِ رَبِّىۡۤ اِذًا لَّاَمۡسَكۡتُمۡ خَشۡيَةَ

तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ानों के मालिक होते[209] तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च

الۡاِنۡفَاقِ ؕ وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ قَتُوۡرًا ﴿١٠٠﴾ ع وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسٰى تِسۡعَ اٰيٰتٍۢ

न हो जाएं और आदमी बड़ा कन्जूस है और बेशक हम ने मूसा को नव रोशन

بَيِّنٰتٍ فَسۡـَٔلۡ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اِذۡ جَآءَهُمۡ فَقَالَ لَهٗ فِرۡعَوۡنُ اِنِّىۡ لَاَظُنُّكَ

निशानियां दीं[210] तो बनी इसराईल से पूछो जब वोह[211] उन के पास आया तो उस से फ़िरऔ़न ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़याल

يٰمُوۡسٰى مَسۡحُوۡرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَاۤ اَنۡزَلَ هٰٓؤُلَاۤءِ اِلَّا رَبُّ

में तो तुम पर जादू हुवा[212] कहा यक़ीनन तू ख़ूब जानता है[213] कि इन्हें न उतारा मगर

203 : घिसटता **204 :** जैसे वोह दुन्या में ह़क़ के देखने बोलने और सुनने से अन्धे, गूंगे, बहरे बने रहे, ऐसे ही उठाए जाएंगे। **205 :** ऐसे अज़ीम व वसीअ़ वोह **206 :** येह उस की क़ुदरत से कुछ अ़जीब नहीं **207 :** अ़ज़ाब की या मौत व बअ़्स की **208 :** बा वुजूद दलीले वाज़ेह़ और हुज्जत क़ाइम होने के **209 :** जिन की कुछ इन्तिहा नहीं **210 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : वोह नव निशानियां येह हैं : अ़सा, यदे बैज़ा, वोह उ़क़्दा जो ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام की ज़बान मुबारक में था, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ह़ल फ़रमाया और दरिया का फटना और उस में रस्ते बनना, तूफ़ान, टीड़ी (टिड्डी दल), घुन, मेंडक, ख़ून। इन में से छ[6] आख़िर का मुफ़स्सल बयान नवें पारे के छटे रुकूअ़ में गुज़र चुका। **211 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام। **212 :** या'नी مَعَاذَاللّٰہ जादू के असर से तुम्हारी अ़क़्ल बजा (दुरुस्त) न रही या ''मस्ह़ूर'' साह़िर के मा'ना में है और मत़लब येह है कि येह अ़जाइब जो आप दिखलाते हैं येह जादू के करिश्मे हैं, इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام ने **213 :** ऐ फ़िरऔ़न मुआ़निद ! (दुश्मनी रखने वाले)।

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ بَصَآىِٕرَ ۚ وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾

आस्मानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आंखें खोलने वालियां[214] और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔन तू ज़रूर हलाक होने वाला है[215]

فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّ

तो उस ने चाहा कि उन को[216] ज़मीन से निकाल दे तो हम ने उसे और उस के साथियों सब को डुबो दिया[217] और

قُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ

इस के बा'द हम ने बनी इसराईल से फ़रमाया उस ज़मीन में बसो[218] फिर जब आख़िरत का वा'दा

الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ﴿۱۰۴﴾ وَ بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَ بِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَ مَاۤ

आएगा[219] हम तुम सब को घालमेल ले आएंगे[220] और हम ने कुरआन को हक़ ही के साथ उतारा और हक़ ही के साथ उतरा[221] और

اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَ قُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ

हम ने तुम्हें न भेजा मगर ख़ुशी और डर सुनाता और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के[222] उतारा कि तुम इसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो[223]

عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ

और हम ने इसे ब तदरीज रह रह कर उतारा[224] तुम फ़रमाओ कि तुम लोग इस पर ईमान लाओ या न लाओ[225] बेशक वोह जिन्हें

اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾

इस के उतरने से पहले इल्म मिला[226] जब उन पर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं

وقف لازم

214 : कि इन आयात से मेरा सिद्क़ और मेरा ग़ैर मस्हूर (जादू किया हुवा न) होना और इन आयात का ख़ुदा की त़रफ़ से होना ज़ाहिर है। **215 :** येह हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ से फ़िरऔन के उस क़ौल का जवाब है कि उस ने आप को मस्हूर कहा था मगर उस का क़ौल किज़्ब व बात़िल था जिसे वोह ख़ुद भी जानता था मगर उस के इनाद ने उस से कहलाया और आप का इर्शादे हक़ व सह़ीह़। चुनान्चे वैसा ही वाक़ेअ़ हुवा। **216 :** या'नी हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को और उन की क़ौम को मिस्र की **217 :** और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को और उन की क़ौम को हम ने सलामती अ़त़ा फ़रमाई। **218 :** या'नी ज़मीने मिस्र व शाम में। (خازن وقرطبی) **219 :** या'नी क़ियामत। **220 :** मौक़िफ़ (मैदाने) क़ियामत में फिर सअ़दा (सआ़दत मन्दों) और अश्क़िया (बद बख़्तों) को एक दूसरे से मुमताज़ कर देंगे। **221 :** शयात़ीन के ख़ल्त़ (मिलने) से मह़फ़ूज़ रहा और किसी तग़य्युर ने इस में राह न पाई। तिब्यान में है कि हक़ से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक है। **फ़ाएदा :** आयते शरीफ़ा का येह जुम्ला हर एक बीमारी के लिये अ़मले मुजर्रब है, मौज़ए मरज़ (मरज़ की जगह) पर हाथ रख कर पढ़ कर दम कर दिया जाए तो باذن اللّٰہ बीमारी दूर हो जाती है। मुह़म्मद बिन सम्माक बीमार हुए तो उन के मुतवस्सिलीन (अ़क़ीदत मन्द) क़ारूरा (पेशाब की शीशी) ले कर एक नसरानी त़बीब के पास ब ग़रज़े इ़लाज गए, राह में एक साहि़ब मिले, निहायत ख़ुशरू व ख़ुश लिबास (या'नी हश्शाश बश्शाश चेहरे और साफ़ सुथरे लिबास वाले), उन के जिस्म मुबारक से निहायत पाकीज़ा ख़ुश्बू आ रही थी, उन्हों ने फ़रमाया : कहां जाते हो ? उन लोगों ने कहा : इब्ने सम्माक का क़ारूरा दिखाने के लिये फ़ुलां त़बीब के पास जाते हैं। उन्हों ने फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! अल्लाह के वली के लिये ख़ुदा के दुश्मन से मदद चाहते हो ! क़ारूरा फेंको, वापस जाओ ! और उन से कहो कि मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर पढ़ो "بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَ بِالْحَقِّ نَزَلَ" येह फ़रमा कर वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए। उन साहि़बों ने वापस हो कर इब्ने सम्माक से वाक़िआ़ बयान किया। उन्हों ने मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर येह कलिमे पढ़े, फ़ौरन आराम हो गया और इब्ने सम्माक ने फ़रमाया कि वोह हज़रते ख़िज़्र थे عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ السَّلَام। **222 :** तेईस साल के अ़र्से में **223 :** ताकि इस के मज़ामीन ब आसानी सुनने वालों के ज़ेहन नशीन होते रहें। **224 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए मसालेह़ व ह़वादिस (या'नी मुख़्तलिफ़ मस्लह़तों और वाक़िआ़त की ज़रूरत के पेशे नज़र) **225 :** और अपने लिये ने'मते आख़िरत इख़्तियार करो या अ़ज़ाबे जहन्नम।

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ

और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वा'दा पूरा होना था[227] और ठोड़ी

لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ۛ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا

के बल गिरते हैं[228] रोते हुए और येह क़ुरआन उन के दिल का झुकना बढ़ाता है[229] तुम फ़रमाओ अल्लाह कह कर पुकारो या

الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

रहमान कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं[230] और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो[231] और यूं कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

ने अपने लिये बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया[232] और बादशाही में कोई उस का शरीक नहीं[233] और कमज़ोरी से कोई

وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾ ع

उस का हिमायती नहीं[234] और उस की बड़ाई बोलने को तक्बीर कहो[235]

اٰيَاتُهَا ١١٠ | ١٨ سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ ٦٩ | رُكُوْعَاتُهَا ١٢

सूरए कहफ़ मक्किय्या है, इस में 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

226 : या'नी मोमिनीन अहले किताब जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले इन्तिज़ार व जुस्तजू में थे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बि'सत के बा'द शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और सलमान फ़ारसी और अबू ज़र वग़ैरहुम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم। **227 :** जो उस ने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाएंगे। **228 :** अपने रब के हुज़ूर इज्ज़ो नियाज़ से नर्म दिली से **229 मस्अला :** क़ुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तहब है। तिरमिज़ी व नसाई की हदीस में है कि वोह शख़्स जहन्नम में न जाएगा जो ख़ौफ़े इलाही से रोए। **230 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तवील सज्दा किया और अपने सज्दे में "يا الله يا رحمٰن" फ़रमाते रहे। अबू जहल ने सुना तो कहने लगा कि (हज़रत) मुहम्मद मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें तो कई मा'बूदों के पूजने से मन्अ़ करते हैं और अपने आप दो को पुकारते हैं अल्लाह को और रहमान को (مَعَاذَ اللّٰه)। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया अल्लाह और रहमान दो नाम एक ही मा'बूदे बरहक़ के हैं ख़्वाह किसी नाम से पुकारो। **231 :** या'नी मुतवस्सित आवाज़ से पढ़ो जिस से मुक़्तदी ब आसानी सुन लें। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में जब अपने अस्हाब की इमामत फ़रमाते तो क़िराअत बुलन्द आवाज़ से फ़रमाते। मुश्रिकीन सुनते तो क़ुरआने पाक को और उस के नाज़िल फ़रमाने वाले को और जिन पर नाज़िल हुवा उन सब को गालियां देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **232 :** जैसा कि यहूदो नसारा का गुमान है। **233 :** जैसा कि मुश्रिकीन कहते हैं। **234 :** या'नी वोह कमज़ोर नहीं कि उस को किसी हिमायती और मददगार की हाजत हो। **235 :** हदीस शरीफ़ में है : रोज़े क़ियामत जन्नत की तरफ़ सब से पहले वोही लोग बुलाए जाएंगे जो हर हाल में अल्लाह की हम्द करते हैं। एक और हदीस में है कि बेहतरीन दुआ "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" है और बेहतरीन ज़िक्र "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه"। (ترمذی) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक चार कलिमे बहुत प्यारे हैं "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه، اَللّٰهُ اَكْبَر، سُبْحَانَ اللّٰه، اَلْحَمْدُ لِلّٰه"। **फ़ाएदा :** इस आयत का नाम आयतुल इ़ज़्ज़ है। बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब के बच्चे जब बोलना शुरूअ़ करते थे तो उन को सब से पहले येही आयत "قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ" सिखाई जाती थी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान निहायत रह्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَ لَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜؕ(۱)

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे[2] पर किताब उतारी[3] और उस में अस्लन कजी न रखी (ज़रा भी टेढ़ापन न रखा)[4]

قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَ یُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ

अ़द्ल वाली किताब कि[5] अल्लाह के सख़्त अ़ज़ाब से डराए और ईमान वालों को जो

یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ(۲) مّٰكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ۙ(۳)

नेक काम करें बिशारत दे कि उन के लिये अच्छा सवाब है जिस में हमेशा रहेंगे

وَّ یُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ(۴) مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّ لَا

और उन[6] को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया इस बारे में न वोह कुछ इ़ल्म रखते हैं न

لِاٰبَآىٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا

उन के बाप दादा[7] कितना बड़ा बोल है कि उन के मुंह से निकलता है निरा (बिल्कुल) झूट कह

كَذِبًا (۵) فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا

रहे हैं तो कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के पीछे अगर वोह इस बात पर[8] ईमान न लाएं

الْحَدِیْثِ اَسَفًا (۶) اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ

ग़म से[9] बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है[10] कि उन्हें आज़्माएं

اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (۷) وَ اِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَیْهَا صَعِیْدًا جُرُزًا ؕ(۸) اَمْ

उन में किस के काम बेहतर हैं[11] और बेशक जो कुछ उस पर है एक दिन हम उसे पट पर (चट्यल, बेकार) मैदान कर छोड़ेंगे[12] क्या

1 : इस सूरत का नाम सूरए कह्फ़ है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में एक सो दस आयतें और एक हज़ार पांच सो सतत्तर कलिमे और छ[6] हज़ार तीन सो साठ ह़र्फ़ हैं। 2 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। 3 : या'नी कुरआने पाक जो उस की बेहतरीन ने'मत और बन्दों के लिये नजात व फ़लाह़ का सबब है। 4 : न लफ़्ज़ी न मा'नवी न इस में इख़्तिलाफ़ न तनाक़ुज़। 5 : कुफ़्फ़ार को 6 : कुफ़्फ़ार 7 : ख़ालिस जहालत से येह बोहतान उठाते और ऐसी बात़िल बात बकते हैं। 8 : या'नी कुरआन शरीफ़ पर। 9 : इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्लिये क़ल्ब फ़रमाई गई कि आप इन बे ईमानों के ईमान से मह़रूम रहने पर इस क़दर रन्जो ग़म न कीजिये और अपनी जाने पाक को इस ग़म से हलाकत में न डालिये। 10 : वोह ख़्वाह ह़ैवान हो या नबात या मआ़दिन (पहाड़ की कानें) या अन्हार (नहरें)। 11 : और कौन ज़ोहद इख़्तियार करता और मुह़र्रमात व मम्नूआ़त (ह़राम कर्दा और मन्अ़ की हुई चीज़ों) से बचता है। 12 : और आबाद होने के बा'द वीरान कर देंगे और नबात व अश्जार वग़ैरा जो चीज़ें ज़ीनत की थीं उन में से कुछ भी बाक़ी न रहेगा तो दुन्या की ना पाएदार ज़ीनत पर शेफ़्ता न हो।

حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِیْمِ كَانُوْا مِنْ اٰیٰتِنَا عَجَبًا ۹ اِذْ

तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के कनारे वाले[13] हमारी एक अ़जीब निशानी थे जब

اَوَى الْفِتْیَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَیِّئْ

उन जवानों ने[14] ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रह़मत दे[15] और हमारे

13 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि रक़ीम उस वादी का नाम है जिस में अस्ह़ाबे कह्फ़ हैं। आयत में उन अस्ह़ाब की निस्बत फ़रमाया कि वोह 14 : अपनी काफ़िर क़ौम से अपना ईमान बचाने के लिये 15 : और हिदायत व नुसरत और रिज़्क़ व मग़्फ़िरत और दुश्मन से अम्न अ़ता फ़रमा। "अस्ह़ाबे कह्फ़" क़वी तरीन क़ौल येह है कि सात ह़ज़रात थे अगर्चे इन के नामों में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है लेकिन ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما की रिवायत पर जो ख़ाज़िन में है इन के नाम येह हैं : मक्सिलमीना, यम्लीख़ा, मरतूनस, बैनूनस, सारीनूनुस, ज़ू नवानिस, कश्फ़ैततूनूनस और उन के कुत्ते का नाम क़ित्मीर है। **ख़वास :** येह अस्मा लिख कर दरवाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मह़फ़ूज़ रहता है, सरमाए पर रख दिये जाएं तो चोरी नहीं होता, कश्ती या जहाज़ इन की बरकत से ग़र्क़ नहीं होता, भागा हुवा शख़्स इन की बरकत से वापस आ जाता है, कहीं आग लगी हो और येह अस्मा कपड़े में लिख कर डाल दिये जाएं तो वोह बुझ जाती है, बच्चे के रोने, बारी के बुख़ार, दर्दे सर, उम्मुस्सिब्यान, ख़ुश्की व तरी के सफ़र में जान व माल की ह़िफ़ाज़त, अ़क़्ल की तेज़ी, क़ैदियों की आज़ादी के लिये येह अस्मा लिख कर ब तरीक़े ता'वीज़ बाज़ू में बांधे जाएं। (جمل) **वाक़िआ :** ह़ज़रते ईसा علیہ السلام के बा'द अहले इन्जील की ह़ालत अब्तर हो गई, वोह बुत परस्ती में मुब्तला हुए और दूसरों को बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे, उन में दक़्यानूस बादशाह बड़ा जाबिर था, जो बुत परस्ती पर राज़ी न होता उस को क़त्ल कर डालता, अस्ह़ाबे कह्फ़ शह्र उफ़्सूस के शुरफ़ा व मुअ़ज़्ज़ज़ीन में से ईमानदार लोग थे। दक़्यानूस के जब्रो ज़ुल्म से अपना ईमान बचाने के लिये भागे और क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीन हुए, वहां सो गए, तीन सो बरस से ज़ियादा अ़र्से तक इसी ह़ाल में रहे। बादशाह को जुस्तुजू से मा'लूम हुवा कि वोह ग़ार के अन्दर हैं तो उस ने हुक्म दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार खींच कर बन्द कर दिया जाए ताकि वोह उस में मर कर रह जाएं और वोह उन की क़ब्र हो जाए, येही उन की सज़ा है। उ़म्माले हुकूमत (हुकूमती ओ़ह्दे दारान) में से येह काम जिस के सिपुर्द किया गया वोह नेक आदमी था, उस ने उन अस्ह़ाब के नाम ता'दाद पूरा वाक़िआ रांग (एक नर्म धात) की तख़्ती पर कन्दा करा कर तांबे के सन्दूक़ में दीवार की बुन्याद के अन्दर मह़फ़ूज़ कर दिया। येह भी बयान किया गया है कि उसी त़रह़ एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी मह़फ़ूज़ करा दी गई। कुछ अ़र्से बा'द दक़्यानूस हलाक हुवा, ज़माने गुज़रे, सल्त़नतें बदलीं, ता आंकि (यहां तक कि) एक नेक बादशाह फ़रमां रवा हुवा, उस का नाम बैदरूस था जिस ने अड़सठ साल हुकूमत की, फिर मुल्क में फ़िर्क़ा बन्दी पैदा हुई और बा'ज़ लोग मरने के बा'द उठने और क़ियामत आने के मुन्किर हो गए, बादशाह एक तन्हा मकान में बन्द हो गया और उस ने गिर्या व ज़ारी से बारगाहे इलाही में दुआ़ की : या रब ! कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा जिस से ख़ल्क़ को मुर्दों के उठने और क़ियामत आने का यक़ीन ह़ासिल हो, उसी ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिये आराम की जगह ह़ासिल करने के वासित़े उसी ग़ार को तज्वीज़ किया और दीवार गिरा दी, दीवार गिरने के बा'द कुछ ऐसी हैबत त़ारी हुई कि गिराने वाले भाग गए। अस्ह़ाबे कह्फ़ ब हुक्मे इलाही फ़रहां व शादां (मसरूर व ख़ुशहाल) उठे चेहरे शिगुफ़्ता, त़बीअ़तें ख़ुश, ज़िन्दगी की तरो ताज़गी मौजूद, एक ने दूसरे को सलाम किया नमाज़ के लिये खड़े हो गए, फ़ारिग़ हो कर यम्लीख़ा से कहा कि आप जाइये और बाज़ार से कुछ खाने को भी लाइये और येह ख़बर भी लाइये कि दक़्यानूस का हम लोगों की निस्बत क्या इरादा है ? वोह बाज़ार गए और शह्र पनाह के दरवाज़े पर इस्लामी अ़लामत देखी, नए नए लोग पाए, उन्हें ह़ज़रते ईसा علیہ السلام के नाम की क़सम खाते सुना, तअ़ज्जुब हुवा येह क्या मुआ़मला है ? कल तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था, ह़ज़रते ईसा علیہ السلام का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था, आज इस्लामी अ़लामतें शह्र पनाह पर ज़ाहिर हैं, लोग बे ख़ौफ़ो ख़त़र ह़ज़रते ईसा علیہ السلام के नाम की क़सम खाते हैं, फिर आप नान पुज़ (नानबाई) की दुकान पर गए, खाना ख़रीदने के लिये उस को दक़्यानूसी सिक्के का रुपिया दिया, जिस का चलन सदियों से मौक़ूफ़ हो गया था और इस का देखने वाला कोई भी बाक़ी न रहा था। बाज़ार वालों ने ख़याल किया कि कोई पुराना ख़ज़ाना इन के हाथ आ गया है, उन्हें पकड़ कर ह़ाकिम के पास ले गए वोह नेक शख़्स था, उस ने भी उन से दरयाफ़्त किया कि ख़ज़ाना कहां है ? उन्हों ने कहा : ख़ज़ाना कहीं नहीं है, येह रुपिया हमारा अपना है। ह़ाकिम ने कहा : येह बात किसी त़रह़ क़ाबिले यक़ीन नहीं, इस में जो सनह (सिन) मौजूद है वोह तीन सो बरस से ज़ियादा का है और आप नौ जवान हैं, हम लोग बूढ़े हैं, हम ने तो कभी येह सिक्का देखा ही नहीं, आप ने फ़रमाया मैं जो दरयाफ़्त करूं वोह ठीक ठीक बताओ तो उ़क़्दा (मुआ़मला) ह़ल हो जाएगा, येह बताओ कि दक़्यानूस बादशाह किस ह़ाल व ख़याल में है ? ह़ाकिम ने कहा कि आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं, सेकड़ों बरस हुए जब एक बे ईमान बादशाह इस नाम का गुज़रा है। आप ने फ़रमाया : कल ही तो हम उस के ख़ौफ़ से जान बचा कर भागे हैं, मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीन हैं, चलो ! मैं तुम्हें उन से मिला दूं, ह़ाकिम और शह्र के अ़माइद (मुअ़ज़्ज़ज़ीन) और एक ख़ल्क़े कसीर उन के हमराह सरे ग़ार पहुंचे, अस्ह़ाबे कह्फ़ यम्लीख़ा के इन्तिज़ार में थे, कसीर लोगों के आने की आवाज़ और खटके सुन कर समझे कि यम्लीख़ा पकड़े गए और दक़्यानूसी फ़ौज हमारी जुस्तुजू में आ रही है **अल्लाह** की ह़म्द और शुक्र बजा लाने लगे, इतने में येह लोग पहुंचे, यम्लीख़ा ने तमाम

لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا عَلٰٓی اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ

काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर गिनती के कई बरस

عَدَدًا ﴿۱۱﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿۱۲﴾

थपका[16] फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें[17] दो गुरौहों में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ

हम उन का ठीक ठीक ह़ाल तुम्हें सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और

زِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿۱۳﴾ وَّ رَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ

हम ने उन को हिदायत बढ़ाई और हम ने उन के दिलों की ढारस बंधाई जब[18] खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا

आस्मान और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हम ने ज़रूर ह़द से गुज़री हुई

شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا یَاْتُوْنَ

बात कही येह जो हमारी क़ौम है उस ने **अल्लाह** के सिवा ख़ुदा बना रखे हैं क्यूं नहीं लाते

عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿ؕ۱۵﴾ وَ اِذِ

इन पर कोई रोशन सनद तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे[19] और जब

क़िस्सा सुनाया, उन ह़ज़रात ने समझ लिया कि हम ब हुक्मे इलाही इतना त़वील ज़माना सोए और अब इस लिये उठाए गए हैं कि लोगों के लिये बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी हों, ह़ाकिम सरे ग़ार पहुंचा तो उस ने तांबे का सन्दूक़ देखा, उस को खोला तो तख़्ती बरआमद हुई, उस तख़्ती में उन अस्ह़ाब के अस्मा और उन के कुत्ते का नाम लिखा था, येह भी लिखा था कि येह जमाअ़त अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये दक़्यानूस के डर से इस ग़ार में पनाह गुज़ीन हुई। दक़्यानूस ने ख़बर पा कर एक दीवार से इन्हें ग़ार में बन्द कर देने का हुक्म दिया। हम येह ह़ाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी ग़ार खुले तो लोग ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो जाएं, येह लौह़ पढ़ कर सब को तअ़ज्जुब हुवा और लोग **अल्लाह** की ह़म्दो सना बजा लाए कि उस ने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दी जिस से मौत के बा'द उठने का यक़ीन ह़ासिल होता है। ह़ाकिम ने अपने बादशाह बैदरूस को वाक़िए की इत्तिलाअ़ दी, वोह उमरा व अ़माइद को ले कर ह़ाज़िर हुवा और सज्दए शुक्रे इलाही बजा लाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस की दुआ़ क़बूल की। अस्ह़ाबे कहफ़ ने बादशाह से मुआ़नक़ा किया और फ़रमाया हम तुम्हें **अल्लाह** के सिपुर्द करते हैं وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ **अल्लाह** तेरी और तेरे मुल्क की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्नो इन्स के शर से बचाए। बादशाह खड़ा ही था कि वोह ह़ज़रात अपनी ख़्वाब गाहों की त़रफ़ वापस हो कर मसरूफ़े ख़्वाब हुए और **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें वफ़ात दी। बादशाह ने साल (नामी एक दरख़्त) के सन्दूक़ में उन के अज्साद (जिस्मों) को मह़फ़ूज़ किया और **अल्लाह** तआ़ला ने रो'ब (जलाल व शानो शौकत) से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की मजाल नहीं कि वहां पहुंच सके। बादशाह ने सरे ग़ार (ग़ार के सिरे पर) मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक सुरूर (ख़ुशी) का दिन मुअ़य्यन किया, हर साल लोग ईद की त़रह़ वहां आया करें। (خازن وغیرہ) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन में उ़र्स का मा'मूल क़दीम (पहले) से है। **16 :** या'नी उन्हें ऐसी नींद सुला दिया कि कोई आवाज़ बेदार न कर सके। **17 :** कि अस्ह़ाबे कहफ़ के **18 :** दक़्यानूस बादशाह के सामने **19 :** और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराए फिर उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा।

اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ

तुम उन से और जो कुछ वोह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये

مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ یُهَیِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَ تَرَى الشَّمْسَ اِذَا

अपनी रह्मत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ मह्बूब तुम सूरज को देखोगे कि जब

طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ

निकलता है तो उन के ग़ार से दह्नी त़रफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन्हें बाईं त़रफ़

الشِّمَالِ وَ هُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ

कतरा जाता है[20] ह़ालां कि वोह उस ग़ार के खुले मैदान में हैं[21] येह **अल्लाह** की निशानियों से है जिसे **अल्लाह** राह दे तो वोही

الْمُهْتَدِ ۚ وَ مَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ ع وَ تَحْسَبُهُمْ

राह पर और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उस का कोई ह़िमायती राह दिखाने वाला न पाओगे और तुम उन्हें

اَیْقَاظًا وَّ هُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَ كَلْبُهُمْ

जागता समझो[22] और वोह सोते हैं और हम उन की दाह्नी बाईं करवटें बदलते हैं[23] और उन का कुत्ता

بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا

अपनी कलाइयां फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर[24] ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फेर कर भागे

وَّ لَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾ وَ كَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِیَتَسَآءَلُوْا بَیْنَهُمْ ؕ قَالَ

और उन से हैबत में भर जाए[25] और यूंही हम ने उन को जगाया[26] कि आपस में एक दूसरे से अह़्वाल पूछें[27] उन में

قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ

एक कहने वाला बोला[28] तुम यहां कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम[29] दूसरे बोले तुम्हारा रब

20 : या'नी उन पर तमाम दिन साया रहता है और तुलूअ़ से ग़ुरूब तक किसी वक़्त भी धूप की गरमी उन्हें नहीं पहुंचती 21 : और ताज़ा हवाएं उन को पहुंचती हैं। 22 : क्यूं कि उन की आंखें खुली हैं। 23 : साल में एक मरतबा दसवीं मुह़र्रम को 24 : जब वोह करवट लेते हैं वोह भी करवट बदलता है। **फ़ाएदा :** तफ़्सीरे सा'लबी में है कि जो कोई इन कलिमात "وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ" को लिख कर अपने साथ रखे कुत्ते के ज़रर से अम्न में रहे। 25 : **अल्लाह** तआ़ला ने ऐसी हैबत से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता। ह़ज़रते मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) जंगे रूम के वक़्त कह्फ़ की त़रफ़ गुज़रे तो उन्हों ने अस्ह़ाबे कह्फ़ पर दाख़िल होना चाहा, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने उन्हें मन्अ़ किया और येह आयत पढ़ी, फिर एक जमाअ़त ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के हुक्म से दाख़िल हुई तो **अल्लाह** तआ़ला ने एक ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए। 26 : एक मुद्दते दराज़ के बा'द 27 : और **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरते अ़ज़ीमा देख कर उन का यक़ीन ज़ियादा हो और वोह उस की ने'मतों का शुक्र अदा करें। 28 : या'नी मक्सलमीना जो उन में सब से बड़े और उन के सरदार हैं। 29 : क्यूं कि वोह ग़ार में तुलूए आफ़्ताब के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो आफ़्ताब

أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۖ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ

ख़ूब जानता है जितना तुम ठहरे[30] तो अपने में एक को येह चांदी ले कर[31] शहर में भेजो फिर वोह ग़ौर करे कि

أَيُّهَا أَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ

वहां कौन सा खाना ज़ियादा सुथरा है[32] कि तुम्हारे लिये उस में से खाने को लाए और चाहिये कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिलाअ़

أَحَدًا ﴿١٩﴾ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ

न दे बेशक अगर वोह तुम्हें जान लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे[33] या अपने दीन[34] में फेर लेंगे

وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ

और ऐसा हुवा तो तुम्हारा कभी भला न होगा और इसी तरह हम ने उन की इत्तिलाअ़ कर दी[35] कि लोग जान लें[36] कि

وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ

अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शुबा नहीं जब वोह लोग उन के मुआमले में बाहम

أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۖ رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ

झगड़ने लगे[37] तो बोले इन के ग़ार पर कोई इमारत बनाओ इन का रब इन्हें ख़ूब जानता है वोह बोले जो

غَلَبُوا عَلٰى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُولُونَ ثَلٰثَةٌ

उस काम में ग़ालिब रहे थे[38] क़सम है कि हम तो इन पर मस्जिद बनाएंगे[39] अब कहेंगे[40] कि वोह तीन हैं

رَابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَ

चौथा उन का कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उन का कुत्ता बे देखे अलाव तुक्का (बे तुकी) बात[41] और

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بانّ التاء بعد الياء من النصف الاول و اللام الثانية من النصف الاخير ١٢

क़रीबे ग़ुरूब था, इस से उन्हों ने गुमान किया कि येह वोही दिन है। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि इज्तिहाद जाइज़ और ज़न्ने ग़ालिब की बिना पर क़ौल करना दुरुस्त है। **30 :** उन्हें या तो इल्हाम से मा'लूम हुवा कि मुद्दते दराज़ गुज़र चुकी या उन्हें कुछ ऐसे दलाइल व क़राइन मिले जैसे कि बालों और नाख़ुनों का बढ़ जाना। जिस से उन्हों ने येह ख़याल किया कि अ़र्सा बहुत गुज़र चुका। **31 :** या'नी दक़्यानूसी सिक्के के रुपे जो घर से ले कर आए थे और सोते वक़्त अपने सिरहाने रख लिये थे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुसाफ़िर को ख़र्च साथ में रखना तरीक़ए तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है चाहिये कि भरोसा **अल्लाह** पर रखे। **32 :** और उस में कोई शुबा हुरमत नहीं। **33 :** और बुरी तरह क़त्ल करेंगे **34 :** या'नी जब्रो सितम से कुफ़्री मिल्लत **35 :** लोगों को दक़्यानूस के मरने और मुद्दत गुज़र जाने के बा'द **36 :** और बैदरूस की क़ौम में जो लोग मरने के बा'द ज़िन्दा होने का इन्कार करते हैं उन्हें मा'लूम हो जाए **37 :** या'नी उन की वफ़ात के बा'द उन के गिर्द इमारत बनाने में। **38 :** या'नी बैदरूस बादशाह और उस के साथी। **39 :** जिस में मुसल्मान नमाज़ पढ़ें और इन के क़ुर्ब से बरकत हासिल करें। (مدارک) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना अहले ईमान का क़दीम तरीक़ा है और क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र फ़रमाना और इस को मन्अ़ न करना इस फ़े'ल के दुरुस्त होने की क़वी तरीन दलील है। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के जवार में बरकत हासिल होती है इसी लिये अहलुल्लाह के मज़ारात पर लोग हुसूले बरकत के लिये जाया करते हैं और इसी लिये क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत और मूजिबे सवाब है। **40 :** नसरानी जैसा कि इन में से सय्यिद और आ़क़िब ने कहा **41 :** जो बे जाने कह दी किसी तरह सहीह नहीं हो सकती।

يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّ ثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا یَعْلَمُهُمْ

कुछ कहेंगे सात हैं[42] और आठवां उन का कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब उन की गिनती ख़ूब जानता है[43] उन्हें नहीं जानते

اِلَّا قَلِیْلٌ ۬ۥ فَلَا تُمَارِ فِیْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّ لَا تَسْتَفْتِ فِیْهِمْ مِّنْهُمْ

मगर थोड़े[44] तो उन के बारे में[45] बहस न करो मगर इतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी[46] और उन के[47] बारे में किसी किताबी से

اَحَدًا ﴿۲۲﴾ وَ لَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ

कुछ न पूछो और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि **अल्लाह**

اللّٰهُ ۫ وَ اذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِیْتَ وَ قُلْ عَسٰۤی اَنْ یَّهْدِیَنِ رَبِّیْ لِاَقْرَبَ

चाहे[48] और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए[49] और यूं कह कि क़रीब है मेरा रब मुझे इस[50] से नज़्दीक तर

مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿۲۴﴾ وَ لَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ وَ ازْدَادُوْا

रास्ती (हिदायत) की राह दिखाए[51] और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस ठहरे

تِسْعًا ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَیْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ

नव ऊपर[52] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ख़ूब जानता है वोह जितना ठहरे[53] उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब वोह क्या ही

42 : और येह कहने वाले मुसल्मान हैं **अल्लाह** तआला ने इन के क़ौल को साबित रखा क्यूं कि इन्हों ने जो कुछ कहा वोह नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इल्म हासिल कर के कहा। 43 : क्यूं कि जहानों की तफ़ासील और काएनाते माज़िया व मुस्तक़्बिला का इल्म **अल्लाह** ही को है या जिस को वोह अ़ता फ़रमाए। 44 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं क़लील में से हूं जिन का आयत में इस्तिस्ना फ़रमाया। 45 : अहले किताब से 46 : और क़ुरआन में नाज़िल फ़रमा दी गई, आप इतने ही पर इक्तिफ़ा करें, इस मुआ़मले में यहूद के जहल का इज़्हार करने के दरपै न हों। 47 : या'नी अस्हाबे कहफ़ के 48 : या'नी जब किसी काम का इरादा हो तो येह कहना चाहिये कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ ऐसा करूंगा, बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰہ के न कहे। **शाने नुज़ूल :** अहले मक्का ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से जब अस्हाबे कहफ़ का हाल दरयाफ़्त किया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया : कल बताऊंगा और اِنْ شَآءَ اللّٰہ नहीं फ़रमाया था, कई रोज़ वह्य नहीं आई फिर येह आयत नाज़िल हुई। 49 : या'नी اِنْ شَآءَ اللّٰہ कहना याद न रहे तो जब याद आए कह ले। हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जब तक उस मजलिस में रहे। इस आयत की तफ़्सीरों में कई क़ौल हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अगर किसी नमाज़ को भूल गया तो याद आते ही अदा करे। (بخاری و مسلم) बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अपने रब को याद कर जब तू अपने आप को भूल जाए। क्यूं कि ज़िक्र का कमाल येही है कि ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाला) मज़्कूर (ज़िक्र किये जाने वाले) में फ़ना हो जाए :

ذکرو ذاکر محو گردد بالتمام جملگی مذکور ماند والسلام

(**तरजमा :** ज़िक्र और ज़ाकिर दोनों मज़्कूर की ज़ात में इस त़रह फ़ना हो जाएं कि सिर्फ़ मज़्कूर ही बाक़ी रह जाए)

50 : वाक़िअ़ए अस्हाबे कहफ़ के बयान और इस की ख़बर देने 51 : या'नी ऐसे मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए जो मेरी नुबुव्वत पर इस से भी ज़ियादा ज़ाहिर दलालत करें जैसे कि अम्बियाए साबिक़ीन के अह़वाल का बयान और ग़ुयूब का इल्म और क़ियामत तक पेश आने वाले हवादिस व वक़ाएअ़ का बयान और शक़्क़ुल क़मर और हैवानात से अपनी शहादतें दिलवाना वग़ैरहा। (خازن و جمل) 52 : और अगर वोह इस मुद्दत में झगड़ा करें तो 53 : उसी का फ़रमाना ह़क़ है। **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसरानियों ने कहा था तीन सो बरस तो ठीक हैं और नव की ज़ियादती कैसी है इस का हमें इल्म नहीं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ٘ وَّلَا یُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾

देखता और क्या ही सुनता है[54] उस के सिवा उन का[55] कोई वाली नहीं और वोह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता

وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَلَنْ

और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब[56] तुम्हें वह्य हुई इस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं[57] और हरगिज़

تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ

तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्हो शाम अपने रब को

بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ

पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते[58] और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम

زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ

दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार (ज़ीनत) चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह

هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ

अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हद से गुज़र गया और फ़रमा दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है[59] तो जो चाहे

فَلْیُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ

ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे[60] बेशक हम ने ज़ालिमों[61] के लिये वोह आग तय्यार कर रखी है जिस की दीवारें उन्हें घेर

سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ یَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ

लेंगी और अगर[62] पानी के लिये फ़रियाद करें तो उन की फ़रियाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये (पिघले) हुए धात की तरह है कि उन के मुंह भून (जला) देगा

بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

क्या ही बुरा पीना[63] और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह बेशक जो ईमान लाए और नेक काम

54 : कोई ज़ाहिर और कोई बातिन उस से छुपा नहीं। 55 : आस्मान और ज़मीन वालों का 56 : या'नी कुरआन शरीफ़। 57 : और किसी को इस के तब्दील व तग़यीर की कुदरत नहीं 58 : या'नी इख़्लास के साथ हर वक़्त अल्लाह की ताअ़त में मश्ग़ूल रहते हैं। **शाने नुज़ूल :** सरदाराने कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हमें ग़ुरबा और शिकस्ता हालों के साथ बैठते शर्म आती है अगर आप उन्हें अपनी सोह़बत से जुदा कर दें तो हम इस्लाम ले आएं और हमारे इस्लाम ले आने से ख़ल्क़े कसीर इस्लाम ले आएगी। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 59 : या'नी उस की तौफ़ीक़ से और हक़ व बातिल ज़ाहिर हो चुका, मैं तो मुसल्मानों को इन की ग़ुर्बत के बाइस तुम्हारी दिलजूई के लिये अपनी मजलिसे मुबारक से जुदा नहीं करूंगा। 60 : अपने अन्जाम व मआल को सोच ले और समझ ले कि 61 : या'नी काफ़िरों 62 : प्यास की शिद्दत से 63 : अल्लाह की पनाह। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : वोह ग़लीज़ पानी है रौग़ने ज़ैतून की तलछट की तरह। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि जब वोह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की खाल उस से जल कर गिर पड़ेगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि वोह पिघलाया हुवा रांग (सीसा) और पीतल है।

الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۚ﴿۳۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ

किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों[64] उन के लिये बसने के

عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

बाग़ हैं उन के नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे[65]

وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى

और सब्ज़ कपड़े करेब (रेशम के बारीक) और क़नादीज़ (मोटे) के पहनेंगे वहां तख़्तों पर

الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۳۱﴾ ع وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا

तक्या लगाए[66] क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह और उन के सामने

رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ

दो मर्दों का हा़ल बयान करो[67] कि उन में एक को[68] हम ने अंगूरों के दो बाग़ दिये और उन को खजूरों से ढांप लिया और

جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿۳۲﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ

उन के बीच बीच में खेती रखी[69] दोनों बाग़ अपने फल लाए और उस में कुछ कमी

شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿۳۳﴾ ۙ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ

न दी[70] और दोनों के बीच में हम ने नहर बहाई और वोह[71] फल रखता था[72] तो अपने साथी[73] से बोला और वोह

يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ

इस से रद्दो बदल (तबादलए ख़याल) करता था[74] मैं तुझ से माल में ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा ज़ोर रखता हूं[75] अपने बाग़ में गया[76] और अपनी जान पर ज़ुल्म

لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿۳۵﴾ ۙ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ

करता हुवा[77] बोला मुझे गुमान नहीं कि येह कभी फ़ना हो और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत

64 : बल्कि उन्हें उन की नेकियों की जज़ा देते हैं। 65 : हर जन्नती को तीन तीन कंगन पहनाए जाएंगे सोने और चांदी और मोतियों के। ह़दीसे सह़ीह़ में है कि वुज़ू का पानी जहां जहां पहुंचता है वोह तमाम आ'ज़ा बिहिश्ती ज़ेवरों से आरास्ता किये जाएंगे। 66 : शाहाना शानो शकोह के साथ होंगे। 67 : कि काफ़िर व मोमिन इस में ग़ौर कर के अपना अपना अन्जाम व मआल समझें और उन दो मर्दों का ह़ाल येह है 68 : या'नी काफ़िर को 69 : या'नी उन्हें निहायत बेहतरीन तरतीब के साथ मुरत्तब किया। 70 : बहार ख़ूब आई 71 : बाग़ वाला इस के इ़लावा और भी 72 : या'नी अम्वाले कसीरा, सोना, चांदी वग़ैरा हर क़िस्म की चीज़ें 73 : ईमानदार 74 : और इतरा कर और अपने माल पर फ़ख़्र कर के कहने लगा कि 75 : मेरा कुम्बा क़बीला बड़ा है, मुलाज़िम ख़िदमत गार नोकर चाकर बहुत हैं। 76 : और मुसल्मान का हाथ पकड़ कर उस को साथ ले गया, वहां उस को इफ़्तिख़ारन हर त़रफ़ लिये फिरा और हर हर चीज़ दिखाई। 77 : कुफ़्र के साथ और बाग़ की ज़ीनत व ज़ेबाइश और रौनक़ व बहार देख कर मग़रूर हो गया और।

قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰی رَبِّیْ لَاَجِدَنَّ خَیْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ

क़ाइम हो और अगर मैं[78] अपने रब की त़रफ़ फिर कर गया भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा[79] उस के साथी[80]

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ یُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِیْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ

ने उस से उलट फेर (बहूसो मुबाहसा) करते हुए जवाब दिया क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे (साफ़ शफ़्फ़ाफ़) पानी की

نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿۳۷﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّیْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّیْۤ

बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया[81] लेकिन मैं तो येही कहता हूं कि वोह अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं

اَحَدًا ﴿۳۸﴾ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا

करता हूं और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर

بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿۳۹﴾ ۚ فَعَسٰی رَبِّیْۤ اَنْ

अल्लाह की मदद का[82] अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था[83] तो क़रीब है कि मेरा रब

یُّؤْتِیَنِ خَیْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَیُرْسِلَ عَلَیْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ

मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे[84] और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो वोह पट पर

صَعِیْدًا زَلَقًا ﴿۴۰﴾ ۙ اَوْ یُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِیْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿۴۱﴾ وَ

मैदान (चट्यल बेकार) हो कर रह जाए[85] या इस का पानी ज़मीन में धंस जाए[86] फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके[87] और

اُحِیْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ یُقَلِّبُ كَفَّیْهِ عَلٰی مَاۤ اَنْفَقَ فِیْهَا وَهِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰی

उस के फल घेर लिये गए[88] तो अपने हाथ मलता रह गया[89] उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वोह अपनी टट्टियों (छप्परों) पर

عُرُوْشِهَا وَیَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّیْۤ اَحَدًا ﴿۴۲﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

गिरा हुवा था[90] और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता और उस के पास कोई जमाअ़त

78 : जैसा कि तेरा गुमान है बिलफ़र्ज़ 79 : क्यूं कि दुन्या में भी मैं ने बेहतरीन जगह पाई है। 80 : मुसल्मान 81 : अ़क़्लो बुलूग़ क़ुव्वतो त़ाक़त अ़त़ा की और तू सब कुछ पा कर काफ़िर हो गया। 82 : अगर तू बाग़ देख कर مَاشَآءَ اللّٰه कहता और ए'तिराफ़ करता कि येह बाग़ और इस के तमाम मह़ासिल (पैदावार) व मनाफ़ेअ़ अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत और उस के फ़ज़्लो करम से हैं और सब कुछ उस के इख़्तियार में है, चाहे इस को आबाद रखे चाहे वीरान करे, ऐसा कहता तो येह तेरे ह़क़ में बेहतर होता, तू ने ऐसा क्यूं नहीं कहा ? 83 : इस वज्ह से तकब्बुर में मुब्तला था और अपने आप को बड़ा समझता था 84 : दुन्या में या उ़क़्बा में 85 : कि इस में सब्ज़े का नामो निशान बाक़ी न रहे 86 : नीचे चला जाए कि किसी त़रह़ निकाला न जा सके 87 : चुनान्चे ऐसा ही हुवा अ़ज़ाब आया 88 : और बाग़ बिल्कुल वीरान हो गया। 89 : पशेमानी और ह़सरत से 90 : इस ह़ाल को पहुंच कर उस को मोमिन की नसीह़त याद आती है और अब वोह समझता है कि येह उस के कुफ़्र व सरकशी का नतीजा है।

فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿۴۳﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

न थी कि अल्लाह के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने (के) क़ाबिल था[91] यहां खुलता है[92] कि इख़्तियार

لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿۴۴﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ

सच्चे अल्लाह का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सब से भला और उन के सामने[93] ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत

الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ

बयान करो[94] जैसे एक पानी हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना हो कर निकला[95] कि सूखी घास

هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلْمَالُ

हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं[96] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू वाला है[97] माल

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ

और बेटे येह जीती दुन्या का सिंगार (ज़ीनत) है[98] और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें[99] उन का सवाब

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿۴۶﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ

तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह उम्मीद में सब से भली और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे[100] और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई

بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ

देखोगे[101] और हम उन्हें उठाएंगे[102] तो उन में से किसी को छोड़ न देंगे और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे (सफ़ें बनाए) पेश

صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ ؗ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ

होंगे[103] बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार बनाया था[104] बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वा'दे का

91 : कि जाएअ शुदा चीज़ को वापस कर सकता। **92 :** और ऐसे हालात में मा'लूम होता है **93 :** ऐ सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **94 :** कि इस की हालत ऐसी है **95 :** ज़मीन तरो ताज़ा हुई फिर क़रीब ही ऐसा हुवा **96 :** और परागन्दा कर दें। **97 :** पैदा करने पर भी और फ़ना करने पर भी, इस आयत में दुन्या की तरी व ताज़गी और बह्जत व शादमानी (ख़ुशी व मसर्रत) और इस के फ़ना व हलाक होने की सब्ज़ा से तम्सील फ़रमाई गई कि जिस त़रह सब्ज़ा शादाब हो कर फ़ना हो जाता है और उस का नामो निशान बाक़ी नहीं रहता येही हालत दुन्या की हयाते बे ए'तिबार की है, इस पर मग़रूर व शैदा होना अ़क़्ल का काम नहीं। **98 :** राहे क़ब्रो आख़िरत के लिये तोशा नहीं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि माल व औलाद दुन्या की खेती हैं और आ'माले सालिहा आख़िरत की और अल्लाह तआला अपने बहुत से बन्दों को येह सब अ़ता फ़रमाता है। **99 :** बाक़ियाते सालिहात से आ'माले ख़ैर मुराद हैं जिन के समरे इन्सान के लिये बाक़ी रहते हैं जैसे कि पन्जगाना नमाज़ें और तस्बीह व तह्मीद। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बाक़ियाते सालिहात की कसरत का हुक्म फ़रमाया। सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि वोह क्या हैं ? फ़रमाया : "اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه" पढ़ना। **100 :** कि अपनी जगह से उखड़ कर अब्र (बादलों) की त़रह रवाना होंगे **101 :** न इस पर कोई पहाड़ होगा न इमारत न दरख़्त **102 :** क़ब्रों से और मौक़िफ़ हिसाब (ह़श्र के मैदान) में हाज़िर करेंगे। **103 :** हर हर उम्मत की जमाअ़त की क़ितारें अ़लाहदा अ़लाहदा, अल्लाह तआ़ला उन से फ़रमाएगा **104 :** ज़िन्दा बरह्ना तन (नंगे बदन) व बरह्ना पा (नंगे पाउं) बे ज़रो माल।

لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿۴۸﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا

वक़्त न रखेंगे[105] और नामए आ'माल रखा जाएगा[106] तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उस के लिखे से डरते

فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا

होंगे और[107] कहेंगे हाए ख़राबी हमारी इस नविश्ते (तह़रीर) को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न

كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ

बड़ा जिसे घेर न लिया हो और अपना सब किया उन्हों ने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म

اَحَدًا ﴿۴۹﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ

ع ۶ ۱۸

नहीं करता[108] और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो[109] तो सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस

كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ

कि क़ौमे जिन्न से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया[110] भला क्या उसे और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿۵۰﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ

बनाते हो[111] और वोह तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदल (बदला) मिला[112] न मैं ने

خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

आस्मानों और ज़मीन को बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न ख़ुद उन के बनाते वक़्त और न मेरी शान कि

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿۵۱﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

गुमराह करने वालों को बाज़ू बनाऊं[113] और जिस दिन फ़रमाएगा[114] कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿۵۲﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ

तो उन्हें पुकारेंगे वोह उन्हें जवाब न देंगे और हम उन के[115] दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे[116] और मुजरिम दोज़ख़ को

105 : जो वा'दा कि हम ने ज़बाने अम्बिया पर फ़रमाया था, येह उन से फ़रमाया जाएगा जो लोग मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत क़ाइम होने के मुन्किर थे। 106 : हर शख़्स का आ'माल नामा उस के हाथ में, मोमिन का दाहने में, काफ़िर का बाएं में। 107 : उस में अपनी बदियां लिखी देख कर 108 : न किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब करे न किसी की नेकियां घटाए। 109 : तहिय्यत का 110 : और बा वुजूद मामूर होने के उस ने सज्दा न किया, तो ऐ बनी आदम ! 111 : और उन की इत़ाअ़त इख़्तियार करते हो। 112 : कि बजाए त़ाअ़ते इलाही बजा लाने के त़ाअ़ते शैत़ान में मुब्तला हुए। 113 : मा'ना येह हैं कि अश्या के पैदा करने में मुतफ़र्रिद और यगाना हूं, न मेरा कोई शरीके अ़मल न कोई मुशीरे कार, फिर मेरे सिवा और किसी की इबादत किस त़रह़ दुरुस्त हो सकती है। 114 : अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार से 115 : या'नी बुतों और बुत परस्तों के या अहले हुदा और अहले ज़लाल (गुमराहों) के 116 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ''मौबिक़'' जहन्नम की एक वादी का नाम है।

النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ یَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿۵۳﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا

देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें इस में गिरना है और उस से फिरने की कोई जगह न पाएंगे और बेशक हम ने

فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ

लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की मसल (मिसालें) त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई[117] और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर

جَدَلًا ﴿۵۴﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَیَسْتَغْفِرُوْا

झगड़ालू है[118] और आदमियों को किस चीज़ ने इस से रोका कि ईमान लाते जब हिदायत[119] उन के पास आई और अपने रब से मुआफ़ी

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِیَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾ وَ

मांगते[120] मगर येह कि उन पर अगलों का दस्तूर आए[121] या उन पर क़िस्म क़िस्म का अ़ज़ाब आए और

مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَۚ وَیُجَادِلُ الَّذِیْنَ

हम रसूलों को नहीं भेजते मगर[122] ख़ुशी और[123] डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं

كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰیٰتِیْ وَمَآ اُنْذِرُوْا

वोह बात़िल के साथ झगड़ते हैं[124] कि उस से ह़क़ को हटावें और उन्हों ने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए गए थे[125] उन की

هُزُوًا ﴿۵۶﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِیَ مَا

हंसी बना ली और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो वोह उन से मुंह फेर ले[126] और उस के हाथ जो आगे भेज चुके[127]

قَدَّمَتْ یَدٰهُؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَفِیْٓ اٰذَانِهِمْ

उसे भूल जाए हम ने उन के दिलों पर गि़लाफ़ कर दिये हैं कि कुरआन न समझें और उन के कानों में

وَقْرًاؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ یَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾ وَرَبُّكَ

गिरानी (नक़्स)[128] और अगर तुम उन्हें हिदायत की त़रफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे[129] और तुम्हारा रब

117 : ताकि समझें और पन्द पज़ीर हों। 118 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहां आदमी से मुराद नज़्र इब्ने ह़ारिस है और झगड़े से इस का कुरआने पाक में झगड़ा करना। बा'ज़ ने कहा : उबय बिन ख़लफ़ मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तमाम कुफ़्फ़ार मुराद हैं। बा'ज़ के नज़्दीक आयत उ़मूम पर है और येही असह़ह़ (ज़ियादा सह़ीह़ क़ौल) है। 119 : या'नी ''कुरआने करीम'' या ''रसूले मुकर्रम'' صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक 120 : मा'ना येह हैं कि उन के लिये जाए उ़ज़्र नहीं है क्यूं कि उन्हें ईमान व इस्तिग़्फ़ार से कोई मानेअ़ नहीं। 121 : या'नी वोह हलाकत जो मुक़द्दर है उस के बा'द 122 : ईमानदारों इत़ाअ़त शिआ़रों के लिये सवाब की 123 : बे ईमानों ना फ़रमानों के लिये अ़ज़ाब का 124 : और रसूलों को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं। 125 : अ़ज़ाब के 126 : और पन्द पज़ीर न हो और उन पर ईमान न लाए 127 : या'नी मा'सियत और गुनाह और ना फ़रमानी जो कुछ उस ने किया 128 : कि ह़क़ बात नहीं सुनते 129 : येह उन के ह़क़ में है जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं।

الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ یُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ

बख़्शने वाला मेहर (रहमत) वाला है अगर वोह उन्हें[130] उन के किये पर पकड़ता तो जल्द उन पर अ़ज़ाब भेजता[131]

بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ یَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۟ وَ تِلْكَ الْقُرٰۤى اَهْلَكْنٰهُمْ

बल्कि उन के लिये एक वा'दे का वक़्त है[132] जिस के सामने कोई पनाह न पाएंगे और येह बस्तियां हम ने तबाह कर दीं[133]

لَمَّا ظَلَمُوْا وَ جَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۟ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ

जब उन्हों ने ज़ुल्म किया[134] और हम ने उन की बरबादी का एक वा'दा रखा था और याद करो जब मूसा[135] ने अपने ख़ादिम से कहा[136] मैं

اَبْرَحُ حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَیْنِ اَوْ اَمْضِیَ حُقُبًا ۟ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुन्दर मिले हैं[137] या क़रनों चला (मुद्दतों चलता) जाऊं[138] फिर जब वोह दोनों उन दरियाओं के

بَیْنِهِمَا نَسِیَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ سَرَبًا ۟ فَلَمَّا جَاوَزَا

मिलने की जगह पहुंचे[139] अपनी मछली भूल गए और उस ने समुन्दर में अपनी राह ली सुरंग बनाती फिर जब वहां से गुज़र गए[140]

قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ؗ لَقَدْ لَقِیْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۟ قَالَ

मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुब्ह़ का खाना लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा[141] बोला

اَرَءَیْتَ اِذْ اَوَیْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّیْ نَسِیْتُ الْحُوْتَ ؗ وَ مَاۤ اَنْسٰىنِیْهُ

भला देखिये तो जब हम ने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैत़ान ही ने भुला दिया

اِلَّا الشَّیْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَ اتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ ۖۗ عَجَبًا ۟ قَالَ

कि मैं उस का मज़्कूर (ज़िक्र) करूं और उस ने[142] तो समुन्दर में अपनी राह ली अचम्बा (अ़जीब बात) है मूसा ने कहा

130 : दुन्या ही में 131 : लेकिन उस की रह़मत है कि उस ने मोहलत दी और अ़ज़ाब में जल्दी न फ़रमाई। 132 : या'नी रोज़े क़ियामत बअ़्स व ह़िसाब का दिन 133 : वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया और वोह बस्तियां वीरान हो गईं। इन बस्तियों से क़ौमे लूत़ व आ़द व समूद वग़ैरा की बस्तियां मुराद हैं। 134 : ह़क़ को न माना और कुफ़्र इख़्तियार किया। 135 : इब्ने इमरान नबिय्ये मोह़तरम साह़िबे तौरैत व मो'जिज़ाते ज़ाहिरा 136 : जिन का नाम यूशअ़ इब्ने नून है जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की ख़िदमत व सोह़बत में रहते थे और आप से इ़ल्म अख़्ज़ करते थे और आप के बा'द आप के वली अ़ह्द हैं। 137 : बह़्रे फ़ारस व बह़्रे रूम जानिबे मशरिक़ में और मज्मउ़ल बह़्रैन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْهِ السَّلَام की मुलाक़ात का वा'दा दिया गया था, इस लिये आप ने वहां पहुंचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया और फ़रमाया कि मैं अपनी सई जारी रखूंगा जब तक कि वहां पहुंचूं। 138 : अगर वोह जगह दूर हो, फिर येह ह़ज़रात रोटी और नमकीन भुनी मछली ज़म्बील में तोशे के त़ौर पर ले कर रवाना हुए 139 : जहां एक पथ्थर की चट्टान थी और चश्मए ह़यात था तो वहां दोनों ह़ज़रात ने इस्तिराह़त की और मसरूफ़े ख़्वाब हो गए, भुनी हुई मछली ज़म्बील में ज़िन्दा हो गई और तड़प कर दरिया में गिरी और उस पर से पानी का बहाव रुक गया और एक मेह़राब सी बन गई। ह़ज़रते यूशअ़ को बेदार होने के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से उस का ज़िक्र करना याद न रहा। चुनान्चे, इर्शाद होता है 140 : और चलते रहे यहां तक कि दूसरे रोज़ खाने का वक़्त आया तो ह़ज़रत 141 : थकान भी है भूक की शिद्दत भी है और येह बात जब तक मज्मउ़ल बह़्रैन पहुंचे थे पेश न आई थी, मन्ज़िले मक़्सूद से आगे बढ़ कर तकान और भूक मा'लूम हुई, इस में अल्लाह तआ़ला की ह़िक्मत थी कि मछली याद करें और उस की त़लब में मन्ज़िले मक़्सूद की त़रफ़ वापस हों, ह़ज़रते

ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا

तो हमारे बन्दों | देखते | तो पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान | येही तो हम चाहते थे[143]

مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَیْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ عَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ

में से एक बन्दा पाया[144] जिसे हम ने अपने पास से रह़मत दी[145] और उसे अपना इ़ल्मे लदुन्नी अ़त़ा किया[146] उस से

لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ

मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं इस शर्त़ पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें ता'लीम हुई[147] कहा आप

لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَ كَیْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे[148] और उस बात पर क्यूंकर सब्र करेंगे जिसे आप का इ़ल्म मुह़ीत़ नहीं[149]

قَالَ سَتَجِدُنِیْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّ لَآ اَعْصِیْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ

कहा अ़न्क़रीब **अल्लाह** चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा कहा तो अगर आप मेरे

اتَّبَعْتَنِیْ فَلَا تَسْـَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع

साथ रहते हैं तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र न करूं[150]

मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के येह फ़रमाने पर ख़ादिम ने मा'ज़िरत की और **142 :** या'नी मछली ने **143 :** मछली का जाना ही तो हमारे हुसूले मक़्सद की अ़लामत है और जिन की त़लब में हम चले हैं उन की मुलाक़ात वहीं होगी। **144 :** जो चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहा था, येह ह़ज़रते ख़िज़्र थे عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, लफ़्ज़े ख़िज़्र लुग़त में तीन त़रह़ आया है ब कस्रे **خا** व सुकूने **ضاد** और ब फ़त्हे **خا** व सुकूने **ضاد** और ब फ़त्हे **خا** व कस्रे **ضاد**, येह लक़ब है और वज्ह इस लक़ब की येह है कि जहां बैठते या नमाज़ पढ़ते हैं वहां अगर घास ख़ुश्क हो तो सर सब्ज़ हो जाती है, नाम आप का बल्या बिन मल्कान और कुन्यत अबुल अ़ब्बास है। एक क़ौल येह है कि आप बनी इसराईल में से हैं, एक क़ौल येह है कि आप शाहज़ादे हैं, आप ने दुन्या तर्क कर के ज़ोह्द इख़्तियार फ़रमाया। **145 :** इस रह़मत से या नुबुव्वत मुराद है या विलायत या इ़ल्म या त़ूले ह़यात, आप वली तो बिल यक़ीन हैं, आप की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। **146 :** या'नी ग़ुयूब का इ़ल्म। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : **इ़ल्मे लदुन्नी** वोह है जो बन्दे को ब त़रीक़े इल्हाम ह़ासिल हो। ह़दीस शरीफ़ में है : जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ السَّلَام को देखा कि सफ़ेद चादर में लिपटे हुए हैं तो आप ने उन्हें सलाम किया। उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारी सर ज़मीन में सलाम कहां ? आप ने फ़रमाया कि मैं मूसा हूं। उन्हों ने कहा कि बनी इसराईल के मूसा ? फ़रमाया कि जी हां फिर **147 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को इ़ल्म की त़लब में रहना चाहिये ख़्वाह कितना ही बड़ा आ़लिम हो। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि जिस से इ़ल्म सीखे उस के साथ ब तवाज़ोअ़ व अदब पेश आए। (مدارک) ख़िज़्र ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के जवाब में **148 :** ह़ज़रते ख़िज़्र ने येह इस लिये फ़रमाया कि वोह जानते थे कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام उमूरे मुन्करा व मम्नूआ़ देखेंगे और अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام से मुम्किन ही नहीं कि वोह मुन्करात देख कर सब्र कर सकें, फिर ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने इस तर्के सब्र का उ़ज़्र भी ख़ुद ही बयान फ़रमा दिया और फ़रमाया **149 :** और ज़ाहिर में वोह मुन्कर हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया कि एक इ़ल्म **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ को ऐसा अ़त़ा फ़रमाया जो आप नहीं जानते और एक इ़ल्म आप को ऐसा अ़त़ा फ़रमाया जो मैं नहीं जानता। मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन कहते हैं कि जो इ़ल्म ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने लिये ख़ास फ़रमाया वोह इ़ल्मे बात़िन व मुकाशफ़ा है और अहले कमाल के लिये येह बाइ़से फ़ज़्ल है। चुनान्चे वारिद हुवा है कि सिद्दीक़ को नमाज़ वग़ैरा आ'माल की बिना पर सह़ाबा पर फ़ज़ीलत नहीं बल्कि उन की फ़ज़ीलत इस चीज़ से है जो उन के सीने में है या'नी इ़ल्मे बात़िन व इ़ल्मे असरार, क्यूं कि जो अफ़्आ़ल सादिर होंगे वोह ह़िक्मत से होंगे अगर्चे ब ज़ाहिर ख़िलाफ़ मा'लूम हों। **150 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि शागिर्द और मुस्तर्शिद (मुरीद) के आदाब में से है कि वोह शैख़ व उस्ताद के अफ़्आ़ल पर ज़बाने ए'तिराज़ न खोले और मुन्तज़िर रहे कि वोह ख़ुद ही उस की ह़िक्मत ज़ाहिर फ़रमावें। (مدارک وابوالسعود)

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِی السَّفِیْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ

अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सुवार हुए[151] उस बन्दे ने उसे चीर डाला[152] मूसा ने कहा क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को

اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا اِمْرًا ﴿۷۱﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ

डुबा दो बेशक येह तुम ने बुरी बात की[153] कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न

مَعِیَ صَبْرًا ﴿۷۲﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِیْ بِمَا نَسِیْتُ وَ لَا تُرْهِقْنِیْ مِنْ اَمْرِیْ

ठहर सकेंगे[154] कहा मुझ से मेरी भूल पर गिरिफ़्त न करो[155] और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल

عُسْرًا ﴿۷۳﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَا لَقِیَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا

न डालो फिर दोनों चले[156] यहां तक कि जब एक लड़का मिला[157] उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी

زَكِیَّةًۢ بِغَیْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا نُّكْرًا ﴿۷۴﴾

जान[158] बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की

151 : और कश्ती वालों ने हज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام को पहचान कर बिग़ैर मुआवज़ा के सुवार कर लिया। 152 : और बसूले (लकड़ी छीलने के औज़ार) या कुल्हाड़ी से उस का एक तख़्ता या दो तख़्ते उखाड़ डाले लेकिन बा वुजूद इस के पानी कश्ती में न आया। 153 : हज़रते ख़िज़्र ने 154 : हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने 155 : क्यूं कि भूल पर शरीअ़त में गिरिफ़्त नहीं। 156 : या'नी कश्ती से उतर कर एक मक़ाम पर गुज़रे जहां लड़के खेल रहे थे। 157 : जो उन में ख़ूब सूरत था और हद्दे बुलूग़ को न पहुंचा था। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा जवान था और रहज़नी किया करता था। 158 : जिस का कोई गुनाह साबित न था।

قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۷۵﴾ قَالَ اِنۡ سَاَلۡتُكَ

कहा[159] मैं ने आप से न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे[160] कहा इस के बा'द

عَنۡ شَىۡءٍۢ بَعۡدَهَا فَلَا تُصٰحِبۡنِىۡ‌ۚ قَدۡ بَلَغۡتَ مِنۡ لَّدُنِّىۡ عُذۡرًا ﴿۷۶﴾

मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी त़रफ़ से तुम्हारा उ़ज़्र पूरा हो चुका

فَانْطَلَقَا وقفة حَتّٰٓى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهۡلَ قَرۡيَةِ ٍ اسۡتَطۡعَمَاۤ اَهۡلَهَا فَاَبَوۡا اَنۡ

फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक गाउं वालों के पास आए[161] उन देह्क़ानों (किसानों) से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्हें दा'वत

يُّضَيِّفُوۡهُمَا فَوَجَدَا فِيۡهَا جِدَارًا يُّرِيۡدُ اَنۡ يَّنۡقَضَّ فَاَقَامَهٗ‌ ؕ قَالَ لَوۡ

देनी क़बूल न की[162] फिर दोनों ने उस गाउं में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बन्दे ने[163] उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा

شِئۡتَ لَتَّخَذۡتَ عَلَيۡهِ اَجۡرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنِكَ‌ۚ

तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़्दूरी ले लेते[164] कहा येह[165] मेरी और आप की जुदाई है

سَاُنَبِّئُكَ بِتَاۡوِيۡلِ مَا لَمۡ تَسۡتَطِعْ عَّلَيۡهِ صَبۡرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِيۡنَةُ

अब मैं आप को उन बातों का फेर (भेद) बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका[166] वोह जो कश्ती थी

فَكَانَتۡ لِمَسٰكِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ فِى الۡبَحۡرِ فَاَرَدْتُّ اَنۡ اَعِيۡبَهَا وَكَانَ

वोह कुछ मोह्ताजों की थी[167] कि दरिया में काम करते थे तो मैं ने चाहा कि उसे ऐ़बदार कर दूं और उन के

وَرَآءَهُمۡ مَّلِكٌ يَّاۡخُذُ كُلَّ سَفِيۡنَةٍ غَصۡبًا ﴿۷۹﴾ وَاَمَّا الۡغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ

पीछे एक बादशाह था[168] कि हर साबित कश्ती ज़बर दस्ती छीन लेता[169] और वोह जो लड़का था उस के मां बाप

مُؤۡمِنَيۡنِ فَخَشِيۡنَاۤ اَنۡ يُّرۡهِقَهُمَا طُغۡيَانًا وَّكُفۡرًا‌ ۚ ﴿۸۰﴾ فَاَرَدۡنَاۤ اَنۡ

मुसल्मान थे तो हमें डर हुवा कि वोह उन को सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे[170] तो हम ने चाहा कि

159 : ह़ज़रते ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा ! 160 : इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने 161 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस गाउं से मुराद अन्त़ाकिया है। वहां इन ह़ज़रात ने 162 : और मेज़बानी पर आमादा न हुए। ह़ज़रते क़तादा से मरवी है कि वोह बस्ती बहुत बदतर है जहां मेहमानों की मेज़बानी न की जाए। 163 : या'नी ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक लगा कर अपनी करामत से 164 : क्यूं कि येह हमारी तो ह़ाजत का वक़्त है और बस्ती वालों ने हमारी कुछ मुदारात (ख़ात़िर तवाज़ोअ़) नहीं की ऐसी ह़ालत में उन का काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था ! इस पर ह़ज़रते ख़िज़्र ने 165 : वक़्त या इस मरतबा का इन्कार। 166 : और उन के अन्दर जो राज़ थे उन का इज़्हार कर दूंगा। 167 : जो दस भाई थे उन में पांच तो अपाहज थे जो कुछ नहीं कर सकते थे और पांच तन्दुरुस्त थे जो 168 : कि उन्हें वापसी में उस की त़रफ़ गुज़रना होता, उस बादशाह का नाम जुलन्दी था, कश्ती वालों को उस का ह़ाल मा'लूम न था और उस का त़रीक़ा येह था 169 : और अगर ऐ़बदार होती छोड़ देता, उस लिये मैं ने उस कश्ती को ऐ़बदार कर दिया कि वोह उन ग़रीबों के लिये बच रहे। 170 : और वोह इस की मह़ब्बत में दीन से फिर जाएं और गुमराह हो जाएं और ह़ज़रते ख़िज़्र का येह अन्देशा इस सबब से था

يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ

उन दोनों का रब उस से बेहतर[171] सुथरा और उस से ज़ियादा मेह्रबानी में क़रीब अ़ता करे[172] रही वोह दीवार

فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا

वोह शहर के दो यतीम लड़कों की थी[173] और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था[174] और उन का बाप

صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ

नेक आदमी था[175] तो आप के रब ने चाहा कि वोह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें[176] और अपना ख़ज़ाना निकालें

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ

आप के रब की रह्मत से और येह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया[177] येह फेर (भेद) है उन बातों का

تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾ ع وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا

जिस पर आप से सब्र न हो सका[178] और तुम से[179] ज़ुल क़रनैन को पूछते हैं[180] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें इस का

कि वोह ब ए'लामे इलाही (अल्लाह तआ़ला के ख़बर देने की वज्ह से) उस के ह़ाले बात़िन को जानते थे। ह़दीसे मुस्लिम में है कि येह लड़का काफ़िर ही पैदा हुवा था। इमाम सुब्की ने फ़रमाया कि ह़ाले बात़िन जान कर बच्चे को क़त्ल कर देना ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام के साथ ख़ास है, उन्हें इस की इजाज़त थी, अगर कोई वली किसी बच्चे के ऐसे ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो तो उस को क़त्ल जाइज़ नहीं है। किताब अ़राइस में है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते ख़िज़्र से फ़रमाया कि तुम ने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो येह उन्हें गिरां गुज़रा, और उन्हों ने उस लड़के का कन्धा तोड़ कर उस का गोश्त चीरा तो उस के अन्दर लिखा हुवा था : काफ़िर है, कभी अल्लाह पर ईमान न लाएगा। (جمل) 171 : बच्चा गुनाहों और नजासतों से पाक और 172 : जो वालिदैन के साथ त़रीक़े अदब व हुस्ने सुलूक और मवद्दत (प्यार) व मह़ब्बत रखता हो। मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक बेटी अ़ता की जो एक नबी के निकाह़ में आई और उस से नबी पैदा हुए जिन के हाथ पर अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को हिदायत दी। बन्दे को चाहिये कि अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहे इसी में बेहतरी होती है। 173 : जिन के नाम अस्रम और सरीम थे। 174 : तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना, चांदी मदफ़ून था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि उस में सोने की एक तख़्ती थी, उस पर एक त़रफ़ लिखा था : उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे मौत का यक़ीन हो उस को ख़ुशी किस त़रह़ होती है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जो क़ज़ा व क़दर का यक़ीन रखे उस को ग़ुस्सा कैसे आता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो वोह क्यूं तअ़ब (मशक़्क़त) में पड़ता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे ह़िसाब का यक़ीन हो वोह कैसे ग़ाफ़िल रहता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिस को दुन्या के ज़वाल व तग़य्युर का यक़ीन हो वोह कैसे मुत़्मइन होता है ! और इस के साथ लिखा था : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ और दूसरी जानिब उस लौह़ (तख़्ती) पर लिखा था : मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं यक्ता हूं मेरा कोई शरीक नहीं, मैं ने ख़ैरो शर पैदा की। उस के लिये ख़ुशी जिसे मैं ने ख़ैर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर ख़ैर जारी की। उस के लिये तबाही जिस को शर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर शर जारी की। 175 : उस का नाम काशिह़ था और येह शख़्स परहेज़ गार था। ह़ज़रते मुह़म्मद इब्ने मुन्कदिर ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बन्दे की नेकी से उस की औलाद को और उस की औलाद की औलाद को और उस के कुम्बे वालों को और उस के मह़ल्ले दारों को अपनी ह़िफ़ाज़त में रखता है। (سُبحٰنَ اللّٰہ) 176 : और उन की अ़क़्ल कामिल हो जाए और वोह क़वी व तुवाना हो जाएं। 177 : बल्कि ब अम्रे इलाही व इल्हामे ख़ुदावन्दी किया। 178 : बा'ज़े लोग वली को नबी पर फ़ज़ीलत दे कर गुमराह हो गए और उन्हों ने येह ख़याल किया कि ह़ज़रते मूसा को ह़ज़रते ख़िज़्र से इल्म ह़ासिल करने का हुक्म दिया गया बा वुजूदे कि ह़ज़रते ख़िज़्र वली हैं और दर ह़क़ीक़त वली को नबी पर फ़ज़ीलत देना कुफ़्रे जली है और ह़ज़रते ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हो जैसा कि बा'ज़ का गुमान है तो येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के ह़क़ में इब्तिला है। इलावा बरीं येह कि अहले किताब इस के क़ाइल हैं कि येह ह़ज़रते मूसा पैग़म्बरे बनी इसराईल का वाक़िआ़ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाक़िआ़ है और वली तो नबी पर ईमान लाने से मर्तबए विलायत पर पहुंचता है तो येह ना मुम्किन है कि वोह नबी से बढ़ जाए। (مدارک) अक्सर उ़लमा इस पर हैं और मशाइख़े सूफ़िया व अस्ह़ाबे इरफ़ान का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام ज़िन्दा हैं। शैख़ अबू अ़म्र बिन सलाह ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि ह़ज़रते ख़िज़्र जुम्हूर उ़लमा व सालिह़ीन के नज़्दीक ज़िन्दा हैं, येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते ख़िज़्र व इल्यास

عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ

मज़्कूर पढ़ कर सुनाता हूं बेशक हम ने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का

شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

एक सामान अ़ता फ़रमाया[181] तो वोह एक सामान के पीछे चला[182] यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक सियाह

تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ

कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया[183] और वहां[184] एक क़ौम मिली[185] हम ने फ़रमाया ऐ ज़ुल क़रनैन

اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ

या तो तू उन्हें सज़ा दे[186] या उन के साथ भलाई इख़्तियार कर[187] अ़र्ज़ की, कि वोह जिस ने ज़ुल्म किया[188]

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا

उसे तो हम अ़न्क़रीब सज़ा देंगे[189] फिर अपने रब की तरफ़ फेरा जाएगा[190] वोह उसे बुरी मार देगा और

مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا

जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उस का बदला भलाई है[191] और अ़न्क़रीब हम उसे आसान काम

दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल ज़मानए हज में मिलते हैं। येह भी मन्क़ूल है कि हज़रते ख़िज़्र ने चश्मए हयात में ग़ुस्ल फ़रमाया और उस का पानी पिया। (خازن) وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم **179 :** अबू जहल वग़ैरा कुफ़्फ़ारे मक्का या यहूद ब तरीक़े इम्तिहान **180 :** ज़ुल क़रनैन का नाम इस्कन्दर है, येह हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ालाज़ाद भाई हैं, इन्हों ने इस्कन्दरिय्या बनाया और इस का नाम अपने नाम पर रखा, हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام इन के वज़ीर और साहिबे लिवा (परचम उठाने वाले) थे। दुन्या में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो तमाम दुन्या पर हुक्मरान थे : दो मोमिन : हज़रते ज़ुल क़रनैन और हज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمَا السَّلَام, और दो काफ़िर : नमरूद और बुख़्त नस्सर, और अ़न्क़रीब एक पांचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिन का इस्मे मुबारक हज़रते इमाम महदी है, इन की हुकूमत तमाम रूए ज़मीन पर होगी, ज़ुल क़रनैन की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है, हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि वोह न नबी थे न फ़िरिश्ते, **अल्लाह** से महब्बत करने वाले बन्दे थे **अल्लाह** ने उन्हें महबूब बनाया। **181 :** जिस चीज़ की ख़ल्क़ को हाजत होती है और जो कुछ बादशाहों को दियार व अम्सार (बस्तियों और शहरों के) फ़त्ह करने और दुश्मनों के मुहारबे (लड़ाई व मा'रिके) में दरकार होता है वोह सब इनायत किया। **182 :** "सबब" वोह चीज़ है जो मक़्सूद तक पहुंचने का ज़रीआ़ हो ख़्वाह वोह इ़ल्म हो या क़ुदरत, तो ज़ुल क़रनैन ने जिस मक़्सद का इरादा किया उसी का सबब इख़्तियार किया। **183 :** ज़ुल क़रनैन ने किताबों में देखा था कि औलादे साम में से एक शख़्स चश्मए हयात से पानी पियेगा और उस को मौत न आएगी, येह देख कर वोह चश्मए हयात की त़लब में मग़रिब व मशरिक़ की तरफ़ रवाना हुए और आप के साथ हज़रते ख़िज़्र भी थे, वोह तो चश्मए हयात तक पहुंच गए और उन्हों ने पी भी लिया, मगर ज़ुल क़रनैन के मुक़द्दर में न था उन्हों ने न पाया, इस सफ़र में जानिबे मग़रिब रवाना हुए तो जहां तक आबादी है वोह सब मनाज़िल क़त्अ़ कर डाले और सम्ते मग़रिब में वहां पहुंचे जहां आबादी का नामो निशान बाक़ी न रहा, वहां उन्हें आफ़्ताब वक़्ते ग़ुरूब ऐसा नज़र आया गोया कि वोह सियाह चश्मे में डूबता है जैसा कि दरियाई सफ़र करने वाले को पानी में डूबता मा'लूम होता है। **184 :** उस चश्मे के पास **185 :** जो शिकार किये हुए जानवरों के चमड़े पहने थे, इस के सिवा उन के बदन पर और कोई लिबास न था और दरियाई मुर्दा जानवर उन की ग़िज़ा थे, येह लोग काफ़िर थे। **186 :** और उन में से जो इस्लाम में दाख़िल न हो उस को क़त्ल कर दे **187 :** और उन्हें अहकामे शरअ़ की ता'लीम दे अगर वोह ईमान लाएं **188 :** या'नी कुफ़्रो शिर्क इख़्तियार किया, ईमान न लाया **189 :** क़त्ल करेंगे। येह तो उस की दुन्यवी सज़ा है **190 :** क़ियामत में **191 :** या'नी जन्नत।

يُسْرًا ﴿۸۸﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۹﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

कहेंगे[192] फिर एक सामान के पीछे चला[193] यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी

تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿۹۰﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا

क़ौम पर निकलता पाया जिन के लिये हम ने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी[194] बात येही है और जो कुछ उस के

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿۹۱﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۹۲﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

पास था[195] सब को हमारा इ़ल्म मुहीत़ है[196] फिर एक सामान के पीछे चला[197] यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿۹۳﴾ قَالُوْا

उन से उधर कुछ लोग पाए कि कोई बात समझते मा'लूम न होते थे[198] उन्हों ने कहा

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ

ऐ ज़ुल क़रनैन बेशक याजूज व माजूज[199] ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿۹۴﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ

हम आप के लिये कुछ माल मुक़र्रर कर दें इस पर कि आप हम में और उन में एक दीवार बना दें[200] कहा वोह जिस पर मुझे मेरे

فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿۹۵﴾ ۙ

रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है[201] तो मेरी मदद त़ाक़त से करो[202] मैं तुम में और उन में एक मज़बूत़ आड़ बना दूं[203]

اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ

मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ[204] यहां तक कि वोह जब दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धोंको

192 : और उस को ऐसी चीज़ों का हुक्म देंगे जो उस पर सहल हों, दुश्वार न हों। अब ज़ुल क़रनैन की निस्बत इर्शाद फ़रमाया जाता है कि वोह 193 : जानिबे मशरिक़ में 194 : उस मक़ाम पर जिस के और आफ़्ताब के दरमियान कोई चीज़ पहाड़ दरख़्त वग़ैरा ह़ाइल न थी, न वहां कोई इमारत क़ाइम हो सकती थी और वहां के लोगों का येह ह़ाल था कि तुलूए आफ़्ताब के वक़्त ग़ारों में घुस जाते थे और ज़वाल के बा'द निकल कर अपना कामकाज करते थे। 195 : फ़ौज, लश्कर, आलाते ह़र्ब, सामाने सल्त़नत और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : सल्त़नत व मुल्क दारी की क़ाबिलिय्यत और उमूरे मम्लुकत के सर अन्जाम की लियाक़त 196 : मुफ़स्सिरीन ने "كَذٰلِكَ" के मा'ना में येह भी कहा है कि मुराद येह है कि ज़ुल क़रनैन ने जैसा मग़रिबी क़ौम के साथ सुलूक किया था ऐसा ही अहले मशरिक़ के साथ भी किया क्यूं कि येह लोग भी उन की त़रह़ काफ़िर थे तो जो उन में से ईमान लाए उन के साथ एह़सान किया और जो कुफ़्र पर मुसिर (अड़े) रहे उन को ता'ज़ीब की। 197 : जानिबे शिमाल में। (خازن) 198 : क्यूं कि उन की ज़बान अ़जीबो ग़रीब थी, उन के साथ इशारे वग़ैरा की मदद से ब मशक़्क़त बात की जा सकती थी। 199 : येह याफ़स बिन नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से फ़सादी गुरौह हैं, इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है, ज़मीन में फ़साद करते थे, रबीअ़ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियां और सब्ज़े सब खा जाते थे, कुछ न छोड़ते थे और ख़ुश्क चीज़ें लाद कर ले जाते थे, आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों वह़शी जानवरों सांपों बिच्छूओं तक को खा जाते थे, ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन से लोगों ने उन की शिकायत की, कि वोह 200 : ताकि वोह हम तक न पहुंच सकें और हम उन के शर व ईज़ा से मह़फ़ूज़ रहें 201 : या'नी अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरे पास माले कसीर और हर क़िस्म का सामान मौजूद है, तुम से कुछ लेने की ह़ाजत नहीं 202 : और जो काम मैं बताऊं वोह अन्जाम दो 203 : उन लोगों ने

حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِیْۤ اُفْرِغْ عَلَیْهِ قِطْرًا ؕ﴿۹۶﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا

यहां तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं इस पर गला हुवा तांबा ऊंडेल दूं तो याजूज व माजूज

اَنْ یَّظْهَرُوْهُ وَ مَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿۹۷﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّیْ ۚ

उस पर न चढ़ सके और न उस में सूराख़ कर सके कहा[205] येह मेरे रब की रह़मत है

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّیْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَ كَانَ وَعْدُ رَبِّیْ حَقًّا ؕ﴿۹۸﴾ وَ تَرَكْنَا

फिर जब मेरे रब का वा'दा आएगा[206] इसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वा'दा सच्चा है[207] और उस दिन हम उन्हें

بَعْضَهُمْ یَوْمَىٕذٍ یَّمُوْجُ فِیْ بَعْضٍ وَّ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۙ﴿۹۹﴾ وَّ

छोड़ देंगे कि उन का एक गुरोह दूसरे पर रेला देगा और सूर फूंका जाएगा[208] तो हम उन सब को[209] इकठ्ठा कर लाएंगे और

عَرَضْنَا جَهَنَّمَ یَوْمَىٕذٍ لِّلْكٰفِرِیْنَ عَرْضَا ۙ﴿۱۰۰﴾ الَّذِیْنَ كَانَتْ اَعْیُنُهُمْ فِیْ

हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लाएंगे[210] वोह जिन की आंखों पर मेरी

غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِیْ وَ كَانُوْا لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَمْعًا ﴿۱۰۱﴾ ع اَفَحَسِبَ الَّذِیْنَ

याद से पर्दा पड़ा था[211] और ह़क़ बात सुन न सकते थे[212] तो क्या काफ़िर

كَفَرُوْۤا اَنْ یَّتَّخِذُوْا عِبَادِیْ مِنْ دُوْنِیْۤ اَوْلِیَآءَ ؕ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ

येह समझे हैं कि मेरे बन्दों को[213] मेरे सिवा ह़िमायती बना लेंगे[214] बेशक हम ने काफ़िरों की मेहमानी

अ़र्ज़ किया फिर हमारे मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़िदमत है ? फ़रमाया : **204 :** और बुन्याद खुदवाई, जब पानी तक पहुंची तो उस में पथ्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन कर उन के दरमियान लकड़ी और कोएला भरवा दिया और आग दे दी इस त़रह येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दरमियान कोई जगह न छोड़ी गई, ऊपर से पिघलाया हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया येह सब मिल कर एक सख़्त जिस्म बन गया **205 :** ज़ुल क़रनैन ने कि **206 :** और याजूज माजूज के ख़ुरूज का वक़्त आ पहुंचेगा क़रीबे क़ियामत **207 :** ह़दीस शरीफ़ है कि याजूज माजूज रोज़ाना उस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेह़नत करते करते जब उस के तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उन में कोई कहता है : अब चलो बाक़ी कल तोड़ लेंगे। दूसरे रोज़ जब आते हैं तो वोह ब हुक्मे इलाही पहले से ज़ियादा मज़बूत़ हो जाती है, जब उन के ख़ुरूज का वक़्त आएगा तो उन में कहने वाला कहेगा कि अब चलो बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه । "اِنْ شَآءَ اللّٰه" कहने का येह समरा होगा कि उस दिन की मेह़नत राएगां न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार उतनी टूटी मिलेगी जितनी पहले रोज़ तोड़ गए थे। अब वोह निकल आएंगे और ज़मीन में फ़साद उठाएंगे, क़त्लो ग़ारत करेंगे और चश्मों का पानी पी जाएंगे, जानवरों दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आएंगे उन को खा जाएंगे, मक्कए मुकर्रमा, मदीनए त़य्यिबा और बैतुल मक़्दिस में दाख़िल न हो सकेंगे। **अल्लाह** तआ़ला ब दुआ़ए ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उन्हें हलाक करेगा, इस त़रह कि उन की गरदनों में कीड़े पैदा होंगे जो उन की हलाकत का सबब होंगे। **208 :** इस से साबित होता है कि याजूज माजूज का निकलना क़ुर्बे क़ियामत की अ़लामात में से है। **209 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ को अ़ज़ाब व सवाब के लिये रोज़े क़ियामत **210 :** कि उस को साफ़ देखें। **211 :** और वोह आयाते इलाहिय्यह और क़ुरआन व हिदायत व बयान और दलाइले क़ुदरत व ईमान से अन्धे बने रहे और इन में से किसी चीज़ को वोह न देख सके। **212 :** अपनी बद बख़्ती से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखने के बाइस **213 :** मिस्ल ह़ज़रते ईसा व ह़ज़रते उ़ज़ैर व मलाएका के **214 :** और इस से कुछ नफ़्अ़ पाएंगे, येह गुमान फ़ासिद है बल्कि वोह बन्दे उन से बेज़ार हैं और बेशक हम उन के इस शिर्क पर अ़ज़ाब करेंगे।

لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿۱۰۳﴾ اَلَّذِيْنَ

को जहन्नम तय्यार कर रखी है तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़ कर नाक़िस अ़मल किन के हैं[215] उन के जिन

ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ

की सारी कोशिश दुन्या की ज़िन्दगी में गुम गई[216] और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम

صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ

कर रहे हैं येह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयतें और उस का मिलना न माना[217] तो उन का किया धरा सब

اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ

अकारत (ज़ाएअ़) तो हम उन के लिये क़ियामत के दिन कोई तोल न क़ाइम करेंगे[218] येह उन का बदला है जहन्नम इस

بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

पर कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई बेशक जो ईमान लाए और

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है[219] वोह हमेशा उन में रहेंगे

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

उन से जगह बदलना न चाहेंगे[220] तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समुन्दर

الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَآ

ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और इस की मदद को ले आएं[221] तुम फ़रमाओ ज़ाहिर

---

215 : या'नी वोह कौन लोग हैं जो अ़मल कर के थके और मशक़्क़तें उठाईं और येह उम्मीद करते रहे कि इन आ'माल पर फ़ज़्लो नवाल से नवाज़े जाएंगे, मगर बजाए इस के हलाकत व बरबादी में पड़े। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : वोह यहूदो नसारा हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोह राहिब लोग हैं जो सवामेअ़ (गिरजों) में उ़ज़्लत गुज़ीन (तन्हा) रहते थे। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह लोग अहले ह़रूरा या'नी ख़वारिज हैं। **216 :** और अ़मल बातिल हो गए **217 :** रसूल व क़ुरआन पर ईमान न लाए और बअ़्स (क़ियामत में दोबारा उठाए जाने) व हिसाब व सवाब व अ़ज़ाब के मुन्किर रहे **218 :** ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बा'ज़े लोग ऐसे आ'माल लाएंगे जो उन के ख़यालों में मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों से ज़ियादा बड़े होंगे लेकिन जब वोह तोले जाएंगे तो उन में वज़्न कुछ न होगा। **219 :** ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** से मांगो तो फ़िरदौस मांगो ! क्यूं कि वोह जन्नतों में सब के दरमियान और सब से बुलन्द है और उस पर अ़र्शे रह़मान है और उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं। ह़ज़रते का'ब ने फ़रमाया कि फ़िरदौस जन्नतों में सब से आ'ला है, उस में नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐ़श करेंगे। **220 :** जिस त़रह़ दुन्या में इन्सान कैसी ही बेहतर जगह हो इस से और आ'ला व अरफ़अ़ की त़लब रखता है येह बात वहां न होगी क्यूं कि वोह जानते होंगे कि फ़ज़्ले इलाही से इन्हें बहुत आ'ला व अरफ़अ़ मकान व मकानत (रिहाइश) ह़ासिल है। **221 :** या'नी अगर **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्मो ह़िक्मत के कलिमात लिखे जाएं और उन के लिये तमाम समुन्दरों का

اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا

सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं[222] मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है[223] तो जिसे अपने रब से

لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे[224]

सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में अठानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़्म वाला[1]

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿۱﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿۲﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

येह मज़्कूर है तेरे रब की उस रह़मत का जो उस ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की जब उस ने अपने रब को

पानी सियाही बना दिया जाए और तमाम ख़ल्क़ लिखे तो वोह कलिमात ख़त्म न हों और येह तमाम पानी ख़त्म हो जाए और इतना ही और भी ख़त्म हो जाए। मुद्दआ़ येह है कि उस के इल्मो ह़िक्मत की निहायत (इन्तिहा) नहीं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने इ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) आप का ख़याल है कि हमें ह़िक्मत दी गई और आप की किताब में है कि जिसे ह़िक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई, फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि जब आयए "وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا" नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि हमें तौरैत का इल्म दिया गया और इस में हर शै का इल्म है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। मुद्दआ़ येह है कि कुल शै का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और इतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक क़त़रे को समुन्दर से हो। **222 :** कि मुझ पर बशरी आ'राज़ व अमराज़ त़ारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आप का मिस्ल नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हुस्नो सूरत में भी सब से आ'ला व बाला किया और ह़क़ीक़त व रूह़ व बात़िन के ए'तिबार से तो तमाम अम्बिया औसाफ़े बशर से आ'ला हैं जैसा कि शिफ़ाए क़ाज़ी इयाज़ में है और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने शर्हे मिश्कात में फ़रमाया कि अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام के अज्साम व ज़वाहिर तो ह़द्दे बशरिय्यत पर छोड़े गए और उन के अरवाह़ व बवात़िन बशरिय्यत से बाला और मलाए आ'ला से मुतअ़ल्लिक़ हैं। शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने सूरए وَالضُّحٰى की तफ़्सीर में फ़रमाया कि आप की बशरिय्यत का वुजूद अस्लन न रहे और ग़लबए अन्वारे ह़क़ आप पर अ़लद्दवाम ह़ासिल हो। बहर हाल आप की ज़ात व कमाल में आप का कोई भी मिस्ल नहीं। इस आयते करीमा में आप को अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिय्या के बयान का इज़्हारे तवाज़ोअ़ के लिये हुक्म फ़रमाया गया, येही फ़रमाया है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने। (خازن) **मस्अला :** किसी को जाइज़ नहीं कि हुज़ूर को अपने मिस्ल बशर कहे क्यूं कि जो कलिमात अस्ह़ाबे इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत ब तरीक़े तवाज़ोअ़ फ़रमाते हैं उन का कहना दूसरों के लिये रवा (जाइज़) नहीं होता। दुवुम येह कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ज़ाइले जलीला व मरातिबे रफ़ीआ़ अ़त़ा फ़रमाए हों उस के उन फ़ज़ाइल व मरातिब का ज़िक्र छोड़ कर ऐसे वस्फ़े आ़म से ज़िक्र करना जो हर किह व मिह (छोटे, बड़े, अदना व आ'ला) में पाया जाए उन कमालात के न मानने का मुश्इर (इशारा देता) है। सिवुम येह कि कुरआने करीम में जा बजा कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा बताया गया है कि वोह अम्बिया को अपने मिस्ल बशर कहते थे और इसी से गुमराही में मुब्तला हुए। फिर इस के बा'द आयत "يُوْحٰۤى اِلَىَّ" में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم के मख़्सूस बिल इल्म और मुकर्रम इन्दल्लाह (या'नी उ़लूम के साथ ख़ास होने और **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला) होने का बयान है। **223 :** उस का कोई शरीक नहीं **224 :** शिर्के अक्बर से भी बचे और रिया से भी जिस को शिर्के असग़र कहते हैं। मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कह्फ़ की पहली दस आयतें ह़िफ़्ज़ करे **अल्लाह** तआ़ला उस को फ़ित्नए दज्जाल से मह़फ़ूज़ रखेगा, येह भी ह़दीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कह्फ़ को पढ़े वोह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रहेगा। **1 :** सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, अठानवे आयतें, सात सो अस्सी कलिमे हैं।

نِدَآءً خَفِيًّا ﴿۳﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَیْبًا

आहिस्ता पुकारा[2] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई[3] और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा (सफ़ेदी ज़ाहिर हुई)[4]

وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِیًّا ﴿۴﴾ وَاِنِّیْ خِفْتُ الْمَوَالِیَ مِنْ وَّرَآءِیْ

और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी ना मुराद न रहा[5] और मुझे अपने बा'द अपने क़राबत वालों का डर है[6]

وَكَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا فَهَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ﴿۵﴾ یَّرِثُنِیْ وَیَرِثُ

और मेरी औ़रत बांझ है तो मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा ले[7] वोह मेरा जा नशीन हो और औलादे

مِنْ اٰلِ یَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِیًّا ﴿۶﴾ یٰزَكَرِیَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

या'क़ूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर[8] ऐ ज़करिय्या हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं

بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ یَحْیٰی ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِیًّا ﴿۷﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰی

एक लड़के की जिन का नाम यह़्या है इस के पहले हम ने इस नाम का कोई न किया अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे

یَكُوْنُ لِیْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِیًّا ﴿۸﴾

लड़का कहां से होगा मेरी औ़रत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की ह़ालत को पहुंच गया[9]

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَیَّ هَیِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ

फ़रमाया ऐसा ही है[10] तेरे रब ने फ़रमाया वोह मुझे आसान है और मैं ने तो इस से पहले तुझे उस वक़्त बनाया

تَكُ شَیْـًٔا ﴿۹﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّیْۤ اٰیَةً ؕ قَالَ اٰیَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

जब तू कुछ भी न था[11] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे दे[12] फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तू तीन रात दिन लोगों

2 : क्यूं कि इख़्फ़ा (आहिस्ता पुकारना) रिया से दूर और इख़्लास से मा'मूर होता है, नीज़ येह भी फ़ाएदा था कि पीराना साली (बुढ़ापे) की उम्र में जब कि सिन शरीफ़ पछत्तर या अस्सी बरस का था औलाद का त़लब करना एह़तिमाल रखता था कि अ़वाम इस पर मलामत करें, इस लिये भी इस दुआ़ का इख़्फ़ा (आहिस्ता करना) मुनासिब था। एक क़ौल येह भी है कि ज़ो'फ़े पीरी (बुढ़ापे की कमज़ोरी) के बाइ़स ह़ज़रत की आवाज़ भी ज़ईफ़ हो गई थी। (مدارک خازن) 3 : या'नी पीराना साली का ज़ो'फ़ ग़ायत (इन्तिहा) को पहुंच गया कि हड्डी जो निहायत मज़बूत़ उ़ज़्व है इस में कमज़ोरी आ गई तो बाक़ी आ'ज़ा व क़ुवा (त़ाक़त) का ह़ाल मोह़ताजे बयान ही नहीं। 4 : कि तमाम सर सफ़ेद हो गया 5 : हमेशा तू ने मेरी दुआ़ क़बूल की और मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात किया। 6 : चचाज़ाद वग़ैरा का, कि वोह शरीर लोग हैं, कहीं मेरे बा'द दीन में रख़्ना अन्दाज़ी न करें, जैसा कि बनी इसराईल से मुशाहदे में आ चुका है। 7 : और मेरे इ़ल्म का ह़ामिल (संभालने वाला) हो 8 : कि तू अपने फ़ज़्ल से उस को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाए। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْهِ السَّلَام की येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : 9 : येह सुवाल इस्तिब्आ़द (मुह़ाल जान कर) नहीं बल्कि मक़्सूद येह दरयाफ़्त करना है कि अ़त़ाए फ़रज़न्द किस त़रीक़े पर होगा, क्या दोबारा जवानी मर्ह़मत होगी या इसी ह़ाल में फ़रज़न्द अ़ता किया जाएगा? 10 : तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है 11 : तो जो मा'दूम के मौजूद करने पर क़ादिर है उस से बुढ़ापे में औलाद अ़ता फ़रमाना क्या अ़जब है। 12 : जिस से मुझे अपनी बीवी के ह़ामिला होने की मा'रिफ़त हो।

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿۱۰﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ

से कलाम न करे भला चंगा हो कर[13] तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया[14] तो उन्हें इशारे से कहा

اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ﴿۱۱﴾ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَ اٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ

कि सुब्ह़ो शाम तस्बीह़ करते रहो[15] ऐ यह़्या किताब[16] मज़्बूत़ थाम और हम ने उसे बचपन ही में

صَبِيًّا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ حَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ زَكٰوةً ؕ وَ كَانَ تَقِيًّا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَ

नुबुव्वत दी[17] और अपनी त़रफ़ से मेह़रबानी[18] और सुथराई[19] और कमाल डर वाला था[20] और अपने मां बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था और

لَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿۱۴﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَ يَوْمَ يَمُوْتُ وَ يَوْمَ

ज़बर दस्त व ना फ़रमान न था[21] और सलामती है उस पर जिस दिन पैदा हुवा और जिस दिन मरेगा और जिस दिन

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿۱۵﴾ وَ اذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا

ज़िन्दा उठाया जाएगा[22] और किताब में मरयम को याद करो[23] जब अपने घर वालों से पूरब (मशरिक़)

مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ﴿۱۶﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۚ۫ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا

की त़रफ़ एक जगह अलग गई[24] तो उन से इधर[25] एक पर्दा कर लिया तो उस की त़रफ़ हम ने अपना

वقف لازم ع ۵

13 : सह़ीह़ सालिम हो कर बिग़ैर किसी बीमारी के और बिग़ैर गूंगा होने के। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि इन अय्याम में आप लोगों से कलाम करने पर क़ादिर न हुए, जब अल्लाह का ज़िक्र करना चाहते ज़बान खुल जाती। 14 : जो उस की नमाज़ की जगह थी और लोग पसे मेह़राब इन्तिज़ार में थे कि आप उन के लिये दरवाज़ा खोलें तो वोह दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें, जब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام बाहर आए तो आप का रंग बदला हुवा था, गुफ़्त्गू नहीं फ़रमा सकते थे, येह ह़ाल देख कर लोगों ने दरयाफ़्त किया क्या ह़ाल है ? 15 : और ह़स्बे आ़दत फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ें अदा करते रहो। अब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आप की बीवी साहिबा ह़ामिला हो गईं और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत से दो साल बा'द अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया : 16 : या'नी तौरैत को 17 : जब कि आप की उ़म्र शरीफ़ तीन साल की थी, इस वक़्त में अल्लाह तबारक व तआला ने आप को अ़क़्ले कामिल अ़त़ा फ़रमाई और आप की त़रफ़ वह़्य की, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का येही क़ौल है और इतनी सी उ़म्र में फ़हमो फ़िरासत और कमाले अ़क़्लो दानिश ख़वारिक़े आ़दात (करामात) में से है और जब बि करमिही तआ़ला (अल्लाह तआ़ला के करम से) येह ह़ासिल हो तो इस ह़ाल में नुबुव्वत मिलना कुछ भी बईद नहीं, लिहाज़ा इस आयत में हुक्म से नुबुव्वत मुराद है, येही क़ौल सह़ीह़ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से ह़िक्मत या'नी फ़ह्मे तौरैत (तौरैत का जानना) और फ़िक़्ह फ़िद्दीन (दीन में समझ बूझ) भी मुराद ली है। (خازن ومدارک کبیر) मन्क़ूल है कि इस कमसिनी के ज़माने में बच्चों ने आप को खेल के लिये बुलाया तो आप ने फ़रमाया : "مَالِلَّعِبِ خُلِقْنَا" हम खेल के लिये पैदा नहीं किये गए। 18 : अ़त़ा की और इन के दिल में रिक़्क़त व रह़मत रखी कि लोगों पर मेह़रबानी करें। 19 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि "ज़कात" से यहां त़ाअ़त व इख़्लास मुराद है। 20 : और आप ख़ौफ़े इलाही से बहुत गिर्या व ज़ारी करते थे, यहां तक कि आप के रुख़्सारे मुबारक पर आंसूओं से निशान बन गए थे। 21 : या'नी आप निहायत मुतवाज़ेअ़ और ख़लीक़ (तवाज़ोअ़ करने वाले और ख़ूब ख़ुश अख़्लाक़) थे और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुत़ीअ़। 22 : कि येह तीनों दिन बहुत अन्देशा नाक हैं क्यूं कि इन में आदमी वोह देखता है जो इस से पहले इस ने नहीं देखा, इस लिये इन तीनों मौक़ओं पर निहायत वह़्शत होती है। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام का इक्राम फ़रमाया कि इन्हें इन तीनों मौक़ओं पर अम्न व सलामती अ़त़ा की। 23 : या'नी ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم क़ुरआने करीम में ह़ज़रते मरयम का वाक़िआ़ पढ़ कर इन लोगों को सुनाइये ताकि इन्हें उन का ह़ाल मा'लूम हो। 24 : और अपने मकान में या बैतुल मक़्दिस की शर्क़ी जानिब में लोगों से जुदा हो कर इबादत के लिये ख़ल्वत (तन्हाई) में बैठीं 25 : या'नी अपने और घर वालों के दरमियान

رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ

रूहानी भेजा[26] वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा बोली मैं तुझ से रह्मान की पनाह मांगती हूं

اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖۗ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا

अगर तुझे ख़ुदा का डर है बोला मैं तेरे रब का भेजा हुवा हूं कि मैं तुझे एक सुथरा

زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

बेटा दूं बोली मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो न किसी आदमी ने हाथ लगाया न मैं बदकार हूं

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَ

कहा यूंही है[27] तेरे रब ने फ़रमाया है कि येह[28] मुझे आसान है और इस लिये कि हम इसे लोगों के वासिते़ निशानी[29] करें और

رَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا

अपनी त़रफ़ से एक रह़मत[30] और येह काम ठहर चुका है[31] अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिये हुए एक दूर जगह

قَصِيًّا ﴿٢٢﴾ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ

चली गई[32] फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया[33] बोली हाए किसी त़रह़ मैं इस से पहले

।

26 : जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام **27 :** येही मन्जू़रे इलाही है कि तुम्हें बिग़ैर मर्द के छूए ही लड़का इनायत फ़रमाए। **28 :** या'नी बिग़ैर बाप के बेटा देना **29 :** और अपनी क़ुदरत की बुरहान (दलील) **30 :** उन के लिये जो उस के दीन का इत्तिबाअ़ करें, उस पर ईमान लाएं **31 :** इ़ल्मे इलाही में, अब न रद हो सकता है न बदल सकता है। जब ह़ज़रते मरयम को इत़्मीनान हो गया और उन की परेशानी जाती रही तो ह़ज़रते जिब्रील ने उन के गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वोह ब क़ुदरते इलाही फ़िलह़ाल ह़ामिला हो गईं, उस वक़्त ह़ज़रते मरयम की उ़म्र तेरह साल या दस की थी। **32 :** अपने घर वालों से और वोह जगह बैतुल्लह़्म थी। वह्ब का क़ौल है कि सब से पहले जिस शख़्स को ह़ज़रते मरयम के ह़म्ल का इ़ल्म हुवा वोह उन का चचाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार है जो मस्जिदे बैतुल मक़्दिस का ख़ादिम था और बहुत बड़ा आ़बिद शख़्स था, उस को जब मा'लूम हुवा कि मरयम ह़ामिला हैं तो निहायत ह़ैरत हुई। जब चाहता था कि इन पर तोहमत लगाए तो इन की इ़बादत व तक़्वा, हर वक़्त का ह़ाज़िर रहना, किसी वक़्त ग़ाइब न होना, याद कर के ख़ामोश हो जाता था और जब ह़म्ल का ख़याल करता था तो इन को बरी समझना मुश्किल मा'लूम होता था ! बिल आख़िर उस ने ह़ज़रते मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है, हर चन्द चाहता हूं कि ज़बान पर न लाऊं मगर अब सब्र नहीं होता है, आप इजाज़त दीजिये कि मैं कह गुज़रूं ताकि मेरे दिल की परेशानी रफ़अ़ (दूर) हो। ह़ज़रते मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो ! तो उस ने कहा कि ऐ मरयम ! मुझे बताओ कि क्या खेती बिग़ैर तुख़्म और दरख़्त बिग़ैर बारिश के और बच्चा बिग़ैर बाप के हो सकता है ? ह़ज़रते मरयम ने फ़रमाया कि हां, तुझे मा'लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने जो सब से पहले खेती पैदा की बिग़ैर तुख़्म ही के पैदा की और दरख़्त अपनी क़ुदरत से बिग़ैर बारिश के उगाए, क्या तू येह कह सकता है कि अल्लाह तआ़ला पानी की मदद के बिग़ैर दरख़्त पैदा करने पर क़ादिर नहीं। यूसुफ़ ने कहा : मैं येह तो नहीं कहता बेशक मैं इस का क़ाइल हूं कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है, जिसे "كُنْ" फ़रमाए वोह हो जाती है। ह़ज़रते मरयम ने कहा कि क्या तुझे मा'लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने आदम और उन की बीबी को बिग़ैर मां बाप के पैदा किया ! ह़ज़रते मरयम के इस कलाम से यूसुफ़ का शुबा रफ़अ़ हो गया और ह़ज़रते मरयम ह़म्ल के सबब से ज़ईफ़ हो गईं थीं, इस लिये वोह ख़िदमते मस्जिद में इन की नयाबत अन्जाम देने लगा, अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मरयम को इल्हाम किया कि वोह अपनी क़ौम से अ़लाह़िदा चली जाएं, इस लिये वोह बैतुल्लह़्म में चली गईं। **33 :** जिस का दरख़्त जंगल में ख़ुश्क हो

قَبْلَ هٰذَا وَ كُنْتُ نَسْیًا مَّنْسِیًّا ﴿۲۳﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا تَحْزَنِیْ قَدْ

मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती तो उसे[34] उस के तले से पुकारा कि ग़म न खा[35] बेशक

جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِیًّا ﴿۲۴﴾ وَ هُزِّیْۤ اِلَیْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ

तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है[36] और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी त़रफ़ हिला तुझ पर ताज़ी

عَلَیْكِ رُطَبًا جَنِیًّا ﴿۲۵﴾ فَكُلِیْ وَ اشْرَبِیْ وَ قَرِّیْ عَیْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَیِنَّ مِنَ

पकी खजूरें गिरेंगी[37] तो खा और पी और आंख ठन्डी रख[38] फिर अगर तू किसी

الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِیْۤ اِنِّیْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْیَوْمَ

आदमी को देखे[39] तो कह देना मैं ने आज रह़मान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न

اِنْسِیًّا ﴿۲۶﴾ ۚ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا یٰمَرْیَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَیْـًٔا

करूंगी[40] तो उसे गोद में लिये अपनी क़ौम के पास आई[41] बोले ऐ मरयम बेशक तू ने बहुत

فَرِیًّا ﴿۲۷﴾ یٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّ مَا كَانَتْ اُمُّكِ

बड़ी बात की ऐ हारून की बहन[42] तेरा बाप[43] बुरा आदमी न था और न तेरी मां[44]

بَغِیًّا ﴿۲۸﴾ ۚۖ فَاَشَارَتْ اِلَیْهِ ؕ قَالُوْا كَیْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِی الْمَهْدِ صَبِیًّا ﴿۲۹﴾

बदकार इस पर मरयम ने बच्चे की त़रफ़ इशारा किया[45] वोह बोले हम कैसे बात करें उस से जो पालने में बच्चा है[46]

गया था, वक़्त तेज़ सर्दी का था, आप उस दरख़्त की जड़ में आईं ताकि उस से टेक लगाएं और फ़ज़ीहत (रुस्वाई व बदनामी) के अन्देशे से। **34 :** जिब्रील ने वादी के नशेब से **35 :** अपनी तन्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों की बदगोई करने का **36 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام ने या ह़ज़रते जिब्रील ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो आबे शीरीं का एक चश्मा जारी हो गया और खजूर का दरख़्त सर सब्ज़ हो गया फल लाया वोह फल पुख़्ता और रसीदा (पक कर तय्यार) हो गए और ह़ज़रते मरयम से कहा गया : **37 :** जो ज़च्चा के लिये बेहतरीन ग़िज़ा हैं। **38 :** अपने फ़रज़न्द ईसा से। **39 :** कि तुझ से बच्चे को दरयाफ़्त करता है **40 :** पहले ज़माने में बोलने और कलाम करने का भी रोज़ा होता था जैसा कि हमारी शरीअ़त में खाने और पीने का रोज़ा होता है, हमारी शरीअ़त में चुप रहने का रोज़ा मन्सूख़ हो गया। ह़ज़रते मरयम को सुकूत (ख़ामोशी इख़्तियार करने) की नज़्र मानने का इस लिये हुक्म दिया गया ताकि कलाम ह़ज़रते ईसा फ़रमाएं और इन का कलाम हु़ज्जते क़विय्या (मज़बूत़ दलील साबित) हो जिस से तोहमत ज़ाइल हो जाए। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : **मस्अला :** सफ़ीह (जाहिल व बे वुक़ूफ़) के जवाब में सुकूत व ए'राज़ चाहिये, جوابِ جاہلاں باشد خموشی (जाहिलों की बात का जवाब ख़ामोशी है)। **मस्अला :** कलाम को अफ़्ज़ल शख़्स की त़रफ़ तफ़्वीज़ करना (फेरना) औला है। ह़ज़रते मरयम ने येह भी इशारे से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी। **41 :** जब लोगों ने ह़ज़रते मरयम को देखा कि इन की गोद में बच्चा है तो रोए और ग़मगीन हुए क्यूं कि वोह सालिह़ीन के घराने के लोग थे और **42 :** और हारून या तो ह़ज़रते मरयम के भाई का नाम था या बनी इसराईल में और निहायत बुज़ुर्ग और सालेह़ शख़्स का नाम था जिन के तक़्वा और परहेज़ गारी से तश्बीह देने के लिये इन लोगों ने ह़ज़रते मरयम को हारून की बहन कहा या ह़ज़रते हारून बरादरे ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ही की त़रफ़ निस्बत की बा वुजूदे कि इन का ज़माना बहुत बईद था और हज़ार बरस का अ़र्सा हो चुका था, मगर चूंकि येह उन की नस्ल से थीं इस लिये हारून की बहन कह दिया जैसा कि अ़रबों का मुह़ावरा है कि वोह तमीमी को **या अख़ा तमीम** कहते हैं। **43 :** या'नी इमरान **44 :** ह़न्ना **45 :** कि जो कुछ कहना है ख़ुद इन से कहो ! इस पर क़ौम के लोगों को ग़ुस्सा आया और **46 :** येह गुफ़्तगू सुन कर ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बाएं हाथ

قَالَ اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ ﰎ اٰتٰىنِیَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِیْ نَبِیًّا ﴿۳۰﴾ وَّ جَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا

बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह का बन्दा[47] उस ने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया[48] और उस ने मुझे मुबारक किया[49]

اَیْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَ اَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَیًّا ﴿۳۱﴾ وَّ بَرًّۢا

मैं कहीं होउं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूं और अपनी मां से

بِوَالِدَتِیْ ۫ وَ لَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا ﴿۳۲﴾ وَ السَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَ

अच्छा सुलूक करने वाला[50] और मुझे ज़बर दस्त बद बख़्त न किया और वोही सलामती मुझ पर[51] जिस दिन मैं पैदा हुवा और

یَوْمَ اَمُوْتُ وَ یَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ

जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा[52] येह है ईसा मरयम का बेटा सच्ची बात

الَّذِیْ فِیْهِ یَمْتَرُوْنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ یَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ

जिस में शक करते हैं[53] अल्लाह को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उस को[54]

اِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۳۵﴾ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبُّكُمْ

जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूंही कि उस से फ़रमाता है हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा[55]

فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَیْنِهِمْ ۚ

तो उस की बन्दगी करो येह राह सीधी है फिर जमाअ़तें आपस में मुख़्तलिफ़ हो गईं[56]

पर टेक लगा कर क़ौम की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और दाहने दस्ते मुबारक से इशारा कर के कलाम शुरूअ़ किया।

47 : पहले अपने बन्दा होने का इक़रार फ़रमाया ताकि कोई इन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा न कहे क्यूं कि आप की निस्बत येह तोहमत लगाई जाने वाली थी और येह तोहमत अल्लाह तबारक व तआ़ला पर लगती थी, इस लिये मन्सबे रिसालत का इक़्तिज़ा येही था कि वालिदा की बराअत बयान करने से पहले उस तोहमत को रफ़्अ़ फ़रमा दें जो अल्लाह तआ़ला की जनाबे पाक में लगाई जाएगी और इसी से वोह तोहमत भी रफ़्अ़ हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला इस मर्तबए अ़ज़ीमा के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है बिल यक़ीन उस की विलादत और उस की सिरिश्त (फ़ित़रत) निहायत पाक व त़ाहिर है। **48 :** किताब से इन्जील मुराद है। ह़सन का क़ौल है कि आप बत़्ने वालिदा ही में थे कि आप को तौरैत का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आप को नुबुव्वत अ़त़ा कर दी गई और इस ह़ालत में आप का कलाम फ़रमाना आप का मो'जिज़ा है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत के मा'ना में येह भी बयान किया है कि येह नुबुव्वत और किताब मिलने की ख़बर थी जो अ़न्क़रीब आप को मिलने वाली थी। **49 :** या'नी लोगों के लिये नफ़्अ़ पहुंचाने वाला और ख़ैर की ता'लीम देने वाला और अल्लाह तआ़ला और उस की तौह़ीद की दा'वत देने वाला। **50 :** बनाया **51 :** जो ह़ज़रते यह़्या पर हुई **52 :** जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह कलाम फ़रमाया तो लोगों को ह़ज़रते मरयम की बराअत व त़हारत का यक़ीन हो गया और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इतना फ़रमा कर ख़ामोश हो गए और इस के बा'द कलाम न किया जब तक कि उस उ़म्र को पहुंचे जिस में बच्चे बोलने लगते हैं। (خازن) **53 :** कि यहूद तो इन्हें साह़िर, कज़्ज़ाब कहते हैं (مَعَاذَ اللّٰه) और नसारा इन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं। تَعَالَی اللّٰهُ عَمَّا یَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِیْرًا (अल्लाह बहुत ही बुलन्दो बाला, पाक व मुनज़्ज़ा है उन की बातों से)। इस के बा'द अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी तन्ज़ीह (पाकी) बयान फ़रमाता है : **54 :** इस से **55 :** और उस के सिवा कोई रब नहीं **56 :** और ह़ज़रते ईसा के बाब में नसारा के कई फ़िर्क़े हो गए : एक या'क़ूबिया, एक नस्तूरिया, एक मलकानिया। या'क़ूबिया कहता था कि वोह अल्लाह है ज़मीन पर उतर आया था फिर आस्मान पर चढ़ गया। नस्तूरिया का क़ौल है कि वोह ख़ुदा का बेटा है जब तक चाहा उसे ज़मीन पर रखा फिर उठा लिया

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَ اَبْصِرْ ۙ

तो ख़राबी है काफ़िरों के लिये एक बड़े दिन की हाज़िरी से[57] कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे

يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۳۸﴾ وَ اَنْذِرْهُمْ

जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे[58] मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं[59] और उन्हें डर सुनाओ

يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِیَ الْاَمْرُ ۘ وَ هُمْ فِیْ غَفْلَةٍ وَّ هُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۹﴾

पछतावे के दिन का[60] जब काम हो चुकेगा[61] और वोह ग़फ़्लत में हैं[62] और वोह नहीं मानते

اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَ مَنْ عَلَيْهَا وَ اِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ اذْكُرْ فِی

बेशक ज़मीन और जो कुछ इस पर है सब के वारिस हम होंगे[63] और वोह हमारी ही त़रफ़ फिरेंगे[64] और किताब में[65]

الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ

इब्राहीम को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़[66] था ग़ैब की ख़बरें बताता जब अपने बाप से बोला[67] ऐ मेरे बाप

لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَ لَا يُبْصِرُ وَ لَا يُغْنِیْ عَنْكَ شَیْــٴًـا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّیْ قَدْ

क्यूं ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए[68] ऐ मेरे बाप बेशक

جَآءَنِیْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِیْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾

मेरे पास[69] वोह इ़ल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ[70] मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं[71]

يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَبَتِ

ऐ मेरे बाप शैत़ान का बन्दा न बन[72] बेशक शैत़ान रह़मान का ना फ़रमान है ऐ मेरे बाप

और तीसरा फ़िर्क़ा येह कहता था कि वोह अल्लाह के बन्दे हैं मख़्लूक़ हैं नबी हैं येह मोमिन था। (مدارک)

57 : बड़े दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **58 :** और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़्अ़ न देगा जब उन्हों ने दुन्या में दलाइले ह़क़ को नहीं देखा और अल्लाह के मवाइद को नहीं सुना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह कलाम ब त़रीक़े तहदीद (बत़ौरे तम्बीह और डराने के) है कि उस रोज़ ऐसी होलनाक बातें सुनें और देखेंगे जिन से दिल फट जाएं। **59 :** न ह़क़ देखें न ह़क़ सुनें बहरे, अन्धे बने हुए हैं, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام को इलाह और मा'बूद ठहराते हैं बा वुजूदे कि उन्हों ने ब सराह़त अपने बन्दा होने का ए'लान फ़रमाया। **60 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर मनाज़िले जन्नत देखेंगे जिन से वोह मह़रूम किये गए तो उन्हें नदामत व ह़सरत होगी कि काश वोह दुन्या में ईमान ले आए होते। **61 :** और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे, ऐसा सख़्त दिन दरपेश है **62 :** और उस दिन के लिये कुछ फ़िक्र नहीं करते **63 :** या'नी सब फ़ना हो जाएंगे हम ही बाक़ी रह जाएंगे। **64 :** हम उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देंगे। **65 :** या'नी क़ुरआन में। **66 :** या'नी कसीरुस्सिद्क़ (हमेशा सच बोलने वाले)। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि सिद्दीक़ के मा'ना हैं कसीरुत्तस्दीक़ जो अल्लाह तआ़ला और उस की वह़दानिय्यत और उस के अम्बिया और उस के रसूलों की और मरने के बा'द उठने की तस्दीक़ करे और अह़कामे इलाहिय्यह बजा लाए। **67 :** या'नी आज़र बुत परस्त से। **68 :** या'नी इ़बादत मा'बूद की ग़ायत (इन्तिहा दरजे की) ता'ज़ीम है, इस का वोही मुस्तह़िक़ हो सकता है जो साह़िबे औसाफ़े कमाल और वलिय्ये नेअ़म हो न कि बुत जैसी नाकारा मख़्लूक़, मुद्दआ येह है कि अल्लाह وَاحِدٌ، لَاشَرِیْکَ لَهٗ के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं। **69 :** मेरे रब की त़रफ़ से

اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّیْطٰنِ وَلِیًّا ﴿۴۵﴾

मैं डरता हूं कि तुझे रहमान का कोई अज़ाब पहुंचे तो तू शैतान का रफ़ीक़ हो जाए[73]

قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ

बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू[74] बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा

وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿۴۶﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

और मुझ से ज़माना दराज़ तक बे अ़लाक़ा हो जा[75] कहा बस तुझे सलाम है[76] क़रीब है कि मैं तेरे लिये अपने रब से मुआफ़ी मांगूंगा[77] बेशक वोह

بِیْ حَفِیًّا ﴿۴۷﴾ وَ اَعْتَزِلُكُمْ وَ مَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ اَدْعُوْا رَبِّیْ ۖ٘

मुझ पर मेहरबान है और मैं एक किनारे हो जाऊंगा[78] तुम से और उन सब से जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूंगा[79]

عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ﴿۴۸﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ

क़रीब है कि मैं अपने रब की बन्दगी से बद बख़्त न होउं[80] फिर जब उन से और अल्लाह के सिवा उन के

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ﴿۴۹﴾ وَ

मा'बूदों से किनारा कर गया[81] हम ने उसे इस्हाक़[82] और या'क़ूब[83] अ़ता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला किया और

وَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَ جَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا ﴿۵۰﴾ ع وَ اذْكُرْ

हम ने उन्हें अपनी रह़मत अ़ता की[84] और उन के लिये सच्ची बुलन्द नामवरी रखी[85] और किताब में

فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ؗ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿۵۱﴾ وَ نَادَیْنٰهُ

मूसा को याद करो बेशक वोह चुना हुवा था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला और उसे हम ने

مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَ قَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ﴿۵۲﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ

तूर की दाहनी जानिब से निदा फ़रमाई[86] और उसे अपना राज़ कहने को क़रीब किया[87] और अपनी रह़मत से उसे उस का भाई हारून

मा'रिफ़ते इलाही का **70 :** मेरा दीन क़बूल कर ! **71 :** जिस से तू क़ुर्बे इलाही की मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच सके। **72 :** और उस की फ़रमां बरदारी कर के कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला न हो। **73 :** और ला'नत व अ़ज़ाब में उस का साथी हो। इस नसीहते लुत्फ़ आमेज़ और हिदायते दिल पज़ीर से आज़र ने नफ़्अ़ न उठाया और इस के जवाब में **74 :** बुतों की मुख़ालफ़त और उन को बुरा कहने और उन के उ़यूब बयान करने से **75 :** ताकि मेरे हाथ और ज़बान से अम्न में रहे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **76 :** येह सलामे मुतारकत था। **77 :** कि वोह तुझे तौफ़ीक़े तौबा व ईमान दे कर तेरी मग़्फ़िरत करे। **78 :** शहरे बाबिल से शाम की त़रफ़ हिजरत कर के **79 :** जिस ने मुझे पैदा किया और मुझ पर एह़सान फ़रमाए। **80 :** इस में ता'रीज़ है कि जैसे तुम बुतों की पूजा कर के बद नसीब हुए, ख़ुदा के परस्तार के लिये येह बात नहीं, उस की बन्दगी करने वाला शक़ी व मह़रूम नहीं होता। **81 :** अर्ज़े मुक़द्दसा की त़रफ़ हिजरत कर के **82 :** फ़रज़न्द **83 :** फ़रज़न्द के फ़रज़न्द या'नी पोते।

फ़ाएदा : इस में इशारा है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ इतनी दराज़ हुई कि आप ने अपने पोते ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को देखा। इस आयत में येह बताया गया कि अल्लाह के लिये हिजरत करने और अपने घरबार को छोड़ने की येह जज़ा मिली कि अल्लाह

اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿۵۳﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ

अ़ता किया ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी)[88] और किताब में इस्माईल को याद करो[89] बेशक वोह वा'दे

الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ

का सच्चा था[90] और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता और अपने घर वालों को[91] नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता

وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿۵۵﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ

और अपने रब को पसन्द था[92] और किताब में इदरीस को याद करो[93] बेशक वोह

صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۵۶﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ

सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता और हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया[94] येह हैं जिन पर **अल्लाह** ने एहसान

तआ़ला ने बेटे और पोते अ़ता फ़रमाए। **84 :** कि अम्वाल व औलाद ब कसरत इनायत किये। **85 :** कि हर दीन वाले मुसल्मान हों ख़्वाह यहूदी ख़्वाह नसरानी सब उन की सना करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उन की आल पर दुरूद पढ़ा जाता है। **86 :** "तूर" एक पहाड़ का नाम है जो मिस्र व मद्यन के दरमियान है। हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को मद्यन से आते हुए तूर की उस जानिब से जो हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के दाहनी त़रफ़ थी एक दरख़्त से निदा दी गई : "يٰمُوْسٰى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ" ऐ मूसा मैं ही **अल्लाह** हूं तमाम जहानों का पालने वाला। **87 :** मर्तबए क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया हिजाब मुरतफ़अ़ किये यहां तक कि आप ने सरीरे अक़्लाम (क़लमों के लिखने की आवाज़) सुनी और आप की क़द्रो मन्ज़िलत बुलन्द की गई और आप से **अल्लाह** तआ़ला ने कलाम फ़रमाया। **88 :** जब कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब ! मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया और हज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से बड़े थे। **89 :** जो हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रज़न्द और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जद हैं। **90 :** अम्बिया सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस वस्फ़ में ख़ास शोहरत रखते हैं। एक मरतबा किसी मक़ाम पर आप से कोई शख़्स कह गया था कि आप यहीं ठहरे रहिये जब तक मैं वापस आऊं। आप उस जगह उस के इन्तिज़ार में तीन रोज़ ठहरे रहे। आप ने सब्र का वा'दा किया था, ज़ब्ह के मौक़अ़ पर इस शान से इस को वफ़ा फ़रमाया कि سُبْحٰنَ اللّٰہ। **91 :** और अपनी क़ौम जुरहुम को जिन की त़रफ़ आप मब्ऊ़स थे **92 :** ब सबब अपने त़ाअ़त व आ'माल व सब्रो इस्तिक़्लाल व अह़वाल व ख़िसाल के। **93 :** आप का नाम अख़्नूख़ है, आप हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام के वालिद के दादा हैं, हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द आप ही पहले रसूल हैं, आप के वालिद हज़रते शीस बिन आदम عَلَیْہِ السَّلَام हैं। सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वोह आप ही हैं, कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की इब्तिदा भी आप ही से हुई, आप से पहले लोग खालें पहनते थे। सब से पहले हथियार बनाने वाले तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं, येह सब काम आप ही से शुरूअ़ हुए। **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर तीस सह़ीफ़े नाज़िल किये और कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्स के बाइ़स आप का नाम इदरीस हुवा। **94 :** दुन्या में उन्हें उ़लुव्वे मर्तबत अ़ता किया या येह मा'ना हैं कि आस्मान पर उठा लिया और येही सह़ीह़ तर है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज हज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام को आस्माने चहारुम पर देखा। हज़रते का'ब अह़बार वग़ैरा से मरवी है कि हज़रते इदरीस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं कैसा होता है, तुम मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर के दिखाओ ! उन्हों ने इस हुक्म की ता'मील की और रूह़ क़ब्ज़ कर के उसी वक़्त आप की त़रफ़ लौटा दी आप ज़िन्दा हो गए। फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़ियादा हो। चुनान्चे, येह भी किया गया, जहन्नम देख कर आप ने मालिक दारोग़ए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो मैं इस पर गुज़रना चाहता हूं। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया और आप उस पर गुज़रे, फिर आप ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ ! वोह आप को जन्नत में ले गए, आप दरवाज़े खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुए, थोड़ी देर इन्तिज़ार कर के मलकुल मौत ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये ! फ़रमाया : अब मैं यहां से कहीं न जाऊंगा, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है : "كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ" वोह मैं चख ही चुका हूं और येह फ़रमाया है : "وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا" कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका, अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है : "وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ" कि वोह जन्नत से निकाले न जाएंगे। अब मुझे जन्नत से चलने के लिये क्यूं कहते हो ? **अल्लाह** तआ़ला ने मलकुल मौत को वह़्य फ़रमाई कि हज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام ने जो कुछ किया मेरे इज़्न से किया और वोह मेरे इज़्न

عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ

किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से[95] और उन में जिन को हम ने नूह़ के साथ सुवार किया था[96] और

ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى

इब्राहीम[97] और या'क़ूब की औलाद से[98] और उन में से जिन्हें हम ने राह दिखाई और चुन लिया[99] जब उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿۵۸﴾ السجدة فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ

السجدة ۵

रह़मान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते[100] तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़लफ़

خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾ ۙ

आए[101] जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[102] तो अ़न्क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे[103]

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا

मगर जो ताइब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो येह लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें

يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿۶۰﴾ ۙ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

कुछ नुक़्सान न दिया जाएगा[104] बसने के बाग़ जिन का वा'दा रह़मान ने अपने[105] बन्दों से ग़ैब में किया[106]

اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿۶۱﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ

बेशक उस का वा'दा आने वाला है वोह उस में कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम[107] और उन्हें

رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۶۲﴾ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا

उस में उन का रिज़्क़ है सुब्ह़ो शाम[108] येह वोह बाग़ है जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे

से जन्नत में दाख़िल हुए, उन्हें छोड़ दो ! वोह जन्नत ही में रहेंगे, चुनान्चे, आप वहां ज़िन्दा हैं।

95 : या'नी ह़ज़रते इदरीस व ह़ज़रते नूह़। **96 :** या'नी इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जो ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के पोते और आप के फ़रज़न्द साम के फ़रज़न्द हैं। **97 :** की औलाद से ह़ज़रते इस्माईल व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और ह़ज़रते या'क़ूब **98 :** ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून और ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा صَلَوٰتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ وَسَلَامُهٗ **99 :** शर्ह़े शरीअ़त व कश्फ़े ह़क़ीक़त के लिये। **100 :** **अल्लाह** तआला ने इन आयात में ख़बर दी कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआला की आयतों को सुन कर ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और ख़ौफ़ से रोते और सज्दे करते थे। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि क़ुरआने पाक ब ख़ुशूए क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तह़ब है। **101 :** मिस्ले यहूदो नसारा वग़ैरा के **102 :** और बजाए त़ाअ़ते इलाही के मआसी को इख़्तियार किया **103 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : **ग़य्य** जहन्नम में एक वादी है जिस की गरमी से जहन्नम की वादियां भी पनाह मांगती हैं। येह उन लोगों के लिये है जो ज़िना के आ़दी और इस पर मुसिर (डटे हुए) हों और जो शराब के आ़दी हों और जो सूद ख़्वार सूद के ख़ूगर (आ़दी) हों और जो वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले हों और जो झूटी गवाही देने वाले हों। **104 :** और उन के आ'माल की जज़ा में कुछ भी कमी न की जाएगी। **105 :** ईमानदार सालेह़ व ताइब **106 :** या'नी इस ह़ाल में कि जन्नत उन से ग़ाइब है और उन की नज़र के सामने नहीं या इस ह़ाल में कि वोह जन्नत से ग़ाइब हैं इस का मुशाहदा नहीं करते। **107 :** मलाएका का या आपस में एक दूसरे का। **108 :** या'नी अ़लद्दवाम क्यूं कि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं, अहले

مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝٦٣ وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَ

जो परहेज़ गार है (और जिब्रील ने महबूब से अर्ज़ की)[109] हम फ़िरिश्ते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और

مَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝٦٤ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

जो हमारे पीछे और जो इस के दरमियान है[110] और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं[111] आस्मानों और ज़मीन और

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ

जो कुछ इन के बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उस की बन्दगी पर साबित रहो क्या उस के नाम का दूसरा

سَمِيًّا ۝٦٥ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ۝٦٦ اَوَلَا

जानते हो[112] और आदमी कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अन्क़रीब जिला कर निकाला जाऊंगा[113] और क्या

يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ۝٦٧ فَوَرَبِّكَ

आदमी को याद नहीं कि हम ने इस से पहले उसे बनाया और वोह कुछ न था[114] तो तुम्हारे रब की क़सम हम

لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝٦٨ ثُمَّ

इन्हें[115] और शैतानों सब को घेर लाएंगे[116] और इन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे घुटनों के बल गिरे फिर

لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ۝٦٩ ثُمَّ لَنَحْنُ

हम[117] हर गुरौह से निकालेंगे जो उन में रहमान पर सब से ज़ियादा बेबाक होगा[118] फिर हम ख़ूब

اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ۝٧٠ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ

जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़ियादा लाइक़ हैं और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो[119] तुम्हारे

जन्नत हमेशा नूर ही में रहेंगे या मुराद येह है कि दुन्या के दिन की मिक़्दार में दो मरतबा बिहिश्ती ने'मतें उन के सामने पेश की जाएंगी। **109 शाने नुज़ूल :** बुख़ारी शरीफ़ में हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने जिब्रील से फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! तुम जितना हमारे पास आया करते हो इस से ज़ियादा क्यूं नहीं आते ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **110 :** या'नी तमाम अमाकिन का वोही मालिक है, हम एक मकान से दूसरे मकान की तरफ़ नक़्लो हरकत करने में उस के हुक्म व मशिय्यत के ताबेअ़ हैं, वोह हर हरकत व सुकून का जानने वाला और ग़फ़्लत व निस्यान से पाक है। **111 :** जब चाहे हमें आप की ख़िदमत में भेजे। **112 :** या'नी किसी को उस के साथ इस्मी शिर्कत भी नहीं और उस की वह़दानिय्यत इतनी ज़ाहिर है कि मुश्रिकीन ने भी अपने किसी मा'बूदे बातिल का नाम "अल्लाह" नहीं रखा। **113 :** इन्सान से यहां मुराद वोह कुफ़्फ़ार हैं जो मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने के मुन्किर थे जैसे कि उबय बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा, इन्हीं लोगों के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और येही इस का शाने नुज़ूल है। **114 :** तो जिस ने मा'दूम (ग़ैर मौजूद) को मौजूद फ़रमाया उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा कर देना क्या तअ़ज्जुब। **115 :** या'नी मुन्किरीने बअ़्स को **116 :** या'नी कुफ़्फ़ार को उन के गुमराह करने वाले शयातीन के साथ। इस तरह कि हर काफ़िर शैतान के साथ एक ज़न्जीर में जकड़ा होगा **117 :** कुफ़्फ़ार के **118 :** या'नी दुख़ूले नार में जो सब से ज़ियादा सरकश और कुफ़्र में अशद (ज़ियादा सख़्त) होगा वोह मुक़द्दम किया जाएगा। बा'ज़ रिवायात में है कि कुफ़्फ़ार सब के सब जहन्नम के गिर्द ज़न्जीरों में जकड़े तौक़ डाले हुए हाज़िर किये जाएंगे फिर जो कुफ़्रो सरकशी में अशद होंगे वोह पहले जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे। **119 :** नेक हो या बद, मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा

عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ

रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है[120] फिर हम डर वालों को बचा लेंगे[121] और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे

فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا

घुटनों के बल गिरे और जब उन पर हमारी रोशन आयतें पढ़ी जाती हैं काफ़िर[122] मुसल्मानों

لِلَّذِينَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ

से कहते हैं कौन से गुरौह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है[123] और हम

اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ

ने उन से पहले कितनी संगतें खपा दीं[124] कि वोह उन से भी सामान और नुमूद (देखने) में बेहतर थे तुम फ़रमाओ जो गुमराही

فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا

में हो तो उसे रहमान ख़ूब ढील दे[125] यहां तक कि जब वोह देखें वोह चीज़ जिस का उन्हें वा'दा दिया जाता है या

الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ۭ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ

तो अज़ाब[126] या क़ियामत[127] तो अब जान लेंगे कि किस का बुरा दरजा है और किस की फ़ौज

جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۭ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

कमज़ोर[128] और जिन्हों ने हिदायत पाई[129] अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा[130] और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का[131]

خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَ

तेरे रब के यहां सब से बेहतर सवाब और सब से भला अन्जाम[132] तो क्या तुम ने उसे देखा जो हमारी आयतों से मुन्किर हुवा और

قَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ

कहता है मुझे ज़रूर माल व औलाद मिलेंगे[133] क्या ग़ैब को झांक आया है[134] या रहमान के पास कोई क़रार

तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन ! गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। हसन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुल सिरात़ पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है। **120 :** या'नी वुरूदे जहन्नम (दोज़ख़ पर से गुज़रना) क़ज़ाए लाज़िम है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है। **121 :** या'नी ईमानदारों को **122 :** मिस्ल नज़्र बिन हारिस वग़ैरा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बनाव सिंघार कर के बालों में तेल डाल कर कंघियां कर के उम्दा लिबास पहन कर फ़ख़्रो तकब्बुर के साथ ग़रीब फ़क़ीर **123 :** मुद्दआ येह है कि जब आयात नाज़िल की जाती हैं और दलाइल व बराहीन पेश किये जाते हैं तो कुफ़्फ़ार उन में तो फ़िक्र नहीं करते और उन से फ़ाएदा नहीं उठाते और बजाए इस के दौलतो माल और लिबास व मकान पर फ़ख़्रो तकब्बुर करते हैं। **124 :** उम्मतें हलाक कर दीं **125 :** दुन्या में उस की उम्र दराज़ कर के और उस को उस की गुमराही व तुग़यान में छोड़ कर **126 :** दुन्या का क़त्ल व गिरिफ़्तारी **127 :** जो त़रह त़रह की रुस्वाई और अज़ाब पर मुश्तमिल है। **128 :** कुफ़्फ़ार की शैत़ानी फ़ौज या मुसल्मानों का मलकी लश्कर। इस में मुश्रिकीन के इस क़ौल का रद है जो उन्हों ने कहा था कि कौन से गुरौह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है। **129 :** और ईमान से मुशर्रफ़ हुए **130 :** इस पर इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा

عَهْدًا ﴿۷۸﴾ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَ نَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿۷۹﴾

(अ़हद) रखा है हरगिज़ नहीं[135] अब हम लिख रखेंगे जो वोह कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अ़ज़ाब देंगे

وَّ نَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَ يَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿۸۰﴾ وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

और जो चीज़ें कह रहा है[136] उन के हमीं वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा[137] और **अल्लाह** के सिवा और ख़ुदा बना लिये[138]

لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿۸۱﴾ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَ يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ

कि वोह उन्हें ज़ोर दें[139] हरगिज़ नहीं[140] कोई दम जाता है कि वोह[141] उन की बन्दगी से मुन्किर होंगे और उन के मुख़ालिफ़

ضِدًّا ﴿۸۲﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿۸۳﴾

हो जाएंगे[142] क्या तुम ने न देखा कि हम ने काफ़िरों पर शैत़ान भेजे[143] कि वोह इन्हें ख़ूब उछालते हैं[144]

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۴﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى

तो तुम इन पर जल्दी न करो हम तो इन की गिनती पूरी करते हैं[145] जिस दिन हम परहेज़ गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे

الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّ نَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ

मेहमान बना कर[146] और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे[147] लोग शफ़ाअ़त

الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿۸۷﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ

के मालिक नहीं मगर वोही जिन्हों ने रह़मान के पास क़रार कर रखा है[148] और काफ़िर बोले[149]

कर और मज़ीद बसीरत व तौफ़ीक़ दे कर। **131 :** त़ाअ़तें और आख़िरत के तमाम आ'माल और पंजगाना नमाज़ें और **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ व तह़मीद और उस का ज़िक्र और तमाम आ'माले सालिह़ा येह सब बाक़ियाते सालिहात हैं कि मोमिन के लिये बाक़ी रहते हैं और काम आते हैं। **132 :** ब ख़िलाफ़े आ'माले कुफ़्फ़ार के कि वोह सब निकम्मे और बात़िल हैं। **133 शाने नुज़ूल :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत का ज़मानए जाहिलिय्यत में आ़स बिन वाइल सहमी पर क़र्ज़ था, वोह उस के पास तक़ाज़े को गए तो आ़स ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ न अदा करूंगा जब तक कि तुम सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फिर न जाओ और कुफ़्र इख़्तियार न करो। ह़ज़रते ख़ब्बाब ने फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता यहां तक कि तू मरे और मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठे। वोह कहने लगा कि क्या मैं मरने के बा'द फिर उठूंगा ? ह़ज़रते ख़ब्बाब ने कहा : हां। आ़स ने कहा : तो फिर मुझे छोड़िये यहां तक कि मैं मर जाऊं और मरने के बा'द फिर ज़िन्दा होउं और मुझे माल व औलाद मिले जब ही आप का क़र्ज़ अदा करूंगा, इस पर येह आयाते करीमा नाज़िल हुईं। **134 :** और उस ने लौहे़ मह़फ़ूज़ में देख लिया है कि आख़िरत में इस को माल व औलाद मिलेगी **135 :** ऐसा नहीं है। तो **136 :** या'नी माल व औलाद इन सब से उस की मिल्क और उस का तसर्रुफ़ उस के हलाक होने से उठ जाएगा और **137 :** कि न उस के पास माल होगा न औलाद और उस का येह दा'वा करना झूटा हो जाएगा। **138 :** या'नी मुश्रिकों ने बुतों को मा'बूद बनाया और उन की इ़बादत करने लगे इस उम्मीद पर **139 :** और उन की मदद करें और उन्हें अ़ज़ाब से बचाएं **140 :** ऐसा हो ही नहीं सकता **141 :** बुत जिन्हें येह पूजते थे **142 :** उन्हें झुटलाएंगे और उन पर ला'नत करेंगे **अल्लाह** तआ़ला उन्हें ज़बान देगा और वोह कहेंगे : या रब ! इन्हें अ़ज़ाब कर। **143 :** या'नी शयात़ीन को इन पर छोड़ दिया और मुसल्लत़ कर दिया **144 :** और मआ़सी (ना फ़रमानी) पर उभारते हैं **145 :** आ'माल की जज़ा के लिये या सांसों की फ़ना के लिये या दिनों महीनों और बरसों की उस मीआ़द के लिये जो इन के अ़ज़ाब के वासित़े मुक़र्रर है। **146 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मोमिनीने मुत्तक़ीन ह़श्र में अपनी क़ब्रों से सुवार कर के उठाए जाएंगे और उन की सुवारियों पर त़िलाई मुरस्सअ़ ज़ीनें और पालान होंगे। **147 :** ज़िल्लतो इहानत के साथ ब सबब उन के कुफ़्र के। **148 :** या'नी जिन्हें शफ़ाअ़त का इज़्न मिल चुका है वोही

الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ

रह्मान ने औलाद इख़्तियार की बेशक तुम हद की भारी बात लाए[150] क़रीब है कि आस्मान इस से फट

مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَ تَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ

पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जाएं ढ (मिस्मार हो) कर[151] इस पर कि उन्हों ने रह्मान के लिये

وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَ مَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي

औलाद बताई और रह्मान के लिये लाइक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे[152] आस्मानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَ عَدَّهُمْ

में जितने हैं सब उस के हुज़ूर बन्दे हो कर हाज़िर होंगे[153] बेशक वोह उन का शुमार जानता है और उन को एक एक कर के

عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَ كُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

गिन रखा है[154] और उन में हर एक रोज़े क़ियामत उस के हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा[155] बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ

काम किये अन्क़रीब उन के लिये रह्मान महब्बत कर देगा[156] तो हम ने येह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूंही आसान फ़रमाया कि तुम इस

بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَ تُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ

से डर वालों को ख़ुश ख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इस से डर सुनाओ और हम ने इन से पहली कितनी संगतें खपाईं[157]

शफ़ाअ़त करेंगे या येह मा'ना हैं कि शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिनीन की होगी और वोही इस से फ़ाएदा उठाएंगे। ह़दीस शरीफ़ में है: जो ईमान लाया जिस ने "لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहा उस के लिये **अल्लाह** के नज़्दीक अ़हद है। **149 :** या'नी यहूदी व नसरानी व मुश्रिकीन जो फ़िरिश्तों को **अल्लाह** की बेटियां कहते थे कि **150 :** और इन्तिहा दरजे का बात़िल व निहायत सख़्त व शनीअ़ कलिमा तुम ने मुंह से निकाला **151 :** या'नी येह कलिमा ऐसी बे अदबी व गुस्ताख़ी का है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाए तो इस पर तमाम जहान का निज़ाम दरहम बरहम कर दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार ने जब येह गुस्ताख़ी की और ऐसा बे बाकाना कलिमा मुंह से निकाला तो जिन्नो इन्स के सिवा आस्मान, ज़मीन, पहाड़ वग़ैरा तमाम ख़ल्क़ परेशानी से बेचैन हो गई और क़रीब हलाकत के पहुंच गई, मलाएका को ग़ज़ब हुवा और जहन्नम को जोश आया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी तन्ज़ीह (पाकी) बयान फ़रमाई। **152 :** वोह इस से पाक है और उस के लिये औलाद होना मुह़ाल है मुम्किन नहीं। **153 :** बन्दा होने का इक़रार करते हुए और बन्दा होना और औलाद होना जम्अ़ हो ही नहीं सकता और औलाद मम्लूक (गुलाम) नहीं होती तो जो मम्लूक है हरगिज़ औलाद नहीं। **154 :** सब उस के इ़ल्म में मह़सूर व मुह़ात़ (घिरे हुए) हैं और हर एक के अन्फ़ास, अय्याम, आसार और तमाम अह़वाल और जुम्ला उमूर उस के शुमार में हैं, उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं, सब उस की तदबीरो क़ुदरत के तह़्त में हैं। **155 :** बिग़ैर माल व औलाद और मुईन व नासिर के। **156 :** या'नी अपना मह़बूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उन की मह़ब्बत डाल देगा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे को मह़बूब करता है तो जिब्रील से फ़रमाता है कि फ़ुलाना मेरा मह़बूब है, जिब्रील उस से मह़ब्बत करने लगते हैं, फिर ह़ज़रते जिब्रील आस्मानों में निदा करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां को मह़बूब रखता है, सब उस को मह़बूब रखें, तो आस्मान वाले उस को मह़बूब रखते हैं, फिर ज़मीन में उस की मक़्बूलिय्यते आ़म कर दी जाती है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मोमिनीने सालिह़ीन व औलियाए कामिलीन की मक़्बूलिय्यते आ़म्मा उन की मह़बूबिय्यत की दलील है जैसे कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सुल्तान निज़ामुद्दीन देहलवी और ह़ज़रते सुल्तान सय्यिद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और दीगर ह़ज़राते औलियाए कामिलीन की आ़म मक़्बूलिय्यतें उन की मह़बूबिय्यत

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

क्या तुम उन में किसी को देखते हो या उन की भिनक सुनते हो[158]

اٰياتها ١٣٥ ٢٠ سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ ٤٥ ركوعاتها ٨

सूरए त़ाहा मक्किय्या है, इस में एक सो पैंतीस आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

طٰهٰ ﴿١﴾ مَا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

ऐ मह़बूब हम ने तुम पर येह क़ुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो[2] हां उस को नसीह़त जो

يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ

डर रखता हो[3] उस का उतारा हुवा जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए वोह बड़ी मेह्र (रह़मत) वाला

عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا

उस ने अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है उस का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ

بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَ

इन के बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है[4] और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वोह तो भेद को जानता है और

اَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ

उसे जो उस से भी ज़ियादा छुपा है[5] **अल्लाह** कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम[6] और कुछ तुम्हें

की दलील हैं। **157 :** तक्ज़ीबे अम्बिया की वज्ह से कितनी बहुत सी उम्मतें हलाक कीं।

158 : वोह सब नेस्तो नाबूद (हलाक व बरबाद) कर दिये गए, इसी त़रह़ येह लोग अगर वोही त़रीक़ा इख़्तियार करेंगे तो इन का भी वोही अन्जाम होगा। **1 :** सूरए त़ाहा मक्किय्या है। इस में आठ रुकूअ़, एक सो पैंतीस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो इक्तालीस कलिमे और पांच हज़ार दो सो बयालीस हुरूफ़ हैं। **2 :** और तमाम शब के क़ियाम की तक्लीफ़ उठाओ। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इबादत में बहुत जुह्द फ़रमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुज़ारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर ब हुक्मे इलाही अ़र्ज़ किया कि अपने नफ़्से पाक को कुछ राह़त दीजिये इस का भी ह़क़ है। एक क़ौल येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم लोगों के कुफ़्र और उन के ईमान से मह़रूम रहने पर बहुत ज़ियादा मुतअस्सिफ़ व मुतह़स्सिर (अफ़्सुर्दा) रहते थे और ख़ात़िरे मुबारक पर इस सबब से रन्जो मलाल रहा करता था, इस आयत में फ़रमाया गया कि आप रन्जो मलाल की कोफ़्त न उठाएं, क़ुरआने पाक आप की मशक़्क़त के लिये नाज़िल नहीं किया गया है। **3 :** वोह इस से नफ़्अ़ उठाएगा और हिदायत पाएगा। **4 :** जो सातों ज़मीनों के नीचे है। मुराद येह है कि काएनात में जो कुछ है अ़र्श व समावात, ज़मीन व तह़्तुस्सरा कुछ हो, कहीं हो सब का मालिक **अल्लाह** है। **5 :** "سِر" या'नी भेद वोह है जिस को आदमी रखता और छुपाता है और इस से ज़ियादा पोशीदा वोह है जिस को इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उस से उस का इरादा मुतअ़ल्लिक़ हुवा न उस तक ख़याल पहुंचा। एक क़ौल येह है कि भेद से मुराद वोह है जिस को इन्सानों से छुपाता है और इस से ज़ियादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है। एक क़ौल येह है कि भेद बन्दे का वोह है जिसे बन्दा

حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝٩ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا

मूसा की ख़बर आई[7] जब उस ने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है

لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝١٠ فَلَمَّآ اَتٰىهَا

शायद मैं तुम्हारे लिये उस में से कोई चिंगारी लाऊं या आग पर रास्ता पाऊं फिर जब आग के पास आया[8]

نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝١١ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ

निदा फ़रमाई गई कि ऐ मूसा बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल[9] बेशक तू पाक

الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٢ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝١٣ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ

जंगल तुवा में है[10] और मैं ने तुझे पसन्द किया[11] अब कान लगा कर सुन जो तुझे वह्य होती है बेशक मैं ही हूं **अल्लाह**

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝١٤ اِنَّ السَّاعَةَ

कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख[12] बेशक क़ियामत आने

اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ۝١٥ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

वाली है क़रीब था कि मैं उसे सब से छुपाऊं[13] कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए[14] तो हरगिज़ तुझे[15] इस के मानने से वोह

खुद जानता है और **अल्लाह** तआ़ला जानता है, इस से ज़ियादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिन को **अल्लाह** जानता है बन्दा नहीं जानता। आयत में तम्बीह है कि आदमी को क़बाएह़ अफ़्आ़ल से परहेज़ करना चाहिये वोह ज़ाहिरा हों या बातिना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला से कुछ छुपा नहीं और इस में नेक आ'माल पर तरग़ीब भी है कि ताअ़त ज़ाहिर हो या बातिन **अल्लाह** से छुपी नहीं वोह जज़ा अ़ता फ़रमाएगा। तफ़्सीरे बैज़ावी में ''क़ौल'' से ज़िक्रे इलाही और दुआ़ मुराद ली है और फ़रमाया है कि इस आयत में इस पर तम्बीह की गई है कि ज़िक्रो दुआ़ में जह्‌र (बुलन्द आवाज़ करना) **अल्लाह** तआ़ला को सुनाने के लिये नहीं है बल्कि ज़िक्र को नफ़्स में रासिख़ करने और नफ़्स को ग़ैर के साथ मश्ग़ूली से रोकने और बाज़ रखने के लिये है। **6 :** वोह वाहिद बिज़्ज़ात है और अस्मा व सिफ़ात ब इबारात हैं और ज़ाहिर है कि तअ़द्दुदे इबारात तअ़द्दुदे मा'ना को मुक़्तज़ी नहीं। **7 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़वाल का बयान फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जो दरजए उ़ल्या पाते हैं वोह अदाए फ़राइज़े नुबुव्वत व रिसालत में किस क़दर मशक़्क़तें बरदाश्त करते और कैसे कैसे शदाइद पर सब्र फ़रमाते हैं। यहां ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उस सफ़र का वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जाता है जिस में आप मद्यन से मिस्र की त़रफ़ ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इजाज़त ले कर अपनी वालिदए माजिदा से मिलने के लिये रवाना हुए थे, आप के अहले बैत हमराह थे और आप ने बादशाहाने शाम के अन्देशे से सड़क छोड़ कर जंगल में क़त़ए मसाफ़त इख़्तियार फ़रमाई, बीबी साहिबा ह़ामिला थीं चलते चलते तूर के ग़र्बी जानिब पहुंचे, यहां रात के वक़्त बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हुवा, येह रात अंधेरी थी, बर्फ़ पड़ रही थी, सर्दी शिद्दत की थी, आप को दूर से आग मा'लूम हुई **8 :** वहां एक दरख़्त सर सब्ज़ो शादाब देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रोशन था, जितना उस के क़रीब जाते हैं दूर होता है, जब ठहर जाते हैं क़रीब होता है, उस वक़्त आप को **9 :** कि इस में तवाज़ोअ़ और बुक़्अ़ए मुअ़ज़्ज़मा का एह़तिराम और वादिये मुक़द्दस की ख़ाक से ह़ुसूले बरकत का मौक़अ़ है। **10 :** ''तुवा'' वादिये मुक़द्दस का नाम है जहां येह वाक़िआ़ पेश आया। **11 :** तेरी क़ौम में से नुबुव्वत व रिसालत व शरफ़े कलाम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह निदा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने हर जुज़्वे बदन से सुनी और क़ुव्वते सामिआ़ ऐसी आ़म हुई कि तमाम जिस्मे अक़्दस कान बन गया। سُبْحٰنَ اللّٰه। **12 :** ताकि तू उस में मुझे याद करे और मेरी याद में इख़्लास और मेरी रिज़ा मक़्सूद हो, कोई दूसरी ग़रज़ न हो, इसी त़रह़ रिया का दख़्ल न हो या येह मा'ना हैं कि तू मेरी नमाज़ क़ाइम रख ताकि मैं तुझे अपनी रह़मत से याद फ़रमाऊं। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ईमान के बा'द आ'ज़मे फ़राइज़ नमाज़ है। **13 :** और बन्दों को उस के आने की ख़बर न दूं और उस के आने की ख़बर न दी जाती अगर इस ख़बर देने में येह ह़िक्मत न होती **14 :** और उस के ख़ौफ़ से मआ़सी तर्क करे नेकियां ज़ियादा करे और हर वक़्त तौबा करता रहे। **15 :** ऐ उम्मते मूसा ! ख़ित़ाब ब ज़ाहिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿۱۶﴾ وَ مَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ

बाज़ न रखे जो इस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला[16] फिर तो हलाक हो जाए और येह तेरे दाहने हाथ में क्या है

يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَ اَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَ

ऐ मूसा[17] अ़र्ज़ की येह मेरा अ़सा है[18] मैं इस पर तक्या (टेक व सहारा) लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और

لِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿۱۸﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿۱۹﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

मेरे इस में और काम हैं[19] फ़रमाया इसे डाल दे ऐ मूसा तो मूसा ने उसे डाल दिया तो जभी वोह दौड़ता हुवा

تَسْعٰى ﴿۲۰﴾ قَالَ خُذْهَا وَ لَا تَخَفْ ۫ وقفة سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿۲۱﴾ وَ

सांप हो गया[20] फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहली त़रह़ कर देंगे[21] और

اضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿۲۲﴾ ۙ

अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला[22] ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मरज़ के[23] एक और निशानी[24]

لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿۲۳﴾ ۚ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۲۴﴾ ع قَالَ

कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं फ़िरऔ़न के पास जा[25] उस ने सर उठाया[26] अ़र्ज़ की

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿۲۵﴾ ۙ وَ يَسِّرْ لِيْۤ اَمْرِيْ ﴿۲۶﴾ ۙ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ

ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे[27] और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की

को है और मुराद इस से आप की उम्मत है। (مدارک)

16 : अगर तू उस का कहना माने और क़ियामत पर ईमान न लाए तो 17 : इस सुवाल की ह़िक्मत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अ़सा को देख लें और येह बात क़ल्ब में ख़ूब रासिख़ हो जाए कि येह अ़सा है ताकि जिस वक़्त वोह सांप की शक्ल में हो तो आप के ख़ातिरे मुबारक पर कोई परेशानी न हो या येह ह़िक्मत है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मानूस किया जाए ताकि हैबते मुकालमत (अल्लाह तआ़ला से हम कलामी करते हुए रो'ब व दहशत) का असर कम हो (مدارک وغیرہ) 18 : इस अ़सा में ऊपर की जानिब दो शाखें थीं और उस का नाम नब्अ़ा था। 19 : मिस्ल तोशा और पानी उठाने और मूज़ी जानवरों को दफ़्अ़ करने और आ'दा से मुह़ारबा में काम लेने वग़ैरा के, इन फ़वाइद का ज़िक्र करना ब त़रीक़े शुक्रे नेअ़मे इलाहिय्यह था। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से 20 : और क़ुदरते इलाही दिखाई गई कि जो अ़सा हाथ में रहता था और इतने कामों में आता था अब अचानक वोह ऐसा हैबतनाक अज़्दहा बन गया। येह ह़ाल देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ौफ़ हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने उन से 21 : येह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा ह़त्ता कि आप ने अपना दस्ते मुबारक उस के मुंह में डाल दिया और वोह आप के हाथ लगाते ही मिस्ले साबिक़ अ़सा बन गया, अब उस के बा'द एक और मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया जिस की निस्बत इर्शाद फ़रमाया : 22 : या'नी कफ़े दस्ते रास्त (सीधे हाथ की हथेली) बाएं बाज़ू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो आफ़्ताब की त़रह़ चमकता निगाहों को ख़ीरा करता (चुंधयाता हुवा) और 23 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक से रात व दिन में आफ़्ताब की त़रह़ नूर ज़ाहिर होता था और येह मो'जिज़ा आप के आ'ज़म मो'जिज़ात में से है, जब आप दोबारा अपना दस्ते मुबारक बग़ल के नीचे रख कर बाज़ू से मिलाते तो वोह दस्ते अक़्दस ह़ालते साबिक़ा पर आ जाता। 24 : आप के सिद्क़े नुबुव्वत की अ़सा के बा'द इस निशानी को भी लीजिये। 25 : रसूल हो कर 26 : और कुफ़्र में ह़द से गुज़र

لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ

गिरह खोल दे[28] कि वोह मेरी बात समझें और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे[29] वोह कौन मेरा

اَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْۤ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ

भाई हारून उस से मेरी कमर मज़्बूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर[30] कि हम ब कसरत तेरी

كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ

पाकी बोलें और ब कसरत तेरी याद करें[31] बेशक तू हमें देख रहा है[32] फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग

سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰۤى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَاۤ

तुझे अ़ता हुई और बेशक हम ने[33] तुझ पर एक बार और एह़सान फ़रमाया जब हम ने तेरी

اِلٰۤى اُمِّكَ مَا يُوْحٰۤى ﴿٣٨﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ

मां को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था[34] कि इस बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरिया में[35] डाल दे

فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ

तो दरिया इसे किनारे पर डाले कि इसे वोह उठा ले जो मेरा दुश्मन और इस का दुश्मन[36] और मैं ने तुझ पर अपनी

مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ۬ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِيْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ

तरफ़ की महब्बत डाली[37] और इस लिये कि तू मेरी निगाह के सामने तय्यार हो[38] तेरी बहन चली[39] फिर कहा क्या

गया और उलूहिय्यत का दा'वा करने लगा। **27 :** और इसे तहम्मुले रिसालत के लिये वसीअ़ फ़रमा दे।

28 : जो ख़ुर्द साली (बचपन) में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है और इस का वाक़िआ़ येह था कि बचपन में आप एक रोज़ फ़िरऔ़न की गोद में थे आप ने उस की दाढ़ी पकड़ कर उस के मुंह पर ज़ोर से तमांचा मारा, इस पर उसे ग़ुस्सा आया और उस ने आप के क़त्ल का इरादा किया। आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह येह नादान बच्चा है क्या समझे ? तू चाहे तो तजरिबा कर ले ! इस तजरिबे के लिये एक तश्त में आग और एक तश्त में याक़ूते सुर्ख़ आप के सामने पेश किये गए, आप ने याक़ूत लेना चाहा मगर फ़िरिश्ते ने आप का हाथ अंगारे पर रख दिया और वोह अंगारा आप के मुंह में दे दिया, इस से ज़बाने मुबारक जल गई और लुक्नत पैदा हो गई, इस के लिये आप ने येह दुआ़ की। **29 :** जो मेरा मुआ़विन व मो'तमद हो। **30 :** या'नी अम्रे नुबुव्वत व तब्लीग़े रिसालत में। **31 :** नमाज़ों में भी और ख़ारिजे नमाज़ भी। **32 :** हमारे अह़वाल का आ़लिम है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने **33 :** इस से क़ब्ल **34 :** दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रीए से, जब कि उन्हें आप की विलादत के वक़्त फ़िरऔ़न की त़रफ़ से आप को क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुवा। **35 :** या'नी नील में **36 :** या'नी फ़िरऔ़न। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा ने एक सन्दूक़ बनाया और उस में रूई बिछाई और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उस में रख कर सन्दूक़ बन्द कर दिया और उस की दरज़ें (झिरयां) रोग़ने क़ीर (तारकोल) से बन्द कर दीं आप उस सन्दूक़ के अन्दर पानी में पहुंचे, फिर उस सन्दूक़ को दरियाए नील में बहा दिया, इस दरिया से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔ़न के महल में गुज़रती थी, फ़िरऔ़न मअ़ अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारे बैठा था, नहर में सन्दूक़ आता देख कर उस ने ग़ुलामों और कनीज़ों को उस के निकालने का हुक्म दिया। वोह सन्दूक़ निकाल कर सामने लाया गया, खोला तो उस में एक नूरानी शक्ल फ़रज़न्द जिस की पेशानी से वजाहत व इक़्बाल के आसार नुमूदार थे नज़र आया, देखते ही फ़िरऔ़न के दिल में ऐसी महब्बत पैदा हुई कि वोह वारफ़्ता हो गया और अ़क़्ल व ह़वास बजा न रहे, अपने इख़्तियार से बाहर हो गया, इस की निस्बत **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **37 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें महबूब बनाया और ख़ल्क़ का महबूब कर दिया और जिस को **अल्लाह**

اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤى اُمِّكَ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ

मैं तुम्हें वोह लोग बता दूं जो इस बच्चे की परवरिश करें[40] तो हम तुझे तेरी मां के पास फेर लाए कि उस की आंख[41] ठन्डी हो और ग़म न करे[42]

وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّیْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَ فَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِیْنَ

और तू ने एक जान को क़त्ल किया[43] तो हम ने तुझे ग़म से नजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया[44] तो तू कई बरस

فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ ۙ۬ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ یّٰمُوْسٰى ۝۴۰ وَ اصْطَنَعْتُكَ

मद्यन वालों में रहा[45] फिर तू एक ठहराए वा'दे पर हाज़िर हुवा ऐ मूसा[46] और मैं ने तुझे ख़ास

لِنَفْسِیْ ۝۴۱ اِذْهَبْ اَنْتَ وَ اَخُوْكَ بِاٰیٰتِیْ وَ لَا تَنِیَا فِیْ ذِكْرِیْ ۝۴۲ اِذْهَبَاۤ

अपने लिये बनाया[47] तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियां[48] ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना दोनों

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝۴۳ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ

फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उस ने सर उठाया तो उस से नर्म बात कहना[49] इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या

یَخْشٰى ۝۴۴ قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ یَّفْرُطَ عَلَیْنَاۤ اَوْ اَنْ یَّطْغٰى ۝۴۵

कुछ डरे[50] दोनों ने अर्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वोह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए

तबारक व तआला अपनी महबूबिय्यत से नवाज़ता है क़ुलूब में उस की महब्बत पैदा हो जाती है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुवा, येही हाल हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का था जो आप को देखता था उसी के दिल में आप की महब्बत पैदा हो जाती थी। क़तादा ने कहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आंखों में ऐसी मलाहत थी जिसे देख कर हर देखने वाले के दिल में महब्बत जोश मारने लगती थी। **38 :** या'नी मेरी हिफ़ाज़त व निगहबानी में परवरिश पाए। **39 :** जिस का नाम मरयम था ताकि वोह आप के हाल का तजस्सुस करे और मा'लूम करे कि सन्दूक़ कहां पहुंचा? आप किस के हाथ आए? जब उस ने देखा कि सन्दूक़ फ़िरऔन के पास पहुंचा और वहां दूध पिलाने के लिये दाइयां हाज़िर की गईं और आप ने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आप की बहन ने **40 :** उन लोगों ने इस को मन्ज़ूर किया, वोह अपनी वालिदा को ले गईं, आप ने उन का दूध क़बूल फ़रमाया। **41 :** आप के दीदार से **42 :** या'नी ग़मे फ़िराक़ दूर हो। इस के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के एक और वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है **43 :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔन की क़ौम के एक काफ़िर को मारा था वोह मर गया, कहा गया है कि उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ बारह साल की थी, इस वाक़िए पर आप को फ़िरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुवा। **44 :** मेहनतों में डाल कर और उन से ख़लासी अता फ़रमा कर। **45 :** मद्यन एक शहर है मिस्र से आठ मन्ज़िल फ़ासिले पर, यहां हज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रहते थे, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मिस्र से मद्यन आए और कई बरस तक हज़रते शुऐब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास इक़ामत फ़रमाई और उन की साहिब ज़ादी सफ़ूरा के साथ आप का निकाह हुवा। **46 :** या'नी अपनी उम्र के चालीसवें साल, और येह वोह सिन है कि अम्बिया की तरफ़ इस सिन में वह्य की जाती है। **47 :** अपनी वह्य और रिसालत के लिये ताकि तू मेरे इरादे और मेरी महब्बत पर तसर्रुफ़ करे और मेरी हुज्जत पर क़ाइम रहे और मेरे और मेरी ख़ल्क़ के दरमियान ख़िताब पहुंचाने वाला हो। **48 :** या'नी मो'जिज़ात **49 :** या'नी उस को ब नरमी नसीहत फ़रमाना और नरमी का हुक्म इस लिये था कि उस ने बचपन में आप की ख़िदमत की थी और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नरमी से मुराद येह है कि आप उस से वा'दा करें कि अगर वोह ईमान क़बूल करेगा तो तमाम उम्र जवान रहेगा कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उस की सल्तनत बाक़ी रहेगी और खाने पीने और निकाह की लज़्ज़तें ता दमे मर्ग बाक़ी रहेंगी और बा'दे मौत दुख़ूले जन्नत मुयस्सर आएगा। जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔन से येह वा'दे किये तो उस को येह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वोह किसी काम पर बिग़ैर मश्वरए हामान के क़त्ई फ़ैसला नहीं करता था, हामान मौजूद न था जब वोह आया तो फ़िरऔन ने उस को येह ख़बर दी और कहा कि मैं चाहता हूं कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हिदायत पर ईमान क़बूल कर लूं। हामान कहने लगा : मैं तो तुझ को आक़िल व दाना समझता था! तू रब है, बन्दा बना चाहता है! तू मा'बूद है, आबिद बनने की ख़्वाहिश करता है! फ़िरऔन ने कहा : तू ने ठीक कहा और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में थे, अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म किया कि वोह हज़रते हारून के पास आएं और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को वह्य की, कि हज़रते मूसा

قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِیْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰی ﴿۴۶﴾ فَاْتِیٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا

फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं[51] सुनता और देखता[52] तो उस के पास जाओ और उस से कहो कि हम तेरे रब

رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ

के भेजे हुए हैं तो औलादे या'कूब को हमारे साथ छोड़ दे[53] और उन्हें तक्लीफ़ न दे[54] बेशक हम तेरे पास

بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰی ﴿۴۷﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِیَ اِلَیْنَآ

तेरे रब की त़रफ़ से निशानी लाए हैं[55] और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे[56] बेशक हमारी त़रफ़ वह्य हुई है

اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰی مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰی ﴿۴۸﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا یٰمُوْسٰی ﴿۴۹﴾

कि अ़ज़ाब उस पर है जो झुटलाए[57] और मुंह फेरे[58] बोला तो तुम दोनों का ख़ुदा कौन है ऐ मूसा

قَالَ رَبُّنَا الَّذِیْٓ اَعْطٰی كُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰی ﴿۵۰﴾ قَالَ فَمَا بَالُ

कहा हमारा रब वोह है जिस ने हर चीज़ को उस के लाइक़ सूरत दी[59] फिर राह दिखाई[60] बोला[61] अगली संगतों

الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰی ﴿۵۱﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ فِیْ كِتٰبٍ ۚ لَا یَضِلُّ رَبِّیْ

का क्या ह़ाल है[62] कहा उन का इ़ल्म मेरे रब के पास एक किताब में है[63] मेरा रब न बहके

وَلَا یَنْسَی ﴿۫۵۲﴾ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِیْهَا سُبُلًا

न भूले वोह जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना किया और तुम्हारे लिये इस में चलती राहें रखीं

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰی ﴿۵۳﴾

और आस्मान से पानी उतारा[64] तो हम ने उस से त़रह़ त़रह़ के सब्ज़े के जोड़े निकाले[65]

عَلَیْہِ السَّلَام से मिलें। चुनान्चे वोह एक मन्ज़िल चल कर आप से मिले और जो वह्य उन्हें हुई थी उस की ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को इत्तिलाअ़ दी। **50 :** या'नी आप की ता'लीम व नसीह़त इस उम्मीद के साथ होनी चाहिये ताकि आप के लिये अज्र और उस पर इल्ज़ामे हुज्जत और क़त़ए उ़ज़्र हो जाए और ह़क़ीक़त में होना तो वोही है जो तक्दीरे इलाही है। **51 :** अपनी मदद से **52 :** उस के क़ौल व फ़े'ल को **53 :** और उन्हें बन्दगी व असीरी से रिहा कर दे **54 :** मेह़नत व मशक़्क़त के सख़्त काम ले कर। **55 :** या'नी मो'जिज़े जो हमारे सिद्क़े नुबुव्वत की दलील हैं। फ़िरऔ़न ने कहा : वोह क्या हैं ? तो आप ने मो'जिज़ए यदे बैज़ा (सूरज की त़रह़ हाथ चमक्ने का मो'जिज़ा) दिखाया। **56 :** या'नी दोनों जहान में उस के लिये सलामती है वोह अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहेगा। **57 :** हमारी नुबुव्वत को और उन अह़काम को जो हम लाए। **58 :** हमारी हिदायत से। ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते हारून عَلَیْهِمَا السَّلَام ने फ़िरऔ़न को येह पैग़ाम पहुंचा दिया तो वोह **59 :** हाथ को इस के लाइक़ ऐसी कि किसी चीज़ को पकड़ सके, पाउं को इस के क़ाबिल कि चल सके, ज़बान को इस के मुनासिब कि बोल सके, आंख को इस के मुवाफ़िक़ कि देख सके, कान को ऐसी कि सुन सके। **60 :** और इस की मा'रिफ़त दी कि दुन्या की ज़िन्दगानी और आख़िरत की सआ़दत के लिये **अल्लाह** की अ़त़ा की हुई ने'मतों को किस त़रह़ काम में लाया जाए। **61 :** फ़िरऔ़न **62 :** या'नी जो उम्मतें गुज़र चुकी हैं मिस्ल क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद के जो बुतों को पूजते थे और बअ़्से बा'दल मौत या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा कर के उठाए जाने के मुन्किर थे, इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने **63 :** या'नी लौहे मह़फ़ूज़ में उन के तमाम अह़वाल मक्तूब हैं, रोज़े क़ियामत उन्हें इन आ'माल पर जज़ा दी

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰی ﴿۵۴﴾ ع مِنْهَا

तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ[66] बेशक इस में निशानियां हैं अक़्ल वालों को हम ने ज़मीन

خَلَقْنٰكُمْ وَفِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰی ﴿۵۵﴾ وَلَقَدْ

ही से तुम्हें बनाया[67] और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे[68] और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे[69] और बेशक हम

اَرَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰی ﴿۵۶﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

ने उसे[70] अपनी सब निशानियां[71] दिखाईं तो उस ने झुटलाया और न माना[72] बोला क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी

بِسِحْرِكَ یٰمُوْسٰی ﴿۵۷﴾ فَلَنَاْتِیَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَیْنَنَا وَبَیْنَكَ

ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा[73] तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएंगे[74] तो हम में और अपने में एक

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًی ﴿۵۸﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

वा'दा ठहरा दो जिस से न हम बदला लें (आगे पीछे हों) न तुम हमवार जगह हो मूसा ने कहा तुम्हारा वा'दा

یَوْمُ الزِّیْنَةِ وَاَنْ یُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًی ﴿۵۹﴾ فَتَوَلّٰی فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَیْدَهٗ

मेले का दिन है[75] और येह कि लोग दिन चढ़े जम्अ़ किये जाएं[76] तो फ़िरऔ़न फिरा और अपने दाउं (मक्रो फ़रेब) इकठ्ठे किये[77]

ثُمَّ اَتٰی ﴿۶۰﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰی وَیْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا فَیُسْحِتَكُمْ

फिर आया[78] उन से मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह पर झूट न बांधो[79] कि वोह तुम्हें अ़ज़ाब

بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰی ﴿۶۱﴾ فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَیْنَهُمْ وَاَسَرُّوا

से हलाक कर दे और बेशक ना मुराद रहा जिस ने झूट बांधा[80] तो अपने मुआ़मले में बाहम मुख़्तलिफ़ हो गए[81] और छुप कर

जाएगी। **64 :** हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام का कलाम तो यहां तमाम हो गया अब अल्लाह तआ़ला अहले मक्का को ख़िताब कर के इस की तत्मीम फ़रमाता है **65 :** या'नी क़िस्म क़िस्म के सब्ज़े मुख़्तलिफ़ रंगतों ख़ुश्बूओं शक्लों के, बा'ज़ आदमियों के लिये बा'ज़ जानवरों के लिये। **66 :** येह अम्रे इबाहत और तज़्कीरे ने'मत के लिये है या'नी हम ने येह सब्ज़े निकाले तुम्हारे लिये इन का खाना और अपने जानवरों को चराना मुबाह कर के। **67 :** तुम्हारे जद्दे आ'ला हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **68 :** तुम्हारी मौत व दफ़्न के वक़्त **69 :** रोज़े क़ियामत। **70 :** या'नी फ़िरऔ़न को **71 :** या'नी कुल आयाते तिस्अ़ (नव निशानियां) जो हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को अ़ता फ़रमाई थीं। **72 :** और उन आयात को सेहर बताया और क़बूले हक़ से इन्कार किया और **73 :** या'नी हमें मिस्र से निकाल कर ख़ुद इस पर क़ब्ज़ा करो और बादशाह बन जाओ। **74 :** और जादू में हमारा और तुम्हारा मुक़ाबला होगा **75 :** इस मेले से फ़िरऔ़नियों का मेला मुराद है जो उन की ईद थी और उस में वोह ज़ीनतें कर कर के जम्अ़ होते थे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह दिन आ़शूरा या'नी दसवीं मुहर्रम था और उस साल येह तारीख़ सनीचर को वाक़ेअ़ हुई थी। इस रोज़ को हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस लिये मुअ़य्यन फ़रमाया कि येह रोज़ उन की ग़ायते शौकत का दिन था, इस को मुक़र्रर करना अपने कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है, नीज़ इस में येह भी हिक्मत थी कि हक़ का ज़ुहूर और बातिल की रुस्वाई के लिये ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जब कि अत़राफ़ व जवानिब के तमाम लोग मुज्तमअ़ हों। **76 :** ताकि ख़ूब रोशनी फैल जाए और देखने वाले ब इत़्मीनान देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए। **77 :** कसीरुत्ता'दाद जादूगरों को जम्अ़ किया **78**

النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ
मश्वरत की बोले बेशक येह दोनों[82] ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी

اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ
ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जाएं तो अपना दाउं (फ़रेब) पक्का कर लो फिर

ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ
परा बांध (सफ़ बना) कर आओ और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब रहा बोले[83] ऐ मूसा या तो

تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا
तुम डालो[84] या हम पहले डालें[85] मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो[86] जभी

حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ
उन की रस्सियां और लाठियां उन के जादू के ज़ोर से उन के ख़याल में दौड़ती मा'लूम हुईं[87] तो अपने

نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا
जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया हम ने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है और डाल तो दे जो

فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ
तेरे दहने हाथ में है[88] वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर

السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ
का भला नहीं होता कहीं आवे[89] तो सब जादूगर सज्दे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा

وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ
का रब है[90] फ़िरऔन बोला क्या तुम इस पर ईमान लाए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने

: वा'दे के दिन उन सब को ले कर 79 : किसी को उस का शरीक कर के 80 : अल्लाह तआ़ला पर। 81 : या'नी जादूगर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का येह कलाम सुन कर आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए। बा'ज़ कहने लगे कि येह भी हमारी मिस्ल जादूगर हैं। बा'ज़ ने कहा कि येह बातें ही जादूगरों की नहीं, वोह अल्लाह पर झूट बांधने को मन्अ़ करते हैं।

82 : या'नी हज़रते मूसा व हज़रते हारून (عَلَيْهِمَا السَّلَام) 83 : जादूगर 84 : पहले अपना अ़सा 85 : अपने सामान। इब्तिदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की राए मुबारक पर छोड़ा और इस की बरकत से आख़िर कार अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया। 86 : येह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस लिये फ़रमाया कि जो कुछ जादू के मक्र हैं पहले वोह सब ज़ाहिर कर चुकें इस के बा'द आप मो'जिज़ा दिखाएं और हक़ बातिल को मिटाए और मो'जिज़ा सेहूर को बातिल करे तो देखने वालों को बसीरत व इ़ब्रत हासिल हो। चुनान्चे, जादूगरों ने रस्सियां लाठियां वग़ैरा जो सामान लाए थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी। 87 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि ज़मीन सांपों से भर गई और मीलों के मैदान में सांप ही सांप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस बातिल नज़र बन्दी

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ

तुम सब को जादू सिखाया[91] तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा[92] और

لَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّ اَبْقٰى ﴿٧١﴾

तुम्हें खजूर के डुन्ड (सूखे तने) पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किस का अ़ज़ाब सख़्त और देर पा है[93]

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ

बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह़ न देंगे उन रोशन दलीलों पर जो हमारे पास आईं[94] हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तो तू कर चुक

مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا

जो तुझे करना है[95] तू इस दुन्या ही की ज़िन्दगी में तो करेगा[96] बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए

لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّ

कि वोह हमारी ख़त़ाएं बख़्श दे और वोह जो तू ने हमें मजबूर किया जादू पर[97] और अल्लाह बेहतर है[98] और

اَبْقٰى ﴿٧٣﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا

सब से ज़ियादा बाक़ी रहने वाला[99] बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम[100] हो कर आए तो ज़रूर उस के लिये जहन्नम है जिस में न मरे[101]

وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ

न जिये[102] और जो उस के हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों[103] तो उन्हीं के

से मस्ह़ूर हो गए, कहीं ऐसा न हो कि बा'ज़ मो'जिज़ा देखने से पहले ही इस के गिरवीदा हो जाएं और मो'जिज़ा न देखें। **88 :** या'नी अपना अ़सा **89 :** फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने अपना अ़सा डाला वोह जादूगरों के तमाम अज़्दहों और सांपों को निगल गया और आदमी उस के ख़ौफ़ से घबरा गए। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे अपने दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया, येह देख कर जादूगरों को यक़ीन हुवा कि येह मो'जिज़ा है जिस से सेह़्र मुक़ाबला नहीं कर सकता और जादू की फ़रेब कारी इस के सामने क़ाइम नहीं रह सकती। **90 :** سُبْحٰنَ اللّٰه क्या अ़जीब ह़ाल था, जिन लोगों ने अभी कुफ़्र व जुहूद के लिये रस्सियां और अ़सा डाले थे अभी मो'जिज़ा देख कर उन्हों ने शुक्र व सुजूद के लिये सर झुका दिये और गरदनें डाल दीं, मन्क़ूल है कि इस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और इन्हों ने जन्नत में अपने मनाज़िल देख लिये। **91 :** या'नी जादू में वोह उस्तादे कामिल और तुम सब से फ़ाइक़ है। (مَعَاذَ اللّٰه) **92 :** या'नी दहने हाथ और बाएं पाउं **93 :** इस से फ़िरऔ़न मल्ऊ़न की मुराद येह थी कि उस का अ़ज़ाब सख़्त तर है, या रब्बुल आ़लमीन का। फ़िरऔ़न का येह मुतकब्बिराना कलिमा सुन कर वोह जादूगर **94 :** यदे बैज़ा और अ़साए मूसा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि उन का इस्तिद्लाल येह था कि अगर तू ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़े को भी सेह़्र कहता है तो बता वोह रस्से और लाठियां कहां गईं ? बा'ज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि बय्यिनात से मुराद जन्नत और उस में अपने मनाज़िल का देखना है। **95 :** हमें इस की कुछ परवा नहीं **96 :** आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुन्या ज़ाइल और यहां की हर चीज़ फ़ना होने वाली है, तू मेहरबान भी हो तो बक़ाए दवाम नहीं दे सकता, फिर ज़िन्दगानिये दुन्या और इस की राह़तों के ज़वाल का क्या ग़म, बिल ख़ुसूस उस को जो जानता है कि आख़िरत में आ'माले दुन्या की जज़ा मिलेगी। **97 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न ने जब जादूगरों को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले के लिये बुलाया था तो जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा था कि हम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सोता हुवा देखना चाहते हैं, चुनान्चे इस की कोशिश की गई और उन्हें ऐसा मौक़अ़ बहम पहुंचा दिया गया, उन्हों ने देखा कि ह़ज़रत ख़्वाब में हैं और अ़सा शरीफ़ पहरा दे रहा है, येह देख कर जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्यूं कि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उस का जादू काम नहीं करता, मगर फ़िरऔ़न ने उन्हें जादू करने पर मजबूर किया, उस की मग़्फ़िरत के वोह अल्लाह

الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

दरजे ऊंचे बसने के बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में

فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾ وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ

रहें और येह सिला है उस का जो पाक हुवा[104] और बेशक हम ने मूसा को वह्‌य की[105] कि रातों रात मेरे

بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا

बन्दों को ले चल[106] और उन के लिये दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे[107] तुझे डर न होगा कि फ़िरऔन आ ले और न

تَخْشٰى ﴿٧٧﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ ط

ख़तरा[108] तो उन के पीछे फ़िरऔन पड़ा अपने लश्कर ले कर[109] तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया[110]

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और राह न दिखाई[111] ऐ बनी इसराईल बेशक हम ने तुम को तुम्हारे

مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ

दुश्मन[112] से नजात दी और तुम्हें तूर की दहनी तरफ़ का वा'दा दिया[113] और तुम पर मन्न और

وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ

सल्वा उतारा[114] खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दीं और इस में ज़ियादती न करो[115] कि तुम पर

عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ

मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वोह गिरा[116] और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं

لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ

उसे जिस ने तौबा की[117] और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा[118] और तू ने अपनी क़ौम से

तआ़ला से त़ालिब और उम्मीद वार हैं। **98 :** फ़रमां बरदारों को सवाब देने में **99 :** ब लिहाज़ अ़ज़ाब करने के ना फ़रमानों पर। **100 :** या'नी काफ़िर मिस्ल फ़िरऔ़न के **101 :** कि मर कर ही इस से छूट सके। **102 :** ऐसा जीना जिस से कुछ नफ़्अ़ उठा सके। **103 :** या'नी जिन का ईमान पर ख़ातिमा हुवा हो और उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में नेक अ़मल किये हों फ़राइज़ और नवाफ़िल बजा लाए हों।

104 : कुफ़्र की नजासत और मआ़सी की गन्दगी से। **105 :** जब कि फ़िरऔ़न मो'जिज़ात देख कर राह पर न आया और पन्द पज़ीर न हुवा और बनी इसराईल पर ज़ुल्मो सितम और ज़ियादा करने लगा। **106 :** मिस्र से और जब दरिया के किनारे पहुंचें और फ़िरऔ़नी लश्कर पीछे से आए तो अन्देशा न कर **107 :** अपना अ़सा मार कर **108 :** दरिया में ग़र्क़ होने का। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हुक्मे इलाही पा कर शब के अव्वल वक़्त सत्तर हज़ार बनी इसराईल को हमराह ले कर मिस्र से रवाना हो गए। **109 :** जिन में छ लाख क़िब्ती थे। **110 :** वोह ग़र्क़ हो गए और पानी उन के सरों से ऊंचा हो गया। **111 :** इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने अपने और एह़सान का ज़िक्र किया और फ़रमाया :

قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۸۳﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰۤى اَثَرِيْ وَ عَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ

क्यूं जल्दी की ऐ मूसा[119] अ़र्ज़ की कि वोह येह हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी त़रफ़ मैं जल्दी कर के ह़ाज़िर हुवा

لِتَرْضٰى ﴿۸۴﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَ اَضَلَّهُمُ

कि तू राज़ी हो[120] फ़रमाया तो हम ने तेरे आने के बा'द तेरी क़ौम को[121] बला में डाला और उन्हें सामिरी

السَّامِرِيُّ ﴿۸۵﴾ فَرَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ۬ قَالَ يٰقَوْمِ

ने गुमराह कर दिया[122] तो मूसा अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटा[123] ग़ुस्से में भरा अफ़्सोस करता[124] कहा ऐ मेरी क़ौम

اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ؕ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ

क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वा'दा न किया था[125] क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुम ने चाहा

اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿۸۶﴾ قَالُوْا مَاۤ

कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुम ने मेरा वा'दा ख़िलाफ़ किया[126] बोले हम ने

اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَ لٰكِنَّا حُمِّلْنَاۤ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ

आप का वा'दा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हम से कुछ बोझ उठवाए गए इस क़ौम के गहने के[127]

فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿۸۷﴾ۙ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا

तो हम ने उन्हें[128] डाल दिया फिर इसी त़रह़ सामिरी ने डाला[129] तो उस ने उन के लिये एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़

لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَاۤ اِلٰهُكُمْ وَ اِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿۸۸﴾ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ

गाय की त़रह़ बोलता[130] तो बोले[131] येह है तुम्हारा मा'बूद और मूसा का मा'बूद मूसा तो भूल गए[132] तो क्या नहीं देखते

112 : या'नी फ़िरऔ़न और उस की क़ौम **113 :** कि हम मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वहां तौरैत अ़त़ा फ़रमाएंगे जिस पर अ़मल किया जाए **114 :** तीह में और फ़रमाया : **115 :** नाशुक्री और कुफ़्राने ने'मत कर के और इन ने'मतों को मआ़सी और गुनाहों में ख़र्च कर के या एक दूसरे पर ज़ुल्म कर के **116 :** जहन्नम में और हलाक हुवा। **117 :** शिर्क से **118 :** ता दमे आख़िर।

119 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब अपनी क़ौम में से सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब कर के तौरैत लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए फिर कलामे परवर्दगार के शौक़ में उन से आगे बढ़ गए उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ, इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : وَمَاۤ اَعْجَلَكَ (और तू ने अपनी क़ौम से क्यूं जल्दी की ऐ मूसा !) तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **120 :** या'नी तेरी रिज़ा और ज़ियादा हो। **मस्अला :** इस आयत से इज्तिहाद का जवाज़ साबित हुवा। (مدارک) **121 :** जिन्हें आप ने ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के साथ छोड़ा है। **122 :** गौसाला परस्ती की दा'वत दे कर। **मस्अला :** इस आयत में इज़्लाल या'नी गुमराह करने की निस्बत सामिरी की त़रफ़ फ़रमाई गई क्यूं कि वोह इस का सबब व बाइस हुवा, इस से साबित हुवा कि किसी चीज़ को सबब की त़रफ़ निस्बत करना जाइज़ है। इसी त़रह़ कह सकते हैं कि मां बाप ने परवरिश की, दीनी पेश्वाओं ने हिदायत की, औलिया ने ह़ाजत रवाई फ़रमाई, बुज़ुर्गों ने बला दफ़्अ़ की। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि उमूर ज़ाहिर में मन्शा व सबब की त़रफ़ मन्सूब कर दिये जाते हैं अगर्चे ह़क़ीक़त में इन का मूजिद **अल्लाह** तआ़ला है और क़ुरआने करीम में ऐसी निस्बतें ब कसरत वारिद हैं। (خازن) **123 :** चालीस दिन पूरे कर के तौरैत ले कर **124 :** उन के ह़ाल पर **125 :** कि वोह तुम्हें तौरैत अ़त़ा फ़रमाएगा जिस में हिदायत है, नूर है, हज़ार सूरतें हैं, हर सूरत में हज़ार आयतें हैं। **126 :** और ऐसा नाक़िस

اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّ لَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَ لَقَدْ

कि वोह[133] उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उन के किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता[134] और बेशक

قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ

उन से हारून ने इस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूंही है कि तुम इस के सबब फ़ित्ने में पड़े[135] और बेशक तुम्हारा रब रहमान है

فَاتَّبِعُوْنِيْ وَ اَطِيْعُوْۤا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى

तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो बोले हम तो इस पर आसन मारे जमे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहेंगे[136] जब तक

يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْۤا ﴿٩٢﴾ لا

हमारे पास मूसा लौट के आएं[137] मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुम ने इन्हें गुमराह होते देखा था

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَ

कि मेरे पीछे आते[138] तो क्या तुम ने मेरा हुक्म न माना कहा ऐ मेरे मां जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और

لَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَ لَمْ

न मेरे सर के बाल मुझे येह डर हुवा कि तुम कहोगे तुम ने बनी इसराईल में तफ़्रिक़ा डाल दिया और तुम ने

تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ

मेरी बात का इन्तिज़ार न किया[139] मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामिरी[140] बोला मैं ने वोह देखा जो

يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ

लोगों ने न देखा[141] तो एक मुठ्ठी भर ली फ़िरिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया[142] और

काम किया कि गौसाला को पूजने लगे, तुम्हारा वा'दा तो मुझ से येह था कि मेरे हुक्म की इताअ़त करोगे और मेरे दीन पर क़ाइम रहोगे **127 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़ेवरों के जो बनी इसराईल ने उन लोगों से आ़रियत के तौर पर मांग लिये थे। **128 :** सामिरी के हुक्म से आग में **129 :** उन ज़ेवरों को जो उस के पास थे और उस ख़ाक को जो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के क़दम के नीचे से उस ने ह़ासिल की थी। **130 :** येह बछड़ा सामिरी ने बनाया और उस में कुछ सूराख़ इस त़रह़ रखे कि जब उन में हवा दाख़िल हो तो उस से बछड़े की आवाज़ की त़रह़ आवाज़ पैदा हो। एक क़ौल येह भी है कि वोह अस्पे जिब्रील की ख़ाके ज़ेरे क़दम डालने से ज़िन्दा हो कर बछड़े की त़रह़ बोलता था। **131 :** सामिरी और उस के मुत्तबिईन **132 :** या'नी मूसा मा'बूद को भूल गए और इस को यहां छोड़ कर इस की जुस्तजू में तूर पर चले गए। (مَعَاذَ الله) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि نَسِیَ का फ़ाइल सामिरी है और मा'ना येह हैं कि सामिरी ने जो बछड़े को मा'बूद बनाया वोह अपने रब को भूल गया या वोह हुदूसे अज्साम से इस्तिद्लाल करना भूल गया। **133 :** बछड़ा **134 :** ख़िताब से भी आ़जिज़ और नफ़्अ़ व ज़रर से भी, वोह किस त़रह़ मा'बूद हो सकता है। **135 :** तो इसे न पूजो **136 :** गौसाला परस्ती पर क़ाइम रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे **137 :** इस पर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام उन से अ़लाह़दा हो गए और उन के साथ बारह हज़ार वोह लोग जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश न की थी, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने उन के शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के गिर्द नाचते थे, तब आप ने अपने सत्तर हमराहियों से फ़रमाया येह फ़ित्ने की आवाज़ है, जब क़रीब पहुंचे और ह़ज़रते हारून को देखा तो ग़ैरते दीनी से जो आप की सिरिश्त (फ़ित़रत) थी जोश में आ कर उन के सर के बाल दाहने हाथ में और दाढ़ी बाएं में पकड़ी और **138 :**

سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا

मेरे जी को येही भला लगा[143] कहा तू चलता बन[144] कि दुन्या की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा येह है कि[145] तू कहे

مِسَاسَ ۪ وَ اِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ

छू न जा[146] और बेशक तेरे लिये एक वा'दे का वक़्त है[147] जो तुझ से ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मा'बूद को देख जिस के सामने तू दिन भर आसन

عَلَيْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ

मारे (पूजा के लिये बैठा) रहा[148] क़सम है हम ज़रूर इसे जलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा कर के दरिया में बहाएंगे[149] तुम्हारा मा'बूद तो वोही

اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾ كَذٰلِكَ نَقُصُّ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ को उस का इ़ल्म मुहीत़ है हम ऐसा ही

عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَ قَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَنْ

तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं और हम ने तुम को अपने पास से एक ज़िक्र अ़त़ा फ़रमाया[150] जो

اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ؕ وَ سَآءَ

उस से मुंह फेरे[151] तो बेशक वोह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा[152] वोह हमेशा उस में रहेंगे[153] और वोह क़ियामत

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَ نَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ

के दिन उन के ह़क़ में क्या ही बुरा बोझ होगा जिस दिन सूर फूंका जाएगा[154] और हम उस दिन मुजरिमों को[155] उठाएंगे

يَوْمَىٕذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ

नीली आंखें[156] आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुन्या में न रहे मगर दस रात[157] हम

और मुझे ख़बर दे देते या'नी जब इन्हों ने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यूं नहीं आ मिले कि तुम्हारा इन से जुदा होना भी इन के ह़क़ में एक ज़ज्र होता। **139 :** येह सुन कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सामिरी की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए चुनान्चे **140 :** तू ने ऐसा क्यूं किया इस की वज्ह बता **141 :** या'नी मैं ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को देखा और उन को पहचान लिया, वोह अस्पे ह़यात (जन्नती घोड़े बुराक़) पर सुवार थे, मेरे दिल में येह बात आई कि मैं इन के घोड़े के निशाने क़दम की ख़ाक ले लूं **142 :** उस बछड़े में जिस को बनाया था।
143 : और येह फ़े'ल मैं ने अपने ही हवाए नफ़्स से किया, कोई दूसरा इस का बाइ़स व मुह़र्रिक न था। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **144 :** दूर हो जा **145 :** जब तुझ से कोई मिलना चाहे तो तेरे ह़ाल से वाक़िफ़ न हो तो उस से **146 :** या'नी सब से अ़लाह़दा रहना न तुझ से कोई छूए न तू किसी से छूए। लोगों से मिलना उस के लिये कुल्ली त़ौर पर मम्नूअ़ क़रार दिया गया और मुलाक़ात मुकालमत ख़रीदो फ़रोख़्त हर एक के साथ ह़राम कर दी गई और अगर इत्तिफ़ाक़न कोई उस से छू जाता तो वोह और छूने वाला दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला होते, वोह जंगल में येही शोर मचाता फिरता था कि कोई छू न जाना और वह़शियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन निहायत तल्ख़ी व वह़शत में गुज़ारता था। **147 :** या'नी अ़ज़ाब के वा'दे का आख़िरत में बा'द इस अ़ज़ाबे दुन्या के, तेरे शिर्को फ़साद अंगेज़ी पर **148 :** और इस की इ़बादत पर क़ाइम रहा **149 :** चुनान्चे, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ऐसा किया और जब आप सामिरी के इस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इसराईल से मुख़ात़बा फ़रमा कर दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया और इर्शाद किया **150 :** या'नी कुरआने पाक कि वोह ज़िक्रे अ़ज़ीम है और जो इस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो उस के लिये इस किताबे करीम में नजात और बरकतें हैं और इस किताबे मुक़द्दस में उममे माज़िया (गुज़श्ता उम्मतों) के

أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

ख़ूब जानते हैं जो वोह[158] कहेंगे जब कि उन में सब से बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे[159]

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا

और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं[160] तुम फ़रमाओ उन्हें मेरा रब रेज़ा रेज़ा कर के उड़ा देगा तो ज़मीन को पट पर

صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ

हमवार कर छोड़ेगा कि तू उस में नीचा ऊंचा कुछ न देखे उस दिन पुकारने वाले

الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ۚ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا

के पीछे दौड़ेंगे[161] उस में कजी न होगी[162] और सब आवाज़ें रह़मान के हुज़ूर[163] पस्त हो कर रह जाएंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत

هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ

आहिस्ता आवाज़[164] उस दिन किसी की शफ़ाअ़त काम न देगी मगर उस की जिसे रह़मान ने[165] इज़्न दे दिया है और उस की

لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ

बात पसन्द फ़रमाई वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे[166] और उन का इ़ल्म उसे नहीं

عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

घेर सकता[167] और सब मुंह झुक जाएंगे उस ज़िन्दा क़ाइम रखने वाले के हुज़ूर[168] और बेशक ना मुराद रहा जिस ने ज़ुल्म का बोझ लिया[169]

ऐसे ह़ालात का ज़िक्र व बयान है जो फ़िक्र करने और इ़ब्रत ह़ासिल करने के लाइक़ हैं। **151 :** या'नी क़ुरआन से और उस पर ईमान न लाए और उस की हिदायतों से फ़ाएदा न उठाए **152 :** गुनाहों का बारे गिरां **153 :** या'नी इस गुनाह के अ़ज़ाब में **154 :** लोगों को मह़शर में ह़ाज़िर करने के लिये, मुराद इस से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर का फूंका जाना) है। **155 :** या'नी काफ़िरों को इस ह़ाल में **156 :** और काले मुंह **157 :** आख़िरत के अहवाल और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िल देख कर उन्हें ज़िन्दगानिये दुन्या की मुद्दत बहुत क़लील मा'लूम होगी। **158 :** आपस में एक दूसरे से **159 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोह उस दिन के शदाइद देख कर अपने दुन्या में रहने की मिक़्दार भूल जाएंगे। **160 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि क़बीलए सक़ीफ़ के एक आदमी ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क़ियामत के दिन पहाड़ों का क्या ह़ाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **161 :** जो उन्हें रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ (मैदाने मह़शर) की त़रफ़ बुलाएगा और निदा करेगा कि चलो रह़मान के हुज़ूर पेश होने को और येह पुकारने वाले ह़ज़रते इसराफ़ील होंगे। **162 :** और इस दा'वत से कोई इन्ह़िराफ़ न कर सकेगा। **163 :** हैबत व जलाल से **164 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया ऐसी कि उस में सिर्फ़ लबों की जुम्बिश होगी। **165 :** शफ़ाअ़त करने का **166 :** या'नी तमाम माज़ियात व मुस्तक़्बिलात और जुम्ला उमूरे दुन्या व आख़िरत या'नी **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म बन्दों की ज़ातो सिफ़ात और जुम्ला ह़ालात को मुह़ीत़ है। **167 :** या'नी तमाम काएनात का इ़ल्म ज़ाते इलाही का इह़ात़ा नहीं कर सकता, उस की ज़ात का इदराक उ़लूमे काएनात की रसाई से बरतर है, वोह अपने अस्मा व सिफ़ात और आसारे क़ुदरत व शुयूने ह़िक्मत से पहचाना जाता है :

کجا دریابد او را عقل چالاک — که او بالا تر است از حد ادراک
نظر کن اندر اسماء و صفاتش — که واقف نیست کس از کنه ذاتش

(या'नी तेज़ अ़क़्ल भी उस की ज़ात का इदराक कैसे कर सकती है ? जब कि वोह तो फ़हमो इदराक से बरतर है, लिहाज़ा उस की सिफ़ात व अस्मा में ग़ौरो फ़िक्र करो कि उस की ज़ात व ह़क़ीक़त से कोई आश्ना नहीं) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के मा'ना येह बयान किये हैं कि उ़लूमे ख़ल्क़ मा'लूमाते इलाहिय्यह का इह़ात़ा नहीं कर सकते, ब ज़ाहिर येह इ़बारतें दो हैं मगर मआल पर नज़र रखने वाले ब आसानी समझ

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿۱۱۲﴾

और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसल्मान तो उसे न ज़ियादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़्सान का[170]

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ

और यूंही हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा और इस में त़रह त़रह से अ़ज़ाब के वा'दे दिये[171] कि कहीं

يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿۱۱۳﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا

उन्हें डर हो या उन के दिल में कुछ सोच पैदा करे[172] तो सब से बुलन्द है अल्लाह सच्चा बादशाह[173] और

تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ

क़ुरआन में जल्दी न करो जब तक उस की वह्य तुम्हें पूरी न हो ले[174] और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे

عِلْمًا ﴿۱۱۴﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿۱۱۵﴾ ع

इ़ल्म ज़ियादा दे और बेशक हम ने आदम को इस से पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था[175] तो वोह भूल गया और हम ने उस का क़स्द न पाया

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿۱۱۶﴾

और जब हम ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस उस ने न माना

فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ

तो हम ने फ़रमाया ऐ आदम बेशक येह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है[176] तो ऐसा न हो कि वोह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे

فَتَشْقٰى ﴿۱۱۷﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿۱۱۸﴾ ۙ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا

फिर तू मशक़्क़त में पड़े[177] बेशक तेरे लिये जन्नत में येह है कि न तू भूका हो न नंगा हो और येह कि तुझे न उस में प्यास लगे

وَلَا تَضْحٰى ﴿۱۱۹﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى

न धूप[178] तो शैत़ान ने उसे वस्वसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूं

लेते हैं कि फ़र्क़ सिर्फ़ ता'बीर का है। **168 :** और हर एक शाने इ़ज्ज़ो नियाज़ के साथ ह़ाज़िर होगा, किसी में सरकशी न रहेगी, अल्लाह तआला के क़हरो हुकूमत का ज़ुहूरे ताम होगा। **169 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया : जिस ने शिर्क किया टोटे (नुक़्सान) में रहा और बेशक शिर्क शदीद तरीन ज़ुल्म है और जो इस ज़ुल्म का ज़ेरे बार हो कर (बोझ उठा कर) मौक़िफ़े क़ियामत में आए उस से बढ़ कर ना मुराद कौन ?

170 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि त़ाअ़त और नेक आ'माल सब की क़ुबूलिय्यत ईमान के साथ मशरूत़ है कि ईमान हो तो सब नेकियां कारआमद हैं और ईमान न हो तो सब अ़मल बेकार। **171 :** फ़राइज़ के छोड़ने और मम्नूआ़त का इरतिकाब करने पर। **172 :** जिस से उन्हें नेकियों की रग़बत और बदियों से नफ़रत हो और वोह पन्दो नसीह़त ह़ासिल करें। **173 :** जो अस्ल मालिक है और तमाम बादशाह उस के मोह़ताज। **174 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते जिब्रील क़ुरआने करीम ले कर नाज़िल होते थे तो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के साथ साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, फ़रमाया गया कि

شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ

हमेशा जीने का पेड़[179] और वोह बादशाही कि पुरानी न पड़े[180] तो उन दोनों ने उस में से खा लिया अब उन पर उन की शर्म की चीजें ज़ाहिर हुईं[181] और

طَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾

जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे[182] और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई तो जो मत़लब चाहा था उस की राह न पाई[183]

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿۱۲۲﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًۢا

फिर उसे उस के रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाई और अपने क़ुर्बे ख़ास की राह दिखाई फ़रमाया कि तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ

तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी त़रफ़ से हिदायत आए[184] तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा

فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً

वोह न बहके[185] न बद बख़्त हो[186] और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा[187] तो बेशक उस के लिये तंग

ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿۱۲۴﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى

ज़िन्दगानी है[188] और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठाएंगे कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तू ने क्यूं अन्धा उठाया

وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿۱۲۵﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ

मैं तो अंख्यारा (देखने वाला) था[189] फ़रमाएगा यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं[190] तू ने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही

आप मशक़्क़त न उठाएं और सूरए क़ियामह में **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद ज़िम्मा ले कर आप की और ज़ियादा तसल्ली फ़रमा दी। **175 :** कि शजरे मम्नूआ़ के पास न जाएं। **176 :** इस से मा'लूम हुवा कि साहि़बे फ़ज़्लो शरफ़ की फ़ज़ीलत को तस्लीम न करना और उस की ता'ज़ीमो एह़तिराम बजा लाने से ए'राज़ करना दलीले ह़सदो अ़दावत है। इस आयत में शैत़ान का ह़ज़रते आदम को सज्दा न करना आप के साथ उस की दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया। **177 :** और अपनी ग़िज़ा और ख़ूराक के लिये ज़मीन जोतने, खेती करने, दाना निकालने, पीसने, पकाने की मेह़नत में मुब्तला हो और चूंकि औ़रत का नफ़क़ा मर्द के ज़िम्मे है इस लिये इस तमाम मेह़नत की निस्बत सिर्फ़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ फ़रमाई गई। **178 :** हर त़रह़ का ऐश व राह़त जन्नत में मौजूद है कस्ब व मेह़नत से बिल्कुल अम्न है। **179 :** जिस को खा कर खाने वाले को दाइमी ज़िन्दगी ह़ासिल हो जाती है **180 :** और उस में ज़वाल न आए। **181 :** या'नी बिहिश्ती लिबास उन के जिस्म से उतर गए। **182 :** सत्र छुपाने और जिस्म ढकने के लिये। **183 :** और उस दरख़्त के खाने से दाइमी ह़यात न मिली, फिर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तौबा व इस्तिग़्फ़ार में मश्ग़ूल हुए और बारगाहे इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ की। **184 :** या'नी किताब और रसूल। **185 :** या'नी दुन्या में। **186 :** आख़िरत में क्यूं कि आख़िरत की बद बख़्ती दुन्या में त़रीक़े ह़क़ से बहकने का नतीजा है तो जो कोई किताबे इलाही और रसूले बरह़क़ का इत्तिबाअ़ करे और उन के हुक्म के मुत़ाबिक़ चले वोह दुन्या में बहकने से और आख़िरत में उस के अ़ज़ाब व वबाल से नजात पाएगा। **187 :** और मेरी हिदायत से रू गर्दानी की **188 :** दुन्या में या क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या इन सब में। दुन्या की तंग ज़िन्दगानी येह है कि हिदायत का इत्तिबाअ़ न करने से अ़मले बद और ह़राम में मुब्तला हो या क़नाअ़त से मह़रूम हो कर गिरिफ़्तारे ह़िर्स हो जाए और कस्रते मालो अस्बाब से भी उस को फ़राग़े ख़ात़िर (बे फ़िक्री) और सुकूने क़ल्ब मुयस्सर न हो, दिल हर चीज़ की त़लब में आवारा हो और ह़िर्स के ग़मों से कि येह नहीं वोह नहीं, ह़ाल तारीक और वक़्त ख़राब रहे और मोमिने मुतवक्किल की त़रह़ उस को सुकून व फ़राग़ ह़ासिल ही न हो जिस को ह़याते त़य्यिबा कहते हैं قَالَ تَعَالٰی : فَلَنُحْیِیَنَّهٗ حَیٰوةً طَیِّبَةً (तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे)। और क़ब्र की तंग ज़िन्दगानी येह है कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि काफ़िर पर निनानवे अज़्दहे उस की क़ब्र में मुसल्लत़ किये जाते हैं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अस्वद बिन

اَلْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿۱۲۶﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ

आज तेरी कोई ख़बर न लेगा[191] और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो ह़द से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿۱۲۷﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त तर और सब से देर पा है तो क्या उन्हें इस से राह न मिली कि हम ने उन से पहले कितनी

مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿۱۲۸﴾ ع

संगतें (क़ौमें) हलाक कर दीं[192] कि येह उन के बसने की जगह चलते फिरते हैं[193] बेशक इस में निशानियां हैं अ़क़्ल वालों को[194]

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿۱۲۹﴾ ؕ فَاصْبِرْ

और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती[195] तो ज़रूर अ़ज़ाब उन्हें[196] लिपट जाता और अगर न होता एक वा'दा ठहराया हुवा[197] तो उन की

عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ

बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते (ता'रीफ़ करते) हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले[198] और उस के

غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾

डूबने से पहले[199] और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो[200] और दिन के किनारों पर[201] इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो[202]

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ

और ऐ सुनने वाले अपनी आंखें न फैला उस की त़रफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरत्ने के लिये दी है जीती दुन्या की

الدُّنْيَا ۬ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ

ताज़गी[203] कि हम उन्हें उस के सबब फ़ित्ने में डालें[204] और तेरे रब का रिज़्क़[205] सब से अच्छा और सब से देर पा है और अपने घर वालों

अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई। और क़ब्र की ज़िन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिस से एक त़रफ़ की पस्लियां दूसरी त़रफ़ आ जाती हैं। और आख़िरत में तंग ज़िन्दगानी जहन्नम के अ़ज़ाब हैं जहां ज़क़्क़ूम (थूहड़) और खौलता पानी और जहन्नमियों के ख़ून और उन के पीप खाने पीने को दी जाएगी। और दीन में तंग ज़िन्दगानी येह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी कस्बे ह़राम में मुब्तला हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत अगर ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो उस में कुछ भलाई नहीं और येह तंग ज़िन्दगानी है। (تفسیر کبیر و خازن و مدارک وغیرہ) **189 :** दुन्या में। **190 :** तू उन पर ईमान न लाया और **191 :** जहन्नम की आग में जला करेगा। **192 :** जो रसूलों को नहीं मानती थीं। **193 :** या'नी क़ुरैश अपने सफ़रों में उन के दियार (मकानात व बस्तियों) पर गुज़रते हैं और उन की हलाकत के निशान देखते हैं। **194 :** जो इब्रत ह़ासिल करें और समझें कि अम्बिया की तक्ज़ीब और उन की मुख़ालफ़्त का अन्जाम बुरा है। **195 :** या'नी येह कि उम्मते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के अ़ज़ाब में ताख़ीर की जाएगी। **196 :** दुन्या ही में **197 :** या'नी रोज़े क़ियामत। **198 :** इस से नमाज़े फ़ज्र मुराद है। **199 :** इस से ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के निस्फ़े आख़िर में आफ़्ताब के ज़वाल व ग़ुरूब के दरमियान वाक़ेअ़ हैं। **200 :** या'नी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो। **201 :** फ़ज्र व मग़रिब की नमाज़ें, इन की ताकीदन तकरार फ़रमाई गई। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन क़ब्ले ग़ुरूब से नमाज़े अ़स्र और अत़राफ़े नहार से ज़ोहर मुराद लेते हैं, उन की तौजीह येह है कि नमाज़े ज़ोहर ज़वाल के बा'द है और इस वक़्त दिन के निस्फ़े अव्वल और निस्फ़े आख़िर के अत़राफ़ मिलते हैं। निस्फ़े अव्वल की इन्तिहा है और निस्फ़े आख़िर की इब्तिदा। (مدارک و خازن) **202 :** **अल्लाह** के फ़ज़्लो अ़त़ा और उस के इन्आमो इक्राम

بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ

को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते[206] हम तुझे रोज़ी देंगे[207] और अन्जाम का भला

لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا

परहेज़ गारी के लिये और काफ़िर बोले येह[208] अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते[209] और क्या उन्हें इस का बयान न आया जो

فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿۱۳۳﴾ وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

अगले सहीफ़ों में है[210] और अगर हम उन्हें किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो[211] ज़रूर कहते

رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ

ऐ हमारे रब तू ने हमारी त़रफ़ कोई रसूल क्यूं न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते क़ब्ल इस के कि ज़लील

وَنَخْزٰى ﴿۱۳۴﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ

व रुस्वा होते तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं[212] तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे[213] कि कौन हैं

الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿۱۳۵﴾ ع

सीधी राह वाले और किस ने हिदायत पाई

से कि तुम्हें उम्मत के हक़ में शफ़ीअ़ बना कर तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी करे जैसा कि उस ने फ़रमाया है : وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى (और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे) । **203 :** या'नी अस्नाफ़ व अक़्साम कुफ़्फ़ार यहूदो नसारा वग़ैरा को जो दुन्यवी साज़ो सामान दिया है मोमिन को चाहिये कि उस को इस्तिह़्सान व ए'जाब (तअ़ज्जुब व अच्छाई) की नज़र से न देखे । ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ना फ़रमानों के तुम्तुराक़ (शानो शौकत, ठाट बाट) न देखो लेकिन येह देखो कि गुनाह और मा'सियत की ज़िल्लत किस त़रह़ उन की गरदनों से नुमूदार है । **204 :** इस त़रह़ कि जितनी उन पर ने'मत ज़ियादा हो उतनी ही उन की सरकशी और उन का तुग़यान बढ़े और वोह सज़ाए आख़िरत के सज़ावार हों । **205 :** या'नी जन्नत और उस की ने'मतें **206 :** और इस का मुकल्लफ़ नहीं करते कि हमारी ख़ल्क़ को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने अह्ल की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो बल्कि **207 :** और उन्हें भी, तू रोज़ी के ग़म में न पड़, अपने दिल को अम्रे आख़िरत के लिये फ़ारिग़ रख कि जो **अल्लाह** के काम में होता है **अल्लाह** उस की कारसाज़ी करता है । **208 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **209 :** जो इन की सिह़्ह़ते नुबुव्वत पर दलालत करे, बा वुजूदे कि आयाते कसीरा आ चुकी थीं और मो'जिज़ात का मुतवातिर ज़ुहूर हो रहा था फिर कुफ़्फ़ार उन सब से अन्धे बने और उन्हों ने हुज़ूर की निस्बत येह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते ? इस के जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **210 :** या'नी क़ुरआन और सय्यिदे आ़लम की बिशारत और आप की नुबुव्वत व बि'सत का ज़िक्र, येह कैसी आ'ज़म आयात हैं ! इन के होते हुए और किसी निशानी की त़लब करने का क्या मौक़अ़ है ! **211 :** रोज़े क़ियामत **212 :** हम भी और तुम भी । **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने कहा था कि हम ज़माने के ह़वादिस और इन्क़िलाब का इन्तिज़ार करते हैं कि कब मुसल्मानों पर आएं और इन का क़िस्सा तमाम हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि तुम मुसल्मानों की तबाही व बरबादी का इन्तिज़ार कर रहे हो और मुसल्मान तुम्हारे उ़क़ूबत (अन्जाम) व अ़ज़ाब का इन्तिज़ार कर रहे हैं । **213 :** जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़ियामत क़ाइम होगी ।

ایاتها ١١٢ ٢١ سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ ٧٣ رکوعاتها ٧

सूरए अम्बियाअ मक्किय्या है इस में एक सो बारह आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۟ۚ ١ مَا يَاْتِيْهِمْ

लोगों का हिसाब नज़्दीक और वोह ग़फ़्लत में मुंह फेरे हैं[2] जब उन के

مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۟ۙ ٢ لَاهِيَةً

रब के पास से उन्हें कोई नई नसीहत आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए[3] उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖۗ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ هَلْ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ

खेल में पड़े हैं[4] और ज़ालिमों ने आपस में ख़ुफ़्या मश्वरत की[5] कि येह कौन हैं एक तुम ही

مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۟ ٣ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ

जैसे आदमी तो हैं[6] क्या जादू के पास जाते हो देखभाल कर नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आस्मानों

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؗ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۟ ٤ بَلْ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ

और ज़मीन में हर बात को और वोही है सुनता जानता[7] बल्कि बोले परेशान

1 : सूरते अम्बियाअ मक्किय्या है इस में सात रुकूअ़ और एक सो बारह 112 आयतें और एक हज़ार एक सो छियासी 1186 कलिमे और चार हज़ार आठ सो नव्वे 4890 हर्फ़ हैं। 2 : या'नी हिसाबे आ'माल का वक़्त रोज़े कि़यामत क़रीब आ गया और लोग अभी तक ग़फ़्लत में हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुन्किरीने बअ़्स के हक़ में नाज़िल हुई जो मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और रोज़े कि़यामत को गुज़रे हुए ज़माने के ए'तिबार से क़रीब फ़रमाया गया क्यूं कि जितने दिन गुज़रते जाते हैं आने वाला दिन क़रीब होता जाता है। 3 : न उस से पन्द पज़ीर हों, न इब्रत हासिल करें, न आने वाले वक़्त के लिये कुछ तय्यारी करें। 4 : अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं। 5 : और उस के इख़्फ़ा (छुपाने) में बहुत मुबालग़ा किया मगर अल्लाह तआ़ला ने उन का राज़ फ़ाश कर दिया और बयान फ़रमा दिया कि वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत येह कहते हैं 6 : येह कुफ़्र का एक उसूल था कि जब येह बात लोगों के ज़ेह्न नशीन कर दी जाएगी कि वोह तुम जैसे बशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान न लाएगा। हुज़ूर के ज़माने के कुफ़्फ़ार ने येह बात कही और इस को छुपाया लेकिन आज कल के बा'ज़ बेबाक येह कलिमा ए'लान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते, कुफ़्फ़ार येह मक़ूला कहते वक़्त जानते थे कि उन की बात किसी के दिल में जमेगी नहीं क्यूं कि लोग रात दिन मो'जिज़ात देखते हैं वोह किस तृरह बावर कर सकेंगे कि हुज़ूर हमारी तृरह बशर हैं इस लिये उन्हों ने मो'जिज़ात को जादू बता दिया और कहा 7 : उस से कोई चीज़ छुप नहीं सकती ख़्वाह कितने ही पर्दे और राज़ में रखी गई हो उन का राज़ भी इस में ज़ाहिर फ़रमा दिया। इस के बा'द कुरआने करीम से उन्हें सख़्त परेशानी व हैरानी लाहिक़ थी कि उस का किस तृरह इन्कार करें, वोह ऐसा बय्यिन मो'जिज़ा है जिस ने तमाम मुल्क के मायानाज़ माहिरों को आ़जिज़ व मुतहय्यिर कर दिया है और वोह इस की दो चार आयतों की मिस्ल कलाम बना कर नहीं ला सके, इस परेशानी में उन्हों ने कुरआने करीम की निस्बत मुख़्तलिफ़ कि़स्म की बातें कहीं जिन का बयान अगली आयत में है।

اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ

ख़्वाबें हैं[8] बल्कि इन की गढ़त [घड़ी हुई चीज़] है[9] बल्कि येह शाइ़र हैं[10] तो हमारे पास कोई निशानी लाएं जैसे

الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

अगले भेजे गए थे[11] इन से पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हम ने हलाक किया तो क्या येह ईमान लाएंगे[12]

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ

और हम ने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम वह़्य करते[13] तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो

اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ

अगर तुम्हें इ़ल्म न हो[14] और हम ने उन्हें[15] ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खाएं[16] और

مَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَ

न वोह दुन्या में हमेशा रहें फिर हम ने अपना वा'दा उन्हें सच्चा कर दिखाया[17] तो उन्हें नजात दी और जिन को चाही[18] और

اَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا

ह़द से बढ़ने वालों को[19] हलाक कर दिया बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़[20] एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है[21] तो क्या

تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ؑ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا

तुम्हें अ़क़्ल नहीं[22] और कितनी ही बस्तियां हम ने तबाह कर दीं कि वोह सितमगार थीं[23] और उन के बा'द

8 : उन को नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم वह़्ये इलाही समझ गए हैं। कुफ़्फ़ार ने येह कह कर सोचा कि येह बात चस्पां नहीं हो सकेगी तो अब उस को छोड़ कर कहने लगे **9 :** येह कह कर ख़याल हुवा कि लोग कहेंगे कि अगर येह कलाम ह़ज़रत का बनाया हुवा है और तुम उन्हें अपने मिस्ल बशर भी कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यूं नहीं बना सकते। येह ख़याल कर के इस बात को भी छोड़ा और कहने लगे **10 :** और येह कलाम शे'र है। इसी त़रह़ की बातें बनाते रहे, किसी एक बात पर क़ाइम न रह सके और अहले बात़िल कज़्ज़ाबों का येही ह़ाल होता है। अब इन्हों ने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे **11 :** इस के रद व जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है **12 :** मा'ना येह हैं कि इन से पहले लोगों के पास जो निशानियां आईं तो वोह उन पर ईमान न लाए और उन की तक्ज़ीब करने लगे और इस सबब से हलाक कर दिये गए तो क्या येह लोग निशानी देख कर ईमान ले आएंगे बा वुजूदे कि इन की सरकशी उन से बढ़ी हुई है। **13 :** येह उन के कलामे साबिक़ का रद है कि अम्बिया का सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमाना नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं, हमेशा ऐसा ही होता रहा है। **14 :** क्यूं कि ना वाक़िफ़ को इस से चारा ही नहीं कि वाक़िफ़ से दरयाफ़्त करे और मरज़े जहल का इ़लाज येही है कि आ़लिम से सुवाल करे और उस के हुक्म पर आ़मिल हो। **मस्अला :** इस आयत से तक़्लीद का वुजूब साबित होता है। यहां उन्हें इ़ल्म वालों से पूछने का हुक्म दिया गया कि उन से दरयाफ़्त करो कि **अल्लाह** के रसूल सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमा हुए थे या नहीं ? इस से तुम्हारे तरद्दुद का ख़ातिमा हो जाएगा। **15 :** या'नी अम्बिया को **16 :** तो उन पर खाने पीने का ए'तिराज़ करना और येह कहना कि "مَا لِهٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ" मह़ज़ बेजा है, तमाम अम्बिया का येही ह़ाल था, वोह सब खाते भी थे पीते भी थे। **17 :** उन के दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें नजात देने का। **18 :** या'नी ईमानदारों को जिन्हों ने अम्बिया की तस्दीक़ की। **19 :** जो अम्बिया की तक्ज़ीब करते थे। **20 :** ऐ गुरौहे क़ुरैश **21 :** अगर तुम इस पर अ़मल करो या येह मा'ना हैं कि वोह किताब तुम्हारी ज़बान में है या येह कि इस में तुम्हारे लिये नसीह़त है या येह कि इस में तुम्हारे दीनी और दुन्यवी उमूर और ह़वाइज का बयान है **22 :** कि ईमान ला कर इस इ़ज़्ज़तो करामत और सआ़दत को ह़ासिल करो। **23 :** या'नी काफ़िर थीं।

قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿١١﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسُّوۡا بَاۡسَنَاۤ اِذَا هُمۡ مِّنۡهَا يَرۡكُضُوۡنَ ﴿١٢﴾ لَا

और क़ौम पैदा की तो जब उन्हों ने[24] हमारा अ़ज़ाब पाया जभी वोह उस से भागने लगे[25] न

تَرۡكُضُوۡا وَارۡجِعُوۡۤا اِلٰى مَاۤ اُتۡرِفۡتُمۡ فِيۡهِ وَمَسٰكِنِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿١٣﴾

भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की त़रफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की त़रफ़ शायद तुम से पूछना हो[26]

قَالُوۡا يٰوَيۡلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتۡ تِّلۡكَ دَعۡوٰٮهُمۡ حَتّٰى

बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे[27] तो वोह येही पुकारते रहे यहां तक

جَعَلۡنٰهُمۡ حَصِيۡدًا خٰمِدِيۡنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقۡنَا السَّمَآءَ وَالۡاَرۡضَ وَمَا

कि हम ने उन्हें कर दिया काटे हुए[28] बुझे हुए और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ

بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ﴿١٦﴾ لَوۡ اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نَّتَّخِذَ لَهۡوًا لَّاتَّخَذۡنٰهُ مِنۡ لَّدُنَّاۤ ۖ

इन के दरमियान है अ़बस न बनाए[29] अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते[30] तो अपने पास से इख़्तियार करते

اِنۡ كُنَّا فٰعِلِيۡنَ ﴿١٧﴾ بَلۡ نَقۡذِفُ بِالۡحَقِّ عَلَى الۡبَاطِلِ فَيَدۡمَغُهٗ فَاِذَا

अगर हमें करना होता[31] बल्कि हम ह़क़ को बात़िल पर फेंक मारते हैं तो वोह उस का भेजा निकाल देता है तो जभी

هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الۡوَيۡلُ مِمَّا تَصِفُوۡنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَ

वोह मिट कर रह जाता है[32] और तुम्हारी ख़राबी है[33] उन बातों से जो बनाते हो[34] और उसी के हैं जितने आस्मानों और

الۡاَرۡضِ ؕ وَمَنۡ عِنۡدَهٗ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسۡتَحۡسِرُوۡنَ ﴿١٩﴾

ज़मीन में हैं[35] और उस के पास वाले[36] उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें

24 : या'नी उन ज़ालिमों ने 25 **शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि सर ज़मीने यमन में एक बस्ती है जिस का नाम "हुसूर" है वहां के रहने वाले अ़रब थे, उन्हों ने अपने नबी की तक्ज़ीब की और उन को क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर बुख़्त नस्सर को मुसल्लत़ किया उस ने उन्हें क़त्ल किया और गिरिफ़्तार किया और उस का येह अ़मल जारी रहा, तो येह लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो मलाएका ने उन से ब त़रीक़े त़न्ज़ कहा (जो अगली आयत में है) 26 : कि तुम पर क्या गुज़री और तुम्हारे अम्वाल क्या हुए तो तुम दरयाफ़्त करने वाले को अपने इल्मो मुशाहदे से जवाब दे सको। 27 : अ़ज़ाब देखने के बा'द उन्हों ने गुनाह का इक़्रार किया और नादिम हुए, इस लिये येह ए'तिराफ़ उन्हें काम न आया 28 : खेत की त़रह़ कि तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की त़रह़ हो गए। 29 : कि इन से कोई फ़ाएदा न हो बल्कि इस में हमारी ह़िक्मतें हैं, मिन जुम्ला इन के येह है कि हमारे बन्दे इन से हमारी क़ुदरत व ह़िक्मत पर इस्तिद्लाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ व कमाल की मा'रिफ़त हो 30 : मिस्ल ज़न व फ़रज़न्द के, जैसा कि नसारा कहते हैं और हमारे लिये बीबी और बेटियां बताते हैं, अगर येह हमारे ह़क़ में मुम्किन होता 31 : क्यूं कि ज़न व फ़रज़न्द वाले ज़न व फ़रज़न्द अपने पास रखते हैं मगर हम इस से पाक हैं, हमारे लिये येह मुम्किन ही नहीं 32 : मा'ना येह हैं कि हम अहले बात़िल के किज़्ब को बयाने ह़क़ से मिटा देते हैं 33 : ऐ कुफ़्फ़ारे ना बकार 34 : शाने इलाही में कि उस के लिये बीवी व बच्चा ठहराते हो। 35 : वोह सब का मालिक है और सब उस के मम्लूक, तो कोई उस की औलाद कैसे हो सकता है ? मम्लूक होने और औलाद होने में मुनाफ़ात है। 36 : उस के मुक़र्रबीन जिन्हें उस के करम से उस के हुज़ूर क़ुर्बो मन्ज़िलत ह़ासिल है।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ

रात दिन उस की पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते[37] क्या उन्हों ने ज़मीन में से कुछ ऐसे ख़ुदा

الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ

बना लिये हैं[38] कि वोह कुछ पैदा करते हैं[39] अगर आस्मान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वोह[40] तबाह हो जाते[41]

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ

तो पाकी है अल्लाह अ़र्श के मालिक को उन बातों से जो येह बनाते हैं[42] उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे[43]

وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ

और उन सब से सुवाल होगा[44] क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ[45] अपनी दलील लाओ[46]

هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِىَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِىْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ

येह क़ुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है[47] और मुझ से अगलों का तज़्किरा[48] बल्कि उन में अक्सर हक़ को नहीं जानते

فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِىْٓ

तो वोह रू गर्दां हैं[49] और हम ने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर येह कि हम उस की त़रफ़

37 : हर वक़्त उस की तस्बीह़ में रहते हैं। ह़ज़रते का'ब अह़बार ने फ़रमाया कि मलाएका के लिये तस्बीह़ ऐसी है जैसी कि बनी आदम के लिये सांस लेना। 38 : जवाहिरे अर्ज़िया से मिस्ल सोने चांदी पथ्थर वग़ैरा के 39 : ऐसा तो नहीं है और न येह हो सकता है कि जो ख़ुद बेजान हो वोह किसी को जान दे सके, तो फिर उस को मा'बूद ठहराना और इलाह क़रार देना कितना खुला बात़िल है, इलाह वोही है जो हर मुम्किन पर क़ादिर हो, जो क़ादिर नहीं वोह इलाह कैसा। 40 : आस्मान व ज़मीन 41 : क्यूं कि अगर ख़ुदा से वोह ख़ुदा मुराद लिये जाएं जिन की ख़ुदाई के बुत परस्त मो'तक़िद हैं तो फ़सादे आ़लम का लुज़ूम ज़ाहिर है क्यूं कि वोह जमादात हैं तदबीरे आ़लम पर अस्लन क़ुदरत नहीं रखते, और अगर ता'मीम की जाए तो भी लुज़ूमे फ़साद यक़ीनी है क्यूं कि अगर दो ख़ुदा फ़र्ज़ किये जाएं तो दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या वोह दोनों मुत्तफ़िक़ होंगे या मुख़्तलिफ़, अगर शै वाह़िद पर मुत्तफ़िक़ हुए तो लाज़िम आएगा कि एक चीज़ दोनों की मक़्दूर हो और दोनों की क़ुदरत से वाक़ेअ़ हो येह मुह़ाल है और अगर मुख़्तलिफ़ हुए तो एक शै के मुतअ़ल्लिक़ दोनों के इरादे या मअ़न वाक़ेअ़ होंगे और एक ही वक़्त में वोह मौजूद व मा'दूम दोनों हो जाएगी या दोनों के इरादे वाक़ेअ़ न हों और शै न मौजूद हो न मा'दूम या एक का इरादा वाक़ेअ़ हो दूसरे का वाक़ेअ़ न हो, येह तमाम सूरतें मुह़ाल हैं तो साबित हुवा कि फ़साद हर तक़्दीर पर लाज़िम है, तौह़ीद की येह निहायत क़वी बुरहान है और इस की तक़रीरें बहुत बस्त़ के साथ अइम्मए कलाम की किताबों में मज़्कूर हैं, यहां इख़्तिसारन इसी क़दर पर इक्तिफ़ा किया गया। (تفسیر کبیر وغیرہ)
42 : कि उस के लिये औलाद व शरीक ठहराते हैं। 43 : क्यूं कि वोह मालिके ह़क़ीक़ी है जो चाहे करे जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआ़दत दे जिसे चाहे शक़ी करे, वोह सब का ह़ाकिम है, कोई उस का ह़ाकिम नहीं जो उस से पूछ सके 44 : क्यूं कि सब उस के बन्दे हैं मम्लूक हैं, सब पर उस की फ़रमां बरदारी और इत़ाअ़त लाज़िम है, इस से तौह़ीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है, जब सब मम्लूक हैं तो उन में से कोई ख़ुदा कैसे हो सकता है? इस के बा'द ब त़रीक़े इस्तिफ़्हाम तौबीख़न फ़रमाया 45 : ऐ ह़बीब ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) इन मुश्रिकीन से कि तुम अपने इस बात़िल दा'वे पर 46 : और ह़ुज्जत क़ाइम करो ख़्वाह अ़क़्ली हो या नक़्ली, मगर न कोई दलीले अ़क़्ली ला सकते हो जैसा कि बराहीने मज़्कूरा से ज़ाहिर हो चुका और न कोई दलीले नक़्ली पेश कर सकते हो क्यूं कि तमाम कुतुबे समाविया में अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद का बयान है और सब में शिर्क का इब्त़ाल किया गया है। 47 : साथ वालों से मुराद आप की उम्मत है। क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र है कि इस को त़ाअ़त पर क्या सवाब मिलेगा और मा'सियत पर क्या अ़ज़ाब किया जाएगा। 48 : या'नी पहले अम्बिया की उम्मतों का और इस का कि दुन्या में उन के साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा। 49 : और ग़ौरो तअम्मुल नहीं करते और नहीं सोचते कि तौह़ीद पर ईमान लाना उन के लिये ज़रूरी है।

اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا

वह्य फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मुझी को पूजो और बोले रह़मान ने बेटा इख़्तियार किया[50]

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ

पाक है वोह[51] बल्कि बन्दे हैं इ़ज़्ज़त वाले[52] बात में उस से सब्क़त नहीं करते और वोह उसी के हुक्म पर

يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا

कारबन्द होते हैं वोह जानता है जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है[53] और शफ़ाअ़त नहीं करते मगर

لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّیْۤ

उस के लिये जिसे वोह पसन्द फ़रमाए[54] और वोह उस के ख़ौफ़ से डर रहे हैं और उन में जो कोई कहे कि मैं

اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع

अल्लाह के सिवा मा'बूद हूं[55] तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا

क्या काफ़िरों ने येह ख़याल न किया कि आस्मान और ज़मीन बन्द थे

فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ

तो हम ने उन्हें खोला[56] और हम ने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई[57] तो क्या वोह ईमान न लाएंगे और

جَعَلْنَا فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا

ज़मीन में हम ने लंगर डाले[58] कि उन्हें ले कर न कांपे और हम ने उस में कुशादा राहें रखीं

لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا

कि कहीं वोह राह पाएं[59] और हम ने आस्मान को छत बनाया निगाह रखी गई[60] और वोह[61] उस की निशानियों

50 शाने नुज़ूल : येह आयत ख़ुज़ाआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां कहा था। **51 :** उस की ज़ात इस से मुनज़्ज़ा है कि उस के औलाद हो। **52 :** या'नी फ़िरिश्ते उस के बरगुज़ीदा और मुकर्रम बन्दे हैं। **53 :** या'नी जो कुछ उन्हों ने किया और जो कुछ वोह आयिन्दा करेंगे। **54 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया या'नी जो तौह़ीद का क़ाइल हो। **55 :** येह कहने वाला इब्लीस है जो अपनी इ़बादत की दा'वत देता है, फ़िरिश्तों में कोई ऐसा नहीं जो येह कलिमा कहे। **56 :** बन्द होना या तो येह है कि एक दूसरे से मिला हुवा था उन में फ़स्ल पैदा कर के उन्हें खोला या येह मा'ना हैं कि आस्मान बन्द था ब ईं मा'ना कि उस से बारिश नहीं होती थी, ज़मीन बन्द थी ब ईं मा'ना कि उस से रूईदगी पैदा नहीं होती थी, तो आस्मान का खोलना येह है कि उस से बारिश होने लगी और ज़मीन का खोलना येह है कि उस से सब्ज़ा पैदा होने लगा। **57 :** या'नी पानी को जानदारों की ह़यात का सबब किया, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मा'ना येह हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुवा है और बा'ज़ों ने कहा इस से नुत़्फ़ा मुराद है। **58 :** मज़बूत़ पहाड़ों के **59 :** अपने सफ़रों में और जिन मक़ामात का क़स्द करें वहां तक पहुंच सकें। **60 :** गिरने से। **61 :** या'नी कुफ़्फ़ार।

مُعۡرِضُوۡنَ ﴿۳۲﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ

से रू गर्दां हैं[62] और वोही है जिस ने बनाए रात[63] और दिन[64] और सूरज और चांद

كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ ؕ

हर एक एक घेरे में पैर (तैर) रहा है[65] और हम ने तुम से पहले किसी आदमी के लिये दुन्या में हमेशगी न बनाई[66]

اَفَا۟ئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ﴿۳۴﴾ كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ ؕ وَنَبۡلُوۡكُمۡ

तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो येह हमेशा रहेंगे[67] हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़्माइश करते हैं

بِالشَّرِّ وَالۡخَيۡرِ فِتۡنَةً ؕ وَاِلَيۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيۡنَ

बुराई और भलाई से[68] जांचने को[69] और हमारी ही त़रफ़ तुम्हें लौट कर आना है[70] और जब काफ़िर तुम्हें

كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّتَّخِذُوۡنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِىۡ يَذۡكُرُ

देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठठ्ठा (मज़ाक़)[71] क्या येह हैं वोह जो तुम्हारे ख़ुदाओं को

اٰلِهَتَكُمۡ ۚ وَهُمۡ بِذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۳۶﴾ خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ

बुरा कहते हैं और वोह[72] रह़मान ही की याद से मुन्किर हैं[73] आदमी जल्द बाज़

عَجَلٍ ؕ سَاُورِيۡكُمۡ اٰيٰتِىۡ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنِ ﴿۳۷﴾ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا

बनाया गया अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो[74] और कहते हैं कब होगा

62 : या'नी आस्मानी काएनात सूरज, चांद, सितारे और अपने अपने अफ़्लाक में इन की ह़रकतों की कैफ़िय्यत और अपने अपने मत़ालेअ़ से इन के तुलूअ़ और ग़ुरूब और इन के अ़जाइबे अह़वाल जो सानेए आ़लम (या'नी अल्लाह तआ़ला) के वुजूद और उस की वह़दत और उस के कमाले क़ुदरत व हिक्मत पर दलालत करते हैं, कुफ़्फ़ार इन सब से ए'राज़ करते हैं और इन दलाइल से फ़ाएदा नहीं उठाते। 63 : तारीक कि इस में आराम करें 64 : रोशन कि इस में मआ़श (रोज़ी कमाने) वग़ैरा के काम अन्जाम दें। 65 : जिस त़रह़ कि तैराक पानी में। 66 **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम ﷺ के दुश्मन अपने ज़लाल व इनाद (गुमराही व दुश्मनी) से कहते थे कि हम ह़वादिसे ज़माना का इन्तिज़ार कर रहे हैं अ़न्क़रीब ऐसा वक़्त आने वाला है कि ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम ﷺ की वफ़ात हो जाएगी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि दुश्मनाने रसूल के लिये येह कोई ख़ुशी की बात नहीं, हम ने दुन्या में किसी आदमी के लिये हमेशगी नहीं रखी 67 : और इन्हें मौत के पन्जे से रिहाई मिल जाएगी, जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते हैं ? ह़क़ीक़त येह है कि 68 : या'नी राह़त व तक्लीफ़, तन्दुरुस्ती व बीमारी, दौलत मन्दी व नादारी, नफ़्अ़ और नुक़्सान से 69 : ताकि ज़ाहिर हो जाए कि सब्रो शुक्र में तुम्हारा क्या दरजा है। 70 : हम तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देंगे। 71 **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई, ह़ुज़ूर तशरीफ़ लिये जाते थे, वोह आप को देख कर हंसा और कहने लगा कि येह बनी अ़ब्दे मनाफ़ के नबी हैं, और आपस में एक दूसरे से कहने लगे 72 : कुफ़्फ़ार 73 : कहते हैं कि हम रह़मान को जानते ही नहीं, इस जह्ल व ज़लाल में मुब्तला होने के बा वुजूद आप के साथ तमस्ख़ुर करते हैं और नहीं देखते कि हंसी के क़ाबिल ख़ुद उन का अपना ह़ाल है। 74 **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्द अ़ज़ाब नाज़िल कराइये। इस आयत में फ़रमाया गया कि अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा या'नी जो वा'दे अ़ज़ाब के दिये गए हैं उन का वक़्त क़रीब आ गया है, चुनान्चे रोज़े बद्र वोह मन्ज़र उन की नज़र के सामने आ गया।

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ

येह वा'दा[75] अगर तुम सच्चे हो किसी त़रह़ जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे

عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَ لَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۳۹﴾ بَلْ

अपने मूंहों से आग[76] और न अपनी पीठों से और न उन की मदद हो[77] बल्कि

تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَ

वोह उन पर अचानक आ पड़ेगी[78] तो उन्हें बे ह़वास कर देगी फिर न वोह उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी[79] और

لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا

बेशक तुम से अगले रसूलों के साथ ठठ्ठा किया गया[80] तो मस्ख़रगी (ठठ्ठा) करने वालों

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۱﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ مِنَ

का ठठ्ठा उन्ही को ले बैठा[81] तुम फ़रमाओ शबाना रोज़ तुम्हारी कौन निगहबानी करता है

الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ

रह़मान से[82] बल्कि वोह अपने रब की याद से मुंह फेरे हैं[83] क्या उन के कुछ ख़ुदा हैं[84]

تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَ لَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾

जो उन को हम से बचाते हैं[85] वोह अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते[86] और न हमारी त़रफ़ से उन की यारी हो

بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا

बल्कि हम ने उन को[87] और उन के बाप दादा को बरतावा दिया[88] यहां तक कि ज़िन्दगी उन पर दराज़ हुई[89] तो क्या नहीं देखते कि हम[90]

نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ

ज़मीन को उस के किनारों से घटाते आ रहे हैं[91] तो क्या येह ग़ालिब होंगे[92] तुम फ़रमाओ कि मैं

75 : अ़ज़ाब का या क़ियामत का, येह उन के इस्ति'जाल (जल्दी अ़ज़ाब मांगने) का बयान है। 76 : दोज़ख़ की 77 : अगर वोह येह जानते होते तो कुफ़्र पर क़ाइम न रहते और अ़ज़ाब में जल्दी न करते 78 : क़ियामत 79 : तौबा व मा'ज़िरत की 80 : ऐ सय्यिदे आ़लम ﷺ 81 : और वोह अपने इस्तिहज़ा और मस्ख़रगी के वबाल व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। इस में सय्यिदे आ़लम ﷺ की तसल्ली फ़रमाई गई कि आप के साथ इस्तिहज़ा करने वालों का भी येही अन्जाम होना है। 82 : या'नी उस के अ़ज़ाब से 83 : जब ऐसा है तो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही का क्या ख़ौफ़ हो और वोह अपनी हिफ़ाज़त करने वाले को क्या पहचानें। 84 : हमारे सिवा उन के ख़याल में 85 : और हमारे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वोह अपने बुतों की निस्बत येह ए'तिक़ाद रखते हैं तो उन का ह़ाल येह है कि 86 : अपने पूजने वालों को क्या बचा सकेंगे। 87 : या'नी कुफ़्फ़ार को 88 : और दुन्या में उन्हें ने'मत व मोहलत दी 89 : और वोह इस से और मग़रूर हुए और उन्हों ने गुमान किया कि वोह हमेशा ऐसे ही रहेंगे। 90 : कुफ़्रिस्तान की 91 : रोज़ बरोज़ मुसलमानों को इस पर तसल्लुत़ दे रहे हैं और एक शहर के बा'द दूसरा शहर फ़त्ह़ होता चला आ रहा है, ह़ुदूदे इस्लाम बढ़ रही हैं और सर ज़मीने कुफ़्र घटती

اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ

तुम को सिर्फ़ वह्य से डराता हूं[93] और बहरे पुकारना नहीं सुनते जब डराए जाएं[94] और

لَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا

अगर उन्हें तुम्हारे रब के अ़ज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाए ख़राबी हमारी बेशक हम

ظٰلِمِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ

ज़ालिम थे[95] और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म

شَيْئًا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا

न होगा और अगर कोई चीज़[96] राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं

حٰسِبِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا

हिसाब को और बेशक हम ने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया[97] और उजाला[98] और परहेज़ गारों

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ

को नसीहत[99] वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़ियामत का अन्देशा

مُشْفِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع

لगा हुवा है और येह है बरकत वाला ज़िक्र कि हम ने उतारा[100] तो क्या तुम इस के मुन्किर हो

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ اِذْ قَالَ

और बेशक हम ने इब्राहीम को[101] पहले ही से उस की नेक राह अ़ता कर दी और हम उस से ख़बरदार थे[102] जब उस ने अपने

لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا

बाप और क़ौम से कहा येह मूरतें क्या हैं[103] जिन के आगे तुम आसन मारे (जम कर बैठे) हो[104] बोले

ركوع ٤

चली आती है और हवालिये मक्कए मुकर्रमा (मक्कए मुकर्रमा के गिर्दो नवाह़) पर मुसल्मानों का तसल्लुत़ होता जाता है। क्या मुश्रिकीन जो अ़ज़ाब त़लब करने में जल्दी करते हैं इस को नहीं देखते और इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **92 :** जिन के क़ब्ज़े से ज़मीन दम ब दम निकलती जा रही है या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के अस्ह़ाब जो ब फ़ज़्ले इलाही फ़त्ह़ पर फ़त्ह़ पा रहे हैं और उन के मक्बूज़ात दम ब दम बढ़ते चले जाते हैं। **93 :** और अ़ज़ाबे इलाही का उसी की त़रफ़ से ख़ौफ़ दिलाता हूं। **94 :** या'नी काफ़िर हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के कलाम से नफ़्अ़ न उठाने में बहरे की त़रह हैं। **95 :** नबी की बात पर कान न रखा और उन पर ईमान न लाए। **96 :** आ'माल में से **97 :** या'नी तौरैत अ़त़ा की जो ह़क़ व बात़िल में तफ़्रिक़ा (इम्तियाज़) करने वाली है। **98 :** या'नी रोशनी है कि इस से नजात की राह मा'लूम होती है। **99 :** जिस से वोह पन्द पज़ीर (फ़ाएदा उठाते) होते हैं और दीनी उमूर का इ़ल्म ह़ासिल करते हैं **100 :** अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर या'नी क़ुरआने पाक। येह कसीरुल ख़ैर (ख़ैर ही ख़ैर) है और ईमान लाने वालों के लिये इस में बड़ी बरकतें हैं। **101 :** उन की इब्तिदाई उ़म्र में बालिग़ होने के **102 :** कि वोह हिदायत व नुबुव्वत के अह्ल हैं। **103 :** या'नी बुत, जो दरिन्दों परिन्दों

وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِیْنَ ﴿۵۳﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِیْ

हम ने अपने बाप दादा को इन की पूजा करते पाया[105] कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब

ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۵۴﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِیْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ

खुली गुमराही में हो बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूंही खेलते हो[106] कहा

بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِیْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ

बल्कि तुम्हारा रब वोह है जो रब है आस्मानों और ज़मीन का जिस ने इन्हें पैदा किया और मैं इस पर गवाहों

مِّنَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۵۶﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِیْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا

में से हूं और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बा'द इस के कि तुम फिर जाओ

مُدْبِرِیْنَ ﴿۵۷﴾ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِیْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَیْهِ یَرْجِعُوْنَ ﴿۵۸﴾

पीठ दे कर[107] तो उन सब को[108] चूरा कर दिया मगर एक को जो उन सब का बड़ा था[109] कि शायद वोह उस से कुछ पूछें[110]

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا سَمِعْنَا

बोले किस ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया बेशक वोह ज़ालिम है उन में के कुछ बोले हम

فَتًى یَّذْكُرُهُمْ یُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِیْمُ ﴿۶۰﴾ؕ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى اَعْیُنِ النَّاسِ

ने एक जवान को इन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं[111] बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ

और इन्सानों की सूरतों के बने हुए हैं **104 :** और इन की इबादत में मश्ग़ूल हो। **105 :** तो हम भी उन की इक़्तिदा में वैसा ही करने लगे। **106 :** चूंकि उन्हें अपने त़रीक़े का गुमराही होना बहुत ही बईद मा'लूम होता था और उस का इन्कार करना वोह बहुत बड़ी बात जानते थे, इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से येह कहा कि क्या आप येह बात वाक़ेई त़ौर पर हमें बता रहे हैं या ब त़रीक़ खेल के फ़रमाते हैं ? इस के जवाब में आप ने ह़ज़रते मलिक अ़ल्लाम (या'नी अल्लाह तआ़ला) की रबूबिय्यत का इस्बात फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप खेल के त़रीक़े पर कलाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि ह़क़ का इज़्हार फ़रमाते हैं चुनान्चे, आप ने **107 :** अपने मेले को। वाक़िआ़ येह है कि उस क़ौम का सालाना एक मेला लगता था, जंगल में जाते थे और शाम तक वहां लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल रहते थे, वापसी के वक़्त बुतख़ाने में आते थे और बुतों की पूजा करते थे, इस के बा'द अपने मकानों को वापस जाते थे, जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने उन की एक जमाअ़त से बुतों के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा किया तो उन लोगों ने कहा कि कल को हमारी ईद है, आप वहां चलें देखें कि हमारे दीन और त़रीक़े में क्या बहार हैं और कैसे लुत्फ़ आते हैं, जब वोह मेले का दिन आया और आप से मेले में चलने को कहा गया तो आप उ़ज़्र कर के रह गए, वोह लोग रवाना हो गए, जब उन के बाक़ी मांदा और कमज़ोर लोग जो आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे गुज़रे तो आप ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा, इस को बा'ज़ लोगों ने सुना और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام बुतख़ाने की त़रफ़ लौटे। **108 :** या'नी बुतों को तोड़ कर **109 :** छोड़ दिया और बसूला उस के कांधे पर रख दिया **110 :** या'नी बड़े बुत से कि इन छोटे बुतों का क्या ह़ाल है ? येह क्यूं टूटे और बसूला तेरी गरदन पर कैसा रखा है ? और उन्हें उस का इ़ज्ज़ ज़ाहिर हो और उन्हें होश आए कि ऐसे आ़जिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते या येह मा'ना हैं कि वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से दरयाफ़्त करें और आप को ह़ुज्जत क़ाइम करने का मौक़अ़ मिले, चुनान्चे जब क़ौम के लोग शाम को वापस हुए और बुतख़ाने में पहुंचे और उन्हों ने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो **111 :** येह ख़बर नमरूद जब्बार और उस के उमरा को पहुंची तो।

لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

शायद वोह गवाही दें[112] बोले क्या तुम ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया ऐ इब्राहीम[113]

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۗ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

फ़रमाया बल्कि इन के उस बड़े ने किया होगा[114] तो उन से पूछो अगर बोलते हों[115]

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى

तो अपने जी की त़रफ़ पलटे[116] और बोले बेशक तुम्हीं सितमगार हो[117] फिर अपने सरों के बल

رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

औंधाए गए[118] कि तुम्हें ख़ूब मा'लूम है येह बोलते नहीं[119] कहा तो क्या अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا

ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़्अ़ दे[120] और न नुक़्सान पहुंचाए[121] तुफ़ है तुम पर और इन

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا

बुतों पर जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[122] बोले इन को जला दो और अपने ख़ुदाओं

اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى

की मदद करो अगर तुम्हें करना है[123] हम ने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती

112 : कि येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ही का फ़े'ल है या इन से बुतों की निस्बत ऐसा कलाम सुना गया है, मुद्दआ़ येह था कि शहादत क़ाइम हो तो वोह आप के दरपै हों, चुनान्चे ह़ज़रत बुलाए गए और वोह लोग 113 : आप ने इस का तो कुछ जवाब न दिया और शाने मुनाज़राना से ता'रीज़ के त़ौर पर एक अ़जीबो ग़रीब हुज्जत क़ाइम की। 114 : इस ग़ुस्से से कि इस के होते तुम इस के छोटों को पूजते हो, इस के कन्धे पर बसूला होने से ऐसा ही क़ियास किया जा सकता है, मुझ से क्या पूछना, पूछना हो 115 : वोह ख़ुद बताएं कि उन के साथ येह किस ने किया, मुद्दआ़ येह था कि क़ौम ग़ौर करे कि जो बोल नहीं सकता जो कुछ कर नहीं सकता वोह ख़ुदा नहीं हो सकता उस की ख़ुदाई का ए'तिक़ाद बात़िल है, चुनान्चे जब आप ने येह फ़रमाया 116 : और समझे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ह़क़ पर हैं 117 : जो ऐसे मजबूरों और बे इख़्तियारों को पूजते हो, जो अपने कांधे से बसूला न हटा सके वोह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सके और उस के क्या काम आ सके। 118 : और कलिमए ह़क़ कहने के बा'द फिर उन की बद बख़्ती उन के सरों पर सुवार हुई और वोह कुफ़्र की त़रफ़ पलटे और बात़िल मुजादला व मुकाबरा (बे जा बह़सो मुबाह़सा) शुरूअ़ किया और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से कहने लगे 119 : तो हम इन से कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम तुम हमें इन से पूछने का कैसे हुक्म देते हो। 120 : अगर उसे पूजो 121 : अगर उस का पूजना मौक़ूफ़ कर दो। 122 : कि इतना भी समझ सको कि येह बुत पूजने के क़ाबिल नहीं। जब हुज्जत तमाम हो गई और वोह लोग जवाब से आ़जिज़ आए तो 123 : नमरूद और उस की क़ौम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को जला डालने पर मुत्तफ़िक़ हो गई और उन्हों ने आप को एक मकान में क़ैद कर दिया और क़र्यए कूसा में एक इमारत बनाई और एक महीने तक ब कोशिश तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियां जम्अ़ कीं और एक अ़ज़ीम आग जलाई जिस की तपिश से हवा में परवाज़ करने वाले परिन्दे जल जाते थे और एक मिन्जनीक़ (पथ्थर फेंकने की तोप) खड़ी की और आप को बांध कर उस में रख कर आग में फेंका, उस वक़्त आप की ज़बाने मुबारक पर था حَسْبِیَ اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِیْلُ। जिब्रईले अमीन ने आप से अ़र्ज़ किया कि क्या कुछ काम है ? आप ने फ़रमाया : तुम से नहीं, जिब्रईल ने अ़र्ज़ किया : तो अपने रब से सुवाल कीजिये, फ़रमाया : सुवाल करने से उस का मेरे ह़ाल को जानना मेरे लिये किफ़ायत करता है।

إِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَ

इब्राहीम पर[124] और उन्हों ने उस का बुरा चाहा तो हम ने उन्हें सब से बढ़ कर ज़ियांकार कर दिया[125] और हम ने उसे और

لُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ اِسْحٰقَ

लूत़ को[126] नजात बख़्शी[127] उस ज़मीन की त़रफ़[128] जिस में हम ने जहान वालों के लिये बरकत रखी[129] और हम ने उसे इस्ह़ाक़ अ़त़ा फ़रमाया[130]

وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ

और या'क़ूब पोता और हम ने उन सब को अपने क़ुर्बे ख़ास का सज़ावार (अहल) किया और हम ने उन्हें इमाम किया कि[131] हमारे हुक्म

بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ

से बुलाते हैं और हम ने उन्हें वह्य भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने और ज़कात

الزَّكٰوةِ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ

देने की और वोह हमारी बन्दगी करते थे और लूत़ को हम ने हुकूमत और इल्म दिया और उसे उस

مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी[132] बेशक वोह बुरे लोग

فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَنُوْحًا

बे हुक्म (ना फ़रमान) थे और हम ने उसे[133] अपनी रह़मत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है और नूह़ को

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

जब उस से पहले उस ने हमें पुकारा तो हम ने उस की दुआ़ क़बूल की और उसे और उस के घर वालों को बड़ी सख़्ती से

الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا اِنَّهُمْ كَانُوْا

नजात दी[134] और हम ने उन लोगों पर उस को मदद दी जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बेशक वोह

124 : तो आग ने सिवा आप की बन्दिश के और कुछ न जलाया और आग की गरमी ज़ाइल हो गई और रोशनी बाक़ी रही। 125 : कि उन की मुराद पूरी न हुई और सई नाकाम रही और अल्लाह तआ़ला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उन के गोश्त खा गए और ख़ून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग़ में घुस गया और उस की हलाकत का सबब हुवा। 126 : जो उन के भतीजे उन के भाई हारान के फ़रज़न्द थे, नमरूद और उस की क़ौम से 127 : और इराक़ से 128 : रवाना किया 129 : उस ज़मीन से ज़मीने शाम मुराद है, इस की बरकत येह है कि यहां कसरत से अम्बिया हुए और तमाम जहान में उन के दीनी बरकात पहुंचे और सर सब्ज़ी व शादाबी के ए'तिबार से भी येह ख़ित्ता दूसरे ख़ित्तों पर फ़ाइक़ है, यहां कसरत से नहरें हैं, पानी पाकीज़ा और ख़ुश गवार है, अश्जार व सिमार (दरख़्तों और फलों) की कसरत है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने मक़ामे फ़िलिस्तीन में नुज़ूल फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने मुअ्तफ़िका में। 130 : और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह तआ़ला से बेटे की दुआ़ की थी। 131 : लोगों को हमारे दीन की त़रफ़ 132 : उस बस्ती का नाम सदूम था 133 : या'नी लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को 134 : या'नी तूफ़ान से और तक्ज़ीबे अहले तुग़्यान (बाग़ी व सरकश की तक्ज़ीब) से।

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۷۷﴾ وَ دَاوٗدَ وَ سُلَیْمٰنَ اِذْ یَحْكُمٰنِ فِی

बुरे लोग थे तो हम ने उन सब को डुबो दिया और दावूद और सुलैमान को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते

الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِیْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَ كُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِیْنَ ﴿۷۸﴾

(फ़ैसला करते) थे जब रात को उस में कुछ लोगों की बकरियां छूटीं[135] और हम उन के हुक्म के वक़्त हाज़िर थे

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَیْمٰنَ ۚ وَ كُلًّا اٰتَیْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ٘ وَّ سَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

हम ने वोह मुआमला सुलैमान को समझा दिया[136] और दोनों को हुकूमत और इल्म अ़ता किया[137] और दावूद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये

یُسَبِّحْنَ وَ الطَّیْرَ ؕ وَ كُنَّا فٰعِلِیْنَ ﴿۷۹﴾ وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ

कि तस्बीह़ करते और परिन्दे[138] और येह हमारे काम थे और हम ने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया

لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ لِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ

कि तुम्हें तुम्हारी आंच से [ज़ख़्मी होने से] बचाए[139] तो क्या तुम शुक्र करोगे और सुलैमान के लिये तेज़ हवा

عَاصِفَةً تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَی الْاَرْضِ الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَا ؕ وَ كُنَّا بِكُلِّ

मुसख़्ख़र कर दी कि उस के हुक्म से चलती उस ज़मीन की त़रफ़ जिस में हम ने बरकत रखी[140] और हम को हर

شَیْءٍ عٰلِمِیْنَ ﴿۸۱﴾ وَ مِنَ الشَّیٰطِیْنِ مَنْ یَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ یَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

चीज़ मा'लूम है और शैत़ानों में से वोह जो उस के लिये ग़ोत़ा लगाते[141] और इस के सिवा

135 : उन के साथ कोई चराने वाला न था, वोह खेती खा गईं, येह मुक़द्दमा ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام के सामने पेश हुवा आप ने तज्वीज़ की, कि बकरियां खेती वाले को दे दी जाएं, बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़्सान के बराबर थी। **136 :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के सामने जब येह मुआमला पेश हुवा तो आप ने फ़रमाया कि फ़रीक़ैन के लिये इस से ज़ियादा आसानी की शक्ल भी हो सकती है, उस वक़्त ह़ज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी, ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام ने आप पर लाज़िम किया कि वोह सूरत बयान फ़रमाएं, ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने येह तज्वीज़ पेश की, कि बकरी वाला काश्त करे और जब तक खेती उस ह़ालत को पहुंचे जिस ह़ालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरा से नफ़्अ़ उठाए और खेती उस ह़ालत पर पहुंच जाने के बा'द खेती वाले को खेती दे दी जाए बकरी वाले को उस की बकरियां वापस कर दी जावें, येह तज्वीज़ ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام ने पसन्द फ़रमाई, इस मुआमले में येह दोनों हुक्म इज्तिहादी थे और उस शरीअ़त के मुत़ाबिक़ थे। हमारी शरीअ़त में हुक्म येह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर जो नुक़्सानात करे उस का ज़मान लाज़िम नहीं। मुजाहिद का क़ौल है कि ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام ने जो फ़ैसला किया था वोह उस मस्अले का हुक्म था और ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने जो तज्वीज़ फ़रमाई येह सूरते सुल्ह़ थी। **137 :** वुजूहे इज्तिहाद व त़रीक़े अह़काम वग़ैरा का। **मस्अला :** जिन उ़लमा को इज्तिहाद की अहलिय्यत ह़ासिल हो उन्हें उन उमूर में इज्तिहाद का ह़क़ है जिस में वोह किताब व सुन्नत के हुक्म न पावें और अगर इज्तिहाद में ख़त़ा भी हो जावे तो भी उन पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्तिहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में मुसीब हो तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर इज्तिहाद में ख़त़ा वाक़ेअ़ हो जाए तो एक अज्र। **138 :** पथ्थर और परिन्दे आप के साथ आप की मुवाफ़क़त में तस्बीह़ करते थे। **139 :** या'नी जंग में दुश्मन के मुक़ाबिल काम आए और वोह ज़िरह है, सब से पहले ज़िरह बनाने वाले ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام हैं। **140 :** इस ज़मीन से मुराद शाम है जो आप का मस्कन था। **141 :** दरिया की गहराई में दाख़िल हो कर समुन्दर की तह से आप के लिये जवाहिर निकाल कर लाते।

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ

और काम करते[142] और हम उन्हें रोके हुए थे[143] और अय्यूब को [याद करो] जब उस ने अपने रब को पुकारा[144] कि मुझे

مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ

तक्लीफ़ पहुंची और तू सब मेह्र वालों से बढ़ कर मेह्र वाला है तो हम ने उस की दुआ़ सुन ली तो हम ने दूर कर दी जो

مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى

तक्लीफ़ उसे थी[145] और हम ने उसे उस के घर वाले और उन के साथ इतने ही और अ़ता किये[146] अपने पास से रह़मत फ़रमा कर और बन्दगी

لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

वालों के लिये नसीह़त[147] और इस्माईल और इदरीस और ज़ुल किफ़्ल को [याद करो] वोह सब सब्र वाले थे[148]

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَذَا النُّوْنِ اِذْ

और उन्हें हम ने अपनी रह़मत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं और ज़ुन्नून को [याद करो][149] जब

ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ

चला ग़ुस्से में भरा[150] तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे[151] तो अंधेरियों में पुकारा[152] कोई

142 : अ़जीब अ़जीब सन्अ़तें, इमारतें, मह़ल, बरतन, शीशे की चीज़ें, साबून वग़ैरा बनाना। 143 : कि आप के हुक्म से बाहर न हों। 144 : या'नी अपने रब से दुआ़ की। ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में से हैं **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हर त़रह़ की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं, ह़ुस्ने सूरत भी कस्रते औलाद भी कसरते अम्वाल भी। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इब्तिला में डाला और आप के फ़रज़न्द व औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए, तमाम जानवर जिस में हज़ारहा ऊंट हज़ारहा बकरियां थीं सब मर गए, तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए, कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को उन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाएअ़ होने की ख़बर दी जाती थी तो आप ह़म्दे इलाही बजा लाते थे और फ़रमाते थे : मेरा क्या है जिस का था उस ने लिया, जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उस का शुक्र ही अदा नहीं हो सकता मैं उस की मरज़ी पर राज़ी हूं, फिर आप बीमार हुए, तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़े, बदन मुबारक सब का सब ज़ख़्मों से भर गया, सब लोगों ने छोड़ दिया बजुज़ आप की बीबी साहिबा के कि वोह आप की ख़िदमत करती रहीं और येह ह़ालत सालहा साल रही, आख़िरकार कोई ऐसा सबब पेश आया कि आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : 145 : इस त़रह़ कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया कि आप ज़मीन में पाउं मारिये। उन्हों ने पाउं मारा एक चश्मा ज़ाहिर हुवा, हुक्म दिया गया इस से ग़ुस्ल कीजिये, ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम चले फिर दोबारा ज़मीन में पाउं मारने का हुक्म हुवा फिर आप ने पाउं मारा उस से भी एक चश्मा ज़ाहिर हुवा जिस का पानी निहायत सर्द था, आप ने ब हुक्मे इलाही पिया उस से बात़िन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं और आप को आ'ला दरजे की सिह़्ह़त ह़ासिल हुई। 146 : ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तमाम औलाद को ज़िन्दा फ़रमा दिया और आप को उतनी ही औलाद और इनायत की। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की दूसरी रिवायत में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की बीबी साहिबा को दोबारा जवानी इनायत की और उन के कसीर औलादें हुईं। 147 : कि वोह इस वाक़िए़ से बलाओं पर सब्र करने और इस के सवाबे अ़ज़ीम से बा ख़बर हों और सब्र करें और सवाब पाएं। 148 : कि उन्हों ने मेह़नतों और बलाओं और इ़बादतों की मशक़्क़तों पर सब्र किया। 149 : या'नी ह़ज़रते यूनुस इब्ने मत्ता को 150 : अपनी क़ौम से जिस ने उन की दा'वत न क़बूल की थी और नसीह़त न मानी थी और कुफ़्र पर क़ाइम रही थी, आप ने गुमान किया कि येह हिजरत आप के लिये जाइज़ है क्यूं कि इस का सबब सिर्फ़ कुफ़्र और अहले कुफ़्र के साथ बुग़्ज़ और **अल्लाह** के लिये ग़ज़ब करना है लेकिन आप ने इस हिजरत में हुक्मे इलाही का इन्तिज़ार न किया 151 : तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मछली के पेट में डाला। 152 : कई क़िस्म की अंधेरियां थीं दरिया की अंधेरी, रात की अंधेरी, मछली के पेट की अंधेरी। इन अंधेरियों में ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने परवर्दगार से इस त़रह़ दुआ़ की, कि

اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖۗ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۷﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ

मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बेजा हुवा[153] तो हम ने उस की पुकार सुन ली

وَ نَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُــْۨجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۸﴾ وَ زَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰی

और उसे ग़म से नजात बख़्शी[154] और ऐसी ही नजात देंगे मुसल्मानों को[155] और ज़करिय्या को जब उस ने अपने

رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿۸۹﴾ ۚۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ؗ

रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़[156] और तू सब से बेहतर वारिस[157] तो हम ने उस की दुआ क़बूल की

وَ وَهَبْنَا لَهٗ یَحْیٰی وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی

और उसे[158] यह्या अ़ता फ़रमाया और उस के लिये उस की बीबी संवारी[159] बेशक वोह[160] भले कामों में जल्दी

الْخَیْرٰتِ وَ یَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ﴿۹۰﴾ وَ الَّتِیْۤ

करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं और उस औ़रत

اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِیْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَ جَعَلْنٰهَا وَ ابْنَهَاۤ اٰیَةً

को जिस ने अपनी पारसाई (पर) निगाह रखी[161] तो हम ने उस में अपनी रूह़ फूंकी[162] और उसे और उस के बेटे को सारे जहां

لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۱﴾ اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖؗ وَّ اَنَا رَبُّكُمْ

के लिये निशानी बनाया[163] बेशक तुम्हारा येह दीन एक ही दीन है[164] और मैं तुम्हारा रब हूं[165]

فَاعْبُدُوْنِ ﴿۹۲﴾ وَ تَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَیْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَیْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿۹۳﴾ ع فَمَنْ

तो मेरी इबादत करो और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिये[166] सब को हमारी त़रफ़ फिरना है[167] तो जो

یَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْیِهٖ ۚ وَ اِنَّا لَهٗ

कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उस की कोशिश की बे क़दरी नहीं और हम उसे

153 : कि मैं अपनी क़ौम से क़ब्ल तेरा इज़्न पाने के जुदा हुवा, ह़दीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत ज़दा बारगाहे इलाही में इन कलिमात से दुआ करे तो अल्लाह तआला उस की दुआ क़बूल फ़रमाता है। 154 : और मछली को हुक्म दिया तो उस ने ह़ज़रते यूनुस عَلَیْهِ السَّلَام को दरिया के किनारे पर पहुंचा दिया। 155 : मुसीबतों और तक्लीफ़ों से जब वोह हम से फ़रियाद करें और दुआ करें। 156 : या'नी बे औलाद, बल्कि वारिस अ़ता फ़रमा 157 : ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द बाक़ी रहने वाला। मुद्दआ येह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तो भी कुछ ग़म नहीं क्यूं कि तू बेहतर वारिस है। 158 : फ़रज़न्दे सईद 159 : जो बांझ थी उस को क़ाबिले विलादत किया। 160 : या'नी अम्बियाए मज़्कूरीन। 161 : पूरे त़ौर पर कि किसी त़रह़ कोई बशर उस की पारसाई को छू न सका। मुराद इस से ह़ज़रते मरयम हैं। 162 : और उस के पेट में ह़ज़रते ईसा को पैदा किया। 163 : अपने कमाले क़ुदरत की, कि ह़ज़रते ईसा को उस के बत़्न से बिग़ैर बाप के पैदा किया। 164 : दीने इस्लाम, येही तमाम अम्बिया का दीन है, इस के सिवा जितने अद्यान हैं सब बात़िल, सब को इसी दीन पर क़ाइम रहना लाज़िम है। 165 : न मेरे सिवा कोई दूसरा रब, न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन 166 : या'नी दीन में इख़्तिलाफ़ किया और फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए। 167 : हम उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देंगे।

كٰتِبُوْنَ ﴿۹۴﴾ وَ حَرٰمٌ عَلٰی قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۹۵﴾ حَتّٰۤی

लिख रहे हैं और ह़राम है उस बस्ती पर जिसे हम ने हलाक कर दिया कि फिर लौट कर आएं[168] यहां तक

اِذَا فُتِحَتْ یَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ یَّنْسِلُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَ

कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज[169] और वोह हर बुलन्दी से ढलक्ते होंगे और

اقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِیَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْاؕ

क़रीब आया सच्चा वा'दा[170] तो जभी आंखें फट कर रह जाएंगी काफ़िरों की[171] कि

یٰوَیْلَنَا قَدْ كُنَّا فِیْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِیْنَ ﴿۹۷﴾ اِنَّكُمْ وَ مَا

हाए हमारी ख़राबी बेशक हम[172] इस से ग़फ़्लत में थे बल्कि हम ज़ालिम थे[173] बेशक तुम[174] और जो

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿۹۸﴾ لَوْ كَانَ

कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो[175] सब जहन्नम के ईंधन हो तुम्हें उस में जाना अगर येह[176]

هٰۤؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَاؕ وَ كُلٌّ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۹۹﴾ لَهُمْ فِیْهَا زَفِیْرٌ وَّ

ख़ुदा होते जहन्नम में न जाते और उन सब को हमेशा उस में रहना[177] वोह उस में रैंकें (चीखें चिल्लाएं)गे[178] और

هُمْ فِیْهَا لَا یَسْمَعُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤیۙ

वोह उस में कुछ न सुनेंगे[179] बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका

اُولٰٓىٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَۙ ﴿۱۰۱﴾ لَا یَسْمَعُوْنَ حَسِیْسَهَاۚ وَ هُمْ فِیْ مَا

वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं[180] वोह उस की भिनक [हलकी सी आवाज़ भी] न सुनेंगे[181] और वोह अपनी मन मानती

---

168 : दुन्या की त़रफ़ तलाफ़िये आ'माल व तदारुके अह़वाल के लिये। या'नी इस लिये कि उन का वापस आना ना मुम्किन है। मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान किये हैं कि जिस बस्ती वालों को हम ने हलाक किया उन का शिर्को कुफ़्र से वापस आना मुह़ाल है, येह मा'ना इस तक्दीर पर हैं जब कि "لَا" को ज़ाइदा क़रार दिया जाए और अगर "لَا" ज़ाइदा न हो तो मा'ना येह होंगे कि दारे आख़िरत में उन का ह़यात की त़रफ़ न लौटना ना मुम्किन है। इस में मुन्किरीने बअ़्स का इब्त़ाल है और ऊपर जो لَا كُفْرَانَ لِسَعْیِهٖ और كُلٌّ اِلَیْنَا رٰجِعُوْنَ फ़रमाया गया इस की ताकीद है। (تفسیر کبیر وغیرہ) **169 :** क़रीबे क़ियामत। और याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं। **170 :** या'नी क़ियामत **171 :** उस दिन के होल और दहशत से, और कहेंगे **172 :** दुन्या के अन्दर **173 :** कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुटलाते थे। **174 :** ऐ मुश्रिको ! **175 :** या'नी तुम्हारे बुत **176 :** बुत जैसा कि तुम्हारा गुमान है **177 :** बुतों को भी और उन के पूजने वालों को भी। **178 :** और अ़ज़ाब की शिद्दत से चीखेंगे और दहाड़ेंगे। **179 :** जहन्नम के शिद्दते जोश की वज्ह से। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया जब जहन्नम में वोह लोग रह जाएंगे जिन्हें उस में हमेशा रहना है तो वोह आग के ताबूतों में बन्द किये जाएंगे वोह ताबूत और ताबूतों में फिर वोह ताबूत और ताबूतों में और उन ताबूतों पर आग की मेख़ें जड़ दी जाएंगी तो वोह कुछ न सुनेंगे और न कोई उन में किसी को देखेगा। **180 :** इस में ईमान वालों के लिये बिशारत है। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने येह आयत पढ़ कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में से हूं और अबू बक्र और उ़मर और उ़स्मान और त़ल्ह़ा और ज़ुबैर और सा'द और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم एक रोज़ का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए, उस वक़्त क़ुरैश के सरदार ह़त़ीम में मौजूद थे और का'बा शरीफ़ के गिर्द तीन सो साठ बुत थे, नज़्र बिन ह़ारिस

اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ۝١٠٢ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ

ख़्वाहिशों में[182] हमेशा रहेंगे उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट[183] और फ़िरिश्ते उन की पेशवाई

الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝١٠٣ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ

को आएंगे[184] कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था जिस दिन हम आस्मान को लपेटेंगे

كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ

जैसे सिजिल फ़िरिश्ता[185] नामए आ'माल को लपेटता है हम ने जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे[186] येह वा'दा है हमारे ज़िम्मे

اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝١٠٤ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

हम को इस का ज़रूर करना और बेशक हम ने ज़बूर में नसीहत के बा'द लिख दिया कि

الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ۝١٠٥ اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ

इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे[187] बेशक येह क़ुरआन काफ़ी है

عٰبِدِيْنَ ۝١٠٦ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٧ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى

इ़बादत वालों को[188] और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये[189] तुम फ़रमाओ मुझे तो येही वह़्य

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने आया और आप से कलाम करने लगा, हुज़ूर ने उस को जवाब दे कर साकित कर दिया और येह आयत तिलावत फ़रमाई : اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ कि तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं, येह फ़रमा कर हुज़ूर तशरीफ़ ले आए, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़िबा'रा सहमी आया और उस को वलीद बिन मुग़ीरा ने उस गुफ़्तगू की ख़बर दी कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम मैं होता तो उन से मुबाह़सा करता इस पर लोगों ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बुलाया इब्ने ज़िबा'रा येह कहने लगा कि आप ने येह फ़रमाया है कि तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि हां। कहने लगा यहूद तो ह़ज़रते उ़ज़ैर को पूजते हैं और नसारा ह़ज़रते मसीह़ को पूजते हैं और बनी मलीह़ फ़िरिश्तों को पूजते हैं। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बयान फ़रमा दिया कि ह़ज़रते उ़ज़ैर और मसीह़ और फ़िरिश्ते वोह हैं जिन के लिये भलाई का वा'दा हो चुका और वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दर ह़क़ीक़त यहूदो नसारा वग़ैरा शैतान की परस्तिश करते हैं। इन जवाबों के बा'द उस को मजाले दम ज़दन न रही और वोह साकित रह गया और दर ह़क़ीक़त उस का ए'तिराज़ कमाले इ़नाद (सख़्त दुश्मनी की वज्ह) से था क्यूं कि जिस आयत पर उस ने ए'तिराज़ किया उस में ''مَا تَعْبُدُوْنَ'' है और ''**مَا**'' ज़बाने अ़रबी में ग़ैर ज़विल उ़क़ूल के लिये बोला जाता है, येह जानते हुए उस ने अन्धा बन कर ए'तिराज़ किया, येह ए'तिराज़ तो अहले ज़बान की निगाहों में खुला हुवा बात़िल था मगर मज़ीद बयान के लिये इस आयत में तौज़ीह़ फ़रमा दी गई। **181 :** और उस के जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी वोह मनाज़िले जन्नत में आराम फ़रमा होंगे। **182 :** ख़ुदावन्दी ने'मतों और करामतों में **183 :** या'नी नफ़्ख़ए अख़ीरा **184 :** क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारक बादें देते तहनियत पेश करते और येह कहते **185 :** जो कातिबे आ'माल है आदमी की मौत के वक़्त उस के **186 :** या'नी हम ने जैसे पहले अ़दम से बनाया था वैसे ही फिर मा'दूम करने के बा'द पैदा कर देंगे या येह मा'ना हैं कि जैसा मां के पेट से बरहना, ग़ैर मख़्तून पैदा किया था ऐसा ही मरने के बा'द उठाएंगे। **187 :** इस ज़मीन से मुराद ज़मीने जन्नत है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की ज़मीनें मुराद हैं जिन को मुसल्मान फ़त्ह़ करेंगे और एक क़ौल येह है ज़मीने शाम मुराद है। **188 :** कि जो इस का इत्तिबाअ़ करे और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करे जन्नत पाए और मुराद को पहुंचे और इ़बादत वालों से मोमिनीन मुराद हैं और एक क़ौल येह है कि उम्मते मुह़म्मदिय्यह मुराद है जो पांचों नमाज़ें पढ़ते हैं रमज़ान के रोज़े रखते हैं ह़ज करते हैं। **189 :** कोई हो, जिन्न हो या इन्स, मोमिन हो या काफ़िर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रह़मत होना आ़म है ईमान वाले के लिये भी और उस के लिये भी जो ईमान न लाया, मोमिन के लिये तो आप दुन्या व आख़िरत दोनों में रह़मत हैं और जो ईमान न लाया उस के लिये आप दुन्या में रह़मत

إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ

होती है कि तुम्हारा ख़ुदा नहीं मगर एक **अल्लाह** तो क्या तुम मुसलमान होते हो फिर अगर वोह मुंह फेरें[190] तो फ़रमा दो

آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

मैं ने तुम्हें लड़ाई का ए'लान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं[191] कि पास है या दूर है वोह जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[192]

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِي

बेशक **अल्लाह** जानता है आवाज़ की बात[193] और जानता है जो तुम छुपाते हो[194] और मैं क्या जानूं

لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قَالَ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۗ وَ

शायद वोह[195] तुम्हारी जांच हो[196] और एक वक़्त तक बरत्वाना[197] नबी ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब ह़क़ फ़ैसला फ़रमा दे[198] और

رَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

हमारे रब रह़मान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो[199]

सूरए ह़ज्ज मदनिय्या है इस में अठत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

हैं कि आप की बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़सफ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए। तफ़्सीरे रूहुल बयान में इस आयत की तफ़्सीर में अकाबिर का येह क़ौल नक़्ल किया है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हम ने आप को नहीं भेजा मगर रह़मते मुत़्लक़ा, ताम्मा, कामिला, आ़म्मा, शामिला, जामिआ़, मुह़ीत़ा ब जमीअ़ मुक़य्यदात, रह़मते ग़ैबिया व शहादते इल्मिय्या व ऐनिया व वुजूदिया व शुहूदिया व साबिक़ा व लाह़िक़ा وغیرذالک तमाम जहानों के लिये आ़लमे अरवाह़ हों या आ़लमे अज्साम ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल और जो तमाम आ़लमों के लिये रह़मत हो लाज़िम है कि वोह तमाम जहान से अफ़्ज़ल हो। **190 :** और इस्लाम न लाएं **191 :** बे ख़ुदा के बताए। या'नी येह बात अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नहीं है। यहां दिरायत की नफ़ी फ़रमाई गई "दिरायत" कहते हैं अन्दाज़े और क़ियास से जानने को जैसा कि मुफ़रदाते राग़िब और रद्दुल मुह़तार में है, इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला के वासित़े लफ़्ज़ "दिरायत" इस्ति'माल नहीं किया जाता और क़ुरआने करीम के इत़्लाक़ात इस पर दलालत करते हैं जैसा कि फ़रमाया مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ लिहाज़ा यहां बे ता'लीमे इलाही मह़ज़ अपने अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि मुत़्लक़ इ़ल्म की और मुत़्लक़ इ़ल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जब कि इसी रुकूअ़ के अव्वल में आ चुका है وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ या'नी क़रीब आया सच्चा वा'दा, तो कैसे कहा जा सकता है कि वा'दे का क़ुर्ब व बो'द किसी त़रह़ मा'लूम नहीं, ख़ुलासा येह है कि अपने अ़क़्लो क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि ता'लीमे इलाही से जानने की। **192 :** अ़ज़ाब का या क़ियामत का। **193 :** जो ऐ कुफ़्फ़ार तुम ए'लान के साथ इस्लाम पर ब त़रीक़े त़ा'न कहते हो **194 :** अपने दिलों में या'नी नबी की अ़दावत और मुसल्मानों से ह़सद जो तुम्हारे दिलों में पोशीदा है **अल्लाह** उस को भी जानता है सब का बदला देगा। **195 :** या'नी दुन्या में अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना **196 :** जिस से तुम्हारा ह़ाल ज़ाहिर हो जाए। **197 :** या'नी वक़्ते मौत तक। **198 :** मेरे और उन के दरमियान जो मुझे झुटलाते हैं, इस त़रह़ कि मेरी मदद कर और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और कुफ़्फ़ार बद्र व अह़ज़ाब व ह़ुनैन वग़ैरा में मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। **199 :** शिर्क व कुफ़्र और बे ईमानी की। **1 :** सूरए ह़ज्ज बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا व मुजाहिद मक्किय्या है सिवाए छ[6] आयतों के जो هٰذٰنِ خَصْمٰنِ से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दस रुकूअ़ और अठत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो इकानवे कलिमात

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِیْمٌ ① یَوْمَ

ऐ लोगो ! अपने रब से डरो[2] बेशक क़ियामत का ज़ल्ज़ला[3] बड़ी सख़्त चीज़ है जिस दिन

تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ

तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली[4] अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभनी[5] अपना गाभ डाल

حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ

देगी[6] और तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में हैं और वोह नशे में न होंगे[7] मगर है येह कि अल्लाह की मार

شَدِیْدٌ ② وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ یَتَّبِعُ كُلَّ

कड़ी है और कुछ लोग वोह हैं कि अल्लाह के मुआमले में झगड़ते हैं बे जाने बूझे और हर सरकश शैतान

شَیْطٰنٍ مَّرِیْدٍ ③ كُتِبَ عَلَیْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ یُضِلُّهٗ وَ یَهْدِیْهِ

के पीछे हो लेते हैं[8] जिस पर लिख दिया गया है कि जो इस की दोस्ती करेगा तो येह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे

اِلٰى عَذَابِ السَّعِیْرِ ④ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ

अज़ाबे दोज़ख़ की राह बताएगा[9] ऐ लोगो ! अगर तुम्हें क़ियामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो येह ग़ौर करो

فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ

कि हम ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[10] फिर पानी की बूंद से[11] फिर ख़ून की फटक से[12] फिर गोश्त की बोटी से

مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَیْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَیِّنَ لَكُمْ ؕ وَ نُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ

नक़्शा बनी और बे बनी[13] ताकि हम तुम्हारे लिये अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएं[14] और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें

और पांच हज़ार पछत्तर हर्फ़ हैं। **2 :** उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करो और उस की ताअ़त में मश्ग़ूल हो। **3 :** जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत आफ़्ताब के मग़रिब से तुलूअ़ होने के नज़्दीक वाक़ेअ़ होगा **4 :** उस की हैबत से **5 :** या'नी ह़म्ल वाली उस दिन के होल से **6 :** ह़म्ल साक़ित़ हो जाएंगे। **7 :** बल्कि अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से लोगों के होश जाते रहेंगे। **8 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के बारे में नाज़िल हुई जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां और क़ुरआन को पहलों के क़िस्से बताता था और मौत के बा'द उठाए जाने का मुन्किर था। **9 :** शैत़ान के इत्तिबाअ़ से ज़ज्र फ़रमाने के बा'द मुन्किरीने बअ़्स पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाई जाती है। **10 :** तुम्हारी नस्ल की अस्ल या'नी तुम्हारे जद्दे आ'ला ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **11 :** या'नी क़त़रए मनी से उन की तमाम ज़ुर्रिय्यत को। **12 :** कि नुत़्फ़ा ख़ूने ग़लीज़ हो जाता है। **13 :** या'नी मुसव्वर और ग़ैर मुसव्वर, बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया तुम लोगों का माद्दए पैदाइश मां के शिकम में चालीस रोज़ तक नुत़्फ़ा रहता है, फिर इतनी ही मुद्दत ख़ून बस्ता (जमा हुवा ख़ून) हो जाता है, फिर इतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की त़रह़ रहता है, फिर अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़ उस की उ़म्र उस के अ़मल उस का शक़ी या सई़द होना लिखता है, फिर उस में रूह़ फूंकता है (الحديث) अल्लाह तआ़ला इन्सान की पैदाइश इस त़रह़ फ़रमाता है और उस को एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल करता है, येह इस लिये बयान फ़रमाया गया **14 :** और तुम अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत व ह़िक्मत को जानो

إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا۟ أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنكُم

एक मुक़र्रर मीआ़द तक[15] फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा फिर[16] इस लिये कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो[17] और तुम में

مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ ٱلْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنۢ بَعْدِ

कोई पहले ही मर जाता है और कोई सब में निकम्मी उ़म्र तक डाला जाता है[18] कि जानने के बा'द

عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ

कुछ न जाने[19] और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई[20] फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई

وَرَبَتْ وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ۝٥ ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَ

और उभर आई और हर रौनक़ दार जोड़ा[21] उगा लाई[22] येह इस लिये है कि **अल्लाह** ही ह़क़ है[23] और

أَنَّهُۥ يُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝٦ وَأَنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ لَّا

येह कि वोह मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा और येह कि वोह सब कुछ कर सकता है और इस लिये कि क़ियामत आने वाली इस में

رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ ٱللَّهَ يَبْعَثُ مَن فِى ٱلْقُبُورِ ۝٧ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن

कुछ शक नहीं और येह कि **अल्लाह** उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं और कोई आदमी वोह है कि

يُجَٰدِلُ فِى ٱللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَٰبٍ مُّنِيرٍ ۝٨ ثَانِىَ عِطْفِهِۦ

अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इ़ल्म न कोई दलील और न कोई रोशन नविश्ता (तह़रीर)[24] ह़क़ से अपनी गरदन मोड़े हुए

لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ لَهُۥ فِى ٱلدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَنُذِيقُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ

ताकि **अल्लाह** की राह से बहका दे[25] उस के लिये दुन्या में रुस्वाई है[26] और क़ियामत के दिन हम उसे आग का

और अपनी इब्तिदाए पैदाइश के ह़ालात पर नज़र कर के समझ लो कि जो क़ादिरे बरह़क़ बेजान मिट्टी में इतने इन्क़िलाब कर के जानदार आदमी बना देता है वोह मरे हुए इन्सान को ज़िन्दा करे तो उस की क़ुदरत से क्या बईद। **15 :** या'नी वक़्ते विलादत तक। **16 :** तुम्हें उ़म्र देते हैं **17 :** और तुम्हारी अ़क़्ल व क़ुव्वत कामिल हो। **18 :** और उस को इतना बुढ़ापा आ जाता है कि अ़क़्लो ह़वास बजा नहीं रहते और ऐसा हो जाता है **19 :** और जो जानता हो वोह भूल जाए। इक्रिमा ने कहा : जो क़ुरआन की मुदावमत रखेगा इस ह़ालत को न पहुंचेगा। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला बअ़्स या'नी मरने के बा'द उठने पर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है। **20 :** ख़ुश्क बे गियाह। **21 :** या'नी हर क़िस्म का ख़ुशनुमा सब्ज़ा **22 :** येह दलीलें बयान फ़रमाने के बा'द नतीजा मुरत्तब फ़रमाया जाता है। **23 :** और येह जो कुछ ज़िक्र किया गया आदमी की पैदाइश और ख़ुश्क बे गियाह ज़मीन को सर सब्ज़ो शादाब कर देना उस के वुजूद व ह़िक्मत की दलीलें हैं इन से उस का वुजूद भी साबित होता है। **24 शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल वग़ैरा एक जमाअ़ते कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़ात में झगड़ा करते थे और उस की त़रफ़ ऐसे औसाफ़ की निस्बत करते थे जो उस की शान के लाइक़ नहीं। इस आयत में बताया गया कि आदमी को कोई बात बिग़ैर इ़ल्म और बे सनद व दलील के कहनी न चाहिये ख़ास कर शाने इलाही में और जो बात इ़ल्म वाले के ख़िलाफ़ बे इ़ल्मी से कही जाएगी वोह बात़िल होगी, फिर इस पर येह अन्दाज़ कि इसरार करे और बराहे तकब्बुर **25 :** और उस के दीन से मुन्ह़रिफ़ कर दे **26 :** चुनान्चे बद्र में वोह ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ क़त्ल हुवा।

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ

अ़ज़ाब चखाएंगे[27] येह उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा[28] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म

لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ

नहीं करता[29] और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं[30] फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई

خَيْرُ ۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا

जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच आ पड़ी[31] मुंह के बल पलट गए[32] दुन्या और आख़िरत

وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

दोनों का घाटा[33] येही है सरीह़ नुक़्सान[34] अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो

لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ ۚ يَدْعُوْا لَمَنْ

उन का बुरा भला कुछ न करे[35] येही है दूर की गुमराही ऐसे को पूजते हैं जिस

ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ

के नफ़्अ़ से[36] नुक़्सान की तवक़्क़ोअ़ ज़ियादा है[37] बेशक[38] क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा रफ़ीक़ बेशक अल्लाह

يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बाग़ों में जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ

नहरें रवां बेशक अल्लाह करता है जो चाहे[39] जो येह ख़याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी[40] की मदद न

27 : और उस से कहा जाएगा 28 : या'नी जो तू ने दुन्या में किया कुफ़्रो तक्ज़ीब। 29 : और किसी को बे जुर्म नहीं पकड़ता। 30 : इस में इत़्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उन्हें सबात व क़रार ह़ासिल नहीं होता शक व तरद्दुद में रहते हैं जिस त़रह़ पहाड़ के किनारे खड़ा हुवा शख़्स तज़ल्ज़ुल की ह़ालत में होता है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत आ'राबियों की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अत़राफ़ से आ कर मदीने में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे, उन की ह़ालत येह थी कि अगर वोह ख़ूब तन्दुरुस्त रहे और उन की दौलत बढ़ी और उन के बेटा हुवा तब तो कहते थे इस्लाम अच्छा दीन है इस में आ कर हमें फ़ाएदा हुवा और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ पेश आई मसलन बीमार हो गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जब से हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़्सान ही हुवा और दीन से फिर जाते थे। येह आयत उन के ह़क़ में नाज़िल हुई और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में सबात ही ह़ासिल नहीं हुवा, उन का ह़ाल येह है 31 : किसी क़िस्म की सख़्ती पेश आई 32 : मुरतद हो गए और कुफ़्र की त़रफ़ लौट गए। 33 : दुन्या का घाटा तो येह कि जो उन की उम्मीदें थीं वोह पूरी न हुईं और इरतिदाद की वज्ह से उन का ख़ून मुबाह़ हुवा और आख़िरत का घाटा हमेशा का अ़ज़ाब। 34 : वोह लोग मुरतद होने के बा'द बुत परस्ती करते हैं और 35 : क्यूं कि वोह बेजान है। 36 : या'नी जिस की परस्तिश के ख़याली नफ़्अ़ से उस को पूजने के 37 : या'नी अ़ज़ाबे दुन्या व आख़िरत की। 38 : वोह बुत 39 : फ़रमां बरदारों पर इन्आ़म और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब। 40 : ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।

فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ

फ़रमाएगा दुन्या[41] और आख़िरत में[42] तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आप को फांसी दे ले फिर देखे

هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿۱۵﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّ اَنَّ

कि उस का येह दाउं कुछ ले गया उस बात को जिस की उसे जलन है[43] और बात येही है कि हम ने येह क़ुरआन उतारा रोशन आयतें और येह कि

اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَ الصّٰبِـِٕيْنَ

अल्लाह राह देता है जिसे चाहे बेशक मुसल्मान और यहूदी और सितारा परस्त

وَ النَّصٰرٰى وَ الْمَجُوْسَ وَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا ۖۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ

और नसरानी और आतश परस्त और मुश्रिक बेशक अल्लाह इन सब में क़ियामत के दिन

الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۷﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ

फ़ैसला करेगा[44] बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है क्या तुम ने न देखा[45] कि अल्लाह के लिये सज्दा करते हैं

مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِى الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ

वोह जो आस्मानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चांद और तारे और

الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ

पहाड़ और दरख़्त और चौपाए[46] और बहुत आदमी[47] और बहुत वोह हैं जिन पर अ़ज़ाब

الْعَذَابُ ؕ وَ مَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا

मुक़र्रर हो चुका[48] और जिसे अल्लाह ज़लील करे[49] उसे कोई इ़ज़्ज़त देने वाला नहीं बेशक अल्लाह जो चाहे

يَشَآءُ ؕ۩ ﴿۱۸﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِىْ رَبِّهِمْ ۫ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

करे येह दो फ़रीक़ हैं[50] कि अपने रब में झगड़े[51] तो जो काफ़िर हुए

قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿۱۹﴾ۚ

उन के लिये आग के कपड़े बियोंते (काटे) गए हैं[52] और उन के सरों पर खौलता हुवा पानी डाला जाएगा[53]

السجدة ٢

41 : में उन के दीन को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर 42 : उन के दरजे बुलन्द कर के 43 : या'नी अल्लाह तआ़ला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा, जिसे उस से जलन हो वोह अपनी इन्तिहाई सअ्य ख़त्म कर दे और जलन में मर भी जाए तो भी कुछ नहीं कर सकता। 44 : मोमिनीन को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और कुफ़्फ़ार को किसी क़िस्म के भी हों जहन्नम में दाख़िल करेगा। 45 : ऐ ह़बीबे अकरम ! صلى الله تعالى عليه وسلم 46 : सज्दए ख़ुज़ूअ़ जैसा अल्लाह चाहे। 47 : या'नी मोमिनीन, मज़ीद बरआं सज्दए त़ाअ़त व इ़बादत भी। 48 : या'नी कुफ़्फ़ार। 49 : उस की शक़ावत के सबब 50 : या'नी मोमिनीन और पांचों क़िस्म के कुफ़्फ़ार जिन का ज़िक्र ऊपर किया गया है। 51 : या'नी उस के दीन के बारे में और उस की सिफ़ात में 52 : या'नी आग उन्हें हर त़रफ़ से घेर लेगी 53 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِیْ بُطُوْنِهِمْ وَ الْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ وَ لَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِیْدٍ ﴿٢١﴾

जिस से गल जाएगा जो कुछ उन के पेटों में है और उन की खालें[54] और उन के लिये लोहे के गुर्ज़ हैं[55]

كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ یَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِیْدُوْا فِیْهَا ۗ وَ ذُوْقُوْا

जब घुटन के सबब उस में से निकलना चाहेंगे[56] फिर उस में लौटा दिये जाएंगे और हुक्म होगा कि चखो

عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ یُدْخِلُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

आग का अज़ाब बेशक **अल्लाह** दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

बिहिश्तों में जिन के नीचे नहरें बहें उस में पहनाए जाएंगे सोने के कंगन

وَّ لُؤْلُؤًا ؕ وَ لِبَاسُهُمْ فِیْهَا حَرِیْرٌ ﴿٢٣﴾ وَ هُدُوْۤا اِلَى الطَّیِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚۖ

और मोती[57] और वहां उन की पोशाक रेशम है[58] और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई[59]

وَ هُدُوْۤا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِیْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ یَصُدُّوْنَ عَنْ

और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई[60] बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रोकते हैं

سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِیْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨ الْعَاكِفُ

अल्लाह की राह[61] और उस अदब वाली मस्जिद से[62] जिसे हम ने सब लोगों के लिये मुक़र्रर किया कि उस में एक सा हक़ है वहां के रहने वाले

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया ऐसा तेज़ गर्म कि उस का एक क़तरा दुन्या के पहाड़ों पर डाल दिया जाए तो उन को गला डाले। **54 :** हदीस शरीफ़ में है : फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा। (ترمذی) **55 :** जिन से उन को मारा जाएगा। **56 :** या'नी दोज़ख़ में से तो गुर्ज़ों से मार कर **57 :** ऐसे जिन की चमक मशरिक़ से मग़रिब तक रोशन कर डाले। (ترمذی) **58 :** जिस का पहनना दुन्या में मर्दों को हराम है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है : सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने दुन्या में रेशम पहना आख़िरत में न पहनेगा। **59 :** या'नी दुन्या में। और पाकीज़ा बात से कलिमए तौहीद मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा क़ुरआन मुराद है। **60 :** या'नी **अल्लाह** का दीने इस्लाम। **61 :** या'नी उस के दीन और उस की इताअत से **62 :** या'नी उस में दाख़िल होने से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत सुफ़्यान बिन हर्ब वग़ैरा के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था। मस्जिदे हराम से या ख़ास का'बए मुअ़ज़्ज़मा मुराद है जैसा कि इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि वोह तमाम लोगों का क़िब्ला है वहां के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं सब के लिये इस की ता'ज़ीम व हुरमत और इस में अदाए मनासिके हज यक्सां है और तवाफ़ व नमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं। और इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के नज़्दीक यहां मस्जिदे हराम से मक्कए मुकर्रमा या'नी जमीअ़ हरम मुराद है। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि हरम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिये यक्सां है, इस में रहने और ठहरने का सब किसी को हक़ है बजुज़ इस के कि कोई किसी को निकाले नहीं, इसी लिये इमाम साहिब मक्कए मुकर्रमा की अराज़ी की बैअ़ और इस के किराए को मन्अ़ फ़रमाते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मक्कए मुकर्रमा हराम है इस की अराज़ी फ़रोख़्त न की जाएं। (تفسیر احمدی)

فِيْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾

और परदेसी का और जो इस में किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे[63]

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ

और जब कि हम ने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया[64] और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर

بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ

सुथरा रख[65] तवाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ सज्दे वालों के लिये[66] और लोगों में हज की आ़म

بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

निदा कर दे[67] वोह तेरे पास हाज़िर होंगे पियादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं[68]

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْۤ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا

ताकि वोह अपना फ़ाएदा पाएं[69] और अल्लाह का नाम लें[70] जाने हुए दिनों में[71] इस पर कि

رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ

उन्हें रोज़ी दी बे ज़बान चौपाए[72] तो उन में से खुद खाओ और मुसीबत ज़दा मोहताज

63 : اِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ नाहक़ ज़ियादती से या शिर्क व बुत परस्ती मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि हर मम्नूअ़ क़ौल व फ़े'ल मुराद है हत्ता कि ख़ादिम को गाली देना भी। बा'ज़ ने कहा इस से मुराद है ह़रम में बिग़ैर एह़राम के दाख़िल होना या मम्नूआ़ते ह़रम का इरतिकाब करना मिस्ल शिकार मारने और दरख़्त काटने के और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया मुराद येह है कि जो तुझे न क़त्ल करे तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर ज़ुल्म न करे तू उस पर ज़ुल्म करे। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से मरवी है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाजिर था दूसरा अन्सारी, उन लोगों ने अपने अपने मुफ़ाख़रे नसब बयान किये तो अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस को ग़ुस्सा आया और उस ने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और खुद मुरतद हो कर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ भाग गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **64 :** ता'मीरे का'बा शरीफ़ के वक़्त पहले इमारते का'बा ह़ज़रते आदम علیہ الصلوۃ والسلام ने बनाई थी और तूफ़ाने नूह़ के वक़्त वोह आस्मान पर उठा ली गई अल्लाह तआ़ला ने एक हवा मुक़र्रर की जिस ने उस की जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने एक अब्र भेजा जो ख़ास उस बुक़्ए (ज़मीन के टुकड़े) के मुक़ाबिल था जहां का'बए मुअ़ज़्ज़मा की इमारत थी, इस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम علیہ السلام को का'बा शरीफ़ की जगह बताई गई और आप ने उस की क़दीम बुन्याद पर इमारते का'बा ता'मीर की और अल्लाह तआ़ला ने आप को वह्य फ़रमाई। **65 :** शिर्क से और बुतों से और हर क़िस्म की नजासतों से **66 :** या'नी नमाज़ियों के लिये। **67 :** चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम علیہ السلام ने अबू क़ुबैस पहाड़ पर चढ़ कर जहान के लोगों को निदा कर दी कि बैतुल्लाह का ह़ज करो। जिन के मक़्दूर में ह़ज है उन्हों ने बापों की पुश्तों और माओं के पेटों से जवाब दिया لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ। ह़सन رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है कि इस आयत में اَذِّنْ का ख़िताब सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को है, चुनान्चे ह़ज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमा दिया और इर्शाद किया कि ऐ लोगो अल्लाह ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया तो ह़ज करो। **68 :** और कस्रते सैर व सफ़र से दुबली हो जाती हैं। **69 :** दीनी भी दुन्यवी भी जो इस इबादत के साथ ख़ास हैं दूसरी इबादत में नहीं पाए जाते। **70 :** वक़्ते ज़ब्ह़। **71 :** जाने हुए दिनों से ज़िल ह़िज्जा का अ़शरा मुराद है (या'नी पहले दस दिन) जैसा कि ह़ज़रते अ़ली और इब्ने अ़ब्बास व ह़सन व क़तादा رضی اللہ تعالیٰ عنہم का क़ौल है और येही मज़हब है हमारे इमामे आ'ज़म ह़ज़रते अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ का। और साहि़बैन के नज़्दीक जाने हुए दिनों से अय्यामे नह़्र (दस, ग्यारह, बारह ज़िल ह़िज्जा) मुराद हैं येह क़ौल है ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ تعالیٰ عنہما का और हर तक़्दीर पर यहां उन दिनों से ख़ास रोज़े ईद मुराद है। (تفسیر احمدی) **72 :** ऊंट, गाय, बकरी, भेड़।

الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ

को खिलाओ[73] फिर अपना मैल कुचैल उतारें[74] और अपनी मन्नतें पूरी करें[75] और उस आज़ाद घर का

الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ

त़वाफ़ करें[76] बात येह है और जो अल्लाह की हुरमतों की ता'ज़ीम करे[77] तो वोह उस के लिये उस के रब के यहां भला है और

أُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ

तुम्हारे लिये ह़लाल किये गए बे ज़बान चौपाए[78] सिवा उन के जिन की मुमानअ़त तुम पर पढ़ी जाती है[79] तो दूर हो बुतों की

الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَ

गन्दगी से[80] और बचो झूटी बात से एक अल्लाह के हो कर कि उस का साझी (शरीक) किसी को न करो और

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ

जो अल्लाह का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परिन्दे उसे उचक ले जाते हैं[81] या हवा

بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا

उसे किसी दूर जगह फेंकती है[82] बात येह है और जो अल्लाह के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह

مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ

दिलों की परहेज़ गारी से है[83] तुम्हारे लिये चौपायों में फ़ाएदे हैं[84] एक मुक़र्रर मीआ़द तक[85] फिर उन का पहुंचना है

اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ ع وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ

उस आज़ाद घर तक[86] और हर उम्मत के लिये[87] हम ने एक कुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि अल्लाह का नाम लें

73 : तत़व्वोअ़ और मुतआ़ व क़िरान व हर एक हदी से जिन का इस आयत में बयान है खाना जाइज़ है, बाक़ी हदाया से जाइज़ नहीं। (تفسیر احمدی و مدارک) 74 : मूंछें कतरवाएं नाखुन तराशें बग़लों और ज़ेरे नाफ़ के बाल दूर करें। 75 : जो इन्हों ने मानी हों। 76 : इस से त़वाफ़े ज़ियारत मुराद है। मसाइले ह़ज बित्तफ़्सील सूरए बक़र पारह दो में ज़िक्र हो चुके। 77 : या'नी उस के अह़काम की ख़्वाह वोह मनासिके ह़ज हों या इन के सिवा और अह़काम। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से मनासिके ह़ज मुराद लिये हैं और बा'ज़ ने बैते ह़राम व मश्अ़रे ह़राम व शहरे ह़राम व बलदे ह़राम व मस्जिदे ह़राम मुराद लिये हैं। 78 : कि उन्हें ज़ब्ह़ कर के खाओ। 79 : क़ुरआने पाक में जैसे कि सूरए माइदह की आयत حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ में बयान फ़रमाई गई। 80 : जिन की परस्तिश करना बद तरीन गन्दगी से आलूदा होना है। 81 : और बोटी बोटी कर के खा जाते हैं 82 : मुराद येह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बद तरीन हलाकत में डालता है। ईमान को बुलन्दी में आस्मान से तश्बीह दी गई और ईमान तर्क करने वाले को आस्मान से गिरने वाले के साथ और उस की ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को जो उस की फ़िक्रों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परिन्दे के साथ और शयात़ीन को जो उस को वादिये ज़लालत में फेंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और इस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया। 83 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि شعائر اللہ से मुराद बुदने और हदाया हैं और इन की ता'ज़ीम येह है कि फ़र्बा ख़ूब सूरत क़ीमती लिये जाएं। 84 : वक़्ते ज़रूरत इन पर सुवार होने और वक़्ते ह़ाजत इन के दूध पीने के 85 : या'नी उन के ज़ब्ह़ के वक़्त तक। 86 : या'नी ह़रम शरीफ़ तक जहां वोह ज़ब्ह़ किये जाएं। 87 : पिछली ईमानदार उम्मतों में से।

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ

उस के दिये हुए बे ज़बान चौपायों पर[88] तो तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[89] तो उसी के हुज़ूर गरदन रखो[90]

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ

और ऐ महबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को कि जब **अल्लाह** का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं[91] और

الصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

जो उफ़्ताद पड़े उस के सहने वाले और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च

يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ

करते हैं[92] और क़ुरबानी के डीलदार (भारी जसामत वाले) जानवर ऊंट और गाय हम ने तुम्हारे लिये **अल्लाह** की निशानियों से किये[93] तुम्हारे लिये उन में भलाई है[94]

فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ

तो उन पर **अल्लाह** का नाम लो[95] एक पाउं बंधे तीन पाउं से खड़े[96] फिर जब उन की करवटें गिर जाएं[97] तो उन में से ख़ुद खाओ[98] और

اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾

सब्र से बैठने वाले और भीक मांगने वाले को खिलाओ हम ने यूंही उन को तुम्हारे बस में दे दिया कि तुम एह्सान मानो

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ

अल्लाह को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़ गारी उस तक बारयाब होती है[99]

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ

यूंही उन को तुम्हारे बस में कर दिया कि तुम **अल्लाह** की बड़ाई बोलो इस पर कि तुम को हिदायत फ़रमाई और ऐ महबूब ख़ुश ख़बरी सुनाओ

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

नेकी वालों को[100] बेशक **अल्लाह** बलाएं टालता है मुसल्मानों की[101] बेशक **अल्लाह** दोस्त

88 : उन के ज़ब्ह के वक़्त। **89 :** तो ज़ब्ह के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो, इस आयत में दलील है इस पर कि नाम ख़ुदा का ज़िक्र करना ज़ब्ह के लिये शर्त है। **अल्लाह** तआ़ला ने हर एक उम्मत के लिये मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि उस के लिये ब त़रीके़ तक़र्रुब क़ुरबानी करें और तमाम क़ुरबानियों पर उसी का नाम लिया जाए। **90 :** और इख़्लास के साथ उस की इत़ाअ़त करो। **91 :** उस के हैबतो जलाल से। **92 :** या'नी सदक़ा देते हैं। **93 :** या'नी उस के आ'लामे दीन से। **94 :** दुन्या में नफ़्अ़ और आख़िरत में अज्रो सवाब। **95 :** उन के ज़ब्ह के वक़्त जिस हा़ल में कि वोह हों **96 :** ऊंट के ज़ब्ह का येही मस्नून त़रीक़ा है। **97 :** या'नी बा'दे ज़ब्ह उन के पहलू ज़मीन पर गिरें और उन की ह़रकत साकिन हो जाए **98 :** अगर तुम चाहो। **99 :** या'नी क़ुरबानी करने वाले सिर्फ़ निय्यत के इख़्लास और शुरूते़ तक़्वा की रिआ़यत से **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी कर सकते हैं। **शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत के कुफ़्फ़ार अपनी क़ुरबानियों के ख़ून से का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारों को आलूदा करते थे और इस को सबबे तक़र्रुब जानते थे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **100 :** सवाब की। **101 :** और उन की मदद फ़रमाता है।

يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ

नहीं रखता हर बड़े दग़ाबाज़ नाशुक्रे को[102] परवानगी [इजाज़त] अ़ता हुई उन्हें जिन से काफ़िर लड़ते हैं[103] इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुवा[104] और

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ

बेशक अल्लाह उन की मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है वोह जो अपने घरों से नाहक़

حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

निकाले गए[105] सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है[106] और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दूसरे से

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَ بِيَعٌ وَّ صَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ

दफ़्अ़ न फ़रमाता[107] तो ज़रूर ढा दी जातीं ख़ानक़ाहें[108] और गिरजा[109] और कलीसा[110] और मस्जिदें[111] जिन में अल्लाह का ब कसरत

اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾

नाम लिया जाता है और बेशक अल्लाह ज़रूर मदद फ़रमाएगा उस की जो उस के दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर अल्लाह क़ुदरत वाला ग़ालिब है

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ

वोह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें[112] तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और

اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ وَ

भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें[113] और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अन्जाम और

اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّ ثَمُوْدُ ۙ﴿۴۲﴾ وَقَوْمُ

अगर येह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं[114] तो बेशक इन से पहले झुटला चुकी है नूह़ की क़ौम और आ़द[115] और समूद[116] और इब्राहीम

102 : या'नी कुफ़्फ़ार को जो अल्लाह और उस के रसूल की ख़ियानत और ख़ुदा की ने'मतों की नाशुक्री करते हैं। **103 :** जिहाद की। **104 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे मक्का अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وسلم को रोज़मर्रा हाथ और ज़बान से शदीद ईज़ाएं देते और आज़ार पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है किसी का हाथ टूटा है किसी का पाउं बंधा हुवा है, रोज़मर्रा इस क़िस्म की शिकायतें बारगाहे अक़्दस में पहुंचती थीं और अस्ह़ाबे किराम कुफ़्फ़ार के मज़ालिम की हुज़ूर के दरबार में फ़रियादें करते, हुज़ूर येह फ़रमा दिया करते कि सब्र करो मुझे अभी जिहाद का हुक्म नहीं दिया गया है, जब हुज़ूर ने मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई तब येह आयत नाज़िल हुई और येह वोह पहली आयत है जिस में कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है। **105 :** और बे वत़न किये गए **106 :** और येह कलाम ह़क़ है और ह़क़ पर घरों से निकालना और बे वत़न करना क़त्अ़न नाह़क़। **107 :** जिहाद की इजाज़त दे कर और ह़ुदूद क़ाइम फ़रमा कर तो नतीजा येह होता कि मुश्रिकीन का इस्तीला (क़ब्ज़ा) हो जाता और कोई दीनो मिल्लत वाला उन के दस्ते तअ़द्दी (ज़ुल्म) से न बचता। **108 :** राहिबों की **109 :** नसरानियों के **110 :** यहूदियों के **111 :** मुसल्मानों की **112 :** और उन के दुश्मनों के मुक़ाबिल उन की मदद फ़रमाएं **113 :** इस में ख़बर दी गई है कि आयिन्दा मुहाजिरीन को ज़मीन में तसर्रुफ़ अ़ता फ़रमाने के बा'द उन की सीरतें ऐसी पाकीज़ा रहेंगी और वोह दीन के कामों में इख़्लास के साथ मश्ग़ूल रहेंगे। इस में ख़ुलफ़ाए राशिदीन महदिय्यीन के अ़द्ल और उन के तक़्वा व परहेज़ गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तम्कीन व ह़ुकूमत अ़ता फ़रमाई और सीरते आ़दिला अ़ता की। **114 :** ऐ ह़बीबे अकरम ! صلى الله تعالى عليه وسلم **115 :** ह़ज़रते हूद की क़ौम **116 :** ह़ज़रते सालेह़ की क़ौम।

اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝۴۳ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ

की क़ौम और लूत़ की क़ौम और मद्‌यन वाले[117] और मूसा की तक्ज़ीब हुई[118] तो मैं ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝۴۴ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

को ढील दी[119] फिर उन्हें पकड़ा[120] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब[121] और कितनी ही बस्तियां हम ने

اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ

खपा दीं[122] कि वोह सितमगार थीं[123] तो अब वोह अपनी छतों पर ढई (गिरी) पड़ी हैं और कितने कूंएं बेकार पड़े[124] और कितने मह़ल

مَّشِيْدٍ ۝۴۵ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ

गच किये हुए[125] तो क्या ज़मीन में न चले[126] कि उन के दिल हों जिन से समझें[127]

بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى

या कान हों जिन से सुनें[128] तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं[129] बल्कि वोह दिल

الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝۴۶ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ

अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं[130] और येह तुम से अ़ज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं[131] और अल्लाह

يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا

हरगिज़ अपना वा'दा झूटा न करेगा[132] और बेशक तुम्हारे रब के यहां[133] एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की

تَعُدُّوْنَ ۝۴۷ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ

गिनती में हज़ार बरस[134] और कितनी बस्तियां कि हम ने उन को ढील दी इस ह़ाल पर कि वोह सितमगार थीं फिर मैं ने उन्हें पकड़ा[135]

117 : या'नी ह़ज़रते शुऐ़ब की क़ौम। 118 : यहां मूसा की क़ौम न फ़रमाया क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम बनी इसराईल ने आप की तक्ज़ीब न की थी बल्कि फ़िरऔ़न की क़ौम क़िब्त़ियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की थी। इन क़ौमों का तज़्किरा और हर एक के अपने रसूल की तक्ज़ीब करने का बयान सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तस्कीने ख़ात़िर (दिली तसल्ली) के लिये है कि कुफ़्फ़ार का येह क़दीमी त़रीक़ा है पिछले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है। 119 : और उन के अ़ज़ाब में ताख़ीर की और उन्हें मोहलत दी 120 : और उन के कुफ़्रो सरकशी की सज़ा दी 121 : आप की तक्ज़ीब करने वालों को चाहिये कि अपने अन्जाम को सोचें और इ़ब्रत ह़ासिल करें। 122 : और वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया 123 : या'नी वहां के रहने वाले काफ़िर थे। 124 : कि उन से कोई पानी भरने वाला नहीं 125 : वीरान पड़े हैं। 126 : कुफ़्फ़ार कि इन ह़ालात का मुशाहदा करें 127 : कि अम्बिया की तक्ज़ीब का क्या अन्जाम हुवा और इ़ब्रत ह़ासिल करें। 128 : पिछली उम्मतों के ह़ालात और उन का हलाक होना और उन की बस्तियों की वीरानी कि इस से इ़ब्रत ह़ासिल हो। 129 : या'नी कुफ़्फ़ार की ज़ाहिरी ह़िस बात़िल नहीं हुई है वोह इन आंखों से देखने की चीज़ें देखते हैं। 130 : और दिलों ही का अन्धा होना ग़ज़ब है इसी लिये आदमी दीन की राह पाने से मह़रूम रहता है। 131 : या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का मिस्ल नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा के और येह जल्दी करना उन का इस्तिहज़ा के त़रीक़े पर था। 132 : और ज़रूर ह़स्बे वा'दा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा। चुनान्चे येह वा'दा बद्र में पूरा हवा। 133 : आख़िरत में अ़ज़ाब का 134 : तो येह कुफ़्फ़ार क्या समझ कर अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। 135 : और दुन्या में उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया।

وَ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿۴۸﴾ قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۴۹﴾

और मेरी ही त़रफ़ पलट कर आना है[136] तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! मैं तो येही तुम्हारे लिये सरीह़ डर सुनाने वाला हूं

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ ﴿۵۰﴾ وَ

तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[137] और

الَّذِیْنَ سَعَوْا فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۵۱﴾ وَ مَاۤ

वोह जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादे से[138] वोह जहन्नमी हैं और

اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّ لَا نَبِیٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّیْطٰنُ

हम ने तुम से पहले जितने रसूल या नबी भेजे[139] सब पर येह वाक़िआ़ गुज़रा है कि जब उन्हों ने पढ़ा तो शैत़ान ने उन के पढ़ने में लोगों

فِیْۤ اُمْنِیَّتِهٖ ۚ فَیَنْسَخُ اللّٰهُ مَا یُلْقِی الشَّیْطٰنُ ثُمَّ یُحْكِمُ اللّٰهُ اٰیٰتِهٖ ؕ وَ

पर कुछ अपनी त़रफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है **अल्लाह** उस शैत़ान के डाले हुए को फिर **अल्लाह** अपनी आयतें पक्की कर देता है[140] और

اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۵۲﴾ لِّیَجْعَلَ مَا یُلْقِی الشَّیْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ فِیْ

अल्लाह इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है ताकि शैत़ान के डाले हुए को फ़ित्ना कर दे[141] उन के लिये

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْقَاسِیَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ لَفِیْ شِقَاقٍۭ

जिन के दिलों में बीमारी है[142] और जिन के दिल सख़्त हैं[143] और बेशक सितमगार[144] धुर के (इन्तिहाई सख़्त)

بَعِیْدٍ ﴿۵۳﴾ وَّ لِیَعْلَمَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَیُؤْمِنُوْا

झगड़ालू हैं और इस लिये कि जान लें वोह जिन को इ़ल्म मिला है[145] कि वोह[146] तुम्हारे रब के पास से ह़क़ है तो उस पर ईमान लाएं

بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ

तो झुक जाएं उस के लिये उन के दिल और बेशक **अल्लाह** ईमान वालों को सीधी राह

136 : आख़िरत में। 137 : जो कभी मुन्क़त़अ़ न हो वोह जन्नत है। 138 : कि कभी इन आयात को सेह़्र कहते हैं कभी शे'र कभी पिछलों के क़िस्से और वोह येह ख़याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उन का येह मक्र चल जाएगा। 139 : नबी और रसूल में फ़र्क़ है नबी आ़म है और रसूल ख़ास। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि रसूल शरअ़ के वाज़ेअ़ होते हैं और नबी इस के ह़ाफ़िज़ और निगहबान। **शाने नुज़ूल :** जब सूरए वन्नज्म नाज़िल हुई तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे ह़राम में इस की तिलावत फ़रमाई और बहुत आहिस्ता आहिस्ता आयतों के दरमियान वक़्फ़ा फ़रमाते हुए जिस से सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले, जब आप ने आयत وَ مَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى पढ़ कर ह़स्बे दस्तूर वक़्फ़ा फ़रमाया तो शैत़ान ने मुशरिकीन के कान में इस से मिला कर दो कलिमे ऐसे कह दिये जिन से बुतों की ता'रीफ़ निकलती थी। जिब्रीले अमीन ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस से ह़ुज़ूर को रन्ज हुवा। **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तसल्ली के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई। 140 : जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और उन्हें शैत़ानी कलिमात के ख़ल्त़ से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है। 141 : और इब्तिला व आज़्माइश बना दे 142 : शक और निफ़ाक़ की। 143 : ह़क़ को क़बूल नहीं करते और येह मुशरिकीन हैं। 144 : या'नी मुशरिकीन व

مُّسْتَقِيمٍ ۝٥٤ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ

चलाने वाला है और काफ़िर उस से[147] हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उन पर

السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝٥٥ الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ

क़ियामत आ जाए अचानक[148] या उन पर ऐसे दिन का अ़ज़ाब आए जिस का फल उन के लिये कुछ अच्छा न हो[149] बादशाही उस दिन[150]

لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ

अल्लाह ही की है वोह उन में फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और[151] अच्छे काम किये वोह चैन के

النَّعِيمِ ۝٥٦ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

बाग़ों में हैं और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं उन के लिये ज़िल्लत का

مُّهِينٌ ۝٥٧ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا

अ़ज़ाब है और वोह जिन्हों ने अल्लाह की राह में अपने घरबार छोड़े[152] फिर मारे गए या मर गए

لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝٥٨

तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा[153] और बेशक अल्लाह की रोज़ी सब से बेहतर है

لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝٥٩ ذَٰلِكَ ۖ وَ

ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वोह पसन्द करेंगे[154] और बेशक अल्लाह इल्म और हिल्म वाला है बात येह है और

مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ

जो बदला ले[155] जैसी तक्लीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उस पर ज़ियादती की जाए[156] तो बेशक अल्लाह उस की मदद फ़रमाएगा[157] बेशक अल्लाह

मुनाफ़िक़ीन। **145 :** अल्लाह के दीन का और उस की आयात का। **146 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **147 :** या'नी कुरआन से या दीने इस्लाम से **148 :** या मौत कि वोह भी क़ियामते सुग़रा है। **149 :** इस से बद्र का दिन मुराद है जिस में काफ़िरों के लिये कुछ कशाइश व राहत न थी। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस से रोज़े क़ियामत मुराद है। **150 :** या'नी क़ियामत के दिन **151 :** उन्हों ने **152 :** और उस की रिज़ा के लिये अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को छोड़ कर वतन से निकले और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए तय्यिबा की त़रफ़ हिजरत की **153 :** या'नी रिज़्क़े जन्नत जो कभी मुन्क़त़अ़ न हो। **154 :** वहां उन की हर मुराद पूरी होगी और कोई ना गवार बात पेश न आएगी। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से आप के बा'ज़ अस्हाब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हमारे जो अस्हाब शहीद हो गए हम जानते हैं कि बारगाहे इलाही में उन के बड़े दरजे हैं और हम जिहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे लेकिन अगर हम आप के साथ रहे और बे शहादत के मौत आई तो आख़िरत में हमारे लिये क्या है ? इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं "وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ"। **155 :** कोई मोमिन ज़ुल्म का मुश्रिक से **156 :** ज़ालिम की त़रफ़ से उस को बे वतन कर के **157 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के हक़ में नाज़िल हुई जो माहे मुहर्रम की अख़ीर तारीख़ों में मुसल्मानों पर हम्ला आवर हुए और मुसल्मानों ने माहे मुबारक की हुरमत के ख़याल से लड़ना न चाहा मगर मुश्रिक न माने और उन्हों ने क़िताल शुरूअ़ कर दिया मुसल्मान उन के मुक़ाबिल साबित रहे अल्लाह तआ़ला ने उन की मदद फ़रमाई।

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٦٠ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

मुआ़फ़ करने वाला बख़्शने वाला है येह[158] इस लिये कि अल्लाह तआ़ला रात को डालता है दिन के हिस्से में और दिन को लाता है

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ۝٦١ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا

रात के हिस्से में[159] और इस लिये कि अल्लाह सुनता देखता है येह इस लिये[160] कि अल्लाह ही ह़क़ है और उस के

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٦٢ اَلَمْ تَرَ

सिवा जिसे पूजते हैं[161] वोही बातिल है और इस लिये कि अल्लाह ही बुलन्दी बड़ाई वाला है क्या तू ने न देखा

اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ

कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा तो सुब्ह़ को ज़मीन[162] हरियाली (हरी भरी) हो गई बेशक

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝٦٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह पाक ख़बरदार है उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह

لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦٤ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ

ही बे नियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है[163]

وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى

और किश्ती कि दरिया में उस के हुक्म से चलती है[164] और वोह रोके हुए है आस्मान को कि ज़मीन पर

الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٥ وَهُوَ الَّذِيْۤ

न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर (रह़मत) वाला मेह्रबान है[165] और वोही है जिस ने

اَحْيَاكُمْ ۫ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝٦٦ لِكُلِّ

तुम्हें ज़िन्दा किया[166] फिर तुम्हें मारेगा[167] फिर तुम्हें जिलाएगा[168] बेशक आदमी बड़ा नाशुक्रा है[169] हर

158 : या'नी मज़्लूम की मदद फ़रमाना इस लिये है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर है और उस की क़ुदरत की निशानियां ज़ाहिर हैं। **159 :** या'नी कभी दिन को बढ़ाता रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है, उस के सिवा कोई इस पर क़ुदरत नहीं रखता, जो ऐसा क़ुदरत वाला है वोह जिस की चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहे ग़ालिब करे। **160 :** या'नी और येह मदद इस लिये भी है **161 :** या'नी बुत **162 :** सब्ज़े से **163 :** जानवर वग़ैरा जिन पर तुम सुवार होते हो और जिस से तुम काम लेते हो। **164 :** तुम्हारे लिये इस के चलाने के वासिते़ हवा और पानी को मुसख़्ख़र किया। **165 :** कि उस ने उन के लिये मन्फ़अ़तों के दरवाज़े खोले और त़रह़ त़रह़ की मज़र्रतों से उन को मह़फ़ूज़ किया। **166 :** बेजान नुत़्फ़े से पैदा फ़रमा कर **167 :** तुम्हारी उ़म्रें पूरी होने पर **168 :** रोज़े बअ़्स सवाब व अ़ज़ाब के लिये। **169 :** कि बा वुजूद इतनी ने'मतों के उस की इ़बादत से मुंह फेरता है और बेजान मख़्लूक़ की परस्तिश करता है।

أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ

उम्मत के लिये[170] हम ने इबादत के क़ाइदे बना दिये कि वोह उन पर चले[171] तो हरगिज़ वोह तुम से इस मुआमले में झगड़ा न करें[172] और अपने रब

رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾ وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ

की तरफ़ बुलाओ[173] बेशक तुम सीधी राह पर हो और अगर वोह[174] तुम से झगड़ें तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है

بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ

तुम्हारे कौतक (करतूत) अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात में

تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हो[175] क्या तू ने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है बेशक

ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ

येह सब एक किताब में है[176] बेशक येह[177] अल्लाह पर आसान है[178] और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते

اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ

हैं[179] जिन की कोई सनद उस ने न उतारी और ऐसों को जिन का ख़ुद उन्हें कुछ इल्म नहीं[180] और सितमगारों का[181]

مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ

कोई मददगार नहीं[182] और जब उन पर हमारी रोशन आयतें पढ़ी जाएं[183] तो तुम उन के चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखोगे

كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ

जिन्हों ने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उन को जो हमारी आयतें उन पर पढ़ते हैं

قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ ۖ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ

तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे इस हाल से भी[184] बदतर है वोह आग है अल्लाह ने इस का वा'दा दिया है काफ़िरों को

170 : अहले दीन व मिलल में से। 171 : और आ़मिल हो। 172 : या'नी अम्रे दीन में या ज़बीह़ा के अम्र में। **शाने नुज़ूल :** येह आयत बुदैल इब्ने वरक़ा और बिशर बिन सुफ़्यान और यज़ीद इब्ने ख़ुनैस के ह़क़ में नाज़िल हुई। इन लोगों ने अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था क्या सबब है जिस जानवर को तुम ख़ुद क़त्ल करते हो उसे तो खाते हो और जिस को अल्लाह मारता है उस को नहीं खाते ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 173 : और लोगों को उस पर ईमान लाने और उस का दीन क़बूल करने और उस की इबादत में मश्ग़ूल होने की दा'वत दो। 174 : बा वुजूद तुम्हारे त़रह़ देने के भी 175 : और तुम पर ह़क़ीक़ते ह़ाल ज़ाहिर हो जाएगी। 176 : या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़ में। 177 : या'नी इन सब का इल्म या तमाम ह़वादिस का लौहे़ मह़फ़ूज़ में सब्त फ़रमाना 178 : इस के बा'द कुफ़्फ़ार की जहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वोह ऐसों की इबादत करते हैं जो इबादत के मुस्तह़िक़ नहीं। 179 : या'नी बुतों को 180 : या'नी उन के पास अपने इस फ़े'ल की न कोई दलीले अ़क़्ली है न नक़्ली, मह़ज़ जहल व नादानी से गुमराही में पड़े हुए हैं और जो किसी त़रह़ पूजे जाने के मुस्तह़िक़ नहीं उन को पूजते हैं, येह शदीद ज़ुल्म है। 181 : या'नी मुश्रिकीन का 182 : जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। 183 : और क़ुरआने करीम उन्हें सुनाया

وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ

और क्या ही बुरी पलटने की जगह ऐ लोगो ! एक कहावत फ़रमाई जाती है इसे कान लगा कर सुनो[185] वोह

الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ

जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो[186] एक मख्खी न बना सकेंगे अगर्चे सब इस पर इकठ्ठे हो जाएं[187]

وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ

और अगर मख्खी उन से कुछ छीन कर ले जाए[188] तो उस से छुड़ा न सकें[189] कितना कमज़ोर चाहने वाला

وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

और वोह जिस को चाहा[190] अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[191] बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ

अल्लाह चुन लेता है फ़िरिश्तों में से रसूल[192] और आदमियों में से[193] बेशक अल्लाह सुनता देखता है

بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ

जानता है जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है[194] और सब कामों की रुजूअ़ अल्लाह

الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ

की तरफ़ है ऐ ईमान वालो ! रुकूअ़ और सज्दा करो[195] और अपने रब की बन्दगी करो[196]

وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۩ ﴿٧٧﴾ وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ

और भले काम करो[197] इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का[198]

جाए जिस में बयाने अह़काम और तफ़्सीले ह़लाल व ह़राम है। **184 :** या'नी तुम्हारे इस ग़ैज़ व ना गवारी से भी जो कुरआने पाक सुन कर तुम में पैदा होती है **185 :** और इस में ख़ूब ग़ौर करो, वोह कहावत येह है कि तुम्हारे बुत **186 :** उन की आजिज़ी और बे कुदरती का येह ह़ाल है कि वोह निहायत छोटी सी चीज़ **187 :** तो आ़क़िल को कब शायान है कि ऐसे को मा'बूद ठहराए, ऐसे को पूजना और इलाह क़रार देना कितना इन्तिहा दरजे का जहल है। **188 :** वोह शहद व ज़ा'फ़रान वग़ैरा जो मुशरिकीन बुतों के मुंह और सरों पर मलते हैं जिस पर मख्खियां भिनक्ती हैं। **189 :** ऐसे को ख़ुदा बनाना और मा'बूद ठहराना कितना अ़जीब और अ़क्ल से दूर है। **190 :** चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है या चाहने वाले से मख्खी मुराद है जो बुत पर से शहद व ज़ा'फ़रान की त़ालिब है और मत़लूब से बुत। और बा'ज़ ने कहा कि त़ालिब से बुत मुराद है और मत़लूब से मख्खी। **191 :** और उस की अ़ज़मत न पहचानी जिन्हों ने ऐसों को ख़ुदा का शरीक किया जो मख्खी से भी कमज़ोर हैं, मा'बूद वोही है जो कुदरते कामिला रखे। **192 :** मिस्ल जिब्रील व मीकाईल वग़ैरा के **193 :** मिस्ल ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते ईसा व ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صلوٰۃ اللہ تعالیٰ علیہم وسلامہ के। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन कुफ़्फ़ार के रद में नाज़िल हुई जिन्हों ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर कैसे रसूल हो सकता है ? इस पर अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह मालिक है जिसे चाहे अपना रसूल बनाए वोह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और मलाएका में से भी जिन्हें चाहे। **194 :** या'नी उमूरे दुन्या को भी और उमूरे आख़िरत को भी या उन के गुज़रे हुए आ'माल को भी और आयिन्दा के अह़वाल को भी। **195 :** अपनी नमाज़ों में। इस्लाम के अव्वल अ़हद में नमाज़ बिग़ैर रुकूअ़ व सुजूद के थी फिर नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद का हुक्म फ़रमाया गया। **196 :** या'नी रुकूअ़ व सुजूद

السجدة عند الامام الشافعی علیہ رحمۃ اللہ الکافی

هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

उस ने तुम्हें पसन्द किया[199] और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी[200] तुम्हारे बाप

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا لِيَكُوْنَ

इब्राहीम का दीन[201] अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसल्मान रखा है अगली किताबों में और इस कुरआन में ताकि रसूल

الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖۚ فَاَقِيْمُوا

तुम्हारा निगहबान व गवाह हो[202] और तुम और लोगों पर गवाही दो[203] तो नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى

बरपा रखो[204] और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो[205] वोह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला

وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾ ع

और क्या ही अच्छा मददगार

ख़ास अल्लाह के लिये हों और इबादत में इख़्लास इख़्तियार करो। **197 :** सिलए रेहमी मकारिमुल अख़्लाक़ वग़ैरा नेकियां। **198 :** या'नी निय्यते सादिक़ा ख़ालिसा के साथ ए'लाए दीन के लिये **199 :** अपने दीन व इबादत के लिये। **200 :** बल्कि ज़रूरत के मौक़ओं पर तुम्हारे लिये सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी के ज़रर करने की हालत में ग़ुस्ल और वुज़ू की जगह तयम्मुम, तो तुम दीन की पैरवी करो। **201 :** जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है। **202 :** रोज़े क़ियामत कि तुम्हारे पास ख़ुदा का पयाम पहुंचा दिया। **203 :** कि उन्हें उन रसूलों ने अहकामे ख़ुदावन्दी पहुंचा दिये, अल्लाह तआला ने तुम्हें येह इज़्ज़तो करामत अता फ़रमाई। **204 :** इस पर मुदावमत करो **205 :** और उस के दीन पर क़ाइम रहो।

ركوعاتها ٦ ۞ ٢٣ سورة المؤمنون مكية ٧٤ ۞ اياتها ١١٨

सूरए मुअमिनून मक्किय्या है, इस में एक सो अठ्ठारह आयतें और छ॰ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ

बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं[2] और

الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ﴿۴﴾

वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते[3] और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं[4]

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ

और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हि़फ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर

اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ﴿۶﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि इन पर कोई मलामत नहीं[5] तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही

هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿۷﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ﴿۸﴾ وَالَّذِيْنَ

ह़द से बढ़ने वाले हैं[6] और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं[7] और वोह जो

هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۘ﴿۹﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ

अपनी नमाज़ों की निगह्बानी करते हैं[8] येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस

1 : सूरए मुअमिनून मक्किय्या है इस में छ॰ रुकूअ़ और एक सो अठ्ठारह आयतें हैं और एक हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और चार हज़ार आठ सो दो ह़र्फ़ हैं। 2 : उन के दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है और उन के आ'ज़ा साकिन होते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि इस में दिल लगा हो और दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और गोशए चश्म से किसी त़रफ़ न देखे और कोई अ़बस (फ़ुज़ूल) काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए इस त़रह़ कि इस के दोनों किनारे लटकते हों और आपस में मिले न हों और उंग्लियां न चटख़ाए और इस क़िस्म के ह़रकात से बाज़ रहे। बा'ज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ़ येह है कि आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए। 3 : हर लह्व व बात़िल से मुज्तनिब रहते हैं। 4 : या'नी इस के पाबन्द हैं और मुदावमत (हमेशा अदा) करते हैं। 5 : अपनी बीबियों और बांदियों के साथ जाइज़ त़रीक़े पर क़ुरबत करने में। 6 : कि ह़लाल से ह़राम की त़रफ़ तजावुज़ करते हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि हाथ से क़ज़ाए शह्वत करना ह़राम है। सईद बिन जुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने एक उम्मत को अ़ज़ाब किया जो अपनी शर्मगाहों से खेल करते थे। 7 : ख़्वाह अमानतें **अल्लाह** की हों या ख़ल्क़ की और इसी त़रह़ अ़ह्द ख़ुदा के साथ हों या मख़्लूक़ के साथ सब की वफ़ा लाज़िम है। 8 : और उन्हें उन के वक़्तों में उन के शराइत़ो आदाब के साथ अदा करते हैं और फ़राइज़ व वाजिबात और सुनने नवाफ़िल सब की निगह्बानी रखते हैं।

يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۱۱ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ

की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे और बेशक हम ने आदमी को

مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ ۝۱۲ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝۱۳ ثُمَّ

चुनी हुई मिट्टी से बनाया[9] फिर उसे[10] पानी की बूंद किया एक मज़्बूत ठहराव में[11] फिर

خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا

हम ने उस पानी की बूंद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां

فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ

फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी[12] तो बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह** सब से बेहतर

الْخٰلِقِيْنَ ؕ ۝۱۴ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ ۝۱۵ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

बनाने वाला है फिर उस के बा'द तुम ज़रूर[13] मरने वाले हो फिर तुम सब क़ियामत के दिन[14]

تُبْعَثُوْنَ ۝۱۶ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖۗ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ

उठाए जाओगे और बेशक हम ने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं[15] और हम ख़ल्क़ से

غٰفِلِيْنَ ۝۱۷ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖۗ

बे ख़बर नहीं[16] और हम ने आस्मान से पानी उतारा[17] एक अन्दाज़े पर[18] फिर उसे ज़मीन में ठहराया

وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ ۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ ۝۱۸ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

और बेशक हम उस के ले जाने पर क़ादिर हैं[19] तो उस से हम ने तुम्हारे लिये बाग़ पैदा किये खजूरों

وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ ۝۱۹ وَشَجَرَةً

और अंगूरों के तुम्हारे लिये उन में बहुत से मेवे हैं[20] और उन में से खाते हो[21] और वोह पेड़

وقف لازم

9 : मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहां हज़रते आदम हैं। 10 : या'नी उस की नस्ल को 11 : या'नी रेह़्म में 12 : या'नी उस में रूह़ डाली, उस बेजान को जानदार किया, नुत़्क़ और सम्अ़ और बसर (बोलने, सुनने, देखने की सलाहिय्यत) इनायत की। 13 : अपनी उ़म्रें पूरी होने पर 14 : हिसाब व जज़ा के लिये 15 : इन से मुराद सात आस्मान हैं जो मलाएका के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं। 16 : सब के आ'माल, अक़्वाल, ज़माइर को जानते हैं, कोई चीज़ हम से छुपी नहीं। 17 : या'नी मींह बरसाया 18 : जितना हमारे इल्मो ह़िक्मत में ख़ल्क़ की ह़ाजतों के लिये चाहिये। 19 : जैसा अपनी क़ुदरत से नाज़िल फ़रमाया ऐसा ही इस पर भी क़ादिर हैं कि उस को ज़ाइल कर दें, तो बन्दों को चाहिये कि इस ने'मत की शुक्र गुज़ारी से ह़िफ़ाज़त करें। 20 : त़रह़ त़रह़ के। 21 : जाड़े और गरमी वग़ैरा मौसिमों में और ऐ़श करते हो।

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَ صِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَ اِنَّ

पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है[22] ले कर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन[23] और बेशक

لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

तुम्हारे लिये चौपायों में समझने का मक़ाम है हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेट में है[24] और तुम्हारे लिये उन में बहुत

كَثِيْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ عَلَيْهَا وَ عَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ لَقَدْ

फ़ाएदे हैं[25] और उन से तुम्हारी ख़ूराक है[26] और उन पर[27] और किश्ती पर[28] सुवार किये जाते हो और बेशक

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई

غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا

ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[29] तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले[30]

هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ

येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने[31] और अल्लाह चाहता[32]

لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۴﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا

तो फ़िरिश्ते उतारता हम ने तो येह अपने अगले बाप दादाओं में न सुना[33] वोह तो नहीं मगर

رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا

एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माने तक उस का इन्तिज़ार किये रहो[34] नूह़ ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा[35] इस पर कि

كَذَّبُوْنِ ﴿۲۶﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا فَاِذَا

इन्हों ने मुझे झुटलाया तो हम ने उसे वह़्य भेजी कि हमारी निगाह के सामने[36] और हमारे हुक्म से किश्ती बना फिर जब

22 : उस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है। 23 : येह उस में अ़जीब सिफ़त है कि वोह तेल भी है कि मनाफ़ेअ़ और फ़वाइद तेल के उस से ह़ासिल किये जाते हैं, जलाया भी जाता है, दवा के त़रीक़े पर भी काम में लाया जाता है और सालन का भी काम देता है कि तन्हा उस से रोटी खाई जा सकती है। 24 : या'नी दूध ख़ुश गवार मुवाफ़िक़े त़ब्अ़ जो लत़ीफ़ ग़िज़ा होता है। 25 : कि उन के बाल खाल ऊन वग़ैरा से काम लेते हो। 26 : कि उन्हें ज़ब्ह़ कर के खा लेते हो। 27 : ख़ुश्की में 28 : दरियाओं में 29 : उस के अ़ज़ाब का जो उस के सिवा औरों को पूजते हो। 30 : अपनी क़ौम के लोगों से कि 31 : और तुम्हें अपना ताबेअ़ बनाए। 32 : कि रसूल को भेजे और मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाए 33 : कि बशर भी रसूल होता है। येह उन की कमाले ह़माक़त थी कि बशर का रसूल होना तो तस्लीम न किया पथ्थरों को ख़ुदा मान लिया और उन्हों ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की निस्बत येह भी कहा 34 : ता आं कि (यहां तक कि) उस का जुनून दूर हो, ऐसा हुवा तो ख़ैर वरना उस को क़त्ल कर डालना। जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उन के हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो ह़ज़रते 35 : और इस क़ौम को हलाक कर 36 : या'नी हमारी ह़िमायत व ह़िफ़ाज़त में।

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

हमारा हुक्म आए[37] और तन्नूर उबले[38] तो उस में बिठा ले[39] हर जोड़े में से दो[40]

وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ

और अपने घर वाले[41] मगर उन में से वोह जिन पर बात पहले पड़ चुकी[42] और उन ज़ालिमों के मुआ़मले में मुझ से

ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى

बात न करना[43] येह ज़रूर डुबोए जाएंगे फिर जब ठीक बैठे किश्ती पर तू और तेरे साथ

الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ

वाले तो कह सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें उन ज़ालिमों से नजात दी और अ़र्ज़ कर[44]

رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सब से बेहतर उतारने वाला है बेशक इस में[45]

لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ ۚ

ज़रूर निशानियां हैं[46] और बेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे[47] फिर उन के[48] बा'द हम ने और संगत (क़ौम) पैदा की[49]

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

तो उन में एक रसूल उन्हीं में से भेजा[50] कि अल्लाह की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ ع وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

तो क्या तुम्हें डर नहीं[51] और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़िरी[52]

37 : उन की हलाकत का और आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हों 38 : और उस में से पानी बरआमद हो तो येह अ़लामत है अ़ज़ाब के शुरूअ़ होने की 39 : या'नी किश्ती में हैवानात के 40 : नर और मादा। 41 : या'नी अपनी मोमिना बीबी और ईमानदार औलाद या तमाम मोमिनीन। 42 : और कलामे अज़ली में उन का अ़ज़ाब और हलाक मुअ़य्यन हो चुका। वोह आप का एक बेटा था कन्आ़न नाम (का) और एक औ़रत कि येह दोनों काफ़िर थे। आप ने अपने तीन फ़रज़न्दों साम, हाम, याफ़िस और उन की बीबियों को और दूसरे मोमिनीन को सुवार किया कुल लोग जो किश्ती में थे उन की ता'दाद अठत्तर थी। निस्फ़ मर्द और निस्फ़ औ़रतें। 43 : और उन के लिये नजात न त़लब करना, दुआ न फ़रमाना। 44 : किश्ती से उतरते वक़्त या उस में सुवार होते वक़्त 45 : या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए में और उस में जो दुश्मनाने ह़क़ के साथ किया गया 46 : और इब्रतें और नसीह़तें और क़ुदरते इलाही के दलाइल हैं। 47 : उस क़ौम के ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को उस में भेज कर और उन को वा'ज़ो नसीह़त पर मामूर फ़रमा कर ताकि ज़ाहिर हो जाए कि नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले कौन नसीह़त क़बूल करता और तस्दीक़ व इत़ाअ़त करता है और कौन ना फ़रमान तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त पर मुसिर रहता है। 48 : या'नी क़ौमे नूह़ के अ़ज़ाब व हलाक के 49 : या'नी आ़द व क़ौमे हूद। 50 : या'नी हूद عَلَيْهِ السَّلَام और उन की मा'रिफ़त उस क़ौम को हुक्म दिया 51 : उस के अ़ज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ। 52 : और वहां के सवाब व अ़ज़ाब वग़ैरा।

بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَ اَتْرَفْنٰهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ

को झुटलाया और हम ने उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में चैन दिया[53] कि येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम

یَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَ یَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ لَىِٕنْ اَطَعْتُمْ

खाते हो उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है[54] और अगर तुम किसी अपने जैसे

بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَیَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَ كُنْتُمْ

आदमी की इत़ाअ़त करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो क्या तुम्हें येह वा'दा देता है कि तुम जब मर जाओगे और

تُرَابًا وَّ عِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿۳۵﴾ هَیْهَاتَ هَیْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۳۶﴾

मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे इस के बा'द फिर[55] निकाले जाओगे कितनी दूर है कितनी दूर है जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[56]

اِنْ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا نَمُوْتُ وَ نَحْیَا وَ مَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِیْنَ ﴿۳۷﴾

वोह तो नहीं मगर हमारी दुन्या की ज़िन्दगी[57] कि हम मरते जीते हैं[58] और हमें उठना नहीं[59]

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّ مَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۳۸﴾

वोह तो नहीं मगर एक मर्द जिस ने **अल्लाह** पर झूट बांधा[60] और हम उसे मानने के नहीं[61]

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۳۹﴾ قَالَ عَمَّا قَلِیْلٍ لَّیُصْبِحُنَّ

अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इस पर कि उन्हों ने मुझे झुटलाया **अल्लाह** ने फ़रमाया कुछ देर जाती है कि येह सुब्ह़ करेंगे

نٰدِمِیْنَ ﴿۴۰﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّیْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا

पचताते हुए[62] तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने[63] तो हम ने उन्हें घास कूड़ा कर दिया[64] तो दूर हों[65]

53 : या'नी बा'ज़ कुफ़्फ़ार जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने फ़राख़िये ऐ़श और ने'मते दुन्या अ़ता फ़रमाई थी अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगे : **54 :** या'नी येह अगर नबी होते तो मलाएका की त़रह़ खाने पीने से पाक होते। उन बात़िन के अन्धों ने कमालाते नुबुव्वत को न देखा और खाने पीने के औसाफ़ देख कर नबी को अपनी त़रह़ बशर कहने लगे। येह बुन्याद उन की गुमराही की हुई चुनान्चे इसी से उन्हों ने नतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे : **55 :** क़ब्रों से ज़िन्दा **56 :** या'नी उन्हों ने मरने के बा'द ज़िन्दा होने को बहुत बईद जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी ख़याले बात़िल की बिना पर कहने लगे **57 :** इस से उन का मत़लब येह था कि इस दुन्यवी ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं सिर्फ़ इतना ही है **58 :** कि हम में कोई मरता है कोई पैदा होता है। **59 :** मरने के बा'द, और अपने रसूल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की निस्बत उन्हों ने येह कहा **60 :** कि अपने आप को उस का नबी बताया और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी। **61 :** पैग़म्बर عَلَیْہِ السَّلَام जब उन के ईमान से मायूस हुए और उन्हों ने देखा कि क़ौम इन्तिहाई सरकशी पर है तो उन के ह़क़ में बद दुआ़ की और बारगाहे इलाही में **62 :** अपने कुफ़्र व तक्ज़ीब पर जब कि अ़ज़ाबे इलाही देखेंगे। **63 :** या'नी वोह अ़ज़ाब व हलाक में गिरिफ़्तार किये गए। **64 :** या'नी वोह हलाक हो कर घास कूड़े की त़रह़ हो गए। **65 :** या'नी ख़ुदा की रह़मत से दूर हों अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले।

لِّلۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنۡشَاۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ قُرُوۡنًا اٰخَرِيۡنَ ﴿٤٢﴾ مَا

ज़ालिम लोग फिर उन के बा'द हम ने और संगतें (क़ौमें) पैदा कीं[66] कोई

تَسۡبِقُ مِنۡ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرۡسَلۡنَا رُسُلَنَا

उम्मत अपनी मीआ़द से न पहले जाए न पीछे रहे[67] फिर हम ने अपने रसूल भेजे

تَتۡرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوۡلُهَا كَذَّبُوۡهُ فَاَتۡبَعۡنَا بَعۡضَهُمۡ بَعۡضًا وَّ

एक पीछे दूसरा जब किसी उम्मत के पास उस का रसूल आया उन्हों ने उसे झुटलाया[68] तो हम ने अगलों से पिछले मिला दिये[69] और

جَعَلۡنٰهُمۡ اَحَادِيۡثَ ۚ فَبُعۡدًا لِّقَوۡمٍ لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰى

उन्हें कहानियां कर डाला[70] तो दूर हों वोह लोग कि ईमान नहीं लाते फिर हम ने मूसा

وَاَخَاهُ هٰرُوۡنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उस के भाई हारून को अपनी आयतों और रोशन सनद[71] के साथ भेजा फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़

فَاسۡتَكۡبَرُوۡا وَكَانُوۡا قَوۡمًا عَالِيۡنَ ﴿٤٦﴾ ۚ فَقَالُوۡۤا اَنُؤۡمِنُ لِبَشَرَيۡنِ مِثۡلِنَا

तो उन्हों ने ग़ुरूर किया[72] और वोह लोग ग़लबा पाए हुए थे[73] तो बोले क्या हम ईमान ले आएं अपने जैसे दो आदमियों पर[74]

وَقَوۡمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوۡنَ ﴿٤٧﴾ ۚ فَكَذَّبُوۡهُمَا فَكَانُوۡا مِنَ الۡمُهۡلَكِيۡنَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدۡ

और उन की क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है[75] तो उन्हों ने उन दोनों को झुटलाया तो हलाक किये हुओं में हो गए[76] और बेशक

اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ لَعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلۡنَا ابۡنَ مَرۡيَمَ وَاُمَّهٗۤ

हम ने मूसा को किताब अ़त़ा फ़रमाई[77] कि उन को[78] हिदायत हो और हम ने मरयम और उस के बेटे को[79]

اٰيَةً وَّاٰوَيۡنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبۡوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيۡنٍ ﴿٥٠﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ

निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द ज़मीन[80] जहां बसने का मक़ाम[81] और निगाह के सामने बहता पानी ऐ पैग़म्बरो

66 : मिस्ल क़ौमे सालेह़ और क़ौमे लूत़ और क़ौमे शुऐ़ब वग़ैरा के। 67 : जिस के लिये हलाक का जो वक़्त मुक़र्रर है वोह ठीक उसी वक़्त हलाक होगी उस में कुछ भी तक़्दीम व ताख़ीर नहीं हो सकती। 68 : और उस की हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाए 69 : और बा'द वालों को पहलों की त़रह़ हलाक कर दिया 70 : कि बा'द वाले अफ़्साने की त़रह़ उन का ह़ाल बयान किया करें और उन के अ़ज़ाब व हलाक का बयान सबबे इ़ब्रत हो। 71 : मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरा मो'जिज़ात 72 : और अपने तकब्बुर के बाइ़स ईमान न लाए। 73 : बनी इसराईल पर अपने ज़ुल्मो सितम से। जब ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيۡهِمَا السَّلَام ने उन्हें ईमान की दा'वत दी 74 : या'नी ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून पर। 75 : या'नी बनी इसराईल हमारे ज़ेरे फ़रमान हैं तो येह कैसे गवारा हो कि उसी क़ौम के दो आदमियों पर ईमान ला कर उन के मुत़ीअ़ बन जाएं। 76 : और ग़र्क़ कर डाले गए। 77 : या'नी तौरैत शरीफ़, फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की हलाकत के बा'द। 78 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की क़ौम बनी इसराईल को 79 : या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام को बिग़ैर बाप के पैदा फ़रमा कर अपनी क़ुदरत की 80 : इस से मुराद या बैतुल मक़्दिस है या दिमश्क़ या फ़िलिस्त़ीन, कई क़ौल हैं। 81 : या'नी ज़मीन हमवार फ़राख़ फलों वाली

كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ﴿۵۱﴾ وَ اِنَّ

पाकीज़ा चीज़ें खाओ[82] और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं[83] और बेशक

هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿۵۲﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ

येह तुम्हारा दीन एक ही दीन है[84] और मैं तुम्हारा रब हूं तो मुझ से डरो तो उन की उम्मतों ने अपना काम

بَیْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَیْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرْهُمْ فِیْ غَمْرَتِهِمْ

आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया[85] हर गुरौह जो उस के पास है उस पर ख़ुश है[86] तो तुम उन को छोड़ दो उन के नशे में[87]

حَتّٰى حِیْنٍ ﴿۵۴﴾ اَیَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّ بَنِیْنَ ﴿۵۵﴾ۙ

एक वक़्त तक[88] क्या येह ख़याल कर रहे हैं कि वोह जो हम उन की मदद कर रहे हैं माल और बेटों से[89]

نُسَارِعُ لَهُمْ فِی الْخَیْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا یَشْعُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ هُمْ مِّنْ

येह जल्द जल्द उन को भलाइयां देते हैं[90] बल्कि उन्हें ख़बर नहीं[91] बेशक वोह जो अपने रब

خَشْیَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۵۷﴾ۙ وَ الَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۸﴾ۙ وَ

के डर से सहमे हुए हैं[92] और वोह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं[93] और

الَّذِیْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا یُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ۙ وَ الَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ

वोह जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते और वोह जो देते हैं जो कुछ दें[94] और उन के दिल

وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿۶۰﴾ۙ اُولٰٓىٕكَ یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ

डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की तरफ़ फिरना है[95] येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं

जिस में रहने वाले ब आसाइश बसर करते हैं। **82 :** यहां पैग़म्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उन के ज़माने में येह निदा फ़रमाई गई या रसूलों से मुराद ख़ास सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم हैं या ह़ज़रते ई़सा علیہ السلام कई क़ौल हैं। **83 :** उन की जज़ा अ़त़ा फ़रमाऊंगा। **84 :** या'नी इस्लाम। **85 :** और फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए यहूदी, नसरानी, मजूसी वग़ैरा। **86 :** और अपने ही आप को ह़क़ पर जानता है और दूसरों को बात़िल पर समझता है इस त़रह़ उन के दरमियान दीनी इख़्तिलाफ़ात हैं। अब सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को ख़िताब होता है : **87 :** या'नी उन के कुफ़्र व ज़लाल और उन की जहालत व ग़फ़्लत में **88 :** या'नी उन की मौत के वक़्त तक। **89 :** दुन्या में। **90 :** और हमारी येह ने'मतें उन के आ'माल की जज़ा हैं या हमारे राज़ी होने की दलील हैं ऐसा ख़याल करना ग़लत़ है। वाक़िआ़ येह नहीं है **91 :** कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं। **92 :** उन्हें उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया कि मोमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बदी करता है और निडर रहता है। **93 :** और उस की किताबों को मानते हैं। **94 :** ज़कात व सदक़ात या येह मा'ना हैं कि आ'माले सालिह़ा बजा लाते हैं। **95 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से दरयाफ़्त किया कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराबें पीते हैं और चोरी करते हैं ? फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़ की नूरदीदा ! ऐसा नहीं, येह उन लोगों का बयान है जो रोज़े रखते हैं, सदक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं येह आ'माल ना मक़्बूल न हो जाएं।

وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ

और येही सब से पहले उन्हें पहुंचे[96] और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उस की ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है

يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا

कि हक़ बोलती है[97] और उन पर ज़ुल्म न होगा[98] बल्कि उन के दिल उस से[99] ग़फ़्लत में हैं

وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا

और उन के काम उन कामों से जुदा हैं[100] जिन्हें वोह कर रहे हैं यहां तक कि जब हम ने

مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْــَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْــَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ

उन के अमीरों को अज़ाब में पकड़ा[101] तो जभी वोह फ़रियाद करने लगे[102] आज फ़रियाद न करो हमारी तरफ़

مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ

से तुम्हारी मदद न होगी बेशक मेरी आयतें[103] तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल

تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ

उलटे पलटते थे[104] ख़िदमते हरम पर बड़ाई मारते हो[105] रात को वहां बेहूदा कहानियां बकते[106] हक़ को छोड़े हुए[107] क्या उन्हों ने बात को सोचा नहीं[108]

اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا

या उन के पास वोह आया जो उन के बाप दादा के पास न आया था[109] या उन्हों ने अपने

---

96 : या'नी नेकियों को, मा'ना येह हैं कि वोह नेकियों में और उम्मतों पर सब्क़त करते हैं। 97 : उस में हर शख़्स का अ़मल मक्तूब (लिखा हुवा) है और वोह लौहे मह़फ़ूज़ है। 98 : न किसी की नेकी घटाई जाएगी, न बदी बढ़ाई जाएगी। इस के बा'द कुफ़्फ़ार का ज़िक्र फ़रमाया जाता है। 99 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ से 100 : जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए। 101 : और वोह रोज़ बरोज़ तहे तेग़ (क़त्ल) किये गए। और एक क़ौल येह है कि इस अ़ज़ाब से मुराद फ़ाक़ों और भूक की वोह मुसीबत है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुआ़ से उन पर मुसल्लत़ की गई थी और इस क़ह़त़ से उन की ह़ालत यहां तक पहुंच गई थी कि वोह कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे। 102 : अब उन का जवाब येह है कि 103 : या'नी आयाते क़ुरआने मजीद 104 : और उन आयात को न मानते थे और उन पर ईमान न लाते थे। 105 : और येह कहते हुए कि हम अहले ह़रम हैं और बैतुल्लाह के हमसाया हैं हम पर कोई ग़ालिब न होगा हमें किसी का ख़ौफ़ नहीं। 106 : का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द जम्अ़ हो कर। और उन कहानियों में अक्सर क़ुरआने पाक पर ता'न और उस को सेह़र और शे'र कहना और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में बेजा बातें कहना होता था। 107 : या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप पर ईमान लाने को और क़ुरआने करीम को। 108 : या'नी क़ुरआने पाक में ग़ौर नहीं किया और इस के ए'जाज़ पर नज़र नहीं डाली जिस से उन्हें मा'लूम होता कि येह कलाम ह़क़ है इस की तस्दीक़ लाज़िम है और जो कुछ इस में इर्शाद फ़रमाया गया वोह सब ह़क़ और वाजिबुत्तस्लीम है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिद्क़ो ह़क़्क़ानिय्यत पर इस में दलालाते वाज़ेह़ा मौजूद हैं। 109 : या'नी रसूल का तशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले अ़ह्द में हुई ही न हो और वोह येह कह सकें कि हमें ख़बर ही न थी कि ख़ुदा की त़रफ़ से रसूल आया भी करते हैं, कभी पहले कोई रसूल आया होता और हम ने उस का तज़्किरा सुना होता तो हम क्यूं इस रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को न मानते ? येह उ़ज़्र करने का मौक़अ़ भी नहीं है क्यूं कि पहली उम्मतों में रसूल आ चुके हैं और ख़ुदा की किताबें नाज़िल हो चुकी हैं।

رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ

रसूल को न पहचाना[110] तो वोह उसे बेगाना समझ रहे हैं[111] या कहते हैं उसे सौदा (दीवाना पन) है[112] बल्कि वोह तो उन के पास

بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

हक़ लाए[113] और उन में अक्सर को हक़ बुरा लगता है[114] और अगर हक़[115] उन की ख़्वाहिशों की पैरवी करता[116]

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ

तो ज़रूर आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं सब तबाह हो जाते[117] बल्कि हम तो उन के पास वोह चीज़ लाए[118] जिस में उन की नाम वरी थी

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ ؕ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ

तो वोह अपनी इज़्ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं क्या तुम उन से कुछ उजरत मांगते हो[119] तो तुम्हारे रब का अज्र सब

خَيْرٌ ۖ وَّ هُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ

से भला और वोह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला[120] और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ

बुलाते हो[121] और बेशक जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से[122]

لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

कतराए हुए हैं और अगर हम उन पर रहम करें और जो मुसीबत[123] उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भट पना (एहसान फ़रामोशी) करेंगे अपनी सरकशी

110 : और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ के जुम्ला अहवाल को न देखा और आप के नसबे आली और सिद्क़ो अमानत और वुफ़ूरे अक़्ल (कस्रते दानाई) व हुस्ने अख़्लाक़ और कमाले हिल्म और वफ़ा व करम व मुरव्वत वग़ैरा पाकीज़ा अख़्लाक़ व महासिने सिफ़ात और बिग़ैर किसी से सीखे आप के इल्म में कामिल और तमाम जहान से आ'लम (ज़ियादा इल्म वाले) और फ़ाइक़ होने को न जाना क्या ऐसा है **111 :** हक़ीक़त में येह बात तो नहीं बल्कि वोह सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को और आप के औसाफ़ो कमालात को ख़ूब जानते हैं और आप के बरगुज़ीदा सिफ़ात शोहरए आफ़ाक़ हैं। **112 :** येह भी सरासर ग़लत और बातिल है क्यूं कि वोह जानते हैं कि आप जैसा दाना और कामिलुल अक़्ल शख़्स उन के देखने में नहीं आया। **113 :** या'नी कुरआने करीम जो तौहीदे इलाही व अहकामे दीन पर मुश्तमिल है। **114 :** क्यूं कि उस में उन के ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की मुख़ालफ़त है इस लिये वोह रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और उन के सिफ़ातो कमालात को जानने के बा वुजूद हक़ की मुख़ालफ़त करते हैं। "अक्सर" की क़ैद से साबित होता है कि येह हाल उन में बेशतर लोगों का है चुनान्चे बा'ज़ उन में ऐसे भी थे जो आप को हक़ पर जानते थे और हक़ उन्हें बुरा भी नहीं लगता था लेकिन वोह अपनी क़ौम की मुवाफ़क़त या उन के ता'न व तश्नीअ़ के ख़ौफ़ से ईमान न लाए जैसे कि अबू तालिब। **115 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **116 :** इस तरह कि इस में वोह मज़ामीन मज़्कूर होते जिन की कुफ़्फ़ार ख़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटा और बेटियां होना वग़ैरा कुफ़्रिय्यात। **117 :** और तमाम आलम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता। **118 :** या'नी कुरआने पाक **119 :** उन्हें हिदायत करने और राहे हक़ बताने पर। ऐसा तो नहीं और वोह क्या हैं और आप को क्या दे सकते हैं? तुम अगर अज्र चाहो **120 :** और उस का फ़ज़्ल आप पर अज़ीम और जो जो ने'मतें उस ने आप को अता फ़रमाई वोह बहुत कसीर और आ'ला, तो आप को उन की क्या परवाह, फिर जब वोह आप के औसाफ़ो कमालात से वाक़िफ़ भी हैं कुरआने पाक का ए'जाज़ भी उन की निगाहों के सामने है और आप उन से हिदायत व इर्शाद का कोई अज्र व इवज़ भी तलब नहीं फ़रमाते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या उज़्र रहा। **121 :** तो उन पर लाज़िम है कि आप की दा'वत क़बूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों। **122 :** या'नी दीने हक़ से **123 :** हफ़्त सालह (सात सालह) क़हत साली की।

يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا

में बहकते हुए[124] और बेशक हम ने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा[125] तो न वोह अपने रब के हुज़ूर में झुके और न

يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا

गिड़गिड़ाते हैं[126] यहां तक कि जब हम ने उन पर खोला किसी सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा[127] तो

هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

वोह अब उस में ना उम्मीद पड़े हैं और वोही है जिस ने बनाए तुम्हारे लिये कान और आंखें और

الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ

दिल[128] तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो[129] और वोही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया

وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ

और उसी की त़रफ़ उठना है[130] और वोही जिलाए और मारे और उसी के लिये हैं रात और दिन

وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

की तब्दीलें[131] तो क्या तुम्हें समझ नहीं[132] बल्कि उन्हों ने वोही कही जो अगले[133] कहते थे

قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ

बोले क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी और हड्डियां हो जाएं क्या फिर निकाले जाएंगे बेशक

124 : या'नी अपने कुफ़्रो इनाद और सरकशी की त़रफ़ लौट जाएंगे और येह तमल्लुक़ (ख़ुशामद) व चापलूसी जाती रहेगी और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और मोमिनीन की अ़दावत और तकब्बुर जो उन का पहला त़रीक़ा था वोही इख़्तियार करेंगे। **शाने नुज़ूल :** जब क़ुरैश सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुआ़ से सात बरस के क़ह़त़ में मुब्तला हुए और ह़ालत बहुत अब्तर हो गई तो अबू सुफ़्यान उन की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि क्या आप अपने ख़याल में ''رَحْمَةٌ لِّلْعَالَمِيْن'' बना कर नहीं भेजे गए ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक। अबू सुफ़्यान ने कहा कि बड़ों को तो आप ने बद्र में तहे तेग़ (क़त्ल) कर दिया, औलाद जो रही वोह आप की बद दुआ़ से इस ह़ालत को पहुंची कि मुसीबते क़ह़त़ में मुब्तला हुई फ़ाक़ों से तंग आ गई, लोग भूक की बेताबी से हड्डियां चाब गए, मुर्दार तक खा गए, मैं आप को अल्लाह की क़सम देता हूं और क़राबत की। आप अल्लाह से दुआ़ कीजिये कि हम से इस क़ह़त़ को दूर फ़रमाए। हुज़ूर ने दुआ़ की और उन्हों ने इस बला से रिहाई पाई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयतें नाज़िल हुईं। 125 : क़ह़त़ साली के या क़त्ल के 126 : बल्कि अपने तमर्रुद (बग़ावत) व सरकशी पर हैं। 127 : इस अ़ज़ाब से या क़ह़त़ साली मुराद है जैसा कि रिवायते मज़्कूरा शाने नुज़ूल का मुक़्तज़ी है या रोज़े बद्र का क़त्ल। येह इस क़ौल की बिना पर है कि वाक़िअ़ए क़ह़त़ वाक़िअ़ए बद्र से पहले हो। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस सख़्त अ़ज़ाब से मौत मुराद है। बा'ज़ ने कहा कि क़ियामत। 128 : ताकि सुनो और देखो और समझो और दीनी और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करो। 129 : कि तुम ने इन ने'मतों की क़द्र न जानी और इन से फ़ाएदा न उठाया और कानों आंखों और दिलों से आयाते इलाहिय्यह के सुनने देखने समझने और मा'रिफ़ते इलाही ह़ासिल करने और मुन्इमे ह़क़ीक़ी का ह़क़ पहचान कर शुक्र गुज़ार बनने का नफ़्अ़ न उठाया। 130 : रोज़े क़ियामत। 131 : इन में से हर एक का दूसरे के बा'द आना और तारीकी व रोशनी और ज़ियादती व कमी में हर एक का दूसरे से मुख़्तलिफ़ होना येह सब उस की क़ुदरत के निशान हैं। 132 : कि इन से इब्रत ह़ासिल करो और इन में ख़ुदा की क़ुदरत का मुशाहदा कर के मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को तस्लीम करो और ईमान लाओ। 133 : या'नी उन से पहले काफ़िर।

وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

येह वा'दा हम को और हम से पहले हमारे बाप दादा को दिया गया येह तो नहीं मगर वोही अगली

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸۳﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾

दास्तानें[134] तुम फ़रमाओ किस का माल है ज़मीन और जो कुछ इस में है अगर तुम जानते हो[135]

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ

अब कहेंगे कि **अल्लाह** का[136] तुम फ़रमाओ फिर क्यूं नहीं सोचते[137] तुम फ़रमाओ कौन है मालिक सातों आस्मानों का

وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۸۶﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۸۷﴾ قُلْ

और मालिक बड़े अ़र्श का अब कहेंगे येह **अल्लाह** ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर क्यूं नहीं डरते[138] तुम फ़रमाओ

مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ

किस के हाथ है हर चीज़ का क़ाबू[139] और वोह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें

تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۸﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿۸۹﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ

इ़ल्म हो[140] अब कहेंगे येह **अल्लाह** ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के फ़रेब में पड़े हो[141] बल्कि हम उन के पास

بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۹۰﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ

ह़क़ लाए[142] और वोह बेशक झूटे हैं[143] **अल्लाह** ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया[144] और न उस के साथ

مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

कोई दूसरा ख़ुदा[145] यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ ले जाता[146] और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअ़ल्ली (बड़ाई) चाहता[147]

134 : जिन की कुछ भी ह़क़ीक़त नहीं। कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाने और उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाने के लिये **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया **135 :** इस के ख़ालिक़ो मालिक को तो बताओ। **136 :** क्यूं कि बजुज़ इस के कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिकीन **अल्लाह** तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत के मुक़िर भी हैं, जब वोह येह जवाब दें **137 :** कि जिस ने ज़मीन को और उस की काएनात को इब्तिदाअन पैदा किया वोह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **138 :** उस के ग़ैर को पूजने और शिर्क करने से और उस के मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर होने का इन्कार करने से। **139 :** और हर चीज़ पर ह़क़ीक़ी क़ुदरत व इख़्तियार किस का है। **140 :** तो जवाब दो। **141 :** या'नी किस शैत़ानी धोके में हो कि तौह़ीद व त़ाअ़ते इलाही को छोड़ कर ह़क़ को बात़िल समझ रहे हो, जब तुम इक़्रार करते हो कि क़ुदरते ह़क़ीक़ी उसी की है और उस के ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता तो दूसरे की इ़बादत क़त़्अ़न बात़िल है। **142 :** कि **अल्लाह** के न औलाद हो सकती है न उस का शरीक, येह दोनों बातें मुह़ाल हैं। **143 :** जो उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। **144 :** वोह इस से मुनज़्ज़ह है क्यूं कि नौअ़ और जिन्स से पाक है और औलाद वोही हो सकती है जो हम जिन्स हो। **145 :** जो उलूहिय्यत में शरीक हो। **146 :** और उस को दूसरे के तह़्ते तसर्रुफ़ न छोड़ता। **147 :** और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्यूं कि मुतक़ाबिल हुकूमतें इसी की मुक़्तज़ी हैं, इस से मा'लूम हुवा कि दो ख़ुदा होना बात़िल है ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसी के तह़्ते तसर्रुफ़ है।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا

पाकी है अल्लाह को उन बातों से जो येह बनाते हैं[148] जानने वाला हर निहां व इयां (पोशीदा व ज़ाहिर) का तो उसे बुलन्दी है उन के

يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ

शिर्क से तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाए[149] जो उन्हें वा'दा दिया जाता है तो ऐ मेरे रब मुझे

فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَ اِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

उन ज़ालिमों के साथ न करना[150] और बेशक हम क़ादिर हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं[151]

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ قُلْ

सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़्अ़ करो[152] हम ख़ूब जानते हैं जो बातें येह बनाते हैं[153] और तुम अ़र्ज़ करो

رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ

कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयातीन के वस्वसों से[154] और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि

يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾

वोह मेरे पास आएं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए[155] तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये[156]

لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَ مِنْ

शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं[157] हिश्त (हरगिज़ नहीं) येह तो एक बात है जो वोह अपने मुंह से कहता है[158] और

وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَاۤ

उन के आगे एक आड़ है[159] उस दिन तक जिस में उठाए जाएंगे तो जब सूर फूंका जाएगा[160] तो न

148 : कि उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। 149 : वोह अ़ज़ाब 150 : और उन का क़रीन और साथी न बनाना। येह दुआ़ ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ व इज़्हारे अ़ब्दिय्यत है बा वुजूदे कि मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला आप को उन का क़रीन व साथी न करेगा। इसी त़रह़ अम्बिया मा'सूमीन इस्तिग़्फ़ार किया करते हैं बा वुजूदे कि उन्हें अपनी मग़्फ़िरत और इक्रामे ख़ुदावन्दी का इल्मे यक़ीनी होता है येह सब ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ व इज़्हारे बन्दगी है। 151 : येह जवाब है उन कुफ़्फ़ार का जो अ़ज़ाबे मौऊ़द का इन्कार करते और उस की हंसी उड़ाते थे उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लोगे कि अल्लाह तआ़ला उस वा'दे के पूरा करने पर क़ादिर है फिर वज्हे इन्कार और सबबे इस्तिह्ज़ा क्या ? और अ़ज़ाब में जो ताख़ीर हो रही है इस में अल्लाह की हिक्मतें हैं कि उन में से जो ईमान लाने वाले हैं वोह ईमान ले आएं और जिन की नस्लें ईमान लाने वाली हैं उन से वोह नस्लें पैदा हो लें। 152 : इस जुम्लए जमीला के मा'ना बहुत वसीअ़ हैं, इस के येह मा'ना भी हैं कि तौहीद जो आ'ला बेहतरी है उस से शिर्क की बुराई को दफ़्अ़ फ़रमाइये और येह भी कि त़ाअ़त व तक़्वा को रवाज दे कर मा'सियत और गुनाह की बुराई दफ़्अ़ कीजिये और येह भी कि अपने मकारिमे अख़्लाक़ से ख़त़ाकारों पर इस त़रह़ अ़फ़्वो रह़मत फ़रमाइये जिस से दीन में कोई सुस्ती न हो। 153 : अल्लाह और उस के रसूल की शान में तो हम इस का बदला देंगे। 154 : जिन से वोह लोगों को फ़रेब दे कर मआ़सी और गुनाहों में मुब्तला करते हैं। 155 : या'नी काफ़िर वक़्ते मौत तक तो अपने कुफ़्र व सरकशी और ख़ुदा और रसूल की तक्ज़ीब और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर मुसिर रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उस को जहन्नम में उस का जो मक़ाम है दिखाया जाता है और जन्नत का वोह मक़ाम भी दिखाया जाता है कि अगर वोह ईमान लाता तो येह मक़ाम उसे दिया जाता 156 : दुन्या की त़रफ़ 157 : और आ'माले नेक बजा ला कर अपनी तक़्सीरात का

اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَىٕذٍ وَّ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ

उन में रिश्ते रहेंगे[161] और न एक दूसरे की बात पूछे[162] तो जिन की तोलें[163] भारी हुईं

فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ الَّذِيْنَ

वोही मुराद को पहुंचे और जिन की तोलें हलकी पड़ीं[164] वोही हैं जिन्हों ने

خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَ هُمْ

अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे उन के मुंह पर आग लपट मारेगी और वोह

فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

उस में मुंह चड़ाए होंगे[165] क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं[166] तो तुम उन्हें झुटलाते थे

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَ كُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿۱۰۶﴾ رَبَّنَاۤ

कहेंगे ऐ रब हमारे हम पर हमारी बद बख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे ऐ हमारे रब

اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَ لَا

हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं[167] रब फ़रमाएगा दुत्कारे (ज़लील हो कर) पड़े रहो इस में और

تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۸﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا

मुझ से बात न करो[168] बेशक मेरे बन्दों का एक गुरौह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें बख़्श दे

तदारुक करूं। इस पर उस को फ़रमाया जाएगा **158 :** ह़स्रतो नदामत से। येह होने वाली नहीं और इस का कुछ फ़ाएदा नहीं। **159 :** जो उन्हें दुन्या की त़रफ़ वापस होने से मानेअ़ है और वोह मौत है। (خازن) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि बरज़ख़ वक़्ते मौत से वक़्ते बअ़्स तक की मुद्दत को कहते हैं। **160 :** पहली मरतबा जिस को नफ़्ख़ए ऊला कहते हैं जैसा कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है। **161 :** जिन पर दुन्या में फ़ख़्र किया करते थे और आपस के नसबी तअ़ल्लुक़ात मुन्क़तअ़ हो जाएंगे और क़राबत की मह़ब्बतें बाक़ी न रहेंगी और येह ह़ाल होगा कि आदमी अपने भाई और मां और बाप और बीबी और बेटों से भागेगा। **162 :** जैसे कि दुन्या में पूछते थे क्यूं कि हर एक अपने ही ह़ाल में मुब्तला होगा। फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और बा'दे ह़िसाब लोग एक दूसरे का ह़ाल दरयाफ़्त करेंगे। **163 :** आ'माले सालिह़ा और नेकियों से **164 :** नेकियां न होने के बाइस और वोह कुफ़्फ़ार हैं। **165 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि आग उन को भून डालेगी और ऊपर का होंट सुकड़ कर निस्फ़ सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा, दांत खुले रह जाएंगे (ख़ुदा की पनाह) और उन से फ़रमाया जाएगा **166 :** दुन्या में **167 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे उस के बा'द वोह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे। फिर वोह परवरदगार को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ रब हमारे हमें दोज़ख़ से निकाल और येह पुकार उन की दुन्या से दूनी उम्र की मुद्दत तक जारी रहेगी, इस के बा'द उन्हें येह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है। (خازن) और दुन्या की उम्र कितनी है? इस में कई क़ौल हैं : बा'ज़ ने कहा कि दुन्या की उम्र सात हज़ार बरस है। बा'ज़ ने कहा : बारह हज़ार बरस। बा'ज़ ने कहा : तीन लाख साठ बरस। (تذکرہ قرطبی) وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم **168 :** अब उन की उम्मीदें मुन्क़तअ़ हो जाएंगी और येह अहले जहन्नम का आख़िर कलाम होगा फिर इस के बा'द उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीख़ते डकराते (चिल्लाते) भोंकते रहेंगे।

وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰى

और हम पर रह्म कर और तू सब से बेहतर रह्म करने वाला है तो तुम ने उन्हें ठठ्ठा बना लिया[169] यहां तक

اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا

कि उन्हें बनाने के शुग़्ल में[170] मेरी याद भूल गए और तुम उन से हंसा करते बेशक आज मैं ने उन के सब्र का

صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ

उन्हें येह बदला दिया कि वोही काम्याब हैं फ़रमाया[171] तुम ज़मीन में कितना ठहरे[172] बरसों की

سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ

गिनती से बोले हम एक दिन रहे या दिन का हिस्सा[173] तो गिनने वालों से दरयाफ़्त फ़रमा[174] फ़रमाया

اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا

तुम न ठहरे मगर थोड़ा[175] अगर तुम्हें इल्म होता तो क्या येह समझते हो कि

خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं[176] तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ

कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के इ़ज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे

لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

जिस की उस के पास कोई सनद नहीं[177] तो उस का हि़साब उस के रब के यहां है बेशक काफ़िरों को छुटकारा नहीं

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे[178] और रह्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह्म करने वाला

169 **शाने नुज़ूल :** येह आयतें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुईं जो ह़ज़रते बिलाल व ह़ज़रते अ़म्मार व ह़ज़रते सुहैब व ह़ज़रते ख़ब्बाब वग़ैरा رضی اللہ عنہم फ़ुक़रा अस्ह़ाबे रसूल صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से तमस्ख़ुर करते थे। 170 : या'नी उन के साथ तमस्ख़ुर करने में इतने मश्ग़ूल हुए कि 171 : अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से 172 : या'नी दुन्या में और क़ब्र में 173 : येह जवाब इस वज्ह से देंगे कि उस दिन की दह्शत और अ़ज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुन्या में रहने की मुद्दत याद न रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा इसी लिये कहेंगे : 174 : या'नी उन मलाएका से जिन को तू ने बन्दों की उ़म्रें और उन के आ'माल लिखने पर मामूर किया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने 175 : ब निस्बत आख़िरत के। 176 : और आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं, बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें। 177 : या'नी ग़ैरुल्लाह की परस्तिश मह़्ज़ बातिल बे सनद है। 178 : ईमान वालों को।

ايـاتها ٦٤ ۞ ٢٤ سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٢ ۞ رکوعاتها ٩

सूरए नूर मदनिय्या है, इस में चौंसठ आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ

येह एक सूरत है कि हम ने उतारी और हम ने उस के अह़काम फ़र्ज़ किये[2] और हम ने उस में रोशन आयतें नाज़िल फ़रमाईं कि

تَذَكَّرُوْنَ ۝١ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ

तुम ध्यान करो जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े

جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ

लगाओ[3] और तुम्हें उन पर तर्स न आए **अल्लाह** के दीन में[4] अगर तुम ईमान लाते हो

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

अल्लाह और पिछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक़्त मुसल्मानों का एक गुरौह ह़ाज़िर हो[5]

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ

बदकार मर्द निकाह़ न करे मगर बदकार औ़रत या शिर्क वाली से और बदकार औ़रत से निकाह़ न करे मगर बदकार मर्द

1 : सूरए नूर मदनिय्या है, इस में नव रुकूअ़ चौंसठ आयतें हैं। 2 : और उन पर अ़मल करना बन्दों पर लाज़िम किया। 3 : येह ख़िताब हुक्काम को है कि जिस मर्द या औ़रत से ज़िना सरज़द हो उस की "ह़द" येह है कि उस के सो 100 कोड़े लगाओ, येह "ह़द" हुर ग़ैर मुह़सन (आज़ाद कुंवारे) की है क्यूं कि हुर मुह़सन (आज़ाद शादी शुदा) का हुक्म येह है कि उस को रज्म किया जाए जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि माइज़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को ब हुक्मे नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم रज्म किया गया, और मुह़सन वोह आज़ाद मुसल्मान है जो मुकल्लफ़ हो और निकाहे़ सह़ीह़ के साथ सोह़बत कर चुका हो ख़्वाह एक ही मरतबा, ऐसे शख़्स से ज़िना साबित हो तो रज्म किया जाएगा और अगर इन में से एक बात भी न हो मसलन हुर न हो या मुसल्मान न हो या आ़क़िल बालिग़ न हो या उस ने कभी अपनी बीबी के साथ सोह़बत न की हो या जिस के साथ की हो उस के साथ निकाह़ फ़ासिद हुवा हो तो येह सब ग़ैर मुह़सन में दाख़िल हैं और इन सब का हुक्म कोड़े मारना है। **मसाइल :** मर्द को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा किया जाए और उस के तमाम कपड़े उतार दिये जाएं सिवा तहबन्द के और उस के तमाम बदन पर कोड़े लगाए जाएं सिवाए सर चेहरे और शर्मगाह के, कोड़े इस त़रह़ लगाए जाएं कि अलम (दर्द) गोश्त तक न पहुंचे और कोड़ा मुतवस्सित़ दरजे का हो और औ़रत को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा न किया जाए न उस के कपड़े उतारे जाएं अलबत्ता अगर पोस्तीन (चमड़े का जुब्बा) या रूएंदार कपड़े पहने हुए हो तो उतार दिये जाएं। येह हुक्म हुर और हुर्रा का है या'नी आज़ाद मर्द और औ़रत का। और बांदी गुलाम की ह़द इस से निस्फ़ या'नी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरए निसाअ में मज़्कूर हो चुका। सुबूते ज़िना या तो चार मर्दों की गवाहियों से होता है या ज़िना करने वाले के चार मरतबा इक़्रार कर लेने से। फिर भी इमाम बार बार सुवाल करेगा और दरयाफ़्त करेगा कि ज़िना से क्या मुराद है ? कहां किया, किस से किया, कब किया, अगर इन सब को बयान कर दिया तो ज़िना साबित होगा वरना नहीं। और गवाहों को सराह़तन अपना मुआ़यना बयान करना होगा बिग़ैर इस के सुबूत न होगा। लिवातत ज़िना में दाख़िल नहीं लिहाज़ा इस फ़े'ल से ह़द वाजिब नहीं होती, लेकिन ता'ज़ीर वाजिब होती है और इस ता'ज़ीर में सह़ाबा رضی اللہ تعالٰی عنہم के चन्द क़ौल मरवी हैं : आग में जला देना, ग़र्क़ कर देना, बुलन्दी से गिराना और ऊपर से पथ्थर बरसाना, फ़ाइल व मफ़ऊ़ल दोनों का एक ही हुक्म है। (تفسیر احمدی) 4 : या'नी हु़दूद के पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत़ और मुतसल्लिब (सख़्ती से कारबन्द) रहो। 5 : ताकि इब्रत ह़ासिल हो।

اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

या मुश्रिक[6] और येह काम[7] ईमान वालों पर ह़राम है[8] और जो पारसा औ़रतों को

الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً

ऐ़ब लगाएं फिर चार गवाह मुआ़यना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ

وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ④ اِلَّا الَّذِيْنَ

और उन की कोई गवाही कभी न मानो[9] और वोही फ़ासिक़ हैं मगर जो

تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤ وَالَّذِيْنَ

इस के बा'द तौबा कर लें और संवर जाएं[10] तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और वोह जो

يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ

अपनी औ़रतों को ऐ़ब लगाएं[11] और उन के पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की

6 : क्यूं कि ख़बीस का मैलान ख़बीस ही की त़रफ़ होता है नेकों को ख़बीसों की त़रफ़ रग़्बत नहीं होती। **शाने नुज़ूल :** मुहाजिरीन में बा'ज़े बिल्कुल नादार थे न उन के पास कुछ माल था न उन का कोई अ़ज़ीज़ क़रीब था और बदकार मुश्रिका औ़रतें दौलत मन्द और मालदार थीं येह देख कर किसी मुहाजिर को ख़याल आया कि अगर उन से निकाह़ कर लिया जाए तो उन की दौलत काम में आएगी। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से उन्हों ने इस की इजाज़त चाही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस से रोक दिया गया। 7 : या'नी बदकारों से निकाह़ करना 8 : इब्तिदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह़ करना ह़राम था बा'द में आयत وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ से मन्सूख़ हो गया। 9 : इस आयत से चन्द मसाइल साबित हुए। **मस्अला 1 :** जो शख़्स किसी पारसा मर्द या औ़रत को ज़िना की तोहमत लगाए और इस पर चार मुआ़यना के गवाह पेश न कर सके तो उस पर ह़द वाजिब हो जाती है अस्सी कोड़े। आयत में "मुह़सनात" लफ़्ज़ ख़ुसूसे वाक़िआ़ के सबब से वारिद हुवा या इस लिये कि औ़रतों को तोहमत लगाना कसीरुल वुक़ूअ़ है। **मस्अला 2 :** और ऐसे लोग जो ज़िना की तोहमत में सज़ायाब हों और उन पर ह़द जारी हो चुकी हो मर्दूदुश्शहादह हो जाते हैं, कभी उन की गवाही मक़्बूल नहीं होती। पारसा से मुराद वोह हैं जो मुसल्मान मुकल्लफ़, आज़ाद और ज़िना से पाक हों। **मस्अला 3 :** ज़िना की शहादत का निसाब चार गवाह हैं। **मस्अला 4 :** ह़द्दे क़ज़्फ़ मुत़ालबे पर मश्रूत़ है, जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह मुत़ालबा न करे तो क़ाज़ी पर ह़द क़ाइम करना लाज़िम नहीं। **मस्अला 5 :** मुत़ालबे का ह़क़ उसी को है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह ज़िन्दा हो, और अगर मर गया हो तो उस के बेटे पोते को भी है। **मस्अला 6 :** ग़ुलाम अपने मौला पर और बेटा बाप पर क़ज़्फ़ या'नी अपनी मां पर ज़िना की तोहमत लगाने का दा'वा नहीं कर सकता। **मस्अला 7 :** क़ज़्फ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं कि वोह सराह़तन किसी को या ज़ानी कहे या येह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उस के बाप का नाम ले कर कहे कि तू फ़ुलां का बेटा नहीं है या उस को ज़ानिया का बेटा कह कर पुकारे और हो उस की मां पारसा तो ऐसा शख़्स क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत की ह़द आएगी। **मस्अला 8 :** अगर ग़ैर मुह़सन को ज़िना की तोहमत लगाई मसलन किसी ग़ुलाम को या काफ़िर को या ऐसे शख़्स को जिस का कभी ज़िना करना साबित हो तो उस पर ह़द्दे क़ज़्फ़ क़ाइम न होगी, बल्कि उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी और येह ता'ज़ीर तीन से उन्तालीस तक ह़स्बे तज्वीज़े ह़ाकिमे शरअ़ कोड़े लगाना है। इसी त़रह़ अगर किसी शख़्स ने ज़िना के सिवा और किसी फ़ुजूर की तोहमत लगाई और पारसा मुसल्मान को ऐ फ़ासिक़, ऐ काफ़िर, ऐ ख़बीस, ऐ चोर, ऐ बदकार, ऐ मुख़न्नस, ऐ बद दियानत, ऐ लूत़ी, ऐ ज़िन्दीक़, ऐ दय्यूस, ऐ शराबी, ऐ सूद ख़्वार, ऐ बदकार औ़रत के बच्चे, ऐ ह़राम ज़ादे, इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहे तो भी उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी। **मस्अला 9 :** इमाम या'नी ह़ाकिमे शरअ़ को और उस शख़्स को जिसे तोहमत लगाई गई हो सुबूत से क़ब्ल मुआ़फ़ करने का ह़क़ है। **मस्अला 10 :** अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि ग़ुलाम हो तो उस को चालीस कोड़े लगाए जाएंगे। **मस्अला 11 :** तोहमत लगाने के जुर्म में जिस को ह़द लगाई गई हो उस की गवाही किसी मुआ़मले में मो'तबर नहीं, चाहे वोह तौबा करे। लेकिन रमज़ान का चांद देखने के बाब में तौबा करने और आ़दिल होने की सूरत में उस का क़ौल क़बूल कर लिया जाएगा क्यूं कि येह दर ह़क़ीक़त शहादत नहीं है इसी लिये इस में लफ़्ज़े शहादत और निसाबे शहादत भी शर्त़ नहीं। 10 : अपने अह़वाल व अफ़्आ़ल को दुरुस्त कर लें 11 : ज़िना का।

اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۶﴾ وَ الْخَامِسَةُ

गवाही येह है कि चार बार गवाही दे अल्लाह के नाम से कि वोह सच्चा है[12] और पांचवीं

اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَیْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۷﴾ وَ یَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ

येह कि अल्लाह की ला'नत हो उस पर अगर झूटा हो और औ़रत से यूं सज़ा टल जाएगी

اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۸﴾ وَ الْخَامِسَةَ

कि वोह अल्लाह का नाम ले कर चार बार गवाही दे कि मर्द झूटा है[13] और पांचवीं

اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَیْهَاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۹﴾ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

यूं कि औ़रत पर ग़ज़ब अल्लाह का अगर मर्द सच्चा हो[14] और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल

عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۰﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ جَآءُوْ

और उस की रह़मत तुम पर न होती और येह कि अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाता ह़िक्मत वाला है तो तुम्हारा पर्दा खोल देता बेशक वोह कि येह बड़ा

بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ

बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअ़त है[15] उसे अपने लिये बुरा न समझो बल्कि वोह तुम्हारे लिये बेहतर है[16]

12 : औ़रत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में। 13 : उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में। 14 : इस को "लिआ़न" कहते हैं। **मस्अला :** जब मर्द अपनी बीबी पर ज़िना की तोहमत लगाए तो अगर मर्द व औ़रत दोनों शहादत के अहल हों और औ़रत इस पर मुत़ालबा करे तो मर्द पर लिआ़न वाजिब हो जाता है। अगर वोह लिआ़न से इन्कार करे तो उस को उस वक़्त तक क़ैद रखा जाएगा जब तक वोह लिआ़न करे या अपने झूट का मुक़िर हो। अगर झूट का इक़रार करे तो उस को ह़द्दे क़ज़्फ़ लगाई जाएगी जिस का बयान ऊपर गुज़र चुका है। और अगर लिआ़न करना चाहे तो उस को चार मरतबा अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि वोह इस औ़रत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है और पांचवीं मरतबा येह कहना होगा कि अल्लाह की ला'नत मुझ पर अगर मैं येह इल्ज़ाम लगाने में झूटा होउं। इतना करने के बा'द मर्द पर से ह़द्दे क़ज़्फ़ साक़ित़ हो जाएगी और औ़रत पर लिआ़न वाजिब होगा, इन्कार करेगी तो क़ैद की जाएगी यहां तक कि लिआ़न मन्ज़ूर करे या शोहर के इल्ज़ाम लगाने की तस्दीक़ करे। अगर तस्दीक़ की तो औ़रत पर ज़िना की ह़द लगाई जाएगी और अगर लिआ़न करना चाहे तो इस को चार मरतबा अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि मर्द इस पर ज़िना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं मरतबा येह कहना होगा कि अगर मर्द इस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो। इतना कहने के बा'द औ़रत से ज़िना की ह़द साक़ित़ हो जाएगी और लिआ़न के बा'द क़ाज़ी के तफ़रीक़ करने से फ़ुरक़त वाक़ेअ़ होगी बिग़ैर इस के नहीं। और येह तफ़रीक़ त़लाक़े बाइना होगी। और अगर मर्द अहले शहादत में से न हो मसलन गुलाम हो या काफ़िर हो या उस पर क़ज़्फ़ की ह़द लग चुकी हो तो लिआ़न न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर ह़द्दे क़ज़्फ़ लगाई जाएगी। और अगर मर्द अहले शहादत में से हो और औ़रत में येह अहलिय्यत न हो इस त़रह़ कि वोह बांदी हो या काफ़िरा हो या उस पर क़ज़्फ़ की ह़द लग चुकी हो या बच्ची हो या मजनूना हो या ज़ानिया हो इस सूरत में न मर्द पर ह़द होगी और न लिआ़न। **शाने नुज़ूल :** येह आयत एक सह़ाबी के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औ़रत को ज़िना में मुब्तला देखे तो क्या करे न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फ़ुरसत है और न बिग़ैर गवाही के वोह येह बात कह सकता है क्यूं कि इसे ह़द्दे क़ज़्फ़ का अन्देशा है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और लिआ़न का हुक्म दिया गया। 15 : बड़े बोहतान से मुराद ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाना है। 5 सिने हिजरी ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लिक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गईं, वहां हार आप का टूट गया, उस की तलाश में मसरूफ़ हो गईं। इधर क़ाफ़िले ने कूच किया और आप का मह़मल (कजावा) शरीफ़ ऊंट पर कस दिया और उन्हें येही ख़याल रहा कि उम्मुल मुअमिनीन इस में हैं। क़ाफ़िला चल दिया आप आ कर क़ाफ़िले की जगह बैठ

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِیْ تَوَلّٰی كِبْرَهٗ مِنْهُمْ

उन में हर शख़्स के लिये वोह गुनाह है जो उस ने कमाया[17] और उन में वोह जिस ने सब से बड़ा हिस्सा लिया[18]

لَهٗ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۱﴾ لَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتُ

उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब है[19] क्यूं न हुवा जब तुम ने उसे सुना था कि मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों ने

بِاَنْفُسِهِمْ خَیْرًا ۙ وَّ قَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَیْهِ

अपनों पर नेक गुमान किया होता[20] और कहते येह खुला बोहतान है[21] इस पर चार गवाह

بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ یَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ

क्यूं न लाए तो जब गवाह न लाए तो वोही **अल्लाह** के नज़्दीक

गईं और आप ने ख़याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा। क़ाफ़िले के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिये एक साहिब रहा करते थे, उस मौक़अ़ पर हज़रते सफ़्वान इस काम पर थे। जब वोह आए और उन्हों ने आप को देखा तो बुलन्द आवाज़ से "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ" पुकारा। आप ने कपड़े से पर्दा कर लिया, उन्हों ने अपनी ऊंटनी बिठाई आप उस पर सुवार हो कर लश्कर में पहुंचीं। मुनाफ़िक़ीने सियाह बातिन ने अवहामे फ़ासिदा फैलाए और आप की शान में बदगोई शुरूअ़ की। बा'ज़ मुसल्मान भी उन के फ़रेब में आ गए और उन की ज़बान से भी कोई कलिमए बेजा सरज़द हुवा। उम्मुल मुअमिनीन बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं, उस ज़माने में उन्हें इत्तिलाअ़ न हुई कि उन की निस्बत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे हैं। एक रोज़ उम्मे मिस्त़ह से उन्हें येह ख़बर मा'लूम हुई और इस से आप का मरज़ और बढ़ गया और इस सदमे में इस त़रह रोईं कि आप का आंसू न थमता था और न एक लम्हे के लिये नींद आती थी। इस हाल में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर वह़्य नाज़िल हुई और ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की त़हारत में येह आयतें उतरीं और आप का शरफ़ो मर्तबा **अल्लाह** तआ़ला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआन की बहुत सी आयात में आप की त़हारत व फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई। इस दौरान में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बर सरे मिम्बर ब क़सम फ़रमा दिया था : मुझे अपने अह्ल की पाकी व ख़ूबी बिल यक़ीन मा'लूम है तो जिस शख़्स ने इन के ह़क़ में बदगोई की है उस की त़रफ़ से मेरे पास कौन मा'ज़िरत पेश कर सकता है? ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ीन बिल यक़ीन झूटे हैं उम्मुल मुअमिनीन बिल यक़ीन पाक हैं **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जिस्मे पाक को मख्खी के बैठने से मह़फ़ूज़ रखा कि वोह नजासतों पर बैठती है, कैसे हो सकता है कि वोह आप को बद औ़रत की सोहबत से मह़फ़ूज़ न रखे! ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी इस त़रह आप की त़हारत बयान की और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि इस साए पर किसी का क़दम न पड़े तो जो परवर्दगार आप के साए को मह़फ़ूज़ रखता है किस त़रह मुम्किन है कि वोह आप के अह्ल को मह़फ़ूज़ न फ़रमाए। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि एक जूं का ख़ून लगने से परवर्दगारे आ़लम ने आप को ना'लैन उतार देने का ह़ुक्म दिया, जो परवर्दगार आप की ना'ल शरीफ़ की इतनी सी आलूदगी को गवारा न फ़रमाए मुम्किन नहीं कि वोह आप के अह्ल की आलूदगी गवारा करे। इस त़रह बहुत से सह़ाबा और बहुत सी सह़ाबिय्यात ने क़समें खाईं, आयत नाज़िल होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की त़रफ़ से क़ुलूब मुत्मइन थे, आयत के नुज़ूल ने उन का इ़ज़्ज़ो शरफ़ और ज़ियादा कर दिया। तो बदगोयों की बदगोई **अल्लाह** और उस के रसूल और सह़ाबए किबार के नज़्दीक बात़िल है और बदगोई करने वालों के लिये सख़्त तरीन मुसीबत है। **16 :** कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुम्हें इस पर जज़ा देगा और ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की शान और उन की बराअत ज़ाहिर फ़रमाएगा। चुनान्चे इस बराअत में उस ने अठ्ठारह आयतें नाज़िल फ़रमाईं। **17 :** या'नी ब क़दर उस के अ़मल के कि किसी ने तूफ़ान उठाया किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़बानी मुवाफ़क़त की कोई हंस दिया किसी ने ख़ामोशी के साथ सुन ही लिया जिस ने जो किया उस का बदला पाएगा। **18 :** कि अपने दिल से येह तूफ़ान घड़ा और इस को मश्हूर करता फिरा और वोह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ है। **19 :** आख़िरत में। मरवी है कि उन बोहतान लगाने वालों पर ब ह़ुक्मे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़द क़ाइम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए। **20 :** क्यूं कि मुसल्मान को येही ह़ुक्म है कि मुसल्मान के साथ नेक गुमान करे और बद गुमानी मम्नूअ़ है। बा'ज़े गुमराह बेबाक येह कह गुज़रते हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰہ इस मुआ़मले में बद गुमानी हो गई थी। वोह मुफ़्तरी कज़्ज़ाब हैं और शाने रिसालत में ऐसा कलिमा कहते हैं जो मोमिनीन के ह़क़ में भी लाइक़ नहीं है। **अल्लाह** तआ़ला मोमिनीन से फ़रमाता है कि तुम ने नेक गुमान क्यूं न किया, तो कैसे मुम्किन था कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बद गुमानी करते। और ह़ुज़ूर की निस्बत बद गुमानी का लफ़्ज़ कहना बड़ी सियाह बात़िनी है ख़ास कर ऐसी ह़ालत में जब कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ुज़ूर ने ब क़सम फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि मेरे अह्ल पाक हैं जैसा कि ऊपर मज़्कूर हो चुका। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मान पर बद

الۡكٰذِبُوۡنَ ﴿١٣﴾ وَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ

झूटे हैं और अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह्मत तुम पर दुन्या और आख़िरत में न होती[22]

لَمَسَّكُمۡ فِىۡ مَاۤ اَفَضۡتُمۡ فِيۡهِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿١٤﴾ اِذۡ تَلَقَّوۡنَهٗ بِاَلۡسِنَتِكُمۡ

तो जिस चरचे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुन कर लाते थे

وَتَقُوۡلُوۡنَ بِاَفۡوَاهِكُمۡ مَّا لَيۡسَ لَكُمۡ بِهٖ عِلۡمٌ وَّتَحۡسَبُوۡنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ

और अपने मुंह से वोह निकालते थे जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं और उसे सहल समझते थे[23] और वोह

عِنۡدَ اللّٰهِ عَظِيۡمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوۡلَاۤ اِذۡ سَمِعۡتُمُوۡهُ قُلۡتُمۡ مَّا يَكُوۡنُ لَنَاۤ اَنۡ نَّتَكَلَّمَ

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी बात है[24] और क्यूं न हुवा जब तुम ने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात

بِهٰذَا ۖ سُبۡحٰنَكَ هٰذَا بُهۡتَانٌ عَظِيۡمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنۡ تَعُوۡدُوۡا

कहें[25] इलाही पाकी है तुझे[26] येह बड़ा बोहतान है **अल्लाह** तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी

لِمِثۡلِهٖۤ اَبَدًا اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الۡاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ

ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो और **अल्लाह** तुम्हारे लिये आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और **अल्लाह**

عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يُحِبُّوۡنَ اَنۡ تَشِيۡعَ الۡفَاحِشَةُ فِى الَّذِيۡنَ

इ़ल्मो हिक्मत वाला है वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा

اٰمَنُوۡا لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۙ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ

फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या[27] और आख़िरत में[28] और **अल्लाह** जानता है[29] और तुम

لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٩﴾ وَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوۡفٌ

नहीं जानते और अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह्मत तुम पर न होती और येह कि **अल्लाह** तुम पर निहायत मेह्रबान

गुमानी करना ना जाइज़ है और जब किसी नेक शख़्स पर तोहमत लगाई जाए तो बिग़ैर सुबूत मुसल्मान को इस की मुवाफ़क़त और तस्दीक़ करना रवा नहीं। **21 :** बिल्कुल झूट है बे ह़क़ीक़त है। **22 :** और तुम पर फ़ज़्लो करम मन्ज़ूर न होता, जिस में से तौबा के लिये मोहलत देना भी है और आख़िरत में अ़फ़्वो मग़्फ़िरत फ़रमाना भी। **23 :** और ख़याल करते थे कि इस में बड़ा गुनाह नहीं **24 :** जुर्मे अ़ज़ीम है। **25 :** येह हमारे लिये रवा नहीं क्यूं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। **26 :** इस से कि तेरे नबी की ह़रम को फ़ुजूर की आलूदगी पहुंचे। **मस्अला :** येह मुम्किन ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके अगर्चे उस का मुब्तलाए कुफ़्र होना मुम्किन है क्यूं कि अम्बिया कुफ़्फ़ार की त़रफ़ मब्ऊ़स होते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ कुफ़्फ़ार के नज़्दीक भी क़ाबिले नफ़्रत हो उस से वोह पाक हों और ज़ाहिर है कि औ़रत की बदकारी उन के नज़्दीक क़ाबिले नफ़्रत है। (کبیر وغیرہ) **27 :** या'नी इस जहान में, और वोह ह़द क़ाइम करना है चुनान्चे इब्ने उबय और ह़स्सान और मिस्त़ह़ के ह़द लगाई गई। (مدارک) **28 :** दोज़ख़। अगर बे तौबा मर जाएं। **29 :** दिलों के राज़ और बात़िन के अह़वाल।

رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ

मेहर वाला है तो तुम इस का मज़ा चखते[30] ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो और जो

يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ

शैतान के क़दमों पर चले तो वोह तो बे हयाई और बुरी ही बात बताएगा[31] और अगर **अल्लाह** का

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ

फ़ज़्ल और उस की रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता[32] हां **अल्लाह** सुथरा कर देता है

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ

जिसे चाहे[33] और **अल्लाह** सुनता जानता है और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले[34] और

السَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ

गुन्जाइश वाले हैं[35] क़राबत वालों और मिस्कीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को

اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

देने की और चाहिये कि मुआफ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ

बख़्शने वाला मेहरबान है[36] बेशक वोह जो ऐब लगाते हैं अन्जान[37] पारसा ईमान वालियों को[38]

لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ

उन पर ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और उन के लिये बड़ा अज़ाब है[39] जिस दिन[40] उन पर

30 : और अज़ाबे इलाही तुम्हें मोहलत न देता। **31 :** उस के वस्वसों में न पड़ो और बोहतान उठाने वालों की बातों पर कान न लगाओ। **32 :** और **अल्लाह** तआला उस को तौबा व हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ न देता और अफ़्वो मग़्फ़िरत न फ़रमाता। **33 :** तौबा क़बूल फ़रमा कर। **34 :** और मन्ज़िलत वाले हैं दीन में। **35 :** सरवत व माल में। **शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के हक़ में नाज़िल हुई। आप ने क़सम खाई थी कि मिस्तह के साथ सुलूक न करेंगे और वोह आप की ख़ाला के बेटे थे, नादार थे मुहाजिर थे बद्री थे। आप ही उन का ख़र्च उठाते थे, मगर चूंकि उम्मुल मुअमिनीन पर तोहमत लगाने वालों के साथ उन्हों ने मुवाफ़क़त की थी इस लिये आप ने येह क़सम खाई, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **36 :** जब येह आयत सय्यिदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने पढ़ी तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कहा : बेशक मेरी आरज़ू है कि **अल्लाह** मेरी मग़्फ़िरत करे और मैं मिस्तह के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी मौक़ूफ़ न करूंगा। चुनान्चे आप ने उस को जारी फ़रमा दिया। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी काम पर क़सम खाए फिर मा'लूम हो कि उस का करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। हदीसे सहीह में येही वारिद है। **मस्अला :** इस आयत से हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की फ़ज़ीलत साबित हुई, इस से आप की उलूए शानो मर्तबत ज़ाहिर होती है कि **अल्लाह** तआला ने आप को उलुल फ़ज़्ल फ़रमाया और **37 :** औरतों को जो बदकारी और फ़ुजूर को जानती भी नहीं और बुरा ख़याल उन के दिल में भी नहीं गुज़रता और **38 :** हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि येह सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की अज़्वाजे मुतह्हरात के औसाफ़ हैं। एक क़ौल येह है कि इस से तमाम ईमानदार पारसा औरतें मुराद हैं, इन के ऐब लगाने वालों पर **अल्लाह**

عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ

गवाही देंगी उन की ज़बानें[41] और उन के हाथ और उन के पाउं जो कुछ करते थे उस दिन

يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾

अल्लाह उन्हें उन की सच्ची सज़ा पूरी देगा[42] और जान लेंगे कि **अल्लाह** ही सरीह़ ह़क़ है[43]

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَ

गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये[44] और सुथरियां सुथरों के लिये और

الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

सुथरे सुथरियों के लिये वोह[45] पाक हैं उन बातों से जो येह[46] कह रहे हैं उन के लिये बख़्शिश

وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ

और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है[47] ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ

حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ

जब तक इजाज़त न ले लो[48] और उन के साकिनों पर सलाम न कर लो[49] येह तुम्हारे लिये बेहतर है कि तुम

तआ़ला ला'नत फ़रमाता है। **39 :** येह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में है। (خازن) **40 :** या'नी रोज़े क़ियामत **41 :** ज़बानों का गवाही देना तो उन के मूंहों पर मोहरें लगाए जाने से क़ब्ल होगा और इस के बा'द मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी जिस से ज़बानें बन्द हो जाएंगी और आ'ज़ा बोलने लगेंगे और दुन्या में जो अ़मल किये थे उन की ख़बर देंगे जैसे कि आगे इर्शाद है। **42 :** जिस के वोह मुस्तह़िक़ हैं। **43 :** या'नी मौजूद ज़ाहिर है, उसी की क़ुदरत से हर चीज़ का वुजूद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला के वा'दों में शक करते थे **अल्लाह** तआ़ला आख़िरत में उन्हें उन के आ'माल की जज़ा दे कर उन वा'दों का ह़क़ होना ज़ाहिर फ़रमा देगा। **फ़ाएदा :** क़ुरआने करीम में किसी गुनाह पर ऐसी तग़्लीज़ व तश्दीद और तकरार व ताकीद नहीं फ़रमाई गई जैसी कि ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا के ऊपर बोहतान बांधने पर फ़रमाई गई। इस से सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की रिफ़्अ़ते मन्ज़िलत ज़ाहिर होती है। **44 :** या'नी ख़बीस के लिये ख़बीस लाइक़ है, ख़बीसा औ़रत ख़बीस मर्द के लिये और ख़बीस मर्द ख़बीसा औ़रत के लिये और ख़बीस आदमी ख़बीस बातों के दरपै होते हैं और ख़बीस बातें ख़बीस आदमी का वत़ीरा होती हैं। **45 :** या'नी पाक मर्द और औ़रतें जिन में से ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا और सफ़्वान हैं। **46 :** तोहमत लगाने वाले ख़बीस **47 :** या'नी सुथरों और सुथरियों के लिये जन्नत में। इस आयत से ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا का कमाले फ़ज़्लो शरफ़ साबित हुवा कि वोह त़य्यिबा और पाक पैदा की गईं और क़ुरआने करीम में उन की पाकी का बयान फ़रमाया गया और उन्हें मग़्फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वा'दा दिया गया। ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا को **अल्लाह** ने बहुत ख़साइस अ़त़ा फ़रमाए जो आप के लिये क़ाबिले फ़ख़्र हैं, उन में से बा'ज़ येह हैं कि जिब्रीले अमीन सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के ह़ुज़ूर में एक ह़रीर (रेशमी कपड़े) पर आप की तस्वीर लाए और अ़र्ज़ किया कि येह आप की ज़ौजा हैं और येह कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने आप के सिवा किसी कुंवारी से निकाह़ न फ़रमाया और येह कि रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की वफ़ात आप की गोद में और आप की नौबत के दिन हुई और आप ही का ह़ुज्रए शरीफ़ा सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم का आराम गाह और आप का रौज़ए त़ाहिरा हुवा और येह कि बा'ज़ अवक़ात ऐसी ह़ालत में ह़ुज़ूर पर वह़्य नाज़िल हुई कि ह़ज़रते सिद्दीक़ा आप के साथ आप के लिह़ाफ़ में होतीं और येह कि आप ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की दुख़्तर हैं और येह कि आप पाक पैदा की गईं और आप से मग़्फ़िरत व रिज़्क़े करीम का वा'दा फ़रमाया गया। **48 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि ग़ैर के घर में बे इजाज़त दाख़िल न हो और इजाज़त लेने का त़रीक़ा येह भी है कि बुलन्द आवाज़ से "سُبْحٰنَ اللّٰہ" या

تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَاۤ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ

ध्यान करो फिर अगर उन में किसी को न पाओ[50] जब भी बे मालिकों की इजाज़त के उन में न

لَكُمْ ۚ وَ اِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا

जाओ[51] और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो[52] येह तुम्हारे लिये बहुत सुथरा है अल्लाह तुम्हारे

تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ

कामों को जानता है इस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत

مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۲۹﴾

के नहीं[53] और उन के बरत्ने का तुम्हें इख़्तियार है और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى

मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें[54] और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें[55] येह उन के लिये बहुत

لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ

सुथरा है बेशक अल्लाह को उन के कामों की ख़बर है और मुसल्मान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ

"اَلْحَمْدُ لِلّٰه" या "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहे या खन्कारे जिस से मकान वालों को मा'लूम हो कि कोई आना चाहता है या येह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है। ग़ैर के घर से वोह घर मुराद है जिस में ग़ैर सुकूनत रखता हो ख़्वाह उस का मालिक हो या न हो। 49 **मस्अला :** ग़ैर के घर जाने वाले की अगर साहिबे मकान से पहले ही मुलाक़ात हो जाए तो अव्वल सलाम करे फिर इजाज़त चाहे और अगर वोह मकान के अन्दर हो तो सलाम के साथ इजाज़त चाहे इस त़रह़ कि कहे : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है ? ह़दीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर मुक़द्दम करो। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह की क़िराअत भी इसी पर दलालत करती है। उन की क़िराअत यूं है : "حَتّٰى تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا وَتَسْتَاْذِنُوْا" और येह भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम करे। (مدارک،کشاف،احمدی) **मस्अला :** अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बे पर्दगी का अन्देशा हो तो दाईं या बाईं जानिब खड़े हो कर इजाज़त त़लब करे। **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है अगर घर में मां हो जब भी इजाज़त त़लब करे। (مؤطا امام مالک) 50 : या'नी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो 51 : क्यूं कि मिल्के ग़ैर में तसर्रुफ़ करने के लिये उस की रिज़ा ज़रूरी है। 52 : और इजाज़त त़लब करने में इसरार व इल्ह़ाह़ (तक्रार) न करो। **मस्अला :** किसी का दरवाज़ा बहुत ज़ोर से खटखटाना और शदीद आवाज़ से चीख़ना ख़ास कर उ़लमा और बुज़ुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना उन को ज़ोर से पुकारना मक्रूह व ख़िलाफ़े अदब है। 53 : मिस्ल सराए और मुसाफ़िर ख़ाने वग़ैरा के कि इस में जाने के लिये इजाज़त ह़ासिल करने की ह़ाजत नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने आयते इस्तीज़ान या'नी ऊपर वाली आयत नाज़िल होने के बा'द दरयाफ़्त किया था कि मक्कए मुकर्रमा और मदीनए त़य्यिबा के दरमियान और शाम की राह में जो मुसाफ़िर ख़ाने बने हुए हैं क्या उन में दाख़िल होने के लिये भी इजाज़त लेना ज़रूरी है। 54 : और जिस चीज़ का देखना जाइज़ नहीं उस पर नज़र न डालें। **मसाइल :** मर्द का बदन ज़ेरे नाफ़ से घुटने के नीचे तक औ़रत (छुपाने की जगह) है इस का देखना जाइज़ नहीं और औ़रतों में से अपने मह़ारिम और ग़ैर की बांदी का भी येही हुक्म है मगर इतना और है कि उन के पेट और पीठ का देखना भी जाइज़ नहीं और हुर्रा अज्नबिय्या के तमाम बदन का देखना मम्नूअ़ है "اِنْ لَّمْ يَاْمَنْ مِّنَ الشَّهْوَةِ، وَاِنْ اَمِنَ مِنْهَا فَالْمَمْنُوْعُ النَّظْرُ اِلٰى مَاسِوَى الْوَجْهِ وَالْكَفِّ وَالْقَدَمِ، وَمَنْ يَّاْمَنْ فَاِنَّ الزَّمَانَ زَمَانُ الْفَسَادِ فَلَا يَحِلُّ النَّظْرُ اِلَى الْحُرَّةِ الْاَجْنَبِيَّة مُطْلَقًا مِّنْ غَيْرِ ضَرُوْرَة" मगर ब ह़ालते ज़रूरत क़ाज़ी व गवाह को और उस औ़रत से निकाह़ की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जाइज़ है और अगर किसी औ़रत के ज़रीए से ह़ाल मा'लूम कर सकता हो तो न देखे और त़बीब को मौज़ए मरज़ का ब क़दरे ज़रूरत देखना जाइज़ है। **मस्अला :** अम्रद लड़के की त़रफ़ भी शह्वत से देखना ह़राम है। (مدارک واحمدی) 55 : और ज़िना व ह़राम से बचें या येह मा'ना हैं कि अपनी शर्मगाहों और उन के लवाह़िक़ या'नी तमाम बदने औ़रत को छुपाएं और पर्दे का एहतिमाम रखें।

اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ

नीची रखें[56] और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं[57] मगर जितना ख़ुद ही ज़ाहिर

مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا

है और दूपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर

لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ

अपने शोहरों पर या अपने बाप[58] या शोहरों के बाप[59] या अपने बेटे[60] या शोहरों

بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ

के बेटे[61] या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भान्जे[62] या अपने दीन की औ़रतें

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ

या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों[63] या नोकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों[64]

اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَلَا يَضْرِبْنَ

या वोह बच्चे जिन्हें औ़रतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं[65] और ज़मीन पर

بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا

पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार[66] और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो

56 : और ग़ैर मर्दों को न देखें। ह़दीस शरीफ़ में है कि अज़्वाजे मुत़हहरात में से बा'ज़ उम्महातुल मुअमिनीन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में थीं, उसी वक़्त इब्ने उम्मे मक्तूम आए, हुज़ूर ने अज़्वाज को पर्दे का हुक्म फ़रमाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि वोह तो नाबीना हैं। फ़रमाया : तुम तो नाबीना नहीं हो। (ترمذی وابوداود) इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि औ़रतों को भी ना मह़रम का देखना और उस के सामने होना जाइज़ नहीं। **57 :** अज़्हर (ज़ियादा ज़ाहिर बात) येह है कि येह हुक्म नमाज़ का है, न नज़र का, क्यूं कि हु़र्रा का तमाम बदन औ़रत है, शोहर और मह़रम के सिवा और किसी के लिये इस के किसी हिस्से का देखना बे ज़रूरत जाइज़ नहीं और मुआ़लजा वग़ैरा की ज़रूरत से क़दरे ज़रूरत जाइज़ है। (تفسیر احمدی) **58 :** और इन्हीं के हुक्म में दादा परदादा वग़ैरा तमाम उसूल। **59 :** कि वोह भी मह़रम हो जाते हैं। **60 :** और इन्हीं के हुक्म में है इन की औलाद। **61 :** कि वोह भी मह़रम हो गए। **62 :** और इन्हीं के हुक्म में हैं चचा मामूं वग़ैरा तमाम महा़रिम। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को लिखा था कि कुफ़्फ़ार अहले किताब की औ़रतों को मुसल्मान औ़रतों के साथ ह़म्माम में दाख़िल होने से मन्अ़ करें। इस से मा'लूम हुवा कि मुस्लिमा औ़रत को काफ़िरा औ़रत के सामने अपना बदन खोलना जाइज़ नहीं। **मस्अला :** औ़रत अपने ग़ुलाम से भी मिस्ल अज्नबी के पर्दा करे। (مدارک وغیرہ) **63 :** इन पर अपना सिंगार ज़ाहिर करना मम्नूअ़ नहीं और ग़ुलाम इन के हुक्म में नहीं, इस को अपनी मालिका के मवाज़ेए़ ज़ीनत को देखना जाइज़ नहीं। **64 :** मसलन ऐसे बूढ़े हों जिन्हें अस्लन शहवत बाक़ी नहीं रही हो और हों सालेह़। **मस्अला :** अइम्मए ह़नफ़िय्या के नज़्दीक ख़सी और इ़न्नीन ह़ुरमते नज़र में अज्नबी का हुक्म रखते हैं। **मस्अला :** इसी त़रह़ क़बीह़ुल अफ़्आ़ल मुख़न्नस से भी पर्दा किया जाए जैसा कि ह़दीसे मुस्लिम से साबित है। **65 :** वोह अभी नादान ना बालिग़ हैं। **66 :** या'नी औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए। **मस्अला :** इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें। ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों। इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़दमे क़बूले दुआ़ का सबब है तो ख़ास औ़रत की आवाज़ और उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है (**अल्लाह** की पनाह)। (تفسیر احمدی وغیرہ)

اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ

ऐ मुसल्मानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ और निकाह़ कर दो अपनों में उन का जो बे निकाह़ हों[67] और

الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ

अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का अगर वोह फ़क़ीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ

अपने फ़ज़्ल के सबब[68] और अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है चाहिये कि बचे रहें[69] वोह जो निकाह़ का मक्दूर

نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا

नहीं रखते[70] यहां तक कि अल्लाह उन्हें मक्दूर वाला कर दे अपने फ़ज़्ल से[71] और तुम्हारे हाथ की मिल्क बांदी गुलामों में से

مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ

जो येह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त़ पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो[72] अगर उन में कुछ भलाई जानो[73] और इस पर उन की मदद करो

مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ

अल्लाह के माल से जो तुम को दिया[74] और मजबूर न करो अपनी कनीज़ों को बदकारी पर जब कि वोह

تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ

बचना चाहें ताकि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो[75] और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक अल्लाह

67 : ख़्वाह मर्द या औ़रत, कुंवारे या ग़ैर कुंवारे । 68 : इस ग़ना से मुराद या क़नाअ़त है कि वोह बेहतरीन ग़ना है जो क़ानेअ़ (क़नाअ़त करने वाले) को तरद्दुद से बे नियाज़ कर देता है । या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिये काफ़ी हो जाए जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा है या ज़ौज व ज़ौजा के दो रिज़्क़ों का जम्अ़ हो जाना या फ़राख़ी ब बरकते निकाह़ जैसा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है । 69 : ह़राम कारी से 70 : जिन्हें महर व नफ़्क़ा मुयस्सर नहीं । 71 : और महर व नफ़्क़ा अदा करने के क़ाबिल हो जाएं । ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो निकाह़ की क़ुदरत रखे वोह निकाह़ करे कि निकाह़ पारसाई व पाकबाज़ी का मुईन (मददगार) है और जिसे निकाह़ की क़ुदरत न हो वोह रोज़े रखे कि येह शह्वतों के तोड़ने वाले हैं । 72 : कि वोह इस क़दर माल अदा कर के आज़ाद हो जाएं, और इस त़रह़ की आज़ादी को किताबत कहते हैं और आयत में इस का अम्र इस्तिह़्बाब के लिये है और येह इस्तिह़्बाब उस शर्त़ के साथ मशरूत़ है जो इस के बा'द ही आयत में मज़्कूर है । **शाने नुज़ूल :** हुवैत़िब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा के गुलाम सुबैह़ ने अपने मौला से किताबत की दरख़्वास्त की, मौला ने इन्कार किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो हुवैत़िब ने उस को सो दीनार पर मुकातब कर दिया और उन में से बीस उस को बख़्श दिये, बाक़ी उस ने अदा कर दिये । 73 : भलाई से मुराद अमानत व दियानत और कमाई पर क़ुदरत रखना है कि वोह ह़लाल रोज़ी से माल ह़ासिल कर के आज़ाद हो सके और मौला को माल दे कर आज़ादी ह़ासिल करने के लिये भीक न मांगता फिरे । इसी लिये ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने गुलाम को मुकातब करने से इन्कार फ़रमा दिया जो सिवाए भीक के कोई ज़रीआ़ कस्ब का न रखता था । 74 : मुसल्मानों को इर्शाद है कि वोह मुकातब गुलामों को ज़कात वग़ैरा दे कर मदद करें जिस से वोह बदले किताबत दे कर अपनी गरदन छुड़ा सकें और आज़ाद हो सकें । 75 : या'नी त़मए माल में अन्धे हो कर कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करें । **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो माल ह़ासिल करने के लिये अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर करता था, उन कनीज़ों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस की शिकायत की, इस पर येह आयत करीमा नाज़िल हुई ।

بَعۡدِ اِكۡرَاهِهِنَّ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ

बा'द इस के कि वोह मजबूरी ही की हालत पर रहें बख़्शने वाला मेहरबान है[76] और बेशक हम ने उतारीं तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें[77]

وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَمَوۡعِظَةً لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٣٤﴾ اَللّٰهُ

और कुछ उन लोगों का बयान जो तुम से पहले हो गुज़रे और डर वालों के लिये नसीहत अल्लाह

نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ مَثَلُ نُوۡرِهٖ كَمِشۡكٰوةٍ فِيۡهَا مِصۡبَاحٌ ؕ

नूर है[78] आस्मानों और ज़मीन का उस के नूर की[79] मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उस में चराग़ है

اَلۡمِصۡبَاحُ فِىۡ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوۡكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوۡقَدُ مِنۡ

वोह चराग़ एक फ़ानूस में है वोह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रोशन होता है

شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيۡتُوۡنَةٍ لَّا شَرۡقِيَّةٍ وَّلَا غَرۡبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيۡتُهَا يُضِىۡٓءُ

बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से[80] जो न पूरब (मशरिक़) का न पश्चिम (मग़रिब) का[81] क़रीब है कि उस का तेल[82] भड़क उठे

وَلَوۡ لَمۡ تَمۡسَسۡهُ نَارٌ ؕ نُوۡرٌ عَلٰى نُوۡرٍ ؕ يَهۡدِى اللّٰهُ لِنُوۡرِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

अगर्चे उसे आग न छूए नूर पर नूर है[83] अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है

76 : और वबाले गुनाह मजबूर करने वाले पर। 77 : जिन्हों ने हलाल व हराम, हुदूद व अहकाम सब को वाज़ेह कर दिया। 78 : "नूर" अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अल्लाह आस्मान व ज़मीन का हादी है तो अहले समावात व अर्ज़ उस के नूर से हक़ की राह पाते हैं और उस की हिदायत से गुमराही की हैरत से नजात हासिल करते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआला आस्मान व ज़मीन का मुनव्वर फ़रमाने वाला है उस ने आस्मानों को मलाएका से और ज़मीन को अम्बिया से मुनव्वर किया। 79 : अल्लाह के नूर से या तो क़ल्बे मोमिन की वोह नूरानिय्यत मुराद है जिस से वोह हिदायत पाता और राहयाब होता है। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि अल्लाह के उस नूर की मिसाल जो उस ने मोमिन को अता फ़रमाया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने उस नूर से क़ुरआन मुराद लिया और एक तफ़्सीर येह है कि उस नूर से मुराद सय्यिदे काएनात अफ़्ज़ले मौजूदात हज़रत रहमते आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم हैं। 80 : येह दरख़्त निहायत कसीरुल बरकत है क्यूं कि इस का रोग़न जिस को "ज़ैत" कहते हैं निहायत साफ़ व पाकीज़ा रोशनी देता है, सर में भी लगाया जाता है, सालन और नान ख़ोरिश (गोश्त, मछली वग़ैरा) की जगह रोटी से भी खाया जाता है। दुन्या के और किसी तेल में येह वस्फ़ नहीं और दरख़्ते ज़ैतून के पत्ते नहीं गिरते। (خازن) 81 : बल्कि वस्त का है कि न उसे गरमी से ज़रर पहुंचे न सरदी से। और वोह निहायत अज्वदो आ'ला है और उस के फल ग़ायत ए'तिदाल में। 82 : अपनी सफ़ा व लताफ़त के बाइस ख़ुद 83 : इस तम्सील के मा'ना में अहले इल्म के कई क़ौल हैं एक येह कि नूर से मुराद हिदायत है और मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआला की हिदायत ग़ायते ज़ुहूर में है कि आलमे महसूसात में इस की तश्बीह ऐसे रोशन दान से हो सकती है जिस में साफ़ शफ़्फ़ाफ़ फ़ानूस हो उस फ़ानूस में ऐसा चराग़ हो जो निहायत ही बेहतर और मुसफ़्फ़ा ज़ैतून से रोशन हो कि इस की रोशनी निहायत आ'ला और साफ़ हो। और एक क़ौल येह है कि येह तम्सील नूरे सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की है। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने का'ब अहबार से फ़रमाया कि इस आयत के मा'ना बयान करो, उन्हों ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने नबी صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की मिसाल बयान फ़रमाई रोशन दान (ताक़) तो हुज़ूर का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस क़ल्बे मुबारक और चराग़ नुबुव्वत कि शजरे नुबुव्वत से रोशन है और उस नूरे मुहम्मदी की रोशनी व इज़ाअत इस मर्तबए कमाले ज़ुहूर पर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमाएं जब भी ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाए। और हज़रते इब्ने उमर رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि रोशन दान तो सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم का सीना मुबारक है और फ़ानूस क़ल्बे अत्हर और चराग़ वोह नूर जो अल्लाह तआला ने उस में रखा कि शर्क़ी है न

وَیَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۙ﴿۳۵﴾ فِیْ بُیُوْتٍ

और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिये और अल्लाह सब कुछ जानता है उन घरों में

اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَیُذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ ۙ یُسَبِّحُ لَهٗ فِیْهَا بِالْغُدُوِّ

जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है[84] और उन में उस का नाम लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं उन में सुब्ह़

وَالْاٰصَالِ ۙ﴿۳۶﴾ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِیْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَیْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

और शाम[85] वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद[86]

وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِیْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۪ۙ یَخَافُوْنَ یَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِیْهِ

और नमाज़ बरपा रखने[87] और ज़कात देने से[88] डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे

الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۗۙ﴿۳۷﴾ لِیَجْزِیَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَیَزِیْدَهُمْ

दिल और आंखें[89] ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सब से बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें

مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِیْنَ

इन्आम ज़ियादा दे और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे बे गिनती और जो

كَفَرُوْۤا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِیْعَةٍ یَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰۤی اِذَا

काफ़िर हुए उन के काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमक्ता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे यहां तक जब

ग़र्बी, न यहूदी न नसरानी, एक शजरए मुबारका से रोशन है वोह शजर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, नूरे क़ल्बे इब्राहीम पर नूरे मुह़म्मदी नूर पर नूर है। और मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने कहा कि रोशन दान व फ़ानूस तो ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْهِ السَّلَام हैं और चराग़ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم और शजरए मुबारका ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام कि अक्सर अम्बिया आप की नस्ल से हैं और शर्क़ी व ग़र्बी न होने के येह मा'ना हैं कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام न यहूदी थे न नसरानी, क्यूं कि यहूद मग़रिब की त़रफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और नसारा मशरिक़ की त़रफ़। क़रीब है कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के मह़ासिन व कमालात नुज़ूले वह़्य से क़ब्ल ही ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाएं, नूर पर नूर येह कि नबी हैं नस्ले नबी से नूरे मुह़म्मदी है नूरे इब्राहीमी पर। इस के इ़लावा और भी बहुत अक़्वाल हैं। (خازن) **84 :** और उन की ता'ज़ीम व त़हीर लाज़िम की। मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में। **85 :** तस्बीह़ से मुराद नमाज़ें हैं, सुब्ह़ की तस्बीह़ से फ़ज्र और शाम से ज़ोहर व अ़स्र व मग़रिब व इ़शा मुराद हैं। **86 :** और उस के ज़िक्रे क़ल्बी व लिसानी और अवक़ाते नमाज़ पर मस्जिदों की ह़ाज़िरी से **87 :** और उन्हें वक़्त पर अदा करने से। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बाज़ार में थे, मस्जिद में नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई, आप ने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द कर के मस्जिद में दाख़िल हो गए। तो फ़रमाया कि आयत ''رِجَالٌ لَّا تُلْهِیْهِمْ'' ऐसे ही लोगों के ह़क़ में है। **88 :** उस के वक़्त पर। **89 :** दिलों का उलट जाना येह है कि शिद्दते ख़ौफ़ व इज़्तिराब से उलट कर गले तक चढ़ जाएंगे, न बाहर निकलें न नीचे उतरें और आंखें ऊपर चढ़ जाएंगी। या येह मा'ना हैं कुफ़्फ़ार के दिल कुफ़्रो शक से ईमान व यक़ीन की त़रफ़ पलट जाएंगे और आंखों से पर्दे उठ जाएंगे येह तो उस दिन का बयान है, आयत में येह इर्शाद फ़रमाया गया कि वोह फ़रमां बरदार बन्दे जो ज़िक्रो त़ाअ़त में निहायत मुस्तइद रहते हैं और इ़बादत की अदा में सरगर्म रहते हैं बा वुजूद इस ह़ुस्ने अ़मल के इस रोज़ से ख़ाइफ़ रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इ़बादत का ह़क़ अदा न हो सका।

جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ

उस के पास आया तो उसे कुछ न पाया[90] और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उस ने उस का हिसाब पूरा भर दिया और अल्लाह

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ

जल्द हिसाब कर लेता है या[91] जैसे अंधेरियां किसी कुन्डे के दरिया में[92] उस के ऊपर मौज मौज के ऊपर और

مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ

मौज उस के ऊपर बादल अंधेरे हैं एक पर एक[93] जब अपना हाथ निकाले

يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَ مَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾ ع

तो सुझाई देता मा'लूम न हो[94] और जिसे अल्लाह नूर न दे उस के लिये कहीं नूर नहीं[95]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ

क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे[96] पर फैलाए

كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَ تَسْبِيْحَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ لِلّٰهِ

सब ने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह़ और अल्लाह उन के कामों को जानता है और अल्लाह ही

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ اِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۴۲﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन की और अल्लाह ही की त़रफ़ फिर जाना क्या तू ने न देखा कि अल्लाह

يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ

नर्म नर्म चलाता है बादल को[97] फिर उन्हें आपस में मिलाता है[98] फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उस के

90 : या'नी पानी समझ कर उस की तलाश में चला, जब वहां पहुंचा तो पानी का नामो निशान न था, ऐसे ही काफ़िर अपने ख़याल में नेकियां करता है और समझता है कि अल्लाह तआ़ला से इस का सवाब पाएगा, जब अ़रसाते क़ियामत (क़ियामत के मैदान) में पहुंचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि अ़ज़ाबे अ़ज़ीम में गिरिफ़्तार होगा और उस वक़्त उस की ह़सरत और उस का अन्दोह व ग़म उस प्यास से ब दरजहा ज़ियादा होगा। **91 :** आ'माले कुफ़्फ़ार की मिसाल ऐसी है **92 :** समुन्दरों की गहराई में **93 :** एक अंधेरा दरिया की गहराई का इस पर एक और अंधेरा मौजों के तराकुम (इकठ्ठा होने) का इस पर और अंधेरा बादलों की घिरी हुई घटा का, इन अंधेरियों की शिद्दत का येह आ़लम कि जो इस में हो वोह **94 :** बा वुजूदे कि अपना हाथ निहायत ही क़रीब और अपने जिस्म का जुज़्व है जब वोह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी, ऐसा ही हाल है काफ़िर का कि वोह ए'तिक़ादे बात़िल और क़ौले नाह़क़ और अ़मले क़बीह़ की तारीकियों में गिरिफ़्तार है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दरिया के कुन्डे और उस की गहराई से काफ़िर के दिल को और मौजों से जह्ल व शक व ह़ैरत को जो काफ़िर के दिल पर छाए हुए हैं और बादलों से मोहर को जो उन के दिलों पर है तश्बीह दी गई। **95 :** राहयाब वोही होता है जिस को वोह राह दे। **96 :** जो आस्मान व ज़मीन के दरमियान में हैं **97 :** जिस सर ज़मीन और जिन बिलाद की त़रफ़ चाहे। **98 :** और उन के मुतफ़र्रिक़ टुकड़ों को यक्जा कर देता है।

يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَ يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ

बीच में से मींह निकलता है और उतारता है आस्मान से उस में जो बर्फ़ के पहाड़ हैं उन में से कुछ ओले[99]

فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ

फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे[100] और फेर देता है उन्हें जिस से चाहे[101] क़रीब है कि उस की बिजली

يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ؕ۝۴۳ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

की चमक आंख ले जाए[102] अल्लाह बदली करता है रात और दिन की[103] बेशक इस में

لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝۴۴ وَ اللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ

समझने का मक़ाम है निगाह वालों को और अल्लाह ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया[104] तो उन में

مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ

कोई अपने पेट पर चलता है[105] और उन में कोई दो पाउं पर चलता है[106] और उन में कोई

يَّمْشِيْ عَلٰۤى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

चार पाउं पर चलता है[107] अल्लाह बनाता है जो चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ

قَدِيْرٌ ۝۴۵ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى

कर सकता है बेशक हम ने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें[108] और अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۴۶ وَ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالرَّسُوْلِ وَ اَطَعْنَا ثُمَّ

सीधी राह दिखाए[109] और कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हुक्म माना फिर

---

99 : इस के मा'ना या तो येह हैं कि जिस तरह ज़मीन में पथ्थर के पहाड़ हैं ऐसे ही आस्मान में बर्फ़ के पहाड़ अल्लाह तआला ने पैदा किये हैं और येह उस की कुदरत से कुछ बईद नहीं, उन पहाड़ों से ओले बरसाता है। या येह मा'ना हैं कि आस्मान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है या'नी ब कसरत ओले बरसाता है। (مدارک وغیرہ) 100 : और जिस के जान व माल को चाहता है उन से हलाक व तबाह करता है। 101 : उस के जान व माल को महफ़ूज़ रखता है। 102 : और रोशनी की तेज़ी से आंखों को बेकार कर दे। 103 : कि रात के बा'द दिन लाता है और दिन के बा'द रात। 104 : या'नी तमाम अज्नासे हैवान को पानी की जिन्स से पैदा किया और पानी इन सब की अस्ल है और येह सब बा वुजूद मुत्तहिदुल अस्ल होने के बाहम किस क़दर मुख़्तलिफ़ुल हाल हैं, येह ख़ालिके आलम के इल्मो हिक्मत और उस के कमाले कुदरत की दलीले रोशन है। 105 : जैसे कि सांप और मछली और बहुत से कीड़े। 106 : जैसे कि आदमी और परिन्द। 107 : मिस्ल बहाइम और दरिन्दों के। 108 : या'नी कुरआने करीम जिस में हिदायत व अहकाम और हलाल व हराम का वाज़ेह बयान है। 109 : और सीधी राह जिस पर चलने से रिज़ाए इलाही व ने'मते आख़िरत मुयस्सर हो दीने इस्लाम है। आयात का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द येह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िर्क़ों में मुन्क़सिम हो गए, एक वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में तस्दीके हक़ की और बातिन में तक्ज़ीब करते रहे, वोह मुनाफ़िक़ हैं। दूसरे वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में भी तस्दीक़ की और बातिन में भी मो'तक़िद रहे, येह मुख़्लिसीन हैं। तीसरे वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में भी तक्ज़ीब की और बातिन में भी वोह कुफ़्फ़ार हैं, उन का ज़िक्र बित्तरतीब फ़रमाया जाता है।

يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَاِذَا

कुछ उन में के इस के बा'द फिर जाते हैं[110] और वोह मुसल्मान नहीं[111] और जब

دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۸﴾

बुलाए जाएं अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उन का एक फ़रीक़ मुंह फेर जाता है

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ ؕ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

और अगर उन की डिग्री हो (उन के ह़क़ में फ़ैसला हो) तो उस की त़रफ़ आएं मानते हुए[112] क्या उन के दिलों में बीमारी है[113]

اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ

या शक रखते हैं[114] या येह डरते हैं कि अल्लाह व रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे[115] बल्कि

اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ

वोह ख़ुद ही ज़ालिम हैं मुसल्मानों की बात तो येही है[116] जब अल्लाह और रसूल की त़रफ़

وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

बुलाए जाएं कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो अ़र्ज़ करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ

मुराद को पहुंचे और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़ गारी करे तो येही

هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ

लोग काम्याब हैं और उन्हों ने[117] अल्लाह की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में ह़द की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे

ع ۶ / ۱۲

110 : और अपने क़ौल की पाबन्दी नहीं करते। **111 :** मुनाफ़िक़ हैं क्यूं कि उन के दिल उन की ज़बानों के मुवाफ़िक़ नहीं। **112 :** कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन बारहा तजरिबा कर चुके थे और उन्हें कामिल यक़ीन था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़ैसला सरासर ह़क़ व अ़द्ल होता है इस लिये उन में जो सच्चा होता वोह तो ख़्वाहिश करता था कि हुज़ूर उस का फ़ैसला फ़रमाएं और जो नाह़क़ पर होता वोह जानता था कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सच्ची अ़दालत से वोह अपनी ना जाइज़ मुराद नहीं पा सकता, इस लिये वोह हुज़ूर के फ़ैसले से डरता और घबराता था। **शाने नुज़ूल :** बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ था, एक ज़मीन के मुआ़मले में इस का एक यहूदी से झगड़ा था, यहूदी जानता था कि इस मुआ़मले में वोह सच्चा है और उस को यक़ीन था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़क़ व अ़द्ल का फ़ैसला फ़रमाते हैं, इस लिये उस ने ख़्वाहिश की, कि येह मुक़द्दमा हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़ैसल (ह़ल) कराया जाए, लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वोह बात़िल पर है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अ़द्लो इन्साफ़ में किसी की रू रिआ़यत नहीं फ़रमाते, इस लिये वोह हुज़ूर के फ़ैसले पर तो राज़ी न हुवा और का'ब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर मुसिर हुवा और हुज़ूर की निस्बत कहने लगा कि वोह हम पर ज़ुल्म करेंगे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **113 :** कुफ़्र या निफ़ाक़ की। **114 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत में। **115 :** ऐसा तो है नहीं क्यूं कि येह वोह ख़ूब जानते हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़ैसला ह़क़ से मुतजाविज़ हो ही नहीं सकता और कोई बद दियानत आप की अ़दालत से पराया ह़क़ मारने में काम्याब नहीं हो सकता, इसी वज्ह से वोह आप के फ़ैसले से ए'राज़ करते हैं। **116 :** और उन को येह त़रीक़े अदब लाज़िम है कि **117 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन ने। (مدارک)

لَیَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا

तो वोह ज़रूर जिहाद को निकलेंगे तुम फ़रमा दो क़समें न खाओ[118] मुवाफ़िक़े शर्अ़ हुक्म बरदारी चाहिये **अल्लाह** जानता है जो

تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۳﴾ قُلْ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

तुम करते हो[119] तुम फ़रमाओ हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का[120] फिर अगर तुम मुंह फेरो[121] तो रसूल के ज़िम्मे वोही है

عَلَیْهِ مَا حُمِّلَ وَ عَلَیْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَ اِنْ تُطِیْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَ مَا

जो उस पर लाज़िम किया गया[122] और तुम पर वोह है जिस का बोझ तुम पर रखा गया[123] और अगर रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे राह पाओगे और

عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۵۴﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ

रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[124] **अल्लाह** ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِی الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِیْنَ مِنْ

अच्छे काम किये[125] कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा[126] जैसी उन से पहलों

قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَیُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِیْنَهُمُ الَّذِی ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَیُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

को दी[127] और ज़रूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है[128] और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को

خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ یَعْبُدُوْنَنِیْ لَا یُشْرِكُوْنَ بِیْ شَیْـًٔا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ

अम्न से बदल देगा[129] मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो इस के बा'द नाशुक्री करे

فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَطِیْعُوا

तो वोही लोग बे हुक्म हैं और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की

118 : कि झूटी क़सम गुनाह है। **119 :** ज़बानी इताअ़त और अ़मली मुख़ालफ़त उस से कुछ छुपा नहीं। **120 :** सच्चे दिल और सच्ची निय्यत से। **121 :** रसूल عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की फ़रमां बरदारी से, तो इस में उन का कुछ ज़रर नहीं। **122 :** या'नी दीन की तब्लीग़ और अह़कामे इलाही का पहुंचा देना, इस को रसूल عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अच्छी त़रह़ अदा कर दिया और वोह अपने फ़र्ज़ से ओ़ह्दा बरआ हो चुके। **123 :** या'नी रसूल عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इताअ़त व फ़रमां बरदारी। **124 :** चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم ने बहुत वाज़ेह़ त़ौर पर पहुंचा दिया। **125 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم ने वह्य नाज़िल होने से दस साल तक मक्कए मुकर्रमा में मअ़ अस्ह़ाब के क़ियाम फ़रमाया और कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं पर जो शबो रोज़ होती रहती थीं सब्र किया, फिर ब हुक्मे इलाही मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई और अन्सार के मनाज़िल (घरों) को अपनी सुकूनत से सरफ़राज़ किया, मगर क़ुरैश इस पर भी बाज़ न आए, रोज़मर्रा उन की त़रफ़ से जंग के ए'लान होते और त़रह़ त़रह़ की धम्कियां दी जातीं, अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم हर वक़्त ख़त़रे में रहते और हथियार साथ रखते, एक रोज़ एक सह़ाबी ने फ़रमाया : कभी ऐसा भी ज़माना आएगा कि हमें अम्न मुयस्सर हो और हथियारों के बार से हम सुबुक दोश हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई **126 :** और बजाए कुफ़्फ़ार के तुम्हारी फ़रमां रवाई होगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस जिस चीज़ पर शबो रोज़ गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा। **127 :** ह़ज़रते दावूद व सुलैमान वग़ैरा अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को और जैसी कि जबाबिरए मिस्र व शाम को हलाक कर के बनी इसराईल को ख़िलाफ़त दी और इन ममालिक पर उन को मुसल्लत़ किया। **128 :** या'नी दीने इस्लाम को तमाम अद्यान पर ग़ालिब फ़रमाएगा। **129 :** चुनान्चे येह वा'दा पूरा हुवा और सर ज़मीने

الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ

फ़रमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रह्म हो हरगिज़ काफ़िरों को ख़याल न करना कि वोह कहीं हमारे क़ाबू से निकल जाएं

فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

ज़मीन में और उन का ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अन्जाम ऐ ईमान

اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ

वालो चाहिये कि तुम से इज़्न लें तुम्हारे हाथ के माल गुलाम[130] और वोह जो तुम में अभी जवानी को न पहुंचे[131]

مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ

तीन वक़्त[132] नमाज़े सुब्ह से पहले[133] और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो

مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ۫ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ لَيْسَ

दोपहर को[134] और नमाज़े इशा के बा'द[135] येह तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं[136] इन

عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۭ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى

तीन के बा'द कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उन पर[137] आमदो रफ़्त रखते हैं तुम्हारे यहां एक दूसरे

अ़रब से कुफ़्फ़ार मिटा दिये गए, मुसल्मानों का तसल्लुत़ हुवा, मशरिक़ व मग़रिब के ममालिक **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये फ़त्ह फ़रमाए, अकासिरा के ममालिक व ख़ज़ाइन उन के क़ब्ज़े में आए, दुन्या पर उन का रो'ब छा गया। **फ़ाएदा :** इस आयत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ और आप के बा'द होने वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त की दलील है क्यूं कि इन के ज़माने में फ़ुतूह़ाते अ़ज़ीमा हुईं और किस्रा वग़ैरा मुलूक के ख़ज़ाइन (बादशाहों के ख़ज़ाने) मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आए और अम्न व तम्कीन और दीन को ग़लबा हासिल हुवा। तिरमिज़ी व अबू दावूद की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : ख़िलाफ़त मेरे बा'द तीस साल है फिर मुल्क होगा। इस की तफ़्सील येह है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह और ह़ज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त दस साल छ[6] माह और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त बारह साल और ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त चार साल नव माह और ह़ज़रते इमाम ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त छ[6] माह हुई। (خازن) **130 :** और बांदियां। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने एक अन्सारी ग़ुलाम मुदलिज बिन अ़म्र को दोपहर के वक़्त ह़ज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ के बुलाने के लिये भेजा। वोह ग़ुलाम वैसे ही ह़ज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ के मकान में चला गया, जब कि ह़ज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ बे तकल्लुफ़ अपने दौलत सराए में तशरीफ़ रखते थे, ग़ुलाम के अचानक चले आने से आप के दिल में ख़याल हुवा कि काश ग़ुलामों को इजाज़त ले कर मकानों में दाख़िल होने का हुक्म होता। इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **131 :** बल्कि अभी क़रीबे बुलूग़ हैं। सिन्ने बुलूग़ ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ के नज़्दीक लड़के के लिये अठ्ठारह साल और लड़की के लिये सत्तरह साल और आ़म्मए उ़लमा के नज़्दीक लड़के और लड़की दोनों के लिये पन्दरह साल है। (تفسیر احمدی) **132 :** या'नी इन तीनों वक़्तों में इजाज़त हासिल करें जिन का बयान इसी आयत में फ़रमाया जाता है। **133 :** कि वोह वक़्त है ख़्वाब गाहों से उठने और शब ख़्वाबी का लिबास उतार कर बेदारी के कपड़े पहनने का। **134 :** क़ैलूला करने के लिये और तहबन्द बांध लेते हो। **135 :** कि वोह वक़्त है बेदारी का लिबास उतारने और ख़्वाब का लिबास पहनने का। **136 :** कि इन अवक़ात में ख़ल्वत व तन्हाई होती है, बदन छुपाने का बहुत एहतिमाम नहीं होता, मुम्किन है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाए जिस के ज़ाहिर होने से शर्म आती है। लिहाज़ा इन अवक़ात में ग़ुलाम और बच्चे भी बे इजाज़त दाख़िल न हों और इन के इ़लावा जवान लोग तमाम अवक़ात में इजाज़त हासिल करें किसी वक़्त भी बे इजाज़त दाख़िल न हों। (خازن وغیرہ)
137 : मस्अला : या'नी इन तीन वक़्तों के सिवा बाक़ी अवक़ात में ग़ुलाम और बच्चे बे इजाज़त दाख़िल हो सकते हैं क्यूं कि वोह।

بَعۡضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الۡاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۵۸﴾ وَاِذَا

के पास[138] अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये आयतें और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है और जब

بَلَغَ الۡاَطۡفَالُ مِنۡكُمُ الۡحُلُمَ فَلۡيَسۡتَاۡذِنُوۡا كَمَا اسۡتَاۡذَنَ الَّذِيۡنَ مِنۡ

तुम में लड़के[139] जवानी को पहुंच जाएं तो वोह भी इज़्न मांगें[140] जैसे उन के अगलों[141] ने इज़्न

قَبۡلِهِمۡ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمۡ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۵۹﴾ وَ

मांगा अल्लाह यूंही बयान फ़रमाता है तुम से अपनी आयतें और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है और

الۡقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِىۡ لَا يَرۡجُوۡنَ نِكَاحًا فَلَيۡسَ عَلَيۡهِنَّ جُنَاحٌ

बूढ़ी ख़ाना नशीन औरतें[142] जिन्हें निकाह की आरज़ू नहीं उन पर कुछ गुनाह नहीं

اَنۡ يَّضَعۡنَ ثِيَابَهُنَّ غَيۡرَ مُتَبَرِّجٰتٍۢ بِزِيۡنَةٍ ؕ وَاَنۡ يَّسۡتَعۡفِفۡنَ خَيۡرٌ

कि अपने बालाई कपड़े उतार रखें जब कि सिंगार न चमकाएं[143] और इस से बचना[144] उन के लिये और

لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۶۰﴾ لَيۡسَ عَلَى الۡاَعۡمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى

बेहतर है और अल्लाह सुनता जानता है न अन्धे पर तंगी[145] और न

الۡاَعۡرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الۡمَرِيۡضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنۡفُسِكُمۡ اَنۡ تَاۡكُلُوۡا

लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर रोक और न तुम में किसी पर कि खाओ अपनी

مِنۡۢ بُيُوۡتِكُمۡ اَوۡ بُيُوۡتِ اٰبَآئِكُمۡ اَوۡ بُيُوۡتِ اُمَّهٰتِكُمۡ اَوۡ بُيُوۡتِ اِخۡوَانِكُمۡ

औलाद के घर[146] या अपने बाप के घर या अपनी मां के घर या अपने भाइयों के यहां

138 : काम व ख़िदमत के लिये, तो इन पर हर वक़्त इस्तीज़ान (इजाज़त लेने) का लाज़िम होना सबबे ह़रज होगा और शरअ़ में ह़रज मदफ़ूअ़ (दूर किया गया) है। (مدارک) **139 :** या'नी आज़ाद। **140 :** तमाम अवक़ात में **141 :** उन से बड़े मर्दों **142 :** जिन का सिन ज़ियादा हो चुका और औलाद होने की उ़म्र न रही और पीराना साली (बुढ़ापे) के बाइस **143 :** और बाल सीना पिंडली वग़ैरा न खोलें। **144 :** बालाई कपड़ों को पहने रहना। **145 शाने नुज़ूल :** सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सह़ाबए किराम नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों की चाबियां नाबीना और बीमारों और अपाहजों को दे जाते जो इन आ'ज़ार के बाइस जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि इन के मकानों से खाने की चीज़ें ले कर खाएं, मगर वोह लोग इस को गवारा न करते ब ईं ख़याल कि शायद येह उन को दिल से पसन्द न हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें इस की इजाज़त दी गई। और एक क़ौल येह है कि अन्धे अपाहज और बीमार लोग तन्दुरुस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो, इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई। और एक क़ौल येह है कि जब अन्धे नाबीना अपाहज किसी मुसल्मान के पास जाते और उस के पास इन के खिलाने के लिये कुछ न होता तो वोह इन्हें किसी रिश्तेदार के यहां खिलाने के लिये ले जाता, येह बात इन लोगों को गवारा न होती। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इन्हें बताया गया कि इस में कोई ह़रज नहीं है। **146 :** कि औलाद का घर अपना ही घर है। ह़दीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तू और तेरा माल तेरे बाप का है। इसी त़रह़ शोहर के लिये बीवी का और बीवी के लिये शोहर का घर भी अपना ही घर है।

اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहां या अपनी फूपियों के घर या अपने मामूओं

اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ط

के यहां या अपनी ख़ालाओं के घर या जहां की कुन्जियां तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं[147] या अपने दोस्त के यहां[148]

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ط فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا

तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि मिल कर खाओ या अलग अलग[149] फिर जब किसी घर में जाओ

فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ط كَذٰلِكَ

तो अपनों को सलाम करो[150] मिलते वक़्त की अच्छी दुआ **अल्लाह** के पास से मुबारक पाकीज़ा **अल्लाह** यूंही

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ع ﴿٦١﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

बयान फ़रमाता है तुम से आयतें कि तुम्हें समझ हो ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह**

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى

और उस के रसूल पर यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिस के लिये जम्अ किये गए हों[151] तो न जाएं जब तक

يَسْتَاْذِنُوْهُ ط اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

उन से इजाज़त न ले लें वोह जो तुम से इजाज़त मांगते हैं वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल

وَرَسُوْلِهٖ ج فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ

पर ईमान लाते हैं[152] फिर जब वोह तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिये तो उन में जिसे तुम चाहो इजाज़त

147 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस से मुराद आदमी का वकील और उस का कार परदाज़ है। **148 :** मा'ना येह हैं कि इन सब लोगों के घर खाना जाइज़ है ख़्वाह वोह मौजूद हों या न हों जब कि मा'लूम हो कि वोह इस से राज़ी हैं। सलफ़ (पहले के लोगों) का तो येह हाल था कि आदमी अपने दोस्त के घर उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजूदगी) में पहुंचता तो उस की बांदी से उस का कीसा (रक़म रखने का थेला) तलब करता और जो चाहता उस में से ले लेता, जब वोह दोस्त घर आता और बांदी उस को ख़बर देती तो इस ख़ुशी में वोह बांदी को आज़ाद कर देता। मगर इस ज़माने में येह फ़य्याज़ी कहां ! लिहाज़ा बे इजाज़त खाना न चाहिये। (مدارک وجلالین) **149 शाने नुज़ूल :** क़बीलए बनी लैस बिन अ़म्र के लोग तन्हा बिग़ैर मेहमान के खाना न खाते थे, कभी कभी मेहमान न मिलता तो सुब्ह से शाम तक खाना लिये बैठे रहते उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **150 मस्अला :** जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने अहल को सलाम करे और उन लोगों को जो मकान में हों बशर्ते कि उन के दीन में ख़लल न हो। (خازن) **मस्अला :** अगर ख़ाली मकान में दाख़िल हो जहां कोई नहीं है तो कहे : "اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَ بَرَكَاتُهٗ" हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मकान से यहां मस्जिदें मुराद हैं। नख़ई ने कहा कि जब मस्जिद में कोई न हो तो कहे : اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم (شفاء شریف)। मुल्ला अ़ली क़ारी ने शर्हे शिफ़ा में लिखा कि ख़ाली मकान में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर सलाम अ़र्ज़ करने की वज्ह येह है कि अहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़्दस जल्वा फ़रमा होती है। **151 :** जैसे कि जिहाद और तदबीरे

مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوْا

दे दो और उन के लिये **अल्लाह** से मुआफ़ी मांगो[153] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है रसूल के

دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है[154] बेशक **अल्लाह** जानता है जो

يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ

तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ ले कर[155] तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि

تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

उन्हें कोई फ़ित्ना पहुंचे[156] या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े[157] सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों

وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ

और ज़मीन में है बेशक वोह जानता है जिस ह़ाल पर तुम हो[158] और उस दिन को जिस में उस की त़रफ़ फेरे जाएंगे[159]

فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾ ع

तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्हों ने किया और **अल्लाह** सब कुछ जानता है[160]

ع ١٥

اٰياتها ٧٧ ﴿٢٥ سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ ٤٢﴾ ركوعاتها ٦

सूरए फ़ुरक़ान मक्किय्या है, इस में सतत्तर आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

जंग और जुमुआ़ व ईदैन और मश्वरा और हर इज्तिमाअ़ जो **अल्लाह** के लिये हो। **152 :** उन का इजाज़त चाहना निशाने फ़रमां बरदारी और दलीले सिह़्ह़ते ईमान है। **153 :** इस से मा'लूम हुवा कि अफ़्ज़ल येही है कि ह़ाज़िर रहें और इजाज़त त़लब न करें। **मस्अला :** इमामों और दीनी पेश्वाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिये। (مدارک) **154 :** क्यूं कि जिस को रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पुकारें उस पर इजाबत व ता'मील वाजिब हो जाती है और अदब से ह़ाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब ह़ाज़िर होने के लिये इजाज़त त़लब करे और इजाज़त से ही वापस हो। और एक मा'ना मुफ़स्सिरीन ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को निदा करे तो अदबो तक्रीम और तौक़ीरो ता'ज़ीम के साथ, आप के मुअ़ज़्ज़म अल्क़ाब से, नर्म आवाज़ के साथ, मुतवाज़िआ़ना व मुन्कसिराना लहजे में "या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या ह़बीबल्लाह" कह कर। **155 : शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन पर रोज़े जुमुआ़ मस्जिद में ठहर कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ख़ुत़्बे का सुनना गिरां होता था तो वोह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सह़ाबा की आड़ ले कर सरक्ते सरक्ते मस्जिद से निकल जाते थे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **156 :** दुन्या में तक्लीफ़ या क़त्ल या ज़ल्ज़ले या और होलनाक ह़वादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत़ होना या दिल का सख़्त हो कर मा'रिफ़ते इलाही से मह़रूम रहना। **157 :** आख़िरत में। **158 :** ईमान पर या निफ़ाक़ पर। **159 :** जज़ा के लिये, और वोह दिन रोज़े क़ियामत है। **160 :** उस से कुछ छुपा नहीं। **1 :** सूरए फ़ुरक़ान मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ और सतत्तर आयतें और आठ सो बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सो तीन ह़र्फ़ हैं।

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ﴿۱﴾

बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा कुरआन अपने बन्दे पर[2] जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो[3]

الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ

वोह जिस के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत और उस ने न इख़्तियार फ़रमाया बच्चा[4] और उस की

لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ﴿۲﴾

सल्तनत में कोई साझी (शरीक) नहीं[5] उस ने हर चीज़ पैदा कर के ठीक अन्दाज़े पर रखी

وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا

और लोगों ने उस के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये[6] कि वोह कुछ नहीं बनाते और ख़ुद पैदा किये गए हैं और

یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً

ख़ुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का

وَّ لَا نُشُوْرًا ﴿۳﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ نِ افْتَرٰىهُ

न उठने का और काफ़िर बोले[7] येह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्हों ने बना लिया है[8]

وَ اَعَانَهٗ عَلَیْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ﴿۴﴾ۚۛ وَ قَالُوْۤا

और इस पर और लोगों ने[9] उन्हें मदद दी है बेशक वोह[10] ज़ुल्म और झूट पर आए और बोले[11]

اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِیَ تُمْلٰی عَلَیْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ﴿۵﴾ قُلْ

अगलों की कहानियां हैं जो उन्हों ने[12] लिख ली हैं तो वोह उन पर सुब्ह़ो शाम पढ़ी जाती हैं तुम फ़रमाओ

मुआनक़ा १०

2 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर। 3 : इस में हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत का बयान है कि आप तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए जिन्न हों या बशर या फ़िरिश्ते या दीगर मख़्लूक़ात सब आप के उम्मती हैं क्यूं कि "आ़लम" मा सिवा अल्लाह को कहते हैं इस में येह सब दाख़िल हैं, मलाएका को इस से ख़ारिज करना जैसा कि जलालैन में शैख़ मह़ल्ली से और कबीर में इमामे राज़ी से और शुअ़बुल ईमान में बैहक़ी से सादिर हुवा बे दलील है और दा'वए इज्माअ़ ग़ैर साबित, चुनान्चे इमाम सुबकी व बाज़िरी व इब्ने ह़ज़्म व सुयूत़ी ने इस का तआ़क़ुब किया और ख़ुद इमामे राज़ी को तस्लीम है कि आ़लम मा सिवा अल्लाह को कहते हैं, पस वोह तमाम ख़ल्क़ को शामिल है मलाएका को इस से ख़ारिज करने पर कोई दलील नहीं, इ़लावा बरीं मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : اُرْسِلْتُ اِلَی الْخَلْقِ کَآفَّۃً या'नी मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया। अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ने मिर्क़ात में इस की शर्ह़ में फ़रमाया : या'नी तमाम मौजूदात की त़रफ़ जिन्न हों या इन्सान या फ़िरिश्ते या ह़ैवानात या जमादात। इस मस्अले की कामिल तन्क़ीह़ व तह़क़ीक़ शर्ह़ व बस्त़ के साथ इमामे क़स्त़लानी की मवाहिबे लदुन्निय्या में है। 4 : इस में यहूदो नसारा का रद है जो ह़ज़रते उ़ज़ैर व मसीह़ عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ुदा का बेटा कहते हैं। مَعَاذَ اللہ 5 : इस में बुत परस्तों का रद है जो बुतों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं। 6 : या'नी बुत परस्तों ने बुतों को ख़ुदा ठहराया जो ऐसे आ़जिज़ व बे क़ुदरत हैं 7 : या'नी नज़्र बिन ह़ारिस और इस के साथी क़ुरआने करीम की निस्बत कि 8 : या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने। 9 : और लोगों से नज़्र बिन ह़ारिस की मुराद यहूदी थे और अ़द्दास व यसार वग़ैरा अहले किताब। 10 : नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा मुश्रिकीन जो येह बेहूदा बात कहने वाले थे। 11 : वोही मुश्रिकीन क़ुरआने करीम की

أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا

उसे तो उस ने उतारा है जो आस्मानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है[13] बेशक वोह बख़्शने वाला

رَّحِيمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوا مَالِ هٰذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي

मेह्रबान है[14] और बोले[15] इस रसूल को क्या हुवा खाना खाता है और बाज़ारों में

الْأَسْوَاقِ ۗ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ﴿٧﴾ أَوْ يُلْقٰى

चलता है[16] क्यूं न उतारा गया इन के साथ कोई फ़िरिश्ता कि इन के साथ डर सुनाता[17] या ग़ैब से

إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۗ وَقَالَ الظّٰلِمُونَ إِنْ

इन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या इन का कोई बाग़ होता जिस में से खाते[18] और ज़ालिम बोले[19] तुम

تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٨﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ

तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिस पर जादू हुवा[20] ऐ मह्बूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिये बना रहे हैं

فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾ تَبٰرَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ

तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते बड़ी बरकत वाला है वोह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिये

خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ

बहुत बेहतर इस से कर दे[21] जन्नतें जिन के नीचे नहरें बहें और कर दे तुम्हारे लिये ऊंचे ऊंचे

قُصُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ

महल बल्कि येह तो क़ियामत को झुटलाते हैं और जो क़ियामत को झुटलाए हम ने उस के लिये तय्यार कर रखी है भड़कती हुई

سَعِيرًا ﴿١١﴾ إِذَا رَأَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيرًا ﴿١٢﴾

आग जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी[22] तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना

निस्बत कि येह रुस्तम व इस्फ़न्दयार वग़ैरा के क़िस्सों की त़रह़ **12 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। **13 :** या'नी क़ुरआने करीम उ़लूमे ग़ैबी पर मुश्तमिल है। येह दलीले सरीह़ है इस की, कि वोह ह़ज़रते अ़ल्लामुल ग़ुयूब की त़रफ़ से है। **14 :** इसी लिये कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **15 :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश **16 :** इस से उन की मुराद येह थी कि आप नबी होते तो न खाते, न बाज़ारों में चलते और येह भी न होता तो **17 :** और इन की तस्दीक़ करता और इन की नुबुव्वत की शहादत देता। **18 :** मालदारों की त़रह़। **19 :** मुसल्मानों से **20 :** और مَعَاذَ الله उस की अ़क़्ल बजा न रही। ऐसी त़रह़ त़रह़ की बेहूदा बातें उन्हों ने बकीं। **21 :** या'नी जल्द आप को इस ख़ज़ाने और बाग़ से बेहतर अ़त़ा फ़रमावे जो येह काफ़िर कहते हैं। **22 :** एक बरस की राह से या सो बरस की राह से, दोनों क़ौल हैं और आग का देखना कुछ बईद नहीं **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो इस को ह़यात व अ़क़्ल और रूयत अ़त़ा फ़रमाए। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है।

وَ اِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾

और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे[23] ज़न्जीरों में जकड़े हुए[24] तो वहां मौत मांगेंगे[25]

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ

फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो[26] तुम फ़रमाओ क्या येह[27]

خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً

भला या वोह हमेशगी के बाग़ जिस का वा'दा डर वालों को है वोह उन का सिला

وَّ مَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا

और अन्जाम है उन के लिये वहां मन मानी मुरादें हैं जिन में हमेशा रहेंगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वा'दा है

مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ

मांगा हुवा[28] और जिस दिन इकठ्ठा करेगा उन्हें[29] और जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हैं[30] फिर उन मा'बूदों से फ़रमाएगा

ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِیْ هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ؕ ﴿١٧﴾ قَالُوْا

क्या तुम ने गुमराह कर दिये येह मेरे बन्दे या येह ख़ुद ही राह भूले[31] वोह अ़र्ज़ करेंगे

سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِیْ لَنَاۤ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَ

पाकी है तुझ को[32] हमें सज़ावार (ह़क़) न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाएं[33]

لٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَ كَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٨﴾

लेकिन तू ने उन्हें और उन के बाप दादाओं को बरत्ने दिया[34] यहां तक कि वोह तेरी याद भूल गए और येह लोग थे ही हलाक होने वाले[35]

23 : जो निहायत कर्ब व बेचैनी पैदा करने वाली हो। 24 : इस त़रह़ कि उन के हाथ गरदनों से मिला कर बांध दिये गए हों या इस त़रह़ कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैत़ान के साथ ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा हो। 25 : और ''واثُبوراه واثُبوراه'' का शोर मचाएंगे ब ई़ मा'ना कि हाए ऐ मौत आ जा। ह़दीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख़्स को आतिशी लिबास पहनाया जाएगा वोह इब्लीस है और इस की ज़ुर्रिय्यत इस के पीछे होगी और येह सब मौत मौत पुकारते होंगे उन से 26 : क्यूं कि तुम त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाओगे। 27 : अ़ज़ाब और अह्वाले जहन्नम जिस का ज़िक्र किया गया। 28 : या'नी मांगने के लाइक़ या वोह जो मोमिनीन ने दुन्या में येह अ़र्ज़ कर के मांगा : ''رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً'' या येह अ़र्ज़ कर के ''رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ'' 29 : या'नी मुश्रिकीन को 30 : या'नी उन के बात़िल मा'बूदों को ख़्वाह ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल। कल्बी ने कहा कि उन मा'बूदों से बुत मुराद हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला गोयाई देगा। 31 : अल्लाह तआ़ला ह़क़ीक़ते ह़ाल का जानने वाला है उस से कुछ भी मख़्फ़ी नहीं। येह सुवाल मुश्रिकीन को ज़लील करने के लिये है कि इन के मा'बूद इन्हें झुटलाएं तो इन की ह़सरत व ज़िल्लत और ज़ियादा हो। 32 : इस से कि कोई तेरा शरीक हो। 33 : तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के मा'बूद बनाने का हुक्म दे सकते थे, हम तेरे बन्दे हैं। 34 : और उन्हें अम्वाल व औलाद व तूले उ़म्र व सिह़्ह़त व सलामत इ़नायत की 35 : शक़ी, बा'दे अज़ीं कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा।

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ

तो अब मा'बूदों ने तुम्हारी बात झुटला दी तो अब तुम न अ़ज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुम में

يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ

जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएंगे और हम ने तुम से पहले जितने

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَ

रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते[36] और

جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾ ع

हम ने तुम में एक को दूसरे की जांच किया है[37] और ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे[38] और ऐ महबूब तुम्हारा रब देखता है[39]

ع ٢ ١٧

36 : येह कुफ़्फ़ार के उस ता'न का जवाब है जो उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर किया था कि वोह बाज़ारों में चलते हैं खाना खाते हैं, यहां बताया गया कि येह उमूर मुनाफ़िये नुबुव्वत नहीं बल्कि येह तमाम अम्बिया की आ़दते मुस्तमिर्रह थी, लिहाज़ा येह ता'न महूज़ जह्ल व इनाद है। 37 **शाने नुज़ूल :** शुरफ़ा जब इस्लाम लाने का क़स्द करते थे तो ग़ुरबा को देख कर येह ख़याल करते कि येह हम से पहले इस्लाम ला चुके इन को हम पर एक फ़ज़ीलत रहेगी, ब ईं ख़याल वोह इस्लाम से बाज़ रहते और शुरफ़ा के लिये ग़ुरबा आज़्माइश बन जाते। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अबू जह्ल व वलीद बिन उ़क़्बा और आ़स बिन वाइल सहमी और नज़्र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई, इन लोगों ने हज़रते अबू ज़र व इब्ने मस्ऊ़द व अ़म्मार इब्ने यासिर व बिलाल व सुहैब व आ़मिर बिन फ़ुहैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को देखा कि पहले से इस्लाम लाए हैं तो ग़ुरूर से कहा कि हम भी इस्लाम ले आएं तो इन्हीं जैसे हो जाएंगे तो हम में और इन में फ़र्क़ क्या रह जाएगा। और एक क़ौल येह है कि येह आयत फ़ुक़राए मुस्लिमीन की आज़्माइश में नाज़िल हुई जिन का कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस्तिह्ज़ा करते थे और कहते थे कि सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करने वाले येह लोग हैं जो हमारे ग़ुलाम और अरज़ल (ज़लील व हक़ीर) हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की और उन मोमिनीन से फ़रमाया (خازن) 38 : इस फ़क़्रो शिद्दत पर और कुफ़्फ़ार की इस बदगोई पर। 39 : उस को जो सब्र करे और उस को जो बे सब्री करे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى

और बोले वोह लोग जो[40] हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते हम पर फ़िरिश्ते क्यूं न उतारे[41] या हम अपने रब को

رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ۲۱ يَوْمَ يَرَوْنَ

देखते[42] बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी पर आए[43] जिस दिन फ़िरिश्तों को

الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۲۲

देखेंगे[44] वोह दिन मुजरिमों की कोई ख़ुशी का न होगा[45] और कहेंगे इलाही हम में उन में कोई आड़ कर दे रुकी हुई[46]

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۲۳ اَصْحٰبُ

और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे[47] हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं[48] जन्नत

الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ۲۴ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ

वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना[49] और हिसाब के दोपहर के बा'द अच्छी आराम की जगह और जिस दिन फट जाएगा आस्मान

بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ۲۵ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ

बादलों से और फ़िरिश्ते उतारे जाएंगे पूरी तरह[50] उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है

وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ۲۶ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ

और वोह दिन काफ़िरों पर सख़्त है[51] और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा[52]

40 : काफ़िर हैं, हश्र व बअ़्स के मो'तक़िद नहीं, इसी लिये **41 :** हमारे लिये रसूल बना कर या सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत व रिसालत के गवाह बना कर **42 :** वोह ख़ुद हमें ख़बर दे देता कि सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। **43 :** और उन का तकब्बुर इन्तिहा को पहुंच गया और सरकशी हद से गुज़र गई कि मो'जिज़ात का मुशाहदा करने के बा'द मलाएका के अपने ऊपर उतरने और **अल्लाह** तआ़ला को देखने का सुवाल किया। **44 :** या'नी मौत के दिन या क़ियामत के दिन **45 :** रोज़े क़ियामत फ़िरिश्ते मोमिनीन को बिशारत सुनाएंगे और कुफ़्फ़ार से कहेंगे तुम्हारे लिये कोई ख़ुश ख़बरी नहीं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरिश्ते कहेंगे कि मोमिन के सिवा किसी के लिये जन्नत में दाख़िल होना हलाल नहीं, इस लिये वोह दिन कुफ़्फ़ार के वासिते निहायत हस्रतो अन्दोह और रन्जो ग़म का दिन होगा। **46 :** इस कलिमे से वोह मलाएका से पनाह चाहेंगे **47 :** हालते कुफ़्र में मिस्ल सिलए रेह़मी व मेहमान दारी व यतीम नवाज़ी वग़ैरा के **48 :** न हाथ से छूए जाएं न उन का साया हो, मुराद येह है कि वोह आ'माल बातिल कर दिये गए उन का कुछ समरा और कोई फ़ाएदा नहीं क्यूं कि आ'माल की मक़्बूलिय्यत के लिये ईमान शर्त है और वोह उन्हें मुयस्सर न था, इस के बा'द अहले जन्नत की फ़ज़ीलत इर्शाद होती है। **49 :** और उन की क़रार गाह उन मग़रूर मुतकब्बिर मुश्रिकों से बुलन्दो बाला बेहतर व आ'ला **50 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : आस्माने दुन्या फटेगा और वहां के रहने वाले (फ़िरिश्ते) उतरेंगे और वोह तमाम अहले ज़मीन से ज़ियादा हैं जिन्नो इन्स सब से। फिर दूसरा आस्मान फटेगा वहां के रहने वाले उतरेंगे वोह आस्माने दुन्या के रहने वालों से और जिन्नो इन्स सब से ज़ियादा हैं। इसी तरह आस्मान फटते जाएंगे और हर आस्मान वालों की ता'दाद अपने मा तह़्तों से ज़ियादा है यहां तक कि सातवां आस्मान फटेगा फिर करूबी उतरेंगे फिर हामिलीने अ़र्श और येह रोज़े क़ियामत होगा। **51 :** और **अल्लाह** के फ़ज़्ल से मुसल्मानों पर सहल। हदीस शरीफ़ में है कि क़ियामत का दिन मुसल्मानों पर आसान किया जाएगा यहां तक कि वोह उन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से हलका होगा जो दुन्या में पढ़ी थी। **52 :** हस्रतो नदामत से। येह हाल अगर्चे कुफ़्फ़ार के लिये आ़म है मगर उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त से इस का ख़ास तअ़ल्लुक़ है। **शाने नुज़ूल :** उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त उबय बिन ख़लफ़ का गहरा दोस्ता था, हुज़ूर

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿۲۷﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ

कि हाए किसी त़रह़ से मैं ने रसूल के साथ राह ली होती[53] वाए ख़राबी मेरी हाए किसी त़रह़ मैं ने

اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿۲۸﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَ

फ़ुलाने को दोस्त न बनाया होता बेशक उस ने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीह़त से[54] और

كَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى

शैत़ान आदमी को बे मदद छोड़ देता है[55] और रसूल ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने

اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ

इस कुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया[56] और इसी त़रह़ हम ने हर नबी के लिये दुश्मन बना दिये थे

الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿۳۱﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

मुजरिम लोग[57] और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को और काफ़िर बोले

لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚۛ كَذٰلِكَ ۚۛ لِنُثَبِّتَ بِهٖ

مع

कुरआन उन पर एक साथ क्यूं न उतार दिया[58] हम ने यूंही ब तदरीज उसे उतारा है कि उस से तुम्हारा दिल

فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ

मज़बूत़ करें[59] और हम ने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा[60] और वोह कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएंगे[61] मगर हम ह़क़ और

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रमाने से उस ने "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" की शहादत दी और इस के बा'द उबय बिन ख़लफ़ के ज़ोर डालने से फिर मुरतद हो गया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस को मक़्तूल होने की ख़बर दी। चुनान्चे बद्र में मारा गया येह आयत उस के ह़क़ में नाज़िल हुई कि रोज़े क़ियामत उस को इन्तिहा दरजे की ह़स्रतो नदामत होगी, इस ह़सरत में वोह अपने हाथ चाब चाब लेगा। **53 :** जन्नत व नजात की और उन का इत्तिबाअ़ किया होता और उन की हिदायत क़बूल की होती **54 :** या'नी कुरआन व ईमान से **55 :** और बला व अ़ज़ाब नाज़िल होने के वक़्त उस से अ़लाह़दगी करता है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अबू दावूद व तिरमिज़ी में एक ह़दीस मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है। तो देखना चाहिये किस को दोस्त बनाता है और ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम नशीनी न करो मगर ईमानदार के साथ और खाना न खिलाओ मगर परहेज़ गार को। **मस्अला :** बे दीन और बद मज़हब की दोस्ती और उस के साथ सोह़बत व इख़्तिलात़ और उल्फ़त व एह़तिराम मम्नूअ़ है। **56 :** किसी ने इस को सेह़्र कहा, किसी ने शे'र और वोह लोग ईमान लाने से मह़रूम रहे, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को तसल्ली दी और आप से मदद का वा'दा फ़रमाया जैसा कि आगे इर्शाद होता है। **57 :** या'नी अम्बिया के साथ बद नसीबों का येही मा'मूल रहा है। **58 :** जैसे कि तौरैत व इन्जील व ज़बूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी। कुफ़्फ़ार का येह ए'तिराज़ बिल्कुल फ़ुज़ूल और मोहमल है क्यूं कि कुरआने करीम का मो'जिज़ा व मुह़्तज बिही होना हर ह़ाल में यक्सां है, चाहे यक्बारगी नाज़िल हो या ब तदरीज बल्कि ब तदरीज नाज़िल फ़रमाने में इस के ए'जाज़ का और भी कामिल इज़्हार है कि जब एक आयत नाज़िल हुई और तह़द्दी की गई और ख़ल्क़ का इस के मिस्ल बनाने से आ़जिज़ होना ज़ाहिर हुवा फिर दूसरी उतरी इसी त़रह़ इस का ए'जाज़ ज़ाहिर हुवा, इस त़रह़ बराबर आयत आयत हो कर कुरआने पाक नाज़िल होता रहा और हर हर दम इस की बे मिसाली और ख़ल्क़ की आ़जिज़ी ज़ाहिर होती रही। ग़रज़ कुफ़्फ़ार का ए'तिराज़ मह़्ज़ लग़्व व बे मा'ना है, आयत में **अल्लाह** तआ़ला ब तदरीज नाज़िल फ़रमाने की ह़िक्मत ज़ाहिर फ़रमाता है। **59 :** और पयाम का सिल्सिला जारी रहने से आप के क़ल्बे मुबारक को तस्कीन होती रहे और कुफ़्फ़ार को हर हर मौक़अ़ पर जवाब मिलते रहें। इलावा बरीं येह भी फ़ाएदा है कि उस का ह़िफ़्ज़ सह्ल और आसान हो। **60 :** ब ज़बाने जिब्रील थोड़ा

أَحۡسَنَ تَفۡسِيۡرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيۡنَ يُحۡشَرُوۡنَ عَلٰى وُجُوۡهِهِمۡ اِلٰى جَهَنَّمَ

इस से बेहतर बयान ले आएंगे वोह जो जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल

اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيۡلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ وَ

उन का ठिकाना सब से बुरा[62] और वोह सब से गुमराह और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई और

جَعَلۡنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوۡنَ وَزِيۡرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلۡنَا اذۡهَبَاۤ اِلَى الۡقَوۡمِ الَّذِيۡنَ

इस के भाई हारून को वज़ीर किया तो हम ने फ़रमाया तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ़ जिस ने

كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرۡنٰهُمۡ تَدۡمِيۡرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوۡمَ نُوۡحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

हमारी आयतें झुटलाईं[63] फिर हम ने उन्हें तबाह कर के हलाक कर दिया और नूह़ की क़ौम को[64] जब उन्हों ने रसूलों को

الرُّسُلَ اَغۡرَقۡنٰهُمۡ وَجَعَلۡنٰهُمۡ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعۡتَدۡنَا لِلظّٰلِمِيۡنَ عَذَابًا

झुटलाया[65] हम ने उन को डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिये निशानी कर दिया[66] और हम ने ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार

اَلِيۡمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوۡدَا۠ وَاَصۡحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوۡنًاۢ بَيۡنَ ذٰلِكَ كَثِيۡرًا ﴿٣٨﴾

कर रखा है और आ़द और समूद[67] और कूंएं वालों को[68] और इन के बीच में बहुत सी संगतें[69]

وَكُلًّا ضَرَبۡنَا لَهُ الۡاَمۡثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرۡنَا تَتۡبِيۡرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدۡ اَتَوۡا عَلَى

और हम ने सब से मिसालें बयान फ़रमाईं[70] और सब को तबाह कर के मिटा दिया और ज़रूर येह[71] हो आए हैं उस

थोड़ा बीस या तेईस बरस की मुद्दत में, या येह मा'ना हैं कि हम ने आयत के बा'द आयत ब तदरीज नाज़िल फ़रमाई। और बा'ज़ ने कहा कि **अल्लाह** तआला ने हमें क़िराअत में तरतील करने या'नी ठहर ठहर कर ब इत्मीनान पढ़ने और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी त़रह अदा करने का हुक्म फ़रमाया जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा "وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا" **61 :** या'नी मुशरिकीन आप के दीन के ख़िलाफ़ या आप की नुबुव्वत में क़दह़ (ऐबजूई) करने वाला कोई सुवाल पेश न कर सकेंगे। **62 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि आदमी रोज़े क़ियामत तीन त़रीक़े पर उठाए जाएंगे : **एक** गुरौह सुवारियों पर, **एक** गुरौह पियादा पा और **एक** जमाअ़त मुंह के बल घिसटती। अ़र्ज़ किया गया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! वोह मुंह के बल कैसे चलेंगे ? फ़रमाया : जिस ने पाउं पर चलाया है वोही मुंह के बल चलाएगा। **63 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न की त़रफ़। चुनान्चे वोह दोनों ह़ज़रात उन की त़रफ़ गए और उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और अपनी रिसालत की तब्लीग़ की, लेकिन उन बद बख़्तों ने उन ह़ज़रात को झुटलाया। **64 :** भी हलाक कर दिया। **65 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ और ह़ज़रते इदरीस को और ह़ज़रते शीस को या येह बात है कि एक रसूल की तक्ज़ीब तमाम रसूलों की तक्ज़ीब है तो जब उन्हों ने ह़ज़रते नूह़ को झुटलाया तो सब रसूलों को झुटलाया। **66 :** कि बा'द वालों के लिये इब्रत हों। **67 :** और आ़द ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम और समूद ह़ज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम, इन दोनों क़ौमों को भी हलाक किया। **68 :** येह ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम थी जो बुत परस्ती करते थे। **अल्लाह** तआला ने उन की त़रफ़ ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा। आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी, उन्हों ने सरकशी की, ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और आप को ईज़ा दी। उन लोगों के मकान कूंएं के गिर्द थे। **अल्लाह** तआला ने उन्हें हलाक किया और येह तमाम क़ौम मअ़ अपने मकानों के उस कूंएं के साथ ज़मीन में धंस गई। इस के इलावा और अक़्वाल भी हैं। **69 :** या'नी क़ौमे आ़द व समूद और कूंएं वालों के दरमियान में बहुत सी उम्मतें हैं जिन को अम्बिया की तक्ज़ीब करने के सबब से **अल्लाह** तआला ने हलाक किया। **70 :** और हुज्जतें क़ाइम कीं और उन में से किसी को बिग़ैर इन्ज़ार हलाक न किया। **71 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का अपनी तिजारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार।

الْقَرْیَةِ الَّتِیْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ یَكُوْنُوْا یَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا

बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था[72] तो क्या येह उसे देखते न थे[73] बल्कि उन्हें जी

لَا یَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿۴۰﴾ وَ اِذَا رَاَوْكَ اِنْ یَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

उठने की उम्मीद थी ही नहीं[74] और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठठ्ठा (मज़ाक़)[75] क्या येह हैं

الَّذِیْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿۴۱﴾ اِنْ كَادَ لَیُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْ لَاۤ اَنْ صَبَرْنَا

जिन को **अल्लाह** ने रसूल बना कर भेजा क़रीब था कि येह हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें अगर हम इन पर सब्र न

عَلَیْهَا ؕ وَ سَوْفَ یَعْلَمُوْنَ حِیْنَ یَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿۴۲﴾

करते[76] और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अ़ज़ाब देखेंगे[77] कि कौन गुमराह था[78]

اَرَءَیْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَیْهِ وَكِیْلًا ﴿۴۳﴾ اَمْ

क्या तुम ने उसे देखा जिस ने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया[79] तो क्या तुम उस की निगहबानी का ज़िम्मा लोगे[80] या

تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ یَسْمَعُوْنَ اَوْ یَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ

येह समझते हो कि उन में बहुत कुछ सुनते या समझते हैं[81] वोह तो नहीं मगर जैसे चौपाए

بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿۴۴﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَیْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَ لَوْ شَآءَ

बल्कि उन से भी बदतर गुमराह[82] ऐ मह़बूब क्या तुम ने अपने रब को न देखा[83] कि कैसा फैलाया साया[84] और अगर चाहता

ع ۲

72 : उस बस्ती से मुराद सदूम है जो क़ौमे लूत़ की पांच बस्तियों में सब से बड़ी बस्ती थी, उन बस्तियों में एक सब से छोटी बस्ती के लोग तो उस ख़बीस बदकारी के आ़मिल न थे जिस में बाक़ी चार बस्तियों के लोग मुब्तला थे। इसी लिये उन्हों ने नजात पाई और वोह चार बस्तियां अपनी बद अ़मली के बाइ़स आस्मान से पथ्थर बरसा कर हलाक कर दी गईं। **73 :** कि इ़ब्रत पकड़ते और ईमान लाते। **74 :** या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने के क़ाइल न थे कि उन्हें आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब की परवाह होती। **75 :** और कहते हैं : **76 :** इस से मा'लूम हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की दा'वत और आप के इज़्हारे मो'जिज़ात ने कुफ़्फ़ार पर इतना असर किया था और दीने ह़क़ को इस क़दर वाज़ेह़ कर दिया था कि ख़ुद कुफ़्फ़ार को इक़रार है कि अगर वोह अपनी हट पर जमे न रहते तो क़रीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और दीने इस्लाम इख़्तियार करें या'नी दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ख़ूब वाज़ेह़ हो चुकी थी और शुकूको शुबुहात मिटा डाले गए थे लेकिन वोह अपनी हट और ज़िद की वज्ह से मह़रूम रहे। **77 :** आख़िरत में **78 :** येह उस का जवाब है कि कुफ़्फ़ार ने येह कहा था कि क़रीब है कि येह हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें, यहां बताया गया कि बहके हुए तुम ख़ुद हो और आख़िरत में येह तुम को ख़ुद मा'लूम हो जाएगा और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ बहकाने की निस्बत मह़ज़ बे जा है। **79 :** और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजने लगा, उसी का मुत़ीअ़ हो गया, वोह हिदायत किस त़रह़ क़बूल करेगा। मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग एक पथ्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पथ्थर उस से अच्छा नज़र आता तो पहले को फेंक देते और दूसरे को पूजने लगते। **80 :** कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो **81 :** या'नी वोह अपने शिद्दते इ़नाद से न आप की बात सुनते हैं न दलाइल व बराहीन को समझते हैं, बहरे और ना समझ बने हुए हैं। **82 :** क्यूं कि चौपाए भी अपने रब की तस्बीह़ करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उस के मुत़ीअ़ रहते हैं और एह़सान करने वाले को पहचानते हैं और तक्लीफ़ देने वाले से घबराते हैं, नाफ़ेअ़ की त़लब करते हैं, मुज़िर से बचते हैं, चरागाहों की राहें जानते हैं, येह कुफ़्फ़ार उन से भी बदतर हैं कि न रब की इत़ाअ़त करते हैं न उस के एह़सान को पहचानते हैं न शैत़ान जैसे दुश्मन की ज़रर रसानी को समझते हैं न सवाब जैसी अ़ज़ीमुल मन्फ़अ़त चीज़ के त़ालिब हैं न अ़ज़ाब जैसे सख़्त मुज़िर मोहलिका से बचते हैं। **83 :** कि उस की सन्अ़त व क़ुदरत कैसी अ़जीब है। **84 :** सुब्ह़े सादिक़ के त़ुलूअ़

لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿۴۵﴾ۙ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا

तो उसे ठहराया हुवा कर देता[85] फिर हम ने सूरज को इस पर दलील किया फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी

قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّ

तरफ़ समेटा[86] और वोही है जिस ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम और

جَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿۴۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ

दिन बनाया उठने के लिये[87] और वोही है जिस ने हवाएं भेजीं अपनी रहमत के आगे

رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿۴۸﴾ۙ لِّنُحْیِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّ

मुज़्दा सुनाती हुई[88] और हम ने आस्मान से पानी उतारा पाक करने वाला ताकि हम उस से ज़िन्दा करें किसी मुर्दा शहर को[89] और

نُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿۴۹﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ

उसे पिलाएं अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को और बेशक हम ने उन में पानी के फेरे

لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۵۰﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ

रखे[90] कि वोह ध्यान करें[91] तो बहुत लोगों ने न माना मगर नाशुक्री करना और हम चाहते तो हर बस्ती में

قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿۵۱﴾ۖ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿۵۲﴾

एक डर सुनाने वाला भेजते[92] तो काफ़िरों का कहा न मान और इस कुरआन से उन पर जिहाद कर बड़ा जिहाद

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَ

और वोही है जिस ने मिले हुए रवां किये दो समुन्दर येह मीठा है निहायत शीरीं और येह खारी है निहायत तल्ख़ और

جَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ

उन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़[93] और वोही है जिस ने पानी से[94] बनाया

के बा'द से आफ़्ताब के तुलूअ़ तक कि उस वक़्त तमाम ज़मीन में साया ही साया होता है न धूप है न अंधेरा है। **85 :** कि आफ़्ताब के तुलूअ़ से भी ज़ाइल न होता। **86 :** कि तुलूअ़ के बा'द आफ़्ताब जितना ऊंचा होता गया साया सिमटता गया। **87 :** कि इस में रोज़ी तलाश करो और कामों में मश्गूल हो। हज़रते लुक़्मान ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : जैसे सोते हो फिर उठते हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बा'द फिर उठोगे। **88 :** यहां रहमत से मुराद बारिश है **89 :** जहां की ज़मीन ख़ुश्की से बेजान हो गई **90 :** कि कभी किसी शहर में बारिश हो कभी किसी में, कभी कहीं ज़ियादा हो कभी कहीं। मुख़्तलिफ़ तौर पर हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत। एक ह़दीस में है कि आस्मान से रोज़ो शब की तमाम साअ़तों में बारिश होती रहती है **अल्लाह** तआ़ला उसे जिस ख़ित्ते की जानिब चाहता है फेरता है और जिस ज़मीन को चाहता है सैराब करता है। **91 :** और **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत व ने'मत में ग़ौर करें **92 :** और आप पर से इन्ज़ार (डराने) का बार कम कर देते, लेकिन हम ने तमाम बस्तियों के इन्ज़ार का बार आप ही पर रखा ताकि आप तमाम जहान के रसूल हो कर कुल रसूलों की फ़ज़ीलतों के जामेअ़ हों और नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो कि आप के बा'द फिर कोई नबी न हो **93 :** कि न मीठा खारी हो न खारी मीठा, न कोई किसी के ज़ाएक़े को बदल सके जैसे कि दिज्ला दरियाए शोर में मीलों तक चला

بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿۵۴﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ

आदमी फिर उस के रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की[95] और तुम्हारा रब क़ुदरत वाला है[96] और अल्लाह के सिवा ऐसों

دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿۵۵﴾

को पूजते हैं[97] जो उन का भला बुरा कुछ न करें और काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है[98]

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۵۶﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ

और हम ने तुम्हें न भेजा मगर[99] ख़ुशी और[100] डर सुनाता तुम फ़रमाओ मैं इस[101] पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता

اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۵۷﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ

मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले[102] और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो

لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَا ﴿۵۸﴾ ۚۛ

مع

कभी न मरेगा[103] और उसे सराहते हुए उस की पाकी बोलो[104] और वोही काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों पर ख़बरदार[105]

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

जिस ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है छ[6] दिन में बनाए[106] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚۛ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿۵۹﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ

अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है[107] वोह बड़ी मेहर (रह़मत) वाला तो किसी जानने वाले से उस की ता'रीफ़ पूछ[108] और जब उन से कहा जाए[109]

اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ

रह़मान को सज्दा करो कहते हैं रह़मान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो[110] और इस हुक्म ने उन्हें और बिदक्ना

जाता है और उस के ज़ाएक़े में कोई तग़य्युर नहीं आता, अ़जब शाने इलाही है। **94 :** या'नी नुत़्फ़े से **95 :** कि नस्ल चले **96 :** कि उस ने एक नुत़्फ़े से दो क़िस्म के इन्सान पैदा किये मुज़क्कर और मुअन्नस, फिर भी काफ़िरों का येह ह़ाल है कि उस पर ईमान नहीं लाते। **97 :** या'नी बुतों को **98 :** क्यूं कि बुत परस्ती करना शैत़ान को मदद देना है **99 :** ईमान व त़ाअ़त पर जन्नत की **100 :** कुफ़्रो मा'सियत पर अ़ज़ाबे जहन्नम का **101 :** तब्लीग़ व इर्शाद **102 :** और उस का क़ुर्ब और उस की रिज़ा ह़ासिल करे, मुराद येह है कि ईमानदारों का ईमान लाना और उन का त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल होना ही मेरा अज्र है क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला मुझे इस पर जज़ा अ़त़ा फ़रमाएगा, इस लिये कि सुलह़ाए उम्मत के ईमान और उन की नेकियों के सवाब उन्हें भी मिलते हैं और उन के अम्बिया को जिन की हिदायत से वोह इस रुत्बे पर पहुंचे। **103 :** उसी पर भरोसा करना चाहिये क्यूं कि मरने वाले पर भरोसा करना आ़क़िल की शान नहीं। **104 :** उस की तस्बीह़ व तह़मीद करो, उस की त़ाअ़त और शुक्र बजा लाओ। **105 :** न उस से किसी का गुनाह छुपे न कोई उस की गिरिफ़्त से अपने को बचा सके। **106 :** या'नी इतनी मिक़्दार में क्यूं कि लैलो नहार और आफ़्ताब तो थे ही नहीं और इतनी मिक़्दार में पैदा करना अपनी मख़्लूक़ को आहिस्तगी और इत़्मीनान की ता'लीम के लिये है, वरना वोह एक लम्ह़े में सब कुछ पैदा कर देने पर क़ादिर है। **107 :** सलफ़ का मज़हब येह है कि इस्तिवा और इस के अम्साल जो वारिद हुए हम उस पर ईमान रखते हैं और इस की कैफ़िय्यत के दरपै नहीं होते, इस को अल्लाह जाने। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन इस्तिवा को बुलन्दी और बरतरी के मा'ना में लेते हैं और बा'ज़ इस्तीला (ग़लबा) के मा'ना में लेकिन क़ौले अव्वल ही अस्लम व अक़्वा है। **108 :** इस में इन्सान को ख़ित़ाब है कि ह़ज़रते रह़मान की सिफ़ात मर्दे आ़रिफ़ से दरयाफ़्त करे। **109 :** या'नी जब सय्यिदे आ़लम

نُفُوْرًا ۩ ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّ

बढ़ाया[111] बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने आस्मान में बुर्ज बनाए[112] और उन में चराग़ रखा[113] और

قَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ

चमक्ता चांद और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी[114] उस के लिये

اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى

जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे और रहमान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर

الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ

आहिस्ता चलते हैं[115] और जब जाहिल उन से बात करते हैं[116] तो कहते हैं बस सलाम[117] और वोह जो

يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ

रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़ियाम में[118] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हम से

عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا

फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उस का अ़ज़ाब गले का ग़ुल (फन्दा) है[119] बेशक वोह बहुत ही बुरी ठहरने की

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुश्रिकीन से फ़रमाएं कि **110 :** इस से उन का मक़्सद येह है कि रहमान को जानते नहीं और येह बातिल है जो उन्हों ने बराहे इनाद कहा क्यूं कि लुग़ते अ़रब जानने वाला ख़ूब जानता है कि रहमान के मा'ना निहायत रह़्म वाला हैं और येह **अल्लाह** तआ़ला ही की सिफ़त है। **111 :** या'नी सज्दे का हुक्म उन के लिये और ज़ियादा ईमान से दूरी का बाइस हुवा। **112 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बुरूज से कवाकिबे सब्अ़ा सय्यारा के मनाज़िल मुराद हैं, जिन की ता'दाद बारह 12 है : ह़म्ल[1], सौर[2], जौज़ा[3], सरत़ान[4], असद[5], सुम्बुला[6], मीज़ान[7], अ़क़्रब[8], क़ौस[9], जद्य[10], दल्व[11], ह़ूत[12]। **113 :** चराग़ से यहां आफ़्ताब मुराद है। **114 :** कि उन में एक के बा'द दूसरा आता है और उस का क़ाइम मक़ाम होता है कि जिस का अ़मल रात या दिन में से किसी एक में क़ज़ा हो जाए तो दूसरे में अदा करे ऐसा ही फ़रमाया ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने और रात और दिन का एक दूसरे के बा'द आना और क़ाइम मक़ाम होना **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व ह़िक्मत की दलील है। **115 :** इत़्मीनान व वक़ार के साथ मुतवाज़ेआ़ना शान से, न कि मुतकब्बिराना त़रीक़े पर जूते खट खटाते पाउं ज़ोर से मारते इतराते कि येह मुतकब्बिरीन की शान है और शरअ़ ने इस को मन्अ़ फ़रमाया। **116 :** और कोई ना गवार कलिमा या बेहूदा या ख़िलाफ़े अदब व तहज़ीब बात कहते हैं **117 :** येह सलामे मुतारकत है या'नी जाहिलों के साथ मुजादला करने से ए'राज़ करते हैं या येह मा'ना हैं कि ऐसी बात कहते हैं जो दुरुस्त हो और उस में ईज़ा और गुनाह से सालिम रहें। ह़सन बसरी ने फ़रमाया कि येह तो उन बन्दों के दिन का ह़ाल है और उन की रात का बयान आगे आता है। मुराद येह है कि उन की मजलिसी ज़िन्दगी और ख़ल्क़ के साथ मुआ़मला ऐसा पाकीज़ा है और उन की ख़ल्वत की ज़िन्दगानी और ह़क़ के साथ राबित़ा येह है जो आगे बयान फ़रमाया जाता है। **118 :** या'नी नमाज़ और इ़बादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब की इ़बादत में गुज़ारते हैं और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने करम से थोड़ी इ़बादत वालों को भी शब बेदारी का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जिस किसी ने बा'दे इशा दो रक्अ़त या ज़ियादा नफ़्ल पढ़े वोह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है। मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने निस्फ़ शब के क़ियाम का सवाब पाया और जिस ने फ़ज्र भी बा जमाअ़त अदा की वोह तमाम शब के इ़बादत करने वाले की मिस्ल है। **119 :** या'नी लाज़िम, जुदा न होने वाला। इस आयत में उन बन्दों की शब बेदारी और इ़बादत का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द उन की इस दुआ़ का बयान किया, इस से येह इज़्हार मक़्सूद है कि वोह बा वुजूद कस्रते इ़बादत के **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ रखते हैं और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ करते हैं।

وَّ مُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ

जगह है और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें[120] और इन दोनों के बीच

ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ

ए'तिदाल पर रहें[121] और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते[122] और उस जान को

النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

जिस की **अल्लाह** ने ह़ुरमत रखी[123] नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते[124] और जो येह काम करे

يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ

वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन[125] और हमेशा उस में ज़िल्लत से

مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ

रहेगा मगर जो तौबा करे[126] और ईमान लाए[127] और अच्छा काम करे[128] तो ऐसों की बुराइयों को

اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَ

अल्लाह भलाइयों से बदल देगा[129] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और जो तौबा करे और

عَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ

अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं

120 : इसराफ़ मा'सियत में ख़र्च करने को कहते हैं। एक बुज़ुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं। दूसरे बुज़ुर्ग ने कहा : नेकी में इसराफ़ ही नहीं। और तंगी करना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के मुक़र्रर किये हुए हुक़ूक़ के अदा करने में कमी करे, येही ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी ह़क़ को मन्अ़ किया उस ने इक़्तार किया या'नी तंगी की और जिस ने नाह़क़ में ख़र्च किया उस ने इसराफ़ किया। यहां उन बन्दों के ख़र्च करने का ह़ाल ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वोह इसराफ़ व इक़्तार के दोनों मज़्मूम त़रीक़ों से बचते हैं। **121 :** अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अपनी बेटी बियाहते वक़्त ख़र्च का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि नेकी दो बदियों के दरमियान है। इस से मुराद येह थी कि ख़र्च में ए'तिदाल नेकी है और वोह इसराफ़ व इक़्तार के दरमियान है जो दोनों बदियां हैं, इस से अ़ब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वोह इस आयत के मज़्मून की त़रफ़ इशारा करते हैं। मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में जिन ह़ज़रात का ज़िक्र है वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अस्ह़ाबे किबार हैं जो न लज़्ज़त व तनअ़्उम के लिये खाते, न ख़ूब सूरती और ज़ीनत के लिये पहनते, भूक रोकना सत्र छुपाना सरदी गरमी की तक्लीफ़ से बचना इतना उन का मक़्सद था। **122 :** शिर्क से बरी और बेज़ार हैं। **123 :** और उस का ख़ून मुबाह़ न किया जैसे कि मोमिन व मुआ़हिद उस को **124 :** सालिह़ीन से इन कबाइर की नफ़ी फ़रमाने में कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जो इन बदियों में गिरिफ़्तार थे। **125 :** या'नी वोह शिर्क के अ़ज़ाब में भी गिरिफ़्तार होगा और इन मआ़सी का अ़ज़ाब उस अ़ज़ाब पर और ज़ियादा किया जाएगा। **126 :** शिर्क व कबाइर से **127 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर **128 :** या'नी बा'दे तौबा नेकी इख़्तियार करे **129 :** या'नी बदी करने के बा'द नेकी की तौफ़ीक़ दे कर या येह मा'ना कि बदियों को तौबा से मिटा देगा और उन की जगह ईमान व त़ाअ़त वग़ैरा नेकियां सब्त फ़रमाएगा। (مدارک) मुस्लिम की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत एक शख़्स ह़ाज़िर किया जाएगा मलाएका ब हुक्मे इलाही उस के सग़ीरा गुनाह एक एक कर के उस को याद दिलाते जाएंगे वोह इक़रार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश होने से डरता होगा। इस के बा'द कहा जाएगा कि हर एक बदी के इवज़ तुझ को नेकी दी गई। येह बयान फ़रमाते हुए सय्यिदे आ़लम

الزُّوْرَ ۙ وَ اِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ

देते[130] और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं[131] और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई

رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّ عُمْيَانًا ﴿۷۳﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا

जाएं तो उन पर[132] बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते[133] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब

هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ

हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक[134] और हमें परहेज़ गारों का

اِمَامًا ﴿۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً

पेश्वा बना[135] उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे (दुआ़ व आदाब) और सलाम के साथ उन की पेश्वाई

وَّسَلٰمًا ﴿۷۵﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿۷۶﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

होगी[136] हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह तुम फ़रमाओ[137] तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं

رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿۷۷﴾

मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने तो झुटलाया[138] तो अब होगा वोह अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा[139]

सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है, इस में दो सो सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला की बन्दा नवाज़ी और उस की शाने करम पर ख़ुशी हुई और चेहरए अक़्दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायां हुए। **130 :** और झूटों की मजलिस से अ़लाहि़दा रहते हैं और उन के साथ मुख़ालतत नहीं करते **131 :** और अपने आप को लहव व बाति़ल से मुलव्वस नहीं होने देते, ऐसी मजालिस से ए'राज़ करते हैं। **132 :** ब त़रीक़े तग़ाफ़ुल (ग़फ़्लत करते हुए) **133 :** कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और ब चश्मे बसीरत देखते हैं और उस नसीह़त से पन्द पज़ीर होते (नसीह़त क़बूल करते) हैं, नफ़्अ़ उठाते हैं और उन आयतों पर फ़रमां बरदाराना गिरते हैं। **134 :** या'नी फ़रहत व सुरूर। मुराद येह है कि हमें बीबियां और औलाद, नेक सालेह़ मुत्तक़ी अ़ता फ़रमा कि उन के हुस्ने अ़मल और उन की इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल ख़ुश हों। **135 :** या'नी हमें ऐसा परहेज़ गार और ऐसा आ़बिद व ख़ुदा परस्त बना कि हम परहेज़ गारों की पेश्वाई के क़ाबिल हों और वोह दीनी उमूर में हमारी इक़्तिदा करें। **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेश्वाई और सरदारी की रग़बत व त़लब चाहिये। इन आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने सालिह़ीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए, इस के बा'द उन की जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **136 :** मलाएका तहि़य्यत व तस्लीम के साथ उन की तक्रीम करेंगे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ सलाम भेजेगा। **137 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से कि **138 :** मेरे रसूल और मेरी किताब को **139 :** या'नी अ़ज़ाबे दाइम व हलाके लाज़िम। **1 :** सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है सिवाए आख़िर की चार आयतों के जो "وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में ग्यारह 11 रुकूअ़ और दो सो सत्ताईस 227 आयतें और एक हज़ार दो सो उनासी 1279 कलिमे और पांच हज़ार पांच सो चालीस 5540 ह़र्फ़ हैं।

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا یَكُوْنُوْا

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के ग़म में कि वोह ईमान नहीं

مُؤْمِنِیْنَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰیَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا

लाए[3] अगर हम चाहें तो आस्मान से उन पर कोई निशानी उतारें कि उन के ऊंचे ऊंचे उस के हुज़ूर झुके रह

خٰضِعِیْنَ ﴿٤﴾ وَ مَا یَاْتِیْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا

जाएं[4] और नहीं आती उन के पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत मगर उस से मुंह

عَنْهُ مُعْرِضِیْنَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَیَاْتِیْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

फेर लेते हैं[5] तो बेशक उन्हों ने झुटलाया तो अब उन पर आया चाहती हैं ख़बरें उन के

یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ

ठठ्ठे (मज़ाक़) की[6] क्या उन्हों ने ज़मीन को न देखा हम ने उस में कितने इ़ज़्ज़त वाले जोड़े

كَرِیْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿٨﴾ وَ اِنَّ

उगाए[7] बेशक इस में ज़रूर निशानी है[8] और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं और बेशक

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿٩﴾ ع وَ اِذْ نَادٰی رَبُّكَ مُوْسٰۤی اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ

तुम्हारा रब ज़रूर वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है[9] और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के

الظّٰلِمِیْنَ ﴿١٠﴾ ۙ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا یَتَّقُوْنَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَخَافُ

पास जा जो फ़िरऔ़न की क़ौम है[10] क्या वोह न डरेंगे[11] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं डरता हूं कि

2 : या'नी कुरआने पाक की, जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर है और जो ह़क़ को बातिल से मुमताज़ करने वाला है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बराहे रहमत व करम ख़िताब होता है। 3 : जब अहले मक्का ईमान न लाए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की तो हुज़ूर पर उन की महरूमी बहुत शाक़ हुई, इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई कि आप इस क़दर ग़म न करें। 4 : और कोई मा'सियत व ना फ़रमानी के साथ गरदन न उठा सके। 5 : या'नी दम बदम उन का कुफ़्र बढ़ता जाता है कि जो मौइ़ज़त व तज़्कीर (वा'ज़ो नसीह़त) और जो वह्य नाज़िल होती है वोह उस का इन्कार करते चले जाते हैं। 6 : येह वई़द है और इस में इन्ज़ार है कि रोज़े बद्र या रोज़े क़ियामत जब उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि कुरआन और रसूल की तक्ज़ीब का येह अन्जाम है। 7 : या'नी क़िस्म क़िस्म के बेहतरीन और नाफ़ेअ़ नबातात पैदा किये और शअ़बी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावार हैं। जो जन्नती है वोह इ़ज़्ज़त वाला और करीम और जो जहन्नमी है वोह बद बख़्त लईम है। 8 : अल्लाह तआ़ला के कमाले कुदरत पर 9 : काफ़िरों से इन्तिक़ाम लेता और मोमिनीन पर रहमत फ़रमाता है। 10 : जिन्हों ने कुफ़्र व मआ़सी से अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और बनी इसराईल को ग़ुलाम बना कर और उन्हें त़रह त़रह की ईज़ाएं पहुंचा कर उन पर ज़ुल्म किया, उस क़ौम का नाम क़िब्त़ है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उन की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया कि उन्हें उन की बद किरदारी पर ज़ज्र फ़रमाएं। 11 : अल्लाह से, और अपनी जानों को अल्लाह तआ़ला पर ईमान ला कर और उस की फ़रमां बरदारी कर के उस के अ़ज़ाब से न बचाएंगे। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में।

اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝١٢ وَ يَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى

वोह मुझे झुटलाएंगे और मेरा सीना तंगी करता है[12] और मेरी ज़बान नहीं चलती[13] तो तू हारून को भी

هٰرُوْنَ ۝١٣ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝١٤ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا

रसूल कर[14] और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम है[15] तो मैं डरता हूं कहीं मुझे[16] क़त्ल कर दें फ़रमाया यूं नहीं[17] तुम दोनों मेरी आयतें

بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝١٥ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ

ले कर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं[18] तो फ़िरऔन के पास जाओ फिर उस से कहो हम दोनों उस के रसूल हैं

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٧ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ

जो रब है सारे जहां का कि तू हमारे साथ बनी इसराईल को छोड़ दे[19] बोला क्या हम ने तुम्हें

فِيْنَا وَلِيْدًا وَّ لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۝١٨ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ

अपने यहां बचपन में न पाला और तुम ने हमारे यहां अपनी उ़म्र के कई बरस गुज़ारे[20] और तुम ने किया अपना वोह काम

الَّتِيْ فَعَلْتَ وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّاَنَا مِنَ

जो तुम ने किया[21] और तुम नाशुक्र थे[22] मूसा ने फ़रमाया मैं ने वोह काम किया जब कि मुझे राह की

الضَّآلِّيْنَ ۝٢٠ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ

ख़बर न थी[23] तो मैं तुम्हारे यहां से निकल गया जब कि तुम से डरा[24] तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता फ़रमाया[25] और

12 : उन के झुटलाने से 13 : या'नी गुफ़्तगू करने में किसी क़दर तकल्लुफ़ होता है उस उ़क़्दह (गिरह) की वज्ह से जो ज़बान में ब अय्यामे सिग़्र सिनी मुंह में आग का अंगारा रख लेने से हो गया है। 14 : ताकि वोह तब्लीग़े रिसालत में मेरी मदद करें। जिस वक़्त ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को (मुल्के) शाम में नुबुव्वत अ़ता की गई उस वक़्त ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में थे। 15 : कि मैं ने क़िब्त़ी को मारा था। 16 : उस के बदले में 17 : तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को भी नबी कर दिया और दोनों को हुक्म दिया 18 : जो तुम कहो और जो तुम्हें जवाब दिया जाए। 19 : ताकि हम उन्हें सर ज़मीने शाम में ले जाएं। फ़िरऔ़न ने चार सो बरस तक बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाए रखा था और उस वक़्त बनी इसराईल की ता'दाद छ[6] लाख तीस हज़ार 630000 थी। अल्लाह तआ़ला का येह हुक्म पा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए, आप पश्मीना (ऊन) का जुब्बा पहने हुए थे, दस्ते मुबारक में अ़सा था, अ़सा के सिरे में ज़म्बील लटकी थी जिस में सफ़र का तोशा था, इस शान से आप मिस्र में पहुंच कर अपने मकान में दाख़िल हुए। ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام वहीं थे आप ने उन्हें ख़बर दी कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा है और आप को भी रसूल बनाया है कि फ़िरऔ़न को ख़ुदा की त़रफ़ दा'वत दो। येह सुन कर आप की वालिदा साहिबा घबराईं और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगीं कि फ़िरऔ़न तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तलाश में है, जब तुम उस के पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा। लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उन के येह फ़रमाने से न रुके और ह़ज़रते हारून को साथ ले कर शब के वक़्त फ़िरऔ़न के दरवाज़े पर पहुंचे, दरवाज़ा खट खटाया, पूछा : आप कौन हैं? ह़ज़रत ने फ़रमाया : मैं हूं मूसा, रब्बुल आ़लमीन का रसूल। फ़िरऔ़न को ख़बर दी गई और सुब्ह़ के वक़्त आप बुलाए गए आप ने पहुंच कर अल्लाह तआ़ला की रिसालत अदा की और फ़िरऔ़न के पास जो हुक्म पहुंचाने पर आप मामूर किये गए थे वोह पहुंचाया, फ़िरऔ़न ने आप को पहचाना। 20 : मुफ़स्सिरीन ने कहा : तीस बरस, उस ज़माने में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरऔ़न के लिबास पहनते थे और उस की सुवारियों में सुवार होते थे और उस के फ़रज़न्द मशहूर थे। 21 : क़िब्त़ी को क़त्ल किया 22 : कि तुम ने हमारी ने'मत की सिपास गुज़ारी न की और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया। 23 : मैं न जानता था कि

جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ

मुझे पैग़म्बरों से किया और येह कोई ने'मत है जिस का तू मुझ पर एह़सान जताता है कि तू ने ग़ुलाम बना कर रखे बनी

اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

इसराईल[26] फ़िरऔन बोला और सारे जहान का रब क्या है[27] मूसा ने फ़रमाया रब आस्मानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो[28] अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम

تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ

ग़ौर से सुनते नहीं[29] मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का[30] बोला

رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ

तुम्हारे येह रसूल जो तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अ़क़्ल नहीं रखते[31] मूसा ने फ़रमाया रब पूरब (मशरिक़) और

الْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا

पश्चिम (मग़रिब) का और जो कुछ इन के दरमियान है[32] अगर तुम्हें अ़क़्ल हो[33] बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा

घूंसा मारने से वोह शख़्स मर जाएगा, मेरा मारना तादीब के लिये था, न क़त्ल के लिये **24 :** कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और शह्र मद्यन को चला गया। **25 :** मद्यन से वापसी के वक़्त। "हुक्म" से यहां या नुबुव्वत मुराद है या इल्म। **26 :** या'नी इस में तेरा क्या एह़सान है कि तुम ने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा, खिलाया, पहनाया क्यूं कि मेरे तुझ तक पहुंचने का सबब तो येही हुवा कि तू ने बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाया उन की औलादों को क़त्ल किया, येह तेरा ज़ुल्मे अ़ज़ीम इस का बाइ़स हुवा कि मेरे वालिदैन मुझे परवरिश न कर सके और मेरे दरिया में डालने पर मजबूर हुए, तू ऐसा न करता तो मैं अपने वालिदैन के पास रहता, इस लिये येह बात क्या इस क़ाबिल है कि इस का एह़सान जताया जाए? फ़िरऔ़न, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस तक़रीर से ला जवाब हुवा और उस ने उस्लूबे कलाम बदला और येह गुफ़्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरूअ़ की। **27 :** जिस के तुम अपने आप को रसूल बताते हो। **28 :** या'नी अगर तुम अश्या को दलील से जानने की सलाहिय्यत रखते हो तो इन चीज़ों की पैदाइश उस के वुजूद की काफ़ी दलील है। ईक़ान उस इल्म को कहते हैं जो इस्तिद्लाल से ह़ासिल हो इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला की शान में मूक़िन नहीं कहा जाता। **29 :** उस वक़्त उस के गिर्द उस की क़ौम के अशराफ़ में से पांच सो शख़्स ज़ेवरों से आरास्ता ज़र्री कुर्सियों पर बैठे थे, उन से फ़िरऔ़न का येह कहना क्या तुम ग़ौर से नहीं सुनते ब ई मा'ना था कि वोह आस्मान और ज़मीन को क़दीम समझते थे और इन के ह़ुदूस के मुन्किर थे, मत़लब येह था कि जब येह चीज़ें क़दीम हैं तो इन के लिये रब की क्या ह़ाजत? अब ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन चीज़ों से इस्तिद्लाल पेश करना चाहा जिन का ह़ुदूस और जिन की फ़ना मुशाहदे में आ चुकी है। **30 :** या'नी अगर तुम दूसरी चीज़ों से इस्तिद्लाल नहीं कर सकते तो ख़ुद तुम्हारे नुफ़ूस से इस्तिद्लाल पेश किया जाता है, अपने आप को जानते हो, पैदा हुए हो, अपने बाप दादा को जानते हो कि वोह फ़ना हो गए तो अपनी पैदाइश से और उन की फ़ना से पैदा करने और फ़ना कर देने वाले के वुजूद का सुबूत मिलता है। **31 :** फ़िरऔ़न ने येह इस लिये कहा कि वोह अपने सिवा किसी मा'बूद के वुजूद का क़ाइल न था और जो इस के मा'बूद होने का ए'तिक़ाद न रखे उस को ख़ारिज अज़ अ़क़्ल कहता था और ह़क़ीक़तन इस त़रह़ की गुफ़्तगू इज्ज़ के वक़्त आदमी की ज़बान पर आती है, लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़र्ज़े हिदायत व इर्शाद को अ़ला वज्हिल कमाल अदा किया और उस की तमाम ला या'नी (फ़ुज़ूल) गुफ़्तगू के बा वुजूद फिर मज़ीद बयान की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए। **32 :** क्यूं कि पूरब से आफ़्ताब का त़ुलूअ़ करना और पश्चिम में ग़ुरूब हो जाना और साल की फ़स्लों में एक ह़िसाबे मुअ़य्यन पर चलना और हवाओं और बारिशों वग़ैरा के निज़ाम येह सब उस के वुजूद व क़ुदरत पर दलालत करते हैं। **33 :** अब फ़िरऔ़न मुतह़य्यिर हो गया और आसारे क़ुदरते इलाही के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उस से बन न आया।

غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿۲۹﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَیْءٍ

ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूंगा[34] फ़रमाया क्या अगर्चे मैं तेरे पास कोई रोशन चीज़

مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا

लाऊं[35] कहा तो लाओ अगर सच्चे हो तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया जभी

هِیَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۳۲﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِیَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۳۳﴾ قَالَ

वोह सरीह़ अज़्दहा हो गया[36] और अपना हाथ निकाला[37] तो जभी वोह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा[38] बोला

لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۴﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ

अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक येह दाना जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने

بِسِحْرِهٖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِی الْمَدَآئِنِ

जादू के ज़ोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है[39] वोह बोले उन्हें और उन के भाई को ठहराए रहो और शहरों में

حٰشِرِيْنَ ﴿۳۶﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿۳۷﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ

जम्अ़ करने वाले भेजो कि वोह तेरे पास ले आएं हर बड़े जादूगर दाना को[40] तो जम्अ़ किये गए जादूगर एक मुक़र्रर

يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۳۸﴾ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿۳۹﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ

दिन के वा'दे पर[41] और लोगों से कहा गया क्या तुम जम्अ़ हो गए[42] शायद हम इन

السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ

जादूगरों ही की पैरवी करें अगर येह ग़ालिब आएं[43] फिर जब जादूगर आए फ़िरऔ़न से बोले

34 : फ़िरऔ़न की क़ैद क़त्ल से बदतर थी, उस का जेलख़ाना तंगो तारीक अ़मीक़ गढ़ा था, उस में अकेला डाल देता था, न वहां कोई आवाज़ सुनाई आती थी न कुछ नज़र आता था। 35 : जो मेरी रिसालत की बुरहान हो। मुराद इस से मो'जिज़ा है इस पर फ़िरऔ़न ने 36 : अ़सा अज़्दहा बन कर आस्मान की त़रफ़ ब क़दर एक मील के उड़ा, फिर उतर कर फ़िरऔ़न की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : ऐ मूसा मुझे जो चाहिये हुक्म दीजिये। फ़िरऔ़न ने घबरा कर कहा : उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ो। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया। फ़िरऔ़न कहने लगा : इस के सिवा और भी कोई मो'जिज़ा है ? आप ने फ़रमाया : हां और उस को यदे बैज़ा दिखाया। 37 : गिरेबान में डाल कर 38 : उस से आफ़्ताब की सी शुआ़अ़ ज़ाहिर हुई। 39 : क्यूं कि उस ज़माने में जादू का बहुत रवाज था, इस लिये फ़िरऔ़न ने ख़याल किया कि येह बात चल जाएगी और उस की क़ौम के लोग इस धोके में आ कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुतनफ़्फ़िर हो जाएंगे और उन की बात क़बूल न करेंगे। 40 : जो इल्मे सेह़र में बक़ौल उन के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से बढ़ कर हो और वोह लोग अपने जादू से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात का मुक़ाबला करें ताकि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये हुज्जत बाक़ी न रहे और फ़िरऔ़नियों को येह कहने का मौक़अ़ मिल जाए कि येह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नुबुव्वत की दलील नहीं। 41 : वोह दिन फ़िरऔ़नियों की ई़द का था और उस मुक़ाबले के लिये वक़्ते चाश्त मुक़र्रर किया गया था। 42 : ताकि देखो कि दोनों फ़रीक़ क्या करते हैं और उन में कौन ग़ालिब आता है। 43 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर, इस से मक़्सूद उन का जादूगरों का इत्तिबाअ़ करना न था, बल्कि ग़रज़ येह थी कि इस ह़ीले से लोगों को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ़ से रोकें।

اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

क्या हमें कुछ मज़्दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आए बोला हां और उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا

हो जाओगे[44] मूसा ने उन से फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है[45] तो उन्हों ने

حِبَالَهُمْ وَ عِصِیَّهُمْ وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى

अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और बोले फ़िरऔन की इ़ज़्ज़त की क़सम बेशक हमारी ही जीत है[46] तो

مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ تَلْقَفُ مَا یَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِیَ السَّحَرَةُ

मूसा ने अपना अ़सा डाला जभी वोह उन की बनावटों को निगलने लगा[47] अब सज्दे में

سٰجِدِیْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾

गिरे जादूगर बोले हम ईमान लाए उस पर जो सारे जहान का रब है जो मूसा और हारून का रब है

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِیْرُكُمُ الَّذِیْ عَلَّمَكُمُ

फ़िरऔ़न बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू

السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ۬ لَاُقَطِّعَنَّ اَیْدِیَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ

सिखाया[48] तो अब जाना चाहते हो[49] मुझे क़सम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा

وَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَیْرَ ؗ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾

और तुम सब को सूली दूंगा[50] वोह बोले कुछ नुक़्सान नहीं[51] हम अपने रब की त़रफ़ पलटने वाले हैं[52]

44 : तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा, तुम्हें ख़ास ए'ज़ाज़ दिये जाएंगे। सब से पहले दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी, सब से बा'द तक दरबार में रहोगे, इस के बा'द जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि क्या ह़ज़रत पहले अपना अ़सा डालेंगे या हमें इजाज़त है कि हम अपना सामाने सेह़र डालें। 45 : ताकि तुम उस का अन्जाम देख लो। 46 : उन्हें अपने ग़लबे का इत़्मीनान था क्यूं कि सेह़र के आ'माल में जो इन्तिहा के अ़मल थे येह उन को काम में लाए थे और यक़ीने कामिल रखते थे कि अब कोई सेह़र इस का मुक़ाबला नहीं कर सकता। 47 : जो उन्हों ने जादू के ज़रीए़ से बनाई थीं या'नी उन की रस्सियां और लाठियां जो जादू से अज़्दहे बन कर दौड़ते नज़र आ रहे थे। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा अज़्दहा बन कर उन सब को निगल गया फिर उस को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने दस्ते मुबारक में लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ अ़सा था। जब जादूगरों ने येह देखा तो उन्हें यक़ीन हो गया कि येह जादू नहीं है। 48 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारे उस्ताद हैं इसी लिये वोह तुम से बढ़ गए। 49 : कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए। 50 : इस से मक़्सूद येह था कि आ़म ख़ल्क़ डर जाए और जादूगरों को देख कर लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न ले आएं। 51 : ख़्वाह दुन्या में कुछ भी पेश आए क्यूं कि 52 : ईमान के साथ और हमें **अल्लाह** तआ़ला से रह़मत की उम्मीद है।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ اَنْ كُنَّاۤ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَ

हमें तम्अ है कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्श दे इस पर कि हम सब से पहले ईमान लाए[53] और

اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْۤ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ فَاَرْسَلَ

हम ने मूसा को वह्य भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को[54] ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है[55] अब फ़िरऔन ने

فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَ

शहरों में जम्अ करने वाले भेजे[56] कि येह लोग एक थोड़ी जमाअत हैं और

اِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ

बेशक वोह हम सब का दिल जलाते हैं[57] और बेशक हम सब चोकन्ने हैं[58] तो हम ने उन्हें[59] बाहर निकाला

جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّ كُنُوْزٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ وَ اَوْرَثْنٰهَا

बाग़ों और चश्मों और ख़ज़ानों और उम्दा मकानों से हम ने ऐसा ही किया और उन का वारिस कर दिया

بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ

बनी इसराईल को[60] तो फ़िरऔनियों ने उन का तआक़ुब किया दिन निकले फिर जब आमना सामना हुवा दोनों गुरौहों का[61] मूसा

اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾

वालों ने कहा हम को उन्हों ने आ लिया[62] मूसा ने फ़रमाया यूं नहीं[63] बेशक मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है

فَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ

तो हम ने मूसा को वह्य फ़रमाई कि दरिया पर अपना असा मार[64] तो जभी दरिया फट गया[65] तो हर हिस्सा हो गया

كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَ اَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ اَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَ مَنْ

जैसे बड़ा पहाड़[66] और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को[67] और हम ने बचा लिया मूसा और उस

53 : रइय्यते फ़िरऔन में से या इस मज्मअ के हाज़िरीन में से। इस वाक़िए के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कई साल वहां इक़ामत फ़रमाई और उन लोगों को हक़ की दा'वत देते रहे लेकिन उन की सरकशी बढ़ती गई। 54 : या'नी बनी इसराईल को मिस्र से 55 : फ़िरऔन और उस के लश्कर पीछा करेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाख़िल होंगे, हम तुम्हें नजात देंगे और उन्हें ग़र्क़ करेंगे। 56 : लश्करों को जम्अ करने के लिये। जब लश्कर जम्अ हो गए तो उन की कसरत के मुक़ाबिल बनी इसराईल की ता'दाद थोड़ी मा'लूम होने लगी। चुनान्चे फ़िरऔन ने बनी इसराईल की निस्बत कहा : 57 : हमारी मुख़ालफ़त कर के और बे हमारी इजाज़त के हमारी सर ज़मीन से निकल कर 58 : मुस्तइद हैं हथियार बन्द हैं। 59 : या'नी फ़िरऔनियों को 60 : फ़िरऔन और उस की क़ौम के ग़र्क़ के बा'द। 61 : और उन में से हर एक ने दूसरे को देखा। 62 : अब वोह हम पर क़ाबू पा लेंगे न हम उन के मुक़ाबले की ताक़त रखते हैं न भागने की जगह है क्यूं कि आगे दरिया है। 63 : वा'दए इलाही पर कामिल भरोसा है। 64 : चुनान्चे हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दरिया पर असा मारा 65 : और उस के बारह हिस्से नुमूदार हुए 66 : और उन के दरमियान ख़ुश्क राहें। 67 : या'नी फ़िरऔन और फ़िरऔनियों को ता आं कि वोह बनी इसराईल के रास्तों में

مَعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا

के सब साथ वालों को[68] फिर दूसरों को डुबो दिया[69] बेशक इस में ज़रूर निशानी है[70] और उन

كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾

में अक्सर मुसल्मान न थे[71] और बेशक तुम्हारा रब वोही इज़्ज़त वाला[72] मेहरबान है[73]

ع ٨/٤

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾

وقف لازم

और उन पर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की[74] जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो[75]

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ

बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उन के सामने आसन मारे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहते हैं फ़रमाया क्या वोह तुम्हारी सुनते हैं जब

تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا

तुम पुकारो या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं[76] बोले बल्कि हम ने अपने बाप दादा को

كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَ

ऐसा ही करते पाया फ़रमाया तो क्या देखते हो जिन्हें पूज रहे हो तुम और

اٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْۤ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِيْ

तुम्हारे अगले बाप दादा[77] बेशक वोह सब मेरे दुश्मन हैं[78] मगर परवर्दगारे आलम[79] वोह जिस

خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا

ने मुझे पैदा किया[80] तो वोह मुझे राह देगा[81] और वोह जो मुझे खिलाता और पिलाता है[82] और जब

चल पड़े जो उन के लिये दरिया में ब क़ुदरते इलाही पैदा हुए थे। **68 :** दरिया से सलामत निकाल कर **69 :** या'नी फ़िरऔन और उस की क़ौम को, इस तरह कि जब बनी इसराईल कुल के कुल दरिया से बाहर हो गए और तमाम फ़िरऔनी दरिया के अन्दर आ गए तो दरिया ब हुक्मे इलाही मिल गया और मिस्ले साबिक़ हो गया और फ़िरऔन मअ़ अपनी क़ौम के डूब गया। **70 :** अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत पर और हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है। **71 :** या'नी अहले मिस्र में सिर्फ़ आसिया फ़िरऔन की बीबी और हिज़्क़ील जिन को मोमिन आले फ़िरऔन कहते हैं वोह अपना ईमान छुपाए रहते थे और फ़िरऔन के चचाज़ाद थे और मरयम जिस ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ब्र का निशान बताया था जब कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के ताबूत को दरिया से निकाला। **72 :** कि उस ने काफ़िरों को ग़र्क़ कर के उन से इन्तिक़ाम लिया। **73 :** मोमिनीन पर जिन्हें ग़र्क़ से नजात दी **74 :** या'नी मुश्रिकीन पर **75 :** हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जानते थे कि वोह लोग बुत परस्त हैं बा वुजूद इस के आप का सुवाल फ़रमाना इस लिये था ताकि उन्हें दिखा दें कि जिन चीज़ों को वोह लोग पूजते हैं वोह किसी तरह इस के मुस्तहिक़ नहीं। **76 :** जब येह कुछ नहीं तो इन्हें तुम ने मा'बूद किस तरह क़रार दिया **77 :** कि न येह इल्म रखते हैं न क़ुदरत न कुछ सुनते हैं न कोई नफ़्अ़ या ज़रर पहुंचा सकते हैं। **78 :** मैं उन का पूजा जाना गवारा नहीं कर सकता। **79 :** मेरा रब है, मेरा कारसाज़ है, मैं उस की इबादत करता हूं, वोह मुस्तहिक़्क़े इबादत है, उस के औसाफ़ येह हैं **80 :** नेस्त से हस्त (अ़दम से वुजूद अ़ता) फ़रमाया और अपनी ताअ़त के लिये बनाया **81 :** आदाबे ख़ुल्लत की जैसी कि साबिक़ में हिदायत फ़रमा चुका है मसालेहे दुन्या व दीन की **82 :** और मेरा रोज़ी देने वाला है।

مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْٓ

मैं बीमार होउं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है[83] और वोह मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा[84] और वोह जिस

اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ

की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा[85] ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अ़ता कर[86] और

اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾

मुझे उन से मिला दे जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं[87] और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में[88]

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

और मुझे उन में कर जो चैन के बाग़ों के वारिस हैं[89] और मेरे बाप को बख़्श दे[90] बेशक वोह

الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا

गुमराह है और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे[91] जिस दिन न माल काम आएगा न

بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर[92] और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के लिये[93]

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾ مِنْ

और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिये और उन से कहा जाएगा[94] कहां हैं वोह जिन को तुम पूजते थे **अल्लाह**

دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

के सिवा क्या वोह तुम्हारी मदद करेंगे[95] या बदला लेंगे तो औंधा दिये गए जहन्नम में वोह और सब गुमराह[96]

83 : मेरे अमराज़ दूर करता है। इब्ने अ़ता ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब मैं ख़ल्क़ की दीद से बीमार होता हूं तो मुशाहदए हक़ से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है। 84 : मौत और हयात उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। 85 : अम्बिया मा'सूम हैं गुनाह उन से सादिर नहीं होते, उन का इस्तिग़फ़ार अपने रब के हुज़ूर तवाज़ोअ़ है और उम्मत के लिये त़लबे मग़्फ़िरत की ता'लीम है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इन सिफ़ाते इलाहिय्यह को बयान करना अपनी क़ौम पर इक़ामते हुज्जत है कि मा'बूद वोही हो सकता है जिस की येह सिफ़ात हों। 86 : "हुक्म" से या इल्म मुराद है या हिक्मत या नुबुव्वत। 87 : या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام, और आप की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ" 88 : या'नी उन उम्मतों में जो मेरे बा'द आईं। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने उन को येह अ़ता फ़रमाया कि तमाम अहले अद्यान उन से महब्बत रखते हैं और उन की सना करते हैं। 89 : जिन्हें तू जन्नत अ़ता फ़रमाएगा 90 : तौबा व ईमान अ़ता फ़रमा कर। और येह दुआ़ आप ने इस लिये फ़रमाई कि वक़्ते मुफ़ारक़त आप के वालिद ने आप से ईमान लाने का वा'दा किया था, जब ज़ाहिर हो गया कि वोह ख़ुदा का दुश्मन है उस का वा'दा झूटा था तो आप उस से बेज़ार हो गए जैसा कि सूरए बराअत में है : "وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَا اِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ" । 91 : या'नी रोज़े क़ियामत 92 : जो शिर्क, कुफ़्र व निफ़ाक़ से पाक हो, उस को उस का माल भी नफ़्अ़ देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह़ हो। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है उस के अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाते हैं सिवा तीन के, **एक** सदक़ए जारिया। **दूसरा** वोह माल जिस से लोग नफ़्अ़ उठाएं। **तीसरी** नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करे। 93 : कि उस को देखेंगे 94 : ब त़रीक़ ज़ज्रो तौबीख़ के उन के शिर्क व कुफ़्र पर 95 : अ़ज़ाबे

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾ تَاللّٰهِ

और इब्लीस के लश्कर सारे[97] कहेंगे और वोह उस में बाहम झगड़ते होंगे ख़ुदा की क़सम

اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ

बेशक हम खुली गुमराही में थे जब कि तुम्हें रब्बुल आ़लमीन के बराबर ठहराते थे और हमें न बहकाया

اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ

मगर मुजरिमों ने[98] तो अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं[99] और न कोई ग़म ख़्वार दोस्त[100] तो

اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ

किसी त़रह़ हमें फिर जाना होता[101] कि हम मुसल्मान होते बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में

اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ

बहुत ईमान वाले न थे और बेशक तुम्हारा रब वोही इ़ज़्ज़त वाला मेह्रबान है नूह़ की

قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾

क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया[102] जब कि उन से उन के हमक़ौम नूह़ ने कहा क्या तुम डरते नहीं[103]

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَاۤ اَسْــَٔلُكُمْ

बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का भेजा हुवा अमीन हूं[104] तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो[105] और मैं इस पर

عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ

तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है तो **अल्लाह** से डरो और

इलाही से बचा कर **96 :** या'नी बुत और उन के पुजारी सब औंधे कर के जहन्नम में डाल दिये जाएंगे। **97 :** या'नी उस के इत्तिबाअ़ करने वाले जिन्न हों या इन्सान। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्लीस के लश्करों से उस की ज़ुर्रिय्यत मुराद है। **98 :** जिन्हों ने बुत परस्ती की दा'वत दी या वोह पहले लोग जिन का हम ने इत्तिबाअ़ किया या इब्लीस और उस की ज़ुर्रिय्यत ने **99 :** जैसे कि मोमिनीन के लिये अम्बिया और औलिया और मलाएका और मोमिनीन शफ़ाअ़त करने वाले हैं। **100 :** जो काम आए। येह बात कुफ़्फ़ार उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे कि अम्बिया और औलिया और मलाएका और सालिह़ीन ईमानदारों की शफ़ाअ़त कर रहे हैं और उन की दोस्तियां काम आ रही हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि जन्नती कहेगा : मेरे फुलां दोस्त का क्या ह़ाल है और वोह दोस्त गुनाहों की वज्ह से जहन्नम में होगा, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि इस के दोस्त को निकालो और जन्नत में दाख़िल करो। तो जो लोग जहन्नम में बाक़ी रह जाएंगे वोह येह कहेंगे कि हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं है और न कोई ग़म ख़्वार दोस्त। ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्यूं कि वोह रोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त करेंगे। **101 :** दुन्या में **102 :** या'नी नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब तमाम पैग़म्बरों की तक्ज़ीब है क्यूं कि दीन तमाम रसूलों का एक है और हर एक नबी लोगों को तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देते हैं। **103 :** **अल्लाह** तआ़ला से, कुफ़्रो मआ़सी तर्क करो। **104 :** उस की वह़्य व रिसालत की तब्लीग़ पर। और आप की अमानत आप की क़ौम को मुसल्लम थी जैसे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अमानत पर अ़रब को इत्तिफ़ाक़ था। **105 :** जो मैं तौह़ीद व ईमान व त़ाअ़ते इलाही के मुतअ़ल्लिक़ देता हूं।

أَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا

मेरा हुक्म मानो बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आएं और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं[106] फ़रमाया मुझे

عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

क्या ख़बर उन के काम क्या हैं[107] उन का हिसाब तो मेरे रब ही पर है[108] अगर तुम्हें हिस (शुऊ़र) हो[109]

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَئِنْ

और मैं मुसल्मानों को दूर करने वाला नहीं[110] मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला[111] बोले ऐ नूह

لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي

अगर तुम बाज़ न आए[112] तो ज़रूर संगसार किये जाओगे[113] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क़ौम

كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ

ने मुझे झुटलाया[114] तो मुझ में और उन में पूरा फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसल्मानों को

الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا

नजात दे[115] तो हम ने बचा लिया उसे और उस के साथ वालों को भरी हुई किश्ती में[116] फिर इस के बा'द[117]

بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

हम ने बाक़ियों को डुबो दिया बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में अक्सर मुसल्मान न थे

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ

और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है आ़द ने रसूलों को झुटलाया[118] जब कि

النصف

106 : येह बात उन्हों ने ग़ुरूर से कही, ग़ुरबा के पास बैठना उन्हें गवारा न था, इस में वोह अपनी कस्रे शान (बे इ़ज़्ज़ती) समझते थे, इस लिये ईमान जैसी ने'मत से मह़रूम रहे। कमीने से मुराद उन की ग़ुरबा और पेशावर लोग थे और उन को रज़ील और कमीन कहना येह कुफ़्फ़ार का मुतकब्बिराना फ़े'ल था, वरना दर ह़क़ीक़त सन्अ़त और पेशा ह़ैसिय्यते दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता। ग़ना अस्ल में दीनी ग़ना है और नसब तक़्वा का नसब। **मस्अला :** मोमिन को रज़ील कहना जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह कितना ही मोह़ताज व नादार हो या वोह किसी नसब का हो। (مدارک) **107 :** वोह क्या पेशे करते हैं मुझे इस से क्या मत़लब, मैं उन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ दा'वत देता हूं। **108 :** वोही उन्हें जज़ा देगा। **109 :** तो न तुम उन्हें ऐ़ब लगाओ न पेशों के बाइ़स उन से आ़र करो। फिर क़ौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आप के पास आएं और आप की बात मानें, इस के जवाब में फ़रमाया **110 :** येह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी ऐसी ख़्वाहिशों को पूरा करूं और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसल्मानों को अपने पास से निकाल दूं। **111 :** बुरहाने सह़ीह़ के साथ जिस से ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ हो जाए तो जो ईमान लाए वोही मेरा मुक़र्रब है और जो ईमान न लाए वोही दूर। **112 :** दा'वत व इन्ज़ार से **113 :** ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में **114 :** तेरी वह़्य व रिसालत में, मुराद आप की येह थी कि मैं जो उन के ह़क़ में बद दुआ़ करता हूं उस का सबब येह नहीं कि उन्हों ने मुझे संगसार करने की धम्की दी, न येह कि उन्हों ने मेरे मुत्तबिईन को रज़ील कहा, बल्कि मेरी दुआ़ का सबब येह है कि उन्हों ने तेरे कलाम को झुटलाया और तेरी रिसालत को क़बूल करने से इन्कार किया **115 :** उन लोगों की शामते आ'माल से **116 :** जो आदमियों, परिन्दों और ह़ैवानों से भरी हुई थी। **117 :** या'नी ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथियों को नजात देने के बा'द **118 :** आ़द एक

قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿۱۲۵﴾

उन से उन के हमक़ौम हूद ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का अमानत दार रसूल हूं

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۱۲۶﴾ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ

तो **अल्लाह** से डरो[119] और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से इस पर कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۷﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ تَتَّخِذُوْنَ

उसी पर है जो सारे जहान का रब क्या हर बुलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को[120] और मज़्बूत़ मह़ल

مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ وَ اِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاتَّقُوا

चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे[121] और जब किसी पर गिरिफ़्त हो तो बड़ी बे दर्दी से गिरिफ़्त करते हो[122] तो **अल्लाह** से

اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۱۳۱﴾ وَ اتَّقُوا الَّذِیْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمَدَّكُمْ

डरो और मेरा हुक्म मानो और उस से डरो जिस ने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मा'लूम हैं[123] तुम्हारी मदद की

بِاَنْعَامٍ وَّ بَنِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿۱۳۴﴾ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ

चौपायों और बेटों और बाग़ों और चश्मों से बेशक मुझे तुम पर डर है

یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳۵﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِیْنَ ﴿۱۳۶﴾

एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का[124] बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीह़त करो या नासिह़ों में न हो[125]

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ﴿۱۳۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ

येह तो नहीं मगर वोही अगलों की रीत (रस्मो रवाज)[126] और हमें अ़ज़ाब होना नहीं[127] तो उन्हों ने उसे झुटलाया[128]

فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ وَ

तो हम ने उन्हें हलाक किया[129] बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और

क़बीला है और दर अस्ल येह एक शख़्स का नाम है जिस की औलाद से येह क़बीला है। **119 :** और मेरी तक्ज़ीब न करो **120 :** कि उस पर चढ़ कर गुज़रने वालों से तमस्ख़ुर करो और येह उस क़ौम का मा'मूल था, उन्हों ने सरे राह बुलन्द बिनाएं बना ली थीं वहां बैठ कर राह चलने वालों को परेशान करते और खेल करते। **121 :** और कभी न मरोगे **122 :** तलवार से क़त्ल कर के दुर्रे मार कर निहायत बे रह़्मी से **123 :** या'नी वोह ने'मतें जिन्हें तुम जानते हो, आगे उन का बयान फ़रमाया जाता है। **124 :** अगर तुम मेरी ना फ़रमानी करो। इस का जवाब उन की त़रफ़ से येह हुवा कि **125 :** हम किसी त़रह़ तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दा'वत क़बूल न करेंगे। **126 :** या'नी जिन चीज़ों का आप ने ख़ौफ़ दिलाया येह पहलों का दस्तूर है वोह भी ऐसी ही बातें कहा करते थे। इस से उन की मुराद येह थी कि हम इन बातों का ए'तिबार नहीं करते, इन्हें झूट जानते हैं। या आयत के मा'ना येह हैं कि येह मौत व ह़यात और इमारतें बनाना पहलों का त़रीक़ा है। **127 :** दुन्या में न मरने के बा'द उठना न आख़िरत में ह़िसाब **128 :** या'नी हूद عَلَيْهِ السَّلَام को **129 :** हवा के अ़ज़ाब से।

إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ

बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है समूद ने रसूलों को झुटलाया जब कि

قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

उन से उन के हमक़ौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ

तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से कुछ इस पर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي

उसी पर है जो सारे जहान का रब है क्या तुम यहां की[130] ने'मतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे[131]

جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ

बाग़ों और चश्मों और खेतों और खजूरों में जिन का शिगूफ़ा नर्म नाज़ुक और पहाड़ों

الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ

में से घर तराशते हो उस्तादी से[132] तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और हद से बढ़ने वालों के कहने पर

الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوا

न चलो[133] वोह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[134] और बनाव नहीं करते[135] बोले

إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ

तुम पर तो जादू हुवा है[136] तुम तो हमीं जैसे आदमी हो तो कोई निशानी लाओ[137] अगर

كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ

सच्चे हो[138] फ़रमाया येह नाक़ा है एक दिन इस के पीने की बारी[139] और एक मुअय्यन दिन

130 : या'नी दुन्या की 131 : कि येह ने'मतें कभी ज़ाइल न हों और कभी अ़ज़ाब न आए कभी मौत न आए, आगे उन की ने'मतों का बयान है। 132 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि فَرِهِ ब मा'ना फ़ख़्रो ग़ुरूर है। मा'ना येह हुए कि अपनी सन्अ़त पर ग़ुरूर करते इतराते। 133 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "مسرفين" से मुराद मुश्रिकीन हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि "مسرفين" से मुराद वोह नव शख़्स हैं जिन्हों ने नाक़ा को क़त्ल किया था। 134 : कुफ़्रो ज़ुल्म और मआ़सी के साथ 135 : ईमान ला कर और अ़द्ल क़ाइम कर के और अल्लाह के मुतीअ़ हो कर। मा'ना येह हैं कि इन का फ़साद ठोस है जिस में किसी त़रह़ नेकी का शाएबा भी नहीं और बा'ज़ मुफ़्सिदीन ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं कुछ नेकी भी उन में होती है मगर येह ऐसे नहीं। 136 : या'नी बार बार ब कसरत जादू हुवा है जिस की वज्ह से अ़क़्ल बजा नहीं रही (مَعَاذَ اللّٰه) 137 : अपनी सच्चाई की 138 : रिसालत के दा'वे में। 139 : इस में इस से मुज़ाह़मत न करो, येह एक ऊंटनी थी जो उन के मो'जिज़ा त़लब करने पर उन के ह़स्बे ख़्वाहिशे ब दुआ़ए ह़ज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام पथ्थर से निकली थी, उस का सीना साठ गज़ का था, जब उस के पीने का दिन होता तो वोह वहां का तमाम पानी पी जाती और

مَّعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾

तुम्हारी बारी और इसे बुराई के साथ न छूओ[140] कि तुम्हें बड़े दिन का अ़ज़ाब आ लेगा[141]

فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نٰدِمِينَ ﴿١٥٧﴾ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

इस पर उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं[142] फिर सुब्ह़ को पचताते रह गए[143] तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ लिया[144] बेशक इस में ज़रूर निशानी है

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾

ع ٨ / ١٩ / ١٢

और उन में बहुत मुसल्मान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا

लूत़ की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया जब कि उन से उन के हमक़ौम लूत़ ने फ़रमाया क्या

تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾ وَ

तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और

مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٦٤﴾

मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِينَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ

क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फ़े'ली करते हो[145] और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने

مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُونَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوطُ

जोरूएं (बीवियां) बनाईं बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो[146] बोले ऐ लूत़ अगर तुम बाज़ न आए[147]

لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ

तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे[148] फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूं[149] ऐ मेरे रब

जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती। (مدارک) **140 :** न इस को मारो न इस की कूंचें काटो। **141 :** नुज़ूले अ़ज़ाब की वज्ह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि वोह अ़ज़ाब इस क़दर अ़ज़ीम और सख़्त था कि जिस दिन में वोह वाक़ेअ़ हुवा उस को उस की वज्ह से बड़ा फ़रमाया गया। **142 :** कूंचें काटने वाले शख़्स का नाम क़ुदार था और वोह लोग उस के इस फ़े'ल से राज़ी थे, इस लिये कूंचें काटने की निस्बत उन सब की त़रफ़ की गई। **143 :** कूंचें काटने पर नुज़ूले अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से, न कि मा'सियत पर ताइबाना नादिम हुए हों, या येह बात कि आसारे अ़ज़ाब देख कर नादिम हुए, ऐसे वक़्त की नदामत नाफ़ेअ़ नहीं। **144 :** जिस की उन्हें ख़बर दी गई थी तो हलाक हो गए। **145 :** इस के येह मा'ना भी हो सकते हैं कि क्या मख़्लूक़ में ऐसे क़बीह़ और ज़लील फ़े'ल के लिये तुम्हीं रह गए हो, जहां के और लोग भी तो हैं उन्हें देख कर तुम्हें शरमाना चाहिये। और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि ब कसरत औ़रतें होते हुए इस फ़े'ले क़बीह़ का मुरतकिब होना इन्तिहा दरजे की ख़बासत है। **146 :** कि ह़लाल त़य्यिब को छोड़ कर ह़राम ख़बीस में मुब्तला होते हो। **147 :** नसीह़त करने और इस फ़े'ल को बुरा कहने से **148 :** शहर से और तुम्हें यहां न रहने दिया जाएगा। **149 :** और मुझे इस से निहायत दुश्मनी है, फिर आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की।

نَجِّنِيْ وَ اَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا

मुझे और मेरे घर वालों को इन के काम से बचा[150] तो हम ने उसे और उस के सब घर वालों को नजात बख़्शी[151] मगर एक बुढ़िया

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ

कि पीछे रह गई[152] फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया[153] तो क्या ही बुरा

مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

बरसाव था डराए गयों का बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ

न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है बन (जंगल)

لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّيْ لَكُمْ

वालों ने रसूलों को झुटलाया[154] जब उन से शुऐब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾ وَ مَاۤ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ

अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं इस पर कुछ तुम से उजरत

اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ لَا تَكُوْنُوْا

नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है[155] नाप पूरा करो और घटाने

مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَ زِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

वालों में न हो[156] और सीधी तराज़ू से तोलो और लोगों की चीज़ें कम कर के

اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَ اتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो[157] और उस से डरो जिस ने तुम को पैदा किया

150 : इस की शामते आ'माल से महफ़ूज़ रख। 151 : या'नी आप की बेटियों को और उन तमाम लोगों को जो आप पर ईमान लाए। 152 : जो आप की बीबी थी और वोह अपनी क़ौम के फ़े'ल पर राज़ी थी और जो मा'सियत पर राज़ी हो वोह आ़सी के हुक्म में होता है, इसी लिये वोह बुढ़िया गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब हुई और उस ने नजात न पाई। 153 : पथ्थरों का या गन्धक और आग का 154 : येह बन (जंगल) मद्यन के क़रीब था, इस में बहुत से दरख़्त और झाड़ियां थीं अल्लाह तआ़ला ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को उन की तरफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया था जैसा कि अह्ले मद्यन की तरफ़ मब्ऊ़स किया था और येह लोग हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के न थे। 155 : उन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की दा'वत का येही उन्वान रहा क्यूं कि वोह सब हज़रात अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और उस की इताअ़त और इख़्लास फ़िल इ़बादत का हुक्म देते और तब्लीग़े रिसालत पर कोई अज्र नहीं लेते थे। लिहाज़ा सब ने येही फ़रमाया। 156 : लोगों के हुक़ूक़ कम न करो नाप और तोल में 157 : रहज़नी और लूटमार कर के और खेतियां तबाह कर के, येही उन लोगों की आ़दतें थीं। हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इन से मन्अ़ फ़रमाया।

وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَاۤ اَنْتَ

और अगली मख़्लूक़ को बोले तुम पर जादू हुवा है तुम तो नहीं

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا

मगर हम जैसे आदमी[158] और बेशक हम तुम्हें झूटा समझते हैं तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा

مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾

गिरा दो अगर तुम सच्चे हो[159] फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) हैं[160]

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ लिया बेशक वोह बड़े दिन का अ़ज़ाब था[161]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ

बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩١﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ

इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है और बेशक येह क़ुरआन रब्बुल आ़लमीन का उतारा हुवा है इसे रूहुल अमीन ले

الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

कर उतरा[162] तुम्हारे दिल पर[163] कि तुम डर सुनाओ रोशन अ़रबी

مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ

ज़बान में और बेशक इस का चरचा अगली किताबों में है[164] और क्या येह उन के लिये निशानी न थी[165] कि उस

158 : नुबुव्वत का इन्कार करने वाले अम्बिया की निस्बत बिल उ़मूम येही कहा करते थे। जैसा कि आज कल के बा'ज़े फ़ासिदुल अ़क़ीदा कहते हैं। **159 :** नुबुव्वत के दा'वे में। **160 :** और जिस अ़ज़ाब के तुम मुस्तहिक़ हो, वोह जो अ़ज़ाब चाहेगा तुम पर नाज़िल फ़रमाएगा। **161 :** जो कि इस तरह हुवा कि उन्हें शदीद गरमी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात रोज़ गरमी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार रहे, तहख़ानों में जाते वहां और ज़ियादा गरमी पाते। इस के बा'द एक अब्र आया सब उस के नीचे आ के जम्अ़ हो गए, उस से आग बरसी और सब जल गए। (इस वाक़िए का बयान सूरए आ'राफ़ और सूरए हूद में गुज़र चुका है)। **162 :** रूहुल अमीन से ह़ज़रते जिब्रील मुराद हैं जो वह्य के अमीन हैं। **163 :** ताकि आप उसे मह़फ़ूज़ रखें और समझें और न भूलें। दिल की तख़्सीस इस लिये है कि दर ह़क़ीक़त वोही मुख़ातब है और तमीज़ व अ़क़्ल व इख़्तियार का मक़ाम भी वोही है, तमाम आ'ज़ा उस के मुसख़्ख़र व मुतीअ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरुस्त होने से तमाम बदन दुरुस्त हो जाता है और इस के ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब। और फ़रह़ व सुरूर व रन्जो ग़म का मक़ाम दिल ही है, जब दिल को ख़ुशी होती है तमाम आ'ज़ा पर इस का असर पड़ता है, तो वोह मिस्ल रईस के है, वोही मौज़अ़ है अ़क़्ल का, तो अमीरे मुत़्लक़ हुवा और तक्लीफ़ जो अ़क़्ल व फ़ह्म के साथ मश्रूत़ है इसी की त़रफ़ राजेअ़ हुई। **164 :** "اِنَّهٗ" की ज़मीर का मरजअ़ अगर क़ुरआन हो तो इस के मा'ना येह होंगे कि इस का ज़िक्र तमाम कुतुबे समाविया में है और अगर सय्यिदे आ़लम صلى الله عليه وسلم की त़रफ़ ज़मीर राजेअ़ हो तो मा'ना येह होंगे कि अगली किताबों में आप की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है। **165 :** सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم के सिद्क़े नुबुव्वत व रिसालत पर।

يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾

नबी को जानते हैं बनी इसराईल के आ़लिम[166] और अगर हम उसे किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर उतारते

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

कि वोह उन्हें पढ़ सुनाता जब भी उस पर ईमान न लाते[167] हम ने यूंही झुटलाना पैरा दिया (पैवस्त कर दिया) है मुजरिमों के

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَاْتِيَهُمْ

दिलों में[168] वोह इस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि देखें दर्दनाक अ़ज़ाब तो वोह अचानक उन पर

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ اَفَبِعَذَابِنَا

आ जाएगा और उन्हें ख़बर न होगी तो कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी[169] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की

يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا

जल्दी करते हैं भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरत्ने दें[170] फिर आए उन पर वोह जिस का वोह वा'दा

يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ

दिये जाते हैं[171] तो क्या काम आएगा उन के वोह जो बरत्ते थे[172] और हम ने कोई बस्ती हलाक

قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا

न की जिसे डर सुनाने वाले न हों नसीहत के लिये और हम ज़ुल्म नहीं करते[173] और इस

166 : अपनी किताबों से, और लोगों को ख़बरें देते हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने यहूदे मदीना के पास अपने मो'तमिदीन को येह दरयाफ़्त करने भेजा कि क्या नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत उन की किताबों में कोई ख़बर है ? इस का जवाब उ़लमाए यहूद ने येह दिया कि येही उन का ज़माना है और उन की ना'त व सिफ़त तौरैत में मौजूद है। उ़लमाए यहूद में से हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम और इब्ने यामीन और सा'लबा और असद और उसैद येह हज़रात जिन्हों ने तौरैत में हुज़ूर के औसाफ़ पढ़े थे हुज़ूर पर ईमान लाए। **167 :** मा'ना येह हैं कि हम ने येह क़ुरआने करीम एक फ़सीह़ बलीग़ अ़रबी नबी पर उतारा जिस की फ़साहत अहले अ़रब को मुसल्लम है और वोह जानते हैं कि क़ुरआने करीम मो'जिज़ है और इस की मिस्ल एक सूरत बनाने से भी तमाम दुन्या आ़जिज़ है, इलावा बरीं उ़लमाए अहले किताब का इत्तिफ़ाक़ है कि इस के नुज़ूल से क़ब्ल इस के नाज़िल होने की बिशारत और इस नबी की सिफ़त उन की किताबों में उन्हें मिल चुकी है, इस से क़त्ई तौर पर साबित होता है कि येह "नबी" **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और येह किताब उस की नाज़िल फ़रमाई हुई है, और कुफ़्फ़ार जो त़रह त़रह की बेहूदा बातें इस किताब के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं सब बातिल हैं और ख़ुद कुफ़्फ़ार भी मुतहय्यिर (हैरान) हैं कि इस के ख़िलाफ़ क्या बात कहें। इस लिये कभी इस को पहलों की दास्तानें कहते हैं, कभी शे'र कभी सेह़र और कभी येह कि مَعَاذَ اللّٰہ इस को ख़ुद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बना लिया है और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ इस की ग़लत़ निस्बत कर दी है। इस त़रह के बेहूदा ए'तिराज़ मुआ़निद (ह़ासिद) हर ह़ाल में कर सकता है, ह़त्ता कि अगर बिलफ़र्ज़ येह क़ुरआन किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर नाज़िल किया जाता जो अ़रबी की महारत न रखता और बा वुजूद इस के वोह ऐसा मो'जिज़ क़ुरआन पढ़ कर सुनाता, जब भी येह लोग इसी त़रह कुफ़्र करते जिस त़रह उन्हों ने अब कुफ़्र व इन्कार किया क्यूं कि उन के कुफ़्र व इन्कार का बाइ़स इनाद है। **168 :** या'नी उन काफ़िरों के जिन का कुफ़्र इख़्तियार करना और इस पर मुसिर रहना हमारे इ़ल्म में है, तो उन के लिये हिदायत का कोई भी त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए किसी ह़ाल में वोह कुफ़्र से पलटने वाले नहीं। **169 :** ताकि हम ईमान लाएं और तस्दीक़ करें। लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार को उस अ़ज़ाब की ख़बर दी तो बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा कहने लगे कि येह अ़ज़ाब कब आएगा ? इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : **170 :** और फ़ौरन हलाक न कर दें **171 :** या'नी अ़ज़ाबे इलाही **172 :** या'नी दुन्या की ज़िन्दगानी और इस का ऐश ख़्वाह त़वील भी हो लेकिन न वोह अ़ज़ाब को दफ़्अ़ कर सकेगा न उस की शिद्दत कम कर सकेगा। **173 :** पहले

تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ اِنَّهُمْ عَنِ

कुरआन को ले कर शैतान न उतरे[174] और वोह इस क़ाबिल नहीं[175] और न वोह ऐसा कर सकते हैं[176] वोह तो

السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ

सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं[177] तो तू अल्लाह के सिवा दूसरा ख़ुदा न पूज कि तुझ पर

الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ

अ़ज़ाब होगा और ऐ महबूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ[178] और अपनी रहमत का बाज़ू बिछाओ[179]

لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١٥﴾ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

अपने पैरव (ताबेअ़) मुसल्मानों के लिये[180] तो अगर वोह तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे कामों से

تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ

बे अ़लाक़ा (ला तअ़ल्लुक़) हूं और उस पर भरोसा करो जो इ़ज़्ज़त वाला मेहर वाला है[181] जो तुम्हें देखता है जब

تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ

तुम खड़े होते हो[182] और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को[183] बेशक वोही सुनता जानता है[184] क्या

اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾

मैं तुम्हें बता दूं कि किस पर उतरते हैं शैतान उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनाहगार पर[185]

हुज्जत क़ाइम कर देते हैं, डर सुनाने वालों को भेज देते हैं। इस के बा'द भी जो लोग राह पर नहीं आते और ह़क़ को क़बूल नहीं करते उन पर अ़ज़ाब करते हैं। **174 :** इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो कहते थे कि जिस त़रह़ शयात़ीन काहिनों के पास आस्मानी ख़बरें लाते हैं इसी त़रह़ مَعَاذَاللّٰہ ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास कुरआन लाते हैं। इस आयत में उन के इस ख़याल को बात़िल कर दिया कि येह ग़लत़ है। **175 :** कि कुरआन लाएं **176 :** क्यूं कि येह उन के मक़्दूर (बस) से बाहर है। **177 :** या'नी अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات की त़रफ़ जो वह्य होती है उस को अल्लाह तआ़ला ने मह़फ़ूज़ कर दिया, जब तक कि फ़िरिश्ता उस को बारगाहे रिसालत में पहुंचाए इस से पहले शयात़ीन उस को नहीं सुन सकते। इस के बा'द अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से फ़रमाता है : **178 :** हुज़ूर के क़रीब के रिश्तेदार बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन्हें ए'लान के साथ इन्ज़ार फ़रमाया और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि अह़ादीसे सह़ीह़ा में वारिद है। **179 :** या'नी लुत़्फ़ो करम फ़रमाओ। **180 :** जो सिद्क़ो इख़्लास से आप पर ईमान लाएं ख़्वाह वोह आप से क़राबत रखते हों या न रखते हों। **181 :** या'नी अल्लाह तआ़ला, तुम अपने तमाम काम उस को तफ़्वीज़ करो (या'नी अल्लाह तआ़ला को सोंप दो)। **182 :** नमाज़ के लिये या दुआ़ के लिये या हर उस मक़ाम पर जहां तुम हो। **183 :** जब तुम अपने तहज्जुद पढ़ने वाले अस्ह़ाब के अह़वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाने के लिये शब को दौरा करते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब तुम इमाम हो कर नमाज़ पढ़ाते हो और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद व कुऊ़द में गुज़रते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि वोह आप की गर्दिशे चश्म को देखता है नमाज़ों में, क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पसो पेश (आगे, पीछे) यक्सां मुलाह़ज़ा फ़रमाते थे। और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़दीस में है बख़ुदा मुझ पर तुम्हारा ख़ुशूअ़ व रुकूअ़ मख़्फ़ी नहीं, मैं तुम्हें अपने पसे पुश्त देखता हूं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में साजिदीन से मोमिनीन मुराद हैं और मा'ना येह हैं कि ज़मानए ह़ज़रते आदम व ह़व्वा عَلَیْہِمَا السَّلَام से ले कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह व आमिना ख़ातून तक मोमिनीन की अस्लाब व अरह़ाम में आप के दौरे को मुलाह़ज़ा फ़रमाता है। इस से साबित हुवा कि आप के तमाम उसूल आबाओ अज्दाद ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام तक सब के सब मोमिन हैं। (مدارک وجمل وغیرہ) **184 :** तुम्हारे क़ौल व अ़मल और तुम्हारी निय्यत को।

يُلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾

शैतान अपनी सुनी हुई[186] उन पर डालते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं[187] और शाइरों की पैरवी गुमराह करते हैं[188]

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِیْ كُلِّ وَادٍ یَّهِیْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ وَاَنَّهُمْ یَقُوْلُوْنَ مَا لَا یَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾

क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं[189] और वोह कहते हैं जो नहीं करते[190]

اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ

मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[191] और ब कसरत **अल्लाह** की याद की[192] और बदला लिया[193] बा'द

بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾ ع

इस के कि उन पर ज़ुल्म हुवा[194] और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम[195] कि किस करवट पर पलटा खाएंगे[196]

اٰیَاتُهَا ٩٣ ٢٧ سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّیَّةٌ ٤٨ رُكُوْعَاتُهَا ٧

सूरए नम्ल मक्कियया है, इस में तिरानवे आयतें और सात रुकूअ़ हैं

इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला उन मुश्रिकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर शैतान उतरते हैं, येह इर्शाद फ़रमाता है : **185 :** मिस्ल मुसैलमा वग़ैरा काहिनों के। **186 :** जो उन्हों ने मलाएका से सुनी होती है। **187 :** क्यूं कि वोह फ़िरिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी तरफ़ से बहुत झूट मिला देते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक बात सुनते हैं तो सो झूट उस के साथ मिलाते हैं और येह भी उस वक़्त तक था जब तक कि वोह आस्मान पर पहुंचने से रोके न गए थे। **188 :** उन के अश्आर में कि उन को पढ़ते हैं रवाज देते हैं बा वुजूदे कि वोह अश्आर किज़्ब व बातिल होते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत शुअ़राए कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज्व में शे'र कहते थे और कहते थे कि जैसा मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं और उन की क़ौम के गुमराह लोग उन से उन अश्आर को नक़्ल करते थे, उन लोगों की आयत में मज़म्मत फ़रमाई गई। **189 :** और हर त़रह़ की झूटी बातें बनाते हैं और हर लग़्व व बातिल में सुख़न आराई करते हैं, झूटी मद्ह़ करते हैं, झूटी हज्व करते हैं। **190 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि शे'र से पुर हो। मुसल्मान शुअ़रा जो इस त़रीक़े से इज्तिनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तस्ना किये गए। **191 :** इस में शुअ़राए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया, वोह हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त लिखते हैं, **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द लिखते हैं, इस्लाम की मद्ह़ लिखते हैं, पन्दो नसाएह़ लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिदे नबवी में ह़ज़रते ह़स्सान के लिये मिम्बर बिछाया जाता था, वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुफ़ाख़र पढ़ते (फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते) थे और कुफ़्फ़ार की बद गोइयों का जवाब देते थे और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के हक़ में दुआ़ फ़रमाते थे। बुख़ारी की ह़दीस में है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बा'ज़ शे'र ह़िक्मत होते हैं। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस मुबारक में अक्सर शे'र पढ़े जाते थे जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समुरह से मरवी है। ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि शे'र कलाम है बा'ज़ अच्छा होता है बा'ज़ बुरा, अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो। शअ़बी ने कहा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ शे'र कहते थे। ह़ज़रते अ़ली उन सब से ज़ियादा शे'र फ़रमाने वाले थे। رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم। **192 :** और शे'र उन के लिये ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब न हो सका, बल्कि उन लोगों ने जब शे'र कहा भी तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना और उस की तौह़ीद और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त और अस्ह़ाबे किराम व सुलह़ाए उम्मत की मद्ह़ और ह़िक्मत व मौइज़त और ज़ोह्दो अदब में। **193 :** कुफ़्फ़ार से उन की हज्व का **194 :** कुफ़्फ़ार की तरफ़ से कि उन्हों ने मुसल्मानों की और उन के पेशवाओं की हज्व की। उन ह़ज़रात ने उस को दफ़्अ़ किया और उस के जवाब दिये, येह मज़्मूम नहीं हैं बल्कि मुस्तह़िक़े अज्रो सवाब हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, येह उन ह़ज़रात का जिहाद है। **195 :** या'नी मुश्रिकीन जिन्हों ने सय्यिदुत्ताहिरीन अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज्व की। **196 :** मौत के बा'द। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया जहन्नम की तरफ़ और वोह बुरा ही ठिकाना है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۱﴾ هُدًى وَّ بُشْرٰى

येह आयतें हैं कुरआन और रोशन किताब की[2] हिदायत और ख़ुश ख़बरी

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ

ईमान वालों को वोह जो नमाज़ बरपा रखते हैं[3] और ज़कात देते हैं[4] और वोह

بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا

आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के

لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَ

कौतक (बुरे आ'माल) उन की निगाह में भले कर दिखाए हैं[5] तो वोह भटक रहे हैं येह वोह हैं जिन के लिये बुरा अ़ज़ाब है[6] और

هُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۵﴾ وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ

येही आख़िरत में सब से बढ़ कर नुक़्सान में[7] और बेशक तुम कुरआन सिखाए जाते हो हिक्मत

حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿۶﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖۤ اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ

वाले इल्म वाले की त़रफ़ से[8] जब कि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा[9] मुझे एक आग नज़र पड़ी है अ़न्क़रीब में तुम्हारे पास

مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۷﴾ فَلَمَّا جَآءَهَا

उस की कोई ख़बर लाता हूं या उस में से कोई चमक्ती चिंगारी लाऊंगा कि तुम तापो[10] फिर जब आग के पास आया

نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَ مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ

निदा की गई कि बरकत दिया गया वोह जो इस आग की जल्वा गाह में है या'नी मूसा और जो इस के आस पास हैं या'नी फ़िरिश्ते[11] और पाकी है अल्लाह को

1 : सूरए नम्ल मक्किय्या है इस में सात 7 रुकूअ़ और तिरानवे 93 आयतें और एक हज़ार तीन सो सतरह 1317 कलिमे और चार हज़ार सात सो निनानवे 4799 हर्फ़ हैं। 2 : जो ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ करती है और जिस में उ़लूमो ह़िकम वदीअ़त रखे गए हैं। 3 : और इस पर मुदावमत करते हैं और इस के शराइत़ व आदाब व जुम्ला हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं 4 : ख़ुशदिली से 5 : कि वोह अपनी बुराइयों को शहवात के सबब से भलाई जानते हैं। 6 : दुन्या में क़त्ल और गिरिफ़्तारी 7 : कि इन का अन्जाम दाइमी अ़ज़ाब है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم को ख़िताब होता है : 8 : इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام का एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जाता है जो दक़ाइक़े इल्म व लत़ाइफ़े ह़िक्मत पर मुश्तमिल है। 9 : मद्यन से मिस्र को सफ़र करते हुए, तारीक रात में, जब कि बर्फ़बारी से निहायत सरदी हो रही थी और रास्ता गुम हो गया था और बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हो गया था। 10 : और सरदी की तक्लीफ़ से अम्न पाओ। 11 : येह ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तह़िय्यत है अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से बरकत के साथ।

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ وَ اَلْقِ عَصَاكَ

जो रब है सारे जहां का ऐ मूसा बात येह है कि मैं ही हूं अल्लाह इ़ज़्ज़त वाला ह़िक्मत वाला और अपना अ़सा डाल दे[12]

فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ يُعَقِّبْ يٰمُوْسٰى

फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा हम ने फ़रमाया ऐ मूसा

لَا تَخَفْ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ

डर नहीं बेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को ख़ौफ़ नहीं होता[13] हां जो कोई ज़ियादती करे[14] फिर बुराई के

حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَ اَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ

बा'द भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं[15] और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल

تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ قَوْمِهٖ

निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐ़ब[16] नव निशानियों में[17] फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की त़रफ़

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

बेशक वोह बे हुक्म लोग हैं फिर जब हमारी निशानियां आंखें खोलती उन के पास आईं[18] बोले येह तो

سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّ عُلُوًّا

सरीह़ जादू है और उन के मुन्किर हुए और उन के दिलों में उन का यक़ीन था[19] ज़ुल्म और तकब्बुर से

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا

तो देखो कैसा अन्जाम हुवा फ़सादियों का[20] और बेशक हम ने दावूद और सुलैमान को बड़ा इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया[21]

وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَ

और दोनों ने कहा सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी[22] और

12 : चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे इलाही अ़सा डाल दिया और वोह सांप हो गया। 13 : न सांप का न किसी और चीज़ का या'नी जब मैं उन्हें अम्न दूं तो फिर क्या अन्देशा। 14 : उस को डर होगा और वोह भी जब तौबा करे 15 : तौबा क़ुबूल फ़रमाता हूं और बख़्श देता हूं। इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को दूसरी निशानी दिखाई गई और फ़रमाया गया 16 : येह निशानी है उन 17 : जिन के साथ रसूल बना कर भेजे गए हो। 18 : या'नी उन्हें मो'जिज़े दिखाए गए। 19 : और वोह जानते थे कि बेशक येह निशानियां अल्लाह की त़रफ़ से हैं लेकिन बा वुजूद इस के अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे। 20 : कि ग़र्क़ कर के हलाक किये गए 21 : या'नी इ़ल्मे क़ज़ा व सियासत। और ह़ज़रते दावूद को पहाड़ों और परिन्दों की तस्बीह़ का इ़ल्म दिया और ह़ज़रते सुलैमान को चौपायों और परिन्दों की बोली का। (خازن) 22 : नुबुव्वत व मुल्क अ़त़ा फ़रमा कर और जिन्न व इन्स और शयात़ीन को मुसख़्ख़र कर के।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا

सुलैमान दावूद का जा नशीन हुवा[23] और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में

مِنْ كُلِّ شَیْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۶﴾ وَحُشِرَ لِسُلَیْمٰنَ

से हम को अ़ता हुवा[24] बेशक येही ज़ाहिर फ़ज़्ल है[25] और जम्अ़ किये गए सुलैमान के लिये

جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّیْرِ فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا

उस के लश्कर जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से तो वोह रोके जाते थे[26] यहां तक कि जब च्यूंटियों

عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ یّٰۤاَیُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا

के नाले पर आए[27] एक च्यूंटी बोली[28] ऐ च्यूंटियों अपने घरों में चली जाओ तुम्हें

یَحْطِمَنَّكُمْ سُلَیْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ

कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में[29] तो उस की बात से मुस्कुरा कर

قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ

हंसा[30] और अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एहसान का जो तू ने[31] मुझ पर और

عَلٰى وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ

मेरे मां बाप पर किये और येह कि मैं वोह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रह़मत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के

23 : नुबुव्वत व इ़ल्म व मुल्क में **24 :** या'नी ब कसरत ने'मतें दुन्या व आख़िरत की हम को अ़ता फ़रमाई गईं। **25 :** मरवी है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को **अल्लाह** तआ़ला ने मशारिक़ व मग़ारिब अर्ज़ का मुल्क अ़ता फ़रमाया, चालीस साल आप इस के मालिक रहे फिर तमाम दुन्या की मम्लुकत अ़ता फ़रमाई। जिन्न, इन्सान, शैत़ान, परिन्द, चौपाए, दरिन्दे सब पर आप की ह़ुकूमत थी और हर एक शै की ज़बान आप को अ़ता फ़रमाई और अ़जीबो ग़रीब सन्अ़तें आप के ज़माने में बरूए कार आईं। **26 :** आगे बढ़ने से, ताकि सब मुज्तमअ़ हो जाएं फिर चलाए जाते थे। **27 :** या'नी त़ाइफ़ या शाम में उस वादी पर गुज़रे जहां च्यूंटियां ब कसरत थीं। **28 :** जो च्यूंटियों की मलिका थी वोह लंगड़ी थी। **लत़ीफ़ा :** जब ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه कूफ़ा में दाख़िल हुए और वहां की ख़ल्क़ आप की गिरवीदा हुई तो आप ने लोगों से कहा : जो चाहो दरयाफ़्त करो। ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उस वक़्त नौ जवान थे, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की च्यूंटी मादा थी या नर? ह़ज़रते क़तादा साकित हो गए, तो इमाम साह़िब ने फ़रमाया कि वोह मादा थी। आप से दरयाफ़्त किया गया कि येह आप को किस त़रह़ मा'लूम हुवा? आप ने फ़रमाया : क़ुरआने करीम में इर्शाद हुवा : ''قَالَتْ نَمْلَةٌ''। अगर नर होती तो क़ुरआन शरीफ़ में ''قَالَ نَمْلَةٌ'' वारिद होता। (سُبْحٰنَ الله इस से ह़ज़रते इमाम की शाने इ़ल्म मा'लूम होती है) ग़रज़ जब उस च्यूंटियों की मलिका ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लश्कर को देखा तो कहने लगी : **29 :** येह उस ने इस लिये कहा कि वोह जानती थी कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं, साह़िबे अ़द्ल हैं, जब्र और ज़ियादती आप की शान नहीं है। इस लिये अगर आप के लश्कर से च्यूंटियां कुचल जाएंगी तो बे ख़बरी ही में कुचल जाएंगी कि वोह गुज़रते हों और इस त़रफ़ इल्तिफ़ात न करें। च्यूंटी की येह बात ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शख़्स का कलाम आप के सम्अ़ मुबारक तक पहुंचाती थी। जब आप च्यूंटियों की वादी पर पहुंचे तो आप ने अपने लश्करों को ठहरने का ह़ुक्म दिया यहां तक कि च्यूंटियां अपने घरों में दाख़िल हो गईं। सैर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अगर्चे हवा पर थी मगर बई़द नहीं है कि येह मक़ाम आप का जाए नुज़ूल हो। **30 :** अम्बिया का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि अह़ादीस में वारिद हुवा है, वोह ह़ज़रात क़ह्क़हा मार कर नहीं हंसते। **31 :** नुबुव्वत व मुल्क व इ़ल्म अ़ता फ़रमा कर।

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَالِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ

सज़ावार हैं[32] और परिन्दों का जाएज़ा लिया तो बोला मुझे क्या हुवा कि मैं हुदहुद को नहीं देखता या वोह

مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ

वाक़ेई हाज़िर नहीं ज़रूर मैं उसे सख़्त अ़ज़ाब करूंगा[33] या ज़ब्ह कर दूंगा या कोई रोशन सनद

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَ

मेरे पास लाए[34] तो हुदहुद कुछ ज़ियादा देर न ठहरा और आ कर[35] अ़र्ज़ की कि मैं वोह बात देख आया हूं जो हुज़ूर ने न देखी और

جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ

मैं शहरे सबा से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं मैं ने एक औ़रत देखी[36] कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ

हर चीज़ में से मिला है[37] और उस का बड़ा तख़्त है[38] मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया कि **अल्लाह** को छोड़ कर

لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

सूरज को सज्दा करते हैं[39] और शैत़ान ने उन के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से

السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ

रोक दिया[40] तो वोह राह नहीं पाते क्यूं नहीं सज्दा करते **अल्लाह** को जो निकालता है

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[41] और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो[42] **अल्लाह** है कि उस के सिवा कोई

اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ

सच्चा मा'बूद नहीं वोह बड़े अ़र्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू

السجدة ٨

32 : हज़राते अम्बिया व औलिया 33 : उस के पर उखाड़ कर या उस को उस के प्यारों से जुदा कर के या उस को उस के अक़्रान का ख़ादिम बना कर या उस को ग़ैर जानवरों के साथ क़ैद कर के। और हुदहुद को हस्बे मस्लहत अ़ज़ाब करना आप के लिये हलाल था और जब परिन्द आप के लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ़) किये गए थे तो तादीब व सियासत मुक़्तज़ाए तस्ख़ीर है। 34 : जिस से उस की मा'ज़ूरी ज़ाहिर हो। 35 : निहायत इज्ज़ व इन्किसार और अदब व तवाज़ोअ़ के साथ मुआ़फ़ी चाह कर 36 : जिस का नाम बिल्क़ीस है 37 : जो बादशाहों के लिये शायान होता है 38 : जिस का तूल अस्सी गज़, अ़र्ज़ चालीस गज़, सोने चांदी का जवाहिरात के साथ मुरस्सअ़ (जड़ा हुवा) 39 : क्यूं कि वोह लोग आफ़्ताब परस्त मजूसी थे। 40 : सीधी राह से मुराद त़रीक़े ह़क़ व दीने इस्लाम है। 41 : आस्मान की छुपी चीज़ों से मींह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से नबातात मुराद हैं। 42 : इस में आफ़्ताब परस्तों बल्कि तमाम बात़िल परस्तों का रद है जो **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी को भी पूजें। मक़्सूद येह है कि इबादत का मुस्तह़िक़ सिर्फ़ वोही है जो काएनाते अ़र्शी व समावी पर क़ुदरत रखता हो और जमीअ़ मा'लूमात का आ़लिम हो, जो ऐसा नहीं वोह किसी त़रह मुस्तह़िक़े इबादत नहीं।

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ

झूटों में है[43] मेरा येह फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख

مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

कि वोह क्या जवाब देते हैं[44] वोह औ़रत बोली ऐ सरदारो बेशक मेरी त़रफ़ एक इ़ज़्ज़त वाला ख़त़ डाला गया[45]

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ

बेशक वोह सुलैमान की त़रफ़ से है और बेशक वोह अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान रह़म वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो[46]

وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ

और गरदन रखते मेरे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हो[47] बोली ऐ सरदारो मेरे इस मुआ़मले में मुझे राय दो मैं किसी मुआ़मले में

قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا بَاْسٍ

कोई क़त़ई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास ह़ाज़िर न हो वोह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई

شَدِيْدٍ ۙ۬ وَّ الْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

वाले हैं[48] और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है[49] बोली बेशक जब बादशाह

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ

किसी बस्ती में[50] दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इ़ज़्ज़त वालों को[51] ज़लील और ऐसा ही

يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَ اِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

करते हैं[52] और मैं उन की त़रफ़ एक तोह़फ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब

43 : फिर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून येह था कि अज़ जानिब बन्दए ख़ुदा सुलैमान बिन दावूद ब सूए बिल्क़ीस मलिकए शहरे सबा। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ उस पर सलाम जो हिदायत क़ुबूल करे, इस के बा'द मुद्दआ़ येह कि तुम मुझ पर बुलन्दी न चाहो और मेरे हु़ज़ूर मुत़ीअ़ हो कर ह़ाज़िर हो। उस पर आप ने अपनी मोहर लगाई और हुदहुद से फ़रमाया **44 :** चुनान्चे हुदहुद वोह मक्तूबे गिरामी ले कर बिल्क़ीस के पास पहुंचा, उस वक़्त बिल्क़ीस के गिर्द उस के आ'यान व वुज़रा का मज्मअ़ था। हुदहुद ने वोह मक्तूब बिल्क़ीस की गोद में डाल दिया और वोह उस को देख कर ख़ौफ़ से लरज़ गई और फिर उस पर मोहर देख कर **45 :** उस ने उस ख़त़ को इ़ज़्ज़त वाला या इस लिये कहा कि उस पर मोहर लगी हुई थी, इस से उस ने जाना कि किताब का भेजने वाला जलीलुल मन्ज़िलत बादशाह है या उस मक्तूब की इब्तिदा अल्लाह तआ़ला के नामे पाक से थी। फिर उस ने बताया कि वोह मक्तूब किस की त़रफ़ से आया है। चुनान्चे कहा : **46 :** या'नी मेरी ता'मीले इर्शाद करो और तकब्बुर न करो जैसा कि बा'ज़ बादशाह किया करते हैं। **47 :** फ़रमां बरदाराना शान से। मक्तूब का येह मज़्मून सुना कर बिल्क़ीस अपने आ'याने दौलत की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई। **48 :** इस से उन की मुराद येह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग इस के लिये तय्यार हैं बहादुर और शुजाअ़ हैं, साह़िबे क़ुव्वत व तुवानाई हैं, कसीर फ़ौजें रखते हैं, जंग आज़्मा हैं। **49 :** ऐ मलिका ! हम तेरी इत़ाअ़त करेंगे तेरे हुक्म के मुन्तज़िर हैं। इस जवाब में उन्हों ने येह इशारा किया कि उन की राय जंग की है या उन का मुद्दआ़ येह हो कि हम जंगी लोग हैं राय और मश्वरा हमारा काम नहीं तू ख़ुद साह़िबे अ़क़्ल व तदबीर है हम बहर ह़ाल तेरा इत्तिबाअ़ करेंगे। जब बिल्क़ीस ने देखा कि येह लोग जंग की त़रफ़ माइल हैं तो इस ने उन्हें उन की राय की ख़त़ा पर आगाह किया और जंग के नताइज सामने किये। **50 :** अपने ज़ोरो क़ुव्वत से **51 :** क़त्ल और

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ

ले कर पलटे[53] फिर जब वोह[54] सुलैमान के पास आया सुलैमान ने फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे अल्लाह ने दिया[55]

خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ

वोह बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया[56] बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते हो[57] पलट जा उन की तरफ़

فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ

तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उन को उस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह

صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ

पस्त होंगे[58] सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि

يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

वोह मेरे हुज़ूर मुतीअ़ हो कर हाज़िर हों[59] एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि वोह तख़्त हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि

تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ

हुज़ूर इज्लास बरख़ास्त करें[60] और मैं बेशक इस पर क़ुव्वत वाला अमानत दार हूं[61] उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास

क़ैद और इहानत के साथ **52 :** येही बादशाहों का तरीक़ा है। बादशाहों की आ़दत का जो उस को इ़ल्म था उस की बिना पर उस ने येह कहा और मुराद उस की येह थी कि जंग मुनासिब नहीं है इस में मुल्क और अहले मुल्क की तबाही व बरबादी का ख़त़रा है। इस के बा'द उस ने अपनी राय का इज़्हार किया और कहा **53 :** इस से मा'लूम हो जाएगा कि वोह बादशाह हैं या नबी क्यूं कि बादशाह इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ हदिय्या क़बूल करते हैं, अगर वोह बादशाह हैं तो हदिय्या क़बूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो हदिय्या क़बूल न करेंगे और सिवा इस के कि हम उन के दीन का इत्तिबाअ़ करें वोह और किसी बात से राज़ी न होंगे। तो इस ने पांच सो ग़ुलाम और पांच सो बांदियां बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों के साथ आरास्ता कर के ज़र निगार ज़ीनों पर सुवार कर के भेजे और पांच सो ईंटें सोने की और जवाहिर से मुरस्सअ़ ताज और मुश्को अम्बर वग़ैरा मअ़ एक ख़त़ के अपने क़ासिद के साथ रवाना किये। हुदहुद येह देख कर चल दिया और उस ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के पास सब ख़बर पहुंचाई, आप ने हुक्म दिया कि सोने चांदी की ईंटें बना कर नव फ़रसंग के मैदान में बिछा दी जाएं और उस के गिर्द सोने चांदी से इह़ाते़ की बुलन्द दीवार बना दी जाए और बर्री बह़्‌री के ख़ूब सूरत जानवर और जिन्नात के बच्चे मैदान के दाएं बाएं ह़ाज़िर किये जाएं। **54 :** या'नी बिल्क़ीस का पयामी मअ़ अपनी जमाअ़त के हदिय्या ले कर **55 :** या'नी दीन और नुबुव्वत और ह़िक्मत व मुल्क **56 :** माल व अस्बाबे दुन्या **57 :** या'नी तुम अहले मुफ़ाख़रत (मग़रूर) हो ज़ख़ारिफ़े दुन्या (दुन्या की ज़ीनतों) पर फ़ख़्र करते हो और एक दूसरे के हदिय्ये पर ख़ुश होते हो, मुझे न दुन्या से ख़ुशी होती है न इस की ह़ाजत, अल्लाह तआ़ला ने मुझे इतना कसीर अ़त़ा फ़रमाया कि औरों को न दिया, बा वुजूद इस के दीन और नुबुव्वत से मुझ को मुशर्रफ़ किया। इस के बा'द ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने वफ़्द के अमीर मुन्ज़िर बिन अ़म्र से फ़रमाया कि येह हदिय्ये ले कर **58 :** या'नी अगर वोह मेरे पास मुसल्मान हो कर ह़ाज़िर न हुए तो येह अन्जाम होगा। जब क़ासिद हदिय्ये ले कर बिल्क़ीस के पास वापस गए और तमाम वाक़िआ़त सुनाए तो उस ने कहा बेशक वोह नबी हैं और हमें उन से मुक़ाबले की त़ाक़त नहीं और उस ने अपना तख़्त अपने सात मह़लों में से सब से पिछले मह़ल में मह़फ़ूज़ कर के तमाम दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल कर दिये और उन पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिये और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने का इन्तिज़ाम किया ताकि देखे कि आप उस को क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वोह एक लश्करे गिरां ले कर आप की त़रफ़ रवाना हुई, जिस में बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी। जब इतने क़रीब पहुंच गई कि ह़ज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग का फ़ासिला रह गया **59 :** इस से आप का मुद्दआ़ येह था कि उस का तख़्त ह़ाज़िर कर के उस को अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और अपनी नुबुव्वत पर दलालत करने वाला मो'जिज़ा दिखावें। बा'ज़ों ने कहा है कि आप ने चाहा कि उस के आने से क़ब्ल उस की वज़्अ़ बदल दें और उस से उस की अ़क़्ल का इम्तिह़ान फ़रमाएं कि पहचान सकती है या नहीं। **60 :** और आप का इज्लास सुब्ह़ से दोपहर तक होता था। **61 :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इस से जल्द चाहता हूं।

عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا

किताब का इल्म था[62] कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले[63] फिर जब

رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ﵷ لِیَبْلُوَنِیْۤ ءَاَشْكُرُ

सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़्माए कि मैं शुक्र करता हूं

اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَ مَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ

या नाशुक्री और जो शुक्र करे तो वोह अपने भले को शुक्र करता है[64] और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है

كَرِیْمٌ ۝۴۰ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِیْۤ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ

सब ख़ूबियों वाला सुलैमान ने हुक्म दिया औ़रत का तख़्त उस के सामने वज़्अ़ बदल कर बेगाना कर दो कि हम देखें कि वोह राह पाती है या उन में

الَّذِیْنَ لَا یَهْتَدُوْنَ ۝۴۱ فَلَمَّا جَآءَتْ قِیْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ

होती है जो ना वाक़िफ़ रहे फिर जब वोह आई उस से कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है बोली

كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ اُوْتِیْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَ كُنَّا مُسْلِمِیْنَ ۝۴۲ وَ صَدَّهَا مَا

गोया येह वोही है[65] और हम को इस वाक़िए से पहले ख़बर मिल चुकी[66] और हम फ़रमां बरदार हुए[67] और उसे रोका[68] उस

كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِیْنَ ۝۴۳ قِیْلَ

चीज़ ने जिसे वोह अल्लाह के सिवा पूजती थी बेशक वोह काफ़िर लोगों में से थी उस से कहा

لَهَا ادْخُلِی الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّ كَشَفَتْ عَنْ سَاقَیْهَا ؕ

गया सह़्न में आ[69] फिर जब उस ने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी और अपनी साक़ें (पिंडलियां) खोलीं[70]

قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِیْرَ ۬ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَ

सुलैमान ने फ़रमाया येह तो एक चिक्ना सह़्न है शीशों जड़ा[71] औ़रत ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया[72] और

62 : या'नी आप के वज़ीर आसफ़ बिन बरख़िया जो अल्लाह तआ़ला का इस्मे आ'ज़म जानते थे। 63 : ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : लाओ ह़ाज़िर करो। आसफ़ ने अ़र्ज़ किया : आप नबी इब्ने नबी हैं और जो रुत्बा बारगाहे इलाही में आप को ह़ासिल है यहां किस को मुयस्सर है, आप दुआ़ करें तो वोह आप के पास ही होगा। आप ने फ़रमाया : तुम सच कहते हो और दुआ़ की उसी वक़्त तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की कुरसी के क़रीब नुमूदार हुवा। 64 : कि इस शुक्र का नफ़्अ़ ख़ुद उस शुक्र गुज़ार की त़रफ़ आ़इद होता है। 65 : इस जवाब से उस का कमाले अ़क़्ल मा'लूम हुवा। अब उस से कहा गया कि येह तेरा ही तख़्त है दरवाज़ा बन्द करने क़ुफ़्ल लगाने पहरेदार मुक़र्रर करने से क्या फ़ाएदा हुवा ? इस पर उस ने कहा 66 : अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और आप की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की, हुदहुद के वाक़िए से और अमीरे वफ़्द से 67 : हम ने आप की इत़ाअ़त और आप की फ़रमां बरदारी इख़्तियार की 68 : अल्लाह की इबादत व तौह़ीद से या इस्लाम की त़रफ़ तक़द्दुम से 69 : वोह सह़्न शफ़्फ़ाफ़ आबगीने का था, उस के नीचे आब जारी था, उस में मछलियां थीं और उस के वस्त़ में ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का तख़्त था जिस पर आप जल्वा अफ़रोज़ थे। 70 : ताकि पानी में चल कर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो। 71 : येह पानी नहीं है। येह सुन कर बिल्क़ीस ने अपनी साक़ें (पिंडलियां) छुपा लीं और इस

اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ

अब सुलैमान के साथ अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखती हूं जो रब सारे जहान का[73] और बेशक हम ने समूद की त़रफ़

اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ

उन के हमक़ौम सालेह़ को भेजा कि अल्लाह को पूजो[74] तो जभी वोह दो गुरौह हो गए[75] झगड़ा करते[76] सालेह़ ने फ़रमाया

يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ

ऐ मेरी क़ौम क्यूं बुराई की जल्दी करते हो[77] भलाई से पहले[78] अल्लाह से बख़्शिश क्यूं नहीं मांगते[79]

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ

शायद तुम पर रह़्म हो[80] बोले हम ने बुरा शुगून लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से[81] फ़रमाया तुम्हारी बद शुगूनी

عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ

अल्लाह के पास है[82] बल्कि तुम लोग फ़ितने में पड़े हो[83] और शहर में नव शख़्स थे[84]

يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ

कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते आपस में अल्लाह की क़समें खा कर बोले हम ज़रूर

لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا

रात को छापा मारेंगे सालेह़ और उस के घर वालों पर[85] फिर उस के वारिस से[86] कहेंगे उस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम ह़ाज़िर न थे और बेशक हम

से उस को बहुत तअ़ज्जुब हुवा और उस ने यक़ीन किया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मुल्क व हुकूमत अल्लाह की त़रफ़ से है और इन अ़जाइबात से उस ने अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और आप की नुबुव्वत पर इस्तिद्लाल किया। अब ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को इस्लाम की दा'वत दी। **72 :** कि तेरे ग़ैर को पूजा आफ़्ताब की परस्तिश की **73 :** चुनान्चे उस ने इख़्लास के साथ तौह़ीद व इस्लाम को क़बूल किया और ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की इबादत इख़्तियार की। **74 :** और किसी को उस का शरीक न करो **75 :** एक मोमिन और एक काफ़िर **76 :** हर फ़रीक़ अपने ही को ह़क़ पर कहता और दोनों बाहम झगड़ते। काफ़िर गुरौह ने कहा : ऐ सालेह़ ! जिस अ़ज़ाब का तुम वा'दा देते हो उस को लाओ अगर रसूलों में से हो। **77 :** या'नी बला व अ़ज़ाब की **78 :** भलाई से मुराद आ़फ़िय्यत व रह़मत है। **79 :** अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले, कुफ़्र से तौबा कर के, ईमान ला कर **80 :** और दुन्या में अ़ज़ाब न किया जाए। **81 :** ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब मब्ऊ़स हुए और क़ौम ने तक्ज़ीब की इस के बाइ़स बारिश रुक गई, क़ह़त़ हो गया, लोग भूके मरने लगे, इस को उन्हों ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी की त़रफ़ निस्बत किया और आप की आमद को बद शुगूनी समझा। **82 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बद शुगूनी जो तुम्हारे पास आई येह तुम्हारे कुफ़्र के सबब अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आई। **83 :** आज़्माइश में डाले गए या अपने दीन के बाइ़स अ़ज़ाब में मुब्तला हो। **84 :** या'नी समूद के शह्‌र में जिस का नाम ह़िज्र है, उन के शरीफ़ ज़ादों में से नव शख़्स थे जिन का सरदार क़ुदार बिन सालिफ़ था, येही लोग हैं जिन्हों ने नाक़ा (ऊंटनी) की कूंचें काटने में सई की थी। **85 :** या'नी रात के वक़्त उन को और उन की औलाद को और उन के मुत्तबिई़न को जो उन पर ईमान लाए हैं क़त्ल कर देंगे। **86 :** जिस को उन के ख़ून का बदला त़लब करने का ह़क़ होगा।

لَصٰدِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا وَّ مَكَرْنَا مَكْرًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ فَانْظُرْ

सच्चे हैं और उन्हों ने अपना सा मक्र किया और हम ने अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाई[87] और वोह ग़ाफ़िल रहे तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَ قَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتِلْكَ

कैसा अन्जाम हुवा उन के मक्र का हम ने हलाक कर दिया उन्हें[88] और उन की सारी क़ौम को[89] तो येह हैं

بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ

उन के घर ढए पड़े बदला उन के ज़ुल्म का बेशक इस में निशानी है जानने वालों के लिये और

اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ

हम ने उन को बचा लिया जो ईमान लाए[90] और डरते थे[91] और लूत़ को जब उस ने अपनी क़ौम से कहा

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَ اَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً

क्या बे ह़याई पर आते हो[92] और तुम सूझ रहे हो[93] क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो

مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ

औ़रतें छोड़ कर[94] बल्कि तुम जाहिल लोग हो[95] तो उस की क़ौम का कुछ जवाब

قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ

न था मगर येह कि बोले लूत़ के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो

يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾

सुथरा पन चाहते हैं[96] तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत को हम ने ठहरा दिया था कि वोह रह जाने वालों में है[97]

87 : या'नी उन के मक्र की जज़ा येह दी कि उन के अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाई 88 : या'नी उन नव शख़्सों को । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उस शब ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام के मकान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़िरिश्ते भेजे तो वोह नव शख़्स हथियार बांध कर तलवारें खींच कर ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام के दरवाज़े पर आए, फ़िरिश्तों ने उन को पथ्थर मारे, वोह पथ्थर लगते थे और मारने वाले नज़र न आते थे, इस त़रह़ उन नव को हलाक किया । 89 : होलनाक आवाज़ से । 90 : ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام पर 91 : उन की ना फ़रमानी से, उन लोगों की ता'दाद चार हज़ार थी । 92 : इस बे ह़याई से मुराद उन की बदकारी है । 93 : या'नी इस फ़े'ल की क़बाह़त जानते हो या येह मा'ना हैं कि एक दूसरे के सामने बे पर्दा बिल ए'लान बद फ़े'ली का इरतिकाब करते हो या येह कि तुम अपने से पहले ना फ़रमानी करने वालों की तबाही और उन के अ़ज़ाब के आसार देखते हो फिर भी इस बद आ'माली में मुब्तला हो । 94 : बा वुजूदे कि मर्दों के लिये औ़रतें बनाई गई हैं, मर्दों के लिये मर्द और औ़रतों के लिये औ़रतें नहीं बनाई गईं, लिहाज़ा येह फ़े'ल ह़िक्मते इलाही की मुख़ालफ़त है । 95 : जो ऐसा फ़े'ल करते हो 96 : और इस गन्दे काम को मन्अ़ करते हैं । 97 : अ़ज़ाब में ।

وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ

और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया[98] तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुओं का तुम कहो सब ख़ूबियां **अल्लाह** को[99]

وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيۡنَ اصۡطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيۡرٌ اَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٥٩﴾ؕ

और सलाम उस के चुने हुए बन्दों पर[100] क्या **अल्लाह** बेहतर[101] या उन के साख़्ता (मन घड़त) शरीक[102]

---

98 : पथ्थरों का। **99 :** येह ख़िताब है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द बजा लाएं। **100 :** या'नी अम्बिया व मुर्सलीन पर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि चुने हुए बन्दों से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब मुराद हैं। **101 :** ख़ुदा परस्तों के लिये जो ख़ास उस की इ़बादत करें और उस पर ईमान लाएं और वोह उन्हें अ़ज़ाब व हलाक से बचाए। **102 :** या'नी बुत जो अपने परस्तारों के कुछ काम न आ सकें, तो जब उन में कोई भलाई नहीं वोह कोई नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो उन को पूजना और मा'बूद मानना निहायत बेजा है। इस के बा'द चन्द अन्वाअ़ ज़िक्र फ़रमाए जाते हैं जो **अल्लाह** तआ़ला की वह़्दानिय्यत और उस के कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं।

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءًۚ

या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[103] और तुम्हारे लिये आस्मान से पानी उतारा

فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآىِٕقَ ذَاتَ بَهْجَةٍۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا

तो हम ने उस से बाग़ उगाए रौनक़ वाले तुम्हारी ताक़त न थी कि उन के पेड़

شَجَرَهَاؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ یَّعْدِلُوْنَؕ(۶۰) اَمَّنْ جَعَلَ

उगाते[104] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है[105] बल्कि वोह लोग राह से कतराते हैं[106] या वोह जिस ने

الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ جَعَلَ خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا وَّ جَعَلَ لَهَا رَوَاسِیَ وَ جَعَلَ

ज़मीन बसने को बनाई और उस के बीच में नहरें निकालीं और उस के लिये लंगर बनाए[107] और दोनों

بَیْنَ الْبَحْرَیْنِ حَاجِزًاؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَؕ(۶۱)

समुन्दरों में आड़ रखी[108] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बल्कि उन में अक्सर जाहिल हैं[109]

اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ یَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَ یَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ

या वोह जो लाचार की सुनता है[110] जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन के

الْاَرْضِؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَؕ(۶۲) اَمَّنْ یَّهْدِیْكُمْ

वारिस करता है[111] क्या अल्लाह के साथ और ख़ुदा है बहुत ही कम ध्यान करते हो या वोह जो तुम्हें राह

فِیْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ مَنْ یُّرْسِلُ الرِّیٰحَ بُشْرًۢا بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِهٖؕ

दिखाता है[112] ख़ुश्की और तरी की अंधेरियों में[113] और वोह कि हवाएं भेजता है अपनी रहमत के आगे ख़ुश ख़बरी सुनाती[114]

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا یُشْرِكُوْنَؕ(۶۳) اَمَّنْ یَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ

क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बरतर है अल्लाह उन के शिर्क से या वोह जो ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है फिर उसे

103 : अ़ज़ीम तरीन अश्या जो मुशाहदे में आती हैं और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते अ़ज़ीमा पर दलालत करती हैं उन का ज़िक्र फ़रमाया। मा'ना येह हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन जैसी अ़ज़ीम और अ़जीब मख़्लूक़ बनाई। 104 : येह तुम्हारी क़ुदरत में न था। 105 : क्या येह दलाइले क़ुदरत देख कर ऐसा कहा जा सकता है ? हरगिज़ नहीं, वोह वाहिद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। 106 : जो उस के लिये शरीक ठहराते हैं। 107 : वज़्नी पहाड़ जो उसे जुम्बिश से रोकते हैं। 108 : कि खारी मीठे मिलने न पाएं। 109 : जो अपने रब की तौह़ीद और उस के क़ुदरत व इख़्तियार को नहीं जानते और उस पर ईमान नहीं लाते। 110 : और ह़ाजत रवाई फ़रमाता है। 111 : कि तुम इस में सुकूनत करो और क़रनन बअ़्-द क़रनिन इस में मुतसर्रिफ़ रहो। 112 : तुम्हारे मनाज़िल व मक़ासिद की 113 : सितारों से और अ़लामतों से। 114 : रह़मत से मुराद यहां बारिश है।

يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

दोबारा बनाएगा[115] और वोह जो तुम्हें आस्मानों और ज़मीन से रोज़ी देता है[116] क्या **अल्लाह** के साथ कोई और ख़ुदा है तुम फ़रमाओ

هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो[117] तुम फ़रमाओ ख़ुद ग़ैब नहीं जानते जो कोई आस्मानों और

الْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۶۵﴾ بَلِ

ज़मीन में हैं मगर **अल्लाह**[118] और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे क्या

ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا

उन के इल्म का सिलसिला आख़िरत के जानने तक पहुंच गया[119] कोई नहीं वोह उस की तरफ़ से शक में हैं[120] बल्कि वोह उस से

عَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا

अन्धे हैं और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम फिर

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿۶۷﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ

निकाले जाएंगे[121] बेशक इस का वा'दा दिया गया हम को और हम से पहले हमारे बाप दादाओं को येह तो

اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۶۸﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ

नहीं मगर अगलों की कहानियां[122] तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۶۹﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا

हुवा अन्जाम मुजरिमों का[123] और तुम इन पर ग़म न खाओ[124] और इन के मक्र से दिलतंग

115 : उस की मौत के बा'द। अगर्चे मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने के कुफ़्फ़ार मुक़िर व मो'तरिफ़ न थे, लेकिन जब कि इस पर बराहीन क़ाइम हैं तो उन का इक़रार न करना कुछ क़ाबिले लिहाज़ नहीं बल्कि जब वोह इब्तिदाई पैदाइश के क़ाइल हैं तो उन्हें इआदे का क़ाइल होना पड़ेगा क्यूं कि इब्तिदा इआदे पर दलालते क़विय्या करती है, तो अब उन के लिये कोई जाए उ़ज़्र व इन्कार बाक़ी नहीं रही। **116 :** आस्मान से बारिश और ज़मीन से नबातात। **117 :** अपने इस दा'वे में कि **अल्लाह** के सिवा और भी मा'बूद हैं, तो बताओ जो जो सिफ़ात व कमालात ऊपर ज़िक्र किये गए वोह किस में हैं और जब **अल्लाह** के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस तरह मा'बूद ठहराते हो ? यहां "هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ" फ़रमा कर उन के इज्ज़ व बुत्लान का इज़्हार मन्ज़ूर है। **118 :** वोही जानने वाला है, ग़ैब का उस को इख़्तियार है, जिसे चाहे बताए, चुनान्चे अपने प्यारे अम्बिया को बताता है जैसा कि सूरए आले इमरान में है। "وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ" या'नी **अल्लाह** की शान नहीं कि तुम्हें ग़ैब का इल्म दे, हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे। और ब कसरत आयात में अपने प्यारे रसूलों को ग़ैबी उ़लूम अ़ता फ़रमाने का ज़िक्र फ़रमाया गया और ख़ुद इसी पारे में इस से अगले रुकूअ़ में वारिद है। "وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ" या'नी जितने ग़ैब हैं आस्मान व ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ियामत के आने का वक़्त दरयाफ़्त किया था। **119 :** और उन्हें क़ियामत क़ाइम होने का इल्म व यक़ीन हासिल हो गया जो वोह उस का वक़्त दरयाफ़्त करते हैं ? **120 :** उन्हें अभी तक क़ियामत के आने का यक़ीन नहीं है **121 :** अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा ? **122 :** या'नी (مَعَاذَ اللّٰه) झूटी बातें। **123 :** कि वोह इन्कार के सबब अ़ज़ाब से

يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

न हो[125] और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा[126] अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ

عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

क़रीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो बा'ज़ वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो[127] और बेशक तेरा रब

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़्ल वाला है आदमियों पर[128] लेकिन अक्सर आदमी हक़ नहीं मानते[129] और बेशक तुम्हारा रब

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ

जानता है जो उन के सीनों में छुपी है और जो वोह ज़ाहिर करते हैं[130] और जितने ग़ैब हैं आस्मान

وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْۤ

और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं[131] बेशक येह क़ुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी

اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّ

इसराईल से अक्सर वोह बातें जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं[132] और बेशक वोह हिदायत और

رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

रहमत है मुसल्मानों के लिये बेशक तुम्हारा रब उन के आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वोही है इज़्ज़त वाला

الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾ اِنَّكَ لَا

इल्म वाला तो तुम **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक तुम रोशन हक़ पर हो बेशक तुम्हारे

تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَاۤ

सुनाए नहीं सुनते मुर्दे[133] और न तुम्हारे सुनाए बहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ दे कर[134] और

हलाक किये गए। 124 : इन के ए'राज़ व तक्ज़ीब करने और इस्लाम से महरूम रहने के सबब 125 : क्यूं कि **अल्लाह** आप का हाफ़िज़ो नासिर है। 126 : या'नी येह वा'दए अज़ाब कब पूरा होगा 127 : या'नी अज़ाबे इलाही। चुनान्चे वोह अज़ाब रोज़े बद्र उन पर आ ही गया और बाक़ी को वोह बा'दे मौत पाएंगे। 128 : इसी लिये अज़ाब में ताख़ीर फ़रमाता है। 129 : और शुक्र गुज़ारी नहीं करते और अपनी जहालत से अज़ाब की जल्दी करते हैं। 130 : या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अदावत रखना और आप की मुख़ालफ़त में मक्कारियां करना सब कुछ **अल्लाह** तआला को मा'लूम है, वोह इस की सज़ा देगा। 131 : या'नी लौहे महफ़ूज़ में सब्त हैं और जिन्हें उन का देखना ब फ़ज़्ले इलाही मुयस्सर है उन के लिये ज़ाहिर हैं। 132 : दीनी उमूर में। अहले किताब ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया उन के बहुत फ़िर्क़े हो गए और आपस में ला'न ता'न करने लगे तो क़ुरआने करीम ने इस का बयान फ़रमाया। ऐसा बयान किया कि अगर वोह इन्साफ़ करें और इस को क़बूल करें और इस्लाम लाएं तो उन में येह बाहमी इख़्तिलाफ़ बाक़ी न रहे। 133 : मुर्दों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं जिन के दिल मुर्दा हैं। चुनान्चे इसी आयत में उन के मुक़ाबिल अहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया। ''اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا'' जो लोग इस आयत से मुर्दों के न सुनने

اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا

अन्धों को[135] उन की गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वोही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं[136]

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ

और वोह मुसल्मान हैं और जब बात उन पर आ पड़ेगी[137] हम ज़मीन से उन के लिये एक चौपाया निकालेंगे[138]

الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَيَوْمَ

जो लोगों से कलाम करेगा[139] इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे[140] और जिस दिन

نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

उठाएंगे हम हर गुरौह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुटलाती है[141] तो उन के अगले रोके जाएंगे कि पिछले उन से आ मिलें

حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا

यहां तक कि जब सब हाज़िर हो लेंगे[142] फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतें झुटलाईं हालां कि तुम्हारा इल्म उन तक न पहुंचता था[143] या क्या

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

काम करते थे[144] और बात पड़ चुकी उन पर[145] उन के ज़ुल्म के सबब तो वोह अब कुछ नहीं बोलते[146]

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ

क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने रात बनाई कि इस में आराम करें और दिन को बनाया सुझाने (दिखाने) वाला बेशक

पर इस्तिद्लाल करते हैं उन का इस्तिद्लाल ग़लत् है, चूंकि यहां मुर्दा कुफ़्फ़ार को फ़रमाया गया और इन से भी मुत्लक़न हर कलाम के सुनने की नफ़ी मुराद नहीं है बल्कि पन्दो मौइज़त और कलामे हिदायत के ब सम्ए क़बूल सुनने की नफ़ी है (या'नी सुन कर क़बूल नहीं करते) और मुराद येह है कि काफ़िर मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते। इस आयत के मा'ना येह बताना कि मुर्दे नहीं सुनते बिल्कुल ग़लत् है, सहीह़ अह़ादीस से मुर्दों का सुनना साबित है। **134 :** मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार ग़ायते ए'राज़ व रू गर्दानी से मुर्दे और बहरे के मिस्ल हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और ह़क़ की दा'वत देना किसी त़रह़ नाफ़ेअ़ नहीं होता। **135 :** जिन की बसीरत जाती रही और दिल अन्धे हो गए। **136 :** जिन के पास समझने वाले दिल हैं और जो इल्मे इलाही में सआ़दते ईमान से बहरा अन्दोज़ होने वाले हैं। (بیضاوی وکبیر وابوالسعود ومدارک)। **137 :** या'नी उन पर ग़ज़बे इलाही होगा और अ़ज़ाब वाजिब हो जाएगा और हु़ज्जत पूरी हो चुकेगी इस त़रह़ कि लोग امر بالمعروف और نہی عن المنکر तर्क कर देंगे और उन की दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी या'नी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उस की अ़लामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़्अ़ न देगी। **138 :** उस चौपाए को दाब्बतुल अर्द कहते हैं। येह अ़जीब शक्ल का जानवर होगा जो कोहे सफ़ा से बरआमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा, फ़साहत के साथ कलाम करेगा, हर शख़्स की पेशानी पर एक निशान लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से नूरानी ख़त़ खींचेगा, काफ़िर की पेशानी पर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगुश्तरी से सियाह मोहर लगाएगा। **139 :** ब ज़बाने फ़सीह़ और कहेगा ''هٰذَا مُؤْمِنٌ وَهٰذَا كَافِرٌ'' येह मोमिन है और येह काफ़िर है। **140 :** या'नी क़ुरआने पाक पर ईमान न लाते थे जिस में बअ़्स व ह़िसाब व अ़ज़ाब व ख़ुरूजे दाब्बतुल अर्द का बयान है। इस के बा'द की आयत में क़ियामत का बयान फ़रमाया जाता है। **141 :** जो कि हम ने अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाईं। फ़ौज से मुराद जमाअ़ते कसीरा है। **142 :** रोज़े क़ियामत मौक़िफ़े ह़िसाब में। **143 :** और तुम ने उन की मा'रिफ़त ह़ासिल न की थी बिग़ैर सोचे समझे ही उन आयतों का इन्कार कर दिया। **144 :** जब तुम ने उन आयतों को भी नहीं, सोचा तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे। **145 :** अ़ज़ाब साबित हो चुका **146 :** कि उन के लिये कोई हु़ज्जत और कोई गुफ़्तगू बाक़ी नहीं है। एक क़ौल येह भी है कि अ़ज़ाब उन पर इस त़रह़ छा जाएगा कि वोह बोल न सकेंगे।

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ

इस में ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिये कि ईमान रखते हैं[147] और जिस दिन फूंका जाएगा सूर[148] तो घबराए जाएंगे

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ

जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं[149] मगर जिसे ख़ुदा चाहे[150] और सब उस के हुज़ूर हाज़िर हुए

دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ

आ़जिज़ी करते[151] और तू देखेगा पहाड़ों को ख़याल करेगा कि वोह जमे हुए हैं और वोह चलते होंगे बादल की चाल[152]

صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ مَنْ

येह काम है अल्लाह का जिस ने हिक्मत से बनाई हर चीज़ बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की जो

جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَ

नेकी लाए[153] उस के लिये उस से बेहतर सिला है[154] और उन को उस दिन की घबराहट से अमान है[155] और

مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

जो बदी लाए[156] तो उन के मुंह औंधाए गए आग में[157] तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ

जो करते थे[158] मुझे तो येही हुक्म हुवा है कि पूजूं उस शहर के रब को[159] जिस ने उसे

147 : और आयत में बअ़्स बा'दल मौत पर दलील है, इस लिये कि जो दिन की रोशनी को शब की तारीकी से और शब की तारीकी को दिन की रोशनी से बदलने पर क़ादिर है वोह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है। नीज़ इन्क़िलाबे लैलो नहार से येह भी मा'लूम होता है कि इस में उन की दुन्यवी ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम है तो येह अ़बस नहीं किया गया, बल्कि इस ज़िन्दगानी के आ'माल पर अ़ज़ाब व सवाब का तरत्तुब मुक़्तज़ाए हिक्मत है। और जब दुन्या दारुल अ़मल है तो ज़रूरी है कि एक दारे आख़िरत भी हो वहां की ज़िन्दगानी में यहां के आ'माल की जज़ा मिले। 148 : और इस के फूंकने वाले हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام होंगे। 149 : ऐसा घबराना जो सबबे मौत होगा। 150 : और जिस के क़ल्ब को अल्लाह तआ़ला सुकून अ़ता फ़रमाए। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि येह शुहदा हैं जो अपनी तलवारें गलों में हमाइल किये अ़र्श के गिर्द हाज़िर होंगे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया वोह शुहदा हैं इस लिये कि वोह अपने रब के नज़्दीक ज़िन्दा हैं فَزَعْ (ऐसा ख़ौफ़ जो मौत का सबब हो) उन को न पहुंचेगा। एक क़ौल येह है कि नफ़्ख़े के बा'द हज़रते जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व इ़ज़्राईल ही बाक़ी रहेंगे। 151 : या'नी रोज़े क़ियामत, सब लोग बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाएंगे और मौक़िफ़ में अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर आ़जिज़ी करते हाज़िर होंगे। सीग़ए माज़ी से ता'बीर फ़रमाना तहक़्क़ुक़ व वुक़ूअ़ के लिये है। 152 : मा'ना येह हैं कि नफ़्ख़े के वक़्त पहाड़ देखने में तो अपनी जगह साबित व क़ाइम मा'लूम होंगे और हक़ीक़त में वोह मिस्ल बादलों के निहायत तेज़ चलते होंगे जैसे कि बादल वग़ैरा बड़े जिस्म चलते हैं मुतहर्रिक मा'लूम नहीं होते यहां तक कि वोह पहाड़ ज़मीन पर गिर कर उस के बराबर हो जाएंगे। फिर रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाएंगे। 153 : नेकी से मुराद कलिमए तौहीद की शहादत है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इख़्लासे अ़मल। और बा'ज़ ने कहा कि हर ताअ़त जो अल्लाह के लिये की हो। 154 : जन्नत और सवाब 155 : जो ख़ौफ़े अ़ज़ाब से होगी। पहली घबराहट जिस का ऊपर की आयत में ज़िक्र हुवा है वोह इस के इ़लावा है। 156 : या'नी शिर्क 157 : या'नी वोह औंधे मुंह आग में डाले जाएंगे और जहन्नम के ख़ाज़िन उन से कहेंगे 158 : या'नी शिर्क और मआ़सी। और अल्लाह तआ़ला अपने रसूल से फ़रमाएगा कि आप फ़रमा दीजिये कि 159 : या'नी मक्कए मुकर्रमा के। और अपनी इबादत उस रब के साथ ख़ास करूं। मक्कए मुकर्रमा का ज़िक्र इस लिये है कि वोह नबिय्ये करीम

حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَیْءٍ ؗ وَّ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۙ﴿۹۱﴾ وَاَنْ

हुरमत वाला किया है[160] और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुवा है कि फ़रमां बरदारों में होउं और येह कि

اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ

कुरआन की तिलावत करूं[161] तो जिस ने राह पाई उस ने अपने भले को राह पाई[162] और जो बहके[163]

فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِیْنَ ﴿۹۲﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَیُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ

तो फ़रमा दो कि मैं तो येही डर सुनाने वाला हूं[164] और फ़रमाओ कि सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं अन्क़रीब वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा

فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ ع

तो उन्हें पहचान लोगे[165] और ऐ महबूब तुम्हारा रब गाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे आ'माल से

اٰیاتها ٨٨ ۲۸ سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّیَّةٌ ۴۹ رکوعاتها ۹

सूरए क़सस मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

طٰسٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾ نَتْلُوْا عَلَیْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] हम तुम पर पढ़ें मूसा

وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِی الْاَرْضِ وَ

और फ़िरऔ़न की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं बेशक फ़िरऔ़न ने ज़मीन में ग़लबा पाया था[3] और

جَعَلَ اَهْلَهَا شِیَعًا یَّسْتَضْعِفُ طَآىِٕفَةً مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ

उस (ज़मीन) के लोगों को अपना ताबेअ़ बना लिया उन में एक गुरोह को[4] कमज़ोर देखता उन के बेटों को ज़ब्ह़ करता और

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का वतन और वह्य का जाए नुज़ूल है। **160 :** कि वहां न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न कोई शिकार मारा जाए न वहां की घांस काटी जाए। **161 :** मख़्लूक़े ख़ुदा को ईमान की दा'वत देने के लिये। **162 :** उस का नफ़्अ़ व सवाब वोह पाएगा **163 :** और रसूले ख़ुदा की इताअ़त न करे और ईमान न लाए **164 :** मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था वोह मैं ने अन्जाम दिया (هٰذِهٖ اٰيَةٌ نَسَخَتْهَا اٰيَةُ الْقِتَالِ) **165 :** इन निशानियों से मुराद शक़्क़े क़मर वग़ैरा मो'जिज़ात हैं और वोह उ़क़ूबतें जो दुन्या में आईं जैसे कि बद्र में कुफ़्फ़ार का क़त्ल होना, क़ैद होना, मलाएका का उन्हें मारना। **1 :** सूरए क़सस मक्किय्या है सिवाए चार आयतों के जो ''اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ'' से शुरूअ़ हो कर ''لَا نَبْتَغِى الْجَاهِلِيْنَ'' पर ख़त्म होती हैं, और इस सूरत में एक आयत ''اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ'' ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए त़य्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई। इस सूरत में नव 9 रुकूअ़ अठासी 88 आयतें और चार सो इक्तालीस 441 कलिमे और पांच हज़ार आठ सो 5800 ह़र्फ़ हैं। **2 :** जो ह़क़ को बात़िल से मुमताज़ करती है। **3 :** या'नी सर ज़मीने मिस्र में उस का तसल्लुत़ था और वोह ज़ुल्मो तकब्बुर में इन्तिहा को पहुंच गया था, ह़त्ता कि उस ने अपनी अ़ब्दिय्यत और बन्दा होना भी भुला दिया था। **4 :** या'नी बनी इसराईल को।

يَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۴﴾ وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى

उन की औरतों को ज़िन्दा रखता[5] बेशक वोह फ़सादी था और हम चाहते थे कि उन कमज़ोरों

الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَ نَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً وَّ نَجْعَلَهُمُ

पर एहसान फ़रमाएं और उन को पेशवा बनाएं[6] और उन के मुल्क व माल का उन्हीं

الْوٰرِثِيْنَ ﴿۵﴾ۙ وَ نُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَ نُرِيَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ

को वारिस बनाएं[7] और उन्हें[8] ज़मीन में क़ब्ज़ा दें और फ़िरऔन और हामान और उन के लश्करों

جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿۶﴾ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اُمِّ مُوْسٰۤى اَنْ

को वोही दिखा दें जिस का उन्हें इन की त़रफ़ से ख़त़रा है[9] और हम ने मूसा की मां को इल्हाम फ़रमाया[10] कि

اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَ لَا تَخَافِيْ وَ لَا تَحْزَنِيْ ۚ

उसे दूध पिला[11] फिर जब तुझे उस से अन्देशा हो[12] तो उसे दरिया में डाल दे और न डर[13] और न ग़म कर[14]

اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷﴾ فَالْتَقَطَهٗۤ اٰلُ

बेशक हम उसे तेरी त़रफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे[15] तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के

فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ حَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا

घर वालों ने[16] कि वोह उन का दुश्मन और उन पर ग़म हो[17] बेशक फ़िरऔन और हामान[18] और उन के लश्कर

5 : या'नी लड़कियों को ख़िदमत गारी के लिये ज़िन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़ब्ह़ करने का सबब येह था कि काहिनों ने उस से कह दिया था कि बनी इसराईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा, इस लिये वोह ऐसा करता था और येह उस की निहायत ह़माक़त थी क्यूं कि वोह अगर अपने ख़याल में काहिनों को सच्चा समझता था तो येह बात होनी ही थी, लड़कों के क़त्ल कर देने से क्या नतीजा था और अगर सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी लग्व बात का क्या लिह़ाज़ था और क़त्ल करना क्या मा'ना रखता था। 6 : कि वोह लोगों को नेकी की राह बताएं और लोग नेकी में उन की इक़्तिदा करें 7 : या'नी फ़िरऔन और उस की क़ौम के अम्लाक व अम्वाल उन ज़ईफ़ बनी इसराईल को दे दें 8 : मिस्र और शाम की 9 : कि बनी इसराईल के एक फ़रज़न्द के हाथ से उन के मुल्क का ज़वाल और उन का हलाक हो। 10 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम यूह़ानिज़ है, आप लावा बिन या'क़ूब की नस्ल से हैं, अल्लाह तआला ने उन को ख़्वाब के या फ़िरिश्ते के ज़रीए या उन के दिल में डाल कर इल्हाम फ़रमाया 11 : चुनान्चे वोह चन्द रोज़ आप को दूध पिलाती रहीं, इस अ़र्से में न आप रोते थे न उन की गोद में कोई ह़रकत करते थे, न आप की हमशीरा के सिवा और किसी को आप की विलादत की इत्तिलाअ़ थी। 12 : कि हमसाया वाक़िफ़ हो गए हैं वोह ग़म्माज़ी और चुग़ुल ख़ोरी करेंगे और फ़िरऔन इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द के क़त्ल के दरपै हो जाएगा 13 : या'नी नीले मिस्र में बे ख़ौफ़ो ख़त़र डाल दे और इस के ग़र्क़ व हलाक का अन्देशा न कर। 14 : उस की जुदाई का 15 : तो उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तीन माह दूध पिलाया और जब आप को फ़िरऔन की त़रफ़ से अन्देशा हुवा तो एक सन्दूक़ में रख कर (जो ख़ास त़ौर पर इस मक़्सद के लिये बनाया गया था) शब के वक़्त दरियाए नील में बहा दिया 16 : उस शब की सुब्ह़ को और उस सन्दूक़ को फ़िरऔन के सामने रखा और वोह खोला गया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बरआमद हुए जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे। 17 : आख़िर कार 18 : जो उस का वज़ीर था।

كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝۸ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَ لَكَ ؕ لَا

ख़ताकार थे[19] और फ़िरऔन की बीबी ने कहा[20] येह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे

تَقْتُلُوْهُ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۹ وَ

क़त्ल न करो शायद येह हमें नफ़्अ़ दे या हम इसे बेटा बना लें[21] और वोह बे ख़बर थे[22] और

اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْ لَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا

सुब्ह़ को मूसा की मां का दिल बे सब्र हो गया[23] ज़रूर क़रीब था कि वोह उस का ह़ाल खोल देती[24] अगर हम न ढारस

عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۰ وَ قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ٘ فَبَصُرَتْ

बंधाते उस के दिल पर कि उसे हमारे वा'दे पर यक़ीन रहे[25] और (उस की मां ने) उस की बहन से कहा[26] उस के पीछे चली जा तो वोह उसे

بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۱۱ۙ وَ حَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

दूर से देखती रही और उन को ख़बर न थी[27] और हम ने पहले ही सब दाइयां उस पर ह़राम कर दी थीं[28]

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَ هُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝۱۲

तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूं ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वोह इस के ख़ैर ख़्वाह हैं[29]

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ وَ لِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

तो हम ने उसे उस की मां की त़रफ़ फेरा कि मां की आंख ठन्डी हो और ग़म न खाए और जान ले कि **अल्लाह** का वा'दा

19 : या'नी ना फ़रमान, तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें येह सज़ा दी कि उन के हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई। 20 : जब कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लोगों के वरग़लाने से मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल का इरादा किया। 21 : क्यूं कि येह इसी क़ाबिल है। फ़िरऔ़न की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं, अम्बिया की नस्ल से थीं, ग़रीबों और मिस्कीनों पर रह़मो करम करती थीं। उन्हों ने फ़िरऔ़न से कहा कि येह बच्चा साल भर से ज़ियादा उ़म्र का मा'लूम होता है और तू ने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दिया है, इ़लावा बरीं मा'लूम नहीं येह बच्चा दरिया में किस सर ज़मीन से आया, तुझे जिस बच्चे का अन्देशा है वोह इसी मुल्क के बनी इसराईल से बताया गया है। आसिया की येह बात उन लोगों ने मान ली 22 : उस से जो अन्जाम होने वाला था। 23 : जब उन्हों ने सुना कि उन के फ़रज़न्द फ़िरऔ़न के हाथ में पहुंच गए। 24 : और जोशे मह़ब्बते मादरी में ''وَا اِبْنَاهُ وَا اِبْنَاهُ'' (हाए बेटे हाए बेटे) पुकार उठतीं 25 : जो वा'दा हम कर चुके हैं कि तेरे इस फ़रज़न्द को तेरी त़रफ़ फेर लाएंगे। 26 : जिन का नाम मरयम था कि ह़ाल मा'लूम करने के लिये 27 : कि येह इस बच्चे की बहन है और इस की निगरानी करती है। 28 : चुनान्चे जिस क़दर दाइयां ह़ाज़िर की गईं उन में से किसी की छाती आप ने मुंह में न ली। इस से उन लोगों को बहुत फ़िक्र हुई कि कहीं कोई ऐसी दाई मुयस्सर आए जिस का दूध आप पी लें। दाइयों के साथ आप की हमशीरा भी येह ह़ाल देखने चली गई थीं। अब उन्हों ने मौक़अ़ पाया 29 : चुनान्चे वोह उन की ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़िरऔ़न की गोद में थे और दूध के लिये रोते थे, फ़िरऔ़न आप को शफ़्क़त के साथ बहलाता था। जब आप की वालिदा आईं और आप ने उन की ख़ुश्बू पाई तो आप को क़रार आया और आप ने उन का दूध मुंह में लिया। फ़िरऔ़न ने कहा तू इस बच्चे की कौन है कि इस ने तेरे सिवा किसी के दूध को मुंह भी न लगाया ? उन्हों ने कहा मैं एक औ़रत हूं पाक साफ़ रहती हूं, मेरा दूध ख़ुश गवार है जिस्म ख़ुश्बूदार है इस लिये जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है, वोह और औ़रतों का दूध नहीं लेते हैं, मेरा दूध पी लेते हैं। फ़िरऔ़न ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर कर के फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इजाज़त दी चुनान्चे आप अपने मकान पर ले आईं और **अल्लाह**

حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ اسْتَوٰۤى

सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[30] और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे ज़ोर पर आया[31]

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَ دَخَلَ

हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता फ़रमाया[32] और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को और उस शह्‌र में

الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ

दाख़िल हुवा[33] जिस वक़्त शह्‌र वाले दोपहर के ख़्वाब में बे ख़बर थे[34] तो उस में दो मर्द

يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَ هٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِیْ

लड़ते पाए एक मूसा के गुरौह से था[35] और दूसरा उस के दुश्मनों से[36] तो वोह जो उस के गुरौह से था[37] उस ने मूसा से मदद

مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِیْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ قَالَ

मांगी उस पर जो उस के दुश्मनों से था तो मूसा ने उस के घूंसा मारा[38] तो उस का काम तमाम कर दिया[39] कहा

هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ

येह काम शैत़ान की त़रफ़ से हुवा[40] बेशक वोह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने

ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶﴾ قَالَ

अपनी जान पर ज़ियादती की[41] तो मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है अ़र्ज़ की

तआ़ला का वा'दा पूरा हुवा, उस वक़्त उन्हें इत़्मीनाने कामिल हो गया कि येह फ़रज़न्दे अरजुमन्द ज़रूर नबी होंगे। **अल्लाह** तआ़ला इस वा'दे का ज़िक्र फ़रमाता है। **30 :** और शक में रहते हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपनी वालिदा के पास दूध पीने के ज़माने तक रहे और इस ज़माने में फ़िरऔ़न उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा, दूध छूटने के बा'द आप ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरऔ़न के पास ले आईं और आप वहां परवरिश पाते रहे। **31 :** उ़म्र शरीफ़ तीस साल से ज़ियादा हो गई। **32 :** या'नी मसालेह़े दीन व दुन्या का इ़ल्म। **33 :** वोह शह्‌र या तो ''मन्फ़'' था जो ह़ुदूदे मिस्र में है, अस्ल इस की माफ़ह है ज़बान क़िब्त़ी में इस लफ़्ज़ के मा'ना हैं तीस[30]। येह पहला शह्‌र है जो तूफ़ाने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आबाद हुवा, इस सर ज़मीन में मिस्र बिन ह़ाम ने इक़ामत की, येह इक़ामत करने वाले कुल तीस[30] थे, इस लिये इस का नाम माफ़ह हुवा, फिर इस की अ़रबी मन्फ़ हुई। या वोह शह्‌र ''ह़ाबीन'' था जो मिस्र से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर था। एक क़ौल येह भी है कि वोह शह्‌र ''ऐने शम्स'' था। (جمل وخازن) **34 :** और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पोशीदा त़ौर पर दाख़िल होने का सबब येह था कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जवान हुए तो आप ने ह़क़ का बयान और फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की गुमराही का रद शुरूअ़ किया। बनी इसराईल के लोग आप की बात सुनते और आप का इत्तिबाअ़ करते, आप फ़िरऔ़नियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते। शुदा शुदा (रफ़्ता रफ़्ता) इस का चरचा हुवा और फ़िरऔ़नी जुस्तजू में हुए, इस लिये आप जिस बस्ती में दाख़िल होते ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहां के लोग ग़फ़्लत में हों। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि वोह दिन ईद का था, लोग अपने लह्‌वो लअ़ब में मश्ग़ूल थे। (مدارک وخازن) **35 :** बनी इसराईल में से **36 :** या'नी क़िब्त़ी क़ौमे फ़िरऔ़न से, येह इसराईली पर जब्र कर रहा था ताकि इस पर लकड़ियों का अम्बार लाद कर फ़िरऔ़न के मत़्बख़ में ले जाए **37 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के **38 :** पहले आप ने क़िब्त़ी से कहा कि इसराईली पर ज़ुल्म न कर इस को छोड़ दे लेकिन वोह बाज़ न आया और बद ज़बानी करने लगा तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को इस ज़ुल्म से रोकने के लिये घूंसा मारा **39 :** या'नी वोह मर गया और आप ने उस को रेत में दफ़्न कर दिया, आप का इरादा क़त्ल करने का न था। **40 :** या'नी उस क़िब्त़ी का इसराईली पर ज़ुल्म करना जो उस की हलाकत का बाइ़स हुवा। (خازن) **41 :** येह कलाम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है क्यूं कि आप से कोई मा'सियत

رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِي

ऐ मेरे रब जैसा तू ने मुझ पर एहसान किया तो अब[42] हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न होउंगा तो सुब्ह की

الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ

उस शहर में डरते हुए इस इन्तिज़ार में कि क्या होता है[43] जभी देखा कि वोह जिस ने कल इन से मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है[44]

قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ

मूसा ने उस से फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है[45] तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरिफ़्त करे

بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ

जो उन दोनों का दुश्मन है[46] वोह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुम ने कल

نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا

एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तुम तो येही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्त गीर बनो और

تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ

इस्लाह करना नहीं चाहते[47] और शहर के परले कनारे से एक शख़्स[48]

يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ

दौड़ता आया कहा ऐ मूसा ! बेशक[49] दरबार वाले आप के क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तो निकल जाइये[50] मैं

सरज़द नहीं हुई, और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह नहीं होते। क़िब्ती का मारना आप का दफ़्ए़ ज़ुल्म और इमदादे मज़्लूम थी, येह किसी मिल्लत में भी गुनाह नहीं, फिर भी अपनी त़रफ़ तक़्सीर की निस्बत करना और इस्तिग़्फ़ार चाहना येह मुक़र्रबीन (अल्लाह वालों) का दस्तूर ही है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में ताख़ीर औला थी इस लिये ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तर्के औला को ज़ियादती फ़रमाया और इस पर ह़क़ तआ़ला से मग़्फ़िरत त़लब की। **42 :** येह करम भी कर कि मुझे फ़िरऔ़न की सोह़बत और इस के यहां रहने से भी बचा कि इस ज़ुमरे में शुमार किया जाना येह भी एक त़रह़ का मददगार होना है। **43 :** कि ख़ुदा जाने उस क़िब्त़ी के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उस की क़ौम के लोग क्या करें। **44 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔ़न को इत्तिलाअ़ दी कि किसी बनी इसराईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है। इस पर फ़िरऔ़न ने कहा कि क़ातिल और गवाहों को तलाश करो। फ़िरऔ़नी गश्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सुबूत नहीं मिलता था, दूसरे रोज़ जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि वोही बनी इसराईल जिस ने एक रोज़ पहले इन से मदद चाही थी आज फिर एक फ़िरऔ़नी से लड़ रहा है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को देख कर इन से फ़रियाद करने लगा तब ह़ज़रते **45 :** मुराद येह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है, अपने आप को भी मुसीबत व परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी, क्यूं ऐसे मौक़ओं से नहीं बचता और क्यूं एह़तियात़ नहीं करता। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को रह़्म आया और आप ने चाहा कि इस को फ़िरऔ़नी के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई दिलाएं। **46 :** या'नी फ़िरऔ़नी पर। तो इसराईली ग़लत़ी से येह समझा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मुझ से ख़फ़ा हैं मुझे पकड़ना चाहते हैं येह समझ कर **47 :** फ़िरऔ़नी ने येह बात सुनी और जा कर फ़िरऔ़न को इत्तिलाअ़ दी कि कल के फ़िरऔ़नी मक़्तूल के क़ातिल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं। फ़िरऔ़न ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल का हुक्म दिया और लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ढूंडने निकले **48 :** जिस को मोमिने आले फ़िरऔ़न कहते हैं, येह ख़बर सुन कर क़रीब की राह से **49 :** फ़िरऔ़न के **50 :** शहर से।

لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۰﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ

आप का ख़ैर ख़्वाह हूं[51] तो उस शह्र से निकला डरता हुवा इस इन्तिज़ार में कि अब क्या होता है अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब

نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ

मुझे सितम गारों से बचा ले[52] और जब मद्यन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा[53] कहा

عَسٰى رَبِّيْۤ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۲۲﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ

क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए[54] और जब मद्यन के पानी पर आया[55]

وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ

वहां लोगों के एक गुरौह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उन से उस त़रफ़[56] दो औ़रतें देखीं

تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَ

कि अपने जानवरों को रोक रही हैं[57] मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या ह़ाल है[58] वोह बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब चरवाहे पिला कर फेर न ले जाएं[59] और

اَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿۲۳﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ

हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं[60] तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिला दिया फिर साए की त़रफ़ फिरा[61] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿۲۴﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى

उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोह़ताज हूं[62] तो उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म

51 : येह बात ख़ैर ख़्वाही और मस्लहत अन्देशी से कहता हूं। 52 : या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न से। 53 : मद्यन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ रखते थे। इस को मद्यन इब्ने इब्राहीम कहते हैं, मिस्र से यहां तक आठ रोज़ की मसाफ़त है, येह शह्र फ़िरऔ़न के ह़ुदूदे क़लम रव (सल्त़नत की ह़ुदूद) से बाहर था, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस का रास्ता भी न देखा था न कोई सुवारी साथ थी न तोशा न कोई हमराही, राह में दरख़्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्ज़े के सिवा ख़ूराक की और कोई चीज़ न मिलती थी। 54 : चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता भेजा जो आप को मद्यन तक ले गया। 55 : या'नी कूंएं पर जिस से वहां के लोग पानी लेते और अपने जानवरों को सैराब करते थे, येह कूंवां शह्र के कनारे था। 56 : या'नी मर्दों से अ़लाहदा 57 : इस इन्तिज़ार में कि लोग फ़ारिग़ हों और कूंवां ख़ाली हो क्यूं कि कूंएं को क़वी और ज़ोर आवर लोगों ने घेर रखा था, उन के हुजूम में औ़रतों से मुम्किन न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सकतीं। 58 : या'नी अपने जानवरों को पानी क्यूं नहीं पिलातीं ? 59 : क्यूं कि न हम मर्दों के अम्बोह (हुजूम) में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं, जब येह लोग अपने जानवरों को पानी पिला कर वापस हो जाते हैं तो ह़ौज़ में जो पानी बच रहता है वोह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं। 60 : ज़ईफ़ हैं ख़ुद येह काम नहीं कर सकते इस लिये जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई। जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की बातें सुनीं तो आप को रिक़्क़त आई और रह़्म आया और वहीं दूसरा कूंवां जो उस के क़रीब था और एक बहुत भारी पथ्थर उस पर ढका हुवा था जिस को बहुत से आदमी मिल कर हटा सकते थे आप ने तन्हा उस को हटा दिया। 61 : धूप और गरमी की शिद्दत थी और आप ने कई रोज़ से खाना भी नहीं खाया था, भूक का ग़लबा था इस लिये आराम ह़ासिल करने की ग़रज़ से एक दरख़्त के साए में बैठ गए और बारगाहे इलाही में 62 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को खाना मुलाह़ज़ा फ़रमाए पूरा हफ़्ता गुज़र चुका था, इस दरमियान में एक लुक़्मा तक न खाया था, शिकमे मुबारक पुश्ते अक़्दस से मिल गया था, इस ह़ालत में अपने रब से ग़िज़ा त़लब की और बा वुजूदे कि बारगाहे इलाही में निहायत क़ुर्बो मन्ज़िलत रखते हैं इस इज्ज़ो इन्किसारी के साथ रोटी का एक टुकड़ा त़लब किया। और जब वोह दोनों साह़िब ज़ादियां उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान वापस हो गईं तो उन के वालिदे माजिद ने फ़रमाया कि आज इस क़दर जल्द वापस आ जाने का क्या सबब हुवा ? अ़र्ज़ किया कि हम ने एक

اسْتِحْیَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِیْ یَدْعُوْكَ لِیَجْزِیَكَ اَجْرَ مَا سَقَیْتَ لَنَا ؕ

से चलती हुई[63] बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़्दूरी दे उस की जो तुम ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है[64]

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَ قَصَّ عَلَیْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ نَجَوْتَ مِنَ

जब मूसा उस के पास आया और उसे बातें कह सुनाईं[65] उस ने कहा डरिये नहीं आप बच गए

الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا یٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَیْرَ

ज़ालिमों से[66] उन में की एक बोली[67] ऐ मेरे बाप इन को नोकर रख लो[68] बेशक बेहतर

مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

नोकर वोह जो ताक़त वर अमानत दार हो[69] कहा मैं चाहता हूं कि अपनी इन दोनों बेटियों में

اِحْدَى ابْنَتَیَّ هٰتَیْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِیْ ثَمٰنِیَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ

से एक तुम्हें बियाह दूं[70] इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो[71] फिर अगर पूरे दस

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَ مَاۤ اُرِیْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَیْكَ ؕ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ

बरस कर लो तो तुम्हारी त़रफ़ से है[72] और मैं तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता[73] क़रीब है

नेक मर्द पाया, उस ने हम पर रह़म किया और हमारे जानवरों को सैराब कर दिया। इस पर उन के वालिद साहिब ने एक साहिब ज़ादी से फ़रमाया कि जाओ और उस मर्दे सालेह़ को मेरे पास बुला लाओ **63 :** चेहरा आस्तीन से ढके जिस्म छुपाए, येह बड़ी साहिब ज़ादी थीं, इन का नाम सफ़ूरा है। और एक क़ौल येह है कि वोह छोटी साहिब ज़ादी थीं। **64 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उजरत लेने पर राज़ी न हुए लेकिन ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत और उन की मुलाक़ात के क़स्द से चले और उन साहिब ज़ादी साहिबा से फ़रमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रस्ता बताती जाइये। येह आप ने पर्दे के एहतिमाम के लिये फ़रमाया, और इस त़रह़ तशरीफ़ लाए। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचे तो खाना ह़ाज़िर था, ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया बैठिये खाना खाइये। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मन्ज़ूर न किया और اَعُوْذُ بِاللّٰه फ़रमाया। ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया क्या सबब खाने में क्यूं उ़ज़्र है क्या आप को भूक नहीं है? फ़रमाया कि मुझे येह अन्देशा है कि येह खाना मेरे उस अ़मल का इवज़ न हो जाए जो मैं ने आप के जानवरों को पानी पिला कर अन्जाम दिया है क्यूं कि हम वोह लोग हैं कि अ़मले ख़ैर पर इवज़ लेना क़बूल नहीं करते। ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ जवान! ऐसा नहीं है, येह खाना आप के अ़मल के इवज़ में नहीं बल्कि मेरी और मेरे आबाओ अज्दाद की आ़दत है कि हम मेहमान ख़्वानी किया करते हैं और खाना खिलाते हैं। तो आप बैठे और आप ने खाना तनावुल फ़रमाया। **65 :** और तमाम वाक़िआ़त व अह़वाल जो फ़िरऔ़न के साथ गुज़रे थे अपनी विलादत शरीफ़ से ले कर क़िब्ती़ के क़त्ल और फ़िरऔ़नियों के आप के दरपै जान होने तक के सब ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام से बयान कर दिये **66 :** या'नी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों से क्यूं कि यहां मद्यन में फ़िरऔ़न की हुकूमत व सल्त़नत नहीं। **मसाइल :** इस से साबित हुवा कि एक शख़्स की ख़बर पर अ़मल करना जाइज़ है। ख़्वाह वोह ग़ुलाम हो या औ़रत हो और येह भी साबित हुवा कि अज्नबिय्या के साथ वरअ़ व एह़तियात़ के साथ चलना जाइज़ है। (مدارک)। **67 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को बुलाने के वासित़े भेजी गई थी, बड़ी या छोटी। **68 :** येह हमारी बकरियां चराया करें और येह काम हमें न करना पड़े। **69 :** ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने साहिब ज़ादी से दरयाफ़्त किया कि तुम्हें इन की क़ुव्वत व अमानत का क्या इ़ल्म? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि क़ुव्वत तो इस से ज़ाहिर है कि इन्हों ने तन्हा कूंएं पर से वोह पथ्थर उठा लिया जिस को दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इस से ज़ाहिर है कि इन्हों ने हमें देख कर सर झुका लिया और नज़र न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा नुमूदार हो। येह सुन कर ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **70 :** येह वा'दा निकाह़ का था अल्फ़ाज़े अ़क़्द न थे क्यूं कि **मस्अला :** अ़क़्द के लिये सीग़ए माज़ी ज़रूरी है। **मस्अला :** और ऐसे ही मन्कूह़ा की ता'यीन भी ज़रूरी है। **71 मस्अला :** आज़ाद मर्द का आज़ाद औ़रत से निकाह़ किसी दूसरे आज़ाद शख़्स

شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا

إِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی तुम मुझे नेकों में पाओगे[74] मूसा ने कहा येह मेरे और आप के दरमियान इक़्रार हो चुका मैं

الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

इन दोनों में जो मीआ़द पूरी कर दूं[75] तो मुझ पर कोई मुत़ालबा नहीं और हमारे इस कहे पर **अल्लाह** का ज़िम्मा है[76]

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ

फिर जब मूसा ने अपनी मीआ़द पूरी कर दी[77] और अपनी बीबी को ले कर चला[78] तूर की त़रफ़ से एक आग

نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ

देखी[79] अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की त़रफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहां से कुछ ख़बर लाऊं[80]

اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

या तुम्हारे लिये कोई आग की चिंगारी लाऊं कि तुम तापो फिर जब आग के पास ह़ाज़िर हुवा निदा की गई

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى

मैदान के दहने कनारे से[81] बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से[82] कि ऐ मूसा

اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

बेशक मैं ही हूं **अल्लाह** रब सारे जहान का[83] और येह कि डाल दे अपना अ़सा[84] फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा

की ख़िदमत करने या बकरियां चराने को महर क़रार दे कर जाइज़ है। **मस्अला :** और अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुद्दत तक औ़रत की ख़िदमत करने को या क़ुरआन की ता'लीम को महर क़रार दे कर निकाह़ किया तो निकाह़ जाइज़ है और येह चीज़ें महर न हो सकेंगी बल्कि इस सूरत में महरे मिस्ल लाज़िम होगा। (ہدایہ واحمدی)। **72 :** या'नी येह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुम पर वाजिब न होगा **73 :** कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूं। **74 :** तो मेरी त़रफ़ से ह़ुस्ने मुआ़मलत और वफ़ाए अ़ह्द ही होगी और إِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی आप ने **अल्लाह** तआ़ला की तौफ़ीक़ व मदद पर भरोसा करने के लिये फ़रमाया। **75 :** ख़्वाह दस साल की या आठ साल की **76 :** फिर जब आप का अ़क़्द हो चुका तो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी साहिब ज़ादी को हुक्म दिया कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को एक अ़सा दें जिस से वोह बकरियों की निगहबानी करें और दरिन्दों को दफ़्अ़ करें। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के पास अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के कई अ़सा थे, साहिब ज़ादी साहिबा का हाथ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा पर पड़ा जो आप जन्नत से लाए थे और अम्बिया उस के वारिस होते चले आए थे और वोह ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंचा था। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह अ़सा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दिया। **77 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि आप ने बड़ी मीआ़द या'नी दस साल पूरे किये फिर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام से मिस्र की त़रफ़ वापस जाने की इजाज़त चाही, आप ने इजाज़त दी। **78 :** उन के वालिद की इजाज़त से मिस्र की त़रफ़। **79 :** जब कि आप जंगल में थे, अंधेरी रात थी, सरदी शिद्दत की पड़ रही थी, रास्ता गुम हो गया था, उस वक़्त आप ने आग देख कर **80 :** राह की, कि किस त़रफ़ है। **81 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते रास्त की त़रफ़ था। **82 :** वोह दरख़्त उ़न्नाब का था या औ़सज का (औ़सज एक ख़ारदार दरख़्त है जो जंगलों में होता है)। **83 :** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सर सब्ज़ दरख़्त में आग देखी तो जान लिया कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा येह किसी की क़ुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का **अल्लाह** तआ़ला ही मुतकल्लिम है। येह भी मन्क़ूल है कि येह कलाम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सिर्फ़ गोशे मुबारक ही से नहीं बल्कि अपने जिस्मे अक़्दस के हर हर जुज़ से सुना। **84 :** चुनान्चे आप ने अ़सा डाल दिया वोह सांप बन गया।

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ

गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा[85] ऐ मूसा सामने आ और डर नहीं बेशक तुझे

مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ

अमान है[86] अपना हाथ[87] गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे

سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ

ऐब[88] और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले ख़ौफ़ दूर करने को[89] तो येह दो हुज्जतें हैं तेरे रब की[90]

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ

फ़िरऔन और उस के दरबारियों की तरफ़ बेशक वोह बे हुक्म (ना फ़रमान) लोग हैं अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿۳۳﴾ وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ

ने उन में एक जान मार डाली है[91] तो डरता हूं कि मुझे क़त्ल कर दें और मेरा भाई हारून उस की ज़बान

مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۫ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾

मुझ से ज़ियादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिये रसूल बना कि मेरी तस्दीक़ करे मुझे डर है कि वोह[92] मुझे झुटलाएंगे

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे बाज़ू को तेरे भाई से क़ुव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़लबा अ़ता फ़रमाएंगे तो वोह तुम दोनों का कुछ नुक़्सान

اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَآ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

न कर सकेंगे हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब आओगे[93] फिर जब मूसा उन के

مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا

पास हमारी रोशन निशानियां लाया बोले येह तो नहीं मगर बनावट का जादू[94] और हम ने अपने अगले

85 : तब निदा की गई 86 : कोई ख़तरा नहीं 87 : अपनी क़मीस के 88 : शुआ़ए आफ़्ताब की तरह। तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक गिरेबान में डाल कर निकाला तो उस में ऐसी तेज़ चमक थी जिस से निगाहें झपकीं। 89 : ताकि हाथ अपनी अस्ली हालत पर आए और ख़ौफ़ रफ़्अ़ हो जाए। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सीने पर हाथ रखने का हुक्म दिया ताकि जो ख़ौफ़ सांप देखने के वक़्त पैदा हो गया था रफ़्अ़ हो जाए और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जो ख़ौफ़ज़दा अपना हाथ सीने पर रखेगा उस का ख़ौफ़ दफ़्अ़ हो जाएगा। 90 : या'नी अ़सा और यदे बैज़ा तुम्हारी रिसालत की बुरहानें हैं 91 : या'नी क़िब्ती मेरे हाथ से मारा गया है 92 : या'नी फ़िरऔन और उस की क़ौम 93 : फ़िरऔन और उस की क़ौम पर। 94 : उन बद नसीबों ने मो'जिज़ात का इन्कार कर दिया और उन को जादू बता दिया। मतलब येह था कि जिस तरह तमाम अन्वाए सेह्र बातिल होते हैं इसी तरह مَعَاذَاللّٰه येह भी है।

بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۶﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى رَبِّیْۤ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ

बाप दादाओं में ऐसा न सुना[95] और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उस के

بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ

पास से हिदायत लाया[96] और जिस के लिये आख़िरत का घर होगा[97] बेशक ज़ालिम मुराद

الظّٰلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

को नहीं पहुंचते[98] फ़िरऔन बोला ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारे लिये अपने सिवा

غَیْرِیْۚ فَاَوْقِدْ لِیْ یٰهَامٰنُ عَلَى الطِّیْنِ فَاجْعَلْ لِّیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْۤ اَطَّلِعُ

कोई ख़ुदा नहीं जानता तो ऐ हामान मेरे लिये गारा पक्का कर[99] एक महल बना[100] कि शायद मैं मूसा

اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰىۙ وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَ اسْتَكْبَرَ هُوَ وَ

के ख़ुदा को झांक आऊं[101] और बेशक मेरे गुमान में तो वोह[102] झूटा है[103] और उस ने और उस के

جُنُوْدُهٗ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ اِلَیْنَا لَا یُرْجَعُوْنَ ﴿۳۹﴾

लश्करियों ने ज़मीन में बे जा बड़ाई चाही[104] और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं

فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِی الْیَمِّۚ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

तो हम ने उसे और उस के लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया[105] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۰﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً یَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ لَا

सितम गारों का और उन्हें हम ने[106] दोज़ख़ियों का पेश्वा बनाया कि आग की तरफ़ बुलाते हैं[107] और क़ियामत के दिन

یُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ اَتْبَعْنٰهُمْ فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا لَعْنَةًۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ هُمْ

उन की मदद न होगी और इस दुन्या में हम ने उन के पीछे ला'नत लगाई[108] और क़ियामत के दिन उन

95 : या'नी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया। या येह मा'ना हैं कि जो दा'वत आप हमें देते हैं वोह ऐसी नई है कि हमारे आबाओ अज्दाद में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी **96 :** या'नी जो हक़ पर है और जिस को **अल्लाह** तआला ने नुबुव्वत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया। **97 :** और वोह वहां की ने'मतों और रहमतों के साथ नवाज़ा जाएगा। **98 :** या'नी काफ़िरों को आख़िरत की फ़लाह मुयस्सर नहीं। **99 :** ईंट तय्यार कर। कहते हैं कि येही दुन्या में सब से पहले ईंट बनाने वाला है, येह सन्अत इस से पहले न थी। **100 :** निहायत बुलन्द **101 :** चुनान्चे हामान ने हज़ारहा कारीगर और मज़दूर जम्अ किये, ईंटें बनवाईं और इमारती सामान जम्अ कर के इतनी बुलन्द इमारत बनवाई कि दुन्या में उस के बराबर कोई इमारत बुलन्द न थी, फ़िरऔन ने येह गुमान किया कि (مَعَاذَ الله) **अल्लाह** तआला के लिये भी मकान है और वोह जिस्म है कि उस तक पहुंचना इस के लिये मुम्किन होगा। **102 :** या'नी मूसा عَلَيْهِ السَّلَام **103 :** अपने इस दा'वे में कि उस का एक मा'बूद है जिस ने उस को अपना रसूल बना कर हमारी तरफ़ भेजा। **104 :** और हक़ को न माना और बातिल पर रहे **105 :** और सब ग़र्क़ हो गए। **106 :** दुन्या में **107 :** या'नी कुफ़्र व मआसी की दा'वत देते हैं जिस से अज़ाबे जहन्नम के मुस्तहिक़ हों और जो इन की इताअत करे वोह भी जहन्नमी हो जाए। **108 :** या'नी रुस्वाई और रहमत से दूरी।

مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَهْلَكْنَا

का बुरा है और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[109] बा'द इस के कि अगली संगतें (क़ौमें)[110]

الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآىِٕرَ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

हलाक फ़रमा दीं जिस में लोगों के दिल की आंखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रह़मत ताकि वोह नसीह़त मानें

وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَ مَا كُنْتَ

और तुम[111] तूर की जानिबे मग़रिब में न थे[112] जब कि हम ने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा[113] और उस वक़्त तुम

مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَ لٰكِنَّاۤ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُۚ وَ

ह़ाज़िर न थे मगर हुवा येह कि हम ने संगतें पैदा कीं[114] कि उन पर ज़मानए दराज़ गुज़रा[115] और

مَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِیْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَاۙ وَ لٰكِنَّا كُنَّا

न तुम अहले मद्यन में मुक़ीम थे उन पर हमारी आयतें पढ़ते हुए हां हम

مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَ لٰكِنْ رَّحْمَةً

रसूल बनाने वाले हुए[116] और न तुम तूर के कनारे थे जब हम ने निदा फ़रमाई[117] हां तुम्हारे रब की

مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ

मेहर है (कि तुम्हें ग़ैब के इ़ल्म दिये)[118] कि तुम ऐसी क़ौम को डर सुनाओ जिस के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया[119] येह उम्मीद करते हुए कि

يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ

उन को नसीह़त हो और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत[120] उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा[121]

فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْ لَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَ نَكُوْنَ

तो कहते ऐ हमारे रब तू ने क्यूं न भेजा हमारी त़रफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और

---

109 : या'नी तौरैत। 110 : मिस्ल क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा के 111 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्तफ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 112 : वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मीक़ात था। 113 : और उन से कलाम फ़रमाया और उन्हें मुक़र्रब किया। 114 : या'नी बहुत सी उम्मतें, बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के 115 : तो वोह **अल्लाह** का अ़ह्द भूल गए और उन्हों ने उस की फ़रमां बरदारी तर्क की, और इस की ह़क़ीक़त येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन की क़ौम से सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़क़ में और आप पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ अ़ह्द लिये थे। जब दराज़ ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बा'द उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वोह लोग उन अ़ह्दों को भूल गए और उस की वफ़ा तर्क कर दी। 116 : तो हम ने आप को इ़ल्म दिया और पहलों के ह़ालात पर मुत्तलअ़ किया। 117 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तौरैत अ़ता फ़रमाने के वक़्त। 118 : जिन से तुम उन के अह़वाल बयान फ़रमाते हो, आप का इन उमूर की ख़बर देना आप की नुबुव्वत की ज़ाहिर दलील है। 119 : इस क़ौम से मुराद अहले मक्का हैं जो ज़मानए फ़ित्रत (दो पैग़म्बरों के दरमियान के ज़माने) में थे, जो ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم व ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान पांच सो पचास बरस की मुद्दत का है। 120 : अ़ज़ाब व सज़ा 121 : या'नी जो कुफ़्रो

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ

ईमान लाते[122] फिर जब उन के पास हक़ आया[123] हमारी त़रफ़ से बोले[124] इन्हें क्यूं न दिया गया

مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا

जो मूसा को दिया गया[125] क्या उस के मुन्किर न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया[126] बोले

سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ

दो जादू हैं एक दूसरे की पुश्ती (इमदाद) पर और बोले हम इन दोनों के मुन्किर हैं[127] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के पास से कोई

عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ

किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़ियादा हिदायत की हो[128] मैं उस की पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो[129] फिर अगर

يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ

वोह येह तुम्हारा फ़रमाना क़बूल न करें[130] तो जान लो कि[131] बस वोह अपनी ख़्वाहिशों ही के पीछे हैं और उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की

هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾

पैरवी करे अल्लाह की हिदायत से जुदा बेशक अल्लाह हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

और बेशक हम ने उन के लिये बात मुसल्सल उतारी[132] कि वोह ध्यान करें जिन को हम ने इस से पहले[133]

इस्यान उन्हों ने किया 122 : मा'ना आयत के येह हैं कि रसूलों का भेजना ही इल्ज़ामे हुज्जत के लिये है कि उन्हें येह उ़ज़्र करने की गुन्जाइश न मिले कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए, इस लिये गुमराह हो गए, अगर रसूल आते तो हम ज़रूर मुत़ीअ़ होते और ईमान लाते। 123 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالی علیہ وسلم। 124 : मक्का के कुफ़्फ़ार 125 : या'नी उन्हें कुरआने करीम यक्बारगी क्यूं नहीं दिया गया जैसा कि ह़ज़रते मूसा علیہ السلام को पूरी तौरैत एक ही बार में अ़ता की गई थी। या येह मा'ना हैं कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم को अ़सा और यदे बैज़ा जैसे मो'जिज़ात क्यूं न दिये गए ? अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : 126 : यहूद ने क़ुरैश को पैग़ाम भेजा कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم से ह़ज़रते मूसा علیہ السلام के से मो'जिज़ात त़लब करें। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जिन यहूद ने येह सुवाल किया है क्या वोह ह़ज़रते मूसा علیہ السلام के और जो उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से दिया गया है उस के मुन्किर न हुए ? 127 : या'नी तौरैत के भी और क़ुरआन के भी, इन दोनों को उन्हों ने जादू कहा। और एक क़िराअत में "سَاحِرَانِ" है। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि दोनों जादूगर हैं या'नी सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم और ह़ज़रते मूसा علیہ السلام। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का ने यहूदे मदीना के सरदारों के पास क़ासिद भेज कर दरयाफ़्त किया कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم की निस्बत कुतुबे साबिक़ा में कोई ख़बर है ? उन्हों ने जवाब दिया कि हां ह़ुज़ूर की ना'त व सिफ़त उन की किताब तौरैत में मौजूद है। जब येह ख़बर क़ुरैश को पहुंची तो ह़ज़रते मूसा علیہ السلام व सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم की निस्बत कहने लगे कि वोह दोनों जादूगर हैं, उन में एक दूसरे का मुईनो मददगार है। इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : 128 : या'नी तौरैत व क़ुरआन से। 129 : अपने इस क़ौल में कि येह दोनों जादू या जादूगर हैं। इस में तम्बीह है कि वोह इस के मिस्ल किताब लाने से आ़जिज़े मह़ज़ हैं, चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया जाता है 130 : और ऐसी किताब न ला सकें 131 : उन के पास कोई हुज्जत नहीं है। 132 : या'नी क़ुरआने करीम उन के पास पयापै (मुतवातिर) और मुसल्सल आया, वा'द और वई़द और क़सस और इब्रतें और मौइ़ज़तें ताकि समझें और ईमान लाएं। 133 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ से या सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से पहले। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मोमिनीने अहले किताब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई। और

النصف

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝۵۲ وَ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِهٖۤ

किताब दी वोह उस पर ईमान लाते हैं   और जब उन पर येह आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इस पर ईमान लाए

اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝۵۳ اُولٰٓىِٕكَ يُؤْتَوْنَ

बेशक येही हक़ है हमारे रब के पास से हम इस से पहले ही गरदन रख चुके थे[134]   उन को उन का अज्र

اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَ يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَ مِمَّا

दोबाला दिया जाएगा[135] बदला उन के सब्र का[136] और वोह भलाई से बुराई को टालते हैं[137] और हमारे दिये

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۵۴ وَ اِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا لَنَاۤ

से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं[138]   और जब बेहूदा बात सुनते हैं उस से तग़ाफ़ुल करते हैं[139] और कहते हैं हमारे लिये

اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ٘ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ٘ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ۝۵۵ اِنَّكَ

हमारे अ़मल और तुम्हारे लिये तुम्हारे अ़मल   बस तुम पर सलाम[140]   हम जाहिलों के ग़रज़ी (चाहने वाले) नहीं[141]   बेशक

لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ هُوَ اَعْلَمُ

येह नहीं कि तुम जिसे अपनी त़रफ़ से चाहो हिदायत कर दो हां **अल्लाह** हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे   और वोह ख़ूब जानता है

بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝۵۶ وَ قَالُوْۤا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ

हिदायत वालों को[142]   और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक

एक क़ौल येह है कि येह उन अहले इन्जील के हक़ में नाज़िल हुई जो ह़ब्शा से आ कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। येह चालीस ह़ज़रात थे, ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब के साथ आए। जब उन्हों ने मुसल्मानों की ह़ाजत और तंगिये मआ़श देखी तो बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि हमारे पास माल हैं, हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जा कर अपने माल ले आएं और उन से मुसल्मानों की ख़िदमत करें। हुज़ूर ने इजाज़त दी और वोह जा कर अपने माल ले आए और उन से मुसल्मानों की ख़िदमत की, उन के हक़ में येह आयात ''مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ'' तक नाज़िल हुई। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयतें अस्सी80 अहले किताब के हक़ में नाज़िल हुई जिन में चालीस नजरान के और बत्तीस ह़ब्शा के और आठ शाम के थे। **134 :** या'नी नुज़ूले क़ुरआन से क़ब्ल ही हम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं क्यूं कि तौरैत व इन्जील में उन का ज़िक्र है। **135 :** क्यूं कि वोह पहली किताब पर भी ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी। **136 :** कि उन्हों ने अपने दीन पर भी सब्र किया और मुश्रिकीन की ईज़ा पर भी। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अज्र मिलेंगे **एक** अहले किताब का वोह शख़्स जो अपने नबी पर ईमान लाया और सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर भी। **दूसरा** वोह ग़ुलाम जिस ने **अल्लाह** का हक़ भी अदा किया और मौला का भी। **तीसरा** वोह जिस के पास बांदी थी जिस से क़ुर्बत करता था फिर उस को अच्छी त़रह़ अदब सिखाया अच्छी ता'लीम दी और आज़ाद कर के उस से निकाह़ कर लिया उस के लिये भी दो अज्र हैं। **137 :** त़ाअ़त से मा'सियत को और ह़िल्म से ईज़ा को, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि तौह़ीद की शहादत या'नी ''اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ'' से शिर्क को। **138 :** त़ाअ़त में, या'नी सदक़ा करते हैं। **139 :** मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा के ईमानदारों को उन का दीन तर्क करने और इस्लाम क़बूल करने पर गालियां देते और बुरा कहते, येह ह़ज़रात उन की बेहूदा बातें सुन कर ए'राज़ फ़रमाते **140 :** या'नी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जवाब में गालियां न देंगे। **141 :** उन के साथ मेलजोल निशिस्त व बरख़ास्त नहीं चाहते, हमें जाहिलाना ह़रकात गवारा नहीं। (نُسِخَ ذٰلِكَ بِالْقِتَالِ)। **142 :** जिन के लिये उस

اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰۤى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَیْءٍ

ले जाएंगे[143] क्या हम ने उन्हें जगह न दी अमान वाली ह़रम में[144] जिस की त़रफ़ हर चीज़ के फल

رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ

लाए जाते हैं हमारे पास की रोज़ी लेकिन उन में अक्सर को इल्म नहीं[145] और कितने शहर हम ने हलाक

قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا

कर दिये जो अपने ऐ़श पर इतरा गए थे[146] तो येह हैं उन के मकान[147] कि उन के बा'द इन में सुकूनत न हुई मगर

قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى

कम[148] और हमीं वारिस हैं[149] और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक

يَبْعَثَ فِیْۤ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِی الْقُرٰۤى

उन के अस्ल मरजअ़ में रसूल न भेजे[150] जो उन पर हमारी आयतें पढ़े[151] और हम शहरों को हलाक नहीं करते

اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

मगर जब कि उन के साकिन सितम गार हों[152] और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वोह दुन्यवी ज़िन्दगी का बरतावा

ने हिदायत मुक़द्दर फ़रमाई, जो दलाइल से पन्द पज़ीर होने और ह़क़ बात मानने वाले हैं। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है कि येह आयत अबू त़ालिब के ह़क़ में नाज़िल हुई, नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने उन से उन की मौत के वक़्त फ़रमाया : ऐ चचा ! कह ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ'' मैं तुम्हारे लिये रोज़े क़ियामत शाहिद होउंगा। उन्हों ने कहा कि अगर मुझे क़ुरैश के आ़र देने का अन्देशा न होता तो मैं ज़रूर ईमान ला कर तुम्हारी आंख ठन्डी करता। इस के बा'द उन्हों ने येह शे'र पढ़े ''وَلَقَدْ عَلِمْتُ بِاَنَّ دِيْنَ مُحَمَّدٍ مِنْ خَيْرِ اَدْيَانِ الْبَرِيَّةِ دِيْنًا لَوْ لَا الْمَلَامَةُ اَوْحِذَارُ مُسَبَّةٍ لَوَجَدْتَنِیْ سَمْحًا بِذَاكَ مُبِيْنًا'' या'नी मैं यक़ीन से जानता हूं कि मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم का दीन तमाम जहानों के दीनों से बेहतर है अगर मलामत व बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफ़ाई के साथ इस दीन को क़बूल करता। इस के बा'द अबू त़ालिब का इन्तिक़ाल हो गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **143 :** या'नी सर ज़मीने अ़रब से एक दम निकाल देंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ारिस बिन उ़स्मान बिन नौफ़ल बिन अ़ब्दे मनाफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई। उस ने नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से कहा था कि येह तो हम यक़ीन से जानते हैं कि जो आप फ़रमाते हैं वोह ह़क़ है लेकिन अगर हम आप के दीन का इत्तिबाअ़ करें तो हमें डर है कि अ़रब के लोग हमें शहर बदर कर देंगे और हमारे वत़न में न रहने देंगे। इस आयत में इस का जवाब दिया गया। **144 :** जहां के रहने वाले क़त्लो ग़ारत से अम्न में हैं और जहां जानवरों और सब्ज़ों तक को अम्न है। **145 :** और वोह अपनी जहालत से नहीं जानते कि येह रोज़ी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है अगर येह समझ होती तो जानते कि ख़ौफ़ व अम्न भी उसी की त़रफ़ से है और ईमान लाने में शहर बदर किये जाने का ख़ौफ़ न करते। **146 :** और उन्हों ने तुग़्यान इख़्तियार किया था कि **अल्लाह** तआ़ला की दी हुई रोज़ी खाते और पूजते बुतों को, अहले मक्का को ऐसी क़ौम के ख़राब अन्जाम से ख़ौफ़ दिलाया जाता है जिन का ह़ाल उन की त़रह़ था कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें पाते और शुक्र न करते, उन ने'मतों पर इतराते, वोह हलाक कर दिये गए। **147 :** जिन के आसार बाक़ी हैं और अ़रब के लोग अपने सफ़रों में उन्हें देखते हैं। **148 :** कि कोई मुसाफ़िर या रहरव (राह चलता) इन में थोड़ी देर के लिये ठहर जाता है फिर ख़ाली पड़े रहते हैं। **149 :** इन मकानों के। या'नी वहां के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उन के बा'द उन का कोई जा नशीन बाक़ी न रहा, अब **अल्लाह** के सिवा इन मकानों का कोई वारिस नहीं, ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द वोही सब का वारिस है। **150 :** या'नी मर्कज़ी मक़ाम में। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उम्मुल क़ुरा से मुराद मक्कए मुकर्रमा है और रसूल से मुराद ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم। **151 :** और उन्हें तब्लीग़ करे और ख़बर दे कि अगर वोह ईमान न लाएंगे तो उन पर अ़ज़ाब किया जाएगा ताकि उन पर ह़ुज्जत लाज़िम हो और उन के लिये उ़ज़्र की गुन्जाइश बाक़ी न रहे। **152 :** रसूल की तक्ज़ीब करते हों, अपने कुफ़्र पर मुसिर (डटे हुए) हों और इस सबब से अ़ज़ाब के

وَزِيۡنَتُهَا ۚ وَمَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۰﴾ اَفَمَنۡ وَّعَدۡنٰهُ

और उस का सिंगार है[153] और जो अल्लाह के पास है[154] वोह बेहतर और ज़ियादा बाक़ी रहने वाला[155] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[156] तो क्या वोह जिसे हम ने

وَعۡدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيۡهِ كَمَنۡ مَّتَّعۡنٰهُ مَتَاعَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ثُمَّ هُوَ يَوۡمَ

अच्छा वा'दा दिया[157] तो वोह उस से मिलेगा उस जैसा है जिसे हम ने दुन्यवी ज़िन्दगी का बरताव बरत्ने दिया फिर वोह क़ियामत

الۡقِيٰمَةِ مِنَ الۡمُحۡضَرِيۡنَ ﴿۶۱﴾ وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُ اَيۡنَ شُرَكَآءِىَ

के दिन गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर लाया जाएगा[158] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा[159] तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِيۡنَ كُنۡتُمۡ تَزۡعُمُوۡنَ ﴿۶۲﴾ قَالَ الَّذِيۡنَ حَقَّ عَلَيۡهِمُ الۡقَوۡلُ رَبَّنَا

वोह शरीक जिन्हें तुम[160] गुमान करते थे कहेंगे वोह जिन पर बात साबित हो चुकी[161] ऐ हमारे रब

هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيۡنَ اَغۡوَيۡنَا ۚ اَغۡوَيۡنٰهُمۡ كَمَا غَوَيۡنَا ۚ تَبَرَّاۡنَاۤ اِلَيۡكَ ۫ مَا كَانُوۡۤا

येह हैं वोह जिन्हें हम ने गुमराह किया हम ने उन्हें गुमराह किया जैसे ख़ुद गुमराह हुए थे[162] हम उन से बेज़ार हो कर तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाते हैं वोह

اِيَّانَا يَعۡبُدُوۡنَ ﴿۶۳﴾ وَقِيۡلَ ادۡعُوۡا شُرَكَآءَكُمۡ فَدَعَوۡهُمۡ فَلَمۡ يَسۡتَجِيۡبُوۡا

हम को न पूजते थे[163] और उन से फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो[164] तो वोह पुकारेंगे तो वोह उन की न

لَهُمۡ وَرَاَوُا الۡعَذَابَ ۚ لَوۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا يَهۡتَدُوۡنَ ﴿۶۴﴾ وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ

सुनेंगे और देखेंगे अ़ज़ाब क्या अच्छा होता अगर वोह राह पाते[165] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा

فَيَقُوۡلُ مَاذَاۤ اَجَبۡتُمُ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۶۵﴾ فَعَمِيَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَنۡۢبَآءُ

तो फ़रमाएगा[166] तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया[167] तो उस दिन उन पर ख़बरें अन्धी

يَوۡمَئِذٍ فَهُمۡ لَا يَتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۶۶﴾ فَاَمَّا مَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

हो जाएंगी[168] तो वोह कुछ पूछगछ न करेंगे[169] तो वोह जिस ने तौबा की[170] और ईमान लाया[171] और अच्छा काम किया

मुस्तह़िक़ हों। **153 :** जिस की बक़ा बहुत थोड़ी और जिस का अन्जाम फ़ना। **154 :** या'नी आख़िरत के मनाफ़ेअ़ **155 :** तमाम कदूरतों से ख़ाली और दाइम, ग़ैर मुन्क़तअ़। **156 :** कि इतना समझ सको कि बाक़ी फ़ानी से बेहतर है, इसी लिये कहा गया है कि जो शख़्स आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ न दे वोह नादान है। **157 :** सवाबे जन्नत का। **158 :** येह दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते, इन में पहला जिसे अच्छा वा'दा दिया गया मोमिन है और दूसरा काफ़िर। **159 :** अल्लाह तआ़ला ब त़रीक़े तौबीख़ **160 :** दुन्या में मेरा शरीक **161 :** या'नी अ़ज़ाब वाजिब हो चुका और वोह लोग अहले ज़लालत (गुमराहों) के सरदार और अइम्मए कुफ़्र हैं। **162 :** या'नी वोह लोग हमारे बहकाने से ब इख़्तियारे ख़ुद गुमराह हुए हमारी उन की गुमराही में कोई फ़र्क़ नहीं हम ने उन्हें मजबूर न किया था। **163 :** बल्कि वोह अपनी ख़्वाहिशों के परस्तार और अपनी शहवात के मुतीअ़ थे। **164 :** या'नी कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि अपने बुतों को पुकारो वोह तुम्हें अ़ज़ाब से बचाएं **165 :** दुन्या में ताकि आख़िरत में अ़ज़ाब न देखते। **166 :** या'नी कुफ़्फ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाएगा **167 :** जो तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए थे और ह़क़ की दा'वत देते थे। **168 :** और कोई उ़ज़्र और हुज्जत उन्हें नज़र न आएगी **169 :** और ग़ायते दह़शत से साकित रह जाएंगे या कोई

فَعَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِیْنَ ﴿۶۷﴾ وَ رَبُّكَ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ وَ

क़रीब है कि वोह राहयाब हो और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और

یَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِیَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۸﴾

पसन्द फ़रमाता है[172] उन का[173] कुछ इख़्तियार नहीं पाकी और बरतरी है **अल्लाह** को उन के शिर्क से

وَ رَبُّكَ یَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا یُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَ هُوَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है[174] और जो ज़ाहिर करते हैं[175] और वोही है **अल्लाह** कि

اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِرَةِ ٘ وَ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ

कोई ख़ुदा नहीं उस के सिवा उसी की ता'रीफ़ है दुन्या और आख़िरत में[176] और उसी का हुक्म है[177] और उसी की त़रफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿۷۰﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ الَّیْلَ سَرْمَدًا اِلٰى

फिर जाओगे तुम फ़रमाओ[178] भला देखो तो अगर **अल्लाह** हमेशा तुम पर

یَوْمِ الْقِیٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِضِیَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿۷۱﴾ قُلْ

क़ियामत तक रात रखे[179] तो **अल्लाह** के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रोशनी ला दे[180] तो क्या तुम सुनते नहीं[181] तुम फ़रमाओ

اَرَءَیْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ

भला देखो तो अगर **अल्लाह** क़ियामत तक हमेशा दिन रखे[182]

مَنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِلَیْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِیْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ

तो **अल्लाह** के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रात ला दे जिस में आराम करो[183] तो क्या तुम्हें सूझता नहीं[184] और

किसी से इस लिये न पूछेगा कि जवाब से आ़जिज़ होने में सब के सब बराबर हैं ताबेअ़ हों या मत्बूअ़ काफ़िर हों या काफ़िर गर। **170 :** शिर्क से **171 :** अपने रब पर और उस तमाम पर जो रब की त़रफ़ से आया **172 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के जवाब में नाज़िल हुई, जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत के लिये क्यूं बरगुज़ीदा किया ? येह क़ुरआन मक्का व त़ाइफ़ के किसी बड़े शख़्स पर क्यूं न उतारा ? इस कलाम का क़ाइल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वोह अपने आप को और उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी को मुराद लेता था। उस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी है अपनी हिक्मत वोही जानता है, उन्हें उस की मरज़ी में दख़्ल की क्या मजाल। **173 :** या'नी मुश्रिकीन का **174 :** या'नी कुफ़्र और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत जिस को येह लोग छुपाते हैं **175 :** अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ जैसे कि नुबुव्वत में त़ा'न करना और क़ुरआने पाक की तक्ज़ीब। **176 :** कि उस के औलिया दुन्या में भी उस की ह़म्द करते हैं और आख़िरत में भी उस की ह़म्द से लज़्ज़त उठाते हैं। **177 :** उसी की क़ज़ा हर चीज़ में नाफ़िज़ व जारी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अपने फ़रमां बरदारों के लिये मग़्फ़िरत का और ना फ़रमानों के लिये शफ़ाअ़त का हुक्म फ़रमाता है। **178 :** ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से **179 :** और दिन निकाले ही नहीं **180 :** जिस में तुम अपनी मआ़श के काम कर सको। **181 :** गोशे होश से कि शिर्क से बाज़ आओ। **182 :** रात होने ही न दे **183 :** और दिन में जो काम और मेह़नत की थी उस की तकान दूर करो। **184 :** कि तुम कितनी बड़ी ग़लत़ी में हो जो उस के साथ और को शरीक करते हो।

مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ

उस ने अपनी मेह्र (रह्मत) से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल

فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ

ढूंडो[185] और इस लिये कि तुम हक़ मानो[186] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَ نَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا

वोह शरीक जो तुम बकते थे और हर गुरोह में से हम एक गवाह निकाल कर[187] फ़रमाएंगे अपनी

بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْۤا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ ع اِنَّ

दलील लाओ[188] तो जान लेंगे कि[189] हक़ अल्लाह का है और उन से खोई जाएंगी जो बनावटें करते थे[190] बेशक

قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَ اٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ

क़ारून मूसा की क़ौम से था[191] फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये

اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِي الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ

जिन की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर भारी थीं जब उस से उस की क़ौम[192] ने कहा इतरा नहीं[193]

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿۷۶﴾ وَ ابْتَغِ فِيْمَاۤ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर त़लब कर[194]

وَ لَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَ اَحْسِنْ كَمَاۤ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَ لَا

और दुन्या में अपना ह़िस्सा न भूल[195] और एह़सान कर[196] जैसा अल्लाह ने तुझ पर एह़सान किया और[197]

185 : कस्बे मआ़श करो 186 : और उस की ने'मतों का शुक्र बजा लाओ। 187 : यहां गवाह से रसूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्हों ने इन्हें रब के पयाम पहुंचाए और नसीह़तें कीं। 188 : या'नी शिर्क और रसूलों की मुख़ालफ़त जो तुम्हारा शेवा था, इस पर क्या दलील है ? पेश करो। 189 : इलाहिय्यत व मा'बूदिय्यत ख़ास 190 : दुन्या में कि अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक ठहराते थे। 191 : क़ारून ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा "यस्हर" का बेटा था, निहायत ख़ूब सूरत शकील आदमी था, इसी लिये इस को मुनव्वर कहते थे और बनी इसराईल में तौरैत का सब से बेहतर क़ारी था, नादारी के ज़माने में निहायत मुतवाज़ेअ़ व बा अख़्लाक़ था, दौलत हाथ आते ही इस का ह़ाल मुतग़य्यिर हुवा और सामिरी की त़रह़ मुनाफ़िक़ हो गया। कहा गया है कि फ़िरऔन ने इस को बनी इसराईल पर ह़ाकिम बना दिया था। 192 : या'नी मोमिनीने बनी इसराईल 193 : कस्रते माल पर 194 : अल्लाह की ने'मतों का शुक्र कर के और माल को ख़ुदा की राह में ख़र्च कर के। 195 : या'नी दुन्या में आख़िरत के लिये अ़मल कर कि अ़ज़ाब से नजात पाए, इस लिये कि दुन्या में इन्सान का ह़क़ीक़ी ह़िस्सा येह है कि आख़िरत के लिये अ़मल करे, सदक़ा दे कर, सिलए रेह़्मी कर के और आ'माले ख़ैर के साथ। और इस की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि अपनी सिह़्ह़त व क़ुव्वत व जवानी व दौलत को न भूल इस से कि इन के साथ आख़िरत त़लब करे। ह़दीस में है कि पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत समझो। जवानी को बुढ़ापे से पहले, तन्दुरुस्ती को बीमारी से पहले, सरवत को नादारी से पहले, फ़राग़त को शग़्ल से पहले, ज़िन्दगी को मौत से पहले। 196 : अल्लाह के बन्दों के साथ। 197 : मआ़सी और गुनाहों का इरतिकाब कर के और ज़ुल्म व बग़ावत कर के।

تَبۡغِ الۡفَسَادَ فِي الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۷۷﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ

ज़मीन में फ़साद न चाह बेशक **अल्लाह** फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता बोला येह[198]

اُوۡتِيۡتُهٗ عَلٰى عِلۡمٍ عِنۡدِىۡ ؕ اَوَلَمۡ يَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَهۡلَكَ مِنۡ قَبۡلِهٖ

तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है[199] और क्या इसे येह नहीं मा'लूम कि **अल्लाह** ने इस से पहले वोह

مِنَ الۡقُرُوۡنِ مَنۡ هُوَ اَشَدُّ مِنۡهُ قُوَّةً وَّاَكۡثَرُ جَمۡعًا ؕ وَلَا يُسۡـَٔلُ عَنۡ

संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं जिन की कुव्वतें इस से सख़्त थीं और जम्अ़ इस से ज़ियादा[200] और मुजरिमों से

ذُنُوۡبِهِمُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۷۸﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوۡمِهٖ فِىۡ زِيۡنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيۡنَ

उन के गुनाहों की पूछ नहीं[201] तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में[202] बोले वोह जो

يُرِيۡدُوۡنَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا يٰلَيۡتَ لَنَا مِثۡلَ مَاۤ اُوۡتِىَ قَارُوۡنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوۡ

दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी त़रह़ हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उस का

حَظٍّ عَظِيۡمٍ ﴿۷۹﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ وَيۡلَكُمۡ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيۡرٌ لِّمَنۡ

बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया[203] ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का सवाब बेहतर है उस के लिये जो

اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰٮهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوۡنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفۡنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ

ईमान लाए और अच्छे काम करे[204] और येह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं[205] तो हम ने उसे[206] और उस के घर को

الۡاَرۡضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنۡ فِئَةٍ يَّنۡصُرُوۡنَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ۖ وَمَا كَانَ

ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि **अल्लाह** से बचाने में उस की मदद करती[207] और न वोह

198 : या'नी क़ारून ने कहा कि येह माल **199 :** इस इल्म से मुराद इल्मे तौरैत है या इल्मे कीमिया जो उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام से हासिल किया था और उस के ज़रीए से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था। या इल्मे तिजारत या इल्मे ज़िराअ़त या और पेशों का इल्म। सह्ल ने फ़रमाया : जिस ने ख़ुदबीनी की, फ़लाह़ न पाई। **200 :** या'नी कुव्वत व माल में इस से ज़ियादा थे और बड़ी जमाअ़तें रखते थे उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक कर दिया। फिर येह क्यूं कुव्वत व माल की कसरत पर ग़ुरूर करता है। वोह जानता है कि ऐसे लोगों का अन्जाम हलाक है। **201 :** उन से दरयाफ़्त करने की ह़ाजत नहीं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला उन का ह़ाल जानने वाला है, लिहाज़ा इस्ति'लाम के लिये सुवाल न होगा, तौबीख़ व ज़ज्र (डांट डपट) के लिये होगा। **202 :** बहुत से सुवार जिलौ में (हमराह) लिये हुए ज़ेवरों से आरास्ता, ह़रीरी (रेशमी) लिबास पहने आरास्ता घोड़ों पर सुवार। **203 :** या'नी बनी इसराईल के उ़लमा। **204 :** उस दौलत से जो दुन्या में क़ारून को मिली। **205 :** या'नी अ़मले सालेह़ साबिरीन ही का हिस्सा हैं और इस का सवाब वोही पाते हैं। **206 :** या'नी क़ारून को **207 :** क़ारून और उस के घर के धंसाने का वाक़िआ़ उ़लमाए सियर व अख़्बार ने येह ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को दरिया के पार ले जाने के बा'द मज़्बह़ की रियासत ह़ज़रते हारून عَلَيۡهِ السَّلَام को तफ़्वीज़ की। बनी इसराईल अपनी कुरबानियां ह़ज़रते हारून عَلَيۡهِ السَّلَام के पास लाते और वोह मज़्बह़ में रखते, आग आस्मान से उतर कर उन को खा लेती। क़ारून को ह़ज़रते हारून के इस मन्सब पर रश्क हुवा, उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام से कहा कि रिसालत तो आप की हुई और कुरबानी की सरदारी ह़ज़रते हारून की, मैं कुछ भी न रहा बा वुजूदे कि मैं तौरैत का बेहतरीन क़ारी हूं, मैं इस पर सब्र नहीं कर सकता। ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि येह मन्सब ह़ज़रते हारून को मैं ने नहीं

مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

बदला ले सका[208] और कल जिस ने उस के मर्तबे की आरज़ू की थी सुब्ह[209] कहने लगे

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ

अ़जब बात है अल्लाह रिज़्क़ वसीअ़ करता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[210] अगर

مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ

अल्लाह हम पर एह्सान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता ऐ अ़जब काफ़िरों का भला नहीं येह आख़िरत

दिया अल्लाह ने दिया है। क़ारून ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं आप की तस्दीक़ न करूंगा जब तक आप इस का सुबूत मुझे दिखा न दें। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रुअसाए बनी इसराईल को जम्अ़ कर के फ़रमाया : अपनी लाठियां ले आओ। उन्हें सब को अपने क़ुब्बे में जम्अ़ किया, रात भर बनी इसराईल उन लाठियों का पहरा देते रहे, सुब्ह को हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा सर सब्ज़ो शादाब हो गया, उस में पत्ते निकल आए। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया ऐ क़ारून तू ने येह देखा ? क़ारून ने कहा येह आप के जादू से कुछ अ़जीब नहीं। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस की मुदारात करते थे और वोह आप को हर वक़्त ईज़ा देता था और उस की सरकशी और तकब्बुर और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ अ़दावत दम बदम तरक़्क़ी पर थी। उस ने एक मकान बनाया जिस का दरवाज़ा सोने का था और उस की दीवारों पर सोने के तख़्ते नस्ब किये। बनी इसराईल सुब्हो शाम उस के पास आते खाने खाते बातें बनाते उसे हंसाते। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो क़ारून मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया तो उस ने आप से तै किया कि दिरहम व दीनार व मवेशी वग़ैरा में से हज़ारवां हिस्सा ज़कात देगा, लेकिन घर जा कर हिसाब किया तो उस के माल में से इतना भी बहुत कसीर होता था, उस के नफ़्स ने इतनी भी हिम्मत न की और उस ने बनी इसराईल को जम्अ़ कर के कहा कि तुम ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हर बात में इताअ़त की अब वोह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं क्या कहते हो ? उन्हों ने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें हुक्म दीजिये। कहने लगा कि फ़ुलानी बद चलन औ़रत के पास जाओ और उस से एक मुआ़वज़ा मुक़र्रर करो कि वोह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर तोहमत लगाए, ऐसा हुवा तो बनी इसराईल हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को छोड़ देंगे। चुनान्चे क़ारून ने उस औ़रत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपिया और बहुत से मवाईद कर के येह तोहमत लगाने पर तै किया और दूसरे रोज़ बनी इसराईल को जम्अ़ कर के हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया और कहने लगा कि बनी इसराईल आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें वा'ज़ो नसीहत फ़रमाएं। हज़रत तशरीफ़ लाए और बनी इसराईल में खड़े हो कर आप ने फ़रमाया कि ऐ बनी इसराईल जो चोरी करेगा उस के हाथ काटे जाएंगे, जो बोहतान लगाएगा उस के अस्सी कोड़े लगाए जाएंगे और जो ज़िना करेगा उस के अगर बीबी नहीं है तो सो कोड़े मारे जाएंगे और अगर बीबी है तो उस को संगसार किया जाएगा यहां तक कि मर जाए। क़ारून कहने लगा कि येह हुक्म सब के लिये है ख़्वाह आप ही हों ? फ़रमाया : ख़्वाह मैं ही क्यूं न होउं। कहने लगा कि बनी इसराईल का ख़याल है कि आप ने फ़ुलां बदकार औ़रत के साथ बदकारी की है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : उसे बुलाओ। वोह आई तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया उस की क़सम जिस ने बनी इसराईल के लिये दरिया फाड़ा और उस में रस्ते बनाए और तौरैत नाज़िल की ! सच कह दे। वोह औ़रत डर गई और अल्लाह के रसूल पर बोहतान लगा कर उन्हें ईज़ा देने की जुरअत उसे न हुई और उस ने अपने दिल में कहा कि इस से तौबा करना बेहतर है और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम येह झूट है और इस ने आप पर तोहमत लगाने के इवज़ में मेरे लिये बहुत माले कसीर मुक़र्रर किया है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब के हुज़ूर रोते हुए सज्दे में गिरे और येह अ़र्ज़ करने लगे, या रब अगर मैं तेरा रसूल हूं तो मेरी वज्ह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ने आप को वह्य फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आप की फ़रमां बरदारी करने का हुक्म दिया है आप इस को जो चाहें हुक्म दें। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इसराईल से फ़रमाया : ऐ बनी इसराईल अल्लाह तआ़ला ने मुझे क़ारून की त़रफ़ भेजा है जैसा फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा था, जो क़ारून का साथी हो उस के साथ उस की जगह ठहरा रहे जो मेरा साथी हो जुदा हो जाए। सब लोग क़ारून से जुदा हो गए, सिवाए दो शख़्सों के कोई उस के साथ न रहा। फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि इन्हें पकड़ ले तो वोह घुटनों तक धंस गए, फिर आप ने येही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, आप येही फ़रमाते रहे हत्ता कि वोह लोग गरदनों तक धंस गए। अब वोह बहुत मिन्नत, लजाजत करते थे और क़ारून आप को अल्लाह की क़समें और रिश्ता व क़राबत के वासित़े देता था, मगर आप ने इल्तिफ़ात न फ़रमाया, यहां तक कि वोह बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई। क़तादा ने कहा कि वोह क़ियामत तक धंसते ही चले जाएंगे। बनी इसराईल ने कहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ाइन व अम्वाल की वज्ह से उस के लिये बद दुआ़ की। येह सुन कर आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो उस का मकान और उस के ख़ज़ाने व अम्वाल सब ज़मीन में धंस गए। **208 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से। **209 :** अपनी उस आरज़ू पर नादिम हो कर **210 :** जिस के लिये चाहे।

الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَ

का घर[211] हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और

الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۸۳﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ

आक़िबत परहेज़ गारों ही की है[212] जो नेकी लाए उस के लिये उस से बेहतर है[213] और जो

بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾

बदी लाए तो बद काम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था

اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْۤ اَعْلَمُ

बेशक जिस ने तुम पर क़ुरआन फ़र्ज़ किया[214] वोह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो[215] तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है

مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۸۵﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ

उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है[216] और तुम उम्मीद न रखते थे कि

يُّلْقٰۤى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا

किताब तुम पर भेजी जाएगी[217] हां तुम्हारे रब ने रह़मत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की

لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ

पुश्ती (मदद) न करना[218] और हरगिज़ वोह तुम्हें अल्लाह की आयतों से न रोकें बा'द इस के कि वोह तुम्हारी त़रफ़ उतारी गईं[219] और अपने रब

اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ

वقف لازم

की त़रफ़ बुलाओ[220] और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना[221] और अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उस के

211 : या'नी जन्नत 212 : महमूद। 213 : दस गुना सवाब। 214 : या'नी उस की तिलावत व तब्लीग़ और उस के अह़काम पर अ़मल लाज़िम किया 215 : या'नी मक्कए मुकर्रमा में। मुराद येह है कि अल्लाह तआ़ला आप को फ़त्ह़े मक्का के दिन मक्कए मुकर्रमा में बड़े शानो शकोह और इ़ज़्ज़तो वक़ार और ग़लबा व इक़्तिदार के साथ दाख़िल करेगा, वहां के रहने वाले सब आप के ज़ेरे फ़रमान होंगे, शिर्क और उस के ह़ामी ज़लीलो रुस्वा होंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयते करीमा जुह़फ़ा में नाज़िल हुई। जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने की त़रफ़ हिजरत करते हुए वहां पहुंचे और आप को अपनी और अपने आबा की जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा का शौक़ हुवा तो जिब्रीले अमीन आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि क्या ह़ुज़ूर को अपने शहर मक्कए मुकर्रमा का शौक़ है, फ़रमाया : हां उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है और येह आयते करीमा पढ़ी। معاد की तफ़्सीर मौत व क़ियामत व जन्नत से भी की गई है। 216 : या'नी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिये इस का अज्रो सवाब है और मुश्रिकीन गुमराही में हैं और सख़्त अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कहा था ''اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ'' या'नी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं। (مَعَاذَ اللّٰه)। 217 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह ख़ित़ाब ज़ाहिर में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को है और मुराद इस से मोमिनीन हैं। 218 : उन के मुईनो मददगार न होना। 219 : या'नी कुफ़्फ़ार की गुमराह कुन बातों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करना और उन्हें ठुकरा देना। 220 : ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की इ़बादत की दा'वत दो। 221 : उन की इआ़नत व मुवाफ़क़त न करना।

إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

सिवा कोई ख़ुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे[222]

सूरए अ़न्कबूत मक्किय्या है, इस में उन्हत्तर आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾

क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी[2]

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَ

और बेशक हम ने उन से अगलों को जांचा[3] तो ज़रूर **अल्लाह** सच्चों को देखेगा और

لَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّاٰتِ أَنْ

ज़रूर झूटों को देखेगा[4] या येह समझे हुए हैं वोह जो बुरे काम करते हैं[5] कि

يَّسْبِقُونَا ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾ مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللّٰهِ فَإِنَّ أَجَلَ

हम से कहीं निकल जाएंगे[6] क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं जिसे **अल्लाह** से मिलने की उम्मीद हो[7] तो बेशक **अल्लाह** की

222 : आख़िरत में और वोही आ'माल की जज़ा देगा। 1 : सूरए अ़न्कबूत मक्किय्या है, इस में सात रुकूअ़, उन्हत्तर आयतें, नव सो अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सो पेंसठ ह़र्फ़ हैं। 2 : शदाइद, तकालीफ़ और अन्वाअ़ मसाइब और ज़ौक़े त़ाअ़ात व तर्के शहवात व बज़्ले जान व माल से उन की ह़क़ीक़ते ईमान ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मोमिने मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन ह़ज़रात के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्हों ने इस्लाम का इक़रार किया तो अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें लिखा कि मह़्ज़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिजरत न करो। उन साहि़बों ने हिजरत की और ब क़स्दे मदीना रवाना हुए। मुश्रिकीन उन के दरपै हुए और उन से क़िताल किया। बा'ज़ ह़ज़रात उन में से शहीद हो गए बा'ज़ बच आए। उन के ह़क़ में येह दो आयतें नाज़िल हुईं। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद उन लोगों से सलमा बिन हिशाम और अ़याश बिन अबी रबीआ़ और वलीद बिन वलीद और अ़म्मार बिन यासिर वग़ैरा हैं जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए। और एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते अ़म्मार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा परस्ती की वज्ह से सताए जाते थे और कुफ़्फ़ार उन्हें सख़्त ईज़ाएं पहुंचाते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयतें ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ग़ुलाम ह़ज़रते मिहजअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह के ह़क़ में नाज़िल हुईं जो बद्र में सब से पहले शहीद होने वाले हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन की निस्बत फ़रमाया कि मिहजअ़ सय्यिदुश्शुहदा हैं और इस उम्मत में बाबे जन्नत की त़रफ़ पहले वोह पुकारे जाएंगे। इन के वालिदैन और इन की बीबी को इन का बहुत सदमा हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की फिर उन की तसल्ली फ़रमाई। 3 : त़रह़ त़रह़ की आज़्माइशों में डाला, बा'ज़ उन में से वोह हैं जो आरे से चीर डाले गए, बा'ज़ लोहे की कंघियों से पुर्ज़े पुर्ज़े किये गए और मक़ामे सिद्क़ो वफ़ा में साबित व क़ाइम रहे। 4 : हर एक का ह़ाल ज़ाहिर फ़रमा देगा। 5 : शिर्क व मआ़सी में मुब्तला हैं 6 : और हम उन से इन्तिक़ाम न लेंगे। 7 : बअ़्स व ह़िसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे।

اللهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ

मीआ़द ज़रूर आने वाली है[8] और वोही सुनता जानता है[9] और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे[10] तो अपने ही

لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

भले को कोशिश करता है[11] बेशक अल्लाह बे परवाह है सारे जहान से[12] और जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا

काम किये हम ज़रूर उन की बुराइयां उतार देंगे[13] और ज़रूर उन्हें उस काम पर बदला देंगे जो उन के सब

يَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ

कामों में अच्छा था[14] और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की[15] और अगर वोह तुझ से कोशिश करें

لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ

कि तू मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इ़ल्म नहीं तो उन का कहा न मान[16] मेरी ही त़रफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ

जो तुम करते थे[17] और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें नेकों

فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي

में शामिल करेंगे[18] और बा'ज़ आदमी कहते हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब अल्लाह की राह में उन्हें कोई तक्लीफ़ दी

8 : उस ने सवाब व अ़ज़ाब का जो वा'दा फ़रमाया है ज़रूर पूरा होने वाला है, चाहिये कि उस के लिये तय्यार रहे और अ़मले सालेह़ में जल्दी करे। 9 : बन्दों के अक़्वाल व अफ़्आ़ल को। 10 : ख़्वाह आ'दाए दीन से मुहा़रबा (जंग) कर के या नफ़्सो शैत़ान की मुख़ालफ़त कर के और त़ाअ़ते इलाही पर साबिर व क़ाइम रह कर 11 : इस का नफ़्अ़ व सवाब पाएगा। 12 : इन्स व जिन्न व मलाएका और उन के आ'माल व इ़बादात से, उस का अम्र व नह्य फ़रमाना बन्दों पर रह़मत व करम के लिये है। 13 : नेकियों के सबब। 14 : या'नी अ़मले नेक पर। 15 : एह़सान और नेक सुलूक की। **शाने नुज़ूल :** येह आयत और सूरए लुक़्मान और सूरए अह़क़ाफ़ की आयतें सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़क़ में व बक़ौले इब्ने इस्ह़ाक़ सा'द बिन मालिक ज़ोहरी के ह़क़ में नाज़िल हुईं, इन की मां ह़म्ना बिन्ते अबी सुफ़्यान बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स थी। ह़ज़रते सा'द साबिक़ीने अव्वलीन में से थे और अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करते थे। जब आप इस्लाम लाए तो आप की वालिदा ने कहा कि तू ने येह क्या नया काम किया, ख़ुदा की क़सम अगर तू इस से बाज़ न आया तो न मैं खाऊं न पियूं यहां तक कि मर जाऊं और तेरी हमेशा के लिये बदनामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाए। फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक शबाना रोज़ न खाया न पिया न साए में बैठी, इस से ज़ईफ़ हो गई। फिर एक रात दिन और इसी त़रह रही तब ह़ज़रते सा'द उस के पास आए और आप ने उस से फ़रमाया कि ऐ मां ! अगर तेरी सो 100 जानें हों और एक एक कर के सब ही निकल जाएं तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं, तू चाहे खा चाहे मत खा। जब वोह ह़ज़रते सा'द की त़रफ़ से मायूस हो गई कि येह अपना दीन छोड़ने वाले नहीं तो खाने पीने लगी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि वालिदैन के साथ नेक सुलूक किया जाए और अगर वोह कुफ़्रो शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाए। 16 : क्यूं कि जिस चीज़ का इ़ल्म न हो उस को किसी के कहे से मान लेना तक़्लीद है। मा'ना येह हुए कि वाक़ेअ़ में मेरा कोई शरीक नहीं तो इ़ल्म व तह़क़ीक़ से तो कोई भी किसी को मेरा शरीक मान ही नहीं सकता, मुह़ाल है। रहा तक़्लीदन बिग़ैर इ़ल्म के मेरे लिये शरीक मान लेना येह निहायत क़बीह़ है, इस में वालिदैन की हरगिज़ इत़ाअ़त न कर। **मस्अला :** ऐसी इत़ाअ़त किसी मख़्लूक़ की जाइज़ नहीं जिस में ख़ुदा की ना फ़रमानी हो। 17 : तुम्हारे किरदार की जज़ा दे कर 18 : कि उन के साथ ह़श्र फ़रमाएंगे, और सालिह़ीन से मुराद अम्बिया व औलिया हैं।

اللهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

जाती है[19] तो लोगों के फ़ितने को **अल्लाह** के अ़ज़ाब के बराबर समझते हैं[20] और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए[21]

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ

तो ज़रूर कहेंगे हम तो तुम्हारे ही साथ थे[22] क्या **अल्लाह** ख़ूब नहीं जानता जो कुछ जहां भर के

الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿۱۱﴾

दिलों में है[23] और ज़रूर **अल्लाह** ज़ाहिर कर देगा ईमान वालों को[24] और ज़रूर ज़ाहिर कर देगा मुनाफ़िक़ों को[25]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ

और काफ़िर मुसल्मानों से बोले हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे[26]

وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ

हालां कि वोह उन के गुनाहों में से कुछ न उठाएंगे बेशक वोह झूटे हैं और

لَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ٘ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا

बेशक ज़रूर अपने[27] बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ[28] और ज़रूर क़ियामत के दिन पूछे जाएंगे जो

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ

कुछ बोहतान उठाते थे[29] और बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो वोह उन में

اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

पचास साल कम हज़ार बरस रहा[30] तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वोह ज़ालिम थे[31]

19 : या'नी दीन के सबब से कोई तक्लीफ़ पहुंचती है जैसे कि कुफ़्फ़ार का ईज़ा पहुंचाना **20 :** और जैसा **अल्लाह** के अ़ज़ाब से डरना चाहिये था ऐसा ख़ल्क़ की ईज़ा से डरते हैं, ह़त्ता कि ईमान तर्क कर देते हैं और कुफ़्र इख़्तियार कर लेते हैं, येह ह़ाल मुनाफ़िक़ीन का है। **21 :** मसलन मुसल्मानों की फ़त्ह़ हो या उन्हें दौलत मिले **22 :** ईमान व इस्लाम में और तुम्हारी त़रह़ दीन पर साबित थे तो हमें उस में शरीक करो। **23 :** कुफ़्र या ईमान। **24 :** जो सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाए और बला व मुसीबत में अपने ईमान व इस्लाम पर साबित व क़ाइम रहे। **25 :** और दोनों फ़रीक़ों को जज़ा देगा। **26 :** कुफ़्फ़ारे मक्का ने मोमिनीने क़ुरैश से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन इख़्तियार करो तुम्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से जो मुसीबत पहुंचेगी उस के हम कफ़ील हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गरदन पर। या'नी अगर हमारे त़रीक़े पर रहने से **अल्लाह** तआ़ला ने तुम को पकड़ा और अ़ज़ाब किया तो तुम्हारा अ़ज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तक्ज़ीब फ़रमाई। **27 :** कुफ़्र व मआ़सी के **28 :** उन के गुनाहों के जिन्हें इन्हों ने गुमराह किया और राहे ह़क़ से रोका। ह़दीस शरीफ़ में है : जिस ने इस्लाम में कोई बुरा त़रीक़ा निकाला उस पर उस त़रीक़ा निकालने का गुनाह भी है और क़ियामत तक जो लोग उस पर अ़मल करें उन के गुनाह भी, बिग़ैर इस के कि उन पर से उन के बारे गुनाह में कुछ भी कमी हो। (مسلم شریف) **29 :** **अल्लाह** तआ़ला उन के आ'माल व इफ़्तिरा (बोहतान) सब का जानने वाला है लेकिन येह सुवाल तौबीख़ के लिये है। **30 :** इस तमाम मुद्दत में क़ौम को तौह़ीद व ईमान की दा'वत जारी रखी और उन की ईज़ाओं पर सब्र किया, इस पर भी वोह क़ौम बाज़ न आई और तक्ज़ीब करती रही। **31 :** तूफ़ान में ग़र्क़ हो गए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई है कि आप से पहले अम्बिया के साथ उन की क़ौमों ने बहुत सख़्तियां की हैं ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام

فَاَنۡجَیۡنٰهُ وَ اَصۡحٰبَ السَّفِیۡنَةِ وَ جَعَلۡنٰهَاۤ اٰیَةً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۵﴾ وَ اِبۡرٰهِیۡمَ

तो हम ने उसे[32] और कश्ती वालों को[33] बचा लिया और उस कश्ती को सारे जहां के लिये निशानी किया[34] और इब्राहीम को[35]

اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ وَ اتَّقُوۡهُ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ

जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि **अल्लाह** को पूजो और उस से डरो इस में तुम्हारा भला है अगर तुम

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّمَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَوۡثَانًا وَّ تَخۡلُقُوۡنَ اِفۡکًا ؕ

जानते तुम तो **अल्लाह** के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूट गढ़ते हो[36]

اِنَّ الَّذِیۡنَ تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَا یَمۡلِکُوۡنَ لَکُمۡ رِزۡقًا فَابۡتَغُوۡا

बेशक वोह जिन्हें तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो **अल्लाह**

عِنۡدَ اللّٰهِ الرِّزۡقَ وَ اعۡبُدُوۡهُ وَ اشۡکُرُوۡا لَهٗ ؕ اِلَیۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۷﴾ وَ اِنۡ

के पास रिज़्क़ ढूंडो[37] और उस की बन्दगी करो और उस का एहसान मानो तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है[38] और अगर

تُکَذِّبُوۡا فَقَدۡ کَذَّبَ اُمَمٌ مِّنۡ قَبۡلِکُمۡ ؕ وَ مَا عَلَی الرَّسُوۡلِ اِلَّا الۡبَلٰغُ

तुम झुटलाओ[39] तो तुम से पहले कितने ही गुरौह झुटला चुके हैं[40] और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़

الۡمُبِیۡنُ ﴿۱۸﴾ اَوَ لَمۡ یَرَوۡا کَیۡفَ یُبۡدِئُ اللّٰهُ الۡخَلۡقَ ثُمَّ یُعِیۡدُهٗ ؕ اِنَّ

पहुंचा देना और क्या उन्हों ने न देखा **अल्लाह** क्यूंकर ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है[41] फिर उसे दोबारा बनाएगा[42] बेशक

ذٰلِکَ عَلَی اللّٰهِ یَسِیۡرٌ ﴿۱۹﴾ قُلۡ سِیۡرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ فَانۡظُرُوۡا کَیۡفَ بَدَاَ

येह **अल्लाह** को आसान है[43] तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र कर के देखो[44] **अल्लाह** क्यूंकर पहले

الۡخَلۡقَ ثُمَّ اللّٰهُ یُنۡشِئُ النَّشۡاَۃَ الۡاٰخِرَۃَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ

बनाता है[45] फिर **अल्लाह** दूसरी उठान उठाता है[46] बेशक **अल्लाह** सब कुछ

पचास कम हज़ार (950) बरस दा'वत फ़रमाते रहे और इस त़वील मुद्दत में उन की क़ौम के बहुत क़लील लोग ईमान लाए, तो आप कुछ ग़म न करें क्यूं कि بِفَضۡلِهٖ تَعَالٰی आप की क़लील मुद्दत की दा'वत से ख़ल्क़े कसीर मुशर्रफ़ ब ईमान हो चुकी है। **32 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام को **33 :** जो आप के साथ थे, उन की ता'दाद अठत्तर थी, निस्फ़ मर्द निस्फ़ औ़रतें। उन में ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام के फ़रज़न्द साम व हाम व याफ़िस और उन की बीबियां भी शामिल हैं **34 :** कहा गया है कि वोह कश्ती "जूदी" पहाड़ पर मुद्दते दराज़ तक बाक़ी रही। **35 :** याद करो! **36 :** कि बुतों को ख़ुदा का शरीक कहते हो। **37 :** वोही राज़िक़ है। **38 :** आख़िरत में। **39 :** और मुझे न मानो तो इस से मेरा कोई ज़रर नहीं। मैं ने राह दिखा दी, मो'जिज़ात पेश कर दिये, मेरा फ़र्ज़ अदा हो गया। इस पर भी अगर तुम न मानो **40 :** अपने अम्बिया को। जैसे कि क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा। उन के झुटलाने का अन्जाम येही हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक किया। **41 :** कि पहले उन्हें नुत़्फ़ा बनाता है, फिर ख़ून बस्ता की सूरत देता है, फिर गोश्त पारा बनाता है, इस त़रह़ तदरीजन उन की ख़िल्क़त को मुकम्मल करता है। **42 :** आख़िरत में बअ़्स के वक़्त। **43 :** या'नी पहली बार पैदा करना और मरने के बा'द फिर दोबारा बनाना। **44 :** गुज़श्ता क़ौमों के दियार व आसार को कि

قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

कर सकता है अ़ज़ाब देता है जिसे चाहे[47] और रह्म फ़रमाता है जिस पर चाहे[48] और तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

और न तुम ज़मीन में[49] क़ाबू से निकल सको और न आस्मान में[50] और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ

न कोई काम बनाने वाला और न मददगार और वोह जिन्हों ने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना[51]

اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ

वोह हैं जिन्हें मेरी रह़मत की आस नहीं और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[52] तो उस की

جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ

क़ौम को कुछ जवाब बन न आया मगर येह बोले उन्हें क़त्ल कर दो या जला दो[53] तो अल्लाह ने उसे[54] आग से बचा लिया[55]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[56] और इब्राहीम ने[57] फ़रमाया तुम ने तो अल्लाह के सिवा

اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ

येह बुत बना लिये हैं जिन से तुम्हारी दोस्ती येही दुन्या की ज़िन्दगी तक है[58] फिर क़ियामत के दिन तुम में

بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

एक दूसरे के साथ कुफ़्र करेगा और एक दूसरे पर ला'नत डालेगा[59] और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है[60] और तुम्हारा

45 : मख़्लूक़ को फिर उसे मौत देता है 46 : या'नी जब येह यक़ीन से जान लिया कि पहली मरतबा अल्लाह ही ने पैदा किया तो मा'लूम हो गया कि उस ख़ालिक़ का मख़्लूक़ को मौत देने के बा'द दोबारा पैदा करना कुछ भी मुतअ़ज़्ज़िर (मुश्किल) नहीं। 47 : अपने अ़द्ल से 48 : अपने फ़ज़्ल से 49 : अपने रब के 50 : उस से बचने और भागने की कहीं मजाल नहीं। या येह मा'ना हैं कि न ज़मीन वाले उस के हुक्म व क़ज़ा से कहीं भाग सकते हैं न आस्मान वाले। 51 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ और बअ़्स पर ईमान न लाए। 52 : इस पन्दो मौइज़त के बा'द फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि जब आप ने अपनी क़ौम को ईमान की दा'वत दी और दलाइल क़ाइम किये और नसीहतें फ़रमाईं 53 : येह उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा या सरदारों ने अपने मुत्तबिईन से। बहर ह़ाल कुछ कहने वाले थे, कुछ इस पर राज़ी होने वाले, थे सब मुत्तफ़िक़। इस लिये वोह सब क़ाइलीन के हुक्म में हैं। 54 : या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को जब कि उन की क़ौम ने आग में डाला। 55 : उस आग को ठन्डा कर के और ह़ज़रते इब्राहीम के लिये सलामती बना कर। 56 : अ़जीब अ़जीब निशानियां, आग का इस कसरत के बा वुजूद असर न करना और सर्द हो जाना और उस की जगह गुलशन पैदा हो जाना और येह सब पल भर से भी कम में होना। 57 : अपनी क़ौम से 58 : फिर मुन्क़तअ़ हो जाएगी और आख़िरत में कुछ काम न आएगी। 59 : बुत अपने पुजारियों से बेज़ार होंगे और सरदार अपने मानने वालों से और मानने वाले सरदारों पर ला'नत करेंगे। 60 : बुतों का भी और पुजारियों का भी, उन में के सरदारों का भी और उन के फ़रमां बरदारों का भी।

مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوۡطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىۡ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّىۡ ؕ اِنَّهٗ

कोई मददगार नहीं[61] तो लूत़ उस पर ईमान लाया[62] और इब्राहीम ने कहा मैं[63] अपने रब की त़रफ़ हिजरत करता हूं[64] बेशक

هُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبۡنَا لَهٗۤ اِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ وَجَعَلۡنَا فِىۡ

वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है और हम ने उसे[65] इस्ह़ाक़ और या'क़ूब अ़त़ा फ़रमाए और हम ने उस की

ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالۡكِتٰبَ وَاٰتَيۡنٰهُ اَجۡرَهٗ فِى الدُّنۡيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ

औलाद में नुबुव्वत[66] और किताब रखी[67] और हम ने दुन्या में उस का सवाब उसे अ़त़ा फ़रमाया[68] और बेशक आख़िरत में वोह

لَمِنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الۡفَاحِشَةَ

हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है[69] और लूत़ को नजात दी जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम बेशक बे ह़याई का काम करते हो

مَا سَبَقَكُمۡ بِهَا مِنۡ اَحَدٍ مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ وَ

कि तुम से पहले दुन्या भर में किसी ने न किया[70] क्या तुम मर्दों से बद फ़े'ली करते हो और

تَقۡطَعُوۡنَ السَّبِيۡلَ ۙ وَتَاۡتُوۡنَ فِىۡ نَادِيۡكُمُ الۡمُنۡكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ

राह मारते हो[71] और अपनी मजलिस में बुरी बात करते हो[72] तो उस की क़ौम का कुछ

قَوۡمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوا ائۡتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿٢٩﴾

जवाब न हुवा मगर येह कि बोले हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो[73]

61 : जो तुम्हें अ़ज़ाब से बचाए। और जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسۡلِيۡمَات आग से सलामत निकले और उस ने आप को कोई ज़रर न पहुंचाया 62 : या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام ने येह मो'जिज़ा देख कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام की रिसालत की तस्दीक़ की। आप ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام के सब से पहले तस्दीक़ करने वाले हैं। ईमान से तस्दीक़े रिसालत ही मुराद है क्यूं कि अस्ल तौह़ीद का ए'तिक़ाद तो उन को हमेशा से ह़ासिल है, इस लिये कि अम्बिया हमेशा ही मोमिन होते हैं और कुफ़्र उन से किसी ह़ाल में मुतसव्वर नहीं। 63 : अपनी क़ौम को छोड़ कर 64 : जहां उस का हुक्म हो। चुनान्चे, आप ने सवादे इ़राक़ से सर ज़मीने शाम की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई, इस हिजरत में आप के साथ आप की बीबी सारह और ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام थे। 65 : बा'द ह़ज़रते इस्माईल عَلَيۡهِ السَّلَام के 66 : कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام के बा'द जितने अम्बिया हुए सब आप की नस्ल से हुए। 67 : किताब से तौरैत, इन्जील, ज़बूर, क़ुरआन शरीफ़ मुराद हैं। 68 : कि पाक ज़ुर्रिय्यत अ़त़ा फ़रमाई, पैग़म्बरी उन की नस्ल में रखी, किताबें उन पैग़म्बरों को अ़त़ा कीं जो उन की औलाद में हैं और उन को ख़ल्क़ में मह़बूब व मक़्बूल किया कि तमाम अहले मिलल व अद्यान उन से मह़ब्बत रखते हैं और उन की त़रफ़ निस्बते फ़ख़्र जानते हैं और उन के लिये इख़्तितामे दुन्या तक दुरूद मुक़र्रर कर दिया। येह तो वोह है जो दुन्या में अ़त़ा फ़रमाया 69 : जिन के लिये बड़े बुलन्द दरजे हैं। 70 : इस बे ह़याई की तफ़्सीर इस से अगली आयत में बयान होती है। 71 : राहगीरों को क़त्ल कर के उन के माल लूट कर। और येह भी कहा गया है कि वोह लोग मुसाफ़िरों के साथ बद फ़े'ली करते थे ह़त्ता कि लोगों ने उस त़रफ़ गुज़रना मौक़ूफ़ कर दिया था। 72 : जो अ़क़्लन व उ़र्फ़न क़बीह़ व मम्नूअ़ है जैसे गाली देना, फ़ोह़्श बकना, ताली और सीटी बजाना एक दूसरे के कंकरियां मारना, रस्ता चलने वालों पर कंकरी वग़ैरा फेंकना, शराब पीना, तमस्ख़ुर और गन्दी बातें करना एक दूसरे पर थूकना वग़ैरा ज़लील अफ़्आ़ल व ह़रकात जिन की क़ौमे लूत़ आ़दी थी। ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام ने इस पर उन्हें मलामत की 73 : इस बात में कि येह अफ़्आ़ल क़बीह़ हैं और ऐसा करने वाले पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा। येह उन्हों ने बराहे इस्तिहज़ा (बत़ौरे मज़ाक़) कहा। जब ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام को उस क़ौम के राहे रास्त पर आने की कुछ उम्मीद न रही तो आप ने बारगाहे इलाही में।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद कर[74] इन फ़सादी लोगों पर[75] और जब हमारे फ़िरिश्ते

اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ اِنَّ اَهْلَهَا

इब्राहीम के पास मुज़्दा ले कर आए[76] बोले हम ज़रूर उस शहर वालों को हलाक करेंगे[77] बेशक उस के बसने वाले

كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا

सितम गार हैं कहा[78] उस में तो लूत़ है[79] फ़िरिश्ते बोले हमें ख़ूब मा'लूम है जो कुछ उस में है

لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ

ज़रूर हम उसे[80] और उस के घर वालों को नजात देंगे मगर उस की औ़रत को वोह रह जाने वालों में है[81] और जब हमारे

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ

फ़िरिश्ते लूत़ के पास[82] आए उन का आना उसे ना गवार हुवा और उन के सबब दिलतंग हुवा[83] और उन्हों ने कहा न डरिये[84]

وَلَا تَحْزَنْ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

और न ग़म कीजिये[85] बेशक हम आप को और आप के घर वालों को नजात देंगे मगर आप की औ़रत वोह रह जाने वालों में है

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

बेशक हम इस शहर वालों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारने वाले हैं बदला इन की

يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى

ना फ़रमानियों का और बेशक हम ने इस से रोशन निशानी बाक़ी रखी अ़क़्ल वालों के लिये[86] मद्यन

مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ

की त़रफ़ उन के हमक़ौम शुऐ़ब को भेजा तो उस ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** की बन्दगी करो और पिछले दिन की

74 : नुज़ूले अ़ज़ाब के बारे में मेरी बात पूरी कर के 75 : **अल्लाह** तआ़ला ने आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाई। 76 : उन के बेटे और पोते ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام का। 77 : उस शहर का नाम सदूम था। 78 : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने 79 : और लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام तो **अल्लाह** के नबी और उस के बरगुज़ीदा बन्दे हैं। 80 : या'नी लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को 81 : अ़ज़ाब में। 82 : ख़ूब सूरत मेहमानों की शक्ल में 83 : क़ौम के अफ़्आ़ल व ह़रकात और उन की ना लाइक़ी का ख़याल कर के। उस वक़्त फ़िरिश्तों ने ज़ाहिर किया कि वोह **अल्लाह** के भेजे हुए हैं। 84 : क़ौम से 85 : हमारा कि क़ौम के लोग हमारे साथ कोई बे अदबी या गुस्ताख़ी करें, हम फ़िरिश्ते हैं, हम लोगों को हलाक करेंगे और 86 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह रोशन निशानी क़ौमे लूत़ के वीरान मकान हैं।

الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ﴿۳۶﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ

उम्मीद रखो[87] और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें ज़ल्ज़ले

الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۳۷﴾ وَ عَادًا وَّ ثَمُوْدَا۠ وَ قَدْ تَّبَیَّنَ

ने आ लिया तो सुब्ह् अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए[88] और आ़द और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें[89]

لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَ زَیَّنَ لَهُمُ الشَّیْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

उन की बस्तियां मा'लूम हो चुकी हैं[90] और शैतान ने उन के कौतक (करतूत)[91] उन की निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह

السَّبِیْلِ وَ كَانُوْا مُسْتَبْصِرِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَ قَارُوْنَ وَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ ۫ وَ

से रोका और उन्हें सूझता था[92] और क़ारून और फ़िरऔ़न और हामान को[93] और

لَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰی بِالْبَیِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِی الْاَرْضِ وَ مَا كَانُوْا

बेशक उन के पास मूसा रोशन निशानियां ले कर आया तो उन्हों ने ज़मीन में तकब्बुर किया और वोह हम से

سٰبِقِیْنَ ﴿۳۹﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَیْهِ حَاصِبًا ۚ

निकल जाने वाले न थे[94] तो उन में हर एक को हम ने उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में किसी पर हम ने पथराव भेजा[95]

وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّیْحَةُ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ

और उन में किसी को चिंघाड़ ने आ लिया[96] और उन में किसी को ज़मीन में धंसा दिया[97] और

مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِیَظْلِمَهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

उन में किसी को डुबो दिया[98] और अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करे[99] हां वोह खुद ही[100] अपनी जानों पर

یَظْلِمُوْنَ ﴿۴۰﴾ مَثَلُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِیَآءَ كَمَثَلِ

ज़ुल्म करते थे उन की मिसाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिये हैं[101]

87 : या'नी रोज़े क़ियामत की, ऐसे अफ़आ़ल बजा ला कर जो सवाबे आख़िरत का बाइ़स हों। 88 : मुर्दे बेजान। 89 : ऐ अहले मक्का ! 90 : हिज्र और यमन में, जब तुम अपने सफ़रों में वहां गुज़रे हो। 91 : कुफ़्रो मआसी 92 : साहिबे अ़क़्ल थे, ह़क़ व बातिल में तमीज़ कर सकते थे लेकिन उन्हों ने अ़क़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया। 93 : अल्लाह तआ़ला ने हलाक फ़रमाया। 94 : कि हमारे अ़ज़ाब से बच सकते। 95 : और वोह क़ौमे लूत़ थी जिन को छोटे छोटे संगरेज़ों से हलाक किया गया जो तेज़ हवा से उन पर लगते थे। 96 : या'नी क़ौमे समूद कि होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक की गई। 97 : या'नी क़ारून और उस के साथियों को 98 : जैसे क़ौमे नूह़ को और फ़िरऔ़न को और उस की क़ौम को। 99 : वोह किसी को बिग़ैर गुनाह के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार नहीं करता। 100 : ना फ़रमानियां कर के और कुफ़्र व तुग़्यान (सरकशी) इख़्तियार कर के 101 : या'नी बुतों को मा'बूद ठहराया है, उन के साथ उम्मीदें वाबस्ता कर रखी हैं और वाक़ेअ़ में उन के इ़ज्ज़ व बे इख़्तियारी की मिसाल येह है जो आगे ज़िक्र फ़रमाई जाती है।

الْعَنْكَبُوتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ

मकड़ी की त़रह़ है उस ने जाले का घर बनाया[102] और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी

الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

का घर[103] क्या अच्छा होता अगर जानते[104] अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उस के सिवा पूजा

مِنْ شَيْءٍ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۴۲﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ

करते हैं[105] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है[106] और येह मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं

وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ

और उन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले[107] अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन ह़क़ बनाए

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۴﴾ ع

बेशक इस में निशानी है[108] मुसल्मानों के लिये

102 : अपने रहने के लिये। न उस से गरमी दूर हो न सरदी, न गर्दो गुबार व बारिश किसी चीज़ से ह़िफ़ाज़त। ऐसे ही बुत हैं कि अपने पुजारियों को न दुन्या में नफ़्अ़ पहुंचा सकें न आख़िरत में कोई ज़रर पहुंचा सकें। **103 :** ऐसे ही सब दीनों में कमज़ोर और निकम्मा दीन बुत परस्तों का दीन है। **फ़ाएदा :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है आप ने फ़रमाया : अपने घरों से मकड़ियों के जाले दूर करो येह नादारी का बाइ़स होते हैं। **104 :** कि उन का दीन इस क़दर निकम्मा है। **105 :** कि वोह कुछ ह़क़ीक़त नहीं रखती। **106 :** तो आ़क़िल को कब शायान है कि इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले क़ादिर मुख़्तार की इ़बादत छोड़ कर बे इ़ल्म बे इख़्तियार पथ्थरों की पूजा करे। **107 :** या'नी उन के ह़ुस्नो ख़ूबी और उन के नफ़्अ़ और फ़ाएदे और उन की ह़िक्मत को इ़ल्म वाले समझते हैं, जैसा कि इस मिसाल ने मुश्रिक और मुवह़्ह़िद का ह़ाल ख़ूब अच्छी त़रह़ ज़ाहिर कर दिया और फ़र्क़ वाज़ेह़ फ़रमा दिया। क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने त़न्ज़ के त़ौर पर कहा था कि अल्लाह तआ़ला मख्खी और मकड़ी की मिसालें बयान फ़रमाता है और इस पर उन्हों ने हंसी बनाई थी। इस आयत में उन का रद कर दिया गया कि वोह जाहिल हैं, तम्सील की ह़िक्मत को नहीं जानते, मिसाल से मक़्सूद तफ़्हीम होती है और जैसी चीज़ हो उस की शान ज़ाहिर करने के लिये वैसी ही मिसाल मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है। तो बात़िल और कमज़ोर दीन के ज़ो'फ़ व बुत़लान के इज़्हार के लिये येह मिसाल निहायत ही नाफ़ेअ़ है, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल व इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया वोह समझते हैं। **108 :** उस की क़ुदरत व ह़िक्मत और उस की तौह़ीद व यक्ताई पर दलालत करने वाली।

اُتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنَ الۡکِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡهٰی

ऐ महबूब पढ़ो जो किताब तुम्हारी त़रफ़ वह्य की गई[109] और नमाज़ क़ाइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है

عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَ الۡمُنۡکَرِ ؕ وَ لَذِکۡرُ اللّٰهِ اَکۡبَرُ ؕ وَ اللّٰهُ یَعۡلَمُ مَا

बे ह़याई और बुरी बात से[110] और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा[111] और **अल्लाह** जानता है जो

تَصۡنَعُوۡنَ ﴿۴۵﴾ وَ لَا تُجَادِلُوۡۤا اَهۡلَ الۡکِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیۡ هِیَ اَحۡسَنُ ٭ۖ اِلَّا

तुम करते हो और ऐ मुसल्मानो ! किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर त़रीक़े पर[112] मगर

الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡهُمۡ وَ قُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡنَا وَ اُنۡزِلَ

वोह जिन्हों ने उन में से ज़ुल्म किया[113] और कहो[114] हम ईमान लाए उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और जो तुम्हारी

اِلَیۡکُمۡ وَ اِلٰـهُنَا وَ اِلٰـهُکُمۡ وَاحِدٌ وَّ نَحۡنُ لَهٗ مُسۡلِمُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَ کَذٰلِکَ اَنۡزَلۡنَاۤ

त़रफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मा'बूद है और हम उस के हुज़ूर गरदन रखे हैं[115] और ऐ महबूब यूंही तुम्हारी

109 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ कि इस की तिलावत इबादत भी है और इस में लोगों के लिये पन्दो नसीह़त भी और अह़काम व आदाब व मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम भी। **110 :** या'नी मम्नूआ़ते शरइय्या से। लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और इस को अच्छी त़रह़ अदा करता है नतीजा येह होता है कि एक न एक दिन वोह उन बुराइयों को तर्क कर देता है जिन में मुब्तला था। ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि एक अन्सारी जवान सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से कबीरा गुनाहों का इरतिकाब करता था, हुज़ूर से उस की शिकायत की गई। फ़रमाया : उस की नमाज़ किसी रोज़ उस को इन बातों से रोक देगी। चुनान्चे बहुत ही क़रीब ज़माने में उस ने तौबा की और उस का ह़ाल बेहतर हो गया। ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि जिस की नमाज़ उस को बे ह़याई और मम्नूआ़त से न रोके वोह नमाज़ ही नहीं। **111 :** कि वोह अफ़्ज़ले त़ाआ़त है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें न बताऊं वोह अ़मल जो तुम्हारे आ'माल में बेहतर और रब के नज़्दीक पाकीज़ा तर निहायत बुलन्द रुत्बा और तुम्हारे लिये सोने चांदी देने से बेहतर और जिहाद में लड़ने और मारे जाने से बेहतर है ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : बेशक या रसूलल्लाह ! फ़रमाया : वोह **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र है। तिरमिज़ी ही की दूसरी ह़दीस में है कि सह़ाबा ने हुज़ूर से दरयाफ़्त किया था कि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक किन बन्दों का दरजा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : ब कसरत ज़िक्र करने वालों का। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : और ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला ? फ़रमाया : अगर वोह अपनी तलवार से कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को यहां तक मारे कि तलवार टूट जाए और वोह ख़ून में रंग जाए जब भी ज़ाकिरीन ही का दरजा उस से बुलन्द है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने इस आयत की तफ़्सीर येह फ़रमाई है कि **अल्लाह** तआ़ला का अपने बन्दों को याद करना बहुत बड़ा है। और एक क़ौल इस की तफ़्सीर में येह है कि **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र बड़ा है, बे ह़याई और बुरी बातों से रोकने और मन्अ़ करने में। **112 :** **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ उस की आयात से दा'वत दे कर और हुज्जतों पर आगाह कर के। **113 :** ज़ियादती में ह़द से गुज़र गए, इनाद इख़्तियार किया, नसीह़त न मानी नरमी से नफ़्अ़ न उठाया, उन के साथ ग़िल्ज़त (शिद्दत) और सख़्ती इख़्तियार करो। और एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि जिन लोगों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को ईज़ा दी या जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला के लिये बेटा और शरीक बताया उन के साथ सख़्ती करो। या येह मा'ना हैं कि ज़िम्मी जिज़्या अदा करने वालों के साथ अह़्सन त़रीक़े पर मुजादला करो, मगर जिन्हों ने ज़ुल्म किया और ज़िम्मा से निकल गए और जिज़्ये को मन्अ़ किया उन से मुजादला तलवार के साथ है। **मस्अला :** इस आयत से कुफ़्फ़ार के साथ दीनी उमूर में मुनाज़रा करने का जवाज़ साबित होता है और ऐसे ही इल्मे कलाम सीखने का जवाज़ भी। **114 :** अहले किताब से जब वोह तुम से अपनी किताबों का कोई मज़्मून बयान करें **115 :** ह़दीस शरीफ़ में है : जब अहले किताब तुम से कोई मज़्मून बयान करें तो तुम न उन की तस्दीक़ करो न तक्ज़ीब करो, येह कह दो कि हम **अल्लाह** तआ़ला पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए, तो अगर वोह मज़्मून उन्हों ने ग़लत़ बयान किया है तो उस की तस्दीक़ के गुनाह से तुम बचे रहोगे और अगर मज़्मून सह़ीह़ था तो तुम उस की तक्ज़ीब से मह़फ़ूज़ रहोगे।

اِلَیْكَ الْكِتٰبَؕ فَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖۚ وَ مِنْ هٰۤؤُلَآءِ

तरफ़ किताब उतारी[116] तो वोह जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई[117] उस पर ईमान लाते हैं और कुछ उन में से हैं[118]

مَنْ یُّؤْمِنُ بِهٖؕ وَ مَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ مَا كُنْتَ تَتْلُوْا

जो उस पर ईमान लाते हैं और हमारी आयतों से मुन्किर नहीं होते मगर काफ़िर[119] और इस[120] से पहले

مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾

तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूं होता[121] तो बातिल वाले ज़रूर शक लाते[122]

بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَؕ وَ مَا یَجْحَدُ

बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इ़ल्म दिया गया[123] और हमारी आयतों का

بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖؕ قُلْ

इन्कार नहीं करते मगर ज़ालिम[124] और बोले[125] क्यूं न उतरीं कुछ निशानियां इन पर इन के रब की तरफ़ से[126] तुम फ़रमाओ

اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِؕ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۵۰﴾ اَوَ لَمْ یَكْفِهِمْ اَنَّاۤ

निशानियां तो **अल्लाह** ही के पास हैं[127] और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला हूं[128] और क्या येह उन्हें बस नहीं

اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ یُتْلٰى عَلَیْهِمْؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّ ذِكْرٰى

कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है[129] बेशक इस में रहमत और नसीहत है

116 : कुरआने पाक जैसे उन की तरफ़ तौरैत वग़ैरा उतारी थीं। **117 :** या'नी जिन्हें तौरैत दी जैसे कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब। **फ़ाएदा :** येह सूरत मक्किय्या है और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब मदीने में ईमान लाए, **अल्लाह** तआ़ला ने इस से पहले उन की ख़बर दी, येह ग़ैबी ख़बरों में से है। (جمل) **118 :** या'नी अहले मक्का में से **119 :** जो कुफ़्र में निहायत सख़्त हैं। "जुहूद" उस इन्कार को कहते हैं जो मा'रिफ़त के बा'द हो या'नी जानबूझ कर मुकरना। और वाक़िआ़ भी येही था कि यहूद ख़ूब पहचानते थे कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के सच्चे नबी हैं और कुरआन हक़ है, येह सब कुछ जानते हुए उन्हों ने इनादन इन्कार किया। **120 :** कुरआन के नाज़िल होने **121 :** या'नी आप लिखते पढ़ते होते **122 :** या'नी अहले किताब कहते कि हमारी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की सिफ़त येह मज़्कूर है कि वोह उम्मी होंगे। न लिखेंगे, न पढ़ेंगे। मगर उन्हें इस शक का मौक़अ़ ही न मिला। **123 :** ज़मीर هُوَ का मरजअ़ कुरआन है, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि कुरआने करीम रोशन आयतें हैं जो उ़लमा और हुफ़्फ़ाज़ के सीनों में महफ़ूज़ हैं। रोशन आयत होने के येह मा'ना कि वोह ज़ाहिरुल ए'जाज़ हैं और येह दोनों बातें कुरआने पाक के साथ ख़ास हैं और कोई ऐसी किताब नहीं जो मो'जिज़ा हो और न ऐसी कि हर ज़माने में सीनों में महफ़ूज़ रही हो। और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने هُوَ की ज़मीर का मरजअ़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को क़रार दे कर आयत के येह मा'ना बयान फ़रमाए कि सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم साहिब हैं उन आयाते बय्यिनात के जो उन लोगों के सीनों में महफ़ूज़ हैं जिन्हें अहले किताब में से इ़ल्म दिया गया क्यूं कि वोह अपनी किताबों में आप की ना'त व सिफ़त पाते हैं। (خازن) **124 :** या'नी यहूदे अ़नूद कि बा'द ज़ुहूरे मो'जिज़ात के जान पहचान कर इनादन मुन्किर होते हैं। **125 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **126 :** मिस्ल नाक़ए हज़रते सालेह व अ़साए हज़रते मूसा और माइदए हज़रते ईसा के عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **127 :** हस्बे हिक्मत जो चाहता है नाज़िल फ़रमाता है **128 :** ना फ़रमानी करने वालों को अ़ज़ाब का और इसी का मुकल्लफ़ हूं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला कुफ़्फ़ारे मक्का के इस क़ौल का जवाब इर्शाद फ़रमाता है : **129 :** मा'ना येह हैं कि कुरआने करीम मो'जिज़ा है अम्बियाए मुतक़द्दिमीन के मो'जिज़ात से अतम्मो अक्मल और तमाम निशानियों से तालिबे हक़ को बे नियाज़ करने वाला क्यूं कि जब तक ज़माना है कुरआने करीम बाक़ी

لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ شَهِیْدًا ۚ یَعْلَمُ مَا

ईमान वालों के लिये तुम फ़रमाओ अल्लाह बस (काफ़ी) है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह[130] जानता है जो

فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ

कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और वोह जो बातिल पर यक़ीन लाए और अल्लाह के मुन्किर हुए

اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ یَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ لَوْ لَاۤ اَجَلٌ

वोही घाटे में हैं और तुम से अज़ाब की जल्दी करते हैं[131] और अगर एक ठहराई

مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَ لَیَاْتِیَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۵۳﴾

मुद्दत न होती[132] तो ज़रूर उन पर अज़ाब आ जाता[133] और ज़रूर उन पर अचानक आएगा जब वोह बे ख़बर होंगे

یَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِیْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِیْنَ ﴿۵۴﴾ ۙ یَوْمَ

तुम से अज़ाब की जल्दी मचाते हैं और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को[134] जिस दिन

یَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَ یَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا

उन्हें ढांपेगा अज़ाब उन के ऊपर और उन के पाउं के नीचे से और फ़रमाएगा चखो

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۵﴾ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ اَرْضِیْ وَاسِعَةٌ فَاِیَّایَ

अपने किये का मज़ा[135] ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है तो

فَاعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآىٕقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَیْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ

मेरी ही बन्दगी करो[136] हर जान को मौत का मज़ा चखना है[137] फिर हमारी ही त़रफ़ फिरोगे[138] और

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِیْ

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बालाख़ानों पर जगह देंगे जिन के

व साबित रहेगा और दूसरे मो'जिज़ात की त़रह ख़त्म न होगा। **130 :** मेरे सिद्क़े रिसालत और तुम्हारी तक्ज़ीब का मो'जिज़ात से मेरी ताईद फ़रमा कर। **131 :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थरों की बारिश कराइये। **132 :** जो अल्लाह तआ़ला ने मुअ़य्यन की है और उस मुद्दत तक अ़ज़ाब का मुअख़्ख़र फ़रमाना मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है **133 :** और ताख़ीर न होती **134 :** इस से उन में का कोई भी न बचेगा। **135 :** या'नी अपने आ'माल की जज़ा। **136 :** जिस ज़मीन में ब सहूलत इ़बादत कर सको। मा'ना येह हैं कि जब मोमिन को किसी सर ज़मीन में अपने दीन पर क़ाइम रहना और इ़बादत करना दुश्वार हो तो चाहिये कि वोह ऐसी सर ज़मीन की त़रफ़ हिजरत करे जहां आसानी से इ़बादत कर सके और दीन की पाबन्दी में दुश्वारियां दरपेश न हों। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ुअ़फ़ाए मुस्लिमीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हें वहां रह कर इस्लाम के इज़्हार में ख़त़रे और तक्लीफ़ें थीं और निहायत ज़ीक़ (तंगी) में थे, उन्हें हुक्म दिया गया कि मेरी बन्दगी तो ज़रूर है, यहां रह कर न कर सको तो मदीना शरीफ़ को हिजरत कर जाओ वोह वसीअ़ है वहां अम्न है। **137 :** और इस दारे फ़ानी को छोड़ना ही है। **138 :** सवाब व अ़ज़ाब और जज़ाए आ'माल के लिये, तो लाज़िम

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ

नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उन में रहेंगे क्या ही अच्छा अज्र काम वालों का[139] वोह जिन्हों ने

صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ

सब्र किया[140] और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं[141] और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते[142]

اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ

अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें[143] और वोही सुनता जानता है[144] और अगर तुम उन से पूछो[145] किस ने

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ

बनाए आस्मान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चांद तो ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने

فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ

तो कहां औंधे जाते हैं[146] **अल्लाह** कुशादा करता है रिज़्क़ अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस

لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ

के लिये चाहे बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है और जो तुम उन से पूछो किस ने उतारा आस्मान से

مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ

पानी तो इस के सबब ज़मीन ज़िन्दा कर दी मरे पीछे ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने[147] तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां

لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ

अल्लाह को बल्कि उन में अक्सर बे अक़्ल हैं[148] और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल

है कि हमारे दीन पर क़ाइम रहो और अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये हिजरत करो। **139 :** जो **अल्लाह** तआला की इताअत बजा लाए। **140 :** सख़्तियों पर और किसी शिद्दत में अपने दीन को न छोड़ा, मुशिरकीन की ईज़ा सही, हिजरत इख़्तियार कर के दीन की ख़ातिर वतन को छोड़ना गवारा किया। **141 :** तमाम उमूर में। **142 शाने नुज़ूल :** मक्कए मुकर्रमा में मोमिनीन को मुशिरकीन शबो रोज़ तरह तरह की ईज़ाएं देते रहते थे। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से मदीनए तय्यिबा की तरफ़ हिजरत करने को फ़रमाया तो उन में से बा'ज़ ने कहा कि हम मदीना शरीफ़ को कैसे चले जाएं न वहां हमारा घर न माल, कौन हमें खिलाएगा कौन पिलाएगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि बहुत से जानदार ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते इस की उन्हें कुव्वत नहीं और न वोह अगले दिन के लिये कोई ज़ख़ीरा जम्अ करते हैं जैसे कि बहाइम (चौपाए) हैं तुयूर (परिन्दे) हैं। **143 :** तो जहां होगे वोही रोज़ी देगा तो येह क्या पूछना कि हमें कौन खिलाएगा कौन पिलाएगा, सारी ख़ल्क़ का **अल्लाह** रज़्ज़ाक़ है, ज़ईफ़ और क़वी, मुक़ीम और मुसाफ़िर सब को वोही रोज़ी देता है। **144 :** तुम्हारे अक़्वाल और तुम्हारे दिल की बातों को। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम **अल्लाह** तआला पर तवक्कुल करो जैसा चाहिये तो वोह तुम्हें ऐसी रोज़ी दे जैसी परिन्दों को देता है कि सुब्ह भूके ख़ाली पेट उठते हैं शाम को सेर (पेट भरे) वापस होते हैं। (ترمذی) **145 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से **146 :** और बा वुजूद इस इक़रार के किस तरह **अल्लाह** तआला की तौहीद से मुन्हरिफ़ होते हैं। **147 :** इस के मुक़िर हैं। **148 :** कि बा वुजूद इस इक़रार के तौहीद के मुन्किर हैं।

لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاِذَا

कूद[149] और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है[150] क्या अच्छा था अगर जानते[151] फिर जब

رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى

कश्ती में सुवार होते हैं[152] अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अक़ीदा ला कर[153] फिर जब वोह उन्हें ख़ुश्की की त़रफ़

الْبَرِّ اِذَا هُمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ لِیَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ ۚۙ وَ لِیَتَمَتَّعُوْا ٚ فَسَوْفَ

बचा लाता है[154] जभी शिर्क करने लगते हैं[155] कि नाशुक्री करें हमारी दी हुई ने'मत की[156] और बरतें[157] तो अब

یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّ یُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ

जाना चाहते हैं[158] और क्या उन्हों ने[159] येह न देखा कि हम ने[160] हुरमत वाली ज़मीन पनाह बनाई[161] और उन के आस पास वाले लोग उचक लिये

حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ یُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَةِ اللّٰهِ یَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ

जाते हैं[162] तो क्या बात़िल पर यक़ीन लाते हैं[163] और अल्लाह की दी हुई ने'मत से[164] नाशुक्री करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَیْسَ فِیْ

जो अल्लाह पर झूट बांधे[165] या ह़क़ को झुटलाए[166] जब वोह उस के पास आए क्या जहन्नम में

جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۶۸﴾ وَ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ

काफ़िरों का ठिकाना नहीं[167] और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते

سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۶۹﴾ ع

दिखा देंगे[168] और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है[169]

149 : कि जैसे बच्चे घड़ी भर खेलते हैं खेल में दिल लगाते हैं फिर उस सब को छोड़ कर चल देते हैं, येही ह़ाल दुन्या का है, निहायत सरीउ़ज़्ज़वाल (जल्दी मिटने वाली) है और मौत यहां से ऐसे ही जुदा कर देती है जैसे खेल वाले बच्चे मुन्तशिर हो जाते हैं। 150 : कि वोह ज़िन्दगी पाएदार है दाइमी है उस में मौत नहीं, ज़िन्दगानी कहलाने के लाइक़ वोही है। 151 : दुन्या और आख़िरत की ह़क़ीक़त तो दुन्याए फ़ानी को आख़िरत की जाविदानी ज़िन्दगी पर तरजीह़ न देते। 152 : और डूबने का अन्देशा होता है तो बा वुजूद अपने शिर्को इनाद के बुतों को नहीं पुकारते बल्कि 153 : कि इस मुसीबत से नजात वोही देगा। 154 : और डूबने का अन्देशा और परेशानी जाती रहती है इत़्मीनान ह़ासिल होता है 155 : ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बह़री सफ़र करते वक़्त बुतों को साथ ले जाते थे, जब हवा मुख़ालिफ़ चलती और कश्ती ख़त़रे में आती तो बुतों को दरिया में फेंक देते और या रब या रब पुकारने लगते और अम्न पाने के बा'द फिर उसी शिर्क की त़रफ़ लौट जाते 156 : या'नी उस मुसीबत से नजात की। 157 : और इस से फ़ाइदा उठाएं ब ख़िलाफ़ मोमिनीने मुख़्लिसीन के कि वोह अल्लाह तआ़ला की ने'मतों के इख़्लास के साथ शुक्र गुज़ार रहते हैं और जब ऐसी सूरत पेश आती है और अल्लाह तआ़ला उस से रिहाई देता है तो उस की त़ाअ़त में और ज़ियादा सरगर्म हो जाते हैं, मगर काफ़िरों का ह़ाल इस के बिल्कुल बर ख़िलाफ़ है। 158 : नतीजा अपने किरदार का। 159 : या'नी अहले मक्का ने 160 : उन के शहर मक्कए मुकर्रमा की 161 : उन के लिये जो इस में हों 162 : क़त्ल किये जाते हैं, गिरिफ़्तार किये जाते हैं। 163 : या'नी बुतों पर 164 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से और इस्लाम से कुफ़्र कर के 165 : उस के लिये शरीक ठहराए 166 : सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआन को न माने। 167 : बेशक तमाम काफ़िरों

ایاتها ٦٠ | ٣٠ سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ ٨٤ | ركوعاتها ٦

सूरए रूम मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और छ॒ रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۲﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ هُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ

रूमी[2] मग़्लूब हुए पास की ज़मीन में[3] और अपनी मग़्लूबी के बा'द

سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَ مِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَ

अ़न्क़रीब ग़ालिब होंगे[4] चन्द बरस में[5] हुक्म अल्लाह ही का है आगे और पीछे[6] और

یَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۴﴾ بِنَصۡرِ اللّٰهِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ هُوَ

उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे अल्लाह की मदद से[7] वोह मदद करता है जिस की चाहे और वोही है

का ठिकाना जहन्नम ही है **168 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالی عنہما ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे। ह़ज़रते जुनैद ने फ़रमाया : जो तौबा में कोशिश करेंगे उन्हें इख़्लास की राह देंगे। ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ ने फ़रमाया : जो त़लबे इल्म में कोशिश करेंगे उन्हें अ़मल की राह देंगे। ह़ज़रते सा'द बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया : जो इक़ामते सुन्नत में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे। **169 :** उन की मदद और नुसरत फ़रमाता है। **1 :** सूरए रूम मक्किय्या है, इस में छ॒ रुकूअ़, साठ आयतें, आठ सो उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पांच सो चोंतीस ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** फ़ारस और रूम के दरमियान जंग थी और चूंकि अहले फ़ारस मजूसी थे इस लिये मुश्रिकीने अ़रब उन का ग़लबा पसन्द करते थे, रूमी अहले किताब थे इस लिये मुसल्मानों को इन का ग़लबा अच्छा मा'लूम होता था। ख़ुस्रव परवेज़ बादशाहे फ़ारस ने रूमियों पर लश्कर भेजा और क़ैसरे रूम ने भी लश्कर भेजा, येह लश्कर सर ज़मीने शाम के क़रीब मुक़ाबिल हुए, अहले फ़ारस ग़ालिब हुए, मुसल्मानों को येह ख़बर गिरां गुज़री, कुफ़्फ़ारे मक्का इस से ख़ुश हो कर मुसल्मानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और नसारा भी अहले किताब और हम भी उम्मी और अहले फ़ारस भी उम्मी हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे भाइयों रूमियों पर ग़ालिब हुए हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं और इन में ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएंगे। येह आयतें सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالی عنہ ने कुफ़्फ़ारे मक्का में जा कर ए'लान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम रूमी ज़रूर अहले फ़ारस पर ग़लबा पाएंगे, ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से ख़ुश मत हो, हमें हमारे नबी صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ने ख़बर दी है। उबय्य बिन ख़लफ़ काफ़िर आप के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और आप के उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त़ हो गई अगर नव साल में अहले फ़ारस ग़ालिब आ जाएं तो ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالی عنہ उबय्य को सो ऊंट देंगे और अगर रूमी ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالی عنہ को सो ऊंट देगा, उस वक़्त तक क़िमार की ह़ुरमत नाज़िल न हुई थी। **मस्अला :** और ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा व इमाम मुह़म्मद رحمۃ اللہ تعالی علیہما के नज़्दीक ह़र्बी कुफ़्फ़ार के साथ उ़क़ूदे फ़ासिदा रिबा वग़ैरा जाइज़ हैं और येही वाक़िआ़ इन की दलील है। अल क़िस्सा सात साल के बा'द इस ख़बर का सिद्क़ ज़ाहिर हुवा और जंगे ह़ुदैबिया या बद्र के दिन रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आए और रूमियों ने मदाइन में अपने घोड़े बांधे और इ़राक़ में रूमिया नामी एक शह्र की बिना रखी और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالی عنہ ने शर्त़ के ऊंट उबय्य की औलाद से वुसूल कर लिये क्यूं कि वोह इस दरमियान में मर चुका था। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالی عنہ को हुक्म दिया कि शर्त़ के माल को सदक़ा कर दें। येह ग़ैबी ख़बर ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। (خازن ومدارک) **3 :** या'नी शाम की उस सर ज़मीन में जो फ़ारस के क़रीब तर है। **4 :** अहले फ़ारस पर **5 :** जिन की ह़द नव बरस है। **6 :** या'नी रूमियों के ग़लबे से पहले भी और उस के बा'द भी। मुराद येह है कि पहले अहले फ़ारस का ग़ालिब होना और दोबारा अहले रूम का येह सब अल्लाह के अम्र व इरादे और उस के क़ज़ा व क़दर से है। **7 :** कि उस ने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर ग़लबा दिया और उसी रोज़ बद्र में मुसल्मानों को मुश्रिकों पर और मुसल्मानों का सिद्क़ और नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم और क़ुरआने करीम की ख़बर की तस्दीक़ ज़ाहिर फ़रमाई।

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

इज़्ज़त वाला मेहरबान अल्लाह का वा'दा[8] अल्लाह अपना वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ

लोग नहीं जानते[9] जानते हैं आंखों के सामने की दुन्यवी ज़िन्दगी[10] और वोह

عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ۫ مَا خَلَقَ

आख़िरत से पूरे बे ख़बर हैं क्या उन्हों ने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने

اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ

पैदा न किये आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है मगर हक़[11] और एक मुक़र्रर मीआ़द से[12] और

اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي

बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार रखते हैं[13] और क्या उन्हों ने ज़मीन में

الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْۤا اَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते कि उन से अगलों का अन्जाम कैसा हुवा[14] वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَاۤ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ

ज़ियादा ज़ोर आवर थे और ज़मीन जोती और आबाद की उन[15] की आबादी से ज़ियादा और

جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا

उन के रसूल उन के पास रोशन निशानियां लाए[16] तो अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करता[17] हां वोह

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى

ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे[18] फिर जिन्हों ने हद भर की बुराई की उन का अन्जाम येह हुवा

8 : जो उस ने फ़रमाया था कि रूमी चन्द बरस में फिर ग़ालिब होंगे। 9 : या'नी बे इल्म हैं। 10 : तिजारत ज़िराअ़त ता'मीर वग़ैरा दुन्यवी धन्दे। इस में इशारा है कि दुन्या की भी हक़ीक़त नहीं जानते इस का भी ज़ाहिर ही जानते हैं। 11 : या'नी आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है अल्लाह तआ़ला ने इन को अ़बस और बातिल नहीं बनाया, इन की पैदाइश में बे शुमार हिक्मतें हैं। 12 : या'नी हमेशा के लिये नहीं बनाया बल्कि एक मुद्दत मुअ़य्यन कर दी है जब वोह मुद्दत पूरी हो जावेगी तो येह फ़ना हो जाएंगे और वोह मुद्दत क़ियामत क़ाइम होने का वक़्त है। 13 : या'नी बअ़्से बा'दल मौत पर ईमान नहीं लाते। 14 : कि रसूलों की तक्ज़ीब के बाइस हलाक किये गए, उन के उजड़े हुए दियार और उन की बरबादी के आसार देखने वालों के लिये मूजिबे इब्रत हैं। 15 : अहले मक्का 16 : तो वोह उन पर ईमान न लाए। पस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया। 17 : उन के हुक़ूक़ कम कर के और उन्हें बिग़ैर जुर्म के हलाक कर के। 18 : रसूलों की तक्ज़ीब कर के अपने आप को मुस्तहिक़े अ़ज़ाब बना कर।

اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ

कि अल्लाह की आयतें झुटलाने लगे और उन के साथ तमस्खुर करते अल्लाह पहले बनाता है

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ

फिर दोबारा बनाएगा[19] फिर उस की त़रफ़ फिरोगे[20] और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी मुजरिमों की

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىِٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ

आस टूट जाएगी[21] और उन के शरीक[22] उन के सिफ़ारिशी न होंगे और वोह अपने शरीकों से

كٰفِرِيْنَ ﴿١٣﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا

मुन्किर हो जाएंगे और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे[23] तो वोह

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَاَمَّا

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ की क्यारी में उन की ख़ाति़र दारी होगी[24] और वोह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىِٕكَ فِي الْعَذَابِ

जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुटलाया[25] वोह अ़ज़ाब में ला धरे (डाले)

مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ

जाएंगे[26] तो अल्लाह की पाकी बोलो[27] जब शाम करो[28] और जब सुब्ह़ हो[29] और उसी की

الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ

ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में[30] और कुछ दिन रहे[31] और जब तुम्हें दोपहर हो[32] वोह ज़िन्दा को

19 : या'नी बा'दे मौत ज़िन्दा कर के। 20 : तो आ'माल की जज़ा देगा। 21 : और किसी नफ़्अ़ और भलाई की उम्मीद बाक़ी न रहेगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि उन का कलाम मुन्क़त़अ़ हो जाएगा वोह साकित रह जाएंगे क्यूं कि उन के पास पेश करने के क़ाबिल कोई हुज्जत न होगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि वोह रुस्वा होंगे 22 : या'नी बुत जिन्हें वोह पूजते थे 23 : मोमिन और काफ़िर फिर कभी जम्अ़ न होंगे। 24 : या'नी बुस्ताने जन्नत में उन का इक्राम किया जाएगा जिस से वोह ख़ुश होंगे, येह ख़ाति़र दारी जन्नती ने'मतों के साथ होगी। एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद समाअ़ है कि उन्हें नग़माते त़रब अंगेज़ सुनाए जाएंगे जो अल्लाह तबारक व तआ़ला की तस्बीह़ पर मुश्तमिल होंगे। 25 : बअ़्स व ह़श्र के मुन्किर हुए। 26 : न उस अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो न उस से कभी निकलें। 27 : पाकी बोलने से या तो अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ व सना मुराद है और इस की अह़ादीस में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इस से नमाज़ मुराद है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से दरयाफ़्त क्या गया कि क्या पन्जगाना नमाज़ों का बयान क़ुरआने पाक में है? फ़रमाया : हां और येह आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और इन के अवक़ात मज़्कूर हैं। 28 : इस में मग़रिब व इ़शा की नमाज़ें आ गईं। 29 : येह नमाज़े फ़ज्र हुई। 30 : या'नी आस्मान और ज़मीन वालों पर उस की ह़म्द लाज़िम है। 31 : या'नी तस्बीह़ करो कुछ दिन रहे, येह नमाज़े अ़स्र हुई। 32 : येह नमाज़े ज़ोहर हुई। **हिक्मत :** नमाज़ के लिये येह पन्जगाना अवक़ात मुक़र्रर फ़रमाए गए इस लिये कि अफ़्ज़ले आ'माल वोह है जो मुदाम हो और इन्सान येह क़ुदरत नहीं रखता कि अपने तमाम अवक़ात नमाज़ में सर्फ़ करे क्यूं कि इस के साथ खाने पीने वग़ैरा के ह़वाइज व ज़रूरिय्यात हैं तो अल्लाह तआ़ला ने बन्दे पर इ़बादत में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाई और दिन के अव्वल व औसत़ व

الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَ یُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ وَ یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ

निकालता है मुर्दे से[33] और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से[34] और ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज़ो शादाब करता) है उस के

مَوْتِهَاؕ وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ

मरे पीछे[35] और यूं ही तुम निकाले जाओगे[36] और उस की निशानियों से है येह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[37]

ثُمَّ اِذَاۤ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

फिर जभी तुम इन्सान हो दुन्या में फैले हुए और उस की निशानियों से है कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से

اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَیْهَا وَ جَعَلَ بَیْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةًؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

जोड़े बनाए कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महब्बत और रहमत रखी[38] बेशक इस में

لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिये और उस की निशानियों से है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश

وَ اخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَ اَلْوَانِكُمْؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْعٰلِمِیْنَ ﴿۲۲﴾ وَ

और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़[39] बेशक इस में निशानियां हैं जानने वालों के लिये और

مِنْ اٰیٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ ابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖؕ اِنَّ فِیْ

उस की निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना[40] और उस का फ़ज़्ल तलाश करना[41] बेशक इस

ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ

में निशानियां हैं सुनने वालों के लिये[42] और उस की निशानियों से है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डराती[43] और

طَمَعًا وَّ یُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَیُحْیٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَاؕ اِنَّ

उम्मीद दिलाती[44] और आस्मान से पानी उतारता है तो उस से ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के मरे पीछे बेशक

आख़िर में और रात के अव्वल व आख़िर में नमाज़ें मुक़र्रर कीं ताकि इन अवक़ात में मश्ग़ूले नमाज़ रहना दाइमी इबादत के हुक्म में हो। (مدارک وخازن) **33 :** जैसे कि परिन्द को अन्डे से और इन्सान को नुत्फ़े से और मोमिन को काफ़िर से। **34 :** जैसे कि अन्डे को परिन्द से, नुत्फ़े को इन्सान से, काफ़िर को मोमिन से **35 :** या'नी ख़ुश्क हो जाने के बा'द मींह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर। **36 :** क़ब्रों से बअ़्स व हिसाब के लिये। **37 :** तुम्हारा जद्दे आ'ला और तुम्हारी अस्ल हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **38 :** कि बिग़ैर किसी पहली मा'रिफ़त और बिग़ैर किसी क़राबत के एक को दूसरे के साथ महब्बत व हमदर्दी है। **39 :** ज़बानों का इख़्तिलाफ़ तो येह है कि कोई अ़रबी बोलता है कोई अ़जमी, कोई और कुछ, और रंगतों का इख़्तिलाफ़ येह है कि कोई गोरा है कोई काला कोई गन्दुमी और येह इख़्तिलाफ़ निहायत अ़जीब है क्यूं कि सब एक अस्ल से हैं और सब हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام की औलाद हैं। **40 :** जिस से तकान दूर होती है और राहत हासिल होती है। **41 :** फ़ज़्ल तलाश करने से कस्बे मआ़श मुराद है। **42 :** जो गोशे होश से सुनें। **43 :** गिरने और नुक़्सान पहुंचाने से **44 :** बारिश की।

فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ

इस में निशानियां हैं अक्ल वालों के लिये[45] और उस की निशानियों से है कि उस के हुक्म से आस्मान

الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَاۤ اَنْتُمْ

और ज़मीन क़ाइम हैं[46] फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा[47] जभी तुम

تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ

निकल पड़ोगे[48] और उसी के हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं सब उस के ज़ेरे हुक्म हैं और

هُوَ الَّذِیْ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ وَ هُوَ اَهْوَنُ عَلَیْهِ ؕ وَ لَهُ الْمَثَلُ

वोही है कि अव्वल बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा[49] और येह तुम्हारी समझ में इस पर ज़ियादा आसान होना चाहिये[50] और उसी के लिये है

الْاَعْلٰى فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۷﴾ ع ضَرَبَ

सब से बरतर शान आस्मानों और ज़मीन में[51] और वोही इज़्ज़तो हिक्मत वाला है तुम्हारे लिये[52] एक

لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ

कहावत बयान फ़रमाता है ख़ुद तुम्हारे अपने हाल से[53] क्या तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ के माल गुलामों में से कुछ शरीक हैं[54]

فِیْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِیْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ

उस में जो हम ने तुम्हें रोज़ी दी[55] तो तुम सब इस में बराबर हो[56] तुम उन से डरो[57] जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो[58]

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا

हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियां बयान फ़रमाते हैं अक्ल वालों के लिये बल्कि ज़ालिम[59] अपनी ख़्वाहिशों

45 : जो सोचें और कुदरते इलाही पर ग़ौर करें। 46 : हज़रते इब्ने अब्बास और हज़रते इब्ने मस्ऊद رضی اللہ تعالیٰ عنہم ने फ़रमाया कि वोह दोनों बिग़ैर किसी सहारे के क़ाइम हैं। 47 : या'नी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा इस तरह कि हज़रते इसराफ़ील علیہ السلام क़ब्र वालों के उठाने के लिये सूर फूंकेंगे तो अव्वलीन व आख़िरीन में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे। चुनान्चे इस के बा'द ही इर्शाद फ़रमाता है : 48 : या'नी क़ब्रों से ज़िन्दा हो कर। 49 : हलाक होने के बा'द। 50 : क्यूं कि इन्सानों का तजरिबा और इन की राय येही बताती है कि शै का इआदा (दोबारा बनाना) उस की इब्तिदा से सह्ल (आसान) होता है और अल्लाह तआला के लिये कुछ भी दुश्वार नहीं। 51 : कि उस जैसा कोई नहीं, वोह मा'बूदे बरहक़ है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। 52 : ऐ मुश्रिको ! 53 : वोह मसल (कहावत) येह है 54 : या'नी क्या तुम्हारे गुलाम तुम्हारे साझी हैं 55 : मालो मताअ़ वग़ैरा 56 : या'नी आक़ा और गुलाम को उस मालो मताअ़ में यक्सां इस्तिहक़ाक़ हो, ऐसा कि 57 : अपने मालो मताअ़ में बिग़ैर उन गुलामों की इजाज़त के तसर्रुफ़ करने से 58 : मुद्दआ येह है कि तुम किसी तरह अपने मम्लूकों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं कर सकते तो कितना ज़ुल्म है कि अल्लाह तआला के मम्लूकों को उस का शरीक क़रार दो। ऐ मुश्रिकीन तुम अल्लाह तआला के सिवा जिन्हें अपना मा'बूद क़रार देते हो वोह उस के बन्दे और मम्लूक हैं। 59 : जिन्हों ने शिर्क कर के अपनी जानों पर ज़ुल्मे अज़ीम किया है।

اَهْوَآءَهُمْ بِغَیْرِ عِلْمٍۚ فَمَنْ یَّهْدِیْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُؕ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ

के पीछे हो लिये बे जाने[60] तो उसे कौन हिदायत करे जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया[61] और उन का कोई

نّٰصِرِیْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّیْنِ حَنِیْفًاؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ

मददगार नहीं[62] तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इत़ाअ़त के लिये एक अकेले उसी के हो कर[63] अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर

النَّاسَ عَلَیْهَاؕ لَا تَبْدِیْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُۙۗ وَ لٰكِنَّ

लोगों को पैदा किया[64] अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना[65] येही सीधा दीन है मगर

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ۙۖ مُنِیْبِیْنَ اِلَیْهِ وَ اتَّقُوْهُ وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ

बहुत लोग नहीं जानते[66] उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाते हुए[67] और उस से डरो और नमाज़ क़ाइम रखो

وَ لَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۳۱﴾ۙ مِنَ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ كَانُوْا

और मुश्रिकों से न हो उन में से जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया[68] और हो गए

شِیَعًاؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَیْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ اِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ

गुरौह गुरौह हर गुरौह जो उस के पास है उस पर ख़ुश है[69] और जब लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है[70]

دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِیْبِیْنَ اِلَیْهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِیْقٌ

तो अपने रब को पुकारते हैं उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाते हुए फिर जब वोह उन्हें अपने पास से रह़मत का मज़ा देता है[71] जभी उन में से

مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ۙ لِیَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْؕ فَتَمَتَّعُوْا وقفة فَسَوْفَ

एक गुरौह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि हमारे दिये की नाशुक्री करें तो बरत लो[72] अब क़रीब

تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَیْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ یَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ

जानना चाहते हो[73] या हम ने उन पर कोई सनद उतारी[74] कि वोह उन्हें हमारे शरीक

60 : जहालत से 61 : या'नी कोई उस का हिदायत करने वाला नहीं। 62 : जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके 63 : या'नी ख़ुलूस के साथ दीने इलाही पर ब इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल क़ाइम रहो। 64 : "फ़ित़रत" से मुराद दीने इस्लाम है, मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ल्क़ को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हर बच्चा फ़ित़रत पर पैदा किया जाता है या'नी उसी अ़हद पर जो "اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ" फ़रमा कर लिया गया है। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है : फिर उस के मां बाप उस को यहूदी या नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। इस आयत में हुक्म दिया गया कि दीने इलाही पर क़ाइम रहो जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ख़ल्क़ को पैदा किया है। 65 : या'नी दीने इलाही पर क़ाइम रहना। 66 : इस की ह़क़ीक़त को तो इस दीन पर क़ाइम रहो। 67 : या'नी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ तौबा और त़ाअ़त के साथ। 68 : मा'बूद के बाब में इख़्तिलाफ़ कर के 69 : और अपने बात़िल को ह़क़ गुमान करता है। 70 : मरज़ की या क़ह़्त़ की या इस के सिवा और कोई 71 : उस तक्लीफ़ से ख़लासी इनायत करता है और राह़त अ़त़ा फ़रमाता है 72 : दुन्यवी ने'मतों को चन्द रोज़। 73 : कि आख़िरत में तुम्हारा क्या ह़ाल होता है और इस दुन्या त़लबी का क्या नतीजा निकलने वाला है। 74 : कोई हुज्जत या कोई किताब।

يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَ اِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ

बता रही है[75] और जब हम लोगों को रह़मत का मज़ा देते हैं[76] इस पर ख़ुश हो जाते हैं[77] और अगर उन्हें कोई

سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

बुराई पहुंचे[78] बदला उस का जो उन के हाथों ने भेजा[79] जभी वोह ना उम्मीद हो जाते हैं[80] और क्या उन्हों ने न देखा कि अल्लाह

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे बेशक इस में निशानियां हैं

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ

ईमान वालों के लिये तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो[81] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[82] येह

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ٘ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَ مَاۤ

बेहतर है उन के लिये जो अल्लाह की रिज़ा चाहते हैं[83] और उन्हीं का काम बना और

اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاۡ فِيْۤ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَ مَاۤ

तुम जो चीज़ ज़ियादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें तो वोह अल्लाह के यहां न बढ़ेगी[84] और जो

اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ

तुम ख़ैरात दो अल्लाह की रिज़ा चाहते हुए[85] तो उन्हीं के दूने हैं[86] अल्लाह है

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाए (ज़िन्दा करे)गा[87] क्या

شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا

तुम्हारे शरीकों में[88] भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ करे[89] पाकी और बरतरी है उसे

75 : और शिर्क करने का हुक्म देती है, ऐसा नहीं है न कोई हुज्जत है न कोई सनद। 76 : या'नी तन्दुरुस्ती और वुस्अ़ते रिज़्क़ का 77 : और इतराते हैं। 78 : क़ह़त या ख़ौफ़ या और कोई बला 79 : या'नी उन की मा'सियतों और उन के गुनाहों का 80 : अल्लाह तआ़ला की रह़मत से और येह बात मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है क्यूं कि मोमिन का ह़ाल येह है कि जब उसे ने'मत मिलती है तो शुक्र गुज़ारी करता है और जब सख़्ती होती है तो अल्लाह तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहता है। 81 : उस के साथ सुलूक और एह़सान करो 82 : उन के ह़क़ दो सदक़ा दे कर और मेहमान नवाज़ी कर के। **मस्अला :** इस आयत से मह़ारिम के नफ़क़े का वुजूब साबित होता है। (مدارک) 83 : और अल्लाह तआ़ला से सवाब के त़ालिब हैं। 84 : लोगों का दस्तूर था कि वोह दोस्त अह़बाब और आश्नाओं को या और किसी शख़्स को इस निय्यत से हदिय्या देते थे कि वोह उन्हें इस से ज़ियादा देगा, येह जाइज़ तो है लेकिन इस पर सवाब न मिलेगा, इस में बरकत न होगी क्यूं कि येह अ़मल ख़ालिसन लिल्लाहि तआ़ला नहीं हुवा। 85 : न इस से बदला लेना मक़्सूद हो न नामो नुमूद 86 : उन का अज्रो सवाब ज़ियादा होगा, एक नेकी का दस गुना ज़ियादा दिया जाएगा। 87 : पैदा करना, रोज़ी देना, मारना, जिलाना येह सब काम अल्लाह ही के हैं।

يُشْرِكُوْنَ ۝۴۰ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَیْدِی النَّاسِ

उन के शिर्क से चमकी ख़राबी ख़ुश्की और तरी में[90] उन बुराइयों से जो लोगों के हाथों ने कमाई

لِیُذِیْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِیْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ۝۴۱ قُلْ سِیْرُوْا فِی

ताकि उन्हें उन के बा'ज़ कौतकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वोह बाज़ आएं[91] तुम फ़रमाओ ज़मीन

الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ

में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा अगलों का उन में बहुत

مُّشْرِكِیْنَ ۝۴۲ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّیْنِ الْقَیِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ یَوْمٌ لَّا

मुश्रिक थे[92] तो अपना मुंह सीधा कर इबादत के लिये[93] क़ब्ल इस के कि वोह दिन आए जिसे **अल्लाह**

مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ یَوْمَىٕذٍ یَّصَّدَّعُوْنَ ۝۴۳ مَنْ كَفَرَ فَعَلَیْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَ مَنْ

की त़रफ़ से टलना नहीं[94] उस दिन अलग फट जाएंगे[95] जो कुफ़्र करे उस के कुफ़्र का वबाल उसी पर और जो

عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ یَمْهَدُوْنَ ۝۴۴ لِیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

अच्छा काम करें वोह अपने ही लिये तय्यारी कर रहे हैं[96] ताकि सिला दे[97] उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْكٰفِرِیْنَ ۝۴۵ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ

काम किये अपने फ़ज़्ल से बेशक वोह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता और उस की निशानियों से है कि

یُّرْسِلَ الرِّیَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّ لِیُذِیْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ

हवाएं भेजता है मुज़्दा सुनाती[98] और इस लिये कि तुम्हें अपनी रह़मत का ज़ाएक़ा दे और इस लिये कि कश्ती[99] उस

بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۴۶ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا

के हुक्म से चले और इस लिये कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो[100] और इस लिये कि तुम ह़क़ मानो[101] और बेशक हम ने तुम

88 : या'नी बुतों में जिन्हें तुम **अल्लाह** तआ़ला का शरीक ठहराते हो उन में **89 :** इस के जवाब से मुशरिकीन आ़जिज़ हुए और उन्हें दम मारने की मजाल न हुई तो फ़रमाता है **90 :** शिर्क व मआ़सी के सबब से क़हूत़ और इम्साके बारां (बारिश का रुक जाना) और क़िल्लते पैदावार और खेतियों की ख़राबी और तिजारतों के नुक़्सान और आदमियों और जानवरों में मौत और कस्रते आतश ज़दगी और ग़र्क़ और हर शै में बे बरकती **91 :** कुफ़्र व मआ़सी से और ताइब हों। **92 :** अपने शिर्क के बाइ़स हलाक किये गए, उन के मनाज़िल और मसाकिन वीरान पड़े हैं, उन्हें देख कर इ़ब्रत ह़ासिल करो। **93 :** या'नी दीने इस्लाम पर मज़बूती के साथ क़ाइम रहो। **94 :** या'नी रोज़े क़ियामत। **95 :** या'नी ह़िसाब के बा'द मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे, जन्नती जन्नत की त़रफ़ जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की त़रफ़। **96 :** कि मनाज़िले जन्नत में राह़त व आराम पाएं **97 :** और सवाब अ़त़ा फ़रमाए **अल्लाह** तआ़ला **98 :** बारिश और कस्रते पैदावार का **99 :** दरिया में उन हवाओं से **100 :** या'नी दरियाई तिजारतों से कस्बे मआ़श करो **101 :** उन ने'मतों का और **अल्लाह** की तौह़ीद क़ुबूल करो।

مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ

से पहले कितने रसूल उन की क़ौम की त़रफ़ भेजे तो वोह उन के पास खुली निशानियां लाए[102] फिर हम ने

الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

मुजरिमों से बदला लिया[103] और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना[104] अल्लाह है कि

يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَ

भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आस्मान में जैसा चाहे[105] और

يَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ

उसे पारा पारा करता है[106] तो तू देखे कि उस के बीच में से मींह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है[107]

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ

अपने बन्दों में जिस की त़रफ़ चाहे जभी वोह ख़ुशियां मनाते हैं अगर्चे उस के उतारने

يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿۴۹﴾ فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ

से पहले आस तोड़े हुए थे तो अल्लाह की रह़मत के असर देखो[108] क्यूंकर

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज़ करता) है उस के मरे पीछे[109] बेशक वोह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वोह सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾ وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْ بَعْدِهٖ

कर सकता है और अगर हम कोई हवा भेजें[110] जिस से वोह खेती को ज़र्द देखें[111] तो ज़रूर इस के बा'द

يَكْفُرُوْنَ ﴿۵۱﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا

नाशुक्री करने लगें[112] इस लिये कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते[113] और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वोह पीठ

102 : जो उन रसूलों के सिद्क़े रिसालत पर दलीले वाज़ेह थीं तो उस क़ौम में से बा'ज़ ईमान लाए और बा'ज़ ने कुफ़्र किया। 103 : कि दुन्या में उन्हें अ़ज़ाब कर के हलाक कर दिया। 104 : या'नी उन्हें नजात देना और काफ़िरों को हलाक करना। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को आख़िरत की काम्याबी और आ'दा पर फ़त्ह़ो नुसरत की बिशारत दी गई है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : जो मुसल्मान अपने भाई की आबरू बचाएगा अल्लाह तआ़ला उसे रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग से बचाएगा। येह फ़रमा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई "كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ" 105 : क़लील या कसीर 106 : या'नी कभी तो अल्लाह तआ़ला अब्रे मुह़ीत़ भेज देता है जिस से आस्मान घिरा मा'लूम होता है और कभी मुतफ़र्रिक़ टुकड़े अ़लाह़दा अ़लाह़दा। 107 : या'नी मींह को 108 : या'नी बारिश के असर जो उस पर मुरत्तब होते हैं कि बारिश ज़मीन को सैराब करती है, उस से सब्ज़ा निकलता है, सब्ज़े से फल पैदा होते हैं, फलों में ग़िज़ाइय्यत होती है और इस से जानदारों के अज्साम के क़िवाम को मदद पहुंचती है और येह देखो कि अल्लाह तआ़ला येह सब्ज़े और फल पैदा कर के 109 : और ख़ुश्क मैदान को सब्ज़ा ज़ार बना देता है, जिस की येह क़ुदरत है 110 : ऐसी जो खेती और सब्ज़े के लिये मुज़िर हो 111 : बा'द इस

مُدْبِرِیْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَاۤ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ

दे कर फिरें[114] और न तुम अन्धों को[115] उन की गुमराही से राह पर लाओ तुम तो उसी को सुनाते हो जो

یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۵۳﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ

हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वोह गरदन रखे हुए हैं अल्लाह है जिस ने तुम्हें इब्तिदा में कमज़ोर बनाया[116] फिर

جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَیْبَةً ؕ

तुम्हें ना तुवानी से ताक़त बख़्शी[117] फिर कुव्वत के बा'द[118] कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया

یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ ﴿۵۴﴾ وَیَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ

बनाता है जो चाहे[119] और वोही इल्म व कुदरत वाला है और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी

یُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ۬ مَا لَبِثُوْا غَیْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا یُؤْفَكُوْنَ ﴿۵۵﴾

मुजरिम क़सम खाएंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी[120] वोह ऐसे ही औंधे जाते थे[121]

وَقَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِیْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰی

और बोले वोह जिन को इल्म और ईमान मिला[122] बेशक तुम रहे अल्लाह के लिखे हुए में[123]

के कि वोह सर सब्ज़ो शादाब थी। **112 :** या'नी खेती ज़र्द होने के बा'द नाशुक्री करने लगें और पहली ने'मत से भी मुकर जाएं। मा'ना येह हैं कि उन लोगों की हालत येह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है रिज़्क़ मिलता है ख़ुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है खेती ख़राब होती है तो पहली ने'मतों से भी मुकर जाते हैं। चाहिये तो येह था कि अल्लाह तआला पर तवक्कुल करते और जब ने'मत पहुंचती शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ व इस्तिग़फ़ार में मश्गूल होते। इस के बा'द अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीबे अकरम सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाता है कि आप उन लोगों की महरूमी और उन के ईमान न लाने पर रन्जीदा न हों **113 :** या'नी जिन के दिल मर चुके और उन से किसी तरह क़बूले हक़ की तवक्क़ोअ नहीं रही। **114 :** या'नी हक़ के सुनने से बहरे हों और बहरे भी ऐसे कि पीठ दे कर फिर गए, उन से किसी तरह समझने की उम्मीद नहीं। **115 :** यहां अन्धों से भी दिल के अन्धे मुराद हैं। इस आयत से बा'ज़ लोगों ने मुर्दों के न सुनने पर इस्तिद्लाल किया है, मगर येह इस्तिद्लाल सहीह नहीं क्यूं कि यहां मुर्दों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं जो दुन्यवी ज़िन्दगी तो रखते हैं मगर पन्दो मौइज़त से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते, इस लिये उन्हें अम्वात से तश्बीह दी गई जो दारुल अमल से गुज़र गए और वोह पन्दो नसीहत से मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते, लिहाज़ा आयत से मुर्दों के न सुनने पर सनद लाना दुरुस्त नहीं और ब कसरत अहादीस से मुर्दों का सुनना और अपनी क़ब्रों पर ज़ियारत के लिये आने वालों को पहचानना साबित है। **116 :** इस में इन्सान के अहवाल की तरफ़ इशारा है कि पहले वोह मां के पेट में जनीन था, फिर बच्चा हो कर पैदा हुवा, शीर ख़्वार रहा, येह अहवाल निहायत ज़ो'फ़ के हैं। **117 :** या'नी बचपन के ज़ो'फ़ के बा'द जवानी की कुव्वत अता फ़रमाई **118 :** या'नी जवानी की कुव्वत के बा'द **119 :** ज़ो'फ़ और कुव्वत और जवानी और बुढ़ापा येह सब अल्लाह के पैदा किये से हैं **120 :** या'नी आख़िरत को देख कर उस को दुन्या या क़ब्र में रहने की मुद्दत बहुत थोड़ी मा'लूम होगी, इस लिये वोह इस मुद्दत को एक घड़ी से ता'बीर करेंगे। **121 :** या'नी ऐसे ही दुन्या में ग़लत और बातिल बातों पर जमते और हक़ से फिरते थे और बअ्स का इन्कार करते थे जैसे कि अब क़ब्र या दुन्या में ठहरने की मुद्दत को क़सम खा कर एक घड़ी बता रहे हैं, उन की इस क़सम से अल्लाह तआला उन्हें तमाम अहले महशर के सामने रुस्वा करेगा और सब देखेंगे कि ऐसे मज्मए आम में क़सम खा कर ऐसा सरीह झूट बोल रहे हैं। **122 :** या'नी अम्बिया और मलाएका और मोमिनीन इन का रद करेंगे और फ़रमाएंगे कि तुम झूट कहते हो **123 :** या'नी जो अल्लाह तआला ने अपने साबिक़ इल्म में लौहे महफ़ूज़ में लिखा उसी के मुताबिक़ तुम क़ब्रों में रहे।

يَوْمِ الْبَعْثِ ؗ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

उठने के दिन तक तो येह है वोह दिन उठने का[124] लेकिन तुम न जानते थे[125]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़्अ़ न देगी उन की मा'ज़िरत और न उन से कोई राज़ी करना मांगे[126]

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ

और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की मिसाल बयान फ़रमाई[127] और अगर तुम इन के पास कोई

بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर बातिल पर यूं ही

يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

मोहर कर देता है अल्लाह जाहिलों के दिलों पर[128] तो सब्र करो[129] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[130]

وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

और तुम्हें सबुक न कर दें वोह जो यक़ीन नहीं रखते[131]

सूरए लुक़्मान मक्किय्या है, इस में चोंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾

येह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं हिदायत और रहमत हैं नेकों के लिये

124 : जिस के तुम दुन्या में मुन्किर थे 125 : दुन्या में कि वोह हक़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा, अब तुम ने जाना कि वोह दिन आ गया और उस का आना हक़ था तो उस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़्अ़ न देगा जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : 126 : या'नी न उन से येह कहा जाए कि तौबा कर के अपने रब को राज़ी करो जैसा कि दुन्या में उन से तौबा तृलब की जाती थी। 127 : ताकि उन्हें तम्बीह हो और इन्ज़ार अपने कमाल को पहुंचे, लेकिन उन्हों ने अपनी सियाह बातिनी और सख़्त दिली के बाइस कुछ भी फ़ाएदा न उठाया, बल्कि जब कोई आयते कुरआन आई उस को झुटला दिया और उस का इन्कार किया। 128 : जिन्हें जानता है कि वोह गुमराही इख़्तियार करेंगे और हक़ वालों को बातिल पर बताएंगे। 129 : उन की ईज़ा व अ़दावत पर 130 : आप की मदद फ़रमाने का और दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब करने का। 131 : या'नी येह लोग जिन्हें आख़िरत का यक़ीन नहीं है और बअ़्स व हिसाब के मुन्किर हैं उन की शिद्दतें और उन के इन्कार और उन की ना लाइक़ हरकात आप के लिये तैश और क़लक़ (रन्जिश) का बाइस न हों और ऐसा न हो कि आप उन के हक़ में अ़ज़ाब की दुआ़ करने में जल्दी फ़रमाएं। 1 : सूरए लुक़्मान मक्किय्या है सिवाए दो आयतों के जो "وَلَوْ اَنَّ مَا فِی الْاَرْضِ" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में चार रुकूअ़, चोंतीस आयतें, पांच सो अड़तालीस कलिमे, दो हज़ार एक सो दस हर्फ़ हैं।

الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और आख़िरत पर

یُوْقِنُوْنَؕ(۴) اُولٰٓىٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۵)

यक़ीन लाएं वोही अपने रब की हिदायत पर हैं और उन्हीं का काम बना

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِیْثِ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं[2] कि अल्लाह की राह से बहका दें

بِغَیْرِ عِلْمٍ ﳓ وَّ یَتَّخِذَهَا هُزُوًاؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ(۶) وَ اِذَا

बे समझे[3] और उसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है और जब

تُتْلٰى عَلَیْهِ اٰیٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ یَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِیْۤ اُذُنَیْهِ وَقْرًاۚ

उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो तकब्बुर करता हुवा फिरे[4] जैसे उन्हें सुना ही नहीं जैसे उस के कानों में टेंट (रूई) है[5]

فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ(۷) اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

तो उसे दर्दनाक अ़ज़ाब का मुज़्दा दो बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

جَنّٰتُ النَّعِیْمِۙ(۸) خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّاؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ

चैन के बाग़ हैं हमेशा उन में रहेंगे अल्लाह का वा'दा है सच्चा और वोही इ़ज़्ज़त व

الْحَكِیْمُ(۹) خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى فِی الْاَرْضِ

हिक्मत वाला है उस ने आस्मान बनाए बे ऐसे सुतूनों के जो तुम्हें नज़र आएं[6] और ज़मीन में डाले

رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍؕ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ

लंगर[7] कि तुम्हें ले कर न कांपे और इस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हम ने आस्मान

2 : लह्‌व या'नी खेल हर उस बात़िल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फ़्लत में डाले कहानियां, अफ़्साने इसी में दाख़िल हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस बिन कल्दा के ह़क़ में नाज़िल हुई जो तिजारत के सिल्सिले में दूसरे मुल्कों में सफ़र किया करता था, उस ने अ़जमियों की किताबें ख़रीदीं जिन में क़िस्से कहानियां थीं, वोह क़ुरैश को सुनाता और कहता कि सय्यिदे काएनात (मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) तुम्हें आ़द व समूद के वाक़िआ़त सुनाते हैं और मैं रुस्तम व इस्फ़न्दियार और शाहाने फ़ारस की कहानियां सुनाता हूं। कुछ लोग उन कहानियों में मश्ग़ूल हो गए और क़ुरआने पाक सुनने से रह गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 3 : या'नी बराहे जहालत लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकें और आयाते इलाहिय्यह के साथ तमस्ख़ुर करें 4 : और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करे 5 : और वोह बहरा है 6 : या'नी कोई सुतून नहीं है, तुम्हारी नज़र ख़ुद इस की शाहिद है। 7 : बुलन्द पहाड़ों के।

السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِیْمٍ ﴿۱۰﴾ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ

से पानी उतारा[8] तो ज़मीन में हर नफ़ीस जोड़ा उगाया[9] येह तो अल्लाह का बनाया हुवा है[10]

فَاَرُوْنِیْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِهٖؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ ضَلٰلٍ

मुझे वोह दिखाओ[11] जो उस के सिवा औरों ने बनाया[12] बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही

مُّبِیْنٍ ﴿۱۱﴾ وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِؕ وَ مَنْ یَّشْكُرْ

में हैं और बेशक हम ने लुक़्मान को हिक्मत अ़ता फ़रमाई[13] कि अल्लाह का शुक्र कर[14] और जो शुक्र करे

فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ﴿۱۲﴾ وَ اِذْ قَالَ

वोह अपने भले को शुक्र करता है[15] और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बे परवा है सब ख़ूबियों सराहा और याद करो जब

لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَ هُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِؕؔ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ

लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा और वोह नसीहृत करता था[16] ऐ मेरे बेटे अल्लाह का किसी को शरीक न करना बेशक शिर्क बड़ा

عَظِیْمٌ ﴿۱۳﴾ وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ

ज़ुल्म है[17] और हम ने आदमी को उस के मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई[18] उस की मां ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई[19]

وَّ فِصٰلُهٗ فِیْ عَامَیْنِ اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَؕ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿۱۴﴾ وَ اِنْ

और उस का दूध छूटना दो बरस में है येह कि हक़ मान मेरा और अपने मां बाप का[20] आख़िर मुझी तक आना है और अगर

8 : अपने फ़ज़्ल से बारिश की 9 : उ़म्दा अक़्साम के नबातात पैदा किये। 10 : जो तुम देख रहे हो। 11 : ऐ मुश्रिको ! 12 : या'नी बुतों ने जिन्हें तुम मुस्तहि़क़े इ़बादत क़रार देते हो। 13 : मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि लुक़्मान का नसब येह है : लुक़्मान बिन बाऊ़र बिन नाहू़र बिन तारिख़। वहब का क़ौल है कि ह़ज़रते लुक़्मान, ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْهِ السَّلَام के भान्जे थे। मुक़ातिल ने कहा कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْهِ السَّلَام की ख़ाला के फ़रज़न्द थे। वाक़िदी ने कहा कि बनी इसराईल में क़ाज़ी थे और येह भी कहा गया है कि आप हज़ार साल ज़िन्दा रहे और ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام का ज़माना पाया और इन से इ़ल्म अख़्ज़ किया और इन के ज़माने में फ़तवा देना तर्क कर दिया अगर्चे पहले से फ़तवा देते थे, आप की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर उ़लमा इसी की त़रफ़ हैं कि आप ह़कीम थे नबी न थे। हिक्मत अ़क़्लो फ़ह्म को कहते हैं और कहा गया है कि हिक्मत वोह इ़ल्म है जिस के मुत़ाबिक़ अ़मल किया जाए। बा'ज़ ने कहा कि "हिक्मत" मा'रिफ़त और इसाबत फ़िल उमूर को कहते हैं और येह भी कहा गया है कि हिक्मत ऐसी शै है कि अल्लाह तआ़ला इस को जिस के दिल में रखता है उस के दिल को रोशन कर देती है। 14 : इस ने'मत पर कि अल्लाह तआ़ला ने हिक्मत अ़त़ा की। 15 : क्यूं कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है और सवाब मिलता है। 16 : ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ السَّلَام के उन साहिब ज़ादे का नाम अन्अ़म या अश्कम था और इन्सान का आ'ला मर्तबा येह है कि वोह ख़ुद कामिल हो और दूसरे की तक्मील करे तो ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ السَّلَام का कामिल होना तो "اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ" में बयान फ़रमा दिया और दूसरे की तक्मील करना "وَهُوَ یَعِظُهٗ" से ज़ाहिर फ़रमाया और नसीह़त बेटे को की। इस से मा'लूम हुवा कि नसीह़त में घर वालों और क़रीब तर लोगों को मुक़द्दम करना चाहिये और नसीह़त की इब्तिदा मन्अ़ शिर्क से फ़रमाई। इस से मा'लूम हुवा कि येह निहायत अहम है। 17 : क्यूं कि इस में ग़ैर मुस्तहि़क़े इ़बादत को मुस्तहि़क़े इ़बादत के बराबर क़रार देना है और इ़बादत को उस के मह़ल के ख़िलाफ़ रखना येह दोनों बातें ज़ुल्मे अ़ज़ीम हैं। 18 : कि उन का फ़रमां बरदार रहे और उन के साथ नेक सुलूक करे (जैसा कि इसी आयत में आगे इर्शाद है) 19 : या'नी इस का ज़ो'फ़ दम ब दम तरक़्क़ी पर होता है जितना ह़म्ल बढ़ता जाता है बार ज़ियादा होता है और ज़ो'फ़ तरक़्क़ी करता है, औ़रत को ह़ामिला होने के बा'द ज़ो'फ़ और तअ़ब और मशक़्क़तें पहुंचती रहती हैं, ह़म्ल ख़ुद ज़ईफ़ करने वाला है, दर्दे ज़ेह ज़ो'फ़ पर ज़ो'फ़ है और

جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ

वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिस का तुझे इल्म नहीं[21] तो उन का कहना न मान[22] और

صَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا٘ وَّ اتَّبِعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ

दुन्या में अच्छी त़रह़ उन का साथ दे[23] और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया[24] फिर मेरी ही

مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ یٰبُنَیَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ

त़रफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बता दूंगा जो तुम करते थे[25] ऐ मेरे बेटे बुराई अगर राई

حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِیْ صَخْرَةٍ اَوْ فِی السَّمٰوٰتِ اَوْ فِی الْاَرْضِ

के दाने बराबर हो फिर वोह पथ्थर की चटान में या आस्मानों में या ज़मीन में कहीं हो[26]

یَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِیْفٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۶﴾ یٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

अल्लाह उसे ले आएगा[27] बेशक **अल्लाह** हर बारीकी का जानने वाला ख़बरदार है[28] ऐ मेरे बेटे नमाज़ बरपा रख और अच्छी

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ

बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ कर और जो उफ़्ताद (मुसीबत) तुझ पर पड़े[29] उस पर सब्र कर बेशक येह

عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۷﴾ ۚ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ

हिम्मत के काम हैं[30] और किसी से बात करने में[31] अपना रुख़्सारा कज न कर[32] और ज़मीन में इतराता

वज़्अ़ (बच्चा जनना) इस पर और मज़ीद शिद्दत है, दूध पिलाना इन सब पर मज़ीद बरआं है। **20 :** येह वोह ताकीद है जिस का ज़िक्र ऊपर फ़रमाया था। सुफ़्यान बिन उ़यैना ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि जिस ने पन्जगाना नमाज़ें अदा कीं वोह **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र बजा लाया और जिस ने पन्जगाना नमाज़ों के बा'द वालिदैन के लिये दुआ़एं कीं उस ने वालिदैन की शुक्र गुज़ारी की। **21 :** या'नी इल्म से तो किसी को मेरा शरीक ठहरा ही नहीं सकते क्यूं कि मेरा शरीक मुह़ाल है हो ही नहीं सकता, अब जो कोई भी कहेगा तो बे इल्मी ही से किसी चीज़ के शरीक ठहराने को कहेगा, ऐसा अगर मां बाप भी कहें **22 :** नख़ई ने कहा कि वालिदैन की त़ाअ़त वाजिब है लेकिन अगर वोह शिर्क का हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त न कर क्यूं कि ख़ालिक़ की ना फ़रमानी करने में किसी मख़्लूक़ की त़ाअ़त रवा नहीं। **23 :** हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने सुलूक और एह़सान व तह़म्मुल के साथ। **24 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब की राह, इसी को मज़्हबे सुन्नत व जमाअ़त कहते हैं। **25 :** तुम्हारे आ'माल की जज़ा दे कर। ''وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ'' से यहां तक जो मज़्मून है येह ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام का नहीं है बल्कि उन्हों ने अपने साहिब ज़ादे को **अल्लाह** तआ़ला के शुक्रे ने'मत का हुक्म दिया था और शिर्क की मुमानअ़त की थी तो **अल्लाह** तआ़ला ने वालिदैन की त़ाअ़त और इस का मह़ल इर्शाद फ़रमा दिया, इस के बा'द फिर ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام का मक़ूला ज़िक्र किया जाता है कि इन्हों ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : **26 :** कैसी ही पोशीदा जगह हो **अल्लाह** तआ़ला से नहीं छुप सकती **27 :** रोज़े क़ियामत और उस का ह़िसाब फ़रमाएगा **28 :** या'नी हर सग़ीर व कबीर उस के इह़ात़ए इल्मी में है। **29 :** **امر بالمعروف و نهى عن المنكر** करने से **30 :** इन का करना लाज़िम है। इस आयत से मा'लूम हुवा कि नमाज़ और **امر بالمعروف** और **نهى عن المنكر** और सब्र बर ईज़ा (तक्लीफ़ पर सब्र करना) येह ऐसी त़ाअ़तें हैं जिन का तमाम उम्मतों में हुक्म था। **31 :** बराहे तकब्बुर **32 :** या'नी जब आदमी बात करें तो उन्हें ह़क़ीर जान कर उन की त़रफ़ से रुख़ फेरना जैसा कि मुतकब्बिरीन का त़रीक़ा है इख़्तियार न करना, ग़नी व फ़क़ीर सब के साथ ब तवाज़ोअ़ पेश आना।

مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۚ﴿۱۸﴾ وَ اقْصِدْ فِیْ مَشْیِكَ وَ

न चल बेशक **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता और मियाना चाल चल[33] और

اغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ ﴿۱۹﴾ع اَلَمْ

अपनी आवाज़ कुछ पस्त कर[34] बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़, गधे की आवाज़[35] क्या

تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ

तुम ने न देखा कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में हैं[36] और तुम्हें

عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ

भरपूर दीं अपनी ने'मतें ज़ाहिर और छुपी[37] और बा'ज़े आदमी **अल्लाह** के बारे में झगड़ते हैं यूं कि

بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ﴿۲۰﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ

न इल्म न अ़क़्ल न कोई रोशन किताब[38] और जब उन से कहा जाए उस की पैरवी करो जो

اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ

अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं बल्कि हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया[39] क्या अगर्चे

الشَّیْطٰنُ یَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِیْرِ ﴿۲۱﴾ وَ مَنْ یُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى

शैतान उन को अ़ज़ाबे दोज़ख़ की तरफ़ बुलाता हो[40] और जो अपना मुंह **अल्लाह** की तरफ़

33 : न बहुत तेज़ न बहुत सुस्त कि येह दोनों बातें मज़्मूम हैं, एक में शाने तकब्बुर है और एक में छिछोरा पन। ह़दीस शरीफ़ में है कि बहुत तेज़ चलना मोमिन का वक़ार खोता है। **34 :** या'नी शोरो शग़ब और चीख़ने चिल्लाने से एह़तिराज़ कर। **35 :** मुद्दआ येह है कि शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह व ना पसन्दीदा है और इस में कुछ फ़ज़ीलत नहीं है, गधे की आवाज़ बा वुजूद बुलन्द होने के मक्रूह और वह़शत अंगेज़ है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नर्म आवाज़ से कलाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को ना पसन्द रखते थे। **36 :** आस्मानों में मिस्ले सूरज चांद तारों के जिन से तुम नफ़्अ़ उठाते हो और ज़मीनों में दरिया, नहरें, कानें, पहाड़, दरख़्त, फल, चौपाए वग़ैरा जिन से तुम फ़ाएदे ह़ासिल करते हो। **37 :** ज़ाहिरी ने'मतों से दुरुस्तिये आ'ज़ा व ह़वासे ख़म्सा ज़ाहिरा और ह़ुस्न व शक्लो सूरत मुराद हैं और बातिनी ने'मतों से इल्मे मा'रिफ़त व मलकाते फ़ाज़िला वग़ैरा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा तो इस्लाम व क़ुरआन है और ने'मते बातिना येह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये, तुम्हारा इफ़्शाए ह़ाल न किया, सज़ा में जल्दी न फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा दुरुस्तिये आ'ज़ा और ह़ुस्ने सूरत है और ने'मते बातिना ए'तिक़ादे क़ल्बी। एक क़ौल येह भी है कि ने'मते ज़ाहिरा रिज़्क़ है और बातिना ह़ुस्ने ख़ुल्क़। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा अह़कामे शरइय्या का हलका होना है और ने'मते बातिना शफ़ाअ़त। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा इस्लाम का ग़लबा और दुश्मनों पर फ़त्ह़ याब होना है और ने'मते बातिना मलाएका का इमदाद के लिये आना। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा रसूल का इत्तिबाअ़ है और ने'मते बातिना इन की मह़ब्बत ''رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰی اِتِّبَاعَهٗ وَمَحَبَّتَه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم'' **38 :** तो जो कहेंगे जहल व नादानी होगा और शाने इलाही में इस त़रह़ की जुरअत व लब कुशाई निहायत बे जा व गुमराही है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस व उबय बिन ख़लफ़ वग़ैरा कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो बा वुजूद बे इल्म व जाहिल होने के नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ झगड़े किया करते थे। **39 :** या'नी अपने बाप दादा के त़रीक़े ही पर रहेंगे इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **40 :** जब भी वोह अपने बाप दादा ही की पैरवी किये जाएंगे।

اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ

झुका दे[41] और हो नेकूकार तो बेशक उस ने मज़बूत गिरह थामी और **अल्लाह** ही की तरफ़ है सब

الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ

कामों की इन्तिहा और जो कुफ़्र करे तो तुम[42] उस के कुफ़्र से ग़म न खाओ उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना है हम उन्हें बता देंगे

بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ

जो करते थे[43] बेशक **अल्लाह** दिलों की बात जानता है हम उन्हें कुछ बरतने देंगे[44] फिर

نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

उन्हें बेबस कर के सख़्त अज़ाब की तरफ़ ले जाएंगे[45] और अगर तुम उन से पूछो किस ने बनाए आस्मान और

الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

ज़मीन तो ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां **अल्लाह** को[46] बल्कि उन में अक्सर जानते नहीं

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّ

अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[47] बेशक **अल्लाह** ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा और अगर

مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ

ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़लमें हो जाएं और समुन्दर उस की सियाही हो उस के पीछे सात

اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا

समुन्दर और[48] तो **अल्लाह** की बातें ख़त्म न होंगी[49] बेशक **अल्लाह** इज़्ज़तो हिक्मत वाला है तुम सब का पैदा करना और

41 : दीन ख़ालिस उस के लिये क़बूल करे, उस की इबादत में मश्गूल हो, अपने काम उस पर तफ़्वीज़ करे, उसी पर भरोसा रखे **42 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **43 :** या'नी हम उन्हें उन के आ'माल की सज़ा देंगे। **44 :** या'नी थोड़ी मोहलत देंगे कि वोह दुन्या के मज़े उठाएं **45 :** आख़िरत में और वोह दोज़ख़ का अ़ज़ाब है जिस से वोह रिहाई न पाएंगे। **46 :** येह उन के इक़रार पर उन्हें इल्ज़ाम देना है कि जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये वोह **अल्लाह** वाहिद لَا شَرِيْكَ لَهٗ है तो वाजिब हुवा कि उस की हम्द की जाए। उस का शुक्र अदा किया जाए और उस के सिवा किसी और की इबादत न की जाए। **47 :** सब उस की मम्लूक, मख़्लूक़ और बन्दे हैं तो उस के सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं। **48 :** और सारी ख़ल्क़ **अल्लाह** तआ़ला के कलिमात को लिखे और वोह तमाम क़लम और उन तमाम समुन्दरों की सियाही ख़त्म हो जाए। **49 :** क्यूं कि मा'लूमाते इलाहिय्यह ग़ैर मुतनाही हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ लाए तो यहूद के उ़लमा व अह़बार ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहा कि हम ने सुना है कि आप फ़रमाते हैं "وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا" या'नी तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया तो इस से आप की मुराद हम लोग हैं या सिर्फ़ अपनी क़ौम ? फ़रमाया : सब मुराद हैं। उन्हों ने कहा : क्या आप की किताब में येह नहीं है कि हमें तौरैत दी गई है, इस में हर शै का इल्म है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि हर शै का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और तुम्हें तो **अल्लाह** तआ़ला ने इतना इल्म दिया है कि उस पर अ़मल करो तो नफ़्अ़ पाओ। उन्हों ने कहा : आप कैसे येह ख़याल फ़रमाते हैं आप का क़ौल तो येह है कि जिसे हिक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई तो इल्मे क़लील और ख़ैरे कसीर कैसे जम्अ़ हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, इस तक़्दीर पर येह आयत मदनी होगी। एक क़ौल येह भी है कि यहूद ने क़ुरैश

بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۲۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

क़ियामत में उठाना ऐसा ही है जैसा एक जान का[50] बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है ऐ सुनने वाले क्या तू ने न देखा कि **अल्लाह**

یُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ یُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ

रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन करता है रात के हिस्से में[51] और उस ने सूरज और चांद

الْقَمَرَ ؗ كُلٌّ یَّجْرِیْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۲۹﴾

काम में लगाए[52] हर एक एक मुक़र्रर मीआ़द तक चलता है[53] और येह कि **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ اَنَّ

येह इस लिये कि **अल्लाह** ही हक़ है[54] और उस के सिवा जिन को पूजते हैं सब बातिल हैं[55] और इस लिये कि

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِیُّ الْكَبِیْرُ ﴿۳۰﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِیْ فِی الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ

अल्लाह ही बुलन्द बड़ाई वाला है क्या तू ने न देखा कि कश्ती दरिया में चलती है **अल्लाह** के फ़ज़्ल से[56]

اللّٰهِ لِیُرِیَكُمْ مِّنْ اٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا

ताकि तुम्हें वोह अपनी[57] कुछ निशानियां दिखाए बेशक इस में निशानियां हैं हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार को[58] और जब

غَشِیَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ

उन पर[59] आ पड़ती है कोई मौज पहाड़ों की त़रह़ तो **अल्लाह** को पुकारते हैं निरे उसी पर अ़क़ीदा रखते हुए[60] फिर जब उन्हें ख़ुश्की

اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَ مَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۲﴾

की त़रफ़ बचा लाता है तो उन में कोई ए'तिदाल पर रहता है[61] और हमारी आयतों का इन्कार न करेगा मगर हर बड़ा बेवफ़ा नाशुक्रा

से कहा था कि मक्के में जा कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से इस त़रह़ का कलाम करें। एक क़ौल येह है कि मुशरिकीन ने येह कहा था कि क़ुरआन और जो कुछ मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم लाते हैं येह अ़न्क़रीब तमाम हो जाएगा फिर क़िस्सा ख़त्म। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **50 :** **अल्लाह** पर कुछ दुश्वार नहीं, उस की क़ुदरत येह है कि एक कुन से सब को पैदा कर दे। **51 :** या'नी एक को घटा कर दूसरे को बढ़ा कर और जो वक़्त एक में से घटाता है दूसरे में बढ़ा देता है। **52 :** बन्दों के नफ़्अ़ के लिये। **53 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक या अपने अपने अवक़ाते मुअ़य्यना तक, सूरज आख़िरे साल तक और चांद आख़िरे माह तक। **54 :** वोही इन अश्याए मज़्कूरा पर क़ादिर है तो वोही मुस्तह़िक़्क़े इबादत है। **55 :** फ़ना होने वाले उन में से कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं हो सकता। **56 :** उस की रह़मत और उस के एह़सान से **57 :** अ़जाइबे क़ुदरत की **58 :** जो बलाओं पर सब्र करे और **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का शुक्र गुज़ार हो, सब्रो शुक्र येह दोनों सिफ़तें मोमिन की हैं। **59 :** या'नी कुफ़्फ़ार पर **60 :** और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ और ज़ारी करते हैं और उसी से दुआ़ व इल्तिजा, उस वक़्त मा सिवा को भूल जाते हैं **61 :** अपने ईमान व इख़्लास पर क़ाइम रहता है, कुफ़्र की त़रफ़ नहीं लौटता। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत इक्रिमा बिन अबी जहल के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिस साल मक्कए मुकर्रमा की फ़त्ह़ हुई तो वोह समुन्दर की त़रफ़ भाग गए, वहां बादे मुख़ालिफ़ ने घेरा और ख़त़रे में पड़ गए तो इक्रिमा ने कहा कि अगर **अल्लाह** तआ़ला हमें इस ख़त़रे से नजात दे तो मैं ज़रूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर हाथ में हाथ दे दूंगा या'नी इत़ाअ़त करूंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने करम किया, हवा ठहर गई और इक्रिमा मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ आ गए और इस्लाम लाए और बड़ा मुख़्लिसाना इस्लाम लाए और बा'ज़ उन में ऐसे

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَ اخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ

ऐ लोगो[62] अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा

وَ لَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْــٴًـا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا

और न कोई कामी बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़्अ़ दे[63] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[64] तो हरगिज़

تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٚ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ

तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी[65] और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के ह़िल्म पर धोका न दे वोह बड़ा फ़रेबी[66] बेशक अल्लाह

عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَ

के पास है क़ियामत का इ़ल्म[67] और उतारता है मींह और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है और

مَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّا ذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَ مَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ

कोई जान नहीं जानती कि कल क्या कमाएगी और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में

تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۳۴﴾

मरेगी बेशक अल्लाह जानने वाला बताने वाला है[68]

थे जिन्हों ने अ़ह्द वफ़ा न किया, उन की निस्बत अगले जुम्ले में इर्शाद होता है। **62 :** या'नी ऐ अहले मक्का ! **63 :** रोज़े क़ियामत हर इन्सान नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और बाप बेटे के और बेटा बाप के काम न आ सकेगा, न काफ़िरों की मुसल्मान औलाद उन्हें फ़ाएदा पहुंचा सकेगी न मुस्लमान मां बाप काफ़िर औलाद को। **64 :** ऐसा दिन ज़रूर आना और बअ़्स व ह़िसाब व जज़ा का वा'दा ज़रूर पूरा होना है **65 :** जिस की तमाम ने'मतें और लज़्ज़तें फ़ानी, कि इन के शेफ़्ता हो कर ने'मते ईमान से मह़रूम रह जाओ **66 :** या'नी शैत़ान दूरो दराज़ की उम्मीदों में डाल कर मा'सियतों में मुब्तला न कर दे। **67 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ारिस बिन अ़म्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर क़ियामत का वक़्त दरयाफ़्त किया था और येह कहा था कि मैं ने खेती बोई है ख़बर दीजिये मींह कब आएगा और मेरी औ़रत ह़ामिला है मुझे बताइये कि उस के पेट में क्या है लड़का या लड़की ? येह तो मुझे मा'लूम है कि कल मैं ने क्या किया, येह मुझे बताइये कि आयिन्दा कल को क्या करूंगा ? येह भी जानता हूं कि मैं कहां पैदा हुवा, मुझे येह बताइये कि कहां मरूंगा ? इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **68 :** जिस को चाहे अपने औलिया और अपने मह़बूबों में से उन्हें ख़बरदार करे। इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इ़ल्म की ख़ुसूसिय्यत अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ बयान फ़रमाई गई उन्हीं की निस्बत सूरए जिन्न में इर्शाद हुवा ''عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ'' ग़रज़ येह कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए इन चीज़ों का इ़ल्म किसी को नहीं और अल्लाह तआ़ला अपने मह़बूबों में से जिसे चाहे बताए और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर ख़ुद उस ने सूरए जिन्न में दी है। ख़ुलासा येह कि इ़ल्मे ग़ैब अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला की ता'लीम से ब त़रीक़े मो'जिज़ा व करामत अ़त़ा होता है, येह इस इख़्तिसास के मुनाफ़ी नहीं और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं। बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है और कल को क्या करे और कहां मरेगा इन उमूर की ख़बरें ब कसरत औलिया व अम्बिया ने दी हैं और क़ुरआनो ह़दीस से साबित हैं। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते मरयम को ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की ख़बरें दीं तो उन फ़िरिश्तों को भी पहले से मा'लूम था कि उन ह़म्लों में क्या है और उन ह़ज़रात को भी जिन्हें फ़िरिश्तों ने इत्तिलाएं दी थीं और उन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के मा'ना क़त्अ़न येही हैं कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए कोई नहीं जानता। इस के येह मा'ना लेना कि अल्लाह तआ़ला के बताने से भी कोई नहीं जानता मह़ज़ बात़िल और सदहा आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ है। (خازن، بیضاوی، احمدی، روح البیان وغیرہ)

ایاتها ٣٠ ﴿٣٢ سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ ٧٥﴾ ركوعاتها ٣

सूरए सज्दह मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

الٓمّٓ ۟ۚ تَنْزِیْلُ الْكِتٰبِ لَا رَیْبَ فِیْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۟ؕ اَمْ

किताब का उतारना[2] बेशक परवर्दगारे आ़लम की त़रफ़ से है क्या

یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اَتٰىهُمْ

कहते हैं[3] उन की बनाई हुई है[4] बल्कि वोही ह़क़ है तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास

مِّنْ نَّذِیْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ یَهْتَدُوْنَ ۟ اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया[5] इस उम्मीद पर कि वोह राह पाएं अल्लाह है जिस ने आस्मान

وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ؕ مَا

और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच में है छ[6] दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया[6] उस से

لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ وَّ لَا شَفِیْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۟ یُدَبِّرُ

छूट कर (ला तअ़ल्लुक़ हो कर) तुम्हारा कोई ह़िमायती न सिफ़ारिशी[7] तो क्या तुम ध्यान नहीं करते काम की तदबीर

الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَی الْاَرْضِ ثُمَّ یَعْرُجُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ

फ़रमाता है आस्मान से ज़मीन तक[8] फिर उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा[9] उस दिन कि जिस की मिक़्दार

اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۟ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْعَزِیْزُ

हज़ार बरस है तुम्हारी गिनती में[10] येह[11] है हर निहां और इ़यां का जानने वाला इ़ज़्ज़तो

1 : सूरए सज्दह मक्किय्या है सिवा तीन आयतों के जो ''اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا'' से शुरूअ़ होती है। इस सूरत में तीस आयतें और तीन सो अस्सी कलिमे और एक हज़ार पांच सो अठ्ठारह ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ुरआने करीम का मो'जिज़ा कर के इस त़रह़ कि इस के मिस्ल एक सूरत या छोटी सी इ़बारत बनाने से तमाम फ़ुसह़ा व बुलग़ा आ़जिज़ रह गए। 3 : मुश्रिकीन कि येह किताबे मुक़द्दस 4 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की 5 : ऐसे लोगों से मुराद ज़मानए फ़ित्रत के लोग हैं, वोह ज़माना कि ह़ज़रते ई़सा عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द से सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की बि'सत तक था कि उस ज़माने में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से कोई रसूल नहीं आया। 6 : जैसा इस्तिवा कि उस की शान के लाइक़ है। 7 : या'नी ऐ गुरौहे कुफ़्फ़ार जब तुम अल्लाह तआ़ला की राहे रिज़ा इख़्तियार न करो और ईमान न लाओ तो न तुम्हें कोई मददगार मिलेगा जो तुम्हारी मदद कर सके न कोई शफ़ीअ़ जो तुम्हारी शफ़ाअ़त करे। 8 : या'नी दुन्या के क़ियामत तक होने वाले कामों की अपने हुक्म व अम्र और अपने क़ज़ा व क़दर से। 9 : अम्र व तदबीर, फ़नाए दुन्या के बा'द। 10 : या'नी अय्यामे दुन्या के हिसाब से और वोह दिन रोज़े क़ियामत है, रोज़े क़ियामत की दराज़ी बा'ज़ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस के बराबर होगी और बा'ज़ के लिये पचास हज़ार

الرَّحِيْمُ ۙ﴿۶﴾ الَّذِیْۤ اَحْسَنَ كُلَّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ وَ بَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ

रह़मत वाला वोह जिस ने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई[12] और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा

طِیْنٍ ﴿۷﴾ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ﴿۸﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَ

मिट्टी से फ़रमाई[13] फिर उस की नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासे से[14] फिर उसे ठीक किया और

نَفَخَ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ

उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी[15] और तुम्हें कान और आंखें और दिल अ़त़ा फ़रमाए[16]

قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۹﴾ وَ قَالُوْۤا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِی الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِیْ

क्या ही थोड़ा ह़क़ मानते हो और बोले[17] क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे[18] क्या फिर

خَلْقٍ جَدِیْدٍ ؕ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۰﴾ قُلْ یَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ

नए बनेंगे बल्कि वोह अपने रब के ह़ुज़ूर ह़ाज़िरी से मुन्किर हैं[19] तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का

الْمَوْتِ الَّذِیْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ

फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है[20] फिर अपने रब की त़रफ़ वापस जाओगे[21] और कहीं तुम देखो जब

الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَ سَمِعْنَا

मुजरिम[22] अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे[23] ऐ हमारे रब अब हम ने देखा[24] और सुना[25]

فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَوْ شِئْنَا لَاٰتَیْنَا كُلَّ نَفْسٍ

हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम को यक़ीन आ गया[26] और अगर हम चाहते हर जान को उस की हिदायत

बरस के बराबर जैसे कि सूरए मआ़रिज में है "تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ" और मोमिन पर येह दिन एक नमाज़े फ़र्ज़ के वक़्त से भी हलका होगा जो दुन्या में पढ़ता था जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। **11 :** ख़ालिक़े मुदब्बिर جَلَّ جَلَالُهٗ **12 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत बनाई, हर जानदार को वोह सूरत दी जो उस के लिये बेहतर है और उस को ऐसे आ'ज़ा अ़त़ा फ़रमाए जो उस के मआ़श के लिये मुनासिब हैं। **13 :** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से बना कर। **14 :** या'नी नुत़्फ़े से **15 :** और उस को बे ह़िस बेजान होने के बा'द ह़स्सास और जानदार किया **16 :** ताकि तुम सुनो और देखो और समझो। **17 :** मुन्किरीने बअ़्स **18 :** और मिट्टी हो जाएंगे और हमारे अज्ज़ा मिट्टी से मुमताज़ न रहेंगे **19 :** या'नी मौत के बा'द उठने और ज़िन्दा किये जाने का इन्कार कर के वोह उस इन्तिहा तक पहुंचे कि आक़िबत (आख़िरत) के तमाम उमूर के मुन्किर हैं ह़त्ता कि रब के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर होने के भी। **20 :** उस फ़िरिश्ते का नाम इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام है और वोह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से रूहें क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं, अपने काम में कुछ ग़फ़्लत नहीं करते, जिस का वक़्त आ जाता है बे दरंग उस की रूह़ क़ब्ज़ कर लेते हैं। मरवी है कि मलकुल मौत के लिये दुन्या मिस्ल कफ़े दस्त (हथेली की मानिन्द) कर दी गई है तो वोह मशारिक़ व मग़ारिब की मख़्लूक़ की रूहें बे मशक़्क़त उठा लेते हैं और रह़मत व अ़ज़ाब के बहुत फ़िरिश्ते उन के मा तह़्त हैं। **21 :** और ह़िसाब व जज़ा के लिये ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे। **22 :** या'नी कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन **23 :** अपने अफ़्आ़ल व किरदार से शरमिन्दा व नादिम हो कर और अ़र्ज़ करते होंगे **24 :** मरने के बा'द उठने को और तेरे वा'दए वईद के सिद्क़ को जिन के हम दुन्या में मुन्किर थे। **25 :** तुझ से तेरे रसूलों की सच्चाई को तो अब दुन्या में **26 :** और अब हम ईमान ले आए। लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना उन्हें कुछ काम न देगा।

هُدٰىهَا وَ لٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّیْ لَاَمْلَـٴَـنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ

अ़ता फ़रमाते[27] मगर मेरी बात क़रार पा चुकी कि ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा उन जिन्नों और आदमियों

اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۳﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِیْتُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِیْنٰكُمْ وَ

सब से[28] अब चखो बदला उस का कि तुम अपने इस दिन की ह़ाज़िरी भूले थे[29] हम ने तुम्हें छोड़ दिया[30]

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا

अब हमेशा का अ़ज़ाब चखो अपने किये का बदला हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं

الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا

कि जब वोह उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं[31] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलते हैं और

یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۱۵﴾ السجدة تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ

तकब्बुर नहीं करते उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से[32] और अपने रब को पुकारते हैं

خَوْفًا وَّ طَمَعًا ۫ وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ

डरते और उम्मीद करते[33] और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक

لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا

उन के लिये छुपा रखी है[34] सिला उन के कामों का[35] तो क्या जो ईमान वाला है

كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا یَسْتَوٗنَ ﴿۱۸﴾ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वोह उस जैसा हो जाएगा जो बे हुक्म है[36] येह बराबर नहीं जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

السجدة ۹

وقف غفران وقف غفران

27 : और उस पर ऐसा लुत्फ़ करते कि अगर वोह उस को इख़्तियार करता तो राहयाब होता, लेकिन हम ने ऐसा न किया क्यूं कि हम काफ़िरों को जानते थे कि वोह कुफ़्र ही इख़्तियार करेंगे। 28 : जिन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया और जब वोह जहन्नम में दाख़िल होंगे तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन से कहेंगे 29 : और दुन्या में ईमान न लाए थे। 30 : अ़ज़ाब में, अब तुम्हारी त़रफ़ इल्तिफ़ात न होगा। 31 : तवाज़ोअ़ और ख़ुशूअ़ से और ने'मते इस्लाम पर शुक्र गुज़ारी के लिये। 32 : या'नी ख़्वाबे इस्तिराहत के बिस्तरों से उठते हैं और अपने राह़तो आराम को छोड़ते हैं 33 : या'नी उस के अ़ज़ाब से डरते हैं और उस की रह़मत की उम्मीद करते हैं, येह तहज्जुद अदा करने वालों की ह़ालत का बयान है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह आयत हम अन्सारियों के ह़क़ में नाज़िल हुई कि हम मग़रिब पढ़ कर अपनी क़ियाम गाहों को वापस न आते थे जब तक कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ नमाज़े इशा न पढ़ लेते। 34 : जिस से वोह राह़तें पाएंगे और उन की आंखें ठन्डी होंगी 35 : या'नी उन त़ाअ़तों का जो उन्हों ने दुन्या में अदा कीं 36 : या'नी काफ़िर है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से वलीद बिन उ़क़्बा बिन अबी मुऐत़ किसी बात में झगड़ रहा था। दौराने गुफ़्तगू कहने लगा ख़ामोश हो जाओ, तुम लड़के हो मैं बूढ़ा हूं, मैं बहुत ज़बान दराज़ हूं, मेरी नोके सिनान तुम से ज़ियादा तेज़ है, मैं तुम से ज़ियादा बहादुर हूं, मैं बड़ा जथ्थेदार हूं। ह़ज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : चुप ! तू फ़ासिक़ है। मुराद येह थी कि जिन बातों पर तू नाज़ करता है इन्सान के लिये उन में से कोई क़ाबिले मद्ह़ नहीं, इन्सान का फ़ज़्ल व शरफ़ ईमान व तक़्वा में है, जिसे येह दौलत नसीब नहीं वोह इन्तिहा का रज़ील है, काफ़िर मोमिन

فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۙ نُزُلًا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के कामों के सिले में मेहमान दारी[37] रहे वोह जो बे हुक्म हैं[38]

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَ قِيْلَ

उन का ठिकाना आग है जब कभी उस में से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उन से फ़रमाया

لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَ لَنُذِيْقَنَّهُمْ

जाएगा चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे और ज़रूर हम उन्हें चखाएंगे

مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ

कुछ नज़्दीक का अ़ज़ाब[39] उस बड़े अ़ज़ाब से पहले[40] जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे और

مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ

उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उस ने उन से मुंह फेर लिया[41] बेशक हम मुजरिमों से

مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآىٕهٖ

बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने मूसा को किताब[42] अ़ता फ़रमाई तो तुम उस के मिलने में शक न करो[43]

وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۲۳﴾ وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَىٕمَّةً يَّهْدُوْنَ

और हम ने उसे[44] बनी इसराईल के लिये हिदायत किया और हम ने उन में से[45] कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म

بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ

से बताते[46] जब कि उन्हों ने सब्र किया[47] और वोह हमारी आयतों पर यक़ीन लाते थे बेशक तुम्हारा रब

के बराबर नहीं हो सकता। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की तस्दीक़ में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **37 :** या'नी मोमिनीने सालिहीन की जन्नते मावा में इ़ज़्ज़तो इक्राम के साथ मेहमान दारी की जाएगी। **38 :** ना फ़रमान काफ़िर हैं **39 :** दुन्या ही में क़त्ल और गिरिफ़्तारी और क़हत़ व अमराज़ वग़ैरा में मुब्तला कर के। चुनान्चे ऐसा ही पेश आया कि हुज़ूर की हिजरत से क़ब्ल क़ुरैश अमराज़ व मसाइब में गिरिफ़्तार हुए और बा'दे हिजरत बद्र में मक़्तूल हुए गिरिफ़्तार हुए और सात बरस क़हत़ की ऐसी सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे कि हड्डियां और मुर्दार और कुत्ते तक खा गए। **40 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत से **41 :** और आयात में ग़ौर न किया और उन के वुज़ूह व इर्शाद से फ़ाएदा न उठाया और ईमान से बहरा अन्दोज़ न हुवा। **42 :** या'नी तौरैत **43 :** या'नी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को किताब के मिलने में, या येह मा'ना हैं कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मिलने और इन से मुलाक़ात होने में शक न करो। चुनान्चे शबे मे'राज हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात हुई, जैसा कि अहादीस में वारिद है। **44 :** या'नी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को या तौरैत को **45 :** या'नी बनी इसराईल में से **46 :** लोगों को ख़ुदा की त़ाअ़त और उस की फ़रमां बरदारी और **अल्लाह** तआ़ला के दीन और उस की शरीअ़त का इत्तिबाअ़, तौरैत के अह़काम की ता'मील, और येह इमाम अम्बियाए बनी इसराईल थे या अम्बिया के मुत्तबिईन। **47 :** अपने दीन पर और दुश्मनों की त़रफ़ से पहुंचने वाली मुसीबतों पर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि सब्र का समरा इमामत और पेशवाई है।

يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَوَلَمْ

उन में फ़ैसला कर देगा[48] क़ियामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे[49] और क्या

يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ

उन्हें[50] इस पर हिदायत न हुई कि हम ने उन से पहले कितनी संगतें[51] हलाक कर दीं कि आज येह उन के घरों में चल फिर रहे हैं[52]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं तो क्या सुनते नहीं[53] और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं

اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़[54] फिर उस से खेती निकालते हैं कि उस में से उन के चौपाए और वोह ख़ुद खाते हैं[55]

اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾

तो क्या उन्हें सूझता नहीं[56] और कहते हैं येह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो[57]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۲۹﴾

तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन[58] काफ़िरों को उन का ईमान लाना नफ़्अ़ न देगा और न उन्हें मोहलत मिले[59]

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع

तो उन से मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो[60] बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है[61]

48 : या'नी अम्बिया में और उन की उम्मतों में या मोमिनीन व मुश्रिकीन में **49 :** उमूरे दीन में से और हक़ व बातिल वालों को जुदा जुदा मुमताज़ कर देगा। **50 :** या'नी अहले मक्का को **51 :** कितनी उम्मतें मिस्ले आ़द, समूद व क़ौमे लूत के **52 :** या'नी अहले मक्का जब ब सिल्सिलए तिजारत शाम के सफ़र करते हैं तो उन लोगों के मनाज़िल व बिलाद में गुज़रते हैं और उन की हलाकत के आसार देखते हैं। **53 :** जो इ़ब्रत ह़ासिल करें और पन्द पज़ीर हों। **54 :** जिस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं **55 :** चौपाए भूसा और वोह ख़ुद ग़ल्ला **56 :** कि वोह येह देख कर **अल्लाह** तआ़ला के कमाले क़ुदरत पर इस्तिद्लाल करें और समझें कि जो क़ादिरे बरहक़ ख़ुश्क ज़मीन से खेती निकालने पर क़ादिर है मुर्दों का ज़िन्दा करना उस की क़ुदरत से क्या बई़द। **57 :** मुसल्मान कहा करते थे कि **अल्लाह** तआ़ला हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा और फ़रमां बरदार और ना फ़रमान को उन के ह़स्बे अ़मल जज़ा देगा। इस से उन की मुराद येह थी कि हम पर रह़मत व करम करेगा और कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन को अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा। इस पर काफ़िर बत़ौरे तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा कहते थे कि येह फ़ैसला कब होगा उस का वक़्त कब आएगा ? **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब से इर्शाद फ़रमाता है : **58 :** जब अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होगा **59 :** तौबा व मा'ज़िरत की। फ़ैसले के दिन से या रोज़े क़ियामत मुराद है या रोज़े फ़त्ह़े मक्का या रोज़े बद्र, बर तक़्दीरे अव्वल अगर रोज़े क़ियामत मुराद हो तो ईमान का नाफ़ेअ़ न होना ज़ाहिर है क्यूं कि ईमान वोही मक़्बूल है जो दुन्या में हो और दुन्या से निकलने के बा'द न ईमान मक़्बूल होगा न ईमान लाने के लिये दुन्या में वापस आना मुयस्सर आएगा और अगर फ़ैसले के दिन से रोज़े बद्र या रोज़े फ़त्ह़े मक्का मुराद हो तो मा'ना येह हैं कि जब कि अ़ज़ाब आ जाए और वोह लोग क़त्ल होने लगें तो ह़ालते क़त्ल में उन का ईमान लाना क़ुबूल न किया जाएगा और न अ़ज़ाब मुअख़्ख़र कर के उन्हें मोहलत दी जाए। चुनान्चे जब मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ हुवा तो क़ौमे बनी किनाना भागी, ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद ने जब उन्हें घेरा और उन्हों ने देखा कि अब क़त्ल सर पर आ गया कोई उम्मीद जां बरी की नहीं तो उन्हों ने इस्लाम का इज़्हार किया, ह़ज़रते ख़ालिद ने क़ुबूल न फ़रमाया और उन्हें क़त्ल कर दिया। (جمل وغیرہ) **60 :** उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होने का। **61 :** बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोज़े जुमुआ़ नमाज़े फ़ज्र में येह सूरत या'नी सूरए सज्दह और सूरए दह्र पढ़ते थे। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि जब तक ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ایاتها ۷۳ | ۳۳ سورۃ الاحزاب مدنیۃ ۹۰ | رکوعاتها ۹

सूरए अह्ज़ाब मदनिय्या है, इस में तिहत्तर आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَ لَا تُطِعِ الْكٰفِرِیْنَ وَ الْمُنٰفِقِیْنَؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी)[2] अल्लाह का यूं ही ख़ौफ़ रखना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की न सुनना[3] बेशक अल्लाह

عَلِیْمًا حَكِیْمًاۙ﴿۱﴾ وَّ اتَّبِعْ مَا یُوْحٰۤى اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

इल्मो हिक्मत वाला है और उस की पैरवी रखना जो तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हें वह्य होती है ऐ लोगो अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرًاۙ﴿۲﴾ وَّ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِیْلًا﴿۳﴾ مَا

तुम्हारे काम देख रहा है और ऐ मह्बूब तुम अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस (काफ़ी) है काम बनाने वाला

جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَیْنِ فِیْ جَوْفِهٖۚ وَ مَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔیْ

अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे[4] और तुम्हारी उन औ़रतों को जिन्हें तुम मां के बराबर

येह सूरत और सूरए ''تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ'' पढ़ न लेते ख़्वाब (नींद) न फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि सूरए सज्दह अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखती है। (خازن ومدارک) **1 :** सूरए अह्ज़ाब मदनिय्या है। इस में नव रुकूअ़, तिहत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो अस्सी कलिमे और पांच हज़ार सात सो नव्वे ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी हमारी त़रफ़ से ख़बरें देने वाले, हमारे असरार के अमीन, हमारा ख़िता़ब हमारे प्यारे बन्दों को पहुंचाने वाले। अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ के साथ ख़िता़ब फ़रमाया जिस के येह मा'ना हैं जो ज़िक्र किये गए। नामे पाक के साथ या मुह़म्मद ! ज़िक्र फ़रमा कर ख़िता़ब न किया जैसा कि दूसरे अम्बिया علیہم السلام को ख़िता़ब फ़रमाया है। इस से मक़्सूद आप की तक्रीम और आप का एह़तिराम और आप की फ़ज़ीलत का ज़ाहिर करना है। (مدارک) **3 शाने नुज़ूल :** अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और इक्रिमा बिन अबी जह्ल और अबुल आ'वर सुलमी जंगे उ़हुद के बा'द मदीनए त़य्यिबा में आए और मुनाफ़िक़ीन के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के यहां मुक़ीम हुए। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से गुफ़्तगू के लिये अमान ह़ासिल कर के उन्हों ने येह कहा कि आप लात, उ़ज़्ज़ा, मनात वग़ैरा बुतों को जिन्हें मुश्रिकीन अपना मा'बूद समझते हैं कुछ न फ़रमाइये और येह फ़रमा दीजिये कि इन की शफ़ाअ़त इन के पुजारियों के लिये है और हम लोग आप को और आप के रब को कुछ न कहेंगे। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को उन की येह गुफ़्तगू बहुत ना गवार हुई और मुसल्मानों ने उन के क़त्ल का इरादा किया, सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने क़त्ल की इजाज़त न दी और फ़रमाया कि मैं इन्हें अमान दे चुका हूं इस लिये क़त्ल न करो, मदीने शरीफ़ से निकाल दो। चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने निकाल दिया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, इस में ख़िता़ब तो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के साथ है और मक़्सूद है आप की उम्मत से फ़रमाना कि जब नबी صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने अमान दी तो तुम उस के पाबन्द रहो और नक़्ज़े अ़ह्द (अ़ह्द तोड़ने) का इरादा न करो और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन की ख़िलाफ़े शर्अ़ बात न मानो। **4 :** कि एक में अल्लाह का ख़ौफ़ हो दूसरे में किसी और का, जब एक ही दिल है तो अल्लाह ही से डरे। **शाने नुज़ूल :** अबू मा'मर हुमैद फ़िह्री की याद दाश्त अच्छी थी जो सुनता था याद कर लेता था। क़ुरैश ने कहा कि इस के दो दिल हैं जभी तो इस का ह़ाफ़िज़ा इतना क़वी है। वोह ख़ुद भी कहता था कि इस के दो दिल हैं और हर एक में ह़ज़रते सय्यिद आ़लम (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) से ज़ियादा दानिश है। जब बद्र में मुश्रिक भागे तो अबू मा'मर इस शान से भागा कि एक जूती हाथ में, एक पाउं में। अबू सुफ़्यान से मुलाक़ात हुई तो अबू सुफ़्यान ने पूछा : क्या ह़ाल है ? कहा : लोग भाग गए। तो अबू सुफ़्यान ने पूछा : एक जूती हाथ में एक पाउं में क्यूं है ? कहा : इस की मुझे ख़बर नहीं मैं तो येही समझ रहा हूं कि दोनों जूतियां पाउं में हैं। उस वक़्त क़ुरैश को मा'लूम हुवा कि दो दिल होते तो जूती जो हाथ में लिये हुए था भूल न जाता। और एक क़ौल येह भी है कि मुनाफ़िक़ीन सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के लिये

تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَ مَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ

कह दो तुम्हारी मां न बनाया[5] और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया[6] येह

قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَ هُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ﴿۴﴾

तुम्हारे अपने मुंह का कहना है[7] और अल्लाह हक़ फ़रमाता है और वोही राह दिखाता है[8]

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ

उन्हें उन के बाप ही का कह कर पुकारो[9] येह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा ठीक है फिर अगर तुम्हें उन के बाप मा'लूम न हों[10]

فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ مَوَالِيْكُمْ ؕ وَ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ

तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और बशरिय्यत में तुम्हारे चचाज़ाद[11] और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जो ना दानिस्ता तुम से सादिर

بِهٖ ۙ وَ لٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵﴾

हुवा[12] हां वोह गुनाह है जो दिल के क़स्द से करो[13] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَ اُولُوا

येह नबी मुसल्मानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है[14] और उस की बीबियां उन की माएं हैं[15] और रिश्ते

दो दिल बताते और कहते थे कि इन का एक दिल हमारे साथ है और एक अपने अस्हाब के साथ। नीज़ ज़मानए जाहिलिय्यत में जब कोई अपनी औरत से ज़िहार करता था तो लोग उस ज़िहार को तलाक़ कहते और उस औरत को उस की मां क़रार देते थे और जब कोई शख़्स किसी को बेटा कह देता तो उस को हक़ीक़ी बेटा क़रार दे कर शरीके मीरास ठहराते और उस की ज़ौजा को बेटा कहने वाले के लिये सुल्बी बेटे की बीबी की तरह हराम जानते, इन सब के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **5 :** या'नी ज़िहार से औरत मां के मिस्ल हराम नहीं हो जाती। **ज़िहार :** मन्कूहा को ऐसी औरत से तश्बीह देना जो हमेशा के लिये हराम हो और येह तश्बीह ऐसे उज़्व में हो जिस को देखना और छूना जाइज़ नहीं है। मसलन किसी ने अपनी बीबी से येह कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पीठ या पेट के मिस्ल है तो वोह मुज़ाहिर हो गया। **मस्अला :** ज़िहार से निकाह बातिल नहीं होता लेकिन कफ़्फ़ारा अदा करना लाज़िम हो जाता है और कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले औरत से अलाहदा रहना और उस से तमत्तोअ न करना लाज़िम है। **मस्अला :** ज़िहार का कफ़्फ़ारा एक गुलाम का आज़ाद करना और येह मुयस्सर न हो तो मुतवातिर दो महीने के **रोज़े** और येह भी न हो सके तो **साठ मिस्कीनों** को खाना खिलाना है। **मस्अला :** कफ़्फ़ारा अदा करने के बा'द औरत से क़ुर्बत और तमत्तोअ हलाल हो जाता है। (ہدایہ) **6 :** ख़्वाह उन्हें लोग तुम्हारा बेटा कहते हों। **7 :** या'नी बीबी को मां के मिस्ल कहना और ले पालक को बेटा कहना बे हक़ीक़त बात है, न बीबी मां हो सकती है न दूसरे का "फ़रज़न्द" अपना बेटा। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब हज़रते ज़ैनब बिन्ते जह्श से निकाह किया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने ज़बाने ता'न खोली और कहा कि (हज़रत) मुहम्मद (मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अपने बेटे ज़ैद की बीबी से शादी कर ली। क्यूं कि पहले हज़रते ज़ैनब ज़ैद के निकाह में थीं और हज़रते ज़ैद उम्मुल मुअमिनीन हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ज़र ख़रीद थे। इन्हों ने हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में उन्हें हिबा कर दिया, हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद कर दिया तब भी वोह अपने बाप के पास न गए हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहे, हुज़ूर उन पर शफ़्क़त व करम फ़रमाते थे इस लिये लोग उन्हें हुज़ूर का फ़रज़न्द कहने लगे। इस से वोह हक़ीक़तन हुज़ूर के बेटे न हो गए और यहूद व मुनाफ़िक़ीन का ता'ना मह्ज़ ग़लत और बे जा हुवा। अल्लाह तआला ने यहां उन ताइनीन (ता'ना देने वालों) की तक्ज़ीब फ़रमाई और उन्हें झूटा क़रार दिया। **8 :** हक़ की। लिहाज़ा ले पालकों को उन के पालने वालों का बेटा न ठहराओ बल्कि **9 :** जिन से वोह पैदा हुए। **10 :** और इस वज्ह से तुम उन्हें उन के बापों की तरफ़ निस्बत न कर सको **11 :** तो तुम उन्हें भाई कहो और जिस के ले पालक हैं उस का बेटा न कहो। **12 :** मुमानअत से पहले। या येह मा'ना हैं कि अगर तुम ने ले पालकों को ख़ताअन बे इरादा उन के परवरिश करने वालों का बेटा कह दिया या किसी ग़ैर की औलाद को मह्ज़ ज़बान की सब्क़त से बेटा कहा तो इन सूरतों में गुनाह नहीं। **13 :** मुमानअत के बा'द। **14 :** दुन्या व दीन के तमाम उमूर में और नबी का हुक्म उन पर नाफ़िज़ और नबी की

اَلْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ

और मुसल्मानों ब निस्बत हैं[16] क़रीब ज़ियादा से दूसरे एक में किताब की अल्लाह वाले

الْمُهٰجِرِیْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَفْعَلُوْۤا اِلٰۤى اَوْلِیٰٓىٕكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِی

मुहाजिरों के[17] मगर येह कि तुम अपने दोस्तों पर कोई एह़सान करो[18] येह किताब

الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝٦ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِیّٖنَ مِیْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ

में लिखा है[19] और ऐ मह़बूब याद करो जब हम ने नबियों से अ़ह्द लिया[20] और तुम से[21] और

مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ ۪ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ

नूह़ और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से और हम ने उन से

مِّیْثَاقًا غَلِیْظًا ۝٧ لِّیَسْــٴَـلَ الصّٰدِقِیْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِیْنَ

गाढ़ा अ़ह्द लिया ताकि सच्चों से[22] उन के सच का सुवाल करे[23] और उस ने काफ़िरों के लिये दर्दनाक

عَذَابًا اَلِیْمًا ۝٨ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ

अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है ऐ ईमान वालो ! अल्लाह का एह़सान अपने ऊपर याद करो[24] जब

جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِیْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَ كَانَ

तुम पर कुछ लश्कर आए[25] तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए[26] और

ता़अ़त वाजिब और नबी के हुक्म के मुक़ाबिल नफ़्स की ख़्वाहिश वाजिबुत्तर्क। या येह मा'ना हैं कि नबी मोमिनीन पर उन की जानों से ज़ियादा राफ़्तो रह़मत और लुत्फ़ो करम फ़रमाते हैं और नाफ़ेअ़ तर हैं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर मोमिन के लिये दुन्या व आख़िरत में मैं सब से ज़ियादा औला हूं अगर चाहो तो येह आयत पढ़ो "اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ"। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़िराअत में "مِنْ اَنْفُسِهِمْ" के बा'द "وَهُوَ اَبٌ لَّهُمْ" भी है। मुजाहिद ने कहा कि तमाम अम्बिया अपनी उम्मत के बाप होते हैं और इसी रिश्ते से मुसल्मान आपस में भाई कहलाते हैं कि वोह अपने नबी की दीनी औलाद हैं। **15 :** ता'ज़ीमे हुरमत में और निकाह़ के हमेशा के लिये ह़राम होने में और इस के इ़लावा दूसरे अह़काम में मिस्ले विरासत और पर्दा वग़ैरा के उन का वोही हुक्म है जो अजनबी औ़रतों का। और इन की बेटियों को मोमिनीन की बहनें और इन के भाइयों और बहनों को मोमिनीन के मामूं ख़ाला न कहा जाएगा। **16 :** तवारुस में **17 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि "اُولِی الْاَرْحَام" एक दूसरे के वारिस होते हैं, कोई अजनबी दीनी बिरादरी के ज़रीए से वारिस नहीं होता **18 :** इस त़रह़ कि जिस के लिये चाहो कुछ वसिय्यत करो तो वसिय्यत सुलुस माल के क़द्र में तवारुस पर मुक़द्दम की जाएगी। **ख़ुलासा** येह है कि अव्वल माल ज़विल फ़ुरूज़ को दिया जाएगा फिर अ़सबात को फिर नसबी ज़विल फ़ुरूज़ पर रद किया जाएगा फिर ज़विल अरह़ाम को दिया जावेगा फिर मौलल मुवालात को (تفسیر احمدی) **19 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ में। **20 :** रिसालत की तब्लीग़ और दीने ह़क़ की दा'वत देने का **21 :** ख़ुसूसिय्यत के साथ। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ज़िक्र दूसरे अम्बिया पर मुक़द्दम करना उन सब पर आप की अफ़्ज़लिय्यत के इज़्हार के लिये है। **22 :** या'नी अम्बिया से या उन की तस्दीक़ करने वालों से **23 :** या'नी जो उन्हों ने अपनी क़ौम से फ़रमाया और उन्हें तब्लीग़ की वोह दरयाफ़्त फ़रमाए या मोमिनीन से उन की तस्दीक़ का सुवाल करे या येह मा'ना हैं कि अम्बिया को जो उन की उम्मतों ने जवाब दिये वोह दरयाफ़्त फ़रमाए और इस सुवाल से मक़्सूद कुफ़्फ़ार की तज़्लील व तब्कीत है। **24 :** जो उस ने जंगे अह़ज़ाब के दिन फ़रमाया जिस को ग़ज़्वए ख़न्दक़ कहते हैं जो जंगे उहुद से एक साल बा'द था, जब कि मुसल्मानों का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मदीनए त़य्यिबा में मुह़ासरा कर लिया गया था। **25 :** क़ुरैश और ग़त़फ़ान और यहूदे क़ुरैज़ा व नज़ीर के **26 :** या'नी मलाएका के लश्कर।

اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۟ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ

अल्लाह तुम्हारे काम देखता है[27] जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे

مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ

से[28] और जब कि ठिटक कर रह गईं निगाहें[29] और दिल गलों के पास आ गए[30] और तुम अल्लाह पर त़रह त़रह के

الظُّنُوْنَا ۟ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۟ وَ

गुमान करने लगे[31] वोह जगह थी कि मुसल्मानों की जांच हुई[32] और ख़ूब सख़्ती से झन्झोड़े गए और

ग़ज़्वए अह़ज़ाब का मुख़्तसर बयान : येह ग़ज़्वा शव्वाल 4 या 5 सिने हिजरी में पेश आया। जब यहूदे बनी नज़ीर को जिला वत़न किया गया तो उन के अकाबिर मक्कए मुकर्रमा में क़ुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ जंग की तरग़ीब दिलाई और वा'दा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहां तक कि मुसल्मान नेस्तो नाबूद हो जाएं, अबू सुफ़्यान ने इस तह़रीक की बहुत क़द्र की और कहा कि हमें दुन्या में वोह सब से प्यारा है जो मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की अ़दावत में हमारा साथ दे। फिर क़ुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम ह़क़ पर हैं या मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ? यहूद ने कहा तुम्हीं ह़क़ पर हो। इस पर क़ुरैश ख़ुश हुए, इसी पर आयत ''اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ'' नाज़िल हुई। फिर यहूदी क़बाइल ग़त़फ़ान व क़ैस व ग़ीलान वग़ैरा में गए वहां भी येही तह़रीक की वोह सब इन के मुवाफ़िक़ हो गए। इस त़रह इन्हों ने जा बजा दौरे किये और अ़रब के क़बीले क़बीले को मुसल्मानों के ख़िलाफ़ तय्यार कर लिया। जब सब लोग तय्यार हो गए तो क़बीलए ख़ुज़ाआ़ के चन्द लोगों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की इन ज़बर दस्त तय्यारियों की इत्तिलाअ़ दी। येह इत्तिलाअ़ पाते ही ह़ुज़ूर ने ब मश्वरा ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़न्दक़ ख़ुदवानी शुरूअ़ कर दी, उस ख़न्दक़ में मुसल्मानों के साथ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुद भी काम किया। मुसल्मान ख़न्दक़ तय्यार कर के फ़ारिग़ हुए ही थे कि मुश्रिकीन बारह हज़ार का लश्करे गिरां ले कर इन पर टूट पड़े और मदीनए त़य्यिबा का मुह़ासरा कर लिया। ख़न्दक़ मुसल्मानों के और उन के दरमियान ह़ाइल थी उस को देख कर मुतह़य्यिर हुए और कहने लगे कि येह ऐसी तदबीर है जिस से अ़रब लोग अब तक वाक़िफ़ न थे। अब उन्हों ने मुसल्मानों पर तीर अन्दाज़ी शुरूअ़ की और इस मुह़ासरे को पन्दरह रोज़ या चौबीस रोज़ गुज़रे मुसल्मानों पर ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा और वोह बहुत घबराए और परेशान हुए तो अल्लाह तआ़ला ने मदद फ़रमाई और उन पर तेज़ हवा भेजी निहायत सर्द और अंधेरी रात में उस हवा ने उन के ख़ैमे गिरा दिये, त़नाबें तोड़ दीं, खूंटे उखाड़ दिये, हांडियां उलट दीं, आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्ते भेज दिये जिन्हों ने कुफ़्फ़ार को लरज़ा दिया, उन के दिलों में दह़शत डाल दी, मगर इस जंग में मलाएका ने क़िताल नहीं किया। फिर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान को ख़बर लेने के लिये भेजा, वक़्त निहायत सर्द था येह हथियार लगा कर रवाना हुए। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने रवाना होते वक़्त उन के चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा जिस से उन पर सरदी असर न कर सकी और येह दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए। वहां तेज़ हवा चल रही थी और संगरेज़े उड़ उड़ कर लोगों के लग रहे थे, आंखों में गर्द पड़ रही थी, अ़जब परेशानी का आ़लम था, लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार अबू सुफ़्यान हवा का येह आ़लम देख कर उठे और उन्हों ने क़ुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना हर शख़्स अपने बराबर वाले को देख ले। येह ए'लान होने के बा'द हर एक शख़्स ने अपने बराबर वाले को टटोलना शुरूअ़ किया, ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा ने दानाई से अपने दाहने शख़्स का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है ? उस ने कहा मैं फ़ुलां बिन फ़ुलां हूं। इस के बा'द अबू सुफ़्यान ने कहा : ऐ गुरौहे क़ुरैश तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो, घोड़े और ऊंट हलाक हो चुके, बनी क़ुरैज़ा अपने अ़ह्द से फिर गए और हमें उन की त़रफ़ से अन्देशा नाक ख़बरें पहुंची हैं, हवा ने जो ह़ाल किया है वोह तुम देख ही रहे हो, बस अब यहां से कूच कर दो मैं कूच करता हूं। अबू सुफ़्यान येह कह कर अपनी ऊंटनी पर सुवार हो गए और लश्कर में अर्रह़ील अर्रह़ील या'नी कूच कूच का शोर मच गया, हवा हर चीज़ को उलटे डालती थी मगर येह हवा उस लश्कर से बाहर न थी। अब येह लश्कर भाग निकला और सामान का बार कर के ले जाना उस को शाक़ (मुश्किल) हो गया इस लिये कसीर सामान छोड़ गया। (جمل) **27 :** या'नी तुम्हारा ख़न्दक़ खोदना और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में साबित क़दम रहना। **28 :** या'नी वादी की बालाई जानिब मशरिक़ से क़बीलए असद व ग़त़फ़ान के लोग मालिक बिन औ़फ़ नस्री व उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी की सरकर्दगी में एक हज़ार की जम्इय्यत ले कर और उन के साथ त़ुलैह़ा बिन ख़ुवैलिद असदी बनी असद की जम्इय्यत ले कर और ह़ुय्य बिन अख़्त़ब यहूदे बनी क़ुरैज़ा की जम्इय्यत ले कर और वादी की ज़ेरीं जानिब मग़रिब से क़ुरैश और किनाना ब सरकर्दगी अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब। **29 :** और शिद्दते रो'ब व हैबत से ह़ैरत में आ गईं **30 :** ख़ौफ़ व इज़्त़िराब इन्तिहा को पहुंच गया **31 :** मुनाफ़िक़ तो येह गुमान करने लगे कि मुसल्मानों का नामो निशान बाक़ी न रहेगा, कुफ़्फ़ार की इतनी बड़ी जम्इय्यत सब को फ़ना कर डालेगी और मुसल्मानों को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से मदद आने और अपने फ़त्ह़ याब होने की उम्मीद थी। **32 :** और उन का सब्र व इख़्लास मिह़क (कसोटिये) इम्तिह़ान पर लाया गया।

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ

जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और जिन के दिलों में रोग था[33] हमें **अल्लाह** व रसूल

رَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَ اِذْ قَالَتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا

ने वा'दा न दिया था मगर फ़रेब का[34] और जब उन में से एक गुरौह ने कहा[35] ऐ मदीने वालो ![36] यहां तुम्हारे

مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ يَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ

ठहरने की जगह नहीं[37] तुम घरों को वापस चलो और उन में से एक गुरौह[38] नबी से इज़्न मांगता था येह कह कर कि

بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَ مَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَ لَوْ

مع

हमारे घर बे हिफ़ाज़त हैं और वोह बे हिफ़ाज़त न थे वोह तो न चाहते थे मगर भागना और अगर

دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا تَلَبَّثُوْا

उन पर फ़ौजें मदीने के अत्राफ़ से आतीं फिर उन से कुफ़्र चाहतीं तो ज़रूर उन का मांगा दे बैठते[39] और इस में देर न

بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَ لَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ

करते मगर थोड़ी और बेशक इस से पहले वोह **अल्लाह** से अ़ह्द कर चुके थे कि पीठ न

الْاَدْبَارَ ؕ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ

फेरेंगे और **अल्लाह** का अ़ह्द पूछा जाएगा[40] तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम्हें भागना नफ़्अ़ न देगा अगर

فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۶﴾ قُلْ مَنْ

मौत या क़त्ल से भागो[41] और जब भी दुन्या न बरत्ने दिये जाओगे मगर थोड़ी[42] तुम फ़रमाओ वोह

ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ

कौन है जो **अल्लाह** का हुक्म तुम पर से टाल दे अगर वोह तुम्हारा बुरा चाहे[43] या तुम पर मेहर (रह्म) फ़रमाना चाहे[44]

33 : या'नी ज़ो'फ़े ए'तिक़ाद **34 :** येह बात मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर ने कुफ़्फ़ार के लश्कर देख कर कही थी कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तो हमें फ़ारस व रूम की फ़त्ह़ का वा'दा देते हैं और हाल येह है कि हम में से किसी की येह मजाल भी नहीं कि अपने डेरे से बाहर निकल सके तो येह वा'दा निरा धोका है। **35 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन के एक गुरौह ने **36 :** येह मक़ूला मुनाफ़िक़ीन का है, उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहा। **मस्अला :** मुसल्मानों को यसरिब न कहना चाहिये। ह़दीस शरीफ़ में मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहने की मुमानअ़त आई है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ना गवार था कि मदीनए पाक को यसरिब कहा जाए क्यूं कि यसरिब के मा'ना अच्छे नहीं हैं। **37 :** या'नी रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लश्कर में **38 :** या'नी बनी ह़ारिसा व बनी सलमा। **39 :** या'नी इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ हो जाते **40 :** या'नी आख़िरत में **अल्लाह** तआ़ला इस को दरयाफ़्त फ़रमाएगा कि क्यूं वफ़ा नहीं किया गया। **41 :** क्यूं कि जो मुक़द्दर है वोह ज़रूर हो कर रहेगा। **42 :** या'नी अगर वक़्त नहीं आया है तो भी भाग कर थोड़े ही दिन जितनी उ़म्र बाक़ी है उतने ही दुन्या को बरतोगे और येह एक क़लील मुद्दत है। **43 :** या'नी उस को तुम्हारा क़त्ल व हलाक मन्ज़ूर हो तो उस को कोई दफ़्अ़ नहीं कर सकता। **44 :** अम्नो आ़फ़िय्यत

وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ

और वोह अल्लाह के सिवा कोई हामी न पाएंगे न मददगार बेशक अल्लाह जानता है

الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ

तुम्हारे उन को जो औरों को जिहाद से रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं हमारी त़रफ़ चले आओ[45] और लड़ाई में

الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ

नहीं आते मगर थोड़े[46] तुम्हारी मदद में गई (कोताही) करते हैं फिर जब डर का वक़्त आए तुम उन्हें

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا

देखोगे तुम्हारी त़रफ़ यूं नज़र करते हैं कि उन की आंखें घूम रही हैं जैसे किसी पर मौत छाई हो फिर जब

ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ

डर का वक़्त निकल जाए[47] तुम्हें त़ा'ने देने लगें तेज़ ज़बानों से माले ग़नीमत के लालच में[48] येह लोग

لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾

ईमान लाए ही नहीं[49] तो अल्लाह ने इन के अ़मल अकारत कर दिये[50] और येह अल्लाह को आसान है

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا

वोह समझ रहे हैं कि काफ़िरों के लश्कर अभी न गए[51] और अगर लश्कर दोबारा आएं तो उन की[52] ख़्वाहिश होगी

لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

कि किसी त़रह़ गाउं में निकल कर[53] तुम्हारी ख़बरें पूछते[54] और अगर वोह तुम में रहते

अ़त़ा फ़रमा कर। **45 :** और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को छोड़ दो, इन के साथ जिहाद में न रहो, इस में जान का ख़त़रा है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन के पास यहूद ने पयाम भेजा था कि तुम क्यूं अपनी जानें अबू सुफ़्यान के हाथों से हलाक कराना चाहते हो, उस के लश्करी इस मरतबा अगर तुम्हें पा गए तो तुम में से किसी को बाक़ी न छोड़ेंगे, हमें तुम्हारा अन्देशा है, तुम हमारे भाई और हमसाए हो, हमारे पास आ जाओ, येह ख़बर पा कर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ और उस के साथी मोमिनीन को अबू सुफ़्यान और उस के साथियों से डरा कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का साथ देने से रोकने लगे और इस में उन्हों ने बहुत कोशिश की लेकिन जिस क़दर उन्हों ने कोशिश की मोमिनीन का सबाते इस्तिक़्लाल और बढ़ता गया। **46 :** रियाकारी और दिखावट के लिये। **47 :** और अम्नो ग़नीमत ह़ासिल हो **48 :** और येह कहें हमें ज़ियादा ह़िस्सा दो हमारी ही वज्ह से तुम ग़ालिब हुए हो। **49 :** ह़क़ीक़त में। अगर्चे इन्हों ने ज़बानों से ईमान का इज़्हार किया **50 :** या'नी चूंकि ह़क़ीक़त में वोह मोमिन न थे इस लिये उन के तमाम ज़ाहिरी अ़मल जिहाद वग़ैरा सब बात़िल कर दिये। **51 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन अपनी बुज़दिली व ना मर्दी से अभी तक येह समझ रहे हैं कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश व ग़त़फ़ान व यहूद वग़ैरा अभी तक मैदान छोड़ कर भागे नहीं हैं अगर्चे ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि वोह भाग चुके। **52 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन की अपनी ना मर्दी के बाइ़स येही आरज़ू और **53 :** मदीनए त़य्यिबा के आने जाने वालों से **54 :** कि मुसल्मानों का क्या अन्जाम हुवा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में उन की क्या ह़ालत रही।

مَّا قٰتَلُوۡۤا اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۲۰﴾ لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِیۡ رَسُوۡلِ اللّٰهِ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ

जब भी न लड़ते मगर थोड़े[55] बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है[56]

لِّمَنۡ كَانَ یَرۡجُوا اللّٰهَ وَ الۡیَوۡمَ الۡاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِیۡرًا ﴿۲۱﴾ وَ لَمَّا رَاَ

उस के लिये कि **अल्लाह** और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और **अल्लाह** को बहुत याद करे[57] और जब मुसल्मानों

الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الۡاَحۡزَابَ ۙ قَالُوۡا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوۡلُهٗ وَ صَدَقَ

ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले येह है वोह जो हमें वा'दा दिया था **अल्लाह** और उस के रसूल ने[58] और सच फ़रमाया

اللّٰهُ وَ رَسُوۡلُهٗ ۫ وَ مَا زَادَهُمۡ اِلَّاۤ اِیۡمَانًا وَّ تَسۡلِیۡمًا ﴿۲۲﴾ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ

अल्लाह और उस के रसूल ने[59] और इस से उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी होना मुसल्मानों में कुछ

رِجَالٌ صَدَقُوۡا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیۡهِ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰی نَحۡبَهٗ وَ مِنۡهُمۡ

वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद **अल्लाह** से किया था[60] तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका[61] और कोई

مَّنۡ یَّنۡتَظِرُ ۫ۖ وَ مَا بَدَّلُوۡا تَبۡدِیۡلًا ﴿۲۳﴾ لِّیَجۡزِیَ اللّٰهُ الصّٰدِقِیۡنَ بِصِدۡقِهِمۡ

राह देख रहा है[62] और वोह ज़रा न बदले[63] ताकि **अल्लाह** सच्चों को उन के सच का सिला दे

وَ یُعَذِّبَ الۡمُنٰفِقِیۡنَ اِنۡ شَآءَ اَوۡ یَتُوۡبَ عَلَیۡهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوۡرًا

और मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब करे अगर चाहे या उन्हें तौबा दे बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

55 : रियाकारी और उ़ज़्र रखने के लिये ताकि येह कहने का मौक़अ़ मिल जाए कि हम भी तो तुम्हारे साथ जंग में शरीक थे। 56 : इन की अच्छी त़रह इत्तिबाअ़ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है। 57 : हर मौक़अ़ पर उस का ज़िक्र करे, ख़ुशी में भी रन्ज में भी, तंगी में भी फ़राख़ी में भी। 58 : कि तुम्हें शिद्दत व बला पहुंचेगी और तुम आज़्माइश में डाले जाओगे और पहलों की त़रह़ तुम पर सख़्तियां आएंगी और लश्कर जम्अ़ हो हो कर तुम पर टूटेंगे और अन्जामे कार तुम ग़ालिब होगे और तुम्हारी मदद फ़रमाई जाएगी जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है ''اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَ لَمَّا یَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِیۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ''الاية और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि पिछली नव या दस रातों में लश्कर तुम्हारी त़रफ़ आने वाले हैं। जब उन्हों ने देखा कि इस मीआ़द पर लश्कर आ गए तो कहा : येह है वोह जो हमें **अल्लाह** और उस के रसूल ने वा'दा दिया था। 59 : या'नी जो उस के वा'दे हैं सब सच्चे हैं, सब यक़ीनन वाक़ेअ़ होंगे, हमारी मदद भी होगी, हमें ग़लबा भी दिया जाएगा और मक्कए मुकर्रमा और रूम व फ़ारस भी फ़त्ह़ होंगे। 60 : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद और ह़ज़रते ह़म्ज़ा और ह़ज़रते मुस्अ़ब वग़ैरहुम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने नज़्र की थी कि वोह जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ जिहाद का मौक़अ़ पाएंगे तो साबित रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं। उन की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा कि उन्हों ने अपना वा'दा सच्चा कर दिया। 61 : जिहाद पर साबित रहा यहां तक कि शहीद हो गया जैसे कि ह़ज़रते ह़म्ज़ा व मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا। 62 : और शहादत का इन्तिज़ार कर रहा है जैसे कि ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا। 63 : अपने अ़हद पर वैसे ही साबित क़दम रहे शहीद हो जाने वाले भी और शहादत का इन्तिज़ार करने वाले भी, उन मुनाफ़िक़ीन और मरीज़ुल क़ल्ब लोगों पर ता'रीज़ है जो अपने अ़हद पर क़ाइम न रहे।

رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَكَفَى

मेह्रबान है और **अल्लाह** ने काफ़िरों को[64] उन के दिलों की जलन के साथ पलटाया कि कुछ भला न पाया[65] और **अल्लाह** ने

اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ

मुसल्मानों को लड़ाई की किफ़ायत दी[66] और **अल्लाह** ज़बर दस्त इ़ज़्ज़त वाला है और जिन अहले किताब

ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

ने उन की मदद की थी[67] उन्हें उन के क़ल्ओं से उतारा[68] और उन के दिलों में

الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَ

रो'ब डाला उन में एक गुरोह को तुम क़त्ल करते हो[69] और एक गुरोह को क़ैद[70] और हम ने तुम्हारे हाथ लगाए उन की ज़मीन और

دِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

उन के मकान और उन के माल[71] और वोह ज़मीन जिस पर तुम ने अभी क़दम नहीं रखा है[72] और **अल्लाह** हर चीज़ पर

قَدِيْرًا ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ

क़ादिर है ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) अपनी बीबियों से फ़रमा दे अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगी और

64 : या'नी क़ुरैश व ग़त़्फ़ान वग़ैरा के लश्करों को जिन का ऊपर ज़िक्र हो चुका है। **65 :** नाकामो ना मुराद वापस हुए। **66 :** कि दुश्मन फ़िरिश्तों की तक्बीरों और हवा की सख़्तियों से भाग निकले। **67 :** या'नी बनी क़ुरैज़ा ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुक़ाबिल क़ुरैश व ग़त़्फ़ान वग़ैरा अह़ज़ाब की मदद की थी **68 :** इस में ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा का बयान है, येह आख़िरे ज़ी क़ादा 4 सि.हि. या 5 सि.हि. में हुवा जब ग़ज़्वए ख़न्दक़ में शब को मुख़ालिफ़ीन के लश्कर भाग गए जिस का ऊपर की आयात में ज़िक्र हो चुका है, उस शब की सुब्ह़ को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम मदीनए त़य्यिबा में तशरीफ़ लाए और हथियार उतार दिये, उस रोज़ ज़ोहर के वक़्त जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का सरे मुबारक धोया जा रहा था जिब्रीले अमीन ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ने हथियार रख दिये फ़िरिश्तों ने चालीस रोज़ से हथियार नहीं रखे हैं, **अल्लाह** तआ़ला आप को बनी क़ुरैज़ा की त़रफ़ जाने का हुक्म फ़रमाता है। हुज़ूर ने हुक्म फ़रमाया कि निदा कर दी जाए कि जो फ़रमां बरदार हो वोह अ़स्र की नमाज़ न पढ़े मगर बनी क़ुरैज़ा में जा कर। हुज़ूर येह फ़रमा कर रवाना हो गए और मुसल्मान चलने शुरूअ़ हुए और यके बा'द दीगरे हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचते रहे यहां तक कि बा'ज़ ह़ज़रात नमाज़े इशा के बा'द पहुंचे लेकिन उन्हों ने उस वक़्त तक अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी क्यूं कि हुज़ूर ने बनी क़ुरैज़ा में पहुंच कर अ़स्र की नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया था इस लिये उस रोज़ उन्हों ने अ़स्र बा'दे इशा पढ़ी और इस पर न **अल्लाह** तआ़ला ने उन की गिरिफ़्त फ़रमाई न रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। लश्करे इस्लाम ने पच्चीस रोज़ तक बनी क़ुरैज़ा का मुह़ासरा रखा, इस से वोह तंग आ गए और **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि तुम मेरे हुक्म पर क़ल्ओं से उतरोगे ? उन्हों ने इन्कार किया तो फ़रमाया क्या क़बीलए औस के सरदार सा'द बिन मुआ़ज़ के हुक्म पर उतरोगे ? इस पर वोह राज़ी हुए और सा'द बिन मुआ़ज़ को उन के बारे में हुक्म देने पर मामूर फ़रमाया। ह़ज़रते सा'द ने हुक्म दिया कि मर्द क़त्ल कर दिये जाएं, औरतें और बच्चे क़ैद किये जाएं, फिर बाज़ारे मदीना में ख़न्दक़ खोदी गई और वहां ला कर उन सब की गरदनें मारी गईं। उन लोगों में क़बीलए बनी नज़ीर का सरदार हुय्य बिन अख़्त़ब और बनी क़ुरैज़ा का सरदार का'ब बिन असद भी था और येह लोग छ[6] सो या सात सो जवान थे जो गरदनें काट कर ख़न्दक़ में डाल दिये गए। (مدارک وجمل) **69 :** या'नी मुक़ातिलीन को। **70 :** औरतों और बच्चों को। **71 :** नक़्द और सामान और मवेशी सब मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आए। **72 :** इस ज़मीन से मुराद ख़ैबर है जो फ़त्ह़े क़ुरैज़ा के बा'द मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आया या वोह हर ज़मीन मुराद है जो क़ियामत तक फ़त्ह़ हो कर मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आने वाली है।

الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۸﴾ وَاِنْ

इस की आराइश चाहती हो[73] तो आओ मैं तुम्हें माल दूं[74] और अच्छी त़रह़ छोड़ दूं[75] और अगर

كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ

तुम **अल्लाह** और उस के रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारी नेकी वालियों

مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ

के लिये बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है ऐ नबी की बीबियो जो तुम में सरीह़ ह़या के ख़िलाफ़ कोई

مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

जुरअत करे[76] उस पर औरों से दूना (दुगना) अ़ज़ाब होगा[77] और येह **अल्लाह** को आसान है

73 : या'नी अगर तुम्हें माले कसीर और अस्बाबे ऐश दरकार है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने आप से दुन्यावी सामान त़लब किये और नफ़क़ा में ज़ियादती की दरख़्वास्त की। यहां तो कमाले ज़ोह्द था सामाने दुन्या और इस का जम्अ़ करना गवारा ही न था, इस लिये येह ख़ात़िरे अक़्दस पर गिरां हुवा और येह आयत नाज़िल हुई और अज़्वाजे मुत़ह्हरात को तख़्यीर दी गई उस वक़्त हुज़ूर की नव बीबियां थीं। **पांच क़ुरैशिया :** (1) ह़ज़रते आ़इशा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, (2) ह़फ़्सा बिन्ते फ़ारूक़, (3) उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान, (4) उम्मे सलमा बिन्ते अबी उमय्या, (5) सौदह बिन्ते ज़म्आ़ और **चार ग़ैर क़ुरैशिया :** (1) ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया, (2) मैमूना बिन्ते ह़ारिस हिलालिया, (3) सफ़िय्या बिन्ते हुयय बिन अख़्त़ब ख़ैबरिया, (4) जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस मुस्त़लिक़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सब से पहले ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को येह आयत सुना कर इख़्तियार दिया और फ़रमाया कि जल्दी न करो अपने वालिदैन से मश्वरा कर के जो राय हो उस पर अ़मल करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर के मुआ़मले में मश्वरा कैसा मैं **अल्लाह** को और उस के रसूल को और दारे आख़िरत को चाहती हूं और बाक़ी अज़्वाज ने भी येही जवाब दिया। **मस्अला :** जिस औ़रत को इख़्तियार दिया जाए वोह अगर अपने ज़ौज को इख़्तियार करे तो त़लाक़ वाक़ेअ़ नहीं होती और अगर अपने नफ़्स को इख़्तियार करे तो हमारे नज़्दीक त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ होती है। **74 :** जिस औ़रत के साथ बा'दे निकाह़ दुख़ूल या ख़ल्वते सह़ीह़ा हुई हो उस को त़लाक़ दी जाए तो कुछ सामान देना मुस्तह़ब है और वोह सामान तीन कपड़ों का जोड़ा होता है। यहां माल से वोही मुराद है। **मस्अला :** जिस औ़रत का मह्र मुक़र्रर न किया गया हो उस को क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दी तो येह जोड़ा देना वाजिब है। **75 :** बिग़ैर किसी ज़रर के। **76 :** जैसे कि शोहर की इत़ाअ़त में कोताही करना और उस के साथ कज ख़ुल्क़ी से पेश आना क्यूं कि बदकारी से तो **अल्लाह** तआ़ला अम्बिया की बीबियों को पाक रखता है। **77 :** क्यूं कि जिस शख़्स की फ़ज़ीलत ज़ियादा होती है उस से अगर क़ुसूर वाक़ेअ़ हो तो वोह क़ुसूर भी दूसरों के क़ुसूर से ज़ियादा सख़्त क़रार दिया जाता है। **मस्अला :** इसी लिये आ़लिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़ियादा क़बीह़ होता है और इसी लिये आज़ादों की सज़ा शरीअ़त में ग़ुलामों से ज़ियादा मुक़र्रर है और नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीबियां तमाम जहान की औ़रतों से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती हैं इस लिये इन की अदना बात सख़्त गिरिफ़्त के क़ाबिल है। **फ़ाएदा :** लफ़्ज़ फ़ाह़िशा जब मा'रिफ़ा हो कर वारिद हो तो उस से ज़िना और लिवात़त मुराद होती है और अगर नकिरए ग़ैर मौसूफ़ा हो कर लाया जाए तो इस से तमाम गुनाह मुराद होते हैं और जब मौसूफ़ हो कर वारिद हो तो इस से शोहर की ना फ़रमानी और फ़सादे मा'शरत मुराद होता है, इस आयत में नकिरए मौसूफ़ा है इसी लिये इस से शोहर की इत़ाअ़त में कोताही और कज ख़ुल्क़ी मुराद है जैसा कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मन्क़ूल है। (جمل وغیرہ)

وَ مَنْ یَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا

और[78] जो तुम में फ़रमां बरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना (दुगना)

مَرَّتَیْنِۙ وَ اَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِیْمًا ﴿۳۱﴾ یٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ

सवाब देंगे[79] और हम ने उस के लिये इ़ज़्ज़त की रोज़ी तय्यार कर रखी है[80] ऐ नबी की बीबियो तुम और औ़रतों

مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَیْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَیَطْمَعَ الَّذِیْ فِیْ

की त़रह़ नहीं हो[81] अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ

قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۳۲﴾ وَ قَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ

लालच करे[82] हां अच्छी बात कहो[83] और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो

تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى وَ اَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتِیْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ

जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी[84] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और

اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗؕ اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ

उस के रसूल का हुक्म मानो अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर

الْبَیْتِ وَ یُطَهِّرَكُمْ تَطْهِیْرًا ﴿۳۳﴾ وَ اذْكُرْنَ مَا یُتْلٰى فِیْ بُیُوْتِكُنَّ مِنْ

फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे[85] और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं

78 : ऐ नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीबियो ! 79 : या'नी अगर औरों को एक नेकी पर दस गुना सवाब देंगे तो तुम्हें बीस गुना क्यूं कि तमाम जहान की औ़रतों में तुम्हें शरफ़ व फ़ज़ीलत है और तुम्हारे अ़मल में भी दो जिहतें हैं एक अदाए इत़ाअ़त दूसरे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिज़ाजोई और क़नाअ़त व हुस्ने मुआ़शरत के साथ हुज़ूर को ख़ुशनूद करना। 80 : जन्नत में। 81 : तुम्हारा मर्तबा सब से ज़ियादा है और तुम्हारा अज्र सब से बढ़ कर, जहान की औ़रतों में कोई तुम्हारी हमसर नहीं। 82 : इस में ता'लीमे आदाब है कि अगर ब ज़रूरत ग़ैर मर्द से पसे पर्दा गुफ़्तगू करनी पड़े तो क़स्द करो कि लहजे में नज़ाकत न आने पाए और बात में लोच न हो, बात निहायत सादगी से की जाए, इ़फ़्फ़त मआब (पाक दामन) ख़वातीन के लिये येही शायां है। 83 : दीन व इस्लाम की और नेकी की ता'लीम और पन्दो नसीह़त की अगर ज़रूरत पेश आए मगर बे लोच लहजे से। 84 : अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व मह़ासिन का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें और पिछली जाहिलिय्यत से अख़ीर ज़माना मुराद है जिस में लोगों के अफ़्आ़ल पहलों की मिस्ल हो जाएंगे। 85 : या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो। इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमा ज़हरा और अ़लिय्ये मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सब दाख़िल हैं। आयात व अह़ादीस को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मन्क़ूल है। इन आयात में अहले बैते रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नसीह़त फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचें और तक़्वा व परहेज़ गारी के पाबन्द रहें। गुनाहों को नापाकी से और परहेज़ गारी को पाकी से इस्तिआ़रा फ़रमाया गया क्यूं कि गुनाहों का मुरतकिब उन से ऐसा ही मुलव्वस होता है जैसा जिस्म नजासतों से, इस त़र्ज़े कलाम से मक़्सूद येह है कि अरबाबे उ़क़ूल को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक़्वा व परहेज़ गारी की तरग़ीब दी जाए।

ايٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ ع اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَ

अल्लाह की आयतें और हिक्मत[86] बेशक अल्लाह हर बारीकी जानता ख़बरदार है बेशक मुसल्मान मर्द और

الْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ

मुसल्मान औ़रतें[87] और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमां बरदार और फ़रमां बरदारें और सच्चे

وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَ

और सच्चियां[88] और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और

الْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ

ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह

فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ

रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये अल्लाह

لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى

ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है और किसी मुसल्मान मर्द न मुसल्मान औ़रत को पहुंचता है कि जब अल्लाह व

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ

रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मले का कुछ इख़्तियार रहे[89] और जो

86 : या'नी सुन्नत। 87 **शाने नुज़ूल :** अस्मा बिन्ते उ़मैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी ता़लिब के साथ ह़ब्शा से वापस आईं तो अज़्वाजे नबिय्ये करीम ﷺ से मिल कर उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या औ़रतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है ? उन्हों ने फ़रमाया : नहीं, तो अस्मा ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर औ़रतें बड़े टोटे में हैं। फ़रमाया : क्यूं ? अ़र्ज़ किया कि इन का ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन के दस मरातिब मर्दों के साथ ज़िक्र किये गए और उन के साथ इन की मद्ह फ़रमाई गई। और मरातिब में से **पहला** मर्तबा "इस्लाम" है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। **दूसरा** "ईमान" कि वोह ए'तिक़ादे सह़ीह़ और ज़ाहिरो बातिन का मुवाफ़िक़ होना है। **तीसरा** मर्तबा "क़ुनूत" या'नी ता़अ़त है। 88 : इस में **चौथे** मर्तबे का बयान है कि वोह "सिद्क़े निय्यात व सिद्क़े अक़्वाल व अफ़्आ़ल" है। इस के बा'द **पांचवें** मर्तबे सब्र का बयान है कि ता़अ़तों की पाबन्दी करना और मम्नूआ़त से एह़तिराज़ रखना ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही शाक़ और गिरां हो, रिज़ाए इलाही के लिये इख़्तियार किया जाए। इस के बा'द फिर **छटे** मर्तबे "ख़ुशूअ़" का बयान है जो ता़अ़तों और इ़बादतों में क़ुलूब व जवारेह़ के साथ मुतवाज़ेअ़ होना है। इस के बा'द **सातवें** मर्तबे "सदक़ा" का बयान है जो अल्लाह तआ़ला के अ़ता किये हुए माल में से उस की राह में ब त़रीक़े फ़र्ज़ व नफ़्ल देना है। फिर **आठवें** मर्तबे "सौम" का बयान है येह भी फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों को शामिल है। मन्क़ूल है कि जिस ने हर हफ़्ते एक दिरहम सदक़ा किया वोह मुतसद्दिक़ीन में और जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (चांद की 13, 14, 15) के तीन रोज़े रखे वोह साइमीन में शुमार किया जाता है। इस के बा'द **नवें** मर्तबे "इ़फ़्फ़त" का बयान है और वोह येह है कि अपनी पारसाई को मह़फ़ूज़ रखे और जो ह़लाल नहीं है उस से बचे। सब से आख़िर में **दसवें** मर्तबे "कस्रते ज़िक्र" का बयान है, ज़िक्र में तस्बीह़, तह़्मीद, तहलील, तक्बीर, क़िराअते क़ुरआन, इ़ल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना, नमाज़, वा'ज़, नसीह़त, मीलाद शरीफ़, ना'त शरीफ़ पढ़ना सब दाख़िल हैं। कहा गया है कि बन्दा ज़ाकिरीन में तब शुमार होता है जब कि वोह खड़े, बैठे, लैटे, हर ह़ाल में अल्लाह का ज़िक्र करे। 89 **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया और उन के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श और उन की वालिदा उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब के ह़क़ में नाज़िल हुई, उमैमा हुज़ूर सय्यिदे आ़लम

يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ

हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उस से

اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ

जिसे **अल्लाह** ने ने'मत दी[90] और तुम ने उसे ने'मत दी[91] कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे[92] और **अल्लाह** से डर[93]

وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ

और तुम अपने दिल में रखते थे वोह जिसे **अल्लाह** को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था[94] और तुम्हें लोगों के त़ा'ने का अन्देशा था[95] और **अल्लाह** ज़ियादा सज़ावार है कि

تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى

उस का ख़ौफ़ रखो[96] फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई[97] तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी[98] कि मुसल्मानों पर कुछ

الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَ

हरज न रहे उन के ले पालकों (मुंह बोले बेटों) की बीबियों में जब उन से उन का काम ख़त्म हो जाए[99] और

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फूफी थीं। वाक़िआ़ येह था कि ज़ैद बिन ह़ारिसा जिन को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने आज़ाद किया था और वोह हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहते थे, हुज़ूर ने ज़ैनब के लिये उन का पयाम दिया, उस को ज़ैनब ने और उन के भाई ने मन्ज़ूर नहीं किया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और ह़ज़रते ज़ैनब और उन के भाई इस हुक्म को सुन कर राज़ी हो गए और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद का निकाह़ उन के साथ कर दिया और हुज़ूर ने उन का महर दस दीनार साठ दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, पचास मुद (एक पैमाना है) खाना, तीस साअ़ खजूरें दीं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़ाअ़त हर अम्र में वाजिब है और नबी عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में कोई अपने नफ़्स का भी ख़ुद मुख़्तार नहीं। **मस्अला :** इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्र वुजूब के लिये होता है। **फ़ाएदा :** बा'ज़ तफ़ासीर में ह़ज़रते ज़ैद को ग़ुलाम कहा गया है मगर येह ख़ाली अज़ तसामोह़ (ख़त़ा से ख़ाली) नहीं क्यूं कि वोह हुर (आज़ाद) थे, गिरिफ़्तारी से बिल ख़ुसूस क़ब्ले बि'सत शरअ़न कोई शख़्स मरक़ूक़ या'नी मम्लूक नहीं हो जाता और वोह ज़माना फ़ितरत का था और अहले फ़ितरत को ह़र्बी नहीं कहा जाता। (كذا في الجمل) **90 :** इस्लाम की जो बड़ी जलील ने'मत है। **91 :** आज़ाद फ़रमा कर, मुराद इस से ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा हैं कि हुज़ूर ने इन्हें आज़ाद किया और इन की परवरिश फ़रमाई। **92 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते ज़ैद का निकाह़ ह़ज़रते ज़ैनब से हो चुका तो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वह़्य आई कि ज़ैनब आप की अज़्वाजे त़ाहिरात में दाख़िल होंगी, **अल्लाह** तआ़ला को येही मन्ज़ूर है। इस की सूरत येह हुई कि ह़ज़रते ज़ैद और ज़ैनब के दरमियान मुवाफ़क़त न हुई और ह़ज़रते ज़ैद ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से ह़ज़रते ज़ैनब की सख़्त गुफ़्तारी, तेज़ ज़बानी, अ़दमे इत़ाअ़त और अपने आप को बड़ा समझने की शिकायत की। ऐसा बार बार इत्तिफ़ाक़ हुवा, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़ज़रते ज़ैद को समझा देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **93 :** ज़ैनब पर किब्र व ईज़ाए शोहर के इल्ज़ाम लगाने में। **94 :** या'नी आप येह ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे कि ज़ैनब से तुम्हारा निबाह नहीं हो सकेगा और त़लाक़ ज़रूर वाक़ेअ़ होगी और **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अज़्वाजे मुत़ह्हरात में दाख़िल करेगा और **अल्लाह** तआ़ला को इस का ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था। **95 :** या'नी जब ह़ज़रते ज़ैद ने ज़ैनब को त़लाक़ दे दी तो आप को लोगों के त़ा'न का अन्देशा हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म तो है ह़ज़रते ज़ैनब के साथ निकाह़ करने का और ऐसा करने से लोग त़ा'ना देंगे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ऐसी औ़रत के साथ निकाह़ कर लिया जो उन के मुंहबोले बेटे के निकाह़ में रही थी। मक़्सूद येह है कि अम्रे मुबाह़ में बे जा त़ा'न करने वालों का कुछ अन्देशा न करना चाहिये। **96 :** और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सब से ज़ियादा **अल्लाह** का ख़ौफ़ रखने वाले और सब से ज़ियादा तक़्वा वाले हैं, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। **97 :** और ह़ज़रते ज़ैद ने ह़ज़रते ज़ैनब को त़लाक़ दे दी और इद्दत गुज़र गई **98 :** ह़ज़रते ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बा'द उन के पास ह़ज़रते ज़ैद रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का पयाम ले कर गए और उन्हों ने सर झुका कर कमाले शर्मो अदब से उन्हें येह पयाम पहुंचाया, उन्हों ने कहा कि इस मुआ़मले में, मैं अपनी राय को कुछ भी दख़्ल नहीं देती, जो मेरे रब को मन्ज़ूर हो उस पर राज़ी हूं, येह कह कर वोह बारगाहे इलाही में मुतवज्जेह हुईं और उन्हों ने नमाज़ शुरूअ़ कर दी और येह आयत नाज़िल हुई। ह़ज़रते ज़ैनब को इस निकाह़ से बहुत ख़ुशी और फ़ख़्र हुवा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस शादी का वलीमा बहुत वुस्अ़त के साथ किया। **99 :** या'नी ताकि येह मा'लूम हो जाए कि ले पालक की बीबी से निकाह़ जाइज़ है।

كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ

अल्लाह का हुक्म हो कर रहना नबी पर कोई हरज नहीं इस बात में जो अल्लाह ने उस के लिये

اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا

मुक़र्रर फ़रमाई[100] अल्लाह का दस्तूर चला आ रहा है उन में जो पहले गुज़र चुके[101] और अल्लाह का काम मुक़र्रर

مَّقْدُوْرَا ۨ﴿٣٨﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ

तक़्दीर है वोह जो अल्लाह के पयाम पहुंचाते और उस से डरते और अल्लाह के सिवा

اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ

किसी का ख़ौफ़ न करते और अल्लाह बस (काफ़ी) है हिसाब लेने वाला[102] मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के

مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ

बाप नहीं[103] हां अल्लाह के रसूल हैं[104] और सब नबियों में पिछले[105] और अल्लाह सब

شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿٤١﴾ وَّ

कुछ जानता है ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो और

سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

सुब्ह व शाम उस की पाकी बोलो[106] वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते[107]

100 : या'नी अल्लाह तआला ने जो उन के लिये मुबाह किया और बाबे निकाह में जो वुस्अत उन्हें अ़ता फ़रमाई इस पर इक़्दाम करने में कुछ हरज नहीं। 101 : या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को बाबे निकाह में वुस्अतें दी गईं कि दूसरों से ज़ियादा औरतें इन के लिये हलाल फ़रमाईं जैसा कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सो बीबियां और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की तीन सो बीबियां थीं। येह इन के ख़ास अह्काम हैं, इन के सिवा दूसरों को रवा नहीं, न कोई इस पर मो'तरिज़ हो सकता है। अल्लाह तआला अपने बन्दों में जिस के लिये जो हुक्म फ़रमाए उस पर किसी को ए'तिराज़ की क्या मजाल। इस में यहूद का रद है जिन्हों ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर चार से ज़ियादा निकाह करने पर ता'न किया था, इस में उन्हें बताया गया कि येह हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये ख़ास है जैसा कि पहले अम्बिया के लिये ता'दादे अज़्वाज में ख़ास अह्काम थे। 102 : तो उसी से डरना चाहिये। 103 : तो हज़रते ज़ैद के भी आप हक़ीक़त में बाप नहीं कि इन की मन्कूहा आप के लिये हलाल न होती। क़ासिम व तृय्यिब व ताहिर व इब्राहीम हुज़ूर के फ़रज़न्द थे मगर वोह इस उम्र को न पहुंचे कि उन्हें मर्द कहा जाए, उन्हों ने बचपन में वफ़ात पाई। 104 : और सब रसूल नासेह शफ़ीक़ और वाजिबुत्तौक़ीर व लाज़िमुत्ताअत होने के लिहाज़ से अपनी उम्मत के बाप कहलाते हैं, बल्कि इन के हुक़ूक़ हक़ीक़ी बाप के हुक़ूक़ से बहुत ज़ियादा हैं लेकिन इस से उम्मत हक़ीक़ी औलाद नहीं हो जाती और हक़ीक़ी औलाद के तमाम अह्काम विरासत वग़ैरा उस के लिये साबित नहीं होते। 105 : या'नी आख़िरुल अम्बिया कि नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई, आप की नुबुव्वत के बा'द किसी को नुबुव्वत नहीं मिल सकती हत्ता कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल होंगे तो अगर्चे नुबुव्वत पहले पा चुके हैं मगर नुज़ूल के बा'द शरीअ़ते मुहम्मदिय्यह पर आ़मिल होंगे और इसी शरीअ़त पर हुक्म करेंगे और आप ही के क़िब्ले या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। हुज़ूर का आख़िरुल अम्बिया होना क़त्ई है नस्से क़ुरआनी भी इस में वारिद है और सिहाह की ब कसरत अहादीस जो हद्दे तवातुर तक पहुंचती हैं, उन सब से साबित है कि हुज़ूर सब से पिछले नबी हैं, आप के बा'द कोई नबी होने वाला नहीं। जो हुज़ूर की नुबुव्वत के बा'द किसी और को नुबुव्वत मिलना मुम्किन जाने वोह ख़त्मे नुबुव्वत का मुन्किर और काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम है। 106 : क्यूं कि सुब्ह और शाम के अवक़ात मलाइकए रोज़ो शब के जम्अ़ होने के वक़्त हैं। और येह भी कहा गया है कि अतराफ़े लैलो नहार का ज़िक्र

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾

कि तुम्हें अंधेरियों से उजाले की त़रफ़ निकाले[108] और वोह मुसल्मानों पर मेहरबान है

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَ اَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا

उन के लिये मिलते वक़्त की दुआ़ सलाम है[109] और उन के लिये इ़ज़्ज़त का सवाब तय्यार कर रखा है ऐ ग़ैब की ख़बरें

النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿۴۵﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ

बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर[110] और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता[111] और **अल्लाह** की त़रफ़

بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا

उस के हुक्म से बुलाता[112] और चमका देने वाला आफ़्ताब[113] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये **अल्लाह** का बड़ा

كَبِيْرًا ﴿۴۷﴾ وَ لَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ دَعْ اَذٰىهُمْ وَ تَوَكَّلْ عَلَى

फ़ज़्ल है और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की ख़ुशी न करो और उन की ईज़ा पर दर गुज़र फ़रमाओ[114] और **अल्लाह** पर

اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ

भरोसा करो और **अल्लाह** बस (काफ़ी) है कारसाज़ ऐ ईमान वालो जब तुम मुसल्मान औ़रतों से निकाह़ करो

करने से ज़िक्र की मुदावमत की त़रफ़ इशारा फ़रमाया गया है। **107 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि जब आयत ''اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ'' नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صلی اللہ تعالٰی علیک وسلم जब आप को **अल्लाह** तआ़ला कोई फ़ज़्लो शरफ़ अ़त़ा फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के त़ुफ़ैल में नवाज़ता है, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **108 :** या'नी कुफ़्रो मा'सियत और नाख़ुदा शनासी की अंधेरियों से ह़क़ व हिदायत और मा'रिफ़त व ख़ुदा शनासी की रोशनी की त़रफ़ हिदायत फ़रमाए। **109 :** मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का। मरवी है कि ह़ज़रते मलकुल मौत علیہ السلام किसी मोमिन की रूह़ को सलाम किये बिग़ैर क़ब्ज़ नहीं फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि जब मलकुल मौत मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब तुझे सलाम फ़रमाता है। और येह भी वारिद हुवा है कि मोमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो मलाएका सलामती की बिशारत के त़ौर पर उन्हें सलाम करेंगे। (جمل وخازن) **110 :** शाहिद का तरजमा ह़ाज़िर व नाज़िर बहुत बेहतरीन तरजमा है, मुफ़रदाते राग़िब में है : ''اَلشُّهُوْدُ وَالشَّهَادَةُ'' ''اَلْحُضُوْرُ مَعَ الْمُشَاهَدَةِ اِمَّا بِالْبَصَرِ اَوْ بِالْبَصِيْرَةِ'' या'नी शुहूद और शहादत के मा'ना हैं ह़ाज़िर होना मअ़ नाज़िर होने के बसर के साथ हो या बसीरत के साथ और गवाह को भी इसी लिये शाहिद कहते हैं कि वोह मुशाहदे के साथ जो इ़ल्म रखता है उस को बयान करता है, सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم तमाम आ़लम की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं, आप की रिसालत आ़म्मा है जैसा कि सूरए फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुवा तो ह़ुज़ूर पुरनूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم क़ियामत तक होने वाली सारी ख़ल्क़ के शाहिद हैं और इन के आ'माल व अफ़्आ़ल व अह़वाल, तस्दीक़, तक्ज़ीब, हिदायत, ज़लाल सब का मुशाहदा फ़रमाते हैं। (ابوالسعود وجمل) **111 :** या'नी ईमानदारों को जन्नत की ख़ुश ख़बरी और काफ़िरों को अ़ज़ाबे जहन्नम का डर सुनाता। **112 :** या'नी ख़ल्क़ को त़ाअ़ते इलाही की दा'वत देता। **113 :** सिराज का तरजमा आफ़्ताब क़ुरआने करीम के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है कि इस में आफ़्ताब को सिराज फ़रमाया गया है। जैसा कि सूरए नूह़ में ''وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا'' और आख़िर पारह की पहली सूरत में है ''وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا'' और दर ह़क़ीक़त हज़ारों आफ़्ताबों से ज़ियादा रोशनी आप के नूरे नुबुव्वत ने पहुंचाई और कुफ़्रो शिर्क के ज़ुल्माते शदीदा को अपने नूरे ह़क़ीक़त अफ़रोज़ से दूर कर दिया और ख़ल्क़ के लिये मा'रिफ़त व तौह़ीदे इलाही तक पहुंचने की राहें रोशन और वाज़ेह़ कर दीं और ज़लालत की वादिये तारीक में राह गुम करने वालों को अपने अन्वारे हिदायत से राहयाब फ़रमाया और अपने नूरे नुबुव्वत से ज़माइर व बसाइर और क़ुलूबो अरवाह़ को मुनव्वर किया। ह़क़ीक़त में आप का वुजूदे मुबारक ऐसा आफ़्ताबे आ़लम ताब है जिस ने हज़ारहा आफ़्ताब बना दिये, इसी लिये इस की सिफ़त में ''मुनीर'' इर्शाद फ़रमाया गया। **114 :** जब तक कि इस बारे में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कोई हुक्म दिया जाए।

ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ

फिर उन्हें बे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इद्दत नहीं

تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۴۹﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ

जिसे गिनो[115] तो उन्हें कुछ फ़ाएदा दो[116] और अच्छी त़रह़ से छोड़ दो[117] ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)

اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

हम ने तुम्हारे लिये ह़लाल फ़रमाई तुम्हारी वोह बीबियां जिन को तुम महर दो[118] और तुम्हारे हाथ का माल कनीज़ें

مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَ

जो **अल्लाह** ने तुम्हें ग़नीमत में दीं[119] और तुम्हारे चचा की बेटियां और फुप्पियों की बेटियां और मामूं की बेटियां और

بَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ

ख़ालाओं की बेटियां जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिजरत की[120] और ईमान वाली औ़रत अगर वोह अपनी जान

نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ

नबी की नज़्र करे अगर नबी उसे निकाह़ में लाना चाहे[121] येह ख़ास तुम्हारे लिये है उम्मत

الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

के लिये नहीं[122] हमें मा'लूम है जो हम ने मुसल्मानों पर मुक़र्रर किया है उन की बीबियों और उन के हाथ के

115 **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अगर औ़रत को क़ब्ल क़ुर्बत त़लाक़ दी तो उस पर इद्दत वाजिब नहीं। **मस्अला :** ख़ल्वते सह़ीह़ा क़ुर्बत के हुक्म में है तो अगर ख़ल्वते सह़ीह़ा के बा'द त़लाक़ वाक़ेअ़ हो तो इद्दत वाजिब होगी अगर्चे मुबाशरत (हम बिस्तरी) न हुई हो। **मस्अला :** येह हुक्म मोमिना और किताबिया दोनों को आ़म है लेकिन आयत में मोमिनात का ज़िक्र फ़रमाना इस त़रफ़ मुशीर (इशारा करता) है कि निकाह़ करना मोमिना से औला है। 116 **मस्अला :** या'नी अगर उन का महर मुक़र्रर हो चुका था तो क़ब्ले ख़ल्वत त़लाक़ देने से शोहर पर निस्फ़ महर वाजिब होगा और अगर महर मुक़र्रर नहीं हुवा था तो एक जोड़ा देना वाजिब है जिस में तीन कपड़े होते हैं 117 **:** अच्छी त़रह़ से छोड़ना येह है कि उन के ह़ुक़ूक़ अदा कर दिये जाएं और उन को कोई ज़रर न दिया जाए और उन्हें रोका न जाए क्यूं कि उन पर इद्दत नहीं है। 118 **:** महर की ता'जील और अ़क़्द में तअ़य्युन अफ़्ज़ल है शर्त़े ह़िल्लत नहीं क्यूं कि महर को मुअ़ज्जल त़रीक़े पर देना या उस को मुक़र्रर करना औला और बेहतर है वाजिब नहीं। (تفسیر احمدی) 119 **:** मिस्ल ह़ज़रते सफ़िय्या व ह़ज़रते जुवैरिया के जिन को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने आज़ाद फ़रमाया और इन से निकाह़ किया। **मस्अला :** ग़नीमत में मिलने का ज़िक्र भी फ़ज़ीलत के लिये है क्यूं कि मम्लूकात ब मिल्के यमीन ख़्वाह ख़रीद से मिल्क में आई हों या हिबा से या विरासत से या वसिय्यत से वोह सब ह़लाल हैं। 120 **:** साथ हिजरत करने की क़ैद भी अफ़्ज़ल का बयान है क्यूं कि बिग़ैर साथ हिजरत करने के भी इन में से हर एक ह़लाल है और येह भी हो सकता है कि ख़ास ह़ुज़ूर के ह़क़ में इन औ़रतों की ह़िल्लत इस क़ैद के साथ मुक़य्यद हो जैसा कि उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब की रिवायत इस त़रफ़ मुशीर है। 121 **:** मा'ना येह हैं कि हम ने आप के लिये उस मोमिना औ़रत को ह़लाल किया जो बिग़ैर महर और बिग़ैर शुरूत़े निकाह़ अपनी जान आप को हिबा करे बशर्त़े कि आप उसे निकाह़ में लाने का इरादा फ़रमाएं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस में आयिन्दा के हुक्म का बयान है क्यूं कि वक़्ते नुज़ूले आयत ह़ुज़ूर की अज़्वाज में से कोई भी ऐसी न थीं जो हिबा के ज़रीए से मुशर्रफ़ ब ज़ौजिय्यत हुई हों और जिन मोमिना बीबियों ने अपनी जानें ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को नज़्र कर दीं वोह मैमूना बिन्ते ह़ारिस और ख़ौला बिन्ते ह़कीम और उम्मे शरीक और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हैं। (تفسیر احمدی) 122 **:** या'नी निकाह़ बे महर ख़ास आप के लिये जाइज़ है

اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵۰﴾

माल कनीज़ों में[123] येह ख़ुसूसिय्यत तुम्हारी[124] इस लिये कि तुम पर कोई तंगी न हो और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

पीछे हटाओ इन में से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो[125] और जिसे तुम ने कनारे कर दिया था

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا

उसे तुम्हारा जी चाहे तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं[126] येह अम्र इस से नज़्दीक तर है कि उन की आंखें ठन्डी हों और

يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ

ग़म न करें और तुम उन्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाओ इस पर वोह सब की सब राज़ी रहें[127] और **अल्लाह** जानता है जो तुम सब के दिलों में है और

كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿۵۱﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ

अल्लाह इल्मो हिल्म वाला है इन के बा'द[128] और औ़रतें तुम्हें ह़लाल नहीं[129] और न येह कि इन के इवज़

بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَ

और बीबियां बदलो[130] अगर्चे तुम्हें उन का हुस्न भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल[131] और

उम्मत के लिये नहीं, उम्मत पर बहर ह़ाल महर वाजिब है ख़्वाह वोह महर मुअ़य्यन न करें या क़स्दन महर की नफ़ी करें। **मस्अला :** निकाह़ ब लफ़्ज़े हिबा जाइज़ है। 123 : या'नी बीबियों के ह़क़ में जो कुछ मुक़र्रर फ़रमाया है महर और गवाह और बारी का वाजिब होना और चार हुर्रा औ़रतों तक को निकाह़ में लाना। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि शरअ़न महर की मिक़्दार **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक मुक़र्रर है और वोह दस दिरहम हैं जिस से कम करना मम्नूअ़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। 124 : जो ऊपर ज़िक्र हुई कि औ़रतें आप के लिये मह़्ज़ हिबा से बिग़ैर महर के ह़लाल की गईं। 125 : या'नी आप को इख़्तियार दिया गया है कि जिस बीबी को चाहें पास रखें और बीबियों में बारी मुक़र्रर करें या न करें। लेकिन बा वुजूद इस इख़्तियार के सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ अ़द्ल फ़रमाते और उन की बारियां बराबर रखते बजुज़ ह़ज़रते सौदह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के जिन्हों ने अपनी बारी का दिन ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को दे दिया था और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया था कि मेरे लिये येही काफ़ी है कि मेरा ह़श्र आप की अज़्वाज में हो। ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि येह आयत उन औ़रतों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने अपनी जानें हुज़ूर को नज़्र कीं और हुज़ूर को इख़्तियार दिया गया कि इन में से जिस को चाहें क़बूल करें उस के साथ तज़व्वुज फ़रमाएं और जिस को चाहें इन्कार फ़रमा दें। 126 : या'नी अज़्वाज में से आप ने जिस को मा'ज़ूल या साक़ितुल क़िस्मत कर दिया हो (बारी तर्क कर दी हो) आप जब चाहें उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात फ़रमाएं और उस को नवाज़ें, इस का आप को इख़्तियार दिया गया है। 127 : क्यूं कि जब वोह येह जानेंगी कि येह तफ़्वीज़ और येह इख़्तियार आप को **अल्लाह** की त़रफ़ से अ़त़ा हुवा है तो उन के क़ुलूब मुत़्मइन हो जाएंगे। 128 : या'नी उन नव बीबियों के बा'द जो आप के निकाह़ में हैं जिन्हें आप ने इख़्तियार दिया तो उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला और रसूल को इख़्तियार किया। 129 : क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये अज़्वाज का निसाब नव है जैसे कि उम्मत के लिये चार। 130 : या'नी इन्हें त़लाक़ दे कर इन की जगह दूसरी औ़रतों से निकाह़ कर लो ऐसा भी न करो। येह एह़तिराम इन अज़्वाज का इस लिये है कि जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्हें इख़्तियार दिया था तो इन्हों ने **अल्लाह** व रसूल को इख़्तियार किया और आसाइशे दुन्या को ठुकरा दिया, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्हीं पर इक्तिफ़ा फ़रमाया और अख़ीर तक येही बीबियां हुज़ूर की ख़िदमत में रहीं। ह़ज़रते आ़इशा व उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि आख़िर में हुज़ूर के लिये ह़लाल कर दिया गया था कि जितनी औ़रतों से चाहें निकाह़ फ़रमाएं। इस तक़्दीर पर आयत मन्सूख़ है और इस का नासिख़ आयए ''اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الآيه'' है। 131 : कि वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है और इस के बा'द ह़ज़रत मारिया क़िब्त़िया हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्क में आईं और उन से हुज़ूर के फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम पैदा हुए जिन्हों ने छोटी उ़म्र में वफ़ात पाई।

كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ رَّقِیْبًا ﴿٥٢﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا

अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है ऐ ईमान वालो नबी के घरों में[132]

بُیُوْتَ النَّبِیِّ اِلَّاۤ اَنْ یُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَیْرَ نٰظِرِیْنَ اِنٰىهُ وَ

न हाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ[133] मसलन खाने के लिये बुलाए जाओ न यूं कि खुद उस के पकने की राह तको[134]

لٰكِنْ اِذَا دُعِیْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِیْنَ

हां जब बुलाए जाओ तो हाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न येह कि बैठे बातों में

لِحَدِیْثٍ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ یُؤْذِی النَّبِیَّ فَیَسْتَحْیٖ مِنْكُمْ وَ اللّٰهُ لَا

दिल बहलाओ[135] बेशक इस में नबी को ईज़ा होती थी तो वोह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे[136] और अल्लाह

یَسْتَحْیٖ مِنَ الْحَقِّ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ

हक़ फ़रमाने में नहीं शरमाता और जब तुम उन से[137] बरत्ने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के

حِجَابٍ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا

बाहर से मांगो इस में ज़ियादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उन के दिलों की[138] और तुम्हें नहीं पहुंचता कि

132 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि घर मर्द का होता है और इसी लिये इस से इजाज़त हासिल करना मुनासिब है। शोहर के घर को औ़रत का घर भी कहा जाता है इस लिहाज़ से कि वोह इस में सुकूनत का हक़ रखती है इस वज्ह से ''وَاذْكُرْنَ مَا یُتْلٰى فِیْ بُیُوْتِكُنَّ'' में घरों की निस्बत औ़रतों की त़रफ़ की गई है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मकानात जिन में हुज़ूर की अज़्वाजे मुत़ह्हरात की सुकूनत थी और हुज़ूर के पर्दा फ़रमाने के बा'द भी वोह अपनी ह़यात तक उन्हीं में रहीं वोह हुज़ूर की मिल्क थे और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अज़्वाजे त़ाहिरात को हिबा न फ़रमाए थे बल्कि सुकूनत की इजाज़त दी थी, इसी लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात की वफ़ात के बा'द उन के वारिसों को न मिले बल्कि मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल कर दिये गए जो वक़्फ़ है और जिस का नफ़्अ़ तमाम मुसलमानों के लिये आ़म है। **133 :** इस से मा'लूम हुवा कि औ़रतों पर पर्दा लाज़िम है और ग़ैर मर्दों को किसी घर में बे इजाज़त दाख़िल होना जाइज़ नहीं। आयत अगर्चे ख़ास अज़्वाजे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के हक़ में वारिद है लेकिन हुक्म इस का तमाम मुसल्मान औ़रतों के लिये आ़म है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब से निकाह़ किया और वलीमे की आ़म दा'वत फ़रमाई तो जमाअ़तों की जमाअ़तें आती थीं और खाने से फ़ारिग़ हो कर चली जाती थीं, आख़िर में तीन साहिब ऐसे थे जो खाने से फ़ारिग़ हो कर बैठे रह गए और उन्हों ने गुफ़्तगू का त़वील सिल्सिला शुरूअ़ कर दिया और बहुत देर तक ठहरे रहे, मकान तंग था इस से घर वालों को तक्लीफ़ हुई और ह़रज हुवा कि वोह उन की वज्ह से अपना कामकाज कुछ न कर सके। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उठे और अज़्वाजे मुत़ह्हरात के हुजरों में तशरीफ़ ले गए और दौरा फ़रमा कर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त तक येह लोग अपनी बातों में लगे हुए थे। हुज़ूर फिर वापस हो गए, येह देख कर वोह लोग रवाना हुए। तब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم दौलत सराए में दाख़िल हुए और दरवाज़े पर पर्दा डाल दिया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। इस से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की कमाले ह़या और शाने करम व हुस्ने अख़्लाक़ मा'लूम होती है कि बा वुजूद ज़रूरत के अस्ह़ाब से येह न फ़रमाया कि अब आप चले जाइये बल्कि जो त़रीक़ा इख़्तियार फ़रमाया वोह हुस्ने अदब का आ'ला तरीन मुअ़ल्लिम है। **134 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बिग़ैर दा'वत किसी के यहां खाने न जाए। **135 :** कि येह अहले ख़ाना की तक्लीफ़ और उन के ह़रज का बाइ़स है। **136 :** और उन से चले जाने के लिये नहीं फ़रमाते थे। **137 :** या'नी अज़्वाजे मुत़ह्हरात से **138 :** कि वसाविस और ख़त़रात से अम्न रहता है।

رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ

रसूलुल्लाह को ईज़ा दो[139] और न येह कि इन के बा'द कभी इन की बीबियों से निकाह़ करो[140] बेशक येह

كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝٥٣ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी सख़्त बात है[141] अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक **अल्लाह** सब

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٥٤ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآىِٕهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآىِٕهِنَّ وَ

कुछ जानता है उन पर मुज़ायक़ा नहीं[142] उन के बाप और बेटों और

لَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآىِٕهِنَّ

भाइयों और भतीजों और भान्जों[143] और अपने दीन की औ़रतों[144]

وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

और अपनी कनीज़ों में[145] और **अल्लाह** से डरती रहो बेशक हर चीज़ **अल्लाह** के

شَهِيْدًا ۝٥٥ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

सामने है बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो

اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٥٦ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ

उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो[146] बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और

139 : और कोई काम ऐसा न करो जो ख़ातिरे अक़्दस पर गिरां हो। **140 :** क्यूं कि जिस औ़रत से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़क़्द फ़रमाया वोह हुज़ूर के सिवा हर शख़्स पर हमेशा के लिये ह़राम हो गई, इसी त़रह़ वोह कनीज़ें जो बारयाबे ख़िदमत हुईं और क़ुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाई गईं वोह भी इसी त़रह़ सब के लिये ह़राम हैं। **141 :** इस में ए'लाम है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत बड़ी अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमाई और आप की हु़रमत हर ह़ाल में वाजिब की। **142 :** या'नी उन बीबियों पर कुछ गुनाह नहीं इस में कि वोह उन लोगों से पर्दा न करें जिन का आयत में आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **शाने नुज़ूल :** जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हुवा तो औ़रतों के बाप बेटों और क़रीब के रिश्तेदारों ने रसूले करीम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क्या हम अपनी माओं बेटियों के साथ पर्दे के बाहर से गुफ़्तगू करें ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **143 :** या'नी इन अक़ारिब के सामने आने और इन से कलाम करने में कोई ह़रज नहीं। **144 :** या'नी मुसल्मान बीबियों के सामने आना जाइज़ है और काफ़िरा औ़रतों से पर्दा करना और अपने जिस्म छुपाना लाज़िम है सिवाए जिस्म के उन हिस्सों के जो घर के कामकाज के लिये खोलने ज़रूरी होते हैं। (جمل) **145 :** यहां चचा और मामूं का सराह़तन ज़िक्र नहीं किया गया क्यूं कि वोह वालिदैन के हुक्म में हैं। **146 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजना वाजिब है, हर एक मजलिस में आप का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक मरतबा और इस से ज़ियादा मुस्तह़ब है येही क़ौल मो'तमद है और इस पर जुम्हूर हैं और नमाज़ के क़ा'दए अख़ीरा में बा'दे तशह्हुद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है और आप के ताबेअ़ कर के आप के आल व अस्ह़ाब व दूसरे मोमिनीन पर भी दुरूद भेजा जा सकता है या'नी दुरूद शरीफ़ में आप के नामे अक़्दस के बा'द उन को शामिल किया जा सकता है और मुस्तक़िल त़ौर पर हुज़ूर के सिवा इन में से किसी पर दुरूद भेजना मकरूह है। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ में आल व अस्ह़ाब का ज़िक्र मुतवारिस है और येह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिग़ैर मक़्बूल नहीं। दुरूद शरीफ़ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तकरीम है। उ़लमा ने "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ" के मा'ना येह बयान किये हैं कि या रब मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमा, दुन्या में इन का दीन बुलन्द और इन की दा'वत ग़ालिब फ़रमा कर और

رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾ وَ

उस के रसूल को उन पर अल्लाह की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में[147] और अल्लाह ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[148] और

الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ

जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों

احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۵۸﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ

ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया[149] ऐ नबी अपनी बीबियों और साहिब ज़ादियों

بَنٰتِكَ وَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِیْنَ یُدْنِیْنَ عَلَیْهِنَّ مِنْ جَلَابِیْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ

और मुसल्मानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें[150] येह इस से

اَدْنٰۤی اَنْ یُّعْرَفْنَ فَلَا یُؤْذَیْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۵۹﴾ لَىِٕنْ

नज़्दीक तर है कि उन की पहचान हो[151] तो सताई न जाएं[152] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है अगर

لَّمْ یَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْمُرْجِفُوْنَ فِی

बाज़ न आए मुनाफ़िक़[153] और जिन के दिलों में रोग है[154] और मदीने में झूट

الْمَدِیْنَةِ لَنُغْرِیَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا یُجَاوِرُوْنَكَ فِیْهَاۤ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۶۰﴾

उड़ाने वाले[155] तो ज़रूर हम तुम्हें उन पर शह (हौसला) देंगे[156] फिर वोह मदीने में तुम्हारे पास न रहेंगे मगर थोड़े दिन[157]

इन की शरीअ़त को बक़ा इनायत कर के और आख़िरत में इन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कर और इन का सवाब ज़ियादा कर के और अव्वलीन व आख़िरीन पर इन की फ़ज़ीलत का इज़्हार फ़रमा कर और अम्बिया, मुर्सलीन व मलाएका और तमाम ख़ल्क़ पर इन की शान बुलन्द कर के। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और फ़ज़ीलतें हैं ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दुरूद भेजने वाला मुझ पर दुरूद भेजता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है : जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह तआ़ला उस पर दस बार भेजता है। तिरमिज़ी की ह़दीस शरीफ़ में है : बख़ील वोह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह दुरूद न भेजे। **147 :** वोह ईज़ा देने वाले कुफ़्फ़ार हैं जो शाने इलाही में ऐसी बातें कहते हैं जिन से वोह मुनज़्ज़ा और पाक है और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं उन पर दारैन में ला'नत। **148 :** आख़िरत में। **149 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को ईज़ा देते थे और उन के ह़क़ में बदगोई करते थे। ह़ज़रते फ़ुज़ैल ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुवर को भी नाह़क़ ईज़ा देना ह़लाल नहीं तो मोमिनीन व मोमिनात को ईज़ा देना किस क़दर बद तरीन जुर्म है। **150 :** और सर और चेहरे को छुपाएं जब किसी ह़ाजत के लिये उन को निकलना हो। **151 :** कि येह ह़ुर्रा (आज़ाद) हैं। **152 :** और मुनाफ़िक़ीन उन के दरपै न हों। मुनाफ़िक़ीन की आ़दत थी कि वोह बांदियों को छेड़ा करते थे। इस लिये ह़ुर्रा औ़रतों को हुक्म दिया कि वोह चादर से जिस्म ढांक कर सर और मुंह छुपा कर बांदियों से अपनी वज़्अ़ मुमताज़ कर दें। **153 :** अपने निफ़ाक़ से **154 :** और जो बुरे ख़याल रखते हैं या'नी फ़ाजिर बदकार हैं वोह अगर अपनी बदकारी से बाज़ न आए **155 :** जो इस्लामी लश्करों के मुतअ़ल्लिक़ झूटी ख़बरें उड़ाया करते थे और येह मश्हूर किया करते थे कि मुसल्मानों को हज़ीमत हो गई, वोह क़त्ल कर डाले गए, दुश्मन चढ़ा चला आ रहा है औ इस से उन का मक़्सद मुसल्मानों की दिल शिकनी और उन को परेशानी में डालना होता था। उन लोगों के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया जाता है कि अगर वोह इन ह़रकात से बाज़ न आए **156 :** और तुम्हें उन पर मुसल्लत़ करेंगे। **157 :** फिर मदीनए तृय्यिबा उन से ख़ाली करा लिया जाएगा और वहां से निकाल दिये जाएंगे।

مَّلۡعُوۡنِيۡنَ ۛۚ اَيۡنَمَا ثُقِفُوۡۤا اُخِذُوۡا وَقُتِّلُوۡا تَقۡتِيۡلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِى

फिटकारे हुए जहां कहीं मिलें पकड़े जाएं और गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं **अल्लाह** का दस्तूर चला आता है उन

الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا ﴿٦٢﴾ يَسۡـَٔلُكَ

लोगों में जो पहले गुज़र गए[158] और तुम **अल्लाह** का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे लोग तुम से

النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلۡ اِنَّمَا عِلۡمُهَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ

क़ियामत को पूछते हैं[159] तुम फ़रमाओ इस का इल्म तो **अल्लाह** ही के पास है और तुम क्या जानो

السَّاعَةَ تَكُوۡنُ قَرِيۡبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الۡكٰفِرِيۡنَ وَاَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيۡرًا ۙ﴿٦٤﴾

शायद क़ियामत पास ही हो[160] बेशक **अल्लाह** ने काफ़िरों पर ला'नत फ़रमाई और उन के लिये भड़क्ती आग तय्यार कर रखी है

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوۡنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ﴿٦٥﴾ ۚ يَوۡمَ تُقَلَّبُ

उस में हमेशा रहेंगे उस में न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार[161] जिस दिन उन के मुंह उलट उलट

وُجُوۡهُهُمۡ فِى النَّارِ يَقُوۡلُوۡنَ يٰلَيۡتَنَاۤ اَطَعۡنَا اللّٰهَ وَاَطَعۡنَا الرَّسُوۡلَا ﴿٦٦﴾ وَ

कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाए किसी तरह हम ने **अल्लाह** का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता[162] और

قَالُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعۡنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوۡنَا السَّبِيۡلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَاۤ

कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले[163] तो उन्हों ने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब

اٰتِهِمۡ ضِعۡفَيۡنِ مِنَ الۡعَذَابِ وَالۡعَنۡهُمۡ لَعۡنًا كَبِيۡرًا ﴿٦٨﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

उन्हें आग का दूना (दुगना) अ़ज़ाब दे[164] और उन पर बड़ी ला'नत कर ऐ ईमान

اٰمَنُوۡا لَا تَكُوۡنُوۡا كَالَّذِيۡنَ اٰذَوۡا مُوۡسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوۡا ؕ وَكَانَ

वालो[165] उन जैसे न होना जिन्हों ने मूसा को सताया[166] तो **अल्लाह** ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्हों ने कही[167] और मूसा

158 : या'नी पहली उम्मतों के मुनाफ़िक़ीन जो ऐसी ह़रकात करते थे उन के लिये भी सुन्नते इलाहिय्यह येही रही कि जहां पाए जाएं मार डाले जाएं। 159 : कि कब क़ाइम होगी। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन तो तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा के तौर पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ियामत का वक़्त दरयाफ़्त किया करते थे गोया उन को बहुत जल्दी है और यहूद इस को इम्तिहानन पूछते थे क्यूं कि तौरैत में इस का इल्म मख़्फ़ी रखा गया था तो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म फ़रमाया : 160 : इस में जल्द करने वालों को तहदीद और इम्तिहानन सुवाल करने वालों को इस्कात (चुप कराना) और उन की दहन दोज़ी (मुंह बन्द करना) है। 161 : जो उन्हें अ़ज़ाब से बचा सके। 162 : दुन्या में, तो हम आज इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार न होते। 163 : या'नी क़ौम के सरदारों और बड़ी उ़म्र के लोगों और अपनी जमाअ़त के आ़लिमों के, उन्हों ने हमें कुफ़्र की तल्क़ीन की। 164 : क्यूं कि वोह ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्हों ने दूसरों को भी गुमराह किया। 165 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम बजा लाओ और कोई काम ऐसा न करना जो उन के रन्जो मलाल का बाइ़स हो और 166 : या'नी उन बनी इसराईल की त़रह़ न होना जो नंगे नहाते थे और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ता'न करते थे कि ह़ज़रत हमारे साथ क्यूं नहीं नहाते

عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا

अल्लाह के यहां आबरू वाला है[168] ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात

سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ

कहो[169] तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा[170] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى

उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी काम्याबी पाई बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई[171]

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गए[172]

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ

और आदमी ने उठा ली बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को[173] और अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाए मुसल्मान मर्दों

उन्हें बरस वग़ैरा की कोई बीमारी है। **167 :** इस त़रह़ कि जब एक रोज़ ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल के लिये एक तन्हाई की जगह में पथ्थर पर कपड़े उतार कर रखे और ग़ुस्ल शुरूअ़ किया तो पथ्थर आप के कपड़े ले कर भागा, आप कपड़े लेने के लिये उस की त़रफ़ बढ़े तो बनी इस्राईल ने देख लिया कि जिस्मे मुबारक पर कोई दाग़ और कोई ऐ़ब नहीं है। **168 :** साह़िबे जाह और साह़िबे मन्ज़िलत और मुस्तजाबुद्दा'वात। **169 :** या'नी सच्ची और दुरुस्त ह़क़ व इन्साफ़ की और अपनी ज़बान और कलाम की ह़िफ़ाज़त रखो। येह भलाइयों की अस्ल है, ऐसा करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम पर करम फ़रमाएगा और **170 :** तुम्हें नेकियों की तौफ़ीक़ देगा और तुम्हारी त़ाअ़तें क़बूल फ़रमाएगा। **171 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद त़ाअ़त व फ़राइज़ हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर पेश किया। इन्हीं को आस्मानों, ज़मीनों, पहाड़ों पर पेश किया था कि अगर वोह इन्हें अदा करेंगे तो सवाब दिये जाएंगे न अदा करेंगे तो अ़ज़ाब किये जाएंगे। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि अमानत नमाज़ें अदा करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ानए का'बा का ह़ज, सच बोलना, नाप और तोल में और लोगों की वदीअ़तों में अ़द्ल करना है। बा'ज़ों ने कहा कि अमानत से मुराद वोह तमाम चीज़ें हैं जिन का हुक्म दिया गया और जिन की मुमानअ़त की गई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ने फ़रमाया कि तमाम आ'ज़ा कान हाथ पाउं वग़ैरा सब अमानत हैं, उस का ईमान ही क्या जो अमानत दार न हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद लोगों की वदीअ़तें और अ़हदों का पूरा करना है तो हर मोमिन पर फ़र्ज़ है कि न किसी मोमिन की ख़ियानत करे न काफ़िर मुआ़हिद की, न क़लील में न कसीर में। अल्लाह तआ़ला ने येह अमानत आ'याने समावातो अर्ज़ व जिबाल (आस्मान व ज़मीन और पहाड़ों) पर पेश फ़रमाई फिर उन से फ़रमाया : क्या तुम इन अमानतों को मअ़ इस की ज़िम्मेदारी के उठाओगे ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ज़िम्मेदारी क्या है ? फ़रमाया : येह कि अगर तुम इन्हें अच्छी त़रह़ अदा करो तो तुम्हें जज़ा दी जाएगी और अगर ना फ़रमानी करो तो तुम्हें अ़ज़ाब किया जाएगा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं, ऐ रब ! हम तेरे हुक्म के मुत़ीअ़ हैं, न सवाब चाहें न अ़ज़ाब। और उन का येह अ़र्ज़ करना बराहे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत था और अमानत बत़ौरे तख़्यीर पेश की गई थी या'नी उन्हें इख़्तियार दिया गया था कि अपने में क़ुव्वत व हिम्मत पाएं तो उठाएं वरना मा'ज़िरत कर दें, इस का उठाना लाज़िम नहीं किया गया था और अगर लाज़िम किया जाता तो वोह इन्कार न करते। **172 :** कि अगर अदा न कर सके तो अ़ज़ाब किये जाएंगे। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह अमानत आदम عَلَیْهِ السَّلَام के सामने पेश की और फ़रमाया कि मैं ने आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश की थी वोह न उठा सके, क्या तू मअ़ इस की ज़िम्मेदारी के उठा सकेगा ? ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام ने इक़रार किया। **173 :** कहा गया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अमानत पेश की ताकि मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ और मुश्रिकीन का

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

और मुसलमान औरतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

सूरए सबा मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ6 रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی

सब ख़ूबियां अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[2] और आख़िरत में उसी की

الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۱﴾ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا

ता'रीफ़ है[3] और वोही हिक्मत वाला ख़बरदार जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है[4] और जो

یَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِیْمُ

ज़मीन से निकलता है[5] और जो आस्मान से उतरता है[6] और जो उस में चढ़ता है[7] और वोही है मेहरबान

الْغَفُوْرُ ﴿۲﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِیْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰی وَرَبِّیْ

बख़्शिश वाला और काफ़िर बोले हम पर क़ियामत न आएगी[8] तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम

لَتَاْتِیَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَیْبِ ۚ لَا یَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ

बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जानने वाला[9] उस से ग़ाइब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आस्मानों में

शिर्क ज़ाहिर हो और अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाए और मोमिनीन जो अमानत के अदा करने वाले हैं उन के ईमान का इज़्हार हो और अल्लाह तबारक व तआ़ला उन की तौबा क़बूल फ़रमाए और उन पर रह़मत व मग़्फ़िरत करे अगर्चे उन से बा'ज़ ताआ़त में कुछ तक़्सीर भी हुई हो। (خازن) 1 : सूरए सबा मक्की है सिवाए आयत "وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ" इस में छ6 रुकूअ़, चव्वन आयतें और आठ सो तेंतीस कलिमे, एक हज़ार पांच सो बारह ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी हर चीज़ का मालिक ख़ालिक़ और ह़ाकिम अल्लाह तआ़ला है और हर ने'मत उसी की त़रफ़ से है तो वोही ह़म्दो सना का मुस्तह़िक़ और सज़ावार है 3 : या'नी जैसा दुन्या में ह़म्द का मुस्तह़िक़ अल्लाह तआ़ला है वैसा ही आख़िरत में भी ह़म्द का मुस्तह़िक़ वोही है क्यूं कि दोनों जहान उसी की ने'मतों से भरे हुए हैं, दुन्या में तो बन्दों पर उस की ह़म्दो सना वाजिब है क्यूं कि येह दारुत्तक्लीफ़ है और आख़िरत में अहले जन्नत ने'मतों के सुरूर और राह़तों की ख़ुशी में उस की ह़म्द करेंगे। 4 : या'नी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने 5 : जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और कानें और ब वक़्ते ह़श्र मुर्दे 6 : जैसे कि बारिश, बर्फ़, ओले, और त़रह़ त़रह़ की बरकतें और फ़िरिश्ते 7 : जैसे कि फ़िरिश्ते और दुआ़एं और बन्दों के अ़मल 8 : या'नी उन्हों ने क़ियामत के आने का इन्कार किया। 9 : या'नी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उस से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं तो क़ियामत का आना और उस के क़ाइम होने का वक़्त भी उस के इ़ल्म में है।

وَ لَا فِي الْاَرْضِ وَ لَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَ لَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ
और न ज़मीन में और न उस से छोटी न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली

مُّبِيْنٍ ۙ﴿۳﴾ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ
किताब में है[10] ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये येह हैं जिन के लिये

مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۴﴾ وَ الَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ
बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[11] और जिन्हों ने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की[12] उन

لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿۵﴾ وَ يَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ
के लिये सख़्त अ़ज़ाबे दर्दनाक में से अ़ज़ाब है और जिन्हें इ़ल्म मिला[13] वोह जानते हैं कि जो

اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَ يَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[14] वोही ह़क़ है और इ़ज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे की

الْحَمِيْدِ ﴿۶﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا
राह बताता है और काफ़िर बोले[15] क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें[16] जो तुम्हें ख़बर दे कि जब

مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۚ﴿۷﴾ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
तुम पुर्ज़े हो कर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है क्या अल्लाह पर उस ने झूट

كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ
बांधा या उसे सौदा (जुनून) है[17] बल्कि वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[18] अ़ज़ाब

وَ الضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿۸﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ مِّنَ
और दूर की गुमराही में हैं तो क्या उन्हों ने न देखा जो उन के आगे और पीछे है

السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ
आस्मान और ज़मीन[19] हम चाहें तो उन्हें[20] ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान

10 : या'नी लौहे मह़फ़ूज़ में 11 : जन्नत में। 12 : और उन में ता़'न कर के और उन को शे'रो सेह़र वग़ैरा बता कर लोगों को उन से रोकना चाहा (इस का मजी़द बयान इसी सूरत के आख़िर रुकूअ़ पांच में आएगा।) 13 : या'नी अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या मोमिनीने अहले किताब मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथियों के 14 : या'नी क़ुरआने मजीद 15 : या'नी काफ़िरों ने आपस में मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : 16 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। 17 : जो वोह ऐसी अ़जीबो ग़रीब बातें कहते हैं। अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाया कि येह दोनों बातें नहीं, ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन दोनों से मुबर्रा हैं। 18 : या'नी

كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ

का टुकड़ा गिरा दें बेशक इस[21] में निशानी है हर रुजूअ़ लाने वाले बन्दे के लिये[22] और बेशक

اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿١٠﴾

हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़ज़्ल दिया[23] ऐ पहाड़ो उस के साथ अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ करो और ऐ परिन्दो[24] और हम ने उस के लिये लोहा नर्म किया[25]

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

कि वसीअ़ ज़िरहें बना और बनाने में अन्दाज़े का लिहाज़ रख[26] और तुम सब नेकी करो बेशक मैं तुम्हारे काम

بَصِيْرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا

देख रहा हूं और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह़ की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह[27] और हम ने उस

لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَ

के लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया[28] और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से[29] और

काफ़िर बअ़्स व ह़िसाब का इन्कार करने वाले। **19 :** या'नी क्या वोह अन्धे हैं कि उन्हों ने आस्मान व ज़मीन की त़रफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जो उन्हें मा'लूम होता कि वोह हर त़रफ़ से इह़ात़े में हैं और ज़मीन व आस्मान के अक़्त़ार से बाहर नहीं जा सकते और मुल्के ख़ुदा से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं, उन्हों ने आयात और रसूल की तक्ज़ीब व इन्कार के दह्शत अंगेज़ जुर्म का इरतिकाब करते हुए ख़ौफ़ न खाया और अपनी इसी ह़ालत का ख़याल कर के न डरे। **20 :** उन की तक्ज़ीब व इन्कार की सज़ा में क़ारून की त़रह़ **21 :** नज़र व फ़िक्र **22 :** जो दलालत करती है कि अल्लाह तआला बअ़्स पर और इस के मुन्किर के अ़ज़ाब पर और हर शै पर क़ादिर है। **23 :** या'नी नुबुव्वत और किताब और कहा गया है मुल्क और एक क़ौल येह है कि हुस्ने सौत वग़ैरा तमाम चीज़ें जो आप को ख़ुसूसिय्यत के साथ अ़त़ा फ़रमाई गईं और अल्लाह तआला ने पहाड़ों और परिन्दों को हुक्म दिया : **24 :** जब वोह तस्बीह़ करें उन के साथ तस्बीह़ करो। चुनान्चे, जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तस्बीह़ करते तो पहाड़ों से भी तस्बीह़ सुनी जाती और परिन्द झुक आते, येह आप का मो'जिज़ा था। **25 :** कि आप के दस्ते मुबारक में आ कर मिस्ल मोम या गूंधे हुए आटे के नर्म हो जाता और आप उस से जो चाहते बिग़ैर आग के और बिग़ैर ठोंके पीटे बना लेते। इस का सबब येह बयान किया गया है कि जब आप बनी इसराईल के बादशाह हुए तो आप का त़रीक़ा येह था कि आप लोगों के ह़ालात की जुस्तजू के लिये इस त़रह़ निकलते कि लोग आप को न पहचानें और जब कोई मिलता और आप को न पहचानता तो उस से आप दरयाफ़्त करते कि दावूद कैसा शख़्स है ? सब लोग ता'रीफ़ करते। अल्लाह तआला ने एक फ़िरिश्ता ब सूरते इन्सान भेजा, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से भी ह़स्बे आ़दत येही सुवाल किया तो फ़िरिश्ते ने कहा कि दावूद हैं तो बहुत ही अच्छे आदमी काश उन में एक ख़स्लत न होती। इस पर आप मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया कि बन्दए ख़ुदा कौन सी ख़स्लत ? उस ने कहा कि वोह अपना और अपने अहलो इ़याल का ख़र्च बैतुल माल से लेते हैं। येह सुन कर आप के ख़याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से वज़ीफ़ा न लेते तो ज़ियादा बेहतर होता, इस लिये आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि इन के लिये कोई ऐसा सबब कर दे जिस से आप अपने अहलो इ़याल का गुज़ारा करें और बैतुल माल से आप को बे नियाज़ी हो जाए। आप की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और अल्लाह तआला ने आप के लिये लोहे को नर्म किया और आप को सन्अ़ते ज़िरह साज़ी का इ़ल्म दिया। सब से पहले ज़िरह बनाने वाले आप ही हैं, आप रोज़ाना एक ज़िरह बनाते थे वोह चार हज़ार को बिकती थी, उस में से अपने और अपने अहलो इ़याल पर भी ख़र्च फ़रमाते और फ़ुक़रा व मसाकीन पर भी सदक़ा करते। इस का बयान आयत में है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हम ने दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहा नर्म कर के उन से फ़रमाया **26 :** कि उस के ह़ल्क़े यक्सां और मुतवस्सित़ हों, न बहुत तंग न फ़राख़। **27 :** चुनान्चे आप सुब्ह़ को दिमश्क़ से रवाना होते तो दोपहर को क़ैलूला इस्तख़्र में फ़रमाते जो मुल्के फ़ारस में है और दिमश्क़ से एक महीने की राह पर है और शाम को इस्तख़्र से रवाना होते तो शब को काबुल में आराम फ़रमाते येह भी तेज़ सुवार के लिये एक महीने का रास्ता है। **28 :** जो तीन रोज़ सर ज़मीने यमन में पानी की त़रह़ जारी रहा। और एक क़ौल येह है कि हर महीने में तीन रोज़ जारी रहता था। और एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआला ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहे को नर्म किया था। **29 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया

مَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾ يَعْمَلُوْنَ

जो उन में हमारे हुक्म से फिरे[30] हम उसे भड़क्ती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे उस के लिये बनाते

لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ

जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल[31] और तस्वीरें[32] और बड़े हौज़ों के बराबर लगन[33] और लंगर दार

رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

देगें[34] ऐ दावूद वालो शुक्र करो[35] और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ

फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा[36] जिन्नों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने

تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ

कि उस का अ़सा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की हक़ीक़त खुल गई[37] अगर ग़ैब जानते होते[38]

مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ

तो इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते[39] बेशक सबा[40] के लिये उन की आबादी में[41] निशानी थी[42]

कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये जिन्नात को मुतीअ़ किया। **30 :** और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की फ़रमां बरदारी न करे **31 :** और आ़लीशान इमारतें और मस्जिदें और उन्हीं में से बैतुल मक़्दिस भी है **32 :** दरिन्दों और परिन्दों वग़ैरा की तांबे और बिल्लोर और पथ्थर वग़ैरा से और उस शरीअ़त में तस्वीर बनाना ह़राम न था। **33 :** इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार आदमी खाते। **34 :** जो अपने पायों पर क़ाइम थीं और बहुत बड़ी थीं ह़त्ता कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं सीढ़ियां लगा कर उन पर चढ़ते थे येह यमन में थीं **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने फ़रमाया कि **35 : अल्लाह** तआ़ला का उन ने'मतों पर जो उस ने तुम्हें अ़ता फ़रमाईं उस की इताअ़त बजा ला कर। **36 :** हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की थी कि उन की वफ़ात का ह़ाल जिन्नात पर ज़ाहिर न हो ताकि इन्सानों को मा'लूम हो जाए कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते। फिर आप मेह़राब में दाख़िल हुए और ह़स्बे आ़दत नमाज़ के लिये अपने अ़सा पर तक्या लगा कर खड़े हो गए। जिन्नात ह़स्बे दस्तूर अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे और येह समझते रहे कि ह़ज़रत ज़िन्दा हैं और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का अ़र्सए दराज़ तक इसी ह़ालत पर रहना उन के लिये कुछ हैरत का बाइस नहीं हुवा क्यूं कि वोह बारहा देखते थे कि आप एक माह दो दो माह और इस से ज़ियादा अ़र्से तक इबादत में मश्ग़ूल रहते हैं और आप की नमाज़ बहुत दराज़ होती है ह़त्ता कि आप की वफ़ात के पूरे एक साल बा'द तक जिन्नात आप की वफ़ात पर मुत्तलअ़ न हुए और अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमक ने आप का अ़सा खा लिया और आप का जिस्म मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ाइम था ज़मीन पर आया, उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात का इल्म हुवा। **37 :** कि वोह ग़ैब नहीं जानते **38 :** तो हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात से मुत्तलअ़ होते **39 :** और एक साल तक इमारत के कामों में तक्लीफ़े शाक़्क़ा उठाते न रहते। मरवी है कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बैतुल मक़्दिस की बिना (बुन्याद) उस मक़ाम पर रखी थी जहां हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ैमा नस्ब किया गया था, उस इमारत के पूरा होने से क़ब्ल हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आप ने अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को इस की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। चुनान्चे, आप ने शयातीन को इस की तक्मील का हुक्म दिया। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो आप ने दुआ़ की, कि आप की वफ़ात शयातीन पर ज़ाहिर न हो ताकि वोह इमारत की तक्मील तक मसरूफ़े अ़मल रहें और उन्हें जो इल्मे ग़ैब का दा'वा है वोह बातिल हो जाए। हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ तिरपन साल की हुई, तेरह साल की उ़म्र शरीफ़ में आप सरीर आराए सल्तनत हुए, चालीस साल हुक्मरानी फ़रमाई। **40 :** सबा अ़रब का एक क़बीला है जो अपने जद के नाम से मश्हूर है और वोह जद सबा बिन यश्जुब बिन या'रुब बिन क़ह्त़ान है। **41 :** जो हुदूदे यमन में वाक़ेअ़ थी **42 : अल्लाह** तआ़ला की वह्दानिय्यत व क़ुदरत पर दलालत करने

جَنَّتٰنِ عَنۡ يَّمِيۡنٍ وَّشِمَالٍ ۬ؕ كُلُوۡا مِنۡ رِّزۡقِ رَبِّكُمۡ وَاشۡكُرُوۡا لَهٗ ؕ

दो बाग़ दहने और बाएं[43] अपने रब का रिज़्क़ खाओ[44] और उस का शुक्र अदा करो[45]

بَلۡدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوۡرٌ ﴿۱۵﴾ فَاَعۡرَضُوۡا فَاَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ سَيۡلَ

पाकीज़ा शहर[46] बख़्शने वाला रब[47] तो उन्हों ने मुंह फेरा[48] तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब)

الۡعَرِمِ وَبَدَّلۡنٰهُمۡ بِجَنَّتَيۡهِمۡ جَنَّتَيۡنِ ذَوَاتَىۡ اُكُلٍ خَمۡطٍ وَّاَثۡلٍ وَّشَىۡءٍ

भेजा[49] और उन के बाग़ों के इवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बुक्टा मेवा[50] और झाउ (झाड़ी) और कुछ

مِّنۡ سِدۡرٍ قَلِيۡلٍ ﴿۱۶﴾ ذٰلِكَ جَزَيۡنٰهُمۡ بِمَا كَفَرُوۡا ؕ وَهَلۡ نُجٰزِىۡۤ اِلَّا

थोड़ी सी बेरियां[51] हम ने उन्हें येह बदला दिया उन की नाशुक्री[52] की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं

الۡكَفُوۡرَ ﴿۱۷﴾ وَجَعَلۡنَا بَيۡنَهُمۡ وَبَيۡنَ الۡقُرَى الَّتِىۡ بٰرَكۡنَا فِيۡهَا قُرًى

उसी को जो नाशुक्रा है और हम ने किये थे उन में[53] और उन शहरों में जिन में हम ने बरकत रखी[54] सरे राह

ظَاهِرَةً وَّقَدَّرۡنَا فِيۡهَا السَّيۡرَ ؕ سِيۡرُوۡا فِيۡهَا لَيَالِىَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيۡنَ ﴿۱۸﴾

कितने शहर[55] और उन्हें मन्ज़िल के अन्दाज़े पर रखा[56] उन में चलो रातों और दिनों अम्नो अमान से[57]

वाली और वोह निशानी क्या थी उस का आगे बयान होता है। **43 :** या'नी उन की वादी के दाहने और बाएं दूर तक चले गए और उन से कहा गया था **44 :** बाग़ ऐसे कसीरुस्समर (बहुत फलदार) थे कि जब कोई शख़्स सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बिग़ैर हाथ लगाए क़िस्म क़िस्म के मेवों से उस का टोकरा भर जाता। **45 :** या'नी इस ने'मत पर उस की ताअ़त बजा लाओ। **46 :** लतीफ़ आबो हवा, साफ़ सुथरी सर ज़मीन, न उस में मच्छर न मख्खी न खटमल न सांप न बिच्छू, हवा की पाकीज़गी का येह आलम कि अगर कहीं और का कोई शख़्स उस शहर में गुज़र जाए और उस के कपड़ों में जूएं हों तो सब मर जाएं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि शहरे सबा सन्आ़ से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर था। **47 :** या'नी अगर तुम रब की रोज़ी पर शुक्र करो और इताअ़त बजा लाओ तो वोह बख़्शिश फ़रमाने वाला है। **48 :** उस की शुक्र गुज़ारी से और अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब की। वहब का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन की त़रफ़ तेरह नबी भेजे जिन्हों ने उन को ह़क़ की दा'वतें दीं और **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें याद दिलाईं और उस के अ़ज़ाब से डराया मगर वोह ईमान न लाए और उन्हों ने अम्बिया को झुटला दिया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर ख़ुदा की कोई भी ने'मत हो, तुम अपने रब से कह दो कि उस से हो सके तो वोह इन ने'मतों को रोक ले। **49 :** अ़ज़ीम सैलाब जिस से उन के बाग़ अम्वाल सब डूब गए और उन के मकानात रैत में दफ़्न हो गए और इस त़रह़ तबाह हुए कि उन की तबाही अ़रब के लिये मसल बन गई। **50 :** निहायत बद मज़ा **51 :** जैसी वीरानों में जम आती हैं, इस त़रह़ की झाड़ियों और वह्शत नाक जंगल को जो उन के ख़ुशनुमा बाग़ों की जगह पैदा हो गया था ब त़रीक़े मुशाकलत बाग़ फ़रमाया। **52 :** और उन के कुफ़्र **53 :** या'नी शहरे सबा में **54 :** कि वहां के रहने वालों को वसीअ़ ने'मतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये, मुराद इन से शाम के शहर हैं। **55 :** क़रीब क़रीब, सबा से शाम तक सफ़र करने वालों को इस राह में तोशा और पानी साथ ले जाने की ज़रूरत न होती। **56 :** कि चलने वाला एक मक़ाम से सुब्ह़ चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुंच जाए जहां ज़रूरिय्यात के तमाम सामान हों और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुंच जाए, यमन से शाम तक का तमाम सफ़र उसी आसाइश के साथ तै हो सके और हम ने उन से कहा कि **57 :** न रातों में कोई खटका न दिनों में कोई तक्लीफ़, न दुश्मन का अन्देशा न भूक प्यास का ग़म। मालदारों में ह़सद पैदा हुवा कि हमारे और ग़रीबों के दरमियान कोई फ़र्क़ ही नहीं रहा, क़रीब क़रीब की मन्ज़िलें हैं, लोग ख़िरामां ख़िरामां हवा ख़ोरी करते चले जाते हैं, थोड़ी देर के बा'द दूसरी आबादी आ जाती है, वहां आराम करते हैं न सफ़र में तकान (थकन) है न कोफ़्त, अगर मन्ज़िलें दूर होतीं, सफ़र की मुद्दत दराज़ होती, राह में पानी न मिलता, जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता तो हम तोशा साथ लेते पानी के इन्तिज़ाम करते सुवारियां और ख़ुद्दाम साथ रखते, सफ़र का लुत्फ़ आता और अमीरो ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता, येह ख़याल कर के उन्हों ने कहा।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ

तो बोले ऐ हमारे रब हमें सफ़र में दूरी डाल[58] और उन्हों ने ख़ुद अपना ही नुक़्सान किया तो हम ने उन्हें कहानियां कर दिया[59]

وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝١٩ وَ

और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया[60] बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिये[61] और

لَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢٠

बेशक इब्लीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया[62] तो वोह उस के पीछे हो लिये मगर एक गुरौह कि मुसल्मान था[63]

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ

और शैत़ान का उन पर[64] कुछ क़ाबू न था मगर इस लिये कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन

هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝٢١ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ

इस से शक में है और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगहबान है तुम फ़रमाओ[65] पुकारो उन्हें जिन्हें

زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي

अल्लाह के सिवा[66] समझे बैठे हो[67] वोह ज़र्रा भर के मालिक नहीं आस्मानों में और न

الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝٢٢ وَلَا

ज़मीन में और न उन का इन दोनों में कुछ हिस्सा और न **अल्लाह** का उन में से कोई मददगार और

تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ

उस के पास शफ़ाअ़त काम नहीं देती मगर जिस के लिये वोह इज़्न फ़रमाए यहां तक कि जब इज़्न दे कर उन के दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है

قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٢٣ قُلْ مَنْ

एक दूसरे से[68] कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई वोह कहते हैं जो फ़रमाया ह़क़ फ़रमाया[69] और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला तुम फ़रमाओ कौन

58 : या'नी हमारे और शाम के दरमियान जंगल और बयाबान कर दे कि बिग़ैर तोशा और सुवारी के सफ़र न हो सके। 59 : बा'द वालों के लिये कि उन के अह़्वाल से इ़ब्रत ह़ासिल करें। 60 : क़बीला क़बीला मुन्तशिर हो गया, वोह बस्तियां ग़र्क़ हो गईं और लोग बे ख़ान्मां (बे सरो सामान) हो कर जुदा जुदा बिलाद में पहुंचे, ग़स्सान शाम में और अज़्द उ़म्मान में और ख़ुज़ाआ़ तिहामा में और आले ख़ुज़ैमा इ़राक़ में और औस व ख़ज़रज का जद अ़म्र बिन आ़मिर मदीना में। 61 : और सब्रो शुक्र मोमिन की सिफ़त है कि जब वोह बला में मुब्तला होता है सब्र करता है और जब ने'मत पाता है शुक्र बजा लाता है। 62 : या'नी इब्लीस जो गुमान रखता था कि बनी आदम को वोह शह़्वत व ह़िर्स और ग़ज़ब के ज़रीए़ गुमराह कर देगा, येह गुमान उस ने अहले सबा पर बल्कि तमाम काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वोह उस के मुत्तबेअ़ हो गए और उस की इत़ाअ़त करने लगे। ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि शैत़ान ने न किसी पर तलवार खींची न किसी पर कोड़े मारे झूटे वा'दों और बात़िल उम्मीदों से अहले बात़िल को गुमराह कर दिया। 63 : उन्हों ने उस का इत्तिबाअ़ न किया। 64 : जिन के ह़क़ में उस का गुमान पूरा हुवा 65 : ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के काफ़िरों से 66 : अपना मा'बूद 67 : कि वोह तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्यूं कि किसी नफ़्अ़ व ज़रर में 68 : ब त़रीक़े इस्तिब्शार।

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى

जो तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों और ज़मीन से[70] तुम खुद ही फ़रमाओ अल्लाह[71] और बेशक हम या तुम[72] या तो ज़रूर

هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ

हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में[73] तुम फ़रमाओ हम ने तुम्हारे गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उस की तुम से पूछ नहीं न तुम्हारे कौतकों

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ

(करतूतों) का हम से सुवाल[74] तुम फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जम्अ़ करेगा[75] फिर हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा देगा[76] और वोही है

الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۶﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ

बड़ा न्याव चुकाने वाला (दुरुस्त फ़ैसला करने वाला) सब कुछ जानता तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वोह शरीक जो तुम ने उस से मिलाए हैं[77] हिश्त (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि

هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا

वोही है अल्लाह इ़ज़्ज़त वाला हिक्मत वाला और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है[78] खुश ख़बरी देता[79]

وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ

और डर सुनाता[80] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते[81] और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा[82]

69 : या'नी शफ़ाअ़त करने वालों को ईमानदारों की शफ़ाअ़त का इज़्न दिया। **70 :** या'नी आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। **71 :** क्यूं कि इस सुवाल का बजुज़ इस के और कोई जवाब ही नहीं। **72 :** या'नी दोनों फ़रीक़ों में से हर एक के लिये इन दोनों ह़ालों में से एक ह़ाल ज़रूरी है **73 :** और येह ज़ाहिर है कि जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को रोज़ी देने वाला, पानी बरसाने वाला, सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक ज़र्रा भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर आयात में बयान हो चुका) वोह यक़ीनन खुली गुमराही में है। **74 :** बल्कि हर शख़्स से उस के अ़मल का सुवाल होगा और हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। **75 :** रोज़े क़ियामत **76 :** तो अहले ह़क़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में दाख़िल करेगा। **77 :** या'नी जिन बुतों को तुम ने इबादत में शरीक किया है मुझे दिखाओ तो किस क़ाबिल हैं, क्या वोह कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं ? और जब येह कुछ नहीं तो उन को खुदा का शरीक बनाना और उन की इबादत करना कैसी अ़ज़ीम ख़ता है, इस से बाज़ आओ। **78 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत आ़म्मा है, तमाम इन्सान इस के इह़ाते में हैं गोरे हों या काले, अ़रबी हों या अ़जमी, पहले हों या पिछले, सब के लिये आप रसूल हैं और वोह सब आप के उम्मती। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : मुझे पांच चीज़ें ऐसी अ़ता फ़रमाई गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न दी गईं : (1) एक माह की मसाफ़त के रो'ब से मेरी मदद की गई, (2) तमाम ज़मीन मेरे लिये मस्जिद और पाक की गई कि जहां मेरे उम्मती को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और (3) मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं जो मुझ से पहले किसी के लिये ह़लाल न थीं और (4) मुझे मर्तबए शफ़ाअ़त अ़ता किया गया और (5) अम्बिया ख़ास अपनी क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स होते थे और मैं तमाम इन्सानों की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया। ह़दीस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़ज़ाइले मख़्सूसा का बयान है जिन में से एक आप की रिसालते आ़म्मा है जो तमाम जिन्नो इन्स को शामिल है। **खुलासा** येह कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और येह मर्तबा ख़ास आप का है जो कुरआने करीम की आयात और अह़ादीसे कसीरा से साबित है। सूरए फ़ुरक़ान की इब्तिदा में भी इस का बयान गुज़र चुका है (خازن) **79 :** ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल की **80 :** काफ़िरों को उस के अ़द्ल का। **81 :** और अपने जहल की वज्ह से आप की मुख़ालफ़त करते हैं **82 :** या'नी क़ियामत का वा'दा।

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ

अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिये एक ऐसे दिन का वा'दा जिस से तुम न एक घड़ी पीछे

سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا

हट सको न आगे बढ़ सको[83] और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएंगे इस

الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ

कुरआन पर न उन किताबों पर जो इस से आगे थीं[84] और किसी तरह तू देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ

खड़े किये जाएंगे उन में एक दूसरे पर बात डालेगा वोह जो दबे थे[85]

اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ

उन से कहेंगे जो ऊंचे खिंचते थे[86] अगर तुम न होते[87] तो हम ज़रूर ईमान ले आते वोह जो ऊंचे

الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى

खिंचते थे उन से कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से

بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

बा'द इस के कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम खुद मुजरिम थे और कहेंगे वोह जो दबे हुए थे

لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ

उन से जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दाउं (फ़रेब) था[88] जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि अल्लाह का

بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ

इन्कार करें और उस के बराबर वाले ठहराएं और दिल ही दिल में पचताने लगे[89] जब अ़ज़ाब देखा[90] और

جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

हम ने तौक़ डाले उन की गरदनों में जो मुन्किर थे[91] वोह क्या बदला पाएंगे मगर वोही

83 : या'नी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताख़ीर मुम्किन नहीं और अगर जल्दी चाहो तो तक़द्दुम मुम्किन नहीं, बहर तक़्दीर इस वा'दे का अपने वक़्त पर पूरा होना। 84 : तौरैत और इन्जील वग़ैरा। 85 : या'नी ताबेअ़ और पैरव थे 86 : या'नी अपने सरदारों से 87 : और हमें ईमान लाने से न रोकते 88 : या'नी तुम शबो रोज़ हमारे लिये मक्र करते थे और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थे 89 : दोनों फ़रीक़ ताबेअ़ भी और मत्बूअ़ भी, पैरव भी और उन के बहकाने वाले भी, ईमान न लाने पर 90 : जहन्नम का। 91 : ख़्वाह बहकाने वाले हों या उन के कहने में

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ

जो कुछ करते थे[92] और हम ने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों

مُتْرَفُوْهَاۤ اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا

(अमीरों) ने येही कहा कि तुम जो ले कर भेजे गए हम उस के मुन्किर हैं[93] और बोले हम माल और

وَّ اَوْلَادًا ۙ وَّ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۳۵﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अ़ज़ाब होना नहीं[94] तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ करता है जिस के

يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ

लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[95] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते और तुम्हारे माल और

لَاۤ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰۤى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ

तुम्हारी औलाद इस क़ाबिल नहीं कि तुम्हें हमारे क़ुर्ब तक पहुंचाएं मगर वोह जो ईमान लाए और नेकी

صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ

की[96] उन के लिये दूना दून (कई गुना) सिला[97] उन के अ़मल का बदला और वोह बालाख़ानों में

आने वाले, तमाम कुफ़्फ़ार की येही सज़ा है। **92 :** दुन्या में कुफ़्र और मा'सियत। **93 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर फ़रमाई गई कि आप इन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से रन्जीदा न हों, कुफ़्फ़ार का अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के साथ येही दस्तूर रहा है और मालदार लोग इसी त़रह़ अपने माल और औलाद के ग़ुरूर में अम्बिया की तक्ज़ीब करते रहे हैं। **शाने नुज़ूल :** दो शख़्स शरीके तिजारत थे, उन में से एक मुल्के शाम को गया और एक मक्कए मुकर्रमा में रहा। जब नबिये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हुए और उस ने मुल्के शाम में हुज़ूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त़ लिखा और उस से हुज़ूर का मुफ़स्सल ह़ाल दरयाफ़्त किया। उस शरीक ने जवाब में लिखा कि मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपनी नुबुव्वत का ए'लान तो किया है लेकिन सिवाए छोटे दरजे के ह़क़ीर व ग़रीब लोगों के और किसी ने उन का इत्तिबाअ़ नहीं किया। जब येह ख़त़ उस के पास पहुंचा तो वोह अपने तिजारती काम छोड़ कर मक्कए मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का पता बताओ और मा'लूम कर के हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया आप दुन्या को क्या दा'वत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं ? फ़रमाया : बुत परस्ती छोड़ कर एक **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करना, और आप ने अह़कामे इस्लाम बताए। येह बातें उस के दिल में असर कर गईं और वोह शख़्स पिछली किताबों का आ़लिम था, कहने लगा कि मैं गवाही देता हूं कि आप बेशक **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने येह कैसे जाना ? उस ने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया पहले छोटे दरजे के ग़रीब लोग ही उस के ताबेअ़ हुए, येह सुन्नते इलाहिय्यह हमेशा ही जारी रही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई **94 :** या'नी जब दुन्या में हम ख़ुशह़ाल हैं तो हमारे आ'माल व अफ़्आ़ल **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द होंगे और ऐसा हुवा तो आख़िरत में अ़ज़ाब नहीं होगा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इस ख़याले बात़िल का इब्त़ाल फ़रमा दिया कि सवाबे आख़िरत को मईशते दुन्या पर क़ियास करना ग़लत़ है। **95 :** ब त़रीक़े इब्तिला व इम्तिह़ान। तो दुन्या में रोज़ी की कशाइश रिज़ाए इलाही की दलील नहीं और ऐसे ही इस की तंगी **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी की दलील नहीं। कभी गुनहगार पर वुस्अ़त करता है, कभी फ़रमां बरदार पर तंगी, येह उस की ह़िक्मत है, सवाबे आख़िरत को इस पर क़ियास करना ग़लत़ व बे जा है। **96 :** या'नी माल किसी के लिये सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए मोमिने सालेह़ के जो उस को राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और औलाद किसी के लिये सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए उस मोमिन के जो उन्हें नेक इ़ल्म सिखाए दीन की ता'लीम दे और सालेह़ व मुत्तक़ी बनाए। **97 :** एक नेकी के बदले दस से ले कर सात सो गुना तक और इस से भी ज़ियादा जितना ख़ुदा चाहे।

اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ الَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

अम्नो अमान से हैं[98] और वोह जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं[99] वोह अ़ज़ाब में

مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ

ला धरे जाएंगे[100] तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और

يَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۳۹﴾

तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे[101] और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले और देगा[102] और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला[103]

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا

और जिस दिन उन सब को उठाएगा[104] फिर फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा क्या येह तुम्हें

يَعْبُدُوْنَ ﴿۴۰﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا

पूजते थे[105] वोह अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को तू हमारा दोस्त है न वोह[106] बल्कि वोह

يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿۴۱﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ

जिन्नों को पूजते थे[107] उन में अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे[108] तो आज तुम में एक दूसरे

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّ لَا ضَرًّا ؕ وَ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا

के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा[109] और हम फ़रमाएंगे ज़ालिमों से उस आग

عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

का अ़ज़ाब चखो जिसे झुटलाते थे[110] और जब उन पर हमारी रोशन आयतें[111]

98 : या'नी जन्नत के मनाज़िले बाला में। **99 :** या'नी कुरआने करीम पर ज़बाने ता'न खोलते हैं और येह गुमान करते हैं कि अपनी इन बातिल कारियों से वोह लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे और उन का येह मक्र इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वोह हमारे अ़ज़ाब से बच रहेंगे, क्यूं कि उन का ए'तिक़ाद येह है कि मरने के बा'द उठना ही नहीं है तो अ़ज़ाब सवाब कैसा। **100 :** और उन की मक्कारियां उन्हें कुछ काम न आएंगी। **101 :** अपने ह़स्बे ह़िक्मत। **102 :** दुन्या में या आख़िरत में। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा। दूसरी ह़दीस में है : सदके से माल कम नहीं होता, मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है, तवाज़ोअ़ से मर्तबे बुलन्द होते हैं। **103 :** क्यूं कि उस के सिवा जो कोई किसी को देता है ख़्वाह बादशाह लश्कर को या आक़ा ग़ुलाम को या साहिबे ख़ाना अपने इयाल को वोह अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई और उस की अ़ता फ़रमाई हुई रोज़ी में से देता है। रिज़्क़ और उस से मुन्तफ़ेअ़ होने के अस्बाब का ख़ालिक़ सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं, वोही रज़्ज़ाक़े ह़क़ीक़ी है। **104 :** या'नी उन मुशिरकीन को **105 :** दुन्या में **106 :** या'नी हमारी इन से कोई दोस्ती नहीं तो हम किस त़रह़ इन के पूजने से राज़ी हो सकते थे, हम इस से बरी हैं। **107 :** या'नी शयात़ीन को कि उन की इत़ाअ़त के लिये ग़ैरे ख़ुदा को पूजते थे। **108 :** या'नी शयात़ीन पर। **109 :** और वोह झूटे मा'बूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़्अ़ नुक़्सान न पहुंचा सकेंगे। **110 :** दुन्या में। **111 :** या'नी आयाते कुरआन ज़बाने सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से।

بَیِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ یُّرِیْدُ اَنْ یَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ یَعْبُدُ

पढ़ी जाएं तो कहते हैं[112] येह तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा

اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

के मा'बूदों से[113] और कहते हैं[114] येह तो नहीं मगर बोहतान जोड़ा हुवा और काफ़िरों ने हक़ को

لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۴۳﴾ وَ مَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ

कहा[115] जब उन के पास आया येह तो नहीं मगर खुला जादू और हम ने उन्हें कुछ किताबें

كُتُبٍ یَّدْرُسُوْنَهَا وَ مَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَیْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِیْرٍ ؕ﴿۴۴﴾ وَ كَذَّبَ

न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया[116] और इन से

الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَ مَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِیْ ۫

अगलों ने[117] झुटलाया और येह उस के दसवें को भी न पहुंचे जो हम ने उन्हें दिया था[118] फिर उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया

فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۴۵﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ

तो कैसा हुवा मेरा इन्कार करना[119] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक ही नसीहत करता हूं[120] कि अल्लाह के लिये खड़े रहो[121]

مَثْنٰى وَ فُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا

दो दो[122] और अकेले अकेले[123] फिर सोचो[124] कि तुम्हारे उन साहिब में जुनून की कोई बात नहीं वोह तो नहीं मगर तुम्हें

112 : हज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत **113 :** या'नी बुतों से। **114 :** कुरआन शरीफ़ की निस्बत **115 :** या'नी कुरआन शरीफ़ को **116 :** या'नी आप से पहले मुश्रिकीने अ़रब के पास न कोई किताब आई न रसूल जिस की त़रफ़ अपने दीन की निस्बत कर सकें तो येह जिस ख़याल पर हैं उन के पास उस की कोई सनद नहीं वोह उन के नफ़्स का फ़रेब है। **117 :** या'नी पहली उम्मतों ने मिस्ल कुरैश के रसूलों की तक्ज़ीब की और उन को **118 :** या'नी जो कुव्वत व कस्रते माल व औलाद व तूले उम्र पहलों को दी गई थी मुश्रिकीने कुरैश के पास तो उस का दसवां हिस्सा भी नहीं, इन के पहले तो उन से त़ाक़त व कुव्वत, मालो दौलत में दस गुना से ज़ियादा थे। **119 :** या'नी उन को ना पसन्द रखना और अ़ज़ाब देना और हलाक फ़रमाना या'नी पहले मुकज़्ज़िबीन ने जब मेरे रसूलों को झुटलाया तो मैं ने अपने अ़ज़ाब से उन्हें हलाक किया और उन की त़ाक़त व कुव्वत और मालो दौलत कोई चीज़ भी काम न आई, इन लोगों की क्या हक़ीक़त है इन्हें डरना चाहिये। **120 :** अगर तुम ने इस पर अ़मल किया तो तुम पर हक़ वाज़ेह हो जाएगा और तुम वसाविस व शुबुहात और गुमराही की मुसीबत से नजात पाओगे, वोह नसीहत येह है **121 :** मह्ज़ त़लबे हक़ की निय्यत से, अपने आप को त़रफ़ दारी और तअ़स्सुब से ख़ाली कर के **122 :** ताकि बाहम मश्वरा कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का नतीजा बयान कर सके और दोनों इन्साफ़ के साथ ग़ौर कर सकें **123 :** ताकि मज्मअ़ और इज़्दिहाम से त़बीअ़त मुतवह्हिश न हो और तअ़स्सुब और त़रफ़ दारी व मुक़ाबला व लिहाज़ वग़ैरा से त़बीअ़तें पाक रहें और अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौक़अ़ मिले। **124 :** और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत ग़ौर करो कि क्या जैसा कि कुफ़्फ़ार आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत करते हैं इस में सच्चाई का कुछ शाएबा भी है ? तुम्हारे अपने तजरिबे में, कुरैश में या नौए इन्सान में कोई शख़्स भी इस मर्तबे का आ़क़िल नज़र आया है ? क्या ऐसा ज़हीन ऐसा साइबुर्राए देखा है ? ऐसा सच्चा ऐसा पाक नफ़्स कोई और भी पाया है ? जब तुम्हारा नफ़्स हुक्म (फ़ैसला) कर दे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन औसाफ़ में यक्ता हैं तो तुम यक़ीन जानो।

نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

डर सुनाने वाले[125] एक सख़्त अ़ज़ाब के आगे[126] तुम फ़रमाओ मैं ने तुम से इस पर कुछ अज्र मांगा हो

فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ

तो वोह तुम्हीं को[127] मेरा अज्र तो **अल्लाह** ही पर है और वोह हर चीज़ पर गवाह है तुम फ़रमाओ

اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا

बेशक मेरा रब ह़क़ का इल्क़ा फ़रमाता है[128] बहुत जानने वाला सब ग़ैबों का तुम फ़रमाओ ह़क़ आया[129] और

يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ

बातिल न पहल करे और न फिर (लौट) कर आए[130] तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका[131]

وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى

और अगर मैं ने राह पाई तो उस के सबब जो मेरा रब मेरी त़रफ़ वह़्य फ़रमाता है[132] बेशक वोह सुनने वाला नज़्दीक है[133] और किसी त़रह तू देखे[134]

اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَ

जब वोह घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे[135] और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे[136] और कहेंगे हम इस पर ईमान लाए[137] और

اَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ

अब वोह इसे क्यूंकर पाएं इतनी दूर जगह से[138] कि पहले[139] तो इस से कुफ़्र कर चुके थे और

125 : **अल्लाह** तआ़ला के नबी **126 :** और वोह अ़ज़ाबे आख़िरत है। **127 :** या'नी मैं नसीह़त व हिदायत और तब्लीग़ व रिसालत पर तुम से कोई अज्र नहीं त़लब करता **128 :** अपने अम्बिया की त़रफ़। **129 :** या'नी क़ुरआन व इस्लाम **130 :** या'नी शिर्क व कुफ़्र मिट गया, न उस की इब्तिदा रही न उस का इआ़दा, मुराद येह है कि वोह हलाक हो गया। **131 :** कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहते थे कि आप गुमराह हो गए। (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰى) **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि आप उन से फ़रमा दें कि अगर येह फ़र्ज़ किया जाए कि मैं बहका तो इस का वबाल मेरे नफ़्स पर है। **132 :** ह़िक्मत व बयान की, क्यूं कि राहयाब होना उसी की तौफ़ीक़ व हिदायत पर है। अम्बिया सब मा'सूम होते हैं गुनाह उन से नहीं हो सकता और हुज़ूर तो सय्यिदुल अम्बिया हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ल्क़ को नेकियों की राहें आप के इत्तिबाअ़ से मिलती हैं, बा वुजूद जलालते मन्ज़िलत और रिफ़्अ़ते मर्तबत के आप को हुक्म दिया गया कि ज़लालत की निस्बत अ़ला सबीलिल फ़र्ज़ अपने नफ़्स की त़रफ़ फ़रमाएं ताकि ख़ल्क़ को मा'लूम हो कि ज़लालत का मन्शा इन्सान का नफ़्स है, जब इस को उस पर छोड़ दिया जाता है इस से ज़लालत पैदा होती है और हिदायत ह़ज़रते ह़क़ عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व मौहिबत से ह़ासिल होती है, नफ़्स उस का मन्शा नहीं। **133 :** हर राहयाब और गुमराह को जानता है और उन के अ़मल व किरदार से बा ख़बर है, कोई कितना ही छुपाए किसी का ह़ाल उस से छुप नहीं सकता। अ़रब के एक मायानाज़ शाइर इस्लाम लाए तो कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि क्या तुम अपने दीन से फिर गए और इतने बड़े शाइर और ज़बान के माहिर हो कर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए ? उन्हों ने कहा : हां वोह मुझ पर ग़ालिब आ गए, क़ुरआने करीम की तीन आयतें मैं ने सुनीं और चाहा कि उन के क़ाफ़िये पर तीन शे'र कहूं, हर चन्द कोशिश की, मेहनत उठाई, अपनी तमाम क़ुव्वत सर्फ़ कर दी मगर येह मुम्किन न हो सका, तब मुझे यक़ीन हो गया कि येह बशर का कलाम नहीं वोह आयतें ''قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ'' से ''سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ'' तक हैं। (روح البيان) **134 :** कुफ़्फ़ार को मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन **135 :** और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे **136 :** जहां भी होंगे क्यूं कि कहीं भी हों **अल्लाह** तआ़ला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते, उस वक़्त ह़क़ की मा'रिफ़त के लिये मुज़्तर होंगे। **137 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर। **138 :** या'नी अब मुकल्लफ़ होने के मह़ल से दूर हो कर तौबा व ईमान कैसे पा सकेंगे **139 :** या'नी अ़ज़ाब

يَقۡذِفُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ مِنۡ مَّكَانٍۭ بَعِيۡدٍ ﴿۵۳﴾ وَحِيۡلَ بَيۡنَهُمۡ وَبَيۡنَ مَا

बे देखे फेंक मारते हैं[140] दूर मकान से[141] और रोक कर दी गई उन में और उस में

يَشۡتَهُوۡنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشۡيَاعِهِمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا فِيۡ شَكٍّ مُّرِيۡبٍ ﴿۵۴﴾

जिसे चाहते हैं[142] जैसे उन के पहले गुरौहों से किया गया था[143] बेशक वोह धोका डालने वाले शक में थे[144]

सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ جَاعِلِ الۡمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيۡۤ

सब ख़ूबियां अल्लाह को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिश्तों को रसूल करने वाला[2] जिन के

اَجۡنِحَةٍ مَّثۡنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيۡدُ فِي الۡخَلۡقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

दो दो तीन तीन चार चार पर हैं बढ़ाता है आफ़्रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे[3] बेशक अल्लाह

كُلِّ شَيۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱﴾ مَا يَفۡتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنۡ رَّحۡمَةٍ فَلَا مُمۡسِكَ لَهَا ۚ

हर चीज़ पर क़ादिर है अल्लाह जो रहमत लोगों के लिये खोले[4] उस का कोई रोकने वाला नहीं

وَمَا يُمۡسِكۡ ۙ فَلَا مُرۡسِلَ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۲﴾ يٰۤاَيُّهَا

और जो कुछ रोक ले तो उस की रोक के बा'द उस का कोई छोड़ने वाला नहीं और वोही इ़ज़्ज़तो हिक्मत वाला है ऐ

النَّاسُ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ ؕ هَلۡ مِنۡ خَالِقٍ غَيۡرُ اللّٰهِ يَرۡزُقُكُمۡ

लोगो ! अपने ऊपर अल्लाह का एह़सान याद करो[5] क्या अल्लाह के सिवा और भी कोई ख़ालिक़ कि आस्मान और

देखने से पहले **140 :** या'नी बे जाने कह गुज़रते हैं, जैसा कि उन्हों ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में कहा था कि वोह शाइ़र हैं, साहिर हैं, काहिन हैं हालां कि उन्हों ने कभी हुज़ूर से शे'रो सेह़र व कहानत का सुदूर न देखा था। **141 :** या'नी सिद्क़ो वाक़िइय्यत से दूर, कि उन के उन मताइ़न (ता'नों) को सिद्क़ से क़ुर्ब व नज़्दीकी भी नहीं। **142 :** या'नी तौबा व ईमान में। **143 :** कि उन की तौबा व ईमान वक़्ते यास क़बूल न फ़रमाई गई। **144 :** ईमानिय्यात के मुतअ़ल्लिक़। **1 :** सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, नव सो सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सो तीस हुरूफ़ हैं। **2 :** अपने अम्बिया की त़रफ़। **3 :** फ़िरिश्तों में और इन के सिवा और मख़्लूक़ में। **4 :** मिस्ल बारिश व रिज़्क़ व सिह़्ह़त वग़ैरा के। **5 :** कि उस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आस्मान को बिग़ैर किसी सुतून के क़ाइम किया, अपनी राह बताने और ह़क़ की दा'वत देने के लिये रसूलों को भेजा, रिज़्क़ के दरवाज़े खोले।

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٣ وَاِنْ

ज़मीन से[6] तुम्हें रोज़ी दे उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम कहां औंधे जाते हो[7] और अगर

يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

येह तुम्हें झुटलाएं[8] तो बेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुटलाए गए[9] और सब काम **अल्लाह** ही की त़रफ़

الْاُمُوْرُ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ

फिरते हैं[10] ऐ लोगो ! बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है[11] तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या

الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٥ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

की ज़िन्दगी[12] और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के ह़िल्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी[13] बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है

فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ ۝٦

तो तुम भी उसे दुश्मन समझो[14] वोह तो अपने गुरौह को[15] इसी लिये बुलाता है कि दोज़ख़ियों में हों[16]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

काफ़िरों के लिये[17] सख़्त अ़ज़ाब है और जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧ ع اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

काम किये[18] उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या वोह जिस की निगाह में उस का बुरा काम आरास्ता किया गया

فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ۖ فَلَا

कि उस ने उसे भला समझा हिदायत वाले की त़रह़ हो जाएगा[19] इस लिये **अल्लाह** गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे तो

6 : मींह बरसा कर और त़रह़ त़रह़ के नबातात पैदा कर के 7 : और येह जानते हुए कि वोही ख़ालिक़ व राज़िक़ है ईमान व तौह़ीद से क्यूं फिरते हो ? इस के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्ली के लिये फ़रमाया जाता है 8 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और तुम्हारी नुबुव्वत व रिसालत को न मानें और तौह़ीद व बअ़्स व ह़िसाब और अ़ज़ाब का इन्कार करें 9 : उन्हों ने सब्र किया, आप भी सब्र फ़रमाइये, कुफ़्फ़ार का अम्बिया के साथ क़दीम से येह दस्तूर चला आता है । 10 : वोह झुटलाने वालों को सज़ा देगा और रसूलों की मदद फ़रमाएगा । 11 : क़ियामत ज़रूर आनी है, मरने के बा'द ज़रूर उठना है, आ'माल का ह़िसाब यक़ीनन होगा, हर एक को उस के किये की जज़ा बेशक मिलेगी । 12 : कि इस की लज़्ज़तों में मश्ग़ूल हो कर आख़िरत को भूल जाओ । 13 : या'नी शैत़ान तुम्हारे दिलों में येह वस्वसा डाल कर कि गुनाहों से मज़ा उठा लो **अल्लाह** तआ़ला ह़िल्म फ़रमाने वाला है वोह दर गुज़र करेगा । **अल्लाह** तआ़ला बेशक ह़िल्म वाला है लेकिन शैत़ान की फ़रेब कारी येह है कि वोह बन्दों को इस त़रह़ तौबा व अ़मले सालेह़ से रोकता है और गुनाह व मा'सियत पर जरी करता है, उस के फ़रेब से होशियार रहो । 14 : और उस की इत़ाअ़त न करो और **अल्लाह** तआ़ला की त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहो । 15 : या'नी अपने मुत्तबिईन को कुफ़्र की त़रफ़ 16 : अब शैत़ान के मुत्तबिईन और उस के मुख़ालिफ़ीन का ह़ाल तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाया जाता है 17 : जो शैत़ान के गुरौह में से हैं 18 : और शैत़ान के फ़रेब में न आए और उस की राह पर न चले । 19 : हरगिज़ नहीं । बुरे काम को अच्छा समझने वाला राहयाब की त़रह़ क्या हो सकता है ! वोह उस बदकार से ब दरजहा बदतर है जो अपने ख़राब अ़मल को बुरा जानता हो और ह़क़ को ह़क़

تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۸﴾ وَ

तुम्हारी जान उन पर ह़सरतों में न जाए[20] **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो कुछ वोह करते हैं और

اللّٰهُ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ

अल्लाह है जिस ने भेजीं हवाएं कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शह्र की त़रफ़ रवां करते हैं[21]

فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿۹﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ

तो उस के सबब हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते हैं उस के मरे पीछे[22] यूंही ह़श्र में उठना है[23] जिसे इ़ज़्ज़त की

الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَ الْعَمَلُ الصَّالِحُ

चाह हो तो इ़ज़्ज़त तो सब **अल्लाह** के हाथ है[24] उसी की त़रफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम[25] और जो नेक काम है

يَرْفَعُهٗ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَ مَكْرُ

वोह उसे बुलन्द करता है[26] और वोह जो बुरे दाउं (फ़रेब) करते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[27] और उन्हीं

اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿۱۰﴾ وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

का मक्र बरबाद होगा[28] और **अल्लाह** ने तुम्हें बनाया[29] मिट्टी से फिर[30] पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया

और बात़िल को बात़िल समझता हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जहल वग़ैरा मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपने शिर्को कुफ़्र जैसे क़बीह़ अफ़्आल को शैत़ान के बहकाने और भला समझाने से अच्छा समझते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अस्ह़ाबे बिद्अ़त व हवा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन में रवाफ़िज़ व ख़वारिज वग़ैरा दाख़िल हैं जो अपनी बद मज़्हबियों को अच्छा जानते हैं और इन्हीं के ज़ुम्रे में दाख़िल हैं तमाम बद मज़्हब, ख़्वाह वहाबी हों या ग़ैर मुक़ल्लिद या मिरज़ाई या चक्ड़ाली। और कबीरा गुनाह वाले जो अपने गुनाहों को बुरा जानते हैं और ह़लाल नहीं समझते इस में दाख़िल नहीं। **20 :** कि अफ़्सोस वोह ईमान न लाए और ह़क़ को क़बूल करने से मह़रूम रहे। मुराद येह है कि आप उन के कुफ़्र व हलाकत का ग़म न फ़रमाएं। **21 :** जिस में सब्ज़ा और खेती नहीं और ख़ुश्क साली से वहां की ज़मीन बेजान हो गई है। **22 :** और उस को सर सब्ज़ो शादाब कर देते हैं इस से हमारी क़ुदरत ज़ाहिर है। **23 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला मुर्दे किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? ख़ल्क़ में इस की कोई निशानी हो तो इर्शाद फ़रमाइये। फ़रमाया कि क्या तेरा किसी ऐसे जंगल में गुज़र हुवा है जो ख़ुश्क साली से बेजान हो गया हो और वहां सब्ज़ा का नामो निशान न रहा हो फिर कभी उसी जंगल में गुज़र हुवा हो और उस को हरा भरा लहलहाता पाया हो ? उन सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : बेशक ऐसा देखा है। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : ऐसे ही **अल्लाह** मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और ख़ल्क़ में येह उस की निशानी है। **24 :** दुन्या व आख़िरत में वोही इ़ज़्ज़त का मालिक है जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे तो जो इ़ज़्ज़त का त़लब गार हो वोह **अल्लाह** तआ़ला से इ़ज़्ज़त त़लब करे क्यूं कि हर चीज़ उस के मालिक ही से त़लब की जाती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि रब तआ़ला हर रोज़ फ़रमाता है जिसे इ़ज़्ज़ते दारैन की ख़्वाहिश हो चाहिये कि वोह ह़ज़रते अ़ज़ीज़ جَلَّتْ عِزَّتُهٗ (या'नी **अल्लाह** तआ़ला) की इत़ाअ़त करे और ज़रीआ़ त़लबे इ़ज़्ज़त का ईमान और आ'माले सालिह़ा हैं। **25 :** या'नी उस के मह़ल्ले क़बूल व रिज़ा तक पहुंचता है। और पाकीज़ा कलाम से मुराद कलिमए तौह़ीद व तस्बीह़ व तह़मीद व तक्बीर वग़ैरा हैं जैसा कि ह़ाकिम व बैहक़ी ने रिवायत किया और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने कलिमए त़य्यिब की तफ़्सीर "ज़िक्र" से फ़रमाई और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने क़ुरआन और दुआ़ भी मुराद ली है। **26 :** नेक काम से मुराद वोह अ़मल व इ़बादत है जो इख़्लास से हो और मा'ना येह हैं कि कलिमए त़य्यिबा अ़मल को बुलन्द करता है क्यूं कि अ़मल बे तौह़ीद व ईमान मक़्बूल नहीं। या येह मा'ना हैं कि अ़मले सालेह़ को **अल्लाह** तआ़ला रिफ़्अ़ते क़बूल अ़त़ा फ़रमाता है। या येह मा'ना हैं कि अ़मले नेक अ़मल करने वाले का मर्तबा बुलन्द करते हैं तो जो इ़ज़्ज़त चाहे उस को लाज़िम है कि नेक अ़मल करे। **27 :** मुराद उन मक्र करने वालों से वोह क़ुरैश हैं जिन्हों ने "दारुन्नदवा" में जम्अ़ हो कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत क़ैद करने और क़त्ल करने और जला वत़न करने के मश्वरे किये थे जिस का तफ़्सीली बयान सूरए अन्फ़ाल में हो चुका है। **28 :** और वोह अपने दाउं व फ़रेब में काम्याब न होंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ

जोड़े जोड़े[31] और किसी मादा को पेट नहीं रहता और न वोह जनती है मगर उस के इल्म से और जिस बड़ी उ़म्र वाले को

مُّعَمَّرٍ وَّ لَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

उ़म्र दी जाए या जिस किसी की उ़म्र कम रखी जाए येह सब एक किताब में है[32] बेशक येह अल्लाह को

يَسِيْرٌ ⑪ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖۗ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَ

आसान है[33] और दोनों समुन्दर एक से नहीं[34] येह मीठा है ख़ूब मीठा पानी ख़ुश गवार और

هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

येह खारी है तल्ख़ और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त[35] और निकालते हो

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ

पहनने का एक गहना[36] और तू कश्तियों को उस में देखे कि पानी चीरती हैं[37] ताकि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो[38] और

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ⑫ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ

किसी त़रह़ ह़क़ मानो[39] रात लाता है दिन के ह़िस्से में[40] और दिन लाता है रात के ह़िस्से में[41]

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

और उस ने काम में लगाए सूरज और चांद हर एक एक मुक़र्रर मीआ़द चलता है[42] येह है अल्लाह तुम्हारा रब

لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ؕ ⑬

उसी की बादशाही है और उस के सिवा जिन्हें तुम पूजते हो[43] दानए ख़ुरमा के छिल्के तक के मालिक नहीं

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ

तुम उन्हें पुकारो तो वोह तुम्हारी पुकार न सुनें[44] और बिलफ़र्ज़ सुन भी लें तो तुम्हारी ह़ाजत रवा न कर सकें[45]

उन के शर से मह़फ़ूज़ रहे और उन्हों ने अपनी मक्कारियों की सज़ाएं पाईं कि बद्र में क़ैद भी हुए क़त्ल भी किये गए और मक्कए मुकर्रमा से निकाले भी गए। **29 :** या'नी तुम्हारी अस्ल ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को **30 :** उन की नस्ल को **31 :** मर्द व औ़रत **32 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ में। ह़ज़रते क़तादा से मरवी है कि मुअ़म्मर वोह है जिस की उ़म्र साठ साल को पहुंचे और कम उ़म्र वाला वोह जो इस से क़ब्ल मर जाए। **33 :** या'नी अ़मल व अजल का मक्तूब फ़रमाना। **34 :** बल्कि दोनों में फ़र्क़ है। **35 :** या'नी मछली **36 :** गौहर व मरजान। **37 :** दरिया में चलते हुए और एक ही हवा में आती भी हैं जाती भी हैं **38 :** तिजारतों में नफ़्अ़ ह़ासिल कर के। **39 :** और अल्लाह तआ़ला की ने'मतों की शुक्र गुज़ारी करो। **40 :** तो दिन बढ़ जाता है **41 :** तो रात बढ़ जाती है यहां तक कि बढ़ने वाले दिन या रात की मिक़्दार पन्दरह घन्टे तक पहुंचती है और घटने वाला नव घन्टे का रह जाता है। **42 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक कि जब क़ियामत आ जाएगी तो इन का चलना मौक़ूफ़ हो जाएगा और येह निज़ाम बाक़ी न रहेगा। **43 :** या'नी बुत **44 :** क्यूं कि जमादे बेजान हैं। **45 :** क्यूं कि अस्लन क़ुदरत व इख़्तियार नहीं रखते।

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ۝۱۴ يٰۤاَيُّهَا

और क़ियामत के दिन वोह तुम्हारे शिर्क से मुन्किर होंगे[46] और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की त़रह[47] ऐ

النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۱۵ اِنْ يَّشَاْ

लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोह़ताज[48] और अल्लाह ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा वोह चाहे

يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝۱۶ ۚ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝۱۷ وَلَا

तो तुम्हें ले जाए[49] और नई मख़्लूक़ ले आए[50] और येह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं और कोई

تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ

बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ न उठाएगी[51] और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को किसी को बुलाए तो उस के बोझ

مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

में से कोई कुछ न उठाएगा अगर्चे क़रीब रिश्तेदार हो[52] ऐ मह़बूब तुम्हारा डर सुनाना तो उन्हीं को काम देता है जो बे देखे अपने

بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى

रब से डरते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो सुथरा हुवा[53] तो अपने ही भले को सुथरा हुवा[54] और अल्लाह ही

اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝۱۸ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۝۱۹ ۙ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا

की त़रफ़ फिरना है और बराबर नहीं अन्धा और अंख्यारा[55] और न अंधेरियां[56] और

النُّوْرُ ۝۲۰ ۙ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۝۲۱ ۚ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا

उजाला[57] और न साया[58] और न तेज़ धूप[59] और बराबर नहीं ज़िन्दे और

46 : और बेज़ारी का इज़्हार करेंगे और कहेंगे तुम हमें न पूजते थे। 47 : या'नी दारैन के अह़्वाल और बुत परस्ती के मआल की जैसी ख़बर अल्लाह तआ़ला देता है और कोई नहीं दे सकता। 48 : या'नी उस के फ़ज़्ल व एह़सान के ह़ाजत मन्द हो और तमाम ख़ल्क़ उस की मोह़ताज है। ह़ज़रते ज़ुन्नून ने फ़रमाया कि ख़ल्क़ हर दम और हर लह़्ज़ा अल्लाह तआ़ला की मोह़ताज है और क्यूं न होगी उन की हस्ती और उन की बक़ा सब उस के करम से है। 49 : या'नी तुम्हें मा'दूम कर दे क्यूं कि वोह बे नियाज़ और ग़नी बिज़्ज़ात है। 50 : बजाए तुम्हारे जो मुत़ीअ़ और फ़रमां बरदार हो 51 : मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बार होगा जो उस ने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के इवज़ न पकड़ी जाएगी अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उन के गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए उन की तमाम गुमराहियों का बार उन गुमराहों पर भी होगा और उन गुमराह करने वालों पर भी जैसा कि कलामे करीम में इर्शाद हुवा ''وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ'' और दर ह़क़ीक़त येह उन की अपनी कमाई है दूसरे की नहीं। 52 : बाप या मां, बेटा या भाई कोई किसी का बोझ न उठाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मां बाप बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे ऐ हमारे बेटे हमारे कुछ गुनाह उठा ले। वोह कहेगा : मेरे इम्कान में नहीं, मेरा अपना बार क्या कम है। 53 : या'नी बदियों से बचा और नेक अ़मल किये 54 : उस नेकी का नफ़्अ़ वोही पाएगा। 55 : या'नी जाहिल और आ़लिम या काफ़िर और मोमिन 56 : या'नी कुफ़्र 57 : या'नी ईमान 58 : या'नी ह़क़ या जन्नत 59 : या'नी बात़िल या दोज़ख़।

الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِى

मुर्दे[60] बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे[61] और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों

الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ

में पड़े हैं[62] तुम तो येही डर सुनाने वाले हो[63] ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें ह़क़ के साथ भेजा ख़ुश ख़बरी देता[64] और

نَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ

डर सुनाता[65] और जो कोई गुरोह था सब में एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका[66] और अगर येह[67] तुम्हें झुटलाएं तो

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَ

इन से अगले भी झुटला चुके हैं[68] उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलीलें[69] और सह़ीफ़े और

بِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾

चमक्ती किताब[70] ले कर फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ा[71] तो कैसा हुवा मेरा इन्कार[72]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा[73] तो हम ने उस से फल निकाले रंग

اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ

बरंग[74] और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख़ रंग रंग के और कुछ काले

سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ

भुचंग (सियाह काले) और आदमियों और जानवरों और चारपायों के रंग यूंही त़रह़ त़रह़ के हैं[75]

60 : या'नी मोमिनीन और कुफ़्फ़ार या उ़लमा और जुह्हाल। 61 : या'नी जिस की हिदायत मन्ज़ूर हो उस को तौफ़ीक़े क़बूल अ़ता फ़रमाता है। 62 : या'नी कुफ़्फ़ार को। इस आयत में कुफ़्फ़ार को मुर्दों से तश्बीह दी गई कि जिस त़रह़ मुर्दे सुनी हुई बात से नफ़्अ़ नहीं उठा सकते और पन्द पज़ीर नहीं होते बद अन्जाम कुफ़्फ़ार का भी येही ह़ाल है कि वोह हिदायत व नसीह़त से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते। इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर इस्तिद्लाल करना सह़ीह़ नहीं है क्यूं कि आयत में क़ब्र वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं न कि मुर्दे और सुनने से मुराद वोह सुनना है जिस पर राहयाबी का नफ़्अ़ मुरत्तब हो। रहा मुर्दों का सुनना वोह अह़ादीसे कसीरा से साबित है, इस मस्अले का बयान बीसवें पारे के दूसरे रुकूअ़ में गुज़रा। 63 : तो अगर सुनने वाला आप के इन्ज़ार (डराने) पर कान रखे और बगोशे क़बूल सुने तो नफ़्अ़ पाए और अगर मुसिर्रीन मुन्किरीन में से हो और आप की नसीह़त से पन्द पज़ीर न हो (सबक़ न सीखे) तो आप का कुछ ह़रज नहीं वोही मह़रूम है। 64 : ईमानदारों को जन्नत की 65 : काफ़िरों को अ़ज़ाब का। 66 : ख़्वाह वोह नबी हो या आ़लिमे दीन जो नबी की त़रफ़ से ख़ल्क़े ख़ुदा को अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दिलाए। 67 : कुफ़्फ़ारे मक्का 68 : अपने रसूलों को। कुफ़्फ़ार का क़दीम (ज़माने) से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ येही बरताव रहा है। 69 : या'नी नुबुव्वत पर दलालत करने वाले मो'जिज़ात 70 : तौरैत व इन्जील व ज़बूर 71 : त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों से ब सबब उन की तक्ज़ीबों के 72 : मेरा अ़ज़ाब देना। 73 : बारिश नाज़िल की 74 : सब्ज़, सुर्ख़, ज़र्द, वग़ैरा त़रह़ त़रह़ के अनार, सेब, इन्जीर, अंगूर, खजूर वग़ैरा बे शुमार। 75 : जैसे फलों और पहाड़ों में, यहां अल्लाह तआ़ला ने अपनी आयतें और अपने निशानहाए क़ुदरत और आसारे सन्अ़त जिन से उस की ज़ात व सिफ़ात पर इस्तिद्लाल किया जाए ज़िक्र कीं, इस के बा'द फ़रमाया।

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾ اِنَّ

अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं[76] बेशक अल्लाह इ़ज़्ज़त वाला बख़्शने वाला बेशक

الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا

वोह जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा

وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ

और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं[77] जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं ताकि उन के सवाब उन्हें भरपूर दे और

يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۳۰﴾ وَالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ

अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है और वोह किताब जो हम ने तुम्हारी

مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ

त़रफ़ वह्य भेजी[78] वोही ह़क़ है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हुई बेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार

بَصِيْرٌ ﴿۳۱﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ

देखने वाला है[79] फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को[80] तो उन में कोई

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ

अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और उन में कोई मियाना चाल पर है और उन में कोई वोह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त

اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿۳۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ

ले गया[81] येही बड़ा फ़ज़्ल है बसने के बाग़ों में दाख़िल होंगे वोह[82] उन में

76 : और उस की सिफ़ात जानते और उस की अ़ज़मत को पहचानते हैं, जितना इ़ल्म ज़ियादा उतना ख़ौफ़ ज़ियादा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मुराद येह है कि मख़्लूक़ में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ उस को है जो अल्लाह तआला के जबरूत और उस की इ़ज़्ज़तो शान से बा ख़बर है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़सम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की, कि मैं अल्लाह तआला को सब से ज़ियादा जानने वाला हूं और सब से ज़ियादा उस का ख़ौफ़ रखने वाला हूं। 77 : या'नी सवाब के 78 : या'नी क़ुरआने मजीद 79 : और उन के ज़ाहिर व बात़िन का जानने वाला। 80 : या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उम्मत को येह किताब अ़ता फ़रमाई जिन्हें तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी और सय्यिदे रुसुल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ग़ुलामी व नियाज़ मन्दी की करामत व शराफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इस उम्मत के लोग मुख़्तलिफ़ मदारिज व मरातिब रखते हैं। 81 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि सब्क़त ले जाने वाला मोमिन मुख़्लिस है और "मुक़्तसिद" या'नी मियाना रवी करने वाला वोह जिस के अ़मल रिया से हों और ज़ालिम से मुराद यहां वोह है जो ने'मते इलाही का मुन्किर तो न हो लेकिन शुक्र बजा न लाए। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हमारा "साबिक़" तो साबिक़ ही है और "मुक़्तसिद" नाजी और "ज़ालिम" मग़फ़ूर। एक और ह़दीस में है हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नेकियों में सब्क़त ले जाने वाला जन्नत में बे हिसाब दाख़िल होगा और मुक़्तसिद से हिसाब में आसानी की जाएगी और ज़ालिम मक़ामे हिसाब में रोका जाएगा उस को परेशानी पेश आएगी फिर जन्नत में दाख़िल होगा। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि **साबिक़** अ़ह्दे रिसालत के वोह मुख़्लिसीन हैं जिन के लिये रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ لُؤْلُؤًا ۚ وَ لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَ قَالُوا

सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उन की पोशाक रेशमी है और कहेंगे

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۙ﴿٣٤﴾

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमारा ग़म दूर किया[83] बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है[84]

الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّ لَا يَمَسُّنَا

वोह जिस ने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें उस में न कोई तक्लीफ़ पहुंचे न हमें उस में कोई

فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ

तकान लाहिक़ हो और जिन्हों ने कुफ़्र किया उन के लिये जहन्नम की आग है न उन की क़ज़ा आए

فَيَمُوْتُوْا وَ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۚ﴿٣٦﴾

कि मर जाएं[85] और न उन पर उस का[86] अ़ज़ाब कुछ हलका किया जाए हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुक्रे को

وَ هُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا

और वोह उस में चिल्लाते होंगे[87] ऐ हमारे रब हमें निकाल[88] कि हम अच्छा काम करें उस के ख़िलाफ़ जो पहले

نَعْمَلُ ؕ اَوَ لَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ جَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ

करते थे[89] और क्या हम ने तुम्हें वोह उम्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला[90] तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था[91]

فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَ

तो अब चखो[92] कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं बेशक अल्लाह जानने वाला है आस्मानों और ज़मीन की

الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ

हर छुपी बात का बेशक वोह दिलों की बात जानता है वोही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में अगलों का

ने जन्नत की बिशारत दी और **मुक़्तसिद** वोह अस्हाब हैं जो आप के त़रीक़े पर आ़मिल रहे और **ज़ालिम** लि नफ़्सिही हम तुम जैसे लोग हैं। येह कमाल इन्किसार था हज़रते उम्मुल मुअमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہا का कि अपने आप को इस तीसरे त़ब्के़ में शुमार फ़रमाया बा वुजूद उस जलालते मन्ज़िलत व रिफ़्अ़ते दरजात के जो अल्लाह तआ़ला ने आप को अ़त़ा फ़रमाई थी और भी इस की तफ़्सीर में बहुत अक़्वाल हैं जो तफ़ासीर में मुफ़स्सलन मज़्कूर हैं। **82 :** तीनों गुरोह **83 :** इस ग़म से मुराद या दोज़ख़ का ग़म है या मौत का या गुनाहों का या त़ाअ़तों के ग़ैर मक़्बूल होने का या अह्वाले क़ियामत का, ग़रज़ उन्हें कोई ग़म न होगा और वोह इस पर अल्लाह की ह़म्द करेंगे। **84 :** कि गुनाहों को बख़्शता है और त़ाअ़तें क़बूल फ़रमाता है। **85 :** और मर कर अ़ज़ाब से छूट सकें **86 :** या'नी जहन्नम का **87 :** या'नी जहन्नम में चीख़ते और फ़रियाद करते होंगे कि **88 :** या'नी दोज़ख़ से निकाल और दुन्या में भेज **89 :** या'नी हम बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत व ना फ़रमानी के तेरी इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी करें। इस पर उन्हें जवाब दिया जाएगा **90 :** या'नी रसूले अकरम सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم **91 :** तुम ने उस रसूले मोह़तरम की दा'वत क़बूल न की और उन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी बजा न लाए। **92 :** अ़ज़ाब का मज़ा।

فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ

जा नशीन किया[93] तो जो कुफ़्र करे[94] उस का कुफ़्र उसी पर पड़े[95] और काफ़िरों को उन का कुफ़्र उन के

عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿۳۹﴾

रब के यहां नहीं बढ़ाएगा मगर बेज़ारी[96] और काफ़िरों को उन का कुफ़्र न बढ़ाएगा मगर नुक़्सान[97]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا

तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वोह शरीक[98] जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो मुझे दिखाओ

خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ

उन्हों ने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आस्मानों में कुछ उन का साझा है[99] या हम ने उन्हें कोई किताब दी है

عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۴۰﴾

कि वोह उस की रोशन दलीलों पर हैं[100] बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वा'दा नहीं देते मगर फ़रेब का[101]

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ۬ وَلَئِنْ زَالَتَاۤ اِنْ

बेशक अल्लाह रोके हुए है आस्मानों और ज़मीन को कि जुम्बिश न करे[102] और अगर वोह हट जाएं तो

اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾ وَاَقْسَمُوْا

उन्हें कौन रोके अल्लाह के सिवा बेशक वोह हिल्म वाला बख़्शने वाला है और उन्हों ने

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ

अल्लाह की क़सम खाई अपनी क़समों में हद की कोशिश से कि अगर उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वोह ज़रूर किसी न किसी

اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۙ﴿۴۲﴾

गुरौह से ज़ियादा राह पर होंगे[103] फिर जब उन के पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[104] तो उस ने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना[105]

93 : और उन की अम्लाक व मक्बूज़ात का मालिक व मुतसर्रिफ़ बनाया और उन के मनाफ़ेअ़ तुम्हारे लिये मुबाह किये ताकि तुम ईमान व ताअ़त इख़्तियार कर के शुक्र गुज़ारी करो। **94 :** और इन ने'मतों पर शुक्रे इलाही न बजा लाए **95 :** या'नी अपने कुफ़्र का वबाल उसी को बरदाश्त करना पड़ेगा **96 :** या'नी ग़ज़बे इलाही **97 :** आख़िरत में। **98 :** या'नी बुत **99 :** कि आस्मानों के बनाने में उन्हें कुछ दख़्ल हो, किस सबब से उन्हें मुस्तहिक़े इबादत क़रार देते हो **100 :** इन में से कोई भी बात नहीं। **101 :** कि उन में जो बहकाने वाले हैं वोह अपने मुत्तबिईन को धोका देते हैं और बुतों की त़रफ़ से उन्हें बातिल उम्मीदें दिलाते हैं। **102 :** वरना आस्मान व ज़मीन के दरमियान शिर्क जैसी मा'सियत हो तो आस्मान व ज़मीन कैसे क़ाइम रहें। **103 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले क़ुरैश ने यहूदो नसारा के अपने रसूलों को न मानने और उन को झुटलाने की निस्बत कहा था कि अल्लाह तआ़ला उन पर ला'नत करे और उन के पास अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से रसूल आए और उन्हों ने उन्हें झुटलाया और न माना ख़ुदा की क़सम अगर हमारे पास कोई रसूल आए तो हम उन से ज़ियादा राह पर होंगे और उस रसूल को मानने में उन के बेहतर गुरौह पर सब्क़त ले जाएंगे। **104 :** या'नी सय्यिदुल मुर्सलीन ख़ातमुन्नबिय्यीन ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद

اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا

अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खींचना और बुरा दाउं[106] और बुरा दाउं (फ़रेब) अपने चलने वाले ही

بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ

पर पड़ता है[107] तो काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर उसी के जो अगलों का दस्तूर हुवा[108] तो तुम हरगिज़ **अल्लाह** के दस्तूर को

اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ۬ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى

बदलता न पाओगे और हरगिज़ **अल्लाह** के क़ानून को टलता न पाओगे और क्या उन्हों ने ज़मीन में

الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते उन से अगलों का कैसा अन्जाम हुवा[109] और वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَیْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى

ज़ोर में सख़्त थे[110] और **अल्लाह** वोह नहीं जिस के क़ाबू से निकल सके कोई शै आस्मानों और

الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا

ज़मीन में बेशक वोह इल्मो क़ुदरत वाला है और अगर **अल्लाह** लोगों को उन के किये

كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ

पर पकड़ता[111] तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुक़र्रर मीआ़द[112] तक उन्हें ढील

مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾ ع

देता है फिर जब उन का वा'दा आएगा तो बेशक **अल्लाह** के सब बन्दे उस की निगाह में हैं[113]

ايَاتُهَا ٨٣ ۞ ٣٦ سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ ٤١ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٥

सूरए यासीन मक्किय्या है, इस में तिरासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रोनक़ अफ़रोज़ी व जल्वा आराई हुई **105 :** हक़ व हिदायत से और **106 :** बुरे दाउं से मुराद या तो शिर्क व कुफ़्र है या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मक्रो फ़रेब करना। **107 :** या'नी मक्कार पर। चुनान्चे फ़रेब कारी करने वाले बद्र में मारे गए। **108 :** कि उन्हों ने तक्ज़ीब की और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुए। **109 :** या'नी क्या उन्हों ने शाम और इराक़ और यमन के सफ़रों में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब करने वालों की हलाकत व बरबादी के अ़ज़ाब और तबाही के निशानात नहीं देखे कि उन से इब्रत हासिल करते। **110 :** या'नी वोह तबाह शुदा क़ौमें इन अहले मक्का से ज़ोरो क़ुव्वत में ज़ियादा थीं बा वुजूद इस के इतना भी तो न हो सका कि वोह अ़ज़ाब से भाग कर कहीं पनाह ले सकतीं। **111 :** या'नी उन के मआ़सी पर **112 :** या'नी रोज़े क़ियामत **113 :** उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देगा, जो अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हैं उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाएगा और जो लाइक़े करम हैं उन पर रहमो करम करेगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्‌रबान रह़्म वाला[1]

یٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَ الۡقُرۡاٰنِ الۡحَکِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّکَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ۙ﴿۳﴾ عَلٰی صِرَاطٍ

हि़क्मत वाले क़ुरआन की क़सम बेशक तुम[2] सीधी राह पर

مُّسۡتَقِیۡمٍ ؕ﴿۴﴾ تَنۡزِیۡلَ الۡعَزِیۡزِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۵﴾ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اُنۡذِرَ

भेजे गए हो[3] इ़ज़्ज़त वाले मेह्‌रबान का उतारा हुवा ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ

اٰبَآؤُہُمۡ فَہُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۶﴾ لَقَدۡ حَقَّ الۡقَوۡلُ عَلٰۤی اَکۡثَرِہِمۡ فَہُمۡ لَا

जिस के बाप दादा न डराए गए[4] तो वोह बे ख़बर हैं बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है[5] तो वोह

یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا فِیۡۤ اَعۡنَاقِہِمۡ اَغۡلٰلًا فَہِیَ اِلَی الۡاَذۡقَانِ فَہُمۡ

ईमान न लाएंगे[6] हम ने उन की गरदनों में त़ौक़ कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब ऊपर को

مُّقۡمَحُوۡنَ ﴿۸﴾ وَ جَعَلۡنَا مِنۡۢ بَیۡنِ اَیۡدِیۡہِمۡ سَدًّا وَّ مِنۡ خَلۡفِہِمۡ سَدًّا

मुंह उठाए रह गए[7] और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और उन के पीछे एक दीवार

1 : सूरए "यासीन" मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, तिरासी आयतें, सात सो उन्तीस कलिमे, तीन हज़ार हुरूफ़ हैं। तिरमिज़ी की ह़दीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिये क़ल्ब है और क़ुरआन का क़ल्ब "यासीन" है और जिस ने "यासीन" पढ़ी अल्लाह तआ़ला उस के लिये दस बार क़ुरआन पढ़ने का सवाब लिखता है। येह ह़दीस ग़रीब है और इस की अस्नाद में एक रावी मज्हूल है। अबू दावूद की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने अम्वात पर "यासीन" पढ़ो। इसी लिये क़रीबे मौत ह़ालते नज़्अ़ में मरने वालों के पास "यासीन" पढ़ी जाती है। 2 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم 3 : जो मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंचाने वाली है, येह राह तौह़ीदो हिदायत की राह है। तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام इसी राह पर रहे हैं। इस आयत में कुफ़्फ़ार का रद है जो ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहते थे "لَسْتَ مُرْسَلًا" तुम रसूल नहीं हो। इस के बा'द क़ुरआने करीम की निस्बत इर्शाद फ़रमाया 4 : या'नी उन के पास कोई नबी न पहुंचे और क़ौमे क़ुरैश का येही ह़ाल है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से पहले उन में कोई रसूल नहीं आया 5 : या'नी हुक्मे इलाही व क़ज़ाए अज़ली उन के अ़ज़ाब पर जारी हो चुकी है और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद "لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ" उन के ह़क़ में साबित हो चुका है और अ़ज़ाब का उन के लिये मुक़र्रर हो जाना इस सबब से है कि वोह कुफ़्र व इन्कार पर अपने इख़्तियार से मुसिर रहने वाले हैं। 6 : इस के बा'द उन के कुफ़्र में पुख़्ता होने की एक तम्सील इर्शाद फ़रमाई 7 : येह तम्सील है उन के कुफ़्र में ऐसे रासिख़ होने की कि आयात व नज़्र, पन्दो हिदायत किसी से वोह मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते जैसे कि वोह शख़्स जिन की गरदनों में ग़िल की क़िस्म का त़ौक़ पड़ा हो जो ठोड़ी तक पहुंचता है और इस की वज्ह से वोह सर नहीं झुका सकते येही ह़ाल उन का है कि किसी त़रह़ उन को ह़क़ की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं होता और उस के ह़ुज़ूर सर नहीं झुकाते। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि येह उन की ह़क़ीक़ते ह़ाल है जहन्नम में उन्हें इसी त़रह़ का अ़ज़ाब किया जाएगा जैसा की दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया "اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ" **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल और उस के दो मख़्ज़ूमी दोस्तों के ह़क़ में नाज़िल हुई। अबू जह्ल ने क़सम खाई कि अगर वोह सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पथ्थर से सर कुचल डालेगा। जब उस ने ह़ुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वोह इसी इरादए फ़ासिदा से एक भारी पथ्थर ले कर आया, जब उस पथ्थर को उठाया तो उस के हाथ गरदन में चिपके रह गए और पथ्थर हाथ को लिपट गया, येह ह़ाल देख कर अपने दोस्तों की त़रफ़ वापस हुवा और उन से वाक़िआ़ बयान किया तो उस के दोस्त वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा कि येह काम मैं करूंगा और मैं उन का सर कुचल कर ही आऊंगा। चुनान्चे वोह पथ्थर ले कर आया, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे, जब येह क़रीब पहुंचा तो अल्लाह तआ़ला ने उस की बीनाई सल्ब कर ली, ह़ुज़ूर की आवाज़ सुनता था आंखों से नहीं देख सकता था

فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۹﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ

और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता[8] और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न

تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ

डराओ वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो[9] जो नसीहत पर चले और रहमान से

الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ

बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इ़ज़्ज़त के सवाब की बिशारत दो[10] बेशक हम मुर्दों को जिलाएं (ज़िन्दा करें)

الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ؕ وَكُلَّ شَیْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْۤ اِمَامٍ

वक़्फ़ ग़ुफ़रान

गे और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा[11] और जो निशानियां पीछे छोड़ गए[12] और हर चीज़ हम ने गिन रखी है एक बताने

येह भी परेशान हो कर अपने यारों की त़रफ़ लौटा वोह भी नज़र न आए, उन्हों ने ही उसे पुकारा और उस से कहा : तू ने क्या किया ? कहने लगा कि मैं ने उन की आवाज़ तो सुनी मगर वोह मुझे नज़र ही नहीं आए। अब अबू जह्ल के दूसरे दोस्त ने दा'वा किया कि वोह इस काम को अन्जाम देगा और बड़े दा'वे के साथ वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ चला था कि उल्टे पाउं ऐसा बद ह़वास हो कर भागा कि औंधे मुंह गिर गया। उस के दोस्तों ने ह़ाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा ह़ाल बहुत सख़्त है मैं ने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के दरमियान ह़ाइल हो गया, लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ता तो वोह मुझे खा ही जाता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن وجمل) **8 :** येह भी तम्सील है कि जैसे किसी शख़्स के लिये दोनों त़रफ़ दीवारें हों और हर त़रफ़ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वोह किसी त़रह़ मन्ज़िले मक़्सूद तक नहीं पहुंच सकता येही ह़ाल उन कुफ़्फ़ार का है कि उन पर हर त़रफ़ से ईमान की राह बन्द है, सामने उन के ग़ुरूरे दुन्या (दुन्या के धोके) की दीवार है और उन के पीछे तक्ज़ीबे आख़िरत की और वोह जहालत के क़ैदख़ाने में मह़बूस हैं, आयात व दलाइल में नज़र करना उन्हें मुयस्सर नहीं। **9 :** या'नी आप के डर सुनाने और ख़ौफ़ दिलाने से वोही नफ़्अ़ उठाता है **10 :** या'नी जन्नत की। **11 :** या'नी दुन्या की ज़िन्दगानी में जो नेकी या बदी की ताकि उस पर जज़ा दी जाए। **12 :** या'नी और हम उन की वोह निशानियां वोह त़रीक़े भी लिखते हैं जो वोह अपने बा'द छोड़ गए ख़्वाह वोह त़रीक़े नेक हों या बद। जो नेक त़रीक़े उम्मती निकालते हैं उन को **बिद्अ़ते ह़सना** कहते हैं और इस त़रीक़े के निकालने वालों और अ़मल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है और जो बुरे त़रीक़े निकालते हैं उन को **बिद्अ़ते सय्यिआ** कहते हैं इस त़रीक़े के निकालने वाले और अ़मल करने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने इस्लाम में नेक (अच्छा) त़रीक़ा निकाला उस को त़रीक़ा निकालने का भी सवाब मिलेगा और उस पर अ़मल करने वालों का भी सवाब बिग़ैर इस के कि अ़मल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाए और जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा निकाला तो उस पर वोह त़रीक़ा निकालने का भी गुनाह और उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों के भी गुनाह बिग़ैर इस के कि उन अ़मल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाए। इस से मा'लूम हुवा कि सदहा उमूरे ख़ैर मिस्ले फ़ातिह़ा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवां व उ़र्स व तोशा व ख़त्म व मह़ाफ़िले ज़िक्रे मीलाद व शहादत जिन को बद मज़हब लोग बिद्अ़त कह कर मन्अ़ करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं येह सब दुरुस्त और बाइ़से अज्रो सवाब हैं और इन को बिद्अ़ते सय्यिआ बताना ग़लत़ व बात़िल है, येह त़ाआ़त और आ'माले सालिह़ा जो ज़िक्रो तिलावत और सदक़ा व ख़ैरात पर मुश्तमिल हैं बिद्अ़ते सय्यिआ नहीं, बिद्अ़ते सय्यिआ वोह बुरे त़रीक़े हैं जिन से दीन को नुक़्सान पहुंचता है और जो सुन्नत के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया कि जो क़ौम बिद्अ़त निकालती है उस से एक सुन्नत उठ जाती है तो बिद्अ़ते सय्यिआ वोही है जिस से सुन्नत उठती हो जैसे कि रिफ़्ज़, ख़ुरूज, वहाबिय्यत येह सब इन्तिहा दरजे की ख़राब सय्यिआ बिद्अ़तें हैं। रिफ़्ज़ व ख़ुरूज जो अस्ह़ाब व अहले बैते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत पर मब्नी हैं, इन से अस्ह़ाब व अहले बैत के साथ मह़ब्बत व नियाज़ मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिस के शरीअ़त में ताकीदी हुक्म हैं। वहाबिय्यत की अस्ल मक़्बूलाने ह़क़ ह़ज़राते अम्बिया व औलिया की जनाब में बे अदबी व गुस्ताख़ी और तमाम मुसल्मानों को मुश्रिक क़रार देना है, इस से बुज़ुर्गाने दीन की ह़ुरमत व इ़ज़्ज़त और अदबो तक्रीम और मुसल्मानों के साथ अख़ुव्वत व मह़ब्बत की सुन्नतें उठ जाती हैं जिन की बहुत शदीद ताकीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं। और इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वोह क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की त़रफ़ चलने में रखता है और इस मा'ना पर आयत का **शाने नुज़ूल** येह बयान किया गया है कि बनी सलमा मदीनए त़य्यिबा के कनारे पर रहते थे, उन्हों ने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के क़रीब आ बसें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम

مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾

वाली किताब में[13] और उन से मिसाल बयान करो उस शह्‌र वालों की[14] जब उन के पास फ़िरिस्तादे आए[15]

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ

जब हम ने उन की त़रफ़ दो भेजे[16] फिर उन्हों ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया[17] अब उन सब ने कहा[18] कि

اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ

बेशक हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रह़मान

الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ

ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारे क़दम लिखे जाते हैं तुम मकान तब्दील न करो या'नी जितनी दूर से आओगे उतने ही क़दम ज़ियादा पड़ेंगे और अज्रो सवाब ज़ियादा होगा। **13 :** या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़ में। **14 :** उस शह्‌र से मुराद अन्त़ाकिया है, येह एक बड़ा शह्‌र है, इस में चश्मे हैं, कई पहाड़ हैं, एक संगीन शह्‌र पनाह है, बारह मील के दौर में बसता है। **15 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए का मुख़्तसर बयान येह है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने दो ह़वारियों सादिक़ व सदूक़ को अन्त़ाकिया भेजा ताकि वहां के लोगों को जो बुत परस्त थे दीने ह़क़ की दा'वत दें, जब येह दोनों शह्‌र के क़रीब पहुंचे तो उन्हों ने एक बूढ़े शख़्स को देखा कि बकरियां चरा रहा है उस का नाम ह़बीब नज्जार था, उस ने उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन दोनों ने कहा कि हम ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के भेजे हुए हैं, तुम्हें दीने ह़क़ की दा'वत देने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़ कर ख़ुदा परस्ती इख़्तियार करो। ह़बीब नज्जार ने निशानी दरयाफ़्त की। उन्हों ने कहा कि निशानी येह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं, अन्धों को बीना करते हैं, बरस वाले का मरज़ दूर कर देते हैं। ह़बीब नज्जार का एक बेटा दो साल से बीमार था उन्हों ने उस पर हाथ फेरा और वोह तन्दुरुस्त हो गया, ह़बीब ईमान लाए और इस वाक़िए की ख़बर मश्हूर हो गई ता आंकि एक ख़ल्क़े कसीर ने उन के हाथों अपने अमराज़ से शिफ़ा पाई, येह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा : क्या हमारे मा'बूदों के सिवा और कोई मा'बूद भी है? उन दोनों ने कहा : हां वोही जिस ने तुझे और तेरे मा'बूदों को पैदा किया, फिर लोग उन के दरपै हुए और उन्हें मारा और येह दोनों क़ैद कर लिये गए। फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने शम्ऊ़न को भेजा वोह अजनबी बन कर शह्‌र में दाख़िल हुए और बादशाह के मुसाहिबीन व मुक़र्रबीन से रस्मो राह पैदा कर के बादशाह तक पहुंचे और उस पर अपना असर पैदा कर लिया, जब देखा कि बादशाह इन से ख़ूब मानूस हो गया है तो एक रोज़ बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो क़ैद किये गए हैं क्या उन की बात सुनी गई थी वोह क्या कहते थे? बादशाह ने कहा : नहीं जब उन्हों ने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे ग़ुस्सा आ गया। शम्ऊ़न ने कहा कि अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाए देखें उन के पास क्या है। चुनान्चे वोह दोनों बुलाए गए। शम्ऊ़न ने उन से दरयाफ़्त किया तुम्हें किस ने भेजा है? उन्हों ने कहा कि उस **अल्लाह** ने जिस ने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिस का कोई शरीक नहीं। शम्ऊ़न ने कहा कि उस की मुख़्तसर सिफ़त बयान करो। उन्हों ने कहा : वोह जो चाहता है करता है, जो चाहता है हुक्म देता है। शम्ऊ़न ने कहा : तुम्हारी निशानी क्या है? उन्हों ने कहा : जो बादशाह चाहे। तो बादशाह ने एक अन्धे लड़के को बुलाया, उन्हों ने दुआ़ की वोह फ़ौरन बीना हो गया। शम्ऊ़न ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब येह है कि तू अपने मा'बूदों से कह कि वोह भी ऐसा ही कर के दिखाएं ताकि तेरी और उन की इ़ज़्ज़त ज़ाहिर हो। बादशाह ने शम्ऊ़न से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है, हमारा मा'बूद न देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके, न बना सके फिर बादशाह ने उन दोनों ह़वारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मा'बूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की क़ुदरत हो तो हम उस पर ईमान ले आएं। उन्हों ने कहा कि हमारा मा'बूद हर शै पर क़ादिर है। बादशाह ने एक दिह्‌क़ान (दीहाती) के लड़के को मंगाया जिस को मरे हुए सात दिन हो गए थे और जिस्म ख़राब हो चुका था, बदबू फैल रही थी, उन की दुआ़ से **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और उठ खड़ा हुवा और कहने लगा कि मैं मुश्रिक मरा था, मुझ को जहन्नम की सात वादियों में दाख़िल किया गया, मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि जिस दीन पर तुम हो बहुत नुक़्सान देह है, ईमान लाओ और कहने लगा कि आस्मान के दरवाज़े खुले और एक ह़सीन जवान मुझे नज़र आया जो इन तीनों शख़्सों की सिफ़ारिश करता है। बादशाह ने कहा : कौन तीन? उस ने कहा : एक शम्ऊ़न और दो येह। बादशाह को तअ़ज्जुब हुवा, जब शम्ऊ़न ने देखा कि उस की बात बादशाह में असर कर गई तो उस ने बादशाह को नसीह़त की, वोह ईमान लाया और उस की क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाए और अ़ज़ाबे इलाही से हलाक किये गए। **16 :** या'नी दो ह़वारी। वह्‌ब ने कहा कि उन के नाम यूह़न्ना और बूलिस थे और का'ब का क़ौल है कि सादिक़ व सदूक़। **17 :** या'नी शम्ऊ़न से तक़्वियत और ताईद पहुंचाई। **18 :** या'नी तीनों फ़िरिस्तादों (क़ासिदों) ने।

اِلَيۡكُمۡ لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿١٧﴾ قَالُوۡۤا اِنَّا

हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[19] बोले हम

تَطَيَّرۡنَا بِكُمۡ ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّكُمۡ وَلَيَمَسَّنَّكُمۡ مِّنَّا عَذَابٌ

तुम्हें मन्हूस समझते हैं[20] बेशक तुम अगर बाज़ न आए[21] तो ज़रूर तुम्हें संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की

اَلِيۡمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوۡا طَآئِرُكُمۡ مَّعَكُمۡ ؕ اَئِنۡ ذُكِّرۡتُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ

मार पड़ेगी उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है[22] क्या इस पर बिदक्ते हो कि तुम समझाए गए[23] बल्कि तुम हद से

مُّسۡرِفُوۡنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنۡ اَقۡصَا الۡمَدِيۡنَةِ رَجُلٌ يَّسۡعٰى قَالَ يٰقَوۡمِ

बढ़ने वाले लोग हो[24] और शहर के परले कनारे से एक मर्द दौड़ता आया[25] बोला ऐ मेरी क़ौम

اتَّبِعُوا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوۡا مَنۡ لَّا يَسۡـَٔلُكُمۡ اَجۡرًا وَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿٢١﴾

भेजे हुओं की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नहीं मांगते और वोह राह पर हैं[26]

19 : अदिल्लए वाज़िहा के साथ और वोह अन्धों और बीमारों को अच्छा करना और मुर्दों को ज़िन्दा करना है। **20 :** जब से तुम आए हो बारिश ही नहीं हुई। **21 :** अपने दीन की तब्लीग़ से **22 :** या'नी तुम्हारा कुफ़्र **23 :** और तुम्हें इस्लाम की दा'वत दी गई **24 :** ज़लाल व तुग़यान में और येही बड़ी नुहूसत है। **25 :** या'नी हबीब नज्जार जो पहाड़ के ग़ार में मसरूफ़े इबादते इलाही था, जब उस ने सुना कि क़ौम ने उन फ़िरिस्तादों (क़ासिदों) की तक्ज़ीब की। **26 :** हबीब नज्जार की येह गुफ़्तगू सुन कर क़ौम ने कहा कि क्या तू इन के दीन पर है और तू इन के मा'बूद पर ईमान ले आया ? इस के जवाब में हबीब नज्जार ने कहा।

وَمَالِيَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِيۡ فَطَرَنِيۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٢٢﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنۡ

और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूं जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की त़रफ़ तुम्हें पलटना है[27] क्या अल्लाह के सिवा

دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ يُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغۡنِ عَنِّيۡ شَفَاعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّ

और ख़ुदा ठहराऊं[28] कि अगर रह़मान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और

لَا يُنۡقِذُوۡنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيۡۤ اِذًا لَّفِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيۡۤ اٰمَنۡتُ بِرَبِّكُمۡ

न वोह मुझे बचा सकें बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं[29] मुक़र्रर (यक़ीनन) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया

فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿٢٥﴾ قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِيۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا

तो मेरी सुनो[30] उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो[31] कहा किसी त़रह़ मेरी क़ौम जानती जैसी

غَفَرَ لِيۡ رَبِّيۡ وَجَعَلَنِيۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡ

मेरे रब ने मेरी मग़्फ़िरत की और मुझे इ़ज़्ज़त वालों में किया[32] और हम ने इस के बा'द उस की क़ौम पर

بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنۡزِلِيۡنَ ﴿٢٨﴾ اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً

आस्मान से कोई लश्कर न उतारा[33] और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था वोह तो बस एक

وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ خٰمِدُوۡنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ

ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए[34] और कहा गया कि हाए अफ़्सोस उन बन्दों पर[35] जब उन के पास कोई

رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنَ

रसूल आता है तो उस से ठठ्ठा ही करते हैं क्या उन्हों ने न देखा[36] हम ने उन से पहले कितनी संगतें

27 : या'नी इब्तिदाए हस्ती से जिस की हम पर ने'मतें हैं और आख़िर कार भी उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है उस मालिके ह़क़ीक़ी की इ़बादत न करना क्या मा'ना ! और उस की निस्बत ए'तिराज़ कैसा ! हर शख़्स अपने वुजूद पर नज़र कर के उस के ह़क़्क़े ने'मत व एह़सान को पहचान सकता है। 28 : या'नी क्या बुतों को मा'बूद बनाऊं 29 : जब ह़बीब नज्जार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीह़त आमेज़ कलाम किया तो वोह लोग उन पर यक्बारगी टूट पड़े और उन पर पथराव शुरूअ़ किया और पाउं से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला, क़ब्र उन की अन्त़ाकिया में है। जब क़ौम ने उन पर ह़म्ला शुरूअ़ किया तो उन्हों ने ह़ज़रते ई़सा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़िरिस्तादों से बहुत जल्दी कर के येह कहा : 30 : या'नी मेरे ईमान के शाहिद रहो ! जब वोह क़त्ल हो चुके तो ब त़रीक़े इक्राम 31 : जब वोह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की ने'मतें देखीं 32 : ह़बीब नज्जार ने येह तमन्ना की, कि उन की क़ौम को मा'लूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला ने ह़बीब की मग़्फ़िरत की और इक्राम फ़रमाया ताकि क़ौम को मुर्सलीन के दीन की त़रफ़ रग़बत हो। जब ह़बीब क़त्ल कर दिये गए तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुवा और उन की उ़क़ूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई, ह़ज़रते जिब्रील को हुक्म हुवा और उन की एक ही होलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया जाता है : 33 : उस क़ौम की हलाकत के लिये 34 : फ़ना हो गए जैसे आग बुझ जाती है। 35 : उन पर और उन की मिस्ल और सब पर जो रसूलों की तक्ज़ीब कर के हलाक हुए 36 : या'नी अहले मक्का ने जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं कि।

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾ وَ اِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا

हलाक फ़रमाई कि वोह अब उन की त़रफ़ पलटने वाले नहीं[37] और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर ह़ाज़िर

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖۚ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا

लाए जाएंगे[38] और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है[39] हम ने उसे ज़िन्दा किया[40] और फिर उस से अनाज

حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا

निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में[41] बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हम ने

فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا

उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं तो क्या

يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ

ह़क़ न मानेंगे[42] पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े बनाए[43] उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है[44]

وَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَ اٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖۚ نَسْلَخُ مِنْهُ

और ख़ुद उन से[45] और उन चीज़ों से जिन की उन्हें ख़बर नहीं[46] और उन के लिये एक निशानी[47] रात है हम उस पर से दिन

النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَ الشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ

खींच लेते हैं[48] जभी वोह अंधेरे में हैं और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये[49] येह

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَ الْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ

हुक्म है ज़बर दस्त इ़ल्म वाले का[50] और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं[51] यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी

37 : या'नी दुन्या की त़रफ़ लौटने वाले नहीं। क्या येह लोग उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **38 :** या'नी तमाम उम्मतें रोज़े क़ियामत हमारे हुज़ूर ह़िसाब के लिये मौक़िफ़ में ह़ाज़िर की जाएंगी। **39 :** जो इस पर दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला मुर्दा को ज़िन्दा फ़रमाएगा। **40 :** पानी बरसा कर **41 :** या'नी ज़मीन में **42 :** और अल्लाह तआ़ला की ने'मतों का शुक्र बजा न लाएंगे। **43 :** या'नी अस्नाफ़ व अक़्साम। **44 :** ग़ल्ले फल वग़ैरा **45 :** औलादे ज़ुकूर व उनास (मुज़क्कर और मुअन्नस औलाद) **46 :** बह़रो बर की अ़जीबो ग़रीब मख़्लूक़ात में से जिस की इन्सानों को ख़बर भी नहीं है। **47 :** हमारी क़ुदरते अ़ज़ीमा पर दलालत करने वाली। **48 :** तो बिल्कुल तारीक रह जाती है जिस त़रह़ काले भुजंगे (इन्तिहाई काले) ह़ब्शी का सफ़ेद लिबास उतार लिया जाए तो फिर वोह सियाह ही सियाह रह जाता है। इस से मा'लूम हुवा कि आस्मान व ज़मीन के दरमियान की फ़ज़ा अस्ल में तारीक है आफ़्ताब की रोशनी उस के लिये एक सफ़ेद लिबास की त़रह़ है, जब आफ़्ताब ग़ुरूब हो जाता है तो येह लिबास उतर जाता है और फ़ज़ा अपनी अस्ल ह़ालत में तारीक रह जाती है। **49 :** या'नी जहां तक उस की सैर की निहायत (ह़द) मुक़र्रर फ़रमाई गई है और वोह रोज़े क़ियामत है उस वक़्त तक वोह चलता ही रहेगा या येह मा'ना हैं कि वोह अपनी मन्ज़िलों में चलता है और जब सब से दूर वाले मग़रिब में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्यूं कि येही उस का मुस्तक़र है। **50 :** और येह निशानी है जो उस की क़ुदरते कामिला और ह़िक्मते बालिग़ा पर दलालत करती है। **51 :** चांद की अठ्ठाईस मन्ज़िलें हैं, हर शब एक मन्ज़िल में होता है और पूरी मन्ज़िल त़ै कर लेता है, न कम चले न ज़ियादा, तुलूअ़ की तारीख़ से अठ्ठाईसवीं तारीख़ तक तमाम मन्ज़िलें त़ै कर लेता है और अगर महीना तीस का हो तो दो शब और उन्तीस हो तो एक शब छुपता है और जब अपने आख़िर मनाज़िल में पहुंचता है तो बारीक

الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ

डाल (टहनी)[52] सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले[53] और न रात दिन पर

النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي

सब्क़त ले जाए[54] और हर एक एक घेरे में पेर रहा है और उन के लिये एक निशानी येह है कि उन्हें उन के बुज़ुर्गों की पीठ में हम

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ

ने भरी कश्ती में सुवार किया[55] और उन के लिये वैसी ही कश्तियां बना दीं जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो

نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا

उन्हें डुबो दें[56] तो न कोई उन की फ़रियाद को पहुंचने वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी त़रफ़ की रह़मत और एक वक़्त

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

तक बरत्ने देना[57] और जब उन से फ़रमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है[58] और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है[59] इस उम्मीद पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फेर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास आती है तो मुंह

مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ

ही फेर लेते हैं[60] और जब उन से फ़रमाया जाए **अल्लाह** के दिये में से कुछ उस की राह में ख़र्च करो तो काफ़िर

كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ

मुसल्मानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे **अल्लाह** चाहता तो खिला देता[61] तुम तो नहीं

और कमान की त़रह़ ख़मीदा और ज़र्द हो जाता है। **52 :** जो सूख कर पतली और ख़मीदा और ज़र्द हो गई हो। **53 :** या'नी शब में जो उस के ज़ुहूरे शौकत का वक़्त है उस के साथ जम्अ़ हो कर उस के नूर को मग़लूब करे, क्यूं कि सूरज और चांद में से हर एक के ज़ुहूरे शौकत के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है, सूरज के लिये दिन और चांद के लिये रात। **54 :** कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आ जाए। ऐसा भी नहीं बल्कि रात और दिन दोनों मुअ़य्यन हिसाब के साथ आते जाते हैं, कोई उन में से अपने वक़्त से क़ब्ल नहीं आता और नय्यरैन या'नी आफ़्ताब व महताब में से कोई दूसरे के ह़ुदूदे शौकत में दाख़िल नहीं होता, न आफ़्ताब रात में चमके न माहताब दिन में। **55 :** जो सामाने अस्बाब वग़ैरा से भरी हुई थी। मुराद इस से कश्तिये नूह़ है जिस में उन के पहले अज्दाद सुवार किये गए थे और येह उन की ज़ुर्रिय्यतें उन की पुश्त में थीं। **56 :** बा वुजूद कश्तियों के **57 :** जो उन की ज़िन्दगानी के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है। **58 :** या'नी अ़ज़ाबे दुन्या **59 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत **60 :** या'नी उन का दस्तूर और त़रीक़ए कार ही येह है कि वोह हर आयत व मौइ़ज़त से ए'राज़ व रूगर्दानी किया करते हैं। **61 :** **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन से मुसल्मानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वोह ह़िस्सा मिस्कीनों पर ख़र्च करो जो तुम ने ब ज़ो'मे ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला के लिये निकाला है। इस पर उन्हों ने कहा कि क्या हम उन को खिलाएं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला खिलाना चाहता तो खिला देता, मत़लब येह था कि ख़ुदा ही को मिस्कीनों का मोहताज रखना मन्ज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ होगा। येह बात उन्हों ने बख़ीली और कन्जूसी से बत़ौर तमस्ख़ुर के कही थी और निहायत बात़िल थी क्यूं कि दुन्या "दारुल इम्तिह़ान" (इम्तिह़ान की जगह) है। फ़क़ीरी और अमीरी दोनों आज़्माइशें हैं : फ़क़ीर की आज़्माइश सब्र से और ग़नी की

اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۷﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۸﴾

मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा[62] अगर तुम सच्चे हो[63]

مَا یَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ یَخِصِّمُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَا

राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[64] कि उन्हें आ लेगी जब वोह दुन्या के झगड़े में फंसे होंगे[65] तो न

یَسْتَطِیْعُوْنَ تَوْصِیَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤی اَهْلِهِمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ

वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं[66] और फूंका जाएगा सूर[67]

فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰی رَبِّهِمْ یَنْسِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ قَالُوْا یٰوَیْلَنَا مَنْۢ

जभी वोह क़ब्रों से[68] अपने रब की त़रफ़ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किस ने

بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ٜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۲﴾

हमें सोते से जगा दिया[69] येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया[70]

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِیْعٌ لَّدَیْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़[71] जभी वोह सब के सब हमारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हो जाएंगे[72]

فَالْیَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَیْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾

तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का

"इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह" (राहे ख़ुदा में ख़र्च करने) से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि मक्कए मुकर्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उन से कहा जाता था कि मिस्कीनों को सदक़ा दो तो कहते थे हरगिज़ नहीं येह कैसे हो सकता है कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला मोह़ताज करे हम खिलाएं। **62 :** बअ़्स व क़ियामत का **63 :** अपने दा'वे में। इन का येह ख़ित़ाब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब से था। **अल्लाह** तआ़ला इन के ह़क़ में फ़रमाता है : **64 :** या'नी सूर के पहले नफ़्ख़े की जो ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْهِ السَّلَام फूंकेंगे। **65 :** ख़रीदो फ़रोख़्त में और खाने पीने में और बाज़ारों और मजलिसों में, दुन्या के कामों में कि अचानक क़ियामत क़ाइम हो जाएगी। ह़दीस शरीफ़ में है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़रीदार और बाएअ़ के दरमियान कपड़ा फैला होगा न सौदा तमाम होने पाएगा न कपड़ा लिपट सकेगा कि क़ियामत क़ाइम हो जाएगी या'नी लोग अपने अपने कामों में मश्ग़ूल होंगे और वोह काम वैसे ही ना तमाम रह जाएंगे, न उन्हें ख़ुद पूरा कर सकेंगे न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वोह वापस न आ सकेंगे। चुनान्चे इर्शाद होता है : **66 :** वहीं मर जाएंगे और क़ियामत फ़ुरसत व मोहलत न देगी। **67 :** दूसरी मरतबा। येह नफ़्ख़ए सानिया है जो मुर्दों के उठाने के लिये होगा और उन दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान चालीस साल का फ़ासिला होगा। **68 :** ज़िन्दा हो कर **69 :** येह मक़ूला कुफ़्फ़ार का होगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह येह बात इस लिये कहेंगे कि **अल्लाह** तआ़ला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान उन से अ़ज़ाब उठा देगा और इतना ज़माना वोह सोते रहेंगे और नफ़्ख़ए सानिया के बा'द जब उठाए जाएंगे और अह्वाले क़ियामत देखेंगे तो इस त़रह़ चीख़ उठेंगे और येह भी कहा गया है कि जब कुफ़्फ़ार जहन्नम और उस के अ़ज़ाब देखेंगे तो उस के मुक़ाबले में अ़ज़ाबे क़ब्र उन्हें सहल मा'लूम होगा इस लिये वोह वैल (हाए हमारी ख़राबी) व अफ़्सोस पुकार उठेंगे और उस वक़्त कहेंगे : **70 :** और उस वक़्त का इक़्रार उन्हें कुछ नाफ़ेअ़ न होगा। **71 :** या'नी "नफ़्ख़ए अख़ीरा" एक होलनाक आवाज़ होगी। **72 :** ह़िसाब के लिये। फिर उन से कहा जाएगा।

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۚ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوٰجُهُمْ فِيْ

बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं[73] वोह और उन की बीबियां

ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فٰكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۚ ﴿٥٧﴾

सायों में हैं तख़्तों पर तक्या लगाए उन के लिये उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें

سَلٰمٌ ۟ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा[74] और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो[75]

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अ़ह्द न लिया था[76] कि शैत़ान को न पूजना[77] बेशक वोह तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّأَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرٰطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ

दुश्मन है और मेरी बन्दगी करना[78] येह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

وقف غفران

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ

से बहुत सी ख़ल्क़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अ़क़्ल न थी[79] येह है वोह जहन्नम जिस का तुम से

تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى

वा'दा था आज इस में जाओ बदला अपने कुफ़्र का आज हम उन के मूंहों पर मोहर

أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ أَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾

कर देंगे[80] और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे[81]

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَ

और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते[82] फिर लपक कर रस्ते की त़रफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता[83] और

73 : त़रह़ त़रह़ की ने'मतें और क़िस्म क़िस्म के सुरूर और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ज़ियाफ़त, जन्नती नहरों के कनारे बिहिश्ती अश्जार की दिल नवाज़ फ़ज़ाएं, त़रब अंगेज़ नग़मात, ह़सीनाने जन्नत का क़ुर्ब और क़िस्म क़िस्म की ने'मतों से इल्तिज़ाज़ (लज़्ज़त ह़ासिल करना) येह उन के शग़्ल होंगे। 74 : या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर सलाम फ़रमाएगा ख़्वाह ब वासित़ा या बे वासित़ा और येह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है, मलाएका अहले जन्नत के पास हर दरवाज़े से आ कर कहेंगे तुम पर तुम्हारे रह़मत वाले रब का सलाम। 75 : जिस वक़्त मोमिन जन्नत की त़रफ़ रवाना किये जाएंगे उस वक़्त कुफ़्फ़ार से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ मोमिनीन से अ़लाह़दा हो जाओ और एक क़ौल येह भी है कि येह हुक्म कुफ़्फ़ार को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने मक़ाम पर जाएं। 76 : अपने अम्बिया की मा'रिफ़त 77 : उस की फ़रमां बरदारी न करना। 78 : और किसी को इ़बादत में मेरा शरीक न करना। 79 : कि तुम उस की अ़दावत और गुमराह गरी को समझते और जब वोह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उन से कहा जाएगा : 80 : कि वोह बोल न सकें और येह मोहर करना उन के येह कहने के सबब होगा कि हम मुश्रिक न थे, न हम ने रसूलों को झुटलाया। 81 : उन के आ'ज़ा बोल उठेंगे और जो कुछ उन से सादिर हुवा है सब बयान कर देंगे। 82 : कि निशान भी बाक़ी

لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِیًّا وَّ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ ع

अगर हम चाहते तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते[84] कि न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते[85]

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِی الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ

और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश में उलटा फेरें[86] तो क्या वोह समझते नहीं[87] और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया[88] और

مَا یَنْۢبَغِیْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِیْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّیُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَیًّا

न वोह उन की शान के लाइक़ है वोह तो नहीं मगर नसीहत और रोशन क़ुरआन[89] कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो[90]

وَّ یَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ

और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए[91] और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के

اَیْدِیْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ

बनाए हुए चौपाए उन के लिये पैदा किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया[92] तो किसी पर सुवार होते हैं और

न रहता, इस तृरह का अन्धा कर देते। **83 :** लेकिन हम ने ऐसा न किया और अपने फ़ज़्लो करम से "ने'मते बसर" उन के पास बाक़ी रखी तो अब उन पर हक़ येह है कि वोह शुक्र गुज़ारी करें कुफ़्र न करें। **84 :** और उन्हें बन्दर या सुवर बना देते **85 :** और उन के जुर्म इस के मुस्तदई थे लेकिन हम ने अपनी रह़मत व ह़िक्मत के ह़स्बे इक़्तिज़ा अज़ाब में जल्दी न की और उन के लिये मोहलत रखी। **86 :** कि वोह बचपन के से ज़ो'फ़ व नातुवानी की तृरफ़ वापस होने लगे और दम बदम इस की ताक़तें कुव्वतें और जिस्म और अ़क़्ल घटने लगे। **87 :** कि जो अह़वाल के बदलने पर ऐसा क़ादिर हो कि बचपन के ज़ो'फ़ व नातुवानी और सिग़रे जिस्म व नादानी के बा'द शबाब की कुव्वतें व तुवानाई और जिस्मे क़वी व दानाई अ़ता फ़रमाता है और फिर किब्र सिन और आख़िर उम्र में इसी क़वी हैकल जवान को दुबला और ह़क़ीर कर देता है, अब न वोह जिस्म बाक़ी है न कुव्वतें, निशस्त बरख़ास्त में मजबूरियां दरपेश हैं, अ़क़्ल काम नहीं करती, बात याद नहीं रहती, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को पहचान नहीं सकता, जिस परवर्दगार ने येह तग़य्युर किया वोह क़ादिर है कि आंखें देने के बा'द उन्हें मिटा दे और अच्छी सूरतें अ़ता करने के बा'द उन को मस्ख़ कर दे और मौत देने के बा'द फिर ज़िन्दा कर दे। **88 :** मा'ना येह हैं कि हम ने आप को शे'रगोई का मलका न दिया या येह कि क़ुरआन ता'लीमे शे'र नहीं है और शे'र से कलामे काज़िब मुराद है ख़्वाह मौज़ूं हो या ग़ैर मौज़ूं। इस आयत में इशारा है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला की तृरफ़ से उ़लूमे अव्वलीन व आख़िरीन ता'लीम फ़रमाए गए जिन से कश्फ़े ह़क़ाइक़ होता है और आप की मा'लूमात वाक़ेई व नफ़्सुल अम्री हैं, किज़्बे शे'री नहीं जो ह़क़ीक़त में जहल है वोह आप की शान के लाइक़ नहीं और आप का दामने तक़द्दुस इस से पाक है। इस में शे'र ब मा'ना कलामे मौज़ूं के जानने और इस के सह़ीह़ व सक़ीम जय्यद व रदी को पहचानने की नफ़ी नहीं। इल्मे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم में ता'न करने वालों के लिये येह आयत किसी तृरह सनद नहीं हो सकती **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को उ़लूमे काएनात अ़ता फ़रमाए। इस के इन्कार में इस आयत को पेश करना मह़ज़ ग़लत़ है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने कहा था कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) शाइर हैं और जो वोह फ़रमाते हैं या'नी क़ुरआने पाक वोह शे'र है। इस से उन की मुराद येह थी कि (مَعَاذَ اللّٰہ) येह कलाम काज़िब है जैसा कि क़ुरआने करीम में उन का मक़ूला नक़्ल फ़रमाया गया है بَلِ افْتَرٰهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ। इसी का इस आयत में रद फ़रमाया गया कि हम ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ऐसी बात़िल गोई का मलका ही नहीं दिया और येह किताब अश्आ़र या'नी अकाज़ीब पर मुश्तमिल नहीं। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ज़बान से ऐसे बदज़ौक़ और नज़्मे अ़रूज़ी से ऐसे ना वाक़िफ़ न थे कि नस्र को नज़्म कह देते और कलामे पाक को शे'रे अ़रूज़ी बता बैठते और कलाम का मह़ज़ वज़्ने अ़रूज़ी पर होना ऐसा भी न था कि इस पर ए'तिराज़ किया जा सके। इस से साबित हो गया कि उन बे दीनों की मुराद शे'र से कलामे काज़िब थी। (مدارک وجمل وروح البیان) और ह़ज़रत शैख़े अक्बर قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इस आयत के मा'ना में फ़रमाया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से मुअ़म्मे और इज्माल के साथ ख़ित़ाब नहीं फ़रमाया जिस में मुराद के मख़्फ़ी रहने का एह़तिमाल हो बल्कि साफ़ सरीह़ कलाम फ़रमाया है जिस से तमाम ह़िजाब उठ जाएं और उ़लूम रोशन हो जाएं, चूंकि शे'र लुग़्ज़ व तोरिया और रम्ज़ व इज्माल का मह़ल होता है इस लिये शे'र की नफ़ी फ़रमा कर इस मा'ना को बयान फ़रमा दिया। **89 :** साफ़ सरीह़ ह़क़ व हिदायत। कहां वोह पाक आस्मानी किताब तमाम उ़लूम की जामेअ़ और कहां शे'र जैसा कलामे काज़िब چہ نسبت خاک را با عالم پاک (घटिया को आ'ला से क्या निस्बत ?) (الکبریت الاحمر للشیخ الاکبر) **90 :** दिल ज़िन्दा रखता हो कलाम व ख़ित़ाब को समझे और येह शान मोमिन की है। **91 :** या'नी हुज्जते अ़ज़ाब क़ाइम हो जाए। **92 :** या'नी मुसख़्ख़र व ज़ेरे हुक्म कर दिया।

مِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَ

किसी को खाते हैं और उन के लिये उन में कई त़रह़ के नफ़्अ़[93] और पीने की चीज़ें हैं[94] तो क्या शुक्र न करेंगे[95] और

اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ

उन्हों ने अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये[96] कि शायद उन की मदद हो[97] वोह उन की मदद नहीं कर सकते[98]

وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

और वोह उन के लश्कर सब गिरिफ़्तार ह़ाज़िर आएंगे[99] तो तुम उन की बात का ग़म न करो[100] बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

और ज़ाहिर करते हैं[101] और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह़

مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَ

झगड़ालू है[102] और हमारे लिये कहावत कहता है[103] और अपनी पैदाइश भूल गया[104] बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे

هِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ

जब वोह बिल्कुल गल गईं तुम फ़रमाओ उन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश

عَلِيْمُ ﴿٧٩﴾ۙ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ

का इ़ल्म है[105] जिस ने तुम्हारे लिये हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से

93 : और फ़ाएदे हैं कि उन की खालों बालों और ऊन वग़ैरा काम में लाते हैं। 94 : दूध और दूध से बनने वाली चीज़ें दही मठ्ठा वग़ैरा। 95 : अल्लाह तआ़ला की इन ने'मतों का। 96 : या'नी बुतों को पूजने लगे 97 : और मुसीबत के वक़्त काम आएं और अ़ज़ाब से बचाएं और ऐसा मुम्किन नहीं। 98 : क्यूं कि जमाद बेजान बे क़ुदरत बे शुऊर हैं। 99 : या'नी काफ़िरों के साथ उन के बुत भी गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर किये जाएंगे और सब जहन्नम में दाख़िल होंगे बुत भी और उन के पुजारी भी। 100 : येह ख़ित़ाब है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को। अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाता है कि कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से और उन की ईज़ाओं और जफ़ाकारियों से आप ग़मगीन न हों। 101 : हम उन्हें उन के किरदार की जज़ा देंगे। 102 **शाने नुज़ूल** : येह आयत आ़स बिन वाइल या अबू जहल और बक़ौले मश्हूर उबय बिन ख़लफ़ जुमह़ी के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बअ़्स में या'नी मरने के बा'द उठने के इन्कार में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से बह़्स व तक्रार करने आया था, उस के हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उस को तोड़ता जाता था और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहता जाता था कि क्या आप का ख़याल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बा'द भी अल्लाह तआ़ला ज़िन्दा करेगा ? ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : हां और तुझे भी मरने के बा'द उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस के जहल का इज़्हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बा'द अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से ज़िन्दगी क़बूल करना अपनी नादानी से ना मुम्किन समझता है, कितना अह़मक़ है, अपने आप को नहीं देखता कि इब्तिदा में एक गन्दा नुत़्फ़ा था गली हुई हड्डी से भी ह़क़ीर तर अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला ने उस में जान डाली, इन्सान बनाया तो ऐसा मग़रूर व मुतकब्बिर इन्सान हुवा कि उस की क़ुदरत ही का मुन्किर हो कर झगड़ने आ गया, इतना नहीं देखता कि जो क़ादिरे बरह़क़ पानी की बूंद को क़वी और तुवाना इन्सान बना देता है उस की क़ुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या बई़द है और इस को ना मुम्किन समझना कितनी खुली हुई जहालत है। 103 : या'नी गली हुई हड्डी को हाथ से मल कर मसल बनाता है कि येह तो ऐसी बिखर गई कैसे ज़िन्दा होगी। 104 : कि क़त़्रए मनी से पैदा किया गया है। 105 : पहली का भी और मौत के बा'द वाली का भी।

تُوْقِدُوْنَ ﴿۸۰﴾ اَوَلَیْسَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤی

सुलगाते हो[106] और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन जैसे

اَنْ یَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰی ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِیْمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ

और नहीं बना सकता[107] क्यूं नहीं[108] और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

اَرَادَ شَیْـًٔا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۸۲﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ

किसी चीज़ को चाहे[109] तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[110] तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع

हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे[111]

وقف غفران

ع ۵

اٰیاتها ۱۸۲ | (۳۷) سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ مَكِّیَّةٌ (۵۶) | ركوعاتها ۵

सूरए صٰفّٰت मक्किय्या है, इस में एक सो बियासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿۲﴾ فَالتّٰلِیٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ

क़सम उन की कि बा क़ाइदा सफ़ बांधें[2] फिर उन की कि झिड़क कर चलाएं[3] फिर उन जमाअ़तों की कि क़ुरआन पढ़ें बेशक तुम्हारा मा'बूद

لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾

ज़रूर एक है मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है और मालिक मशरिक़ों का[4]

106 : अ़रब के दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं, एक का नाम मर्ख़ है दूसरे का अ़फ़ार। उन की ख़ासिय्यत येह है कि जब उन की सब्ज़ शाख़ें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उन से आग निकलती है, बा वुजूदे कि वोह इतनी तर होती हैं कि उन से पानी टपक्ता होता है, इस में क़ुदरत की कैसी अ़जीबो ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद, हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए, जिस क़ादिरे मुत़्लक़ की येह हिक्मत है वोह अगर एक बदन पर मौत के बा'द ज़िन्दगी वारिद करे तो उस की क़ुदरत से क्या अ़जीब और इस को ना मुम्किन कहना आसारे क़ुदरत देख कर जाहिलाना व मुआ़निदाना इन्कार करना है। **107 :** या उन्हीं को बा'दे मौत ज़िन्दा नहीं कर सकता ? **108 :** बेशक वोह इस पर क़ादिर है। **109 :** कि पैदा करे **110 :** या'नी मख़्लूक़ात का वुजूद उस के हुक्म के ताबेअ़ है। **111 :** आख़िरत में। **1 :** सूरए وَالصّٰٓفّٰت मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, एक सो बियासी आयतें और आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सो छब्बीस हर्फ़ हैं। **2 :** इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गुरौहों की या तो मुराद इस से मलाएका के गुरौह हैं जो नमाज़ियों की त़रह सफ़ बस्ता हो कर उस के हुक्म के मुन्तज़िर रहते हैं या उ़लमाए दीन के गुरौह जो तहज्जुद और तमाम नमाज़ों में सफ़ें बांध कर मसरूफ़े इ़बादत रहते हैं या ग़ाज़ियों के गुरौह जो राहे ख़ुदा में सफ़ें बांध कर दुश्मनाने ह़क़ के मुक़ाबिल होते हैं। (مدارک) **3 :** पहली तक़्दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाएका हैं जो अब्र पर मुक़र्रर हैं और उस को हुक्म दे कर चलाते हैं और दूसरी तक़्दीर पर वोह उ़लमा जो वा'ज़ व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं, तीसरी सूरत में वोह ग़ाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। **4 :** या'नी आस्मान और ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात और

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ۙ﴿٦﴾ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

बेशक हम ने नीचे के आस्मान[5] को तारों के सिंगार से आरास्ता किया और निगाह रखने को हर शैतान

مَّارِدٍ ۚ﴿٧﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ﴿٨﴾

सरकश से[6] आ़लमे बाला की त़रफ़ कान नहीं लगा सकते[7] और उन पर हर त़रफ़ से मार फेंक होती है[8]

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿٩﴾ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ

उन्हें भगाने को और उन के लिये[9] हमेशा का अ़ज़ाब मगर जो एकआध बार उचक ले चला[10] तो रोशन अंगारा

ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ

उस के पीछे लगा[11] तो उन से पूछो[12] क्या उन की पैदाइश ज़ियादा मज़बूत़ है या हमारी और मख़्लूक़ आस्मानों और फ़िरिश्तों वग़ैरा की[13] बेशक हम ने उन को

طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿١١﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۪﴿١٢﴾ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۪﴿١٣﴾

चिपक्ती मिट्टी से बनाया[14] बल्कि तुम्हें अचम्बा आया[15] और वोह हंसी करते हैं[16] और समझाए नहीं समझते

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۪﴿١٤﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ﴿١٥﴾

और जब कोई निशानी देखते हैं[17] ठठ्ठा करते हैं और कहते हैं येह तो नहीं मगर खुला जादू

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿١٦﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا

क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे क्या हम ज़रूर उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले

الْاَوَّلُوْنَ ؕ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ ۚ﴿١٨﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ

बाप दादा भी[18] तुम फ़रमाओ हां यूं कि ज़लील हो के तो वोह[19] तो एक ही झिड़क है[20]

तमाम हुदूद व जिहात सब का मालिक वोही है तो कोई दूसरा किस त़रह मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत हो सकता है, लिहाज़ा वोह शरीक से मुनज़्ज़ा है। **5 :** जो ज़मीन के ब निस्बत और आस्मानों से क़रीब तर है। **6 :** या'नी हम ने आस्मान को हर एक ना फ़रमान शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखा कि जब शयात़ीन आस्मान पर जाने का इरादा करें तो फ़िरिश्ते शिहाब मार कर उन को दफ़्अ़ कर दें। लिहाज़ा शयात़ीन आस्मान पर नहीं जा सकते और **7 :** और आस्मान के फ़िरिश्तों की गुफ़्तगू नहीं सुन सकते। **8 :** अंगारों की। जब वोह इस निय्यत से आस्मान की त़रफ़ जाएं। **9 :** आख़िरत में **10 :** या'नी अगर कोई शैत़ान मलाएका का कोई कलिमा कभी ले भागा **11 :** कि उसे जलाए और ईज़ा पहुंचाए। **12 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से **13 :** तो जिस क़ादिरे बरह़क़ को आस्मान व ज़मीन जैसी अ़ज़ीम मख़्लूक़ का पैदा कर देना कुछ भी मुश्किल और दुश्वार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उस पर क्या मुश्किल हो सकता है। **14 :** येह उन के ज़ो'फ़ की एक और शहादत है कि उन की पैदाइश का अस्ल माद्दा मिट्टी है जो कोई शिद्दत व क़ुव्वत नहीं रखती और इस में उन पर एक और बुरहान क़ाइम फ़रमाई गई है कि चिपक्ती मिट्टी उन का माद्दए पैदाइश है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और ग़ायत येह है कि मिट्टी हो जाने के बा'द उस मिट्टी से फिर दोबारा पैदाइश को वोह क्यूं ना मुम्किन जानते हैं ! माद्दा मौजूद और सानेअ़ मौजूद फिर दोबारा पैदाइश कैसे मुह़ाल हो सकती है ! **15 :** उन की तक्ज़ीब करने से कि ऐसी वाज़ेह़ुद्दलालह आयात व बय्यिनात के बा वुजूद वोह किस त़रह़ तक्ज़ीब करते हैं। **16 :** आप से और आप के तअ़ज्जुब से या मरने के बा'द उठने से। **17 :** मिस्ल शक़्क़ुल क़मर वग़ैरा के **18 :** जो हम से ज़माने में मुक़द्दम हैं। कुफ़्फ़ार के नज़्दीक उन के बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना ख़ुद उन के ज़िन्दा किये जाने से ज़ियादा बई़द था इस लिये उन्हों ने येह कहा। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है : **19 :** या'नी बअ़्स **20 :** एक ही होलनाक आवाज़ है नफ़्ख़ए सानिया की

فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿۲۰﴾ هٰذَا يَوْمُ

जभी वोह[21] देखने लगेंगे और कहेंगे हाए हमारी ख़राबी उन से कहा जाएगा येह इन्साफ़ का दिन है[22] येह है वोह

الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۱﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ

फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे[23] ज़ालिमों और उन के जोड़ों को[24]

وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿۲۲﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿۲۳﴾

और जो कुछ वोह पूजते थे अल्लाह के सिवा उन सब को हांको राहे दोज़ख़ की तरफ़

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿۲۴﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ

और उन्हें ठहराओ[25] उन से पूछना है[26] तुम्हें क्या हुवा एक दूसरे की मदद क्यूं नहीं करते[27] बल्कि वोह आज

مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّكُمْ

गरदन डाले हैं[28] और उन में एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया आपस में पूछते हुए बोले[29] तुम

كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿۲۸﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَمَا

हमारे दहनी तरफ़ से बहकाने आते थे[30] जवाब देंगे तुम ख़ुद ही ईमान न रखते थे[31] और

كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था[32] बल्कि तुम सरकश लोग थे तो साबित हो गई हम पर

قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآىِٕقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿۳۲﴾ فَاِنَّهُمْ

हमारे रब की बात[33] हमें ज़रूर चखना है[34] तो हम ने तुम्हें गुमराह किया कि हम ख़ुद गुमराह थे तो

21 : ज़िन्दा हो कर अपने अफ़्आ़ल और पेश आने वाले अह़वाल 22 : या'नी फ़िरिश्ते कहेंगे कि येह इन्साफ़ का दिन है येह हिसाब व जज़ा का दिन है 23 : दुन्या में और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा : 24 : ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं और उन के जोड़ों से मुराद उन के शयात़ीन जो दुन्या में उन के जलीस व क़रीन रहते थे, हर एक काफ़िर अपने शैत़ान के साथ एक ही ज़न्जीर में जकड़ दिया जाएगा और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अश्बाह व अम्साल हैं या'नी हर काफ़िर अपने ही क़िस्म के कुफ़्फ़ार के साथ हांका जाएगा, बुत परस्त बुत परस्तों के साथ और आतश परस्त आतश परस्तों के साथ, وَعَلٰی هٰذَا الْقِیَاس । 25 : सिरात़ के पास 26 : ह़दीस शरीफ़ में है कि रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं **एक** उस की उ़म्र कि किस काम में गुज़री । **दूसरे** उस का इ़ल्म कि उस पर क्या अ़मल किया । **तीसरे** उस का माल कि कहां से कमाया कहां ख़र्च किया । **चौथे** उस का जिस्म कि इस को किस काम में लाया । 27 : येह उन से जहन्नम के ख़ाज़िन ब त़रीक़े तौबीख़ कहेंगे कि दुन्या में तो एक दूसरे की इमदाद पर बहुत ग़र्रा रखते थे, आज देखो कैसे आ़जिज़ हो, तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता । 28 : आ़जिज़ व ज़लील हो कर । 29 : अपने सरदारों से जो दुन्या में बहकाते थे । 30 : या'नी बज़ोरे कुव्वत हमें गुमराही पर आमादा करते थे । इस पर कुफ़्फ़ार के सरदार कहेंगे और 31 : पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से ब इख़्तियारे ख़ुद ए'राज़ कर चुके थे । 32 : कि हम तुम्हें अपनी इत्तिबाअ़ पर मजबूर करते 33 : जो उस ने फ़रमाई कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरूंगा । लिहाज़ा 34 : उस का अ़ज़ाब । गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी ।

يَوْمَىِٕذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۴﴾

उस दिन[35] वोह सब के सब अज़ाब में शरीक हैं[36] मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं

اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ

बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) थे[37] और कहते थे

اَىِٕنَّا لَتَارِكُوْۤا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿۳۶﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَ صَدَّقَ

क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाना शाइ़र के कहने से[38] बल्कि वोह तो ह़क़ लाए हैं और उन्हों ने रसूलों की

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّكُمْ لَذَآىِٕقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَ مَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

तस्दीक़ फ़रमाई[39] बेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है तो तुम्हें बदला न मिलेगा मगर

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۴۰﴾ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ رِزْقٌ

अपने किये का[40] मगर जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं[41] उन के लिये वोह रोज़ी है

مَّعْلُوْمٌ ﴿۴۱﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَ هُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۴۲﴾ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۴۳﴾ عَلٰى سُرُرٍ

जो हमारे इ़ल्म में है मेवे[42] और उन की इ़ज़्ज़त होगी चैन के बाग़ों में तख़्तों पर

مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿۴۴﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿۴۵﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ

होंगे आमने सामने[43] उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का[44] सफ़ेद रंग[45] पीने वालों

لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿۴۶﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ عِنْدَهُمْ

के लिये लज़्ज़त[46] न उस में ख़ुमार है[47] और न उस से उन का सर फिरे[48] और उन के पास हैं जो

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿۴۸﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۴۹﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى

शोहरों के सिवा दूसरी त़रफ़ आंख उठा कर न देखेंगी[49] बड़ी आंखों वालियां गोया वोह अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए[50] तो उन में[51] एक ने दूसरे की

35 : या'नी रोज़े क़ियामत 36 : गुमराह भी और उन के गुमराह करने वाले सरदार भी क्यूं कि येह सब दुन्या में गुमराही में शरीक थे। 37 : और तौह़ीद क़बूल न करते थे, शिर्क से बाज़ न आते थे 38 : या'नी सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रमाने से। 39 : दीन व तौह़ीद व नफ़िये शिर्क में। 40 : उस शिर्क और तक्ज़ीब का जो दुन्या में कर आए हो। 41 : ईमान और इख़्लास वाले 42 : और नफ़ीस व लज़ीज़ ने'मतें, ख़ुश ज़ाएक़ा, ख़ुश्बूदार, ख़ुश मन्ज़र। 43 : एक दूसरे से मानूस और मसरूर। 44 : जिस की पाकीज़ा नहरें निगाहों के सामने जारी होंगी। 45 : दूध से भी ज़ियादा सफ़ेद 46 : ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जो बदबूदार और बद ज़ाएक़ा होती है और पीने वाला इस को पीते वक़्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है। 47 : जिस से अ़क़्ल में ख़लल आए 48 : ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जिस में बहुत से फ़सादात और ऐ़ब हैं, इस से पेट में भी दर्द होता है सर में भी, पेशाब में भी तक्लीफ़ हो जाती है, त़बीअ़त मालिश करती है, क़ै आती है, सर चकराता है, अ़क़्ल ठिकाने नहीं रहती। 49 : कि उस के नज़्दीक उस का शोहर ही साह़िबे ह़ुस्न और प्यारा है। 50 : गर्दो ग़ुबार से पाक साफ़ दिलकश रंग। 51 : या'नी अहले जन्नत में से।

بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝٥٠ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ۝٥١ يَّقُوْلُ

तरफ़ मुंह किया पूछते हुए[52] उन में से कहने वाला बोला मेरा एक हम नशीन था[53] मुझ से कहा करता

اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ۝٥٢ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا

क्या तुम इसे सच मानते हो[54] क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें

لَمَدِيْنُوْنَ ۝٥٣ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ۝٥٤ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ

जज़ा सज़ा दी जाएगी[55] कहा क्या तुम झांक कर देखोगे[56] फिर झांका तो उसे बीच भड़क्ती

الْجَحِيْمِ ۝٥٥ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ۝٥٦ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ

आग में देखा[57] कहा ख़ुदा की क़सम क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर दे[58] और मेरा रब फ़ज़्ल न करे[59]

لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٥٧ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ۝٥٨ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى

तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता[60] तो क्या हमें मरना नहीं मगर हमारी पहली मौत[61]

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝٥٩ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٦٠ لِمِثْلِ هٰذَا

और हम पर अज़ाब न होगा[62] बेशक येही बड़ी काम्याबी है ऐसी ही बात के लिये

فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ۝٦١ اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝٦٢ اِنَّا

कामियों को काम करना चाहिये तो येह मेहमानी भली[63] या थोहड़ का पेड़[64] बेशक हम ने

جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝٦٣ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْۤ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝٦٤

उसे ज़ालिमों की जांच किया है[65] बेशक वोह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है[66]

52 : कि दुन्या में क्या हालात व वाक़िआत पेश आए ? 53 : दुन्या में । जो मरने के बा'द उठने का मुन्किर था और इस की निस्बत तन्ज़ के तरीक़े पर 54 : या'नी मरने के बा'द उठने को 55 : और हम से हिसाब लिया जाएगा । येह बयान कर के उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से 56 : कि मेरे उस हम नशीन का जहन्नम में क्या हाल है ? 57 : कि अज़ाब के अन्दर गिरिफ़्तार है तो उस जन्नती ने उस से 58 : राहे रास्त से बहका कर 59 : और अपने रहमत व करम से मुझे तेरे इग़्वा से महफ़ूज़ न रखता और इस्लाम पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़ न देता 60 : तेरे साथ जहन्नम में । और जब मौत ज़ब्ह कर दी जाएगी तो अहले जन्नत फ़िरिश्तों से कहेंगे : 61 : वोही जो दुन्या में हो चुकी 62 : फ़िरिश्ते कहेंगे : नहीं । और अहले जन्नत का येह दरयाफ़्त करना अल्लाह तआला की रहमत के साथ तलज़्ज़ुज़ और दाइमी हयात की ने'मत और अज़ाब से मामून होने के एहसान पर उस की ने'मत का ज़िक्र करने के लिये है और इस ज़िक्र से उन्हें सुरूर हासिल होगा । 63 : या'नी जन्नती ने'मतें और लज़्ज़तें और वहां के नफ़ीस और लतीफ़ मआकिल व मशारिब और दाइमी ऐश और बे निहायत राहतो सुरूर 64 : निहायत तल्ख़, इन्तिहा का बदबूदार, हद दरजे का बद मज़ा, सख़्त ना गवार जिस से दोज़ख़ियों की मेज़बानी की जाएगी और उन को इस के खाने पर मजबूर किया जाएगा । 65 : कि दुन्या में काफ़िर इस का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा । 66 : और उस की शाखें जहन्नम के दरकात में पहुंचती हैं ।

طَلۡعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوۡسُ الشَّيٰطِيۡنِ ۝٦٥ فَاِنَّهُمۡ لَاٰكِلُوۡنَ مِنۡهَا فَمَالِئُوۡنَ

उस का शिगूफ़ा जैसे देवों के सर[67] फिर बेशक वोह उस में से खाएंगे[68] फिर उस से

مِنۡهَا الۡبُطُوۡنَ ۝٦٦ ثُمَّ اِنَّ لَهُمۡ عَلَيۡهَا لَشَوۡبًا مِّنۡ حَمِيۡمٍ ۝٦٧ ثُمَّ اِنَّ مَرۡجِعَهُمۡ

पेट भरेंगे फिर बेशक उन के लिये उस पर खौलते पानी की मिलोनी (मिलावट) है[69] फिर उन की बाज़गश्त (वापसी)

لَاِلَى الۡجَحِيۡمِ ۝٦٨ اِنَّهُمۡ اَلۡفَوۡا اٰبَآءَهُمۡ ضَآلِّيۡنَ ۝٦٩ فَهُمۡ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ

ज़रूर भड़क्ती आग की तरफ़ है[70] बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा गुमराह पाए तो वोह उन्हीं के निशाने क़दम पर

يُهۡرَعُوۡنَ ۝٧٠ وَلَقَدۡ ضَلَّ قَبۡلَهُمۡ اَكۡثَرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٧١ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا

दौड़े जाते हैं[71] और बेशक उन से पहले बहुत से अगले गुमराह हुए[72] और बेशक हम ने

فِيۡهِمۡ مُّنۡذِرِيۡنَ ۝٧٢ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ۝٧٣ اِلَّا عِبَادَ

उन में डर सुनाने वाले भेजे[73] तो देखो डराए गयों का कैसा अन्जाम हुवा[74] मगर अल्लाह

اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ۝٧٤ وَلَقَدۡ نَادٰٮنَا نُوۡحٌ فَلَنِعۡمَ الۡمُجِيۡبُوۡنَ ۝٧٥ وَنَجَّيۡنٰهُ

के चुने हुए बन्दे[75] और बेशक हमें नूह ने पुकारा[76] तो हम क्या ही अच्छे क़बूल फ़रमाने वाले[77] और हम ने उसे

وَاَهۡلَهٗ مِنَ الۡكَرۡبِ الۡعَظِيۡمِ ۝٧٦ وَجَعَلۡنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الۡبٰقِيۡنَ ۝٧٧ وَتَرَكۡنَا

और उस के घर वालों को बड़ी तक्लीफ़ से नजात दी और हम ने उसी की औलाद बाक़ी रखी[78] और हम ने

عَلَيۡهِ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ۝٧٨ سَلٰمٌ عَلٰى نُوۡحٍ فِى الۡعٰلَمِيۡنَ ۝٧٩ اِنَّا كَذٰلِكَ

पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी[79] नूह पर सलाम हो जहान वालों में[80] बेशक हम ऐसा ही

67 : या'नी निहायत बद हैअत और क़बीहुल मन्ज़र। 68 : शिद्दत की भूक से मजबूर हो कर 69 : या'नी जहन्नमी थोहड़ से उन के पेट भरेंगे वोह जलता होगा पेटों को जलाएगा उस की सोज़िश से प्यास का ग़लबा होगा और मुद्दत तक तो प्यास की तक्लीफ़ में रखे जाएंगे, फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गर्म खौलता पानी उस की गरमी और सोज़िश उस थोहड़ की गरमी और जलन से मिल कर और तक्लीफ़ व बेचैनी बढ़ाएगी। 70 : क्यूं कि ज़क़्क़ूम खिलाने और गर्म पानी पिलाने के लिये उन को अपने दरकात से दूसरे दरकात में ले जाया जाएगा, इस के बा'द फिर अपने दरकात की तरफ़ लौटाए जाएंगे। इस के बा'द उन के मुस्तहिक़्क़े अ़ज़ाब होने की इल्लत इर्शाद फ़रमाई जाती है 71 : और गुमराही में उन का इत्तिबाअ़ करते हैं और हक़ के दलाइले वाज़ेहा से आंखें बन्द कर लेते हैं। 72 : इसी वज्ह से कि उन्हों ने अपने बाप दादा की ग़लत राह न छोड़ी और हुज्जत व दलील से फ़ाएदा न उठाया। 73 : या'नी अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام जिन्हों ने उन को गुमराही और बद अ़मली के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ दिलाया। 74 : कि वोह अ़ज़ाब से हलाक किये गए। 75 : ईमानदार जिन्हों ने अपने इख़्लास के सबब नजात पाई। 76 : और हम से अपनी क़ौम के अ़ज़ाब व हलाक की दरख़्वास्त की। 77 : कि हम ने उन की दुआ़ क़बूल की और उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की और उन से पूरा इन्तिक़ाम लिया कि उन्हें ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया। 78 : तो अब दुन्या में जितने इन्सान हैं सब हज़रते नूह عَلَيۡهِ السَّلَام की नस्ल से हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से मरवी है कि हज़रते नूह عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कश्ती से उतरने के बा'द उन के हमराहियों में जिस क़दर मर्द व औ़रत थे सभी मर गए सिवाए आप की औलाद और उन की औ़रतों के, उन्हीं से दुन्या की नस्लें चलीं,

نَجۡزِی الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۸۱﴾ ثُمَّ اَغۡرَقۡنَا

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में है फिर हम ने दूसरों को

الۡاٰخَرِیۡنَ ﴿۸۲﴾ وَ اِنَّ مِنۡ شِیۡعَتِهٖ لَاِبۡرٰهِیۡمَ ﴿۸۳﴾ اِذۡ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلۡبٍ

डुबो दिया[81] और बेशक उसी के गुरोह से इब्राहीम है[82] जब कि अपने रब के पास हाज़िर हुवा ग़ैर से

سَلِیۡمٍ ﴿۸۴﴾ اِذۡ قَالَ لِاَبِیۡهِ وَ قَوۡمِهٖ مَاذَا تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۸۵﴾ اَئِفۡكًا اٰلِهَةً دُوۡنَ

सलामत दिल ले कर[83] जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया[84] तुम क्या पूजते हो क्या बोहतान से **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ تُرِیۡدُوۡنَ ﴿۸۶﴾ فَمَا ظَنُّكُمۡ بِرَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۸۷﴾ فَنَظَرَ نَظۡرَةً فِی

और ख़ुदा चाहते हो तो तुम्हारा क्या गुमान है रब्बुल आ़लमीन पर[85] फिर उस ने एक निगाह सितारों

النُّجُوۡمِ ﴿۸۸﴾ فَقَالَ اِنِّیۡ سَقِیۡمٌ ﴿۸۹﴾ فَتَوَلَّوۡا عَنۡهُ مُدۡبِرِیۡنَ ﴿۹۰﴾ فَرَاغَ اِلٰۤی

को देखा[86] फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूं[87] तो वोह उस पर पीठ दे कर फिर गए[88] फिर उन के ख़ुदाओं की त़रफ़

اٰلِهَتِهِمۡ فَقَالَ اَلَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿۹۱﴾ مَا لَكُمۡ لَا تَنۡطِقُوۡنَ ﴿۹۲﴾ فَرَاغَ عَلَیۡهِمۡ

छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते[89] तुम्हें क्या हुवा कि नहीं बोलते[90] तो लोगों की नज़र बचा कर उन्हें

अ़रब और फ़ारस और रूम आप के फ़रज़न्द साम की औलाद से हैं और सूडान के लोग आप के बेटे ह़ाम की नस्ल से और तुर्क और याजूज माजूज वग़ैरा आप के साहिब ज़ादे याफ़िस की औलाद से। **79 :** या'नी उन के बा'द वाले अम्बिया عَلَیۡهِمُ السَّلَام और उन की उम्मतों में ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام का ज़िक्रे जमील बाक़ी रखा। **80 :** या'नी मलाएका और जिन्नो इन्स सब उन पर क़ियामत तक सलाम भेजा करें। **81 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام की क़ौम के काफ़िरों को। **82 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام के दीनो मिल्लत और उन्ही के त़रीक़ व सुन्नत पर हैं। ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام के दरमियान दो हज़ार छ[6] सो चालीस बरस का ज़मानी फ़र्क़ है और दोनों ह़ज़रात के दरमियान जो अ़ह्द गुज़रा उस में सिर्फ़ दो नबी हुए : ह़ज़रते हूद व ह़ज़रते सालेह़ عَلَیۡهِمَا السَّلَام। **83 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام ने अपने क़ल्ब को **अल्लाह** तआ़ला के लिये ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग़ कर लिया। **84 :** ब त़रीक़े तौबीख़ **85 :** कि जब तुम उस के सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वोह तुम्हें बे अ़ज़ाब छोड़ देगा ? बा वुजूदे कि तुम जानते हो कि वोही मुन्इमे ह़क़ीक़ी मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है। क़ौम ने कहा कि कल को हमारी ई़द है, जंगल में मेला लगेगा, हम नफ़ीस खाने पका कर बुतों के पास रख जाएंगे और मेले से वापस हो कर तबर्रुक के त़ौर पर उन को खाएंगे, आप भी हमारे साथ चलें और मज्मअ़ और मेले की रौनक़ देखें, वहां से वापस हो कर बुतों की ज़ीनत और सजावट और उन का बनाव सिंगार देखें, येह तमाशा देखने के बा'द हम समझते हैं कि आप बुत परस्ती पर हमें मलामत न करेंगे। **86 :** जैसे कि सितारा शनास नुजूम के माहिर सितारों के मवाक़ेए़ इत्तिसालात व इन्सिराफ़ात को देखा करते हैं। **87 :** क़ौम नुजूम की बहुत मो'तक़िद थी, वोह समझी कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام ने सितारों से अपने बीमार होने का ह़ाल मा'लूम कर लिया, अब येह किसी मुतअ़द्दी मरज़ में मुब्तला होने वाले हैं, मुतअ़द्दी मरज़ से वोह लोग बहुत डरते थे। **मस्अला :** इल्मे नुजूम ह़क़ है और सीखने में मश्ग़ूल होना मन्सूख़ हो चुका। **मस्अला :** शरअ़न कोई मरज़ मुतअ़द्दी नहीं होता या'नी एक शख़्स का मरज़ बि ऐनिही दूसरे में नहीं पहुंच जाता, माद्दों के फ़साद और हवा वग़ैरा की सम्तों के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक त़रह़ के मरज़ हो सकते हैं, लेकिन ह़ुदूसे मरज़ का हर एक में जुदागाना है, किसी का मरज़ किसी दूसरे में नहीं पहुंचता। **88 :** अपनी ई़द की त़रफ़ और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام को छोड़ गए, आप बुतख़ाने में आए। **89 :** या'नी उस खाने को जो तुम्हारे सामने रखा है, बुतों ने इस का कुछ जवाब न दिया और वोह जवाब ही क्या देते तो आप ने फ़रमाया : **90 :** इस पर भी बुतों की त़रफ़ से कुछ जवाब न हुवा, वोह बेजान पथ्थर थे जवाब क्या देते।

ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْۤا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا

दहने हाथ से मारने लगा[91] तो काफ़िर उस की त़रफ़ जल्दी करते आए[92] फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों

تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

को पूजते हो और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को[93] बोले इस के लिये एक इमारत चुनो[94]

فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَ

फिर इसे भड़क्ती आग में डाल दो तो उन्हों ने उस पर दाउं चलना (फ़रेब करना) चाहा हम ने उन्हें नीचा दिखाया[95] और

قَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾

कहा मैं अपने रब की त़रफ़ जाने वाला हूं[96] अब वोह मुझे राह देगा[97] इलाही मुझे लाइक़ औलाद दे

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْۤ اَرٰى فِي

तो हम ने उसे ख़ुश ख़बरी सुनाई एक अ़क़्ल मन्द लड़के की फिर जब वोह उस के साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब

الْمَنَامِ اَنِّيْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫

देखा कि मैं तुझे ज़ब्ह़ करता हूं[98] अब तू देख तेरी क्या राय है[99] कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है

سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾

ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गरदन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त का ह़ाल न पूछ[100]

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाई[101] हम ऐसा ही सिला देते हैं

91 : और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने बुतों को मार मार कर पारा पारा कर दिया। जब काफ़िरों को इस की ख़बर पहुंची **92 :** और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि हम तो इन बुतों को पूजते हैं तुम इन्हें तोड़ते हो **93 :** तो पूजने का मुस्तह़िक़ वोह है न कि बुत। इस पर वोह ह़ैरान हो गए और उन से कोई जवाब न बन आया। **94 :** पथ्थर की तीस गज़ लम्बी बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी, फिर उस को लकड़ियों से भर दो और उन में आग लगा दो, यहां तक कि आग ज़ोर पकड़े। **95 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को उस आग में सलामत रख कर। चुनान्चे आग से आप सलामत बरआमद हुए **96 :** इस दारुल कुफ़्र से हिजरत कर के, जहां जाने का मेरा रब हुक्म दे **97 :** चुनान्चे ब हुक्मे इलाही आप सर ज़मीने शाम में अर्ज़े मुक़द्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आप ने अपने रब से दुआ़ की : **98 :** या'नी तेरे ज़ब्ह़ का इन्तिज़ाम कर रहा हूं और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़्वाब ह़क़ होती है और उन के अफ़्आ़ल ब हुक्मे इलाही हुवा करते हैं। **99 :** येह आप ने इस लिये कहा था कि फ़रज़न्द को ज़ब्ह़ से वह़शत न हो और इत़ाअ़ते अम्रे इलाही के लिये वोह ब रग़बत तय्यार हों। चुनान्चे इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द ने रिज़ाए इलाही पर फ़िदा होने का कमाले शौक़ से इज़्हार किया। **100 :** येह वाक़िआ़ मिना में वाक़ेअ़ हुवा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चलाई, क़ुदरते इलाही कि छुरी ने कुछ भी काम न किया। **101 :** इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी कमाल को पहुंचा दी, फ़रज़न्द को ज़ब्ह़ के लिये बे दरेग़ पेश कर दिया, बस अब इतना काफ़ी है।

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ

नेकों को बेशक येह रोशन जांच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के सदके़ में दे कर

عَظِيْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾ كَذٰلِكَ

उसे बचा लिया[102] और हम ने पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी सलाम हो इब्राहीम पर[103] हम ऐसा ही

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और हम ने उसे ख़ुश ख़बरी दी

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ

इस्ह़ाक़ की कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में[104] और हम ने बरकत उतारी उस पर और इस्ह़ाक़ पर[105] और उन की

ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿۱۱۳﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَ

औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला[106] और कोई अपनी जान पर सरीह़ ज़ुल्म करने वाला[107] और बेशक हम ने मूसा और हारून

هٰرُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۱۵﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ

पर एह़सान फ़रमाया[108] और उन्हें और उन की क़ौम[109] को बड़ी सख़्ती से नजात बख़्शी[110] और उन की हम ने मदद फ़रमाई[111]

فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا

तो वोही ग़ालिब हुए[112] और हम ने उन दोनों को रोशन किताब अ़ता फ़रमाई[113] और उन को

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۱۸﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ سَلٰمٌ عَلٰى

सीधी राह दिखाई और पिछलों में उन की ता'रीफ़ बाक़ी रखी सलाम हो

مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ اِنَّهُمَا مِنْ

मूसा और हारून पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह दोनों

102 : इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल हैं या ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِمَا السَّلَام लेकिन दलाइल की कुव्वत येही बताती है कि ज़बीह़ ह़ज़रते इस्माईल ही हैं عَلَيْهِ السَّلَام और फ़िदये में जन्नत से बकरी भेजी गई थी जिस को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ब्ह़ फ़रमाया। 103 : हमारी त़रफ़ से 104 : वाक़िअ़ए ज़ब्ह़ के बा'द ह़ज़रते इस्ह़ाक़ की ख़ुश ख़बरी इस की दलील है कि ज़बीह़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं। 105 : हर त़रह की बरकत, दीनी भी और दुन्यवी भी और ज़ाहिरी बरकत येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में कसरत की और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से बहुत से अम्बिया किये, ह़ज़रते या'क़ूब से ले कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक। 106 : या'नी मोमिन 107 : या'नी काफ़िर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी बाप के साह़िबे फ़ज़ाइले कसीरा होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं, येह **अल्लाह** तआ़ला की शानें हैं कभी नेक से नेक पैदा करता है, कभी बद से बद, कभी बद से नेक, न औलाद का बद होना आबा के लिये ऐब हो न आबा की बदी औलाद के लिये। 108 : कि उन्हें नुबुव्वत व रिसालत इ़नायत फ़रमाई। 109 : या'नी बनी इसराईल 110 : कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के मज़ालिम से रिहाई दी। 111 : क़िब्त़ियों के मुक़ाबिल 112 : फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर। 113 : जिस का बयान बलीग़

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ اِنَّ اِلْیَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ قَالَ

हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है[114] जब उस ने

لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّ تَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِیْنَ ﴿۱۲۵﴾

अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं[115] क्या बअ्ल को पूजते हो[116] और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ رَبَّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۲۶﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का[117] फिर उन्हों ने उसे झुटलाया तो वोह ज़रूर पकड़े आएंगे[118]

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ تَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۲۹﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤى

मगर **अल्लाह** के चुने हुए बन्दे[119] और हम ने पिछलों में उस की सना बाक़ी रखी सलाम हो

اِلْ یَاسِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا

इल्यास पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल

الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَ اِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ اِذْ نَجَّیْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ

ईमान बन्दों में है और बेशक लूत़ पैग़म्बरों में है जब कि हम ने उसे और उस के सब घर वालों

اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۳۴﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿۱۳۵﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ

को नजात बख़्शी मगर एक बुढ़िया कि रह जाने वालों में हुई[120] फिर दूसरों को हम ने हलाक फ़रमा दिया[121] और

اِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَیْهِمْ مُّصْبِحِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ بِالَّیْلِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَ

बेशक तुम[122] उन पर गुज़रते हो सुब्ह़ को और रात में[123] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[124] और

اِنَّ یُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۴۰﴾

बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है जब कि भरी कश्ती की त़रफ़ निकल गया[125]

और वोह हुदूद व अह़काम वग़ैरा की जामेअ़ । इस किताब से मुराद तौरैत शरीफ़ है । **114 :** जो बअ्लबक्क और उस के नवाह़ के लोगों की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए । **115 :** या'नी क्या तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ नहीं । **116 :** "**बअ्ल**" उन के बुत का नाम था जो सोने का था, उस की लम्बाई बीस गज़ थी, चार मुंह थे, उस की बहुत ता'ज़ीम करते थे, जिस मक़ाम में वोह था उस जगह का नाम "बक्क" था इसी से बअ्लबक्क मुरक्कब हुवा, येह बिलादे शाम में है । **117 :** उस की इबादत तर्क करते हो । **118 :** जहन्नम में **119 :** या'नी उस क़ौम में से **अल्लाह** तआ़ला के बरगुज़ीदा बन्दे जो ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए, उन्हों ने अ़ज़ाब से नजात पाई । **120 :** अ़ज़ाब के अन्दर । **121 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के कुफ़्फ़ार को । **122 :** ऐ अहले मक्का ! **123 :** या'नी अपने सफ़रों में रोज़ो शब तुम उन के आसार व मनाज़िल पर गुज़रते हो । **124 :** कि उन से इ़ब्रत ह़ासिल करो । **125 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास और वह्‌ब का क़ौल है कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से अ़ज़ाब का वा'दा किया था, इस में ताख़ीर हुई तो आप उन से छुप कर निकल गए और आप ने दरियाई सफ़र का क़स्द किया, कश्ती पर सुवार हुए, दरिया के दरमियान में कश्ती ठहर गई और उस के ठहरने का कोई सबबे ज़ाहिर मौजूद न था, मल्लाहों ने कहा इस कश्ती में

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْ

तो क़ुरआ़ डाला तो धकेले हुओं में हुवा फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था[126] तो अगर

لَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾

वोह तस्बीह़ करने वाला न होता[127] ज़रूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे[128]

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

फिर हम ने उसे[129] मैदान पर डाल दिया और वोह बीमार था[130] और हम ने उस पर[131] कद्दू का पेड़ उगाया[132]

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى

और हम ने उसे[133] लाख आदमियों की त़रफ़ भेजा बल्कि ज़ियादा तो वोह ईमान ले आए[134] तो हम ने उन्हें एक वक़्त

حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا

तक बरतने दिया[135] तो उन से पूछो क्या तुम्हारे रब के लिये बेटियां हैं[136] और उन के बेटे[137] या हम ने मलाएका

الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

को औरतें पैदा किया और वोह ह़ाज़िर थे[138] सुनते हो बेशक वोह अपने बोहतान से कहते हैं

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا

कि **अल्लाह** की औलाद है और बेशक ज़रूर वोह झूटे हैं क्या उस ने बेटियां पसन्द कीं बेटे छोड़ कर तुम्हें

अपने मौला से भागा हुवा कोई ग़ुलाम है, क़ुरआ़ डालने से ज़ाहिर हो जाएगा, क़ुरआ़ डाला गया तो आप ही के नाम निकला, तो आप ने फ़रमाया : मैं ही वोह ग़ुलाम हूं और आप पानी में डाल दिये गए क्यूं कि दस्तूर येही था कि जब तक भागा हुवा ग़ुलाम दरिया में ग़र्क़ न कर दिया जाए उस वक़्त तक कश्ती चलती न थी। **126 :** कि क्यूं निकलने में जल्दी की और क़ौम से जुदा होने में अम्रे इलाही का इन्तिज़ार न किया **127 :** या'नी ज़िक्रे इलाही की कसरत करने वाला और मछली के पेट में "لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ" पढ़ने वाला **128 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक। **129 :** मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस रोज़ के बा'द **130 :** या'नी मछली के पेट में रहने के बाइ़स आप ऐसे ज़ईफ़ नह़ीफ़ और नाज़ुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है, जिस्म की खाल नर्म हो गई और बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था **131 :** साया करने और मख्खियों से मह़फ़ूज़ रखने के लिये **132 :** कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है, मगर येह आप का मो'जिज़ा था कि येह कद्दू का दरख़्त क़द वाले दरख़्तों की त़रह़ शाख़ रखता था और उस के बड़े बड़े पत्तों के साए में आप आराम करते थे और ब हुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन ह़ज़रत के दहने मुबारक में दे कर आप को सुब्ह़ो शाम दूध पिला जाती, यहां तक कि जिस्मे मुबारक की जिल्द शरीफ़ या'नी खाल मज़बूत हुई और अपने मौक़अ़ से बाल जमे और जिस्म में तुवानाई आई। **133 :** पहले की त़रह़ सर ज़मीने मौसिल में क़ौमे नैनवा के **134 :** आसारे अ़ज़ाब देख कर (इस का बयान सूरए यूनुस के दसवें रुकूअ़ में गुज़र चुका है और इस वाक़िए का बयान सूरए अम्बियाअ के छटे रुकूअ़ में भी आ चुका है) **135 :** या'नी उन की आख़िरी उ़म्र तक उन्हें आसाइश के साथ रखा। इस वाक़िए के बयान फ़रमाने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है कि आप कुफ़्फ़ारे मक्का से इन्कारे बअ़्स की वज्ह दरयाफ़्त कीजिये। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है : **136 :** जैसा कि जुहैना और बनी सलमा वग़ैरा कुफ़्फ़ार का ए'तिक़ाद है कि फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं **137 :** या'नी अपने लिये तो बेटियां गवारा नहीं करते बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ को ख़ुदा की त़रफ़ निस्बत करते हैं। **138 :** देख रहे थे, क्यूं ऐसी बेहूदा बात कहते हैं।

لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

क्या है कैसा हुक्म लगाते हो[139] तो क्या ध्यान नहीं करते[140] या तुम्हारे लिये कोई

مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ

खुली सनद है तो अपनी किताब लाओ[141] अगर सच्चे हो और उस में और जिन्नों में

الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

रिश्ता ठहराया[142] और बेशक जिन्नों को मा'लूम है कि वोह[143] ज़रूर हाज़िर लाए जाएंगे[144] पाकी है **अल्लाह** को

عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾

उन बातों से कि येह बताते हैं मगर **अल्लाह** के चुने हुए बन्दे[145] तो तुम और जो कुछ तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो[146]

مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّاۤ

तुम उस के ख़िलाफ़ किसी को बहकाने वाले नहीं[147] मगर उसे जो भड़क्ती आग में जाने वाला है[148] और फ़िरिश्ते कहते हैं

اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّ اِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ

हम में हर एक का एक मक़ाम मा'लूम है[149] और बेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर हैं और बेशक हम

الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ

उस की तस्बीह करने वाले हैं और बेशक वोह कहते थे[150] अगर हमारे पास अगलों की कोई

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ

नसीहत होती[151] तो ज़रूर हम **अल्लाह** के चुने बन्दे होते[152] तो उस के मुन्किर हुए तो अन्क़रीब

يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ

जान लेंगे[153] और बेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिये कि बेशक उन्हीं

139 : फ़ासिद व बातिल 140 : और इतना नहीं समझते कि **अल्लाह** तआला औलाद से पाक और मुनज़्ज़ा है। 141 : जिस में येह सनद हो 142 : जैसा कि बा'ज़ मुश्रिकीन ने कहा था कि **अल्लाह** ने जिन्नों में शादी की इस से फ़िरिश्ते पैदा हुए (مَعَاذَ اللہ) कैसे अज़ीम कुफ़्र के मुर्तकिब हुए। 143 : या'नी इस बेहूदा बात के कहने वाले 144 : जहन्नम में अज़ाब के लिये। 145 : ईमानदार। **अल्लाह** तआला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से जो येह कुफ़्फ़ारे ना बकार कहते हैं। 146 : या'नी तुम्हारे बुत सब के सब वोह और 147 : गुमराह नहीं कर सकते 148 : जिस की क़िस्मत ही में येह है कि वोह अपने किरदारे बद से मुस्तहिक़्क़े जहन्नम हो। 149 : जिस में अपने रब की इबादत करता है। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि आस्मानों में बालिश्त भर भी जगह ऐसी नहीं है जिस में कोई फ़िरिश्ता नमाज़ न पढ़ता हो या तस्बीह न करता हो। 150 : या'नी मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले कहा करते थे कि 151 : कोई किताब मिलती 152 : उस की इताअ़त करते और इख़्लास के साथ इबादत बजा लाते। फिर जब तमाम किताबों से अफ़्ज़ल व अशरफ़ मो'जिज़ किताब उन्हें मिली या'नी कुरआने मजीद नाज़िल हुवा 153 : अपने कुफ़्र का अन्जाम।

الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى

की मदद होगी और बेशक हमारा ही लश्कर[154] ग़ालिब आएगा तो एक वक़्त तक तुम उन से

حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّ اَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

मुंह फेर लो[155] और उन्हें देखते रहो कि अन्क़रीब वोह देखेंगे[156] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى

फिर जब उतरेगा उन के आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुब्ह़ होगी और एक वक़्त तक उन से

حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّ اَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो कि वोह अन्क़रीब देखेंगे पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को

يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

उन की बातों से[157] और सलाम है पैग़म्बरों पर[158] और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहां का रब है

सूरए صٓ मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

इस नामवर क़ुरआन की क़सम[2] बल्कि काफ़िर तकब्बुर और ख़िलाफ़ में हैं[3]

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَ

हम ने उन से पहले कितनी संगतें खपाईं[4] तो अब वोह पुकारें[5] और छूटने का वक़्त न था[6] और

154 : या'नी अहले ईमान। 155 : जब तक कि तुम्हें उन के साथ क़िताल करने का हुक्म दिया जाए। 156 : त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत में, जब येह आयत नाज़िल हुई तो कुफ़्फ़ार ने बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा कहा कि येह अ़ज़ाब कब नाज़िल होगा ? इस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई। 157 : जो काफ़िर उस की शान में कहते हैं और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। 158 : जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौह़ीद और एह़कामे शरअ़ पहुंचाए। इन्सानी मरातिब में सब से आ'ला मर्तबा येह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तक्मील करे। येह शान अम्बिया की है عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो हर एक पर उन ह़ज़रात की इत्तिबाअ़ और उन की इक़्तिदा लाज़िम है।
1 : "सूरए صٓ" इस का नाम "सूरए दावूद" भी है, येह सूरत मक्की है, इस में पांच रुकूअ़, अठासी आयतें और सात सो बत्तीस कलिमे और तीन हज़ार सड़सठ ह़र्फ़ हैं। 2 : जो शरफ़ वाला है कि येह कलामे मो'जिज़ है। 3 : और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़दावत रखते हैं इस लिये ह़क़ का ए'तिराफ़ नहीं करते। 4 : या'नी आप की क़ौम से पहले कितनी उम्मतें हलाक कर दीं इसी इस्तिक्बार और अम्बिया की मुख़ालफ़त के बाइस 5 : या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त उन्हों ने फ़रियाद की। 6 : कि ख़लास पा सकते, उस वक़्त की फ़रियाद बेकार थी,

عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۫ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

उन्हें इस का अचम्बा (तअ़ज्जुब) हुवा कि इन के पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[7] और काफ़िर बोले येह जादूगर है

كَذَّابٌ ۚ ﴿۴﴾ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿۵﴾

बड़ा झूटा क्या इस ने बहुत ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया[8] बेशक येह अ़जीब बात है

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚۖ اِنَّ هٰذَا

और उन में के सरदार चले[9] कि इस के पास से चल दो और अपने ख़ुदाओं पर साबिर रहो बेशक उस में

لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۚ ﴿۶﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚۖ اِنْ هٰذَآ اِلَّا

इस का कोई मत़लब है येह तो हम ने सब से पिछले दीन नसरानियत में भी न सुनी[10] येह तो निरी नई

اخْتِلَاقٌ ۚ ﴿۷﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ

गढ़त है क्या इन पर कुरआन उतारा गया हम सब में से[11] बल्कि वोह शक में हैं मेरी

ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ﴿۸﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ

किताब से[12] बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है[13] क्या वोह तुम्हारे रब की रह़मत के ख़ज़ान्ची

رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۚ ﴿۹﴾ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

हैं[14] वोह इ़ज़्ज़त वाला बहुत अ़ता फ़रमाने वाला[15] क्या इन के लिये है सल्तनत आस्मानों और ज़मीन की और जो

कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल न की। **7 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **8 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस्लाम लाए तो मुसल्मानों को ख़ुशी हुई और काफ़िरों को निहायत रन्ज हुवा, वलीद बिन मुग़ीरा ने कुरैश के अ़माइद और सरबर आवरदा (बड़े बड़े असरो रुसूख़ वाले) पच्चीस आदमियों को जम्अ़ किया और उन्हें अबू त़ालिब के पास लाया और उन से कहा कि तुम हमारे सरदार हो और बुज़ुर्ग हो, हम तुम्हारे पास इस लिये आए हैं कि तुम हमारे और अपने भतीजे के दरमियान फ़ैसला कर दो, उन की जमाअ़त के छोटे दरजे के लोगों ने जो शोरिश बरपा कर रखी है वोह तुम जानते हो। अबू त़ालिब ने ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बुला कर अ़र्ज़ किया कि येह आप की क़ौम के लोग हैं और आप से सुल्ह़ चाहते हैं, आप इन की त़रफ़ से यक लख़्त इन्ह़िराफ़ न कीजिये। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह मुझ से क्या चाहते हैं ? उन्हों ने कहा कि हम इतना चाहते हैं कि आप हमें और हमारे मा'बूदों के ज़िक्र को छोड़ दीजिये, हम आप के और आप के मा'बूद की बदगोई के दरपै न होंगे। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : क्या तुम एक कलिमा क़बूल कर सकते हो ? जिस से अ़रबो अ़जम के मालिक व फ़रमां रवा हो जाओ। अबू जहल ने कहा कि एक क्या हम दस कलिमे क़बूल कर सकते हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कहो ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ'' इस पर वोह लोग उठ गए और कहने लगे कि क्या इन्हों ने बहुत से ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया, इतनी बहुत सी मख़्लूक़ के लिये एक ख़ुदा कैसे काफ़ी हो सकता है। **9 :** अबू त़ालिब की मजलिस से आपस में येह कहते : **10 :** नसरानी भी तीन ख़ुदाओं के क़ाइल थे, येह तो एक ही ख़ुदा बताते हैं। **11 :** अहले मक्का को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मन्सबे नुबुव्वत पर ह़सद आया और उन्हों ने येह कहा कि हम में साह़िबे शरफ़ो इ़ज़्ज़त आदमी मौजूद थे उन में से किसी पर कुरआन न उतरा ख़ास ह़ज़रत सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर उतरा। **12 :** कि इस के लाने वाले ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं। **13 :** अगर मेरा अ़ज़ाब चख लेते तो येह शक व तक्ज़ीब व ह़सद कुछ भी बाक़ी न रहता और नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ करते लेकिन उस वक़्त की तस्दीक़ मुफ़ीद न होती। **14 :** और क्या नुबुव्वत की कुन्जियां उन के हाथ में हैं जिसे चाहें दें अपने आप को क्या समझते हैं, अल्लाह तआ़ला और उस की मालिकिय्यत को नहीं जानते। **15 :** ह़स्बे

بَيْنَهُمَا ۚ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْأَسْبَابِ ⑩ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ

कुछ इन के दरमियान है तो रस्सियां लटका कर चढ़ न जाएं[16] येह एक ज़लील लश्कर है उन्हीं लश्करों में से जो

الْأَحْزَابِ ⑪ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ⑫

वहीं भगा दिया जाएगा[17] इन से पहले झुटला चुके हैं नूह़ की क़ौम और आ़द और चौमेख़ा करने वाला फ़िरऔन[18]

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّأَصْحٰبُ لْــَٔيْكَةِ ۭ أُولٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ⑬ إِنْ كُلٌّ إِلَّا

और समूद और लूत़ की क़ौम और बन वाले[19] येह हैं वोह गुरौह[20] इन में कोई ऐसा नहीं

كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ⑭ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً

जिस ने रसूलों को न झुटलाया हो तो मेरा अ़ज़ाब लाज़िम हुवा[21] और येह राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[22]

مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ⑮ وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ

जिसे कोई फेर नहीं सकता और बोले ऐ हमारे रब हमारा ह़िस्सा हमें जल्द दे दे ह़िसाब के दिन

الْحِسَابِ ⑯ اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْأَيْدِ ۚ إِنَّهٗ

से पहले[23] तुम इन की बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दावूद ने'मतों वाले को याद करो[24] बेशक वोह बड़ा रुजूअ़

أَوَّابٌ ⑰ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ⑱

करने वाला है[25] बेशक हम ने उस के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह़ करते[26] शाम को और सूरज चमकते[27]

इक़्तिज़ाए ह़िक्मत जिसे जो चाहे अ़त़ा फ़रमाए उस ने अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई तो किसी को इस में दख़्ल देने और चूं व चरा की क्या मजाल। **16 :** और ऐसा इख़्तियार हो तो जिसे चाहें वह्य के साथ ख़ास करें और आ़लम की तदबीर अपने हाथ में लें और जब येह कुछ नहीं है तो उमूरे रब्बानिय्या व तदाबीरे इलाहिय्यह में दख़्ल क्यूं देते हैं, उन्हें इस का क्या ह़क़ है। कुफ़्फ़ार को येह जवाब देने के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से नुसरत व मदद का वा'दा फ़रमाया है। **17 :** या'नी इन कुरैश की जमाअ़त उन्हीं लश्करों में से एक है जो आप से पहले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़ाबिल गुरौह बांध बांध कर आया करते थे और ज़ियादतियां किया करते थे इस सबब से हलाक कर दिये गए, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी कि येही ह़ाल इन का है इन्हें भी हज़ीमत होगी। चुनान्चे बद्र में ऐसा वाक़ेअ़ हुवा इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर के लिये पिछले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और उन की क़ौमों का ज़िक्र फ़रमाया। **18 :** जो किसी पर गुस्सा करता था तो उसे लिटा कर उस के चारों हाथ पाउं खींच कर चारों त़रफ़ खूंटों में बंधवा देता था फिर उस को पिटवाता था और उस पर त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां करता था। **19 :** जो शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम से थे। **20 :** जो अम्बिया के मुक़ाबिल जथ्थे बांध कर आए, मुश्रिकीने मक्का उन्हीं गुरौहों में से हैं। **21 :** या'नी उन गुज़री हुई उम्मतों ने जब अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब की तो उन पर अ़ज़ाब लाज़िम हो गया तो इन ज़ईफ़ों का क्या ह़ाल होगा जब इन पर अ़ज़ाब उतरेगा। **22 :** या'नी क़ियामत के नफ़्ख़ए ऊला की जो इन के अ़ज़ाब की मीआ़द है **23 :** येह नज़्र बिन ह़ारिस ने बत़ौरे तमस्ख़ुर कहा था, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि **24 :** जिन को इबादत की बहुत कुव्वत दी गई थी। आप का त़रीक़ा था कि एक दिन रोज़ा रखते एक दिन इफ़्त़ार फ़रमाते और रात के पहले निस्फ़ ह़िस्से में इबादत करते इस के बा'द शब की एक तिहाई आराम फ़रमाते फिर बाक़ी छटा ह़िस्सा इबादत में गुज़ारते। **25 :** अपने रब की त़रफ़ **26 :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की तस्बीह़ के साथ। **27 :** इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये पहाड़ों को ऐसा मुसख़्ख़र किया था कि

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ

और परिन्दे जम्अ़ किये हुए[28] सब उस के फ़रमां बरदार थे[29] और हम ने उस की सल्तनत को मज़बूत़ किया[30] और उसे

الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا

हिक्मत[31] और क़ौले फ़ैसल दिया[32] और क्या तुम्हें[33] उस दा'वे वालों की भी ख़बर आई जब वोह दीवार कूद कर

الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ

दावूद की मस्जिद में आए[34] जब वोह दावूद पर दाख़िल हुए तो वोह उन से घबरा गया उन्हों ने अ़र्ज़ की डरिये नहीं

خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَاۤ

हम दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है[35] तो हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और ख़िलाफ़े ह़क़ न कीजिये[36] और हमें

اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ هٰذَاۤ اَخِيْ ۟ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ

सीधी राह बताइये बेशक येह मेरा भाई है[37] इस के पास निनानवे दुम्बियां हैं और मेरे

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۟ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ

पास एक दुम्बी अब येह कहता है वोह भी मुझे ह़वाले कर दे और बात में मुझ पर ज़ोर डालता है दावूद ने फ़रमाया बेशक

जहां आप चाहते उन्हें अपने साथ ले जाते। (مدارک) **28 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام तस्बीह़ करते तो पहाड़ भी आप के साथ तस्बीह़ करते और परिन्दे आप के पास जम्अ़ हो कर तस्बीह़ करते। **29 :** पहाड़ भी और परिन्दे भी। **30 :** फ़ौज व लश्कर की कसरत अ़ता फ़रमा कर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रूए ज़मीन के बादशाहों में ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की सल्तनत बड़ी मज़बूत़ और क़वी सल्तनत थी, छत्तीस हज़ार मर्द आप के मेह़राब के पहरे पर मुक़र्रर थे। **31 :** या'नी नुबुव्वत। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने हिक्मत की तफ़्सीर अ़द्ल की है, बा'ज़ ने किताबुल्लाह का इ़ल्म, बा'ज़ ने फ़िक़्ह, बा'ज़ ने सुन्नत। (جمل) **32 :** क़ौले फ़ैसल से इ़ल्मे क़ज़ा मुराद है जो ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ व तमीज़ कर दे। **33 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **34 :** येह आने वाले बक़ौले मश्हूर मलाएका थे जो ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की आज़्माइश के लिये आए थे। **35 :** उन का येह क़ौल एक मस्अले की फ़र्ज़ी शक्ल पेश कर के जवाब ह़ासिल करना था और किसी मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म मा'लूम करने के लिये फ़र्ज़ी सूरतें मुक़र्रर कर ली जाती हैं और मुअ़य्यन अश्ख़ास की त़रफ़ उन की निस्बत कर दी जाती है ताकि मस्अले का बयान बहुत वाज़ेह़ त़रीक़े पर हो और इब्हाम बाक़ी न रहे। यहां जो सूरते मस्अला उन फ़िरिश्तों ने पेश की इस से मक़्सूद ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को तवज्जोह दिलाना थी उस अम्र की त़रफ़ जो उन्हें पेश आया था और वोह येह था कि आप की निनानवे बीबियां थीं इस के बा'द आप ने एक और औ़रत को पयाम दे दिया जिस को एक मुसल्मान पहले से पयाम दे चुका था लेकिन आप का पयाम पहुंचने के बा'द औ़रत के अइ़ज़्ज़ा व अक़ारिब दूसरे की त़रफ़ इल्तिफ़ात करने वाले कब थे ? आप के लिये राज़ी हो गए और आप से निकाह़ हो गया। एक क़ौल येह भी है कि उस मुसल्मान के साथ निकाह़ हो चुका था, आप ने उस मुसल्मान से अपनी रग़बत का इज़्हार किया और चाहा कि वोह अपनी औ़रत को त़लाक़ दे दे, वोह आप के लिहाज़ से मन्अ़ न कर सका और उस ने त़लाक़ दे दी, आप का निकाह़ हो गया और उस ज़माने में ऐसा मा'मूल था कि अगर किसी शख़्स को किसी की औ़रत की त़रफ़ रग़बत होती तो उस से इस्तिद्आ़ कर के त़लाक़ दिलवा लेता और बा'दे इ़द्दत निकाह़ कर लेता, येह बात न तो शरअ़न ना जाइज़ है न उस ज़माने के रस्म व आ़दत के ख़िलाफ़ लेकिन शाने अम्बिया बहुत अर्फ़ओ आ'ला होती है, इस लिये येह आप के मन्सबे आ़ली के लाइक़ न था तो मर्ज़िये इलाही येह हुई कि आप को इस पर आगाह किया जाए और इस का सबब येह पैदा किया कि मलाएका मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह की शक्ल में आप के सामने पेश हुए। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर बुज़ुर्गों से कोई लग़्ज़िश सादिर हो और कोई अम्र ख़िलाफ़े शान वाक़ेअ़ हो जाए तो अदब येह है कि मो'तरिज़ाना ज़बान न खोली जाए बल्कि उस वाक़िए की मिस्ल एक वाक़िआ़ मुतसव्वर कर के उस की निस्बत साइलाना व मुस्तफ़्तियाना व मुस्तफ़ीदाना सुवाल किया जाए और उन की अ़ज़मत व एह़तिराम का लिहाज़ रखा जाए और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला عَزَّوَجَلَّ मालिको मौला अपने अम्बिया की ऐसी इ़ज़्ज़त फ़रमाता है कि उन को किसी बात पर आगाह करने के लिये मलाएका को इस त़रीक़े अदब के साथ ह़ाज़िर होने का हुक्म देता है। **36 :** जिस की ग़लत़ी हो बे रू रिआ़यत फ़रमा दीजिये। **37 :** या'नी दीनी भाई।

ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَیَبْغِیْ

येह तुझ पर ज़ियादती करता है कि तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है और बेशक अक्सर साझे वाले एक

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ قَلِیْلٌ مَّا

दूसरे पर ज़ियादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और वोह बहुत थोड़े

هُمْؕ وَ ظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۩ ﴿۲۴﴾

हैं[38] अब दावूद समझा कि हम ने येह उस की जांच की थी[39] तो अपने रब से मुआफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा[40] और रुजूअ़ लाया

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَؕ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ یٰدَاوٗدُ اِنَّا

तो हम ने उसे येह मुआफ़ फ़रमा दिया और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर कुर्ब और अच्छा ठिकाना है ऐ दावूद बेशक हम ने

جَعَلْنٰكَ خَلِیْفَةً فِی الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَیْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعِ

तुझे ज़मीन में नाइब किया[41] तो लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के

الْهَوٰى فَیُضِلَّكَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वोह जो अल्लाह की राह से बहकते हैं

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌۢ بِمَا نَسُوْا یَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾ وَ مَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है इस पर कि वोह हिसाब के दिन को भूल बैठे[42] और हम ने आस्मान और

وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَا بَاطِلًاؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْاۚ فَوَیْلٌ

ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है बेकार न बनाए येह काफ़िरों का गुमान है[43] तो काफ़िरों

لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِؕ ﴿۲۷﴾ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

की ख़राबी है आग से क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

38 : हज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام की येह गुफ़्तगू सुन कर फ़िरिश्तों में से एक ने दूसरे की त़रफ़ देखा और तबस्सुम कर के वोह आस्मान की त़रफ़ रवाना हो गए। 39 : और दुम्बी एक किनाया था जिस से मुराद औ़रत थी, क्यूं कि निनानवे औ़रतें आप के पास होते हुए एक और औ़रत की आप ने ख़्वाहिश की थी, इस लिये दुम्बी के पैराए में येह सुवाल किया गया। जब आप ने येह समझा 40 **मस्अला :** इस आयत से साबित होता है कि नमाज़ में रुकूअ़ करना सज्दए तिलावत के क़ाइम मक़ाम हो जाता है जब कि निय्यत की जाए 41 : ख़ल्क़ की तदबीर पर आप को मामूर किया और आप का हुक्म उन में नाफ़िज़ फ़रमाया। 42 : और इस वज्ह से ईमान से महरूम रहे अगर उन्हें रोज़े हिसाब का यक़ीन होता तो दुन्या ही में ईमान ले आते। 43 : अगर्चे वोह सराहतन येह न कहें कि आस्मान व ज़मीन और तमाम दुन्या बेकार पैदा की गई लेकिन जब कि बअ़्स व जज़ा के मुन्किर हैं तो नतीजा येही है कि आ़लम की ईजाद को अ़बस और बे फ़ाएदा मानें।

الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝۲۸

काम किये उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़ गारों को शरीर बे हुक्मों के बराबर ठहरा दें[44]

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْۤا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۲۹

येह एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी[45] बरकत वाली ताकि इस की आयतों को सोचें और अ़क़्ल मन्द नसीह़त मानें

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝۳۰ؕ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ

और हम ने दावूद को[46] सुलैमान अ़त़ा फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला[47] जब कि उस पर पेश किये गए

بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝۳۱ۙ فَقَالَ اِنِّيْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ

तीसरे पहर को[48] कि रोकिये तो तीन पाउं पर खड़े हों चौथे सुम का कनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइये तो हवा हो जाएं[49] तो सुलैमान ने कहा मुझे इन

رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝۳۲ٙ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

घोड़ों की मह़ब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये[50] फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए[51] फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे

وَالْاَعْنَاقِ ۝۳۳ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ

पास वापस लाओ तो उन की पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगा[52] और बेशक हम ने सुलैमान को जांचा[53] और उस के तख़्त पर एक बेजान बदन डाल दिया[54] फिर

44 : येह बात बिल्कुल हिक्मत के ख़िलाफ़ है और जो शख़्स जज़ा का क़ाइल नहीं वोह ज़रूर मुफ़्सिद व मुस्लेह़ और फ़ाजिर व मुत्तक़ी को बराबर क़रार देगा और इन में फ़र्क़ न करेगा कुफ़्फ़ार इस जह्ल में गिरिफ़्तार हैं। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने मुसल्मानों से कहा था कि आख़िरत में जो ने'मतें तुम्हें मिलेंगी वोही हमें भी मिलेंगी इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि नेक व बद मोमिन व काफ़िर को बराबर कर देना मुक़्तज़ाए हिक्मत नहीं, कुफ़्फ़ार का ख़याल बात़िल है। 45 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ 46 : फ़रज़न्दे अरजुमन्द 47 : अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ और तमाम अवक़ात तस्बीह़ व ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वाला। 48 : बा'दे ज़ोह्र ऐसे घोड़े 49 : येह हज़ार घोड़े थे जो जिहाद के लिये हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मुलाह़ज़ा में बा'दे ज़ोह्र पेश किये गए। 50 : या'नी मैं इन से रिज़ाए इलाही और तक़्वियत व ताईदे दीन के लिये मह़ब्बत करता हूं, मेरी मह़ब्बत इन के साथ दुन्यवी ग़रज़ से नहीं है। (تفسیر کبیر) 51 : या'नी नज़र से ग़ाइब हो गए 52 : और इस हाथ फेरने के चन्द बाइस थे : **एक** तो घोड़ों की इ़ज़्ज़तो शरफ़ का इज़्हार कि वोह दुश्मन के मुक़ाबले में बेहतर मुईन हैं। **दूसरे** उमूरे सल्त़नत की ख़ुद निगरानी फ़रमाना कि तमाम उ़म्माल मुस्तइ़द रहें। **सिवुम** येह कि आप घोड़ों के अह़वाल और उन के अमराज़ व उ़यूब के आ'ला माहिर थे, उन पर हाथ फेर कर उन की ह़ालत का इम्तिह़ान फ़रमाते थे। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इन आयात की तफ़्सीर में बहुत से वाही (फ़ुज़ूल) अक़्वाल लिख दिये हैं जिन की सिह़्ह़त पर कोई दलील नहीं और वोह मह़ज़ ह़िकायात हैं जो दलाइले क़विय्या के सामने किसी त़रह़ क़ाबिले क़बूल नहीं और येह तफ़्सीर जो ज़िक्र की गई येह इबारत क़ुरआन से बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। (تفسیر کبیر) وَلِلّٰہِ الْحَمْد

53 : बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़दीस है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया था कि मैं आज रात में अपनी नव्वे बीबियों पर दौरा करूंगा, हर एक ह़ामिला होगी और हर एक से राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाला सुवार पैदा होगा, मगर येह फ़रमाते वक़्त ज़बाने मुबारक से اِنْ شَآءَ اللّٰہ न फ़रमाया (ग़ालिबन ह़ज़रत किसी ऐसे शुग़्ल में थे कि इस का ख़याल न रहा) तो कोई भी औ़रत ह़ामिला न हुई सिवाए एक के और उस के भी नाक़िसुल ख़िल्क़त बच्चा पैदा हुवा। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने اِنْ شَآءَ اللّٰہ फ़रमाया होता तो उन सब औ़रतों के लड़के ही पैदा होते और वोह राहे ख़ुदा में जिहाद करते। (بخاری پارہ تیرہ کتاب الانبیاء) 54 : या'नी ग़ैर ताम्मुल ख़िल्क़त बच्चा।

اَنَابَ ﴿۳۴﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَهَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ

रुजूअ़ लाया[55] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्त़नत अ़त़ा कर कि मेरे बा'द किसी को

بَعْدِیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّیْحَ تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖ

लाइक़ न हो[56] बेशक तू ही है बड़ी देन वाला तो हम ने हवा उस के बस में कर दी कि उस के हुक्म से नर्म नर्म

رُخَآءً حَیْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾ وَ الشَّیٰطِیْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾ وَّ اٰخَرِیْنَ

चलती[57] जहां वोह चाहता और देव बस में कर दिये हर मि'मार[58] और ग़ोत़ा ख़ोर[59] और दूसरे

مُقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَیْرِ

और बेड़ियों में जकड़े हुए[60] येह हमारी अ़त़ा है अब तू चाहे तो एह़सान कर[61] या रोक रख[62] तुझ पर कुछ

حِسَابٍ ﴿۳۹﴾ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰی وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾ وَ اذْكُرْ عَبْدَنَاۤ

ह़िसाब नहीं और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है और याद करो हमारे बन्दे

اَیُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الشَّیْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّ عَذَابٍ ﴿۴۱﴾ ؕ

अय्यूब को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैत़ान ने तक्लीफ़ और ईज़ा लगा दी[63]

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ﴿۴۲﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ

हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार[64] येह है ठन्डा चश्मा नहाने और पीने को[65] और हम ने उसे उस के घर वाले

وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَ ذِكْرٰی لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۴۳﴾ وَ خُذْ بِیَدِكَ

और उन के बराबर और अ़त़ा फ़रमा दिये अपनी रह़मत करने[66] और अ़क़्ल मन्दों की नसीह़त को और फ़रमाया कि अपने हाथ में

ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ لَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ

एक झाड़ू ले कर उस से मार दे[67] और क़सम न तोड़ बेशक हम ने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा[68] बेशक वोह बहुत

ع ۳ وقف لازم

55 : **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ इस्तिग़्फ़ार कर के اِنْ شَآءَ اللّٰہ कहने की भूल पर और ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में 56 : इस से येह मक़्सूद था कि ऐसा मुल्क आप के लिये मो'जिज़ा हो। 57 : फ़रमां बरदाराना त़रीक़े पर 58 : जो आप के हुक्म से ह़स्बे मरज़ी अ़जीबो ग़रीब इमारतें ता'मीर करता 59 : जो आप के लिये समुन्दर से मोती निकालता। दुन्या में सब से पहले समुन्दर से मोती निकलवाने वाले आप ही हैं। 60 : सरकश शैत़ान भी आप के मुसख़्ख़र कर दिये गए जिन को आप तादीब और फ़साद से रोकने के लिये बेड़ियों और ज़न्जीरों में जकड़वा कर क़ैद करते थे। 61 : जिस पर चाहे 62 : जिस किसी से चाहे या'नी आप को देने और न देने का इख़्तियार दिया गया जैसी मरज़ी हो करें। 63 : जिस्म और माल में, इस से आप का मरज़ और उस के शदाइद मुराद हैं। (इस वाक़िए का मुफ़स्सल बयान सूरए अम्बियाअ के रुकूअ़ छ[6] में गुज़र चुका है) 64 : चुनान्चे आप ने ज़मीन में पाउं मारा और उस से आबे शीरीं का एक चश्मा ज़ाहिर हुवा और आप से कहा गया : 65 : चुनान्चे आप ने उस से पिया और ग़ुस्ल किया और तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी मरज़ और तक्लीफ़ें दफ़्अ़ हो गईं। 66 : चुनान्चे मरवी है कि जो औलाद आप की मर चुकी थी **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और अपने फ़ज़्लो रह़मत से इतने ही और अ़त़ा फ़रमाए। 67 : अपनी बीबी को जिस

اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ

रुजूअ़ लाने वाला है और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब क़ुदरत और

وَالْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿۴۶﴾ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا

इ़ल्म वालों को[69] बेशक हम ने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वोह उस घर की याद है[70] और बेशक वोह हमारे नज़्दीक

لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۷﴾ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ

चुने हुए पसन्दीदा हैं और याद करो इस्माई़ल और यसअ़ और ज़ुल किफ़्ल को[71]

وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۸﴾ هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۹﴾

और सब अच्छे हैं येह नसीह़त है और बेशक[72] परहेज़ गारों का ठिकाना भला

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿۵۰﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا

बसने के बाग़ उन के लिये सब दरवाज़े खुले हुए उन में तक्या लगाए[73] उन में बहुत से

بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿۵۱﴾ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿۵۲﴾

मेवे और शराब मांगते हैं और उन के पास वोह बीबियां हैं कि अपने शोहर के सिवा और की त़रफ़ आंख नहीं उठातीं एक उ़म्र की[74]

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۵۳﴾ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ

येह है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ह़िसाब के दिन बेशक येह हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म

نَّفَادٍ ﴿۵۴﴾ هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿۵۵﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ

न होगा[75] उन को तो येह है[76] और बेशक सरकशों का बुरा ठिकाना जहन्नम कि उस में जाएंगे तो क्या ही

الْمِهَادُ ﴿۵۶﴾ هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿۵۷﴾ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ

बुरा बिछोना[77] उन को येह है तो इसे चखें खौलता पानी और पीप[78] और इसी शक्ल के

को सो ज़र्बें मारने की क़सम खाई थी देर से ह़ाज़िर होने के बाइ़स **68 :** या'नी अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام **69 :** जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने ह़िक्मते इ़ल्मिय्या व अ़मलिय्या अ़त़ा फ़रमाईं और अपनी मा'रिफ़त और त़ाआ़त पर क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई। **70 :** या'नी दारे आख़िरत की, कि वोह लोगों को उसी की याद दिलाते हैं और कसरत से उस का ज़िक्र करते हैं, मह़ब्बते दुन्या ने उन के क़ुलूब में जगह नहीं पाई। **71 :** या'नी उन के फ़ज़ाइल और उन के सब्र को ताकि उन की पाक ख़स्लतों से लोग नेकियों का ज़ौक़ो शौक़ ह़ासिल करें और ज़ुल किफ़्ल की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। **72 :** आख़िरत में **73 :** मुरस्सअ़ तख़्तों पर **74 :** या'नी सब सिन में बराबर ऐसे ही ह़ुस्न व जवानी में, आपस में मह़ब्बत रखने वाली, न एक को दूसरे से बुग़्ज़ न रश्क न ह़सद। **75 :** हमेशा बाक़ी रहेगा वहां जो चीज़ ली जाएगी और ख़र्च की जाएगी वोह अपनी जगह वैसी ही हो जाएगी, दुन्या की चीज़ों की त़रह फ़ना और नेस्तो नाबूद न होगी। **76 :** या'नी ईमान वालों को **77 :** भड़क्ने वाली आग, कि वोही फ़र्श होगी। **78 :** जो जहन्नमियों के जिस्मों और उन के सड़े हुए ज़ख़्मों और नजासत के मक़ामों से बहेगी जलती बदबूदार।

أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا

और जोड़े[79] उन से कहा जाएगा येह एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी[80] वोह कहेंगे इन को खुली जगह न मिलो आग में तो इन को

النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ

जाना ही है वहां भी तंग जगह में रहें ताबेअ़ बोले बल्कि तुम्हीं खुली जगह न मिलो येह मुसीबत तुम हमारे आगे लाए[81]

فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا

तो क्या ही बुरा ठिकाना[82] वोह बोले ऐ हमारे रब जो येह मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना

فِي النَّارِ ﴿٦١﴾ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

अ़ज़ाब बढ़ा और[83] बोले हमें क्या हुवा हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे[84]

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

क्या हम ने उन्हें हंसी बना लिया[85] या आंखें उन की त़रफ़ से फिर गईं[86] बेशक येह ज़रूर ह़क़ है

تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ

दोज़ख़ियों का बाहम झगड़ा तुम फ़रमाओ[87] मैं डर सुनाने वाला ही हूं[88] और मा'बूद कोई नहीं मगर एक

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ

अल्लाह सब पर ग़ालिब मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है साहि़बे इ़ज़्ज़त

الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِيَ

बड़ा बख़्शने वाला तुम फ़रमाओ वोह[89] बड़ी ख़बर है तुम उस से ग़फ़्लत में हो[90] मुझे

مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾ إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا

आ़लमे बाला की क्या ख़बर थी जब वोह झगड़ते थे[91] मुझे तो येही वह़्य होती है कि मैं नहीं मगर

79 : क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाब **80 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों के सरदार जहन्नम में दाख़िल होंगे और उन के पीछे पीछे उन की इत्तिबाअ़ करने वाले तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन सरदारों से कहेंगे, येह तुम्हारे मुत्तबिई़न की फ़ौज है जो तुम्हारी त़रह़ तुम्हारे साथ जहन्नम में धंसी पड़ती है। **81 :** कि तुम ने पहले कुफ़्र इख़्तियार किया और हमें इस राह पर चलाया। **82 :** या'नी जहन्नम निहायत ही बुरा ठिकाना है। **83 :** कुफ़्फ़ार के अ़माइद और सरदार (बड़े बड़े असरो रुसूख़ वाले) **84 :** या'नी ग़रीब मुसल्मानों को और उन्हें वोह अपने दीन का मुख़ालिफ़ होने के बाइ़स शरीर कहते थे और ग़रीब होने की वज्ह से ह़क़ीर समझते थे, जब कुफ़्फ़ार जहन्नम में उन्हें न देखेंगे तो कहेंगे वोह हमें क्यूं नज़र नहीं आते। **85 :** और दर ह़क़ीक़त वोह ऐसे न थे, दोज़ख़ में आए ही नहीं, हमारा उन के साथ इस्तिह्ज़ा करना और उन की हंसी बनाना बात़िल था। **86 :** इस लिये वोह हमें नज़र न आए या येह मा'ना हैं कि उन की त़रफ़ से आंखें फिर गईं और दुन्या में हम उन के मर्तबे और बुज़ुर्गी को न देख सके। **87 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मक्का के कुफ़्फ़ार से **88 :** तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता हूं। **89 :** या'नी कुरआन या क़ियामत या मेरा रसूले मुन्ज़िर होना या **अल्लाह** तआ़ला का وَاحِدٌ لَا شَرِیْکَ لَهٗ होना **90 :** कि

نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷۰﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿۷۱﴾

रोशन डर सुनाने वाला[92] जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊंगा[93]

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿۷۲﴾

फिर जब मैं उसे ठीक बना लूं[94] और उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकूं[95] तो तुम उस के लिये सज्दे में गिरना

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿۷۳﴾ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ

तो सब फ़िरिश्तों ने सज्दा किया एक एक ने कि कोई बाक़ी न रहा मगर इब्लीस ने[96] उस ने ग़ुरूर किया और वोह था

مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ

ही काफ़िरों में[97] फ़रमाया ऐ इब्लीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उस के लिये सज्दा करे जिसे मैं ने अपने

بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ

हाथों से बनाया क्या तुझे ग़ुरूर आ गया या तू था ही मग़रूरों में[98] बोला मैं इस से बेहतर हूं[99]

मुझ पर ईमान नहीं लाते और क़ुरआने पाक और मेरे दीन को नहीं मानते। 91 : या'नी फ़िरिश्ते ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बाब में। येह ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की एक दलील है। मुद्दआ़ येह है कि आ़लमे बाला में फ़िरिश्तों का ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाब में सुवाल व जवाब करना मुझे क्या मा'लूम होता अगर मैं नबी न होता, इस की ख़बर देना मेरी नुबुव्वत और मेरे पास वह़्य आने की दलील है। 92 : दारिमी और तिरमिज़ी की ह़दीसों में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं अपने बेहतरीन ह़ाल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा (ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में येह वाक़िआ ख़्वाब का है) हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَعَلٰى व तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) आ़लमे बाला के मलाएका किस बह़स में हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रब तू ही दाना है। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपना दस्ते रह़मत व करम मेरे दोनों शानों के दरमियान रखा और मैं ने उस के फ़ैज़ का असर अपने क़ल्बे मुबारक में पाया तो आस्मान व ज़मीन की तमाम चीज़ें मेरे इ़ल्म में आ गईं, फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : या मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या तुम जानते हो कि आ़लमे बाला के मलाएका किस अम्र में बह़स कर रहे हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : हां ! ऐ रब मैं जानता हूं, वोह कफ़्फ़ारात में बह़स कर रहे हैं और कफ़्फ़ारात येह हैं नमाज़ों के बा'द मस्जिद में ठहरना और पियादा पा जमाअ़तों के लिये जाना और जिस वक़्त सरदी वग़ैरा के बाइस पानी का इस्ति'माल ना गवार हो उस वक़्त अच्छी त़रह़ वुज़ू करना, जिस ने येह किया उस की ज़िन्दगी भी बेहतर और मौत भी बेहतर और गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ निकलेगा जैसा अपनी विलादत के दिन था। और फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) नमाज़ के बा'द येह दुआ़ किया करो ''اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ وَاِذَا اَرَدْتَّ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِيْ اِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ'' बा'ज़ रिवायतों में येह है कि ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ पर हर चीज़ रोशन हो गई और मैं ने पहचान ली और एक रिवायत में है कि जो कुछ मशरिक़ व मग़रिब में है सब मैं ने जान लिया। इमाम अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद इब्ने इब्राहीम बग़दादी मा'रूफ़ ब ख़ाज़िन अपनी तफ़्सीर में इस के मा'ना येह बयान फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का सीनए मुबारक खोल दिया और क़ल्बे शरीफ़ को मुनव्वर कर दिया और जो कोई न जाने उस सब की मा'रिफ़त आप को अ़त़ा कर दी ता आंकि आप ने ने'मत व मा'रिफ़त की सरदी अपने क़ल्बे मुबारक में पाई और जब क़ल्बे शरीफ़ मुनव्वर हो गया और सीनए पाक खुल गया तो जो कुछ आस्मानों और ज़मीनों में है ब ए'लामे इलाही जान लिया। 93 : या'नी (ह़ज़रत) आदम को पैदा करूंगा। 94 : या'नी उस की पैदाइश तमाम कर दूं 95 : और उस को ज़िन्दगी अ़त़ा कर दूं 96 : सज्दा न किया। 97 : या'नी इ़ल्मे इलाही में 98 : या'नी उस क़ौम में से जिन का शेवा ही तकब्बुर है। 99 : इस से उस की मुराद येह थी कि अगर आदम आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं इन्हें सज्दा न करता चे जाए कि इन से बेहतर हो कर इन्हें सज्दा करूं।

خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ

तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू रांधा

رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ

(ला'नत किया) गया[100] और बेशक तुझ पर मेरी ला'नत है क़ियामत तक[101] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى

ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[102] फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है उस

يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ اِلَّا

जाने हुए वक़्त के दिन तक[103] बोला तो तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा मगर

عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ لَاَمْلَئَنَّ

जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं फ़रमाया तो सच येह है और मैं सच ही फ़रमाता हूं बेशक मैं ज़रूर जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

भर दूंगा तुझ से[104] और उन में से[105] जितने तेरी पैरवी करेंगे सब से तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ

مِنْ اَجْرٍ وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

अज्र नहीं मांगता और मैं बनावट वालों में नहीं वोह तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान के लिये

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

और ज़रूर एक वक़्त के बा'द तुम उस की ख़बर जानोगे[106]

اٰياتها ٧٥ | ٣٩ سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ ٥٩ | رکوعاتها ٨

सूरए ज़ुमर मक्किय्या है, इस में पछत्तर आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़्म वाला[1]

---

100 : अपनी सरकशी व ना फ़रमानी व तकब्बुर के बाइस, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उस की सूरत बदल दी, वोह पहले ह़सीन था बद शक्ल रू सियाह कर दिया गया। और उस की नूरानिय्यत सल्ब कर दी गई। 101 : और क़ियामत के बा'द ला'नत भी और त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब भी 102 : आदम عَلَيْهِ السَّلَام और इन की ज़ुर्रिय्यत अपने फ़ना होने के बा'द जज़ा के लिये और इस से उस की मुराद येह थी कि वोह इन्सानों को गुमराह करने के लिये फ़राग़त पाए और इन से अपना बुग़्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाए क्यूं कि उठने के बा'द मौत नहीं है। 103 : या'नी नफ़्ख़ए ऊला तक जिस को ख़ल्क़ की फ़ना के लिये मुअ़य्यन फ़रमाया गया। 104 : मअ़ तेरी ज़ुर्रिय्यत के 105 : या'नी इन्सानों में से 106 : ह़ज़रते इब्ने

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ① اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ

किताब[2] उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिक्मत वाले की त़रफ़ से बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़[3] येह किताब

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ② اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ

ह़क़ के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे उस के बन्दे हो कर हां ख़ालिस अल्लाह ही की

الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا

बन्दगी है[4] और वोह जिन्हों ने उस के सिवा और वाली बना लिये[5] कहते हैं हम तो इन्हें[6] सिर्फ़ इतनी

لِيُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ

बात के लिये पूजते हैं कि येह हमें अल्लाह के पास नज़्दीक कर दें अल्लाह उन में फ़ैसला कर देगा उस बात का जिस में

يَخْتَلِفُوْنَ ؕ۬ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं[7] बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूटा बड़ा नाशुक्रा हो[8] अल्लाह अपने लिये

اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ

बच्चा बनाता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता[9] पाकी है उसे[10] वोही है

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ

एक अल्लाह[11] सब पर ग़ालिब उस ने आस्मान और ज़मीन ह़क़ बनाए रात को दिन

عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है[12] और उस ने चांद और सूरज को काम में लगाया हर एक एक

अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मौत के बा'द और एक क़ौल येह है कि क़ियामत के रोज़। 1 : "सूरए ज़ुमर" मक्किय्या है सिवा आयत "قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ" और आयत "اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ" के। इस सूरत में आठ रुकूअ़ और पछत्तर आयतें और एक हज़ार एक सो बहत्तर कलिमे और चार हज़ार नव सो आठ ह़र्फ़ हैं। 2 : किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है। 3 : ऐ सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم 4 : उस के सिवा कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं। 5 : मा'बूद ठहरा लिये। मुराद उन लोगों से बुत परस्त हैं। 6 : या'नी बुतों को 7 : ईमानदारों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर 8 : झूटा इस बात में कि बुतों को अल्लाह तआ़ला से नज़्दीक करने वाला बताए और ख़ुदा के लिये औलाद ठहराए और नाशुक्रा ऐसा कि बुतों को पूजे। 9 : या'नी अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह तआ़ला के लिये औलाद मुम्किन होती वोह जिसे चाहता औलाद बनाता न कि येह तज्वीज़ कुफ़्फ़ार पर छोड़ता कि वोह जिसे चाहें ख़ुदा की औलाद क़रार दें (معاذ اللہ) 10 : औलाद से और हर उस चीज़ से जो उस की शाने अक़्दस के लाइक़ नहीं। 11 : न उस का कोई शरीक न उस की कोई औलाद 12 : या'नी कभी रात की तारीकी से दिन के एक हिस्से को छुपाता है और कभी दिन की रोशनी से रात के हिस्से को। मुराद येह है कि कभी दिन का वक़्त घटा कर रात को बढ़ाता है कभी रात घटा कर दिन को ज़ियादा करता है और रात और दिन में से घटने वाला घटते घटते दस घन्टे का रह जाता है और बढ़ने वाला बढ़ते बढ़ते चौदह घन्टे का हो जाता है।

يَجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِیْزُ الْغَفَّارُ ۝۵ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

ठहराई मीआ़द के लिये चलता है[13] सुनता है वोही साहिबे इ़ज़्ज़त बख़्शने वाला है उस ने तुम्हें एक

وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِیَةَ

जान से बनाया[14] फिर उसी से उस का जोड़ा पैदा किया[15] और तुम्हारे लिये चौपायों से[16] आठ जोड़े

اَزْوَاجٍ ؕ یَخْلُقُكُمْ فِیْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِیْ ظُلُمٰتٍ

उतारे[17] तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक त़रह़ के बा'द और त़रह़[18] तीन अंधेरियों

ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝۶

में[19] येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब उसी की बादशाही है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं फिर कहां फेरे जाते हो[20]

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنْكُمْ ۫ وَ لَا یَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَ اِنْ

अगर तुम नाशुक्री करो तो बेशक **अल्लाह** बे नियाज़ है तुम से[21] और अपने बन्दों की नाशुक्री उसे पसन्द नहीं और अगर

تَشْكُرُوْا یَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

शुक्र करो तो उसे तुम्हारे लिये पसन्द फ़रमाता है[22] और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी[23] फिर तुम्हें अपने रब ही

مَّرْجِعُكُمْ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ

की त़रफ़ फिरना है[24] तो वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे[25] बेशक वोह दिलों की

الصُّدُوْرِ ۝۷ وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِیْبًا اِلَیْهِ ثُمَّ اِذَا

बात जानता है और जब आदमी को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है[26] अपने रब को पुकारता है उसी त़रफ़ झुका हुवा[27] फिर जब

خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِیَ مَا كَانَ یَدْعُوْۤا اِلَیْهِ مِنْ قَبْلُ وَ جَعَلَ لِلّٰهِ

अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई ने'मत दी तो भूल जाता है जिस लिये पहले पुकारा था[28] और **अल्लाह** के लिये बराबर वाले

---

13 : या'नी क़ियामत तक वोह अपने मुक़र्रर निज़ाम पर चलते रहेंगे। 14 : या'नी ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام से 15 : या'नी ह़ज़रते ह़व्वा को 16 : या'नी ऊंट, गाय, बकरी, भेड़ से 17 : या'नी पैदा किये। जोड़ों से मुराद नर और मादा हैं। 18 : या'नी नुत़्फ़ा फिर अ़लक़ह (ख़ूने बस्ता) फिर मुज़्ग़ा (गोश्त पारा) 19 : **एक** अंधेरी पेट की, **दूसरी** रह़िम की, **तीसरी** बच्चादान की। 20 : और त़रीक़े ह़क़ से दूर होते हो कि उस की इ़बादत छोड़ कर ग़ैर की इ़बादत करते हो। 21 : या'नी तुम्हारी त़ाअ़त व इ़बादत से और तुम ही उस के मोह़ताज हो, ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़्अ़ और काफ़िर हो जाने में तुम्हारा ही ज़रर है। 22 : कि वोह तुम्हारी काम्याबी का सबब है, इस पर तुम्हें सवाब देगा और जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा। 23 : या'नी कोई शख़्स दूसरे के गुनाह में माख़ूज़ न होगा। 24 : आख़िरत में 25 : दुन्या में और उस की तुम्हें जज़ा देगा। 26 : यहां आदमी से मुत़्लक़न काफ़िर या ख़ास अबू जह्ल या उ़त्बा बिन रबीआ़ मुराद है। 27 : उसी से फ़रियाद करता है। 28 : या'नी उस शिद्दत व तक्लीफ़ को फ़रामोश कर देता है जिस के लिये **अल्लाह** से फ़रियाद की थी।

اَنۡدَادًا لِّیُضِلَّ عَنۡ سَبِیۡلِهٖ ؕ قُلۡ تَمَتَّعۡ بِكُفۡرِكَ قَلِیۡلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنۡ

ठहराने लगता है[29] ताकि उस की राह से बहका दे तुम फ़रमाओ[30] थोड़े दिन अपने कुफ़्र के साथ बरत ले[31] बेशक तू

اَصۡحٰبِ النَّارِ ﴿۸﴾ اَمَّنۡ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّیۡلِ سَاجِدًا وَّ قَآئِمًا یَّحۡذَرُ

दोज़ख़ियों में है क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में[32] आख़िरत

الۡاٰخِرَةَ وَ یَرۡجُوۡا رَحۡمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلۡ هَلۡ یَسۡتَوِی الَّذِیۡنَ یَعۡلَمُوۡنَ وَ

से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए[33] क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और

الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ﴿۹﴾ قُلۡ یٰعِبَادِ

अन्जान नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं तुम फ़रमाओ ऐ मेरे बन्दो

الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوۡا رَبَّكُمۡ ؕ لِلَّذِیۡنَ اَحۡسَنُوۡا فِیۡ هٰذِهِ الدُّنۡیَا حَسَنَةٌ ؕ

जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्हों ने भलाई की[34] उन के लिये इस दुन्या में भलाई है[35]

وَ اَرۡضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوۡنَ اَجۡرَهُمۡ بِغَیۡرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾

और अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ है[36] साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती[37]

29 : या'नी ह़ाजत बरआरी के बा'द फिर बुत परस्ती में मुब्तला हो जाता है। **30 :** ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! इस काफ़िर से **31 :** और दुन्या की ज़िन्दगी के दिन पूरे कर ले **32 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की शान में नाज़िल हुई और ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह है कि ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द और ह़ज़रते अ़म्मार और ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के ह़क़ में नाज़िल हुई। **फ़ाएदा :** इस आयत से साबित हुवा कि रात के नवाफ़िल व इ़बादत दिन के नवाफ़िल से अफ़्ज़ल हैं इस की **एक** वज्ह तो येह है कि रात का अ़मल पोशीदा होता है इस लिये वोह रिया से बहुत दूर होता है। **दूसरे** येह कि दुन्या के कारोबार बन्द होते हैं इस लिये क़ल्ब ब निस्बत दिन के बहुत फ़ारिग़ होता है और तवज्जोह इलल्लाह और ख़ुशूअ़ दिन से ज़ियादा रात में मुयस्सर आता है। **तीसरे** रात चूंकि राह़त व ख़्वाब का वक़्त होता है इस लिये इस में बेदार रहना नफ़्स को बहुत मशक़्क़त व तअ़ब में डालता है तो सवाब भी इस का ज़ियादा होगा। **33 :** इस से साबित हुवा कि मोमिन के लिये लाज़िम है कि वोह बैनल ख़ौफ़ व रजा (ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान) हो, अपने अ़मल की तक़्सीर पर नज़र कर के अ़ज़ाब से डरता रहे और अल्लाह तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहे, दुन्या में बिल्कुल बे ख़ौफ़ होना या अल्लाह तआ़ला की रह़मत से मुत्लक़न मायूस होना, येह दोनों क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार की ह़ालतें बताई गई हैं قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: "فَلَا یَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ" وَقَالَ تَعَالٰی: "لَا یَایْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ" **34 :** ताअ़त बजा लाए और अच्छे अ़मल किये। **35 :** या'नी सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत **36 :** इस में हिजरत की तरग़ीब है कि जिस शह्र में मआ़सी की कसरत हो और वहां रहने से आदमी को अपनी दीनदारी पर क़ाइम रहना दुश्वार हो जाए चाहिये कि उस जगह को छोड़ दे और वहां से हिजरत कर जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुहाजिरीने ह़ब्शा के ह़क़ में नाज़िल हुई और येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब और उन के हमराहियों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुसीबतों और बलाओं पर सब्र किया और हिजरत की और अपने दीन पर क़ाइम रहे इस को छोड़ना गवारा न किया। **37 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़्न किया जाएगा सिवाए सब्र करने वालों के कि उन्हें बे अन्दाज़ा और बे ह़िसाब दिया जाएगा और येह भी मरवी है कि "अस्ह़ाबे मुसीबत व बला" ह़ाज़िर किये जाएंगे न उन के लिये मीज़ान क़ाइम की जाए न उन के लिये दफ़्तर खोले जाएं, उन पर अज्रो सवाब की बे ह़िसाब बारिश होगी यहां तक कि दुन्या में आ़फ़िय्यत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देख कर आरज़ू करेंगे कि काश वोह अहले मुसीबत में से होते और उन के जिस्म क़ैंचियों से काटे गए होते कि आज येह सब्र का अज्र पाते।

قُلۡ اِنِّیۡۤ اُمِرۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ اللّٰهَ مُخۡلِصًا لَّهُ الدِّیۡنَ ﴿۱۱﴾ وَ اُمِرۡتُ لِاَنۡ

तुम फ़रमाओ[38] मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजूं निरा उस का बन्दा हो कर और मुझे हुक्म है

اَکُوۡنَ اَوَّلَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ﴿۱۲﴾ قُلۡ اِنِّیۡۤ اَخَافُ اِنۡ عَصَیۡتُ رَبِّیۡ عَذَابَ

कि मैं सब से पहले गरदन रखूं[39] तुम फ़रमाओ बिलफ़र्ज़ अगर मुझ से ना फ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रब से एक

یَوۡمٍ عَظِیۡمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعۡبُدُ مُخۡلِصًا لَّهٗ دِیۡنِیۡ ﴿۱۴﴾ فَاعۡبُدُوۡا مَا

बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[40] तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूं निरा उस का बन्दा हो कर तो तुम उस के

شِئۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡخٰسِرِیۡنَ الَّذِیۡنَ خَسِرُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ وَ

सिवा जिसे चाहो पूजो[41] तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने

اَهۡلِیۡهِمۡ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الۡخُسۡرَانُ الۡمُبِیۡنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمۡ مِّنۡ

घर वाले क़ियामत के दिन हार बैठे[42] हां हां येही खुली हार है उन के

فَوۡقِهِمۡ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنۡ تَحۡتِهِمۡ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

ऊपर आग के पहाड़ हैं और उन के नीचे पहाड़[43] इस से अल्लाह डराता है अपने

عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوۡنِ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیۡنَ اجۡتَنَبُوا الطَّاغُوۡتَ اَنۡ یَّعۡبُدُوۡهَا

बन्दों को[44] ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो[45] और वोह जो बुतों की पूजा से बचे

وَ اَنَابُوۡۤا اِلَی اللّٰهِ لَهُمُ الۡبُشۡرٰی ۚ فَبَشِّرۡ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیۡنَ یَسۡتَمِعُوۡنَ

और अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ हुए उन्हीं के लिये ख़ुश ख़बरी है तो ख़ुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को जो कान लगा कर

الۡقَوۡلَ فَیَتَّبِعُوۡنَ اَحۡسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِیۡنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓئِكَ هُمۡ

बात सुनें फिर उस के बेहतर पर चलें[46] येह हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और येह हैं जिन को

38 : ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! **39 :** और अहले ताअ़त व इख़्लास में मुक़द्दम व साबिक़ होउं। अल्लाह तआ़ला ने पहले इख़्लास का हुक्म दिया जो अ़मले क़ल्ब है, फिर इताअ़त या'नी आ'माले जवारेह़ का। चूं कि अह़कामे शरइय्या रसूल से ह़ासिल होते हैं, वोही उन के पहुंचाने वाले हैं तो वोह उन के शुरूअ़ करने में सब से मुक़द्दम और अव्वल हुए। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को येह हुक्म दे कर तम्बीह की, कि दूसरों पर इस की पाबन्दी निहायत ज़रूरी है और दूसरों की तरग़ीब के लिये नबी عَلَیْہِ السَّلَام को येह हुक्म दिया गया **40** **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे कुरैश ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि आप अपनी क़ौम के सरदारों और अपने रिश्तेदारों को नहीं देखते जो लात व उ़ज़्ज़ा की परस्तिश करते हैं, उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **41 :** ब त़रीक़े तहदीद व तौबीख़ फ़रमाया। **42 :** या'नी गुमराही इख़्तियार कर के हमेशा के लिये मुस्तह़िक़्क़े जहन्नम हो गए और जन्नत की उन ने'मतों से महरूम हो गए जो ईमान लाने पर उन्हें मिलतीं। **43 :** या'नी हर त़रफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। **44 :** कि ईमान लाएं और मम्नूआ़त से बचें। **45 :** वोह काम न करो जो मेरी नाराज़ी का सबब हो। **46 :** जिस में उन की बेहबूद हो।

أُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ

अ़क़्ल है[47] तो क्या वोह जिस पर अ़ज़ाब की बात साबित हो चुकी नजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत दे कर

مَنْ فِي النَّارِ ﴿۱۹﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا

आग के मुस्तहिक़ को बचा लोगे[48] लेकिन जो अपने रब से डरे[49] उन के लिये बालाख़ाने हैं उन पर

غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ

बालाख़ाने बने[50] उन के नीचे नहरें बहें अल्लाह का वा'दा अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़

الْمِيْعَادَ ﴿۲۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي

नहीं करता क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा फिर उस से ज़मीन में

الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ

चश्मे बनाए फिर उस से खेती निकालता है कई रंगत की[51] फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वोह[52]

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۲۱﴾ ع

पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है बेशक इस में ध्यान की बात है अ़क़्ल मन्दों को[53]

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ

तो क्या वोह जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया[54] तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है[55] उस जैसा हो जाएगा

لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۲﴾ اَللّٰهُ نَزَّلَ

जो संगदिल है तो ख़राबी है उन की जिन के दिल यादे ख़ुदा की त़रफ़ से सख़्त हो गए हैं[56] वोह खुली गुमराही में हैं अल्लाह ने उतारी

47 शाने नुज़ूल : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ईमान लाए तो आप के पास ह़ज़रते उ़स्मान और अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने औ़फ़ और त़ल्ह़ा व ज़ुबैर व सा'द बिन अबी वक़्क़ास व सईद बिन ज़ैद आए और उन से ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन्हों ने अपने ईमान की ख़बर दी, येह ह़ज़रात भी सुन कर ईमान ले आए, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई "فَبَشِّرْ عِبَادِ......الآية"। **48 :** जो अज़ली बद बख़्त और इ़ल्मे इलाही में जहन्नमी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मुराद इस से अबू लहब और उस के लड़के हैं। **49 :** और उन्हों ने अल्लाह तआ़ला की फ़रमां बरदारी की **50 :** या'नी जन्नत के मनाज़िले रफ़ीआ़ जिन के ऊपर और अरफ़अ़ मनाज़िल हैं। **51 :** ज़र्द, सब्ज़, सुर्ख़, सफ़ेद, क़िस्म क़िस्म की गेहूं जव और त़रह़ त़रह़ के ग़ल्ले। **52 :** सर सब्ज़ो शादाब होने के बा'द **53 :** जो इस से अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत व क़ुदरत पर दलीलें क़ाइम करते हैं। **54 :** और उस को क़बूले ह़क़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। **55 :** या'नी यक़ीन व हिदायत पर। **ह़दीस :** रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने जब येह आयत तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) सीने का खुलना किस त़रह़ होता है ? फ़रमाया कि जब नूर क़ल्ब में दाख़िल होता है तो वोह खुलता है और उस में वुस्अ़त होती है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : इस की क्या अ़लामत है ? फ़रमाया : दारुल ख़ुलूद (हमेशा रहने वाले घर जन्नत) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना और दारुल ग़ुरूर (फ़ना होने वाले घर या'नी दुन्या से) दूर रहना और मौत के लिये उस के आने से क़ब्ल आमादा होना। **56 :** नफ़्स जब ख़बीस होता है तो क़बूले ह़क़ से उस को बहुत दूरी हो जाती है और ज़िक्रुल्लाह के सुनने से उस की सख़्ती और कदूरत बढ़ती है, जैसे कि आफ़्ताब की गरमी से मोम नर्म होता है और नमक सख़्त होता है ऐसे ही ज़िक्रुल्लाह से मोमिनीन के क़ुलूब नर्म

اَحۡسَنَ الۡحَدِيۡثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُوۡدُ الَّذِيۡنَ

सब से अच्छी किताब[57] कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है[58] दोहरे बयान वाली[59] इस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो

يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ۚ ثُمَّ تَلِيۡنُ جُلُوۡدُهُمۡ وَقُلُوۡبُهُمۡ اِلٰى ذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की त़रफ़ रग़बत में[60] येह

هُدَى اللّٰهِ يَهۡدِيۡ بِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿۲۳﴾

अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए उसे जिसे चाहे और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं

اَفَمَنۡ يَّتَّقِيۡ بِوَجۡهِهٖ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ وَقِيۡلَ لِلظّٰلِمِيۡنَ

तो क्या वोह जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब की ढाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा[61] नजात वाले की त़रह़ हो जाएगा[62]

ذُوۡقُوۡا مَا كُنۡتُمۡ تَكۡسِبُوۡنَ ﴿۲۴﴾ كَذَّبَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَاَتٰىهُمُ

और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो[63] इन से अगलों ने झुटलाया[64] तो उन्हें

الۡعَذَابُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۲۵﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الۡخِزۡيَ فِي الۡحَيٰوةِ

अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़बर न थी[65] और **अल्लाह** ने उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में रुस्वाई का मज़ा

الدُّنۡيَا ۚ وَلَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ ۘ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۶﴾ وَلَقَدۡ ضَرَبۡنَا

वقف لازم

चखाया[66] और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से बड़ा क्या अच्छा था अगर वोह जानते[67] और बेशक हम ने

لِلنَّاسِ فِيۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۲۷﴾ ۚ قُرۡاٰنًا

लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की कहावत बयान फ़रमाई कि किसी त़रह़ उन्हें ध्यान हो[68] अ़रबी ज़बान

होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सख़्ती और बढ़ती है। **फ़ाएदा :** इस आयत से उन लोगों को इब्रत पकड़ना चाहिये जिन्हों ने ज़िक्रुल्लाह को रोकना अपना शिआ़र बना लिया है, वो सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मन्अ़ करते हैं, नमाज़ों के बा'द ज़िक्रुल्लाह करने वालों को भी रोकते और मन्अ़ करते हैं, ईसाले सवाब के लिये कुरआने करीम और कलिमा पढ़ने वालों को भी बिद्अ़ती बताते हैं और इन ज़िक्र की मह़फ़िलों से निहायत घबराते और भागते हैं। **अल्लाह** तआ़ला हिदायत दे। **57 :** कुरआन शरीफ़, जो इबारत में ऐसा फ़सीह़ो बलीग़ कि कोई कलाम इस से कुछ निस्बत ही नहीं रख सकता, मज़मून निहायत दिल पज़ीर, बा वुजूदे कि न नज़्म है न शे'र निराले ही उस्लूब पर है और मा'ना में ऐसा बुलन्द मर्तबा कि तमाम उ़लूम का जामेअ़ और मा'रिफ़ते इलाही जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत का रहनुमा। **58 :** हुस्नो ख़ूबी में **59 :** कि इस में वा'दा के साथ वईद और अम्र के साथ नही और अख़्बार के साथ अह़काम हैं। **60 :** ह़ज़रते क़तादा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि येह औलियाउल्लाह की सिफ़त है कि ज़िक्रे इलाही से उन के बाल खड़े होते जिस्म लरज़ते हैं और दिल चैन पाते हैं। **61 :** वोह काफ़िर है जिस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाएंगे और उस की गरदन में गन्धक का एक जलता हुवा पहाड़ पड़ा होगा जो उस के चेहरे को भूने डालता होगा, इस ह़ाल से औंधा कर के आतशे जहन्नम में गिराया जाएगा। **62 :** या'नी उस मोमिन की त़रह़ जो अ़ज़ाब से मामून व मह़फ़ूज़ हो। **63 :** या'नी दुन्या में जो कुफ़्र व सरकशी इख़्तियार की थी अब उस का वबाल व अ़ज़ाब बरदाश्त करो। **64 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से पहले काफ़िरों ने रसूलों को झुटलाया **65 :** अ़ज़ाब आने का ख़त़रा भी न था, ग़फ़्लत में पड़े हुए थे। **66 :** किसी क़ौम की सूरतें मस्ख़ कीं किसी को ज़मीन में धंसाया। **67 :** और ईमान ले आते तक्ज़ीब न करते। **68 :** और वोह नसीहत क़बूल करें।

عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

का कुरआन[69] जिस में अस्लन कजी नहीं[70] कि कहीं वोह डरें[71] अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है[72] एक गुलाम

فِيهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

में कई बद खू आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का क्या इन दोनों का हाल

مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

एक सा है[73] सब ख़ूबियां अल्लाह को[74] बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते[75] बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और इन को

مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

भी मरना है[76] फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे[77]

69 : ऐसा फ़सीह जिस ने फुसहा व बुलग़ा को आजिज़ कर दिया 70 : या'नी तनाकुज़ व इख़्तिलाफ़ से पाक। 71 : और कुफ़्र व तक्ज़ीब से बाज़ आएं। 72 : मुश्रिक और मुवह्हिद की 73 : या'नी एक जमाअ़त का गुलाम निहायत परेशान होता है कि हर एक आक़ा उसे अपनी त़रफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है, वोह हैरान है कि किस का हुक्म बजा लाए और किस त़रह़ तमाम आक़ाओं को राज़ी करे और ख़ुद उस गुलाम को जब कोई ह़ाजत व ज़रूरत पेश हो तो किस आक़ा से कहे, ब ख़िलाफ़ उस गुलाम के जिस का एक ही आक़ा हो वोह उस की ख़िदमत कर के उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई ह़ाजत पेश आए तो उसी से अ़र्ज़ कर सकता है, उस को कोई परेशानी पेश नहीं आती। येह ह़ाल मोमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है, उसी की इ़बादत करता है और मुश्रिक जमाअ़त के गुलाम की त़रह़ है कि उस ने बहुत से मा'बूद क़रार दे दिये हैं। 74 : जो अकेला है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। 75 : कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं। 76 : इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते थे, उन्हें फ़रमाया गया कि ख़ुद मरने वाले हो कर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना ह़माक़त है, कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ह़यात अ़त़ा फ़रमाई जाती है। इस पर बहुत सी शरई बुरहानें क़ाइम हैं। 77 : अम्बिया उम्मत पर हुज्जत क़ाइम करेंगे कि उन्हों ने रिसालत की तब्लीग़ की और दीन की दा'वत देने में जोहदे बलीग़ सर्फ़ फ़रमाई और काफ़िर बे फ़ाएदा मा'ज़िरतें पेश करेंगे। येह भी कहा गया है कि मुराद इख़्तिसामे आ़म है कि लोग दुन्यवी हुक़ूक़ में मुख़ासमा करेंगे और हर एक अपना ह़क़ त़लब करेगा।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे[78] और हक़ को झुटलाए[79] जब उस के पास आए

اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۲﴾ وَ الَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ

क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए[80] और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़

بِهٖۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۳۳﴾ لَهُمْ مَّا یَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا

की[81] येही डर वाले हैं उन के लिये है जो वोह चाहें अपने रब के पास नेकों का येही

الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۳۴﴾ ۚۖ لِیُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِیْ عَمِلُوْا وَ یَجْزِیَهُمْ

सिला है ताकि **अल्लाह** उन से उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्हों ने किया और उन्हें उन के सवाब का

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِیْ كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾ اَلَیْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ

सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर[82] जो वोह करते थे क्या **अल्लाह** अपने बन्दों को काफ़ी नहीं[83]

وَ یُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَ مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ

और तुम्हें डराते हैं उस के सिवा औरों से[84] और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उस की कोई हिदायत करने

هَادٍ ﴿۳۶﴾ ۚ وَ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَیْسَ اللّٰهُ بِعَزِیْزٍ ذِی

वाला नहीं और जिसे **अल्लाह** हिदायत दे उसे कोई बहकाने वाला नहीं क्या **अल्लाह** इ़ज़्ज़त वाला बदला लेने

انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾ وَ لَىٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ لَیَقُوْلُنَّ

वाला नहीं ?[85] और अगर तुम उन से पूछो आस्मान और ज़मीन किस ने बनाए ? तो ज़रूर कहेंगे

اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِیَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

अल्लाह ने[86] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जिन्हें तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो[87] अगर **अल्लाह** मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाना चाहे[88]

78 : और उस के लिये शरीक और औलाद क़रार दे 79 : या'नी कुरआन शरीफ़ को या रसूल عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत को। 80 : या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जो तौहीदे इलाही लाए। 81 : या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ या तमाम मोमिनीन 82 : या'नी उन की बदियों पर गिरिफ़्त न करे और नेकियों की बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए। 83 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये और एक क़िराअत में "عِبَادَهٗ" भी आया है इस सूरत में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मुराद हैं जिन के साथ उन की क़ौमों ने ईज़ा रसानी के इरादे किये **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रखा और उन की किफ़ायत फ़रमाई। 84 : या'नी बुतों से। **वाक़िआ़** येह था कि कुफ़्फ़ारे अ़रब ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को डराना चाहा और आप से कहा कि आप हमारे मा'बूदों या'नी बुतों की बुराई बयान करने से बाज़ आइये वरना वोह आप को नुक़्सान पहुंचाएंगे, हलाक कर देंगे या अ़क़्ल को फ़ासिद कर देंगे। 85 : बेशक वोह अपने दुश्मनों से इन्तिक़ाम लेता है। 86 : या'नी येह मुश्रिकीन ख़ुदाए क़ादिर, अ़लीम, ह़कीम की हस्ती के तो मुक़िर (मानने वाले) हैं और येह बात तमाम ख़ल्क़ के नज़्दीक मुसल्लम है और ख़ल्क़ की फ़ित़रत इस की शाहिद है और जो शख़्स आस्मानो ज़मीन के अ़जाइब में नज़र करे उस को यक़ीनी

هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ
तो क्या वोह उस की भेजी तक्लीफ़ टाल देंगे या वोह मुझ पर मेहर (रह़्म) फ़रमाना चाहे तो क्या वोह उस की मेहर (रह़्म) को रोक

رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِیَ اللّٰهُ ؕ عَلَیْهِ یَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ یٰقَوْمِ
रखेंगे[89] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** मुझे बस है[90] भरोसे वाले उस पर भरोसा करें तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम

اعْمَلُوْا عَلٰی مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ مَنْ یَّاْتِیْهِ
अपनी जगह काम किये जाओ[91] मैं अपना काम करता हूं[92] तो आगे जान जाओगे किस पर आता है

عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ یَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ
वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करेगा[93] और किस पर उतरता है अ़ज़ाब कि रह पड़ेगा[94] बेशक हम ने तुम पर येह

الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰی فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا
किताब लोगों की हिदायत को ह़क़ के साथ उतारी[95] तो जिस ने राह पाई तो अपने भले को[96] और जो बहका वोह

یَضِلُّ عَلَیْهَا ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۴۱﴾ ع اَللّٰهُ یَتَوَفَّی الْاَنْفُسَ
अपने ही बुरे को बहका[97] और तुम कुछ उन के ज़िम्मेदार नहीं[98] **अल्लाह** जानों को वफ़ात देता है

حِیْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰی عَلَیْهَا
उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक

الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ الْاُخْرٰۤی اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ
रखता है[99] और दूसरी[100] एक मीआ़द मुक़र्रर तक छोड़ देता है[101] बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं

त़ौर पर मा'लूम हो जाता है कि येह मौजूदात एक क़ादिर ह़कीम की बनाई हुई हैं। **अल्लाह** तआ़ला अपने नबी عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म देता है कि आप उन मुश्रिकीन पर हुज्जत क़ाइम कीजिये चुनान्चे फ़रमाता है : **87** : या'नी बुतों को। येह भी तो देखो कि वोह कुछ भी क़ुदरत रखते हैं और किसी काम भी आ सकते हैं। **88** : किसी त़रह़ की मरज़ की या क़ह़त़ की या नादारी की या और कोई **89** : जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन से येह सुवाल फ़रमाया तो वोह ला जवाब हुए और साकित रह गए, अब हुज्जत तमाम हो गई और उन के सुकूती इक़्रार से साबित हो गया कि बुत मह़ज़ बे क़ुदरत हैं, न कोई नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं न कुछ ज़रर, इन की इ़बादत करना निहायत ही जहालत है। इस लिये **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया **90** : मेरा उसी पर भरोसा है और जिस का **अल्लाह** तआ़ला पर भरोसा हो वोह किसी से भी नहीं डरता, तुम जो मुझे बुत जैसी बे क़ुदरत व बे इख़्तियार चीज़ों से डराते हो येह तुम्हारी निहायत ही बे वुक़ूफ़ी व जहालत है। **91** : और जो जो मक्र व ह़ीले तुम से हो सकें, मेरी अ़दावत में सब ही कर गुज़रो। **92** : जिस पर मामूर हूं या'नी दीन का क़ाइम करना और **अल्लाह** तआ़ला मेरा मुईन व नासिर है और उसी पर मेरा भरोसा है। **93** : चुनान्चे, रोज़े बद्र वोह रुस्वाई के अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। **94** : या'नी दाइम होगा और वोह अ़ज़ाबे जहन्नम है। **95** : ताकि इस से हिदायत ह़ासिल करें। **96** : कि इस राहयाबी का नफ़्अ़ वोही पाएगा। **97** : उस की गुमराही का ज़रर और वबाल उसी पर पड़ेगा। **98** : तुम से उन की तक़्सीर का मुआख़ज़ा न होगा। **99** : या'नी उस जान को उस के जिस्म की त़रफ़ वापस नहीं करता **100** : जिस की मौत मुक़द्दर नहीं फ़रमाई उस को **101** : या'नी उस की मौत के वक़्त तक।

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَلَوْ

सोचने वालों के लिये[102] क्या उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं[103] तुम फ़रमाओ क्या अगर्चे

كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ

वोह किसी चीज़ के मालिक न हों[104] और न अ़क्ल रखें तुम फ़रमाओ शफ़ाअ़त तो सब अल्लाह के हाथ में है[105]

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَ اِذَا ذُكِرَ

उसी के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही फिर तुम्हें उसी की त़रफ़ पलटना है[106] और जब एक

اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اِذَا

अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उन के जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[107] और जब

ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ

उस के सिवा औरों का ज़िक्र होता है[108] जभी वोह ख़ुशियां मनाते हैं तुम अ़र्ज़ करो ऐ अल्लाह आस्मानों

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

और ज़मीन के पैदा करने वाले निहां (पोशीदा) और इयां (ज़ाहिर) के जानने वाले तू अपने बन्दों में फ़ैसला

عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي

फ़रमाएगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ रखते थे[109] और अगर ज़ालिमों के लिये होता जो कुछ

الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ

ज़मीन में है सब और इस के साथ उस जैसा[110] तो येह सब छुड़ाई में देते रोज़े क़ियामत के बड़े

الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَبَدَا لَهُمْ

अ़ज़ाब से[111] और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी[112] और उन पर अपनी

102 : जो सोचें और समझें कि जो इस पर क़ादिर है वोह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **103 :** या'नी बुत जिन की निस्बत वोह कहते थे कि येह अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ़ हैं। **104 :** न शफ़ाअ़त के न और किसी चीज़ के **105 :** जो उस का माज़ून (इजाज़त दिया गया) हो वोही शफ़ाअ़त कर सकता है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहे शफ़ाअ़त का इज़्न देता है, बुतों को उस ने शफ़ीअ़ नहीं बनाया और इबादत तो ख़ुदा के सिवा किसी की भी जाइज़ नहीं शफ़ीअ़ हो या न हो। **106 :** आख़िरत में। **107 :** और वोह बहुत तंगदिल और परेशान होते हैं और ना गवारी का असर उन के चेहरों पर ज़ाहिर हो जाता है। **108 :** या'नी बुतों का **109 :** या'नी अम्रे दीन में। इब्ने मुसय्यब से मन्क़ूल है कि येह आयत पढ़ कर जो दुआ़ मांगी जाए क़बूल होती है। **110 :** या'नी अगर बिलफ़र्ज़ काफ़िर तमाम दुन्या के अम्वाल व ज़ख़ाइर के मालिक होते और इतना ही और भी उन के मिल्क में होता **111 :** कि किसी त़रह़ येह अम्वाल दे कर उन्हें इस अ़ज़ाबे अ़ज़ीम से रिहाई मिल जाए। **112 :** या'नी ऐसे ऐसे अ़ज़ाबे शदीद जिन का उन्हें ख़याल भी न था, और इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि वोह गुमान करते होंगे कि उन के पास नेकियां हैं और जब नामए आ'माल खुलेंगे तो बदियां ज़ाहिर होंगी।

سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ

कमाई हुई बुराइयां खुल गईं[113] और उन पर आ पड़ा वोह जिस की हंसी बनाते थे[114] फिर जब आदमी

الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ

को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई ने'मत अ़ता फ़रमाएं कहता है येह तो मुझे एक इल्म की

عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا

बदौलत मिली है[115] बल्कि वोह तो आज़्माइश है[116] मगर उन में बहुतों को इल्म नहीं[117] उन से अगले

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ

भी ऐसे ही कह चुके[118] तो उन का कमाया उन के कुछ काम न आया तो उन पर पड़ गईं

سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

उन की कमाइयों की बुराइयां[119] और वोह जो उन में ज़ालिम हैं अ़न्क़रीब उन पर पड़ेंगी उन की

مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

कमाइयों की बुराइयां और वोह क़ाबू से नहीं निकल सकते[120] क्या उन्हें मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** रोज़ी कुशादा

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की[121] **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَ

न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है[122] बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है और

113 : जो उन्हों ने दुन्या में की थीं, **अल्लाह** तआ़ला के साथ शरीक करना और उस के दोस्तों पर ज़ुल्म करना वग़ैरा। 114 : या'नी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़बर देने पर, वोह जिस अ़ज़ाब की हंसी बनाया करते थे वोह नाज़िल हो गया और उस में घिर गए। 115 : या'नी मैं मआ़श का जो इल्म रखता हूं उस के ज़रीए से मैं ने येह दौलत कमाई जैसा कि क़ारून ने कहा था। 116 : या'नी येह ने'मत **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आज़्माइश व इम्तिहान है कि बन्दा इस पर शुक्र करता है या नाशुक्री। 117 : कि येह ने'मत व अ़ता इस्तिद्राज (मोहलत) व इम्तिहान है। 118 : या'नी येह बात क़ारून ने भी कही थी कि येह दौलत मुझे अपने इल्म की बदौलत मिली और उस की क़ौम उस की इस बेहूदा गोई पर राज़ी रही थी तो वोह भी क़ाइलों में शुमार हुई। 119 : या'नी जो बदियां उन्हों ने की थीं उन की सज़ाएं। 120 : चुनान्चे वोह सात बरस क़ह़त़ की मुसीबत में मुब्तला रखे गए। 121 : गुनाहों और मा'सियतों में मुब्तला हो कर। 122 : उस के जो कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन में से चन्द आदमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने हुज़ूर से अ़र्ज़ किया कि आप का दीन तो बेशक ह़क़ और सच्चा है लेकिन हम ने बड़े बड़े गुनाह किये हैं बहुत सी मा'सियतों में मुब्तला रहे हैं क्या किसी त़रह

اَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا
अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ[123] और उस के हुज़ूर गरदन रखो[124] क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी

تُنْصَرُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ
मदद न हो और उस की पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी त़रफ़ उतारी गई[125] क़ब्ल इस के

اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ
कि अ़ज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो[126] कि कहीं कोई जान येह न कहे

يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾
कि हाए अफ़्सोस उन तक़्सीरों पर जो मैं ने अल्लाह के बारे में कीं[127] और बेशक मैं हंसी बनाया करता था[128]

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۵۷﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ
या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता या कहे जब

تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ بَلٰى قَدْ
अ़ज़ाब देखे किसी त़रह़ मुझे वापसी मिले[129] कि मैं नेकियां करूं[130] हां क्यूं नहीं बेशक

جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۹﴾ وَ
तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तू ने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िर था[131] और

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ
क़ियामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्हों ने अल्लाह पर झूट बांधा[132] कि उन के मुंह काले हैं

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا
क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं[133] और अल्लाह बचाएगा परहेज़ गारों को

हमारे वोह गुनाह मुआ़फ़ हो सकते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **123 :** ताइब हो कर। **124 :** और इख़्लास के साथ त़ाअ़त बजा लाओ। **125 :** वोह अल्लाह की किताब कु़रआने मजीद है। **126 :** तुम ग़फ़्लत में पड़े रहो। इस लिये चाहिये कि पहले से होशियार रहो। **127 :** कि उस की इत़ाअ़त बजा न लाया और उस के ह़क़ को न पहचाना और उस की रिज़ाजूई की फ़िक्र न की। **128 :** अल्लाह तआ़ला के दीन की और उस की किताब की। **129 :** और दोबारा दुन्या में जाने का मौक़अ़ दिया जाए **130 :** इन बात़िल उ़ज़्रों का जवाब अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से वोह है जो अगली आयत में इर्शाद होता है। **131 :** या'नी तेरे पास कु़रआने पाक पहुंचा और ह़क़ व बात़िल की राहें वाज़ेह़ कर दी गईं और तुझे ह़क़ व हिदायत इख़्तियार करने की कु़दरत दी गई, बा वुजूद इस के तू ने ह़क़ को छोड़ा और उस को क़बूल करने से तकब्बुर किया गुमराही इख़्तियार की, जो हुक्म दिया गया उस की ज़िद व मुख़ालफ़त की, तो अब तेरा येह कहना ग़लत़ है कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता और तेरे तमाम उ़ज़्र झूटे हैं। **132 :** और शाने इलाही में ऐसी बात कही जो उस के लाइक़ नहीं, उस के लिये शरीक तज्वीज़ किये, औलाद बताई, उस की सिफ़ात का इन्कार किया, इस का नतीजा येह है **133 :** जो बराहे तकब्बुर ईमान न लाए।

بِمَفَازَتِهِمْ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ

उन की नजात की जगह[134] न उन्हें अ़ज़ाब छूए और न उन्हें ग़म हो **अल्लाह** हर चीज़ का पैदा करने

شَيْءٍ ۡ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ

वाला है और वोह हर चीज़ का मुख़्तार है उसी के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع قُلْ

ज़मीन की कुन्जियां[135] और जिन्हों ने **अल्लाह** की आयतों का इन्कार किया वोही नुक़्सान में हैं तुम फ़रमाओ[136]

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَ

तो क्या **अल्लाह** के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो[137] और बेशक वह्य की गई तुम्हारी त़रफ़ और

اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ

तुम से अगलों की त़रफ़ कि ऐ सुनने वाले अगर तू ने **अल्लाह** का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू

مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا

हार में रहेगा बल्कि **अल्लाह** ही की बन्दगी कर और शुक्र वालों से हो[138] और उन्हों ने **अल्लाह** की क़द्र

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

न की जैसा कि उस का ह़क़ था[139] और वोह क़ियामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा और उस की क़ुदरत से

مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ

सब आस्मान लपेट दिये जाएंगे[140] और उन के शिर्क से पाक और बरतर है और सूर फूंका जाएगा

134 : उन्हें जन्नत अ़ता फ़रमाएगा। 135 : या'नी ख़ज़ाइने रह़मत व रिज़्क़ व बारिश वग़ैरा की कुन्जियां उसी के पास हैं, वोही इन का मालिक है। येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस आयत की तफ़्सीर दरयाफ़्त की तो फ़रमाया कि मक़ालीदे समावातो अर्द़ (आस्मान व ज़मीन की कुन्जियां) येह हैं : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَهُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ" मुराद येह है कि इन कलिमात में **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद व तम्जीद है, येह आस्मान व ज़मीन की भलाइयों की कुन्जियां हैं जिस मोमिन ने येह कलिमे पढ़े दारैन की बेहतरी पाएगा। 136 : ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! इन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से जो आप को अपने दीन या'नी बुत परस्ती की त़रफ़ बुलाते हैं। 137 : जाहिल इस वासित़े फ़रमाया कि उन्हें इतना भी मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं बा वुजूदे कि इस पर क़त़्ई दलीलें क़ाइम हैं। 138 : जो ने'मतें **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ को अ़त़ा फ़रमाईं उस की त़ाअ़त बजा ला कर उन की शुक्र गुज़ारी कर। 139 : जभी तो शिर्क में मुब्तला हुए अगर अ़ज़्मते इलाही से वाक़िफ़ होते और उस का मर्तबा पहचानते तो ऐसा क्यूं करते। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मतो जलाल का बयान है। 140 : ह़दीसे बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला आस्मानों को लपेट कर अपने दस्ते क़ुदरत में लेगा, फिर फ़रमाएगा : मैं हूं बादशाह, कहां हैं जब्बार, कहां हैं मुतकब्बिर, मुल्क व ह़ुकूमत के दा'वेदार, फिर ज़मीनों को लपेट कर अपने दूसरे दस्ते मुबारक में लेगा और येही फ़रमाएगा, फिर फ़रमाएगा : मैं हूं बादशाह कहां हैं ज़मीन के बादशाह।

فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ

तो बेहोश हो जाएंगे[141] जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे **अल्लाह** चाहे[142] फिर

نُفِخَ فِيهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ

वोह दोबारा फूंका जाएगा[143] जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे[144] और ज़मीन जगमगा उठेगी[145]

بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِآْىءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ

अपने रब के नूर से[146] और रखी जाएगी किताब[147] और लाए जाएंगे अम्बिया और येह नबी और इस की उम्मत कि उन पर गवाह होंगे[148] और लोगों में

بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَ

सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उन पर जुल्म न होगा और हर जान को उस का किया भरपूर दिया जाएगा और

هُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ

उसे खूब मा'लूम है जो वोह करते थे[149] और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे[150] गुरौह गुरौह[151]

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उस के दरवाज़े खोले जाएंगे[152] और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे क्या तुम्हारे पास

141 : येह पहले नफ़्ख़े का बयान है, इस नफ़्ख़े से जो बेहोशी तारी होगी उस का येह असर होगा कि मलाएका और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे जिन पर मौत न आई होगी वोह इस से मर जाएंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर **अल्लाह** तआला ने उन्हें हयात इनायत की वोह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं जैसे कि अम्बिया व शुहदा उन पर इस नफ़्ख़े से बेहोशी की सी कैफ़िय्यत तारी होगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं उन्हें इस नफ़्ख़े का शुऊर भी न होगा। (جمل وغیرہ) 142 : इस इस्तिस्ना में कौन कौन दाख़िल है इस में मुफ़स्सिरीन के बहुत अक़्वाल हैं, हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि नफ़्ख़ए सइक़ से तमाम आस्मान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व मलकुल मौत के, फिर **अल्लाह** तआला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान जो चालीस बरस की मुद्दत है उस में इन फ़िरिश्तों को भी मौत देगा। **दूसरा** क़ौल येह है कि मुस्तस्ना शुहदा हैं जिन के लिये कुरआने मजीद में "بَلْ اَحْيَآءٌ" आया है। हदीस शरीफ़ में भी है कि वोह शुहदा हैं जो तलवारें हमाइल किये गिर्दे अर्श हाज़िर होंगे। **तीसरा** क़ौल हज़रते जाबिर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि मुस्तस्ना हज़रते मूसा علیہ السلام हैं, चूं कि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं इस लिये इस नफ़्ख़े से आप बेहोश न होंगे, बल्कि आप मुतयक़्क़िज़ (बेदार) व होशियार रहेंगे। **चौथा** क़ौल येह है कि मुस्तस्ना जन्नत की हूरें और अर्श व कुरसी के रहने वाले हैं। जुह्हाक का क़ौल है कि मुस्तस्ना रिज़्वान और हूरें और वोह फ़िरिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वोह और जहन्नम के सांप बिच्छू हैं। (تفسیر کبیر و جمل) 143 : येह नफ़्ख़ए सानिया है जिस से मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे। 144 : अपनी क़ब्रों से और देखते हुए खड़े होने से या तो येह मुराद है कि वोह हैरत में आ कर मब्हूत की तरह हर तरफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे या येह मा'ना हैं कि वोह येह देखते होंगे कि अब उन्हें क्या मुआमला पेश आएगा और मोमिनीन की क़ब्रों पर **अल्लाह** तआला की रहमत से सुवारियां हाज़िर की जाएंगी जैसा कि **अल्लाह** तआला ने वा'दा फ़रमाया है : "يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا" 145 : बहुत तेज़ रोशनी से यहां तक कि सुर्ख़ी की झलक नुमूदार होगी, येह ज़मीन दुन्या की ज़मीन न होगी बल्कि नई ही ज़मीन होगी जो **अल्लाह** तआला रोज़े क़ियामत की महफ़िल के लिये पैदा फ़रमाएगा। 146 : हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि येह चांद सूरज का नूर न होगा बल्कि येह और ही नूर होगा जिस को **अल्लाह** तआला पैदा फ़रमाएगा इस से ज़मीन रोशन हो जाएगी। (جمل) 147 : या'नी आ'माल की किताब, हिसाब के लिये इस से मुराद या तो लौहे महफ़ूज़ है जिस में दुन्या के जमीअ् अह्वाल क़ियामत तक शर्ह व बस्त् के साथ सब्त हैं या हर शख़्स का आ'माल नामा जो उस के हाथ में होगा। 148 : जो रसूलों की तब्लीग़ की गवाही देंगे। 149 : उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं न उस को शाहिद व कातिब की हाजत, येह सब हुज्जत तमाम करने के लिये होंगे। (جمل) 150 : सख़्ती के साथ क़ैदियों की तरह। 151 : हर हर जमाअत और उम्मत अलाहदा अलाहदा। 152 : या'नी जहन्नम के सातों दरवाज़े खोले जाएंगे जो पहले से बन्द थे।

رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَ يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम्हीं में से वोह रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते

هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۱﴾ قِيْلَ

थे कहेंगे क्यूं नहीं[153] मगर अज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा[154] फ़रमाया जाएगा

ادْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۲﴾

दाख़िल हो जहन्नम के दरवाज़ों में उस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का

وَ سِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْهَا وَ

और जो अपने रब से डरते थे उन की सुवारियां[155] गुरौह गुरौह जन्नत की त़रफ़ चलाई जाएंगी यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे और

فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَ قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا

उस के दरवाज़े खुले होंगे[156] और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ

خٰلِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا

हमेशा रहने और वोह कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَ

वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहां चाहें तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों का[157] और

تَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ

तुम फ़िरिश्तों को देखोगे अ़र्श के आस पास हल्क़ा किये अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते

وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ قِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۵﴾ ع

और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[158] और कहा जाएगा कि सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहान का रब[159]

153 : बेशक अम्बिया तशरीफ़ भी लाए और उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम भी सुनाए और इस दिन से भी डराया। **154 :** कि हम पर हमारी बद नसीबी ग़ालिब हुई और हम ने गुमराही इख़्तियार की और ह़स्बे इर्शादे इलाही जहन्नम में भरे गए। **155 :** इ़ज़्ज़तो एह़तिराम और लुत़्फ़ो करम के साथ **156 :** उन की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के लिये और जन्नत के दरवाज़े आठ हैं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी है कि दरवाज़ए जन्नत के क़रीब एक दरख़्त है उस के नीचे से दो चश्मे निकलते हैं, मोमिन वहां पहुंच कर एक चश्मे में ग़ुस्ल करेगा इस से उस का जिस्म पाको साफ़ हो जाएगा और दूसरे चश्मे का पानी पियेगा इस से उस का बात़िन पाकीज़ा हो जाएगा, फिर फ़िरिश्ते दरवाज़ए जन्नत पर इस्तिक़्बाल करेंगे। **157 :** या'नी **अल्लाह** और रसूल की इत़ाअ़त करने वालों का। **158 :** कि मोमिनों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल किया जाएगा। **159 :** अहले जन्नत जन्नत में दाख़िल हो कर अदाए शुक्र के लिये ह़म्दे इलाही अ़र्ज़ करेंगे।

اٰيَاتُهَا ٨٥ | ٤٠ سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ ٦٠ | رُكُوْعَاتُهَا ٩

सूरए मुअमिन मक्किय्या है, इस में पचासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ

येह किताब उतारना है **अल्लाह** की त़रफ़ से जो इ़ज़्ज़त वाला इ़ल्म वाला गुनाह बख़्शने वाला और

قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ

तौबा क़बूल करने वाला[2] सख़्त अ़ज़ाब करने वाला[3] बड़े इन्आ़म वाला[4] उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी की त़रफ़

الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ

फिरना है[5] **अल्लाह** की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर[6] तो ऐ सुनने वाले तुझे धोका न दे

تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ الْاَحْزَابُ مِنْۢ

इन का शहरों में अहले गहले फिरना[7] इन से पहले नूह़ की क़ौम और उन के बा'द के गुरौहों[8]

بَعْدِهِمْ ۪ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ

ने झुटलाया और हर उम्मत ने येह क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ लें[9] और बात़िल के साथ झगड़े

لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ

कि उस से ह़क़ को टाल दें[10] तो मैं ने उन्हें पकड़ा फिर कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब[11] और यूंही

1 : **"सूरए मुअमिन"** इस का नाम सूरए ग़ाफ़िर भी है, येह सूरत मक्किय्या है, सिवाए दो आयतों के जो "اَلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में नव रुकूअ़ और पचासी आयतें और एक हज़ार एक सो निनानवे कलिमे और चार हज़ार नव सो साठ हुरूफ़ हैं। 2 : ईमानदारों की। 3 : काफ़िरों पर। 4 : आरिफ़ों (अहले मा'रिफ़त) पर। 5 : बन्दों को आख़िरत में। 6 : या'नी कुरआने पाक में झगड़ा करना काफ़िर के सिवा मोमिन का काम नहीं। अबू दावूद की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कुरआन में झगड़ा करना कुफ़्र है। झगड़े और जिदाल से मुराद आयाते इलाहिय्यह में त़ा'न करना और तक्ज़ीब व इन्कार के साथ पेश आना है और ह़ल्ले मुश्किलात व कश्फ़े मो'ज़िलात के लिये इ़ल्मी व उसूली बह़्सें जिदाल नहीं बल्कि आ'ज़म त़ाआ़त में से हैं। कुफ़्फ़ार का झगड़ा करना आयात में येह था कि वोह कभी कुरआने पाक को सेह़्र कहते कभी शे'र कभी कहानत कभी दास्तान। 7 : या'नी काफ़िरों का सिह़्ह़तो सलामती के साथ मुल्क मुल्क तिजारतें करते फिरना और नफ़्अ़ पाना तुम्हारे लिये बाइ़से तरद्दुद न हो कि येह कुफ़्र जैसा अ़ज़ीम जुर्म करने के बा'द भी अ़ज़ाब से अम्न में रहे क्यूं कि इन का अन्जामे कार ख़्वारी और अ़ज़ाब है, पहली उम्मतों में भी ऐसे ह़ालात गुज़र चुके हैं। 8 : आ़द व समूद व क़ौमे लूत़ वग़ैरा 9 : और उन्हें क़त्ल और हलाक कर दें। 10 : जिस को अम्बिया लाए हैं। 11 : क्या उन में का कोई इस से बच सका।

حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾

तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वोह दोज़ख़ी हैं

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ

वोह जो अ़र्श उठाते हैं[12] और जो उस के गिर्द हैं[13] अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते[14] और

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ

उस पर ईमान लाते[15] और मुसल्मानों की मग़्फ़िरत मांगते हैं[16] ऐ रब हमारे तेरे रह़मत व इल्म में

رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَ قِهِمْ عَذَابَ

हर चीज़ की समाई है[17] तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले[18] और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से

الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ

बचा ले ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है और उन को जो नेक हों

مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٨﴾ۙ

उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में[19] बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

وَ قِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَ مَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ

और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तू ने उस पर रह़्म फ़रमाया और येही

هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾ؑ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ

बड़ी काम्याबी है बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया उन को निदा की जाएगी[20] कि ज़रूर तुम से **अल्लाह** की बेज़ारी इस से बहुत ज़ियादा है

مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١٠﴾ قَالُوْا رَبَّنَآ

जैसे तुम आज अपनी जान से बेज़ार हो जब कि तुम[21] ईमान की त़रफ़ बुलाए जाते तो तुम कुफ़्र करते कहेंगे ऐ हमारे रब

12 : या'नी मलाएका ह़ामिलीने अ़र्श जो अस्ह़ाबे क़ुर्ब और मलाएका में अशरफ़ व अफ़्ज़ल हैं। 13 : या'नी जो मलाएका कि अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले हैं उन्हें करूबी कहते हैं और येह मलाएका में साह़िबे सियादत (अ़ज़्मतो शरफ़ वाले) हैं। 14 : और "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" कहते। 15 : और उस की वह़्दानिय्यत की तस्दीक़ करते। शह्र बिन हौशब ने कहा कि ह़ामिलीने अ़र्श आठ हैं उन में से चार की तस्बीह़ येह है : "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ"। और चार की येह : "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ" 16 : और बारगाहे इलाही में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते हैं : 17 : या'नी तेरी रह़मत और तेरा इ़ल्म हर चीज़ को वसीअ़ है। **फ़ाएदा :** दुआ़ से पहले अ़र्ज़े सना से मा'लूम हुवा कि आदाबे दुआ़ में से येह है कि पहले **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना की जाए फिर मुराद अ़र्ज़ की जाए। 18 : या'नी दीने इस्लाम पर। 19 : उन्हें भी दाख़िल कर। 20 : रोज़े क़ियामत, जब कि वोह जहन्नम में दाख़िल होंगे और उन की बदियां उन पर पेश की जाएंगी और वोह अ़ज़ाब देखेंगे तो फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : 21 : दुन्या में।

اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَ اَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

तू ने हमें दो बार मुर्दा किया और दो बार ज़िन्दा किया[22] अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुए तो आग से

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١١﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَ

निकलने की भी कोई राह है[23] येह इस पर हुवा कि जब एक **अल्लाह** पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते[24] और

اِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ

उस का शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते[25] तो हुक्म **अल्लाह** के लिये है जो सब से बुलन्द बड़ा वोही है कि तुम्हें अपनी निशानियां

اٰيٰتِهٖ وَ يُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَ مَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾

दिखाता है[26] और तुम्हारे लिये आस्मान से रोज़ी उतारता है[27] और नसीहत नहीं मानता[28] मगर जो रुजूअ़ लाए[29]

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ رَفِيْعُ

तो **अल्लाह** की बन्दगी करो निरे उस के बन्दे हो कर[30] पड़े बुरा मानें काफ़िर बुलन्द दरजे

الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ

देने वाला[31] अ़र्श का मालिक ईमान की जान (या'नी) वह्य डालता है अपने हुक्म से अपने बन्दों में जिस पर चाहे[32]

لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ

कि वोह मिलने के दिन से डराए[33] जिस दिन वोह बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएंगे[34] **अल्लाह** पर उन का कुछ ह़ाल छुपा

شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى

न होगा[35] आज किस की बादशाही है[36] एक **अल्लाह** सब पर ग़ालिब की[37] आज हर जान

22 : क्यूं कि पहले नुत़्फ़ए बेजान थे, इस मौत के बा'द उन्हें जान दे कर ज़िन्दा किया फिर उ़म्र पूरी होने पर मौत दी फिर बअ़्स के लिये ज़िन्दा किया। 23 : इस का जवाब येह होगा कि तुम्हारे दोज़ख़ से निकलने की कोई सबील नहीं और तुम जिस ह़ाल में हो जिस अ़ज़ाब में मुब्तला हो इस से रिहाई की कोई राह नहीं पा सकते। 24 : या'नी इस अ़ज़ाब और इस के दवाम व ख़ुलूद (हमेशा रहने) का सबब तुम्हारा येह फ़े'ल है कि जब तौह़ीदे इलाही का ए'लान होता और "لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहा जाता तो तुम उस का इन्कार करते और कुफ़्र इख़्तियार करते। 25 : और उस शिर्क की तस्दीक़ करते। 26 : या'नी अपनी मस्नूआ़त के अ़जाइब जो उस के कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं मिस्ल हवा और बादल और बिजली वग़ैरा के। 27 : मींह बरसा कर। 28 : और इन निशानियों से पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाला) नहीं होता। 29 : तमाम उमूर में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ और शिर्क से ताइब हो। 30 : शिर्क से कनारा कश हो कर। 31 : अम्बिया व औलिया व उ़लमा को जन्नत में। 32 : या'नी अपने बन्दों में से जिस को चाहता है मन्सबे नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाता है और जिस को नबी बनाता है उस का काम होता है 33 : या'नी ख़ल्के ख़ुदा को रोज़े क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाए जिस दिन अहले आस्मान और अहले ज़मीन और अव्वलीनो आख़िरीन मिलेंगे और रूहें जिस्मों से और हर अ़मल करने वाला अपने अ़मल से मिलेगा। 34 : क़ब्रों से निकल कर और कोई इमारत या पहाड़ और छुपने की जगह और आड़ न पाएंगे। 35 : न आ'माल न अक़्वाल न दूसरे अह़वाल और **अल्लाह** तआ़ला से तो कोई चीज़ कभी नहीं छुप सकती लेकिन येह दिन ऐसा होगा कि उन लोगों के लिये कोई पर्दा और आड़ की चीज़ न होगी जिस के ज़रीए़ से वोह अपने ख़याल में भी अपने ह़ाल को छुपा सकें और ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा 36 : अब कोई न होगा कि जवाब दे ख़ुद ही जवाब में

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۷﴾

अपने किये का बदला पाएगी[38] आज किसी पर ज़ियादती नहीं बेशक **अल्लाह** जल्द हिसाब लेने वाला है

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ۬ مَا

और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से[39] जब दिल गलों के पास आ जाएंगे[40] ग़म में भरे और

لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ﴿۱۸﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا

ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए[41] **अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह[42] और जो कुछ

تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾ وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ

सीनों में छुपा है[43] और **अल्लाह** सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उस के सिवा जिन

دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۲۰﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا

को[44] पूजते हैं वोह कुछ फ़ैसला नहीं करते[45] बेशक **अल्लाह** ही सुनता देखता है[46] तो क्या उन्हों ने

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अन्जाम हुवा उन से अगलों का[47]

كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ

उन की क़ुव्वत और ज़मीन में जो निशानियां छोड़ गए[48] उन से ज़ाइद तो **अल्लाह** ने उन्हें

بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۲۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ

उन के गुनाहों पर पकड़ा और **अल्लाह** से उन का कोई बचाने वाला न हुवा[49] येह इस लिये कि उन

फ़रमाएगा कि **अल्लाह** वाहिदे क़हहार की और एक क़ौल येह है कि रोज़े क़ियामत जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन हाज़िर होंगे तो एक निदा करने वाला निदा करेगा, आज किस की बादशाही है ? तमाम ख़ल्क़ जवाब देगी : "لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ" **अल्लाह** वाहिदे क़हहार की, जैसा कि आगे इर्शाद होता है : **37 :** मोमिन तो येह जवाब बहुत लज़्ज़त के साथ अ़र्ज़ करेंगे क्यूं कि वोह दुन्या में येही ए'तिक़ाद रखते थे येही कहते थे और इसी की बदौलत उन्हें मर्तबे मिले और कुफ़्फ़ार ज़िल्लतो नदामत के साथ इस का इक़रार करेंगे और दुन्या में अपने मुन्किर रहने पर शरमिन्दा होंगे। **38 :** नेक अपनी नेकी का और बद अपनी बदी का। **39 :** इस से रोज़े क़ियामत मुराद है। **40 :** शिद्दते ख़ौफ़ से न बाहर ही निकल सकें न अन्दर ही अपनी जगह वापस जा सकें। **41 :** या'नी काफ़िर शफ़ाअ़त से महरूम होंगे। **42 :** या'नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और मम्नूआत पर नज़र डालना। **43 :** या'नी दिलों के राज़। सब चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला के इल्म में हैं। **44 :** या'नी जिन बुतों को येह मुश्रिकीन **45 :** क्यूं कि न वोह इल्म रखते हैं न क़ुदरत तो उन की इबादत करना और उन्हें ख़ुदा का शरीक ठहराना बहुत ही खुला बातिल है। **46 :** अपनी मख़्लूक़ के अक़्वाल व अफ़्आल और जुम्ला अहवाल को। **47 :** जिन्हों ने रसूलों की तक्ज़ीब की थी। **48 :** क़ल्ए और महल और नहरें और हौज़ और बड़ी बड़ी इमारतें। **49 :** कि अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता, आ़क़िल का काम है कि दूसरे के हाल से इब्रत हासिल करे। इस अ़हद (ज़माने) के काफ़िर येह हालात देख कर क्यूं इब्रत हासिल नहीं करते, क्यूं नहीं सोचते कि पिछली क़ौमें इन से ज़ियादा क़वी व तुवाना और साहिबे सरवत व इक़्तिदार होने के बा वुजूद इस इब्रत नाक त़रीक़े पर तबाह कर दी गईं, येह क्यूं हुवा।

تَأْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ

के पास उन के रसूल रोशन निशानियां ले कर आए[50] फिर वोह कुफ़्र करते तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा बेशक अल्लाह ज़बर दस्त सख़्त अ़ज़ाब

الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾ اِلٰى

वाला है और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ भेजा

فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

फ़िरऔ़न और हामान और क़ारून की त़रफ़ तो वोह बोले जादूगर है बड़ा झूटा[51] फिर जब वोह उन पर

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْۤا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا

हमारे पास से ह़क़ लाया[52] बोले जो इस पर ईमान लाए उन के बेटे क़त्ल करो और औ़रतें

نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْۤ

ज़िन्दा रखो[53] और काफ़िरों का दाव नहीं मगर भटक्ता फिरता[54] और फ़िरऔ़न बोला[55] मुझे छोड़ो

اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ

मैं मूसा को क़त्ल करूं[56] और वोह अपने रब को पुकारे[57] मैं डरता हूं कहीं वोह तुम्हारा दीन बदल दे[58] या

يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰۤى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ

ज़मीन में फ़साद चमकाए[59] और मूसा ने[60] कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं

50 : मो'जिज़ात दिखाते। 51 : और उन्हों ने हमारी निशानियों और बुरहानों को जादू बताया। 52 : या'नी नबी हो कर पयामे इलाही लाए तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी 53 : ताकि लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ़ से बाज़ आएं। 54 : कुछ भी कारआमद नहीं बिल्कुल निकम्मा और बेकार। पहले भी फ़िरऔ़नियों ने ब हुक्मे फ़िरऔ़न हज़ारहा क़त्ल किये मगर क़ज़ाए इलाही हो कर रही और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को परवरदगारे आ़लम ने फ़िरऔ़न के घरबार में पाला, इस से ख़िदमतें कराईं, जैसा वोह दाउं फ़िरऔ़नियों का बेकार गया ऐसे ही अब ईमान वालों को रोकने के लिये फिर दोबारा क़त्ल शुरूअ़ करना बेकार है। ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات के दीन का रवाज अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर है इसे कौन रोक सकता है। 55 : अपने गुरोह से 56 : फ़िरऔ़न जब कभी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल करने का इरादा करता तो उस की क़ौम के लोग उस को इस से मन्अ़ करते और कहते कि येह वोह शख़्स नहीं है जिस का तुझे अन्देशा है, येह तो एक मा'मूली जादूगर है इस पर तो हम अपने जादू से ग़ालिब आ जाएंगे और अगर इस को क़त्ल कर दिया तो आ़म लोग शुबे में पड़ जाएंगे कि वोह शख़्स सच्चा था ह़क़ पर था, तू दलील से उस का मुक़ाबला करने में आ़जिज़ हुवा जवाब न दे सका तो तू ने उसे क़त्ल कर दिया लेकिन ह़क़ीक़त में फ़िरऔ़न का येह कहना कि मुझे छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल करूं ख़ालिस धम्की ही थी, उस को ख़ुद आप के नबिय्ये बरह़क़ होने का यक़ीन था और वोह जानता था कि जो मो'जिज़ात आप लाए हैं वोह आयाते इलाहिय्यह हैं सेह़र नहीं, लेकिन येह समझता था कि अगर आप के क़त्ल का इरादा करेगा तो आप उस को हलाक करने में जल्दी फ़रमाएंगे, इस से येह बेहतर है कि तूल बह़्स में ज़ियादा वक़्त गुज़ार दिया जाए, अगर फ़िरऔ़न अपने दिल में आप को नबिय्ये बरह़क़ न समझता और येह न जानता कि रब्बानी ताईदें जो आप के साथ हैं उन का मुक़ाबला ना मुम्किन है तो आप के क़त्ल में हरगिज़ तअम्मुल न करता क्यूं कि वोह बड़ा ख़ूंख़ार सफ़्फ़ाक ज़ालिम बे दर्द था, अदना सी बात में हज़ारहा ख़ून कर डालता था। 57 : जिस का अपने आप को रसूल बताता है ताकि उस का रब उस को हम से बचाए। फ़िरऔ़न का येह मक़ूला इस पर शाहिद है कि उस के दिल में आप का और आप की दुआ़ओं का ख़ौफ़ था, वोह अपने दिल में आप से डरता था, ज़ाहिरी इ़ज़्ज़त बनी रखने के लिये येह ज़ाहिर करता था कि वोह क़ौम के मन्अ़ करने के बाइस ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल नहीं करता। 58 : और तुम से फ़िरऔ़न परस्ती और बुत परस्ती छुड़ा दे 59 : जिदाल व क़िताल कर के। 60 : फ़िरऔ़न की धम्कियां सुन कर।

مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ

हर मुतकब्बिर से कि हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता[61] और बोला फ़िरऔन वालों

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ

में से एक मर्द मुसल्मान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है मेरा रब **अल्लाह** है

وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ

और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से लाए[62] और अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत़ कहते हैं तो उन की ग़लत़ गोई का वबाल उन पर

وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ

और अगर वोह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वोह जिस का तुम्हें वा'दा देते हैं[63] बेशक **अल्लाह** राह नहीं देता

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي

उसे जो ह़द से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो[64] ऐ मेरी क़ौम आज बादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लबा

الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَاۤ

रखते हो[65] तो **अल्लाह** के अ़ज़ाब से हमें कौन बचाएगा अगर हम पर आए फ़िरऔन बोला मैं

اُرِيْكُمْ اِلَّا مَاۤ اَرٰى وَمَاۤ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

तो तुम्हें वोही सुझाता हूं जो मेरी सूझ है[66] और मैं तुम्हें वोही बताता हूं जो भलाई की राह है और वोह

الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ

ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मुझे तुम पर[67] अगले गुरौहों के दिन का सा ख़ौफ़ है[68] जैसा

61 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरऔन की सख़्तियों के जवाब में अपनी त़रफ़ से कोई कलिमा तअ़ल्ली का न फ़रमाया बल्कि **अल्लाह** तआ़ला से पनाह चाही और उस पर भरोसा किया। येही ख़ुदा शनासों का त़रीक़ा है और इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हर एक बला से मह़फ़ूज़ रखा, इन मुबारक जुम्लों में कैसी नफ़ीस हिदायतें हैं, येह फ़रमाना कि मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं और इस में हिदायत है रब एक ही है, येह भी हिदायत है कि जो उस की पनाह में आए उस पर भरोसा करे और वोह उस की मदद फ़रमाए कोई उस को ज़रर नहीं पहुंचा सकता, येह भी हिदायत है कि उसी पर भरोसा करना शाने बन्दगी है और ''तुम्हारे रब'' फ़रमाने में येह भी हिदायत है कि अगर तुम उस पर भरोसा करो तो तुम्हें भी सआ़दत नसीब हो। **62 :** जिन से उन का सिद्क़ ज़ाहिर हो गया या'नी नुबुव्वत साबित हो गई। **63 :** मत़लब येह है कि दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या येह सच्चे होंगे या झूटे, अगर झूटे हों तो ऐसे मुआ़मले में झूट बोल कर इस के वबाल से बच ही नहीं सकते हलाक हो जाएंगे और अगर सच्चे हैं तो जिस अ़ज़ाब का तुम्हें वा'दा देते हैं उस में से बिलफ़े'ल कुछ तुम्हें पहुंच ही जाएगा, कुछ पहुंचना इस लिये कहा कि आप का वा'दए अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत दोनों को आ़म था। उस में से बिलफ़े'ल अ़ज़ाबे दुन्या ही पेश आना था। **64 :** कि ख़ुदा पर झूट बांधे। **65 :** या'नी मिस्र में। तो ऐसा काम न करो कि **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आए, अगर **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आया **66 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल कर देना। **67 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करने और इन के दरपै होने से **68 :** जिन्हों ने रसूलों की तक्ज़ीब की।

دَاۡبِ قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوۡدَ وَالَّذِيۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ‌ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيۡدُ

दस्तूर गुज़रा नूह की क़ौम और आ़द और समूद और उन के बा'द औरों का[69] और अल्लाह बन्दों पर

ظُلۡمًا لِّلۡعِبَادِ ﴿۳۱﴾ وَيٰقَوۡمِ اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ يَوۡمَ التَّنَادِ ۙ﴿۳۲﴾ يَوۡمَ

ज़ुल्म नहीं चाहता[70] और ऐ मेरी क़ौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूं जिस दिन पुकार मचेगी[71] जिस दिन

تُوَلُّوۡنَ مُدۡبِرِيۡنَ‌ۚ مَا لَـكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ عَاصِمٍ‌ۚ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ

पीठ दे कर भागोगे[72] अल्लाह से[73] तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं और जिसे अल्लाह गुमराह करे

فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدۡ جَآءَكُمۡ يُوۡسُفُ مِنۡ قَبۡلُ بِالۡبَيِّنٰتِ فَمَا

उस का कोई राह दिखाने वाला नहीं और बेशक इस से पहले[74] तुम्हारे पास यूसुफ़ रोशन निशानियां ले कर आए तो

زِلۡتُمۡ فِىۡ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمۡ بِهٖ‌ؕ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلۡتُمۡ لَنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ

तुम उन के लाए हुए से शक ही में रहे यहां तक कि जब उन्हों ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब अल्लाह

مِنۡۢ بَعۡدِهٖ رَسُوۡلًا‌ ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنۡ هُوَ مُسۡرِفٌ مُّرۡتَابُ ۚ ۖ﴿۳۴﴾

कोई रसूल न भेजेगा[75] अल्लाह यूंही गुमराह करता है उसे जो ह़द से बढ़ने वाला शक लाने वाला है[76]

اۨلَّذِيۡنَ يُجَادِلُوۡنَ فِىۡۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيۡرِ سُلۡطٰنٍ اَتٰٮهُمۡ‌ؕ كَبُرَ مَقۡتًا عِنۡدَ

वोह जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं[77] बे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो किस क़दर सख़्त बेज़ारी की बात है अल्लाह के

اللّٰهِ وَعِنۡدَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا‌ ؕ كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلۡبِ مُتَكَبِّرٍ

नज़्दीक और ईमान वालों के नज़्दीक अल्लाह यूं ही मोहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे

69 : कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब करते रहे और हर एक को अ़ज़ाबे इलाही ने हलाक किया। 70 : बिग़ैर गुनाह के उन पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता और बिग़ैर इक़ामते हुज्जत के उन को हलाक नहीं करता। 71 : वोह क़ियामत का दिन होगा, क़ियामत के दिन को "يَوْمُ التَّنَاد" या'नी पुकार का दिन इस लिये कहा जाता है कि उस रोज़ त़रह त़रह की पुकारें मची होंगी, हर शख़्स अपने सर गुरोह के साथ और हर जमाअ़त अपने इमाम के साथ बुलाई जाएगी, जन्नती दोज़ख़ियों को और दोज़ख़ी जन्नतियों को पुकारेंगे, सआ़दत व शक़ावत की निदाएं की जाएंगी कि फ़ुलां सईद हुवा अब कभी शक़ी न होगा और फ़ुलां शक़ी हो गया अब कभी सईद न होगा और जिस वक़्त मौत ज़ब्ह़ की जाएगी उस वक़्त निदा की जाएगी कि ऐ अहले जन्नत ! अब दवाम (यहां हमेशा रहना) है मौत नहीं और ऐ अहले दोज़ख़ ! अब दवाम है मौत नहीं। 72 : मौक़िफ़े ह़िसाब (मैदाने मह़शर) से दोज़ख़ की त़रफ़। 73 : या'नी उस के अ़ज़ाब से 74 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से क़ब्ल 75 : येह बे दलील बात तुम ने या'नी तुम्हारे पहलों ने ख़ुद घड़ी ताकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया की तक्ज़ीब करो और उन्हें झुटलाओ तो तुम कुफ़्र पर क़ाइम रहे, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत में शक करते रहे और बा'द वालों की नुबुव्वत के इन्कार के लिये तुम ने येह मन्सूबा बना लिया कि अब अल्लाह तआ़ला कोई रसूल ही न भेजेगा। 76 : उन चीज़ों में जिन पर रोशन दलीलें शाहिद हैं। 77 : उन्हें झुटला कर।

جَبَّارٍ ﴿۳۵﴾ وَ قَالَ فِرۡعَوۡنُ يٰهَامٰنُ ابۡنِ لِىۡ صَرۡحًا لَّعَلِّىۡۤ اَبۡلُغُ

दिल पर[78] और फ़िरऔ़न बोला[79] ऐ हामान मेरे लिये ऊंचा महल बना शायद मैं पहुंच जाऊं

الۡاَسۡبَابَ ﴿ۙ۳۶﴾ اَسۡبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوۡسٰى وَاِنِّىۡ لَاَظُنُّهٗ

रास्तों तक काहे के रास्ते आस्मानों के तो मूसा के ख़ुदा को झांक कर देखूं और बेशक मेरे गुमान में तो वोह

كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرۡعَوۡنَ سُوۡٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيۡلِ ؕ وَمَا

झूटा है[80] और यूंही फ़िरऔ़न की निगाह में उस का बुरा काम[81] भला कर दिखाया गया[82] और वोह रास्ते से रोका गया और

كَيۡدُ فِرۡعَوۡنَ اِلَّا فِىۡ تَبَابٍ ﴿ع۳۷﴾ وَقَالَ الَّذِىۡۤ اٰمَنَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوۡنِ

फ़िरऔ़न का दाव[83] हलाक होने ही को था और वोह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो

اَهۡدِكُمۡ سَبِيۡلَ الرَّشَادِ ﴿ۚ۳۸﴾ يٰقَوۡمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا مَتَاعٌ ۫ وَّ

मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊं ऐ मेरी क़ौम येह दुन्या का जीना तो कुछ बरत्ना ही है[84] और

اِنَّ الۡاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ الۡقَرَارِ ﴿۳۹﴾ مَنۡ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجۡزٰٓى اِلَّا

बेशक वोह पिछला हमेशा रहने का घर है[85] जो बुरा काम करे तो उसे बदला न मिलेगा मगर

مِثۡلَهَا ۚ وَمَنۡ عَمِلَ صَالِحًا مِّنۡ ذَكَرٍ اَوۡ اُنۡثٰى وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औ़रत और हो मुसल्मान[86] तो वोह

يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ يُرۡزَقُوۡنَ فِيۡهَا بِغَيۡرِ حِسَابٍ ﴿۴۰﴾ وَيٰقَوۡمِ مَا لِىۡۤ

जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे वहां बे गिनती रिज़्क़ पाएंगे[87] और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुवा

اَدۡعُوۡكُمۡ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدۡعُوۡنَنِىۡۤ اِلَى النَّارِ ﴿ؕ۴۱﴾ تَدۡعُوۡنَنِىۡ لِاَكۡفُرَ

मैं तुम्हें बुलाता हूं नजात की त़रफ़[88] और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख़ की त़रफ़[89] मुझे इस त़रफ़ बुलाते हो कि अल्लाह का

78 : कि उस में हिदायत क़बूल करने का कोई महल बाक़ी नहीं रहता। 79 : बराहे जहल व फ़रेब अपने वज़ीर से। 80 : या'नी मूसा मेरे सिवा और ख़ुदा बताने में और येह बात फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को फ़रेब देने के लिये कही क्यूं कि वोह जानता था कि मा'बूदे बरह़क़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है और फ़िरऔ़न अपने आप को फ़रेब कारी के लिये मा'बूद ठहराता है (इस वाक़िए का बयान सूरए क़सस में गुज़र चुका) 81 : या'नी अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क करना और उस के रसूल को झुटलाना। 82 : या'नी शैत़ानों ने वस्वसे डाल कर उस की बुराइयां उस की नज़र में भली कर दिखाईं। 83 : जो ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की आयात को बात़िल करने के लिये उस ने इख़्तियार किया। 84 : या'नी थोड़ी मुद्दत के लिये ना पाएदार नफ़्अ़ है जिस को बक़ा नहीं। 85 : मुराद येह है कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी व जाविदानी और जाविदानी ही बेहतर। इस के बा'द नेक और बद आ'माल और उन के अन्जाम बताए। 86 : क्यूं कि आ'माल की मक़्बूलिय्यत ईमान पर मौक़ूफ़ है। 87 : येह अल्लाह का फ़ज़्ले अ़ज़ीम है। 88 : जन्नत की त़रफ़ ईमान व त़ाअ़त की तल्क़ीन कर के। 89 : कुफ़्रो शिर्क की दा'वत दे कर।

بِاللّٰهِ وَ اُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۫ وَّ اَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ

इन्कार करूं और ऐसे को उस का शरीक करूं जो मेरे इल्म में नहीं और मैं तुम्हें उस इ़ज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले की त़रफ़

الْغَفَّارِ ﴿۴۲﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَ

बुलाता हूं आप ही साबित हुवा कि जिस की त़रफ़ मुझे बुलाते हो[90] उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुन्या में

لَا فِي الْاٰخِرَةِ وَ اَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَ اَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ

न आख़िरत में[91] और येह हमारा फिरना अल्लाह की त़रफ़ है[92] और येह कि ह़द से गुज़रने वाले[93] ही

النَّارِ ﴿۴۳﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَ اُفَوِّضُ اَمْرِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ

दोज़ख़ी हैं तो जल्द वोह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूं उसे याद करोगे[94] और मैं अपने काम अल्लाह को सोंपता हूं बेशक

اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۴۴﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ حَاقَ بِاٰلِ

अल्लाह बन्दों को देखता है[95] तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उन के मक्र की बुराइयों से[96] और फ़िरऔ़न

فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿۴۵﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ عَشِيًّا ۚ وَ

वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा[97] आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं[98] और

يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿۴۶﴾ وَ اِذْ

जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो और[99] जब

يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا

वोह आग में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर उन से कहेंगे जो बड़े बनते थे हम

90 : या'नी बुत की त़रफ़ 91 : क्यूं कि वोह जमादे बेजान है। 92 : वोही हमें जज़ा देगा। 93 : या'नी काफ़िर 94 : या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त तुम मेरी नसीह़तें याद करोगे और उस वक़्त का याद करना कुछ काम न देगा, येह सुन कर उन लोगों ने उस मोमिन को धम्काया कि अगर तू हमारे दीन की मुख़ालफ़त करेगा तो हम तेरे साथ बुरे पेश आएंगे, इस के जवाब में उस ने कहा 95 : और उन के आ'माल व अह़वाल को जानता है, फिर वोह मोमिन उन से निकल कर पहाड़ की त़रफ़ चला गया और वहां नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया, फ़िरऔ़न ने हज़ार आदमी उस की जुस्तजू में भेजे अल्लाह तआ़ला ने दरिन्दे उस की ह़िफ़ाज़त पर मामूर कर दिये जो फ़िरऔ़नी उस की त़रफ़ आया दरिन्दों ने उसे हलाक किया और जो वापस गया और उस ने फ़िरऔ़न से ह़ाल बयान किया फ़िरऔ़न ने उस को सूली दे दी ताकि येह ह़ाल मश्हूर न हो। 96 : और उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ हो कर नजात पाई अगर्चे वोह फ़िरऔ़न की क़ौम का था। 97 : दुन्या में तो येह अ़ज़ाब कि वोह फ़िरऔ़न के साथ ग़र्क़ हो गए और आख़िरत में दोज़ख़। 98 : उस में जलाए जाते हैं। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : फ़िरऔ़नियों की रूहें सियाह परिन्दों के क़ालिब में हर रोज़ दो मरतबा सुब्ह़ो शाम आग पर पेश की जाती हैं और उन से कहा जाता है कि येह आग तुम्हारा मक़ाम है। और क़ियामत तक उन के साथ येही मा'मूल रहेगा। **मस्अला :** इस आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र के सुबूत पर इस्तिद्लाल किया जाता है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हर मरने वाले पर उस का मक़ाम सुब्ह़ो शाम पेश किया जाता है, जन्नती पर जन्नत का और दोज़ख़ी पर दोज़ख़ का और उस से कहा जाता है कि येह तेरा ठिकाना है ता आंकि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला तुझ को इस की त़रफ़ उठाए। 99 : ज़िक्र फ़रमाइये ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अपनी क़ौम से जहन्नम के अन्दर कुफ़्फ़ार के आपस में झगड़ने का ह़ाल कि।

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝٤٧ قَالَ الَّذِيْنَ
तुम्हारे ताबेअ् थे[100] तो क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा घटा लोगे वोह तकब्बुर

اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝٤٨ وَقَالَ
वाले बोले[101] हम सब आग में हैं[102] बेशक अल्लाह बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका[103] और जो

الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
आग में हैं उस के दारोग़ों से बोले अपने रब से दुआ़ करो हम पर अ़ज़ाब का एक दिन हलका

الْعَذَابِ ۝٤٩ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ
कर दे[104] उन्हों ने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल निशानियां न लाते थे[105] बोले क्यूं नहीं[106]

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝٥٠ ع اِنَّا لَنَنْصُرُ
बोले तो तुम्हीं दुआ़ करो[107] और काफ़िरों की दुआ़ नहीं मगर भटकते फिरने को बेशक ज़रूर हम

رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝٥١ ۙ
अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की[108] दुन्या की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे[109]

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝٥٢
जिस दिन ज़ालिमों को उन के बहाने कुछ काम न देंगे[110] और उन के लिये ला'नत है और उन के लिये बुरा घर[111]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝٥٣ ۙ هُدًى
और बेशक हम ने मूसा को रहनुमाई अ़ता फ़रमाई[112] और बनी इसराईल को किताब का वारिस किया[113] अ़क्ल मन्दों

وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٥٤ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ
की हिदायत और नसीहत को तो ऐ महबूब तुम सब्र करो[114] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[115] और अपनों के गुनाहों की

100 : दुन्या में और तुम्हारी बदौलत ही काफ़िर बने **101 :** या'नी काफ़िरों के सरदार जवाब देंगे **102 :** हर एक अपनी मुसीबत में गिरिफ़्तार, हम में से कोई किसी के काम नहीं आ सकता। **103 :** ईमानदारों को उस ने जन्नत में दाख़िल कर दिया और काफ़िरों को जहन्नम में, जो होना था हो चुका। **104 :** या'नी दुन्या के एक दिन की मिक़्दार तक हमारे अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ रहे। **105 :** क्या उन्हों ने ज़ाहिर मो'जिज़ात पेश न किये थे या'नी अब तुम्हारे लिये जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही। **106 :** या'नी काफ़िर। अम्बिया के तशरीफ़ लाने और अपने कुफ़्र करने का इक़रार करेंगे। **107 :** हम काफ़िर के हक़ में दुआ़ न करेंगे और तुम्हारा दुआ़ करना भी बेकार है। **108 :** उन को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर और हुज्जते क़विय्या दे कर और उन के दुश्मनों से इन्तिक़ाम ले कर। **109 :** वोह क़ियामत का दिन है कि मलाएका रसूलों की तब्लीग़ और कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की शहादत देंगे। **110 :** और काफ़िरों का कोई उ़ज़्र क़बूल न किया जाएगा। **111 :** या'नी जहन्नम। **112 :** या'नी तौरैत व मो'जिज़ात। **113 :** या'नी तौरैत का या उन के अम्बिया पर नाज़िल शुदा तमाम किताबों का। **114 :** अपनी क़ौम की ईज़ा पर। **115 :** वोह आप की मदद फ़रमाएगा, आप के दीन को ग़ालिब करेगा, आप के दुश्मनों को हलाक करेगा। कल्बी ने कहा कि आयते सब्र आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गई।

لِذَنْۢبِكَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِیِّ وَ الْاِبْكَارِ ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ

मुआफ़ी चाहो[116] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए सुब्ह और शाम उस की पाकी बोलो[117] वोह जो

یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا

अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो[118] उन के दिलों में नहीं मगर एक

كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۵۶﴾

बड़ाई की हवस[119] जिसे न पहुंचेंगे[120] तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो[121] बेशक वोही सुनता देखता है

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश आदमियों की पैदाइश से बहुत बड़ी[122] लेकिन बहुत लोग

لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ مَا یَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَ الْبَصِیْرُ ۙ۬ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

नहीं जानते[123] और अन्धा और अंख्यारा बराबर नहीं[124] और न वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ وَ لَا الْمُسِیْٓءُ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِیَةٌ

काम किये और बदकार[125] कितना कम ध्यान करते हो बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है

لَّا رَیْبَ فِیْهَا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ

इस में कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते[126] और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो

اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ

मैं क़बूल करूंगा[127] बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न्क़रीब जहन्नम

116 : या'नी अपनी उम्मत के (مدارک) 117 : या'नी अल्लाह तआ़ला की इबादत पर मुदावमत रखो। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : इस से पांचों नमाज़ें मुराद हैं। 118 : उन झगड़ा करने वालों से कुफ़्फ़ारे कुरैश मुराद हैं। 199 : और उन का येही तकब्बुर उन के तक्ज़ीब व इन्कार और कुफ़्र के इख़्तियार करने का बाइस हुवा कि उन्हों ने येह गवारा न किया कि कोई उन से ऊंचा हो, इस लिये सय्यिदे अम्बिया صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से अ़दावत की, ब ईं ख़याले फ़ासिद कि अगर आप को नबी मान लेंगे तो अपनी बड़ाई जाती रहेगी और उम्मती और छोटा बनना पड़ेगा और हवस रखते हैं बड़े बनने की। 120 : और बड़ाई मुयस्सर न आएगी बल्कि हुज़ूर की मुख़ालफ़त व इन्कार उन के ह़क़ में ज़िल्लत और रुस्वाई का सबब होगा। 121 : ह़ासिदों के मक्र व कैद से। 122 : येह आयत मुन्किरीने बअ़्स के रद में नाज़िल हुई, उन पर हुज्जत क़ाइम की गई कि जब तुम आस्मान व ज़मीन की पैदाइश पर बा वुजूद इन की इस अ़ज़मत और बड़ाई के अल्लाह तआ़ला को क़ादिर मानते हो तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा कर देना उस की क़ुदरत से क्यूं बईद समझते हो। 123 : बहुत लोगों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं और उन के इन्कारे बअ़्स का सबब उन की बे इल्मी है कि वोह आस्मान व ज़मीन की पैदाइश पर क़ादिर होने से बअ़्स पर इस्तिद्लाल नहीं करते, तो वोह मिस्ल अन्धे के हैं और जो मख़्लूक़ात के वुजूद से ख़ालिक़ की क़ुदरत पर इस्तिद्लाल करते हैं वोह मिस्ल बीना के हैं। 124 : या'नी जाहिल व आ़लिम यक्सां नहीं। 125 : या'नी मोमिने सालेह़ और बदकार येह दोनों भी बराबर नहीं। 126 : मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने पर यक़ीन नहीं करते। 127 : अल्लाह तआ़ला बन्दों की दुआ़एं अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमाता है और इन के क़बूल के लिये चन्द शर्तें हैं : **एक** इख़्लास दुआ़ में। **दूसरे** येह कि क़ल्ब ग़ैर की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो। **तीसरे** येह कि वोह दुआ़ किसी अम्रे मम्नूअ़ पर मुश्तमिल न हो। **चौथे** येह कि अल्लाह तआ़ला की रह़मत पर यक़ीन रखता हो। **पांचवें** येह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ़ मांगी क़बूल न हुई। जब इन शर्तों से दुआ़ की जाती है क़बूल होती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल

جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ

में जाएंगे ज़लील हो कर अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उस में आराम पाओ और दिन बनाया

مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

आंखें खोलता[128] बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल वाला है लेकिन बहुत आदमी शुक्र

يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى

नहीं करते वोह है अल्लाह तुम्हारा रब हर चीज़ का बनाने वाला उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो कहां

تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

औंधे जाते हो[129] यूंही औंधे होते हैं[130] वोह जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं[131]

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ

अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन ठहराव बनाई[132] और आस्मान छत[133] और तुम्हारी तस्वीर की

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ

तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं[134] और तुम्हें सुथरी चीज़ें[135] रोज़ी दीं येह है अल्लाह तुम्हारा रब

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَيُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ

तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जहान का वोही ज़िन्दा है[136] उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ

निरे उसी के बन्दे हो कर सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब तुम फ़रमाओ मैं मन्अ़ किया गया हूं

اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ

कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[137] जब कि मेरे पास रोशन दलीलें[138] मेरे रब की तरफ़

होती है या तो उस की मुराद दुन्या ही में उस को जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या उस से उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है। आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि दुआ़ से मुराद इबादत है और कुरआने करीम में दुआ़ ब मा'ना इबादत बहुत जगह वारिद है। हदीस शरीफ़ में है "اَلدُّعَآءُ هُوَ الْعِبَادَةُ"(ابوداود و ترمذی) इस तक़्दीर पर आयत के मा'ना येह होंगे कि तुम मेरी इबादत करो मैं तुम्हें सवाब दूंगा। **128 :** कि उस में अपने काम ब इत्मीनान अन्जाम दो। **129 :** कि उस को छोड़ कर बुतों की इबादत करते हो और उस पर ईमान नहीं लाते बा वुजूदे कि दलाइल क़ाइम हैं। **130 :** और हक़ से फिरते हैं बा वुजूद दलाइल क़ाइम होने के। **131 :** और उन में हक़ जोयाना (हक़ के मुतलाशी हो कर) नज़र व तअम्मुल नहीं करते। **132 :** कि वोह तुम्हारी क़रार गाह हो ज़िन्दगी में भी और बा'दे मौत भी। **133 :** कि उस को मिस्ल कुब्बा के बुलन्द फ़रमाया। **134 :** कि तुम्हें रास्त क़ामत पाकीज़ा रू मुतनासिबुल आ'ज़ा किया, बहाइम की तरह न बनाया कि औंधे चलते। **135 :** नफ़ीस मआकिल व मशारिब (खाने पीने की अश्या) **136 :** कि उस की फ़ना मुहाल है। **137 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे ना बकार ने बराहे जहालत व गुमराही अपने दीने बातिल की तरफ़ हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को दा'वत

رَّبِّیْ ؗ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

से आईं और मुझे हुक्म हुवा है कि रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर गरदन रखूं वोही है जिस ने तुम्हें[139] मिट्टी

تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا

से बनाया फिर[140] पानी की बूंद से[141] फिर ख़ून की फुटक से फिर तुम्हें निकालता है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि अपनी जवानी

اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَ لِتَبْلُغُوْۤا

को पहुंचो[142] फिर इस लिये कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठा लिया जाता है[143] और इस लिये कि तुम एक मुक़र्रर वा'दे

اَجَلًا مُّسَمًّى وَّ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ فَاِذَا

तक पहुंचो[144] और इस लिये कि समझो[145] वोही है कि जिलाता (ज़िन्दा करता) है और मारता है फिर जब

قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۶۸﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ

कोई हुक्म फ़रमाता है तो उस से येही कहता है कि हो जा जभी वोह हो जाता है[146] क्या तुम ने उन्हें न देखा जो

یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى یُصْرَفُوْنَ ﴿۶۹﴾ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَ

अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं[147] कहां फेरे जाते हैं[148] वोह जिन्हों ने झुटलाई किताब[149] और

بِمَاۤ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۰﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ

जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा[150] वोह अन्क़रीब जान जाएंगे[151] जब उन की गरदनों में तौक़ होंगे

وَ السَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ﴿۷۱﴾ فِی الْحَمِیْمِ ۙ۬ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ ثُمَّ

और ज़न्जीरें[152] घसीटे जाएंगे खौलते पानी में फिर आग में दहकाए जाएंगे[153] फिर

قِیْلَ لَهُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۳﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا

उन से फ़रमाया जाएगा कहां गए वोह जो तुम शरीक बताते थे[154] **अल्लाह** के मुक़ाबिल कहेंगे वोह तो हम से गुम गए[155]

दी थी और आप से बुत परस्ती की दरख़्वास्त की थी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **138 :** अ़क़्ल व वह्य की, तौह़ीद पर दलालत करने वाली। **139 :** या'नी तुम्हारे अस्ल और तुम्हारे जद्दे आ'ला ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को **140 :** बा'द ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के उन की नस्ल को **141 :** या'नी क़त़्रए मनी से **142 :** और तुम्हारी क़ुव्वत कामिल हो। **143 :** या'नी बुढ़ापे या जवानी को पहुंचने से क़ब्ल ही, येह इस लिये किया कि तुम ज़िन्दगानी करो। **144 :** ज़िन्दगानी के वक़्ते मह़दूद तक। **145 :** दलाइले तौह़ीद को और ईमान लाओ। **146 :** या'नी अश्या का वुजूद उस के इरादे का ताबेअ़ है कि उस ने इरादा फ़रमाया और शै मौजूद हुई न कोई कुल्फ़त (तक्लीफ़) है न कोई मशक़्क़त है न किसी सामान की ह़ाजत। येह उस के कमाले क़ुदरत का बयान है। **147 :** या'नी क़ुरआने पाक में। **148 :** ईमान और दीने ह़क़ से। **149 :** या'नी कुफ़्फ़ार जिन्हों ने क़ुरआन शरीफ़ की तक्ज़ीब की। **150 :** उस की भी तक्ज़ीब की और उस के रसूलों के साथ जो चीज़ भेजी इस से मुराद या तो वोह किताबें हैं जो पहले रसूल लाए या वोह अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा जो तमाम अम्बिया ने पहुंचाए मिस्ले तौह़ीदे इलाही, और बअ़्स बा'दे मौत के। **151 :** अपनी तक्ज़ीब का अन्जाम। **152 :** और उन ज़न्जीरों से **153 :** और वोह आग बाहर से भी उन्हें घेरे होगी और उन

بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾

बल्कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे[156] अल्लाह यूंही गुमराह करता है काफ़िरों को

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ

येह[157] उस का बदला है जो तुम ज़मीन में बातिल पर ख़ुश होते थे[158] और उस का बदला है जो तुम

تَمْرَحُوْنَ ﴿۷۵﴾ اُدْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

इतराते थे जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ

मग़रूरों का[159] तो तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वा'दा[160] सच्चा है तो अगर हम तुम्हें दिखा दें[161] कुछ वोह चीज़ जिस का

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا

उन्हें वा'दा दिया जाता है[162] या तुम्हें पहले ही वफ़ात दें बहर हाल उन्हें हमारी ही त़रफ़ फिरना[163] और बेशक हम ने

مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ

तुम से पहले कितने ही रसूल भेजे कि जिन में किसी का अह़वाल तुम से बयान फ़रमाया[164] और किसी का अह़वाल न बयान

عَلَيْكَ ؕ وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ

फ़रमाया[165] और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले आए बे हुक्म ख़ुदा के फिर जब अल्लाह

اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَ خَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

का हुक्म आएगा[166] सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[167] और बातिल वालों का वहां ख़सारा अल्लाह है जिस ने

के अन्दर भी भरी होगी। (अल्लाह तआ़ला की पनाह) **154 :** या'नी वोह बुत क्या हुए जिन की तुम इबादत करते थे **155 :** कहीं नज़र ही नहीं आते। **156 :** बुतों की परस्तिश का इन्कार कर जाएंगे। फिर बुत ह़ाज़िर किये जाएंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि तुम और तुम्हारे येह मा'बूद सब जहन्नम का ईंधन हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि जहन्नमियों का येह कहना कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे इस के येह मा'ना हैं कि अब हमें ज़ाहिर हो गया कि जिन्हें हम पूजते थे वोह कुछ न थे कि कोई नफ़्अ़ या नुक़्सान पहुंचा सकते। **157 :** या'नी येह अ़ज़ाब जिस में तुम मुब्तला हो **158 :** या'नी शिर्क व बुत परस्ती व इन्कारे बअ़्स पर। **159 :** जिन्हों ने तकब्बुर किया और ह़क़ को क़बूल न किया। **160 :** कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब फ़रमाने का **161 :** तुम्हारी वफ़ात से पहले **162 :** अन्वाए अ़ज़ाब से, मिस्ल बद्र में मारे जाने के जैसा कि येह वाक़ेअ़ हुवा। **163 :** और अ़ज़ाबे शदीद में गिरिफ़्तार होना। **164 :** इस क़ुरआन में सराह़त के साथ **165 :** क़ुरआन शरीफ़ में तफ़्सीलन व सराह़तन (مرقاۃ) और उन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला ने निशानी और मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए और उन की क़ौमों ने उन से मुजादला (झगड़ा) किया और उन्हें झुटलाया इस पर उन ह़ज़रात ने सब्र किया। इस तज़्किरे से मक़्सूद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि जिस त़रह़ के वाक़िआ़त क़ौम की त़रफ़ से आप को पेश आ रहे हैं और जैसी ईज़ाएं पहुंच रही हैं पहले अम्बिया के साथ भी येही ह़ालात गुज़र चुके हैं, उन्हों ने सब्र किया आप भी सब्र फ़रमाएं। **166 :** कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब नाज़िल करने की बाबत **167 :** रसूलों के और उन की तक्ज़ीब करने वालों के दरमियान।

جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا

तुम्हारे लिये चौपाए बनाए कि किसी पर सुवार हो और किसी का गोश्त खाओ और तुम्हारे लिये उन में कितने ही

مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ

फ़ाएदे हैं[168] और इस लिये कि तुम उन की पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो[169] और उन पर[170] और कश्तियों पर[171]

تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

सुवार होते हो और वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है[172] तो अल्लाह की कौन सी निशानी का इन्कार करोगे[173] तो क्या उन्हों ने

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوْا

ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उन से अगलों का कैसा अन्जाम हुवा वोह

اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَا اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا

उन से बहुत थे[174] और उन की कुव्वत[175] और ज़मीन में निशानियां उन से ज़ियादा[176] तो उन के क्या काम आया जो

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ

उन्हों ने कमाया[177] तो जब उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें लाए तो वोह उसी पर खुश रहे जो उन के पास

مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

दुन्या का इल्म था[178] और उन्हीं पर उलट पड़ा जिस की हंसी बनाते थे[179] फिर जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देखा

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ

बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उस के शरीक करते थे उन से मुन्किर हुए[180] तो उन के

يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ

ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया अल्लाह का दस्तूर जो उस के बन्दों

168 : कि उन के दूध और ऊन वग़ैरा काम में लाते हो और उन की नस्ल से नफ़्अ़ उठाते हो। 169 : या'नी अपने सफ़रों में अपने वज़्नी सामान उन की पीठों पर लाद कर एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम पर ले जाते हो। 170 : खुश्की के सफ़रों में 171 : दरियाई सफ़रों में 172 : जो उस की कुदरत व वह़्दानिय्यत पर दलालत करती हैं। 173 : या'नी वोह निशानियां ऐसी ज़ाहिरो बाहिर हैं कि उन के इन्कार की कोई सूरत ही नहीं। 174 : ता'दाद उन की कसीर थी। 175 : और जिस्मानी ताक़त भी उन से ज़ियादा थी। 176 : या'नी उन के मह़ल और इमारतें वग़ैरा। 177 : मा'ना येह हैं कि अगर येह लोग ज़मीन में सफ़र करते तो उन्हें मा'लूम हो जाता कि मुन्किरीने मुतमर्रिदीन (सरकशी करने वालों) का क्या अन्जाम हुवा और वोह किस त़रह हलाक व बरबाद हुए और उन की ता'दाद उन के ज़ोर और उन के माल कुछ भी उन के काम न आ सके। 178 : और उन्हों ने इल्मे अम्बिया की त़रफ़ इल्तिफ़ात न किया, उस की तह़सील और उस से इन्तिफ़ाअ़ की त़रफ़ मुतवज्जेह न हुए बल्कि उस को ह़क़ीर जाना और उस की हंसी बनाई और अपने दुन्यवी इल्म को जो ह़क़ीक़त में जहल है पसन्द करते रहे। 179 : या'नी अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब। 180 : या'नी जिन बुतों को उस के सिवा पूजते थे उन से बेज़ार हुए।

عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾

में गुज़र चुका[181] और वहां काफ़िर घाटे में रहे[182]

सूरए حٰمٓ السجده मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

حٰمٓ ﴿۱﴾ تَنْزِیْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿۲﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰیٰتُهٗ قُرْاٰنًا

येह उतारा है बड़े रह़्म वाले मेह़रबान का एक किताब है जिस की आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गईं[2] अ़रबी

عَرَبِیًّا لِّقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۳﴾ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

क़ुरआन अ़क़्ल वालों के लिये ख़ुश ख़बरी देता[3] और डर सुनाता[4] तो उन में अक्सर ने मुंह फेरा तो वोह

لَا یَسْمَعُوْنَ ﴿۴﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِیْۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَیْهِ وَفِیْۤ اٰذَانِنَا

सुनते ही नहीं[5] और बोले[6] हमारे दिल ग़िलाफ़ में हैं उस बात से जिस की त़रफ़ तुम हमें बुलाते हो[7] और हमारे कानों में

وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَیْنِنَا وَبَیْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿۵﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ

टेंट (रूई) है[8] और हमारे और तुम्हारे दरमियान रोक है[9] तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं[10] तुम फ़रमाओ[11] आदमी

اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ یُوْحٰۤى اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِیْمُوْۤا اِلَیْهِ

होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूं[12] मुझे वह़्य होती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो उस के हु़ज़ूर सीधे रहो[13]

181 : येही है कि नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त ईमान लाना नाफ़ेअ़ नहीं होता उस वक़्त ईमान क़बूल नहीं किया जाता और येह भी **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है कि रसूलों के झुटलाने वालों पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है। **182 :** या'नी उन का घाटा और टोटा अच्छी त़रह़ ज़ाहिर हो गया। **1 :** इस सूरत का नाम "सूरए फ़ुस्सिलत" भी है और "सूरए सज्दह व सूरए मसाबीह़" भी है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ चव्वन आयतें और सात सो छियानवे कलिमे और तीन हज़ार तीन सो पचास ह़र्फ़ हैं। **2 :** अह़काम व इम्साल व मवाइज़ व वा'दो वईद वग़ैरा के बयान में। **3 :** **अल्लाह** तआ़ला के दोस्तों को सवाब की। **4 :** **अल्लाह** तआ़ला के दुश्मनों को अ़ज़ाब का। **5 :** तवज्जोह से क़बूल का सुनना। **6 :** मुश्रिकीन। ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **7 :** हम उस को समझ ही नहीं सकते या'नी तौह़ीद व ईमान को। **8 :** हम बहरे हैं आप की बात हमारे सुनने में नहीं आती, इस से उन की मुराद येह थी कि आप हम से ईमान व तौह़ीद के क़बूल करने की तवक़्क़ोअ़ न रखिये, हम किसी त़रह़ मानने वाले नहीं और न मानने में हम ब मन्ज़िला उस शख़्स के हैं जो न समझता हो न सुनता हो। **9 :** या'नी दीनी मुख़ालफ़त। तो हम आप की बात मानने वाले नहीं। **10 :** या'नी तुम अपने दीन पर रहो हम अपने दीन पर क़ाइम हैं या येह मा'ना हैं कि तुम से हमारा काम बिगाड़ने की जो कोशिश हो सके वोह करो हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जो हो सकेगा करेंगे। **11 :** ऐ अक्रमुल ख़ल्क़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बराहे तवाज़ोअ़ उन लोगों के इर्शादात व हिदायात के लिये कि **12 :** ज़ाहिर में कि मैं देखा भी जाता हूं मेरी बात भी सुनी जाती है और मेरे तुम्हारे दरमियान में ब ज़ाहिर कोई जिन्सी मुग़ायरत (तब्दीली) भी नहीं है तो तुम्हारा येह कहना कैसे सह़ीह़ हो सकता है कि मेरी बात न तुम्हारे दिल तक पहुंचे न तुम्हारे सुनने में आए और मेरे तुम्हारे दरमियान कोई रोक हो, बजाए मेरे कोई ग़ैर जिन्स

وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ

और उस से मुआफ़ी मांगो[14] और ख़राबी है शिर्क वालों को वोह जो ज़कात नहीं देते[15] और

هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वोह आख़िरत के मुन्किर हैं[16] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ ع قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ

उन के लिये बे इन्तिहा सवाब है[17] तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उस का इन्कार रखते हो जिस ने दो दिन

فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ ج وَجَعَلَ

में ज़मीन बनाई[18] और उस के हमसर ठहराते हो[19] वोह है सारे जहान का रब[20] और इस में[21]

فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ

इस के ऊपर से लंगर (भारी बोझ) डाले[22] और इस में बरकत रखी[23] और इस में इस के बसने वालों की रोज़ियां मुक़र्रर कीं येह सब मिला कर चार

اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۗءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

दिन में[24] ठीक जवाब पूछने वालों को फिर आस्मान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वोह धूआं था[25] तो उस

ع ٨ ١٥

"जिन्न या फ़िरिश्ता" आता तो तुम कह सकते थे कि न वोह हमारे देखने में आएं न उन की बात सुनने में आए न हम उन के कलाम को समझ सकें हमारे उन के दरमियान तो जिन्सी मुख़ालफ़त ही बड़ी रोक है, लेकिन यहां तो ऐसा नहीं क्यूं कि मैं बशरी सूरत में जल्वा नुमा हुवा तो तुम्हें मुझ से मानूस होना चाहिये और मेरे कलाम के समझने और इस से फ़ाएदा उठाने की बहुत कोशिश करना चाहिये क्यूं कि मेरा मर्तबा बहुत बुलन्द है और मेरा कलाम बहुत आ़ली है, इस लिये कि मैं वोही कहता हूं जो मुझे वह़्य होती है। **फ़ाएदा :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ब लिह़ाज़े ज़ाहिर "اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ" फ़रमाना हिक्मते हिदायत व इर्शाद (रुश्दो हिदायत की हिक्मत) के लिये ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है और जो कलिमात तवाज़ोअ़ के लिये कहे जाएं वोह तवाज़ोअ़ करने वाले के उ़लुव्वे मन्सब की दलील होते हैं, छोटों का उन कलिमात को उस की शान में कहना या इस से बराबरी ढूंडना तर्के अदब और गुस्ताख़ी होता है, तो किसी उम्मती को रवा (जाइज़) नहीं कि वोह हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुमासिल होने का दा'वा करे। येह भी मल्हूज़ रहना चाहिये कि आप की बशरिय्यत भी सब से आ'ला है हमारी बशरिय्यत को इस से कुछ भी निस्बत नहीं। **13 :** उस पर ईमान लाओ उस की इत़ाअ़त इख़्तियार करो उस की राह से न फिरो **14 :** अपने फ़सादे अ़क़ीदा व अ़मल की। **15 :** येह मन्अ़ ज़कात से ख़ौफ़ दिलाने के लिये फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि ज़कात को मन्अ़ करना ऐसा बुरा है कि क़ुरआने करीम में मुश्रिकीन के औसाफ़ में ज़िक्र किया गया और इस की वज्ह येह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है तो माल का राहे ख़ुदा में ख़र्च कर डालना उस के सबात व इस्तिक़्लाल और सिद्क़ व इख़्लासे निय्यत की क़वी दलील है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ज़कात से मुराद है तौह़ीद का मो'तक़िद होना और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि जो तौह़ीद का इक़्रार कर के अपने नफ़्सों को शिर्क से बाज़ नहीं रखते और क़तादा ने इस के मा'ना येह लिये हैं कि जो लोग ज़कात को वाजिब नहीं जानते। इस के इलावा और भी अक़्वाल हैं। **16 :** कि मरने के बा'द उठने और जज़ा के मिलने के क़ाइल नहीं। **17 :** जो मुन्क़त़अ़ न होगा। येह भी कहा गया है कि आयत बीमारों अपाहजों और बूढ़ों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अ़मल व त़ाअ़त के क़ाबिल न रहें उन्हें वोही अज्र मिलेगा जो तन्दुरुस्ती में अ़मल करते थे। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस है कि जब बन्दा कोई अ़मल करता है और किसी मरज़ या सफ़र के बाइ़स वोह आ़मिल उस अ़मल से मजबूर हो जाता है तो तन्दुरुस्ती और इक़ामत की ह़ालत में जो करता था वैसा ही उस के लिये लिखा जाता है। **18 :** उस की ऐसी क़ुदरते कामिला है और चाहता तो एक लम्ह़े से भी कम में बना देता। **19 :** या'नी शरीक। **20 :** और वोही इ़बादत का मुस्तह़िक़ है, उस के सिवा कोई इ़बादत का मुस्तह़िक़ नहीं, सब उस के ममलूक व मख़्लूक़ हैं। इस के बा'द फिर उस की क़ुदरत का बयान फ़रमाया जाता है। **21 :** या'नी ज़मीन में **22 :** पहाड़ों के। **23 :** दरिया और नहरें और दरख़्त व फल और क़िस्म क़िस्म के हैवानात वग़ैरा पैदा कर के। **24 :** या'नी दो दिन ज़मीन की पैदाइश और दो दिन में येह सब। **25 :** या'नी बुख़ार बुलन्द होने वाला।

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿۱۱﴾

से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो ख़ुशी से चाहे नाख़ुशी से दोनों ने अ़र्ज़ की कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ

तो उन्हें पूरे सात आस्मान कर दिया दो दिन में[26] और हर आस्मान में उसी के काम के अह़काम भेजे[27]

وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖۗ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

और हम ने नीचे के आस्मान को[28] चरागों से आरास्ता किया[29] और निगहबानी के लिये[30] येह उस इ़ज़्ज़त वाले इ़ल्म वाले का ठहराया

الْعَلِيْمِ ﴿۱۲﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ

हुवा है फिर अगर वोह मुंह फेरें[31] तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द

وَّثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ

और समूद पर आई थी[32] जब रसूल उन के आगे पीछे फिरते थे[33]

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَاۤ

कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बोले[34] हमारा रब चाहता तो फ़िरिश्ते उतारता[35] तो जो कुछ

اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ

तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[36] तो वोह जो आ़द थे उन्हों ने ज़मीन में नाह़क़ तकब्बुर किया[37]

26 : येह कुल छ[6] दिन हुए इन में सब से पिछला जुमुआ़ है। **27 :** वहां के रहने वालों को ताअ़ात व इ़बादात व अम्र व नही के। **28 :** जो ज़मीन से क़रीब है। **29 :** या'नी रोशन सितारों से। **30 :** शयातीने मुस्तरिक़ा (चोरी छुपे आस्मानों की ख़बरें सुनने वाले शयातीन) से। **31 :** या'नी अगर येह मुश्रिकीन इस बयान के बा'द भी ईमान लाने से ए'राज़ करें **32 :** या'नी अ़ज़ाबे मोहलिक से, जैसा उन पर आया था। **33 :** या'नी क़ौमे आ़द व समूद के रसूल हर त़रफ़ से आते थे और उन की हिदायत की हर तदबीर अ़मल में लाते थे और उन्हें हर त़रह नसीह़त करते थे **34 :** उन की क़ौम के काफ़िर उन के जवाब में कि **35 :** बजाए तुम्हारे, तुम तो हमारी मिस्ल आदमी हो। **36 :** येह ख़िताब उन का ह़ज़रते हूद और ह़ज़रते सालेह़ और तमाम अम्बिया से था जिन्हों ने ईमान की दा'वत दी। इमाम बग़वी ने ब इस्नादे सा'लबी ह़ज़रते जाबिर से रिवायत की, कि जमाअ़ते क़ुरैश ने जिन में अबू जहल वग़ैरा सरदार भी थे येह तज्वीज़ किया कि कोई ऐसा शख़्स जो शे'र, सेह़र, कहानत में माहिर हो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कलाम करने के लिये भेजा जाए, चुनान्चे उ़त्बा बिन रबीआ़ का इन्तिख़ाब हुवा, उ़त्बा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से आ कर कहा कि आप बेहतर हैं या हाशिम, आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल मुत्तलिब, आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल्लाह, आप क्यूं हमारे मा'बूदों को बुरा कहते हैं, क्यूं हमारे बाप दादा को गुमराह बताते हैं, ह़ुकूमत का शौक़ हो तो हम आप को बादशाह मान लें आप के फरेरे उड़ाएं (झन्डे लहराएं), औ़रतों का शौक़ हो तो क़ुरैश की जिन लड़कियों में से आप पसन्द करें हम दस आप के अ़क़्द में दें, माल की ख़्वाहिश हो तो इतना जम्अ़ कर दें जो आप की नस्लों से भी बच रहे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم येह तमाम गुफ़्त्गू ख़ामोश सुनते रहे, जब उ़त्बा अपनी तक़रीर कर के ख़ामोश हुवा तो ह़ुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येही सूरत "حٰمٓ السجده" पढ़ी, जब आप आयत "فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ" (फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द और समूद पर आई थी) पर पहुंचे तो उ़त्बा ने जल्दी से अपना हाथ ह़ुज़ूर के दहन मुबारक पर रख दिया और आप को रिश्ता व क़राबत के वासिते से क़सम दिलाई और डर कर अपने घर भाग गया। जब क़ुरैश उस के मकान पर पहुंचे तो उस ने तमाम वाक़िआ़ बयान कर के कहा कि ख़ुदा की क़सम ! मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم)

وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ

और बोले हम से ज़ियादा किस का ज़ोर और क्या उन्हों ने न जाना कि अल्लाह जिस ने उन्हें बनाया उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا

ज़ियादा क़वी है और हमारी आयतों का इन्कार करते थे तो हम ने उन पर एक आंधी भेजी सख़्त

صَرْصَرًا فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ

गरज की[38] उन की शामत के दिनों में कि हम उन्हें रुस्वाई का अ़ज़ाब चखाएं दुन्या की

الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ

ज़िन्दगी में और बेशक आख़िरत के अ़ज़ाब में सब से बड़ी रुस्वाई है और उन की मदद न होगी और रहे समूद

فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ

उन्हें हम ने राह दिखाई[39] तो उन्हों ने सूझने पर अन्धे होने को पसन्द किया[40] तो उन्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की कड़क

الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ ج وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ ع

ने आ लिया[41] सज़ा उन के किये की[42] और हम ने[43] उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए[44] और डरते थे[45]

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन[46] आग की त़रफ़ हांके जाएंगे तो उन के अगलों को रोकेंगे यहां तक कि

جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا

पिछले आ मिलें[47] यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उन के कान और उन की आंखें और उन के चमड़े सब उन पर उन के किये की

يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

गवाही देंगे[48] और वोह अपनी खालों से कहेंगे तुम ने हम पर क्यूं गवाही दी वोह कहेंगी हमें अल्लाह ने बुलवाया

जो कहते हैं न वोह शे'र है न सेहर है न कहानत, मैं इन चीज़ों को ख़ूब जानता हूं। मैं ने उन का कलाम सुना, जब उन्हों ने आयत "فَاِنْ اَعْرَضُوْا" पढ़ी तो मैं ने उन के दहने मुबारक पर हाथ रख दिया और उन्हें क़सम दी कि बस करें। और तुम जानते ही हो वोह जो कुछ फ़रमाते हैं वोही हो जाता है, उन की बात कभी झूटी नहीं होती, मुझे अन्देशा हो गया कि कहीं तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल न होने लगे। **37 :** क़ौमे आ़द के लोग बड़े क़वी और शहज़ोर थे जब ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराया तो उन्हों ने कहा कि हम अपनी त़ाक़त से अ़ज़ाब को हटा सकते हैं। **38 :** निहायत ठन्डी बिग़ैर बारिश के। **39 :** और नेकी और बदी के त़रीक़े उन पर ज़ाहिर फ़रमाए। **40 :** और ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र इख़्तियार किया। **41 :** और होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक किये गए। **42 :** या'नी उन के शिर्क व तक्ज़ीबे पैग़म्बर और मआ़सी की। **43 :** साइक़ा (कड़क) के उस ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से **44 :** ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام पर **45 :** शिर्क और आ'माले ख़बीसा से। **46 :** या'नी कुफ़्फ़ार अगले और पिछले **47 :** फिर सब को दोज़ख़ में हांक दिया जाएगा। **48 :** आ'ज़ा ब हुक्मे इलाही बोल उठेंगे और जो जो अ़मल किये थे बता देंगे।

الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۱﴾

जिस ने हर चीज़ को गोयाई बख़्शी और उस ने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا

और तुम[49] उस से कहां छुप कर जाते कि तुम पर गवाही दें तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और

جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ

तुम्हारी खालें[50] लेकिन तुम तो येह समझे बैठे थे कि **अल्लाह** तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता[51] और

ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۲۳﴾

येह है तुम्हारा वोह गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उस ने तुम्हें हलाक कर दिया[52] तो अब रह गए हारे हुओं में

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ

फिर अगर वोह सब्र करें[53] तो आग उन का ठिकाना है[54] और अगर वोह मनाना चाहें तो कोई उन का

الْمُعْتَبِيْنَ ﴿۲۴﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا

मनाना न माने[55] और हम ने उन पर कुछ साथी तअ़य्युनात किये[56] उन्हों ने उन्हें भला कर दिखाया जो उन के आगे है[57] और जो

خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ

उन के पीछे[58] और उन पर बात पूरी हुई[59] उन गुरौहों के साथ जो उन से पहले गुज़र चुके जिन्न

وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۵﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا

और आदमियों के बेशक वोह ज़ियांकार (नुक़्सान में) थे और काफ़िर बोले[60] येह क़ुरआन

لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿۲۶﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ

न सुनो और इस में बेहूदा ग़ुल (शोर) करो[61] शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ[62] तो बेशक ज़रूर हम

49 : गुनाह करते वक़्त 50 : तुम्हें तो इस का गुमान भी न था बल्कि तुम तो बअ़्स व जज़ा के सिरे ही से क़ाइल न थे। 51 : जो तुम छुपा कर करते हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार येह कहते थे कि **अल्लाह** तआ़ला ज़ाहिर की बातें जानता है और जो हमारे दिलों में है उस को नहीं जानता। (مَعَاذَ اللّٰہ) 52 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि तुम्हें जहन्नम में डाल दिया। 53 : अ़ज़ाब पर 54 : येह सब्र भी कारआमद नहीं। 55 : या'नी ह़क़ तआ़ला उन से राज़ी न हो चाहे कितना ही मिन्नत करें किसी त़रह़ अ़ज़ाब से रिहाई नहीं। 56 : शयात़ीन में से। 57 : या'नी दुन्या की ज़ैबो ज़ीनत और ख़्वाहिशाते नफ़्स का इत्तिबाअ़। 58 : या'नी अम्रे आख़िरत। येह वस्वसा डाल कर कि न मरने के बा'द उठना है न ह़िसाब न अ़ज़ाब, चैन ही चैन है। 59 : अ़ज़ाब की। 60 : या'नी मुश्रिकीने क़ुरैश। 61 : और शोर मचाओ। कुफ़्फ़ार एक दूसरे से कहते थे कि जब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें तो ज़ोर ज़ोर से शोर करो ख़ूब चिल्लाओ ऊंची ऊंची आवाज़ें निकाल कर चीख़ो बे मा'ना कलिमात से शोर करो तालियां और सीटियां बजाओ ताकि कोई क़ुरआन न सुनने पाए और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم परेशान हों। 62 : और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे और बेशक हम उन के बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे[63]

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا

येह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग इस में उन्हें हमेशा रहना है सज़ा इस

كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ

की कि हमारी आयतों का इन्कार करते थे और काफ़िर बोले[64] ऐ हमारे रब हमें दिखा वोह

اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ

दोनों जिन्न और आदमी जिन्हों ने हमें गुमराह किया[65] कि हम उन्हें अपने पाउं तले डालें[66] कि वोह हर नीचे से

الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ

नीचे रहें[67] बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर इस पर क़ाइम रहे[68] उन पर

عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ

फ़िरिश्ते उतरते हैं[69] कि न डरो[70] और न ग़म करो[71] और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिस का

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ

तुम्हें वा'दा दिया जाता था[72] हम तुम्हारे दोस्त हैं दुन्या की ज़िन्दगी में[73] और आख़िरत में[74]

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ؕ نُزُلًا مِّنْ

और तुम्हारे लिये है इस में[75] जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये इस में जो मांगो मेहमानी बख़्शने

क़िराअत मौक़ूफ़ कर दें। **63 :** या'नी कुफ़्र का बदला सख़्त अ़ज़ाब। **64 :** जहन्नम में। **65 :** या'नी हमें वोह दोनों शैतान दिखा जिन्नी भी और इन्सी भी। शैतान दो क़िस्म के होते हैं एक जिन्नों में से एक इन्सानों में से जैसा कि कुरआने पाक में है : "شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ" (आदमियों और जिन्नों में के शैतान) जहन्नम में कुफ़्फ़ार इन दोनों के देखने की ख़्वाहिश करेंगे। **66 :** आग में **67 :** दरके अस्फ़ल (दोज़ख़ के सब से निचले तबक़े) में हम से ज़ियादा सख़्त अ़ज़ाब में। **68 :** हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ से दरयाफ़्त किया गया इस्तिक़ामत क्या है ? फ़रमाया : येह कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न करे। हज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि अम्र व नही पर क़ाइम रहे। हज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि अ़मल में इख़्लास करे। हज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि फ़राइज़ अदा करे और इस्तिक़ामत के मा'ना में येह भी कहा गया है कि अल्लाह तआ़ला के अम्र को बजा लाए और मआ़सी से बचे। **69 :** मौत के वक़्त या वोह जब क़ब्रों से उठेंगे और येह भी कहा गया है कि मोमिन को तीन बार बिशारत दी जाती है **एक** वक़्ते मौत। **दूसरे** क़ब्र में। **तीसरे** क़ब्रों से उठने के वक़्त। **70 :** मौत से और आख़िरत में पेश आने वाले हालात से। **71 :** अहल व औलाद के छूटने का या गुनाहों का। **72 :** और फ़िरिश्ते कहेंगे : **73 :** तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे **74 :** तुम्हारे साथ रहेंगे और जब तक तुम जन्नत में दाख़िल हो तुम से जुदा न होंगे। **75 :** या'नी जन्नत में वोह करामत और ने'मत व लज़्ज़त।

غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا

वाले मेहरबान की तरफ़ से और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए[76] और नेकी करे[77]

وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ

और कहे मैं मुसल्मान हूं[78] और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ

बुराई को भलाई से टाल[79] जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि

وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ

गहरा दोस्त[80] और येह दौलत[81] नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े

عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

नसीब वाला और अगर तुझे शैतान का कोई कोंचा (वार) पहुंचे[82] तो अल्लाह की पनाह मांग[83] बेशक वोही

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ

सुनता जानता है और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चांद[84]

لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ

सज्दा न करो सूरज को और न चांद को[85] और अल्लाह को सज्दा करो जिस ने उन्हें पैदा किया[86] अगर

76 : उस की तौहीद व इबादत की तरफ़। कहा गया है कि इस दा'वत देने वाले से मुराद हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं और येह भी कहा गया है कि वोह मोमिन मुराद है जिस ने नबी عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत को क़बूल किया और दूसरों को नेकी की दा'वत दी। **77 शाने नुज़ूल :** हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया : मेरे नज़्दीक येह आयत मुअज़्ज़िनों के हक़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह भी है कि जो कोई किसी तरीक़े पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ दा'वत दे वोह इस में दाख़िल है। दा'वत इलल्लाह के कई मर्तबे हैं **अव्वल** दा'वते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मो'जिज़ात और हुजज व बराहीन व सैफ़ के साथ, येह मर्तबा अम्बिया ही के साथ ख़ास है। **दुवुम** दा'वते उलमा, फ़क़त हुजज व बराहीन के साथ और उलमा कई तरह के हैं : **एक आलिम बिल्लाह। दूसरे आलिम बि सिफ़ातिल्लाह। तीसरे आलिम बि अह़कामिल्लाह। मर्तबए सिवुम** दा'वते मुजाहिदीन है, येह कुफ़्फ़ार को सैफ़ के साथ होती है यहां तक कि वोह दीन में दाख़िल हों और ताअत क़बूल कर लें। **मर्तबए चहारुम** मुअज़्ज़िनीन की दा'वत नमाज़ के लिये। अमले सालेह की दो क़िस्में हैं : **एक** वोह जो क़ल्ब से हो वोह मा'रिफ़ते इलाही है। **दूसरे** जो आ'ज़ा से हो वोह तमाम ताआत हैं। **78 :** और येह फ़क़त क़ौल न हो बल्कि दीने इस्लाम का दिल से मो'तक़िद हो कर कहे कि सच्चा कहना येही है। **79 :** मसलन गुस्से को सब्र से और जह्ल को हिल्म से और बद सुलूकी को अफ़्व से कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो तू मुआफ़ कर। **80 :** या'नी इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह महब्बत करने लगेंगे। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के हक़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अदावत के नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साहिब ज़ादी को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अता फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह सादिक़ुल महब्बत जां निसार हो गए। **81 :** या'नी बदियों को नेकियों से दफ़्अ करने की ख़स्लत **82 :** या'नी शैतान तुझ को बुराइयों पर उभारे और इस ख़स्लते नेक से और इस के इलावा और नेकियों से मुन्हरिफ़ करे **83 :** उस के शर से और अपनी नेकियों पर क़ाइम रह, शैतान की राह न इख़्तियार कर अल्लाह तआला तेरी मदद फ़रमाएगा। **84 :** जो उस की क़ुदरत व हिक्मत और उस की रबूबिय्यत व वहदानिय्यत पर दलालत करते हैं। **85 :** क्यूं कि वोह मख़्लूक़ हैं और हुक्मे ख़ालिक़ से मुसख़्ख़र हैं और जो ऐसा हो मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं हो सकता। **86 :** वोही सज्दे और इबादत का मुस्तह़िक़ है।

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ

तुम उस के बन्दे हो तो अगर येह तकब्बुर करें[87] तो वोह जो तुम्हारे रब के पास हैं[88] रात दिन

لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾ السجدة وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ

उस की पाकी बोलते हैं और उक्ताते नहीं और उस की निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे

خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْۤ اَحْيَاهَا

बे क़द्र पड़ी[89] फिर हम ने जब उस पर पानी उतारा[90] तरो ताज़ा हुई और बढ़ चली बेशक जिस ने उसे जिलाया ज़रूर

لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ

मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा बेशक वोह सब कुछ कर सकता है बेशक वोह जो हमारी आयतों में टेढ़े

اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْۤ اٰمِنًا

चलते हैं[91] हम से छुपे नहीं[92] तो क्या जो आग में डाला जाएगा[93] वोह भला या जो क़ियामत में अमान से

يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ

आएगा[94] जो जी में आए करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ لَّا يَاْتِيْهِ

जो ज़िक्र से मुन्किर हुए[95] जब वोह उन के पास आया उन की ख़राबी का कुछ ह़ाल न पूछ और बेशक वोह इ़ज़्ज़त वाली किताब है[96] बात़िल को उस की त़रफ़

الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾

राह नहीं न उस के आगे से न उस के पीछे से[97] उतारा हुवा है ह़िक्मत वाले सब ख़ूबियों सराहे का

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ

तुम से न फ़रमाया जाएगा[98] मगर वोही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया कि बेशक तुम्हारा रब बख़्शिश

مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا

वाला[99] और दर्दनाक अ़ज़ाब वाला है[100] और अगर हम उसे अ़जमी ज़बान का क़ुरआन करते[101] तो ज़रूर कहते कि इस की

87 : सिर्फ़ अल्लाह को सज्दा करने से 88 : मलाएका वोह 89 : सूखी कि उस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं। 90 : बारिश नाज़िल की। 91 : और तावीले आयात में सिह़्ह़त व इस्तिक़ामत से उ़दूल व इन्ह़िराफ़ करते हैं। 92 : हम उन्हें इस की सज़ा देंगे। 93 : या'नी काफ़िर मुल्ह़िद। 94 : मोमिन सादिक़ुल अ़क़ीदा, बेशक वोही बेहतर है। 95 : या'नी क़ुरआने करीम से और उन्हों ने इस में त़ा'न किये। 96 : बे अ़दील व बे नज़ीर जिस की एक सूरत का मिस्ल बनाने से तमाम ख़ल्क़ आ़जिज़ है। 97 : या'नी किसी त़रह़ और किसी जिहत से भी बात़िल

فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ

आयतें क्यूं न खोली गईं[102] क्या किताब अ़जमी और नबी अ़रबी[103] तुम फ़रमाओ वोह[104] ईमान वालों के लिये हिदायत और

قرء حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

شِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ

शिफ़ा है[105] और वोह जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में टेंट (रूई) है[106] और वोह उन पर अन्धा पन है[107]

اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۴۴﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

गोया वोह दूर जगह से पुकारे जाते हैं[108] और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[109]

فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ

तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया[110] और अगर एक बात तुम्हारे रब की त़रफ़ से गुज़र न चुकी होती[111] तो जभी उन का फ़ैसला हो जाता[112] और बेशक वोह[113]

لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۴۵﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ اَسَآءَ

ज़रूर उस की त़रफ़ से एक धोका डालने वाले शक में हैं जो नेकी करे वोह अपने भले को और जो बुराई करे

فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۴۶﴾

तो अपने बुरे को और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता

उस तक राह नहीं पा सकता, वोह तग़यीर व तब्दील व कमी व ज़ियादती से मह़फ़ूज़ है, शैत़ान उस में तसर्रुफ़ की क़ुदरत नहीं रखता। **98 :** **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से **99 :** अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के लिये और उन पर ईमान लाने वालों के लिये **100 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के दुश्मनों और तक्ज़ीब करने वालों के लिये। **101 :** जैसा कि येह कुफ़्फ़ार ब त़रीक़े ए'तिराज़ कहते हैं कि येह क़ुरआन अ़जमी ज़बान में क्यूं न उतरा **102 :** और ज़बाने अ़रबी में बयान न की गईं कि हम समझ सकते। **103 :** या'नी किताब नबी की ज़बान के ख़िलाफ़ क्यूं उतरी ? ह़ासिल येह है कि क़ुरआने पाक अ़जमी ज़बान में होता तो येह काफ़िर ए'तिराज़ करते अ़रबी में आया तो मो'तरिज़ हुए बात येह है कि خُوئے بَد رَا بَہَانَہ بِسْيَار (बद निय्यत के लिये बहाने बहुत)। ऐसे ए'तिराज़ त़ालिबे ह़क़ की शान के लाइक़ नहीं। **104 :** क़ुरआन शरीफ़ **105 :** कि ह़क़ की राह बताता है, गुमराही से बचाता है, जह्ल व शक वग़ैरा क़ल्बी अमराज़ से शिफ़ा देता है और जिस्मानी अमराज़ के लिये भी इस का पढ़ कर दम करना दफ़्ए मरज़ के लिये मुअस्सिर है। **106 :** कि वोह क़ुरआने पाक के सुनने की ने'मत से मह़रूम हैं। **107 :** कि शुकूको शुबुहात की ज़ुल्मतों में गिरिफ़्तार हैं। **108 :** या'नी वोह अपने अ़दमे क़बूल से इस ह़ालत को पहुंच गए हैं जैसा कि किसी को दूर से पुकारा जाए तो वोह पुकारने वाले की बात न सुने न समझे। **109 :** या'नी तौरैते मुक़द्दस **110 :** बा'ज़ों ने उस को माना और बा'ज़ों ने न माना। बा'ज़ों ने उस की तस्दीक़ की और बा'ज़ों ने तक्ज़ीब। **111 :** या'नी ह़िसाब व जज़ा को रोज़े क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमा दिया होता **112 :** और दुन्या ही में उन्हें इस की सज़ा दे दी जाती। **113 :** या'नी किताबे इलाही की तक्ज़ीब करने वाले।

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَ مَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَ مَا

क़ियामत के इल्म का उसी पर हवाला है[114] और कोई फल अपने ग़िलाफ़ से नहीं निकलता और न

تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَ لَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ

किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उस के इल्म से[115] और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा[116] कहां हैं मेरे शरीक[117]

قَالُوْۤا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ﴿٤٧﴾ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ

कहेंगे हम तुझ से कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं[118] और गुम गया उन से जिसे पहले

مِنْ قَبْلُ وَ ظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ

पूजते थे[119] और समझ लिये कि उन्हें कहीं[120] भागने की जगह नहीं आदमी भलाई मांगने से नहीं

الْخَيْرِ ۫ وَ اِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾ وَ لَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا

उक्ताता[121] और कोई बुराई पहुंचे[122] तो ना उम्मीद आस टूटा[123] और अगर हम उसे कुछ अपनी रह़मत का मज़ा दें[124]

مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَ مَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآىِٕمَةً ۙ

उस तक्लीफ़ के बा'द जो उसे पहुंची थी तो कहेगा येह तो मेरी है[125] और मेरे गुमान में क़ियामत क़ाइम न होगी

وَّ لَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْۤ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ

और अगर[126] मैं रब की त़रफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिये उस के पास भी ख़ूबी ही है[127] तो ज़रूर हम बता देंगे

114 : तो जिस से वक़्ते क़ियामत दरयाफ़्त किया जाए उस को लाज़िम है कि कहे **अल्लाह** तआ़ला जानने वाला है। **115 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला फल के ग़िलाफ़ से बरआमद होने से क़ब्ल उस के अह़वाल को जानता है और मादा के ह़म्ल को और उस की साअ़तों को और वज़्अ़ (पैदाइश) के वक़्त को और उस के नाक़िस व ग़ैर नाक़िस और अच्छे और बुरे और नर व मादा होने को सब को जानता है इस का इल्म भी उसी की त़रफ़ ह़वाला करना चाहिये। अगर येह ए'तिराज़ किया जाए कि औलियाए किराम अस्ह़ाबे कश्फ़ बसा अवक़ात इन उमूर की ख़बरें देते हैं और वोह सह़ीह़ वाक़ेअ़ होती हैं बल्कि कभी मुनज्जिम (सितारों का इल्म जानने वाले) और काहिन भी ख़बरें देते हैं। इस का जवाब येह है कि नुजूमियों और काहिनों की ख़बरें तो मह़ज़ अट्कल की बातें हैं जो अक्सर व बेश्तर ग़लत़ हो जाया करती हैं वोह इल्म ही नहीं है बे ह़क़ीक़त बातें हैं और औलिया की ख़बरें बेशक सह़ीह़ होती हैं और वोह इल्म से फ़रमाते हैं और येह इल्म उन का ज़ाती नहीं **अल्लाह** तआ़ला का अ़त़ा फ़रमाया हुवा है तो ह़क़ीक़त में येह उसी का इल्म हुवा ग़ैर का नहीं। (خازن) **116 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला मुश्रिकीन से फ़रमाएगा कि **117 :** जो तुम ने दुन्या में घड़ रखे थे जिन्हें तुम पूजा करते थे, इस के जवाब में मुश्रिकीन **118 :** जो आज येह बात़िल गवाही दे कि तेरा कोई शरीक है या'नी हम सब मोमिन मुवह्ह़िद हैं। येह मुश्रिकीन अ़ज़ाब देख कर कहेंगे और अपने बुतों से बरी होने का इज़्हार करेंगे। **119 :** दुन्या में या'नी बुत। **120 :** अ़ज़ाबे इलाही से बचने और **121 :** हमेशा **अल्लाह** तआ़ला से माल और तवंगरी व तन्दुरुस्ती मांगता रहता है। **122 :** या'नी कोई सख़्ती व बला व मआ़श की तंगी। **123 :** **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो रह़मत से मायूस हो जाता है। येह और इस के बा'द जो ज़िक्र फ़रमाया जाता है वोह काफ़िर का ह़ाल है और मोमिन **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से मायूस नहीं होते "لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ" (**अल्लाह** की रह़मत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग) **124 :** सिह़्ह़त व सलामत व मालो दौलत अ़त़ा फ़रमा कर। **125 :** ख़ालिस मेरा ह़क़ है, मैं अपने अ़मल से इस का मुस्तह़िक़ हूं। **126 :** बिलफ़र्ज़ जैसा कि मुसल्मान कहते हैं : **127 :** या'नी वहां भी मेरे लिये दुन्या की त़रह़ ऐशो राह़त व इ़ज़्ज़तो करामत है।

كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۟ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۰﴾ وَ اِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى

काफ़िरों को जो उन्हों ने किया[128] और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अ़ज़ाब चखाएंगे[129] और जब हम आदमी पर एह़सान

الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿۵۱﴾

करते हैं तो मुंह फेर लेता है[130] और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[131] और जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है[132] तो चौड़ी दुआ़ वाला है[133]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ

तुम फ़रमाओ[134] भला बताओ अगर येह क़ुरआन **अल्लाह** के पास से है[135] फिर तुम इस के मुन्किर हुए तो उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो

فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۲﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى

दूर की ज़िद में है[136] अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में[137] और ख़ुद उन के आपे में[138] यहां तक कि

يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۵۳﴾

उन पर खुल जाए कि बेशक वोह ह़क़ है[139] क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं

اَلَاۤ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿۵۴﴾ ع

ع ٦

सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है[140] सुनो वोह हर चीज़ को मुह़ीत़ है[141]

اٰيَاتُهَا ٥٣ | ٤٢ سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ ٦٢ | رُكُوْعَاتُهَا ٥

सूरए शूरा मक्किय्या है, इस में तिरपन आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

128 : या'नी उन के आ'माले क़बीह़ा और उन के आ'माल के नताइज और जिस अ़ज़ाब के वोह मुस्तह़िक़ हैं उस से उन्हें आगाह कर देंगे। 129 : या'नी निहायत सख़्त। 130 : और उस एह़सान का शुक्र बजा नहीं लाता और उस ने'मत पर इतराता है और ने'मत देने वाले परवर्दगार को भूल जाता है। 131 : यादे इलाही से तकब्बुर करता है। 132 : किसी क़िस्म की परेशानी बीमारी या नादारी वग़ैरा पेश आती है 133 : ख़ूब दुआ़एं करता है रोता है गिड़गिड़ाता है और लगातार दुआ़एं मांगे जाता है। 134 : ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ार से 135 : जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं और बराहीने क़त़इय्या साबित करती हैं। 136 : ह़क़ की मुख़ालफ़त करता है। 137 : आस्मान व ज़मीन के अक़्त़ार में, सूरज, चांद, सितारे, नबातात, ह़ैवान येह सब उस की क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करने वाले हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन आयात से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियां हैं जिन से अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का ह़ाल मा'लूम होता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन निशानियों से मशरिक़ो मग़रिब की वोह फ़ुतूह़ात मुराद हैं जो **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के नियाज़ मन्दों को अ़न्क़रीब अ़त़ा फ़रमाने वाला है। 138 : उन की हस्तियों में लाखों लत़ाइफ़े सन्अ़त और बे शुमार अ़जाइबे ह़िक्मत हैं, या येह मा'ना हैं कि बद्र में कुफ़्फ़ार को मग़लूब व मक़्हूर कर के ख़ुद उन के अपने अह़वाल में अपनी निशानियों का मुशाहदा करा दिया, या येह मा'ना हैं कि मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर उन में अपनी निशानियां ज़ाहिर कर देंगे। 139 : या'नी इस्लाम व क़ुरआन की सच्चाई और ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ज़ाहिर हो जाए। 140 : क्यूं कि वोह बअ़्स व क़ियामत के क़ाइल नहीं हैं। 141 : कोई चीज़ उस के इह़ात़ए इल्मी से बाहर नहीं और उस के मा'लूमात ग़ैर मुतनाही हैं। 1 : सूरए शूरा जुम्हूर के नज़्दीक

حٰمٓ ﴿١﴾ عٓسٓقٓ ﴿٢﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ

यूंही वह्य फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़[2] और तुम से अगलों की तरफ़[3]

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَهُوَ

अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ

बुलन्दी व अ़ज़्मत वाला है क़रीब होता है कि आस्मान अपने ऊपर से शक़ हो जाएं[4] और फ़िरिश्ते

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ

अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिये मुआ़फ़ी मांगते हैं[5] सुन लो बेशक

اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ

अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है और जिन्हों ने अल्लाह के सिवा और वाली बना रखे हैं[6]

اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ ۗ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

वोह अल्लाह की निगाह में हैं[7] और तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं[8] और यूंही हम ने

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ

तुम्हारी तरफ़ अ़रबी क़ुरआन वह्य भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उस के गिर्द हैं[9] और तुम डराओ इकट्ठे

الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ﴿٧﴾ وَلَوْ

होने के दिन से जिस में कुछ शक नहीं[10] एक गुरौह जन्नत में है और एक गुरौह दोज़ख़ में और

شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन पर कर देता लेकिन अल्लाह अपनी रह़मत में लेता है जिसे चाहे[11]

मक्किय्या है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के एक क़ौल में इस की चार आयतें मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुईं जिन में की पहली ''قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا'' है। इस सूरत में पांच रुकूअ़ तिरपन आयतें आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार पांच सो अठासी ह़र्फ़ हैं। 2 : ग़ैबी ख़बरें। (خازن) 3 : अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में से वह्य फ़रमा चुका। 4 : अल्लाह तआला की अ़ज़्मत और उस के उ़लुव्वे शान से। 5 : या'नी ईमानदारों के लिये। क्यूं कि काफ़िर इस लाइक़ नहीं हैं कि मलाएका उन के लिये इस्तिग़्फ़ार करें, येह हो सकता है कि काफ़िरों के लिये येह दुआ़ करें कि उन्हें ईमान दे कर उन की मग़्फ़िरत फ़रमा। 6 : या'नी बुत जिन को वोह पूजते और मा'बूद समझते हैं। 7 : उन के आ'माल, अफ़्आ़ल उस के सामने हैं, वोह उन्हें बदला देगा। 8 : तुम से उन के अफ़्आ़ल का मुआख़ज़ा न होगा। 9 : या'नी तमाम आ़लम के लोग उन सब को। 10 : या'नी रोज़े क़ियामत से डराओ जिस में अल्लाह तआला अव्वलीन व आख़िरीन और अहले आस्मान व ज़मीन सब को जम्अ़ फ़रमाएगा और इस जम्अ़ के बा'द फिर सब मुतफ़र्रिक़ होंगे। 11 : उस को इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है।

وَالظّٰلِمُوۡنَ مَا لَهُمۡ مِّنۡ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیۡرٍ ﴿٨﴾ اَمِ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ

और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार[12] क्या अल्लाह के सिवा और वाली

اَوۡلِیَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الۡوَلِیُّ وَهُوَ یُحۡیِ الۡمَوۡتٰی ۫ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿٩﴾

ठहरा लिये हैं[13] तो अल्लाह ही वाली है और वोह मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा और वोह सब कुछ कर सकता है[14]

وَمَا اخۡتَلَفۡتُمۡ فِیۡهِ مِنۡ شَیۡءٍ فَحُكۡمُهٗۤ اِلَی اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّیۡ عَلَیۡهِ

तुम जिस बात में[15] इख़्तिलाफ़ करो तो उस का फ़ैसला अल्लाह के सिपुर्द है[16] येह है अल्लाह मेरा रब मैं ने

تَوَكَّلۡتُ ۖۗ وَاِلَیۡهِ اُنِیۡبُ ﴿١٠﴾ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ جَعَلَ لَكُمۡ

उस पर भरोसा किया और मैं उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाता हूं[17] आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हारे लिये

مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا وَّمِنَ الۡاَنۡعَامِ اَزۡوَاجًا ۚ یَذۡرَؤُكُمۡ فِیۡهِ ؕ

तुम्हीं में से[18] जोड़े बनाए और नर व मादा चौपाए इस से[19] तुम्हारी नस्ल फैलाता है

لَیۡسَ كَمِثۡلِهٖ شَیۡءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ ﴿١١﴾ لَهٗ مَقَالِیۡدُ السَّمٰوٰتِ

उस जैसा कोई नहीं और वोही सुनता देखता है उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन

وَالۡاَرۡضِ ۚ یَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ یَّشَآءُ وَیَقۡدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیۡءٍ

की कुन्जियां[20] रोज़ी वसीअ़ करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है[21] बेशक वोह सब कुछ

عَلِیۡمٌ ﴿١٢﴾ شَرَعَ لَكُمۡ مِّنَ الدِّیۡنِ مَا وَصّٰی بِهٖ نُوۡحًا وَّالَّذِیۡۤ اَوۡحَیۡنَاۤ

जानता है तुम्हारे लिये दीन की वोह राह डाली जिस का हुक्म उस ने नूह़ को दिया[22] और जो हम ने तुम्हारी त़रफ़

اِلَیۡكَ وَمَا وَصَّیۡنَا بِهٖۤ اِبۡرٰهِیۡمَ وَمُوۡسٰی وَعِیۡسٰۤی اَنۡ اَقِیۡمُوا الدِّیۡنَ وَ

वह़्य की[23] और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया[24] कि दीन ठीक रखो[25] और

12 : या'नी काफ़िरों को कोई अ़ज़ाब से बचाने वाला नहीं। 13 : या'नी कुफ़्फ़ार ने अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर बुतों को अपना वाली बना लिया है, येह बातिल है। 14 : तो उसी को वाली बनाना सज़ावार है। 15 : दीन की बातों में से कुफ़्फ़ार के साथ 16 : रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा, तुम उन से कहो 17 : हर अम्र में। 18 : या'नी तुम्हारी जिन्स में से 19 : या'नी इस तज्वीज (जोड़े जोड़े बनाने) से (خازن) 20 : मुराद येह है कि आस्मान व ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुन्जियां ख़्वाह मींह के ख़ज़ाने हों या रिज़्क़ के। 21 : जिस के लिये चाहे। वोह मालिक है, रिज़्क़ की कुन्जियां उस के दस्ते क़ुदरत में हैं। 22 : नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام साहिबे शरअ़ अम्बिया में सब से पहले नबी हैं। 23 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 24 : मा'ना येह हैं कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से आप तक ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जितने अम्बिया हुए सब के लिये हम ने दीन की एक ही राह मुक़र्रर की जिस में वोह सब मुत्तफ़िक़ हैं, वोह राह येह है 25 : मुराद दीन से इस्लाम है। मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की इत़ाअ़त और उस पर और उस के रसूलों पर और उस की किताबों पर और रोज़े जज़ा पर और बाक़ी तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाना लाज़िम करो कि येह उमूर तमाम अम्बिया

لَا تَتَفَرَّقُوْا فِیْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِیْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَیْهِ ؕ اَللّٰهُ

इस में फूट न डालो[26] मुश्रिकों पर बहुत ही गिरां है वोह[27] जिस की त़रफ़ तुम उन्हें बुलाते हो और अल्लाह

یَجْتَبِیْۤ اِلَیْهِ مَنْ یَّشَآءُ وَ یَهْدِیْۤ اِلَیْهِ مَنْ یُّنِیْبُ ﴿۱۳﴾ وَ مَا تَفَرَّقُوْۤا

अपने क़रीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे[28] और अपनी त़रफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ़ लाए[29] और उन्हों ने फूट न डाली

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْیًۢا بَیْنَهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

मगर बा'द इस के कि उन्हें इ़ल्म आ चुका था[30] आपस के ह़सद से[31] और अगर तुम्हारे रब की एक बात

رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِیَ بَیْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ

गुज़र न चुकी होती[32] एक मुक़र्रर मीआ़द तक[33] तो कब का उन में फ़ैसला कर दिया होता[34] और बेशक वोह जो उन के बा'द किताब के वारिस हुए[35]

مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِیْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِیْبٍ ﴿۱۴﴾ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَ اسْتَقِمْ كَمَاۤ

वोह इस से एक धोका डालने वाले शक में हैं[36] तो इसी लिये बुलाओ[37] और साबित क़दम रहो[38] जैसा

اُمِرْتَ ۚ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَ قُلْ اٰمَنْتُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ

तुम्हें हुक्म हुवा है और उन की ख़्वाहिशों पर न चलो और कहो कि मैं ईमान लाया उस पर जो कोई किताब अल्लाह

كِتٰبٍ ۚ وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَیْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ؕ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا

ने उतारी[39] और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूं[40] अल्लाह हमारा तुम्हारा सब का रब है[41] हमारे लिये हमारा अ़मल

وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَیْنَنَا وَ بَیْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ یَجْمَعُ بَیْنَنَا ۚ وَ اِلَیْهِ

और तुम्हारे लिये तुम्हारा किया[42] कोई हुज्जत नहीं हम में और तुम में[43] अल्लाह हम सब को जम्अ़ करेगा[44] और उसी की

की उम्मतों के लिये यक्सां लाज़िम हैं। **26 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया कि जमाअ़त रह़मत और फ़ुर्क़त अ़ज़ाब है। ख़ुलासा येह है कि उसूले दीन में तमाम मुसल्मान ख़्वाह वोह किसी अ़हद या किसी उम्मत के हों यक्सां हैं इन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, अलबत्ता अह़काम में उम्मतें ब ए'तिबार अपने अह़वाल व ख़ुसूसिय्यात के जुदागाना हैं, चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : ''لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا'' (हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा) **27 :** या'नी बुतों को छोड़ना और तौह़ीद इख़्तियार करना। **28 :** अपने बन्दों में से उसी को तौफ़ीक़ देता है। **29 :** और उस की इत़ाअ़त क़बूल करे। **30 :** या'नी अहले किताब ने अपने अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام के बा'द जो दीन में इख़्तिलाफ़ डाला कि किसी ने तौह़ीद इख़्तियार की कोई काफ़िर हो गया वोह इस से पहले जान चुके थे कि इस त़रह़ इख़्तिलाफ़ करना और फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हो जाना गुमराही है लेकिन बा वुजूद इस के इन्हों ने येह सब कुछ किया **31 :** और रियासत व नाह़क़ की ह़ुकूमत के शौक़ में। **32 :** अ़ज़ाब के मुअख़्ख़र फ़रमाने की **33 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक **34 :** काफ़िरों पर दुन्या में अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा कर। **35 :** या'नी यहूदो नसारा **36 :** या'नी अपनी किताब पर मज़बूत़ ईमान नहीं रखते या येह मा'ना हैं कि वोह क़ुरआन की त़रफ़ से या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ से शक में पड़े हैं। **37 :** या'नी उन कुफ़्फ़ार के इस इख़्तिलाफ़ व परागन्दगी की वज्ह से उन्हें तौह़ीद और मिल्लते ह़नीफ़िय्यह पर मुत्तफ़िक़ होने की दा'वत दो। **38 :** दीन पर और दीन की दा'वत देने पर। **39 :** या'नी अल्लाह तआ़ला की तमाम किताबों पर, क्यूं कि मुतफ़र्रिक़ीन बा'ज़ पर ईमान लाते थे और बा'ज़ से कुफ़्र करते थे। **40 :** तमाम चीज़ों में और जमीअ़ अह़वाल में और हर फ़ैसले में। **41 :** और हम सब उस के बन्दे। **42 :** हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। **43 :** क्यूं कि ह़क़ ज़ाहिर

الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ

तरफ़ फिरना है और वोह जो **अल्लाह** के बारे में झगड़ते हैं बा'द इस के कि मुसल्मान उस की दा'वत क़बूल कर चुके[45]

حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾

उन की दलील महूज़ बे सबात है उन के रब के पास और उन पर ग़ज़ब है[46] और उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[47]

اَللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ

अल्लाह है जिस ने हक़ के साथ किताब उतारी[48] और इन्साफ़ की तराज़ू[49] और तुम क्या जानो शायद

السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ

क़ियामत क़रीब ही हो[50] इस की जल्दी मचा रहे हैं वोह जो इस पर ईमान नहीं रखते[51] और जिन्हें

اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ

उस पर ईमान है वोह उस से डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वोह हक़ है सुनते हो बेशक जो

يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ

क़ियामत में शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं **अल्लाह** अपने बन्दों पर लुत्फ़ फ़रमाता है[52] जिसे चाहे

مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ

रोज़ी देता है[53] और वोही क़ुव्वत व इ़ज़्ज़त वाला है जो आख़िरत की खेती चाहे[54]

نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ

हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं[55] और जो दुन्या की खेती चाहे[56] हम उसे उस में से कुछ देंगे[57] और आख़िरत

हो चुका "وَهٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" (और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) **44 :** रोज़े क़ियामत। **45 :** मुराद उन झगड़ने वालों से यहूद हैं, वोह चाहते थे कि मुसल्मानों को फिर कुफ़्र की तरफ़ लौटाएं इस लिये झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना हमारी किताब पुरानी हमारे नबी पहले, हम तुम से बेहतर हैं। **46 :** ब सबब उन के कुफ़्र के। **47 :** आख़िरत में। **48 :** या'नी क़ुरआने पाक जो क़िस्म क़िस्म के दलाइल व अह़काम पर मुश्तमिल है। **49 :** या'नी उस ने अपनी कुतुबे मुनज़्ज़ला (नाज़िल कर्दा किताबों) में अ़द्ल का हुक्म दिया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मुराद मीज़ान से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी है। **50 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने ब त़रीक़े तक्ज़ीब कहा कि क़ियामत कब होगी ? इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई। **51 :** और येह गुमान करते हैं कि क़ियामत आने वाली ही नहीं, इसी लिये ब त़रीक़े तमस्ख़ुर जल्दी मचाते हैं। **52 :** बे शुमार एहसान करता है नेकों पर भी और बदों पर भी ह़त्ता कि बन्दे गुनाहों में मश्ग़ूल रहते हैं और वोह उन्हें भूक से हलाक नहीं करता। **53 :** और फ़राख़िये ऐ़श अ़त़ा फ़रमाता है मोमिन को भी और काफ़िर को भी ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत। ह़दीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है मेरे बा'ज़े मोमिन बन्दे ऐसे हैं कि तवंगरी उन के क़ुव्वते ईमान का बाइ़स है अगर मैं उन्हें फ़क़ीर मोह़ताज कर दूं तो उन के अ़क़ीदे फ़ासिद हो जाएं और बा'ज़े बन्दे ऐसे हैं कि तंगी और मोह़ताजी उन के क़ुव्वते ईमान का बाइ़स है अगर मैं उन्हें ग़नी मालदार कर दूं तो उन के अ़क़ीदे ख़राब हो जाएं। **54 :** या'नी जिस को अपने आ'माल से नफ़्ए आख़िरत मक़्सूद हो **55 :** उस को नेकियों की तौफ़ीक़ दे कर और उस के

فِى الۡاٰخِرَةِ مِنۡ نَّصِيۡبٍ ۝٢٠ اَمۡ لَهُمۡ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوۡا لَهُمۡ مِّنَ الدِّيۡنِ

में उस का कुछ हिस्सा नहीं[58] या उन के लिये कुछ शरीक हैं[59] जिन्हों ने उन के लिये[60] वोह दीन निकाल दिया है[61]

مَا لَمۡ يَاۡذَنۡۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةُ الۡفَصۡلِ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ

कि **अल्लाह** ने उस की इजाज़त न दी[62] और अगर एक फ़ैसले का वा'दा न होता[63] तो यहीं उन में फ़ैसला कर दिया जाता[64] और बेशक

الظّٰلِمِيۡنَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝٢١ تَرَى الظّٰلِمِيۡنَ مُشۡفِقِيۡنَ مِمَّا كَسَبُوۡا

ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[65] तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे[66]

وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىۡ رَوۡضٰتِ

और वोह उन पर पड़ कर रहेंगी[67] और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत की

الۡجَنّٰتِ ۚ لَهُمۡ مَّا يَشَآءُوۡنَ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَضۡلُ الۡكَبِيۡرُ ۝٢٢

फुलवारियों में हैं उन के लिये उन के रब के पास हैं जो चाहें येही बड़ा फ़ज़्ल है

ذٰلِكَ الَّذِىۡ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

येह है वोह जिस की ख़ुश ख़बरी देता है **अल्लाह** अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

قُلۡ لَّاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ اَجۡرًا اِلَّا الۡمَوَدَّةَ فِى الۡقُرۡبٰى ؕ وَمَنۡ يَّقۡتَرِفۡ

तुम फ़रमाओ मैं इस[68] पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[69] मगर क़राबत की महब्बत[70] और जो नेक

लिये ख़ैरात व ताआ़त की राहें सहल कर के और उस की नेकियों का सवाब बढ़ा कर। **56 :** या'नी जिस का अ़मल महज़ दुन्या हासिल करने के लिये हो और वोह आख़िरत पर ईमान न रखता हो (مدارک) **57 :** या'नी दुन्या में जितना उस के लिये मुक़द्दर किया है। **58 :** क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये अ़मल किया ही नहीं। **59 :** मा'ना येह हैं कि क्या कुफ़्फ़ारे मक्का उस दीन को क़बूल करते हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाया या उन के कुछ ऐसे शुरका हैं शयातीन वग़ैरा **60 :** कुफ़्री दीनों में से **61 :** जो शिर्क व इन्कारे बअ़्स पर मुश्तमिल है। **62 :** या'नी वोह दीने इलाही के ख़िलाफ़ है। **63 :** और जज़ा के लिये रोज़े क़ियामत मुअ़य्यन न फ़रमा दिया गया होता **64 :** और दुन्या ही में तक्ज़ीब करने वालों को गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब कर दिया जाता। **65 :** आख़िरत में और ज़ालिमों से मुराद यहां काफ़िर हैं। **66 :** या'नी कुफ़्र व आ'माले ख़बीसा से जो उन्हों ने दुन्या में कमाए थे। इस अन्देशे से कि अब उन की सज़ा मिलने वाली है। **67 :** ज़रूर उन से किसी त़रह बच नहीं सकते डरें या न डरें। **68 :** तब्लीग़े रिसालत और इर्शाद व हिदायत **69 :** और तमाम अम्बिया का येही त़रीक़ा है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़िम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्हों ने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर के हुक़ूक़ व एह़सानात याद कर के हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जम्अ़ किया और उस को ले कर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से नजात पाई, हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़ियादा हैं, इस लिये हम येह माल ख़ुद्दामे आस्ताना की ख़िदमत में नज़्र के लिये लाए हैं क़बूल फ़रमा कर हमारी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई की जाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और हुज़ूर ने वोह अम्वाल वापस फ़रमा दिये। **70 :** तुम पर लाज़िम है क्यूं कि मुसल्मानों के दरमियान मुवद्दत व महब्बत वाजिब है जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ''اَلۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ'' और ह़दीस शरीफ़ में है कि मुसल्मान मिस्ल एक इमारत के हैं जिस का हर एक हिस्सा दूसरे हिस्से को क़ुव्वत और मदद पहुंचाता है। जब मुसल्मानों में बाहम एक दूसरे के साथ महब्बत वाजिब हुई तो सय्यिदे आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم के साथ किस क़दर महब्बत फ़र्ज़ होगी। मा'ना येह हैं कि मैं हिदायत व इर्शाद पर

حَسَنَةً نَّزِدۡ لَهٗ فِیۡهَا حُسۡنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ شَكُوۡرٌ ﴿۲۳﴾ اَمۡ یَقُوۡلُوۡنَ

काम करे[71] हम उस के लिये उस में और ख़ूबी बढ़ाएं बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है या[72] येह कहते हैं कि

افۡتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنۡ یَّشَاِ اللّٰهُ یَخۡتِمۡ عَلٰی قَلۡبِكَ ؕ وَ یَمۡحُ اللّٰهُ

उन्हों ने **अल्लाह** पर झूट बांध लिया[73] और **अल्लाह** चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रह़मत व ह़िफ़ाज़त की मोह्र फ़रमा दे[74] और मिटाता है

الۡبَاطِلَ وَ یُحِقُّ الۡحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۲۴﴾ وَ هُوَ

बात़िल को[75] और ह़क़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से[76] बेशक वोह दिलों की बातें जानता है और वोही है

الَّذِیۡ یَقۡبَلُ التَّوۡبَةَ عَنۡ عِبَادِهٖ وَ یَعۡفُوۡا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَ یَعۡلَمُ مَا

जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है[77] और जानता है जो कुछ

تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۲۵﴾ وَ یَسۡتَجِیۡبُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ یَزِیۡدُهُمۡ

तुम करते हो और दुआ़ क़बूल फ़रमाता है उन की जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़्ल से

مِّنۡ فَضۡلِهٖ ؕ وَ الۡكٰفِرُوۡنَ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِیۡدٌ ﴿۲۶﴾ وَ لَوۡ بَسَطَ اللّٰهُ

और इन्आ़म देता है[78] और काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और अगर **अल्लाह** अपने

الرِّزۡقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوۡا فِی الۡاَرۡضِ وَ لٰكِنۡ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا یَشَآءُ ؕ

सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते[79] लेकिन वोह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे

اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیۡرٌۢ بَصِیۡرٌ ﴿۲۷﴾ وَ هُوَ الَّذِیۡ یُنَزِّلُ الۡغَیۡثَ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا

बेशक वोह अपने बन्दों से ख़बरदार है[80] उन्हें देखता है और वोही है कि मींह उतारता है उन के ना उम्मीद

कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के ह़ुक़ूक़ तो तुम पर वाजिब हैं उन का लिह़ाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं उन्हें ईज़ा न दो। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर से मरवी है कि क़राबत वालों से मुराद ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आले पाक है। (بخاری) **मस्अला :** अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं इस में कई क़ौल हैं एक तो येह कि मुराद इस से ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते फ़ात़िमा व ह़सनैन करीमैन हैं رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم। एक क़ौल येह है कि आले अ़ली व आले अ़क़ील व आले जा'फ़र व आले अ़ब्बास मुराद हैं और एक क़ौल येह है कि ह़ुज़ूर के वोह अक़ारिब मुराद हैं जिन पर सदक़ा ह़राम है और वोह मुख़्लिसीने बनी हाशिम व बनी मुत्त़लिब हैं, ह़ुज़ूर की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ह़ुज़ूर के अहले बैत में दाख़िल हैं। **मस्अला :** ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की मह़ब्बत और ह़ुज़ूर के अक़ारिब की मह़ब्बत दीन के फ़राइज़ में से है। (جمل وخازن وغیرہ) **71 :** यहां नेक काम से मुराद या रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की आले पाक की मह़ब्बत है या तमाम उमूरे ख़ैर। **72 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत कुफ़्फ़ारे मक्का **73 :** नुबुव्वत का दा'वा कर के या क़ुरआने करीम को किताबे इलाही बता कर। **74 :** कि आप को उन की बद गोइयों से ईज़ा न हो। **75 :** जो कुफ़्फ़ार कहते हैं। **76 :** जो अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाईं। चुनान्चे ऐसा ही किया कि उन के बात़िल को मिटाया और कलिमए इस्लाम को ग़ालिब किया। **77 मस्अला :** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की ह़क़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर हुवा उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुज्तनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की ह़क़ तलफ़ी भी थी तो उस से ब त़रीक़े शरई ओ़ह्दा बरआ हो। **78 :** या'नी जितना दुआ़ मांगने वाले ने त़लब किया था उस से ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाता है। **79 :** तकब्बुर व ग़ुरूर में मुब्तला हो कर। **80 :** जिस के लिये

قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَ هُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۸﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ

होने पर और अपनी रह़मत फैलाता है[81] और वोही काम बनाने वाला है सब ख़ूबियों सराहा और उस की निशानियों से

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَ هُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا

है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और जो चलने वाले इन में फैलाए और वोह उन के इकठ्ठा करने पर[82] जब

يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ وَ مَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ

चाहे क़ादिर है और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया[83] और

يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ ﴿۳۰﴾ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚۖ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ

बहुत कुछ तो मुआ़फ़ फ़रमा देता है और तुम ज़मीन में क़ाबू से नहीं निकल सकते[84] और न

دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार[85] और उस की निशानियों से हैं[86] दरिया में चलने वालियां

كَالْاَعْلَامِ ؕ ﴿۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ

जैसे पहाड़ियां वोह चाहे तो हवा थमा दे[87] कि उस की पीठ पर[88] ठहरी रह जाएं[89]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۙ ﴿۳۳﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े साबिर शाकिर को[90] या उन्हें तबाह कर दे[91] लोगों के गुनाहों के सबब[92] और

يَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۙ ﴿۳۴﴾ وَّ يَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ

बहुत कुछ मुआ़फ़ फ़रमा दे[93] और जान जाएं वोह जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें[94] कहीं भागने की

जितना मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है उस को उतना अ़त़ा फ़रमाता है। **81 :** और मींह से नफ़्अ़ देता है और क़ह़त़ को दफ़्अ़ फ़रमाता है। **82 :** ह़श्र के लिये। **83 :** येह ख़िताब मोमिनीने मुकल्लफ़ीन से है जिन से गुनाह सरज़द होते हैं, मुराद येह है कि दुन्या में जो तक्लीफ़ें और मुसीबतें मोमिनीन को पहुंचती हैं अक्सर उन का सबब उन के गुनाह होते हैं, उन तक्लीफ़ों को **अल्लाह** तआ़ला उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी मोमिन की तक्लीफ़ उस के रफ़्ए़ दरजात के लिये होती है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में वारिद है। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जो गुनाहों से पाक हैं और छोटे बच्चे जो मुकल्लफ़ नहीं हैं इस आयत के मुख़ात़ब नहीं। **फ़ाएदा :** बा'ज़े गुमराह फ़िर्क़े जो तनासुख़ के क़ाइल हैं इस आयत से इस्तिद्लाल करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तक्लीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वोह उन के गुनाहों का नतीजा हो और अभी तक उन से कोई गुनाह हुवा नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले कोई और ज़िन्दगी हो जिस में गुनाह हुए हों। येह बात बात़िल है क्यूं कि बच्चे इस कलाम के मुख़ात़ब ही नहीं जैसा कि बिल उ़मूम तमाम ख़िताब आ़क़िलीन बालिग़ीन को होते हैं, पस तनासुख़ वालों का इस्तिद्लाल बात़िल हुवा। **84 :** जो मुसीबतें तुम्हारे लिये मुक़द्दर हो चुकी हैं उन से कहीं भाग नहीं सकते बच नहीं सकते। **85 :** कि उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ तुम्हें मुसीबत व तक्लीफ़ से बचा सके। **86 :** बड़ी बड़ी कश्तियां **87 :** जो कश्तियों को चलाती है। **88 :** या'नी दरिया के ऊपर **89 :** चलने न पाएं। **90 :** साबिर शाकिर से मोमिने मुख़्लिस मुराद है जो सख़्ती व तक्लीफ़ में सब्र करता है और राह़तो ऐ़श में शुक्र। **91 :** या'नी कश्तियों को ग़र्क़ कर दे **92 :** जो उस में सुवार हैं। **93 :** गुनाहों में से कि उन पर अ़ज़ाब न करे। **94 :** हमारे अ़ज़ाब से।

مَّحِيۡصٍ ﴿۳۵﴾ فَمَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ فَمَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ وَمَا عِنۡدَ

जगह नहीं तुम्हें जो कुछ मिला है[95] वोह जीती दुन्या में बरत्ने का है[96] और वोह जो **अल्लाह** के

اللّٰهِ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿۳۶﴾ وَالَّذِيۡنَ

पास है[97] बेहतर है और ज़ियादा बाक़ी रहने वाला उन के लिये जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं[98] और वोह जो

يَجۡتَنِبُوۡنَ كَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَالۡفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوۡا هُمۡ يَغۡفِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾

बड़े बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआफ़ कर देते हैं

وَالَّذِيۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمۡ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمۡرُهُمۡ شُوۡرٰى

और वोह जिन्हों ने अपने रब का हुक्म माना[99] और नमाज़ क़ाइम रखी[100] और उन का काम उन के आपस के मश्वरे

بَيۡنَهُمۡ ۪ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيۡنَ اِذَاۤ اَصَابَهُمُ الۡبَغۡىُ هُمۡ

से है[101] और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं और वोह कि जब उन्हें बग़ावत पहुंचे

يَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿۳۹﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثۡلُهَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُهٗ

बदला लेते हैं[102] और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है[103] तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र

عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۰﴾ وَلَمَنِ انۡتَصَرَ بَعۡدَ ظُلۡمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ

अल्लाह पर है बेशक वोह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को[104] और बेशक जिस ने अपनी मज़्लूमी पर बदला लिया उन पर

مَا عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ سَبِيۡلٍ ﴿۴۱﴾ ؕ اِنَّمَا السَّبِيۡلُ عَلَى الَّذِيۡنَ يَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ

कुछ मुआख़ज़े की राह नहीं मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो[105] लोगों पर ज़ुल्म करते हैं

95 : दुन्यवी मालो अस्बाब। 96 : सिर्फ़ चन्द रोज़, उस को बक़ा नहीं। 97 : या'नी सवाब वोह 98 **शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के हक़ में नाज़िल हुई जब आप ने अपना कुल माल सदक़ा कर दिया और इस पर अ़रब के लोगों ने आप को मलामत की। 99 **शाने नुज़ूल :** येह आयत अन्सार के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने अपने रब की दा'वत क़बूल कर के ईमान व ताअ़त को इख़्तियार किया। 100 : इस पर मुदावमत की। 101 : वोह जल्दी और ख़ुदराई नहीं करते। हज़रते हसन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : जो क़ौम मश्वरा करती है वोह सहीह़ राह पर पहुंचती है। 102 : या'नी जब उन पर कोई ज़ुल्म करे तो इन्साफ़ से बदला लेते हैं और बदले में ह़द से तजावुज़ नहीं करते। इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि मोमिन दो त़रह़ के हैं **एक** वोह जो ज़ुल्म को मुआफ़ करते हैं पहली आयत में उन का ज़िक्र फ़रमाया गया, **दूसरे** वोह जो ज़ालिम से बदला लेते हैं उन का इस आयत में ज़िक्र है। अ़ता ने कहा कि येह वोह मोमिनीन हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा से निकाला और उन पर ज़ुल्म किया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें इस सर ज़मीन में तसल्लुत़ दिया और उन्हों ने ज़ालिमों से बदला लिया। 103 : मा'ना येह हैं कि बदला क़दरे जिनायत होना चाहिये इस में ज़ियादती न हो और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि सूरतन मुशाबेह होने के सबब से कहा जाता है और जिस को वोह बदला दिया जाए उसे बुरा मा'लूम होता है और बुराई के साथ ता'बीर करने में येह भी इशारा है कि अगर्चे बदला लेना जाइज़ है लेकिन "अ़फ़्व" इस से बेहतर है। 104 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वोह मुराद हैं जो ज़ुल्म की इब्तिदा करें। 105 : इब्तिदाअन।

وَ يَبۡغُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ ؕ اُولٰٓـئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۴۲﴾ وَ

और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं[106] उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और

لَمَنۡ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿۴۳﴾ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ

बेशक जिस ने सब्र किया[107] और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं और जिसे अल्लाह गुमराह करे

فَمَا لَهٗ مِنۡ وَّلِىٍّ مِّنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيۡنَ لَمَّا رَاَوُا الۡعَذَابَ

उस का कोई रफ़ीक़ नहीं अल्लाह के मुक़ाबिल[108] और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अ़ज़ाब देखेंगे[109]

يَقُوۡلُوۡنَ هَلۡ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنۡ سَبِيۡلٍ ﴿۴۴﴾ وَتَرٰٮهُمۡ يُعۡرَضُوۡنَ عَلَيۡهَا

कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है[110] और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं

خٰشِعِيۡنَ مِنَ الذُّلِّ يَنۡظُرُوۡنَ مِنۡ طَرۡفٍ خَفِىٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا

ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं[111] और ईमान वाले कहेंगे

اِنَّ الۡخٰسِرِيۡنَ الَّذِيۡنَ خَسِرُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ وَاَهۡلِيۡهِمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ

बेशक हार में वोह हैं जो अपनी जानें और अपने घर वाले हार बैठे क़ियामत के दिन[112] सुनते हो

اِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ فِىۡ عَذَابٍ مُّقِيۡمٍ ﴿۴۵﴾ وَمَا كَانَ لَهُمۡ مِّنۡ اَوۡلِيَآءَ يَنۡصُرُوۡنَهُمۡ

बेशक ज़ालिम[113] हमेशा के अ़ज़ाब में हैं और उन के कोई दोस्त न हुए कि अल्लाह के मुक़ाबिल

مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ سَبِيۡلٍ ﴿۴۶﴾ اِسۡتَجِيۡبُوۡا

उन की मदद करते[114] और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिये कहीं रास्ता नहीं[115] अपने रब का

لِرَبِّكُمۡ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ يَوۡمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمۡ مِّنۡ مَّلۡجَاٍ

हुक्म मानो[116] उस दिन के आने से पहले जो अल्लाह की त़रफ़ से टलने वाला नहीं[117] उस दिन तुम्हें कोई

106 : तकब्बुर और मआ़सी का इरतिकाब कर के। 107 : ज़ुल्म व ईज़ा पर और बदला न लिया 108 : कि उसे अ़ज़ाब से बचा सके। 109 : रोज़े क़ियामत 110 : या'नी दुन्या में, ताकि वहां जा कर ईमान ले आएं। 111 : या'नी ज़िल्लत व ख़ौफ़ के बाइ़स आग को दुज़्दीदा (तिरछी) निगाहों से देखेंगे जैसे कोई गरदन ज़दनी (जिस के सर को क़लम करने का हुक्म हो वोह) अपने क़त्ल के वक़्त तेग़ ज़न (तलवार चलाने वाले) की तलवार को दुज़्दीदा (तिरछी) निगाह से देखता है। 112 : जानों का हारना तो येह है कि वोह कुफ़्र इख़्तियार कर के जहन्नम के दाइमी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए और घर वालों का हारना येह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्नत की जो हूरें उन के लिये नामज़द थीं उन से महरूम हो गए। 113 : या'नी काफ़िर 114 : और उस के अ़ज़ाब से बचा सकते। 115 : ख़ैर का न वोह दुन्या में ह़क़ तक पहुंच सके न आख़िरत में जन्नत तक। 116 : और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी कर के तौह़ीद व इ़बादते इलाही इख़्तियार करो 117 : इस से मुराद या मौत का दिन है या क़ियामत का।

يَّوْمَئِذٍ وَّ مَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ

पनाह न होगी न तुम्हें इन्कार करते बने[118] तो अगर वोह मुंह फेरें[119] तो हम ने तुम्हें उन पर निगहबान बना कर

حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

नहीं भेजा[120] तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना[121] और जब हम आदमी को अपनी त़रफ़ से किसी रह़मत का मज़ा देते हैं[122]

فَرِحَ بِهَا ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ

इस पर ख़ुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे[123] बदला उस का जो उन के हाथों ने आगे भेजा[124] तो इन्सान बड़ा

كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ

नाशुक्रा है[125] **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत[126] पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे

لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ

बेटियां अ़ता फ़रमाए[127] और जिसे चाहे बेटे दे[128] या दोनों मिला दे

ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَ مَا

बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे[129] बेशक वोह इ़ल्म व क़ुदरत वाला है और किसी

كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ

आदमी को नहीं पहुंचता कि **अल्लाह** उस से कलाम फ़रमाए मगर वह्य के त़ौर पर[130] या यूं कि वोह बशर पर्दए अ़ज़मत के उधर हो[131] या कोई

118 : अपने गुनाहों का या'नी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं न अ़ज़ाब से बच सकते हो न अपने आ'माले क़बीह़ा का इन्कार कर सकते हो जो तुम्हारे आ'माल नामों में दर्ज हैं। **119 :** ईमान लाने और इत़ाअ़त करने से **120 :** कि तुम पर उन के आ'माल की ह़िफ़ाज़त लाज़िम हो। **121 :** और वोह तुम ने अदा कर दिया। (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) **122 :** ख़्वाह वोह दौलतो सरवत हो या सिह़ह़तो आ़फ़िय्यत या अम्नो सलामत या जाहो मर्तबत **123 :** या और कोई मुसीबत व बला मिस्ल क़ह़त़ व बीमारी व तंगदस्ती वग़ैरा के रूनुमा हो। **124 :** या'नी उन की ना फ़रमानियों और मा'सियतों के सबब से। **125 :** ने'मतों को भूल जाता है। **126 :** जैसा चाहता है तसर्रुफ़ फ़रमाता है, कोई दख़्ल देने और ए'तिराज़ करने की मजाल नहीं रखता। **127 :** बेटा न दे। **128 :** दुख़्तर न दे **129 :** कि उस की औलाद ही न हो, वोह मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِمَا السَّلَام की सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने चार फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साह़िब ज़ादियां और ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام के कोई औलाद ही नहीं। **130 :** या'नी बे वासित़ा इस के दिल में ''इल्क़ा'' फ़रमा कर और ''इल्हाम'' कर के बेदारी में या ख़्वाब में इस में वह्य का वुसूल बे वासित़ा सम्अ़ के है और आयत में ''اِلَّا وَحْيًا'' से येही मुराद है, इस में येह क़ैद नहीं कि इस ह़ाल में सामेअ़ मुतकल्लिम को देखता हो या न देखता हो। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के सीनए मुबारक में ज़बूर की वह्य फ़रमाई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ब्ह़े फ़रज़न्द की ख़्वाब में वह्य फ़रमाई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मे'राज में उसी त़रह़ की वह्य फ़रमाई जिस का ''فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى'' में बयान है। येह सब इसी क़िस्म में दाख़िल हैं। अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़्वाब ह़क़ होते हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि अम्बिया के ख़्वाब वह्य हैं। (تفسیر ابی السعود وکبیر ومدارک وزرقانی علی المواہب وغیرہ) **131 :** या'नी रसूल पसे पर्दा उस का कलाम सुने, इस त़रीक़े वह्य में भी कोई वासित़ा नहीं मगर सामेअ़ को इस ह़ाल में मुतकल्लिम का दीदार नहीं होता। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इसी त़रह़

رَسُوۡلًا فَیُوۡحِیَ بِاِذۡنِهٖ مَا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِیٌّ حَكِیۡمٌ ﴿۵۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوۡحَیۡنَاۤ

फ़िरिश्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह्य करे जो वोह चाहे[132] बेशक वोह बुलन्दी व हिक्मत वाला है और यूंही हम ने तुम्हें वह्य

اِلَیۡكَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا ؕ مَا كُنۡتَ تَدۡرِیۡ مَا الۡكِتٰبُ وَ لَا الۡاِیۡمَانُ وَ

भेजी[133] एक जांफ़िज़ा चीज़[134] अपने हुक्म से उस से पहले न तुम किताब जानते थे न अहकामे शर्अ़ की तफ़्सील

لٰكِنۡ جَعَلۡنٰهُ نُوۡرًا نَّهۡدِیۡ بِهٖ مَنۡ نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّكَ لَتَهۡدِیۡۤ

हां हम ने उसे[135] नूर किया जिस से हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर

اِلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ﴿ۙ۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی

सीधी राह बताते हो[136] अल्लाह की राह[137] कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِلَی اللّٰهِ تَصِیۡرُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۵۳﴾ ع

ज़मीन में सुनते हो सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं

رکوعاتها ۷ ۴۳ سُوۡرَةُ الزُّخۡرُفِ مَكِّیَّةٌ ۶۳ اٰیاتها ۸۹

सूरए ज़ुख़्रुफ़ मक्किय्या है, इस में नवासी आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ وَ الۡكِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ ۚ﴿ۙ۲﴾ اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمۡ

रोशन किताब की क़सम[2] हम ने उसे अ़रबी क़ुरआन उतारा कि

تَعۡقِلُوۡنَ ۚ﴿۳﴾ وَ اِنَّهٗ فِیۡۤ اُمِّ الۡكِتٰبِ لَدَیۡنَا لَعَلِیٌّ حَكِیۡمٌ ؕ﴿۴﴾ اَفَنَضۡرِبُ

तुम समझो[3] और बेशक वोह अस्ल किताब में[4] हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिक्मत वाला है तो क्या हम तुम

के कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। **शाने नुज़ूल :** यहूद ने हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो अल्लाह तआ़ला से कलाम करते वक़्त उस को क्यूं नहीं देखते जैसा कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام देखते थे ? हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जवाब दिया कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام नहीं देखते थे और अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **मस्अला : अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस के लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानिय्यात के लिये होता है, इस पर्दे से मुराद सामेअ़ का दुन्या में दीदार से महजूब होना है। **132 :** इस तरीक़े वह्य में रसूल की तरफ़ फ़िरिश्ते की वसातत है। **133 :** ऐ सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! **134 :** या'नी क़ुरआने पाक जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है। **135 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ को **136 :** या'नी दीने इस्लाम। **137 :** जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाई। **1 :** सूरए ज़ुख़्रुफ़ मक्किय्या है, इस सूरत में सात रुकूअ़, नवासी आयतें और तीन हज़ार चार सो हर्फ़ हैं **2 :** या'नी क़ुरआने पाक की जिस में हिदायत व ज़लालत की राहें जुदा जुदा और वाज़ेह कर दीं और उम्मत के तमाम शरई ज़रूरिय्यात को बयान फ़रमा दिया। **3 :** उस के मआ़नी व अहकाम को। **4 :** अस्ल किताब से मुराद लौहे

عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝٥ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ

से ज़िक्र का पहलू फेर दें इस पर कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो[5] और हम ने कितने ही

نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝٦ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧

ग़ैब बताने वाले (नबी) अगलों में भेजे और उन के पास जो ग़ैब बताने वाला (नबी) आया उस की हंसी ही बनाया किये[6]

فَاَهْلَكْنَاۤ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

तो हम ने वोह हलाक कर दिये जो उन से भी पकड़ में सख़्त थे[7] और अगलों का ह़ाल गुज़र चुका है और अगर तुम उन से पूछो[8]

مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩

कि आस्मान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहेंगे उन्हें बनाया उस इ़ज़्ज़त वाले इ़ल्म वाले ने[9]

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ

जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना किया और तुम्हारे लिये उस में रास्ते किये कि

تَهْتَدُوْنَ ۝١٠ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ

तुम राह पाओ[10] और वोह जिस ने आस्मान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से[11] तो हम ने उस से एक

بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١ وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ

मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया यूंही तुम निकाले जाओगे[12] और जिस ने सब जोड़े बनाए[13] और

جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۝١٢ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ

तुम्हारे लिये कश्तियों और चौपायों से सुवारियां बनाईं कि तुम उन की पीठों पर ठीक बैठो[14]

मह़फ़ूज़ है, क़ुरआने करीम इस में सब्त है। **5 :** या'नी तुम्हारे कुफ़्र में ह़द से बढ़ने की वज्ह से क्या हम तुम्हें मुहमल छोड़ दें और तुम्हारी त़रफ़ से वह़्ये क़ुरआन का रुख़ फेर दें और तुम्हें अम्र व नही कुछ न करें। मा'ना येह हैं कि हम ऐसा न करेंगे, ह़ज़रते क़तादा ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! अगर येह क़ुरआने पाक उठा लिया जाता उस वक़्त जब कि इस उम्मत के पहले लोगों ने इस से ए'राज़ किया था तो वोह सब हलाक हो जाते लेकिन उस ने अपनी रह़मत व करम से इस क़ुरआन का नुज़ूल जारी रखा। **6 :** जैसा आप की क़ौम के लोग करते हैं, कुफ़्फ़ार का क़दीम से येह मा'मूल चला आया है। **7 :** और हर त़रह़ का ज़ोर व क़ुव्वत रखते थे, आप की उम्मत के लोग जो पहले कुफ़्फ़ार की चाल चलते हैं उन्हें डरना चाहिये कि कहीं इन का भी वोही अन्जाम न हो जो उन का हुवा कि ज़िल्लतो रुस्वाई की उ़क़ूबतों से हलाक किये गए। **8 :** या'नी मुश्रिकीन से **9 :** या'नी इक़रार करेंगे कि आस्मान व ज़मीन को **अल्लाह** तआ़ला ने बनाया और येह भी इक़रार करेंगे कि वोह इ़ज़्ज़त व इ़ल्म वाला है, बा वुजूद इस इक़रार के बअ़्स का इन्कार कैसी इन्तिहा दरजे की जहालत है। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने इज़्हारे क़ुदरत के लिये अपनी मस्नूआ़त का ज़िक्र फ़रमाता है और अपने औसाफ़ व शान का इज़्हार करता है। **10 :** सफ़रों में अपने मनाज़िल व मक़ासिद की त़रफ़। **11 :** तुम्हारी ह़ाजतों की क़दर, न इतना कम कि उस से तुम्हारी ह़ाजतें पूरी न हों न इतना ज़ियादा कि क़ौमे नूह़ की त़रह़ तुम्हें हलाक कर दे। **12 :** अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा कर के। **13 :** या'नी तमाम अस्नाफ़ व अन्वाअ़। कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला "फ़र्द" (अकेला) है, ज़िद्द (शरीक होने) और निद्द (मिस्ल होने) और ज़ौजिय्यत (जोड़ा होने) से मुनज़्ज़ा व पाक है, उस के सिवा ख़ल्क़ में जो हे ज़ौज (जोड़ा) है। **14 :** ख़ुश्की और तरी के सफ़र में।

ثُمَّ تَذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ رَبِّكُمۡ اِذَا اسۡتَوَيۡتُمۡ عَلَيۡهِ وَتَقُوۡلُوۡا سُبۡحٰنَ

फिर अपने रब की ने'मत याद करो जब उस पर ठीक बैठ लो और यूं कहो पाकी है

الَّذِىۡ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقۡرِنِيۡنَ ۝١٣ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا

उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़

لَمُنۡقَلِبُوۡنَ ۝١٤ وَجَعَلُوۡا لَهٗ مِنۡ عِبَادِهٖ جُزۡءًا ؕ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَكَفُوۡرٌ

पलटना है[15] और उस के लिये उस के बन्दों से टुकड़ा ठहराया[16] बेशक आदमी[17] खुला

مُّبِيۡنٌ ۝١٥ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخۡلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصۡفٰىكُمۡ بِالۡبَنِيۡنَ ۝١٦ وَاِذَا

नाशुक्रा है[18] क्या उस ने अपने लिये अपनी मख़्लूक़ में से बेटियां लीं और तुम्हें बेटों के साथ ख़ास किया[19] और जब

بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحۡمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ

उन में किसी को ख़ुश ख़बरी दी जाए उस चीज़ की[20] जिस का वस्फ़ रह़मान के लिये बता चुका है[21] तो दिन भर उस का मुंह काला रहे और

كَظِيۡمٌ ۝١٧ اَوَمَنۡ يُّنَشَّؤُا فِى الۡحِلۡيَةِ وَهُوَ فِى الۡخِصَامِ غَيۡرُ مُبِيۡنٍ ۝١٨ وَ

ग़म खाया करे[22] और क्या[23] वोह जो गहने (ज़ेवर) में परवान चढ़े[24] और बह़स में साफ़ बात न करे[25] और

جَعَلُوا الۡمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيۡنَ هُمۡ عِبٰدُ الرَّحۡمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوۡا خَلۡقَهُمۡ ؕ

उन्हों ने फ़िरिश्तों को कि रह़मान के बन्दे हैं औ़रतें ठहराया[26] क्या इन के बनाते वक़्त येह ह़ाज़िर थे[27]

15 : आख़िरे कार। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाते तो अपनी नाक़ा पर सुवार होते वक़्त पहले "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" पढ़ते फिर "سُبْحٰنَ الله" और "اَللّٰهُ اَكْبَر" येह सब तीन तीन बार, फिर येह आयत पढ़ते "سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ" और इस के बा'द और दुआएं पढ़ते और जब ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कश्ती में सुवार होते तो फ़रमाते : "بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا ط اِنَّ رَبِّىْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ" 16 : या'नी कुफ़्फ़ार ने इस इक़रार के बा वुजूद कि अल्लाह तआ़ला आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ है येह सितम किया कि मलाएका को अल्लाह तआ़ला की बेटियां बताया और औलाद साह़िबे औलाद का जुज़ होती है, ज़ालिमों ने अल्लाह तबारक व तआ़ला के लिये जुज़ क़रार दिया, कैसा अ़ज़ीम जुर्म है। 17 : जो ऐसी बातों का क़ाइल है। 18 : उस का कुफ़्र ज़ाहिर है। 19 : अदना अपने लिये और आ'ला तुम्हारे लिये, कैसे जाहिल हो क्या बकते हो। 20 : या'नी बेटी की कि तेरे घर में बेटी पैदा हुई है 21 : कि مَعَاذَ اللّٰه वोह बेटी वाला है। 22 : और बेटी का होना इस क़दर ना गवार समझे बा वुजूद इस के ख़ुदाए पाक के लिये बेटियां बताए (تَعَالَى اللّٰهُ عَنْ ذٰلِكَ) (अल्लाह को बरतरी है इस से) 23 : काफ़िर ह़ज़रते रह़मान के लिये औलाद की क़िस्मों में से तज्वीज़ करते हैं। 24 : या'नी ज़ेवरों की ज़ैबो ज़ीनत में नाज़ो नज़ाकत के साथ परवरिश पाए। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ज़ेवर से तज़य्युन (ज़ैबो ज़ीनत करना) दलीले नुक़्सान है तो मर्दों को इस से इज्तिनाब चाहिये, परहेज़ गारी से अपनी ज़ीनत करें। अब आगे आयत में लड़की की एक और कमज़ोरी का इज़्हार फ़रमाया जाता है। 25 : या'नी अपने ज़ो'फ़े ह़ाल और क़िल्लते अ़क़्ल की वज्ह से। ह़ज़रते क़तादा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि औ़रत जब गुफ़्तगू करती है और अपनी ताईद में कोई दलील पेश करना चाहती है तो अक्सर ऐसा होता है कि वोह अपने ख़िलाफ़ दलील पेश कर देती है। 26 : ह़ासिल येह है कि फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताने में बे दीनों ने तीन कुफ़्र किये **एक** तो अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ औलाद की निस्बत **दूसरे** उस ज़लील चीज़ का उस की त़रफ़ मन्सूब करना जिस को वोह ख़ुद बहुत ही ह़क़ीर समझते हैं और अपने लिये गवारा नहीं करते **तीसरे** मलाएका की तौहीन उन्हें बेटियां बताना। (مدارک) अब इस का रद फ़रमाया जाता है। 27 : फ़िरिश्तों का मुज़क्कर या मुअन्नस होना ऐसी चीज़ तो है नहीं जिस पर कोई अ़क़्ली दलील क़ाइम हो सके और उन के पास ख़बर

سَتُکۡتَبُ شَہَادَتُہُمۡ وَ یُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَ قَالُوۡا لَوۡ شَآءَ الرَّحۡمٰنُ مَا عَبَدۡنٰہُمۡ ؕ

अब लिख ली जाएगी उन की गवाही[28] और उन से जवाब त़लब होगा[29] और बोले अगर रह़मान चाहता हम उन्हें न पूजते[30]

مَا لَہُمۡ بِذٰلِکَ مِنۡ عِلۡمٍ ٭ اِنۡ ہُمۡ اِلَّا یَخۡرُصُوۡنَ ﴿ؕ۲۰﴾ اَمۡ اٰتَیۡنٰہُمۡ کِتٰبًا

उन्हें उस की ह़क़ीक़त कुछ मा'लूम नहीं[31] यूंही अट्कलें दौड़ाते हैं[32] या इस से क़ब्ल हम ने उन्हें

مِّنۡ قَبۡلِہٖ فَہُمۡ بِہٖ مُسۡتَمۡسِکُوۡنَ ﴿۲۱﴾ بَلۡ قَالُوۡۤا اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤی

कोई किताब दी है जिसे वोह थामे हुए हैं[33] बल्कि बोले हम ने अपने बाप दादा को एक दीन

اُمَّۃٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤی اٰثٰرِہِمۡ مُّہۡتَدُوۡنَ ﴿۲۲﴾ وَ کَذٰلِکَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِکَ

पर पाया और हम उन की लकीर पर चल रहे हैं[34] और ऐसे ही हम ने तुम से पहले जब किसी शह्‌र में

فِیۡ قَرۡیَۃٍ مِّنۡ نَّذِیۡرٍ اِلَّا قَالَ مُتۡرَفُوۡہَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤی اُمَّۃٍ

कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों (मालदारों) ने येही कहा कि हम ने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया

وَّ اِنَّا عَلٰۤی اٰثٰرِہِمۡ مُّقۡتَدُوۡنَ ﴿۲۳﴾ قٰلَ اَوَ لَوۡ جِئۡتُکُمۡ بِاَہۡدٰی مِمَّا وَجَدۡتُّمۡ

और हम उन की लकीर के पीछे हैं[35] नबी ने फ़रमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वोह[36] लाऊं जो सीधी राह हो उस से[37] जिस

عَلَیۡہِ اٰبَآءَکُمۡ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِہٖ کٰفِرُوۡنَ ﴿۲۴﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡہُمۡ

पर तुम्हारे बाप दादा थे बोले जो कुछ तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[38] तो हम ने उन से बदला लिया[39]

कोई आई नहीं तो जो कुफ़्फ़ार इन को मुअन्नस क़रार देते हैं उन का ज़रीअ़ए इ़ल्म क्या है क्या इन की पैदाइश के वक़्त मौजूद थे ? और उन्हों ने मुशाहदा कर लिया है ? जब येह भी नहीं तो मह्‌ज़ जाहिलाना गुमराही की बात है। **28 :** या'नी कुफ़्फ़ार का फ़िरिश्तों के मुअन्नस होने पर गवाही देना लिख लिया जाएगा **29 :** आख़िरत में और इस पर सज़ा दी जाएगी। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां किस त़रह़ कहते हो तुम्हारा ज़रीअ़ए इ़ल्म क्या है ? उन्हों ने कहा : हम ने अपने बाप दादा से सुना है और हम गवाही देते हैं वोह सच्चे थे। इस गवाही को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि लिखी जाएगी और इस पर जवाब त़लब होगा। **30 :** या'नी मलाएका को। मत़लब येह था कि अगर मलाएका की परस्तिश करने से **अल्लाह** तआ़ला राज़ी न होता तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता और जब अ़ज़ाब न आया तो हम समझते हैं कि वोह येही चाहता है। येह उन्हों ने ऐसी बात़िल बात कही जिस से लाज़िम आए कि तमाम जुर्म जो दुन्या में होते हैं उन से ख़ुदा राज़ी है। **अल्लाह** तआ़ला उन की तक्ज़ीब फ़रमाता है। **31 :** वोह रिज़ाए इलाही के जानने वाले ही नहीं। **32 :** झूट बकते हैं। **33 :** और उस में ग़ैरे ख़ुदा की परस्तिश की इजाज़त है ? ऐसा नहीं येह बात़िल है और इस के सिवा भी उन के पास कोई हु़ज्जत नहीं है। **34 :** आंखें मीच कर बे सोचे समझे उन का इत्तिबाअ़ करते हैं, वोह मख़्लूक़ परस्ती किया करते थे। मत़लब येह है कि इस की कोई दलील बजुज़ इस के नहीं है कि येह काम वोह बाप दादा की पैरवी में करते हैं, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि इन से पहले भी ऐसा ही कहा करते थे। **35 :** इस से मा'लूम हुवा कि बाप दादा की अन्धे बन कर पैरवी करना कुफ़्फ़ार का क़दीमी मरज़ है और उन्हें इतनी तमीज़ नहीं कि किसी की पैरवी करने के लिये येह देख लेना ज़रूरी है कि वोह सीधी राह पर हो। चुनान्चे **36 :** दीने ह़क़ **37 :** या'नी उस दीन से **38 :** अगर्चे तुम्हारा दीन ह़क़ व सवाब (दुरुस्त) हो मगर हम अपने बाप दादा का दीन छोड़ने वाले नहीं चाहे वोह कैसा ही हो, इस पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है **39 :** या'नी रसूलों के न मानने वालों और उन्हें झुटलाने वालों से।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَ

तो देखो झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी

قَوْمِهٖۤ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ

क़ौम से फ़रमाया मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मा'बूदों से सिवा उस के जिस ने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वोह बहुत जल्द

سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَ جَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

मुझे राह देगा और उसे[40] अपनी नस्ल में बाक़ी कलाम रखा[41] कि कहीं वोह बाज़ आएं[42]

بَلْ مَتَّعْتُ هٰۤؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَ

बल्कि मैं ने उन्हें[43] और उन के बाप दादा को दुन्या के फ़ाएदे दिये[44] यहां तक कि उन के पास हक़[45] और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया[46] और

لَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّ اِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَا

जब उन के पास हक़ आया बोले येह जादू है और हम इस के मुन्किर हैं और बोले क्यूं न

نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ

उतारा गया येह कुरआन इन दो शहरों[47] के किसी बड़े आदमी पर[48] क्या तुम्हारे रब की

رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

रहमत वोह बांटते हैं[49] हम ने उन में उन की ज़ीस्त (ज़िन्दगी गुज़ारने) का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा[50] और

40 : या'नी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने इस तौहीदी कलिमे को जो फ़रमाया था कि मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मा'बूदों से सिवाए उस के जिस ने मुझ को पैदा किया। **41 :** तो आप की औलाद में मुवह्हिद (एक ख़ुदा को मानने वाले) और तौहीद के दाई हमेशा रहेंगे। **42 :** शिर्क से और येह दीने बरहक़ क़बूल करें, यहां हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाने में तम्बीह है कि ऐ अहले मक्का अगर तुम्हें अपने बाप दादा का इत्तिबाअ़ करना ही है तो तुम्हारे आबा में जो सब से बेहतर हैं हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام उन का इत्तिबाअ़ करो और शिर्क छोड़ दो और येह भी देखो कि उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम को राहे रास्त पर नहीं पाया तो उन से बेज़ारी का ए'लान फ़रमा दिया। इस से मा'लूम हुवा कि जो बाप दादा राहे रास्त पर हों दीने हक़ रखते हों उन का इत्तिबाअ़ किया जाए और जो बातिल पर हों गुमराही में हों उन के तरीक़े से बेज़ारी का ए'लान किया जाए। **43 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का को **44 :** दराज़ उ़म्रें अ़ता फ़रमाईं और उन के कुफ़्र के बाइ़स उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करने में जल्दी न की। **45 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **46 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोशन तरीन आयात व मो'जिज़ात के साथ रौनक़ अफ़्रोज़ हुए और आप ने शरई अह़काम वाज़ेह़ तौर पर बयान फ़रमाए और हमारे इस इन्आ़म का हक़ येह था कि इस रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इताअ़त करते लेकिन उन्हों ने ऐसा न किया। **47 :** मक्कए मुकर्रमा व ताइफ़ **48 :** जो कसीरुल माल जथ्थेदार हो जैसे कि मक्कए मुकर्रमा में वलीद बिन मुग़ीरा और ताइफ़ में उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी अल्लाह तआ़ला उन की इस बात का रद फ़रमाता है। **49 :** या'नी क्या नुबुव्वत की कुन्जियां उन के हाथ में हैं कि जिस को चाहें दे दें ? किस क़दर जाहिलाना बात कहते हैं। **50 :** तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को क़वी किसी को ज़ईफ़, मख़्लूक़ में कोई हमारे हुक्म को बदलने और हमारी तक़्दीर से बाहर निकलने की क़ुदरत नहीं रखता तो जब दुन्या जैसी क़लील चीज़ में किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं तो नुबुव्वत जैसे मन्सबे आ़ली में क्या किसी को दम मारने का मौक़अ़ है ? हम जिसे चाहते हैं ग़नी करते हैं, जिसे चाहते हैं मख़्दूम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं फ़क़ीर करते हैं, जिसे चाहते हैं ख़ादिम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं नबी बनाते हैं, जिसे चाहते हैं उम्मती बनाते हैं, अमीर क्या कोई अपनी क़ाबिलिय्यत से हो जाता है ? हमारी अ़ता है जिसे जो चाहें करें।

رَفَعۡنَا بَعۡضَهُمۡ فَوۡقَ بَعۡضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعۡضُهُمۡ بَعۡضًا

उन में एक दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[51] कि उन में एक दूसरे की

سُخۡرِيًّا ؕ وَرَحۡمَتُ رَبِّكَ خَيۡرٌ مِّمَّا يَجۡمَعُوۡنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوۡلَاۤ اَنۡ يَّكُوۡنَ

हंसी बनाए[52] और तुम्हारे रब की रह़मत[53] उन की जम्अ़ जथ्था से बेहतर[54] और अगर येह न होता कि

النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلۡنَا لِمَنۡ يَّكۡفُرُ بِالرَّحۡمٰنِ لِبُيُوۡتِهِمۡ سُقُفًا مِّنۡ

सब लोग एक दीन पर हो जाएं[55] तो हम ज़रूर रह़मान के मुन्किरों के लिये चांदी

فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيۡهَا يَظۡهَرُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوۡتِهِمۡ اَبۡوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيۡهَا

की छतें और सीढ़ियां बनाते जिन पर चढ़ते और उन के घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त

يَتَّكِـُٔوۡنَ ﴿٣٤﴾ وَزُخۡرُفًا ؕ وَاِنۡ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَ

जिन पर तक्या लगाते और त़रह़ त़रह़ की आराइश[56] और येह जो कुछ है जीती दुन्या ही का अस्बाब है और

الۡاٰخِرَةُ عِنۡدَ رَبِّكَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٣٥﴾ وَمَنۡ يَّعۡشُ عَنۡ ذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ

आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है[57] और जिसे रतोंद (अन्धा बनना) आए रह़मान के ज़िक्र से[58]

نُقَيِّضۡ لَهٗ شَيۡطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيۡنٌ ﴿٣٦﴾ وَاِنَّهُمۡ لَيَصُدُّوۡنَهُمۡ عَنِ السَّبِيۡلِ

हम उस पर एक शैत़ान तअ़य्युनात करें कि वोह उस का साथी रहे और बेशक वोह शयात़ीन उन को[59] राह से रोकते हैं

51 : क़ुव्वत व दौलत वग़ैरा दुन्यवी ने'मत में **52 :** या'नी मालदार फ़क़ीर की हंसी करे। येह क़ुरतुबी की तफ़्सीर के मुत़ाबिक़ है और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने "سُخۡرِيًّا" हंसी बनाने के मा'ना में नहीं लिया है बल्कि आ'माल व इश्ग़ाल के मुसख़्ख़र बनाने के मा'ना में लिया है, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि हम ने दौलत व माल में लोगों को मुतफ़ावत किया ताकि एक दूसरे से माल के ज़रीए ख़िदमत ले और दुन्या का निज़ाम मज़बूत़ हो, ग़रीब को ज़रीअ़ए मआ़श हाथ आए और मालदार को काम करने वाले बहम पहुंचें तो इस पर कौन ए'तिराज़ कर सकता है कि फ़ुलां को क्यूं ग़नी किया और फ़ुलां को फ़क़ीर और जब दुन्यवी उमूर में कोई शख़्स दम नहीं मार सकता तो नुबुव्वत जैसे रुत्बए आ़ली में किसी को क्या ताबे सुख़न व ह़क़्क़े ए'तिराज़ ? उस की मरज़ी जिस को चाहे सरफ़राज़ फ़रमाए। **53 :** या'नी जन्नत **54 :** या'नी उस माल से बेहतर है जिस को दुन्या में कुफ़्फ़ार जम्अ़ कर के रखते हैं। **55 :** या'नी अगर इस का लिहाज़ न होता कि काफ़िरों को फ़राख़िये ऐ़श में देख कर सब लोग काफ़िर हो जाएंगे **56 :** क्यूं कि दुन्या और इस के सामान की हमारे नज़्दीक कुछ क़द्र नहीं वोह सरीअ़ुज़्ज़वाल (जल्द ख़त्म होने वाला) है। **57 :** जिन्हें दुन्या की चाहत नहीं। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक दुन्या मच्छर के पर के बराबर भी क़द्र रखती तो काफ़िर को इस से एक प्यास पानी न देता। (قَالَ التِّرۡمِذِيُّ حَدِيۡثٌ حَسَنٌ غَرِيۡبٌ) दूसरी ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم नियाज़ मन्दों की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जाते थे, रास्ते में एक मुर्दा बकरी देखी, फ़रमाया : देखते हो इस के मालिकों ने इसे बहुत बे क़द्री से फेंक दिया, दुन्या की **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक इतनी भी क़द्र नहीं जितनी बकरी वालों के नज़्दीक इस मरी बकरी की हो। (اَخۡرَجَهُ التِّرۡمِذِی وَقَالَ حَدِيۡثٌ حَسَنٌ) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुन्या से ऐसा बचाता है जैसा कि तुम अपने बीमार को पानी से बचाते हो। (اَلتِّرۡمِذِيُّ وَ قَالَ حَسَنٌ غَرِيۡبٌ) **ह़दीस :** दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है। **58 :** या'नी क़ुरआने पाक से अन्धा बन जाए कि इस की हिदायतों को न देखे और उन से फ़ाएदा न उठाए। **59 :** या'नी अन्धा बनने वालों को।

وَ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۷﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ یٰلَیْتَ بَیْنِیْ وَ

और[60] समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं यहां तक कि जब[61] काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहेगा हाए किसी तरह मुझ में

بَیْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَیْنِ فَبِئْسَ الْقَرِیْنُ ﴿۳۸﴾ وَ لَنْ یَّنْفَعَكُمُ الْیَوْمَ اِذْ

तुझ में पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) का फ़ासिला होता तो क्या ही बुरा साथी है और हरगिज़ तुम्हारा इस[62] से भला न होगा आज जब

ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِی الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۹﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِی

कि[63] तुम ने ज़ुल्म किया कि तुम सब अज़ाब में शरीक हो तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे[64] या अन्धों को राह

الْعُمْیَ وَ مَنْ كَانَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۰﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ

दिखाओगे[65] और उन्हें जो खुली गुमराही में हैं[66] तो अगर हम तुम्हें ले जाएं[67] तो उन से हम

مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اَوْ نُرِیَنَّكَ الَّذِیْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَیْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿۴۲﴾

ज़रूर बदला लेंगे[68] या तुम्हें दिखा दें[69] जिस का उन्हें हम ने वा'दा दिया है तो हम उन पर बड़ी क़ुदरत वाले हैं

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِیْۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۴۳﴾ وَ

तो मज़बूत थामे रहो उसे जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गई[70] बेशक तुम सीधी राह पर हो और

اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَ لِقَوْمِكَ ۚ وَ سَوْفَ تُسْــٴَـلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ سْــٴَـلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

बेशक वोह[71] शरफ़ है तुम्हारे लिये[72] और तुम्हारी क़ौम के लिये[73] और अन्क़रीब तुम से पूछा जाएगा[74] और उन से पूछो जो हम

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً یُّعْبَدُوْنَ ﴿۴۵﴾ ع

ने तुम से पहले रसूल भेजे क्या हम ने रह़मान के सिवा कुछ और ख़ुदा ठहराए जिन को पूजा हो[75]

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰیٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَاۡىٕهٖ فَقَالَ اِنِّیْ رَسُوْلُ

और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़ भेजा तो उस ने फ़रमाया बेशक मैं उस का रसूल

60 : वोह अन्धा बनने वाले बा वुजूद गुमराह होने के 61 : रोज़े क़ियामत 62 : ह़स्रतो नदामत 63 : ज़ाहिर व साबित हो गया कि दुन्या में शिर्क कर के 64 : जो गोशे क़बूल नहीं रखते। 65 : जो चश्मे ह़क़ बीं (ह़क़ देखने वाली आंख) से मह़रूम हैं। 66 : जिन के नसीब में ईमान नहीं। 67 : या'नी उन्हें अ़ज़ाब करने से पहले तुम्हें वफ़ात दें 68 : आप के बा'द। 69 : तुम्हारे ह़यात में उन पर अपना वोह अ़ज़ाब 70 : हमारी किताब क़ुरआने मजीद। 71 : क़ुरआन शरीफ़ 72 : कि अल्लाह तआला ने तुम्हें नुबुव्वत व ह़िक्मत अ़ता फ़रमाई। 73 : या'नी उम्मत के लिये कि उन्हें इस से हिदायत फ़रमाई। 74 : रोज़े क़ियामत कि तुम ने क़ुरआन का क्या ह़क़ अदा किया, इस की क्या ता'ज़ीम की, इस ने'मत का क्या शुक्र बजा लाए? 75 : रसूलों से सुवाल करने के मा'ना येह हैं कि उन के अद्यान व मिलल को तलाश करो! कहीं भी किसी नबी की उम्मत में बुत परस्ती रवा रखी गई है? और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि मोमिनीने अहले किताब से दरयाफ़्त करो कि क्या कभी किसी नबी ने ग़ैरुल्लाह की इबादत की इजाज़त दी? ताकि मुश्रिकीन पर साबित हो जाए कि मख़्लूक़ परस्ती न किसी रसूल ने बताई न किसी किताब में आई। येह भी एक रिवायत है कि शबे मे'राज सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बैतुल मक़्दिस में

رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۶﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰیٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا یَضْحَكُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ

हूं जो सारे जहां का मालिक है फिर जब वोह उन के पास हमारी निशानियां लाया[76] जभी वोह उन पर हंसने लगे[77] और

مَا نُرِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ اِلَّا هِیَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا٘ وَ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ

हम उन्हें जो निशानी दिखाते वोह पहले से बड़ी होती[78] और हम ने उन्हें मुसीबत में गिरिफ़्तार किया

لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ قَالُوْا یٰۤاَیُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

कि वोह बाज़ आएं[79] और बोले[80] कि ऐ जादूगर[81] हमारे लिये अपने रब से दुआ कर उस अ़हद के सबब जो उस

عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ

का तेरे पास है[82] बेशक हम हिदायत पर आएंगे[83] फिर जब हम ने उन से वोह मुसीबत टाल दी जभी वोह

یَنْكُثُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نَادٰى فِرْعَوْنُ فِیْ قَوْمِهٖ قَالَ یٰقَوْمِ اَلَیْسَ لِیْ مُلْكُ

अ़हद तोड़ गए[84] और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम में[85] पुकारा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे लिये मिस्र की

مِصْرَ وَ هٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِیْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۱﴾ ؕ اَمْ اَنَا

सल्तनत नहीं और येह नहरें कि मेरे नीचे बहती हैं[86] तो क्या तुम देखते नहीं[87] या मैं

خَیْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ مَهِیْنٌ ۙ۬ وَّ لَا یَكَادُ یُبِیْنُ ﴿۵۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اُلْقِیَ عَلَیْهِ

बेहतर हूं[88] इस से कि ज़लील है[89] और बात साफ़ करता मा'लूम नहीं होता[90] तो इस पर क्यूं न डाले गए

तमाम अम्बिया की इमामत फ़रमाई, जब हुज़ूर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए जिब्रीले अमीन ने अ़र्ज़ किया कि ऐ सरवरे अकरम ! अपने से पहले अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमा लीजिये कि क्या **अल्लाह** तआ़ला ने अपने सिवा किसी और की इबादत की इजाज़त दी ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस सुवाल की कुछ ह़ाजत नहीं या'नी इस में कोई शक ही नहीं कि तमाम अम्बिया तौह़ीद की दा'वत देते आए सब ने मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाई । **76 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत पर दलालत करती थीं । **77 :** और उन को जादू बताने लगे । **78 :** या'नी हर एक निशानी अपनी ख़ुसूसिय्यत में दूसरी से बढ़ी चढ़ी थी, मुराद येह है कि एक से एक आ'ला थी । **79 :** कुफ़्र से ईमान की त़रफ़ और येह अ़ज़ाब क़ह़त़ साली और तूफ़ान व टिड्डी वग़ैरा से किये गए, येह सब ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निशानियां थीं जो इन की नुबुव्वत पर दलालत करती थीं और उन में एक से एक बुलन्दो बाला थी । **80 :** अ़ज़ाब देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **81 :** येह कलिमे उन के उ़र्फ़ और मुहावरे में बहुत ता'ज़ीमो तक्रीम का था वोह आ़लिम व माहिर व ह़ाज़िक़ कामिल को जादूगर कहा करते थे और इस का सबब येह था कि उन की नज़र में जादू की बहुत अ़ज़्मत थी और वोह इस को सिफ़ते मद्ह़ समझते थे, इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ब वक़्ते इल्तिजा इस कलिमे से निदा की, कहा : **82 :** वोह अ़ह्द या तो येह है कि आप की दुआ़ मुस्तजाब है या नुबुव्वत या ईमान लाने वालों और हिदायत क़बूल करने वालों पर से अ़ज़ाब उठा लेना । **83 :** ईमान लाएंगे । चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की और उन पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया । **84 :** ईमान न लाए कुफ़्र पर मुसिर रहे । **85 :** बहुत इफ़्तिख़ार के साथ **86 :** येह दरियाए नील से निकली हुई बड़ी बड़ी नहरें थीं जो फ़िरऔ़न के क़स्र (महल) के नीचे जारी थीं । **87 :** मेरी अ़ज़्मतो क़ुव्वत और शानो सत्वत (शौकत) । **अल्लाह** तआ़ला की अ़जीब शान है ! ख़लीफ़ा रशीद ने जब येह आयत पढ़ी और ह़ुकूमते मिस्र पर फ़िरऔ़न का ग़ुरूर देखा तो कहा कि मैं वोह मिस्र अपने अदना ग़ुलाम को दे दूंगा । चुनान्चे उन्हों ने ''मिस्र'' ख़ुसैब को दे दिया जो उन का ग़ुलाम था और वुज़ू कराने की ख़िदमत पर मामूर था । **88 :** या'नी क्या तुम्हारे नज़्दीक साबित हो गया और तुम ने समझ लिया कि मैं बेहतर हूं **89 :** येह उस बे ईमान मुतकब्बिर ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की शान में कहा । **90 :** ज़बान में गिरह होने की वज्ह से जो बचपन में आग मुंह में रखने से पड़ गई थी और येह

اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝٥٣ فَاسْتَخَفَّ

सोने के कंगन[91] या इस के साथ फ़िरिश्ते आते कि इस के पास रहते[92] फिर उस ने अपनी क़ौम को

قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٥٤ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا

कम अक़्ल कर लिया[93] तो वोह उस के कहने पर चले[94] बेशक वोह बे हुक्म लोग थे फिर जब उन्हों ने वोह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब

مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥٥ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝٥٦

उन पर आया हम ने उन से बदला लिया तो हम ने उन सब को डुबो दिया उन्हें हम ने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिये[95]

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝٥٧ وَقَالُوْٓا

और जब इब्ने मरयम की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी क़ौम उस से हंसने लगते हैं[96] और कहते हैं

ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

क्या हमारे मा'बूद बेहतर हैं या वोह[97] उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाहक़ झगड़े को[98] बल्कि वोह हैं ही

خَصِمُوْنَ ۝٥٨ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ

झगड़ालू लोग[99] वोह तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हम ने एहसान फ़रमाया[100] और उसे हम ने बनी इसराईल के लिये

उस मल्ऊन ने झूट कहा क्यूं कि आप की दुआ से **अल्लाह** तआला ने ज़बाने अक़्दस की वोह गिरह ज़ाइल कर दी थी लेकिन फ़िरऔनी पहले ही ख़याल में थे, आगे फिर इसी फ़िरऔन का कलाम ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **91 :** या'नी अगर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सच्चे हैं और **अल्लाह** तआला ने इन को वाजिबुल इताअत सरदार बनाया है तो इन्हें सोने का कंगन क्यूं नहीं पहनाया। येह बात उस ने अपने ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ कही कि उस ज़माने में जिस किसी को सरदार बनाया जाता था उस को सोने के कंगन और सोने का तौक़ पहनाया जाता था। **92 :** और इस के सिद्क़ की गवाही देते। **93 :** उन जाहिलों की अक़्ल ख़ब्त़ (ख़राब) कर दी उन्हें बहला फुसला लिया **94 :** और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करने लगे **95 :** कि बा'द वाले उन के हाल से नसीहत व इब्रत हासिल करें। **96 शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कुरैश के सामने येह आयत ''وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ'' पढ़ी जिस के मा'ना येह हैं कि ऐ मुश्रिकीन ! तुम और जो चीज़ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन है। येह सुन कर मुश्रिकीन को बहुत ग़ुस्सा आया और इब्ने ज़िबा'रा कहने लगा : या मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या येह ख़ास हमारे और हमारे मा'बूदों ही के लिये है या हर उम्मत व गुरौह के लिये ? सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तुम्हारे और तुम्हारे मा'बूदों के लिये भी है और सब उम्मतों के लिये भी। इस पर उस ने कहा कि आप के नज़्दीक ईसा बिन मरयम नबी हैं और आप उन की और उन की वालिदा की ता'रीफ़ करते हैं और आप को मा'लूम है कि नसारा इन दोनों को पूजते हैं और हज़रते उज़ैर और फ़िरिश्ते भी पूजे जाते हैं या'नी यहूद वग़ैरा उन को पूजते हैं तो अगर येह हज़रात (مَعَاذَ اللّٰه) जहन्नम में हों तो हम राज़ी हैं कि हम और हमारे मा'बूद भी उन के साथ हों और येह कह कर कुफ़्फ़ार ख़ूब हंसे, इस पर येह आयत **अल्लाह** तआला ने नाज़िल फ़रमाई : ''اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ'' और येह आयत नाज़िल हुई : ''وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ......الآية'' जिस का मतलब येह है कि जब इब्ने ज़िबा'रा ने अपने मा'बूदों के लिये हज़रते ईसा बिन मरयम की मिसाल बयान की और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुजादला किया कि नसारा उन्हें पूजते हैं तो कुरैश उस की इस बात पर हंसने लगे। **97 :** या'नी हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام। मतलब येह था कि आप के नज़्दीक हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बेहतर हैं तो अगर (مَعَاذَ اللّٰه) वोह जहन्नम में हुए तो हमारे मा'बूद या'नी बुत भी हुवा करें कुछ परवाह नहीं, इस पर **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : **98 :** येह जानते हुए कि वोह जो कुछ कह रहे हैं बातिल है और आयए करीमा ''اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ'' (बेशक तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो) से सिर्फ़ बुत मुराद हैं, हज़रते ईसा व हज़रते उज़ैर

اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنَا مِنۡكُمۡ مَّلٰٓئِكَةً فِى الۡاَرۡضِ

अ़जीब नमूना बनाया[101] और अगर हम चाहते तो[102] ज़मीन में तुम्हारे बदले फ़िरिश्ते

يَخۡلُفُوۡنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ‌ؕ هٰذَا

बसाते[103] और बेशक ईसा क़ियामत की ख़बर है[104] तो हरगिज़ क़ियामत में शक न करना और मेरे पैरव होना[105] येह

صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيۡطٰنُ‌ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿٦٢﴾

सीधी राह है और हरगिज़ शैतान तुम्हें न रोक दे[106] बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है

وَلَمَّا جَآءَ عِيۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمۡ

और जब ईसा रोशन निशानियां[107] लाया उस ने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिक्मत ले कर आया[108] और इस लिये मैं तुम से बयान कर दूं

بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ‌ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ

बा'ज़ वोह बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो[109] तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो बेशक **अल्लाह**

هُوَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ‌ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخۡتَلَفَ

मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो येह सीधी राह है[110] फिर वोह

الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ‌ۚ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿٦٥﴾

गुरौह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए[111] तो ज़ालिमों की ख़राबी है[112] एक दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब से[113]

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٦٦﴾

काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो

और मलाएका कोई मुराद नहीं लिये जा सकते। इब्ने ज़िबा'रा अ़रब था अ़रबी ज़बान का जानने वाला था, येह उस को ख़ूब मा'लूम था कि "مَاتَعۡبُدُوۡنَ" में जो "مَا" है इस के मा'ना चीज़ के हैं, इस से ग़ैर ज़वील उ़क़ूल मुराद होते हैं लेकिन बा वुजूद इस के उस का ज़बाने अ़रब के उसूल से जाहिल बन कर हज़रते ईसा और हज़रते उ़ज़ैर और मलाएका को इस में दाख़िल करना कठ हुज्जती और जहल परवरी है। **99 :** बातिल के दरपै होने वाले। अब हज़रते ईसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत इर्शाद फ़रमाया जाता है : **100 :** नुबुव्वत अ़ता फ़रमा कर। **101 :** अपनी क़ुदरत का कि बिग़ैर बाप के पैदा किया। **102 :** ऐ अहले मक्का ! हम तुम्हें हलाक कर देते और **103 :** जो हमारी इबादत व इत़ाअ़त करते। **104 :** या'नी हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام का आस्मान से उतरना अ़लामाते क़ियामत में से है। **105 :** या'नी मेरी हिदायत व शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करना। **106 :** शरीअ़त के इत्तिबाअ़ या क़ियामत के यक़ीन या दीने इलाही पर क़ाइम रहने से। **107 :** या'नी मो'जिज़ात **108 :** या'नी नुबुव्वत और इन्जीली अह़काम। **109 :** तौरैत के अह़काम में से। **110 :** हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام का कलामे मुबारक तमाम हो चुका, आगे नसरानियों के शिर्कों का बयान फ़रमाया जाता है **111 :** हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के बा'द उन में से किसी ने कहा कि ईसा ख़ुदा थे। किसी ने कहा : ख़ुदा के बेटे। किसी ने कहा : तीन में के तीसरे। ग़रज़ नसरानी फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए : या'क़ूबी, नुस्तूरी, मल्कानी, शम्ऊ़नी। **112 :** जिन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के बारे में कुफ़्र की बातें कहीं। **113 :** या'नी रोज़े क़ियामत के।

اَلۡاَخِلَّآءُ یَوۡمَئِذٍۭ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الۡمُتَّقِیۡنَ ﴿٦٧﴾ یٰعِبَادِ لَا

गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़ गार[114] उन से फ़रमाया जाएगा

خَوۡفٌ عَلَیۡكُمُ الۡیَوۡمَ وَ لَاۤ اَنۡتُمۡ تَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰیٰتِنَا وَ

ऐ मेरे बन्दो आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो वोह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और

كَانُوۡا مُسۡلِمِیۡنَ ﴿٦٩﴾ اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَ اَزۡوَاجُكُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿٧٠﴾

मुसल्मान थे दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियां तुम्हारी ख़ातिरें होतीं[115]

یُطَافُ عَلَیۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّ اَكۡوَابٍ ۚ وَ فِیۡهَا مَا تَشۡتَهِیۡهِ

उन पर दौरा होगा सोने के पियालों और जामों का और उस में जो

الۡاَنۡفُسُ وَ تَلَذُّ الۡاَعۡیُنُ ۚ وَ اَنۡتُمۡ فِیۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَ تِلۡكَ الۡجَنَّةُ

जी चाहे और जिस से आंख को लज़्ज़त पहुंचे[116] और तुम उस में हमेशा रहोगे और येह है वोह जन्नत

الَّتِیۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمۡ فِیۡهَا فَاكِهَةٌ كَثِیۡرَةٌ

जिस के तुम वारिस किये गए अपने आ'माल से तुम्हारे लिये इस में बहुत मेवे हैं

مِّنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الۡمُجۡرِمِیۡنَ فِیۡ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ﴿٧٤﴾

कि उन में से खाओ[117] बेशक मुजरिम[118] जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं

لَا یُفَتَّرُ عَنۡهُمۡ وَ هُمۡ فِیۡهِ مُبۡلِسُوۡنَ ﴿٧٥﴾ وَ مَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَ لٰكِنۡ كَانُوۡا هُمُ

वोह कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वोह उस में बे आस रहेंगे[119] और हम ने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद ही

114 : या'नी दीनी दोस्ती और वोह महब्बत जो **अल्लाह** तआ़ला के लिये है बाक़ी रहेगी। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है आप ने फ़रमाया : दो दोस्त मोमिन और दो दोस्त काफ़िर, मोमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता है : या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी का और नेकी करने का हुक्म करता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर हाज़िर होना है, या रब ! उस को मेरे बा'द गुमराह न कर और उस को हिदायत दे जैसी मेरी हिदायत फ़रमाई और उस का इकराम कर जैसा मेरा इकराम फ़रमाया। जब उस का मोमिन दोस्त मर जाता है तो **अल्लाह** तआ़ला दोनों को जम्अ़ करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे तो हर एक कहता है कि येह अच्छा भाई है, अच्छा दोस्त है, अच्छा रफ़ीक़ है और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ़ करता है : या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी से मन्अ़ करता था और बदी का हुक्म देता था, नेकी से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर हाज़िर होना नहीं, तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे, तो उन में से एक दूसरे को कहता है : बुरा भाई, बुरा दोस्त, बुरा रफ़ीक़। 115 : या'नी जन्नत में तुम्हारा इकराम होगा ने'मतें दी जाएंगी ऐसे ख़ुश किये जाओगे कि तुम्हारे चेहरों पर ख़ुशी के आसार नुमूदार होंगे। 116 : अन्वाओ़ अक़्साम की ने'मतें। 117 : जन्नती दरख़्त समर दार सदा बहार हैं उन की ज़ैबो ज़ीनत में फ़र्क़ नहीं आता। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर कोई उन से एक फल लेगा तो दरख़्त में उस की जगह दो फल नुमूदार हो जाएंगे। 118 : या'नी काफ़िर 119 : रह़मत की उम्मीद भी न होगी।

الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۷۶﴾ وَ نَادَوۡا يٰمٰلِكُ لِيَقۡضِ عَلَيۡنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمۡ

ज़ालिम थे[120] और वोह पुकारेंगे[121] ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके[122] वोह फ़रमाएगा[123] तुम्हें

مّٰكِثُوۡنَ ﴿۷۷﴾ لَقَدۡ جِئۡنٰكُمۡ بِالۡحَقِّ وَ لٰكِنَّ اَكۡثَرَكُمۡ لِلۡحَقِّ كٰرِهُوۡنَ ﴿۷۸﴾

तो ठहरना है[124] बेशक हम तुम्हारे पास हक़ लाए[125] मगर तुम में अक्सर को हक़ ना गवार है

اَمۡ اَبۡرَمُوۡۤا اَمۡرًا فَاِنَّا مُبۡرِمُوۡنَ ﴿۷۹﴾ۚ اَمۡ يَحۡسَبُوۡنَ اَنَّا لَا نَسۡمَعُ

क्या उन्हों ने[126] अपने ख़याल में कोई काम पक्का कर लिया है[127] तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं[128] क्या इस घमन्ड में हैं कि हम उन की आहिस्ता बात

سِرَّهُمۡ وَ نَجۡوٰىهُمۡ ؕ بَلٰى وَ رُسُلُنَا لَدَيۡهِمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ﴿۸۰﴾ قُلۡ اِنۡ كَانَ

और उन की मश्वरत नहीं सुनते हां क्यूं नहीं[129] और हमारे फ़िरिश्ते उन के पास लिख रहे हैं तुम फ़रमाओ ब फ़र्ज़े मुहाल

لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الۡعٰبِدِيۡنَ ﴿۸۱﴾ سُبۡحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ

रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता[130] पाकी है आस्मानों और ज़मीन

الۡاَرۡضِ رَبِّ الۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿۸۲﴾ فَذَرۡهُمۡ يَخُوۡضُوۡا وَ يَلۡعَبُوۡا

के रब को अर्श के रब को उन बातों से जो येह बनाते हैं[131] तो तुम उन्हें छोड़ो कि बेहूदा बातें करें और खेलें[132]

حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ الَّذِىۡ يُوۡعَدُوۡنَ ﴿۸۳﴾ وَ هُوَ الَّذِىۡ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ

यहां तक कि अपने उस दिन को पाएं जिस का उन से वा'दा है[133] और वोही आस्मान वालों का ख़ुदा और

فِى الۡاَرۡضِ اِلٰهٌ ؕ وَ هُوَ الۡحَكِيۡمُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۸۴﴾ وَ تَبٰرَكَ الَّذِىۡ لَهٗ مُلۡكُ

ज़मीन वालों का ख़ुदा[134] और वोही हिक्मत व इल्म वाला है और बड़ी बरकत वाला है वोह कि उसी के लिये है सल्तनत

120 : कि सरकशी व ना फ़रमानी कर के इस हाल को पहुंचे। **121 :** जहन्नम के दारोग़ा को कि **122 :** या'नी मौत दे दे। मालिक से दरख़्वास्त करेंगे कि वोह **अल्लाह** तबारक व तआला से उन की मौत की दुआ करे। **123 :** हज़ार बरस बा'द। **124 :** अ़ज़ाब में हमेशा, कभी इस से रिहाई न पाओगे न मौत से न और किसी तरह, इस के बा'द **अल्लाह** तआला अहले मक्का से ख़िताब फ़रमाता है **125 :** अपने रसूलों की मा'रिफ़त। **126 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का ने **127 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मक्र करने और फ़रेब से ईज़ा पहुंचाने का और दर हक़ीक़त ऐसा ही था कि क़ुरैश दारुन्नद्वा में जम्अ़ हो कर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी के लिये हीले सोचते थे। **128 :** उन के इस मक्रो फ़रेब का बदला जिस का अन्जाम उन की हलाकत है। **129 :** हम ज़रूर सुनते हैं और पोशीदा ज़ाहिर हर बात जानते हैं, हम से कुछ नहीं छुप सकता। **130 :** लेकिन उस के बच्चा नहीं और उस के लिये औलाद मुहाल है, येह नफ़्यिे वलद में मुबालग़ा है। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन हारिस ने कहा था कि फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो नज़्र कहने लगा : देखते हो क़ुरआन में मेरी तस्दीक़ आ गई। वलीद ने कहा कि तेरी तस्दीक़ नहीं हुई बल्कि येह फ़रमाया गया कि रहमान के वलद नहीं है और मैं अहले मक्का में से पहला मुवह्हिद हूं उस से वलद की नफ़ी करने वाला। इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआला की तन्ज़ीह (पाकी) का बयान है। **131 :** और उस के लिये औलाद क़रार देते हैं। **132 :** या'नी जिस लग़्व व बातिल में हैं उसी में पड़े रहें। **133 :** जिस में अ़ज़ाब किये जाएंगे और वोह रोज़े क़ियामत है। **134 :** या'नी वोही मा'बूद है, आस्मान व ज़मीन में उसी की इबादत की जाती है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَیْهِ

आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन के दरमियान है और उसी के पास है क़ियामत का इल्म और तुम्हें

تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا یَمْلِكُ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا

उसी की त़रफ़ फिरना और जिन को येह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते हां शफ़ाअ़त का इख़्तियार उन्हें है

مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَیَقُوْلُنَّ

जो ह़क़ की गवाही दें[135] और इल्म रखें[136] और अगर तुम उन से पूछो[137] कि उन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे

اللّٰهُ فَاَنّٰى یُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾ لا وَقِیْلِهٖ یٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ م

अल्लाह ने[138] तो कहां औंधे जाते हैं[139] मुझे रसूल[140] के इस कहने की क़सम[141] कि ऐ मेरे रब येह लोग ईमान नहीं लाते

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ ع

तो उन से दर गुज़र करो[142] और फ़रमाओ बस सलाम है[143] कि आगे जान जाएंगे[144]

ایاتها ٥٩ ۔ سُوْرَةُ الدُّخَانِ ٤٤ مَكِّيَّةٌ ٦٤ ۔ رکوعاتها ٣

सूरए दुख़ान मक्किय्या है, इस में उन्सठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

حٰمٓ ﴿۱﴾ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾ ۙ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا

क़सम उस रोशन किताब की[2] बेशक हम ने उसे बरकत वाली रात में उतारा[3] बेशक हम

مُنْذِرِیْنَ ﴿۳﴾ فِیْهَا یُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِیْمٍ ﴿۴﴾ ۙ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا

डर सुनाने वाले हैं[4] उस में बांट दिया जाता है हर हिक्मत वाला काम[5] हमारे पास के हुक्म से बेशक

135 : या'नी तौह़ीदे इलाही की। 136 : इस का कि **अल्लाह** उन का रब है, ऐसे मक़्बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे। 137 : या'नी मुश्रिकीन से। 138 : और **अल्लाह** तआ़ला के ख़ालिक़े आ़लम होने का इक़रार करेंगे। 139 : और बा वुजूद इस इक़रार के उस की तौह़ीद व इबादत से फिरते हैं। 140 : सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 141 : **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ौले मुबारक की क़सम फ़रमाना हुज़ूर के इक्राम और हुज़ूर की दुआ़ व इल्तिजा के एह़तिराम का इज़्हार है। 142 : और उन्हें छोड़ दो 143 : येह सलामे मुतारकत है, इस के मा'ना येह हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अम्न में रहना चाहते हैं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) 144 : अपना अन्जामे कार। 1 : सूरए दुख़ान मक्किय्या है इस में तीन रुकूअ़ और सत्तावन या उन्सठ आयतें और तीन सो छियालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो इक्तीस ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ुरआने पाक की जो ह़लाल व ह़राम वग़ैरा अह़काम का बयान फ़रमाने वाला है। 3 : इस रात से या शबे क़द्र मुराद है या शबे बराअत, इस शब में क़ुरआने पाक बि तमामिही लौह़े मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया फिर वहां से ह़ज़रते जिब्रील तेईस साल के अ़र्से में थोड़ा थोड़ा ले कर नाज़िल हुए, इस शब को शबे मुबारका

كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦﴾ ۙ

हम भेजने वाले हैं[6] तुम्हारे रब की त़रफ़ से रह़मत बेशक वोही सुनता जानता है

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾ لَاۤ اِلٰهَ

वोह जो रब है आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो[7] उस के सिवा

اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ

किसी की बन्दगी नहीं वोह जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब बल्कि वोह

فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾ ۙ

शक में पड़े खेल रहे हैं[8] तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आस्मान एक ज़ाहिर धूआं लाएगा

يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا

कि लोगों को ढांप लेगा[9] येह है दर्दनाक अ़ज़ाब उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अ़ज़ाब खोल दे हम

مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَ قَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ ۙ ثُمَّ

ईमान लाते हैं[10] कहां से हो उन्हें नसीहत मानना[11] हालां कि उन के पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका[12] फिर

تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿١٤﴾ ۘ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ

उस से रूगर्दां हुए और बोले सिखाया हुवा दीवाना है[13] हम कुछ दिनों को अ़ज़ाब खोले देते हैं तुम फिर

इस लिये फ़रमाया गया कि इस में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा और हमेशा इस शब में ख़ैरो बरकत नाज़िल होती है, दुआ़एं क़बूल की जाती हैं। **4 :** अपने अ़ज़ाब का। **5 :** साल भर के अरज़ाक़ व आजाल (अम्वात) व अह़काम। **6 :** अपने रसूल ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन से पहले अम्बिया को। **7 :** कि वोह आस्मान व ज़मीन का रब है तो यक़ीन करो कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। **8 :** उन का इक़रार इल्मो यक़ीन से नहीं बल्कि उन की बात में हंसी और तमस्ख़ुर शामिल है और वोह आप के साथ इस्तिहज़ा करते हैं तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन पर दुआ़ की, कि या रब ! इन्हें ऐसी हफ़्त सालह क़ह़त़ की मुसीबत में मुब्तला कर जैसे सात साल का क़ह़त़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में भेजा था। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया गया **9 :** चुनान्चे क़ुरैश पर क़ह़त़ साली आई और यहां तक इस की शिद्दत हुई कि वोह लोग मुर्दार खा गए और भूक से इस ह़ाल को पहुंच गए कि जब ऊपर को नज़र उठाते आस्मान की त़रफ़ देखते तो उन को धूआं ही धूआं मा'लूम होता या'नी ज़ो'फ़ से निगाहों में ख़ीरगी (धुंदलाहट) आ गई थी और क़ह़त़ से ज़मीन ख़ुश्क हो गई ख़ाक उड़ने लगी ग़ुबार ने हवा को मुकद्दर (मैला) कर दिया। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि धूएं से मुराद वोह धूआं है जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत ज़ाहिर होगा, मशरिक़ो मग़रिब उस से भर जाएंगे, चालीस रोज़ो शब रहेगा, मोमिन की ह़ालत तो उस से ऐसी हो जाएगी जैसे ज़ुकाम हो जाए और काफ़िर मदहोश होंगे। उन के नथनों और कानों और बदन के सूराख़ों से धूआं निकलेगा। **10 :** और तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करते हैं। **11 :** या'नी इस ह़ालत में वोह कैसे नसीह़त मानेंगे **12 :** और मो'जिज़ाते ज़ाहिरात और आयाते बय्यिनात पेश फ़रमा चुका। **13 :** जिस को वह़्य की ग़शी त़ारी होने के वक़्त जिन्नात येह कलिमात तल्क़ीन कर जाते हैं। (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى)

وقف لازم

عَآئِدُوۡنَ ﴿۱۵﴾ یَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَۃَ الۡکُبۡرٰی ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَ لَقَدۡ

वोही करोगे[14] जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे[15] बेशक हम बदला लेने वाले हैं और बेशक

فَتَنَّا قَبۡلَہُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَ جَآءَہُمۡ رَسُوۡلٌ کَرِیۡمٌ ﴿۱۷﴾ اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَیَّ

हम ने इन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को जांचा और उन के पास एक मुअ़ज़्ज़ज़ रसूल तशरीफ़ लाया[16] कि **अल्लाह** के बन्दों को

عِبَادَ اللّٰہِ ؕ اِنِّیۡ لَکُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِیۡنٌ ﴿۱۸﴾ وَّ اَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَی اللّٰہِ ۚ اِنِّیۡۤ

मुझे सिपुर्द कर दो[17] बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानत वाला रसूल हूं और **अल्लाह** के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं

اٰتِیۡکُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۱۹﴾ وَ اِنِّیۡ عُذۡتُ بِرَبِّیۡ وَ رَبِّکُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ﴿۲۰﴾

तुम्हारे पास एक रोशन सनद लाता हूं[18] और मैं पनाह लेता हूं अपने रब और तुम्हारे रब की इस से कि तुम मुझे संगसार करो[19]

وَ اِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِیۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿۲۱﴾ فَدَعَا رَبَّہٗۤ اَنَّ ہٰۤؤُلَآءِ قَوۡمٌ

और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से कनारे हो जाओ[20] तो उस ने अपने रब से दुआ़ की कि येह

الثلثة

مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿۲۲﴾ فَاَسۡرِ بِعِبَادِیۡ لَیۡلًا اِنَّکُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ﴿۲۳﴾ وَ اتۡرُکِ الۡبَحۡرَ

मुजरिम लोग हैं हम ने हुक्म फ़रमाया कि मेरे बन्दों[21] को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा[22] और दरिया को यूंही जगह जगह से

رَہۡوًا ؕ اِنَّہُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۲۴﴾ کَمۡ تَرَکُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوۡنٍ ﴿۲۵﴾ وَّ

खुला छोड़ दे[23] बेशक वोह लश्कर डुबोया जाएगा[24] कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और

زُرُوۡعٍ وَّ مَقَامٍ کَرِیۡمٍ ﴿۲۶﴾ وَّ نَعۡمَۃٍ کَانُوۡا فِیۡہَا فٰکِہِیۡنَ ﴿۲۷﴾ کَذٰلِکَ ۟ وَ

खेत और उ़म्दा मकानात[25] और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे[26] हम ने यूंही किया और

14 : जिस कुफ़्र में थे उसी की त़रफ़ लौटोगे, चुनान्चे ऐसा ही हुवा, अब फ़रमाया जाता है कि उस दिन को याद करो 15 : उस दिन से मुराद रोज़े क़ियामत है या रोज़े बद्र। 16 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام। 17 : या'नी बनी इसराईल को मेरे ह़वाले कर दो और जो शिद्दतें और सख़्तियां उन पर करते हो उस से रिहाई दो। 18 : अपने सिद्क़े नुबुव्वत व रिसालत की, जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने येह फ़रमाया तो फ़िरऔ़नियों ने आप को क़त्ल की धम्की दी और कहा कि हम तुम्हें संगसार कर देंगे तो आप ने फ़रमाया 19 : या'नी मेरा तवक्कुल व ए'तिमाद उस पर है, मुझे तुम्हारी धम्की की कुछ परवा नहीं **अल्लाह** तआ़ला मेरा बचाने वाला है। 20 : मेरी ईज़ा के दरपै न हो, उन्हों ने इस को भी न माना। 21 : या'नी बनी इसराईल 22 : या'नी फ़िरऔ़न मअ़ अपने लश्करों के तुम्हारे दरपै होगा। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام रवाना हुए और दरिया पर पहुंच कर आप ने अ़सा मारा, उस में बारह रस्ते ख़ुश्क पैदा हो गए, आप मअ़ बनी इसराईल के दरिया में से गुज़र गए, पीछे फ़िरऔ़न और उस का लश्कर आ रहा था आप ने चाहा कि फिर अ़सा मार कर दरिया को मिला दें ताकि फ़िरऔ़न उस में से गुज़र न सके तो आप को हुक्म हुवा 23 : ताकि फ़िरऔ़नी उन रास्तों से दरिया में दाख़िल हो जाएं। 24 : ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को इत़्मीनान हो गया और फ़िरऔ़न और उस के लश्कर दरिया में ग़र्क़ हो गए और उन का तमाम मालो मताअ़ और सामान यहीं रह गया। 25 : आरास्ता पैरास्ता मुज़य्यन। 26 : ऐश करते इतराते।

اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا

उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया[27] तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए[28] और उन्हें

كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۳۰﴾

मोहलत न दी गई[29] और बेशक हम ने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अ़ज़ाब से नजात बख़्शी[30]

مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى

फ़िरऔ़न से बेशक वोह मुतकब्बिर ह़द से बढ़ने वालों में से था और बेशक हम ने उन्हें[31]

عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿۳۳﴾ اِنَّ

दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से और हम ने उन्हें वोह निशानियां अ़ता फ़रमाईं जिन में सरीह़ इन्आ़म था[32] बेशक

هٰۤؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿۳۵﴾

येह[33] कहते हैं वोह तो नहीं मगर हमारा एक दफ़्अ़ा का मरना[34] और हम उठाए न जाएंगे[35]

فَاْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ

तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो[36] क्या वोह बेहतर हैं[37] या तुब्बअ़ की क़ौम[38] और जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا خَلَقْنَا

उन से पहले थे[39] हम ने उन्हें हलाक कर दिया[40] बेशक वोह मुजरिम लोग थे[41] और हम ने न बनाए

27 : या'नी बनी इसराईल को जो न उन के हम मज़्हब थे न रिश्तेदार न दोस्त। 28 : क्यूं कि वोह ईमानदार न थे और ईमानदार जब मरता है तो उस पर आस्मान व ज़मीन चालीस रोज़ तक रोते हैं जैसा कि तिरमिज़ी की ह़दीस में है, मुजाहिद से कहा गया कि क्या मोमिन की मौत पर आस्मान व ज़मीन रोते हैं ? फ़रमाया : ज़मीन क्यूं न रोए उस बन्दे पर जो ज़मीन को अपने रुकूअ़ व सुजूद से आबाद रखता था और आस्मान क्यूं न रोए उस बन्दे पर जिस की तस्बीह़ व तक्बीर आस्मान में पहुंचती थी। ह़सन का क़ौल है कि मोमिन की मौत पर आस्मान वाले और ज़मीन वाले रोते हैं। 29 : तौबा वग़ैरा के लिये अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करने के बा'द। 30 : या'नी ग़ुलामी और शाक़्क़ा ख़िदमतों और मेह़नतों से और औलाद के क़त्ल किये जाने से जो उन्हें पहुंचता था 31 : या'नी बनी इसराईल को 32 : कि उन के लिये दरिया में ख़ुश्क रस्ते बनाए, अब्र को साएबान किया, मन्न व सल्वा उतारा, इस के इ़लावा और ने'मतें दीं। 33 : कुफ़्फ़ारे मक्का 34 : या'नी इस ज़िन्दगानी के बा'द सिवाए एक मौत के हमारे लिये और कोई ह़ाल बाक़ी नहीं, इस से उन का मक़्सूद बअ़्स या'नी मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करना था जिस को अगले जुम्ले में वाज़ेह़ कर दिया। (کبیر) 35 : बा'दे मौत ज़िन्दा कर के। 36 : इस बात में कि हम बा'द मरने के ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। कुफ़्फ़ारे मक्का ने येह सुवाल किया था कि क़ुसय बिन किलाब को ज़िन्दा कर दो अगर मौत के बा'द किसी का ज़िन्दा होना मुम्किन हो और येह उन की जाहिलाना बात थी क्यूं कि जिस काम के लिये वक़्त मुअ़य्यन हो उस का उस वक़्त से क़ब्ल वुजूद में न आना उस के ना मुम्किन होने की दलील नहीं होता और न उस का इन्कार सह़ीह़ होता है, अगर कोई शख़्स किसी नए जमे हुए दरख़्त या पौदे को कहे कि इस में से अब फल निकालो वरना हम नहीं मानेंगे कि इस दरख़्त से फल निकल सकता है तो उस को जाहिल क़रार दिया जाएगा और उस का इन्कार मह़्ज़ ह़ुमुक़ (बे वुक़ूफ़ी) या मुकाबरह होगा। 37 : या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का ज़ोर व क़ुव्वत में 38 : तुब्बए ह़िम्यरी बादशाहे यमन साह़िबे ईमान थे और उन की क़ौम काफ़िर थी जो निहायत क़वी ज़ोरआवर और कसीरुत्ता'दाद थी। 39 : काफ़िर उम्मतों में से 40 : उन के कुफ़्र के बाइ़स। 41 : काफ़िर मुन्किरे बअ़्स।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है खेल के तौर पर[42] हम ने उन्हें न बनाया मगर हक़ के साथ[43]

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾

लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं[44] बेशक फ़ैसले का दिन[45] उन सब की मीआ़द है

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْــٴًـا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा[46] और न उन की मदद होगी[47] मगर जिस पर **अल्लाह**

اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ

रहम करे[48] बेशक वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है बेशक थोहड़ का पेड़[49] गुनहगारों

الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ

की ख़ूराक है[50] गले हुए तांबे की त़रह़ पेटों में जोश मारे जैसा खौलता पानी जोश मारे[51] उसे पकड़ो[52]

فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ

ठीक भड़कती आग की त़रफ़ ब ज़ोर घसीटते ले जाओ फिर उस के सर के ऊपर खौलते पानी का

الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

अ़ज़ाब डालो[53] चख[54] हां हां तू ही बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला है[55] बेशक येह है वोह[56] जिस में तुम

تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

शुबा करते थे[57] बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं[58] बाग़ों और चश्मों में

42 : अगर मरने के बा'द उठना और ह़िसाब व सवाब न हो तो ख़ल्क़ की पैदाइश मह्‌ज़ फ़ना के लिये होगी और येह अ़बस व लअ़्ब है, तो इस दलील से साबित हुवा कि इस दुन्यवी ज़िन्दगी के बा'द उख़्‌रवी ज़िन्दगी ज़रूर है जिस में ह़िसाब व जज़ा हो। 43 : कि त़ाअ़त पर सवाब दें और मा'सियत पर अ़ज़ाब करें। 44 : कि पैदा करने की ह़िक्मत येह है और ह़कीम का फ़े'ल अ़बस नहीं होता। 45 : या'नी रोज़े क़ियामत जिस में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा। 46 : और क़राबत व मह़ब्बत नफ़्अ़ न देगी। 47 : या'नी काफ़िरों की। 48 : या'नी सिवाए मोमिनीन के कि वोह ब इज़्ने इलाही एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे। (جمل) 49 : थोहड़ एक ख़बीस निहायत कड़वा दरख़्त है जो अहले जहन्नम की ख़ूराक होगा। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर एक क़त़रा उस थोहड़ का दुन्या में टपका दिया जाए तो अहले दुन्या की ज़िन्दगानी ख़राब हो जाए। 50 : अबू जह्ल की और उस के साथियों की जो बड़े गुनहगार हैं। 51 : जहन्नम के फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि 52 : या'नी गुनहगार को 53 : और उस वक़्त दोज़ख़ी से कहा जाएगा कि 54 : इस अ़ज़ाब को। 55 : मलाएका येह कलिमा इहानत और तज़्लील के लिये कहेंगे क्यूं कि अबू जह्ल कहा करता था कि "बत़्ह़ा" में मैं बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला हूं, उस को अ़ज़ाब के वक़्त येह त़ा'ना दिया जाएगा और कुफ़्फ़ार से येह भी कहा जाएगा कि 56 : अ़ज़ाब जो तुम देखते हो। 57 : और उस पर ईमान नहीं लाते थे। इस के बा'द परहेज़ गारों का ज़िक्र फ़रमाया जाता है। 58 : जहां कोई ख़ौफ़ नहीं।

يَلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُمْ

पहनेंगे करेब और क़नादीज़[59] आमने सामने[60] यूंही है और हम ने उन्हें बियाह दिया

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से उस में हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे[61] अम्न व अमान से[62] उस में पहली

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا

मौत के सिवा[63] फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया[64] तुम्हारे

مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ

रब के फ़ज़्ल से येही बड़ी काम्याबी है तो हम ने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में[65] आसान किया कि

يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

वोह समझें[66] तो तुम इन्तिज़ार करो[67] वोह भी किसी इन्तिज़ार में हैं[68]

ركوعاتها ٤ ﴿٤٥﴾ سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ ﴿٦٥﴾ اٰياتها ٣٧

सूरए जासियह मक्किय्या है, इस में सैंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

किताब का उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले की त़रफ़ से बेशक आस्मानों

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

और ज़मीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[2] और तुम्हारी पैदाइश में[3] और जो जो जानवर वोह फैलाता है

59 : या'नी रेशम के बारीक व दबीज़ लिबास। 60 : कि किसी की पुश्त किसी की त़रफ़ न हो। 61 : या'नी जन्नत में अपने जन्नती ख़ादिमों को मेवे ह़ाज़िर करने का हुक्म देंगे 62 : कि किसी क़िस्म का अन्देशा ही न होगा न मेवे के कम होने का न ख़त्म हो जाने का न ज़रर करने का न और कोई। 63 : जो दुन्या में हो चुकी 64 : उस से नजात अ़त़ा फ़रमाई। 65 : या'नी अ़रबी में 66 : और नसीह़त क़बूल करें और ईमान लाएं, लेकिन लाएंगे नहीं। 67 : उन के हलाक व अ़ज़ाब का। 68 : तुम्हारी मौत के। (قِيْلَ هٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ السَّيْفِ) 1 : येह सूरए जासियह है, इस का नाम सूरए शरीअ़ह भी है, येह सूरत मक्किय्या है सिवाए आयत ''قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا'' के। इस सूरत में चार रुकूअ़, सैंतीस आयतें, चार सो अठासी कलिमे, दो हज़ार एक सो इक्यानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करने वाली। 3 : या'नी तुम्हारी पैदाइश में भी उस की क़ुदरत व ह़िक्मत की निशानियां हैं कि नुत़्फ़े को ख़ून बनाता है, ख़ून को बस्ता (जम्अ़ हुवा) करता है, ख़ूने बस्ता को गोश्त पारा (गोश्त का टुकड़ा) यहां तक कि पूरा इन्सान बना देता है।

ايٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

इन में निशानियां हैं यक़ीन वालों के लिये और रात और दिन की तब्दीलियों में[4] और इस में कि **अल्लाह**

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ

ने आस्मान से रोज़ी का सबब मींह उतारा तो उस से ज़मीन को उस के मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की

الرِّيٰحِ ايٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ ايٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ

गर्दिश में[5] निशानियां हैं अ़क़्ल मन्दों के लिये येह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम तुम पर ह़क़ के साथ

بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَايٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ

पढ़ते हैं फिर **अल्लाह** और उस की आयतों को छोड़ कर कौन सी बात पर ईमान लाएंगे ख़राबी है हर बड़े

اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾ يَّسْمَعُ ايٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ

बोहतान हाए गुनहगार के लिये[6] **अल्लाह** की आयतों को सुनता है कि उस पर पढ़ी जाती हैं फिर हट पर जमता है[7] ग़ुरूर करता[8] गोया

يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٨﴾ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ ايٰتِنَا شَيْــًٔا اتَّخَذَهَا

उन्हें सुना ही नहीं तो उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिलाअ़ पाए उस की

هُزُوًا ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩﴾ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ

हंसी बनाता है उन के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब उन के पीछे जहन्नम है[9] और उन्हें कुछ काम

عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْــًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ

न देगा उन का कमाया हुवा[10] और न वोह जो **अल्लाह** के सिवा ह़िमायती ठहरा रखे थे[11] और उन के लिये

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠﴾ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِايٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ

बड़ा अ़ज़ाब है येह[12] राह दिखाना है और जिन्हों ने अपने रब की आयतों को न माना उन के लिये

عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ

दर्दनाक अ़ज़ाब में से सख़्त तर अ़ज़ाब है **अल्लाह** है जिस ने तुम्हारे बस में दरिया कर दिया कि उस में उस के

4 : कि कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं और एक जाता है दूसरा आता है। 5 : कि कभी गर्म चलती हैं कभी सर्द कभी जुनूबी कभी शिमाली कभी शर्क़ी कभी ग़र्बी। 6 : या'नी नज़्र बिन ह़ारिस के लिये। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अ़जम के क़िस्से कहानियां सुना कर लोगों को क़ुरआने पाक सुनने से रोकता था और आयत हर ऐसे शख़्स के लिये आ़म है जो दीन को ज़रर पहुंचाए और ईमान लाने और क़ुरआन सुनने से तकब्बुर करे। 7 : या'नी अपने कुफ़्र पर। 8 : ईमान लाने से। 9 : या'नी बा'दे मौत उन का अन्जामे कार और मआल (ठिकाना) दोज़ख़ है। 10 : माल जिस पर वोह बहुत नाज़ां हैं। 11 : या'नी बुत जिन को पूजा करते थे। 12 : क़ुरआन शरीफ़।

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ سَخَّرَ لَكُمْ

हुक्म से कश्तियां चलें और इस लिये कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो[13] और इस लिये कि हक़ मानो[14] और तुम्हारे लिये काम में लगाए

مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ

जो कुछ आस्मानों में हैं[15] और जो कुछ ज़मीन में[16] अपने हुक्म से बेशक इस में निशानियां हैं

یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یَغْفِرُوْا لِلَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ اَیَّامَ

सोचने वालों के लिये ईमान वालों से फ़रमाओ दर गुज़रें उन से जो **अल्लाह** के दिनों की उम्मीद नहीं

اللّٰهِ لِیَجْزِیَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ

रखते[17] ताकि **अल्लाह** एक क़ौम को उस की कमाई का बदला दे[18] जो भला काम करे तो अपने लिये

وَ مَنْ اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ٘ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا بَنِیْۤ

और बुरा करे तो अपने बुरे को[19] फिर अपने रब की त़रफ़ फेरे जाओगे[20] और बेशक हम ने बनी

اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ

इसराईल को किताब[21] और हुकूमत और नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई[22] और हम ने उन्हें सुथरी रोज़ियां दीं[23] और

فَضَّلْنٰهُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶﴾ ۚ وَ اٰتَیْنٰهُمْ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْۤا

उन्हें उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी और हम ने उन्हें इस काम की[24] रोशन दलीलें दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया[25]

13 : बह़री सफ़रों से और तिजारतों से और ग़व्वासी (ग़ोत़ा ख़ोरी) करने और मोती वग़ैरा निकालने से। **14 :** उस के ने'मतो करम और फ़ज़्लो एह़सान का। **15 :** सूरज चांद सितारे वग़ैरा। **16 :** चौपाए दरख़्त नहरें वग़ैरा। **17 :** जो दिन कि उस ने मोमिनीन की मदद के लिये मुक़र्रर फ़रमाए या "**अल्लाह** तआ़ला के दिनों" से वोह वक़ाएअ़ (वाक़िआ़त) मुराद हैं जिन में वोह अपने दुश्मनों को गिरिफ़्तार करता है, बहर ह़ाल इन उम्मीद न रखने वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं और मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार से जो ईज़ा पहुंचे और उन के कलिमात जो तक्लीफ़ पहुंचाएं मुसल्मान उन से दर गुज़र करें मुनाज़अ़त (झगड़ा) न करें। (وَقِيلَ اِنَّ الْاٰيَةَ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ)। **शाने नुज़ूल :** इस आयत की शाने नुज़ूल में कई क़ौल हैं : **एक** येह कि ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में मुसल्मान बीरे मुरैसीअ़ पर उतरे, येह एक कूंवां था, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने अपने ग़ुलाम को पानी के लिये भेजा, वोह देर में आया तो उस से सबब दरयाफ़्त किया, उस ने कहा कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ कूंएं के कनारे पर बैठे थे, जब तक नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की मश्कें न भर गईं उस वक़्त तक उन्हों ने किसी को पानी भरने न दिया। येह सुन कर उस बद बख़्त ने इन ह़ज़रात की शान में गुस्ताख़ाना कलिमे कहे। ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ को इस की ख़बर हुई तो आप तलवार ले कर तय्यार हुए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। इस तक़्दीर पर आयत मदनी होगी। मुक़ातिल का क़ौल है कि क़बीलए बनी ग़िफ़ार के एक शख़्स ने मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ को गाली दी तो आप ने उस को पकड़ने का इरादा किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और **एक** क़ौल येह है कि जब आयत "مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" नाज़िल हुई तो फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि मुह़म्मद (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) का रब मोह़ताज हो गया (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰی) इस को सुन कर ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने तलवार खींची और उस की तलाश में निकले। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने आदमी भेज कर उन्हें वापस बुलवा लिया। **18 :** या'नी उन के आ'माल का। **19 :** नेकी और बदी का सवाब और अ़ज़ाब उस के करने वाले पर है। **20 :** वोह नेकों और बदों को उन के आ'माल की जज़ा देगा। **21 :** या'नी तौरैत **22 :** उन में ब कसरत अम्बिया पैदा कर के। **23 :** ह़लाल कशाइश के साथ फ़िरऔन और उस की क़ौम के अम्वाल व दियार का मालिक कर के और मन्न व सल्वा नाज़िल फ़रमा कर। **24 :** या'नी अम्रे दीन और बयाने ह़लाल

إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ

मगर बा'द इस के कि इल्म उन के पास आ चुका[26] आपस के हसद से[27] बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيعَةٍ

उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं फिर हम ने इस काम के[28]

مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُمْ

उ़म्दा रास्ते पर तुम्हें किया[29] तो इसी राह चलो और नादानों की ख़्वाहिशों का साथ न दो[30] बेशक वोह

لَن يُغْنُوا عَنكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَإِنَّ الظّٰلِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के

بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ

दोस्त हैं[31] और डर वालों का दोस्त **अल्लाह**[32] येह लोगों की आंखें खोलना है[33] और ईमान वालों के लिये

لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّـَٔاتِ أَن نَّجْعَلَهُمْ

हिदायत व रहमत क्या जिन्हों ने बुराइयों का इरतिकाब किया[34] येह समझते हैं कि हम उन्हें उन

كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ

जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इन की उन की ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए[35] क्या ही

مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾ ع وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى

बुरा हुक्म लगाते हैं[36] और **अल्लाह** ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया[37] और इस लिये कि

व हराम और सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم के मब्ऊ़स होने की **25 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم की बि'सत में। **26 :** और इल्म ज़वाले इख़्तिलाफ़ का सबब होता है और यहां उन लोगों के लिये इख़्तिलाफ़ का सबब हुवा, इस का बाइ़स येह है कि इल्म उन का मक़्सूद न था बल्कि मक़्सूद उन का जाह व रियासत की त़लब थी, इसी लिये उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया। **27 :** कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم की जल्वा अफ़्रोज़ी के बा'द अपने जाह व रियासत के अन्देशे से आप के साथ ह़सद और दुश्मनी की और काफ़िर हो गए। **28 :** या'नी दीन के **29 :** ऐ ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه وسلم **30 :** या'नी रुअसाए क़ुरैश की जो अपने दीन की दा'वत देते हैं। **31 :** सिर्फ़ दुन्या में और आख़िरत में उन का कोई दोस्त नहीं। **32 :** दुन्या में भी और आख़िरत में भी। डर वालों से मुराद मोमिनीन हैं और आगे क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है **33 :** कि इस से उन्हें उमूरे दीन में बीनाई ह़ासिल होती है। **34 :** कुफ़्र व मआ़सी का **35 :** या'नी ईमानदारों और काफ़िरों की मौत व ह़यात बराबर हो जाए, ऐसा हरगिज़ नहीं होगा क्यूं कि ईमानदार ज़िन्दगी में त़ाअ़त पर क़ाइम रहे और काफ़िर बदियों में डूबे रहे तो इन दोनों की ज़िन्दगी बराबर न हुई, ऐसे ही मौत भी यक्सां नहीं कि मोमिन की मौत बिशारत व रहमत व करामत पर होती है और काफ़िर की रहमत से मायूसी और नदामत पर। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का की एक जमाअ़त ने मुसल्मानों से कहा था : अगर तुम्हारी बात ह़क़ हो और मरने के बा'द उठना हो तो भी हम ही अफ़्ज़ल रहेंगे जैसा कि दुन्या में हम तुम से बेहतर रहे। उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **36 :** मुख़ालिफ़ सरकश, मुख़्लिस फ़रमां बरदार के बराबर कैसे हो सकता है ? मोमिनीन जन्नाते आ़लियात में इ़ज़्ज़तो करामत और ऐ़शो राह़त पाएंगे और कुफ़्फ़ार अस्फ़लुस्साफ़िलीन में ज़िल्लत व इहानत के साथ सख़्त तरीन अ़ज़ाब में मुब्तला

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ

हर जान अपने किये का बदला पाए[38] और उन पर ज़ुल्म न होगा भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश

اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ

को अपना ख़ुदा ठहरा लिया[39] और **अल्लाह** ने उसे बा वस्फ़ इल्म के गुमराह किया[40] और उस के कान और दिल पर मोहर लगा दी और उस की

عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ

आंखों पर पर्दा डाला[41] तो **अल्लाह** के बा'द उसे कौन राह दिखाए तो क्या तुम ध्यान नहीं करते और

قَالُوْا مَا هِیَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ

बोले[42] वोह तो नहीं मगर येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी[43] मरते हैं और जीते हैं[44] और हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना[45]

وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

और उन्हें इस का इल्म नहीं[46] वोह तो निरे गुमान दौड़ाते हैं[47] और जब उन पर हमारी रोशन

اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ

आयतें पढ़ी जाएं[48] तो बस उन की हुज्जत येही होती है कि कहते हैं हमारे बाप दादा को ले आओ[49] तुम अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ

सच्चे हो[50] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** तुम्हें जिलाता है[51] फिर तुम को मारेगा[52] फिर तुम सब को इकठ्ठा करेगा[53] क़ियामत

होंगे। **37 :** कि उस की क़ुदरत व वह्दानिय्यत की दलील हो। **38 :** नेक नेकी का और बद, बदी का। इस आयत से मा'लूम हुवा कि इस आलम की पैदाइश से इज़्हारे अ़द्ल व रह़मत मक़्सूद है और येह पूरी त़रह क़ियामत ही में हो सकता है कि अहले ह़क़ और अहले बातिल में इम्तियाज़े कामिल हो, मोमिने मुख़्लिस दरजाते जन्नत में हों और काफ़िर ना फ़रमान दरकाते जहन्नम (दोज़ख़ के त़बक़ात) में। **39 :** और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हो गया, जिसे नफ़्स ने चाहा पूजने लगा, मुश्रिकीन का येही ह़ाल था कि वोह पथ्थर और सोने और चांदी वग़ैरा को पूजते थे, जब कोई चीज़ उन्हें पहली चीज़ से अच्छी मा'लूम होती थी तो पहली को तोड़ देते फेंक देते दूसरी को पूजने लगते। **40 :** कि इस गुमराह ने ह़क़ को जान पहचान कर बे राही इख़्तियार की। मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान किये हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस के अन्जामे कार और इस के शक़ी होने को जानते हुए इसे गुमराह किया या'नी **अल्लाह** तआ़ला पहले से जानता था कि येह अपने इख़्तियार से राहे ह़क़ से मुन्हरिफ़ होगा और गुमराही इख़्तियार करेगा। **41 :** तो उस ने हिदायत व मौइज़त (नसीह़त) को न सुना और न समझा और राहे ह़क़ को न देखा। **42 :** मुन्किरीने बअ़्स **43 :** या'नी इस ज़िन्दगी के इलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं। **44 :** या'नी बा'ज़े मरते हैं और बा'ज़े पैदा होते हैं। **45 :** या'नी रोज़ो शब का दौरा, वोह इसी को मुअस्सिर ए'तिक़ाद करते थे और मलकुल मौत का और ब हुक्मे इलाही रूहें क़ब्ज़ किये जाने का इन्कार करते थे और हर एक ह़ादिसे को दह्र और ज़माने की त़रफ़ मन्सूब करते थे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **46 :** या'नी वोह येह बात बे इल्मी से कहते हैं। **47 :** ख़िलाफ़े वाक़ेअ़। **मस्अला :** ह़वादिस को ज़माने की त़रफ़ निस्बत करना और ना गवार ह़वादिस रूनुमा होने से ज़माने को बुरा कहना मम्नूअ़ है, अह़ादीस में इस की मुमानअ़त आई है। **48 :** या'नी क़ुरआने पाक की आयतें जिन में **अल्लाह** तआ़ला के बअ़्से बा'दल मौत पर क़ादिर होने की दलीलें मज़्कूर हैं, जब कुफ़्फ़ार उन के जवाब से आ़जिज़ होते हैं **49 :** ज़िन्दा कर के **50 :** इस बात में कि मुर्दे ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। **51 :** दुन्या में बा'द इस के कि तुम बेजान नुत़्फ़ा थे। **52 :** तुम्हारी उ़म्रें पूरी होने के वक़्त। **53 :** ज़िन्दा कर के। तो जो परवर्दगार ऐसी क़ुदरत वाला है वोह तुम्हारे बाप दादा के ज़िन्दा करने पर भी बिल यक़ीन क़ादिर है, वोह सब को ज़िन्दा करेगा।

الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

के दिन जिस में कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते[54] और **अल्लाह** ही के लिये है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी बातिल वालों की उस

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ

दिन हार है[55] और तुम हर गुरौह[56] को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुए हर गुरौह अपने नामए आ'माल की त़रफ़ बुलाया जाएगा[57]

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ

आज तुम्हें तुम्हारे किये का बदला दिया जाएगा हमारा येह नविश्ता तुम पर ह़क़्

بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

बोलता है हम लिखते रहे थे[58] जो तुम ने किया तो वोह जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

और अच्छे काम किये उन का रब उन्हें अपनी रह़मत में लेगा[59] येही खुली

الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ

काम्याबी है और जो काफ़िर हुए उन से फ़रमाया जाएगा क्या न था कि मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

तो तुम तकब्बुर करते थे[60] और तुम मुजरिम लोग थे और जब कहा जाता बेशक **अल्लाह** का वा'दा[61] सच्चा है

وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا

और क़ियामत में शक नहीं[62] तुम कहते हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है हमें तो यूंही कुछ गुमान सा

ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ

होता है और हमें[63] यक़ीन नहीं और उन पर खुल गईं[64] उन के कामों की बुराइयां[65] और उन्हें घेर लिया

54 : इस को कि **अल्लाह** तआ़ला मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और उन का न जानना दलाइल की त़रफ़ मुल्तफ़ित न होने और ग़ौर न करने के बाइ़स है। 55 : या'नी उस दिन काफ़िरों का टोटे में होना ज़ाहिर होगा। 56 : या'नी हर दीन वाले 57 : और फ़रमाया जाएगा 58 : या'नी हम ने फ़िरिश्तों को तुम्हारे अ़मल लिखने का हुक्म दिया था 59 : जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। 60 : और उन पर ईमान न लाते थे। 61 : मुर्दों को ज़िन्दा करने का 62 : वो ज़रूर आएगी तो 63 : क़ियामत के आने का 64 : या'नी कुफ़्फ़ार पर आख़िरत में 65 : जो

مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَ قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ

उस अ़ज़ाब ने जिस की हंसी बनाते थे और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे[66] जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को

يَوْمِكُمْ هٰذَا وَ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ

भूले हुए थे[67] और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं[68] येह इस लिये कि तुम

اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ

ने **अल्लाह** की आयतों का ठठ्ठा (मज़ाक़) बनाया और दुन्या की ज़िन्दगी ने तुम्हें फ़रेब दिया[69] तो आज न वोह आग से निकाले

مِنْهَا وَ لَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ

जाएं और न उन से कोई मनाना चाहे[70] तो **अल्लाह** ही के लिये सब ख़ूबियां हैं आस्मानों का रब और ज़मीन

الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَ لَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۪

का रब और सारे जहां का रब और उसी के लिये बड़ाई है आस्मानों और ज़मीन में

وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾ ع

और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

उन्हों ने दुन्या में किये थे और उन की सज़ाएं। **66 :** अ़ज़ाबे दोज़ख़ में **67 :** कि ईमान व ताअ़त छोड़ बैठे। **68 :** जो तुम्हें इस अ़ज़ाब से बचा सके। **69 :** कि तुम उस के मफ़्तूं (फ़ितने में मुब्तला) हो गए और तुम ने बअ़्स व ह़िसाब का इन्कार कर दिया। **70 :** या'नी अब उन से येह भी मत़्लूब नहीं कि वोह तौबा कर के और ईमान व ताअ़त इख़्तियार कर के अपने रब को राज़ी करें क्यूं कि उस रोज़ कोई उ़ज़्र और तौबा क़बूल नहीं।

0148298
मकतबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें
● अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, टी कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
● देहली :- मकतबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
● मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, टाउन फ्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
● हैदराबाद :- मकतबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786
E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net